गोडसे को स्वयं पैरवी करने की अनुमति मिली

शिमला, २४ मार्च। महात्मा गाधी के हत्यारे नाथूराम गाडसे द्वारा की गयी प्रार्थना पर पूर्वी पंजाब हाई कोर्ट के जस्टिस हरनामसिंह ने गोडसे को अनुमति दे दी है कि वह अपनी अपील की पैरवी स्वयं कर सकता है।

मद्रास के तलाक बिल

मद्रास, २७ मार्च। गवर्नर-जनरल ने मद्रास प्रान्तीय असेम्बली द्वारा स्वीकृत द्विविवाह (निरोधक) तथा तलाक बिल, १९४८ पर अपनी स्वीकृति दे दी है।

१५० कांग्रेसमैनों पर अनुशासन-हीनता और समाज-विरोधी कार्य करने का आरोप

लखनऊ, शनिवार। युक्तप्रांत के १५० से अधिक कांग्रेसमैनों पर विभिन्न जिलों में अनुशासन हीनता और समाज विरोधी कार्य करने के आरोप है। २ अप्रैल को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की अनुशासन उपसमिति की बैठक में इन लोगों के मामलों पर विचार किया जायगा।

फ्रांसीसी बस्तियां

नयी दिल्ली, २८ मार्च। हिंद के अर्थ मन्त्री ने एलान किया कि १ अप्रैल १९४९ से जहां तक चुंगी कर का संबंध है फ्रांसीसी बस्तियां विदेशी प्रदेश समझी जायंगी क्योंकि ३१ मार्च से उक्त बस्तियों और हिंद के बीच का चुंगीकर समझौता भंग कर दिया जायगा।

एक साल में ५७ बैंक फेल हुए

अर्थ मन्त्री श्री जान मथाई ने बतलाया कि सन्' ४८ में ५७ बैंकों ने काम बन्द किया। इनमें से आधों का दिवाला निकल गया और सात को 'मोरेटोरियम' दिया गया।

आप ने कहा कि पिछले साल के आखिरी दिन तक देश में १०० शेड्यूल्ड बैंक और ५७१ गैर शेड्यूल्ड बैंक थे।

२२ पत्रों से जमानत ली गयी

गृह मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बतलाया कि केन्द्र के शासन क्षेत्रों में १५ अगस्त सन ४७ से लेकर अब तक २२ पत्रों से जमानतें मांगी गयी है।

भोपाल का शासन

नयी दिल्ली, २८ मार्च। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि हिंद सरकार भोपाल के शासन प्रबन्ध को अपने हाथ में ले लेगी। भोपाल के नवाब और हिंद के रियासती विभाग के सलाहकार श्री वी. पी. मेनन से समझौता हो गया है।

न्याय-शासन व्यवस्था अलग

लखनऊ २५ मार्च। युक्त प्रांतीय असेंबली में प्रधान मंत्री पण्डित गोविंद बल्लभ पंत ने घोषणा की कि आगामी आर्थिक वर्ष (अप्रैल १९४९ से मार्च १९५०) के अन्दर प्रांत के दस जिलों में न्याय और शासन व्यवस्था अलग अलग कर दी जायगी। न्याय विभाग के लिए १,०४,५१,०००) की मांग पेश करते हुए प्रधान मंत्री ने उक्त घोषणा की।

न्याय व्यवस्था में परिवर्तन लाने में अदालतों की निगरानी के लिए इन स्थानों पर एक अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट की नियुक्ति होगी जो स्वतंत्रता पूर्वक अदालतों की निगरानी करेगा।

हिंद में विदेशी पूंजी का स्वागत

नयी दिल्ली २४ मार्च। जानकार क्षेत्रों का कहना है कि प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अप्रैल के प्रारम्भ में विदेशी पूंजी के सम्बन्ध में जो वक्तव्य हिंद पार्लमेंट में देने वाले है उसमें प्रधानतः विदेशी पूंजी लगाने वालों को आश्वासन दिया जायगा कि हिंद में उन का स्वागत होगा। विदेशी—पूंजी लगाने वालों को इस देश में किये गये मुनाफे को घर भेजने के लिए उन्हें विनिमय सम्बन्धी सुविधाएं प्रदान की जायगी। यदि भविष्य में किसी समय यहां के लोगों ने उनके व्यापार पर अधिकार कर लिया या राज्य ने अधिकार कर लिया तो उन्हें पूरा हर्जाना दिया जायगा।

बिहार जेल सुधार कमेटी की रिपोर्ट

पटना, २६ मार्च। अक्टूबर १९४६ में बिहार सरकार द्वारा नियुक्त जेल सुधार कमेटी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है।

जेलों के सुधार के लिये कमेटी ने सिफारिश की है कि जेलों में रहने के लिये प्रति व्यक्ति के लिये ४५ से ६० वर्ग फीट जगह होनी चाहिये। स्त्री कैदियों के लिये पृथक जेल तथा अस्पतालों में सुधार की सिफारिशें भी की गयी हैं।

कैदियों की श्रेणी के विषय में कमेटी ने कहा है कि अब राजनीतिक बन्दियों की श्रेणी हटा देनी चाहिये क्योंकि जिस दिन भी वर्तमान सरकार से जनता का विश्वास हट जायगा उसी दिन यह सरकार हट जायगी इसलिये किसी भी कैदी को राजनीतिक कैदी के अधिकार देना अनुचित है।

कमेटी ने सिफारश की है कि प्रत्येक कैदी को रेडियो, ग्रामोफोन, तम्बाकू आदि की सुविधाएं प्राप्त होनी चाहिए। महीने में एक बार मुलाकात और एक पत्र लिखने की सुविधा भी होनी चाहिए। वर्धा की बुनियादी शिक्षा योजना के अनुसार कैदियों को बिना हथकड़ी और पैदल ले जाने के विरुद्ध तथा पीतल आदि के पात्रों की व्यवस्था करने की सिफारिशें की गयी है।

यूरोपियनों की सुविधाएं समाप्त

नई दिल्ली। पार्लमेंट के एक बिल के अनुसार फौजदारी कानून और मुकद्दमों में यूरोपियनों और अमरीकियों के साथ किया जाने वाला पक्षपातपूर्ण व्यवहार बन्द किया गया है और उनके साथ भी भारतीयों के समान ही व्यवहार किया जायगा।

हिन्द बर्मा सीमा पर सतर्कता

मारगरेटा (आसाम), २५ मार्च। पता चला है कि उत्तरी बर्मा की बिगड़ती हुई स्थिति को देखते हुए हिन्द-बर्मा सीमा पर सैनिक महत्व के स्थानों में अतिरिक्त फौजी टुकड़ियाँ तैनात कर दी गयी हैं और पुलिस कारवाई तेज कर दी गयी है।

विवाह करने की उम्र १८ से बढ़कर २० वर्ष

लड़कियाँ १५ वर्ष से पहले शादी न कर सकेंगी

नयी दिल्ली, २५ मार्च। हिन्द पार्लमेंट की एक सेलेक्ट कमेटी ने इस प्रस्ताव को मान्य करार दिया है कि पुरुष की विवाह योग्य उम्र १८ से बढ़ाकर २० और स्त्री की १४ से १५ साल कर दी जाय।

विदेशों से दस लाख टन गेहूं

नयी दिल्ली, २५ मार्च। वाशिंगटन में हुए अन्तरराष्ट्रीय गेहूँ समझौते से हिन्द के लिए यह तय हुआ है कि उसे दस लाख टन गेहूँ प्रतिवर्ष मिलेगा। इस गेहूँ की कीमतें जो हमें चुकाना होंगी उसके लिए गेहूँ के अधिकतम और न्यूनतम मूल्य निर्धारित कर दिये गये हैं। अतएव अब हमें अपने आयात के खर्च में बहुत कुछ सीमा तक कमी करने का मौका मिलेगा।

परीक्षाएं अप्रैल के अन्त में

लखनऊ,। संयुक्त प्रांतीय सरकार के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर ने बताया कि इंटर तथा हाई स्कूल की परीक्षाएं जल्द से जल्द पुनः आरम्भ करने की कोशिश हो रही है। आशा है कि अप्रैल के अंतिम सप्ताह में परीक्षाएं प्रारंभ हो जायगी।

मद्रास में महिलाएं भी डिप्टी तहसीलदारों के पदों पर नियुक्त की जायगी

मद्रास,। मद्रास असेम्बली में माल मन्त्री ने बतलाया कि मद्रास प्रांत में अब महिलाएं भी डिप्टी तहसीलदारों के पदों पर नियुक्त की जायंगी।

सुरक्षा समिति में हिंदेशिया

संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति ने कनाडा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, जिसमें हिन्देशिया कमीशन को निर्देश है कि वह नीचे लिखी दो बातों पर डच व प्रजातन्त्र नेताओं को सहमत करने की कोशिश करें—(१) जोग्जाकार्ता में हिन्देशिया प्रजातन्त्र का शासन पुनः स्थापित करना।

(२) स्वतन्त्र हिन्देशिया संघ की स्थापना के लिये हेग में गोलमेज सम्मेलन बुलाना।

स्वीकृत प्रस्तावों पर दिल्ली के सरकारी क्षेत्रों में निराशा प्रकट की गयी है।

बर्मा सरकार ने जंगलों का कब्जा ले लिया

मैवूर, २८ मार्च। बर्मी सरकार के स्टेट टिम्बर बोर्ड के मार्केटिंग डायरेक्टर श्री टी० सी हो ने एक प्रेस भेंट में बतलाया कि हमारी सरकार ने गत १ फरवरी से यूरोपियन पट्टेदारों से जंगलों का सम्पूर्ण नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया है।

नया राशन

लखनऊ सोमवार। पहली अप्रैल से राशन निम्नलिखित मात्रा में मिला करेगा—

गेहूँ	४ छटांक
अतिरिक्त गेहूँ या चावल	१ छटांक
मोटा अनाज या मिलावट या आटा	१ छटांक
कुल—	६ छटांक
या	
गेहूँ	४ छटांक
मोटा अनाज या मिलावट का आटा	२ छटांक
कुल—	६ छटांक

एडमिरल निमिज कश्मीर में जनमत-गणना के प्रबंधक नियुक्त

लेक सक्सेस, अमरीका के एडमिरल चेस्टर डब्ल्यू० निमिज को, जो द्वितीय महायुद्ध के समय प्रशान्त में मित्रराष्ट्रों के प्रधान सेनापति थे, कश्मीर की जनमत-गणना का सरकारी तौर पर प्रबन्धक नियुक्त किया गया।

नयी दिल्ली से संयुक्त राष्ट्र संघ के कश्मीर कमीशन की ओर से एक प्रेस विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है जिसमें घोषणा की गयी है कि संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल श्री ट्रिग्वेली ने एडमिरल निमिज को कश्मीर जनमत गणना प्रबन्धक नियुक्त किया है। हिन्द और पाकिस्तान दोनों सरकारों ने एडमिरल निमिज की नियुक्ति मन्जूर कर ली है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजु०

आर्य्यमित्र

अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहत.पृथक् एतामेतस्येर्ष्यामुद्नाग्निमिव शमय ।
अथर्व ७।४५।१२

हे प्रभो ! जैसे दावानल जंगल को जलाता है उसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ को जलाने वाली ईर्ष्यालु मनुष्य की ईर्ष्या को शान्त कर । जैसे अग्नि को जल से शान्त करते है ।

गुरुवार ३१ मार्च १९४९

संस्कृत यूनिवर्सिटी और गुरुकुल

(कैसे लाभ उठावें ?)

(३)

गत ३ मार्च और १० मार्च के अंकों में हम यह बतला चुके हैं कि ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म प्रसार और आर्य संस्कृति की रक्षा के लिये मूलभूत आकर ग्रन्थ, वेदों के पढ़ने पढ़ाने और संस्कृत के अध्ययन को, आर्यों का परम कर्तव्य बतलाया था। अतः इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये आर्य समाज ने सराहनीय प्रयत्न किया और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुन. स्थापना की।

इन प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप देश भर में अनेक गुरुकुल आदि संस्थाये प्रचलित की गई। यद्यपि इन प्रयत्नों में बहुत कुछ सफलता हुई परन्तु फिर भी अनेक असम्भावित कारणों से उनको अपने आदर्श की उच्चता को पहुँचने में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकीं।

इसके अतिरिक्त घोर आर्थिक कठिनताओं और अन्य अनेक समस्याओं के कारण आर्य समज की शिक्षण संस्थाये बहुत अधिक प्रगति न कर सकी। न उनमें एकसूत्रता ही उत्पन्न हो सकी और न नवीन स्फूर्ति ही।

अब समय परिवर्तित होचुका है। हमारे प्रान्त की सरकार ने सम्पूर्ण भारत में विस्तृत संस्कृत विद्यालयों को सुसंगठित कर 'संस्कृत विश्व विद्यालय' का रूप देने की योजना निर्माण की है जिसका संक्षिप्त विवरण व इतिहास १० मार्च के 'आर्य मित्र' में प्रकाशित हो चुका है। विचारणीय यह है कि गवर्नमैन्ट के इन प्रयत्नों में आर्य समाज की गुरुकुल आदि संस्थायें किस प्रकार सहयोग दे सकती है और सरकार के इन प्रयत्नों से किस प्रकार लाभ प्राप्त कर ऋषि दयानन्द के उद्देश्य पूर्ति को अधिक सार्थक बनाया जा सकता है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्यकता है कि आर्य समाज के शिक्षा शास्त्री विद्वान, गुरुकुलों के विद्वान स्नातक मिलकर आर्यसमाज की सम्पूर्ण शिक्षा प्रगति व प्रयत्नों का गम्भीर समीक्षण करें और उसके मौलिक सिद्धान्तों का निश्चयकर भविष्य के लिये प्रशस्त कार्य प्रणाली का निर्णय करें।

इसमें सन्देह नहीं कि यदि किसी प्रकार से भी इन सब संस्थाओं का कोई संगठन हो सके तो उससे सब को ही लाभ होगा और उनमें नव जीवन व नवशक्ति का उदय हो सकेगा। ऐसी दशा मे एक समय ऐसा भी आसकता है जब कि भारत में एक वैदिक विश्वविद्यालय' की स्थापना की जा सके। संगठन से यह अभिप्रेत नहीं है कि किसी भी संस्था की स्वतन्त्रता मे बाधा उपस्थित की जावे प्रत्युत अभिप्राय केवल इतना ही है कि उनमें परस्पर सहयोग हो ताकि सहानुभूति से सम्मिलित होकर वे प्रगति कर सकें।

यदि आर्य विद्वान इन सुझावों पर उचित निर्णय कर सकें और इस दिशा में आगे बढ़ सकें तो न केवल इससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा ही बढ़ जायगी प्रत्युत उससे गुरुकुलों का आदर बढ़ेगा और वैदिक धर्म व आर्यसंस्कृति के प्रसार से देश का कल्याण होगा।

विचारणीय यह है कि—

(१) किन २ उपायों से गुरुकुलों की परीक्षाओं का स्तर समान तथा आदरणीय हो सकता है और उसमें अधिक वास्तविकता और व्यावहारिकता आ सकती है !

(२) गुरुकुलों के पाठ्यक्रम मनमाने न होकर कुछ निश्चित मौलिक सिद्धान्तों के आधार पर हों और उसी भावना पर आर्य समाज की अन्य संस्थायें अपनी २ शिक्षा का सञ्चालन करें।

(३) जीवनयात्रा की सफलता की दृष्टि से गुरुकुल की शिक्षा में सामयिकता का प्रवेश कहां तक वाञ्छनीय है ? उसके लिये क्या उपाय किया जावे ?

(४) विशेष विचारणीय यह है कि गवर्नमेंट की 'युक्त प्रान्तीय संस्कृत पाठशाला पुन. संगठन समीति' तथा 'संस्कृत विश्व विद्यालय' निर्माण की घोषणाओं व योजनाओं का आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं की प्रगति पर क्या प्रभाव पड़ सकता है और हम उनसे अधिक से अधिक क्या लाभ उठा सकते हैं ?

यह प्रयत्न किया जाना चाहिये कि गुरुकुल के छात्र जितना अध्ययन करते हैं उनका गुरुकुल से बाहिर निकलने पर शिक्षा के क्षेत्र में अथवा अन्य क्षेत्रों में पूर्ण सदुपयोग किया जासके, और उनको नये सिरे से नवीन पढ़ाई में अपना समय नष्ट न करना पड़े। इसका उपाय सोचना होगा। यह तभी हो सकता है जब शिक्षा का सञ्चालन इस ढंग पर किया जावे जिसे गवर्नमेंट का शिक्षा विभाग तथा यूनिवर्सिटियां भी स्वीकार कर सकें और उसका आदर करें बिखरे हुये गुरुकुलों के द्वारा ऐसा होना सम्भव नहीं है।

यह भी विचारणीय है कि संस्कृत के वास्तविक प्रौढ़ विद्वान् आर्य समाज में कैसे उत्पन्न किये जावें ? अभी तक गुरुकुलों की पढ़ाई अधिकतर, 'साधारण ग्रेजुयेट शिक्षा' तक ही सीमित है। उनका ध्यान विशेष उत्तराध्ययन Post Graduate study अथवा अनुसंधान Reserch की ओर प्राय नहीं गया है।

अतः यह कुछ अनुचित न होगा कि इन आवश्यकताओं की पूर्ति को ध्यान में रखते हुये बनारस जैसे किसी विशेष स्थान पर एक विशेष संस्था की स्थापना की जावे और आवश्यकतानुसार उसमें भारत के विभिन्न भागों, संस्थाओं व गुरुकुलों से आवश्यक छात्र वृत्ति को देकर उत्तराध्ययन के लिये छात्र भेजे जावें। बनारस जैसे विद्या के क्षेत्र में जहां पुस्तकालय तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ विद्वान् आदि उचित साधन उपलब्ध हैं, अत्यन्त अल्प व्यय से उक्त प्रकार का विशिष्ट विद्यालय जैसा चलाया जा सकता है वैसा अन्य किसी स्थान पर नहीं चलाया जा सकता।

प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज के नेताओं का ध्यान इधर आकर्षित हुआ है और आ० प्र० सभा के प्रधान श्री राजगुरुधुरेन्द्रजी और श्री मदनमोहन जी सेठ के उद्योग से गत २० मार्च को मेरठ में लगभग सभी गुरुकुलों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ था।

इस परिषद में इन सब बातों पर विचार हुआ और निश्चय हुआ है कि सार्वदेशिक सभा के आधीन 'गुरुकुलीय शिक्षा मण्डल' की स्थापना की जावे जो आर्य समाज के विभिन्न प्रकार के समान विद्यालयों के लिये पाठ्यक्रम आदि निर्माण करे। राजकीय सहायता प्राप्त करने व गुरुकुलीय शिक्षा के आदर्शो के प्रसार के लिये यथा सम्भव प्रयत्न करें।

आशा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्यान भी इस ओर उचित रूप में आकृष्ट होगा और इस सामयिक प्रयत्न का कुछ लाभ उठाया जा सकेगा।

—×—

देशों की—गुटबन्दी

'देहली एशियन सम्मेलन' को मुख्यतः 'इण्डोनेशिया—डच' समस्या को हल करने के लिये बुलाया गया था, रूस के प्रमुख सरकारी पत्र 'प्रवदा' तथा वहा के अन्य समाचार पत्रों में इस आधार पर समालोचना की गई थी कि यह सम्मेलन भी पश्चिमीय राष्ट्र (Western

union) व ब्रिटेन कनाडा, फ्रांस बैल्जियम, नीदरलैण्ड, लक्समबर्ग आदि ७ देशों द्वारा वाशिंगटन में निर्माण किये जारहे अटलांटिक देशों (Atlantic Pact) के प्रादेशिक गुटों (Regional groups) के हानिकारक तथा संसार की शांति को भंग करने वाली गुटबन्दियों के समान ही एक नवीन गुट बनाने का आयोजनमात्र है।

रूसी समाचार पत्रों ने, संसार में हो रहे परिवर्तनों की उपेक्षाकर सम्भवतः किसी प्रच्छन्न राजनैतिक उद्देश्य से इस 'एशियन कान्फ्रेन्स' को भी अंग्रेजों और अमेरिका के प्रोत्साहन पर बुलाये जाने का असत्य आरोप किया था।

सुरक्षा कौंसिल के २३ मार्च के इस सम्बन्ध के निश्चय ने इस आक्षेप की असत्यता सिद्ध भी करदी है, कौंसिल का निर्णय दिल्ली के कान्फ्रेन्स के सुझाव के प्रतिकूल हुआ है।

रूस स्वयं ही इस प्रकार की गुटबंदियां करने में प्रवीण है इसलिये उसने 'स्केन्डेनेवियन संघ' का विरोध प्रारम्भ कर दिया है और नारवे को धमकी भरा पूंछ ताछ का एक नोट भेजकर अनाक्रमण संधि (No neagression pact) के लिये परामर्श और निमन्त्रण दिया है। नारवे के १ फरवरी के नम्र उत्तर से भी उसे सन्तोष नहीं हुआ है।

दूसरी ओर, इसके विरुद्ध लयडन में ३ फर्वरी को संसार में शान्ति स्थापन के लिये किये गये श्री चर्चिल के कार्यों व प्रयत्नों की प्रशंसा में हालैण्ड द्वारा 'गोल्ड ग्रेटियस' नामक शान्ति के स्वर्णपदक से विभूषित किये जाने के अवसर पर उन्होंने इन्डोनेशिया में हालैण्ड द्वारा अराजकता तथा कम्यूनिज्म के दो राक्षसों से उस देश की रक्षा करने के प्रयत्नों की सराहना की है। उन्होंने योरोपियन देशों के ज्ञानपूर्वक 'पश्चिमीय संघ' स्थापना की दृढ़ इच्छा की प्रशंसा की और आशा प्रकट की कि इससे योरोप पुनः अपने पूर्वयश और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर संसार की दुःखित जनता को स्थायी शान्ति और सुख प्रदान करेगा, तथा इस प्रकार के प्रादेशिक संगठन के निर्माण ही संसार की व्यवस्था और सुरक्षा का कारण होंगे।

संसार में आज व्यक्तिवाद व ('प्रजातन्त्र') एक पक्ष में, और समाजवाद व साम्यवाद दूसरे पक्ष में रहकर परस्पर संघर्ष कर रहे हैं। इन दो सिद्धान्तों की आड़ में योरोप का राजनीति के चतुर खिलाड़ी अपने २ पक्ष का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने का वही पुराना खेल, रूप बदल कर खेल रहे हैं। कुछ ऐसे देश भी हैं जो इन दोनों गुटों से पृथक रहकर निष्पक्ष होकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। नवीन स्वतन्त्रता प्राप्त भारत देश भी उन्हीं देशों में से एक है। उसने वस्तुतः दो विरोधी महाशक्तियों के मध्य में स्थान ग्रहण किया है। इसी प्रकार स्वीडन के नेतृत्व के अन्तर्गत स्केन्डेनेविया के देशों का संघ भी इन दोनों शक्तिशाली दलों से पृथक रहने की इच्छा मात्र का द्योतक है परन्तु ज्ञात होता है कि रूस की वैदेशिक नीति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में किसी देश अथवा देश समूहों के निष्पक्ष रहने की नीति को अपने लिये उचित नहीं समझती है। अतः वह रूस के प्रभाव में आने के अनिच्छुक सभी देशों को अंग्रेजों और अमेरिका के प्रभाव में जाने का सन्देह करता है।

अब १८ मार्च को वाशिंगटन से ७ देशों ने घोषणा की है कि वे योरोप में आक्रमण को रोकने के लिये सम्मिलित सशस्त्र कार्यवाही करेंगे। यह पैक्ट २० वर्ष के लिये होगा और ४ अप्रैल को इस पर हस्ताक्षर होंगे। अन्य पश्चिमीय देशों के भी इससे सम्मिलित हो जाने की आशा है।

योरोपियन राजनीति का मुख्य आधार गुटबन्दी है। चतुर राजनीतिज्ञों की शक्ति सन्तुलन नीति उसी का परिणाम है। इसलिये गुटबन्दियों का सर्वत्र दौर दौरा है। अनुभव यही कहता है कि कालान्तर में इसका परिणाम, पूर्व के समान ही, विनाश युद्ध और नरसंहार के अन्य कुछ न होगा। इस स्थायी आशाजनक स्थिति से प्राचीन आर्य ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट नियन्त्रित राज्य शक्ति की राज्य पद्धति ही रक्षा कर सकती है। अन्य उपाय नहीं है।

॥ ओ३म् ॥

"आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड"

शुभ सूचना

१—कम्पनी के हिस्सेदारों को यह जान कर हर्ष होगा कि कम्पनी के हिस्सों के एलाटमेंट की रजिस्ट्री हो जाने से हिस्सों के प्रमाण-पत्र भेजे जाने प्रारम्भ हो गए हैं।

सरकारी कार्यों में विलम्ब के कारण शेयर सर्टीफिकेट इससे पूर्व न भेजे जा सके थे।

२—२५ अक्टूबर १९४८ को भेजे गए एलाटमेंट की सूचना के कतिपय पत्र D.L.O. से वापिस आ गए हैं। निम्न सज्जन अपना ठीक पता शीघ्र लिखें जिससे शेयर सर्टीफिकेट उनको भेजे जा सकें—

(१) श्री छुगालाल, बाँदा।
(२) ,, ला० हरिश्चन्द्र, मेरठ।
(३) ,, बलवन्तसिंह रि० एकाउन्टेन्ट कैनाल डिपो० मेरठ।
(४) ,, विशेश्वर सिंह कैनाल डिपो० मैनपुरी।
(५) , मोहनलाल पाल, मोटर ड्राइवर, शिकोहाबाद।
(६) ,, मुन्नीदेवी C/o श्री कमला बाबू, चाणक्यपुरी मेरठ।

३—आर्य जगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के द्वारा झाँसी के श्री गिरजाशंकर जी ने कम्पनी के ४० हिस्सों का (५००) भेजा है।

दोनों सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं।

मदनमोहन सेठ
मैनेजिंग डाइरेक्टर

संस्कृत साहित्य सम्मेलन

काशी, २४ मार्च। अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन का उन्नीसवां अधिवेशन, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा और द्वितीया (२९-३० अप्रैल ४९) को काशी में समारोह के साथ सम्पन्न होगा। महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी सभापति निर्वाचित हुए हैं। सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए माननीय डाक्टर कैलाशनाथ जी काटजू (गवर्नर बंगाल प्रांत) को निमंत्रित किया गया है।

इस अवसर पर स्वाधीन भारत में संस्कृत शिक्षा पद्धति का पुनर्निर्माण, संस्कृत विद्वानों का देश के प्रति कर्तव्य और भारतीय संस्कृति प्रचार आदि विषयों पर गंभीर विचार विमर्श होगा। भारत के सभी प्रान्तों से प्रसिद्ध विद्वान सम्मिलित हो रहे।

सम्मेलन के साथ विवाद-प्रतियोगिता शास्त्रार्थ-प्रतियोगिता, संस्कृत-कवि-सम्मेलन संस्कृत नाटक अभिनय आदि भी होंगे।

सभा भवन में प्रीतिभोज

२६ मार्च १९४९ को युक्त-प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्य सदस्यों को सभा के अधिकारियों की ओर से कार्यकर्त्ता प्रधान श्री मदनमोहन सेठ जी की विशेष योजना और प्रयत्नों से प्रतिभोज दिया गया जिसमें माननीय चन्द्रभान गुप्त खाद्य मन्त्री, माननीय श्री गिरधारीलाल जी एक्साइज मिनिस्टर, श्री चरणसिंह जी सभा सचिव, श्री अलगूराय जी शास्त्री, श्री दीनदयालु जी शास्त्री, श्री बा. सुरेन्द्र विक्रम सिंह जी रि जज, श्री बा. रतनलाल जी रि जज, श्री राधाराम जी एम. एल. सी. श्री अशोकजी सम्पादक स्वतंत्र भारत आदि गण्यमान्य सज्जन उपस्थित थे। मान्य अतिथियों का मिष्टान्न तथा फलों से स्वागत किया गया। इसके बाद सभा के प्रधान राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री जी ने अभ्यागतों का हार्दिक स्वागत किया और सभा के कार्य का दिग्दर्शन कराते हुये बतलाया कि सभा की स्थापना ६२ वर्ष पूर्व १८८६ में हुई थी तब से अब तक आर्यसमाज का विस्तार इस प्रांत में १००० आर्यसमाजों तक जा पहुँचा जिनमें ८०० समाजें सभा से सम्बद्ध हैं। सभा की ओर से ५० वैतनिक १७० अवैतनिक तथा १०० के लगभग स्वतंत्र प्रचारक कार्य करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सभा से किसी न किसी प्रकार का सम्पर्क रखने वाले ५ डिग्री कालेज, २१ इन्टर कालेज ६० कन्या पाठशालायें, २० गुरुकुल तथा ५० अन्य पाठशालायें हैं। आर्यसमाज की शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि जात पांत तथा छूतछात का विचार किये बिना शिक्षा उस समय से दी जाती रही है जबकि जाति भेद व छूतछात की बुराई का किसी को विचार भी उत्पन्न न हुआ था, इसी प्रकार स्त्री शिक्षा के लिये भी भारतीय आदर्श के अनुसार सुशिक्षित सुगृहिणी बनाने के उद्देश्य से स्त्री शिक्षा कन्या पाठशालाओं द्वारा दी जाती रही है, और समान रूप से संस्कृत के पठन पाठन अध्ययनाध्यापन के प्रचार के परिणाम स्वरूप २०, २५ गुरुकुल और संस्कृत पाठशालायें हैं। सामाजिक क्षेत्र में १३ अनाथालय, ४ दस्तकारी स्कूल लखनऊ का सुप्रसिद्ध आर्यनगर सेटिलमेंट, नायक जाति उद्धार आदि अनेक आन्दोलन हो रहे हैं।

इस वर्ष मद्यनिषेध आन्दोलन में सभा द्वारा ८१६२) व्यय किये गये।

अन्त में श्री अलगूराय शास्त्री ने एम. एल. ए. की ओर से सभा के कार्यों की प्रशंसा करते हुये आशा प्रकट की कि देश के सभी सार्वजनिक कार्यकर्ता संकुचित विचारों के काल्पनिक भय से भयभीत न होकर आर्यसमाज के द्वारा देश के नैतिकता व सदाचार का स्तर ऊँचा करने में सहायक होकर भारतीय संस्कृति के उद्धार का श्रेय प्राप्त करें।

भ्रष्टाचार का मूल कारण

(श्री किशोरीदास वाजपेयी कनखल)

लोगों को आश्चर्य होता है कि दो ही वर्ष में अपना राष्ट्र और राज्य भ्रष्टाचार का ऐसा बीभत्स शिकार कैसे हो गया। महात्मा गांधी के सामने ही भ्रष्टाचार इतना बढ़ चुका था कि उन्हें इस से अपार दुख हुआ था और उन्हों ने बार बार अपने प्रवचनों में इस दुख को प्रकट किया था। वे भी इस भयंकर रोग के शमन में अपने को असमर्थ अनुभव कर रहे थे। इस का कारण क्या है? क्या आपने कभी इस पर विचार किया है? रोग का निदान (मूलकारण) जाने बिना उसका उन्मूलन सम्भव नहीं है। जड़ कटे भी कैसे जब तक उसका पता ही न हो। यह आवश्यक है कि इस भ्रष्टाचार के मूल का हम पता लगायें और फिर उसी को दूर करें। अन्यथा, राष्ट्र को यह घुन निःसार और निःसत्व कर के किसी काम का न छोड़ेगा।

हमारी अपनी गलती

सन् १९३७-३८ में जब प्रान्तीय शासन कांग्रेस के हाथ में पहले पहल आया था, तब भ्रष्टाचारी राज्याधिकारी तथा उनके मातहत कर्मचारी सशंक हो उठे थे, थर्रा गये थे। वे कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं से डरते रहते थे कि कहीं कोई रिपोर्ट ऊपर न कर दे। बहुत दिन मिनिस्ट्री नहीं रही, त्यागपत्र दे दिये गये, नहीं तो प्रवाह बहुत अच्छा चल रहा था।

दूसरी बार सन् १९३६ में जब प्रान्तीय शासन और उसके बाद केन्द्रीय शासन का बागडोर कांग्रेस के हाथ में आई तब भी स्थिति बिगड़ी नहीं थी। साधारण स्थिति थी। नये शासन में एक बार फिर भ्रष्ट अफसरों में खलबली मची। परन्तु बहुत जल्दी स्थिति ने पलटा खाया।

सन् १९४७ का अगस्त का महीना और उसका दूसरा सप्ताह था, जब एक बहुत बड़ी भूल हुई। १५ अगस्त को ब्रिटिश सरकार से विधिवत् सत्ता ग्रहण करने से लगभग सौ घंटे पहले हमारे प्रान्त (युक्तप्रांत) के प्रधान मन्त्री माननीय पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ने प्रांत के कमिश्नरों की एक मीटिंग बुलाई। इस मीटिंग में प्रधान मन्त्री महोदय ने प्रधान रूप से कमिश्नरों को जो आदेश दिया, वह इस प्रकार था—"आप लोगों को और राज्य के सभी अधिकारियों को चाहिये कि शासन प्रबन्ध का काम कांग्रेस-कार्यकर्ताओं से मिलकर चलावें, क्योंकि यह मिनिस्ट्री उन्हीं के सहारे है।"

ऐसा निर्देश देना एक भयंकर राजनीतिक एवं शासन सम्बन्धी भूल थी, जिसका विरोध जहां तक हमें मालूम है कहीं नहीं हुआ। किसी देश के प्रजातन्त्रीय शासन में यह बात नहीं है कि राजकर्मचारी शासन कार्यों में किसी भी पार्टी के सदस्यों से सलाह मशविरा लेते हों। सत्तारूढ़ पार्टी की नीति उसके नेताओं द्वारा निर्णीत होती है—मन्त्रिमण्डल शासन की नीति देता है—और

लोग कांग्रेस को बदनाम कर रहे हैं। लूट रहे हैं और चूस रहे हैं। शिकायत कौन किसकी करे! 'तू न कह मेरी मैं न कहूँ तेरी।'' यदि किसी ने ऊपर शिकायत कर भी दी, तो और बड़े हिमायती अपराधी की सिफारिश को पहुँच जाते हैं और उलटा शिकायत करनेवाले को ही फसादी, झगड़ालू, पंचमांगी, कम्युनिस्ट, देशद्रोही, और भी न

आज प्रान्तों की सरकार भ्रष्टाचार को रोकने के लिये विविध विभाग खोल रही है और बहुत रुपया इस पर व्यय किया जा रहा है। पर स्पष्ट है कि 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की" की उक्ति के अनुसार भ्रष्टाचार को रोकने में कोई विशेष सफलता नहीं मिली, हां! एक रोग को दबाया तो चार और पैदा हो गये। इसी कारण जनता में प्रतिदिन असन्तोष बढ़ता जा रहा है क्यों कि वही चारों तरफ से इसका शिकार बनती है। सुयोग्य लेखक ने इसके मूल कारणों का निर्देश करते हुये सरकार तथा कांग्रेस से अनुरोध किया है कि वे नेक नीयती से इस दिशा में दृढ़ पग उठा कर अपने अपने कर्तव्य का पालन करें—लेख पठनीय है

—सम्पादक

उसे कार्य में परिणत करते हैं दूसरे राज्याधिकारी, विभागीय अधिकारी। सब अधिकारी फिर सब जगह सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्यों से सलाह लेते नहीं फिरते। पार्टी के सदस्य राज्याधिकारियों पर दृष्टि रखते हैं कि कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं हो रही। वे सब सूचनाएं अपने नेताओं को—मन्त्रिमण्डल को—देते रहते हैं, जहां से सूत्रसंचालन होता है। तभी सब ठीक रहता है। बहुत सम्भव है कि दूसरे प्रान्तों के प्रधानमन्त्रियों ने भी ऐसी मीटिंगें बुलाई हों। नीति तो सर्वत्र एक ही है न।

अब बन आई

बस इस मीटिंग के बाद शासनतन्त्र बिगड़ा। भ्रष्ट अफसरों ने कांग्रेसियों से मेल-जोल बढ़ाना शुरू किया। मिल जुल कर काम करने का निर्देश था ही। फिर प्रलोभन बुरी चीज है। साधना के कष्टों से जो विचलित नहीं होते, सिद्धि प्राप्त हो जाने पर उसका उपयोग करते हुए वे भी विचलित हो जाते हैं। जो तपस्वी कांग्रेसजन स्वातन्त्र्य युद्ध की कठोरतम यातनाएं सह कर भी प्रतमंग न हुए थे, इन प्रलोभनों के सामने वे भी बह गये। जब असली कांग्रेसियों की यह दशा हुई, जो फिर नकली और फसली कांग्रेसियों का तो कहना ही क्या! वस्तुतः यही

जाने क्या क्या बना छोड़ते हैं। बस खेल खतम!

इस भ्रष्टाचार के साथ साथ सभी सरकारी विभागों में अनुशासनहीनता भी फैला। नायब तहसीलदार तहसीलदार का निर्देश अच्छी तरह नहीं मानता है और अकड़ता है, इस जोर पर कि जिला कांग्रेस का प्रेजीडेण्ट उसके कहे में है। शाम को कलक्टर के पास चले जायँगे और तहसीलदार के कान खिंचवा देंगे। यदि तहसीलदार किसी कांग्रेसी नेता को मुट्ठी में किये है, तो वह कलैक्टर को कुछ नहीं समझता। इसी प्रकार सब महकमों में गड़बड़ी फैली। पुलिस किसी बदमाश को पकड़ती, तो थाने में ले जाने के बजाय कांग्रेस कमेटी के सैक्रेटरी के घर पर ले जाता वे कहते छोड़ दो, तो वह तुरन्त छोड़ दिया जाता और वे कहते कि इस पर मामला चलाओ, तो उसे थाने में ले जाकर बन्द कर दिया जाता। मैंने स्वयं ऐसी घटनाएं देखीं। पर किया क्या जाय? अखबार वाले भी तो कांग्रेसी या कांग्रेसी सरकार की आलोचना नहीं छापते। आखिर जब मुझसे न रहा गया, तो दस रुपये खर्च करके एक पत्रक छपा कर प्रकाशित करवाया। कांग्रेस के सब अधिकारियों के पास भेजा। अ०

भा० कांग्रेस के तत्कालीन प्रेजीडेण्ट डा० राजेन्द्रप्रसाद के पास भी भेजा। यह बात जून १९४८ की है। सम्भव है ऐसी और भी शिकायतें डा० राजेन्द्रप्रसाद के पास पहुँची हों। जुलाई में उनकी आज्ञा प्रचारित हुई कि कोई भी कांग्रेस कार्यकर्ता राजकर्मचारियों से किसी भी प्रकार का सम्पर्क न रखे और शासन कार्य में दखल न दे नहीं तो उस पर अनुशासन की कार्यवाही होगी। रोग बहुत बढ़ चुका था, इसलिये उस 'आज्ञा-चन्द्रोदय' का कुछ प्रभाव न पड़ा। खून का चस्का बुरा होता है। इसके बाद नये कांग्रेसाध्यक्ष डा० पट्टाभि-सीतारामैया ने भी ऐसा ही आदेश निकाला है। स्वयं कांग्रेस ने भी एक प्रस्ताव पास करके कांग्रेसजनों को अपना नैतिक स्तर ऊँचा करने के लिये सावधान किया है। परन्तु स्थिति में कोई सुधार नहीं। सब उस तरह मिल कर काम बना रहे हैं।

इसका कारण क्या है?

कांग्रेस कार्यकर्ता अपने अध्यक्ष की आज्ञा न माने और उसका प्रत्यक्ष उल्लंघन करें यह आश्चर्य की बात है। असल में अब साधू तो कमली को छोड़ रहा है, पर कमली साधू को नहीं छोड़ रही है। कांग्रेसी लोग तो अब सरकारी अफसरों के पास कम जाने लगे हैं, पर वे अफसर खुद कांग्रेसियों से मिल लेते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष की आज्ञा सरकारी अफसरों पर लागू नहीं होती। कोई सरकारी आज्ञा है नहीं कि सरकारी नौकरों को अपने काम के बारे में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से सलाह मशविरा करना मना है और ऐसा करने पर दण्ड दिया जायगा। तब वे क्यों मानें? मिलना भगवान जाता है।

इस लिए, इस ओर कड़ा कदम उठाने की जरूरत है और एक

सरकारी हुकम

ऐसा निकलना चाहिये कि सरकारी काम में किसी भी पार्टी के सदस्य से सलाह मशविरा लेना जुर्म है। यदि कोई तुम्हारे काम में बाधा डाले, अपना प्रभाव काम में लाने का प्रयत्न करे, तो उसकी रिपोर्ट अपने उच्च अधिकारी को तुरन्त दो। सरकार उस व्यक्ति को कड़ा सजा देगी, जो सरकारी अफसरों या साधारण कर्मचारियों के काम में टांग अड़ाने का प्रयत्न करेगा।

ऐसा रुख सरकार धारण करेगी, तभी कुछ काम होगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस महोदय ने

महर्षि दयानंद

[सुरेशचंद्रजी वेदालंकार)

भारत के समाज सुधारकों के नाम स्मरण करते समय स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम हमें सर्वोपरि परिलक्षित होता है। स्वामी जी के विचारों का प्रभाव न केवल भारतीय जनता पर ही पड़ा अपितु सुदूर पश्चिम के बड़े बड़े विचारक और दार्शनिक भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। फ्रांस देश के एक प्रसिद्ध लेखक एवं दार्शनिक रोमांरोलां ने स्वामी जी के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है—

'शंकराचार्य के बाद वेद का इतना बड़ा पण्डित दूसरा नहीं हुआ है। यह एक सच्ची बात है कि दयानंद ने ब्रह्म समाज और रामकृष्ण मिशन के प्रभाव को अतिक्रम कर दिया है। भारतीय जनता की चेतना के पुनरुद्धार के दिन देशवासियों को, जिनको इस सन्यासी ने अपनी दुर्जय शक्ति द्वारा ऊंचा उठाया है संन्यासी की कथा का बार बार स्मरण करना चाहिए।'

इस बात से ज्ञात होता है कि जब वह विदेशी दार्शनिक भी स्वामी जी की कथा का बार बार सुनाया जाना अनुभव करते हैं और उनके जीवन से प्रभावित होते हैं तो हम लोग जिनके लिए उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया उन्हें उनके जीवन का सुनना और उस पर आचरण करना कितना आवश्यक है!

स्वामी जी का जीवन विप्लव की एक कहानी है। ये अपने सारे जीवन में कुरीतियों एवं अंधविश्वासों से संघर्ष करते रहे, उन्होंने भारतीय एवं सभी मानव संप्रदायों के सामाजिक, राष्ट्रीय तथा धर्म या ईश्वर संबंधी सब प्रकार की मिथ्या भ्रांतियों का प्रबल प्रतिरोध एवं अकाट्य प्रतिवाद किया है। अंध-विश्वासों में फंसे लोगों ने इनके ऊपर इनके जीवनकाल में नाना प्रकार के आक्रमण व अनेक प्रकार के दोषारोपण किए। पर सत्य हमेशा सत्य रहता है, हो सकता है कि थोड़ी देर के लिए हम उसे न पहचान सकें इसलिए हम जितना आगे बढ़ते जायगे, उन्नत होते जायगे उतना ही अधिक ऋषि की महत्ता को समझेंगे और उनके प्रति श्रद्धा से अवनत होंगे।

श्री पूज्य स्वामी जी को अपने थोड़े समय के जीवन में सामाजिक सुधार के लिए जो तुमुल संघर्ष करना पड़ा वह इतिहास की एक विशेष घटना है।

परंतु इस संघर्ष में वे न तो कभी किसी से डरे ही और न अपने मार्ग से विचलित ही हुए। असीम धैर्य के साथ अपने जीवन के उद्देश्य की ओर बढ़ते ही गए।

उत्तर भारत में और बम्बई प्रदेश में उन्होंने वेद और वैदिक धर्म का प्रचार किया। उस समय प्रायः सभी प्रामाणिक वेद भाष्य विलुप्त हो चुके थे। वेदों की भ्रांत व्याख्यायें प्रसिद्ध हो चुकी थीं। जिससे कि नाना प्रकार के मतों एवं सम्प्रदायों की सृष्टि हो गई और भारत के अधःपतन का मार्ग सुगम बन गया था। वेदों के प्रति इनकों न समझने के कारण लोगों में अश्रद्धा एव अनास्था की भावना आ गई थी। हिंदू या आर्य जाति के पास सर्वप्रधान एवं अपरिहार्य धर्म-ग्रंथ यही तो था और उसकी यह दशा थी। इससे बढ़कर हमारा और क्या अनिष्ट हो सकता था! इसी दुर्गति को दूर करने के विचार से स्वामीजी ने वेद भाष्य किया। उनके वेदभाष्य को देखकर योगिराज अरविंद ने अपने निम्न विचार व्यक्त किए हैं।

"अन्त में केवल यह भाष्य ही प्रामाणिक रूप में नहीं स्वीकार किया जायगा परंतु स्वामी जी की महत्ता एव दूरदर्शिता का अनुभव भी सर्वत्र होगा; क्यों कि उन्होंने ही वेदों का वास्तविक रहस्य आविष्कृत किया है विशृंखलता, अविद्या, अंधकार, और अनेक शताब्दियों के भ्रमजाल से जनता आबद्ध थी। उनकी दृष्टि ने इनको भेदकर सत्य को ग्रहण किया है।"

वेदभाष्य के अतिरिक्त ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार-विधि इत्यादि और भी अमूल्य ग्रंथों की रचना की है। इनके द्वारा अनेक युगों से चले आते हुए भ्रमजाल और अंध-विश्वासों पर जो इन्होंने कुठाराघात किया था उसी का परिणाम हुआ कि हमारा देश जागृत हुआ और संसार ने हमारी महत्ता समझी।

अनेक स्थानों पर वेदों के वास्तविक अर्थ तथा धर्म के वास्तविक स्वरूप के बारे में शास्त्रार्थ एवं भाषणोंद्वारा प्रचार करके सारे देश में एक नई विचारधारा और नई जागृति की लहर दौड़ा दी। बंगाल में एक बार शास्त्रार्थ के बाद वहाँ के प्रसिद्ध पंडित ताराचंद्र जी तर्करत्न ने सबके सामने कहा था कि मूर्तिपूजा तो वेदसम्मत नहीं है पर पेट के लिए उसका समर्थन करना ही जरूरी है। यदि हम उसके विरुद्ध कुछ कहें तो काशी नरेश हमको अविलंब ही अपने यहाँ से बहिष्कृत कर दें।"

इस प्रकार स्वामीजीने वैदिक धर्मकी व्याख्या और उसकी महत्ता का प्रतिपादन एवं अवैदिक मतोंका खन्डन करने के उद्देश्य से लगातार दस वर्ष तक सारे भारतका का तूफानी दौरा किया। इनके इस प्रकार के विप्लवात्मक कार्य से स्वार्थी और रूढ़ि विचारों का समुदाय इतना भयभीत हो गया कि एक ओर उन्होंने यश, ऐश्वर्य और धनादिके लोभ से स्वामीजी को वश में करने की चेष्टा की और दूसरी ओर गुप्त रूप से प्राणहानि का भी प्रयास किया। किंतु विधि का विधान दूसरा ही था। स्वामीजी को कोई भी प्रलोभन उनके मार्ग से नहीं डिगा सका उन्होंने एकमात्र सत्य और ईश्वर की प्राप्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। केवल विचार और वक्तृता द्वारा देश का कोई स्थायी उपकार नहीं हो सकता यह सोचकर उन्होंने बम्बई शहर में 'आर्य समाज" की स्थापना की। यह आर्य समाज' ही उनके जीवन की अंतिम और सर्व श्रेष्ठ भेंट है। उनकी मृत्यु के बाद एक ओर आर्य समाज ने अनेक स्थानों पर गुरुकुल, ब्रह्मचर्याश्रम आदि खोलकर कीर्ति प्राप्त की तो दूसरी ओर उसने सुदूर इंग्लैंड, अमेरिका, अफ्रीका और बगदाद इत्यादि स्थानों में भी वैदिक धर्मका प्रचार किया। आर्य एवं हिंदू जाति पर जब जब मुसीबतें आई आर्य समाज ने आगे बढ़कर उन सब विपत्तियोंका सामना किया और इसके नेतृत्वमें हिंदूजाति ने हमेशा अपने अस्तित्वकी, अपने मानकी रक्षा की। हैदराबाद में सन् १९३९ ई० में किया हुआ सत्याग्रह और उसमें प्राप्त विजय इसके ज्वलंत उदाहरण है। शिक्षा और धर्म प्रचार, अनाथ और पीड़ितों की सेवा, प्रभृति जनहितकर कार्यों में आर्य समाज ने सदा प्रमुख भाग लिया है। जिसकी अनेक लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा कि है।

स्वामी जी भारत जागृति के अग्रदूत थे यह एक सर्व सम्मत सिद्धांत है। यह महामहिमान्वित भारत वर्ष हजार वर्षो से अविद्या और अज्ञान के अंधकार में पड़ा हुआ था, अंधविश्वासों में इसकी शोचनीय अवस्था हुई थी।

(शेष पृष्ठ ११ में)

कल्पना और वास्तविकता

खलील जिब्रान

एक आदमी धूप में पड़ा सो रहा था, कि तीन चींटियां उसकी नाक पर आ इकट्ठी हुईं और अपने अपने खानदान की प्रथा के अनुसार अभिवादन करने के बाद परस्पर वार्तालाप करने लगीं।

पहली चींटी ने कहा—"मैंने इन पहाड़ों और घाटियों से ज्यादा बंजर जगह और कहीं नहीं देखी। मैंने यहां सारे दिन दाने की तलाश की है। लेकिन मुझे एक भी दाना नहीं मिला।

दूसरी चींटी ने कहा—"मुझे भी कुछ नहीं मिला यद्यपि एक एक चप्पा छान मारा मेरे ख्याल से यही वह कोमल और अस्थिर भूमि है जिसके बारे में हमारे जाति वाले कहते हैं कि यहां कुछ पैदा नहीं होता।"

इसके बाद तीसरी चींटी ने अपना सिर उठाया और कहा "मेरी सहेलियों! इस समय हम बड़ी चींटी की नाक पर बैठे हैं। जिसका शरीर इतना बड़ा है कि हम उसे नहीं देख सकते। इसकी छाया इतनी विस्तृत है कि हम उसका अनुमान नहीं कर सकते इसकी आवाज इतनी ऊंची है कि हमारे कान इसे सहन नहीं कर सकते और वह हर जगह मौजूद है।"

जब तीसरी चींटी ने यह बात कही तो दूसरी चींटियों ने एक दूसरे को देखा और जोर से हंसी। ठीक उसी समय आदमी नींद में हिला। उसने सोते-सोते में अपनी नाक को खुजलाया और तीनों चींटियां पिस कर रह गईं। इस विशाल ब्रह्माण्ड में हमारी सत्ता क्या इन चींटियों से कुछ अधिक है!

अभी थोड़े दिन हुए, कहा था कि, कुछ लोग अपने को बहुत बुद्धिमान समझते हुए न्याय-विभाग को भी सलाह मशविरा देने की धृष्ठता करने लगे हैं, पर उनकी शिकायत विधिवत् हाईकोर्ट में पहुंचेगी तो तो उन्हें अवश्य दण्ड भुगतना पड़ेगा। इसी प्रकार की चेतावनी पटना हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस महोदय को भी देनी पड़ी है। स्वयं कांग्रेस ने भी एक प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस कर्मियों को अपना नैतिक स्तर ऊँचा करने की चेतावनी दी है। अवश्य ही इन चेतावनियों का असर भ्रष्ट कर्मचारियों पर पड़ा होगा। परन्तु सरकार की ओर से यदि कड़ी कारवाई की जाय, तो उस का प्रभाव बहुत जल्दी और विस्तृत क्षेत्र पर पड़ेगा। यदि ऐसा न किया जाय तो हजारों भ्रष्टाचार विरोधी विभाग खोलने का कोई भी लाभ न होगा।

कौन कहां ?

आर्यसमाज और सर्वोदय समाज

[श्री नरदेव शास्त्री]

एक विचारणीय दृष्टिकोण —

ब्रिटिश राज्य के शासन काल में ही आर्यसमाज की स्थापना हुई थी और उसने उस समय पाश्चात्य संस्कृति के साथ टक्कर लेने में बहुत कुछ काम किया था। उसने भारतवासियों के सम्मुख पौरस्त्य धर्म, पौरस्त्य दर्शन पौरस्त्य शिक्षा दीक्षा, पौरस्त्य संस्कृति, पौरस्त्य सभ्यता का चित्र रख कर पाश्चात्य सभ्यता की ओर वेग से दौडने वाले भारतीयों को पीछे अपने धर्म की ओर हटाने के लिए प्रबल प्रेरणा की थी और उसका यह प्रभाव हुआ कि भारत पाश्चात्य सभ्यता के प्रवाह में बहने से बच गया। पर स्वामी दयानन्द के पीछे जहां उसने पौरस्त्य शिक्षा-दीक्षा प्रसार के लिये गुरुकुल पद्धति का प्रचार तथा प्रसार करके संसार का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया, वहां उसने स्वयं अपनी अधिक शक्ति को स्कूल कालिजों और आधुनिक पद्धति के प्रचार तथा प्रसार में नष्ट किया। एक ओर जनता को प्राचीन स्वराज्य की कल्पना देता रहा दूसरी ओर अपने स्थापित अंग्रेजी स्कूलों, कालिजों द्वारा अंग्रेजी शासन चक्र के कल पुर्जे तैयार करता रहा। वह अपने सिद्धान्तों के प्रचार तथा प्रसार के लिए अंग्रेजी शासन चक्र पर भरोसा रखने लगा था। सार्वभौम प्रचार तथा प्रसार की बातें करता हुआ भी मुसलमान ईसाइयों का बुरी तरह खण्डन करने लगा था। पहिले पहिले वह हिन्दुओं के पीछे बुरी तरह पडा, पर पीछे ढीला पड गया और हिन्दुओं के साथ नरमी तथा अन्य मतावलम्बियों के साथ सख्ती बरतता रहा। जब भारत में स्वतन्त्रता का आन्दोलन जोर पकड गया तब आर्यसमाज दो धाराओं में बट गया। कुछ हिन्दू महा सभा में गये अधिक कांग्रेस में गये। समष्टिरूप में आर्यसमाज वर्तमान राजनीति से पृथक् ही रहा। यदि कहीं ब्रिटिश शासन काल में आर्यसमाज अपने ढङ्ग की राजसभा बना कर अपने ढङ्ग की राजनीति का प्रचार करता तो तीन चौथाई भारत उसके पीछे चल पडता और सम्भवतः आज कांग्रेस शासन के स्थान में आर्यराज्य का स्वप्न कुछ तो पूरा उतरता, कुछ तो झांकी देखने को मिलती। पर होनहार और ही थी। आर्यसमाज की बागडोर ही ऐसे लोगों के हाथों में पडी और पडी रही कि जो ब्रिटिश शासन की छत्र-छाया को सौभाग्य समझते थे, समझते रहे, और सदैव यही पञ्चम स्वर उठाते रहे कि आर्यसमाज धार्मिक समाज है, उसका वर्तमान राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। वर्तमान राजनीति से संबंध न रखना था तो न रखते पर प्राचीन राजनीति से भी तो सम्बन्ध नहीं रक्खा। परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज पङ्गु रह गया। आर्य-

लेखक
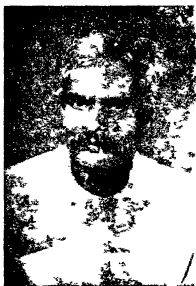
समाज रूपी तेजस्वी घोडे की चाल ही बदल गई। आर्यसमाज के अश्वारोहों ने घोड़े की चाल ही बदल दी, उसको अपनी स्वाभाविक चाल से न चलने दिया। बीच में आर्यस्वराज्य सभा चलाने का प्रयत्न हुआ था पर चल चला कर रह गया। अब लोग समष्टिरूप में अनुभव कर रहे हैं कि बडी भारी भूल हुई पर अब क्या हो सकता है। अब आर्यसमाज समष्टिरूप में चाहे तो भी घोड़े की चाल बदल नहीं सकता।

सच्चे अर्थों में आर्यसमाज ने कुछ किया तो वह गुरुकुल तथा गुरुकुल महाविद्यालयों ने किया, जो स्वशिक्षा-दीक्षा में संलग्न रहे। विपरीत समय, लोकाश्रय नहीं, राजाश्रय नहीं, फिर भी स्वोद्देश्य पर डटे ही रहे और स्वशिक्षा दीक्षा पद्धति की धाक संसार पर जमाते रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ये संस्थायें भी ढङ्ग बदल रही हैं। सरकारी सहायता लेकर, और ढङ्ग से चलने चलाने की सोच रही हैं। ब्रिटिश शासनकाल में सब प्रश्न पीछे रहकर पेट का प्रश्न इतने जोर से भारतीय जनता के सामने आया कि गुरुकुलों के सञ्चालकों के धैर्य का बांध टूट गया। साथ ही गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों की घबराहट भी बढ गई हमारी शिक्षा किस काम की, जङ्गल में जङ्गलियों की तरह कब तक पडे रहेंगे, इन गुरुकुलों की डिगरियों का क्या होगा इत्यादि बातें इनके मस्तिष्क में आई। अब गुरुकुल इन बातों में गौरव अनुभव कर रहे हैं कि इनकी अधिकारी श्रेणी के लोग पंजाब तथा अन्य प्रान्त की शास्त्री आदि परीक्षा दे सकते हैं। इनका स्नातक एकदम बी० ए० अथवा एम० ए० दे सकेगा, इनके आयुर्वेदालङ्कार अथवा अन्य वैद्यक के उपाधिधारी छात्र इण्डियन मेडिसन बोर्ड द्वारा ए अथवा बी श्रेणी में माने जायेंगे ये गुरुकुल किन उद्देश्यों से खुले थे और किधर आ पडे। ये तो इधर हो ही रहा था कि उधर सर्वोदय समाज की स्थापना हो गई। यह समाज प्राचीन संस्कृति के उद्धार की बात कह रहा है पर गांधी जी की बात को लेकर कह रहा है। आर्य समाज भी सर्व संसार अथवा संसार के उपकार की बात कर रहा था पर स्वामी दयानन्द की बात को लेकर। सर्वोदय समाज वेद को मानेगा पर वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानकर न चलेगा। वेदों को आर्यों का पुरातन सभ्यता का इतिहास मानकर चलेगा मूर्ति पूजा का खण्डन सौम्य शब्दों में यदाकदा चलता करता रहेगा पर महात्मा गांधी की समाधि का तो पुजारी बनेगा ही सर्वोदय समाज दर्शन, उपनिषद, पुराण, इतिहास, गीता सब मानेगा साथ साथ भक्ति मार्ग पर जोर देगा और यह भक्ति मार्ग वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के ढङ्ग पर चलेगा प्रार्थना के समय गीता, उपनिषद, बाइबल, कुरान, पुराण आदि चलेंगे ही चर्खा भी चलता रहेगा इस सर्वोदय समाज का चर्खा प्रदर्शन प्रधान अङ्ग रहेगा। भजनों में कबीर भी चलेंगे, 'जन गण मन नायक जय भारत भाग्य विधाता' चलेगा ही। 'रघुपति राघव राजा राम' 'ईश्वर अल्ला' के साथ चलेगा ही। सर्वोदय समाज गो सेवा का प्रश्न हाथ में लेगा ही। जात पाँत की बात को ये छुड़ेगा नहीं, सन्त समाज के ढङ्ग पर मीठे शब्दों में ऊंचा स्वर रखते हुए सब कुछ करेगा, कहेगा, सबका मण्डन भी रहेगा, सबका खण्डन भी करेगा। सर्वोदय समाज भारत के अथवा संसार के सामने भारतीय वेश-भूषा के रूप में आयेगा, भारतीय धर्म संस्कृति को लेकर आयेगा। सारांश, सर्वोदय समाज भारत के सामने ऐसे विचित्र रूप में आ रहा है। इसका कोई विशेष नियम नहीं इस में कोई विशेष बन्धन नहीं, हां चर्खा तो चलाना ही पडेगा, केवल उनके लिये जो कार्यकर्ता के रूप में रहेंगे। खादी भी पहननी पड़ेगी जो कार्यकर्ता बनेंगे। शेष सत्य अहिंसा गांधी का नाम बराबर चलेगा। सर्वोदय समाज कांग्रेस से पृथक रह कर भी कांग्रेस के साथ रहेगा। इनकी ग्राम प्रदर्शिनियें सर्वोदय प्रदर्शिनियों के नाम से कांग्रेस के साथ तथा पृथक भी चलती रहेंगी जिससे ग्रामीण जनता का आकर्षण रहेगा। इस सर्वोदय समाज की प्रदर्शिनियों में सङ्गीत तथा कलाओं का योग रहेगा जिससे सब ओर से आकर्षण रहे। अर्थात् सर्वोदय समाज के कार्यकर्ता तथा प्रचारक सन्तसमाज के रूप में भारतीय जनता के सम्मुख साहित्य संगीत और कला को साथ लिये हुए आ रहे हैं।

जहां तक स्वराज्य और स्वराज्य से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्न हैं उनको तो कांग्रेस करती रहेगी और जहां तक महात्मा गांधी के मिशन का प्रश्न है उसको सर्वोदय समाज करेगी। सर्वोदय समाज वेद शास्त्रों की डुगडुगी न पीटती हुई भी सब कुछ करेगी आर्य समाज-तर्कवितार्क आर्यसमाज वेद शास्त्र, दर्शन आदि की बात कहता हुआ भी भक्ति शून्य ढङ्ग से क्या कर सकता है? यही ढङ्ग है अथवा आर्य समाज के गुट करता हुआ आगे चले पीछे सर्वोदय समाज का रन्धा आवेगा ही कांग्रेस अथवा भारत संघ के साथ-साथ महात्मा गांधी, सत्य अहिंसा भव्य भारत, भारतीय संस्कृति की बातें भी करते रहेंगे साथ साथ अर्जुन की तपस्या की तरह कमर में अस्त्र शस्त्र भी बांधे रहेंगे। देखें क्या होता है? कालो हि बलवत्तर !

भारत में बिजली की वृद्धि

देश के विभाजन का बिजली उत्पादन पर प्रभाव

[कलकत्ता और बम्बई की जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का केवल एक प्रतिशत है परन्तु इन दोनों नगरों में मिला कर देश में पैदा की जाने वाली समस्त बिजली का ५० प्रतिशत खर्च हो जाता है इस प्रकार शेष ९९ प्रतिशत जनता के लिये केवल ५० प्रतिशत बिजली रह जाती है। जब देश की विभिन्न जलविद्युत योजनाएं पूरी हो जायगी तो बिजली उत्पादन करने वाले देशों में भारत का स्थान तीसरा हो जायगा।]

भारत में १९४७ में ६१,००० किलोवाट अधिक बिजली पैदा की गयी। इस वर्ष में भारत की कुल विद्युत उत्पादन शक्ति १३,६०,००० किलोवाट थी। जोकि १९३९ के आकड़ों की अपेक्षा २६४ प्रतिशत और १९४६ के आकड़ों की अपेक्षा ४.७४ प्रतिशत अधिक थी। शिमला स्थित केन्द्रीय बिजली कमीशन ने देश में बिजली के पूर्ति के सम्बन्ध में बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियां 'पब्लिक इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई—आल इंडिया स्टेटिस्टिकल समरी १९४७" नामक प्रकाशन में दी है। इसमें जो आंकड़े दिये गये हैं वे हैदराबाद को मिला कर विभाजन के बाद के सारे भारत के सम्बन्ध में हैं।

इसमें दिये गये विवरण के अनुसार १९४७ में सिंचाई और रोशनी के लिये बिजली की खपत में बहुत वृद्धि हुई। औद्योगिक खपत में बहुत थोड़ी वृद्धि हुई। परन्तु विभिन्न कार्यों के लिये खर्च होने वाली बिजली के आकड़ों से पता लगता है कि अन्य सब कामों में मिलाकर बिजली की जितनी खपत हुई उससे दूनी बिजली उद्योग धन्धों में खर्च हुई। लोहे इस्पात, जूट और सीमेंट के कारखानों में मिलाकर जितनी बिजली की खपत हुई उसकी अपेक्षा अकेले सूती मिलों में ही बहुत अधिक बिजली खर्च हुई।

दिल्ली प्रथम और बम्बई द्वितीय

बम्बई और पश्चिमी बंगाल ने शेष समस्त भारत की अपेक्षा अधिक बिजली पैदा की, लेकिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से बिजली के उत्पादन में दिल्ली का स्थान सबसे प्रथम रहा। १९४१ की जनसंख्या के अनुसार प्रति व्यक्ति के हिसाब से बिजली का उत्पादन इस प्रकार रहा: दिल्ली १००.२९, बम्बई ९५.६४, मैसूर ४५.५३ पश्चिमी बंगाल ३७.७७, ट्रावन्कोर १५.०४ और पूर्वी पंजाब ११.९५।

गावों की दशा

विभाजन के बाद देश में ४९ ऐसे शहर हैं जिनकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है। इन सब में बिजली है। लेकिन ५ हजार या इससे कम जनसंख्या वाले ५,५९,७४६ गावों में से १,२९३ या ०.२ प्रतिशत में १९४७ में बिजली थी।

देश के विभाजन के बाद बिजली उत्पादन के ८० कारखाने पाकिस्तान में चले गये। विभाजन से पहले कुल ५४५ कारखाने इस देश में थे। जो ४६५ कारखाने इस देश में बचे उनमें से १९४७ के अन्त में ३०८ प्रान्तों में थे और १५६ देशी रियासतों में। उपभोक्ताओं को प्राप्त होने वाली बिजली का ९०.०९ प्रतिशत ए० सी० बिजली का था और शेष ९.०८ प्रतिशत डी० सी० बिजली का। अनुमान किया गया है कि १६ प्रतिशत कारखाने भाप से चलते थे, ५.६ प्रतिशत जलविद्युत के कारखाने थे और शेष कारखाने तेल से चलते थे। बिजली पैदा करने में १९४७ में १६,२२,००० टन कोयला और प्राय ५३,००० टन तेल खर्च हुआ। जल द्वारा पैदा की जाने वाली प्रत्येक यूनिट बिजली में प्रतिवर्ष ५ टन कोयले की बचत होती है।

× × × ×

खाद्य और कृषि के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातें

१ देश के विभिन्न भागों में ट्रैक्टरों द्वारा प्रति दिन ६२५ एकड़ बंजर भूमि जोती जाती है। ये ट्रैक्टर केन्द्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा दिये गये हैं।

२. यदि हम अपने देश में २८,००० टन गेहूँ प्राप्त कर लेते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम अपने विदेशी विनिमय कोष में १ करोड़ ८० बचा लेते हैं।

३ भारत की जोती योग्य समस्त भूमि में से लगभग ८३ प्रतिशत में अनाज की खेती होती है। इसमें से ३१.६ प्रतिशत में धान, २९ प्रतिशत में ज्वार-बाजरा तथा अन्य अनाज और १४.७ प्रतिशत में गेहूँ बोया जाता है।

४. केन्द्रीय सरकार के खाद्य-मंत्रालय ने १९४८ में कमी वाले क्षेत्रों को ११ लाख टन अनाज दिया है।

५ देश विभाजन के फलस्वरूप भारत में ७८ प्रतिशत लोग रह गये हैं, जबकि चावल की ७१.७ प्रतिशत भूमि और गेहूँ की ७१ प्रतिशत भूमि ही हमारे हिस्से में आयी है।

६ पूर्व का सबसे बड़ा तथा सबसे प्राचीन वन विद्यालय देहरादून में है।

× × × ×

दियासलाई के लिए एक आस्ट्रेलियन लकड़ी

वन विभाग ने वेस्टर्न इण्डिया मैच कम्पनी लिमिटेड के साथ क्लटरबक गंज में जो परीक्षा की थी, उससे प्रकट हुआ है कि आस्ट्रेलिया की लकड़ी दियासलाई बनाने के लिये विशेष उपयुक्त है। यह सीमल (बम्बाकस मलाबारिकम), जो इस समय उपर्युक्त कार्य के लिये प्रयोग किया जाता है, से रंग तथा मजबूती दोनों में ही अच्छा होता है।

आडू का वृक्ष शोभामात्र के लिये लगाया जाता है और गंगा के बेसिन में तथा यमुना के पार काफी पाया जाता है। इस पेड़ से मिट्टी की शक्ति पर कम जोर पड़ता है, इसकी पत्तियां स्वादहीन होने के कारण पशुओं तथा बकरियों से वह अपनी रक्षा स्वयं करता है।

संवत-२००६ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के विविध पारितोषिक तथा पुरस्कार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर दिये जाने वाले पारितोषिक तथा पुरस्कारों के लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार किए जाने की अन्तिम तिथि सौर वैशाख -१, सं० २००६ [तारीख १४ मई सन् १९४९] है। मंगलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार के अतिरिक्त सभी पारितोषिकों तथा पुरस्कारों के लिये उक्त तिथि से १५ मास से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाएँ नहीं ली जायगी। केवल जीवित लेखकों तथा लेखिकाओं की मौलिक रचनाएँ ही पारितोषिकों तथा पुरस्कारों में विचारार्थ स्वीकार की जायँगी। सङ्कलित सगृहीत या अनुवादित ग्रन्थों को मौलिक रचना के अन्तर्गत नहीं माना जायगा, किन्तु स्वतन्त्र रूप से सिद्धान्त स्थापित करने वाली व्याख्यायें मौलिक रचना की श्रेणी में रखी जायँगी। पूरा पारितोषिक या पुरस्कार किसी एक लेखक को ही मिलेगा। श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार में प्रतियोगितार्थ भेजी जाने वाली पुस्तकें लेखक के जीवनकाल में दो बार तक भेजी जा सकती हैं। अन्य पुरस्कारों में विचारार्थ पूर्व भेजी गई पुस्तकों पर फिर से विचार नहीं किया जायगा। विस्तृत जानकारी के लिये नियमावली सम्मेलन कार्यालय द्वारा मँगाई जा सकती है। इस वर्ष मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार के लिये प्रत्येक पुस्तक की ८८ प्रतियाँ तथा अन्यान्य पारितोषिक अथवा पुरस्कार के लिये ७ ७ प्रतियां उक्त तिथि तक "प्रधान मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग" के पते पर आनी चाहिये।

श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक

१२००) का उक्त पारितोषिक इस वर्ष साहित्य के तात्विक-विज्ञान विषय पर दिया जायगा। तात्विक विज्ञान के अन्तर्गत गणित, रसायन, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष, जन्तु-विज्ञान और वनस्पति-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की गणना की जायगी।

श्री सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार

१५००) रु० का उक्त पुरस्कार इस वर्ष जीव विज्ञान विषय की वैज्ञानिक मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा जीव विज्ञान विषय के अन्तर्गत जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, औषधि विज्ञान और कृषि शास्त्र की गणना की जायगी।

श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक

५००) किसी महिला लेखिका को उनकी स्वरचित हिन्दी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री मुरारका पारितोषिक—

५००) बगाली, उड़िया या आसामी मातृभाषा लेखक या लेखिका द्वारा लिखी गई हिन्दी की किसी रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री रत्नकुमारी पुरस्कार—२५०)

हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री नेमीचन्द्र पुरस्कार—५००)

वीररस पूर्ण बाल साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। बाल साहित्य के अन्तर्गत वे सभी रचनाये गृहीत होंगी, जो देश, धर्म, समाज एवं बालकों के चतुर्दिक विकास और उत्थान को ध्यान में रखकर लिखी गई होंगी।

बलभद्रप्रसाद मिश्र
प्रधान मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

कहानी :—

अमर आत्माएँ

(साहित्याचार्य [illegible] विहारी "नागर" एम ए. साहित्यरत्न)

समय की गोदी में उत्थान और पतन अठखेलियाँ कर रहे थे। मुगल साम्राज्य का दीपक बुझ चुका था। भारतवर्ष के स्वतन्त्र जीवन की होली देख चुका था; आर्यावर्त पर एक विदेशी गौरांग जाति शासन कर रही थी। जनता के हृदय में अशाँति, विद्रोह विद्वेष एवं अति क्षोभ की ज्वालाएँ जल रही थीं; मानवता का बलिदान हो रहा था, पशुता को उत्तेजना दी जा रही थी; अनेकों देशभक्त बलिवेदी पर प्राण विसर्जित कर चुके थे, चारों ओर बुभुक्षित अनाथों एवं विधवाओं का करुण क्रन्दन कर्ण गोचर हो रहा था। व्यापारियों में स्वार्थ की भावना भर गई थी कवियों की भावुकता नष्ट हो चुकी थी, निरीह प्राणी अपने दुर्भाग्य को कोस रहे थे। भारतवर्ष की परिस्थिति में एक भयानक परिवर्तन हो चुका था।

ऐसी ही परिस्थिति में एक वीत-राग वयोवृद्ध सन्यासी आशा और आकांक्षा के झूले पर जाने कब से झूल रहा था और एक अल्प वयस्क सन्यासी, मानव को चिर शाँति प्रदान करने के हेतु अलक नदा की दुर्गम्य घाटियों में विचरण करता हुआ, हिमालय की चट्टानों से टक्कर लेता हुआ, निर्जन कान्तारों के कंटकित कुन्जों में से मार्ग बनाता हुआ, दण्डकारण्य के वट वृक्षों सी आशाएँ लिए, अजन्ता की गुफाओं का चक्कर काट रहा था।

समय के पूर्व, पुष्पों का विकास नहीं हुआ करता, विश्व के संचालन में एक नियमन है, उसी नियामक की नियमावली के अनुसार संसार चक्र अबाध गति से चलता रहता है।

आज हमारा अल्प वयस्क सन्यासी भी दक्षिणापथ का मोह भुलाकर उन्मुक्त विहग के सदृश उत्तर की ओर बढ़ता चला जा रहा है, चलते चलते पैरों में छाले पड़ गये, कई दिनों तक भोजन भी न मिला पानी भी न मिला और यदि कहीं मिल भी गया तो पिया नहीं। पीता भी कैसे? नद सिन्धु से मिलने के लिये व्याकुल हो उठा है, वह जंगलों को, विशाल चट्टानों को, शिला खण्डों को तोड़ता, फोड़ता अविराम गति से जलनिधि के दर्शन को उत्सुक है?

हमारा सन्यासी हृदय में तूफानी संसार लिये, मस्तक में विचारों का झंझावात लिये हुये अपने पथ पर बढ़ता चला आ रहा है।

एक दिन व्यतीत हुआ, दूसरा दिन भी पृथ्वी को आलोकित कर यामिनी की गोद में सो गया सप्ताह बीते, पक्ष और महीने बीते, हमारा सन्यासी निरन्तर चलता रहा। दूर से उसने एक नगर देखा, मुख पर प्रसन्नता की रेखाएँ दौड़ गई। वह रुक गया।

सामने ही थोड़ी दूर पर एक छोटा सा कुटीर है, उसी कुटीर के सामने बैठे हुये कुछ विद्यार्थी वेद पाठ कर रहे हैं, उन्हीं के सामने जीर्णशीर्ण प्रज्ञाचक्षु, महात्मा, जिनकी प्रत्येक अस्थि ऊपर से गिनी जा सकती हैं, जिनके दोनों नयनों की

[यदि इतिहास की धार्मिक व सामाजिक घटनाओं को साहित्यिक कथाओं के रूप में प्रस्तुत किया जाय तो वह न केवल रोचक ही हो जाती है अपितु जन साधारण के हृदय में भी शीघ्र व स्थायी प्रभाव छोड़ती हैं।

इसी विचार को लेकर सुयोग्य लेखक का यह प्रयास है जो सुपाठ्य एवं सराहनीय है]—

—सम्पादक

ज्योति नष्ट हो चुकी है, बैठे हुये उनका पाठ बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। सहसा बालकों का पाठ बंद हो गया। महात्मा ने कोमल स्वर में पूछा, "तुम सब चुप क्यों हो गये" उत्तर मिलने के पूर्व ही उनके चरण कमलों पर जटा जूट लोटने लगीं, किसी का मस्तक हाथ से उठाते हुये वे बोले—

"तुम कौन"?

"गुरुदेव की शरण में आया हुआ एक ब्रह्मचारी"

'ब्रह्मचारी" महात्मा ने उस से प्रश्न किया 'तुम्हारा अभिप्राय?

"मैं भिक्षा चाहता हूँ गुरुदेव।"

भिक्षा' आश्चर्य के स्वर में हँसते हुये उत्तर दिया 'यह गृहस्थ का स्थान नहीं है ब्रह्मचारी! यह तो एक महात्मा की साधारण सी कुटिया है। यहाँ भिक्षा कैसी, कुटिया में धन कहाँ? 'गुरुदेव" चरण पकड़ कर ब्रह्मचारी बोला "धन, आपके पास वह धन है जिसके समक्ष सम्पति शालियों के अशेष कोष भी नगण्य हैं, आप के कुटीर में कुबेर के कोष को भी लज्जित करने वाला धन भरा हुआ है, मुझे संसार से बंधुत्व का नाता छुड़ाने वाला धन न चाहिये मैं तो आप से वह धन लेने आया हूँ, जो संसार में बंधुत्व का भाव उत्पन्न करने में समर्थ है, जिसके प्राप्त हो जाने में "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श संसार में क्रीड़ा करने लगेगा गुरुदेव! आज मैं उसी धन का भिक्षुक हूँ।"

"ब्रह्मचारी! अपना आशय स्पष्ट करो।"

गम्भीर स्वर में महात्मा ने पूछा।

"गुरुवर! आज मैं आप से संसार में असत् का नाश कर सत् का, अविद्या का नाश कर विद्या का, सांसारिकता का दमन कर अलौकिकता का ज्ञान उत्पन्न करने वाली विद्या के ग्रहण करने के लिये उपस्थित हुआ हूँ। आज्ञा हो गुरुदेव, आपकी छत्र छाया में अध्ययन करने की।'

गुरुदेव के मुख मंडल पर अपूर्व तेज क्रीड़ा कर रहा था, ब्रह्मचारी को स्वीकृति मिल गई।

"ओ३म् विश्वानिदेव" का पाठ नील गगन में गूँज उठा।

[२]

श्रावण मास की पूर्णिमा आई और चली गई, भाद्रपद के अन्तिम दिन थे, पर अब तक नील गगन में बादलों का दल न आया, कृषक आँखे फैलाए आकाश की ओर देख रहे थे, पर वह अन्तरिक्ष अब तक मौन था। चारों ओर त्राहि त्राहि मच गई, सड़कों पर नंगे भूखे भिखमंगों की टोलियाँ अनाज की खोज में घूमने लगीं, गाँवों में भूख से तड़प तड़प कर दुधमुहे बच्चे काल के ग्रास बनने लगे, चारों ओर हृदय विदारक दृश्य उपस्थित था।

एक ओर नन्हीं नन्हीं आत्माएँ एक एक दाने के लिए तरस रही थीं, माँ के सामने बेटा, पति के समक्ष पत्नी छटपटा कर प्राण त्याग रही थी, पर दूसरी ओर धनिकों के रंगमहल में अँगूरी आसव के दौर चल रहे थे। नीचे सड़कों पर हाहाकार मचा हुआ था। लाशें पड़ी हुई थीं, पर ऊपर "छम छम" करती हुई वारि विलासिनी अपनी भ्रूभंग से स्थूल काय सेठों को विनोद प्रदान कर रही थीं।

यह थी समय की गति!

आठ फीट की चौकोर कोठरी में ब्रह्मचारी अपने पाठ में मग्न था मृत्तिका दीप अपना क्षीण प्रकाश बिखेर रहा था, सहसा उसने अपना सर ऊपर उठाया, पहले तो उसे कुछ भ्रम हुआ, पर थोड़ी ही देर में भ्रम का पर्दा हट गया, उसने उसी क्षीण प्रकाश में देखा सामने एक कंकाल मूर्ति खड़ी है, उसके रूखे बाल अस्त व्यस्त रूप से बिखरे हुये हैं, चेहरे की हड्डियाँ ऊपर उठी हुई हैं, शरीर सूख कर काँटा हो गया है, जो मलीन वस्त्रों में लिपटा हुआ है मुख पर लज्जा, आँखों में दीनता समेटे हुए क्षीण कण्ठ में वह बोली "बेटा! मुझे बड़ी भूख लगी है, दो दिन बीत चुके, पेट में अन्न नहीं पहुँचा है, मेरे दो बच्चे भूखे ही सदैव के लिए सो चुके हैं, बेटा! कुछ खिलाओ इस भूखी आत्मा को।

पर हायरे भाग्य! आज बेटा धनी न था। धनिकों के हृदय उदार नहीं हुआ करते और उदार हृदय वाले सम्पत्तिशाली नहीं हुआ करते असामञ्जस्य है। सम्पत्तिशालियों की नगरी में कृष्ण की मनोहर क्रीड़ा भूमि में, वह ब्रह्मचारी केवल आध पाव चने चबाकर चौबीस घंटों का भार वहन करता है उसके जीवन पर किसी को दुख नहीं, कोई परवाह करने वाला नहीं संसार में कौन किसे देखता है।

ब्रह्मचारी को वृद्धा पर दया आ गई। नहीं—नहीं, दया नहीं, उसने कर्तव्य समझा एक बुभुक्षिता को संतुष्ट करना, वह उठा, एक कोने से मिट्टी के बर्तन में भिगोया हुआ चना लाकर उसके समक्ष रखते हुये बोला 'माँ! मेरे पास केवल ये दो छटाँक चने हैं, यदि इनसे तुम्हारी क्षुधा शाँत हो सके, तो सहर्ष ग्रहण करो? लंगड़े को चाहिये लकड़ी का आश्रय, अन्धे को चाहिये दो आँखें और भूखे को चाहिये दो मुट्ठी अन्न। वृद्धा को सब कुछ मिल गया, उसने बड़े प्रेम से चने चबाये, पानी पिया, भूखी आत्मा को शाँति प्राप्त हुई, उसने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया "बेटा, तुमने आज एक भूखी आत्मा को तृप

स्वास्थ्य-सुधा

कुल की बीमारीयां

[५] यक्ष्मा, तपेदिक या टी० बी०

(श्री डा० रा० स० लाल ए० एम० ओ० अमरिया)

—इससे पूर्व अंकों में भी इस विषय की रचनायें प्रकाशित होती रही हैं स्वास्थ्य विषयक इस स्तम्भ में सुयोग्य लेखक ने अधिकांश रूप में उन कुल की बीमारियों का निर्देश किया है जिनका जन साधारण को प्रायः सामना करना पड़ता है, हमें विश्वास है कि यह स्तम्भ पाठकों के लिये उपयोगी होगा। इस स्तम्भ के लिये प्राप्त होने वाले स्वास्थ्य विषयक लेखों का हम स्वागत करेगें—　　सम्पादक

जिस प्रकार घुन लकड़ी को धीरे धीरे खा जाता है उसी प्रकार यह रोग भी शरीर को हड़प कर जाता है। फुफ्फुस ही नहीं अँतड़ियों, हड्डियों और शरीर के अन्य अवयवों में भी यह रोग अपना घर बना सकता है। मनुष्य को छोड़ घरेलू पशुओं को भी यह बीमारी हो जाती है। संसार का कोई भाग या जाति इस बीमारी से नहीं बची है।

बीमार मनुष्य के कफ और थूक सूख जाने के बाद रोग के कीटाणु धूल में मिल जाते हैं और फिर नाक या मुंह द्वारा शरीर में प्रवेश कर अपना घर बना लेते हैं। दूसरे देशों में जहाँ डेयरी फार्म का चलन है गाय के दूध के साथ भी बीमारी फैलती है।

बीमारी फैलाने में ये सहायक हैं:— सामाजिक और आर्थिक अवस्था का खराब होना, निर्बलता, मकान आदि खुले और हवादार न होना, बाल विवाह, छोटी अवस्था से और जल्दी जल्दी बच्चे पैदा होना, परदा, यक्ष्मा से बीमार मनुष्य का जहाँ पाना वहीं थूकते रहना इत्यादि।

इस विषय में एक बात याद रखने की है कि यक्ष्मा न तो पुश्तैनी होता है और न पैदायशी। माता पिता के रज वीर्य द्वारा कीटाणु नहीं पहुँचते। फिर भी यह रोग एक ही घराने में होता रहता है। इसका कारण यह है कि (अ) इस रोग से ग्रसित माता-पिता के बच्चे बहुधा इस गढ़न के होते हैं कि उनके शरीर में इस रोग के कीटाणु सरलता पूर्वक घर बना सकते हैं। (ब) बीमार माता-पिता के संसर्ग से रोग के कीटाणु बच्चे के शरीर में प्रायः स्थान पाते रहते है। यह बहुत ही सम्भव है कि पैदा होते ही यदि बच्चे को घर से अलग कर दिया जाय और दूर कहीं अच्छे स्थान में उसका लालन पालन हो तो इस रोग से वह बचा रहे।

बचने के उपाय

(१) खुली हवा और रोशनी का खूब सेवन। कमरे की खिड़कियाँ खोल कर सोने से ठंड पकड़ लेती है—यह धारणा गलत है। इसे निकाल दीजिये। बिस्तर को रोज धूप में डालिये।

(२) भोजन में पौष्टिक पदार्थ विटामिन अधिक मात्रा में खाइये। रोटी, दाल, घी, दूध, मक्खन, दही, मट्ठा, फल और हरे शाक उचित मात्रा में सेवन कीजिये। चावल कम खाइये।

(३) खाँसी सर्दी की कोई बीमारी यदि अधिक दिन ले रही हो तो शीघ्र ही अच्छे चिकित्सक से दवा कराइये। दूसरी बीमारियों की तरह यदि प्रारम्भ से ही यक्ष्मा का भी निदान और औषधि करायी जाय तो अच्छा हो जाता है।

(४) रोगी को अलग कमरे में अलग बिस्तर पर सुलाइये।

(५) उसे इधर उधर थूकने से रोकिये। एक ढक्कन दार बर्तन, जिसमें कोई कीटाणुनाशक औषधि पड़ी हो, थूकने के लिये ठीक है। पड़े थूक को जलावें। मक्खियाँ थूक पर न बैठने पावें।

(५) बीमार को अपने कफ को निकल जाने से रोकिये अन्यथा अँतड़ियाँ भी खराब हो जायँगी।

(६) यथा सम्भव उसका काम बाहर का हो जहाँ उसे खुली हवा और रोशनी मिले।

(७) रोगी के कमरे को बुहारने से अच्छा धुला देना अथवा पुता देना है।

(८) सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाइये॥

किया, ईश्वर तुम्हें तृप्त करेगा, तुम्हारा यश संसार गायेगा।"

आशीर्वाद देकर वृद्धा किसी वृक्ष की छाया में शीतकाल की निशायापन करने के हेतु चली गई।

और ब्रह्मचारी!

ब्रह्मचारी की आत्मा को पूर्ण शांति प्राप्त हुई इसी सुख में वह अपने को भूल गया। उसे अपनी क्षुधा का ध्यान न था, उस का शरीर काली कोठरी में आबद्ध था पर आत्मा भारत की करोड़ों आत्माओं को शाँति प्रदान करने के लिये नया मार्ग खोज रही थी।

तारक मण्डली आँखें बन्द करने लगी, कलियाँ आँखें खोलने का प्रयास करने लगीं, हवा का झोंका आया, हृत्तत्री को झंकृत करता हुआ दूर मैदान में निकल गया। ब्रह्मचारी की ध्यान निद्रा टूटी वह उठा खड़ाऊँ पहनी, हाथों में दो बड़े घड़े उठाए, यमुना से जल भरने के लिये चल पड़ा,

सूर्योदय से पूर्व महात्मा जी स्नान करते थे और उनके स्नान के लिये नित्य नियम पूर्वक जल लाना ब्रह्मचारी का कार्य था, उसे यह कार्य करते कई वर्ष बीत गए, बादल समय पर जल बरसाना भूल गए, समीरण अपना कर्तव्य भूल गया, फूल खिलने के पूर्व ही थाले में चू पड़ा, पर ब्रह्मचारी अपने कर्तव्य पर अडिग रहा—हिमालय जैसा, नियमित रहा—पृथ्वी की गति के समान।

शीतकाल की हिमानी ऊषा ने, वर्षा के प्रबल प्रभञ्जन ने, ग्रीष्म की प्रचण्डता ने उसकी परीक्षा ली। उसके मार्ग में प्रकृति ने, भाग्य ने, विधि ने काँटे बिछाए, रोड़े अटकाए, बाधाएँ उपस्थित की, परन्तु वह उन सब को कुचलता हुआ अपने कर्तव्य में सलग्न रहा।

वह नित्य नियम पूर्वक जल लाता, गुरुवर स्नान करते, वह उनके वस्त्र प्रक्षालित कर आश्रम को साफ कर सूर्यागमन के पूर्व ही यज्ञ वेदी पर बैठ जाता। उसके कर्तव्य में कभी त्रुटि न हुई, अध्ययन में पीछे न रहा, बुद्धि की प्रखरता ने गुरुदेव के हृदय को आश्चर्यान्वित कर दिया। आश्रम के अन्य विद्यार्थी उस की प्रतिभा, तर्कशैली स्मरणशक्ति एवं परिश्रम के समक्ष आगे बढ़ने में असमर्थ रहे। गुरुदेव ने इस विद्यार्थी को पूर्ण रूप से वेदों और शास्त्रों का प्रकांड पंडित बना दिया।　　(अपूर्ण)

चलचित्र संचालकों से:—

"यदि हम समय को देखकर न चलेंगे और लाभ कमाने की वृत्ति को गौण तथा जनता के हित की वृत्ति को प्रधान न समझेंगे, तो एक समय ऐसा आयेगा, जब राष्ट्र हमको ऐसा ही करने के लिए बाध्य करेगा और उस समय ऐसा करने में किसी प्रकार की शोभा भी न रह जायगी।

चलचित्र निर्माण केवल एक उद्योग ही नहीं, अपितु एक महान् कला है, जो इस समय राष्ट्र के जीवन एव संस्कृति की उन्नति के लिए अनिवार्य है। चलचित्र सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का एक प्रमुख साधन हैं चलचित्र से ये तीनों बातें एक ही साथ हो जाती हैं।

अतः मेरा आप से निवेदन है कि आप इस व्यवसाय को केवल जीविकोपार्जन का साधन न समझें। इस नवोदित महान् राष्ट्र की उन्नति एव प्रगति के लिए हम सभी की सेवाओं की आवश्यकता है। राष्ट्र सेवा का एकमात्र मार्ग व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड कर देशवासियों की सेवा में जुट जाना है।

—श्री आर० आर० दिवाकर
राज्य मंत्री सूचना विभाग
भारत सरकार

"अधिक अन्न पैदा करो"

१९४३-४४ से १९४७-४८ तक की अवधि में "अधिक अन्न पैदा करो" आन्दोलन में कुल ७,५४,२७,-८९७ रु० व्यय हुए, जिसमें से ६,७६,५०,३९५ रु० प्रधान खाद्यान्नों के उत्पादन के लिये तथा ९,२०,९०८ रु० शाक-सब्जी और कन्दों के उत्पादन में व्यय हुए। १९४७-४८ में इस आन्दोलन में १,२८,५८,९४१ रु० व्यय हुए।

× × × ×

हाई स्कूल व इन्टर मीडियेट की परीक्षायें स्थगित

समय से पूर्व ही प्रश्नपत्र [illegible] लग जाने के कारण बोर्ड ने सारे प्रान्त में उक्त दोनों परीक्षाओं को अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया है। ३ प्रश्नों पत्रों में परीक्षा भी हो चुकी थी।

मुद्राप्रसार रोकने में सफलता

आर्थिक पुनरुत्थान में ब्रिटेन की सफलताएं

लेखक—गार्डन काबर

आर्थिक पुनरुत्थान में प्रगति सम्बन्धी सूचना से ब्रिटिश जनसाधारण पिछले कुछ सप्ताहों में बहुत प्रोत्साहित हुए। व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष श्री० हैरल्ड विल्सन ने बताया कि जनवरी का निर्यात रिकार्ड संख्या तक पहुँच गया अर्थात् परिमाण की दृष्टि से १९३८ का १६० प्रतिशत। निर्यात तथा आयात का अंतर जो पिछले पांच महीनों से निरन्तर कम हो रहा था जनवरी में कायम रहा।

उधर श्रम सचिवालय से मालूम हुआ कि पिछले पाँच वर्षों में औद्योगिक झगड़ों के कारण उत्पादन में हानि इतनी कम कभी न हुई थी जितनी कि १९४८ में। और १९४८ में पारिश्रमिक और मूल्य में वृद्धि की प्रगति भी सफलतापूर्वक रोकी जा सकी। १९४८ ने पारिश्रमिक में चार प्रतिशत की वृद्धि दिखाई जब कि १९४७ की संख्या पाँच और १९४६ की आठ प्रतिशत थी। १९४८ में फुटकर बिक्री में लगभग पाँच प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इन सब का अर्थ जैसा कि श्री० ऐवरिल हैरिमन ने अमरीका में बताया था यह है कि आर्थिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में ब्रिटेन पश्चिमी योरप का अग्रणी है। अधिक उत्पादन के लक्ष्य पर ब्रिटेन ने अपना ध्यान और अपनी शक्ति केंद्रित कर रखी है, ब्रिटिश जनसाधारण को सबसे अधिक रुचि स्वाभाविकतया पारिश्रमिक और मूल्य के पारस्परिक सम्बन्ध में है।

१९३८ में १ करोड़ ४० लाख लोगों की आय टैक्स देने के बाद २००० रु० वार्षिक थी। पर युद्ध की समाप्ति के समय इनमें से ६० लाख व्यक्ति अधिक आय वालों की श्रेणी में चले गए, लगभग १० लाख व्यक्ति २०००—३३३३ रुपए प्राप्त करनेवालों की श्रेणी में और ३० लाख लोग ३३३३–६६६६ की श्रेणी में। अप्रैल १९४८ तक सब प्रकार के कर्मचारियों की औसत आय युद्ध से पूर्व की तुलना में ११४ प्रतिशत अधिक पाई गई।

मूल्य का प्रश्न

जहां तक वस्तुओं के मूल्य का प्रश्न है ब्रिटेन में फुटकर मूल्य के सांकेतिक आंकड़ें न होने के कारण आज के मूल्य स्तर की तुलना युद्धपूर्व के स्तर से करना कठिन है। ब्रिटेन में जीवन निर्वाह के खर्च सम्बन्धी एक सरकारी सांकेतिक आंकड़े का जिनमें केवल आवश्यक वस्तुओं के मूल्य और प्रत्येक आवश्यक वस्तु पर साधारण परिवारों द्वारा किए गए खर्च अंकित किए जाते हैं उपयोग होता है। इन आंकड़ों के अनुसार यदि १९३७ को १०० मान लिया जाए तो १९४३ की संख्या १२६ निकलती है। अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि यदि सब प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुए इस में सम्मिलित की जाए तो संशोधित सांकेतिक संख्या इस समय १७० बैठेगी।

पर यह जानते हुए कि जनसाधारण अपनी आर्थिक अवस्था स्थानीय दूकानों में खरीदी गई चीजों के मूल्य के आधार पर ही समझ सकता है ब्रिटिश सरकार ने पिछले वर्ष इस ओर विशेष ध्यान दिया। फलतः जून १९४७ में फुटकर मूल्य के नए सांकेतिक आंकड़े निर्धारित किए गए और समय—समय पर इसमें अंकित की गई संख्याएं सफलता की सबसे अच्छी प्रमाण हैं।

क्रम से पिछले वर्ष के मई सितम्बर और दिसम्बर के महीने यदि हम लें तो मुख्य खर्च की प्रगति इस प्रकार रही खाद्य १०८,१०७, १०८, किराया और कर ९९,९९,१००, घरेलू की टिकाऊ सामग्रियां १०८,१०८ १०९ सार्वजनिक सेवाएं १०५,१०५, १०५, मद्य और तम्बाकू १११,१११,१११, फुटकर वस्तुएं १०९ १०९ १०९। वृद्धि केवल वस्त्र और ईंधन में देखी गई वस्त्र १०७ से ११५ और ईंधन ११० से ११४।

इन मुख्य वृद्धियों के होते हुए भी सब प्रकार के औसत फुटकर मूल्य अपरिवर्तित से रहे अर्थात् १०८ १०८ और १०९। क्योंकि यह वृद्धि लगभग पारिश्रमिक की वृद्धि के समान है हम कह सकते हैं कि पारिश्रमिक की क्रयशक्ति को ब्रिटेन सफलतापूर्वक स्थिर कर सका और अब मुद्राप्रसार रोकने में भी सफलता के प्रमाण मिल रहे हैं।

(पृष्ठ ६ का शेष)

अदम्य आत्म शक्ति के प्रति इसका विश्वास जाता रहा था और यह तुच्छ परानुकरण में लग चुका था—इससे बढ़कर किसी जाति के नाश का दूसरा कोई कारण हो ही नहीं सकता था—इन सब भूलों पर स्वामी जी ने भीषण आघात किया। उसका ही परिणाम था कि जाति के जीवन में एक जागृति आ गई और उसके बाद ही राष्ट्रीय कांग्रेस का अभ्युदय हुआ। इसको देखकर श्रीमती लदीजन बेगम एम० ए० महोदया ने कहा था कि वे (स्वामी दयानन्द) भारत वर्ष में न जन्म लेते तो मुझे लगता है कि लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और लाला लाजपत राय के समान देशभक्त हमें उपलब्ध न हो सकते।"

इस प्रकार ऐसे पवित्र महात्मा महर्षि की कथा का हम जितनी ही श्रद्धा से स्मरण और मनन करेंगे उतना ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा, इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है। उनका दिखाया हुआ प्रशस्त वैदिक मार्ग विशाल रूप में हमारे सामने दूर तक फैला हुआ, है, आत्म विश्वास और सद्भावना से उस पर बढ़ने की आवश्यकता है।

विश्व-वैचित्र्य

रंग बनाने की नवीन विधि

भारतीय और अमरीकी वैज्ञानिकों ने, जो अमेरिका में मिल कर काम कर रहे थे एक नवीन विधि का पता लगाया है, जिस के अनुसार 'अलेजरीन' की वर्तमान कमी दूर हो जावेगी। 'अलेजरीन' एक अत्यन्त आवश्यक रंग है जो विश्व में आदि काल से सूती कपड़ों के रंगने के काम आती है।

'अलेजरीन' को नवीन विधि से बनाने के लिए एक साधारण और कम मूल्य की सामग्री चाहिये। इसे 'सिल्वर साल्ट पदार्थ और सज्जी क्षार को मट्टी के तेल में घोल कर मिलाया जाता है, फिर इसे साधारण केतली में रखकर डिस्टल किया जाता है, जिस से उस का पानी सूख जाता है।

'अलेजरीन' लाल तथा अन्य अनेक प्रकार के गुलाबी और चाकलेट आदि रंगों का मूल आधार है। इसे सूती कपड़ों के रंगने और छापने के प्रयोग में लाते हैं तथा यह ७५ मिश्रित रंगों के बनाने के लिए मुख्य रसायनिक पदार्थ है।

पहिले इसे केसू पौदे की जड़ से बनाया जाता था १८६९ में प्रथम बार नकली अलेजरीन को 'एनथ्रासिन' से बनाया गया। वर्तमान बहु संख्या निर्माण कला द्वारा भी इसे बनाने में दो दिन लगते थे। वैज्ञानिकों ने सहयोग से अलेजरीन को नवीन विधि अनुसार कुछ घन्टों में तैयार किया है।

इस काम में सहयोग देने वाले दो भारतीय वैज्ञानिक हैं। पहिले डाक्टर 'वामन आर० कोकाटनूर' जो औद्योगिक कैमिस्ट हैं और इन्होंने अमेरिका में बहुत सी पेटैन्ट रसायनिक वस्तुए बनाई हैं। दूसरे 'सिद्धार्थ लाल भाई' जो भारत के प्रसिद्ध कपड़ा बनाने वाले के सपुत्र हैं। आप अमेरिका से डिगरी लेकर अपने देश को लौटे हैं।

विश्व में चावल का उत्पादन

न्यूनतम आवश्यकता से कम

वाशिंगटन—संयुक्त राष्ट्रीय खाद्य कृषि संघ ने एक विज्ञप्ति द्वारा बताया है कि यद्यपि १९४८-४९ में संसार में गत वर्ष की अपेक्षा अधिक चावल उत्पादन हुआ है, फिर भी एशिया के चावल की कमी वाले क्षेत्रों में हजारों व्यक्तियों को उस मात्रा का एक भाग ही मिल रहा है जो उन्हें युद्धपूर्व काल में प्रति दिन मिलती थी। इस में इस बात पर जोर दिया गया है कि यदि अर्ध विकसित देशों को खाद्य की उचित मात्रा देनी हो तो उसके लिए महत्तर राष्ट्रीय प्रयत्नों तथा निकटतर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। इस कमीशन के विधान को १३ देशों ने स्वीकार कर लिया है। यह चावल के उत्पादन, संग्रह, और अन्तर्राष्ट्रीय वितरण में सहयोगी प्रयत्नों को और बढ़ाएगा।

विज्ञप्ति में यह भी स्पष्ट है कि चावल बहुल और चावल—न्यून देशों में बहुत सी बंजर भूमि पड़ी है जिस का सुधार किया जा सकता है और इसमें चावल की पैदावार की जा सकती है।

१९४८–४९ में १४½ करोड़ टन चावल का उत्पादन हुआ। यह युद्ध पूर्व काल की औसत से २९ लाख टन कम है। इस वर्ष निर्यात के लिए तैयार चावल की मात्रा युद्धपूर्व की मात्रा से आधा है अनुमान यह है कि १९४८ की अपेक्षा १९४९ में चावल का निर्यात कुछ अधिक होगा।

विज्ञप्ति में भूमि सुधार अधिक सिंचाई द्वारा उत्पादन में वृद्धि, जल प्रवाह प्रणाली तथा जल नियन्त्रण पद्धति, प्राकृतिक तथा कृत्रिम खाद और उन्नत उत्तम बीजों के विस्तृत उपयोग आदि विधियों में हो रही उन्नति का भी उल्लेख किया गया है।

आ० प्र० सभा की सूचनायें

श्री राजगुरु जी अस्वस्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त के प्रधान श्री मान् माननीय राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी उपदेश और भ्रमण करते हुए बम्बई पहुँचे आप वहाँ पर कर्ण वेदना के कारण रुग्ण हो गये।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री राजगुरु जी को शीघ्र से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करे। जिस से सभा समाज सेवा के लिए तत्पर हो सके।

मदनमोहन सेठ
कायकर्ता प्रधान सभा

वार्षिक प्रतिनिधि चित्र

युक्त प्रान्त के समाजों को वार्षिक प्रतिनिधि चित्र भेजे जा चुके हैं जिन समाजों में न पहुँचे हों, कृपया सभा कार्यालय से मगा लेवें

२—सभा का वृहदधिवेशन ५ व ६ जून को गाजीपुर में होना निश्चित हो गया है, समाजों के मन्त्री गण कृपया तिथि नोट करने की कष्ट करें।

अन्तरगांधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त की अान्तरंग सभा का असाधारण अधिवेशन १० अप्रैल सन् १९४९ दिन रविवार को नारायण स्वामी भवन लखनऊ में होगा—

कृपया सदस्यगण नियत तिथि पर पधारने का कष्ट करें।

सभामन्त्री

—आर्य समाज वकोक (स्वाम) ने अपने १९-२-४९ के विशेष अधिवेशन में प्रस्ताव पास करके भारत सरकार को राष्ट्रोन्नति के समस्त कार्यों में सहयोग का विश्वास दिला । तथा अनुरोध किया कि:—

१—राष्ट्र का नाम "भारतवर्ष" रक्खा जाय। २—राष्ट्र की भाषा 'हिन्दी' तथा लिपि देव नागरी हो। ३—राष्ट्र गीत "वन्देमातरम्" ही स्वीकार किया जाय।

गु० वृन्दावन माम दिसम्बर ५) या अधिक दानदाताओं की सूची

५१) प० रामचन्द्र जी स्नातक करैली बाग, बडोधा
२५) शनु भाई मनु भाई जी कपनी इटोला, बड़ौधा
५) शोभा भाट खुशाल भाई पटैल, बडोधा
.) विठ्ठल भाई मती भाई पटेल
५) चिपर भाई मोती भाई पटैल बडौधा
५) प्रभाकर मकुवन्दास जी गुप्त बड़ौधा
५) मणी भाई मथुरा भाई, बड़ौधा
११) स्वस्तिक टेरिङ्ग कम्पनी बाबा जी मंडी, बड़ौधा
१५) ईश्वर लाल कोठव जी आर्य शियाबाग, बड़ौधा
५) हिम्मत लाल देव जी भाई, ताजमहल प्रेस, बड़ौधा
५) भोला भाई शिवलाल मोदी पुलिस चोकी तोपखाना, बड़ौधा
५) विनोद आभ्य कर कम्पनी राव-पुरा, बड़ौधा
५) सुन्दर लाल चिरजीलाल घा कांटा, बड़ौधा
११) केशर भाई राम जी भाई पटैल गणपत पुरा, बड़ौधा
५) पुरुषोतम दास विट्ठल भाई बड़ौधा
५) छोटा भाई राम जी भाइ गणपत पुरा, बड़ौधा
५) वनवाप्री दास जी वेचर भाई गणपत पुरा बड़ौधा
११) राव जी भाई शकर भाई पटैल बहादुरपुर, बड़ौधा
२१) प० नारायण दत्त जी लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस—आगरा
१०) ब्रसत्य देव जी गुरुकुल वृन्दावन
१०) बा० देवीप्रसाद जी जौहरी—लखनऊ
५) बा० सुधाकर सिंह जी कालाकाँकर—प्रताप गढ़
५) श्री श्याम लाल जी ऊँचा गाँव—एटा
५) मत्री आर्य समाज सहपऊ—मथुरा
११) हरिश्चन्द्र जी गोवर्धन मथुरा
१०) प्रताप चन्द्र जी महता मथुरा
१२) आर्य समाज खेडा मथुरा
५) चरखा सिंह जी वलीगढ़—मैनपुरी
१५) आर्य समाज गोरिया—हरदोई
२५) म० छोटे लाल जी बजाज-मथुरा
५) रामस्वरूप गोपाल जी मेरठ
११) ला० छीतर मल जी बजाज सिकन्दराऊ—अलीगढ़
१०) म० गिरधारी लाल जी पानी-गाँव—मथुरा
२५) मत्री आर्य समाज वेवर मैनपुरी
५) बा० राम गोपाल जी सिकन्दराऊ अलीगढ़
५) नैपाल सिंह जी कठौरा मैनपुरी
१५) मत्री आर्य समाज दरबै-मथुरा
१०) चौ० जवाहर सिंह जी नगला सेम्वा—मथुरा
६) ला० शिवदयालु जी वैश्य भर्थना इटावा
१०) चौ० रोशन लाल जी सेखा नगला—मथुरा
५) गगा बाई गंज डुडवारा—एटा
११) म० शकर लाल जी हरिश्चन्द्र जी गंज डुडवारा—एटा
१०) ठा० छोटे सिंह जी बरीपुर—हरदोई
५१) प० नित्यानन्द जी स्नातक टक-रूपुरा—इटावा
५) सेठ शिवनरायण जी ज्ञानचन्द जी बरकुट्टी छिन्दवाड़ा
१०) आर्य समाज सहसवान-बदायूँ
५) म० गुलाब सिंह जी थाना जी बेला मथुरा
५) भगवद दयाल जी मुख्तार भर्थना इटावा
१००) मन्त्री जी आर्य समाज शिकोहाबाद
५०) कु० लाल कुमारसिंह जी काला-काँकर प्रतापगढ़
५) सुखाराम जाटव राजपुर वृन्दावन
१०) त्रिवेणीराम जी भोवर (बस्ती)
५१) मत्री जी आर्य समाज मेडू अलीगढ़
२५) म० नन्द राम जी मेरठ
१०१) बा० मोहन लाल जी बैरिस्टर अलीगढ़
१०) म० हरीसिंह जी कटौलिया बाजना अलीगढ़
६) देवीप्रसादजी चन्दन लाल जी गोवर्धन मथुरा
११) रतीराम जी बाबूराम जी कोशी मथुरा
१०) सत्यदेव जी वैद्य होरी दरवाजा मथुरा
२५) चौ० धर्मवीर सिंह जी खुशी पुरा मथुरा
५) म० वृज लाल जी कुड़या खेड़ा समसा बाद—फरुर्खाबाद
१०) ला० गगा सहाय जी ओ३म् प्रकाश जी विजय गढ़ अलीगढ़
७०।।)।।। गुप्त दान अपील द्वारा
१००) आर्य समाज देहरादून
१५००) मत्री जी आर्य समाज नगर आगरा
१०१) सेठ बल्लो मल जी वृन्दावन
५) राम भजन जी वर बर—लखीम पुर
१०।।) ला० श्री राम लक्ष्मण प्रसाद जी नजीबाबाद बिजनौर
१०) डा० तिलकूलाल जी सदर बजार शाहजहाँपुर
१०) प० बद्री प्रसादजी रईस किरा-रौल—मुरादाबाद
२५।।=) एम एल कुमार ब्रह्मदत्त जी कलकास मिडील स्कूल शाह-जहाँपुर
१०) म० शिव बालक लाल जी पेन्शर कानून गो हरपुर बुढहट गोरख पुर
८=)।पैसा फन्ड
१०) बा० रामचन्द्र जी रिटायर्ड एस० डी० ओ० लक्ष्मण चौक देहरादून
५१) स्वा० वेदव्रत जी १।।४ आर्य नगर कानपुर

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४७ वां वार्षिकोत्सव ता० १३,१४,१५ अप्रैल १९४९ को होगा। नये बालकों का प्रवेश भी इसी अवसर पर होगा।

आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी।

—आर्य समाज बक्सर (आरा) का वार्षिकोत्सव ता: ८, ९, १० अप्रैल को मनाना निश्चित हुआ है।

—आर्यसमाज परमपुरवा (हैलट नगर) कानपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव ता० ७ से १० अप्रैल तक समारोह से मनाया जायगा जिसमें महाशय कृष्णजी आचार्य विश्वश्रवाजी, प० वाचस्पतिजी, प० प्रकाशवीरजी आदि आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक भजनोपदेशक पधार रहे हैं। १ से ७ अप्रैल तक महाभारत की कथा का आयोजन किया गया है।

—आर्यसमाज आरा का ६२वा वार्षिकोत्सव ता० २५ से २७ अप्रैल तक बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा। इस अवसर पर जिला आर्य सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्यकुमार सम्मेलन तथा आर्यवीरदल सम्मेलन होगें।

—आर्यसमाज सुल्तानपुर का वार्षिक उत्सव ता० १६—४—४९ ई० दिन शनिवार से १९—४—४९ दिन मगलवार तक होगा।

निर्वाचन

—ता० १५ मार्च सन् ४९ ई० चैत बदी १ सम्वत् २००५ मगलवार दुलहम्बो या होला का आर्यसमाज 'मुआवाला' का दूसरा वार्षिकोत्सव मनाया गया। निम्न लिखित पदाधिकारियों की नियुक्ति हुई।

श्री चौ० चोखेसिंहजी प्रधान, म० श्योनाथसिंहजी उप प्रधान, म० श्रद्धानन्द कौशिक मन्त्री, म० रामपालसिंहजी उप-मन्त्री, म० होरीसिंहजी कोषाध्यक्ष, म० रोशनसिंहजी निरीक्षक।

—आर्यसमाज बक्सर [आरा]—
१—विप्रसाद जी वर्मा प्रधान
मुरारी लाल—उप प्रधान
३—देवेन्द्र प्रसाद—मन्त्री
४—विश्वनाथजी सराफ—कोषाध्यक्ष

—आर्यसमाज सहपऊ (मथुरा)— प्रधान श्री गजबहादुरजी आर्य 'सरस' उप प्रधान म० पुरुषोत्तमदास बजाज, मत्री म० बद्रीप्रसाद 'दिव्य', उपमन्त्री म० छेदालालजी बजाज, कोषाध्यक्ष म० देवीप्रसादजी वर्मा, निरीक्षक डा० महेन्द्रपालजी वर्मा, पुस्तकाध्यक्ष म० अम्बिकाप्रसादजी आर्य।

आर्य मित्र के ग्राहकों से नम्र निवेदन

प्रति वर्ष दो सहस्र प्रतिया 'आर्य मित्र' की वी० पी० द्वारा भेजनी पड़ती हैं। डाकखाने के नियमों के अनुसार हर एक वी०पी० पर चार आना ।) के टिकट अधिक लगाने पड़ते हैं अर्थात ५००) पांच सौ रुपया अधिक व्यय होजाता है। यत्न किया जाता है कि यह ५००) ग्राहकों से वसूल भी किया जाय और बहुत कुछ वसूल भी होजाता है परन्तु इस कार्य्य के लिये एक लेखक को लगभग इतना ही वेतन देना होता है। यह एक सहस्र रुपया व्यर्थ व्यय बचाया जा सकता है यदि आर्य मित्र के ग्राहकमहोदय 'आर्य्य मित्र' का वार्षिक मूल्य ६) मनीआर्डर द्वारा स्वयं भेजदिया करें। ऐसा करने से एक और भी कठिनाई दूर होजा वेगी—वह यह कि वी० पी० का धन देर से प्राप्त होता हैं, ग्राहक शिकायत करता है कि वी० पी० छुड़ाने पर भी आर्य मित्र नहीं पहुँचता परन्तु कार्यालय में तब तक वी० पी० का रुपया प्राप्त नहीं होता। मनीआर्डर से रुपया शीघ्र प्राप्त हो सकेगा इसलिये बहुत सम्भव है कि आर्य मित्र को रोकने की आवश्यकता भी न होगी और न इस सम्बन्ध में किसी को शिकायत ही होगी।

आर्य मित्र की एजेन्सी

कुछ आर्य समाजों के उत्साही अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने 'आर्य मित्र' की ऐजेन्सी लेने की इच्छा प्रकट की है और इसलिये ऐजेन्सी के नियम मांगे हैं। उनकी सूचनार्थ नियम नीचे दिये जाते हैं—

एजेन्सी के नियम।

१—ऐजेन्सी की प्रार्थना कम से कम ५ प्रतियों की होनी चाहिये।

२—हर ऐजेन्ट को १) प्रति 'आर्य मित्र' डिपाजिट जमा करना होगा जो ऐजेन्सी समाप्त होने पर बकाया, यदि कोई एजेन्ट पर है, काट कर वापिस कर दिया जायगा।

३—हर मास के प्रथम सप्ताह में पिछले मास का हिसाब बनाकर 'आर्यमित्र' कार्यालय में एजेन्ट को मनीआर्डर सहित भेजना होगा।

४—ऐजेन्ट को कमीशन)॥ दो पैसा प्रति अङ्क मिलेगा अर्थात् ५ प्रतियां मगाने वाले को =)॥ प्रति सप्ताह प्राप्त होगा। पिछले ४सप्ताह का हिसाब या चन्दा भेजने का व्यय एजेन्ट को स्वयम करना होगा आर्य मित्र एजेन्ट के पास पेड पैकट में पहुँचेगा।

५—जो प्रतियां ऐजेन्ट बेच न सकेगा वह वापिस न ली जावेगी।

देवी प्रसाद जौहरी
स०अधिष्ठाता

आर्य वीर दल संस्कृति शिविर

आर्य्य वीर दल के अधिकारी व आर्य पुरुषों व छात्रों की सूचनार्थ निवेदन है कि इस वर्ष ग्रीष्म अवकाश गुरुकुल काङ्गड़ी में एक सांस्कृतिक शिक्षण शिविर व प्राची व्याख्यान माला का आयोजन किया जा रहा है। कार्य्य क्रम ३ सप्ताह का होगा। शिविर शुल्क ३० रु० है। रक्खा गया है। कार्य्य की महत्ता के कारण संयुक्त प्रान्तीय सरकार के श्री बी डी भट्ट स्पेशल आफिसर समाज सुधार व मद्य निषेध विभाग ने ५००) रु० की सहायता दी है एतदर्थ सरकार धन्यवाद की पात्र है। शिविराध्यक्ष विश्वबन्धु शास्त्री।

—फाल्गुन शुक्ल ३० सोमवार से २००५ को। बसन्तोत्सव के उपलक्ष में खड़हरा ग्राम के साहित्य प्रेमियों के उत्साह से एक गोष्ठी में श्री गाँधी पुस्तकालय के तत्वावधान में श्री युत् बाबू तेजचन्द्र चौधरी जी के सभापतित्व में "हिन्दी साहित्य परिषद्" की स्थापना हुई। कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का निर्वाचन हुआ श्री युत् गोविन्द प्रसाद झा जी "नेक" विशारद को कार्य सचालन करने की व्यवस्था का भार सौंपा गया।

—आ० स० बरबिघा (मुंगेर)-प्रधान म० शंकरप्रसादजी गुप्त, उप प्रधान म० केशवरामजी, मन्त्री म० हरगौरी लाल आर्य, उपमन्त्री म० रामस्वरूपजी, कोषाध्यक्ष म० जयनारायन गुप्त, पुस्त० म० रामचन्द्र प्रसाद।

चिन—
आ० स० गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ)—न प० रुद्रदत्तजी शर्मा उपप्रधान दामोदरदास, मन्त्री म० शिव नहाल।
आ० स० हसनपुर—प्रधान श्री मनो लालजी आर्य, उप प्रधान श्री मेवराजजी वैद्य, मन्त्री श्री मुन्शीरामशरनजी गुप्त, उप मन्त्री म० जगदीशचन्दजी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष म० मोहनलालजी, पुस्तकाध्यक्ष म० श्यामसुन्दरजी।

निर्वाचन

आ० स० कांथला:—

प्रधान श्री चम्पालाल जी प्रिंसपल उपप्रधान श्री मक्खूलाल जी आर्य। उप प्रधान श्री बुध सिंह जी। मन्त्री प० ओम प्रकाश राजवैद्य उपमन्त्री प० बृहस्पति जी राजवैद्य। प्रचार मन्त्री पं० रमेशचन्द्र शर्मा। कोषाध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश जी। पुस्तकाध्यक्ष श्री सीताराम जी।

यह समाज १५ वर्ष बाद फिर कार्य करने लगा है।

आर्य समाज हरगैया मिहौली

प्रधान श्री गदाधर प्रसाद जी शर्मा उपप्रधान श्री ठा० विक्रमसिंह जी रईस। मंत्री श्री बाबू रामपालसिंह जी रईस। उपमन्त्री श्री प० छोटेलाल जी शर्मा। पुस्तकाध्यक्ष श्री बाबू चेतराम जी वर्मा। कोषाध्यक्ष श्री महाशय पूरनलाल जी। निरीक्षक श्री ठा० नरेन्द्रपालसिंह जी।

—सार्वजनिक आर्य वाचनालय इटारसी

प्रधान सेठ फूलचन्द जी गोठी। उप प्र० बाबू हीरालाल जी चौधरी, डा० सुन्दर लाल जी। मंत्री महा० हरनारायण अग्र०। उपमंत्री प० गो० प्र० कपिल। कोषाध्यक्ष सेठ श० ना० अग्र० निरीक्षक बाबू लाजपत राय खोसले।

आर्यमित्र का पढ़ना प्रत्येक आर्य - परिवार को आवश्यक है

उनमें अन्यतम उपयुक्त पद्धति और कौन हो सकती है ? वर्तमान शिक्षा पद्धति और गुरुकुल प्रणाली में आदान प्रदान हो सकता है ऐसी मेरी धारणा है और मैं समझता हूँ इसी में दोनों का हित है।

अब तक देश के परतन्त्र होने से राजनीति ही सबका केन्द्रबिन्दु बन गया था। खेद है कि स्वतन्त्र होने के बाद भी हम अपनी मनोवृत्ति नहीं बदल रहे हैं। नवयुवकों का ध्यान उसी ओर है। परन्तु यदि देश शिक्षा, विज्ञान, उद्योग और व्यवसाय में पिछड़ा रहा, यदि समाज की कुरीतियां दूर न हुई, यदि देश के त्रस्त और दुःखी तथा दबे हुए स्त्री पुरुष दूसरे के समकक्ष न बने तो राजनीति, व्यक्तियों और पार्टियों के संघर्ष का केवल क्रीडाकेन्द्र ही बन जायगी। क्या हमारे देश के नागरिक और युवकगण इस ओर ध्यान देने और विचार करने की कृपा करेंगे ?

हिन्दू समाज में आज ऐक्य बढ़ाने की परम आवश्यकता है। पर आज जातियों को आधार स्तम्भ बना कर संकुचित दायरे में लाभालाभ की दृष्टि से राजनीति में भाग लेने की जो तैयारियें हो रही हैं वे हमें निर्बल बना रही हैं और हमें नष्ट कर देंगी। आज के नागरिकों और नवयुवकों का कर्तव्य है इसके विरुद्ध लड़ना। जातपांत के इस संकुचित सीमा का उल्लंघन कर हिन्दू समाज को बलवान और विशाल बनाना है।

स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छन्दता और अनियन्त्रण नहीं है। आज छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बात में हमें नियन्त्रित रह कर काम करना है। जहां गवर्नमेंट के विशेष कर्तव्य हैं वहां उसके नागरिकों का भी विशेष उत्तरदायित्व है। लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति पर चाहे वह सचिव हो, सरकारी कर्मचारी हो अथवा साधारण नागरिक हो समान उत्तरदायित्व होता है। इसके बिना लोकतन्त्र की सफलता कठिन ही है। आज जहां जाइए, सभी क्षेत्रों में बिना किसी मर्यादा के कार्यकर्ताओं की आलोचना और समालोचना की जाती है। हर एक को बुरा भला कहा जाता है। इससे काम करने वाले निरुत्साह हो जाते हैं और स्वयं बुराई करने वाला भी निर्बल बन जाता है। इसी अर्थ में नियन्त्रण को हम लोगों और बड़ों दोनों दायरों में अपनाना है और उस पर आचरण करना है।

दो शब्द बाहर जाने वाले स्नातकों और यहां के विद्यार्थियों से कह कर समाप्त करूंगा। प्रत्येक विद्यार्थी इस बात पर विचार करे कि उसके जीवन का लक्ष्य क्या है ? उसी लक्ष्य की परिधि में उसे अपने भविष्यत जीवन के कार्य को भी तय करना चाहिये। प्रत्येक कार्य में उसका दृष्टिकोण, उद्देश्य और भावना अधिक महत्त्व रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ की परिधि को बढ़ाता जाय जिसमें दूसरों के स्वार्थ का अधिक से अधिक समावेश हो सके। जितना ही यह दायरा बड़ा होगा उतना ही उसके निष्काम और निस्वार्थ का स्वरूप भी बड़ा होता जायगा। इस भावना के लिये स्नातकों और विद्यार्थियों को अपने जीवन में नैतिकता को प्रधान स्थान देना होगा। जो काम लिया उसे पूरा किया। जो बात कही उससे फिर हटे नहीं, यही नैतिकता है। व्यक्ति को समष्टि में मिलना यही स्वार्थ को मिटाना है। सत्य के लिए जीना और मरना यह बल अपने में ले आना है। बालकों और नवयुवकों का चरित्र ऐसा बने यही हमारी सच्ची आकांक्षा होनी चाहिये।

जिन स्नातकों को आज दीक्षा दी जा रही है वे बधाई के पात्र हैं। अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग यहां बिता कर आपने गुरुकुल की उपाधि को प्राप्त किया है। आप की गणना अब गुरुकुल के स्नातकों में होगी। अतएव गुरुकुल के आदर्शों की रक्षा का भार आप पर है। आप की शिक्षा एक धार्मिक वातावरण में हुई है। आप अपने धर्म और संस्कृति पर गर्व करें यह प्रसन्नता की बात है। किन्तु इतना आप अवश्य स्मरण रक्खें कि अपने धर्म और अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा का तात्पर्य दूसरों के साथ असहिष्णुता नहीं है। महात्मा वेदव्यास की धर्म की व्याख्या को हृदयङ्गम करना प्रत्येक स्नातक का पुनीत कर्तव्य है।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥

जो कुछ तुम अपने लिये चाहते वही दूसरों के लिये भी चाहो। यही है वह आदर्श समाज धर्म जिसकी अवहेलना ने संसार में मात्स्य न्याय स्थापित कर रखा है।

विद्यार्थी जीवन को समाप्त कर अब आप नागरिक जीवन में पदार्पण कर रहे हैं। आपका जीवन सुखी हो और जिन उद्देश्यों को लेकर आप को शिक्षा दी गई उनको पूरा करने में आप सफल हों यही मेरी कामना है।

++++

अ० भा० आर्य महासम्मेलन कलकत्ता

बहुमत की भाषा ही राष्ट्र भाषा हो

डा० रघुवीर द्वारा संस्कृतमयी हिन्दी का समर्थन

कलकत्ता ३ जनवरी। विधान परिषद् के सदस्य डाक्टर रघुवीर ने अखिल भारतीय आर्य काँग्रेस के ६ वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि संस्कृत के आधार पर 'हिन्दी ही राष्ट्र भाषा होनी चाहिये।

डाक्टर रघुवीरने कहा कि प्रजातान्त्रिक देश में बहुमत की भाषा ही राष्ट्र भाषा का स्थान प्राप्त करती है। आपने कहा कि हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा मानने के अर्थ हैं कि विभाजन के पूर्व थोड़े से मुसलमानों का सन्तुष्टीकरण की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी मुसलमानों की सबसे अधिक संख्या पश्चिमी बंगाल में है जो कि बंगला बोलते हैं और उर्दू नहीं जानते। इस प्रकार अन्य प्रान्तों के मुसलमान प्रांतीय भाषायें बोलते हैं। इसलिए यह मुनासिब नहीं है कि बहुमत की भाषा के आधार को बनावटी ढंग से बदल दिया जाय।

आपने कहा कि विदेशी भाषाओं के कुछ सौ शब्द हमारी भाषा में आ गये हैं और प्रचलित हैं। यह तो रहेंगे ही परन्तु भविष्य में अपने विचारों को ठीक प्रकार से व्यक्त करने के लिए हमें संस्कृत से ही सहायता लेनी चाहिए।

आपने कहा कि संस्कृत से विज्ञान, कला व्यवसाय तथा प्रबन्ध के सभी शब्दों को बनाया जा सकता है।

संस्कृतमयी हिंदी राष्ट्र भाषा हो

कलकत्ता, ३ जनवरी। अखिल भारतीय आर्य कांग्रेसके ६ वें वार्षिक अधिवेशनके अवसर पर देशकी जनता से अपील की गयी कि वे उन्हीं सिद्धान्तों का पालन करें जिनसे स्वतन्त्रता मिली है। सम्मेलन में देशके विभाजन पर दुःख तथा स्वतन्त्रता मिलने पर हर्ष प्रकट किया गया।

कांग्रेसने एक प्रस्ताव में कहा है कि संस्कृतमयी हिंदी तथा देवनागरी लिपि राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि मानी जानी चाहिए।

भारत द्वारा प्रस्तावित हिंदेशिया सम्मेलन का स्वागत

हिंदेशिया पर डच आक्रमण होने से एशिया के लिए जो गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई है उस पर विचार करने के लिए भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने सारे एशियाई देशों का एक सम्मेलन दिल्ली में करने का निश्चय किया है। सबको निमन्त्रण भेजे जा चुके हैं मिश्र, श्याम, चीन, तुर्की, वर्मा आदि देशों द्वारा निमन्त्रणों की स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है। सारे एशिया के देश भारत से सफल नेतृत्व की आशा रखते हैं।

काश्मीर में युद्ध बन्द

नई दिल्ली १ जनवरी को सरकारी तौर पर घोषणा की गई कि १ जनवरी की आधी रात के १ मिनट पूर्व काश्मीर में युद्ध बन्द करने का आदेश दे दिया गया है।

भारत सरकार ने अपने प्रधान सेनापति सर राय बूचर को अधिकार दिया था कि वे पाकिस्तान के सेनापति सर डगलस ग्रेसी को सूचित कर दें कि युद्धबन्दी का अविलम्ब आश्वासन मिलने पर भारतीय सेनायें युद्ध बन्द कर देंगी। इसके फलस्वरूप दोनों देशों की स्वीकृति होने पर उपयुक्त घोषणा हुई।

अभी हाल में संयुक्त राष्ट्र संघ के काश्मीर कमीशन के सदस्य अल्फ्रेड लेजानो दिल्ली और कराची आये थे और उन्होंने मत गणना के लिये कुछ नये सुझाव रक्खे थे। प्रस्ताव स्वीकार्य होने से भारत सरकार ने अगली घोषणा होने तक रक्तपात उचित न समझ कर यह पग उठाया, जो कि नये वर्ष के प्रथम दिन का प्रथम महत्वपूर्ण कार्य है।

विन्ध्य प्रदेश की अदालती भाषा हिन्दी घोषित

विन्ध्य प्रदेश की सरकार ने हिन्दी को सम्पूर्ण प्रदेश की अदालती भाषा बनाने का निश्चय किया है और आदेश दिया है कि यथा सम्भव सारे सरकारी काम हिन्दी में हों।

उड़ीसा में शिक्षा संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण

कटक, ३० दिसम्बर। उड़ीसा सरकार ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया है कि प्रान्तकी सभी शिक्षा संस्थाओं का सञ्चालन भार (जिनमें प्राइमरी स्कूल भी शामिल हैं) सरकार ने अपने ऊपर ले लिया है और अब शिक्षकों को वेतन सरकार से मिलेगा। अत अब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड यूनियन बोर्ड आदि प्रान्त की अन्य संस्थाओं द्वारा उनके सञ्चालन का कोई प्रश्न नहीं उठता।

ले० पं० शिवशर्मा जी

शर्मा आर्य पुस्तकालय सम्भल

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजु०

आर्य्यमित्र

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रिय राजसु मा कृणु
प्रिय सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ।
अथर्व १।६२।१

मुझे देवताओं का प्यारा बना, मुझे राजाओं का प्यारा बना। चाहे शूद्र हो या आर्य मुझे सब का प्यारा बना।

भाषावार प्रान्तनिर्माण

भाषा वार प्रान्तों के निर्माण का आंदोलन देशमें बहुत समय से चल रहा है। राष्ट्रीय कांग्रेस भी भाषा वार प्रान्तों के निर्माण के पक्ष में सन १९२१ से अपना मत प्रकट कर चुकी थी। सन १९२८ ई० में नेहरू रिपोर्ट में भी भाषावार प्रान्तों के निर्माण की व्यवस्था को स्वीकार किया गया था और चुनावों के घोषणापत्र में भी उसका संकेत है। अन्त में २७ नवम्बर १९४७ ई० को प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू जी ने विधान परिषद् में इस सिद्धान्त को स्वीकार करने की घोषणा की थी। तदनुसार इस आधार पर प्रान्तों के निर्माण से भाषाओं का ध्यान रखकर उनके सीमा निर्माण, आर्थिक स्थिति, तथा शासन सम्बन्धी व्यवस्था की जाच करने तथा रिपोर्ट देने के लिए विधान परिषद् ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के भूतपूर्व जज मि० एस० के० दर के प्रधानत्व में १७ जून १९४८ को एक कमीशन की नियुक्ति की थी। इस कमीशन ने अपनी मध्य दिसम्बर में सर्व सम्मत रिपोट द्वारा भाषावार प्रान्तो के निर्माण का विरोध किया है। जब कमीशन की नियुक्ति की गई थी उस समय यही समझा गया था कि भाषावार प्रान्तों के निर्माण सिद्धान्त तो स्वीकृत हैं परन्तु उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए कमीशन की नियुक्ति की जा रही है। कांग्रेस के नेताओं में मतभेद की तीव्रता के कारण अब सर्वोच्च प्रभावशाली नेताओं की समिति का निर्माण किया गया है जिस में प्रधान मन्त्री प० नेहरू जी उप प्रधान मन्त्री सरदार पटेल, और कांग्रेस के प्रधान डा० पट्टाभि सीतारमैया है। इस समिति की विशेषता यह है कि वह अपनी रिपोर्ट विधान परिषद् के सम्मुख प्रस्तुत न कर कांग्रेस के पूर्व निश्चयों और प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हुये कार्य कारिणी के सन्मुख प्रस्तुत करेगी। अनेक प्रभावशाली नेता जिनमें डा० पट्टाभि सीतारमैय्या प्रधानकांग्रेस भी हैं, कमीशन की रिपोट को भाषावार प्रान्त निर्माण के विरुद्ध दिये गये निर्णय को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं क्यों कि उसके निर्णय से उनकी आशाए और महत्वाकांक्षाए भूमिसात् हो गई हैं।

कमीशन का मत है कि देश की राजनैतिक अवस्थाओं के सर्वथा परिवर्तित हो जाने के कारण कांग्रेस अपना पूर्वकृत प्रतिज्ञाओं से सर्वथा मुक्त है। बहुत से अन्य देशनेता कमीशन की इस प्रतिज्ञामुक्त होने वाली सम्मति से सहमत नहीं हैं। वस्तुत बात यह है कि भविष्य में हो सकने वाले राजनैतिक परिवर्तनों का ठीक अनुमान न कर सकने से कांग्रेस जो गलती करता रहा है वह क्षन्तव्य है। बीस वर्ष पूर्व के समान इस समय भी भाषा वार प्रान्तों के निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता को अनेक महानुभाव उचित नहीं समझते हैं। इसके अतिरिक्त यदि किसी विशेष भाषा भाषी जनसमुदाय का अन्य भाषा भाषी जनसमुदाय की अपेक्षा पक्ष पात किया गया तो और भी अधिक हानि होने की सम्भावना है।

भाषाओं के अधिकारों का विवेचन करते समय कमीशनने मुख्य रूप से आन्ध्र, मलयालम कनाडी, महाराष्ट्रीय और गुजराती भाषा भाषियों के पृथक प्रान्त बनाने की मांगो पर विचार किया है और उन्होंने इसके लिये तीन परीक्षाए नियत की है। १—भौगोलिक सामीप्यता २ आर्थिक व शासन सम्बन्धी सुविधा, ३ जनता में अधिक से अधिक भाषा सम्बन्धी समानता। इन कसौटियों पर जाँच करने पर ज्ञात होगा कि आन्ध्र प्रांत भाषा सम्बन्धी समानता की परीक्षा मे ठीक नहीं उतरता। इस प्रांत के निर्माण में अनेक परस्पर सर्वथा विभिन्न भाषा भाषियों मे प्रतिस्पर्धा है केवल भाषा भाषी प्रांत निर्माण में भी आर्थिक स्वसामर्थ्य सम्पन्नता और शासन सम्बन्धी सुविधा नहीं है कर्नाटकी भाषा भाषियो में भौगोलिक सामीप्यता का अभाव, और महाराष्ट्रीय विविध भाषाओं की अनेकता पायी जाती है आर्थिक दृष्टि से तो इस आधार पर निर्मित प्रांतों का असामर्थ्य दोष तो लगभग सभी प्रांतो पर समान रूप से लागू होता है। यदि यह किसी प्रकार मान भी लिया जाय कि यह प्रान्त आर्थिक दृष्टि से हीन स्थिति के न भी रहेंगे तो भी शासन करने के लिये उपयुक्त पर्याप्त अधिकारी वर्ग कहाँ से प्राप्त होंगे? ओडोनल कमीशन के निर्माण के अनुसार भी किये गये उडीसा प्रांत के निर्माण में तैलगू भाषा भाषियों के सम्मिलित कर देने के उदाहरण से पर्याप्त शिक्षा और अनुभव ग्रहण किया जा सकता है।

कमीशन की रिपोर्ट का परस्पर संगत न हो सकने वाला विचित्र भाग वह है जहाँ उन्होंने भाषा वार प्रांतो के निर्माण को प्रांतो मे उपराष्ट्रीयता की भावना के उत्पादन से देश की एक राष्ट्रीयता का खण्डित हो जाना, तथा विरोध प्रकट किया है और साथ यह भी लिखा है कि भाषावार प्रांतो के निर्माण के इच्छुक महानुभाव प्रांतीय स्वराज्य तक का परित्याग कर भारत के केन्द्रीय एक शासन सत्ता को स्वीकार करने के लिये सर्वथा उद्यत हैं। कमीशन का मत है कि अनेक भाषा भाषियों को सम्मिलित कर वर्तमान निर्मित प्रांत, एक राष्ट्रीयता की भावना को दृढ करने में सहायक हैं। अतः उन्होंने वर्तमान प्रांतो का समर्थन किया है। इसके साथ ही सम भाषा भाषियों और सम प्रान्त निवासियों में अन्य भाषा भाषियों अथवा अन्य प्रान्त निवासियों की अपेक्षा परस्पर अधिक सौहार्द होना स्वाभाविक है। डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि राष्ट्रीयता की धुन में विभिन्न भाषाओं के स्वस्थ विकास और प्राचीन जनपदीय उत्तम साहित्य का विनाश कर बैठे। यह स्मरण रखना चाहिये कि राजनैतिक प्रगति का आधार भी अब ग्राम और जन पद होने जा रहे हैं। भाषा के सम्बन्ध में रूस तथा अन्य देशो की पृथक भाषाओं की रक्षा, तथा एक राष्ट्रीयता के विकास के सफल परीक्षण से लाभ उठाया जा सकता है।

कांग्रेस का अधिवेशन

जयपुर में कांग्रेस का ५५वां अधिवेशन, जैसी कि आशा की जाती थी अत्यन्त समारोह पूर्वक समाप्त होगया। इस अधिवेशन के प्रधान श्री डा० पट्टाभि सीतारमैया का प्रधानपद से दिया गया भाषण अपने पूर्ववर्ती सभा सभापतियों के भाषणों से सम्भवत, अधिक लम्बा था। भारतीय स्वतन्त्रता के अनन्तर शान्तिमय वातावरण में होने वाला यह सर्व प्रथम अधिवेशन था। इसलिये देश की उन्नति परिस्थिति, और राष्ट्रीय विकास के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषयों पर प्रकाश डाला जाना वाँछनीय ही था। इस अवसर का पूरा २ लाभ उठा कर उन्होंने अपने व्याख्यान में जिन विभिन्न विषयों पर अपना मत प्रकट किया है, यद्यपि अनेक विषय अत्यन्त विवादग्रस्त होने से तीव्र मतभेद के परिचायक हैं और उनमें कहीं २ हेत्वाभास भी पाया जाता है तथापि भाषण की विशेषता यह है कि इतने विषयों की विभिन्नता और विविधता होने पर भी, विदेशों से सम्बन्ध देशकी व्यावसायिक व श्रमिक समस्याएँ, रियासतों का प्रश्न, शरणार्थियों की व्यवस्था, राष्ट्रीय भाषा तथा देश में सामाजिक और राजनैतिक न्याय की स्थापना, और विदेशों में भारतीयों की समस्याओं को विशेष प्रमुखता दी गई है। भाषण में गांधी भावना का विशेष पुट है जिससे कांग्रेस के हित चिन्तकों को प्रोत्साहन ही मिलेगा।

डाक्टर पट्टाभि के भाषण में इन सब बातों का विवेचन होने पर भी उनके विचार की मुख्य गति गवनमेंट और कांग्रेस के परस्पर सम्बन्ध पर केन्द्रित प्रतीत होती थी। उन्होंने इसका अनेक प्रकार से विश्लेषण करने का यत्न किया है। इस सम्बन्ध को स्पष्ट प्रकट करने के लिये उन्होंने अनेक भाव वाचक शब्दों का प्रयोग किया है और कांग्रेस को फिलासफर 'दार्शनिक" (एक्सलेटर) "सदाचार निर्देशक, (थर्मामिटर)"तापमापक यत्र, (वैरामीटर)"दबावमापक यत्र, और मेनट्रस्ट " बुद्धिकोष' आदि नाम दिये हैं। प्राय. देखा गया है कि इस प्रकार की तुलनात्मक भाषा का प्रयोग स्पष्ट घोषणाओं से बचने के लिए ही किया जाता है। फिर भी यह तो स्पष्ट ही है कि उनके भाषण मे भारतीय मन्त्रि मण्डल के कई कार्यों से मतभेद सूचक चिह्न प्रकट होते हैं, ज्ञात होता है कि वे उनके कार्यों के केवल अध समर्थक रहने से सन्तुष्ट नही है। उनका यह कथन बिलकुल ठीक ही है कि केन्द्रीय सरकार के निर्णय न केवल बिना किसी प्रकार के वाह्य दबाव के होना ही वाञ्छनीय नहीं है प्रत्युत उनके कार्यों में सहायता कर दिया जाना भी अत्यन्त आवश्यक है। जहा एक ओर कांग्रेस का काय यह है कि वह गत पूर्व प्रतिज्ञाओं, वर्तमान दिक्कतों और भावी अनिश्चितता से उत्पन्न विषम परिस्थिति में सरकार की सहायता कर, वहाँ दूसरी ओर साथही जनता की अनियन्त्रित इच्छाओं और उनका अव्यवहारिक मार्गों को संयम में रखकर सरकार और जनता, दोनों के मध्यमार्ग द्वारा देश को धीरे धीरे प्रगति के मार्ग पर सचालित कर उनमें ठीक सन्तुलन रखना है। कांग्रेस दल में यह शक्ति, सामर्थ्य और साहस होना चाहिए कि वह किसी मार्ग पर चलने से पूर्व न केवल उसका अच्छी प्रकार परीक्षा ही करलें प्रत्युत यदि आवश्यक प्रतीत हो तो काफिले को हानिकारक मार्ग से प्रत्यावर्तित भी कर सके

यह तो भविष्य ही बतलायेगा कि जनता सरकार, और कांग्रेस के परस्पर व्यवहारिक सम्बन्ध मे श्री डा० पट्टाभि सीतारमैया द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्त कैसे सामञ्जस्य स्थापित कर सकेगा? जब तक कि एक ही राजनैतिक पार्टी और शासन के सचालन की नीति मे उत्तरदायी न होगा, संघर्ष की सम्भावना बनी ही रहेगी। और दोनों पदों पर एक ही व्यक्ति के नियुक्त मे गवनमेंट और संस्था के परस्पर सम्बन्धों में सबसे मुख्य इस समस्या के उत्पन्न होने की सम्भावना है कि मन्त्रिमण्डल स्वतंत्र रूप मे, केवल निर्वाचित धारा सभा के प्रति ही उत्तरदायी होकर स्वतन्त्र रूप से कार्य करे अथवा धारा सभा से बाहर किसी अन्य पार्टी के प्रति सम्पूर्णत उत्तरदायी रहे। मन्त्री मण्डल का किसी अन्य दूसरे अधिकारी से अथवा किसी अन्य शक्ति से दबाव मे रहने को नापसन्द करना कुछ अस्वाभाविक नहीं है। कुछ भी हो वैधानिक तो यही है कि धारा सभाओं का बहुमत ही सरकार के शासन का नीति सचालन करता है और मन्त्रियों की व्यक्तिगत समालोचना और प्रतिबंध लगाने का अधिकार रखता है।

डा० पट्टाभि सीतारमैया का भाषण यद्यपि विद्वत्तापूर्ण तो था—परन्तु वह देश के सामने किसी निश्चित स्फूर्तिदायक योजना को नहीं रख सका। यह विशाल, शानदार और दो करोड़ से अधिक धन व्यय द्वारा सम्पादित अधिवेशन भी देश का कोइ विशेष निर्देश नहीं दे सका है। उसमें स्वीकृत प्रस्तावों मे अत्यन्त आडम्बरपूर्ण ढग से प्रस्तुत किये जाने पर भी देश की आवश्यक समस्याओं पर मार्गदर्शन नही। अनिश्चित रूप मे विचार करने का यत्न किया गया है। जो इस बात का विशेष रूप में परिचायक है कि कांग्रेस के नेता इस सम्बध में कोई निश्चित निर्णय नहीं कर सके हैं और एकाएक परिवर्तित गम्भीर परिस्थिति मे कांग्रेस के रूप परिवर्तन, आवश्यकता आदि पर विचार करने के लिये बाध्य हो रहे हैं। अतः कोई आश्चर्य न होगा यदि वे पार्टी से ऊपर उठकर आन्दोलन भावना का परित्याग कर व्यवहारिक दृष्टि से देशोन्नति के लिये प्रगति करने को बाध्य हों।

चीन का गृहदाह

आज चीन से निरन्तर कम्यूनिस्टों की प्रगति तथा राष्ट्रीय फोजों के क्षीण होने के समाचार प्राप्त हो रहे ह।

राजनीतिक जगत मे यह अनुभव किया जाने लगा है कि कम्यूनिज्म के इस भीषण प्रवाह मे सम्भवत. सम्पूर्ण चीन डूब जायगा। चीन द्वारा अमेरिका से की गई अपीलों और श्रीमती चाङ्गकाईशेक का इस उद्देश्य से अमेरिका जाना चीन की आशका जनक राजनैतिक स्थिति को दर्शाने वाला है।

चीन के दीर्घकालीन आन्तरिक युद्ध से लाभ उठाकर जापान, रूस तथा अमेरिका आदि अन्य योरोपियन देश अपने २ राजनैतिक प्रभाव क्षेत्र को विस्तृत करने में लगभग ४० वर्षों से सलग्न है। गत सन् ३६ के ससार व्यापी महायुद्ध में जापान के पराजित हो जाने से यद्यपि एक आक्रान्ता की न्यूनता हो गई है परन्तु वह विजयी रूस के कम्यूनिज्म के सघर्ष में और भी अधिक नष्ट हो रहा है। ५० करोड की जन सख्या और १५ लाख ३३ हजार के वर्गमील के विशालकाय चीन देश की भूमि रक्त रजित हो उठी है।

एकाएक कोई भविष्यवाणी करना तो सम्भव है नही क्योंकि इस देश के इतिहास मे अनेक असम्भवनीय घटनायें सम्भव होती देखी गई है परन्तु इतना तो निश्चित ही है कि निकट भविष्य में स्वतन्त्र रहने पर भी, इस देश के भाग्य में सुख नही है।

चीन के इन राजनैतिक युद्धों की परम्परा का प्रारम्भ सन् १६११ ई० से हुआ। जब कि चीन मे क्रान्ति के परिणाम स्वरुप बालक मन्चू सम्राट राजगद्दी से उतारा जाकर सन् १२ में चीन को रिपब्लिक (प्रजासत्तात्मक) राज्य घोषित किया गया। तब से बराबर ही अशान्ति और अराजकता का दौरदौरा है। रिपब्लिक के प्रथम अध्यक्ष मार्शल युआन शिकाई का उत्तरीय चीन के प्रसिद्ध नेता डा० सनयातसेन ने तीव्र विरोध किया। १६१५ मे युआन शिकाई ने अपने आपको सम्राट् घोषित कर दिया परन्तु उसकी शीघ्र मृत्यु हो गई। डा० सनयात सेन ने दक्षिणी चीन की राजधानी नानकिङ्ग को क्रान्ति का केन्द्र बनाया जिसके अनन्तर देश मे बराबर गृहयुद्ध प्रचलित रहा। चीन का दक्षिणी भाग निरन्तर उत्तरीय भाग से लड़ता रहा और विभिन्न स्थानों पर अनेक सैनिक मार्शल, जनरल अपनी २ सरकारें स्थापित करतेरहे।

सन् १६१४ के महायुद्ध में जापान और युद्ध समाप्ति के अनन्तर व्यावसायिक सघर्ष में अमेरिका, जापान के प्रतिद्वन्दीरूप में चीन में प्रविष्ट हुआ।

डा० सनयातसेन बराबर उसके उद्धार का प्रयत्न कर रहे थे। कम्यूनिस्ट रूस की दिलचस्पी चीन के अन्तरीय मामलों में क्रमशः बढ रही थी। कम्यूनिस्ट लोग अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद को नष्ट करने के लिये चीन को अत्यन्त महत्वपूर्ण चाबी समझने लगे थे। सन् १६२५ में जनरल चाग काईशेक का राष्ट्रीय नेता के रूप में उदय हुआ। उन्होने दक्षिण चीन के सेना नायकों को १६२६ में पराजित कर मुख्य सेनापति व शासक का पद ग्रहण किया और उत्तरीय चीन के सैनिक डिक्टेटर मार्शल चाङ्ग स्टो लिन को पराजित कर राष्ट्रशक्तिको सगठित कर दिया। शघाई में कम्यूनिस्टों का सामूहिक नरसहार कर विनाश किया और नानकिंग को राजधानी बनाया। यह हार खाकर भी कम्यूनिस्ट दक्षिण के २ प्रांतों में अपनी सरकार स्थापित करने में सफल हो गये। चांग काईशेक ने इन प्रांतों के विरुद्ध ७ बार सनिक अभियान किया और १६३४ में इन प्रांतों पर भी राष्ट्रीय सेनाओं का अधिकार हो गया। कम्यूनिस्ट सेनायें जेचुआन प्रान्त में चली गई।

इन आन्तरिक युद्धों का लाभ उठाकर जापान ने सन् १६३१ में चीन के मन्चूरिया प्रान्त और मुकदन राजधानी पर अधिकार कर लिया। जुलाई सन् ३७ में पेकिङ्ग में मार्कोपोलो के पुलपर जापानी सिपाहियों पर आक्रमण किये जाने का बहाना बनाकर जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया, इसी बीच में सन् ३६ मे महायुद्ध प्रारम्भ होगया। और जापानी सैनिकशक्ति से चीन, मलाया और वर्मा का अधिकतर भाग विलोडित होनेपर भी अत मे पराजित हो जाने के कारण चीन में जापानी प्रभाव का सर्वथा अन्त हो गया।

रूस की सीमा से सलग्न होने के कारण और साईबेरिया के सीमा प्रान्तको अपने प्रभाव में रखने की इच्छा के कारण रूस के सहयोग से कम्यूनिस्टों का प्रभाव बढ रहा है। चीन में इस समय भी अग्रजों का ४५ करोड पौंड और अमेरिका का ४० करोड डालर व्यसायों में लगा है। इसके अतिरिक्त चीन का अभी बहुत सा ऐसा भाग है जो किसी भी प्रभावक्षेत्र से रिक्त है अत व्यावसायिक बाजारों के लिये पर्याप्त गुन्जाइश है।

कम्यूनिस्टों के विरुद्ध गत ८ वर्षों से युद्ध लडा जा रहा है। जनरल चाङ्ग काईशेक की 'या तो चीन को पर्याप्त सहायता मिले अन्यथा पतन हो' की अपील का अमेरिका पर कोई विशेष प्रभाव न हो सका। आज शायद अमरीका को यह विश्वास नहीं रहा कि उसकी पूँजी फिर वसूल हो सकेगी। गत वर्षों में दी गई सहायता पर भी नानकिंग सरकार व उसकी सेनाओं की असफलता दुःखजनक सन्देह उत्पन्न करने वाली है। आज चारों ओर से निराश तथा ध्वस्त होकर चाङ्ग काई शेक कम्यूनिस्टों से संधि के लिए हाथ बढा रहे हैं। हम समझते हैं कि यदि दुनियों की फूट डालनेवाली

(शेष पृष्ठ १३ पर)

प्रस्तावित हिन्दू कोड मीमांसा

(ले०—रादत्त शुक्ल एम० ए० एडवोकेट,)

आर्यमित्र ता० २५ नवम्बर ४८ के पृ० ७, ८ और ११ पर प्रस्तावित हिंदू-कोड, शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ था। उस लेख के सम्बध में ही आर्य मित्र ता० १६ दिसम्बर ४८ के पृ० ८ पर आर्यसमाज के वयोवृद्ध विचारक श्री गङ्गाप्रसाद जी रिटार्ड चीफजज महोदय का एक लेख "प्रस्तावित हिंदूकोड और आर्य समाज," शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उक्त लेख में विद्वान लेखक लिखते हैं कि, "श्री शुक्लजी ने हिंदू कोड सम्बधी कई विषयों पर अपने विचार प्रकट किये हैं, मैं केवल २ विषयों पर अपने विचार लिखना चाहता हूँ।" आगे आपने पहली बात कोड के पक्ष में लिखी है उसका एकीकरण सिद्धान्त और दूसरी यह कि प्रस्तावित कोड का विरोध न किया जाय और न उसको स्थगित किया जाय अपितु उसके दोषों को दूर करके उसको स्वीकार कर प्रचलित कर दिया जाय। ऐसा करने से आपकी सम्मति में जैसे धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र मे ऋषि दयानन्द की शिक्षा से अनेक सम्प्रदायों के स्थान पर एक वैदिक धर्म, अनेक देवताओं के स्थान पर एक ईश्वर, अनेक धर्म ग्रन्थों, के स्थान पर एक धर्म पुस्तक वेद की तथा अनेक जन्मगत जातियों के स्थान पर सबका एक नाम आर्य दिया गया है उसी प्रकार प्रस्तावित कोड भी समग्र हिंदू जाति पर एक समान कानून लागू करके हिंदू जनता की जातीयता राष्ट्रीयता के के एकीकरण मे सहायक होगा। "शुक्ल जी ने कोई शब्द हिंदूकोड की उपरोक्त बात पर नहीं लिखा।"

वैयक्तिक धारणाओं और भावनाओं को छोड़कर यदि कोड सम्बधी लेख की धारा १ और उसके साथ ही उपधाराओं को पढ़ा गया होता तो कदाचित् इस बात को लिखने का कष्ट न उठाना पड़ता कि आलोच्य लेख में लिखा एकीकरण की बात का उल्लेख नहीं किया गया है। क्योंकि हिंदूकोड के साधारण तम विद्यार्थी को ही नहीं अपितु यह बात तो कतिपय कोड के विधाताओं को सुस्पष्ट है कि प्रस्तावित हिंदूकोड जैसा कि प्रकाशित किया गया है, उससे एकीकरण सर्वथा असम्भव है। उदाहरणार्थ क्या कृषिसम्बद्ध भूसम्पत्ति, वसीयत द्वारा प्रदत्त सम्पत्ति, स्त्रियों के स्वामित्व की सम्पत्ति, और बिना वसीयत किये मरने वाले हिंदू पुरुष की सम्पत्ति का उत्तराधिकार समान रूप से सर्वत्र भारत राष्ट्र मे लागू होना किसी प्रकार सम्भव होगा। यदि नहीं तो एकीकरण का क्या प्रयोजन है। क्या भारत राष्ट्र की प्रजा केवल हिंदू, आर्य, सिक्ख और जैन ही हैं। क्या उसी राष्ट्र के नागरिक मुसलमान ईसाई, यहूदी, पारसी आदि नहीं हैं। यदि वह भी समानाधिकार रखने वाले भारत के नागरिक हैं तो किस प्रकार उनपर हिन्दू कोड लादा जायगा। आश्चर्य है कि एक ओर तो यह प्रयास हो रहा है कि हिन्दू विश्वविद्यालय से और मुसलिम विश्वविद्यालय से क्रमश: हिंदू और मुस्लिम शब्द उड़ा दिये जाय और विशुद्ध राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाये जावें। ऐसी दशा में किस प्रकार हिन्दू कोड और मुसलिम कोड ईसाई कोड, पारसी कोड और यहूदी कोड जातीय और राष्ट्रीय एकीकरण को स्थापित कर सकेंगे, यह बात साधारण बुद्धि के तो परे प्रतीत होती है। खेद है कि जिस हिन्दू पने को अथवा उस शब्द को हो आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि ने अपने भाषणों और लेखों में कहीं भूलकर भी स्थान नहीं दिया, उसी को हम हृदय से सराहते हुये अपनाने के लिये तैयार हैं। कि लहसुन खाने से भी यदि व्याधि शान्त हो जाय तो ऐसे लोग हो सकते हैं कि उसको सेवन करने लगें; यहां तो एक प्रकार के कानून के स्थान पर तीन २ प्रकार के कानून लादे जाने का उपक्रम हैं।

दोषों को दूर करके कोड को शीघ्र स्वीकार करके प्रचलित किया जाय, इस सम्बध मे आपने उन सब सज्जनों की बड़ी प्रशंसा की है कि जिनके बड़े के प्रयत्न से प्रस्तावित हिन्दूकोड तैयार हुआ है। किन्हीं व्यक्तियों के प्रश्न की सराहना का तो यहां प्रश्न ही है। विचारणीय विषय तो यह है कि प्रस्तावित हिंदूकोड जिनके कल्याण के लिये बनाया जा रहा है, उनको क्या अभिमत है, उनकी क्या मांग है, उनकी किस बात में सुविधा होना सम्भव है, उनका बहुमत क्या चाहता है, और समग्र राष्ट्र के एकीकरण का प्रश्न किस अर्थ में हल होना सम्भव है। आश्चर्य है कि यह भी न जाने कैसे कहा जा सकता है कि जिस प्रकार वर्त्तमान भारत का विधान सभी भारतीयों के लिये लागू हो जायगा और किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी उसी प्रकार प्रस्तावित हिंदूकोड भी समानरूप से सब पर लागू होगा, तो इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। किन्तु विचार करने से प्रतीत होगा कि हिंदूकोड और भारतीय विधान समान महत्व नहीं रखते हैं। क्योंकि विधान तो समस्त राष्ट्र के समस्त नागरिकों पर समान प्रभाव रक्खेगा, परन्तु कोड केवल हिंदुओं के सम्बध मे लागू होने वाले कानूनों में से कतिपय सीमित क्षेत्रों मे ही विशिष्ट व्यक्तियों और उनके स्वत्वाधिकारों के विषय में लागू हो सकेगा। हां एक ईश्वर, एक वैदिक धर्म, एक धर्म पुस्तक वेद, एक शब्द आर्य, इस धार्मिक क्षेत्र के एकीकरण की भांति प्रस्तावित हिंदूकोड होता और उसके प्रति वैसी ही मान्यता उन लोगों को हो जाती कि जैसी आस्था विद्वान् लेखक की एक ईश्वर, एक वैदिक धर्म, एक धर्म पुस्तक वेद और कदाचित् एक शब्द आर्य के सम्बध मे है तो फिर प्रस्तावित कोड का तो सभी भारतीय ऐसे ही स्वागत करते कि जैसे "रघुपति राघव राजा राम आदि जन गीत को करते देखे जाते हैं। परन्तु वास्तविकता इससे कोसों दूर हैं।

एक बात और इसी प्रसंग मे विचारणीय है कि क्या एकीकरण कोई ऐसा सर्वतंत्र सिद्धान्त है कि जिसको स्वीकार करना सब कालों और सब लोगों के लिये समान रूप से अनिवार्य है। यदि एक क्षण के लिये भारत राष्ट्र के नागरिक इस सर्वतंत्र सिद्धान्त को स्वीकार कर सकते तो हिन्दुस्तानी के राष्ट्रभाषा बन जाने में क्या आपत्ति हो सकती है। किन्तु इसके विरुद्ध तो हम संस्कृति, धर्म, परम्परादि सब कुछ विचार के हिन्दुस्तानी के नाम से भी चिढ़ते हैं और हिंदी एवं नागरी लिपि को ही अपनी राष्ट्रभाषा और देव नागरी लिपि बनाने के लिये भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। वस्तुतः महर्षि ने वेद और सत्य को अपनी समस्त वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों और प्रगतियों का मानदंड समझा और समझाया था। पचायतपने का अनुसरण न करके थियासोफी और ब्रह्म समाज से एकीकरण करना किसी प्रकार भी उचित नहीं समझा था। फिर अन्य आर्य समाज के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के लिये भी तो वेद और सत्य के अतिरिक्त और कौन सा ऐसा नया मानदंड अब बन गया है कि जिसका हम अन्धानुकरण करने के लिये विवश हो गये हैं। वस्तुतः धर्म संकट के समय तो धर्मप्राण आर्य के लिये वेदादि सत् शास्त्र ही मार्ग दर्शा सकते हैं। उनका आलोडन और परिमन्थन धीरता गम्भीरता के साथ आर्य विद्वानों को करना ही चाहिये। इस कार्य मे धारणाओं और आग्रह को शास्त्र एवं उनके अनुवचनों के स्थान पर प्रचारित न किया जाय तो अच्छा ही है। हां स्वतंत्र भारत में प्रत्येक विषय पर सभी नागरिकों को विचार करने और उन विचारों को प्रकाशित करने का पूरा एवं समान अधिकार है।

प्रस्तुत लेख व लेखक का प्रस्तावित हिंदूकोड के सम्बध में जो लघु प्रयास हुआ है, उसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि प्रस्तुत विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से और विभिन्न पार्श्वों से विद्वान् लोग समीचीन रीति से विचार करें कि जिसमें जनहित साधन मे सुगमता और सौकर्य सम्भव हो। बिना भली भांति विचार किये किसी बात को मानना या विरोध करना बुद्धिजीवियों के स्वभाव के विरुद्ध है।

सांप्रदायिक जहर उगलने वाली संस्थाये सहन न होंगी

संघ से बचने के लिये पंत जी की अपील

२६ दिसम्बर। को सायंकाल गंगाप्रसाद मेमोरियल हाल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विरोधी एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें माननीय प्रधान मंत्री पंडित गोविंद बल्लभ पंत और मंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त व श्री आत्मारामगोविंद खेर ने भाषण किया। हाल के बाहर जनता का बहुत बड़ा समूह प्रांतीय नेताओं के भाषणों को सुन रहा था।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र 'ईशावास्यमिदं" के अंदर हमारी संस्कृति निहित है कहते हुए पंतजी ने कहा कि जिस संस्था की नीति गांधीवाद के विरुद्ध रही हो और जो साम्प्रदायिक जहर उगल कर हिंदू संस्कृति के नाम पर नवयुवकों और खासकर कमसिन लड़कों को बरगला और भड़का कर देश के वायुमंडल को दूषित करने का प्रयास करे, ऐसी संस्था स्वतंत्र देश मे नहीं रह सकती। आज हम सबको प्रेम और सद्भावना से देश के निर्माण में संलग्न होना है। संघियों ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और साथ ही साथ कांग्रेस का विरोध किया और गांधी जी जब तक जीवित रहे हिंदुओं मे यही प्रचार किया कि गांधी जी ने हमें बिगाड़ दिया है। उन्होंने साम्प्रदायिक वातावरण पैदा किया जिसका परिणाम यह हुआ कि महात्मा गांधी की हत्या की गयी। अगर आप समझते हैं कि हम उन महान् व्यक्ति के आदर्शों पर चलें जिन्होंने सत्य और अहिंसा के पथ पर चलकर हमें आजादी दिलवायी तो आपका यह कर्त्तव्य है कि संघ को किसी प्रकार की सहायता न दें ताकि देश के किसी कोने में संघ की कोई आवाज न सुनाई दे।

आपने कहा कि जब देश ब्रिटिश

(शेष पृष्ठ ६ में)

उभादेवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे।
अस्य सोमस्य पीतये ॥
ऋक्-म० १-सू० २३-म० २ ॥

अन्वयः—अस्य सोमस्य पीतये, दिविस्पृशा उभा देवा, हवामहे।

शब्दार्थः—(अस्य सोमस्य) इस सोम के, (पीतये) पान करने के लिये, आस्वादन करने के लिये, उपभोग करने के लिये, उससे पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकने के लिये, (दिविस्पृशा) आकाश को स्पर्श करने वाले, उससे आकाश तक उन्नत होकर पहुँचने वाले, (उभा देवा) दोनों देव, (इन्द्र-वायू) इन्द्र और वायु को, (हवामहे) आवाहन करते हैं, निमन्त्रित करते हैं, बुलाते हैं।

व्याख्या—मंत्र के कई शब्दों की व्याख्या पूर्व मंत्रों के साथ की जा चुकी है। मित्र के विज्ञ पाठकों के स्मरणार्थ पुनः संक्षिप्त प्रकाश डाला जायगा। 'सोम' शब्दों 'यू' धातु से बनता है। मूर्धन्य 'ष' दन्त्य 'स' में, और 'ऊ' गुण होकर 'ओ' में बदल जाते हैं, और 'मक्' आगम होकर 'सोम' शब्द बन जाता है धातु पाठ में इस 'यू' धातु के तीन अर्थ दिये गये हैं—प्रसव, ऐश्वर्य्य और प्रेरणा। जो-जो वस्तुएं उत्पन्न हों, ऐश्वर्य्य द्योतक और प्रेरक हों—व सबकी सब 'सोम' हुई। चन्द्रमा भी अमावस के उपरान्त पुनः उत्पन्न होता सा जान पड़ता है अतः 'सोम' कहलाता है। चन्द्रमा की सुधा लेकर जड़ी बूटियाँ उत्पन्न होती हैं 'सोम' कहलाती हैं। पुत्र उत्पन्न होता है, अतः 'सुत' और 'सोम' कहलाता है। ईश्वर उत्पन्न तो नहीं होता, किन्तु इस नाना विध संसार को उत्पन्न करने से 'सोम' कहलाता है। वह विश्व प्रेरक और परम ऐश्वर्य्य शाली होने से भी 'सोम' कहलाता है। राष्ट्र-पति चुनकर, निर्वाचित होकर, मानो प्रजा द्वारा उत्पन्न किया जाता है, अतः सोम कहलाता है। ऐश्वर्य्य और वैभव भी राष्ट्र द्वारा सम्पादित होने के कारण 'सोम' कहलाता है। स्वामीजी महाराज ने भी यत्र तत्र अपने वेदभाष्य में ये अर्थ किये हैं। प्रस्तुत मंत्र में 'सोम' शब्द का प्रयोग वैभव और ऐश्वर्य्य अर्थ में ही हुआ है।

नवीन राष्ट्र-रूपी 'सोम' का प्रसव हो चुका है। अब इसकी पीति करनी है। यह 'पीति' शब्द 'पा' धातु से बनता है। इसके दो अर्थ हैं—पीना और पालना, रक्षा करना। प्रस्तुत मंत्र में नव-जात शिशु 'राष्ट्र' को खिला पिला कर परि-पुष्ट

वेदवीथी

वैदिक सोम-पान के लिये इन्द्र और वायु देवों का
आवाहन

[श्री वा० किशोरी लाल जी गुप्त]

करना है। कैसे किया जाय ? (अस्य सोमस्य पीतये) इस राष्ट्र को परि-पुष्ट करने के लिये, इसकी दृढ़ नींव जमाने के लिये, नहीं २ इसे दिवि-स्पर्श कराने के लिये, इसे उन्नत बनाकर आसमान सा ऊँचा बनाने के लिये, (दिवि-स्पृशा उभा देवा) आकाश तक पहुँचने वाले, अत्यन्त महत्व शाली दोनों देवों को आम-न्त्रित करते हैं, पुकारते हैं, राष्ट्र-सेवा के लिये अवाहन करते हैं। कौन से वे देव ? (इन्द्र वायू) इन्द्र और वायु दोनों आकाश से बातें करते हैं। इन्द्र का अर्थ स्वामी जी महाराज ने स्थल-स्थल पर प्रमाण सहित विद्युत के किये हैं। 'देव' शब्द दिव्य दैवी गुणों के लिये भी प्रयुक्त होता है। 'वायु' बल का प्रतीक है। बड़े-बड़े वृक्षों को समूल उखाड़ फेंकता है। हनुमान जी अत्यन्त बल शाली और वेगवान होने के कारण ही 'पवन-सुत' कहलाने लगे थे इसी प्रकार मंत्र में 'इन्द्र' प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है। प्ररणा का प्रतीक है। बिजली से प्रकाश और अञ्जनों को प्रेरणा, गति मिलती है। राष्ट्र के अभ्युदय और निश्रेयस के लिये दो ही वस्तुओं की आवश्यकता है। शारीरिकबल, और बुद्धि-कौशल। इनके अभाव में राष्ट्र एक दिन नहीं ठहर सकता। राष्ट्र तो दूर की बात है यह शरीर तक नहीं टिक सकता संसार के सभी कार्यों के लिये शारी-रिक और मानसिक बल-संचय अनिवार्य्य है। अशक्त और मूर्ख कभी भी और किसी भी देश में पनप नहीं सकते। इसीलिये मंत्र में दोनों दिव्यशक्तियों-इन्द्र और वायु का आवाहन किया गया है।

इन्द्र और वायु अर्थात् उष्णता और गति, उत्साह और उसके अनु-सार कार्य-संलग्नता दोनों उन्नतिके लिये, जीवन-साफल्य के लिये अनि-वार्य्य हैं। यदि उत्साह की गर्मी नहीं तो जीवन मिट्टी, और उत्साह भी हुआ, किन्तु खयाली पुलाव पकाते रहे विचारों को कार्य में परिणत करने के लिये शरीर की गति नहीं, तो वह जोश वह उत्साह निरर्थक। अतः प्रकाश और गति अथवा ज्ञान और कर्म दोनों को बुलाकर एक त्रित करने की आवश्यकता है। अन्यथा आकाश तक पहुँचना तो दूर रहा। साधारण टीले की चोटी तक पहुँचना कठिन पड़ जायगा।

तीसरी बात जिसकी ओर मंत्र सङ्केत करता है इन दोनों देवों का 'पावन और 'पावक' पन है। प्रकृति के अन्दर जो-जो गन्दगियाँ पशु-पक्षी और मानव समाज उत्पन्न करता है उन सबको अग्नि और वायु स्वच्छ करते हैं। इसी प्रकार मानवी सृष्टि के अग्नि और वायु, ब्रह्म और क्षत्र शक्तियों, पुलिस और अध्यापकों उपदेशकों का कर्त्तव्य है कि राष्ट्र-व्यापी समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन, द्वेष ईर्षा और दुष्टाचरण को दूर करते रहने का सतत प्रयत्न करें। यदि आवश्यकता पड़जाय, तो आँधी की भाँति चल पड़ें, और राष्ट्र के कोने-कोने से गन्दगी और गलाज़त को उजाड़ कर फेंक दें। आज तो इन दोनों के भागीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है। पुलिस कभी हव्वा थी, आज उसे सच्चा पबलिक सर्वेण्ट स्वयं-सेवक बनकर राष्ट्र से चोरी, जारी, जूआ, आदि सब प्रकार के जुर्मों को खोज-खोज कर मिटाने का प्रयत्न करना चाहिये। इसी प्रकार आर्य्य समाज एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं को अपने-अपने ढोंग त्याग कर जनता में सदाचार और सद्व्यवहार की शिक्षा देने में जुट जाना चाहिये। विचार परिवर्तन बिना किये दुष्कर्म बदल नहीं सकते। वचन और कर्म की संशुद्धि के लिये शिव-सङ्कल्प मन की पहिले आव-श्यकता है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

साम्राज्य से टक्कर ले रहा था और देश में जलियान वाला बाग आदि घटनाएं हो रही थीं तो उस समय कोई भी संघी नहीं दिखाई दिया। आज जब हम आज़ाद हो गये हैं और देश में हिंदू व मुसलमान सद्भावना एवं प्रेम से रहकर देश के उत्थान में लग रहे हैं, तब यह संघी इस प्रकार उपद्रव करने का प्रयत्न करते हैं। वे राष्ट्र और देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं और लीग के रास्ते को अपनाने पर तुले हुए हैं।

गुप्त जी का भाषण

माननीय मंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त ने भाषण करते हुए कहा कि आज ऐसी संस्थाएं जो हिंदू संस्कृति के नाम पर उपद्रव करने, व दूषित एवं साम्प्रदायिक वातावरण पैदा करने की चेष्टा करें, किसी प्रकार सहन नहीं की जा सकतीं। आपने कहा कि हमें देश का निर्माण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दिखाये हुए रास्ते पर चल कर करना है। लेकिन यह खेद की बात है कि छोटे छोटे लड़कों को भड़का कर, हिंदू धर्म के नाम पर कानून तुड़वा कर रास्ते में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया जाता है। वह समय खत्म हो गया जब राज्य धर्मों के नाम पर चला करते थे। आज यह बीसवीं सदी है और कोई भी देश धर्म के नाम पर चलेगा तो वह स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार कर अंधकार की ओर जायगा। देश के मुसलमानों को उनके अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता।

श्री खेर का भाषण

माननीय मंत्री श्री खेर ने यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के ७ वें मंत्र 'यस्मिन्त्सर्वाणि' का उद्धरण देते हिन्दू संस्कृति के सम्बन्ध में कहा कि हमारी संस्कृति इस उपनिषद् के आधार पर है आपने कहा संघ के आंदोलन के पहिले उनके गुरुजी ने कहा था कि हमारी संस्था कानून भंग करने वाली संस्था नहीं है। लेकिन इसके थोड़े ही दिनों बाद संघियों ने सत्याग्रह कर कानून तोड़ने का प्रयत्न किया। संघ आज मुसलिम लीग की चालों पर चलकर पुनः देश को गुलामी की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहा है। आपने संघ का इतिहास और नीति पर प्रकाश डालते हुए कहा संघियों ने हमेशा यही कहा कि हमारा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं, हम सच्चे हिन्दू बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन वे अन्दर ही अन्दर सम्प्रदायिक एवं घृणित प्रचार करते रहे। उनमें प्रतिहिंसा की भावना उमड़ी। देश के विभाजन के बाद इन्होंने दूषित एवं साम्प्रदायिक प्रचार देश में फैलाया जिसका नतीजा यह हुआ कि एक हिन्दू ही ने राष्ट्रपिता की हत्या की। यह कलंक का टीका हिन्दू समाज पर सदा के लिए रहेगा।

प्रचुर प्रसन्नता

आर्य समाज गाज़ीपुर के और डी ए वी इन्टर कालेज गाज़ीपुर की विद्या सभा के सदस्यों में उग्ररूप में मत भेद हो गया। वह मत भेद इतना बढ़ गया कि अदालत में तीन अभियोग भी चलादिये। आर्य समाज गाजीपुर और डी ए वी इन्टर कालेज गाजीपुर की विद्या सभा के मन्त्री जी के तार और पत्र सभा कार्यालय लखनऊ में पहुँचे।

किसी समय दोनों ओर के आर्य गई पारस्परिक प्रेम पाश में बंध कर आर्य समाज और कालेज के कार्य का सुन्दर संचालन कर रहे थे परन्तु मतभेद के भयंकर भूत ने प्रेम पाश को द्वेष की दावानल में दग्ध कर दिया, तीन केस अदालत दायर होगये, प्रान्तीय न्यायालय (हाई कोर्ट) तक अभियोगों के चलाने के लिए दोनों दल सन्नद्ध होगये।

का समझौता सुगम एवं सुलभ नहीं है फिर भी मैं कृत संकल्प था कि जैसे भी हो यहां के झगड़े को मिटा और पारस्परिक समझौता करा कर ही हटूंगा। लगातार दो दिन के प्रबल प्रयास के परिणाम स्वरूप समझौते का सुन्दर स्वरूप २१ नवम्बर की रात्री मे १० बजे समुपस्थित हुआ और उभयपक्ष ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

यह लिखते हुये मुझे प्रचुर प्रसन्नता प्राप्त हो रही है कि न्यायालय से तीनों अभियोग उठालिए गये और मेरी उपस्थिति में ५८ नवम्बर का डी ए वी इन्टर कालेज गाजीपुर की विद्यासभा का निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न हो गया। आर्य समाज और विद्यासभा के सदस्य पूर्ववत् प्रेम पाश में बंध कर कार्य संचालन कर रहे हैं। गाजीपुर से चलते समय वहाँ के

यद्यपि पुनः पुनः चित्त में संकोच सृजन इस लिए होता था कि हाई कोर्ट तक लड़ने का निश्चय करने वाले आर्य भाई क्या मेरे बचनों का समादर कर समुचित समझौता करने के लिए सन्नद्ध हो जावेंगे? तथापि भगवान पर भरोसा कर मैं गाज़ीपुर पहुँचगया। युक्त प्रान्तीय आर्य प्रति निधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री बाबू अक्षयवर नाथ जी को भी मैंने आज़मगढ़ से बुला लिया था। वे भी २१ नवम्बर को प्रात काल गाज़ीपुर पहुँच गये थे। २१ नवम्बर को रात्री के ११॥ बजे तक हम दोनों के पुरुषार्थ का कोई परिणाम न निकला। २२ नवम्बर प्रात काल श्री बाबू अक्षयवरनाथजी को यह कह कर मैंने वापिस कर दिया कि मैं आज़मगढ़ आऊँगा तब तक गुरुकुल वृन्दावन के लिए धन संग्रहार्थ भूमि तयार कर लेवें। २१ नवम्बर की बात चीत के आधार पर हम दोनों इस परिणाम पर पहुँचे थे कि यहां

आर्य भाइयों ने गुरुकुल वृन्दावन के लिए ५८६) पांचसौ छयासी रुपया भी प्रदान किया। सामान्येन गाजीपुर के सब आर्य भाइयों का तथा विशेष श्री महावीरराम जी प्रधान विद्या सभा और श्री देवकीनन्दन जी प्रधान आर्य समाज का आभारी हूं कि जिन्होंने सभा और गुरुकुल का मान किया। मैं उस समय आनन्द की अभंग तरंग गंगा में गोते लगाने लगता जब समस्त सदस्यों से (दोनों पक्षों के सदस्यों से) सुनता था कि यद्यपि आदेश सभा का ही शिरोधार्य करना है तथापि हम अपनी बात कहे बिना रुक भी नहीं सकते हैं। अस्तु—मैं गाज़ीपुर के आर्य भाइयों से प्रचुर प्रसन्न हूँ और वे मुझसे प्रभूत प्रसन्न हैं इसलिए उभयक प्रचुर प्रसन्नता प्राप्त हुई है।

मैंने इस यात्रा में यह भी अनुभव किया है कि युक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल वृन्दावन के लिए आर्यजनों के मन में समादर एवं श्रद्धा विद्यमान है। आज़मगढ़ शाहगंज और जौनपुर आर्य समाज ने गुरुकुल वृन्दावन का देयद्रव्य मिनटा में मुझे दे दिया।

श्री गिरधारी लाल जी मन्त्री आर्य समाज लालगंज जिला आजमगढ़ में तो अपने साथियों के सहित १४ मील शीत काल में साइकिल से चलकर परिहा स्टेशन पर आकर गुरुकुल का देयद्रव्य टून में दिया। मैंने उनसे कहा कि इस शीत काल में प्रात काल चौदह मील साइकिल से चल कर यहां क्यों आये? युवक मन्त्री ने मुसकाते हुए उत्तरदिया कि मेरा छोटा सा आर्य समाज है। आप तो वहां जा वेंगे ही नहीं इसलिए हम सब सदस्यों ने यहां आना इसलिए उचित समझा कि आप से भेट भी कर लेंगे और गुरुकुल का देय द्रव्य भी दे देंगे। उनकी इस श्रद्धा से मैं गद्गद हो गया और यह निश्चय कर लिया है कि माच मास में मैं वहां अवश्यमेव जाऊंगा।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री

मेरठ साहित्य सम्मेलन संस्मरण

(ले०—श्री प० धर्मदेव जी शास्त्री दर्शनकेसरी)

राष्ट्रभाषा और राष्ट्र लिपि के सम्बन्ध में विधान परिषद् ने अभी तक निर्णय नहीं किया इसका कारण यह है कि इस बारे में कांग्रेस हाई कमाण्ड निर्णय नहीं कर सका। जहां तक जनता का ताल्लुक है यह निर्णय कर चुकी है—हिन्दी राष्ट्र भाषा और नागरी राष्ट्रलिपि।

अस्पष्टता और छिपाये रखना रहस्यमय स्थिति हमारे देश का सद्गुण नहीं अवगुण है। राष्ट्रपिता बापू ने सत्य का आंशिक स्पष्टता को बताया है। भाषा और लिपि जैसे महत्व पूर्ण प्रश्न के निर्णय पर विलम्ब करना और अस्पष्ट रहना उचित नहीं। इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। यह सत्य हम मेरठ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन को समीप से देखने पर ज्ञात हुआ है। सम्मेलन पर जो प्रस्ताव स्वीकृत हुए उन से ही नहीं अपितु राष्ट्र के अन्तरतम से जिन नेताओं का गहरा सम्बन्ध है उन की भावनाओं के अध्ययन से हमें यह सचाई मालूम हुई है।

जब तक देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था तब तक राजनीतिक चर्चाएं सब से ऊपर थीं परन्तु अब स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद संस्कृति का प्रश्न सर्व प्रमुख स्थान ग्रहण करता जा रहा है। दुर्भाग्य से भारतीय संस्कृति एक पहेली और दुरूह प्रश्न बनी हुई है।

भारतीय संस्कृति क्या है? उसका धर्म के साथ कितना सम्बन्ध है? क्या हमारे देश में एक संस्कृति है अथवा अनेक? आदि प्रश्नों का उत्तर एक नहीं है यह हम मानते हैं। परन्तु इस बात में कोई विवाद नहीं है कि भारतीय संस्कृतिमें भाषा और लिपि का स्थान प्रमुख है।

भारत जैसा गौरवशाली राष्ट्र स्वतन्त्र होने पर किसी विदेशी भाषा और लिपि को राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के रूप में सहन नहीं कर सकेगा। मेरठ सम्मेलन से हमारे हृदय पर जो प्रमुख प्रभाव पड़ा है वह यही है कि विधान परिषद् को शीघ्र ही राष्ट्रलिपि और भाषा के बारे में फैसला करना चाहिए। इस प्रश्न को रहस्य बनाये रखना राष्ट्र और राष्ट्र के वर्तमान नेतृत्व के लिये अच्छा नहीं है।

जहाँ तक भोजन, निवास, सफाई और मण्डप के सजाने का सम्बन्ध है मेरठ सम्मेलन आज तक हुए सब सम्मेलनों से बाजी लेगया है। सैकड़ों प्रतिनिधि पत्रकार और निमन्त्रित अतिथियों को अपनी ओर से बिना कुछ लिये भोजन देना आज के समय में साहसपूर्ण कार्य है। स्वागत समिति ने इस गुरुतर भार को जिस उत्तमता से वहन किया है वह आदर्श नहीं कहा जा सकता क्योंकि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भावी अधिवेशन के अवसर पर वहां की स्वागत समिति शायद यह भार वहन न कर सके। मेरठ की जनता ने नाम के अनुरूप ही सम्मेलन की सफलता में योग दिया है इसके लिये वह बधाई के पात्र हैं।

मेरठ का साहित्य सम्मेलन कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के समान विशाल आयोजन के रूप में प्रतीत होता था। विधान परिषद् के ६० से अधिक सदस्यों कि उपस्थिति और आसाम बंगाल, बम्बई मद्रास, हैदराबाद, महाराष्ट्र और पंजाब के प्रमुख नेताओं की उपस्थिति से यह बात स्पष्ट प्रतीत हुई कि अब हिन्दी और नागरी को उचित स्थान मिलेगा ही। इसको कोई रोक नहीं सकता। विधान परिषद् के अध्यक्ष श्री धावाकर जी ने तो कहा हिन्दी संस्कृत की पौत्री है। अब वह युवति होगई है और शीघ्र ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होकर भारत राष्ट्र की गृहिणी बनने जा रही है। कुछ लोग कुरूप भोंडी दासी पुत्री को राष्ट्र की गृहिणी बनाना चाहते हैं परन्तु यह नहीं हो सकता' राष्ट्रियता के विकास में हिन्दी भाषा का प्रमुख

स्थान है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता से हिन्दी भाषा को स्वभावत. आशा मिली है। भाषण की दृष्टि से हमें राष्ट्रभाषा परिषद् के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम आयंगर का लिखित भाषण सम्मेलन के अध्यक्ष के. भाषण की अपेक्षा भी अच्छा और विद्वत्ता पूर्ण प्रतीत हुआ है। भाषण की भाषा मन्जी हुई हिन्दी थी। मद्रास प्रान्त की ओर से विधान परिषद् के सदस्य श्री नागप्पा की यह बात हमें ठीक प्रतीत हुई कि...' हिन्दी वाले हम दाक्षिणात्यों को थोड़ा समय दें फिर तो हम लोग हिन्दी भाषियों से भी अच्छी हिन्दी बोल सकेंगे और लिख सकेंगे।"

जो मद्रास प्रान्त विदेशी भाषा अंग्रेजी के महापण्डित पैदा कर सकता है वह हिन्दी के पण्डित पैदा करेगा यह निर्विवाद प्रतीत होता है। हिन्दी भाषा भाषियों से हम स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि आप लोग हिन्दी व्याकरण और संस्कृत के साथ घनिष्ट सम्पर्क बनाये बिना हिन्दी भाषा के सूत्रधार अब नहीं रह सकेंगे। दक्षिण भारत हिन्दी भाषा को अपना रहा है, उस पर अधिकार करना चाहता है, यह प्रसन्नता की बात है। साथ ही हिन्दी वासियों के लिये ...सावधान भी है।

हमारा प्रस्ताव है और यह प्रस्ताव माननीय टंडन जी को भी हमने बताया है कि किसी एक स्थान पर देश की सभी प्रान्तीय भाषाओं के प्रतिनिधि विद्वानों का एक कन्वेशन किया जाय। यह कन्वेशन एक पखवाडे तक चले। हिन्दी भाषी विद्वान् केवल संयोजन का कार्य करें। निर्णय प्रान्तीय भाषा भाषियों को ही करना चाहिये। भाषा का ग्रहण प्रेम और सद्भाव से ही होगा। परिभाषा निर्णय के लिये ११ दिसम्बर को दो पक्षों के लिये कुछ विद्वानों की गोष्ठी हुई थी। यह गोष्ठी उपयोगी थी। परिभाषा के बनाने का निर्णय उपयोगी और आवश्यक कार्य है। यह कार्य कुछ घंटों में नहीं हो सकता है। हिन्दी भाषा में परिभाषा निर्णय का कार्य अब प्रारम्भ हुआ है। जबकि बंगला आदि भाषाओं का कार्य बहुत समय से चलता है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी भाषा भाषी विद्वान और सम्मेलन सर्व संग्रह की भावना से कार्य को अपने हाथों में लें।

कहने को तो हिन्दी भाषा और देवनागरी का प्रश्न शुद्ध राष्ट्रिय है परन्तु जो भाषण हुए उनमें से कुछ से यह आभास मिलता था कि इस को साम्प्रदायिक रूप दिया जा रहा है। ऐसे भाषणों में मौलिचन्द्र जी शर्मा का हम उल्लेखनीय मानते हैं। यह प्रश्न शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से विचारा जाय। हिन्दी भाषा को हमें विशाल बनाना है जब हम कहते हैं कि उर्दू भी हिन्दी की एक शैली है तो उर्दू से हमारा क्या विरोध है। अपने में से निकालने का रोग हिन्दु समाज में बहुत पुराना है इसी के कारण हमारा देश विभक्त हुआ है। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि भाषा के क्षेत्र में यह रोग प्रविष्ट न हो। उदाहरण के लिये सभापति का जलूस निकालने से पूर्व एक सज्जन हमारे पास आये और बोले शास्त्री जी...जलूस के लिये हिन्दी शब्द क्या है.. .. मैंने कहा जलूस शब्द हिन्दी ही है। मेरे मित्र नरदेव जी शास्त्री ने जलूस के लिये समारोह शब्द बताया। परन्तु इस शब्द से पूरा भाव व्यक्त नहीं होता। युक्त प्रान्त के प्रधान मन्त्री प० गोविन्द वल्लभ जी पन्त ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा को विशाल बनाने और मानने पर बल दिया। जो ठीक ही है।

***

आर्यजन क्या करें?

(ले०—श्री प्रीतमलाल एम एस सी एल. एल बी. एडवोकेट, अलीगढ़)

एक वर्ष से अधिक व्यतीत हो चुका जब हमारा प्यारा भारत देश स्वतंत्र हो गया, और हमारे सन्मुख सहसा प्रश्न उपस्थित हुआ कि अब आर्य जन क्या करें? इस प्रश्न पर आर्य विद्वानो के विचार प्रगट हो चुके हैं और होंगे, मैं भी अपने विचार विचारार्थ प्रस्तुत करता हूं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने आदेश पत्र (वसीअतनामा) में ३ कार्यों के लिये उपदेश दिया है। १ वैदिक धर्म प्रचारार्थ उपदेशक उत्पन्न करना। २. वैदिक-धर्म प्रचारार्थ साहित्य रचना। ३. दीन, हीन, अनाथ, विधवा की सहायता करना—दूसरे संक्षिप्त शब्दों में महर्षि ने आगे को उपदेश दिया कि तुम्हारा कार्य (व्यवहार) ऐसा हो जो जनता के मन और हृदय पर प्रभाव डालकर उनपर विजय पावे और अपने वशीभूत करले। मौलिक तथा साहित्यक प्रचार मन पर और दीन हीन पर दया करना हृदय पर विजय प्राप्ति के साधन हैं।

इस आदेश के अनुसार कार्य करने के लिये वर्त्तमान परिस्थिति में आर्य जन के व्यवहारिक नियम निम्न प्रकार होने चाहिये—

१—अब आर्यजन की धारणा होनी चाहिये कि देश मे राज्य हमारा है। हम राज्य की मशीन के चमकते हुए पुरजे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि राज्य के कार्यों में सरकार का हाथ बटावे और सहयोग करे—अंग्रेजी राज में सरकार से तटस्थ रहकर अपनी खिचड़ी पृथक पकाने की नीति एक दम त्याग देनी चाहिये।

२—अनाथालय, विधवाश्रम, दलितोद्धार, मादक द्रव्यनिषेध जन्म जाति भेद निवारण, शिक्षा प्रचार, आदि सुधारक कार्यों में सरकार के साथ सहयोग करें। इनके लिये सरकार से आर्थिक सहायता लें, प्रचार करें और प्रत्येक अवसर पर ऐसा उत्साह और कार्यदक्षता दिखावें जिससे जनता का हृदय आर्यसमाज की ओर आकर्षित रहे और सरकार इन कार्यों के लिये अपना विश्वासपात्र बनाले—स्मरण रहे यह तभी हो सकेगा जब आर्य सदाचार और उत्साह से कार्य कर दिखावेंगे—

३—सार्वजनिक कार्यों में अधिक से अधिक भाग लिया जावे उदाहरणार्थ—गाव पंचायत, टाउन एरिया समिति, चुंगी, जिलाबोर्ड, प्रान्तीय ऐसेम्बली, कौन्सिल आदि तथा शिक्षा विश्वविद्यालय आदि के सदस्य बनकर उनमें देश हित के लिये सेवा भाव से कार्य करें। जनता के मन और हृदय पर अपने व्यवहार से यह अंकित कर दें कि आर्य सदस्य त्यागी, तपस्वी, और परिश्रमी, सेवा भाव से कार्य करता है।

४—आर्यजन को अपनी कोई राजनैतिक संस्था अथवा पार्टी नहीं बनानी चाहिये—अपने सदाचार और उपकारी व्यवहार की शक्ति को पार्टी शक्ति से अधिक बलवती समझना चाहिये—

५—हिन्दी साहित्य की सेवा करने का विशेष अवसर है। आर्य संस्कृति, प्राचीन इतिहास, गणित, विज्ञान, न्याय, तर्क, आदि विषयों पर उत्तम २ ग्रन्थ रचकर विद्यार्थियों की पाठविधि तथा जनता के स्वाध्याय के लिये प्रकाशित करने से देश की सेवा होगी—इस ओर ध्यान देना परमावश्यक और उपयोगी है—

६—स्त्री शिक्षा में आर्य समाज पहिले से ही अग्रसर रहा है। परन्तु यह शिक्षा अधिकतर साहित्यिक और धार्मिक रही है—अब समाज जीवन के अन्य विभागों में भी कार्य करना चाहिये जैसे शिक्षा विभाग में इन्सपेक्टर बनना चिकित्सालयों में शिशुपालन, तथा आयुर्वेद की औषधि तयार करना तथा स्त्री रोगों का इलाज करना इत्यादि।

७—आर्य समाज का ध्येय अब तक अधिकतर प्रचार कार्य अथवा ब्राह्मण धर्म ही रहा है। अब उसको क्षत्रिय धर्म तथा वैश्य धर्म में अधिक भाग लेना चाहिये और ऐसा करते हुए आर्य धर्म को कदापि न भूलना चाहिये—पुलिस, सेना, समुद्री सेना, हवाई सेना, सरकारी प्रबन्ध विभाग इत्यादि सबही कार्य करने चाहिये और आवश्यकता यह है कि यहां कार्य करते हुए हमारे जीवन और व्यवहार पर आर्य होने की मुहर सदैव ऊँची लगी रहे।

पाठकवृन्द! इन पंक्तियों में अंकित शब्दों से आपने मेरे विचारों को समझ लिया होगा—बहस, शास्त्रार्थ, खण्डन आदि कार्यों से अधिक उपयोगी मार्ग हमारा नित्य प्रति का सदाचारी आर्य जीवन है जिसको व्यवहार में लाकर जनता के समक्ष रखने का आदेश आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने हमको किया है और परमात्मा की असीम कृपा से अब स्वतन्त्रभारत में हमको अपने धर्म और देश प्रेम के भावों से पूरित होकर सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है, यदि हमने अपने जीवन में उपरोक्त प्रकार से कार्य किया तो हमारा निश्चय है कि उससे आर्य समाज का मस्तिष्क बहुत ऊँचा उठेगा और वह समय दूर न होगा जब आर्य समाज संसार को आर्य बनाने का शुभ संकल्प कार्यरूप में परिवर्तित देखेगा—परमात्मा हमारी आशा और प्रार्थना पूर्ण करें—अस्तु

**

हाईकोर्ट के जज

श्री प० रत्नाकर शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म जेष्ठ बदी ५ संवत् १९४८ वि० को कागारौल (आगरा) के एक जाट परिवार में हुआ था। शास्त्रीजी की प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुई और यहीं उनका जन्म नाम बदल कर 'रत्नाकर' रखा गया।

उस समय गुरुकुल में श्री प० भीमसेनजी शर्मा और श्री प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ अध्यापक थे। अतः आप इन्हीं के प्रिय शिष्य बने। गुरुकुल में रह कर आपने व्याकरण और साहित्य का सम्यक अध्ययन किया। सिकन्दराबाद से आप अपने गुरुओं के साथ ज्वालापुर महाविद्यालय चले गये और वहा शास्त्री परीक्षा पास की। शास्त्री हो कर रत्नाकरजी ने आगरा कालिज से बी. ए. और एल एल० बी० पास किया। एक वर्ष एम० ए० प्रीवियस में भी पढ़ते रहे। फिर डी ए. बी हाई स्कूल आगरा में कुछ दिन अध्यापक रह कर वकालत प्रारम्भ की। शास्त्रीजी की योग्यता और ईमानदारी से प्रसन्न रह कर उन्हें महाराज भरतपुर ने अपने वहाँ मजिस्ट्रेट (नाजिम) बनाया। आपने यह कार्य इतनी तत्परता परिश्रमशीलता और ईमानदारी से किया कि सारे राज्य में भूरि भूरि प्रशंसा होने लगी। साथ ही आप आर्यसमाज की सेवा भी बड़ी संलग्नता से करते रहे। अन्त में आप भरतपुर हाईकोट के जज बनाए गए परन्तु स्वास्थ्य ने साथ न दिया, एक दम बीमारी ने घेर लिया और अनेक उपचार करने पर भी आप विकराल काल की दुष्ट दाढ़ों से न बचाये जा सके। १८ सितम्बर १९४७ ई० को आगरा में शास्त्री जी का स्वर्गवास हो गया।

प० रत्नाकर शास्त्री बड़े सरल, सौम्य और गम्भीर प्रकृति के विद्वान् थे। अभिमान तो उनके पास फटका भी न था। सन्ध्या हवन और स्वाध्याय के बिना वे एक दिन भी न रहते थे। उनमें आडम्बर पूर्ण शिष्टाचार न था, लल्लो चप्पो की बातें उनसे न आती थीं, इसी लिये कुछ लोग उन्हें कभी कभी शुद्ध या रूखा आदमी तक कह देते थे। भरतपुर में वे अधिक से अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुये। सब लोग भले प्रकार जानते थे कि शास्त्री जी सच्चे और पक्के आर्यसमाजी हैं। उन्हें किसी प्रकार प्रलोभन कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं कर सकता। आपके पिता जी भी आर्य थे, और सबसे अधिक शास्त्री जी के जीवन पर कमवार ठाकुर माधवसिंह जी की शिक्षा दीक्षा तथा संगति का प्रभाव पड़ा। शास्त्री जी वैसे ही आदर्श आर्यसमाजी थे, जिनकी खोज में आज आँखें इधर उधर तड़फती रहती हैं। अभी शास्त्री जी ने पेंशन न ली थी पेंशन लेकर वे सारा जीवन वैदिक धर्म की सेवा में लगाना चाहते थे परन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था।

शास्त्री जी के पुत्र प्रो० गुरुदत्त सिंह एम ए भी होनहार नवयुवक हैं, हमें पूर्ण आशा है कि वे अपने पूज्य पिता का अनुगमन करते हुए समाज सेवा में सदैव संलग्न रहेंगे। प्रांतीय सरकार ने सभा सचिव श्री चौ० चरणसिंह जी के निकट सम्बन्धी हैं।

हरिशङ्कर शर्मा

प्रान्तीय संस्कृत - शिक्षा - सुधार समिति काशी के महत्वपूर्ण निर्णय

१३ व १४ दिसम्बर १९४८ को काशी में माननीय शिक्षा सचिव श्री सम्पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में प्रान्तीय संस्कृत परीक्षा सुधार समिति का अधिवेशन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में प्रान्त भर से ८१ विशेष निमन्त्रित एवं संस्थाओं द्वारा निर्वाचित सज्जनों ने भाग लिया।

प्रान्त के गुरुकुलों से श्री प० शिवदयालुजी मंत्री गुरुकुल डौरेली मेरठ, श्री वागीश्वरजी शास्त्री गु कु. कांगड़ी, प० विश्वेश्वरदयालु सिद्धांत गुरुकुल वृन्दावन प० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम. ए मेरठ, प० हरिदत्त सप्ततीर्थ ज्वालापुर से तथा गुरुकुल अयोध्या एवं साधु आश्रम हरदुआगंज अलीगढ़ से भी दो विद्वान् पधारे थे।

संस्कृत पाठशालाओं के वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना सर्व सम्मति से निश्चय किया गया। गणित, भूगोल, इतिहास, राजनीति, समाज शास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान आदि विषयों का समावेश करना निर्धारित किया गया।

प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य को लोअर सेकेंडरी, हायर सेकेंडरी, बी. ए तथा एम ए. के समकक्ष मानने तथा वर्तमान शास्त्री एवं आचार्यों की व्यवहारिक विषयों की परीक्षा देने की व्यवस्था करना भी निश्चित किया गया। संस्कृत के उपाध्यायों के वेतन में पर्याप्त वृद्धि करके अन्य स्कूल कॉलेजों के समान उनको वेतन देने की मांग की गई।

प्रत्येक स्कूल कॉलेज में संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाने तथा प्रान्त में एक उच्च कोटि का संस्कृत विश्व विद्यालय बनाने का भी निश्चय किया गया।

संस्कृत-विद्यालयों को सम्यक् रूप से चलाने के लिये अधिक से अधिक धन बजट में संस्कृत शिक्षा के लिये निर्धारित की गई। शिक्षा सचिव ने संस्कृत की उन्नति में प्रत्येक आवश्यक पग उठाने का आश्वासन दिया।

भारतीय सेना के प्रथम भारतीय सेनापति केरियप्पा

सरकारी तौर से ४ दिसम्बर को नई दिल्ली में घोषित किया गया था कि लेफ्टिनेण्ट जनरल श्री के० एम० केरियप्पा को भारतीय सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया गया है। इस सम्बन्ध में रक्षा विभाग की ओर से प्रकाशित विज्ञप्ति में बताया गया था— "भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि पश्चिमीय कमांड के सेनापति लेफ्टिनेण्ट जनरल के० एम० केरियप्पा को जनरल सर एफ० आर० आर० बुचर के स्थान पर भारतीय सेना का स्टाफ चीफ और प्रधान सेनापति नियुक्त किया जाय। लेफ्टिनेण्ट जनरल केरियप्पा १५ जनवरी १९४९ से अपना नवीन पद सम्भाल लेंगे।

जनरल केरियप्पा भारत सेना के प्रथम भारतीय सेनापति होंगे। जनरल बुचर इस वर्ष के शुरू से प्रधान सेनापति बनाए गए थे।

जनरल केरियप्पा की उम्र ४८ वर्ष की है। भारतीय सेना में आप सबसे अधिक सीनियर अफसर हैं। आपका जन्म २८ जनवरी १९०० को कुर्ग के मेरकारा नामक स्थान में हुआ था। मेरकारा के सेण्ट्रल हाई स्कूल तथा प्रेसिडेन्सी कालेज मद्रास में आपने शिक्षा प्राप्त की थी।

१९१९ में इन्दौर के फौजी कालेज में कमीशन प्राप्त करने के बाद आपको मैसोपोटामिया और वजीरिस्तान भेजा गया। १९३३ में आप प्रथम भारतीय अफसर थे जो क्वेटा के स्टाफ कालेज में भर्ती हुए थे। १९३५ में आप सिंगापुर के बन्दरगाह का निरीक्षण करने गए और इसके बाद भूतपूर्व फौजियों की सेना के लिए आप संयुक्तप्रान्त के देहातों का दौरा करते रहे।

अप्रैल १९४१ से मार्च १९४२ तक आप १० वें भारतीय डिवीजन के साथ ईराक, सीरिया और ईरान में रहे। ईराक में आपने मेजर जनरल स्लिम के मातहत काम किया।

अप्रैल १९४२ में आप लेफ्टिनेंट कर्नल बनाए गए। मार्च १९४३ तक आप ७ वीं राजपूत रेजिमेन्ट के मशीन गन बटेलियन के कमांडर रहे। इस तरह आप प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने एक बटेलियन कमांड किया।

नवम्बर १९४४ में आप को सेना की पुनः सगठन कमेटी का सदस्य नियुक्त गया। इस सिलसिले में आपने अमरीका व कैनाडा का दौरा किया। आपको अनेक उच्च अमरीकी अफसरों से मिलने का मौका मिला। सब कुछ अध्ययन करने के बाद आपने भारतीय सेना में सुधारकार्य के सम्बन्ध में अपनी सिफारिशें पेश कीं। उस समय आप ब्रिगेडियर थे और आप प्रथम भारतीय थे, जिन्हें अमरीका जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

वनिता विवेक

महिला-समाज में मनोविज्ञान का महत्व

(लेखिका श्रीमती विज्ञान बाला जौहरी. बी० ए० विदुषी)

आधुनिक युग के प्रवाद को देखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि महिला समाज की शिक्षा में मनोविज्ञान को विशेष एवं महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जावे। देश को उन्नतिशील बनाने के लिए नई २ आयोजनाएं हो रही हैं और विभिन्न प्रकार के साधन भी निकाले जा रहे हैं। अतएव देश की अमूल्य निधि स्त्रियों की शिक्षा - प्रणाली में भी सुधार

अनिवार्य है। देश और राष्ट्र को सुसंगठित एवं दृढ बनाने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों ही के मिश्रित उद्योग की आवश्यकता है और ऐसा तभी सम्भव है जब दोनों ही भली प्रकार सुशिक्षित हों। गृहप्रबन्ध व सन्तान का लालन पालन स्त्रियों के हाथ में होने के कारण उनका उत्तरदायित्व और भी महान् हो जाता है। इसलिए यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि उनकी शिक्षा के विषय ऐसे हों जिनसे वे अपने दैनिक जीवन में अधिकाधिक लाभ उठा सकें और गृह तथा देश दोनों ही की सेवा के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकें। इस दृष्टि कोण को सामने रखते हुए यह मानना पड़ता है कि गृह प्रबन्ध, शिशु पालन, स्वास्थ्य आदि विषयों की तरह मनोविज्ञान को भी प्रधानता देनी चाहिए।

अब मनोविज्ञान क्या है, अन्य शास्त्रों से इसका क्या सम्बन्ध है और इसका क्षेत्र कहां तक समिति है इसे भी संक्षेप में जान लेना चाहिए।

मनोविज्ञान उस शास्त्र का नाम है जो मानसिक व्यापारों की क्रमबद्ध आलोचना करता है अर्थात् वह यह दिखलाने का प्रयत्न करता है कि मानसिक व्यापारों का वास्तविक स्वरूप क्या है, वे किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्ध हैं, एवं मानसिक जीवन का उदय और विकास कैसे होता है। शिक्षण विज्ञान और शरीर विज्ञान ये दोनों मनोविज्ञान के साथ सीधा सम्पर्क रखते हैं। समाज शास्त्र इतिहासशास्त्र अर्थशास्त्र चिकित्सा, धर्मोपदेश विज्ञापन आदि के लिए भी मनोविज्ञान के सिद्धान्त बहुत लाभकारी प्रमाणित हुए हैं। अब यहाँ पर हमें अपने महिला समाज के लिए इसकी आवश्यकता और उपयोगिता सिद्ध करनी है।

मनोविज्ञान गृह जीवन को मधुरतम और सरस बनाने में यथेष्ट रूप से सहायक है। मानसिक वृतियों के अध्ययन से एक स्त्री अपने पथभ्रष्ट एवं दुराचारी पति को भी क्रमशः सुमार्ग पर ला सकती है और अपने मारल्य जीवन को वहन करने कष्ट से बच सकती है। इसके अतिरिक्त भी घरेलू जीवन में बहुधा ऐसे अवसर आते हैं जब पारस्परिक विवाद से एवं मानसिक शान्ति भंग हो जाने से बड़ा विषम स्थिति हो जाती है। यदि स्त्रियां व्यवहार-कुशल हों मनोविज्ञान के नियमों से परिचित हों तो वे ऐसे अवसरों को आने ही न देंगी। आधुनिक काल में गृहशान्ति का अभाव अधिक मात्रा में दिखाई पड़ने लगा है। कारण यह है कि स्त्रियोंमें समानाधिकार की प्रबलवृत्ति जाग्रत हो उठी है और पुरुषों से होड़ की चेष्टा में ईर्ष्या दम्भ मिथ्याभिमान स्वेच्छाचारिता आदि दुर्गुणों की वृद्धि हो रही है। फलस्वरूप वैवाहिक जीवन आशीर्वाद स्वरूप न हो कर अभिशाप में परिणत हो जाता है और भी नाना प्रकार की बुराइयां बढ़ती जाने का भय रहता है जैसे तलाक बहु विवाह आदि २। इन प्रथाओं के प्रचार से हमारी प्राचीन संस्कृति और गौरव का लोप हो जाने की आशंका है अतः शिक्षा का ध्येय यही होना चाहिये कि अपने २ लक्ष्य को स्त्री-पुरुष दोनों ही पूरा कर सकें।

दाम्पत्य जीवन में ही नहीं प्रत्युत सन्तान पालन में भी मनोविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। बाल्यावस्था में माता द्वारा डाले गए संस्कार अमिट होते हैं उनका प्रभाव सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त रहता है ऐसी अवस्था में यदि माताओं को यह भली प्रकार विदित हो कि किस आयु में किस प्रकार के संस्कार अभीष्ट हैं और बच्चों के चरित पर उनका क्या और किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है तो वे अपने बच्चों का शिक्षण बहुत ही सुन्दर रीति से कर सकेंगी। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों से यह भी ज्ञान हो जाता है कि बच्चों को शिक्षा किस प्रकार दी जावे जो वह सुगमता से ग्रहण कर लें। इसी प्रकार एक मन्दबुद्धि बालक को कैसे तीव्र बुद्धि वाला बनाया जावे, तथा एक हठी बालक के स्वभाव को किस प्रकार ठीक किया जावे, बुरे व्यसनों में फंसे बालक को कैसे सुधारा जावे आदि बातों में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रयोग से बहुत ही सहायता मिलती है। देश की भावी सन्तान पर ही उसका गौरव निर्भर रहता है। यदि मातायें बचपन से ही उन्हें तैयार करने में पटु होंगी तो आगे चलकर वे ही राष्ट्र को दृढ़ और सुगठित बना सकेंगे। एक प्रकार माता का उत्तरदायित्व कितना बड़ा है यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है।

अन्य जनों के स्वभाव को समझ लेने पर ही उनके प्रति कर्त्तव्य करने में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। स्त्रियों को अपने गृह जीवन में सास श्वसुर तथा अन्य सम्बन्धियों के सम्पर्क में आना पड़ता है और सभी से हिलमिल कर रहने की आवश्यकता पड़ती है।

हर्ष की बात है कि दिन प्रति दिन मनोवैज्ञानिक शिक्षा की ओर सभी का ध्यान जा रहा है और स्कूल कालिजों में इस विषय का पठन पाठन कराया जा रहा है। आधुनिक काल के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को प्रयोग में लाए जाने की भी चेष्टाएं हो रही हैं। फिर भी इसको और भी अधिक व्यापक बनाने एवं दैनिक जीवन में व्यवहार होने योग्य बनाने की आवश्यकता है। महिला समाज के लिए इसकी महत्ता और उपयोगिता सिद्ध हो ही चुकी है अतः आशा यही है कि उत्तरोत्तर मनोविज्ञान की शिक्षा को प्रोत्साहित किया जावेगा और स्त्रियों को मनोविज्ञान की शिक्षा समुचित रूप से दी जाने का प्रबन्ध किया जावेगा।

(मनोविज्ञान की महत्ता के वर्णन के साथ २ यदि उसके कुछ व्यवहारिक पहलू भी दिखाये जाते तो अधिक अच्छा होता। हम आशा करेंगे कि भविष्य में विदुषी लेखिका इस पर अवश्य अपने विचार प्रकट करेंगी—सम्पादक)

मद्यनिषेध

(ले०—श्री प. शिवशर्मा जी सम्भल)

गतांक से आगे—

सुश्रुतकार भी कहते हैं कि—

मांसकामाः सुराकामाः स्त्रीकामाः साहसे रताः।
मागधेयास्तेन भूयिष्ठ दृश्यन्ते राजयक्ष्मिणः॥

सुश्रुत भाष्य, अ० डल्लनाचार्य का कथन॥

अर्थात्—मांस, शराब, स्त्री और साहस-फौजदारी में मगध देश वासी बहुत लगे रहते हैं; अतः वे राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित देखे जाते हैं।

ज्ञात होता है कि सुश्रुतकार के समय में मगध देश वासी-बिहारी मदिरा आदि निषिद्ध वस्तुओं का प्रयोग अधिक करते होंगे!! जिस प्रकार अजामिल मद्यादि का सेवन करके पछताया और इन कर्मों को पाप कर्म बतलाया, उसी प्रकार बलदेव जी भी पश्चात्ताप करते हैं—

धिगमर्षं तथा मद्यमतिमानमभीरुताम्।
यैराविष्टेन सुमहन्मया पापमिदं कृतम्॥ मार्कण्डेय पुराण।

अर्थात्—धिक्कार है क्रोध को, मद्य को और निडरपने को जिनके कारण मैंने यह महान् पाप कर डाला॥ (सूतजी को मार दिया) अ० ६, श्लो० ३४ पृ० ५३॥

"स्त्रियः पानं च वर्जयेत्"॥ व्यभिचार और मद्यपान त्याग दे॥ कौटिल्य पानं दुर्जन संसर्गः" मनु भी यही कहते हैं॥ अर्थशास्त्र, अ० १६, सू० २३॥

कलिकाल में होने वाले पापों को गिनाते हुए मद्य को भी गिनाया है—

"सब लोग मद्य मांसादि भक्षण करने वाले मिथ्या कपट से संयुक्त हो जायेंगे"। देवी भागवत, भाषा, स्क० ९, अ० ८, पृ० ६१६॥

ऐसे मद्य पीने वालों को कुम्भीपाक नरक में गिरना लिखा है —"जो ब्राह्मण मद्य पीता है, जो विष्टा खाता है और जो तृप्त मुद्रानिक होता है, वह कुम्भीपाक नरक में जाता है।" देवी भागवत, स्कंध ८, अ० ३८, पृ ७३३ ॥

स्मरण रहे, 'ब्राह्मण' शब्द प्राय मनुष्य मात्र के लिये आता है। यहाँ तक मद्य की निन्दा लिखी है कि कृष्ण महाराज की रानियाँ भी*शराब पीने के कारण ही दूसरे जन्म में वैश्या बनीं॥ देखो—देवी भागवत, स्कध ४, अ० २२। पृ० १७२॥

यह बात केवल इसलिये दर्शाई गई है कि जब बड़े से बड़े व्यक्ति की स्त्री इस पाप कर्म के कुफल से नहीं बच सकती तो साधारण स्त्रियों की क्या गणना हो सकती है? प्राय ग्रन्थों में, इस प्रकार के भयानक वाक्य, इसलिये वर्णन किये जाते हैं कि जिससे सर्वसाधारण इस प्रकार के दुष्कर्मों से बचे रहें। पाप कर्म कोई बड़ा करे अथवा छोटा दण्ड अवश्य ही भोगेगा। "अवश्यमेव भोक्तव्य, कृतकर्म शुभाशुभम्।" अर्थात्—जैसी करनी वैसी अवश्य ही भरनी।

* हमको विश्वास नहीं कि श्री कृष्ण महाराज की स्त्रियों ने यह पाप कर्म किया हो। या बलदेव जी ने किया हो। लेखक॥

हम पूर्व पन्नों में बता चुके हैं कि प्रत्येक प्रकार की शराब में ऐलकोहल Alcohol मिला रहता है। कदाचित् ऐलकोहल के गुण दोष बहुत से मनुष्यों को ज्ञात न हों, अत हम गुण दोष वर्णन किये देते हैं—

Alcohol has a great affinity for water it cogulates protein and irritates and destroys cells It is therefore a protoplasmic poison

अर्थात्—ऐलकोहल पानी से अधिक आकर्षण रखती है, वह प्रोटीन जमा देता है और जीवाणु (शरीर के वे सूक्ष्म कण जो शरीर का पोषण करते हैं) को उत्तेजित करता है और नष्ट भी कर देता है। अत यह एक वास्तविक विष है।

यह विष मद्य के साथ साथ शरीर में प्रवेश कर जाती है और भीतरी भाग में जाकर आमाशय, जिगर, तिल्ली और हृदय आदि को अपने असली स्वरूप से हटा कर विकृत रूप बना देता है।

आगे चल कर प्राय सभी प्रकार के चिकित्सकों ने इस विष की निंदा की है हम बतायेंगे। आप ऐसे ऐसे डाक्टर और वैद्य हकीमों की सम्मतियां पढ़ेंगे जो सब देशों में चोटी के चिकित्सक विख्यात हैं। उपर्युक्त उद्धरणों से यह तो ज्ञात हो ही गया कि ऐलकोहल' एक प्रकार का विष है। यही विष किस किस शराब में कितना कितना रहता है, सो पढ़िये—

1. Whisky 40 P c व्हिस्की ४० प्रतिशत।
2. Rum Gin and strong liqours 51 to 59 P c रम और जिन अथवा दूसरी मजबूत शराब ५१ से ५९।
3. Hocks, Burgundy about 9 to 13 P c हाक्स और बरगंडी लगभग ९ से १३ तक।
4. Brandy 40 to 50 P c बराँडी ४० से ५० तक।
5. Sherry Port madria 18 to 22 p c
6. Champagne about 10 to 13 p c
7. Claret 8 to 12 p c
8. Cinder 6 to 13 p c
9. Ale and Porter about 3 to 7 p c
10. Beer 2 5 to 3 5 p. c.
11. Konmiss and Ginger Beer, about 1 to p c

materia medica p 142.

*लन्दन में एक 'लैंकेट' सोसाइटी है वह कहती है कि—"रसायन के तत्वों का मूल कारण बुद्धि है" यह सोसाइटी The highest medical authority in the world कहती है।

अब पाठक गण स्वयं ही विचार करें कि जिस शराब में आधे से अधिक तक विष मिला हो, वह शरीर के प्रत्येक भाग को कितनी हानि पहुँचा सकती है?

जिस वस्तु को, आपत्काल में भी पशु पक्षी भी नहीं पी सकते उसको सर्व श्रेष्ठ मनुष्य प्रयोग में लावे! संसार के सभी मत बुद्धि की वृद्धि की याचना अपने अपने इष्ट देवों से करते हैं। यथा—

१—वैदिक धर्मी शिखा सूत्रधारी— धियो यो न प्रचोदयात्" कहते हैं। अर्थात् हमारी बुद्धि को हे परमात्मन्! अच्छे कामों में लगा।

बाइबिल

२—हजरत सुलेमान ने बुद्धि का वरदान मांगा। वह सबसे अगले पिछलों से बड़ा हो गया।

१ राजा की पुस्तक, पर्व ३ आ० १२॥

कुरआन

३—वकुल रब्बिजिद्नी इल्म॥ सू० त्वाहा, ४० ७॥ और कहाए खुदा हमारी बुद्धि बढ़ा।

इस ही लिये वेद ने कहा—"सरस्वती सह धीभिरस्तु०" ऋ० ७।६५।१ १ अर्थात्—विद्या भी बुद्धि के साथ हो हो।

पुराण

४—सर्व चैतन्य रूपा तामाद्या च धीमहि।
बुद्धिं यो न प्रचोदयात्।

देवी भागवत्, स्क० १, अ० १, श्लो० १॥

अर्थात्—सर्व चैतन्य रूप वाली सबसे मुख्य, विद्या का हम ध्यान करते हैं। वह विद्या हमारी बुद्धि को प्रेरित करे।

५—बौद्ध' शब्द तो—"बुद्या निवर्त्तते स बौद्ध"। जो बुद्धि से निर्णय वेधाकार्य वह बौद्ध है, बना है।

बुद्ध भगवान ने पाच वस्तुओं का निषेध करते हुए चौथी वस्तु मद्यनिषेध बताया है।

६—थियासाफी में बुद्धि को Vehicle of Atma or spirit कहते हैं। यह बुद्ध अमर तत्व है। अंग्रेजी में Immortal Triad कहते हैं।

थियासोफी पृ० ७०।

डा० लुईकोनी पानी का इलाज करने वाला।

१—शराब जौ, शराब अंगूर, कोको आदि उन चीजों के मुकाबले में उन वस्तुओं मे अधिक कठिनता से पचने वाली है जो अपनी असली हालत में ठोस और चबाई जाने वाला है।

देखा नया इल्म शिफावखशी पृ० १७४।

'The new science of Healing का अनुवाद।

२—शराब अंगूर और जौ व कोको निहायत ताकत देने वाली और अत्यन्त उपयोगी गिज़ा नहीं है। सु० १६९। (उपर्युक्त पुस्तक)

३—शराब के परिणाम—'यहाँ के बाशिन्दे (अर्थात् कक) अधिकतर त्वचा के रोगों से अर्थात् फोड़े फुंसी और दमे में मुब्तला रहते हैं। लिंगेन्द्रिय के रोग सर्वव्यापी हैं। और कोढ भी उन्नति पर हैं। पृ० १८६

४—शराब इस कसरत से पीते हैं कि शराब के पपे बन जाते हैं। पस जिसमानी, शारीरिक निबलता और सुस्ती इसका कुदरती नतीजा हैं। शराबी की औलाद भी मस्तिष्क की निबलता वाली पाई जाती है।

उपयुक्त पस्तक पृ० २३२ (लुईकानी)।

डा० लुईकोनी साहब ने अनेक स्थानों पर शराब की घोर निंदा की है। उनके व्याख्यानों से पता चलता है कि वे शराब को मनुष्यों का भोजन नहीं समझते। मनु जी के समान मनुष्यों से भिन्नों का समझते हैं।

होमियोपैथिक चिकित्सा और मद्यनिषेध

होमियोपैथिक चिकित्सा के डा० 'हनिमैन" Hahnemann विख्यात हैं। डा० हनीमैन Hahnemann जर्मन के सैक्सनी प्रांत के एक ग्राम मैसन में सन् १७५५ ई० की १० अप्रैल को उत्पन्न हुए थे। मद्यनिषेध के विषय में हम उन्हीं डाक्टर महोदय के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं—

क्रमश

शान्ति स्थापित होते ही हैदराबाद में लोक प्रिय सरकार की स्थापना

कम्युनिस्टों तथा संघियों को प्रधान मन्त्री की चेतावनी

हैदराबाद, २६ दिसम्बर। हैदराबाद के पांच लाख नागरिकों के सामने भाषण करते हुए प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि हैदराबाद की जनता ही रियासत की समस्याओं को हल कर सकती है। यह जनता पर ही निर्भर है कि वह ऐसी हालतें पैदा करे कि रियासत में जल्दी से जल्दी जनप्रिय उत्तरदायी सरकार बन जाय।

फतह-मैदान में नेहरू जी के भाषण के घंटों पहले से जनता इकट्ठी हो रही थी। जब नेहरू जी निजाम के महल के छज्जे पर बोलने आये, पुलिस बैंड ने 'जनमनगण' बजाया और निजाम के अंगरक्षकों ने सलामी दी। फौजी गवर्नर मेजर जनरल चौधरी ने जनता की ओर से नेहरू जी को हार पहनाया फतह मैदान के इतिहास में पहली बार वहाँ तिरंगा झंडा लहरा रहा था।

नेहरूजी ने कहा—लोग मुझसे पूछते हैं रियासत में कब तक उत्तरदायी सरकार बनेगी, फौजी गवर्नर का शासन कब तक चलेगा। मैं यह बता देना चाहता हूँ कि हिंद सरकार यह नहीं चाहता कि हैदराबाद में फौजी शासन जारी रहे जब कि बाकी देश में उत्तरदायी शासन चल रहा है।

जल्दबाजी गलत

लेकिन हैदराबाद के मसले बड़ी जिम्मेदारी के मसले हैं। जल्दबाजी से काम लेने में हालत सुधरने की बजाय बिगड़ जायगी। हम बहुत सावधानी से पग पग कर कदम रखना है। रियासत में एक बार स्थायी रूप में शान्त हो जाय और झगड़े का खातमा हो जाय तब हम इतमीनान से फौजी शासन खत्म करने के मसले पर विचार कर सकते हैं। रियासत को हिंद में शामिल करने का सवाल भी अभी हल नहीं किया जा सकता।

कम्युनिस्टों को चेतावनी

हैदराबाद के कम्युनिस्टों को चेतावनी देते हुए नेहरू जी ने कहा कि वे यह सपना न देखें कि जोर जबरदस्ती और हिंसा के बल पर अपनी बात मनवा सकते हैं। अगर उन्होंने अपनी हिंसात्मक काररवाइयां जारी रखीं तो बरबाद कर दिये जायेंगे। इस सम्बन्ध में रियासतके शासक जो भी कदम उठायेंगे हिंद सरकार उनका साथ पूरी तरह से देगी।

आपने कहा—आप लोग खुद सोचें कि कम्युनिस्टों को कुछ इलाकों में कदम जमाने का मौका क्यों मिल गया? असल में जिन इलाकों में जागीरें या और तरह का सामन्ती प्रथाओं का वजह से किसान पिस रहा है वहाँ प्रतिक्रियावादियों को जमने का मौका मिलता है।

प्रधान मन्त्री ने बताया कि किसानों की हालत सुधारने के सुझाव पेश करने के लिये रियासत में एक कमेटी बनायी जायगी। जागीरों और जमींदारियों का खत्म होना जरूरी है, आज के जमाने में इनके लिए कोई जगह नहीं।

राज्य कांग्रेस की समस्या

राज्य कांग्रेस की फूट के सम्बन्ध में नेहरू जी ने कहा कि यह कितने बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हिंद को बरबाद कर डालनेवाली कमजोरियों को अब भी हम दूर नहीं कर सकते। राज्य कांग्रेस के लोग फिर उन्हीं कमजोरियों के शिकार हो रहे हैं।

ये लोग महात्मा गांधी द्वारा बताये गये रास्ते पर नहीं चलते। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का काम गांवों और देहातों में है। वे वहां जाकर जनता में सद्भावना और विश्वास पैदा करें। वे ऐसी स्थिति पैदा करें जब एक जाति दूसरे जाति वालों से डरना छोड़ दे और भाई भाई की तरह रहे।

राज्य कांग्रेस में काम करने वालों को जिम्मेदार आदमियों की तरह बरताव करना चाहिए। उन्हें गलत काम कर अपनी संस्था को कमजोर न बनाना चाहिए। जनता की सेवा के लिए उन्हें आपसी मतभेद दूर कर सेवभाव से काम करना चाहिए और नौकरियों और चुनाव के झमेले में न पड़ना चाहिए।

चिकित्सा संबंधी शिक्षास्तर गिरना नहीं चाहिये

प्रांतीय सरकारें डाक्टरों को गांवों में रह कर काम करने की सुविधायें दें

—राजकुमारी अमृतकौर

कलकत्ता, संयुक्त चिकित्सा सम्मेलन के अन्तिम अधिवेशन में भाषण करते हुए हिंद सरकार की स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौर ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में चिकित्सा सम्बन्धी शिक्षण और शिक्षकों का स्तर नीचा नहीं होना चाहिये।

कुछ बड़े डाक्टर जिस नीति को अख्तियार कर रहे हैं उससे मुझे बहुत आशंका मालूम होरही है। इस नीति के पक्ष में दलील यह दी जाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों को सहायता नहीं दी जाती। आपने कहा कि यदि सहायता नहीं दी जाती तो यह हमारे लिये शर्म की बात है परन्तु अधकचरे डाक्टरों को निकाल कर समस्या हल करने का अर्थ है स्वयं उद्देश्य को समाप्त करना। गरीब आदमी की ही क्या इस दर्जे की चिकित्सा की जाय? प्रांतीय तथा रियासती सरकारों का यह कर्तव्य है कि वे डाक्टरों को उच्च वेतन, बढ़िया ग्रामीण निवास तथा छोटे-छोटे अस्पतालों की सुविधा दें जिसमें वे रह सकें और अपने बच्चों को किसी पास के शिक्षा केन्द्र में पढ़ने के लिये भेज सकें।

इसी प्रकार सेवा भाव से प्रेरित डाक्टरों का भी यह कर्तव्य है कि वे इस उत्तम पेशे में अग्रदूत बन कर काम करें। सस्ती दवायें तथा निम्न शिक्षा स्तर आर्थिक दृष्टि से सस्ते नहीं पड़ेंगे। दूसरी ओर इससे डाक्टरी का स्तर तो नीचा हो ही जायगा एक अर्से के बाद राष्ट्र के स्वास्थ्य की भी दुर्दशा हो जायगी।

चिकित्सा करने की अनुमति प्राप्त करने के लिये कम से कम एम० बी० बी० एस० की उपाधि आवश्यक है। और इसको भारतीय चिकित्सा समिति (इंडियन मेडिकल कौंसिल) तथा भोर समिति ने स्वीकार किया है और इसकी सिफारिश भी की है।

स्वास्थ्य मन्त्रिणी ने अन्त में कहा कि दूसरा खतरा जिससे हमें बचना है वह संकीर्ण प्रांतीयता है। विज्ञान के लिये किसी प्रकार की सीमा का बन्धन नहीं है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे शिक्षणालय और अनुसंधानशालायें उन्नति करें तो धर्म, सम्प्रदाय अथवा प्रान्त का भेद किये बगैर हमें सर्वश्रेष्ठ स्त्री पुरुषों को लेना पड़ेगा।

गांधी हत्याकांड के अभियोग की सुनवाई समाप्त

एक महीनेमें फैसला सुनाया जायगा

लाल किला (दिल्ली), ३० दिसम्बर। परचुरे के वकील श्री इनामदार की बहस आज खत्म हो गयी और इस के साथ ६ महीने बाद गांधी हत्याकांड के मुकदमे की सुनवायी भी समाप्त हो गयी। स्पेशल जज श्री आत्माचरण ने घोषणा की कि मैं एक महीने में फैसला सुनादूंगा।

२७ मई को मामला शुरू हुआ था और २१ जून को अभियुक्तों को चार्जशीट दी गयी थी। सबूत पक्ष के प्रमुख वकील श्री दफ्तरी ने अदालत के सामने षड्यन्त्र की पूरी योजना रखी और बताया कि हत्या में किस अभियुक्त ने क्या भाग लिया। २४ जून को शहादतों का रिकार्ड रखा जाना शुरू हुआ, सबूत पक्ष की गवाहियों का कार्यवाइयों में ६६६ फुलस्केप टाईपपेज में हुआ। मुलजिम गोडसे का बयान ७६ पृष्ठों में था। सबूत पक्ष के १४३ गवाहों की शहादत हुई।

सबूत पक्ष ने ३५४ कागजपत्र पेश किये और सफाई पक्षने ११८, सबूतसे संबंधित ८० वस्तुएँ पेश की गयी।

सर अकबर हैदरी का देहांत

नई दिल्ली, २९ दिसम्बर। आसाम के गवर्नर सर अकबर हैदरी का देहान्त कल अचानक मनीपुर रियासत की राजधानी इम्फाल से ३० मील दूर एक बंगले में रक्तचाप बढ़ जाने के फलस्वरूप हो गया। वे आज तीसरे पहर ४ बजे इम्फाल छावनी में दफना दिये गये।

सर अकबर हैदरी के अचानक देहान्त के समाचार से नयी दिल्ली में राजनीतिक और सरकारी क्षेत्र अचंभित रह गये। तुरन्त सभी सरकारी भवनों तथा विधान सभा के भवन के ऊपर के झंडे झुका दिए गए तथा उनके सम्मान में सभी सरकारी दफ्तर दो बजे के बाद बन्द कर दिये गये।

विधान सभा की बैठक भी १ बजे स्थगित कर दी गयी।

गृह विभाग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि स्व सर अकबर हैदरी के उत्तराधिकारी की नियुक्ति होने तक आसाम हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री पी० एफ० लाज आसाम के अस्थायी गवर्नर नियुक्त किए गए हैं।

श्रा १ध न ग्री म भा का भ्रमण पुरोगम

श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्रीजी प्रधान आ० प्र० सभा यू० पा० १४ से १७ फरवरी तक मुजफ्फरनगर जिले की एस एस आर लाइन की समाज मे भ्रमण करेगे। उक्त समाजों को श्री प्रधानजी क स्वागत की समुचित व्यवस्था करनी चाहिये।

१८ से २० फरवरी तक मा० प्रधानजी आ० स० बडोत क उ सव में सम्मिलित होगे।

आवश्यक निश्चय

सभा की अन्तरग ता० २६ दिसम्बर १६४८ क नि० स० २१ क अनुसार प्रान्त क समाजा को आदेश दिया जाता है कि समाजों का हिसाब किताब का वर्ष १ अप्रैल से ३१ मार्च तक अर्थात् ३१ मार्च १६४६ को हिसाब किताब बद किया जावे। और आर्य सभासदा की सूचा १५ अप्रैल, सभा क लिए प्रतिनिधियो व समाजों क अधिकारिया का निर्वाचन १५ मइ तक किया जाव और वा।पक चित्र ३१ मई १६४६ तक सभा कार्यालय मे भजद।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

अर्द्ध शताब्दि समारोह आर्य समाज ज़िला बहराइच

२-१२ १६४ से २--२-१६४६ तक सारे ज़िले में धम प्रचार वेद ध्व न तथा मदुपदेश की गूंज

जिला क कोन २ में यज्ञ, वेद पाठ, स सग, उपदश, भजन, मैजिक लालटेन प्रदर्शन व नय आर्य्य समाजों की स्थापना तथा व र्षिको सव होंग। १५ २ १६४६ से २८ २ १६४६ तक बहराइच म प्रदर्शनी का प्रबन्ध हो रहा हे उसमें विराट् कविसम्मेलन आदि योजनाय रक्खी गई हे।

२० २ १६४६ को बहराइच के मुख्य शताब्दि पण्डाल में महायज्ञ होगा।

२० से २६ २ ४६ फरवरी तक कुमार परिषद, महिला सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, सस्कृत भाषा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, इतिहास सम्मेलन आदि क साथ उपदेश, भजन आर्य्य वीर दल रली, नगर कीर्तन इ यादि होंगे।

अर्द्ध शताब्दी के प्रधान राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्तप्रात होगे।

अर्द्ध शताब्दी मे आर्य समाज के प्रमुख नेता, सनातन धर्म क प्रमुख विद्वान, सन्यासी, महा मा, दश क सम्मानित नेता गण तथा प्रमुख कवि निमत्रित किय गय हे।

अर्द्ध शताब्दी मे सम्मिलित होने वाल जिले क आर्यो को उचित है कि वह पीला साफा पहन कर आवें और ॐ चिन्ह (बैज) जो कार्यालय मे मिल सकेगा लगावें। स्त्रिया पीली साडी में आने का कष्ट कर। —प्रधान

(पृष्ठ ० का शेष)

शक्तियों पर विश्वास न कर उन्होने पहले ही अपने देश में शान्ति का प्रयत्न किया होता तो अधिक सफलता मिलती, और साम्राज्यवादी शक्तियों क बढावे में आकर चीन इस तरह बरबाद न होता। आज परवशता में सन्धि क लिय उद्यत माशल क्या चीन को कम्यूनिज्म क पजे से बचा सकेंग ? यह भविष्य ही बतायेगा।

✦✦✦✦

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

ब्र० रुद्रदेव जिसक लिय १००) का पारितोषिक घोषित किया गया था, जोकि लगभग ६ मास पहले खो गया था अब इन्दौर अनाथालय में मिल गया ह। ७।१२ ४८ का उसाका पत्र म० वि० क मुख्याधिष्ठाता के नाम आया ह। इसकी सूचना उसक घर पर भी तार द्वारा भज दी गई है।

आर्यसमाज फर्रुखाबाद का ६८वां वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज फर्रुखाबाद का ६८वा वार्षिकोत्सव ता० १४, १५, १६, १७ जनवरी सन १६४६ ई० तदनुसार मिती पूस सुदी १५ व माघ बदी १-२-३ दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार को बड समारोह पूवक मनाया जायगा। महोत्सव मे पूज्य महात्मागण, साधु, सन्यासी और धुरन्धर विद्वान, व्याख्याता एव सगीत विशारदो क पधारने की पूर्ण आशा है। इस अवसर पर जिला प्रचार सम्मेलन, नशानिषेध कान्फ्रेन्स, अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन और भी कई महत्वपूर्ण सम्मेलना का आयोजन किया गया है। —मत्री

गु० कु० इन्द्रप्रस्थ

"श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" समीपस्थ ग्रामो में प्रभातफेरी करके कुलवासियों ने बड उत्साह पूर्वक मनाया। २३ दिसम्बर को ब्रह्मचारियों के साथ ग्रामीणों ने भी गुरुकुलीय क्रीडाओं तथा उत्सव में भाग लिया।

आर्य-जगत्

—आ० स० तिवायां का तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १३, १४, १५, १६ मार्च १९४९ दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुद्धवार को होना निश्चित हुआ है।

—आ० स० पालीगंज (पटना) का १०वां वार्षिकोत्सव ७, ८ और ९ जनवरी १९४९ को बड़े समारोह के साथ होने जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु, संन्यासी तथा कुशल भजनीक पधारेंगे।

—आ० स० निचलौल (गोरखपुर) की रजत जयन्ती पूर्व तिथियों में न होकर मिती फाल्गुण सुदी ११, ११, १४, १५ दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार तथा सोमवार ११, १२, १३ १४ मार्च को होगी।

—आर्यप्रतिनिधि सभा की अनुमति से फफूंद (इटावा) आर्यसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव ता. २, ३, ४, ५ फरवरी को बडे समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें प० प्रकाशवीर शास्त्री, सत्यमित्रजी शास्त्री महोपदेशक, म० मकुन्दरामजी शर्मा म० मानसिहजी शर्मा भजनोपदेशक अथा अन्य विद्वान् व सन्यासी, लक्ष्मीदेवीजी और कुछ गुरुकुल कन्यायें पधार रही है। कृपया पुस्तक विक्रेता महोदय भी पधारने की कृपा करें।

२४ दिसम्बर ४८ ई० दिन शुक्रवार को श्रीमान् मन्त्रीजी सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार फफूंद आर्य समाज मन्दिर मे श्री श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। मन्त्री

—आर्यसमाज बड़ौत जिला मेरठ का वार्षिकोत्सव १८, १९ व २० फरवरी १९४९ को होना निश्चित हुआ है जिसमे गण्य मान्य आर्य नेता पधारेंगे।

निर्वाचन
आ० स० चौरी चौरा

श्री कुँवर सुदामासिंह जी प्रधान
,, म. रामजियवन आर्य मन्त्री
,, म. चन्दीप्रसाद जी (उप प्रधान)
,, रामचन्द्र जी (उप मन्त्री)
, म. यमुना प्रसाद जी (कोषाध्यक्ष)

आ०स० लालगंज जि. रायबरेली

प्रधान—श्री प० श्याममनोहर त्रिपाठी
उपप्रधान ,, प० शक्तिनागाजी द्विवेदी
प्रधानमंत्री श्री रमेशचन्द्रजी आयुर्वेदालंकार
उपमंत्री श्री म सत्यनारायण यादव
प्रचारमन्त्री सरदार आसासिंह जी
कोषाध्यक्ष श्री द्वारिका प्रसाद सेठ
निरीक्षक श्री राधेमोहन जी सेठ

हृदय की खोज

हिन्दी एव आर्य ससार क प्रख्यात कलाकार 'कविरत्न' साहित्यालङ्कार श्री कुवर हरिश्चन्द्रदेव वर्मा, 'चातक' जी के लिये एक विद्यालङ्कृता, विशारद, विदुषी, किम्बा अँगरेजी शिक्षा प्राप्त स्वस्थ, सुन्दर सगिनी की आवश्यकता है। पञ्जाबी, काश्मीरी या यू० पी० की हो २० से लेकर २४ वर्ष तक का शिक्षिता चाहिये। 'चातकजी' एक सुप्रसिद्ध समृद्ध क्षत्रिय परिवार के रत्न हैं। अट्ठतीस वसन्तों की माला पहिनने के प्रथम ही मधुकरी उनकी वीणा को चुरा ले गयी। टूटे हुये तारों से सगीत उत्पन्न करने वाली कोई साहित्यिक सास्कृतिक विचारवाली देवी ही उनक इस शून्यता को भरने में सक्षम होगी। इसी दीपोत्सव पर प्रकाशित आर्यमित्र के शुभ्यङ्क में ४१ पृष्ठ पर चातकजी का चित्र प्रकाशित हो चुका है। कहीं के भी सुयोग्य साथी को सादर श्रेष्ठता दी जायगी। पत्र व्यवहार करते समय विवाहच्छुक देवियाँ अपना चित्र भी सम्पूर्ण विवरण के साथ भेजें।

नि० नारायण गोस्वामी वैद्य
शान्तिनिकेतन अतरौली
छिबरामऊ (फर्रुखाबाद)

श्री कुँ० हरिश्चन्द्रदेव वर्मा
'चातक' कविरत्न

वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल झज्जर रोहतक का वार्षिक महोत्सव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी अमावस्या दय नन्दाब्द १२४ ता २६ २७ फरवरी सन् १९४९ ई शनिवार, रविवार को समारोह से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आर्यपाठ विधि सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन अछूतोद्धार सम्मेलन क्षत्रिय सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों की योजना की गयी है।

"एक बाल विधवा की आवश्यकता"

एक युवक जो कि स्वस्थ, सुन्दर दृढ आर्य तथा आर्यवीर दल क प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता रह चुक हैं। आयु २६ वर्ष है। अपनी निजी कमाइयों की एक प्रसिद्ध दुकान है, मासिक आय तीन सौ रुपये स अधिक है। जिनकी पहिली स्त्री का देहान्त हो चुका है। उनक लिए एक शिक्षित तथा गृहकार्य में चतुर बाल विधवा की आवश्यकता है। सम्बन्ध जन्म गत जात पात को तोड कर आर्य-मात्र में हो सकेगी सम्बन्धाभिलाषी सज्जन निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें २८८ B ८ २

आचार्य भद्रसेन
सञ्चालक जाति भेद निवारक
आर्य परिवार सघ अजमेर

समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजु०

पा- ४ १-

अथव १।८२

मुझे देवताओं का प्यारा बना, मुझे ।आओं का प्यारा बना । चाहे शूद्र हो ा आर्य मुझे सब का प्यारा बना ।

भाषावार प्रान्तनिर्माण

भाषा बार प्रान्तों के निर्माण का आदोलन देशमें बहुत समय से चल रहा है। राष्ट्रीय काग्रेस भी भाषा बार प्रान्तों के निर्मग्ण के च में सन् १६२१ से अपना मत प्रकट कर चुकी थी। सन १६२८ ई० में नेहरू रिपोर्ट में भी भाषावार प्रान्तों के निमाण की व्यवस्था को स्वीकार किया गया था और चुनावों के घोषणापत्र में भी उसका सकेत है। अन्त में २७ नवम्बर १६४७ ई० को प्रधान मत्री पण्डित नेहरू जी ने विधान परिषद् में इस सिद्धान्त को स्वीकार करने की घोषणा की थी। तदनुसार इस आधार पर प्रान्तों के निर्माण से भाषाओं का ध्यान रखकर उनके सीमा निमाण, आर्थिक स्थिति, तथा शासन सम्बन्धी व्यवस्था की जाच करने तथा रिपोर्ट देने के लिए विधान परिषद् न इलाहाबाद हाई कोर्ट के भूतपूर्व जज मि० एस० के० दर के प्रधानत्व में १७ जून १६४८ को एक कमीशन की नियुक्ति की थी। इस कमीशन ने अपनी मध्य दिसम्बर में सर्व सम्मत रिपोट द्वारा भाषावार प्रान्तों के निर्माण का विरोध किया है। जब कमीशन की नियुक्ति की गई थी उस समय यही समझा गया था कि भाषावार प्रान्तों के निर्माण सिद्धान्त तो स्वीकृत हैं परन्तु उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए कमीशन की नियुक्ति की जा रही है। काग्रेस के नेताओं में मतभेद की तीव्रता के कारण अब सर्वोच्च प्रभाव शाली नेताओं की समिति का निर्माण किया गया है जिस में प्रधान मत्री प० नेहरू जी उप प्रधान मन्त्री सर दार पटेल, और कांग्रेस के प्रधान डा० पट्टाभि सीतारमैया हैं। इस समिति की निर्णय यह है कि यह ा रिपोर्ट विधान परिषद् के मुख प्रस्तुत न कर काग्रेस के पूव निश्चयों और प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हुये कार्य कारिणी के स मुख प्रस्तुत करेगी। अनेक प्रभावशाली नेता जिनमें डा० पट्टाभि सीतारमैय्या प्रधानकाग्रेस भी हैं, कमीशन की रिपोट को भाषावार प्रान्त निर्माण के विरूद्ध दिये गये निणय को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं। क्यों कि उसके निणय से उनकी आशाए और महत्वाकाक्षाए भूमिसात् हो गई हैं।

कमीशन का मत है कि देश की राजनैतिक अवस्थाओं के सर्वथा परिवर्तित हो जाने के कारण काग्रेस अपनी पूवकृत प्रतिज्ञाओं से सवथा मुक्त है। बहुत से अन्य देशनेता कमीशन का इस प्रतिज्ञामुक्त होने वाली सम्मति से सहमत नहीं है। वस्तुत बात यह है कि भविष्य में हो सकने वाले राजनैतिक परिवतनों का ठीक अनुमान न कर सकने से काग्रेस जो गलती करती रही है वह क्षतव्य है बीस वष पूव के समान इस समय भी भाषा बार प्रान्तो के निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता को अनेक महानुभाव उचित नहीं समझते हैं। इसके अतिरिक्त यदि किसी विशेष भाषा भाषी जनसमुदाय का अन्य भाषा भाषी जनसमुदाय की अपेक्षा पक्षपात किया गया तो और भी अधिक हानि होने की सम्भावना है।

भाषाओं के अधिकारों का विवेचन करते समय कमीशनने मुख्य रूप से आन्ध्र, मलयालम कनाडी, महाराष्ट्रीय और गुजराती भाषा भाषियों के पृथक प्रान्त बनाने की मांगों पर विचार किया है और उन्होंने इसके लिये तीन परीक्षाए नियत की हैं। १—भौगोलिक सामीप्यता २ आर्थिक व शासन सम्बन्धी सुविधा, ३ जनता में अधिक से अधिक भाषा सम्बन्धी समानता। इन कसौटियों पर जाँच करने पर ज्ञात होगा कि आंध्र प्रात भाषा सम्बन्धी समानता की परीक्षा में ठीक नहीं उतरता है इस प्रात के निर्माण में अनेक परस्पर सर्वथा विभिन्न भाषा भाषियों में प्रतिस्पधा है केवल भाषा भाषी प्रात निर्माण में भी आर्थिक स्व सामर्थ्य सम्पन्नता और शासन सम्बन्धी सुविधा नहीं है कनाडकी भाषा भाषियो में भौगोलिक सामीप्यता का अभाव, और महाराष्ट्रीय विविध भाषाओं की अनेकता पायी जाती है आर्थिक दृष्टि से तो इस आधार पर निर्मित प्रातों का असामर्थ्य दोष तो लगभग सभी प्रातों पर समान रूप से लागू होता है। यदि यह किसी प्रकार मान भी लिया जाय कि यह प्रान्त आर्थिक दृष्टि से हीन स्थिति के न भी रहेंगे तो भी शासन करने के लिये उपयुक्त पर्याप्त अधिकारी वग कहा से प्राप्त होंगे? ओडोनल कमीशन के निर्माण के अनुसार भी किये गये उड़ीसा प्रात के निर्माण में तैलगू भाषा भाषियों के सम्मिलित कर देने के उदाहरण से पर्याप्त शिक्षा और अनुभव ग्रहण किया जा सकता है।

कमीशन की रिपोट का परस्पर सगत न हो सकने वाला विचित्र भाग वह है जहाँ उन्होंने भाषा बार प्रातों के निमाण को प्रातों मे उपराष्ट्रीयता की भावना के उत्पादन से देश का एक राष्ट्रीयता का खण्डित हो जाना तथा विरोधी प्रकट किया है और साथ यह भी लिखा है कि भाषावार प्राता के निर्माण के इच्छुक महानुभाव प्रातीय स्वराज्य तक का परित्याग कर भारत के केन्द्रीय एक शासन सत्ता को स्वीकार करने के लिये सर्वथा उद्यत हैं। कमीशन का मत है कि अनेक भाषा भाषियों को सम्मिलित कर वर्तमान निर्मित प्रात, एक राष्ट्रीयता की भावना को दृढ करने में सहायक हैं। अत उन्होंने वर्तमान प्रातों का समर्थन किया है। इसके साथ ही सम भाषा भाषियों और सम प्रान्त निवासियों में अन्य भाषा भाषियों अथवा अन्य प्रान्त निवासियों की अपेक्षा परस्पर अधिक सौहार्द होना स्वाभाविक है। डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि राष्ट्रीयता की धुन में विभिन्न भाषाओं के स्वस्थ विकास और प्राचीन जनपदीय उत्तम साहित्य का विनाश कर बैठे। यह स्मरण रखना चाहिये कि राजनैतिक प्रगति का आधार भी अब ग्राम और जन पद होने जा रहे हैं। भाषा के सम्बन्ध में रूस तथा अन्य देशों की पृथक भाषाओं की रक्षा, तथा एक राष्ट्रीयता के विकास के सफल परीक्षण से लाभ उठाया जा सकता है।

काग्रेस का अधिवेशन

जयपुर में काग्रस का ५५वा अधिवेशन, जैसी कि आशा की जाती थी अत्यन्त समारोह पूर्वक समाप्त होगया। इस अधिवेशन के प्रधान श्री डा० पट्टाभि सीतारमैया का प्रधानपद से दिया गया भाषण अपने पूर्ववर्तीय सभी सभापतियों के भाषण से सम्भवत, अधिक लम्बा था। भारतीय स्वतन्त्रता के अनन्तर शान्तिमय वातावरण में होने वाला यह सर्व प्रथम अधिवेशन था। इसलिये देश की उन्नति, परिस्थिति, और राष्ट्रीय विकास के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषयों पर प्रकाश डाला जाना वाँछनीय ही था। इस अवसर का पूरा २ लाभ उठा कर उन्होंने अपने व्याख्यान में जिन विभिन्न विषयों पर अपना मत प्रकट किया है, यद्यपि अनेक विषय अत्यन्त विवादग्रस्त होने से तीव्र मतभेद के परिचायक हैं और उनमें कहीं २ हेत्वाभास भी पाया जाता है तथापि भाषण की विशेषता यह है कि इतने विषयों की विभिन्नता और विविधता होने पर भी, विदेशों से सम्बन्ध, देशकी व्यावसायिक व श्रमिक समस्याएँ, रियासतों का प्रश्न, शरणार्थियों की व्यवस्था, राष्ट्रीय भाषा तथा देश में सामाजिक और राजनैतिक न्याय की स्थापना, और विदेशों में भारतीयों की समस्याओं को विशेष प्रमुखता दी गई है। भाषण में गांधी भावना का विशेष पुट है जिससे काग्रेस के हित चिन्तकों को प्रोत्साहन ही मिलेगा।

ब्रटिश

डाक्टर पट्टाभि के भाषण में इन सब बातों का विवेचन होने पर भी उनके विचार की मुख्य बात गवर्नमेंट और कांग्रेस के परस्पर सम्बन्ध पर केंद्रित प्रतीत होती था। उन्होंने इसका अनेक प्रकार से विश्लेषण करने का यत्न किया है। इस सम्बन्ध को स्पष्ट प्रकट करने के लिये उन्होंने अनेक भाव वाचक शब्दों का प्रयोग किया है और कांग्रेस को फिलासफर दार्शनिक (एक्सलेटर) "सदाचार निर्देशक (थर्मामीटर)' ताप मापक यन्त्र, (बैरामीटर) दबावमापक यन्त्र, और ब्रेनट्रस्ट बुद्धिकोष आदि नाम दिये हैं। प्राय देखा गया है कि इस प्रकार की तुलनात्मक भाषा का प्रयोग स्पष्ट घोषणाओं से बचने के लिए ही किया जाता है। फिर भी यह तो स्पष्ट ही है कि उनके भाषण में भारतीय मन्त्र मण्डल के कई कार्यों से मतभेद सूचक चिह्न प्रकट होते हैं ज्ञात होता है कि वे उनके कार्यों के केवल अन्ध समर्थक रहने से सन्तुष्ट नहीं है। उनका यह कथन बिलकुल ठीक ही है कि केन्द्रीय सरकार के निर्णय न केवल बिना किसी प्रकार के बाह्य दबाव के होना ही वाञ्छनीय नहीं है प्रत्युत उनके कार्यों में सहायता कर दिया जाना भी अत्यन्त आवश्यक है। जहां एक ओर कांग्रेस का कार्य यह है कि वह गत पूर्व प्रतिज्ञाओं वर्तमान दिक्कतों और भावी अनिश्चतता से उत्पन्न विषम परिस्थिति में सरकार की सहायता कर, वहाँ दूसरी ओर से यहां जनता की अनियन्त्रित इच्छाओं और उनके अव्यवहारिक मार्गों का संयम में रखकर सरकार और जनता, दोनों के समन्वय द्वारा देश को धीरे धीरे प्रगति के मार्ग पर सञ्चालित कर उनमें ठीक २ सन्तुलन रखना है। कांग्रेस दल में यह शक्ति सामर्थ्य और साहस होना चाहिए कि वह किसी मार्ग पर चलने से पूर्व न केवल उसका अच्छी प्रकार परीक्षण ही करले प्रत्युत यदि आवश्यक प्रतीत हो तो क्रान्तिकारी ढंग से उस मार्ग में परिवर्तित भी कर सके।

यह तो भविष्य ही बतलायेगा कि जनता सरकार, और कांग्रेस के परस्पर व्यवहारिक सम्बन्ध में श्री डा० पट्टाभि सीतारमैया द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्त कैसे सामञ्जस्य स्थापित कर सकेगा जब तक कि एक ही पार्टी और शासन के सञ्चालन की नीति में उत्तरदायी न होगा सम्बन्ध की समन्वय नहीं होगा। और दोनों पर्दों पर एक ही व्यक्ति के होने के कारण से गवर्नमेंट और पार्टी के परस्पर सम्बन्ध में सम्भव हुए इस समस्या के उत्पन्न होने की सम्भावना है कि मन्त्रिमण्डल के रूप में केवल निर्वाचित धारा सभा के प्रति ही उत्तरदायी होकर स्वतन्त्र रूप से कार्य करे अथवा धारा सभा से बाहर किसी अन्य पार्टी के प्रति सम्पूर्णतः उत्तरदायी रहे। मन्त्री मण्डल का किसी अन्य दूसरे अधिकारी से अथवा किसी अन्य शक्ति से दबाव में रहने को नापसन्द करना कुछ अस्वाभाविक नहीं है। कुछ भी हो वैधानिक तो यही है कि धारा सभाओं का बहुमत ही सरकार के शासन की नीति सञ्चालन करता है और मन्त्रिमण्डल व्याख्या समालोचना और प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार रखता है।

डा० पट्टाभि सीतारमैया का भाषण यद्यपि विद्वत्तापूर्ण तो था—परन्तु वह देश के सामने किसी निश्चित स्फूर्तिदायक योजना को नहीं रख सका। यह विशाल, शानदार और दो करोड़ से अधिक धन व्यय द्वारा सम्पादित अधिवेशन भी देश का कोई विशेष निर्देश नहीं दे सका है। उसमें स्वीकृत प्रस्तावों में अत्यन्त आडम्बरपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किये जाने पर भी देश की आवश्यक समस्याओं पर मार्गदर्शन नहीं। अनिश्चित रूप में विचार करने का यत्न किया गया है। जो इस बात का विशेष रूप में परिचायक है कि कांग्रेस के नेता इस सम्बन्ध में कोई निश्चित निर्णय नहीं कर सके हैं और एकाएक परिवर्तित गम्भीर परिस्थिति में कांग्रेस के रूप परिवर्तन आवश्यकता आदि पर विचार करने के लिये बाध्य हो रहे हैं। अब कोई आश्चर्य न होगा यदि वे पार्टी से ऊपर उठकर आन्दोलन भावना का परित्याग कर व्यवहारिक दृष्टि से देशोन्नति के लिये प्रगति करने को बाध्य हों।

चीन का गृहदाह

आज चीन से निरन्तर कम्यूनिस्टों की प्रगति तथा राष्ट्रीय फौजों के क्षीण होने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

राजनीतिक जगत में यह अनुभव किया जाने लगा है कि कम्यूनिज्म के इस भीषण प्रवाह में सम्भवत सम्पूर्ण चीन डूब जायगा। चीन द्वारा अमेरिका से की गई अपीलों और श्रीमती चाङ्गकाईशेक का इस उद्देश्य से अमेरिका जाना चीन की आशंका जनक राजनैतिक स्थिति को दर्शाने वाला है।

चीन के दीर्घकालीन आन्तरिक युद्ध से लाभ उठाकर जापान, रूस तथा अमेरिका आदि अन्य योरोपियन देश अपने २ राजनैतिक प्रभाव क्षेत्र को विस्तृत करने में लगभग ४० वर्षों से संलग्न हैं। गत सन् ३९ के संसार व्यापी महायुद्ध में जापान के पराजित हो जाने से यद्यपि एक आक्रान्ता की न्यूनता हो गई है परन्तु वह विजयी रूस के कम्यूनिज्म के संघर्ष में और भी अधिक नष्ट हो रहा है। ५० करोड़ की जन संख्या के [illegible] रक्षा [illegible] करना इस देश [illegible] असम्भवना [illegible] देखी गई हैं [illegible] ही है कि निकट रहने पर भी, इस [illegible] सुख नहीं है।

चीन के इन राजनैतिक युद्धों की परम्परा का प्रारम्भ सन् १९११ से हुआ। जब कि चीन में क्रान्ति के परिणाम स्वरुप बालक मन्चू सम्राट राजगद्दी से उतारा जाकर सन् १२ में चीन को रिपब्लिक (प्रजासत्तात्मक) राज्य घोषित किया गया। तब से बराबर ही अशान्ति और अराजकता का दौरदौरा है। रिपब्लिक के प्रथम अध्यक्ष मार्शल युआन शिकाई का उत्तरीय चीन के प्रसिद्ध नेता डा० सनयातसेन ने तीव्र विरोध किया। १९१५ में युआन शिकाई ने अपने आपको सम्राट् घोषित कर दिया परन्तु उसकी शीघ्र मृत्यु हो गई। डा० सनयातसेन ने दक्षिणी चीन की राजधानी नानकिङ्ग को क्रान्ति का केन्द्र बनाया जिसके अनन्तर देश में बराबर गृहयुद्ध प्रचलित रहा। चीन का दक्षिणी भाग निरन्तर उत्तरीय भाग से लड़ता रहा और विभिन्न स्थानों पर अनेक सैनिक मार्शल, जनरल अपनी २ सरकारें स्थापित करते रहे।

सन् १९१४ के महायुद्ध में जापान और युद्ध समाप्ति के अनन्तर व्यावसायिक संघर्ष में अमेरिका, जापान के प्रतिद्वन्दीरूप में चीन में प्रविष्ट हुआ।

डा० सनयातसेन बराबर उसके उद्धार का प्रयत्न कर रहे थे। कम्यूनिस्ट रूस की दिलचस्पी चीन के अन्तरीय मामलों में क्रमश बढ रही थी। कम्यूनिस्ट लोग अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद को नष्ट करने के लिये चीन को अत्यन्त महत्वपूर्ण चाबी समझने लगे थे। सन् १९२४ में जनरल चांग काईशेक का राष्ट्रीय नेता के रूप में उदय हुआ। उन्होंने दक्षिण चीन के सेना नायकों को १९२६ में पराजित कर मुख्य सेनापति व शासक का पद ग्रहण किया और उत्तरीय चीन के सैनिक डिक्टेटर मार्शल चाङ्ग स्टोलिन को पराजित कर राष्ट्रशक्ति को संगठित कर दिया। शंघाई में कम्यूनिस्टों का सामूहिक नरसंहार कर विनाश किया और नानकिंग को [illegible] सन् १९३[illegible] [illegible] मन्चूरिया प्रान्त और [illegible] राजधानी पर अधिकार लिया। जुलाई सन् ३७ में पेकिङ्ग मार्कोपोलो के पुलपर जापानी सिपाहियों पर आक्रमण किये जाने बहाना बनाकर जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया, इसी बीच में सन् ३९ में महायुद्ध प्रारम्भ होगया। और जापानी सैनिकशक्ति से चीन, मलाया और वर्मा का अधिकतर भाग विलोडित होनेपर भी अन्त में पराजित हो जाने के कारण चीन में जापानी प्रभाव का सर्वथा अन्त हो गया।

रूस की सीमा से संलग्न होने के कारण और साईबेरिया के सीमा प्रान्तको अपने प्रभाव में रखने की इच्छा के कारण रूस के सहयोग से कम्यूनिस्टों का प्रभाव बढ रहा है। चीन में इस समय भी अंग्रेजों का ४५ करोड पोंड और अमेरिका का ८० करोड डालर व्यवसायों में लगा है। इसके अतिरिक्त चीन का अभी बहुत सा ऐसा भाग है जो किसी भी प्रभावक्षेत्र से रिक्त है अतः व्यावसायिक बाजारों के लिये पर्याप्त गुन्जाइश है।

कम्यूनिस्टों के विरुद्ध गत ८ वर्षों से युद्ध लड़ा जा रहा है! जनरल चाङ्ग काईशेक की 'या तो चीन को पर्याप्त सहायता मिले अन्यथा पतन हो' की अपील का अमेरिका पर कोई विशेष प्रभाव न हो सका। आज शायद अमरीका को यह विश्वास नहीं रहा कि उसकी पूँजी फिर वसूल हो सकेगी। गत वर्षों में दी गई सहायता पर भी नानकिंग सरकार व उसकी सेनाओं की असफलता दुःखजनक सन्देह उत्पन्न करने वाली है। आज चारों ओर से निराश तथा त्रस्त होकर चाङ्ग काईशेक कम्यूनिस्टों से संधि के लिए हाथ बढा रहे हैं। हम समझते हैं कि यदि दुनियाँ की फूट डालनेवाली

(शेष पृष्ठ ११ पर)

।
यें
८८
ी श्री
नेदय
और
हुआ
खते
नधी
कये

कई विषयों पर अप... हैं, मैं केवल २ विषयों पर अपने ... लिखना चाहता हूँ।" आगे आपने पहली बात कोड के पक्ष में लिखी है उसका एकीकरण सिद्धान्त और दूसरी यह कि प्रस्तावित कोड का विरोध न किया जाय और न उसको स्थगित किया जाय अपितु उसके दोषों को दूर करके उसको स्वीकार कर प्रचलित कर दिया जाय। ऐसा करने से आपकी सम्मति में जैसे धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में ऋषि दयानन्द की शिक्षा से अनेक सम्प्रदायों के स्थान पर एक वैदिक धर्म, अनेक देवताओं के स्थान पर एक ईश्वर, अनेक धर्म ग्रन्थों, के स्थान पर एक धर्म पुस्तक वेद की तथा अनेक जन्मगत जातियों के स्थान पर सबका एक नाम आर्य दिया गया है उसी प्रकार प्रस्तावित कोड भी समग्र हिंदू जाति पर एक समान कानून लागू करके हिंदू जनता की जातीयता राष्ट्रीयता के के एकीकरण में सहायक होगा। "शुक्ल जी ने कोई शब्द हिंदूकोड की उपरोक्त बात पर नहीं लिखा।"

वैयक्तिक धारणाओं और भावनाओं को छोड़कर यदि कोड सम्बन्धी लेख की धारा १ और उसके साथ ही उपधाराओं को पढ़ा गया होता तो कदाचित् इस बात को लिखने का कष्ट न उठाना पड़ता कि आलोच्य लेख में लिखी एकीकरण की बात का उल्लेख नहीं किया गया है। क्योंकि हिंदूकोड के साधारण तम विद्यार्थी को ही नहीं अपितु यह बात तो कतिपय कोड के विधाताओं को सुस्पष्ट है कि प्रस्तावित हिंदूकोड जैसा कि प्रकाशित किया गया है, उससे एकीकरण सर्वथा असम्भव है। उदाहरणार्थ क्या कृषिसम्बद्ध भूसम्पत्ति, वसीयत द्वारा प्रदत्त सम्पत्ति, स्त्रियों के स्वामित्व की सम्पत्ति, और बिना वसीयत किये मरने वाले हिंदू पुरुष की सम्पत्ति का उत्तराधिकार समान रूप से सर्वत्र भारत राष्ट्र में लागू होना किसी प्रकार सम्भव होगा। यदि नहीं तो एकीकरण का क्या प्रयोजन है। क्या भारत राष्ट्र की प्रजा केवल हिंदू, आर्य, सिक्ख और जैन ही हैं। क्या उसी राष्ट्र के नागरिक मुसलमान ईसाई, यहूदी, पारसी आदि नहीं हैं। यदि वह भी समानाधिकार रखने वाले

प्रस्तावित हिन्दू कोड मीमांसा

(ले०—रादत्त शुक्ल एम० ए० एडवोकेट,)

भारत के नागरिक हैं तो किस प्रकार उनपर हिन्दू कोड लादा जायगा। आश्चर्य है कि एक ओर तो यह प्रयास हो रहा है कि हिन्दू विश्वविद्यालय से और मुसलिम विश्वविद्यालय से क्रमश: हिंदू और मुस्लिम शब्द उड़ा दिये जाय और विशुद्ध राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाये जावें। ऐसी दशा में किस प्रकार हिन्दू कोड और मुसलिम कोड, ईसाई कोड, पारसी कोड और यहूदी कोड जातीय और राष्ट्रीय एकीकरण को स्थापित कर सकेंगे, यह बात साधारण बुद्धि के तो परे प्रतीत होती है। खेद है कि जिस हिन्दू पने का अथवा उस शब्द को ही आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि ने अपने भाषणों और लेखों में कहीं भूलकर भी स्थान नहीं दिया, उसी को हम हृदय से सराहते हुये अपनाने के लिये तैयार हैं। कि लहसुन खाने से भी यदि व्याधि शान्त हो जाय तो ऐसे लोग हो सकते हैं कि उसको सेवन करने लगें। यहां तो एक प्रकार के कानून के स्थान पर तीन २ प्रकार के कानून लादे जाने का उपक्रम है।

दोषों को दूर करके कोड को शीघ्र स्वीकार करके प्रचलित किया जाय, इस सम्बन्ध में आपने उन सब सज्जनों की बड़ी प्रशंसा की है कि जिनके वर्षों के प्रयत्न से प्रस्तावित हिन्दूकोड तैयार हुआ है। किन्हीं व्यक्तियों के प्रश्न की सराहना का तो यहां प्रश्न ही है। विचारणीय विषय तो यह है कि प्रस्तावित हिंदूकोड जिनके कल्याण के लिये बनाया जा रहा है, उनको क्या अभिमत है, उनकी क्या मांग है, उनकी किस बात में सुविधा होना सम्भव है, उनका बहुमत क्या चाहता है, और समस्त राष्ट्र के एकीकरण का प्रश्न किस अर्थ में हल होना सम्भव है। आश्चर्य है कि यह भी न जाने कैसे कहा जा सकता है कि जिस प्रकार वर्त्तमान भारत का विधान सभी भारतीयों के लिये लागू हो जायगा और किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी उसी प्रकार प्रस्तावित हिंदूकोड भी समानरूप से सब पर लागू होगा, तो इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। किन्तु विचार करने से प्रतीत होगा कि हिंदूकोड और भारतीय विधान समान महत्व नहीं रखते हैं। क्योंकि विधान तो समस्त राष्ट्र के समस्त नागरिकों पर समान प्रभाव रक्खेगा, परन्तु कोड केवल हिंदुओं के सम्बन्ध में लागू होने वाले कानूनों में से कतिपय सीमित क्षेत्रों में ही विशिष्ट व्यक्तियों और उनके स्वत्वाधिकारों के विषय में लागू हो सकेगा। हां एक ईश्वर, एक वैदिक धर्म, एक धर्म पुस्तक वेद, एक शब्द आर्य, इस धार्मिक क्षेत्र के एकीकरण की भांति प्रस्तावित हिंदूकोड होता और उसके प्रति वैसी ही मान्यता उन लोगों को हो जाती कि जैसी आस्था विद्वान् लेखक की एक ईश्वर, एक वैदिक धर्म, एक धर्म पुस्तक वेद और कदाचित् एक शब्द आर्य के सम्बन्ध में है तो फिर प्रस्तावित कोड का तो सभी भारतीय ऐसे ही स्वागत करते कि जैसे "रघुपति राघव राजा राम आदि" जन गीत को करते देखे जाते हैं। परन्तु वास्तविकता इससे कोसों दूर है।

एक बात और इसी प्रसंग में विचारणीय है कि क्या एकीकरण कोई ऐसा सर्वतन्त्र सिद्धान्त है कि जिसको स्वीकार करना सब कालों और सब लोगों के लिये समान रूप से अनिवार्य है। यदि एक क्षण के लिये भारत राष्ट्र के नागरिक इस सर्वतन्त्र सिद्धान्त को स्वीकार कर सकते तो हिंदुस्तानी के राष्ट्रभाषा बन जाने में क्या आपत्ति हो सकती है। किन्तु इसके विरुद्ध तो हम संस्कृति, धर्म, परम्परादि सब कुछ विचार के हिंदुस्तानी के नाम से भी चिढ़ते हैं और हिंदी एवं नागरी लिपि को ही अपनी राष्ट्रभाषा और देव नागरी लिपि बनने के लिये भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। वस्तुतः महर्षि ने वेद और सत्य का अपनी समस्त वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों और प्रगतियों का मानदंड समझा और समझाया था। पचायतपने का अनुमोदन न करके थियासोफी और ब्रह्म समाज से एकीकरण करना किसी प्रकार भी उचित नहीं समझा था। फिर अन्य आर्य समाज के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के लिये भी तो वेद और सत्य के अतिरिक्त और कौन सा ऐसा नया मानदंड अब बन गया है कि जिसका हम अन्धानुकरण करने के लिये विवश हो गये हैं। वस्तुतः धर्म संकट के समय तो धर्मप्राण आर्य के लिये वेदादि सत् शास्त्र ही मार्ग दर्शा सकते हैं। उनका आलोडन और परिमन्थन धीरता गम्भीरता के साथ आर्य विद्वानों को करना ही चाहिये। इस कार्य में धारणाओं और आग्रह को शास्त्र एवं उनके अनुवचनों के स्थान पर प्रचारित न किया जाय तो अच्छा ही है। हां स्वतंत्र भारत में प्रत्येक विषय पर सभी नागरिकों को विचार करने और उन विचारों को प्रकाशित करने का पूर्ण एवं समान अधिकार है।

प्रस्तुत लेख के लेखक का प्रस्तावित हिंदूकोड के सम्बन्ध में जो लघु प्रयास हुआ है, उसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि प्रस्तुत विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से और विभिन्न पार्श्वों से विद्वान् लोग समीचीन रीति से विचार करें कि जिसमें जनहित साधन में सुविधा और सौकर्य सम्भव हो। बिना भली भांति विचार किये किसी बात को मानना या विरोध करना बुद्धिजीवियों के स्वभाव के विरुद्ध है।

✦✦✦

सांप्रदायिक ज़हर उगलने वाली संस्थायें सहन न होंगी

संघ से बचने के लिये पंत जी की अपील

२६ दिसम्बर। को सायंकाल गंगाप्रसाद मेमोरियल हाल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विरोधी एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें माननीय प्रधान मंत्री पंडित गोविंद वल्लभ पंत और मंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त व श्री आत्माराम गोविंद खेर ने भाषण किया। हाल के बाहर जनता का बहुत बड़ा समूह प्रांतीय नेताओं के भाषणों को सुन रहा था।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र "ईशावास्यमिदं" के अंदर हमारी संस्कृति निहित है कहते हुए पंतजी ने कहा कि जिस संस्था की नीति गांधीवाद के विरुद्ध रही हो और जो साम्प्रदायिक ज़हर उगल कर हिंदू संस्कृति के नाम पर नवयुवकों और खासकर कमसिन लड़कों को बरगला और भड़का कर देश के वायुमंडल को दूषित करने का प्रयास करे, ऐसी संस्था स्वतंत्र देश में नहीं रह सकती। आज हम सबको प्रेम और सद्भावना से देश के निर्माण में संलग्न होना है। संघियों ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और साथ ही साथ कांग्रेस का विरोध किया और गांधी जी जब तक जीवित रहे हिंदुओं में यही प्रचार किया कि गांधी जी ने हमें बिगाड़ दिया है। उन्होंने साम्प्रदायिक वातावरण पैदा किया जिसका परिणाम यह हुआ कि महात्मा गांधी की हत्या की गयी। अगर आप समझते हैं कि हम उस महान् व्यक्ति के आदर्श पर चलें, जिसने सत्य और अहिंसा के पथ पर चलकर हमें आजादी दिलवायी तो आपका यह कर्तव्य है कि संघ को किसी प्रकार की सहायता न दें ताकि देश के किसी कोने में संघ की कोई आवाज न सुनाई दे।

आपने कहा कि जब देश ब्रिटिश

(शेष पृष्ठ ६ में)

वेदवीथी

वैदिक सोम-पान के लिये इन्द्र और वायु देवों का आवाहन

[श्री वा० किशोरी लाल जी गुप्त]

उभादेवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये ॥

ऋक्-म० १-सू० २३-म० २ ॥

अन्वय.—अस्य सोमस्य पीतये, दिविस्पृशा उभा देवा, हवामहे ।

शब्दार्थः—(अस्य सोमस्य) इस सोम के, (पीतये) पान करने के लिये, आस्वादन करने के लिये, उपभोग करने के लिये, उससे पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकने के लिये, (दिविस्पृशा) आकाश को-स्पर्श करने वाले, उससे आकाश तक उन्नत होकर पहुँचने वाले, (उभा देवा) दोनों देव, (इन्द्र-वायू) इन्द्र और वायु को, (हवामहे) आवाहन: करते हैं, निमत्रित करते हैं, बुलाते हैं ।

व्याख्या—मंत्र के कई शब्दों की व्याख्या पूर्व मंत्रों के साथ की जा चुकी है । मित्रके विज्ञ पाठकों के स्मरणार्थ पुनः सक्षिप्त प्रकाश डाला जायगा । 'सोम' शब्दो 'षू' धातु से बनता है । मूर्ध-न्य 'ष' दन्त्य 'स' में, और 'ऊ' गुण होकर 'ओ' में वदल जाते है, और 'मक' आगम होकर 'सोम' शब्द वन जाता है धातु पाठ में इस 'षू' धातु के तीन अर्थ दिये गये है—प्रसव, ऐश्वर्य्य और प्रेरणा। जो-जो वस्तुएँ उत्पन्न हों, ऐश्वर्य्य द्योतक और प्रेरक हों—व सबकी सब 'सोम' हुई । चन्द्रमा भी अमा-वस के उपरान्त पुन उत्पन्न होता सा जान पड़ता है अत. 'सोम' कह लाता है । चन्द्रमा की सुधा लेकर जड़ी बूटियां उत्पन्न होती है 'सोम' कहलाती है । पुत्र उत्पन्न होता है, अतः 'सुत' और 'सोम' कहलाता है । ईश्वर उत्पन्न तो नही होता, किन्तु इस नाना-विध ससार को उत्पन्न करने से 'सोम' कह लाता है । वह विश्व प्रेरक और परम ऐश्वर्य्य शाली होने से भी 'सोम' कह लाता है । राष्ट्र-पति चुनकर, निर्वाचित होकर, मानो प्रजा द्वारा उत्पन्न किया जाता है, अत. सोम कहलाता है । ऐश्वर्य्य और वैभव भी राष्ट्र द्वारा सपादित होने के कारण 'सोम' कहलाता है । स्वामीजी महाराज ने भी यत्र तत्र अपने वेद भाष्य में ये अर्थ किये है । प्रस्तुत मंत्र में 'सोम' शब्द का प्रयोग वैभव और ऐश्वर्य्य अर्थ मे ही हुआ है ।

नवीन राष्ट्र-रूपी 'सोम' का प्रसव हो चुका है । अब इसको पीति करनी है । यह 'पीति' शब्द 'पा' धातु से बनता है । इसके दो अर्थ है—पीना और पालना, रक्षा करना । प्रस्तुत मंत्र में नव-जात शिशु 'राष्ट्र' को खिला पिला कर परि-पुष्ट करना है । कैसे किया जाय ? (अस्य सोमस्य पीतये) इस राष्ट्र को परि-पुष्ट करने के लिये, इसकी दृढ़ नीम जमाने के लिये, नहीं २ इसे दिवि-स्पर्श कराने के लिये, इसे उन्नत बनाकर आसमान सा ऊँचा बनाने के लिये, (दिवि-स्पृशा उभा देवा) आकाश तक पहुँचने वाले, अत्यन्त महत्व शाली दोनों देवों को आम-त्रित करते है, पुकारते है, राष्ट्र-सेवा के लिये अवाहन करते है । कौन से वे देव ? (इन्द्र वायू) इन्द्र और वायु दोनों आकाश से बातें करते है। इन्द्र का अर्थ स्वामी जी महाराज ने स्थल-स्थल पर प्रमाण सहित विद्युत के किये है । 'देव' शब्द दिव्य दैवी गुणों के लिये भी प्रयुक्त होता है । 'वायु' बलका प्रतीक है । बडे-बडे वृक्षों को समूल उखाड फेंकता है । हनुमान जी अत्यन्त बल शाली और वेगवान होने के कारण ही 'पवन-सुत' कहलाने लगे थे इसी प्रकार मत्र मे 'इन्द्र' प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है । प्रेरणा का प्रतीक है । बिजली से प्रकाश और अङ्गनों को प्रेरणा, गति मिलती है । राष्ट्र के अभ्युदय और निश्रेयस के लिये दो ही वस्तुओं की आवश्यकता है । शारीरिकबल, और बुद्धि-कौशल । इनके अभाव मे राष्ट्र एक दिन नहीं ठहर सकता । राष्ट्र तो दूर की बात है यह शरीर तक नहीं टिक सकता ससार के सभी कार्यों के लिये शारी-रिक और मानसिक बल-संचय अनिवार्य्य है । अशक्त और मूर्ख कभी भी और किसी भी देश में पनप नही सकते । इसीलिये मत्र में दोनों दिव्यशक्तियों-इन्द्र और वायु का आवाहन किया गया है ।

इन्द्र और वायु अर्थात् उष्णता और गति, उत्साह और उसके अनु-सार कार्य-सलग्नता दोनों उन्नतिके लिये, जीवन-साफल्य के लिये अनि-वार्य हैं । यदि उत्साह की गर्म नहीं तो जीवन मिट्टी, और उत्साह भी हुआ, किन्तु खयाली पुलाव पकाते रहे विचारों को कार्य में परिणत करने के लिये शरीर की गति नहीं, तो वह जोश वह उत्साह निरर्थक । अतः प्रकाश और गति अथवा ज्ञान और कर्म दोनों को बुलाकर एक त्रित करने की आवश्यकता है । अन्यथा आकाश तक पहुँचना तो दूर रहा । साधारण टीले की चोटी तक पहुँचना कठिन पड़ जायगा ।

तीसरी बात जिसकी ओर मंत्र सङ्केत करता है इन दोनों देवों का 'पावन और 'पावक' पन है । प्रकृति के अन्दर जो-जो गन्दगियाँ पशु-पक्षी और मानव समाज उत्पन्न करता है उन सबको अग्नि और वायु स्वच्छ करते है । इसी प्रकार मानवी सृष्टि के अग्नि और वायु, ब्रह्म और क्षत्र शक्तियो, पुलिस और अध्यापकों उपदेशकों का कर्त्तव्य है कि राष्ट्र-व्यापी समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन, द्वेष ईर्षा और दुष्टाचरण को दूर करते रहने का सतत प्रयत्न करें । यदि आवश्यकता पडजाय, तो आँधी की भाँति चल पड़ें, और राष्ट्र के कोने-कोने से गन्दगी और ग़लाज़त को उजाड कर फेक दें । आज तो इन दोनो के भागीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है । पुलिस कभी हव्वा थी, आज उसे सच्चा पवलिक सर्वेण्ट स्वयं-सेवक वनकर राष्ट्र से चोरी, जारी, जूआ, आदि सब प्रकार के जुर्मों को खोज-खोज कर मिटाने का प्रयत्न करना चाहिये । इसी प्रकार आर्य्य समाज एव अन्य धार्मिक सस्थाओं को अपने-अपने ढोंग त्याग कर जनता में सदाचार और सद्व्यवहार की शिक्षा देने में जुट जाना चाहिये । विचार परिवर्तन बिना किये दुष्कर्म बदल नही सकते । वचन और कर्म की संशुद्धि के लिये शिव-सङ्कल्प मन की पहिले आव-श्यकता है ।

▼

(पृष्ठ ५ का शेष)

साम्राज्य से टक्कर ले रहा था और देश में जलियान वाला बाग आदि घटनाएं हो रही थीं तो उस समय कोई भी संघी

दे
संघ
करते
गद्दारी
अपनाने पर

गुप्त

माननीय

भाषण करते कहा कि आज ऐसी संस्थाएं जो हिंदू संस्कृति के नाम पर उपद्रव करने, व दूषित एव साम्प्रादायिक वातावरण पैदा करने की चेष्टा करें, किसी प्रकार सहन नहीं की जा सकतीं । आपने कहा कि हमें देश का निर्माण राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के दिखाये हुए रास्ते पर चल कर करना है । लेकिन यह खेद की बात है कि छोटे-छोटे लड़कों को भड़का कर, हिंदू धर्म के नाम पर कानून तुड़वा कर रास्ते में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया जाता है । वह समय खत्म हो गया जब राज्य धर्मों के नाम पर चला करते थे । आज यह बीसवीं सदी है और कोई भी देश धर्म के नाम पर चलेगा तो वह स्वय अपने पैरों मे कुल्हाड़ा मार कर अधकार की ओर जायगा । देश के मुसलमानों को उनके अधिकारों से वंचित नही किया जा सकता ।

श्री खेर का भाषण

माननीय मत्री श्री खेर ने यजुर्वेद के ४० वे अध्याय के ७ वें मत्र 'यस्मि-न्सर्वाणि' का उद्धरण देते हिन्दू सस्कृति के सम्बन्ध में कहा कि हमारी सस्कृति इस उपनिषद् के आधार पर है आपने कहा सघ के आदोलन के पहिले उनके गुरुजी ने कहा था कि हमारी सस्था कानून भग करने वाली सस्था नहीं है । लेकिन इसके थाड़े ही दिनों बाद सघियों ने सत्याग्रह कर कानून तोड़ने का प्रयत्न किया । सघ आज मुसलिम लीग की चालों पर चलकर पुन: देश को गुलामी की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहा है । आपने सघ का इतिहास और नीति पर प्रकाश डालते हुए कहा सघियों ने हमेशा यही कहा कि हमारा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं, हम सच्चे हिन्दू बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं । लेकिन वे अन्दर ही अन्दर सम्प्रादायिक एव घृणित प्रचार करते रहे । उनमे प्रतिहिंसा की भावना उमड़ी । देश के विभाजन के बाद इन्होंने दूषित एव साम्प्रादायिक प्रचार देश में फैलाया जिसका नतीजा यह हुआ कि एक हिन्दू ही ने राष्ट्रपिता की हत्या की । यह कलक का टीका हिन्दू समाज पर सदा के लिए रहेगा ।

। प्रसन्नता

डी विद्या मेद हो गया कि चलादिये। र डी ए वी की विद्या सभा के और-पत्र सभा कार्यालय ...ऊ में पहुँचे।

उसी समय दोनों आर्य भाई पारस्परिक प्रेम पाश में बंध ... आर्य समाज और कालेज के काय का सुन्दर संचालन कर रहे थे परन्तु मतभेद के भयकर भूत ने प्रेम पाश को द्वेष की दावानल में दग्ध कर दिया, तीन केस अदालत दायर होगये, प्रान्तीय न्यायालय (हाई कोर्ट) तक अभियोगों के चलाने के लिए दोनों दल सन्नद्ध होगये।

का समझौता सुगम एवं सुलभ नहीं है फिर भी मैं कृत सकल्प था कि जैसे भी हो यहा के झगड़े को मिटा और पारस्परिक समझौता करा कर ही हटूंगा। लगातार दो दिन के प्रबल प्रयास के परिणाम स्वरूप समझौते का सुन्दर-स्वरूप २२ नवम्बर की रात्री में १० बजे समुपस्थित हुआ और उभयपक्ष ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

यह लिखते हुये मुझे प्रचुर प्रसन्नता प्राप्त हो रही है कि न्यायालय से तीनों अभियोग उठालिए गये और मेरी उपस्थिति में ८८ नवम्बर को डी ए वी इन्टर कालेज गाजीपुर की विद्यासभा का निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न हो गया। आर्य समाज और विद्यासभा के सदस्य पूर्ववत् प्रेम पाश म बध कर काय संचालन कर रहे हैं। गाजीपुर मे चलते समय वहाँ के

यद्यपि पुन पुन चित्त में संकोच सृजन इस लिए होता था कि हाई कोर्ट तक लड़ने का निश्चय करने वाले आय भाई क्या मेरे वचनों का समादर कर समुचित समझौता करने के लिए सन्नद्ध हो जावेंगे? तथापि भगवान पर भरोसा कर मैं गाज़ीपुर पहुँचगया। युक्त प्रान्तीय आर्य प्रति निधि सभा के अन्तरग सदस्य श्री बाबू अक्षयवर नाथ जी को भी मैंने आजमगढ़ से बुला लिया था। वे भी २१ नवम्बर को प्रात काल गाजीपुर पहुँच गये थे। २१ नवम्बर की रात्री के ११॥ बजे तक हम दोनों के पुरुषार्थ का कोई परिणाम न निकला। २२ नवम्बर प्रात काल श्री बाबू अक्षयवरनाथजी को यह कह कर मैंने वापिस कर दिया कि मैं आजमगढ़ आऊँगा तब तक गुरुकुल वृन्दावन के लिए धन संग्रहार्थ भूमि तयार कर लेवें। २१ नवम्बर की बात चीत के आधार पर हम दोनों इस परिणाम पर पहुँचे थे कि यहा

आर्य भाइयों ने गुरुकुल वृन्दावन के लिए ५८६) पाचसौ छयासी रुपया भी प्रदान किया। साम येन गाजीपुर के सब आर्य भाइयों का तथा विशेष श्री महावीरराम जी प्रधान विद्या सभा और श्री देवकीनन्दन जी प्रधान आर्य समाज का आभारी हू कि जिन्होंने सभा और गुरुकुल का मान किया। मैं उस समय आनन्द की अभग तरग गगा में गोते लगाने लगता जब समस्त सदस्यों से (दोनों पक्षों के सदस्यों से) सुनता था कि यद्यपि आदेश सभा का ही शिरोधार्य करना है तथापि हम अपनी बात कहे बिना रुक भी नहीं सकते हैं। अस्तु—मैं गाजीपुर के आर्य भाइयों से प्रचुर प्रसन्न हूँ और वे मुझसे प्रभूत प्रसन्न हैं इसलिए उभयक प्रचुर प्रसन्नता प्राप्त हुई है।

मैंने इस यात्रा में यह भी अनुभव किया है कि युक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल वृन्दावन के लिए आर्यजनों के मन म समादर एव श्रद्धा विद्यमान है। आजमगढ़ शाहगज और जौनपुर आर्य समाज ने गुरुकुल वृन्दावन का देयद्रव्य मनिआर्डर मुझे देदिया।

श्री गिरिधारी लाल जी मन्त्री आर्य समाज लालगज जिला आजमगढ़ म तो अपने साथियों के सहित १४ मील शीत काल में साइकिल से चलकर परिहा स्टेशन पर आकर गुरुकुल का देयद्रव्य टूंन में दिया। मैंने उनसे कहा कि इस शीत काल में प्रात काल चौदह मील साइकिल से चल कर यहा क्यों आये? युवक मन्त्री ने मुसकाते हुए उत्तरदिया क मेरा छोटा सा आर्य समाज है। आप तो वहा जा वेंगे ही नहीं इसलिए हम सब सदस्यों ने यहा आना इसलिए उचित समझा कि आप से भेट भी कर लेंगे और गुरुकुल का देय द्रव्य भी दे देंगे। उनकी इस श्रद्धा से मैं गद्गद हो गया और यह निश्चय कर लिया है कि माच मास में मैं वहा अवश्यमेव आऊगा।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री

मेरठ साहित्य सम्मेलन संस्मरण

(ले०—श्री प० धर्मदेव जी शास्त्री दर्शनकेसरी)

राष्ट्रभाषा और राष्ट्र लिपि के सम्बन्ध में विधान परिषद् ने अभी तक निर्णय नहीं किया इसका कारण यह है कि इस बारे में काग्रेस हाई कमाण्ड निर्णय नहीं कर सका। जहा तक जनता का ताल्लुक है यह निर्णय कर चुकी है—हिन्दी राष्ट्र भाषा और नागरी राष्ट्रलिपि।

अस्पष्टता और छिपाये रखना

रहस्यमय स्थिति हमारे देश का सद्गुण नहीं अवगुण है। राष्ट्रपिता बापू ने सत्य का आभूषण स्पष्टता को बताया है। भाषा और लिपि जैसे महत्व पूर्ण प्रश्न के निर्णय पर विलम्ब करना और अस्पष्ट रहना उचित नहीं। इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। यह सत्य हम मेरठ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन को समीप से देखने पर ज्ञात हुआ है। सम्मेलन पर जो प्रस्ताव स्वीकृत हुए उन से ही नहीं अपितु राष्ट्र के अन्तरतम से जिन नेताओं का गहरा सम्बन्ध है उन की भावनाओं के अध्ययन से हमें यह सच्चाई मालूम हुई है।

जब तक देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था तब तक राजनीतिक चर्चाएं सब से ऊपर थी परन्तु अब स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद संस्कृति का प्रश्न सर्व प्रमुख स्थान ग्रहण करता जा रहा है। दुर्भाग्य से भारतीय संस्कृति एक पहली और दुरूह प्रश्न बनी हुई है।

भारतीय संस्कृति क्या है? उसका धर्म के साथ कितना सम्बन्ध है? क्या हमारे देश में एक संस्कृति है अथवा अनेक? आदि प्रश्नों का उत्तर एक नहीं है यह हम मानते हैं। परन्तु इस बात मे कोई विवाद नहीं है कि भारतीय संस्कृतिमें भाषा और लिपि का स्थान प्रमुख है।

भारत जैसा गौरवशाली राष्ट्र स्वतन्त्र होने पर किसी विदेशी भाषा और लिपि को राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि के रूप में सहन नहा कर सकता। मेरठ सम्मेलन से हमारे हृदय पर जो प्रमुख प्रभाव पड़ा है वह यह है कि विधान परिषद् को शीघ्र ही राष्ट्रलिपि और भाषा के बारे में फैसला करना चाहिए। इस प्रश्न को रहस्य बनाये रखना राष्ट्र और राष्ट्र के वर्तमान नेतृत्व के लिये अच्छा नहीं है।

जहाँ तक भोजन निवास, सफाई और मण्डप के सजान का सम्बन्ध है मेरठ सम्मेलन आज तक हुए सब सम्मेलनों से बाज़ी लेगया है। सैकड़ों प्रतिनिधि पत्रकार और निमन्त्रित अतिथियों को अपनी ओर से बिना कुछ लिये भोजन देना आज के समय में साहसपूर्ण कार्य है। स्वागत समिति ने इस गुरुतर भार को जिस उत्तमता से वहन किया है वह आदर्श नहीं कहा जा सकता क्योंकि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भावी अधिवेशन के अवसर पर वहा की स्वागत समिति शायद यह भार वहन न कर सके। मेरठ की जनता ने नाम के अनुरूप ही सम्मेलन की सफलता में योग दिया है इसके लिये वह बधाई के पात्र हैं।

मेरठ का साहित्य सम्मेलन काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के समान विशाल आयोजन के रूप में प्रतीत होता था। विधान परिषद् के ६० से अधिक सदस्यों कि उपस्थिति और आसाम बगाल, बम्बई, मद्रास, हैदराबाद, महाराष्ट्र और पंजाब के प्रमुख नेताओं की उपस्थिति से यह बात स्पष्ट प्रतीत हुई कि अब हिन्दी और नागरी को उचित स्थान मिलेगा ही। इसको कोई रोक नहीं सकता। विधान परिषद् के अध्यक्ष श्री धायकर जी ने तो कहा कि हिन्दी संस्कृत की पौत्री है। अब यह युवति होगई है और शीघ्र ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होकर भारत राष्ट्र की गृहिणी बनने जा रही है। कुछ लोग कुरूप भोंडा दासी पुत्री को राष्ट्र की गृहिणी बनाना चाहते हैं परन्तु यह नहीं हो सकता' राष्ट्रियता के विकास में हिन्दी भाषा का प्रमुख

स्थान है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता मे हिन्दी भाषा को स्वभावतः आशा मिली है। भाषण की दृष्टि से हमें राष्ट्रभाषा परिषद् के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम आयगर का लिखित भाषण सम्मेलन के अध्यक्ष के. भाषण की अपेक्षा भी अच्छा और विद्वत्ता पूर्ण प्रतीत हुआ है। भाषण की भाषा मन्जी हुई हिन्दी थी। मद्रास प्रान्त की ओर से विधान परिषद् के सदस्य श्री नागप्पा की यह बात हमें ठीक प्रतीत हुई कि...'हिन्दी वाले हम दाक्षिणात्यों को थोड़ा समय दें फिर तो हम लोग हिन्दी भाषियों से भी अच्छी हिन्दी बोल सकेंगे और लिख सकेंगे।"

जो मद्रास प्रान्त विदेशी भाषा अंग्रजी के महापण्डित पैदा कर सकता है वह हिन्दी के पण्डित पैदा करेगा यह निर्विवाद प्रतीत होता है। हिन्दी भाषा भाषियों से हम स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि आप लोग हिन्दी व्याकरण और संस्कृत के साथ घनिष्ट सम्पर्क बनाये बिना हिन्दी भाषा के सूत्रधार अब नहीं रह सकेंगे। दक्षिण भारत हिन्दी भाषा को अपना रहा है, उस पर अधिकार करना चाहता है, यह प्रसन्नता की बात है। साथ ह हिन्दी वासियों के लिये ...सावधान भी है।

हमारा प्रस्ताव है और यह प्रस्ताव माननीय टंडन जी को भी हमने बताया है कि किसी एक स्थान पर देश की सभी प्रान्तीय भाषाओं के प्रति निधि विद्वानों का एक कन्वेंशन किया जाय। यह कन्वेशन एक पखवाडे तक चले। हिन्दी भाषी विद्वान् केवल संयोजन का कार्य करें। निर्णय प्रान्तीय भाषा भाषियों को ही करना चाहिये। भाषा का ग्रहण प्रेम और सद्भाव से ही होगा। परिभाषा निर्णय के लिये ११ दिसम्बर को दो वर्षों के लिये कुछ विद्वानों की गोष्ठी हुई थी। यह गोष्ठी उपयोगी थी। परिभाषा के बनाने का निर्णय उपयोगी और आवश्यक कार्य है। यह कार्य कुछ घंटों में नहीं हो सकता है। हिन्दी भाषा में परिभाषा निर्णय का कार्य अब प्रारम्भ हुआ है। जबकि बंगला आदि भाषाओं का कार्य बहुत समय से चलता है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी भाषा भाषी विद्वान और सम्मेलन सर्व संग्रह की भावना से कार्य को अपने हाथों में लें।

कहने का तो हिन्दी भाषा और देव नागरी का प्रश्न शुद्ध राष्ट्रिय है परन्तु ...भाषण हुए उनमें से कुछ से यह आभास मिलता था कि इस को साम्प्रदायिक रूप दिया जा रहा है। ऐसे भाषणों में मौलिचन्द्र जी शर्मा का हम उल्लेखनीय मानते हैं। यह प्रश्न शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से विचारा जाय। हिन्दी भाषा को हमें विशाल बनाना है जब हम कहते हैं कि उर्दू भी हिन्दी की एक शैली है तो उर्दू से हमारा क्या विरोध है। अपने में से निकालने का रोग हिन्दु समाज में बहुत पुराना है इसी के कारण हमारा देश विभक्त हुआ है। हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि भाषा के क्षेत्र में यह रोग प्रविष्ट न हो। उदाहरण के लिये सभापति का जलूस निकालने से पूर्व एक सज्जन हमारे पास आये और बोले शास्त्री जी .जलूस के लिये हिन्दी शब्द क्या है .. मैंने कहा जलूस शब्द हिन्दी ही है। मेरे मित्र नरदेव जी शास्त्री ने जलूस के लिये समारोह शब्द बताया। परन्तु इस शब्द से पूरा भाव व्यक्त नहीं होता। युक्त प्रान्त के प्रधान मन्त्री प० गोविन्द वल्लभ जी पन्त ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा को विशाल बनाने और मानने पर बल दिया। जो ठीक ही है।

✦✦✦✦

आर्यजन क्या करें ?

(ले०—श्री प्रीतमलाल एम एस. सी. एल एल बी. एडवोकेट, अलीगढ़)

एक वर्ष से अधिक व्यतीत हो चुका जब हमारा प्यारा भारत देश स्वतंत्र हो गया, और हमारे सन्मुख सहसा प्रश्न उपस्थित हुआ कि अब आर्य जन क्या करें ? इस प्रश्न पर आर्य विद्वानों के विचार प्रगट हो चुके हैं और होंगे, मैं भी अपने विचार विचारार्थ प्रस्तुत करता हूं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने आदेश पत्र (वसीअतनामा) में ३ कार्यों के लिये उपदेश दिया है। १ वैदिक धर्म प्रचारार्थ उपदेशक उत्पन्न करना। २. वैदिकधर्म प्रचारार्थ साहित्य रचना। ३. दीन, हीन, अनाथ, विधवा को सहायता करना—दूसरे संक्षिप्त शब्दों में महर्षि ने आगे को उपदेश दिया कि तुम्हारा कार्य (व्यवहार) ऐसा हो जो जनता के मन और हृदय पर प्रभाव डालकर उनपर विजय पावे और अपने वशीभूत करले। मौलिक तथा साहित्यिक प्रचार मन पर और दीन हीन पर दया करना हृदय पर विजय प्राप्ति के साधन हैं।

इस आदेश के अनुसार कार्य करने के लिये वर्त्तमान परिस्थिति में आर्य जन के व्यवहारिक नियम निम्न प्रकार होने चाहिये—

१—अब आर्यजन की धारणा होनी चाहिये कि देश मे राज्य हमारा है। हम राज्य की मशीन के चमकते हुए पुरजे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि राज्य के कार्यों में सरकार का हाथ बटावे और सहयोग करें—अंग्रेजी राज्य में सरकार से तटस्थ रहकर अपनी खिचड़ी पृथक पकाने की नीति एक दम त्याग देनी चाहिये।

२—अनाथालय, विधवाश्रम, दलितोद्धार, मादक द्रव्यनिषेध जन्म जाति भेद निवारण, शिक्षा प्रचार, आदि सुधारक कार्यों में सरकार के साथ सहयोग करें। इनके लिये सरकार से आर्थिक सहायता लें, प्रचार करें और प्रत्येक अवसर पर ऐसा उत्साह और कार्यदक्षता दिखावें जिससे जनता का हृदय आर्यसमाज की ओर आकर्षित रहे और सरकार इन कार्यों के लिये अपना विश्वासपात्र बनाले—स्मरण रहे यह तबही हो सकेगा जब आर्य सदाचार और उत्साह से कार्य कर दिखावेंगे—

३—सार्वजनिक कार्यों में अधिक से अधिक भाग लिया जावे उदाहरणार्थ—गांव पचायत, टाउन एरिया समिति, चुंगी, जिलाबोर्ड, प्रांतीय ऐसेम्बली, कान्सिल आदि तथा शिक्षा विश्वविद्यालय आदि के सदस्य बनकर उनमें देश हित के लिये सेवा भाव से कार्य करें। जनता के मन और हृदय पर अपने व्यवहार से यह अंकित कर दें कि आर्य सदस्य त्यागी, तपस्वी, और परिश्रमी, सेवा भाव से कार्य करता है।

४—आर्यजन को अपनी कोई राजनैतिक संस्था अथवा पार्टी नहीं बनानी चाहिये—अपने सदाचार और उपकारी व्यवहार की शक्ति को पार्टी शक्ति से अधिक बलवती समझना चाहिये—

५—हिन्दी साहित्य की सेवा करने का विशेष अवसर है। आर्य संस्कृति, प्राचीन इतिहास, गणित, विज्ञान, न्याय, तर्क, आदि विषयों पर उत्तम २ ग्रन्थ रचकर विद्यार्थियों की पाठविधि तथा जनता के स्वाध्याय के लिये प्रकाशित करने से देश की सेवा होगी—इस ओर ध्यान देना परमावश्यक और उपयोगी है—

६—स्त्री शिक्षा में आर्य समाज पहिले से ही अग्रसर रहा है। परन्तु यह शिक्षा अधिकतर साहित्यिक और धार्मिक रही है—अब समाज जीवन के अन्य विभागों में भी कार्य कर ... में ... में ... कोष ... का इ...

७— ... तक अधि... ब्राह्मण धर्म ... क्षत्रिय धर्म तथा ... भाग लेना चाहिये ... हुए आर्य धर्म को कदापि न ... चाहिये—...सेना, समुद्री ... हवाई से- करते ... प्रबन्ध विभाग इत्यादि सबही कार्य करने चाहिये और आवश्यकता यह है कि यहां कार्य करते हुए हमारे जीवन और व्यवहार पर आर्य होने की मुहर सदैव ऊंची लगी रहे।

पाठकवृन्द ! इन पंक्तियों में अंकित शब्दों से आपने मेरे विचारों को समझ लिया होगा—बहस, शास्त्रार्थ, खण्डन आदि कार्यों से अधिक उपयोगी मार्ग हमारा नित्य प्रति का सदाचारी आर्य जीवन है जिसको व्यवहार में लाकर जनता के समक्ष रखने का आदेश आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने हमको किया है और परमात्मा की असीम कृपा से अब स्वतन्त्रभारत में हमको अपने धर्म और देश प्रेम के भावों से पूरित होकर सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है, यदि हमने अपने जीवन में उपरोक्त प्रकार से कार्य किया तो हमारा निश्चय है कि उससे आर्य समाज का मस्तिष्क बहुत ऊंचा उठेगा और वह समय दूर न होगा जब आर्य समाज संसार को आर्य बनाने का शुभ संकल्प कार्यरूप में परिवर्तित देखेगा—परमात्मा हमारी आशा और प्रार्थना पूर्ण करें—अस्तु

✦✦

हाईकोर्ट के जज

श्री प० रत्नाकर शास्त्री

म जेष्ठ बदी ५ • को कागरौल क जाट परिवार में शास्त्रीजी की प्रारम्भिक शि गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुई और यहीं उनका जन्म नाम बदल कर ...कर' रखा गया।

उस समय गुरुकुल में श्री प० भीम सेनजी शर्मा और श्री प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ अध्यापक थे। अत आप इन्हीं के प्रिय शिष्य बने। गुरुकुल में रह कर आपने व्याकरण और साहित्य का सम्यक अध्ययन किया। सिकन्दराबाद से आप अपने गुरुओं के साथ ज्वालापुर महाविद्यालय चले गये और वहा शास्त्री परीक्षा पास की। शास्त्री हो कर रत्नाकरजी ने आगरा कालिज से बी ए और एल एल० बी० पास किया। एक वर्ष एम० ए० प्रीवियस में भी पढते रहे। फिर डी ए. बी हाई स्कूल आगरा में कुछ दिन अध्यापक रह कर वकालत प्रारम्भ की। शास्त्रीजी की योग्यता और ईमानदारी से प्रसन्न रह कर उन्हें महाराज भरतपुर ने अपने वहाँ मजिस्ट्रेट (नाजिम) बनाया। आपने यह कार्य इतना तत्परता परिश्रम शीलता और ईमानदारी से किया कि सारे राज्य में भूरि भूरि प्रशंसा होने लगी। साथ ही आप आर्यसमाज की सेवा भी बडी तल्लीनता से करते रहे। अन्त में आप भरतपुर हाईकोर्ट के जज बनाए गए परन्तु स्वास्थ्य ने साथ न दिया, एक दम बीमारी ने घेर लिया और अनेक उपचार करने पर भी आप विकराल काल की दुष्ट दाढों से न बचाये जा सके। १९ सितम्बर १९४७ ई० को आगरा में शास्त्री जी का स्वर्गवास हो गया।

प० रत्नाकर शास्त्री बडे सरल, सौम्य और गम्भीर प्रकृति के विद्वान् थ। अभिमान तो उनके पास फटका भी न था। सन्ध्या हवन और स्वाध्याय के बिना वे एक दिन भी न रहते थे। उनमें आडम्बर पूर्ण शिष्टाचार न था, लल्लो चप्पो की बाते उनसे न आती थीं, इसी लिये कुछ लोग उन्हें कभी कभी शुद्ध वा रूखा आदमी तक कह देते थे। भरतपुर में व अधिक से अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुये। सब लोग भले प्रकार जानते थे कि शास्त्री जी सच्चे और पक्के आर्यसमाजी हैं। उन्हें किसी प्रकार प्रलोभन कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं कर सकता। आपके पिता जी भी आर्य थे और सबसे अधिक शास्त्री जी के जीवन पर कमवार ठाकुर माधवसिंह जी की शिक्षा दीक्षा तथा संगति का प्रभाव पडा। शास्त्री जी वैसे ही आदर्श आर्यसमाजी थे जिनकी खोज में आज आँखे इधर उधर तड़फती रहती हैं। अभी शास्त्री जी ने पेंशन न ली थी पेंशन लेकर वे सारा जीवन वैदिक धर्म की सेवा में लगाना चाहते थे परन्तु विधाता को कुछ और ही मजूर था।

शास्त्री जी के पुत्र प्रो० गुरुदत्त सिंह एम ए भी होनहार नवयुवक हैं हमें पूर्ण आशा है कि वे अपने पूज्य पिता का अनुगमन करते हुए समाज सेवा में सदैव संलग्न रहेंगे। प्रान्तीय सरकार ने सभा सचिव श्री चौ० चरणसिंह जी के निकट सम्बन्धी हैं।

हरिशङ्कर शर्मा

भारतीय सेना के प्रथम भारती सेनापति केरियप्पा

सरकारी तौर से ४ दिसम्बर को नई दिल्ली में घोषित किया गया था कि लेफ्टिनेण्ट जनरल श्री के० एम० केरियप्पा को भारतीय सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया गया है। इस सम्बन्ध में रक्षा विभाग की ओर से प्रकाशित विज्ञप्ति मे बताया गया था— "भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि पश्चिमीय कमाड के सेनापति लेफ्टिनेण्ट जनरल के० एम० केरियप्पा को जनरल सर एफ० आर० आर० बुचर के स्थान पर भारतीय सेना का स्टाफ चीफ और प्रधान सेनापति नियुक्त किया जाय। लेफ्टिनेण्ट जनरल केरियप्पा १५ जनवरी १९४९ से अपना नवीन पद सम्भाल लगे।

जनरल केरियप्पा भारत सेना के प्रथम भारतीय सेनापति होंगे। जनरल बुचर इस वर्ष के शुरू से प्रधान सेनापति बनाए गए थे।

जनरल केरियप्पा की उम्र ४८ वर्ष की है। भारतीय सेना में आप सबसे अधिक सीनियर अफसर हैं। आपका जन्म २ जनवरी १९०० को कुर्ग के मेरकारा नामक स्थान में हुआ था। मेरकारा के सेण्ट्रल हाई स्कूल तथा प्रेसीडेन्सी कालेज मद्रास में आपने शिक्षा प्राप्त की थी।

१९१९ में इन्दौर के फौजी कालेज में कमीशन प्राप्त करने के बाद आपको मैसोपोटामिया और वजीरिस्तान भेजा गया। १९३३ में आप प्रथम भारतीय अफसर थे जो क्वेटा के स्टाफ कालेज में भर्ती हुए थे १९३५ में आप सिंगापुर के बन्दरगाह का निरीक्षण करने गए और इसके बाद भूतपूर्व फौजियों की सेना के लिए आप संयुक्त प्रान्त के देहातों का दौरा करते रहे।

अप्रैल १९४१ से मार्च १९४२ तक आप १०वें भारतीय डिवीजन के साथ ईराक, सीरिया और ईरान में रहे। ईराक म आपने मेजर जनरल स्लिम के मातहत काम किया।

अप्रैल १९४२ में आप लेफ्टिनेंट कर्नल बनाए गए। मार्च १९४३ तक आप ७ वीं राजपूत रेजिमेंट के मशीन गन बटेलियन के कमाडर रहे। इस तरह आप प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने एक बटेलियन कमाड किया।

नवम्बर १९४४ में आप को सेना की पुन सगठन कमेटी का सदस्य नियुक्त गया। इस सिलसिले में आपने अमरीका व कैनाडा का दौरा किया। आपको अनेक उच्च अमरीकी अफसरों से मिलने का मौका मिला। सब कुछ अध्ययन करने के बाद आपने भारतीय सेना म शिक्षाकार्य के सम्बन्ध में अपनी सिफारिशें पेश कीं। उस समय आप ब्रिगेडियर थे और आप प्रथम भारतीय थ, जिन्हें अमरीका जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

प्रान्तीय संस्कृत शिक्षा-सुधार समिति काशी के महत्वपूर्ण निर्णय

१३ व १४ दिसम्बर १९४८ को काशी में माननीय शिक्षा सचिव श्री सम्पूर्णानन्दजी की अध्यक्षता में प्रान्तीय संस्कृत परीक्षा सुधार समिति का अधिवेशन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में प्रान्त भर से ८१ विशेष निमंत्रित एवं संस्थाओं द्वारा निर्वाचित सज्जनों ने भाग लिया। प्रान्त के गुरुकुलों से श्री प० शिवदयालुजी मंत्री गुरुकुल डौरेली मेरठ श्री वागीश्वरजी शास्त्री गुरुकुल कांगडी प० विश्वेश्वरदयालु सिद्धांत गुरुकुल वृन्दावन प० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम ए मेरठ प० हरिदत्त सप्ततीर्थ ज्वालापुर से तथा गुरुकुल अयोध्या एवं साधु आश्रम हरदुआगंज अलीगढ से भी दो विद्वान् पधारे थे

संस्कृत पाठशालाओं के वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना सर्व सम्मति से निश्चय किया गया। गणित भूगोल, इतिहास, राजनीति, समाज शास्त्र स्वास्थ विज्ञान आदि विषयों का समावेश करना निर्धारित किया गया।

प्रथमा मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य को क्रोमश सेकेंड्री हायर सेकेंड्री, बी ए तथा एम ए. के समकक्ष मानने तथा वर्तमान शास्त्री एवं आचार्यों की व्यावहारिक विषयों की परीक्षा देने की व्यवस्था करना भी निश्चित किया गया। संस्कृत के उपाध्यायों के वेतन में पर्याप्त वृद्धि करके अन्य स्कूल कॉलेजों के समान उनको वेतन देने की माग की गई।

प्रत्येक स्कूल स्कूल कॉलेज में संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाने तथा प्रान्त मे एक उच्च कोटि का संस्कृत विश्व विद्यालय बनाने का भी निश्चय किया गया।

संस्कृत विद्यालयों को सम्यक रूप से चलाने के लिये अधिक से अधिक धन बजट मे संस्कृत शिक्षा के लिये निधारित की गई। शिक्षा सचिव ने संस्कृत की उन्नति में प्रत्येक आवश्यक पग उठाने का आश्वासन दिया।

वनिता विवेक

महिला-समाज में मनोविज्ञान का महत्व

(लेखिका श्रीमती विज्ञान बाला जौहरी बी० ए० विदुषी)

आधुनिक युग के प्रवाद को देखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि महिला-समाज की शिक्षा में मनोविज्ञान को विशेष एवं महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जावे। देश को उन्नतिशील बनाने के लिए नई २ आयोजनाएँ हो रही हैं और विभिन्न प्रकार के साधन भी निकाले जा रहे हैं। अतएव देश की अमूल्य निधि स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली में भी सुधार

अनिवार्य है। देश और राष्ट्र को सुसंगठित एवं दृढ बनाने के लिए स्त्री पुरुष दोनों ही के मिश्रित उद्योग की आवश्यकता है और ऐसा तभी सम्भव है जब दोनों ही भली प्रकार सुशिक्षित हों। गृहका प्रबन्ध व सन्तान का लालन पालन स्त्रियों के हाथ में होने के कारण उनका उत्तरदायित्व और भी महान् हो जाता है। इसलिए यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि उनकी शिक्षा के विषय ऐसे हों जिनसे वे अपने दैनिक जीवन में अधिक से अधिक लाभ उठा सकें और गृह तथा देश दोनों ही की सेवा के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकें। इस दृष्टि कोण को सामने रखते हुए यह मानना पड़ता है कि गृह प्रबन्ध शिशु पालन, स्वास्थ्य आदि विषयों की तरह मनोविज्ञान को भी प्रधानता देनी चाहिए।

अब मनोविज्ञान क्या है, अन्य शास्त्रों से इसका क्या सम्बन्ध है और इसका क्षेत्र कहां तक समिति है इसे भी संक्षेप में जान लेना चाहिए।

मनोविज्ञान उस शास्त्र का नाम है जो मानसिक व्यापारों की क्रमबद्ध आलोचना करता है अर्थात् वह यह दिखलाने का प्रयत्न करता है कि मानसिक व्यापारों का वास्तविक स्वरूप क्या है, वे किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्द हैं, एवं मानसिक जीवन का उदय और विकास कैसे होता है। शिक्षण विज्ञान और शरीर विज्ञान ये दोनों मनोविज्ञान के साथ सीधा सम्पर्क रखते हैं। समाज शास्त्र इतिहासशास्त्र अर्थशास्त्र चिकित्सा, धर्मोपदेश विज्ञापन आदि के लिए भी मनोविज्ञान के सिद्धान्त बहुत लाभकारी प्रमाणित हुए हैं। अब यहाँ पर हमें अपने महिला समाज के लिए इसकी आवश्यकता और उपयोगिता सिद्ध करनी है।

मनोविज्ञान गृह जीवन को मधुरतम और सरस बनाने में यथेष्ट रूप से सहायक है। मानसिक वृत्तियों के अध्ययन से एक स्त्री अपने पथभ्रष्ट एवं दुराचारी पति को भी क्रमश सुमार्ग पर ला सकती है और अपने भारस्य जीवन को वहन करने कष्ट से बच सकती है। इसके अतिरिक्त भी घरेलू जीवन में बहुधा ऐसे अवसर आते हैं जब पारस्परिक विवाद से एवं मानसिक शान्ति भंग हो जाने से बड़ी विषम स्थिति हो जाती है। यदि स्त्रियां व्यवहार-कुशल हों मनोविज्ञान के नियमों से परिचित हों तो वे ऐसे अवसरों को आने ही न देंगी। आधुनिक काल में गृहशान्ति का अभाव अधिक मात्रा में दिखाई पड़ने लगा है। कारण यहहै कि स्त्रियोंमें समानाधिकार की प्रबलवृत्ति जागृत हो उठी है और पुरुषों से होड़ की चेष्टा में ईर्ष्या दम्भ मिथ्याभिमान स्वेच्छाचारिता आदि दुर्गुणों की वृद्धि हो रही है। फलस्वरूप वैवाहिक जीवन आशीर्वाद स्वरूप न हो कर अभिशाप में परिणत हो जाता है और भी नाना प्रकार की बुराइयां बढ़ती जाने का भय रहता है जैसे तलाक बहु विवाह आदि २। इन प्रथाओं के प्रचार से हमारी प्राचीन संस्कृति और गौरव का लोप हो जाने की आशंका है अत शिक्षा का ध्येय यही होना चाहिये कि अपने २ लक्ष्य को स्त्री पुरुष दोनों ही पूरा कर सकें।

दाम्पत्य जीवन में ही नहीं प्रत्युत सन्तान पालन में भी मनोविज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। बाल्यावस्था में माता द्वारा डाले गए संस्कार अमिट होते हैं उनका प्रभाव सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त रहता है ऐसी अवस्था में यदि माताओं को यह भली प्रकार विदित हो कि किस आयु में किस प्रकार के संस्कार अभीष्ट हैं और बच्चों के चरित्र पर उनका क्या और किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है तो वे अपने बच्चों का शिक्षण बहुत ही सुन्दर रीति से कर सकेंगी। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों से यह भी ज्ञान हो जाता है कि बच्चों को शिक्षा किस प्रकार दी जावे जो वह सुगमता से ग्रहण कर लें। इसी प्रकार एक मन्द बुद्धि बालक को कैसे तीव्र बुद्धि वाला बनाया जावे, तथा एक हठी बालक के स्वभाव को किस प्रकार ठीक किया जावे, बुरे व्यसनों में फंसे बालक को कैसे सुधारा जावे आदि बातों में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रयोग से बहुत ही सहायता मिलती है। देश की भावी सन्तान पर ही उसका गौरव निर्भर रहता है। यदि मातायें बचपन से ही उन्हें तैयार करने में पटु होंगी तो आगे चलकर वे ही राष्ट्र को दृढ़ और सुगठित बना सकेंगी। एक प्रकार माता का उत्तरदायित्व कितना बड़ा है यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है।

अन्य जनों के स्वभाव को समझ लेने पर ही उनके प्रति कर्तव्य करने में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। स्त्रियों को अपने गृह जीवन में सास श्वसुर तथा अन्य सम्बन्धियों के सम्पर्क में आना पड़ता है और सभी से हिलमिल कर रहने की आवश्यकता पड़ती है।

हर्ष की बात है कि दिन प्रति दिन मनोवैज्ञानिक शिक्षा की ओर सभी का ध्यान जा रहा है और स्कूल कालिजों में इस विषय का पठन पाठन कराया जा रहा है। आधुनिक काल के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को प्रयोग में लाए जाने की भी चेष्टाएँ हो रही हैं। फिर भी इसको और भी अधिक व्यापक बनाने एवं दैनिक जीवन में व्यवहार होने योग्य बनाने की आवश्यकता है। महिला समाज के लिए इसकी महत्ता और उपयोगिता सिद्ध हो ही चुकी है अत. आशा यही है कि उत्तरोत्तर मनोविज्ञान की शिक्षा को प्रोत्साहित किया जावेगा और स्त्रियों को मनोविज्ञान की शिक्षा समुचित रूप से दी जाने का प्रबन्ध किया जावेगा।

(मनोविज्ञान की महत्ता के वर्णन के साथ २ यदि उसके कुछ व्यवहारिक पहलू भी दिखाये जाते तो अधिक अच्छा होता। हम आशा करेंगे कि भविष्य में विदुषी लेखिका इस पर अवश्य अपने विचार प्रकट करेंगी—सम्पादक)

मद्यनिषेध

(ले०—श्री प० शिवशर्मा जी स०)

गतांक से आगे—

सुश्रुतकार भी कहते हैं कि—

मांसकामा. सुराकामा स्त्रीकामा साहसे रता. ।
मागधेयास्तेन भूयिष्ठ दृश्यन्ते राजयक्ष्मिण. ॥

सुश्रुत भाष्य, अ० डल्लनाचार्य का कथन ॥

अर्थात्—मांस, शराब, स्त्री और साहस-फौजदारी में [illegible] देश वाला बहुत लगे रहते हैं, अत वे राजयक्ष्मा रोग से [illegible] जाते हैं।

ज्ञात होता है कि सुश्रुतकार के समय में मगध देश वाली-विहारी मदिरा आदि निषिद्ध वस्तुओं का प्रयोग अधिक करते होंगे !! जिस प्रकार अजामिल मद्यादि का सेवन करके पछताया और इन कर्मों को पाप कर्म बतलाया, उसी प्रकार बलदेव जी भी पश्चात्ताप करते हैं—

धिगमर्षं तथा मद्यमतिमानमभीरुताम् ।
यैराविष्टेन सुमहन्मया पापमिदं कृतम् ॥ मार्कण्डेय पुराण।

अर्थात्—धिक्कार है क्रोध को, मद्य को और निडरपने को जिनके कारण मैंने यह महान् पाप कर डाला ॥ (सूतजी को मार दिया) अ० ६, श्लो० ३४ पृ० ५३ ॥

"स्त्रियं पान च वर्जयेत" ॥ व्यभिचार और मद्यपान त्याग दे ॥ कोटिल्य पान दुर्जन संसर्ग"। मनु भी यही कहते हैं ॥ अर्थशास्त्र, अ० १६, सू० २३ ॥

कलिकाल में होने वाले पापों को गिनाते हुए मद्य को भी गिनाया है—

'सब लोग मद्य मांसादि भक्षण करने वाले मिथ्या कपट से युक्त हो जायेंगे'। देवी भागवत, भाषा, स्क० ९, अ० ८, पृ० ६१६ ॥

को कुम्भीपाक नरक म गिरना लिखा है -"जो ब्राह्मण ा है और जो तृप्त मुद्रानिक होता है, वह कुम्भीपाक भागवत, स्कध ६, अ० ३८, पृ ७३३ ॥

क्षण' शब्द प्राय मनुष्य मात्र क लिये आता है। यहाँ तक है कि कृष्ण महाराज की रानियाँ भो*शराब पीने के कारण ,श्या बनीं ॥ देखो--देवी भागवत, स्कध ४, अ० २२। पृ०

त केवल इसलिये दर्शाई गई है कि जब बड़े से बड़े व्यक्ति की स्त्री ... कर्म के कुफल से नहीं बच सकती तो साधारण स्त्रियों की क्या गणना हो सकती है ? प्राय ग्रन्थों में, इस प्रकार क भयनक वाक्य, इसलिये वर्णन किये जाते हैं कि जिससे साधारण इस प्रकार के दुष्कर्मों से बचे रहें। पाप कर्म कोई बड़ा करे अथवा छोटा दण्ड अवश्य ही भोगेगा। "अश्यमेव भोक्तव्य, कृतकर्म शुभाशुभम् ।" अर्थात्—जैसी करनी वैसी अवश्य ही भरनी।

* हमको विश्वास नहीं कि श्री कृष्ण महाराज की स्त्रियों ने यह पाप कर्म किया हो। या बलदेव जी ने किया हो। लेखक ॥

हम पूर्व पन्नों में बता चुके हैं कि प्रत्येक प्रकार की शराब में ऐलकोहल Alcohol मिला रहता है। कदाचित् ऐलकोहल के गुण दोष बहुत से मनुष्यों को ज्ञात न हों, अत. हम गुण दोष वर्णन किये देते हैं—

Alcohol has a great affinity for water it cogulates protein and irritates and destroys cells It is therefore a protoplasmic poison

अर्थात्—ऐलकोहल पानी से अधिक आकर्षण रखता है, वह प्रोटीन जमा देता है और जीवाणु (शरीर के वे सूक्ष्म कण जो शरीर का पोषण करते हैं) को उत्तजित करता है और नष्ट भी कर देता है। अत यह एक वास्तविक विष है।

यह विष मद्य क साथ साथ शरीर में प्रवेश कर जाती है और भीतरी भाग में जाकर आमाशय, जिगर तिल्ली और हृदय आदि को अपने असली स्वरूप स हटा कर विकृत रूप बना देता है।

आगे चल कर प्राय सभी प्रकार के चिकित्सकों ने इस विष की निंदा की है, हम बतलेंगे। आप ऐसे ऐसे डक्टर और वैद्य हकीमों की सम्मतियां पढ़ेंगे जो सब देशों में चोटी के चिकित्सक विख्यात हैं। उपर्युक्त उद्धरणों से यह तो ज्ञात हो ही गया कि ऐलकोहल' एक प्रकार का विष है। यही विष किस किस शराब म कितना कितना रहता है, सो पढ़िये—

1 Whisky 40 P c ह्विस्की ४० प्रतिशत।

2 Rum Gin and strong Liquors 51 to 59 P c रम और जिन अथवा दूसरी मजबूत शराब ५१ से ५६।

3 Hocks, Burgundy about 9 to 13 P c हाक्स और बरगंडी लगभग ६ से १३ तक।

4 Brandy 40 to 50 P c ब्रांडी ४० से ५० तक।
5 Sherry Port madria, 18 to 22 p c.
6 Champagne, about 10 to 13 p c
7 Claret, 8 to 12 p c
8 Cinder, 6 to 13 p c
9 Ale and Porter about 3 to 7 p c
10 Beer, 2 5 to 3 5 p. c.
11 Konmiss and Ginger Beer, about 1 to p c materia medica p 142.

लन्दन में एक 'लैंकेट' सोसाइटी है, वह कहती है कि—"रसायन के तत्वों का मूल कारण बुद्धि है" यह सोसाइटी The highest medical authority in the world कहती है।

अब पाठक गण स्वय ही विचार करें कि जिस शराब में आधे से अधिक तक विष मिला हो, वह शरीर के प्रत्येक भाग को कितनी हानि पहुँचा सकती है ?

जिस वस्तु को, आपत्काल में भी पशु पक्षी भी नहीं पी सकते उसको सर्व श्रेष्ठ मनुष्य प्रयोग में लावे ! ससार के सभी मत बुद्धि की वृद्धि की याचना अपने अपने इष्ट देवों से करते हैं। यथा—

१—वैदिक धर्मी शिखा सूत्रधारी—"धियो यो न प्रचोदयात्" कहते हैं। अर्थात् हमारी बुद्धि को हे परमात्मन्! अच्छे कामों में लगा।

बाइबिल

२—हजरत सुलेमान ने बुद्धि का वरदान मांगा। वह सबसे अगले पिछलों से बड़ा हो गया।

१ राजा की पुस्तक, पर्व ३, आ० १२ ॥

कुरआन

३—वकुल् रब्बिज़िद्नी इल्म ॥ सू० त्वाहा, र० ७॥ और कहाए खुदा हमारी बुद्धि बढ़ा।

इस ही लिये वेद ने कहा—"सरस्वती सह धीभिरस्तु०" ऋ० ७।६५।१ १ अर्थात्—विद्या भी बुद्धि के साथ हो हो।

पुराण

४—सर्व चैतन्य रूपा तामाद्या च धीमहि।
बुद्धि यो न प्रचोदयात्।

देवी भागवत्, स्क० १, अ० १, श्लो० १ ॥

अर्थात्—सर्व चैतन्य रूप वाली सबसे मुख्य, विद्या का हम ध्यान करते हैं। वह विद्या हमारी बुद्धि को प्रेरित करे।

५—'बौद्ध' शब्द तो—"बुद्या निवर्त्तते स बौद्ध"। जो बुद्धि से निर्णय देनाकर्य वह बौद्ध है, बना है।

बुद्ध भगवान ने पाच वस्तुओं का निषेध करते हुए चौथी वस्तु मद्यनिषेध बताया है।

६—थियासफी में बुद्धि को Vehicle of Atma or spirit कहते हैं यह बुद्धि अमर तत्व है। अंग्रेजी म Immortal Triad कहते हैं।

थियासोफी पृ० ७०।

डा० लुई कोन पानी का इलाज करने वाला।

१—शराब जो, शराब अंगूर, कोको आदि उन चीजों क मुकाबला में उन वस्तुओं मे अधिक कठिनता से पचने वाली है, जो अपनी असली हालत म ठोस और चबाई जाने वाली है।

देखो नयाइल्म शिफाबख्शी पृ० १७४।

'The new science of Healing का अनुवाद।

२—शराब अंगूर और जौ व कोको निहायत ताकत देने वाली और अत्यन्त उपयोगी गिज़ा नहीं है। पृ० १६९। (उपर्युक्त पुस्तक)

३—शराब के परिणाम—'यहाँ के बाशिन्दे (अर्थात् कक) अधिकतर त्वचा के रोगों से अर्थात् फोड़े फुंसी और त्वमे में मुब्तला रहते हैं। लिंगेन्द्रिय के रोग सर्वव्यापी हैं। और कोढ़ भी उन्नति पर हैं। पृ० १८६

४—शराब इस कसरत से पीते हैं कि शराब के पपे बन जाते हैं। पस जिसमानी, शारीरिक निर्बलता और सुस्ती इसका कुदरती नतीजा है। शराबी की औलाद भी मस्तिष्क की निर्बलता वाली पाई जाती है।

उपर्युक्त पुस्तक पृ० २३१ (लुईकोनी)।

डा० लुईकोनी साहब ने अनेक स्थानों पर शराब की घोर निंदा की है। उनके व्याख्यानों से पता चलता है कि वे शराब को मनुष्यों का भाजन नहीं समझते। मनु जी के समान मनुष्यों से भिन्नों का समझते हैं।

होमियोपैथिक चिकित्सा और मद्यनिषेध

होमियोपैथिक चिकित्सा के डा० 'हनिमैन" Hahnemann विख्यात हैं। डा० हनीमैन Hahnemann जर्मन के सैक्सनी प्रान्त के एक ग्राम मैसन में सन् १७५५ ई० की १० अप्रैल को उत्पन्न हुए थे। मद्यनिषेध के विषय में हम उन्हीं डाक्टर महोदय के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं—

क्रमशः

शान्ति स्थापित होते ही हैदराबाद में लोक प्रिय सरकार की स्थापना

कम्युनिस्टों तथा संघियों को प्रधान मंत्री की चेतावनी

हैदराबाद, २६ दिसम्बर। हैदराबाद के पांच लाख नागरिकों के सामने भाषण करते हुए प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि हैदराबाद की जनता ही रियासत की समस्याओं को हल कर सकती है। यह जनता पर ही निर्भर है कि वह ऐसी हालतें पैदा करे कि रियासत में जल्दी से जल्दी जनप्रिय उत्तरदायी सरकार बन जाय।

फतह मैदान में नेहरू जी के भाषण के घंटों पहले से जनता इकट्ठी हो रही थी। जब नेहरू जी निजाम के महल के छज्जे पर बोलने आये, पुलिस बैंड ने 'जनमनगण' बजाया और निजाम के अंगरक्षकों ने सलामी दी। फौजी गवर्नर मेजर जनरल चौधरी ने जनता की ओर से नेहरू जी को हार पहनाया फतह मैदान के इतिहास में पहली बार वहाँ तिरंगा झंडा लहरा रहा था।

नेहरूजी ने कहा—लोग मुझसे पूछते हैं रियासत में कब तक उत्तरदायी सरकार बनेगी, फौजी गवर्नर का शासन कब तक चलेगा। मैं यह बता देना चाहता हूँ कि हिंद सरकार यह नहीं चाहती कि हैदराबाद में फौजी शासन जारी रहे जब कि बाकी देश में उत्तरदायी शासन चल रहा है।

जल्दबाजी गलत

लेकिन हैदराबाद के मसले बड़ी जिम्मेदारी के मसले हैं। जल्दबाजी से काम लेने से हालत सुधरने के बजाय बिगड़ जायगी। हम बहुत सावधान से फूंक फूंक कर कदम रखना है। रियासत में एक बार स्थायी रूप से शांति हो जाय और झगड़े का डर खत्म हो जाय तब हम इतमीनान से फौजी शासन खत्म करने के मसले पर विचार कर सकते हैं। रियासत को हिंद में शामिल करने का सवाल भी अभी हल नहीं किया जा सकता।

कम्युनिस्टों को चेतावनी

हैदराबाद के कम्युनिस्टों को चेतावनी देते हुए नेहरू जी ने कहा कि वे यह सपना न देखें कि मार जबरदस्ती और हिंसा के बल पर अपनी बात मनवा सकते है। अगर उन्होंने अपनी हिंसात्मक कारवाइयां जारी रखीं तो बरबाद कर दिये जायेंगे। इस सम्बन्ध में रियासतके शासक जो भी कदम उठायेंगे हिंद सरकार उनका साथ पूरी तरह से देगी।

आपने कहा—आप लोग खुद सोचें कि कम्युनिस्टों को कुछ इलाकों में कदम जमाने का मौका क्यों मिल गया? असल में जिन इलाकों में जागीरें या और तरह की सामन्ती प्रथाओं की वजह से किसान पिस रहा है वहाँ प्रतिक्रियावादियों को जमने का मौका मिलता है।

प्रधान मन्त्री ने बताया कि किसानों की हालत सुधारने के सुझाव पेश करने के लिये रियासत में एक कमेटी बनायी जायगी। जागीरों और जमींदारियों का खत्म होना जरूरी है, आज के जमाने में इनके लिए कोई जगह नहीं।

राज्य कांग्रेस की समस्या

राज्य कांग्रेस की फूट के सम्बन्ध में नेहरू जी ने कहा कि यह कितने बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हिंद को बरबाद कर डालनेवाली कमजोरियों को अब भी हम दूर नहीं कर सकते। राज्य कांग्रेस के लोग फिर उन्हीं कमजोरियों के शिकार हो रहे हैं।

वे लोग महात्मा गांधी द्वारा बताये गये रास्ते पर नहीं चलते। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का काम गांवों और देहातों में है। वे वहां जाकर जनता में सद्भावना और विश्वास पैदा करें। वे ऐसी स्थिति पैदा करें जब एक जाति दूसरे जाति वालों से डरना छोड़ दे और भाई भाई की तरह रहे।

राज्य कांग्रेस में काम करने वालों को जिम्मेदार आदमियों की तरह बरताव करना चाहिए। उन्हें गलत काम कर अपनी संस्था को कमजोर न बनाना चाहिए। जनता की सेवा के लिए उन्हें आपसी मतभेद दूर कर सेवाभाव से काम करना चाहिए और नौकरियों और चुनाव के झमेले में न पड़ना चाहिए।

चिकित्सा संबंधी शिक्षास्तर गिर

प्रांतीय सरकारें डाक्टरों को गांवों में करने की सुविधायें दें

—रा०

कलकत्ता, संयुक्त चिकित्सा सम्मेलन के अन्तिम अधिवेशन में भाषण करते हुए हिंद सरकार की स्वास्थ्य मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौर ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में चिकित्सा सबन्धी शिक्षण और शिक्षकों का स्तर नीचा नहीं होना चाहिये।

कुछ बड़े डाक्टर जिस नीति को अख्तियार कर रहे हैं उससे मुझे बहुत आशंका मालूम होरही है। इस नीति के पक्ष में दलील यह दी जाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों को सहायता नहीं दी जाती। आपने कहा कि यदि सहायता नहीं दी जाती तो यह हमारे लिये शर्म की बात है परन्तु अधकचरे डाक्टरों को निकाल कर समस्या हल करने का अर्थ है स्वय उद्देश्य को समाप्त करना। गरीब आदमी की ही क्यों इस दर्जे की चिकित्सा की जाय? प्रांतीय तथा रियासती सरकारों का यह कर्तव्य है कि वे डाक्टरों को उच्च वेतन, बढ़िया ग्रामीण निवास तथा छोटे-छोटे अस्पतालों की सुविधा दें जिसमें वे रह सकें और अपने बच्चों को किसी पास के शिक्षा केन्द्र में पढ़ने के लिये भेज सकें।

इसी प्रकार सेवा डाक्टरों का भी यह वे इस उत्तम पेशे में अमदू कर काम करें। सस्ती दवायें तथा निम्न शिक्षा स्तर आर्थिक दृष्टि से सस्ते नहीं होंगे। दूसरी ओर इस से डाक्टरी का स्तर तो नीचा हो ही जायगा एक अर्से के बाद राष्ट्र के स्वास्थ्य की भी दुर्दशा हो जायगी।

चिकित्सा करने की अनुमति प्राप्त करने के लिये कम से कम एम० बी० बी० एस० की उपाधि आवश्यक है। और इसको भारतीय चिकित्सा समिति (इंडियन मेडिकल कौंसिल) तथा भोर समिति ने स्वीकार किया है और इसकी सिफारिश भी की है।

स्वास्थ्य मंत्रिणी ने अन्त में कहा कि दूसरा खतरा जिससे हमें बचना है वह संकीर्ण प्रांतीयता है। विज्ञान के लिये किसी प्रकार की सीमा का बन्धन नहीं है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे शिक्षणालय और अनुसंधानशालायें उन्नति करें तो धर्म, सम्प्रदाय अथवा प्रांत का भेद किये बगैर हमें सर्वश्रेष्ठ की पुरुषों को लेना पड़ेगा।

गांधी हत्याकांड के अभियोग की सुनवाई समाप्त

एक महीने में फैसला सुनाया जायगा

लाल किला (दिल्ली), ३० दिसम्बर। पञ्चुरे के वकील श्री इनामदार की बहस आज खत्म हो गयी और इस के साथ ६ महीने बाद गांधी हत्याकांड के मुकदमे की सुनवायी भी समाप्त हो गयी। स्पेशल जज श्री आत्माचरण ने घोषणा की कि मैं एक महीने में फैसला सुनादूंगा।

२७ मई को मामला शुरू हुआ था और २१ जून को अभियुक्तों को चार्जशीट दी गयी थी। सबूत पक्ष के प्रमुख वकील श्री दफ्तरी ने अदालत के सामने षड़यन्त्र की पूरी योजना रखी और बताया कि हत्या में किस अभियुक्त ने क्या भाग लिया। २४ जून को शहादतों का रिकार्ड रखा जाना शुरू हुआ, सबूत पक्ष की गवाहियों की कार्यवाहियां में ६६६ फुलस्केप टाईपपेज में हुआ। मुखबिर बाड़गे का बयान ७६ पृष्ठों में था। सबूत पक्ष के १४३ गवाहों की शहादत हुई।

सबूत पक्ष ने ५५४ कागज पत्र पेश किये और सफाई पक्षने ११८, सबूतसे सबधित ८० वस्तुएँ पेश की गयी।

सर अकबर हैदरी का देहांत

नई दिल्ली, २९ दिसम्बर। आसाम के गवर्नर सर अकबर हैदरी का देहान्त कल अचानक मनीपुर रियासत की राजधानी इम्फाल से ३० मील दूर एक बंगले में रक्तचाप बढ़ जाने के फलस्वरूप हो गया। वे आज तीसरे पहर ४ बजे इम्फाल छावनी में दफना दिये गये।

सर अकबर हैदरी के अचानक देहान्त के समाचार से नयी दिल्ली में राजनीतिक और सरकारी क्षेत्र अचंभित रह गये। तुरन्त सभी सरकारी भवनों तथा विधान सभा के भवन के ऊपर के झंडे झुका दिए गए तथा उनके सम्मान में सभी सरकारी दफ्तर दो बजे के बाद बन्द कर दिये गये।

विधान सभा की बैठक भी १ बजे स्थगित कर दी गयी।

गृह विभाग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि स्व० सर अकबर हैदरी के उत्तराधिकारी की नियुक्ति होने तक आसाम हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री पी० एफ० खाज आसाम के अस्थायी गवर्नर नियुक्त किए गए हैं।

प्रमख

द्र शास्त्रीजी
(यू० पी० १४
। मुजफ्फरनगर
स. आर. लाइन की
रण करेंगे । उक्त
... प्रधानजी के स्वागत
...चित व्यवस्था करनी
चाहिये ।

१८ से २० फरवरी तक मा० प्रधानजी आ०... के उत्सव में सम्मिलित होंगे।

आवश्यक निश्चय

सभा की अन्तरंग ता० २६ दिसम्बर १६४८ क नि० स० २१ के अनुसार प्रान्त के समाजों को आदेश दिया जाता है कि समाजों का हिसाब-किताब का वर्ष १ अप्रैल से ३१ मार्च तक अर्थात् ३१ मार्च १६४६ को हिसाब किताब बंद किया जावे। और आर्य सभासदों की सूची १५ अप्रैल, सभा के लिए प्रतिनिधियों व समाजों के अधिकारियों का निर्वाचन १५ मई तक किया जाव और वार्षिक चित्र ३१ मई १६४६ तक सभा कार्यालय में भेजद।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

अर्द्ध शताब्दि समारोह आर्य समाज जिला बहराइच

२- १२ १६४- से २-- २-१६ ४६ तक सारे जिले में धर्म प्रचार वेद ध्वनि तथा मधुरुपदेश की गूंज

जिला के कोने २ में यज्ञ, वेद पाठ, सत्संग, उपदेश, भजन, मैजिक लालटेन प्रदर्शन व नये आर्य्य समाजों की स्थापना तथा वार्षिकोत्सव होंगे। १८ २ १६४६ से २८ २- १६ ४६ तक बहराइच में प्रदर्शनी का प्रबन्ध हो रहा है उसमें विराट् कविसम्मेलन आदि योजनायें रक्खी गई है। २०- २- १६४६ को बहराइच के मुख्य शताब्दि पण्डाल में महायज्ञ होगा।

२०- से २६- २ ४६ फरवरी तक कुमार परिषद, महिला सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, संस्कृत भाषा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, इतिहास सम्मेलन आदि के साथ उपदेश, भजन आर्य्य वीर दल रेली, नगर कीर्तन इत्यादि होंगे।

अर्द्ध शताब्दी के प्रधान राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत होंगे।

अर्द्ध शताब्दी में आर्य समाज के प्रमुख नेता, सनातन धर्म के प्रमुख विद्वान, संन्यासी, महात्मा, देश के सम्मानित नेता गण तथा प्रमुख कवि निमंत्रित किये गये हैं।

अर्द्ध शताब्दी में सम्मिलित होने वाले जिले के आर्यों को उचित है कि वह पीला साफा पहन कर आवें और ॐ चिन्ह (बैज) जो कार्यालय में मिल सकेगा लगावें। स्त्रियां पीली साडी में आने का कष्ट करें। —प्रधान

(पृष्ठ ८ का शेष)

शक्तियों पर विश्वास न कर उन्होने पहले ही अपने देश में शान्ति का प्रयत्न किया होता तो अधिक सफलता मिलती, और साम्राज्यवादी शक्तियों के बढ़ावे में आकर चीन इस तरह बरबाद न होता। आज स्वतंत्रता से सन्धि के लिए उद्यत मार्शल क्या चीन को कम्यूनिज्म के पंजे से बचा सकेंगे ? यह भविष्य ही बतायेगा।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

ब्र० रुद्रदेव जिसके लिये १००) का पारितोषिक घोषित किया गया था, जोकि लगभग ६ मास पहले खो गया था अब इन्दौर अनाथालय में मिल गया है। ७।१२।४८ का उसका पत्र म० वि० के मुख्याधिष्ठाता के नाम आया है। इसकी सूचना उसके घर पर भी तार द्वारा भेज दी गई है।

आर्यसमाज फर्रुखाबाद का ६८वां वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज फर्रुखाबाद का ६८वां वार्षिकोत्सव ता० १४, १५, १६, १७ जनवरी सन् १६४६ ई० तदनुसार मिती पूस सुदी १५ व माघ बदी १-२-३ दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार को बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। महोत्सव में पूज्य महात्मागण, साधु, सन्यासी और धुरन्धर विद्वान, व्याख्याता एवं संगीत विशारदों के पधारने की पूर्ण आशा है। इस अवसर पर जिला प्रचार सम्मेलन, नशानिषेध कान्फ्रेन्स, अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन और भी कई महत्व पूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। —मन्त्री

गु० कु० इन्द्रप्रस्थ

"श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" समीपस्थ ग्रामों में प्रभातफेरी करके कुलवासियों ने बड़े उत्साह पूर्वक मनाया। २३ दिसम्बर को ब्रह्मचारियों के साथ ग्रामीणों ने भी गुरुकुलीय क्रीड़ाओं तथा उत्सव में भाग लिया।

आर्य-जगत्

—आ० स० तिवायां का तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १३, १४, १५, १६ मार्च १६४६ दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुद्धवार को होना निश्चित हुआ है।

—आ० स० पालीगंज (पटना) का १०वां वार्षिकोत्सव ७, ८ और ६ जनवरी १६४९ को बड़े समारोह के साथ होने जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु, सन्यासी तथा कुशल भजनीक पधारेंगे।

—आ० स० निचलौल (गोरखपुर) की रजत जयन्ती पूर्व तिथियों में न होकर मिती फाल्गुण सुदी ११, ११, १४, १५ दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार तथा सोमवार ११, १२, १३ १४ मार्च को होगी।

—आर्यप्रतिनिधि सभा की अनुमति से फफूँद (इटावा) आर्यसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव ता. २, ३, ४, ५ फरवरी को बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायगा। जिसमें प० प्रकाशवीर शास्त्री, सत्यमित्रजी शास्त्री महोपदेशक, म० मकुन्दरामजी शर्मा म० मानसिंहजी शर्मा भजनोपदेशक अथा अन्य विद्वान् व सन्यासी, लक्ष्मीदेवीजी और कुछ गुरुकुल कन्यायें पधार रही हैं। कृपया पुस्तक विक्रेता महोदय भी पधारने की कृपा करें।

२४ दिसम्बर ४८ ई० दिन शुक्रवार को श्रीमान् मन्त्रीजी सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार फफूँद आर्य समाज मन्दिर में श्री श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। मन्त्री

—आर्यसमाज बड़ौत जिला मेरठ का वार्षिकोत्सव १८, १९ व २० फरवरी १६४६ को होना निश्चित हुआ है जिसमें गण्य मान्य आर्य नेता पधारेंगे।

निर्वाचन

आ० स० चौरी चौरा

श्री कुँवर सुदामासिंह जी प्रधान
,, म. रामप्रियवन आर्य मन्त्री
,, म. चन्दीप्रसाद जी (उप प्रधान)
,, रामचन्द्र जी (उप मन्त्री)
,, म. यमुना प्रसाद जी (कोषाध्यक्ष)

आ० स० लालगंज जि. रायबरेली

प्रधान—श्री प० श्याममनोहर त्रिपाठी
उपप्रधान ,, प० 'शव ग्गा जी द्विवेदी
प्रधानमन्त्री श्री रमेशचद्रजी आयुर्वेदालंकार
उपमन्त्री श्री म सत्यनारायण यादव
प्रचारमन्त्री सरदार आसासिंह जी
कोषाध्यक्ष श्री द्वारिका प्रसाद सेठ
निरीक्षक श्री राधेमोहन जी सेठ

बार्षिकोत्सव

गुरुकुल मज्जर दैनिक का वार्षिक मनोत्सव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी अमावस्या दय नन्दाब्द १२४ ता २६ २७ फरवरी सन् १६४६ ई० शनिवार, रविवार को समारोह से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आयपाठ विधि सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन अछूतोद्धार सम्मेलन क्षत्रिय सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों की योजना की गयी है।

हृदय की खोज

हिन्दी एवं आर्य ससार के प्रख्यात कलाकार 'कविरत्न' साहित्यालङ्कार श्री कुँवर हरिश्चन्द्रदेव वर्मा, 'चातक' जी के लिये एक विद्यालकृता, विशारद, विदुषी, किम्बा अँगरेजी शिक्षा प्राप्त, स्वस्थ, सुन्दर सगिनी की आवश्यकता है। पञ्जाबी, काश्मीरी या यू० पी० की ही २० से लेकर २४ वर्ष तक की शिक्षिता चाहिये। 'चातकजी' एक सुप्रसिद्ध समृद्ध क्षत्रिय परिवार के रत्न हैं। अट्ठतीस वसन्तों की माला पहिनने के प्रथम ही मधुकरी उनकी वीणा को चुरा ले गयी। टूटे हुये तारों से सगीत उत्पन्न करने वाली कोई साहित्यिक सांस्कृतिक विचारवाली देवी ही उनके इस शून्यता को भरने में सक्षम होगी। इसी दीपोत्सव पर प्रकाशित आर्यमित्र के श्रद्धाङ्क में ४१ पृष्ठ पर चातकजी का चित्र प्रकाशित हो चुका है। कहीं के भी सुयोग्य साथी को सादर भेंहता दी जायगी। पत्र व्यवहार करते समय विवाहेच्छुक देवियाँ अपना चित्र भी सम्पूर्ण विवरण के साथ भेजें।

नि० नारायण गोस्वामी वैद्य
शान्तिनिकेतन अतरौली
छिबरामऊ (फर्रुखाबाद)
श्री कुँ० हरिश्चन्द्रदेव वर्मा
'चातक' कविरत्न

"एक बाल विधवा की आवश्यकता"

एक युवक जो कि स्वस्थ, सुन्दर दृढ आर्य तथा आर्यवीर दल के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता रह चुके हैं। आयु २६ वर्ष है। अपनी निजी कमाईयों की एक प्रसिद्ध दुकान है, मासिक आय तीन सौ रुपये से अधिक है। जिनकी पहिली स्त्री का देहान्त हो चुका है। उनके लिए एक शिक्षित तथा गृहकार्य में चतुर बाल विधवा की आवश्यकता है सम्बन्ध जन्म गत जात पात को तोड़ कर आर्य-मात्र में हो सकेगी सम्बन्धाभिलाषी सज्जन निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें। ७८८ B. ८ ७

आचार्य भद्रसेन
संचालक जाति भेद निवारक
आर्य परिवार संघ अजमेर

हिंदू समाज को दो भागों में बांटने का प्रस्ताव

२५ फरवरी। भारतीय पार्लिया-मेंट दिल्ली में हिंदू कोड बिल पर बहस करते हुए। अनेक सदस्यों ने पक्ष और विपक्ष में मत प्रकट करते हुए बार-बार धर्म ग्रन्थों के उदाहरण दिये।

पंडित ठाकुरदास भार्गव ने डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की राय का हवाला देते हुए यह सुझाव पेश किया कि इस बिल को अगले आम चुनाव तक मुलतवी रक्खा जाय। आपने कहा कि हिंदू समाज हजारों वर्षों तक जीवित रह चुका है—क्या अब वह ६ महीने भी जीवित नहीं रह सकता? आपने कहा यदि यह सुझाव न माना जाय तो दूसरा सुझाव यह है कि बिल पर कानूनी तरीके से विचार करने के लिए दुबारा प्रवर समिति में भेजा जाय।

श्री भार्गव ने इस बात पर एत राज किया कि बिल ने पंजाब में चलित इस प्रथा को वैध स्वीकार नहीं किया जिसमें रोमनों की भ ति लोगों को पुत्रगोद लेने के स्थान पर जायदाद वसीयत करने का अधि-कार है और विवाह के लिए वर द्वारा वधू को यू ही दिया जाना ही आव-श्यक संस्कार माना जाता है इसी प्रकार बिलमें वर्तमान तलाक प्रथाओं को वैध न मानने पर आपने आपत्ति की और कहा कि इस समय तलाक के लिए पंचायत में फारिगखती देना ही काफी है यह बिल जिला अदालत या हाई कोर्ट तक जाना जरूरी है। डाक्टर अम्बेडकर दिल्ली के स्वर्ग में रहते हैं वे यह भूल गये हैं कि वे गरीबों के लिये विधान बना रहे हैं। इतना खर्चीला विधान बनाना एक अत्याचार है।

एक चेतावनी देते हुए श्री भार्गव ने कहा "यदि सरकार ने इस विधान को ... का जबर-दस्ती लादना चाहा तो पूरा हिन्दू समाज विद्रोह करेगा।"

श्री ... ने यह सुझाव ... किया कि हिंदू समाज को ... और ... दो भागों में बांट दिया जाय। रूढ़िवादियों में कायदा परम्परा के अनुसार शादी तथा ... का तलाक ... के अधिकार हों। आपने ... परिवार का समर्थन किया और कहा कि इससे सबको समान ... और आनंद मिलेगा।

हड़तालें गैरकानूनी

... दिल्ली, २४ फरवरी। पार्लियामेंट में एक बिल पास किया गया ... रेल, डाक, तार, विभाग, आर्डिनेन्स डिपो तथा फैक्ट-रियों इत्यादि आवश्यक उद्योगों में हड़तालें रोकने के लिये सरकार को विस्तृत अधिकार दिये गये हैं। यह बिल केवल ३१ मार्च १९५० तक लागू रहेगा।

इस बिल के अनुसार हड़तालों को गैर कानूनी घोषित किया गया है तथा हड़तालों में शामिल होने वालों को ६ मास कैद की सजा और २००) रु० जुर्माना किया जायगा गैर कानूनी हड़तालों को भड़काने या आर्थिक सहायता देने वालों को ३ वर्ष की कैद या एक हजार रुपया जुर्माना या दोनों सजायें एक साथ ही दी जा सकेंगी।

डा० सीताराम हाई कमिश्नर

लखनऊ। अधिकृत रूप से ज्ञात हुआ है कि डा० सीताराम पाकिस्तान में भारत के हाई कमि-श्नर नियुक्त कर दिये गये हैं। इस सम्बन्ध में किसी भी समय सरकारी घोषणा होने की आशा है।

श्री देवदास गांधी

नयी दिल्ली। राजनीतिक क्षेत्रों के कथनानुसार 'हिंदुस्तान टाइम्स' के प्रबन्ध सम्पादक, महात्मा गांधी जी के पुत्र श्री देवदास गांधी का मास्को में राजदूत के पद पर नियुक्त किया जा रहा है।

डा० सैयद हुसेन का निधन

काहिरा। मिस्र स्थित भारतीय राजदूत डाक्टर सैयद हुसेन का निधन २५ फरवरी को सहसा हृदय रोग के कारण होगया। आपने नवम्बर सन् १९४७ में काहिरा में अपना वर्तमान पद ग्रहण किया था। आप इससे पूर्व २५ वर्ष अमरीका में रहे। सबेरे ही उनका स्वास्थ्य कुछ खराब था।

डाक्टर हुसेन पंडित जवाहर लाल नेहरू के निकटतम परिचितों में थे।

सांप्रदायिक संस्थाओं पर रोक का मसविदा!

कराची, २३ फरवरी। पाकिस्तान पार्लमेंट में कल इस प्रस्ताव पर जोरदार बहस हुई कि जिन साम्प्रदायिक संस्थाओं का राजनी-तिक कार्य क्रम है उन पर रोक लगा दी जाय या नहीं।

प्रोफेसर राज कुमार चक्रवर्ती ने कहा कि ऐसी संस्थाओं का कार्य क्रम समाज या जाति विशेष के सांस्कृतिक, सामाजिक या शिक्षा सम्बन्धी अभ्युत्थान तक सीमित रहे। प्रोफेसर चक्रवर्ती ने कहा कि असली सवाल यह है कि पाकिस्तान केवल प्रजातांत्रिक राज्य होगा या गैर मज़-हबी राज्य होगा। अगर यह पहले किस्म का राज्य होगा तो यहां मुस-लमानों द्वारा मुसलमानों के लिए मुसलमानों का शासन हो सकता है।

प्रस्ताव का विरोध करते हुए यातायात मंत्री श्री अब्दुर्रबनिश्तर ने कहा कि इस प्रकार का कानून पास करने से कि (राजनीति में भाग लेने वाली संस्थाओं पर रोक लगा दी जाय) देश में फासिस्टवाद आ जायगा।

चीन में ३३०० भारतीय सिंध में २॥ लाख हिंदू—

नयी दिल्ली, २४ फरवरी। आज हिंद पार्लमेंट में शरणार्थी मन्त्री श्री मोहनलाल सक्सेना ने बताया कि सिंध में ढाई लाख हिंदू रह गये हैं। इनमें से बहुतों ने हिन्द आने की इच्छा प्रकट की। इसके लिए उपयुक्त जहाज व्यवस्था की जा रही है।

सरकार ने शरणार्थियों को "बेघर-बार" कहने का निश्चय किया है। आपने बताया कि पाकिस्तान में ४१३ व्यक्तियों को मुसलमान बनाया गया। पूछ ताछ से पता चला कि धर्म परिवर्तन जबरदस्ती नहीं किया गया है।

श्री बा० वी० केसकर ने बताया कि चीन के विभिन्न इलाकों में भारतीयों की संख्या इस प्रकार है.—पीकिंग १८, टींटसीन ४२, सिंगताओ ५३, हांगकांग लगभग २५००, शंघाई ५८२, और नानकिंग ९८। डा० केसकर ने कहा कि भारतीय छात्रों के लिए लंदन और एडिन बरा में दोनों जगह होस्टल बनवा दिये गये हैं, लंदन में एक और बनवाया जा रहा है जो भारतीयों के स्वागत भवन के रूपमें हो जायगा। महिला छात्रों के लिए भी एक होस्टल लाज (पट्टे) पर ले लिया गया है।

शरणार्थी मन्त्री ने कहा कि हिंदू सिख पाकिस्तान में कितनी संपत्ति छोड़ आये इसका तो अभी हिसाब नहीं बनाया जा सकता पर यहां से जो मुसलमान पाकिस्तान गये उनके बारे में ये आंकड़े मिले हैं—वे १,१० ७३० मकान छोड़ गये, १७,५४२ दुकान और ४३ लाख एकड़ जमीन छोड़ गये (पूर्वी पंजाब में)

दिल्ली में मुसलमान २९,००० मकान, १७,८०० एकड़ जमीन, पटि याला में ५०,९८६ मकान, देहाती इलाकों में, २०,४३१ तथा शहरी इलाके में ७,१०,०३८ एकड़ खेती के लायक जमीन छोड़ गये।

आम चुनाव १९५१ के बाद

नयी दिल्ली, २४ फरवरी। देश में आमचुनाव, जैसा कि अब तक माना जा रहा था, सन् १९५० में नहीं हो सकेंगे। इस मार्ग में मुख्य बाधा मतदाताओं की सूचियां तैयार करने की है। मतदाता सूचियां तैयार करने का कार्य यद्यपि प्रांतों में योजनानुसार हो रहा है, परन्तु रिया-सतों में इस कार्य की गति शिथिल है। इसलिए अगर मतदाता सूचियां बनाने की गति अपनी चरमसीमा पर भी पहुँच जाय तब भी सन् १९५० के अंत के पूर्व सूचियां हरगिज तैयार नहीं हो पायेंगी। और इस प्रकार चुनाव सन् १९५१ के पहले होना असम्भव प्राय्य है।

कानून मन्त्री ने डा अम्बेडकर कहा कि मैं नहीं समझता कि आम चुनाव सन् १९५१ के पहले हो भी सकेंगे।

इस बात की आम चर्चा है कि देश चूंकि आम जनगणना सन् १९५१ में होगी इसलिए आम चुनाव १९५२ में ही होंगी। जनगणना द्वारा जनसंख्या के सबसे ताजे आंकड़े उपलब्ध हो सकेंगे।

दम दम पर हमला

कलकत्ता, २६ फरवरी। १२ स-शस्त्र युवकों ने दम दम हवाई अड्डे, दम दम गोलाबारूद के कारखाने, एक ब्रिटिश इंजीनियरिंग वर्कशाप और दो थानों पर हमला किया। इन हमलों में ५ व्यक्ति मारे गये, जिनमें दो पुलिस कान्स्टेबिल थे। इसके अलावा ७ व्यक्ति घायल हुये और इंजीनियरिंग फर्म के दो अफसर, जो यूरोपियन थे लापता हैं।

इस सम्बन्ध में कल रात को पुलिसने बशीरहाट सबडि वीजन के, इटिंडागढ़ नामक स्थान में ११ युवकों को गिरफ्तार कर लिया। यह स्थान कलकत्ता से ४० मील दूर पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर है। इन्हें लेकर अब तक कुल ५० व्यक्ति गिरफ्तार हो चुके जिनमें वे ३ आक्रमणकारी भी हैं जो पुलिस की गोली से घायल हो गये थे। पुलिसने चार टैक्सियां भी पकड़ ली हैं जिन पर गोलियों के बहुत से निशान थे। एक खुली हुई ट्रक भी पकड़ी गयी है जिसमें एक रिवालवर भी था। इसके अतिरिक्त दो निजी कार, एक मोटर साइकिल और एक बिलकुल नया साइकिल भी पकड़ी गयी है। पुलिस ने १० हजार कारतूस कार्तूस ... राइफलें एक स्टेनगन, २० बम तथा बहुत से पर्चे भी बरा-मद कर लिये हैं। कलकत्ता स्थित ब्रिटिश डिप्टी हाई कमिश्नर द्वारा समाचार की पुष्टि हुई है कि दमदम स्थित जेसप फैक्टरी के ५ अफसर लापता हैं। इनमें तीन अंग्रेज हैं। एक पुलिस कॉन्स्टेबुल की सामान्य चोट से मृत्यु हो गया।

बशीरहट थाने पर हमला होनेके बाद ही २४ परगने के एक पुलिस दल से जब आक्रमण कारियों को रोकने के प्रयत्न पर गोलियाँ चलने में एक पुलिस इन्स्पेक्टर मारा गया।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजु०

आर्य्यमित्र

स्याम पतयो रयीणाम् । यजुर्वेद
हम ऐश्वर्य के स्वामी बनें

आर्यसमाज और 'संस्कृत'

भारतवर्ष में संस्कृत की उन्नति के लिये और देववाणी के प्रचार के लिये सबसे प्रथम और प्रबल आवाज उठाने वाले ऋषि दयानन्द थे। कमसे कम १५०० वर्ष के भारत के आधुनिक इतिहास में आर्य गौरव के आधारभूत प्राचीन संस्कृत साहित्य के, जो कि एक प्रकार से संसार की ज्ञान निधि है, के पुनरुद्धार की आवश्यकता को भी ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम, देश के सुख शान्ति और समुत्कर्ष के लिये प्रस्तुत किया।

शताब्दियों से आर्य जाति उस निधि को भूल चुकी था। संस्कृत के पठन पाठन में लगी जनता का अध्ययन और अध्यापन भी केवल नवीन टीका टिप्पणी के ग्रन्थों तक ही सीमित रह गया था और वह संस्कृत वाग्विलास से ऊपर उठकर 'मौलिक वैदिक साहित्य' के सांस्कृतिक विशुद्ध भावना को ग्रहण करने में असमर्थ होगई था। आर्य जाति ने, उन 'आकर' और मौलिक ग्रन्थों को भुला दिया था जो भारत के स्वर्ण युग की देन थे, जिन मूल ग्रन्थों के आधार पर ही पिछले भारतीय अन्धकार युग मे नवीन ग्रन्थों का विकास व निर्माण हुआ था।

ऋषि दयानन्द की सबसे बडी दूसरी देन, संस्कृत के सम्बन्ध में यह है कि आर्य संस्कृति का आधार भित्ति होने पर भी किसी समय भारत में संस्कृत के सार्वजनीन प्रचार होने पर भी, इस उत्तरकालीन अवनति युग में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन कुछ गिने चुने लोगो मे ही परिमित होगया था यह कहना मुश्किल है कि क्यो संस्कृत के रक्षको ने सार्वजनिक संस्कृत प्रचार के कल्याणकारी 'धर्म' और 'संस्कृति' की रक्षक प्रथा को त्याग कर केवल जन्मगत वर्ग विशेष में संस्कृत के अध्ययन को सीमित कर व्यक्ति, जाति, देश और धर्म के विनाशक मार्ग को ग्रहण किया। परिणाम यह हुआ कि इस प्रकार संस्कृत जनता की भाषा न रही और हमारी इस अक्षय निधि का द्वार देश की साधारण जनता के लिये बन्द होगये। ऋषि दयानन्द ने केवल साधारण संस्कृत का द्वार ही नहीं अपितु 'इमां वाचं कल्याणीं' की ईश्वरीय आज्ञा के आधार पर पवित्रतम वैदिक साहित्य का द्वार भी सबके लिये खोलदिया। आर्यसमाज का तीसरा नियम इसी घोषणा को स्पष्ट शब्दों में निर्देश करता है।

ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यसमाज का संस्कृत के विषय मे कितना अधिक उत्तरदायित्व है यह इससे स्पष्ट है कि श्रीमान्य स्वा० श्रद्धानन्द और स्वा० दर्शनानन्द आदि आर्यसमाज के नेताओं ने इसी उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के लिये संस्कृत की उन्नति का गुरुकुलों द्वारा प्रयत्न किया था।

अब देश की अवस्था बदल चुकी है। आर्यावर्त में स्वदेश वासियों का राज्य है, प्रसन्नता का विषय है कि हमारे प्रान्त की सरकार का इस उपयोगी कार्य की ओर ध्यान आकर्षित हुआ है। उसने संस्कृतोन्नति के लिये अपनी नीति की घोषणा करते हुये 'संस्कृत' की उन्नति की पूर्ति के लिये एक 'संयुक्त प्रांतीय संस्कृत पाठशाला पुनः संगठन' समिति का निर्माण किया है जिसके सभापति सुप्रसिद्ध डा० मङ्गलदेव भू० पू० प्रिंसिपल गवर्नमैन्ट संस्कृत कालेज बनारस तथा रजिस्ट्रार संस्कृत कालेज परीक्षा बनारस नियुक्त किये गये हैं। इस समिति मे महा महोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी डा० बाबूराम सक्सेना, पं० अलगूराम शास्त्री एम० एल० ए० जैसे कई प्रसिद्ध विद्वान सदस्य हैं। इस समिति का उद्देश्य व कर्तव्य प्रान्तभर में फैली लगभग १००० संस्कृतपाठशालाओं की आर्थिक प्रबन्ध तथा शिक्षा सम्बन्धी स्थिति को जाचकर उसे सुव्यवस्थित तथा उन्नत करना है। कमेटी ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। कमेटी द्वारा प्रेषित एक व्यापक प्रश्नावलि भी ९ नवम्बर के आर्य मित्र में प्रकाशित हो चुकी है।

इस समिति की स्थापना का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि बनारस के संस्कृत कालेज तथा उससे सम्बद्ध भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैले संस्कृत विद्यालयों को एक 'संस्कृत विश्वविद्यालय' के रूप में सुसंगठित कियाजावे। इस उद्देश्य की घोषणा मा० शिक्षामन्त्री तथा प्रधान मन्त्री भी अपने भाषणों में अनेक बार कर चुके हैं।

गतवर्ष व्यवस्थापिका सभा में भी बजट के अवसर पर इसका उल्लेख सरकार द्वारा किया जा चुका है।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि देश का सामान्य संस्कृतोन्नति की दृष्टि के अतिरिक्त आर्यसमाज की दृष्टि से भी इन घोषणाओं का विशेष महत्व है। वर्तमान भारतीय इतिहास में सरकार का यह प्रयत्न विशेष स्थान रखेगा। हमारे सामने सबसे बडा प्रश्न यह है कि इस उद्योग में आर्यसमाज अपने वेद प्रचार व संस्कृत प्रचार के महान उद्देश्य की दृष्टि से क्या लाभ उठा सकता है और उसका क्या कर्तव्य है?

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

आर्यपथिक पं० लेखरामजी का सन्देश

६ मार्च सन् १८९७ के सायंकाल छः बजे लाहौर में पं० लेखराम जी अपने मकान के बरामदे में लेखन कार्य कर रहे थे। कार्य समाप्ति पर थकान के कारण अङ्गड़ाई लेते समय वार करने का अवसर पाकर शुद्धि कराने के व्याज से आश्रय प्राप्त एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनके पेट में छुरी घुसेड दी।

इस घटना ने उन्हें धर्म के ऊपर अपने जीवन को न्योछावर कर देने वाले प्रथम श्रेणी के हुतात्मा आर्य महापुरुषों की अग्र पंक्ति में ला खडा किया। इस्लाम मतावलम्बियों में इस प्रकार छल से घात करने की प्रथा सदा से ही प्रचलित रही है अतः इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। इस्लाम के जन्मकाल से ही अपने विरोधियों को छलसे घात करने तथा धर्म प्रचार के सम्बन्ध मे आक्रामक सिद्धान्त स्वीकार किया गया है।

परन्तु आर्यपुरुषों के लिये महत्व की बात आर्यपथिक का अन्तिम सन्देश है आर्यभाइयों के पूछने पर 'धर्म के लिये मृत्यु को वरण करने वाले धर्मवीर का एक ही सन्देश था—'आर्यसमाज से लेख का कार्य बन्द नहीं होना चाहिये।'

उनकी मृत्यु के अनन्तर आर्यसमाज ने प्रचार का कार्य भी किया और 'लेख' का भी। खेद का विषय यह है कि 'उच्चकोटि के लेख का कार्य उतना न हुआ जितना इस संस्था की उद्देश्य सिद्धि के लिये होना चाहिये था पं० लेखरामजी के सन्देश को आर्यसमाज ठीक २ रूप में अनुगत नहीं कर सका—इस समय लेखन कार्य शून्य के बराबर है आर्यसमाज इसका फल भुगत रहा है, उसका प्रभाव क्षीण हो गया है।

आर्यपुरुष पं० लेखरामजी का स्मृति दिवस मनायेंगे यह प्रथा के रूप में इस बार उतनाया को मनाकर 'इतिश्री' न समझें और लेख

प्रकाशन, की ओर उनका ध्यान आकर्षित होसके तो यह 'वीर-दिवस' मनाना सफल होगा।

समय में परिवर्तन होगया है परन्तु 'लेख' और प्रचार का महत्व कम होने के स्थान में अत्यन्त अधिक प्रभावशाली होगया है। इस जनतन्त्र युगमे 'लेखप्रचार' की प्रबलता से राज्य परिवर्तित होते हैं—वैसे तो 'शस्त्र' 'शास्त्र' युद्ध में शास्त्र (लेख) सदा ही प्रबल रहा है।

आर्यसमाज की स्थिति यह है कि उसको वेदा अन्य संस्थाओं, कभी २ विरोधी संस्थाओं के व्याख्यानों के लिये व अन्य संस्थाओं के प्रचार व गुणगान के लिये, आर्यपुरुषों के समाचार पत्र अन्य संस्थाओं के प्रापैगैण्डा के लिये, चाहे वे आर्यसिद्धान्त के विरोध में ही क्यों न हों, प्रयुक्त किये जाते रहे हैं। तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे समय के लिये उपयुक्त, आर्यसमाज के पास न दैनिक समाचार पत्र है, न प्रबल प्रेस।

विचारणीय यह है कि यह सब 'लेखन का कार्य' कैसे हो जब कि आर्य पुरुषों में अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये उत्साह, धुन और दृष्टि-स्पष्टता क्षीण हो रही है।

सन् १८८० में प० लेखरामजी की वैदिक धर्म ज्ञान का तीव्र उत्कण्ठा उन्हें पेशावर से अजमेर खींच लेगई। ऋषि दयानन्द से मिलने के अनन्तर उन्होंने 'लेख-द्वारा प्रचार' का सन्देश ऋषि से ग्रहण किया। 'धर्मोपदेश' पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। 'तहजीब बुहारिन अहमदिया' के उत्तर में 'नुसखा-खफ्ते अहमदिया' और 'जहाद' क्रिश्चयन मत दर्पण आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं—हुतात्मा लेखराम के इस संदेश को कि 'स्थायी प्रचार के सर्वोत्तम साधन लेख प्रकाशन' को कैसे प्रगति दी जाय, यही प्रश्न है। इस प्रश्न के समाधान से आर्यसमाज के जीवन मरण का निर्णय होगा।

रेल यात्रा में असुविधा, ?

यह जान कर सन्तोष अनुभव किया जायगा कि कम-स-कम इस वर्ष रेल के किराया में और वृद्धि नहीं की जायगी। देश में करों में वृद्धि की बाढ़ सी आ रही है, जीवनोपयोगी सामान महंगा हो रहा है और मध्यम वर्ग के व्यक्ति की आय निरन्तर गिरती जा रही है।

गत वर्ष १४ जनवरी सन् १९-४८ को रेल के किरायों में बहुत वृद्धि इस आशा से की गई थी कि यात्रियों के लिये पर्याप्त सुविधा उत्पन्न हो जायगी, परन्तु यात्रा में विशेष सुविधा न होने के कारण किरायों में वृद्धि अखरती रही। २५ फर्वरी को भारत सरकार के रेलवे मन्त्री श्री एम. जी आयंगर ने रेलवे का बजट प्रस्तुत करते हुये अपने पूर्ववर्ती रेलवे सदस्य डा मथाई के समान ही अब किराया न बढाये जाने का आश्वासन दिया है। कहा गया है कि रेलवे उससे अधिक किराया वसूल नहीं करती जितना कि यातायात का व्यय होता है। परन्तु वस्तुतः स्थिति इसके विपरीत है। अर्थात् रेलवे विभाग यात्रियों को ठीक सुविधा जनक ढङ्ग से ले जाने और समान को ठीक समय पर पहुँचाने का भी पूरी तरह से सामर्थ्य नही रखता।

यदि नवीन कारखाने आदि के निर्माण व्यय तथा नवीन इन्जिनों के क्रय व निर्माण को निकाल दिया जावे तब भी बहुत आय शेष रह जाती है। नवीन बात यह भी ज्ञात हुई है कि 'राजाध्यक्ष पंच फैसले' के कारण रेलवे को ७३००० व्यक्तियों को काम में लगाना पडा है। इन सब व्ययों को निकाल देने के अनन्तर भी गत वर्ष की बचत से १५ करोड़ २३ लाख रुपया अधिक बचत का अनुमान किया जाता है। इतने पर भी जनता को यदि सुविधा न हुई तो सिवाय उनके दौर्भाग्य के अन्य क्या कहा जायगा।

हा, भविष्य में रेल यात्रा की सुविधा की आशा केवल इस कारण है कि चलते वर्ष में ६४ करोड़ का व्यय एञ्जिन और गाड़ियां आदि के बनाने के कार्य में व्यय किए जाने की योजना है। स्थिति यह है कि इस समय भारतीय रेलों में पुराने इंजिनों की संख्या १२६१ है और विदेशों से ८६३ एन्जिन और मगाये जा रहे हैं। इनमें से केवल ४२ इन्जिन ही अब तक प्राप्त हुये हैं, परन्तु आशा की जाती है कि इस वर्ष के अन्त तक ५०७ इन्जिन और आ जायेंगे। विदेशों से अधिक इन्जिन न मगाना पडे, इसलिये मिहीजाम (चित्तरजन) में एक बडा कारखाना खोला जा रहा है जो चालू होने पर १२० इन्जिन प्रति वर्ष निर्माण कर सकेगा। इसी प्रकार रेल के कारखानों में नवम्बर ४८ तक १७२ डब्बे बनाये जा चुके हैं और २७२ डब्बे बनाये जा रहे हैं। ३१ मार्च ४९ तक ४८५ नये डिब्बे और अधिक हो जायगे। गत वर्ष ३६०० डब्बों के लिये आर्डर दिये जा सके थे जिनमें से २३४६ गाडियां प्राप्त हो गई हैं।

यात्रियों के नवीन श्रेणी विभाजन से भी कुछ लाभ नही हुआ है। सैकण्ड क्लास जो वस्तुतः इण्टर क्लास है, में स्थान की कमी हो गई है। स्थान के लिहाज से उसकी स्थिति और भी बिगड़ गई है और तीसरे दर्जे के यात्रियों को कोई विशेष सुविधा प्राप्त नहीं हुई है। यद्यपि रेलवे की आय का वे ही मुख्य साधन हैं। यदि तीसरे दर्जे के यात्रियों को सुविधा और आराम मिलने लगे तो उसका सभी श्रेणियों के यात्रियों पर प्रभाव होगा।

भारत को जनता अत्यन्त निर्धन है। अतः योरोपियन देशों को रेलवे के किरायों से तुलना करना सर्वथा असगत है। पाश्चमी देशों के जन साधारण और भारतीय जनता की आय में आकाश पाताल का अन्तर है।

इस सम्बन्ध में भारतीय पार्लेयामैण्ट में जो अङ्क दिये हैं उनसे ज्ञात होता है कि १५ करोड २३ लाख की अधिक बचत हुई है।

यदि उक्त सब योजनायें सफल हो गई और रेल के यात्रियों को समय की बचत, यात्रा को सुविधा, आराम प्राप्त हुआ तो रेलवे के किराये के बढ़ने से उत्पन्न असन्तोष कम हो जायगा।

गोरखपुर के आर्यपुरुषों का उत्साह

राजगुरु जी का प्रान्त भ्रमण

आ० प्र० सभा के प्रधान राजगुरु प० धुरेन्द्रशास्त्री जी प्रान्तभर में भ्रमण करने में सलग्न रहे। पिछले दिनों वे और श्री मदनमोहन जी सेठ बहराइच आ० स की जयन्ती और आ०स० गोरखपुर की शताब्दी में सम्मिलित हुये थे। आपकी उपस्थिति से आर्यपुरुषों में नवचेतना तथा उत्साह का सञ्चार हुआ। गोरखपुर में २६ ता० को श्री राजगुरु जी के २० मिनट के व्याख्यान के, अपील के ५ मिन्ट के अन्दर ही दैनिक आर्यमित्र के ३०० शेयर ७५००) के प्राप्त हुये। आर्यसमाज ने १०० शेयर लिये, बा. होतीलालजी इञ्जिनियर ने ४० शेयर। गोरखपुर के आर्यपुरुषों का उत्साह सराहनीय है।

गोरखधन्धा

भारत का सशयात्मक आर्थिक नीति

गत २५ वर्षों से भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि उसके नेता एक ही समय में परस्पर विरोधी घोषणायें कर देते हैं। नेताओं में वक्तव्य देने की प्रथा अब बीमारी का रूप धारण कर गई है। इनका हानिकारक परिणाम देश को भुगतना पड़ रहा है। इस परस्पर विरोधी आर्थिक घोषणाओं के कारण जन समुदाय ठीक ठीक रूप में प्रबुद्ध व जागृत नहीं हो पाता।

अभी गत २३ फरवरी को इस प्रकार की दो विरोधी घोषणायें हुईं। कांग्रेस के प्रधान डा पट्टाभि सीतारमैया ने अकोला में कहा कि जनता को ५ वर्ष के अन्दर २ एक ऐसी रक्तहीन समाजवादी क्रान्ति के लिये तैयार रहना चाहिए जिससे देश में 'वर्ग विहीन' समाज स्थापित होजायगा। आर्थिक दृष्टिसे अमीर गरीब का भेद मिट जायगा, सब समान रहेंगे।

कांग्रेस ने भी अपने जयपुर के अधिवेशन में भी इसी उद्देश्य की घोषणा की थी। अभी अभी १२ फरवरी को प० जवाहिरलाल नेहरू प्रधान मन्त्री ने अहमदाबाद में म्यूनिसिपैलिटी के अभिनन्दन के अवसर पर वर्ग विहीन सामाजिक प्रजातन्त्र स्थापना की बात को दोहराया है। श्रममन्त्री श्री जगजीवन रामजी ने पटना यूनिवर्सिटी में 'श्रम व समाज हितचिन्तक सभा में वर्गविहीन समाजव्यवस्था के 'कार्ल मार्क्स' के कम्यूनिज्म के सिद्धान्त को ही सम्पुष्ट किया है।

दूसरी ओर 'मद्रास चैम्बर्स आफ कामर्स' में २२ फरवरी को अभिनन्दनपत्र के उत्तर में श्री पटेल ने घोषणा की 'मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ और इसे आप निश्चित सत्य समझें कि सरकार इस समय व्यवसायों के राष्ट्रीयकरण में सर्वथा असमर्थ है।

इसी प्रकार एक ओर प्रधानमन्त्री प० नेहरूजी की घोषणा है कि व्यवसायोंका राष्ट्रीयकरण न केवल गवर्नमेंट की नीति का ही परिणाम है प्रत्युत अन्तर्राष्ट्रीय बाह्य परिस्थितियों से बाधित होकर भी किया जाना अनिवार्य है। दूसरी ओर गवर्नरजनरल श्री राजगोपालाचार्य ने व्यवसायों के राष्ट्रीयकरण किये जाने की आशंका को दूर कर देने का विश्वास दिलाया गया है।

२४ जनवरी को व्यवसाय मन्त्री श्री डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने देहली में 'केन्द्रीय व्यवसाय परामर्शदात्री सभा' में घोषणा की है कि १० वर्ष तक व्यवसायों के राष्ट्रीयकरण किये जाने की सम्भावना नहीं है।

इस गोरखधन्धा से देश के नेताओं व शासनकर्ताओं की घोषणा से जनताको

(शेष पृष्ठ १५ में)

आर्य समाज की दूरदर्शिता

आर्य पथिक का महान् बलिदान

[प० बिहारीलाल शास्त्री विद्यावाचस्पति]

भारत की सारी सस्थाओ मे एक आर्यसमाज ही ऐसी सस्था है जिसकी बात आज तक कभी पीछे नहीं लौटी। बड़े बड़े नेता और विश्ववन्द्य महात्माओ के प्रोग्राम पिछड गये, प्रस्ताव वापिस लिये गये मगर हमारे ऋषि ने जो कहा उसकी ओर, देर सबेर भले ही हुई हो परन्तु जनता को आना ही पडा।

सन् २३ में अमर शहीद पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि यज्ञ आरभ किया तो कॉग्रसी नेताओ ने भरसक विरोध किया, तथा कथित राष्ट्रवादी मुसलिम नेताओ ने तो शुद्धि आन्दोलन को अग्रजो का प्रेरित आन्दोलन तक बताने की नीचता की। यदि सब हिन्दू एक मत होकर इस आन्दोलन को चलाते तो आज कई करोड मुसलमान, हिन्दू राष्ट्र में मिल जाते और पाकिस्तान फिर शायद ही बन पाता। राष्ट्रीयता के गलत मार्ग पर दौड लगाने वाले नेताओ के व्यामोह ने हिन्दू जाति को तब भी पथभ्रष्ट बनाये रक्खा।

ईश्वर को धन्यवाद है कि आज इतने दिन बाद कॉग्रसी नेताओं का भी विचार बदलने लगा है। पूरी और स्पष्ट बात तो अब भी नही कहते, पर गोल गोल कुछ कहने अवश्य लगे है।

माननीय राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास जी टडन एक स्पष्ट वादी निर्भीक सत्यग्राही नेता है। आप अब यह अनुभव कर रहे है कि मुसलमानो को अपनी विदेशी सभ्यता और सस्कृति छोडकर विशुद्ध भारतीय सस्कृति और सभ्यता को अपनाना चाहिये। श्री टडन जी के इस उपदेश से मियॉ मडली में खलबली मच रही है। जमैयतुल उलेमा के कर्णधारो के हृदय पर यह उपदेश गरमतेल की बूँदो के समान गिरता है। किसी भी युक्ति से श्री टडन जी के मतका खंडन तो कर नही पाते, क्रोधमे अनाप शनाप बक जाते है। (देखो मदीने के लेख)। मगर यही बात तो आर्यसमाज वर्षों से कह रहा है। शुद्धि आन्दोलन भी तो इसीलिये था। पर आंखे जम जम और गगाको एक देखने वालोने मानी आर्यसमाज की बात ?

अब भी श्री टडन जी बात तो ठीक कहते है, रोग को अनुभव करते है, मगर रोग के मूल कारण को नही छूना चाहते। वह कारण है इस्लाम।

इस्लाम मे राष्ट्रीयता नाम की वस्तु कुछ भी नही है। एक मुसलमान का न कोई देश है और न देशबन्धु। जब तक किसी देशके निवासी मुसलमानो के जिम्मी (मुसलमानो के आधीन) न हो जायें, तबतक जिहाद (सघर्ष) करना मुसलमानो का कर्तव्य है। मुसलमानो का केन्द्र है-मक्का। देश है अरब। पाच वक्त उधरको मुख करके ध्यान करने वाले मुसलमान अपनी मातृभूमि का महत्व क्या जानें। मुसलमान बनते ही अपने पुरखाओं को काफिर बताकर मनुष्य अरबी पुरखाओ की अपने को सतान समझने लगता है। यदु और पुरु की सतानें आज इब्राहीम और इजहाक की औलाद बनने मे गर्व अनुभव कर रही है। इस्लाम मजहब में यह विशेषता है कि उसके साथ अरबी कुल, सम्बन्ध और सभ्यता भी चिपट जाती है।

इसलिये साढे चार करोड मुसलमानो को अराष्ट्रीय भावना से बचाने का मार्ग एकही है कि उनको किसी भारतीय धर्म मे दीक्षित किया जाय। कमसे कम कुरान जैसी कट्टर पुस्तक से तो दूर ही किया जाय। धर्मवीर प० लेखराम जीने इसी उद्देश्य से कुरानकी तर्क पूर्ण आलोचना की थी। और अत मे मतान्ध मुसलमान की छुरी के वह शिकार हुए। उस समय यह घटना केवल साम्प्रदायिक समझी गयी थी। परन्तु आज इसका राष्ट्रीय महत्व ज्ञात होता है। यदि धर्मवीर जी ने उस उस समय मिर्जा कादयानी के प्रचार को तर्क से न रोका होता तो आज पूर्वी पजाब में भी मुसलमानों की सख्या बढ़ी होती और वह होता पाकिस्तान का भाग।

आर्य समाज अपने धर्म प्रचार में लोभ लालच, या दबाव का आश्रय नही लेता और न अपने विरोधी के प्रति घृणा फैलाता है। केवल उसके विचारो को तर्क से बदलना यही आर्यसमाज की कार्यविधि रही है। गम्भीरतर्कवाद से आज तक आर्य समाज ने लाखो मनुष्यो को बदला है। आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने कष्ट सहे, मार खायी, जेल गए, छुरियो और गोलियो के शिकार बने परन्तु कभी भी अपने विरोधी के प्रति मनमे मैल न आने दिया। हॉ, विरोधी के प्रति भी प्रभु से उसके विचार बदलने की ही प्रार्थना सदा की है। विचार बदलने का दूसरा नाम शुद्धि है। अराष्ट्रीय, सकीर्ण, हिसात्मक मलिन विचार दूर कर विश्वप्रेम की भावना भरना ही आर्यसमाज का ध्येय रहा है। माननीय श्री टंडन जी भी मुसलमान भाइयो की अराष्ट्रीयभावना बदलना चाहते है, और हम भी सत्तर वर्ष से यही यत्न कर रहे है। यदि हिंदुओ ने सकीर्णता छोड दी होती तो करोडो भाई आज शुद्धि से दीक्षित हुये होते। इस लिये हम आर्य समाजियों को तो दो ओर शुद्धि चक्र चलाना होता है। हिंदुओं के संकीर्ण जात पॉत के विचारों की शुद्धि, और मुसलमानों की अराष्ट्रीय धर्म विश्वासो की शुद्धि। राष्ट्र के हिंदुओ को इस विषय मे आर्य समाज की पूरी सहायता करनी चाहिये।

मुसलमान भाइयों से भी हमारा नम्र निवेदन है कि यह तर्क युग है तुर्क युग नहीं। अत. तलवार को छोड़कर धार्मिक विषय मे तर्क से काम लें। बुद्धि सगत बात से हमे समझाये और हम से भी समझें। सत्य का अन्वेषण होता रहना चाहिये। सत्य ही सब कुछ है। प्रभु का चमत्कार है। सत्य ने हमारे हुतात्माओ को अमर बना दिया है।

"सत्यमेव जयते नानृतम्"

हिन्दूकोड बिल

[श्री डा० राधाविनोद पाल, पूर्व जज अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, टोकियो]

ससारव्यापी पुनर्निर्माण युग प्रवृत्त हो रहा है, इस बात को दृष्टि में रखतेहुये हिन्दुओ के लिये बनाया जानेवाला यह कानून कुछ समय तक प्रतीक्षा कर सकता है। इस कानून के अवश्यम्भावी परिणामो को कदापि दृष्टि से ओझल न करना चाहिये और यह ध्यानपूर्वक विचारना चाहिये कि किस प्रकार और कहातक विशेष समाज कि जिससे इसका सम्बन्ध है अवश्यम्भावी परिणामों को स्वीकार करने के लिये इच्छुक है कि जो इस कानून के परिवर्तन से होना सम्भव है। और यह भी विचारणीय है कि कहा तक इस कानूनी परिवर्तन को सम्बद्ध समाज चाहता है और समस्त राष्ट्र के लिये वह कहातक उपयोगी होना सम्भव है, और कहा तक समस्त राष्ट्र के लिये वह आवश्यक एव अभिलषणीय है। मुझे अन्य समाजों में इस विषय में विश्वास नहीं है कि वह क्या अकारण ही हिन्दुसमाज के प्रति अनावश्यक उपकार प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने के लिये उत्सुक रहते हैं और क्या सदा हिन्दुसमाज के प्रति कुछ न कुछ उपकार करने के लिये विशेष आग्रह प्रदर्शित करने के लिये तैयार रहते है। हिन्दू जाति को अधिकतर अवसरो पर एक अनाथ बालक का ही पात्र न बनाया जाना चाहिये।

किसी मानव समाज मे कानून शास्त्र का विकास शताब्दियों की परम्परागत बुद्धि वैभव का परिणाम ही होता है। सम्भव है कि यह विकास ससार की सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमत्ता का स्वरूप न भी हो तथापि यह तो सत्य ही है कि वह उस विशिष्ट समाज का बुद्धिविकास का परिणाम अवश्य ही है। व्यक्तिगत रूप से मैं तो यह कभी पसन्द न करूँगा कि किसी बाह्य समाज या व्यक्ति की श्रेष्ठबुद्धि या उसके प्रभाव को किसी अन्य समाज के बुद्धिविकास परिणाम के ऊपर बलात् लादा जाय। इस प्रकार के सर्वाधिक बुद्धिमान लोगो की दूरदर्शिता हमारे लिये पर्याप्त रूपसे हितकर होना सम्भव नही है।

जो आज हमारे लिये एक नवीन दायभाग के कानून को बनाने के लिये उतारू हो रहे हैं, उनको हमारी वर्तमानकालीन विविध आवश्यकताओ और विशेषताओं को भी दृष्टि मे रखना चाहिये। आवश्यक अनुसन्धान कि जो इस प्रकार के आमूल परिवर्तन का मूलाधार है, करने का कोई प्रयास ही नहीं किया गया है।

जबतक हिन्दुओं मे वसीयत करने का अधिकार प्रचलित है, तब तक इस परिवर्तित कानून से ऐसी भयकर दुरवस्था का समावेश सम्भव है कि जो प्रस्तावित कानून के प्रयोजन को ही नष्ट कर देगा। यदि सम्बद्ध समाज के मस्तिष्क का अपेक्षित विकास नहीं हुआ है कि जिसमे स्वीकृत परिवर्तन समझा जा सके और तदनुसार व्यवहार मे भी लाया जासके तो व्यक्ति स्वेच्छा पूर्वक इस प्रकार से वसीयत

(शेष पृष्ठ १२ मे)

वेद-वीथी

अन्तर्यामी भगवान्

[स्वामी वेदानन्दतीर्थ,]

ओ३म् न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या
चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥
ऋ० १०। ८२। ७

जैसे (नीहारेण) कुहरे के समान अन्धकार से (प्रावृता) अत्यन्त ढके हुए (जल्प्या) वाद विवाद में तत्पर (असुतृप) प्राणपोषण परायण (च) और (उक्थशास उत्तम उपदेश देने वाले किन्तु अनुष्ठानरहित मनुष्य (चरन्ति विचरते हैं अर्थात् ब्रह्मज्ञान रहित रहते हैं वैसे ही आचरण करते हुए तुम भी (तम्) उसको (न) नहीं जानते हो (य) जिसने (इमा) इन सब लोकों को (जजान) उत्पन्न किया है। वह तुमसे (अन्यत्) भिन्न और (युष्माकम्) तुम्हारा (अन्तरम्) अन्दर रहने वाला (बभूव) है।

मन्त्र में दो तत्त्वों का उपदेश है (१) भगवान् सबके भीतर रहता हुआ भी सबसे अन्य' भिन्न है। उसकी अज्ञेयता का कारण यही उसका अन्तर्यामित्व है। (२) केवल शास्त्रचर्चा करने से भगवान् का ज्ञान नहीं हो सकता।

इस मन्त्र में भगवान् की ही चर्चा है अन्य की नहीं, इस बात के बताने के लिए 'य इमा जजान [जिसने इन सब को उत्पन्न किया है] कहा है।

भाव यह कि सर्वोत्पादक भगवान् सृष्ट पदार्थों से तो पृथक् है ही, तुम चेतनों से भी पृथक् है। 'अन्यत्' पद का यही स्वारस्य है' इसके अतिरिक्त अन्यत् पद का सा[र्थक्य] नहीं हो सकता। संसार में देखा जाता है कि निर्माता = बनाने वाला निर्मीयमाण = बनाई जाती हुई वस्तु से पृथक् स्थान में होता है। क्या इस सब सृष्टि का निर्माण करने वाला भगवान् इस सृष्टि से कहीं किसी अन्य स्थान में रहता है? इस आशङ्का का समाधान मन्त्र में इस प्रकार किया गया है कि वह युष्माकमन्तरं बभूव वह केवल तुम से पृथक् ही है [किन्तु] हुआ तुम्हारे अन्दर भी है अर्थात् जहां तुम रहते हो, वहां तुम्हारे भीतर उसका निवास है।

भगवान् इस जगत् में इन सबके साथ [रहता] है इस बात को बहुत सुन्दर शब्दों में ऋग्वेद [१। १५४। ३] में कहा गया है —

य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभि ॥

जिस अकेले ही ने इस विशाल [विस्तृत] तथा सधस्थ = साथ रहने वाले समान स्थान में रहने वाले जगत् को सत्व रजस् तमस्—इन तीनों से बनाया है।

प्रकृत मन्त्र का जजान [उत्पन्न किया] और इस मन्त्र का 'विममे' विविध प्रकार से निर्माण किया बनाया] ये दोनों पद समानार्थक हैं। भगवान् को खोजना हो तो इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है वह तुम्हारा सधस्थ है। सधस्थ ही नहीं प्रत्युत तुम्हारा अन्तर है। भगवान् की इस सधस्थता तथा अन्तरता को यजुर्वेद ३२। ८ में बहुत सुन्दर रीति से व्यक्त किया गया है—

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहासद् यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वं स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु॥

जिसमें यह विश्व संसार एकनीड-एक स्थान-समान स्थान वाला होता है, उस गुहावासी को वेन मेधावी ध्यानी ही देख पाता है। उसी में यह समस्त ब्रह्माण्ड विलीन होता और उसी में रहता हुआ यह व्यक्त होता है। वह विभू सर्वव्यापक प्रभु प्रजाओं में ओत और प्रोत है।

अर्थात् इस विश्व ब्रह्माण्ड का एकमात्र आश्रय, नीड घोंसला सर्वव्यापक परमात्मा ही है। और वह हृदय गुहा में वहां स्वयं आत्मा रहता है, रहता है। संसार प्रलय दशा में उसी में विलीन होता है और उत्पत्ति स्थिति दशा में भी उसी में रहता है क्योंकि वह व्यापक है और सबमें ओत प्रोत है।

सबमें रहने वाला सब से पृथक् तो अवश्य ही होता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने आरुणि उद्दालक के प्रश्न का समाधान करते हुये भगवान् के इस 'अन्यत्व' तथा 'अन्तरत्व' अर्थात् अन्तर्यामित्व का मनोरम व्याख्यान किया है। याज्ञवल्क्य ने उद्दालक से कहा—

'जो पृथिवी में रहता हुआ पृथिवी का अन्तर है, जिसे पृथिवी नहीं जानती है पृथिवी जिसका शरीर समान है जो अन्तर पृथिवी को नियम में रखता है, वह [तेरा अ]विनाशी आत्मा सर्वव्यापक तेरा अन्तर्यामी है।"

इसी प्रकार जल, अग्नि, आकाश, वायु आदित्य, चन्द्र तारा, दिशाओं, विद्युत्, [गर्ज]ने वाले बादल, सब लोक, सर्व वेद (इन्द्रिय) सब यज्ञ, सब भूत, प्राण, वाणी, चक्षु, श्रोत्र, मन त्वचा, तेज-प्रकाश, तमस्-अन्धकार, वीर्य का अन्तर कहकर, उन्हें भगवान् के न जानने वाले, और शरीर समान बतलाया है और भगवान् को इन सबका नियन्ता बतलाकर अन्त में याज्ञवल्क्य ने कहा—

"य आत्मनि तिष्ठन्, आत्मनोऽन्तरो, यमात्मा न वेद,
यस्यात्मा शरीरं य आत्मानमन्तरो यमयति, स त आत्मान्तर्याम्यमृत ।" (शत० १४,६, ७,१-३०)

जो आत्मा में रहता है, जो आत्मा का अन्तर है, जिसे आत्मा नहीं जानता, आत्मा मानों जिसका शरीर है, जो अन्तर आत्मा को नियन्त्रित रखता है, वह अविनाशी जीवनाधार आत्मा सर्वव्यापक परमात्मा तेरा अन्तर्यामी है।

संसार के सभी पदार्थों में वह विद्यमान विराजमान है किंतु सब से पृथक् है। वह आत्मा में भी है। संसार के सारे पदार्थ मानों उसका देह है। इन सबका नियमन भी वह करता है। पृथिवी आदि जड़ हैं। उनका उसे न जानना ठीक है। आत्मा भी साधारण तया उसे नहीं जान पाता। कश्चिद्धीर—कोई धीर ही ध्यानी ही उसे जान पाता है। अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति—ध्यानी अध्यात्मयोग के अनुष्ठान से उनका मनन कर हर्ष शोक को तर जाता है।

इस भ्रान्ति में न पड़ा रहना कि वह अन्तर ही है। हां वह बाहर भी है—तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यत। यजु० ४०। ५। वह भगवान्

(शेष पृष्ठ ११ में)

आर्यों में

हीनता का अनुभव क्यों ?

'प्रचार' की न्यूनता'

[श्री मदनमोहन सेठ रि० जज, का० १० आ० प्र० सभा]

सूचना विभाग के मन्त्रियों के सम्मेलन में भारत संघ के प्रधान मन्त्री माननीय प० जवाहरलाल नेहरू ने जो विचार रक्खे वह माननीय हैं। उन्होंने कहा कि प्रचार विभाग एक अत्यन्त महत्वशाली विभाग है। हम क्या नीति बनाते हैं यह इतने अधिक महत्व की बात नहीं है जितना कि प्रचार। जब तक कि हम जनता को भली भांति समझा कर उससे सहयोग नहीं प्राप्त कर लेते हमारी योजनाय अधिक चल नहीं सकती।

उपप्रधान मन्त्री माननीय सरदार पटेल ने भी उपयुक्त भावों की ही परिपुष्टि करते हुये कहा मैं प्रचार में अधिक विश्वास नहीं करता था और मेरा विचार था कि प्रचार का अधिक महत्व नहीं है, किन्तु अनुभव ने मुझे सिखाया कि यदि उचित प्रकाशन न किया जाय तो सत्य भी असत्य ज्ञात होने लगता है।

पाश्चात्य देश, प्रचार के महत्व को इतना अधिक समझते हैं कि अपने पक्ष के प्रचार के लिये देशी भाषाओं में लेखादि देना इतना अधिक कर दिया है कि भारतीय भाषायों के समाचार पत्रों में समाचारों की बाढ़ सी लादी है।

आर्यसमाज के ख्यातनामा प्रचारक शहीद प० लेखराम जी की अन्तिम वसीयत यही थी कि आर्यसमाज का प्रचार का काम बन्द न हो। क्या आर्यसमाज इससे कुछ शिक्षा लेगा! प्रचार के महत्व को हृदयगम न कर पाने के कारण आज आर्यसमाज की जो दशा है वह किसी से छिपी नहीं है।

जनता की स्मृति अपनी प्रसिद्ध अल्पकालीनता के लिये बदनाम है। लोग किसी बात को बहुत दिन याद नहीं रख सकते। समय समय पर स्मरण कराते रहने की आवश्यकता होती है।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने "आर्यमित्र" को दैनिक बनाने के लिये "आर्य मित्र प्रकाशन लि०" नाम से लखनऊ में कम्पनी स्थापित की है। आशा थी कि आर्य जनता अति शीघ्र प्रस्तावित ५ लाख की धन राशि के २५ रु० के बीस हज़ार हिस्से ले लेगी और आर्य मित्र दैनिक बड़ी शान से आर्य संस्कृति के प्रचार का कार्य शीघ्र प्रारम्भ कर देगा, परन्तु आर्यों की शिथिलता ने इस योजना को अब तक अपूर्ण ही बना रक्खा है। आश्चर्य है कि जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी स्वल्प कालीन संस्था थोड़े से समय में लाखों की धन राशि एकत्र कर एक नहीं अनेकों पत्र चला सकती है तो आर्य समाज जैसी सुसंगठित संस्था एक पत्र भी क्यों नहीं चला सकती, क्या आर्यजनों के लिये यह लज्जास्पद नहीं है। एक या अनेक आर्यत्वाभिमानी भी क्षण मात्र में लाखों रुपया एकत्र कर सकते हैं यदि उनमें आत्म विश्वास, वैदिक धर्म से प्रेम और अपने गौरव का ध्यान आ जावे।

पश्चिमी देशों में किसी शुभ कार्य के लिये धन की अपील की जाती है तो जनता स्वतः सहयोग देती है। फिर किसी को प्रत्येक व्यक्ति के पास आने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु आर्यसमाज में जब कोई मांगने पहुँचता है, तो देते हैं अन्यथा नहीं। क्या आर्य अपने उत्तरदायित्व को समझेंगे!

आर्य्यमित्र

भाषा का प्रश्न

[पं० जवाहरलाल नेहरू]

(प्रस्तुत लेख में नेहरूजी ने भाषा के प्रश्न पर अपने विचार प्रकट किये हैं। आप सारे देश के लिये किसी हिन्दुस्तानी भाषा के समर्थक हैं। लिपि के बारे में में नागरी को पहला दर्जा देते हुये भी सरकारी कामों में आप उर्दू (फारसी) लिपि को स्वीकार करते हैं, तथा अंग्रेजी और रोमन लिपि को भी उपयोगी मानते हैं। लेख में भी परस्पर विरुद्ध विचारों में कहां तक सामञ्जस्य है और वह देश के लिये हानिकारक हैं या नहीं, यह पाठकों के विचार का विषय है। —सम्पादक)

यह लेख मैं प्रधान मन्त्री की हैसियत से नहीं, लेखक की, और ऐसे व्यक्ति की हैसियत से लिख रहा हूँ जिसे भाषा के प्रश्न में बेहद दिलचस्पी है। यह दिलचस्पी इस प्रश्न के राजनीतिक और दुर्भाग्यवश साम्प्रदायिक पहलू के कारण है। पर इससे ज्यादा महत्व है सांस्कृतिक पहलू का। मेरा विश्वास है कि किसी भी राष्ट्र के चरित्र का सबसे बड़ी कसौटी उसकी भाषा है। यदि भाषा शक्तिशाली और जानदार है तो राष्ट्र भी वैसा ही होगा इसी बात को उलट कर भी कह सकते हैं क्योंकि भाषा की रचना तो आखिर राष्ट्र ही करता है। पर यह भी सत्य है कि राष्ट्र का चरित्र बनाने में भाषा का भी प्रभाव पड़ता है।

लोहे के सांचे में जकड़ी भाषा, जिसमें प्रागतिक परिवर्तन की गुंजाइश नहीं, सही और सुन्दर हो सकती है पर जनता से और बदलते हुये वातावरण से सम्बन्ध खो देती है, इससे उसकी शक्ति कम हो जाती है। उसमें कुछ कृत्रिमता आ जाती है। चीजें क्षण क्षण बदल रही हैं इस लोहे के सिकंजे से भाषा बेजान हो जायगी। पुरानी दरबारी भाषाओं में भी अच्छाइयां थीं पर लोकतन्त्र के युग के लिये वे बिलकुल बेकार है।

इसलिए भाषामें दो बातें आवश्यक हैं, भाषा की नींव पुराने ही आधार पर हो, पर बढ़ती हुई आवश्यकताओं के साथ वह बढ़ती और फैलती रहे और वह जनता की भाषा हो, चुने हुए गुट का नहीं।

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के इस युग में यथासंभव साइंस और टेकनिकल शब्द या परिभाषाएं एक सी या समान होनी चाहिये। इस लए भाषाको दूसरी भाषाओं के ऐसे शब्द ले लेने चाहिए जो उसके ढांचे में फिट हो जाते हों।

मनुष्य जाति के विकास में प्राचीन भाषाओं का बहुत बड़ा हाथ रहा हैं, पर साथ ही वे जन भाषा के विकास में बाधक भी हुई हैं। जब तक विद्वान् लोग प्राचीन भाषाओं में सोचते और लिखते थे जन भाषा की कुछ भी उन्नति न हो सकी। यूरोप में १६ वीं सदी तक लेटिन ने यूरोपीय भाषाओं को पनपने न दिया। भारत में संस्कृत ऐसी छायी रही कि प्राकृत, जो बाद में प्रान्तीय भाषाएं हुईं, बढ़ने ही न पाईं।

हिंदी या हिंदुस्तानी ही हमारे देशकी भाषा

एक सर्व भारतीय भाषा तो अवश्य मेव होनी चाहिये। यद्यपि मेरे मत में अंग्रेजी का स्थान हमारे यहाँ आगे भी महत्वपूर्ण रहेगा। क्योंकि इस देश में सभी जगह समझी जाने के अलावा दुनियाँ भर में व्यापक है। याद रखिये कि राजनीतिक कारणों से या समयिक प्रवाह, भावना या रागद्वेष के वश हो कर जल्दबाजी में जो फैसला किया जायगा वह हानिकर होगा। हमें भविष्य निर्माण करना है और गलत या कच्ची नींव से

हमारी आगे की वृद्धि रुक जायगी, भाषा के ही क्षेत्र में नहीं वरन् संस्कृति और मनुष्यत्व के व्यापक क्षेत्र में भी। इससे बहुत अच्छा है कि धीमे चलिये और हर प्रकार की कठोरता से बचिये।

इस भाषा का नाम हिंदी हो या हिंदुस्तानी हो इस विवादका कोई महत्व नहीं। सिवा इस बात के कि हर शब्द का एक इतिहास होता है और इससे उसका अर्थ स्थिर और निश्चित हो जाता है। मेरा मत है कि हमें ऐसी भाषा या दृष्टि ग्रहण करनी है जो कूपमण्डूक न हो। अंग्रेजी भाषा में यह गुण, लोच और ग्रहणशीलता सबसे अधिक है। इसीलिये इसका इतना महत्व है। मैं चाहता हूँ कि हमारी भाषा भी दुनियाँ में इसी प्रकार खड़ी हो।

देश में आज जिस तरीके से इस प्रश्न पर विचार और विवाद हो रहा है। उस पर मुझे खेद है। न तो इस तरीके में पाण्डित्य है न शिष्टता या संस्कृति। आगे के लिये कोई विचार या कल्पना इसमें है ही नहीं। एक प्रकार की फुलाई हुई अन्धता। भाषा ही 'माप' मानी जाती है और ओछी राष्ट्रीयता के नाम

[शेष पृष्ठ ११ में]

क्या देश की भाषा

'एंग्लो मुस्लिम हिन्दुस्तानी' होगी ?

[श्री वेंकटेशनारायण तिवारी]

[श्री तिवारी जी हिंदी भाषा और साहित्य के प्रकांड मर्मज्ञ हैं। युक्त की पिछली कांग्रेसी सरकार के समय आपने हिंदी के समर्थन में अपने विद्वत्ता लेखों द्वारा जो आंदोलन प्रारम्भ किया था उसका प्रभाव सभी हिंदी भाषाभाषि पर स्थायी रूप से पड़ा। नेहरू जी के लेख के उत्तर में आपका विवेकपूर्ण, संगत और युक्ति युक्त यह लेख भी प्रभावशाली सिद्ध होगा।—सम्पादक]

मान्यवर श्री जवाहरलाल नेहरू जी के भाषा सम्बन्धी लेख पर इस समय कुछ कहना समुचित नहीं जान पड़ता। वह अधूरा है। उनकी सम्मति है कि ३० हजार शब्द ऐसे छाँट लिए जाय जो जन सुलभ हों। यानी श्री जवाहरलालजी पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग की हमें अनुमति देते हैं,—यों कहिए जो 'आमफहम' हों। जब तक यह न मालूम हो कि इन तीस हजार शब्दों को चुनेगा कौन, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि भाषा का रूप रंग क्या और कैसा होगा। क्या वह भारतीय हिंदी होगी या एंग्लो मुसलिम हिंदुस्तानी। इसी तरह के शब्दों के चुनने के अभी तक कम से कम तीन प्रयास तो हो चुके हैं। सबसे पहला और सबसे अधिक प्रसिद्ध प्रयत्न बिहार के तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डाक्टर सैयद महमूद का है। उनकी 'बेगम सीता' वाली हिन्दुस्तानी जग जाहिर है। दूसरा प्रयत्न आल इंडिया रेडियो के अधिनायकों ने भारतीय सरकार की आज्ञा से किया था, उस समय आल इंडिया रेडियो के सर्वेसर्वा श्री बुखारी थे। तीसरा प्रयत्न वर्धा में हुआ। जिसके पेशवाओं में डाक्टर ताराचन्द, आचार्य काका कालेलकर और श्री सुन्दरलाल जी के समान परम आदरणीय महारथी थे। क्या श्री जवाहरलाल जी का यह चौथा प्रयत्न इन्हीं तीन प्रयत्नों के समान होगा। क्या श्री नेहरू जी के लेख से इसी प्रकार की नीति की ध्वनि नहीं निकलती। यदि इसी नीति के अनुकूल 'हिन्दुस्तानी' का सृजन भारतीय सरकार के तत्वाधान में होनेवाला है तो हमें मालूम होना चाहिये कि इन तीन हजार शब्दों के चुनने वालों में कौन सज्जन होंगे। कुछ सज्जनों के नाम इस सम्बन्ध में आपही आप पाठकों के मन में नाच जायेंगे। मौलाना अबुल कलाम आजाद, डाक्टर सैय्यद महमूद, डाक्टर जाकिर हुसैन, डाक्टर ताराचन्द, श्री कैफी, श्री आसफ अली, श्री सुन्दरलाल और श्री काका कालेलकर।

यदि इन आदरणीय साहित्य महारथियों की कमेटी बनायी ग तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि जवाहरलाल जी के लेख में निर्दि नीति का अक्षरशः पालन सम्भव यह ठीक है कि यह लेख प्र मन्त्री का नहीं है न प्रधान म अपनी सरकार की नीति ही को लेख के द्वारा प्रकट करना चा हैं। यह उनका वैयक्तिक प्रयत्न साथ ही वह यह भी स्वीकार क हैं कि वह इस विषय के ज्ञाता न है, पर भारत के प्रधान मन्त्री बात हम माने या न माने लेकिन जवाहरलाल जी तो हमारे स्नेह श्रद्धा के बहुत पहले ही से अधिक रहे हैं। आदर के साथ उनकी ब को सुनना हमारा धर्म है लेकि उनकी सब बातों को मानने और मानने का हमें पूरा अधिकार है विशेषकर उनबातों को जिनका स ऐसे विषय से है जिसका उन्हीं अनुसार उन्हें स्वल्प ज्ञान है औ जिनके मानने से देश के उस प लक्ष्य को ऐसा धक्का लगने की सम्भ वना है कि वह विनष्ट ही हो जाए मुझे खेद है कि इस भाषा सम्ब विषय पर जिन लोगों के मत से जवाहर लाल जी का मत न मिलता उनके ऊपर उन्होंने सकी राष्ट्रीयता का लाञ्छन लगाया है संकीर्ण राष्ट्रीयता देश के लिये घात है, उतनी ही जितनी छिछली अ राष्ट्रीयता। क्षणिकवादी होना रा निर्माता के लिये शोभा नहीं देता ऐसे व्यक्ति के जीवन में वैसे ही रा के निर्माण में कुछ ऐसे तत्व होते जिनका सौदा व्यक्ति या राष्ट्र प्राण देकर ही करता है। भाषा के प्रश्न पर अवसरवादिनी नीति को अप नाना राष्ट्र के जीवन ही को तिलाञ्जलि देना है, क्योंकि भाषा में राष्ट्र की आत्मा निहित है और सभ्यता के कोई अर्थ नहीं यदि उसका स्वाभाविक विकास के मार्ग के कृत्रिम भाषा को रचकर डाल देने की चेष्टा की गई।

मुझे अचरज है कि आपने

(शेष पृष्ठ १० कालम ४ में)

तम्बाकू से हानियां

[श्री डॉ० जट कर नोंदी]

आज भारत जैसे गरीब देश में, जहाँ ४ करोड़ व्यक्ति दिन में एक बार भोजन भी नहीं पाते, २५ प्रतिशत लोग तम्बाकू के दुर्व्यसन के शिकार हैं। कोई पान और चूने के साथ तम्बाकू खाता है कोई सूंघता और कोई बीड़ी-सिगरेट के रूप अथवा चिलम में रखकर तम्बाकू पीता और उसका व्यवहार करता है। बड़े-बड़े विद्वान पण्डित तक इसका व्यवहार करते देखे जाते हैं। स्कूल, कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र तथा अनेक महिलाएँ तक इस दुर्व्यसन के फेर में पड़कर रात दिन अपना धन और स्वास्थ्य चौपट कर रही हैं।

भारत में तम्बाकू का प्रचार बहुत पुराने जमाने से नहीं है। प्रसिद्ध विद्वान दत्त महोदय का कथन है कि सन् ६५० ई० में हमारे यहां तम्बाकू का नाम भी नहीं सुना जाता था १६ वीं शताब्दी में, अकबर के जमाने में, पुर्तगीज लोग यहां यह विषैली वस्तु लाये। तब से देश में इसका प्रचार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जारहा है।

देश में उत्पन्न तम्बाकू की तो यहाँ खपत होती ही है, विदेश से भी पौने पाँच करोड़ की तम्बाकू, तरह तरह के रङ्ग रूप में सजकर हमारे देश में आती है।

तम्बाकू का प्रचार

तम्बाकू के बढ़ते हुए प्रचार के सम्बन्ध में महात्माजी ने कहा था कि शराब, भांग अथवा अफीम जैसी खराब चीज हैं, वैसी ही, बल्कि उनसे भी खराब चीज तम्बाकू है। तम्बाकू ने मनुष्य जाति पर अपना कब्जा इतना अधिक जमा रखा है कि इससे छुटकारा पाने में बहुत समय लगेगा। मित्रों के स्वागत सत्कार के लिए तम्बाकू आजकल एक चीज बन गई है। साधारण लोग तो जानते भी नहीं कि तम्बाकू की लत लगने के लिए सिगरेट और चुरट तैयार करने वाली कम्पनियाँ तम्बाकू में अनेक प्रकार के खुशबूदार तेजाब डालती हैं, तम्बाकू को जायकेदार बनाने के लिए उसमें अफीम के पानी का छींटा तक दिया जाता है।

तम्बाकू के विज्ञापन में प्रतिदिन हजारों लाखों रुपया खर्च किया जाता है। यूरोप में चुरट बनाने वाली कम्पनियाँ अपने प्रेस चलाती हैं, बाइस्कोप खरीदती हैं, इनामी टिकट निकालती हैं। हजारों प्रकार के उपाय करके जनता में तम्बाकू का प्रचार करती हैं! वे स्त्रियों पर भी अपना जादू चलाये बिना नहीं मानतीं।

एक व्यापारी का कहना है कि घड़ी जब एक घण्टा बजाती है तब तक हमारे सिगरेट पीने वाले शौकीन ४० लाख सिगरेट फूंक चुकते हैं! तम्बाकू में शरीर-पोषण की दृष्टि से रत्ती भरभी कोई वस्तु नहीं है, उलटे अनेक विष भरे पड़े हैं, जो मनुष्य को सदा पतन की ओर अग्रसर करते रहते हैं।

प्रत्येक देश-सेवक एवं वैद्य का कर्तव्य है कि वह इस दुर्व्यसन से स्वयं तो मुक्त रहे ही, दूसरों को भी इससे मुक्त करने का भरसक प्रयत्न करे।

तम्बाकू में रहने वाले विष

तम्बाकू के पत्तों और धुएं में १६ प्रकार के भीषण विष पाये जाते हैं—(१) निकोटाइन, (२) प्रुसिक एसिड, (३) कार्बन मोनोक्साइड, (४) पीरीडाइन, (५) एमोनिया, (६) कारबोंलिक एसिड, (७) सल्फरेटेड हाइड्रोजन, (८) मेथीलामाइन, (६) मार्शगेस, (१०) निकोलाइन, (११) ल्युटीडाइन, (१२) कोलीडाइन, (१३) पारवोटाइन, (१४) कारीडाइन, (१५) रुपीडाइन, (१६) वीरीडाइन, (१७) पाइरोल, (१८) फोर्मिक वाल्डीहाइट और (१६) फरफरोल।

इनमें से निकोटाइन, कार्बन मोनोक्साइड, प्रुसिक एसिक, पीरीडाइन और फरफरोल तो अत्यन्त ही भीषण विष हैं। इनकी थोड़ी सी भी मात्रा शरीर में जाने से प्राणनाश हो सकता है। निकोटाइन रक्त के दबाव में अव्यवस्था, हृदय की गति में तीव्रता, श्वासोच्छ्वास की गति में वृद्धि तथा हृदय में पीड़ा उत्पन्न करता है। तम्बाकू पीने वालों को खट्टी डकारें, अजीर्ण निद्रा का अभाव, नाक, गले और कान में फोड़े आदि निकोटाइन के कारण ही होते हैं। लोग कहते हैं कि तम्बाकू जलाकर पीने से निकोटाइन भी जल जाता है परन्तु बात ऐसी नहीं है। तम्बाकू के धुएं में निकोटाइन रहता है। निकोटाइन का विष शरीर में जज्ब हो जाता है। वह रक्त में शीघ्र मिलकर सारे शरीर में चक्कर लगाने लगता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जो व्यक्ति पहले पहल तम्बाकू पीता है, उसे निकोटाइन के कारण तुरन्त के होती है, मुख पर फीकापन आ जाता है और मूर्छा भी आ जाती है। एक ही बीड़ी पी लेने से तम्बाकू पीने वाले के श्वास और त्वचा से घण्टों दुर्गन्ध आया करती है।

"डाक्टर गाथ" का कहना है कि निकोटाइन इतना भयानक विष है कि उसकी एक बूंद भी यदि पेट में पहुँच जाय तो मनुष्य की मृत्यु हो जाय। "मेलसेन्स" कहता है कि सवा तोले तम्बाकू के धुएं में इतना निकोटाइन रहता है जितने से मनुष्य का प्राणान्त हो सकता है। प्रयोग करके देखा गया है कि निकोटाइन की ½ बूंद से बिल्ली और १ बूंद से कुत्ता तुरन्त मर गया और आठ बूंद से घोड़ा ८ घण्टे में मर गया। इससे अन्य प्राणी भी इसी भांति मरते देखे गये हैं। अमेरिका के रेड इण्डियन (निग्रो) तम्बाकू की पत्तों का तेज तीर की अनी पर चुपड़ कर भयङ्कर शिकारी जन्तुओं का शिकार करते हैं। तीर खाकर वे जन्तु तुरन्त मूर्च्छित हो जाते और मर जाते हैं। कार्बन मोनोक्साइड की थोड़ी सी भी मात्रा से तमाम वायु दूषित हो उठती है। उस विषैली वायु में सांस लेना अत्यधिक हानिकर है। उसके धुएं के कारण घबराहट, सिर में दर्द के आदि होने लगता है। प्रुसिक एसिड तो अब तक जितने विष मिले हैं उन सबमें भयंकर विष है। इसके तेजाब की एक बूंद से बिजली छू जाने सरीखा धक्का लगता है और मनुष्य मर जाता है। फरफरोल शराब से ५० गुना अधिक विषैला होता है। पीरीडाइन निकोटाइन जैसा ही विषैला पदार्थ है। यही हाल तम्बाकू में मिलने वाले अन्य विषों का है। तम्बाकू का थोड़ी सी मात्रा में उपयोग करने पर भी मनुष्यों की प्राणहानि होती देखी गई है। "श्री मैकफेडन" का कहना है कि १ सिगरेट में जितनी तम्बाकू आती है, उसका सत पिचकारी द्वारा रक्त में मिला देने से एक व्यक्ति मर गया।

शारीरिक और मानसिक रोग

तम्बाकू के व्यवहार से मनुष्य के शरीर में अनेक रोग घर कर लेते हैं। उसमें भरे हुए विष शरीर और मस्तिष्क पर प्रभाव डाले बिना नहीं रहते। यकृत, मूत्राशय तथा पाचनक्रिया पर तम्बाकू का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। इस दुर्व्यसन से आँख कमजोर हो जाती है, यहाँ तक कि अन्धापन भी आजाता है। कान बहरे होने लगते हैं, फेफड़ों की दुर्गति हो जाती है, संग्रहणी, नासूर जैसे भयङ्कर रोग पीछे लग जाते हैं। रोगों का सामना करने की, उनपर विजय प्राप्त करने की, शक्ति कम हो जाती है। शरीर की वृद्धि रुक जाती है। तम्बाकू के दुर्व्यसन से महा भयङ्कर बात यह है कि वीर्योत्पादक ग्रन्थियाँ नष्ट हो जाती हैं! मनुष्य नपुंसक हो जाते हैं, स्त्रियों की जननशक्ति निर्बल हो जाती है। सन्तान यदि होती भी है तो दुर्बल और रोगी। तम्बाकू से दांतों में खराबी आ जाती है। स्वर, इन्द्रियां तथा रुचि बिगड़ जाती है। घ्राण-शक्ति जवाब दे देती है। शरीर में आलस्य जमा रहता है। हृदय में मलिनता का प्रवेश होता है, गन्दी वासनाएँ उत्तेजित होती हैं। ज्ञानतन्तुओं पर प्रभाव पड़ने से मानसिक शक्ति घट जाती है, सद्गुण चले जाते हैं। दुर्गुण उनका स्थान ग्रहण कर लेते हैं। शारीरिक तथा मानसिक बल घट जाने से मनुष्य में कायरता आ जाती है और वह अपना साहस खो बैठता है।

छात्रों पर तम्बाखू का और भी बुरा प्रभाव पड़ता है। उनकी स्मरण-शक्ति कम हो जाती है। बीड़ी पीने वाले छात्र बीड़ी न पीने वालों की अपेक्षा कहीं अधिक कमजोर रहते हैं। कई कालेजों, स्कूलों में इस बात की परीक्षा करनेसे यही निष्कर्ष निकला है। इसके अलावा तम्बाकू के दुर्व्यसनों की भी लत पड़ती है। स्त्रियों को तो भूल करके भी तम्बाकू का सेवन न करना चाहिए, कारण इससे उनके सौंदर्य का तो नाश होता ही है, बंध्यत्व भी आजाता है। बच्चों का पैदा होना रुक जाता है और यदि बच्चे होते भी हैं तो वे दुर्बल कुरूप और रोगी ही पैदा होते हैं। प्रत्येक धर्म ग्रन्थ धर्म-गुरु ने तम्बाकू से बचने की आज्ञा सम्भवतः इसी लिये दी है।

आर्थिक हानि

तम्बाकू के दुर्व्यसन से तम्बाकू का व्यवहार करने वालों की तो अपार हानि होती ही है, देश की भी असंख्य सम्पत्ति स्वाहा होती है। तम्बाकू का कम से कम उपयोग करने वाला व्यक्ति भी साल में ५०) फूंक डालता है। यदि मान

लिया जाय कि हमारे देश में केवल ७॥ करोड़ व्यक्ति ही तम्बाकू पीते हैं और एक व्यक्ति एक महीने में केवल दो दियासलाई की डिब्बी खर्च करता है, (जबकि बहुत से लोग तो हर दूसरे दिन दियासलाई की एक डिब्बी फूंक डालते हैं) तो साल भर में १८० करोड़ दियासलाई की डिब्बियां स्वाहा हो जाती हैं। एक दर्जन दियासलाई का दाम कम से कम आठ आना ही रख लिया जाय तो भी हम देखते हैं कि ७॥ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष धुआं उड़ाने और शरीर को रोगी बनाने के लिए खर्च कर दिया जाता है। इससे बढ़ कर दुःख की बात और क्या होगी? जिन्हें बीड़ी की लत है वे दिन में पांच-पांच से लेकर सौ-सौ बीड़ा तक फूंक डालते हैं। परन्तु यदि हम २५ बीड़ी रोजाना का ही औसत रखें और उनका दाम दो आना मान लें तो साल में ४५) प्रति मनुष्य पड़ा। प्रत्येक बीड़ी पीने वाले के सम्बन्ध में यदि हम मान लें कि वह ४० साल जियेगा तो इस बीच वह लगभग २०००) की बीड़ी और १००) का दियासलाई फूंक देगा। १९३० में मद्यनिषेध समिति के अध्यक्ष सरदार लक्ष्मणसिंह ने कहा था कि भारत में शराब, तम्बाकू और अफीम में प्रति वर्ष ७० करोड़ रुपये बर्बाद होता है! जांचने से पता लगता है कि देश में १४ करोड़ मनुष्य किसी न किसी रूप में तम्बाकू का व्यवहार करते हैं। जिस देश की आधी जनता को पेट भर अन्न के लाले पड़े रहते हों उस देश का ७० करोड़ रुपया इस भांति इन दुर्व्यसनों की भेंट चढ़ता हो।* इसे हमारे दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जाय।

तम्बाकू के कारखानों में असंख्य लोग काम करके प्रति दिन अपना स्वास्थ्य चौपट करते हैं। उनका सारा श्रम समाज के लिये लाभदायक न होकर उल्टे विशेष हानिकर होता है। उस वायु-मण्डल में काम करने से स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के स्वास्थ्य पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। बीमार पड़ना, अकाल मृत्यु होना, संतान न होना आदि तो उसका प्रत्यक्ष फल है। जिस जमीन में तम्बाकू लगाई जाती है वह जमीन अन्न की फसल के लिये अच्छी नहीं रहती। तम्बाकू उसकी उत्पादक शक्ति को पहले ही चूस लेती है। हुक्का या चिलम उलट देने से अथवा लापरवाही से जली हुई फेंक देने से हर साल अनेक स्थानों पर आग लग जाती है, जिसके कारण लाखों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है और असंख्य निर्दोष व्यक्तियों को जान-माल की हानि उठानी पड़ती है। अमेरिका में सिगरेट फेंक देने से आग लगकर हुई हानि का औसत लगाया गया तो पता चला कि वहां प्रति वर्ष इस लापरवाही के कारण २४ करोड़ रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। सन् १९१९ में वहां ट्रायेंगल कारखाने में इसी प्रकार आग लग जाने से लाखों रुपये की हानि तो हुई ही, १४० बालिकाएं भी उसमें जल मरीं। हमारे देश की लाखों एकड़ जमीन तम्बाकू की खेती में लगी है, असंख्य व्यक्ति इसके कारखाने में लगे हैं तथा करोड़ों रुपया इसमें खर्च किया जाता है और इसका नतीजा यह है कि देश में दुर्व्यसन और रोगों का दिन-दिन प्रचार बढ़ता जाता है। कितना अच्छा हो यदि यह सारा धन और सारी शक्ति बचा ली जाय। इससे हमारे देश की दरिद्रता दूर होने में अच्छी मदद मिल सकती है। इन दुर्व्यसनों के त्याग से केवल अपना ही नहीं देश का भी अपार हित है।

सभी देशों के धर्माचार्यों, तत्त्वज्ञानियों और डाक्टरों ने तम्बाकू की निन्दा करके उसके व्यवहार की तीव्र शब्दों में मनाही की है। अनेक राजा महाराजाओं ने तो कड़े नियम भी बना दिये थे। दसवीं शताब्दी तक ईरान में तम्बाकू पीने वाले को सूली पर चढ़ा दिया जाता था, अथवा मिट्टी के गड्ढे में दबा दिया जाता था। हमारे यहाँ भी रेलवे में ऐसा कानून है कि सहयात्रियों के विरुद्ध कोई भी यात्री बीड़ी नहीं पी सकता। अनेक बड़े-बड़े डाक्टर और अनुभवी लोग इस बात पर सहमत हैं कि शारीरिक और मानसिक रोगों की वृद्धि में तम्बाकू का बहुत बड़ा हाथ है। और यह अनुभव सिद्ध ही है कि—"तम्बाकू पीने से पाचन शक्ति मन्द पड़ जाती है। मुँह से दुर्गन्ध आने लगती है। दांत काले और पीले पड़ जाते हैं। अतः जो मनुष्य नीरोग रहना चाहता है उसे तम्बाकू का त्याग अवश्य कर देना चाहिए।

भ्रामक धारणाएँ

तम्बाकू सेवन करने वाले लोग कहते हैं कि तम्बाकू छोड़ देने से भोजन नहीं पचता, कब्ज हो जाता है और कल्पना-शक्ति मन्द पड़ जाती है। ये सब भ्रामक धारणायें हैं। जो लोग तम्बाकू नहीं पीते उन्हें क्या खाना पचता ही नहीं? कब्ज दूर करने की दवा यदि तम्बाकू होती तो जुलाब के स्थान पर वैद्य या डाक्टर उसका उपयोग न करते? पर वे तो इसके विरुद्ध ही सलाह देते हैं। कल्पना शक्ति मन्द पड़ने की बात तो इसी से सोची जा सकती है कि हमारे पुरातन ऋषि-मुनि जिन्होंने दर्शन शास्त्र की गूढ़ से गूढ़ गुत्थियों को सुलझाने वाले ग्रन्थ लिखे, वे तम्बाकू नहीं पीते थे। तम्बाकू पीने वालों ने ऐसे कितने ग्रन्थ लिखे हैं?

लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'लेनसेट' में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के परम अनुभवी डा० डेनफील्ड ने लिखा है कि तम्बाकू का किसी भी मात्रा में प्रयोग करने पर नुकसान हुए बिना नहीं रहता 'तम्बाकू की आदत पड़ जाने पर रक्त में उसका विष नाश करने की शक्ति आ जाती है, ऐसा सोचना बिलकुल गलत है। उसके विष का तो दिन दिन प्रभाव बढ़ता ही जाता है और रक्त दूषित होता जाता है। तम्बाकू का सब के ऊपर एकसा असर नहीं पड़ता, इसका कारण यह है कि ईश्वर ने मानव-शरीर की रचना ऐसी विचित्र की है कि इसमें कोई भी विष पहुंचा नहीं कि वह तुरन्त बाहर निकाल फेंकने का प्रयत्न करता है— जिसकी प्राणशक्ति जितनी प्रबल होती है उस पर विष का प्रभाव उतना ही कम होता है। पर धीरे धीरे उसका प्रभाव बढ़ता जाता है। तब वह भीषण रोगों के रूप में बाहर निकलता है। आरम्भ में तम्बाकू पीने वालों को विष के कारण शरीर में स्फूर्ति सी आती जान पड़ती है। सभी मादक पदार्थों का यही हाल है। परन्तु बाद में उसी के कारण शरीर में थकावट और कमजोरी आती है। उसे दूर करने के लिए मनुष्य बारम्बार बीड़ी तम्बाकू पीता है। और इस प्रकार उसे इसकी लत लग जाती है। तम्बाकू पीने से ही रोग उत्पन्न होते और बढ़ते हैं, इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि तम्बाकू छोड़ देने से रोग दूर हो जाते हैं और अधिक सेवन करने से बढ़ने लगते हैं।

क्षय तथा हृदय रोग

डाक्टर "राइट" का अनुभव है कि तम्बाकू के द्वारा निकोटीन विष के भीतर प्रविष्ट होने से क्षय रोग का सामना करने की मनुष्य की शक्ति कम होती जाती है। हृदय पर तम्बाकू का बड़ा बुरा असर पड़ता है। हृदय की तथा नाड़ी की फड़कन बढ़ जाती है और फेफड़े खराब हो जाते हैं। रक्त दूषित हो जाता है। तम्बाकू पीने वाले की उम्र घट जाती है। न्यू इंगलैण्ड बीमा-कम्पनी ने अपने १,८०,००० बीमादारों का ६० साल का हिसाब लगाकर देखा तो पता चला कि जो लोग तम्बाकू बिलकुल नहीं पीते थे वे सबसे अधिक दिनों तक जीवित रहे और जो जितनी अधिक तम्बाकू पीते रहे वे उतनी ही जल्दी मरे। तम्बाकू पीने वाली स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम है अतः वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक दिनों तक जीवित रहती हैं।

पाचन-शक्ति पर बुरा प्रभाव।

पाचन-क्रिया पर तम्बाकू का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। अन्न के पचने में लार सबसे अधिक सहायक है परन्तु तम्बाकू का प्रयोग करने वाले दिन भर पिचपिचकर थूकते हैं इस कारण उनकी लार उत्पन्न करने वाली ग्रन्थियाँ इतनी अधिक निर्बल पड़ जाती हैं कि उनमें पर्याप्त मात्रा में, और पुष्ट, गुणशाली लार निकलती ही नहीं। इसीलिये खाया हुआ अन्न भली भांति पच नहीं पाता और अपच, अजीर्ण, अग्नि मांद्य जैसा भीषण रोग उत्पन्न हो जाता है। पेट की खटास कम हो जाने से जठराग्नि भी दुर्बल हो जाती है और जठर-रस उत्पन्न करने की क्रियाशक्ति जाती रहती है। भूख लगती ही नहीं, या कम लगती है। स्वादेन्द्रिय कुण्ठित हो जाती है अन्न की पाचन प्रणालियाँ क्रिया रहित होती जाती हैं, दांत बहुत ही कमजोर हो जाते हैं, अर्थात् प्रत्येक प्रकार से तम्बाकू का प्रयोग भयंकर से भयंकर उदर रोग को उत्पन्न करता रहता है।

प्रत्येक दृष्टि से तम्बाकू महान् हानिकारक पदार्थ है प्रत्येक व्यक्ति को मैं इसे छोड़ने की सलाह दूंगा जनप्रिय सरकार को भी शीघ्र ही कानून द्वारा इसको रोकने का प्रयत्न कर भारतीयों के स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिये।

(जीवन साहित्य से,)

*आजकल इस व्यय का अनुमान १०० करोड़ से भी कहीं अधिक है। —सं०

स्वास्थ्य-सुधा

छूत की बीमारियां—

हैजा या विशूचिका

(डा० रा० म० लाल, ए० एम० ओ० खमरिया)

छूत छात की यह बीमारी जो एक विशेष प्रकार के कीटाणुओं के पेट मे पहुँच जाने से होती है। इसमे अचानक के और दस्त जल्दी जल्दी होना आरम्भ हो जाते है। यहाँ तक कि रोगी यह नहीं समझ सकता कि कब के और कब दस्त होने वाला है। के और दस्त आरम्भ में तो कुछ गाढ़े हो सकते हैं किन्तु पीछे चल कर पानी की तरह पतले और सादा रंग के होते है। पाखाना तो चावलों के धोवन जैसा होता है। बीमारी के बढ़ने के साथ शरीर में ऐंठन व हड़फूटन होती है। पीछे पेशाब बंद हो कर बीमारी की हालत चिन्ताजनक हो जाती है। बीमारी मे मृत्यु बहुत होती है और यह फैलती भी बहुत जल्द ही है। प्रति वर्ष हमारे देश मे यह बीमारी किसी न किसी भाग में फैलती ही रहती है। प्रायः गर्मियों और बरसात में यह बीमारी जोर से फैलती है और जाड़े तक कम पड जाती है। किन्तु यह सोचना भूल है कि यह बीमारी जाडो में नहीं हो सकती।

जिन मनुष्यों के पेट में अम्ल कम रहता है तथा अतड़ियों मे पित्त का बहाव ठीक से नहीं होता उन्हे यह बीमारी होने का अधिक डर रहता है। शराब पीने वालो को विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है।

मेलो में यह बीमारी प्रायः ही फैलती है और वहाँ गये हुये यात्री प्रसाद ला कर अपने गावो मे फैलाते है। यह तो मानी हुई बात है कि जब तक बीमारी के कीटाणु पेट मे नहीं पहुँचेगे तब तक बीमारी नहीं होगी। अतः यह सिद्ध हो जाता है कि पानी, दूध, भोजन आदि के द्वारा ही यह बीमारी होती है। यदि कोई मेला नदी के किनारे होता है और वहा हैजा फैलता है तो बीमार के कपडो को नदी मे धोने के अलावा उससे मरे मुर्दों को भी नदी मे डाल देते हैं इससे नदी का पानी खराब हो जाता है। नदी के बहाव की ओर उसके किनारे जितने भी गाव होगे वहा सभी जगह उस मैल से गन्दे हुये पानी के द्वारा बीमारी फैल जायगी।

मक्खियां इस बीमारी के फैलाने में [illegible] सहायक होती है। बीमार मनुष्य के [illegible] दस्त पर मक्खी बैठती है [illegible] अपने पैरों मे [illegible] [illegible] [illegible] आ पर [illegible] उनका [illegible]

उन वस्तुओं को खायगा बीमार पड जायगा।

बचने के उपाय

(१) हैजा के मौसम मे पेट को सदा ठीक रक्खें। न तो कब्ज ही रहे और न ज्यादा दस्त ही हों। जुलाब लेने से बचें।

(२) पेट की अग्नि को सदा प्रज्वलित रक्खें। ऐसा उपाय करें कि अम्ल उचित मात्रा मे सदा पेट मे बना रहे। (अम्ल मे हैजा के कीटाणु असर नहीं कर सकते) अम्ल बने रहने के लिये आवश्यक है कि पेट खाली न रहे। उचित मात्रा मे कागज़ी नीबू, प्याज, टमाटर, अदरक, सिरका आदि का सेवन करें।

(३) भोजन गरम हो और ताजा हो।

(४) सडे गले, देर से पचने वाले भोजन न करें। यात्रा में स्टेशन पर का कोई भोजन न करें। आइस क्रीम, कुल्फी, सोडा खाने पीने वाले सावधान।

(५) पीने का पानी उबाल कर पिये। अथवा शाम को इतनी लाल दवा डाले कि पानी गुलाबी हो जाय। सवेरे से उस पानी का सेवन करें। यदि बीमारी गाव मे हो तो प्रति दिन लाल दवा कुओं मे डाले ताकि पानी हर समय गुलाबी ही बना रहे बर्तन इत्यादि का पानी भी इसी तरह का होना चाहिये।

(६) अग्रेजी दवाखानो मे ट्रम्बस मिक्स्चर (I n l's m chlure) नाम की दवा मिलती है। यह दवा एक छोटे चम्मच भर (करीब ६० बूंद) २॥ तोले पानी मे मिला कर प्रति दिन एक दो बार सेवन करना उपयोगी सिद्ध हुआ है।

(७) समय रहते हैजे का टीका ले लें।

बीमार हो जाने पर

किसी योग्य चिकित्सक से शीघ्र ही दवा कराये।

(२) प्रारम्भिक अवस्था में अर्क कपूर १० या १५ बूंद बताशे पर या चीनी में डाल कर प्रति १० या १५ मिनट पर देते रहे जब तक कि कै और दस्त बन्द न हो जावें। प्रारम्भिक अवस्था में यह दवा बेजोड है। अर्क कपूर उत्तम है। अच्छा तो यह होगा कि किसी अग्रेजी दवाखाने से स्प्रिट कैम्फर (Sp Campl or) लेकर अच्छी तरह बन्द करके रख छोडे।

(३) ऊपर लिखे ट्रम्बस मिक्स्चर ६० बूंद २॥ तोले पानी में मिला कर आधे आधे घण्टे पर पिलावे। ८-१० खुराक में गुण दिखाता है।

जब बीमारी अधिक बढ गई हो तब तो योग्य चिकित्सक को बुला कर ही दवा कराना उचित है। ऊपर लिखी औषधियां भी लाभप्रद है। रोगी को प्यास बहुत लगती है। उसे यदि अधिक पानी पिला दिया जायगा तो कै हो जायगी। उबाल कर ठण्डा किया हुआ पानी अथवा हरे नारियल का पानी एक-एक चम्मच थोड़ी थोड़ी देर पीछे रोगी के मुँह मे डालता जाय। इससे उसका गला भी न सूखेगा और कै भी न होगी।

हैजे मे पेशाब बन्द होने के दो कारण है—(१) कै दस्त के द्वारा शरीर का सारा पानी निकल जाता है। पीछे खून का भी पानी खिंच कर आ जाता है। जब पानी ही नहीं रहेगा तो पेशाब बनेगा कहाँ से? इस अवस्था मे पानी चढाने से ही लाभ होगा। कोई भी दवा कुछ भी लाभ नहीं कर सकती। (२) गुर्दे बीमारी से खराब हो जाते है, और पेशाब नहीं निकाल सकते। इस अवस्था मे दवा से काम चल सकता है।

शरीर के हड़फूटन का कारण

१—लगातार के और दस्त हो कर शरीर के पानी के साथ शरीर के कुछ आवश्यक क्षार पदार्थ भी निकल जाते है। ये क्षार पदार्थ इतने अधिक उपयोगी होते है कि इनके न रहने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। इसकी औषधि भी पानी चढ़ाना है। आवश्यक क्षार पदार्थ पानी मे मिला कर शरीर में प्रवेश करा दिये जाते है।

२—शरीर में उचित मात्रा में पानी का न होना।

३—शरीर का निर्बल हो जाना।

× × ×

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

किसी प्रांत ने अपने राजकाज में हिंदुस्तानी को स्थान नहीं दिया है। पूर्वी पंजाब, युक्तप्रांत, मध्यप्रांत, मत्स्य, विंध्य प्रदेश और राजस्थान ने हिंदी को और सो भी देवानागरी लिपि में राजभाषा स्वीकार की है। हिंदुस्तानी की उल्टी गंगा बहाकर श्री जवाहरलाल जी क्या केंद्र के द्वारा प्रांतीय सरकारों के स्वशासन के अधिकार पर चोट करना चाहते हैं। मुझे निश्चय है कि उनकी ऐसी नियत कदापि नहीं है। पर उनके प्रस्ताव का परिणाम अनिवार्य रूप से वही होगा जिसकी ओर मैंने ऊपर संकेत किया है। अमेरिका बढा एक भाषा के बल पर। इंगलैंड का साम्राज्य फैला एक भाषा के बल पर। भारत ने पिछले दो सौ वर्षों मे इसी बात को सिद्ध कर दिखाया है। फिर समझमे नहीं आता कि एक नयी जबान के बनाने की हमें जरूरत क्या है। जब हिंदी घर में मौजूद है। क्या मौलाना अबुल कलाम आजाद को हिंदी से चिढ़ है? श्री रफी अहमद किदवई कई महीने पहले ही हिंदी और देवनागरी लिपि का समर्थन कर चुके हैं। क्या किदवई साहब मौलाना साहब की तुलना में बकीर्ण राष्ट्र-वादी हैं।

अन्त में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि देश मे राज काज के लिये एक लिपि होनी चाहिए। और कारणों को जाने दीजिए इस गरीब देश मे दो लिपियों को राज लिपियाँ मानकर अनावश्यक रूप से खर्च बढना अनुचित है। जो काम मौलाना साहब गांधी जी से नहीं करा सके उसे अब दूसरे ढंग से कराने की चेष्टा उनके लिये अनुचित होगी।

लेखकों से !

कृपया लेख या समाचार भेजते समय शुद्ध, स्पष्ट तथा काग़ज़ के एक ओर स्थान छोड़ कर भेजने की कृपा किया करें।

भाषा का प्रश्न

(पृष्ठ ७ का शेष)

पर यह माँग की जा रही है कि इसे जितना हो सके संकीर्ण और सीमित बना या जाय। इसे व्यापक बनाना इस औंधी राष्ट्रीयता द्वारा पाप समझा जाता है। तुर्कों और छन्दों को जिस प्रकार कविता नहीं कर सकते उसी प्रकार लम्बे और जटिल वाक्य समूह का भाषा भी नहीं कह सकते। अंग्रेजी के प्रचलित परिचित शब्दों का जो अनुवाद इधर देखने में आया है है वह अत्यन्त हास्यास्पद है। यह प्रवृत्ति तो विचारों को व्यक्त करने के अत्यन्त सुन्दर साधन को खतम करके ही रहेगी।

संस्कृत अनमोल विरासत

यदि मुझसे पूछा जाय कि भारत का सबसे बड़ा धन और सबसे कीमती विरासत क्या है ? तो मैं बिना हिचक कहूँगा कि यह संस्कृत भाषा और साहित्य है। यह शानदार विरासत और जब तक इसका असर रहेगा भारत की आत्मा जीवित रहेगी। अतीत का खजाना होने के अलावा यह एक जीवित परम्परा है जो इतनी प्राचीन भाषा के लिये अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है। मैं संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहन देना चाहता हूँ। अपने विद्वानों को इस गड़े हुए खजाने को खोजकर भूले हुए रत्नों का प्रकाश में लाने के काम में लगाना चाहता हूँ, परन्तु संस्कृत या आधुनिक भाषा में ठोस या रचनात्मक काम देखने को नहीं मिलता।

संस्कृत भाषा कितनी भी श्रेष्ठ क्यों न हो और उसके अध्ययन को कितना भी बढ़ावा क्यों न दिया जाय (जो हमारा कर्तव्य है) यह जीवित भाषा नहीं हो सकती, पर इसे हमारी अधिकांश भाषाओं का अन्दर का गूदा होना चाहिये, जैसा कि यह सदा रहा है। पर इसके लिये जबरदस्ती करना न तो स्वाभाविक है न उचित है। इससे हानि हो सकती है।

फारसी का स्थान

पिछली कुछ सदियों से फारसी ने भी हमारी कुछ प्रान्तीय भाषाओं, विशेषकर हिंदुस्तानी, को प्रभावित किया है और हमारे सोचने विचारने के ढंग पर भी असर डाला है। इससे हमारा लाभ हुआ। याद रखना चाहिये फारसी भाषा संस्कृत के सबसे अधिक निकट है और प्राचीन पहलवी से वैदिक संस्कृत जितना मिलता है उतना लौकिक संस्कृत से भी नहीं। इसलिये इन दोनों का साथ साथ चलना सुविधाजनक है। बोसों ही पिछले कई सौ वर्षों के इतिहास ने भी हमें बनाया है और इसे मिटाने की कोशिश करना समझदारी नहीं।

भाषा कैसी हो ?

इन तर्कों को स्वीकार करने से निष्कर्ष यह निकलता है कि जिस भाषा को हम सारे देश की भाषा बनाना चाहते हैं उसे लचीली और संकुचित न होना चाहिये। इसे जनता की भाषा होना चाहिये। पंडितों के छोटे से गुट की नहीं। भाषा का आधार और इसका अधिकतर अंश संस्कृत से ही लिया जायगा, पर इसमें अन्य स्थानों से भी, विशेषकर फारसी अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से भी शब्द मुहावरे और विचार किसी भी संख्या में लिए जायेंगे।

जनता के रोज के इस्तेमाल में आने वाले प्रचलित और परिचित करीब ३० हजार बुनियादी शब्दों का संग्रह करना चाहिये। इनमें पर्यायवाची शब्द भी होंगे। सार्वदेशिक भाषा सीखनेवाले हर एक आदमी को इन मूल शब्दकोषों से परिचित होना चाहिये।

मैं फिर कहूंगा, इधर जो नये पारिभाषिक शब्द मुझे मिले हैं वे इतने बनावटी और निरर्थक हैं कि उन्हें सुनकर मेरी तबियत भनभना जाती है। इन शब्दों की कोई बुनियाद या परंपरा ही नहीं है। हमारे सामने कोई अच्छा शब्दकोष नहीं है। दुनियाँ की दूसरी भाषाओं को देखिए उनमें कितनी डिक्शनरी और इनसाइक्लोपीडिया हैं। हम अदालत या स्कूली किताब की भाषा को ही भाषा मान बैठे हैं। हमारी डिक्शनरियाँ भी स्कूली लड़कों के ही लायक हैं इस लिए सबसे पहला काम संस्कृत और अन्य भाषाओं के सर्वांगपूर्ण और पाण्डित्यपूर्ण शब्दकोष तैयार करना है। भाषा का जो रूप मैंने ऊपर बताया है और जिस प्रकार के शब्द आज काम में लाये जाते हैं उससे मेरी पसन्द की भाषा के लिये हिंदुस्तानी शब्द ही सबसे उपयुक्त ठहरता है।

उर्दू लिपि भी

जहाँ तक लिपि का सम्बन्ध है स्पष्टतः नागरी ही मुख्य लिपि होगी। पर मैं पुनः समझता हूं कि अन्य लिपि का परित्याग सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से गलत होगा। मेरा मत है कि जहाँ इसकी मांग हो, उर्दू लिपि स्वीकार की जानी और सिखाई जानी चाहिये। सार्वजनिक या सरकारी कामों में अर्जी या कागज दाखिल करने और काफी छात्र रहने पर स्कूलों में सिखाई जाने के लिये भी उर्दू लिपि स्वीकार की जानी चाहिये।

कांग्रेस और विधान परिषद् में भाषा के बारे में इसी प्रकार की नीति घोषित की जा चुकी है। यदि भारत के किसी भी भाग में उर्दू बोलने वाले बच्चे काफी हों तो प्रान्तीय भाषा के अतिरिक्त उन्हें उर्दू लिपि सिखानी चाहिये यह सिद्धान्त मंजूर हो चुका है और जितनी जल्दी हो सके इसे लागू करना चाहिये।

रोमन लिपि पर भी ध्यान रहे

रोमन लिपि का व्यापक इस्तेमाल मैं व्यावहारिक नहीं समझता। पर याद रहे कि फौज में रोमन लिपि के प्रयोग से सफलता मिली है। रोमन लिपि बड़ी सरलता से सिखाई जा सकती है और यह सेना में एकता की सूत्र सिद्ध हुई। इसलिये इस बात की जाँच होना चाहिये कि रोमन लिपि कहाँ प्रयोग की जा सकती है और जहां तक संभव या वाँछित हो इसका प्रयोग किया जाय।

अन्तर्यामी भगवान

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस समस्त संसार के भीतर भी है और वही इस सबके बाहर भी है।

तात्पर्य यह कि संसार भगवान् की अपेक्षा अतीव अल्प है।

जो भगवान् इतना महान् है, जो इस संसार के अन्दर बाहर भी है, उस का जानना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसीलिए कहा—न तं विदाथ—तुम उसको नहीं जानते। ऊपर याज्ञवल्क्य के कथन में भी यही बात आई है।

संसार के किसी साधारण पदार्थ का ज्ञान करने के लिए मनुष्य समय लगाता है। साधन सामग्री जुटाता है। सतत प्रयत्न करता है। तब कहीं जाकर उसके विषय में कुछ ज्ञान पाता है। समस्त भूमण्डल में एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो यह कहने का साहस कर सके कि मैं अमुक विषय में अविकल, पूर्ण रूप से जानता हूँ। जिस भाषा में हम बोलते हैं इसका सर्वोत्कृष्ट विद्वान भी यह अभिमान नहीं कर सकता कि वह उसको पूर्णतया जानता है। जीवन का एक बहुत बड़ा भाग लगाने पर भी वह यह नहीं कह सकता कि यह उसका पूर्ण पाण्डित्य है। ऐसी दशा में समय दिए बिना, प्रयत्न किए बिना भगवान का ज्ञान किसी को कैसे हो सकता है ? इसी लिए वेद ने कहा—न तं विदाथ—तुम उसे नहीं जानते। कोई साधक, जिसने सर्वात्मना इसके लिए प्रयत्न किया है कह सकता है—वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् (य० ३१।१८) मैं उस महान् सर्वव्यापी भगवान् को जानता हूँ।

जो असुतृप—शिश्नोदरपरायण, जल्प्य—गप्पी, उक्थशास्—शाब्दिक चर्चा करनेवाले हैं, वे बेचारे अज्ञानाधकार में अवृत हैं—आच्छन्न हैं, वे ब्रह्म को कैसे जान सकते हैं ? पढ़ने लिखने मात्र से परमात्मा का ज्ञान मिलना असंभव है मुण्डकोपनिषद् में इस बात को यों कहा है—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। (३।२।३)

यह आत्मा—आत्मा तथा परमात्मा न तो प्रवचन—व्याख्यान से मिल सकता है, न मेधा से—शास्त्रधारण समर्थ बुद्धि से और न ही बहुत सुनने पढ़ने से।

उपनिषत्कार यह कहना चाहते हैं कि कहीं किसी को आत्मपरमात्म विषय प्रांजल व्याख्यान करते देखकर यह समझ लेना कि यह अवश्य ही आत्मवेत्ता है यदि कोई मेधासम्पन्न झटिति कठिन से कठिन शास्त्रीय ग्रन्थ को ग्रहण कर धारण कर लेता है आवश्यक नहीं कि उसने आत्मतत्व साक्षात्कार भी किया हो। इसी प्रकार जो मनुष्य सदा पढ़ता रहता है, शास्त्र चर्चा में लगा रहता है, बाल की खाल निकालता रहता है, यह न समझना चाहिए कि यह अवश्य ही आत्मवेत्ता है। प्रकृतमन्त्र के उत्तरार्ध में 'नीहारेण ……… … . . चरन्ति" द्वारा यह बात कही गई है।

प्रवचन, मेधा अध्ययन ये साक्षात्कारिणी विद्या के अंग हो सकते हैं, सहायक हो सकते हैं, साक्षात् साधन नहीं हैं। जैसा कि कहा है—

एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम (मुण्डकोप० ३।२।४)

इन उपायों से युक्त होकर जो प्रयत्न करता है—अनुष्ठान करता है उसका आत्मा ब्रह्मधाम में प्रवेश करता है, अर्थात् परमात्मा को जान पाता है।

ज्ञान के साथ अनुष्ठान भगवान् अवश्य ज्ञान करा देगा। कोरा कर्म सफलता नहीं देता, कोरा ज्ञान भी सिद्धि नहीं दिलाता। इसीलिए य० ४०।१४ में कहा—

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

जो कर्म तथा ज्ञान दोनों को साथ प्राप्त करता है वह कर्म के द्वारा मृत्यु—प्रमादादि को पार कर ज्ञान द्वारा अमृत—मोक्ष को प्राप्त करता है।

अर्थात् अनुष्ठान तथा ज्ञान का सहयोग अनिवार्य है प्रकृत में वे शास्त्रगप्पियों की निन्दा है।

यजु० ४०।१२ में भी यही बात है—

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।

कमरत लोगों की अपेक्षा वे अधिक अन्धकार में विचरते हैं जो केवल विद्या—ज्ञान गप्पड़ों में रहते हैं।

कितना आश्चर्य है कि भगवान हमारे भीतर विराजमान है, और उसका ज्ञान नहीं है। यह संसार के आश्चर्यों में यह बड़ा आश्चर्य है। इसका कहने सुनने वाला दुर्लभ है।

आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः (कठोप० १।२।७)

इसका उपदेश करने वाला

विशेष निवेदन

६२ प्रश्नों के उत्तर तीन मास तक दे सकते हैं

समस्त आर्यसमाजो आर्य
।दूवानों आय,सस्थाओं के सभा
क महानुभावों की सेवा में नम्र
वेदन है कि कलकत्ता आर्य विद्
त् सम्मेलन के सभापति की ओर
। छपे ६२ प्रश्नों के उत्तर सब महा
भाव भेजने की कृपा करें जिनके
।स प्रश्नावली पहुच चुकी है। बड़े
बड़े नेताओं और विद्वानों के
त्तर आ रहे हैं, उत्तरों के लिये ३
।स का समय और बढा दिया
या है, आर्य समाज मेरठ ने इस
२ प्रश्नावली को अपने यहा पुन
।पवा कर ३,४ सम्मेलन करके उत्तर
दये हैं, जो अन्य बड़ी समाजों के
लये अनुकरणीय है, सब समाजो
। प्रश्नावली भेजने की व्यवस्था की
।।रही है, जिनको न पहुची हो वह
याय समाज मेरठ से मगा सकते हैं,
मास तक उत्तर की अवधि बढा
। गई है,

१५० विद्वानों की नामावली
।श्नावली में दी गई था, उन से
रा पुन निवेदन है कि वे सब
त्तर देने का अवश्य कष्ट कर,
त्तर लिखने में उन्हें अपना अपमा
। या परीक्षा नहीं समझनी चाहिये,
नके विचारो से आय जनता को
हान् लाभ होगा, सब उत्तर विचार
रते समय पढ जायेंगे उनसे अवश्य
।भ उठाया जायगा, यदि ऐसा नहा
किया जायगा तो आर्य समाज में
एकनेतृत्ववाद चलेगा। वह रोके
नहीं रुकेगा। जनता किसी न किसी
को नेता मान कर चल पड़ेगी। प्रजा
तन्त्र वाद जो आय समाज का
भूषण है नहीं रह पावेगा। सबके
विचार से काय होना परमावश्यक
है।

वर्तमान में आर्य समाज का
भविष्य अत्यन्त ही सकटापन्न हो
रहा है। इसका उद्धार वा निर्णय
होना परमावश्यक है आर्य
समाज' में कोई भी ऐसा व्यक्ति न
होगा जो अपने को विद्वान नहीं
समझता, ऐसी अवस्था मे सबके
विचार लेना परमावश्यक है। सब
के विचार लेकर ही हम अन्तिम
निणय मानने के लिये सब को
बाधित कर सकते हैं।

ऐसे गभीर प्रश्न को यो ही
टाल न दिया जावे यहीं मेरा आर्य
जनता, आय विद्वानों, तथा आर्य
प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो
से नम्र निवेदन है।

इस विषय पर अत्यन्त गभीरता
से विचार किया जाना चाहिय।

पता १ पो० आजमगढ पैलेस
बनारस।

२ सुप्रभात कायालय काशी।

वैदिक धम का सेवक,
ब्रह्मदत्त जिज्ञासु।

परला ही होता है, कोई चतुर ही इसे
।स कर पाता है। किसी निपुण से
शिक्षा पाकर कोई बिरला ही इसका ज्ञाता
ता है। अर्थात् साधारण मनुष्य उसे
हीं जानते, इसीलिए वेद ने कहा कि—
न त विदाथ"।

किन्तु उसे जाने विना शान्ति नहा
मल सकती, उस जानकर ही शान्ति प्राप्त
ती है जैसा कि ऋग्वद १।१६४।३६ में
हा है 'य इतद् विदुस्त इमे समा
ते' जो उसको जान लेते है, वे शाति
रहते हैं।

अर्थात् शान्त प्राप्त क लिए उस
न्तर्यामी का जानना अत्यन्त आवश्यक
। इसी भाव स औपनिषद् ऋषियों न
हा—

तमेवक जानथ, अन्या वाचा
।मुञ्चथ अमृतस्य ए सेतु (मुण्डका
।२५)

उसी एक के पहचानने शेष बात
।ड़ो, मुक्ति का द्वार नहा है।

—

हिन्दू कोड बिल

(पृष्ठ ५ का शेष)

करने के लिय न वृत्त होगा कि जिससे
प्रस्तावित कोड के प्राप्त दायाधिकार
के अनुसार अधिकारी भी वसीयत
के अनुसार अपने प्राप्त स्वत्वाधिका
र सभी निता त वचित हो जाय।
इसका परिणाम कुटुम्बो में आन्त
रिक कलह होगा और अनधिकृत
कुटुम्ब के अधिकारियो में द्रोह
उत्पन्न करेगा। नवीन कानून उनके
हृदय में आशा उत्पन्न करेगा
किन्तु उन आशाओ से वचित किये
जाने पर अन्त कलह उत्पन्न होगा।
परन्तु कानून का उद्देश्य तो मानव
समाज मे साम्य स्थापन मात्र है।

शिशुओं की मृत्यु में कमी

ब्रिटन म शिशुओं का मृत्यु
सख्या बहुत घट गई ह। इस वर्ष
का प्रथम तमाहो तक १०० जीवित
पैदा होन वालो म स कवल ४६
चीज थ। पिछल दस वर्षों की औ-
सत से यह सख्या २५ कम है।
इङ्गलैण्ड और वेल्स में जन्म की दर
१८.६ प्रति हजार, और कुल जन्म
सख्या २,०२,१४० थी। इस सख्या
में ४०४३ मृत शिशु जन्म भी दर्ज है
अथवा २४.३ प्रति हजार जो कि
एक वर्ष पूर्व पहली अवधि क अनु-
सार १.३ कम थी।

पाच वर्ष में—

रक्तहीन सामाजिक क्रांति

अकोला २२ फरवरी। "पाच
वर्ष में गाधी जी क तरीके से देश
में रक्तहीन सामाजिक क्राति होगी।
फलत सरकार में भी परिवर्तन
होगा। मुझे आशा है कि हिंद में
वर्गहीन समाज की स्थापना होगी
और सम्पत्ति का समान वितरण
होगा"। एक सार्वजनिक सभा मे
भाषण करते हुए राष्ट्रपति डा०
पट्टाभि सीतारमैया ने उपर्युक्त
विचार व्यक्त किय।

युक्तप्रांत में डकैतियों का जोर

सयुक्त प्रात मे पडी
डकतिया कुछ रोचक अधिकृत
आकड उपलब्ध हुय ह जिनसे ज्ञात
होता है कि १९४८ मे १९४५ से
तिगुनी अधिक डकैतिया पडी।

प्रान्त के विभिन्न प्रदेशों मे पडी
डकैतियों के सबध मे प्राप्त आकड
इस प्रकार है।

	वर्ष		
प्रदेश	१९४५	१९४७	१९४८
पश्चिमी रेंज	१३४	३२६	४०८
दक्षिणी ,,	१०९	२३४	२८५
उत्तरी ,,	८७	३४०	३९८
केंद्रीय ,,	६३	२५५	२१०
पूर्वी ,,	३७	१२७	११३
गवर्नमेंट रेलवे पुलिस क्षेत्र—	२	१५	३
कुल योग	४४८	१२९७	१३४७

यद्यपि अभी १९४९ के प्रथम दो
मास की डकैतियों के अधिकृत
आकड उपलब्ध नहीं, किन्तु कहा
जाता है कि डकैतियो की रफ्तार
तेज है और इस वर्ष, भय है, कि
कहीं सख्या पहले से अधिक न हो
जाय।

केंद्रीय सरकार का सस्कृत-प्रेम

नयी दिल्ली, १७ जनवरी।
आज हिन्द पार्लमेंट मे प्रश्नोत्तर
काल में शिक्षा मत्री मौलाना आजाद
ने कहा की हिंद सरकार ऐतिहा
सिक और सास्कृतिक दोनों दृष्टियों
से सस्कृत भाषा के अध्ययन का
महत्व समझती है। सरकार ने जो
विश्वविद्यालय कमीशन नियुक्त
किया है वह भी अन्य बातों के अति
रिक्त विश्वविद्यालयों में सस्कृत
शिक्षा के प्रश्न पर विचार करेगा।
चार सस्थाओं को सरकार ने
सस्कृत शिक्षा के लिय २२,०००) की
आर्थिक सहायता दी है। सस्कृत
ओरियंटल इंस्टीट्यूट, पूना—
११,०००) प्राच्यवादी कलकत्ता
१०००) डेक्कन कालेज, पूना ८०००)
और धर्मकोशमडल ९०००) गुरुकुल
कागडी को सरकार २५,०००) देने
का विचार कर रही है।

उद्योगों के राष्ट्रीयकरण मे असमर्थ

—सरदार पटेल

मद्रास, २९ फरवरी भारत के
उप प्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ
भाई पटेल ने विभिन्न व्यवसाय
मण्डलो द्वारा दिये गये एक सयुक्त
मानपत्र के उत्तर में भाषण करते
हुये व्यापारियो से कहा की राष्ट्रीय
करण से आप भयभीत न हो।
मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि
सरकार वर्तमान अवस्था में किसी
भी उद्योग का राष्ट्रीकरण करने मे
नितान्त असमर्थ है। जो लोग
राष्ट्रीय करण की बात करते है वह
कोरी नेतागीरी के लिये करते है।
मैं इस प्रकार की नेतागीरी में
विश्वास नही करता।

सरदार पटेल ने कहा कि कुछ
मजदूर नेता लगातार यह आरोप लगा
रहे है कि सरकार पूजीपतियो की
है। यदि ये लोग सफल होते है तो
परिणाम बड़े भयानक होगे। बर्मा,
चीन, मलाया इत्यादि की घटनायें
हमारे सामने है।

वास्तव में मजदूरो को उचित
नेतृत्व नही मिल रहा है। भाषावार
प्रान्तो के निर्माण की माग के
सम्बन्ध में सरदार पटेल ने कहा कि
इसका निर्णय आपस में सहयोग
से होना चाहिए।

अन्त में आप ने व्यापारियो
से अपील की कि वे राष्ट्र निर्माण
में प्रयत्नशील होकर सरकार का
साथ दें और सहयोग प्रदान करें।

ब्रिटेन में दो हजार भारतीय विद्यार्थी

ब्रिटेन में आजकल एशिया, अ-
फ्रीका और वेस्ट इण्डीज के १०,०००
से अधिक छात्र ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे
है, जिनमे भारत के दो हजार और
पाकिस्तान के बहुत से विद्यार्थी
सम्मिलित है। इनमें से कुछ विश्व-
विद्यालयो मे शिक्षा प्राप्त करते है
और कुछ कारखानो में काम सीख
रहे है। उपनिवेशो से आई २००
नर्सें भी ब्रिटिश अस्पतालों में काम
सीख रही है।

आर्य्य-जगत्

"उभानी में वैदिक विवाह"

उभानी में वसन्तोत्सव पर आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ की कन्या का विवाह श्री प० ब्रजकिशोर जी आर्य मुख्याध्यापक प्रेम विद्या मन्दिर ('प्रेममिल' का स्कूल) के सपुत्र श्री आनन्द स्वरूप जी के साथ पाल जी विद्यालंकार सम्पादक आर्यमित्र। विवाह विधि की व्याख्या श्री आचार्य प० विश्वश्रवा जी लाउड स्पीकर पर करते जाते थे। संस्कार के अवसर पर श्री सत्यतीर्थ जी की रची संस्कृत कविता, (राजगुरु जी का अभिनन्दन, कन्या को उपदेश) बहुत विद्वत्ता तथा भावपूर्ण था। कवि सम्मेलन में श्री

कुर्सी पर बैठे हुए वर वधू और दोनों वधू के भाई

सम्पन्न हुआ। विवाह में आर्य समाज के अनेक विद्वान और नेता तथा कई जिलों से आर्य समाजी भाई उपस्थित हुए॥

निम्न विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है—राजगुरु श्री प० धुरन्धर जी शास्त्री प्रधान आ० प्र० नि० सभा सं० प्रान्त वेदान्ताचार्य सत्यतीर्थ जी प० हरिदत्त जी शास्त्री एम० ए० आचार्य श्री प० विश्वश्रवा जी तथा प० धर्म वसिष्ठ जी तथा श्री अशर्फी लाल जी की हिन्दी कवितायें तथा मौलवी साहब हाई स्कूल की उर्दू कविता बहुत पसन्द की गई। श्री प० भूप राम जी बरेली तथा श्री प० नानूराम जी बदायूं के उपदेशक ने जनता का मनोरंजन किया। विदा के उपरान्त वर वधू ने समारोह सहित आर्य समाज मन्दिर में जाकर यज्ञ किया।

आदर्श विवाह

श्री वै० भगवत स्वरूप जी प्रधान आर्य समाज गढमुक्तेश्वर निवासी की सुपुत्री आयुष्मती सुशीला देवी का पाणिग्रहण संस्कार श्री प० चन्द्रप्रकाश सुपुत्र प० ५ णीधर जी स्याना निवासी के साथ बिना किसी दहेज के १ फरवरी को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

—तारीख ८ दिसम्बर १९४८ ई० को स्वर्गीय लाला अयोध्याप्रसाद जी की आयुष्मती कन्या का पाणिग्रहण संस्कार खडवा निवासी श्री प्रमनारायणजी अग्रवाल के साथ हुआ। वरपक्ष ने आर्यसमाज जसराना (मैनपुरी) को ११ रुपये दान किये। मन्त्री

—तारीख १५ दिसम्बर १९४८ को स्थान सीटगवा (मैनपुरी) में महाशय बद्दनलाल जी की आयुष्मती सु० सन्तोषकुमारी देवी का शुभ विवाह स्वर्गीय महाशय गुलजारी लाल जी के सु० चि० अनोखेलालजी नवादा (मैनपुरी) निवासी के साथ वैदिक रीति से हुआ। १०१) वर कन्या पक्ष से दान दक्षिणा में दिये गये।

विधवा विवाह

३ दिसम्बर आर्य समाज हमीरपुर प्रयत्न से एक युवती विधवा का पुनर्विवाह समारोह पूर्वक मनाया गया इस विवाह के जनसमाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उभय पक्ष की ओर से ४०) विभिन्न संस्थाओं को दान में दिया गया।

आर्यसमाज दार्जिलिंग

आर्य विवाह—

गत १९४८ दिसम्बर १७ शुक्रवार के दिन बेलफास्ट आयर्लेण्ड निवासी स्वर्गवासी स्टेमन लिण्डशे का सुपुत्र श्री नगेन्द्र आर्य (मिस्टर नोम्यान लिण्डशे) वर्तमान जलपाईगुडी डुवर्स कुर्ती चायबगान निवासी का शुभ विवाह ढाका, बैरामाम निवासी एवं वर्तमान दार्जिलिंग मालिस विला कार्लटन होटल के स्वामी स्वर्गवासी पण्डित प्रियकान्त चक्रवर्ती बी ए विद्यारत्न की सुपुत्री श्रीमती अंजली देवी राय के साथ वैदिक विधान अनुसार पण्डित नन्दकिशोर आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न किया गया।

—तारीख २० जनवरी १९४९ को सीनियर हाइय्यर कालिज हसनपुर (मुरादाबाद) के प्रिंसिपल बा० रामशरण जी रस्तोगी की आयुष्मती कन्या सुधा रस्तोगी' का पाणिग्रहण संस्कार सिरसी निवासी म० मुकुन्दरामजी के सुपुत्र चि० र० बा० रामप्रकाश एम एस सी के साथ प० शिवशर्मा जी महामहोपदेशक की अध्यक्षता में पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। वर पक्ष ने ६१) दान भिन्न भिन्न संस्थाओं को दिया।

—मारवाडी वैश्यों में वैदिक विवाह-सेठ रूडमलजी फैजाबाद की सुपुत्री दयावती का विवाह चि० राधेश्याम जी सुपुत्र सेठ जयदयालजी लखनऊ के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सानन्द सम्पन्न हुआ।

वरपक्ष की ओर से विभिन्न संस्थाओं को ५१) और कन्या पक्ष से ७१) दान दिया गया।

—१८ फरवरी को दतियाना जि० मेरठ निवासी चौ० शिवदेवसिंह के सुपुत्र वेदप्रकाश का शुभ विवाह ईकडी निवासी श्री चौ० शिवनाथ सिंह की सुपुत्री मनोजकुमारी के साथ वैदिक रीति के अनुसार श्री प० मूलचन्दजी शास्त्री ने कराया। दान ३५) शालग्राम हाई स्कूल रासना, १५) गुरुकुल डोरली, १०) गुरुकुल बुकुलाना को दिया गया।

—ग्राम जयपुर (मन्ना ढागू) निवासी श्री बलिरामजी के सुपुत्र श्री चितरंजन देवजी एफ ए का शुभ पाणिग्रहण संस्कार ग्राम शिमार (डबरालस्यू) निवासी श्री कृपाराम जी की आयुष्मती सुपुत्री आ० सावित्री देवीजी के साथ १५ फरवरी ४९ को वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। श्री विश्वम्भरदयाल जी आर्य 'प्रेमी' तथा श्री खुशहाल चन्द जी ने संस्कार सम्पन्न कराया। संस्कार का अच्छा असर पड़ा।

गु० कु० वृन्दावन को न भूलिए!

विवाहों का अवसर है। इस अवसर पर दान देना हर एक का कर्तव्य है। विद्यादान से बढकर कोई दान नहीं है इसलिए दानी महानुभाव इस अवसर पर अपनी शिक्षण संस्था गुरुकुल वृन्दाबन का अवश्य ध्यान रक्खें। निम्न महानुभावों का दान हमें प्राप्त हो गया है। ५) श्री प्रह्लादकुमार जी आर्य, हिंडोन, जयपुर ५) श्री नारायण-सहायजी जौहरी हरदोई। मु०अ०

सरकारी अधिकारी ध्यान दें

श्री द्वारिकाप्रसाद शर्मा उपदेशक महावन गढ पो० सगडी, जिला आजमगढ लिखते हैं कि उनपर विपक्षियों के अत्याचार के कारण बहुत विपत्तियां आई हैं। गत ३१ जनवरी को जब वे बाहर गये थे प्रचार कर रहे थे बदमाशों ने घर में घुसकर उनकी धर्मपत्नी को मारा, जिससे उसका हाथ टूट गया और सिर भी फट गया। सामान भी उन्होंने लूट लिया। एस डी एम और एस पी के यहां प्रार्थना देने पर कुछ भी सुनवाई नहीं हुई। क्या अधिकारी वर्ग इधर कुछ ध्यान देंगे?

—श्री ब्रह्ममित्र जी सूचित करते हैं कि पूर्व अंक में प्रकाशित अयोध्या गुरुकुल की रसीद विषयक सूचना निराधार है क्योंकि उनके पास गुरुकुल को कोई रसीद नहीं है।

सूचना

—हिन्दी साहित्य सम्मेलन व हिन्दी विश्व विद्यालय की सं० २००५ का समस्त परीक्षाओं का परीक्षाफल मार्च अन्तिम सप्ताह तक हिन्दी के सभी प्रमुख दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित होगा। परीक्षार्थी व्यर्थ में कोई लिखा पढी न करें।

विवाह के योग्य

२० व १८ वर्ष के दो ब्राह्मण कुमार लड़कों के लिए लडकियां चाहिए। लडकियां स्वस्थ व शिक्षित हों। अल्लमूल ऊंच नीच पर ध्यान नहीं दिया जायगा। श्री घनश्यामलाल नोसेठ २२० हरतीरथ बनारस सिटी।

ब्रह्मचारियों का प्रवेश

४, ५ और ६ मार्च ४९ ई० दयानन्द वेद विद्यालय देहली त्कोत्सव पर २० ब्रह्मचारियों श होगा। यहाँ ऋषिपाठ के अनुसार वर्णोच्चारण से ही र में शिक्षा दी जाती है।

ी रमण विद्यापीठ

ागढ़ राज्य मध्यप्रान्त

ागढ़, १५ फरवरी। विद्या-ो साहित्य विनोद, साहित्य 'तथा साहित्य दिवाकर ओं का केन्द्र स्थापित कराने प्रावेदनपत्र भेजने की अंतिम १५ अप्रैल तथा परीक्षा का नपत्र भेजने की अंतिम तिथि प्रैल, १९४९ कर दी गई है। : परीक्षायें मई में न होकर में होंगी। रजिस्ट्रार

ोत्सव

—आर्यसमाज सहपऊ (मथुरा) तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १० ौर १२ फरवरी सन् ४९ को समारोहपूर्वक मनाया गया। १० को नगरकीर्तन निकला। ो भूमानन्दजी, स्वामी विशुद्धा ी, पं० वाचस्पतिजी शास्त्री सभा, प० रामचन्द्रजी आर्य हुत देहली प० ओमशकरजी थे।

ार्यसमाज रेहरा बाजार का ाचन ता० १७-२-४९ को निम्न र हुआ। ठा० रामसनेहीसिंहजी, , ठा० दुर्गाप्रसादसिंहजी, उप , श्री तालुकदार लाल जी

ोला गोकर्णनाथ समाज का कोत्सव ता० १०, ११ और १२ निश्चित हुआ है।

ार्य समाज रेहरा बाजार का न वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के से १७ फरवरी तक मनाया १७ फरवरी ४९ ई० को ०ार्थसिंह जी ने धनुषबाण के दिखलाए। आर्यसमाज मन्दिर लए निम्नलिखित सज्जनोंने दान कासरूप किया है। ठा राम र्रीसिंह इटहन पुरवा (१००), दर्लसिंह दयन पुरवा ५०), ठा रसाद सिंह इटहन पुरवा २५) श्रीप्रकाशसिंह दयन पुरवा २५), गार्धा प्रसादजी भरवा १०) शिवचन्द्र सिंहजी वनकटवा , श्री चन्द्रशेखर चौबे रहरा न कानूनगो १०), श्री खुरबख्श रजी श्रीवास्तवा तुरन्तपूर १०), दत्त सिंहजी सोनापार ५), महादेवसिंहजी सोनापार ५) श्री गंगाप्रसादसिंहजी सोनाहार ५) श्री अम्बिकाप्रसाद चौबे रेहरा ५), श्री ५), श्री अकबाल नरायन जी रेहरा ५), श्री ननकू प्रसाद हरिजन इटहन पुरवा ५), श्री हरीशंकर जी श्रीवास्तवा चारू १०), श्रीमती धर्मपत्नी श्री राज किशोर लाल तुरन्तपुर ५)। योग २६०)

—बिसौली जिला बदायूँ आर्य समाज का ग्यारहवाँ वार्षिकोत्सव तारीख ११, १२ और १३ फरवरी सन् १९४९ ई. को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। श्री पंडित शिव शर्माजी, महता जैमिनी, श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री के उपदेश हुए। तुलसीराम शर्मा

शुद्धि

आर्यसमाज रसड़ा में इसलाम नामी नव मुसलिम की शुद्धि तारीख २३—१२—१९४८ ई० को श्री नन्द लालजी प्रधान की अध्यक्षता में श्री विन्ध्येश्वरी सिंह सिद्धान्तरत्न वैदिक मिशनरी द्वारा की गई और पूर्व नाम जगी रखा गया। उपस्थित व्यक्तियों ने मिठाई व जल शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथ से सहर्ष ग्रहण किया।

हरिजनों द्वारा यज्ञ

बदायूँ के एक प्रमुख आर्य हरिजन नेता श्री शरणदेव ने उगइया गुरी खेड़े में एक बड़े यज्ञ का आयोजन धूमधाम से किया जिला सुधार सघ के चेयरमैन चौधरी श्री तुलसी रामजी का उपदेश हुआ। प्रथम कुछ संकीर्ण हृदय व्यक्तियों ने यज्ञ में विघ्न करने का इरादा किया परन्तु जिलाधीश महोदय के सुन्दर प्रबन्ध से सब काम सुचारु रूप से होगया

आर्य गु० कु० टटेसर

का उत्सव अति सफल रहा। १९००) दान मे नकद प्राप्त हुए। चौ रतनसिंहजी ने एक कूप बनवाने का वचन दिया, राष्ट्र भाषा हिन्दी बनाये जाने के सबंध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

आर्य वीर दल कार्यालय फुलवा गोविन्द पुर,

ता० १-२-१९४९ दिन मंगलवार को बिहार प्रान्त आर्य वीर दल के प्रमुख प्रान्तीय शिक्षक "श्री परमानन्दजी आर्य के पिता का स्वर्गवास होगया। वे बहुत दिन से बीमार थे। सस्कार में लगभग ४५० आर्यवीर थे तथा आर्य समाज के प्रमुख सदस्य उपस्थित थे। दाह सस्कार वैदिक रीत्यानुसार हुआ। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शांति दे।

सभा की सूचनायें

समाज सुधार आदि कार्यार्थ श्री प० धर्मवीर जी आर्य भण्डा धारी मधुबन जि० आजमगढ निवासी उपदेशक पद पर सभा की ओर से नियुक्त कर दिये गये है उनके पहुँचने पर समाज के मन्त्री महोदय प्रचार का प्रबन्ध करें।

आर्य मित्र की एजेन्सी कानपुर मे।

शाहजहांपुर, चन्दौसी, अमरोहा, फिरोजाबाद, बहराइच आदि कुछ नगरों में आर्यमित्र के लोकल सेल के लिये एजेन्सियां पूर्व से ही वर्तमान हैं।

अब कानपुर के बड़े उत्साही कार्यकर्त्ता श्री० देशबन्धु, जी उप प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर अपने शहर में 'आर्य मित्र' की एजेन्सी खोलने के लिये उद्योग कर रहे है। आशा है कि वह शीघ्र अपने उद्योग मे सफल होंगे और कमसे कम ५० प्रतियां आर्य मित्र की सप्ताह मे लोकल एजेन्सी द्वार कानपुर नगर मे बिक जाया करेगी। देवी प्रसाद जौहरी, स० अधिष्ठात

आ० प्र० सभा का निश्चय

४२-चाँदपुर आर्य समाज आदि मन्दिरो में बारात ठहरने का विषय प्रस्तुत हुआ-यतः आर्य समाज मन्दिरों में बारातें न ठहरने के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा तथा इस सभा के निश्चय हो चुके हैं-अतः इस निश्चय को पुनः दुहराया जावे और सभा की ओर से सर्व समाजों के नाम एक भ्रमण पत्रिका भी जारी की जावे। रामदत्त शुक्ल मन्त्री

आ० प्र० सभा यू० पी०

आर्य समाज मंदिर में बरात न ठहरे

युक्त-प्रान्त के समस्त आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज मन्दिरों मे बारात इत्यादि न ठहरने के सम्बन्ध में सभा की अन्तरंग ता० २ अक्टूबर १९४८ के नि. स० ४२ के अनुसार निम्न प्रकार निश्चय हुआ है। अतः समाजों को चाहिये कि इस निश्चय करें।

आर्य समाज का नव-प्रधान, म नारायनदास आर्य, उपप्रधान म. बलबीर आर्य, मन्त्री, मु. विष्णु आर्य, उ. म. मु. राम जी आर्य, कोषाध्यक्ष मु. आर्य।

(पृष्ठ ४ के चौथे कालम का शेष)
अविश्वास बढ़ता ही जाता है और उनकी योग्यता में सन्देह बढ़ रहा है।

ऐसी अवस्था में व्यावसायिक शांति, सतुलन, आर्थिक समृद्धि केसे सम्भव है? देश चारों ओर संकट व विपत्ति की ओर अग्रसर हो रहा है। देश के सभी नेता 'सहयोग' की अपील करते हैं परन्तु 'तोता रटन्त' के समान इस अपीलों से तबतक कुछ लाभ होने की सम्भावना नहीं है जब तक कि गवर्नमेन्ट स्वय अपने 'मन' को निश्चित रूप से न पहचाने। प्रश्न यह है कि सहयोग किस को दिया जाय? किस आधार पर दिया जाय? गवर्नमैन्ट के प्रमुख प्रवक्ताओं में स्वय मतभेद है, दृष्टिस्पष्टता नहीं है।

'धन' 'श्रम' और 'उत्पादन' में अर्थशास्त्र के मौलिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य करने से देश में कैसे समृद्धि बढ़ सकती है, गड़बड़ द्वन्द तो होगा ही।

जब वर्ग संघर्ष के कारण कारखानों को बन्द करने का प्रश्न सम्मुख उपस्थित होता है तब सरकार की ओर से राष्ट्रीयकरण की धमकी दी जाती है दूसरे शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि हानि का बोझ कर देने वाली जनता पर पड़े—इसी का नाम 'महगाई' है। यह हानिकारक चक्र कबतक चलता रहेगा?

खेद है कि जब कभी कोई बुद्धिमान इस ओर जनता का ध्यान आकर्षित करता है तो उसे पूंजीपतियों, व्यवसायियों का पिठ्ठू व खरीदा हुआ कहा जाता है। विचारणीय यह है कि व्यावहारिकता से दूर, स्वप्न जगत में जनता को पहुँचा देने वाली इस प्रकार की थोथी आकर्षक घोषणाओं द्वारा वोट प्राप्त कर लेने पर भी देश को लाभ होने की कितनी सम्भावना है? क्या पटेल जी का साम यक चेतावनी सुनी जायगी?

त्रावनकोर और कोचीन सरकारें एकीकरणके लिए तैयार

नयी दिल्ली । त्रावनकोर और कोचीन की सरकारों ने देशी राज्य विभाग के मंत्री सरदार पटेल को संयुक्त रूप से यह सूचित कर दिया है कि दोनों ने पारस्परिक एकीकरण का निश्चय कर लिया है।

संयुक्त राष्ट्रों की सहयोग योजना में भारत भी

नयी दिल्ली । भारत ने संयुक्तराष्ट्र संघ की सहयोग योजना में शामिल होने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है । इस योजना के अनुसार भारत सदस्य देशों में उच्च टेक्नीकल ट्रेनिंग लेने के लिए सीमित संख्या में शिक्षार्थी भेज सकता है ।

सरकारी पदोंपर नियुक्त महाराज अपनी रियासतों से भत्ता ले सकते हैं ।

पार्ल्यामेंट में श्री केशव राव के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बतलाया कि जिन महाराजाओं और नरेशों को गवर्नर अथवा किसी अन्य पद पर नियुक्त किया जाता है, उन्हें इस बात का अधिकार है कि वे अपनी रियासतों से भी भत्ता ले सकें ।

स्विस पर्वतारोही दल भारत में

कंचनजंगा में अनुसंधान करेगा

बम्बई, ५ अप्रैल । कंचनजंगा के उन क्षेत्रों का पता लगाने के लिये जहाँ अभी तक कोई नहीं गया है, चार स्विस पर्वतारोहियों का दल वायुयान द्वारा जेनेवा से यहाँ आ गया । यहाँ से ये लोग दार्जिलिंग जायेंगे । इस दल की नेत्री ३२ वर्षीया एन लीस लोहर हैं ।

यह दल कंचनजंगा के पश्चिमी ढालों पर जेन्जुङ पाक के समीप की बड़ी हिम धारा के किनारे अपना अड्डा बना येगा । इन चढ़ाई का आयोजन ज्यूरिच की स्विस पर्वतीय अनुसंधान शाला द्वारा किया गया है ।

बर्मा में करेन विद्रोहियों द्वारा आत्मसमर्पण

रंगून, ५ अप्रैल । रंगून से १० मील उत्तर इसीन में करेन विद्रोहियों द्वारा बिना शर्त आत्मसमर्पण के फल स्वरूप युद्धबन्दी की घोषणा कर दी गयी है । यह समाचार सरकारी पक्ष के क्षेत्रों से प्राप्त हुआ है ।

प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन

लखनऊ, । आगामी १६ और १७ अप्रैल को होने वाले प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत समिति के निर्वाचन में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये —स्वागताध्यक्ष— श्री चन्द्र भानु गुप्त, उपस्वागताध्यक्ष— सर्वश्री सुखदेव बिहारी मिश्र, डा० रामधर मिश्र, डा० दीनदयालु गुप्त, श्री विजयकुमार मिश्र श्री त्रिभुवननाथसिंह तथा श्री भगवतीचरण वर्मा, प्रधान मन्त्री—श्री शिवसिंहसरोज, और श्री कामेश्वर दयाल, मन्त्री—श्रीमती सावित्री अरोड़ा, श्री रमेन्द्र वर्मा तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी, कोषाध्यक्ष —श्री सुरेश प्रकाशसिंह एम० एल० सी० और आय व्यय निरीक्षक—राजनारायण मिश्र । इनके अतिरिक्त कार्य समिति में २५ सदस्य हैं ।

सम्मेलन का उद्घाटन युक्त प्रांत के प्रधान मन्त्री पंडित गोविंदवल्लभ पन्त करेंगे ।

मध्य भारत के प्रधान मन्त्री का त्यागपत्र

ग्वालियर, ५ अप्रैल । मध्य भारत संघ के प्रधान मन्त्री श्री लीलाधर जोशी ने सरदार पटेल के सामने अपना त्यागपत्र पेश कर दिया है । ज्ञात हुआ है कि सरदार पटेल ने उनसे कुछ दिनों और काम चलाने को कहा है ।

रामपुर रियासत का विलीनी करण

रामपुर, ५ अप्रैल । युक्त प्रांत में रामपुर रियासत के विलीनीकरण के प्रश्न का फैसला इसी मास हो जाने की आशा है । इन दिनों सरकारी और गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में विलीनीकरण की जोरदार चर्चा है । यद्यपि सरकारी तौर पर इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है, पर विलीनीकरण लगभग निश्चित ही समझा जाता है ।

रियासत की असेम्बली की बैठक २ अप्रैल को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गयी, यद्यपि उसी दिन रियासत का बजट बहस के लिए पेश किया जाने वाला था । इससे भी जनता का यह विश्वास पुष्ट हो रहा है कि विलीनीकरण जल्दी ही होगा ।

भाषावार प्रांतों का प्रश्न कुछ समय के लिए स्थगित

नयी दिल्ली, ५ अप्रैल । कांग्रेस कार्य समिति ने आज की बैठक में भाषावार प्रांत समिति की रिपोर्ट स्वीकार कर ली । रिपोर्ट में कहा गया है कि भाषावार प्रांतों के निर्माण का प्रश्न कुछ काल के लिए स्थगित कर दिया जाय ताकि इस बीच में हम अन्य आवश्यक समस्याओं को हल कर सकें ।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि यदि जनता का बहुमत भाषावार प्रांत बनाने के पक्ष में ही हो तब तो लोकतंत्र वादी होने के नाते हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा लेकिन पूरे भारत का हित सामने रखते हुए यह सुझाव दिया गया है । सबसे पहले हमें आंध्र प्रांत का ही प्रश्न लेना है और उसे पूरा करने की समस्याओं पर विचार करना है ।

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि उत्तरी भारत में किसी प्रांत की सीमाओं का प्रश्न अभी न उठाया जाय ।

स्मरण रहे कि कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन में कर कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करने के लिये डा० पट्टाभि सीतारमय्या, पं० जवाहर लाल नेहरू तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल की यह समिति बनायी गयी थी ।

श्रीमती पंडित भारत में

बम्बई ५ अप्रैल । श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित कल रात लंदन से यहाँ आगयी ।

एक भेंट में उन्होंने बताया कि भारत और रूस के सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं । उन्होंने कहा कि मैं एक बार भी मार्शल स्टालिन से नहीं मिल सकी ।

श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी १४ वर्ष बाद हैदराबाद में

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी २३ मार्च को आ० स० सुल्तान बाजार के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये हैदराबाद पहुँचे वहाँ आपका भव्य स्वागत किया गया ।

स्मरण रहे हैदराबाद की सरकार ने १४ वर्ष पूर्व उनके हैदराबाद प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाया था जो अनेक प्रयत्न करने पर भी न हट सका । वर्तमान बदली हुई परिस्थिति में हैदराबाद आ० प्र० सभा के मंत्री श्री गंगाराम जी तथा श्री एस० व्यंकट स्वामी जी वकील के निरन्तर प्रयत्न से श्री देहलवी जी पर से यह प्रतिबन्ध हटा । और २३ मार्च को आपने श्री स्वा० अभेदानन्द जी (बिहार) के साथ हैदराबाद में प्रवेश किया ।

अपराधशील बच्चों के सुधार के लिए कानून बनाने की मांग

लखनऊ, ५ अप्रैल । प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं के ७० सदस्यों ने प्रधान मन्त्री प० गोविंदवल्लभ पन्त के पास एक स्मृति पत्र भेजा है जिसमें ऐसे बच्चों के जो अपराध करने के आदी हो गये हैं, सुधार के लिए बाल विषयक कानून बनाने की मांग की गयी है ।

प्रांतीय असेम्बली की काँग्रेस सदस्या श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी ने, जिनका स्मृति पत्र भेजने में प्रमुख हाथ है, एक मुलाकात में ऐसे कानून की उपयोगिता समझाते हुए कहा कि बाल विषयक कानून बम्बई और मद्रास प्रांत में बहुत पहले से जारी हैं । युक्त प्रांत में ऐसे कानून से अनेक बच्चे बरबादी से बच जायगे ।

इस कानून का उद्देश्य बताते हुए आपने कहा कि अपराधशील बच्चों में अपराध को इस कानून की दृष्टि से जुर्म नहीं, गलती समझी जाती है । ऐसे बालक की देखरेख की जरूरत है नकि उसे अपराधी करार देने की । इस कानून के अन्तर्गत बच्चों के लिए सहानुभूति पूर्ण जजों की अदालतें कायम की जाती हैं । अपराधी बच्चे को या तो उसके पिता या रिश्तेदारों के पास शिक्षक की देख रेख में रखा जाता है या सुधार गृह अथवा रोजगार सिखाने वाली संस्था के पास भेजते हैं जहाँ बच्चे को उपयोगी नागरिक बनाने का प्रयत्न किया जाता है । बच्चों के साथ क्रूर या बुरा व्यवहार करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने की व्यवस्था भी ऐसे कानून में ही गयी है ।

शोक समाचार

आर्यजगत को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि श्री प० विश्वम्भरनाथजी (उपप्रधान आ० प्र० सभा पंजाब) का अकस्मात् देहावसान हो गया । आपने जिस लगन से आर्य समाज की सेवा की है वह अनुकरणीय है । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से आपको विशेष प्रेम था । आप गुरुकुल के अधिष्ठाता के भी रहे । ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता के निधन से आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति हुई है । ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा इस क्षति से दुःखी उनके परिवार व आर्य जगत् को धैर्य प्रदान करें ।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजु०

आर्य्यमित्र

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतातये ।

अथर्व ६ । १९ । २

पवित्र कर्ता ईश्वर मुझे सुकर्म करने के लिये, वृद्धि, पुरुषार्थ के लिये, जीवितों के समान रहने के लिये और अहिंसा तथा न्याय के विस्तार के लिये पवित्र करे ।

बुधवार ७ अप्रैल १९४९

आर्य समाजों के वार्षिक निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की आज्ञानुसार वर्षारम्भ की तिथियों में परिवर्तन हो जाने के कारण आर्य समाजों के वार्षिक चुनाव जनवरी या फर्वरी में न होकर अप्रैल में हो रहे हैं ।

इसमें सन्देह ही क्या है कि आर्य समाज भी देश की अन्य राजनैतिक व धार्मिक सभी संस्थाओं के समान ही एक विशेष प्रकार के संक्रान्तिकाल में से गुजर रहा है । देश की सबसे प्रबल और सबसे अधिक शक्तिशाली कांग्रेस जैसी संस्था-भी, जिसके हाथ में देश का शासन सूत्र भी है जयपुर के अपने बड़े भव्य और अभूतपूर्व जनसमूह वाले विशाल सम्मेलन को केवल मेला रूप में परम्परा मात्र समझ कर किंकर्तव्य विमूढ़ हो सकती है तो अन्य छोटी मोटी संस्थाओं का तो कहना ही क्या है ! देश के मूर्धन्य नेता पं० जवाहिर लाल जी नेहरू को वाध्य होकर जयपुर में यह घोषणा करनी पड़ी थी कि अब कांग्रेस के अधिवेशन इस प्रकार के नहीं हुआ करेंगे, जैसा कि यह अधिवेशन हुआ है । उनके इस कथन का चाहे जो भी कारण हो और चाहे किसी स्थिति के वशीभूत होकर उन्हें यह कहना पड़ा हो परन्तु यह तो निश्चित ही है कि उसके स्वरूप में परिवर्तन होगा, कम से कम उसकी कार्य प्रणाली के परिवर्तन में अनिवार्य आवश्यकता अनुभव की जा रही है ।

यह ठीक है कि राजनीति, वारांगनाओं के समान रूप परिवर्तित करती ही रहती है उसमें स्थायित्व और स्थिरता सम्भव नहीं है—परन्तु धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र अधिक स्थिर है । परन्तु स्मरण रखना चाहिये कि वर्तमान युग उच्छृङ्खलता का युग है उसकी गति मति धर्म और सदाचार, मर्यादाओं में बंधकर रहने की नहीं है । इसीलिये स्थिरता, कार्य की गुरुता और शुष्कता को दृष्टि में रखते हुये इस क्षेत्र में काय करने वालों को और भी अधिक सदाचारी, कर्तव्य परायण और आदर्श जीवन यापन करने वाला होना चाहिये ।

इसलिये ही आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था में काम करने वालों में अपने सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा, श्रद्धा और लगन का होना अत्यन्त आवश्यक है । सभी स्थानों पर इस समय विशेष उथल पुथल हो रही है । भारत में गत ३० वर्षों में स्वतन्त्रता का आन्दोलन करते हुये, सम्भवतः अनजाने में, केवल राजनैतिक शान्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से देश नेताओं ने अनेक ऐसी आकर्षक व पारस्परिक व्यवहार में सत्य की प्रतिष्ठा को नष्ट करने वाली घोषणाओं द्वारा हानिकारक सिद्धान्तों और मान्यताओं का प्रचार किया है जिनका दुष्परिणाम अब प्रकट होने लगा है । इन दुष्परिणामों की विभीषिका से, अब जब कि स्वदेश में स्वदेशवासियों का राज्य हो गया है, देश के नेता विकल हैं । चारों ओर कम्यूनिज्म की आंधी चल रही है । इस देश में भी कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों का बोलबाला उन शिक्षित नवयुवकों में हो चुका है जो कि भारत के भविष्य की आधारशिला और निर्माता होंगे—इन्हीं नवयुवकों के हाथ में देश का नेतृत्व होगा ।

गतवर्षों तक जो भारतीय नेता कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों का प्रचार करते न थकते थे, और जो अब भी कभी २ पूर्व के समान ही आन्दोलन करने लगते हैं देश की वर्तमान दुरवस्था को देखकर अपने पूर्व प्रचारित सिद्धान्तों के विरुद्ध चेतावनी देते हुये सुने जाते हैं ।

धीरे २ सभी जगह यह अनुभव किया जाने लगा है कि इस भयानक आपत्ति और तूफान से यदि कोई रक्षा कर सकता है तो वह केवल आर्य समाज जैसी वैदिक सदाचार तथा नैतिकता व आदर्शों की प्रचारक सुसंगठित संस्था ही है और जो ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित वैदिकधर्म के कल्याणकारी सिद्धान्तों के द्वारा देश को सन्मार्ग दिखा सकती है ।

देश की यह अत्यन्त आवश्यक मांग है । परन्तु आर्य समाजों में क्या हो रहा है । अनेक स्थानों पर आर्य पुरुष निर्वाचन के अवसर पर पदों के लिये लड़ते झगड़ते दिखलाई देते हैं—विभिन्न संस्थाओं का स्वार्थ ही सम्भवत. इसका कारण है । इन झगड़ों के विषाक्त वायुमण्डल से ऊपर उठकर ठीक मार्ग प्रदर्शन करनेकी फुरसत किसे है ! कहां है ! शायद योग्यता में भी कमी हो ।

यह ठीक है कि जनता की राजनीति में विशेष रुचि है, सदाचार के आदर्शों की न्यूनता है और राजनैतिक शक्ति प्राप्त हो जाने से मद में मस्त अनेक व्यक्ति जन कल्याणकारी सेवा भावना को परित्याग कर अपना कुत्सित रूप प्रदर्शित कर अनैतिकता के गढे में जहाँ स्वय गिर रहे हैं वहा अपने दल के अतिरिक्त अन्य जनों के हितकारी निर्देश को सुनना भी उचित नहीं समझते । इससे देश में भ्रष्टाचार बढ रहा है परन्तु यह अवस्था देर तक नहीं रह सकती । समय एक सा नहीं रहेगा ।

यदि अवसर रहते आर्य पुरुष सचेत हो जाय तो बिना राजनैतिक दलबन्दी में भाग लिये भ बहुत कुछ उत्तम कार्य कर सकते हैं—वर्ष भरके लिये चुनाव करने के अवसर पर विचार पूर्वक ऐसा निर्वाचन करना चाहिये जिसमे संस्था का संगठन दृढ़ हो, परस्पर प्रेम व सहयोग बढे और आर्य समाज में नवजीवन व स्फूर्ति का सचार हो । आर्य समाज में उन्ही लोगों को पद स्वीकार करना चाहिये जिन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य आर्य समाज की सेवा बनालिया हो, उन्ही व्यक्तियों को अधिकारी चुना जाना चाहिये जिनका मुख्य कार्य क्षेत्र योग्यता और सदाचार आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था के अनुकूल हो और उसमें उनकी रूची भी हो ।

समाजों में धीरे २ शिथिलता बढ़ती हुई अनुभव की जा रही है कुछ व्यक्ति निराशा जनक बातें करते हुये भी सुने जाते हैं परन्तु यदि किसी स्थान में १० ५ आर्य बन्धु भी लगन से कार्य करने वाले हो, उनमें से कोई भी समय की आवश्यकता को पहचान सके और दलबन्दी व क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठकर बिखर रहे आर्य पुरुषों का एक संगठन में संगठित कर सके तो न केवल उसका अपना ही कल्याण होगा अपितु आर्य समाज, आर्य जाति, देश की उन्नति और आर्य संस्कृति की रक्षा का ऋषि दयानन्द का महान उद्देश्य सफल होकर ऋषि ऋण को चुकाने का अवसर भी प्राप्त होगा ।

आशा है आर्य पुरुष भविष्य के अन्धकार संघर्ष में विजयी होने के प्राप्त इस सुअवसर का लाभ उठाकर उचित निर्वाचन कर समाज में उमंग उत्साह और स्फूर्ति उत्पन्न करने का यत्न करेंगे ।

नागरिक अधिकारों की रक्षा

पृथक न्याय विभाग

पटना हाईकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस सर क्लिफोर्ड मनमोहन अग्रवाल ने गतवर्ष बिहार प्रान्तीय जुडीशल आफीसरों की कान्फ्रेन्स में शासन विभाग के प्रभाव से सर्वथा पृथक स्वतन्त्र न्याय विभाग स्थापित करने की आवश्यकता पर विशेष बल देते हुये, प्रजा के नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये इस को अत्यन्त आवश्यक बतलाया था । अनेक विचित्र और चौंकादेने वाले उदाहरण देकर उन्होंने इस ओर ध्यान आकर्षित किया था कि राजनीति में प्रमुखता पा जाने वाले व्यक्तियों की न्याय में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति इस सीमातक बढ गई है कि उससे न्याय का उपहास होने लगा है । दुःख की बात यह है कि यह दुष्प्रवृत्ति घटने के स्थान पर अधिकाधिक होती जाती है और उससे व्यक्तियों के नागरिक

अधिकारों पर प्रभावजनक आघात हो रहा है।

बिहार के प्रधानमन्त्री श्री कृष्ण-प्रसाद सिन्हा ने प्रधान न्यायाधीश की इस स्पष्टोक्ति का, सम्भवतः, उत्तर देने के रूप में, गत दिसम्बर मास के अन्त में अपने विचार व्यक्त किये थे।

देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर भी नैतिकता की न्यूनता के कारण जिस प्रकार की अवस्थायें उत्पन्न हो रही हैं विचारशील पुरुष उनसे चिन्तित हो उठे हैं। जनता के नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये उनका ध्यान शासन के अनुचित दबाव से रहित स्वतन्त्र न्याया-लयों की व्यवस्था की अनिवार्यता की ओर तीव्रता से आकर्षित हो रहा है। देश का यह सौभाग्य और उत्तम लक्षण ही समझना चाहिये कि कम से एक एक प्रान्त में ही शासक वर्ग का ध्यान इस आवश्यक विषय की ओर आकर्षित हुआ है इस विषय में विस्तार से और विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया जा रहा है।

इस समय मुख्य विचारणीय प्रश्न नागरिकों की स्वतन्त्रता है, जिस पर गत महायुद्ध के समय से पहिले से ही, न केवल भारत में ही अपितु अनेक योरो-पियन देशों में भी सरकारों द्वारा सम्पूर्ण अधिकारों का अपने अन्दर निहित होने की घोषणा के कारण आक्रमण प्रारम्भ हो गया था परिणाम यह हुआ कि अपराध लगाने वाले मुद्दई ही स्वयं निर्णायक जज बन रहे हैं। युद्ध की अवस्थायें विशेष अवस्थायें थीं उस समय चाहे अनिवार्यता के कारण व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के अपहरण का किसी सीमा तक अपहरण का समर्थन किसी प्रकार किया भी जा सकता हो परन्तु युद्ध समाप्ति के अनन्तर उसका समर्थन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता है।

यह अनुभव किया जा रहा है कि भारत में परिस्थिति बदल जाने पर भी, स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर भी, स्वतन्त्र न्याय प्राप्ति की उच्चदशा न केवल पूर्वा-वस्था को ही प्राप्त नहीं हुई है प्रत्युत वह और भी अधिक कठिन और दुष्कर हो गई है। 'आर्डीनैन्सों' द्वारा शासन का प्रलोभन भी कम नहीं हुआ है और जनता के नागरिक अधिकारों के सम्बन्ध में न्यायालयों का अधिकार क्षेत्र अत्य-धिक संकुचित किया जा रहा है। ऐसी अवस्था में हाईकोर्ट के प्रसिद्ध [illegible] की जनता द्वारा ध्यान में सुनाजाना स्वाभाविक ही था।

प्रधान मन्त्री श्री सिन्हा जी ने स्वीकार किया था "कि इस समय बिहार का ला-युनाइटेड अदालतों और विशेषतः हाईकोर्ट के प्रति गवर्नमैंट के वर्तमान रुख से आशंका पूर्ण हो उठा है"। यह अवस्था न केवल बिहार में ही है परन्तु भारत के अन्य प्रान्तों में भी इसी प्रकार की आशंका अनुभव की जा रही है। निश्चय ही यह प्रवृत्ति न केवल शासन विभाग द्वारा नागरिकों की उचित नागरिक स्वतन्त्रता का ही अपहरण करने वाली सिद्ध होगी अपितु न्यायालयों की अधिकार सीमा को न्यून कर स्वय शासन में तथा देश में भ्रष्टा-चार फैलाने का मुख्य कारण बन जायगी।

मि० सिन्हा ने यद्यपि न्याय विभाग को शासन विभाग से पृथक स्वतन्त्र किये जाने के सिद्धान्त को स्वीकार किया है परन्तु उसे कार्यरूप में परिणत करने में इसलिये असमर्थता प्रकट की है कि प्रान्त में (जमींदारी प्रथा) को समाप्त करने के कारण अधिकतर आफीसर इस कार्य में लग जायेंगे। यदि इस तर्क को स्वीकार कर लिया जाय और यह भी मान लिया जाय कि 'मुन्सिफों' और 'सिविल जजों' को मैजिस्ट्रेटों के अधिकार भी स्थानान्तरित हो जाने के कारण कार्याधिक्य हो जायगा तब तो अप्रत्या-शित समय तक न्याय विभाग के शासन विभाग से स्वतन्त्र होकर कार्य करने की आशा का परित्याग करना पड़ेगा।

जिन नेताओं के हाथ में आज शासन सूत्र है उनका विचार न केवल १०० व पचास वर्ष की सामाजिक आर्थिक व्यव-स्थाओं में परिवर्तन करना है अपितु वे इस देश की हजारों वर्षों की प्राचीन परम्पराओं के स्थान में भी योरोप की 'नवीन व्यवस्था' को स्थापित करना चाहते हैं। यह तो निश्चित रूप से कहा ही नहीं जा सकता कि अभी पाश्चात्यों की यह पश्चिमीय प्रकार की नवीन २ व्यवस्थायें देश में सफल रूप से प्रचलित हो ही जायगी और देश में अव्यवस्था नहीं होगी। और कानून के विरुद्ध शासन मनमाना कार्य नहीं करेगा। अतः देश के कल्याण और जनता की स्वतन्त्रता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि स्वतन्त्र न्याय विभाग की स्थापना को टाला न जाये, अन्यथा योरोप के अनेक स्वतन्त्र देशों के निवासियों के समान ही इस देश की जनता भी स्वतन्त्रता सुख का पूर्ण अनुभव न कर सकेगी।

प्रसन्नता का विषय है कि हमारे इस संयुक्त प्रान्त में बजट प्रस्तुत किये जाने के अवसर पर २८ फरवरी को प्रधान मन्त्री प० पन्तजी ने शासन विभाग से पृथक स्वतन्त्र न्याय विभाग के २ वर्षों में स्थापना किये जाने का आश्वासन दिलाया है और इस वर्ष ही १० जिलों में उक्त व्यवस्था लागू किये जाने की २५ मार्च को घोषणा की है।

यदि न्याय विभाग में प्रारम्भ में ही नवीन व्यक्तियों की अपेक्षा अनुभवी व जानकार न्यायाधीश नियुक्त किये गये तो देश में नागरिक अधिकारों की रक्षा की उत्तम परम्परा स्थापित हो सकेगी। व्यवहार में तो शासन विभाग ही न्याय में अधिकाधिक प्रभाव शाली हो रहा है। देखना यह है कि स्थापित हो रही अवा-ञ्छनीय परम्पराओं की गति रुकती है या नहीं?

आर्य समाजों से

बहुत सी आर्यसमाजें श्री अलगूराय जी शास्त्री एम. एल. ए. तथा सदस्य भारतीय विधान परिषद् को अपने उत्सवों तथा अन्य विशेष अवसरों पर आमन्त्रित करती हैं, जिससे कि उनकी विद्वत्ता व योग्यता से लाभ उठाया जा सके।

श्री शास्त्री जी भी वैदिक संस्कृति से प्रेम होने के कारण आर्य समाजों के आमन्त्रण पर यथा सम्भव अधिक से अधिक समय इधर देने का प्रयत्न करते हैं।

परन्तु इसके साथ साथ इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि श्री शास्त्री जी को यात्रा में विशेष असुविधा न हो क्यों कि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, और आजकल की यात्रायें साधारणतया कष्ट प्रद हैं ही। इसलिये ऐसी व्यवस्था कर देनी चाहिये कि जिससे वे पहले दर्जे में या दूसरे दर्जे की सोने वाली कोच (sleeping couch) में यात्रा कर सकें। इस तरह यात्रा की कुछ सुविधा से समाजें भी अधिक लाभ उठा सकेगी।

मदन मोहन सेठ

का० क० प्रधान आ० प्र० सभा यू० पी०

पुलिस कार्यवही में किया गया खर्च हैदराबाद से

पार्ल्यामेन्ट में रियासती मन्त्री सर-दार पटेल की घोषणा

नयी दिल्ली, १ अप्रैल। पार्लि-यामेंट मे एक प्रश्न के उत्तर में रियासती मन्त्री सरदार पटेल ने कहा कि हैदराबाद में हुई पुलिस कार्रवाही में भारत सरकार का जितना खर्च हुआ है उसका पूर्ण ब्योरा तैयार किया जा रहा है आपने यह भी बतलाया कि इस खर्च को हैदराबाद सरकार से वसूल करने के विषय पर विचार किया जा रहा है।

इसी संबंध में आपने बतलाया कि भारत और विदेशों में हैदराबाद की पुरानी सरकार ने प्रचार कार्य में करीब ५० लाख रुपये खर्च किए हैं इसके अलावा लायक अली मन्त्रि मंडल ने पहले ही संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपने मामले की पैरवी के लिये लगभग साढ़े तीन लाख रुपया अलग करदिया था। इन रकमों में बहुत सी वह बड़ी बड़ी रकमें शामिल नहीं है जो कि ब्रिटेन स्थित हैदराबाद के अफसरों को दी गई थी। इनमेंसे अधिक रकमें तो पाकिस्तानके खाते में डाल दी गयी हैं।

अनेक पूरक प्रश्नोंके उत्तरमें सरदार पटेलने कहा कि लायक अली मन्त्रीमण्डल की नीति यथास्थित समझौते की शर्तोंके विरुद्ध थी।

नोटों पर जार्ज षष्ठ के स्थान पर अशोक स्तंभ

नयी दिल्ली, १ अप्रैल। एक प्रश्न केउत्तर में अर्थ मन्त्री श्री जान मथाई ने पार्लमेन्ट में बताया कि अगले कुछ महीनो में नए प्रकार के नोट प्रचारित किये जायेंगे जिन पर इंगलैंड के सम्राट के चित्र के बजाय अशोक स्तम्भ का चित्र होगा सिक्कों के स्वरूप बदलने का प्रश्न अभी विचाराधीन है।

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में आप ने बताया कि किसी दूसरे मूल्य के नोट अथवा सिक्कों को चलाने का विचार अभी नहीं किया जा रहा है और सरकार वर्तमान मुद्राओं के मूल्य में कमी करने का भी विचार नहीं कर रही है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय में हिन्दी संघ का उद्घाटन

हैदराबाद, । उस्मानियाँ विश्वविद्यालय में २० मार्च को श्री प्रकाश-वीर शास्त्री द्वारा हिन्दी संघ का उद्घाटन, समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। विश्वविद्यालय के छात्रों एवं अध्यापकों में हिन्दी के प्रति अपूर्व लहर उत्पन्न हो गई। विश्वविद्यालय के इतिहास में इस प्रकार का यह प्रथम ही अवसर था।

आर्य समाज और राजनीति

मीमांसा,

(ले० भारद्वाज,)

देहली से प्रकाशित होने वाले उर्दू दैनिक प्रताप ता० २२ मार्च के अङ्क में उसके विख्यात सम्पादक श्री म० कृष्णजी ने अपने नाम से एक लेख "आर्यसमाज और राजनीति" यह शीर्षक देते हुये प्रकाशित किया है। इस लेख में प्रकाशित विचारों के सम्बन्ध में मतभेद और विरोध होना वर्त्तमानकालिक प्रगतिशील युग में नितान्त स्वाभाविक ही है।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली के द्वारा सगठित कलकत्ते में दिसम्बर के अन्त म एक विराट आर्य सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन क नियम सार्वदेशिक सभा ने पूर्व से ही निश्चित कर दिय ह। उन्ही के अनुसार सम्मेलन की कार्यवाही की गई। सम्मेलन का दूसरा उद्देश्य इस प्रकार है, "आय जाति के धामक, राजनीतिक तथा नागरिक (रिलीजियस, पोलिटिकल और सिविल) अधिकारों पर होने वाले आक्रमणों के निवारण के उपाय सोचना तथा उपाय करना" इस उद्देश्य क अनुसार महा सम्मेलन ने अपने निश्चय स १० क दो भागो मे आर्य जगत् क लिय आवश्यक पथ प्रदशन किया। भाग घ और च इस प्रकार है—

(घ) किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिय आवश्यक है कि उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करे, इस कारण यह सम्मेलन भारत के प्रत्येक नर नारी को आदेश देता है कि अपने देश की राजनीति में पूर्ण रूप से भाग ले, साथ ही यह बात उन्हे सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि वे व्यवहार में राजनीतिक वैदोक्त आदर्शों से अणुमात्र भी विचलित न हों।

(च) आर्य सस्कृति तथा आर्य सभ्यता की दृष्टि से वर्त्तमान राजनीति को अधिक-से-अधिक प्रभावित करने के साधनों पर विचार करने तथा आर्यसमाज की राजनैतिक मार्गों को अङ्कित करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की समिति बनाई जाय जो तीन मास के अन्दर सार्वदेशिक सभा में अपनी रिपोर्ट उपस्थित कर दे।

निश्चय १०—भाग घ के अनुसार बनी समिति का अधिवेशन फरवरी के दूसरे सप्ताह में हुआ। उसमे जो कार्यवाही हुई, उसकी रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग मे प्रस्तुत होगी और सार्वदेशिक सभा इस विषय में अन्तिम निर्णय करेगी। किंतु अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि उस समिति के एक सदस्य कि जो अधिवेशन के समय तत्कालिक सभापति बनाय गये थे, और पजाब आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान भी हैं, उन्होंने समिति की कार्यवाही अपने तौर पर अपने लेख में प्रकाशित ही नही की है अपितु उसके विषय में अपनी युक्तिया भी दी है साथ ही पजाब सभा की अन्तरग में यह निश्चय भी स्वीकार करवाया है कि आर्यसमाज को राजनीति में सामूहिक रूप से भाग न लेना चाहिये।

वस्तुत जिस विषय में सार्वदेशिक सभा का निश्चय होना चाहिये था, उसको महाशयजी ने अपनी दूरदर्शिता से पहले ही पास करवा कर प्रकाशित कर दिया।

समिति की कार्यवाही के सम्बन्ध में तथा सार्वदेशिक सभा क होने वाले निश्चय के विषय में अपनी ओर से कुछ न लिखते हुये इस प्रसङ्ग में उन कतिपय पक्तियों और हेत्वाभासों के सम्बन्ध में विवेचन किया जायगा कि जिनको विना ठीक प्रकार पूर्वापर समझने से अनायास आर्य समाज से सम्बन्ध रखने वाले लोगों में भ्रम उत्पन्न हो सकता है, इसलिये एक २ करके पहले उन पर ही विचार किया जायगा,

१ "पहले भी आर्य समाज में एक तबका इस ख्याल का था कि. आर्य समाज को बराबरास्त राजनीति में हिस्सा लेना चाहिये, लेकिन जब से भारत स्वतन्त्र हुआ है कांग्रेसियों को खास अहमियत हासिल हुई है और गैर कांग्रेसी अछूत हो गय ह तब से यह ख्याल और भी जोर पकड गया है कि आर्य समाज को देश की राजनीति पर अपना प्रभाव डालना चाहिये" जिन महानुभावों ने आर्य समाज के वैधानिक स्वरूप से परिचय प्राप्त किया है और वेदादि शास्त्रों के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थो का गम्भीर अध्ययन एव मनन किया है उनके प्रति यदि किसी सज्जन की यह धारणा हो कि जिस की ध्वनि उपर्युक्त वाक्य से निकलती है तो वस्तुत महर्षि के ऋषिऋण के प्रति घोर अकृतज्ञता प्रकट करना मात्र होगा, महर्षि का तो रोम २ अपने देश को सर्वथा स्वतन्त्र ही नहीं अपितु" भारत वर्ष में वैदिक राज धर्मानुसार अखड स्वतन्त्र, स्वाधीन, एव निर्भय राष्ट्र की स्थापना है। उनके उत्तराधिकारी आर्य समाज क सम्बन्ध में एक प्रकार से कोरी अवसरवादिता का आरोप लगाना महान् दुःसाहस का कार्य है, क्या आर्य समाज अवसरवादी बनकर जीवित रहा है और क्या भविष्य में भी इसी नीति से इसको अनुप्राणित करने का कोई दु.साहस कर सकता है, और यदि किसी अथ म भी गैर कांग्रेसी अछूत होगय ह तो क्या इस कलक का उत्तरदायित्व उन्ही महानुभावों क ऊपर नही है कि जिन्होंने अवसरवादितामात्र के सिद्धान्त स लाभ उठाते रहने क लिय आर्य समाज को राज धर्म और उस क अनुसार व्यावहारिक राजनीति क सजीव क्षेत्र स सर्वथा अछूत बनाने म ही अपने को कृतकृत्य माना? परिणाम जो हुआ वह अत्यन्त शोचनीय ही है, आर्य समाज युगप्रवर्त्तक प्रगतिशील और सजीव संस्था न बनकर अनेक अर्थो मे लोगोको अप्रगतिशील, कूटस्थ और आकर्षणरहित प्रतीत होने लगा है, क्या एसी अवस्था में भी "हेय दुःखमनागतम्" हमारे लिये कोई महत्व नहीं रखता ह।

२. "जब निश्चय हो गया कि आर्य समाज को बतौर आर्य समाज पालिटिक्स म भाग न लना चाहिये तो आर्यसम्मेलन क इस आदेश क कि हर एक आर्यसमाजी देश क राजनीति म ज्यादा से ज्यादा भाग ले, कैसे अमली जामा पहनाया जाय इस मकसद क लिय भारतीय लोक सघ कायम किया जाय। भारतीय लोकसघ क मकासिद मजूर करने लिये गए। भारतीय लोकसघ हर एक मजहब व मिल्लत क लिये खुला होगा। जो कोई भी इसके इगराज मकासिद को मानेगा इसका मेम्बर हो सकेगा। लेखक इस अंश को पढते समय आर्य सम्मेलन के दूसरे उद्देश्य क शब्द राजनीतिक तथा नागरिक का साधारण अर्थ समझने वाले भी यह कहने का साहस नही कर सकते हैं कि आर्य सम्मेलन का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं ह। क्यों कि आर्य सम्मेलन और उसक निश्चयों को कौन इफरादी व्यक्तिगत निश्चय कह सकता है। आर्यसम्मेलन का कार्य सामूहिक कार्य ही हो सकता है। विद्वान् महाशय जी को तो सार्वदेशिक सभा के उस सम्मेलन विषयक उद्देश्य नियम निर्माण सम्बन्धी अन्तरग में अपनी वैज्ञानिकता का परिचय देकर सार्वदेशिक सभा को बडी भूल से बचाना चाहिये था। किन्तु तब तो किसी ने कोई आपत्ति नही प्रस्तुत की। आपकी धारणानुसार सम्मेलन में एक समझौते का प्रस्ताव पास हुआ किन्तु उस प्रस्ताव को अमली जामा पहनाने क लिय भारतीय लोक सघ का निर्माण किया जाय कि जिसमे हर मजहब और मिल्लत क लोग सदस्य बन सकें। यदि एक क्षण के लिय यह मान भी लिया जाय कि आर्यसमाज को सामूहिक रूप में राजनीति मे भाग न लना चाहिय तो फिर आर्यसमाज की समष्टि सार्वदेशिक सभा कि जो एक रजिस्टर्ड सस्था है किस प्रकार भारतीय लोक सघ की माता या पिता बनने का अनुष्ठान कर अथवा दत्तक रूप में किसी एसे सन्तान की जननी बन कर अपने को पुत्रवती समझे कि जिस से उसका कोई वैधानिक या धार्मिक अथवा सामाजिक सम्बन्ध

(शेष पृष्ठ १२ में)

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देशानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें, इसलिये जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता"।

सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास।

आर्य संस्कृति की रक्षा कैसे हो ?

(राजगुरु श्री धुरेन्द्रजी शास्त्री, प्रधान आर्य प्रा० प्र० सभा, संयुक्तप्रांत)

वर्तमान युग में उन्नति और प्रगतिशीलता की परिभाषा अथवा इन शब्दों का यह अर्थ नहीं है जो प्राचीन आर्य ऋषि किया करते थे अथवा आचार्य दयानन्द उन्नति के जिस आदर्श की स्थापना करना चाहते थे।

संसार की वर्तमान दशा अत्यन्त विचित्र है पूर्वी तथा पश्चिमी सभी देशों में परिवर्तन इतनी अधिक शीघ्रता व असन्तुलित बुद्धि के कारण किये जा रहे हैं कि नवीन घटना से पूर्व कोई परिणाम निकालने से पहले ही एकाएक अन्य ऐसी अप्रत्याशित और प्रभावकारी घटना हो जाती है कि तुरन्त पूर्व के अनुमानित निश्चय में परिवर्तन करना पड़ता है। इतिहास में घटनाओं का इस प्रकार का चक्र इससे पूर्व भी कभी हुआ था यह अनुमान करने के लिये न तो पर्याप्त उपाय ही हैं न साधन हैं। हाँ ! यह निश्चय है कि हमारे जीवनों में इस प्रकार का संक्रान्तिकाल इससे पूर्व उपस्थित नहीं हुआ था।

जिस प्रकार की क्रान्तिकारी उथल पुथल इस समय राजनीति में हो रही है ठीक उसी प्रकार की उथल पुथल मनुष्यों की मनोवैज्ञानिक दशा व उनके विचारों में भी हो रही है। अनेक प्रकार के "इज्म" की धूम है जिनसे मतिभ्रम उत्पन्न होकर मूर्खता बढ़ रही है।

हमारा पुरातन आर्यावर्त देश भी इस झंझावात से अछूता नहीं बचा है। उसका मस्तिष्क भी यदि विकृत हो उठा है तो उसमें आश्चर्य की क्या बात है ? चारों तरफ का वायुमण्डल ही ऐसा है। ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण देश मृग मरीचिका के मोह में फसकर उस अनन्त दिशा की ओर भाग रहा है जहाँ शान्ति के प्राप्त होने की कोई आशा नहीं है।

भारत में तथा संसार के अन्य देशों में सबसे अधिक भेदजनक विशेषता यह है कि जहाँ अन्य देशों में ज्ञान विज्ञान और सदाचार के आदर्शों में विकास हो रहा है वहां भारत में सहस्रों वर्ष पूर्व अत्यन्त कल्याण कारी उत्कृष्ट संस्कृति सभ्यता ज्ञान-विज्ञान कला व सदाचार का विकास चरम सीमा को पहुँच चुका था इस प्राचीन आर्य जाति के पीछे संस्कृति सभ्यता, शिक्षा दीक्षा, काव्य इतिहास व महापुरुषों के अत्यन्त चमत्कृत इतिहास साहित्य की परम्परा है। हजारों वर्षों की पराधीनता व विकट आपत्तिकाल में भी उसकी रक्षा हो सकी है, परन्तु इस समय देश उन सब सिद्धान्तों को परित्याग कर विदेशी व विजातीय आचार व्यवहार को अंगीकार करता हुआ प्रतीत होता है। भारत में प्राचीन - नवीन, पूर्व-पश्चिम, संयम-भोग, कर्तव्य-अधिकार, वैदिक धर्म-विकासवाद और सत्य-असत्य में देवासुर संग्राम हो रहा है। देश उस संधिस्थल पर खड़ा है जहां जरा सी भूल होते ही विनाश का मार्ग प्रशस्त हो जायगा। राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर भी आशंका है कि कहीं मानसिक दासता के वशीभूत होकर हम दूसरों का अन्धानुकरण न करने लगें, और अपरीक्षित 'इज्मों' के झगडों में पड़कर स्वयं आत्मघात न कर बैठें अतः उन्नति के स्वरूप का ज्ञान होना आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द ने ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के समीक्षास्थल पर लिखा है कि "इन्होंने ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं, खान पान विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। ... अपने पूर्वजों ब्रह्मादि महर्षियों के नाम भी नहीं लेते। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं ... साधुओं की संख्या में ईसा, मूसा, मुहम्मद लिखे हैं, किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नहीं लिखा। तुममें से बहुत से लोगों ने नकल करली, अनुकरण करना किसी बुद्धिमान का काम नहीं है। जब सर्व सत्य वेदों से प्राप्त होता है, जिसमें असत्य कुछ भी नहीं तो उनको ग्रहण करने में शंका करनी अपनी और पराई हानि मात्र कर लेनी है। तुम आर्यावर्त की उन्नति के कारण नहीं हो सके, क्योंकि तुम सब घर के भिक्षुक ठहरे हो।" "इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।"

आचार्य दयानन्द की "उन्नति" का यह आदर्श ६६ वर्ष बीत जाने पर और स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर भी उसी प्रकार अपूर्ण है। इसी में "वैदिक धर्म" "आर्यसंस्कृति" 'आर्यावर्त देश" की उन्नति का का रहस्य प्रकट है, अतः यदि देश की उन्नति अभिप्रेत है तो प्राचीन गुरुकुलादि शिक्षा प्रणाली आर्य परम्पराओं और मर्यादाओं को स्थापित करना अनिवार्य है। सुख का अन्य कोई मार्ग नहीं।

(नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय)

आर्य समाज और लोक संघ

(प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प्रधान सा० दे० आ० प्र० सभा देहली)

कई स्थानों से यह समाचार आया है कि आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिक उत्सवों पर लोक संघ नामक एक नई राजनैतिक संस्था के समर्थन में व्याख्यान दिये जाते हैं और उसे आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा द्वारा सम्मत संस्था बतलाया जाता है। इस प्रकार के प्रचार से भ्रांति उत्पन्न होने का भय है, इस कारण निम्नलिखित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाता है:—

—कलकत्ते के आर्य महा सम्मेलन में आर्य समाज और राजनीति के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव स्वीकार किया गया था उसका अन्तिम भाग निम्नलिखित था:—

—आर्य संस्कृति तथा आर्य सभ्यता की दृष्टि से वर्तमान राजनीति को अधिक से अधिक प्रभावित करने के साधनों पर विचार करने तथा आर्य समाज की राजनैतिक मांगों को अंकित करने के लिये निम्नलिखित सज्जनों की समिति बनाई जाय जो ३ मास के अन्दर सार्वदेशिक सभा में अपनी रिपोर्ट उपस्थित कर दे।"

इस प्रस्ताव के अनुसार बनी हुई समिति की बैठक १४-२-४६ को दिल्ली में हुई। विदित हुआ है कि उसने जो प्रस्ताव स्वीकार किया उसमें लोक संघ नाम की राजनैतिक संस्था बनाने का प्रस्ताव किया गया है। वह प्रस्ताव आर्य महा सम्मेलन के राजनीति सम्बन्धी प्रस्ताव के अनुसार सार्वदेशिक सभा में प्राप्त होगा ही। सभा का अधिवेशन अप्रैल के अन्त में होगा। जब तक सभा उस प्रस्ताव पर अपना मत प्रगट न कर दे तब तक लोक संघ का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं समझा जा सकता। सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्णय हो जाने पर उस निर्णय के अनुसार ही आर्य समाज और संघ का परस्पर सम्बन्ध स्थापित होगा। उससे पूर्व आर्य समाज की किसी भी व्याख्यान वेदी पर लोक संघ के पक्ष या विपक्ष में प्रचार करना सर्वथा अनुचित है। आर्य समाज के अधिकारियों को सावधानता पूर्वक अपनी व्याख्यान वेदी की मान रक्षा करनी चाहिए। उसे सामयिक राजनैतिक वाद-विवाद का अखाडा नहीं बनने देना चाहिए।

उपदेशक सम्मेलन में क्या हो ?

(लेखक—श्री बिहारीलालजी शास्त्री काव्यतीर्थ)

उपदेशक सम्मेलन अब तो हो के ही रहेगा। यह अन्य सम्मेलनों की भाँति निष्फल मेले के समान ही फल हीन रहा तो मित व्ययता और उचित व्यवस्था का उपदेश देने वाले गरीब आर्योपदेशकों के योग्य बात न होगी।

इस सम्मेलन में कुछ सार युक्त कार्य होना चाहिये, मेरी समझ में जो काम आये है उन्हें उपदेशक सम्मेलन के प्रब न्धकों के सामने रखता हूँ आशा है वे इस पर विचार करेंगे।
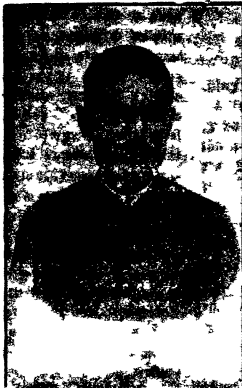
लेखक

१—सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज का एक मान्य ग्रन्थ है इसके प्रमाण कुछ इधर उधर हैं अतः एक समिति विद्वानों की ऐसी बनाई जाय कि सत्यार्थ प्रकाश को असली कापी से मिलावे और यथोचित स्थानों पर टीका टिप्पणी देकर उपदेशकों के सामने प्रस्तुत करे और तब वह छपे। इसी प्रकार ऋषि के अन्य ग्रन्थ तथा अबतक की छपी लिखी प्राप्त सब वेद संहिताओं का मिलान हो। निर्वि वाद शुद्ध ग्रन्थों की बड़ी आवश्यकता है। साथ ही ब्राह्मण सूत्रादि ग्रन्थों का संशोधन हो।

इस के लिये विद्वानों को उचित पारिश्रामक दिया जाय और उसको जुटाना हम लोग अपने ऊपर लें और जनता इस में सहर्ष हाथ बँटायेगी। यह साहित्य सुधार समिति होनी चाहिये।

२—दूसरी एक विद्वत् समिति बने कि जो वैदिक आर्यी योजना को जनता के सामने रखने के लिये ग्रन्थ तैयार करे।

३—तीसरी एक मण्डली रहे जो आर्य समाज की प्रचार प्रणाली समय के अनुसार निर्धारित किया करे। आजकल आर्य समाज की वेदी पर जो जिसके मन में आये बोलता है। विशेषकर क्षमा करें, भजनोपदेशक तो समय की शिकायत ही करते करते बैठ जाते हैं परन्तु घंटे में भी आर्य सिद्धान्त की कदाचित् कोई बात कहते हों। इसी प्रकार कुछ बड़े बड़े वक्ता कोई गाँधीवाद की शिक्षा देते हैं तो कोई समाजवाद का राग अलापते हैं। नेता हमें राजनीति से तटस्थ रहने का आदेश समय समय पर देते रहते हैं। कुछ लोग जनता सोहती बात कहने में सफलता समझते हैं। इन सब प्रभावों से दूर रहकर हम सब आर्योपदेशकों और भज नोपदेशकों को वैदिक धर्म की बात कहनी है। जनता की मन सोहती और पश्चिमी शिक्षा से अभिभूत नेताओं की गुणावली का गायन न करके आत्मवि श्वास के साथ सत्य सत्य कहना है। और उस राजनीति का कि जो अराष्ट्रिय अनात्मिक और अनाचारिणी है बेहिचक विरोध करना है। बेहूदा राजनीति का खण्डन करना, उसकी आलो चना करना ब्राह्मण का अधिकार है। हमारे विद्वानों की एक समिति बने जो भारतभर के उपदेशकों को समय समय पर प्रचार की प्रणाली और उद्देश्य के विषय में निर्देश दिया करे।

४—एक योजना सामाजिक और सांस्कृतिक संघटन की भी इस सम्मेलन में प्रस्तुत हो जिसमें शुद्ध दलितोद्धार और वर्ण व्यवस्था भी रहे और एक वर्ष का कार्यक्रम निर्धारित कर लिया जाय।

५—एक योजना विदेश प्रचार और उस के लिये प्रचारक तैयार करने की है।

६—आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं पर भी विचार हो।

उत्सव का कार्य क्रम—यह उत्सव ब्राह्मणों का है अत यह आध्या त्मिकता से परिपूर्ण हो। ब्राह्ममुहूर्त में उठकर सब उपदेशक संध्या यज्ञ हवन मिल कर करें और फिर वेदपाठ और आध्यात्मिक प्रवचन हो। तदुपरान्त सभा की कार्यवाही और रात को जनता के लिये खुले व्याख्यान भवन हों। सब उपदेशक भजनोपदेशक श्वेतवस्त्र और पीत परिच्छद धारण किये हों।

आर्य जनता का कर्त्तव्य—अब तो यह यज्ञ रच ही दिया है अत अपने ब्राह्मणों की लाज रखना आर्य जनता का कर्त्तव्य है। आर्य समाज का उपदेशक सब धर्मों के, धर्म गुरुओं की अपेक्षा निर्धन है, अत इस यज्ञ में आहुति डालना हमारे प्रांत के आर्य भाइयों का विशेष कर्त्तव्य है। कोई भाई एक दिन या सब दिनों के यज्ञ का पुण्य ले लें। कोई सज्जन एक एक समय के ब्रह्मभोज का पुण्य लाभ करें। कोई महाशय मार्ग व्ययादि में सहायता देकर पुण्य के भागी बनें। और समाजों का यह चाहिये कि आर्य सन्यासी आर्योपदेशक भजनोपदेशक लेखक जहाँ जहाँ भी हों उनको यदि वे असमर्थ हों तो मार्ग व्यय देकर सम्मेलन में भेजें। और संस्थाओं के आश्रित रहने वाले उपदेशक प्रचारकों का व्यय संस्थायें उठावें। संकोच के कारण यदि उपदेशक व्यय न माँगे तो आर्यजन उनसे स्वयं पूछें। जहाँ जिस आर्य समाज में उपदेशक हों वैतनिक वा अवैतनिक वहां आर्य समाज उन्हें व्यय देकर भेजे। और वह उपदेशक जो कि अध्यापक प्रोफेसर वा वकील हैं और समय समय पर व्याख्यान देते है इस सम्मेलन में अवश्य पधारें, वह सब ही यहाँ उपदेशक हैं। उपदेशक भजनोपदेशकों को यह शिकायत नहीं करनी चाहिये कि हम पर बुलावा नहीं आया। सबके तो पते भी ज्ञात नहीं हैं अत सबको ही बुलावा है यह समझ कर अवश्य ही आना चाहिये। उन भाइयों का भी आदर मान कम नहीं किया जायगा। संयुक्त प्रांत में यह सम्मेलन है अत. यहाँ के उपदेशक प्रचारकों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ जाता है।

★ ★ ★

भारत तथा अन्य देशों को गेहूं के कोटे

विश्व गेहू - बिक्री समझौते के अन्तर्गत चार वर्ष तक गेहूँ का निश्चित परिमाण खरीदने वाले देशों में भारत भी एक है। निश्चित कोटे में भारत को १९४९ से १९५२ तक प्रत्येक वर्ष १०,४२००० टन अर्थात् ३,८४,८६,९४६ बुशल गेहूँ खरीदना होगा।

मिश्र १,९०,००० टन अर्थात् ११,-८१,३०५ बुशल गेहूँ और सऊदी अरब ५०,००० टन अर्थात् १,८८, ३०,१८५ बुशल गेहूँ प्रतिवर्ष खरीदेंगे।

लिबनान २३,८८,३४१ बुशल और लंका २१,३९,४६५ बुशल गेहूँ प्रतिवर्ष खरीदेंगे।

❋ मधु-गान ❋

आज ये मधु गान मेरा —

गूँज जावे विश्व-नभ में शून्यता का तोड़ घेरा ॥
हों सुझङ्कृत तार तन्त्री के मधुरसंस्कृति स्वरों में
कर रहा हो सत्य क्रीड़ा देवि शुचिता के करों में
भूत-हित की भावना का जाय बन विज्ञान चेरा ॥

ज्योति जागृति-जीवनों मे सब जगत को जगमगाऊँ
पुण्य प्रतिभा के प्रभा-पट प्रीति से मैं पहिन पाऊं
दूर-गत अज्ञान तमसा, ज्ञान का हो सुख सवेरा ॥

देश के अत धार सेवक युवक गण रण धीर हों।
लोक मान्य वदान्य चमक लाल मोती हीर हों
प्राप्त हों शतशत जवाहर जो हरे जग का अंधेरा ॥

विश्व को चिर शान्ति का बस एक यह अवलम्ब है।
मन्तव्य भारत का "प्रणव" मन्तव्य ही अविलम्ब है
सौख्य सुषमा के सदन म वास होगा विश्व तेरा ॥

—कविवर "प्रणव"

गुरुकुलों तथा संस्कृत पाठशालाओं का सम्मेलन-मेरठ

(स्वीकृत प्रस्ताव)

२० मार्च सन् ४९ को आर्यसमाज मन्दिर मेरठ में आर्यसमाज के लगभग सब गुरुकुलों तथा संस्कृत भाषा व आर्य-शिक्षा देने वाली लगभग सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक परिषद् श्री प० प्रियव्रतजी विद्यावाचस्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी के सभापतित्व में सम्पन्न हुई। यह परिषद् अपने प्रकार की प्रथम ही परिषद् थी जिसमें विभिन्न छोटे बड़े गुरुकुलों के इतने अधिक (२८) प्रतिनिधियों ने एकत्र होकर विचार किया।

आर्यप्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त के प्रधान राजगुरु श्री धुरेन्द्रजी शास्त्री और श्री मदनमोहनजी सेठ ने इस परिषद् की योजना इसलिये की थी कि वे सम्मिलित होकर निश्चय करें कि किस प्रकार युक्तप्रान्तीय सरकार द्वारा संचालित संयुक्तप्रांतीय संस्कृत पाठशाला पुनः सङ्गठन समिति तथा 'संस्कृत विश्व विद्यालय' की योजनाओं में सरकार का सहयोग दे सकते हैं और समयानुसार उक्त समिति के कार्य से अपने आप को सम्बद्ध कर शिक्षा स्तर को ऊँचा समान और सरकार द्वारा सम्माननीय बना कर अधिक लाभ उठा सकते हैं।

उपस्थित महानुभावों में श्री प० प्रियव्रतजी आचार्य गु० कु० कांगड़ी, प्रो० धर्मेन्द्रनाथजी मेरठ, प० रामदत्तजी शुक्ल रजिस्ट्रार, पं द्विजेन्द्रनाथजी कुलपति, प० विश्वेश्वरजी आचार्य, प० धर्मपालजी विद्यालंकार गु० कु० वृन्दावन, प० हरिदत्तजी शास्त्री एम० ए० महा० ज्वालापुर, प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु बनारस, श्री स्वा० वेदानन्दजी तीर्थ वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी कन्या गुरुकुल हाथरस, श्री सरदारसिंहजी व मङ्गलदत्तजी गु० कु० सिरालसा, श्री विप्रदेवजी गु० कु० सिकन्दराबाद, प० बदरीदत्तजी सू० कु० बदायूं, श्री रामकृष्णप्रसादजी व श्री कृपारामजी (गु०कु० गोरखपुर), पं० शिवदयालुजी व श्री यतीन्द्रकुमारजी शास्त्री व कालीचरणजी गु० कु० डोराली, श्री भूतिकान्तजी, प० राजेन्द्रनाथजी वेदतीर्थ देहली, स्वा० व्रतानन्दजी महाराज गु० कु० चित्तौरगढ़, प० शंकरदेव वेद विद्यालय नौरेर, श्री ज्योतिस्वरूपजी आर्य गु० कु० एटा, श्री रघुवीरसिंहजी शास्त्री महा० किरठल, श्री गणेशशंकर वेदतीर्थ गु० कु० धाढ़ी (बुलन्दशहर), श्री दर्शनानन्दजी गु० कु० बुकनाला, प० ब्रह्मदेवजी गुरुकुल नौरेर (मैनपुरी) तथा अन्य अनेक संस्कृत शिक्षा में अभिरुचि रखने वाले सज्जन उपस्थित थे।

सौभाग्य से उक्त सरकारी योजनाओं का संचालन करने के लिये सरकार द्वारा नियुक्त डा० मंगलदेवजी शास्त्री भू० पूर्व प्रिन्सिपल बनारस संस्कृत कालेज तथा सभापति संस्कृत पाठशाला पुनः संगठन समिति भी उन दिनों मेरठ में थे। वे भी पधारे और उनके विचार जानने का भी परिषद् को अवसर प्राप्त हुआ।

उपस्थित सभी महानुभावों ने क्रम क्रम से गुरुकुलों के प्रबन्ध और पाठ विधि में स्वतन्त्र रहते हुये किस प्रकार परस्पर सहयोग पूर्वक कार्य हो सकता है, इस विषय पर अपने अपने विचार प्रकट किये। अन्त में निम्न ३ प्रस्ताव स्वीकार हुये जिनके द्वारा सार्वदेशिक सभा के आधीन ९ व्यक्तियों के गुरुकुलीय शिक्षा मण्डल की स्थापना का निश्चय किया गया जो इस योजना को प्रस्तावों में उल्लिखित उद्देश्यों के अनुसार गति देगा। प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

स्वराज्य प्राप्ति के साथ संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति के पुनरुज्जीवन के लिये भारतीय सरकार और विशेषकर संयुक्तप्रांतीय सरकार जो चेष्टा कर रही है, उसका आर्यसमाज के गुरुकुलों और संस्कृत विद्यालयों का यह सम्मेलन हृदय से स्वागत करता है। आर्यसमाज के गुरुकुलों और संस्कृत विद्यालयों ने इस सम्बन्ध में चार विशेष उद्देश्यों को रक्खा है—

१—प्राचीन आर्ष साहित्य के अध्ययनाध्यापन का पुनरुज्जीवन जोकि प्रायः लुप्त हो चुका था।

२—संस्कृत अध्यापन के साथ आधुनिक विषय, विज्ञान, इतिहास, पाश्चात्य दर्शन, राजनीति आदि का समावेश जिससे संस्कृत पाठ-प्रणाली में नवीन जीवन का संचार हुआ।

३—ब्रह्मचर्य और सरल सादे जीवन के आदर्श का पालन।

४—छूत छात, जात पात के भेद भाव के बिना संस्कृत का व्यापक रूप से अध्यापन।

संस्कृत के पुनरुज्जीवन के लिये होने वाली वर्तमान सरकारी योजनाओं में भी उपर्युक्त उद्देश्यों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। अतएव यह आवश्यक है कि आर्यसमाज की उपर्युक्त संस्थाओं का संस्कृत के पुनरुज्जीवन की योजना में विशेष सहयोग हो, जिससे कि सरकारी योजनायें सफलीभूत हो सकें। आर्यसमाज की उपर्युक्त संस्थायें इस नवीन संस्कृत के पुनरुज्जीवन में सहयोग दे सकें तथा उन संस्थाओं का भी शिक्षास्तर समुन्नत हो सके और पारस्परिक सहयोग से उपर्युक्त संस्थाओं का गौरव बढ़ सके। इसलिये यह आवश्यक है कि आर्यसमाज की उपर्युक्त सारी संस्थायें अपने प्रबन्ध में स्वतन्त्र होते हुये भी शिक्षा के क्षेत्र में एक सूत्र में संगठित हो जावें जिससे उपर्युक्त संस्थाओं का यह संगठन क्रमशः पूर्ण विकास को प्राप्त हो।

(२) यह सम्मेलन निश्चय करता है कि उपर्युक्त निश्चय सं० १ को दृष्टि में रखते हुये एक ऐसे गुरुकुलीय शिक्षा मण्डल की स्थापना की जावे कि जिसमें आर्यसमाज के गुरुकुलों तथा संस्कृत विद्यालयों की प्रत्येक संस्था का कम से कम एक प्रतिनिधि रहे। यह मण्डल सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित हो और आवश्यकतानुसार इसमें अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को सहयुक्त (Co opt) किया जावे और आर्यसमाज के क्षेत्र में आर्ष पाठ विधि, स्वतन्त्र शिक्षा पद्धति के अनुयायी गुरुकुल राजकीय परीक्षाओं से सम्बद्ध विद्यालय तथा कन्या गुरुकुलों के पाठ्यक्रम आदि के निर्धारण के लिये उपसमितियों का निर्माण किया जावे।

यह मण्डल उक्त संस्थाओं के पाठ्य सम्बन्धी परामर्श तथा विचार विमर्ष के साथ साथ आर्यसमाज की अभिमत पाठ पद्धति को गवर्नमेंट द्वारा स्वीकृति के लिये तथा उक्त संस्थाओं के लिये राजकीय सहायता दिलाने तथा गुरुकुलीय शिक्षा के आदर्शों के प्रसार के लिये यथा सम्भव प्रयत्न करे।

(२) उक्त प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिये निम्न लिखित महानुभावों की एक समिति निर्माण की जाती है—

प० रामदत्तजी शुक्ल (संयोजक), धर्मपाल विद्यालङ्कार, प० प्रियव्रतजी आचार्य, प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु, प० हरिदत्तजी सप्ततीर्थ, श्री विश्वेश्वरजी आचार्य, प्रो० धर्मेन्द्रनाथजी, श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी आचार्या, प० राजेन्द्रदेवजी, प० शिवदयालुजी।

हमारे मित्र !

"यदि क, ख, ग, हमारे लिये कुछ नहीं कर सकते न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न अपनी सहानुभूति द्वारा हमें ढाढस बंधा सकते हैं, न हमें अपने कर्त्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रक्खे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियां नहीं सजानी हैं। आज कल जान पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है, कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है जो उसके साथ थियेटर देखने जायेंगे, नाच रंग में जायेंगे, सैर सपाटे में जायगे, भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा यदि ये जान पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकलें जिनकी संख्या दुर्भाग्यवश आजकल बहुत बढ़ रही है, यदि उन शोहदों में से निकलें जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन रात बनाव शृंगार में रहते हैं, कुलटा स्त्रियों के फोटो मोल लिया करते हैं, महफिलों में 'ओ हो हो' 'वाह' 'वाह" किया करते हैं, गलियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआं उड़ाते चलते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य, निःसार और शोचनीय जीवन और किसका है? वे अच्छी बातों के सच्चे आनन्द से कोसों दूर है, उनके लिये संसार में न तो सुन्दर और मनोहर उक्ति वाले कवि हुये हैं और न सुन्दर आचरण वाले महात्मा हुये हैं। उनके लिये न तो बड़े २ वीर अद्भुत कार्य कर गये हैं और न बड़े २ ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गये हैं जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्त्विकता की उमगें उठती हैं।

—रामचन्द्र शुक्ल

★ ★ ★

अर्थ मन्त्री डा० मथाई ने पार्लमेंट में बताया कि गत १५ मार्च को खत्म होने वाले १९४८ ४९ वर्ष में कलकत्ता बन्दरगार पर कुल ७२१६००९) वसूली हुई हैं। इसकी २० प्रतिशत रकम जूट उत्पादक प्रान्तों को बाँट दी गयी है। पू० बंगाल को इसका ४५ ३९ प्रतिशत मिला है।

गतांक से आगे:—

अमर आत्मायें

[साहित्याचार्य श्री ब्रह्मदत्त तिवारी 'अमर' साहित्यरत्न एम. ए.]

आज विदा की बेला थी।

संयोग और वियोग का मिश्रण है-संसार। यहाँ एक आता है और दूसरा जाता है, कोई विकसित होता है तो कोई शुष्क होता है। यही संसार का नियम है, काश ····

"मिलन समय सी सुखदाई यदि'
कहीं विदा बेला होती।"

संयोग में प्राप्त होता है सुख, सरसता, मधुरता पर! वियोग में मिलती है जलन, अशाँति और व्याकुलता।

महात्मा के सुखद आश्रम में आज की ऊषा आग लेकर आई थी। अध्ययन समाप्त हो चुका था, समस्त विद्यार्थी गुरुदक्षिणा ले ले कर गुरुदेव के सम्मुख उपस्थित हुए, प्रत्येक के हृदय में हर्ष और शोक की समानता थी। किसी के थाल में चाँदी के चमचमाते हुये टुकड़ों का ढेर—जिन्हें पाने के लिए संसार व्याकुल है, और किसी के थाल में स्वर्ण-जटित वस्त्र, स्वर्ण मुद्राएँ—जो निधनों का रक्त शोषण कर निर्मित किये गये हैं, एकत्रित की गई हैं। सब के हृदय में आश्रम छोड़ने का दुख और घर जाने की स्वाभाविक प्रसन्नता के साथ साथ सोने और चाँदी का गर्व हृदय फाड़ कर उनके मुखों पर क्रीड़ा कर रहा है, आज कई वर्षों के बाद उन लोगों को ब्रह्मचारी का नीचा दिखाने का अवसर मिला है। सबने साभिमान अपने अपने थालों का परिचय देते हुए दक्षिणा समर्पित की, पर महात्मा की मुखमुद्रा गम्भीर रही। सब के अन्त में ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ। विद्यार्थियों ने उसे खाली हाथ आया हुआ देख कर उसकी ओर कौतूहल पूर्ण नेत्रों से देखा, धन के घमंडी विद्यार्थियों ने गर्व की साँसली, वे मुस्कराए, कुछ ने अवहेलना पूर्ण दृष्टि से उसे देखा, पर वह शुद्ध बुद्ध निर्विकार आगे बढ़ा, चरणस्पर्श करते हुए कहा "गुरुदेव"

"ब्रह्मचारी"

आज विदाई के इन दुखदायी क्षणों में भी चरणों में समर्पित करने के लिये श्रद्धा के चार फूल लौंगों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। गुरुदेव। यह तुच्छ उपहार स्वीकृत हो।

गुरुदेव ने गम्भीर स्वर में कहा "ब्रह्मचारी, मैंने तुम्हें जो शिक्षा दी है मैंने तुम्हें जिस श्रम से योग्य बनाया है, उसका मूल्य चार फूल लौंगे कदापि नहीं चुका सकतीं। मुझे पूर्ण रूप से मेरी दक्षिणा मिलनी चाहिये।

वायु मण्डल में गम्भीर नीरवता छा गई, आश्रम की शाँति यह दृश्य देख रही थी, पादप पुष्प गुरु शिष्य संवाद सुन रहे थे। विद्यार्थियों ने एक दूसरे की ओर देखा! ब्रह्मचारी के मुख मण्डल पर करुणा नाच उठी, वह विकम्पित स्वर में चरणों पर सर रखता हुआ बोला "प्रभुवर, इस से अधिक इस निर्धन के पास कुछ नहीं है, दूसरों की पुस्तकों से पढ़ने वाले, केवल दो छटांक चने और दो कौपीन पर षट् ऋतुओं का भार वहन करने वाले मुझ विद्यार्थी के पास कुछ नहीं है।"

"है कैसे नहीं" शान्त स्वरूप गुरुवर ने कहा कोमल स्वर में "ब्रह्मचारी तुम मेरे सामने असत्य भाषण कर रहे हो।"

"असत्य। कभी नहीं गुरुदेव, एक दीन विद्यार्थी कभी असत्य नहीं बोल सकता, मेरे पास कुछ भी तो नहीं है, आप विश्वास करें।"

"कभी नहीं, मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता ब्रह्मचारी! मेरे निमीलित नेत्र देख रहे हैं, तुमने वह अमूल्य धन छिपा रक्खा है, जो इन विद्यार्थियों के पास नहीं है। इनके पास जो कुछ था, इन्होंने हृदय खोल कर मेरे सामने रख दिया, पर तुम अपना अमूल्य धन न दे सके और उसे हम सब लोगों को धोखा कर अब भी छिपाने का प्रयत्न कर रहे हो।

आत्मश्लाघा सुन कर विद्यार्थियों को प्रसन्नता हुई, पर अपने ऊपर असत्य दोषारोपण होता हुआ देखकर ब्रह्मचारी को मानसिक कष्ट हुआ, दुखित हो कर उत्तर दिया "क्या कह रहे हैं आप। मुझ निर्धन के पास कौन सा धन है। आज्ञा हो गुरुदेव, मैं उसे निस्संकोच आप के चरणों में अर्पित करने में अहोभाग्य समझूँगा। शीघ्र आज्ञा हो।" 'पर अधिक आगे बढ़ने के पूर्व तुम्हें वचन बद्ध होना पड़ेगा, वचन देना होगा और वचन दे कर—।" "पीछे नहीं हट सकता गुरुदेव। अग्निदेव साक्षी होंगे, धन क्या, इस शरीर को भी देने में पीछे न हटूँगा।"

गुरुदेव मुस्कराये। उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुये प्यार के स्वर में बोले "ब्रह्मचारी, आज तुम्हारा प्यारा भारतवर्ष अज्ञान के गर्त में पड़ा हुआ कष्ट भोग रहा है, आर्यभूमि के निवासी वेद विहित मार्ग भूलकर विनाश के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। चारों ओर अनाथ एवं विधवाएं, बिलख रही हैं, अनार्ष ग्रन्थों ने आर्ष ग्रन्थों का, पाखंड ने पवित्रता का, अशान्ति ने शान्ति का नाश कर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। हमारे सामने बैठे हुये अन्य समस्त विद्यार्थी वैभवशालियों के पुत्र हैं, इन्होंने विलासिता को क्रय करने की अभिलाषा से अध्ययन किया है, इनके हृदयों में सहानुभूति का, संचार नहीं हो सकता, इसी विद्या से ये कृषकों का, निर्धनों का और श्रम जीवियों का रक्त शोषण करने के लिये नियम बनाएँगे।'

धन पर राख पड़ गई। वीतराग सन्यासी के वाक्यों ने उन सबके स्वाभिमानी हृदयों को नीचाकर दिया। गुरुदेव कहते गये "इनसे विश्वकल्याण की आशा करना व्यर्थ है। अतः तुम उठो, हृदय में साहस भर कर सागर में कूदपड़ो और अपने प्राणों की बलि देकर डूबती हुई आर्य जाति की नौका किनारे लगाकर यश के अधिकारी बनो। कन्या कुमारी से हिमाञ्चल के अंतिम अंचल तक, गान्धार प्रदेश से स्वर्ण प्रदेश तक तुम्हे वेदों का डंका बजाकर एक बार पुनः अन्धकार में दौड़ती हुई तृषित मानवता को प्रकाश में लाना होगा, एक बार फिर 'ओ३म्" का पीत ध्वज संसार में फहराना होगा। यही है मेरी दक्षिणा।"

'हाँ गुरुदेव। आपका आशीर्वाद प्राप्त हो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ आर्य भूमि पर से अज्ञानता का नाश कर ज्ञान का प्रचार करने की। अपने प्राणों की परवाह न कर सोते हुये भारत वर्ष को सन्मार्ग पर लाने की।

ब्रह्मचारी के इन वाक्यों को सु[न कर] ही गुरुवर फिर गम्भीर हो गये। उन[की] मुख मुद्रा देखकर ब्रह्मचारी ने शा[न्त] स्वर से पूछा "क्या आपको मेरी बा[त] पर विश्वास नहीं हो रहा है?

"नहीं"

"नहीं" ब्रह्मचारी ने उदास मुख [से] प्रश्न किया।

"क्यों"

गुरुदेव बोले "बालक! जिसे श[क्ति]शाली मनुष्य भी पराजित नहीं कर सक[ते] प्रबल झंझावात भी जिसके रोएं नहीं हिला सकता जिसे बन्द करने [में] लौह शृंखलाएँ भी असमर्थ हो जा[ती] हैं, उस पराजित करती है, उद्दि[ग्न] करती है बंदी बनाती है—नारी!

नारी में वह शक्ति निवास करती है [जो] मानव मन को सहज ही मुग्ध कर लेत[ी] है। इसलिये कार्यक्षेत्र में आने के पू[र्व] सफलता को सम्भावित बनाने के लि[ये] सर्व प्रथम इस शक्ति पर तु[म्हें] विजय प्राप्त करनी होगी। इन्द्रियों [को] वश में रखकर जीवन पार करना होगा

ब्रह्मचारी के हृदय में उत्साह [की] लहरें उठ रही थी उसने आ[गे] कदम बढ़ाया "गुरुदेव! मुझे अप[ने] ऊपर विश्वास है, इन्द्रियों पर अधिका[र] है, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ आजन्म ब्रह्म[]चारी रह कर देश, जाति एवं धर्म का उद्धार करूँगा। नारी [की] छाया आजीवन मेरा स्पर्श न [कर] सकेगी, वह देवी है, उसे देवी [मान] कर रहना होगा। आप विश्वास करें आप निश्चिन्त रहें।'

गुरुदेव ने प्रसन्न होकर ब्रह्मचा[री] को गले लगाया, बन्द आँखों से आँ[सू] टपकने लगे! प्रात. की नीरवता में [दो] हृदय अलग हो रहे थे।

कोयल कूक उठी, सुमन दल हँस पड़ा।

× + ×

ब्रह्मचारी ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की उसकी पाखंड-खंडिनी पताका ने भारती गौरव का पुन. अपने पद पर प्रतिष्ठित किया। महात्मा के कुटीर की कल्याण कारी भावना आर्यभूमि पर पुन 'ओ३म् विश्वानिदेव" के स्वरों में गूंज उठी। इन गुरुवर और ब्रह्मचारी को आज संसार श्री विरजानन्द तथा महर्षि दयानन्द के रूप में याद कर रहा है!

ये थीं

विश्व का कल्याण करने वाली दो—
अमर आत्माएं।

—०—

कुसंग का ज्वर

मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी २ राज्य का सब काम छोड़ अपने ही मेल के दस पाँच साथियों को लेकर विषय वासना में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था, इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिये गया और उसने एक हसमुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा तो डेमेट्रियस ने कहा—"ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।" पिता ने कहा—"हाँ! ठीक है, वह दरवाजे पर मुझे मिला था।"

स्वास्थ्य-सुधा

छूत की बीमारियां—

कुष्ट

[डा० रा० स० लाल, ए० एम० ओ०, जमरिया]

यदि यक्ष्मा शहरों की बीमारी है तो कुष्ट देहातों का। विशेष रूप से कुष्ट एक चर्म रोग है। एक बार यह दुष्ट रोग यदि घर बना लेता है तो प्रायः जाने का नाम नहीं लेता। घर में एक को होने के बाद फिर उस घर में यह रोग अपना घर बना लेता है।

इससे बचने के लिये आवश्यक है कि रोगी से बचा जाय। अपने परिवार और पड़ोसियों के हित को ध्यान में रखते हुये रोगी को भी चाहिये कि वह घर छोड़कर कहीं गाँव के बाहर एकान्त में झोपड़ा बना कर अकेला रहे। कोढ़ियों के लिये अलग एक गाँव ही बसा देना चाहिये जहाँ उनकी आवश्यकता की सभी चीजें पहुँचा दी जाया करें।

यौन सम्बन्धी बीमारियाँ

क्या आप जानते हैं कि पागलों में ३५, मूढ़ बुद्धि वालों में ४०, अन्धों में ४०—६०, बाँझों में ५०, गर्भपातों ३०—४० प्रतिशत और हृदय और स्नायु सम्बन्धी रोगों में बड़ी संख्या इन्हीं रोगों के द्वारा होती है। संसार भर में ये बीमारियाँ अधिकता से फैली हुई हैं और संसार के प्रत्येक समाज का बहुत बड़ा अनर्थ कर रही हैं। इनसे मनुष्य का आत्मिक, मानसिक, चारित्रिक सामाजिक पतन तो होता ही है शरीर और घर का भी नाश होता है इनमें गर्मी और सूजाक मुख्य हैं।

गर्मी

प्रथम अवस्था में घाव के साथ साथ झिल्टियाँ फूलती हैं। द्वितीय अवस्था में शरीर में फोड़े फुन्सियाँ निकलती हैं झिल्ठियाँ फूलती हैं आँखों, हड्डियों और जोड़ों में असर पहुँचता है। तृतीय अवस्था में शरीर के किसी भी भाग में बड़ा घाव होकर सड़न पैदा होती है और चतुर्थ अवस्था में दिमाग में असर पहुँच कर पक्षाघात इत्यादि बीमारियाँ हो जाती हैं। बीमारी होने के प्रथम दो वर्षों में यह बहुत ही लागू होती है पीछे इसका लागूपन कम हो जाता है।

बीमारी होने के कारण

१—रोगी स्त्री या पुरुष का सहवास।

२—माता के रक्त दोष से गर्भस्थ बालक को भी यह बीमारी हो जाती है।

३—बीमार मनुष्य के व्यवहार में लाये कपड़े, छुरे, दाँत के सामान, हुक्के, गिलास इत्यादि के द्वारा।

४—डाक्टरों, दन्त साजों आदि को कभी २ रोगी मनुष्य के काम में लाये औजारों से जखम पहुँच जाता है और उन्हें भी यह रोग हो जाता है।

५—रोग-ग्रसित दाई का दूध पीने से बच्चे को भी बीमारी हो जाती है।

सूजाक

मूत्र नली में पीड़ा और सूजन होती है पीछे पेशाब में जलन और मवाद आने लगता है किन्तु इस प्रकार के सभी रोग सूजाक नहीं होते। यह रोग प्राय. रोगी के साथ व्यभिचार से ही होता है।

दोनो रोगों से बचने के उपाय

१—सब से उत्तम यह उपाय है कि जीवन सदाचारी हो। आत्म-संयम, आत्माभिमान, समाज और अपने प्रति कर्तव्य, चरित्रोत्थान आदि की दृढ़ शिक्षा बचपन से ही होनी चाहिये। मेरा विचार है कि इस प्रकार की शिक्षा आर्य समाज के पास (गुरुकुलों द्वारा) सब से अच्छी है और आर्य समाज के रास्ते पर चल कर ही लोग इस दुष्ट रोग से बचे रह सकते हैं।

२—नाई के औजार, दूकानों के शरबत, लस्सी, सोडा वाटर आदि पीने के गिलास, डाक्टरों, दन्त साजों और गोदने वालों के औजारों आदि की विशेष सफाई।

३—किन्तु सारा संसार तो क्या सारा भारत भी आर्य समाजी नहीं है कि सभी का चरित्र ऊँचा है। जो फिसलने वाले हैं उनके लिये कुछ औषधियाँ भी हैं जिनका प्रयोग करने से बहुत ही बचाव हो जाता है। किन्तु उन औषधियों की प्रयोग विधि यहाँ नहीं लिखी जा सकती।

सावधान

यदि किसी भूल से इस प्रकार की कोई बीमारी हो गई हो तो शीघ्र ही इलाज कराइये। छिपाइये नहीं। ये रोग भावी सन्तान पर भी अपना असर डालते हैं। विज्ञापन बाजों के चक्कर में मत पड़िये। ऊपरी तकलीफों को दूर करके भीतर भीतर मत सड़िये। तब तक इलाज कीजिये जब तक बीमारी की जड़ न कट जाय।

फिल्म व्यवसाय का सदुपयोग

अमेरिका के स्कूलों में, उद्योग तथा अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में १६ मिली मीटर की चलचित्र फिल्में शिक्षाकार्य के लिए एक उत्तम साधन बनती जा रही हैं। अमेरिकी स्कूलों में १९३६ में ४५८ फिल्म प्रोजेक्टर थे जो १९४६ में ३५,००० से अधिक हो गए। अमेरिका के शिक्षा विभाग का अनुमान है कि १९५० तक वहां के स्कूलों में १,००,००० प्रोजेक्टर प्रयोग में आने लगेंगे।

अमेरिका के एक स्कूल में विज्ञान के विद्यार्थियों को दो वर्गों में विभक्त कर दिया गया। एक दल को फिल्म द्वारा शिक्षा दी गई और दूसरे को साधारण रीति से शिक्षा मिली। परीक्षा में फिल्म से शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी अन्यों की अपेक्षा ४३१ प्रतिशत अधिक उत्तीर्ण हुए। फिल्मी शिक्षा से अध्येतव्य विषय की प्रत्यक्ष जानकारी हो जाती है, जिससे अध्यापकों के कार्य में बड़ी सहायता होती है। इस प्रकार की फिल्मों का व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी हो रहा है। प्रारम्भिक स्कूलों में बच्चों के रहन सहन और शिक्षा पद्धति को देखकर वहाँ के बच्चों में स्फूर्ति होती है। उच्च शिक्षा के स्कूलों में संगीत, भूगोल, इतिहास, कला, साहित्य, जीवशास्त्र, और विज्ञान विषयक फिल्में उपयोग में लाने के लिये उपलब्ध हैं।

चिकित्सा स्कूलों में, ग्रामीण वर्गों में प्रौढ़ शिक्षा तथा औद्योगिक संस्थाओं में टैक्निकल शिक्षा के लिए नये व्यक्तियों को, इन फिल्मों से व्यावहारिक सहायता उपलब्ध होती है। क्या हमारी सरकार तथा निर्माता गण इस व्यवसाय को हल्के व बाजारू स्तर से ऊपर उठाकर देश के लिये उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे!

युद्धान्धों का शिक्षण
(इस चित्र में एक अन्धा व्यक्ति मशीन पर काम रहा है।)

विदेशी बन्दरगाह पर अंग्रेजी मोटरें

कृषि संसार

खाद्य और कृषि सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें

इस समय भारत में साढ़े बारह करोड़ से अधिक व्यक्तियों को कन्ट्रोल प्रणाली द्वारा राशन मिल रहा है।

—देश विभाजन के फलस्वरूप धान की पैदावार में समस्त भारत के ऐसे क्षेत्र का ८६ प्रतिशत भाग भारत संघ में आगया है जिसकी सिंचाई की व्यवस्था है। इसी प्रकार के गेहूँ क्षेत्र का ५२ प्रतिशत भाग भारत में आ गया है।

—संसार में जितने क्षेत्र में मूंगफली की खेती होती है उसका ४५ प्रतिशत भाग भारत में है और मूंगफली का निर्यात करने वाले देशों में भारत का स्थान मुख्य है।

—१६४६-४७ की अपेक्षा १९४७-४८ में भारत में ६ लाख टन अधिक गेहूँ पैदा हुआ।

—देश के ६० विभिन्न कैम्पों में रहने वाले ४ लाख शरणार्थियों को केन्द्रीय खाद्य मन्त्रालय की ओर से खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

× × ×

१९४६-४७ तथा १६४७-४८ में कितने एकड़ भूमि में मुख्य अन्नों की खेती की गयी थी इसके कुछ तुलनात्मक आँकड़े—

(आँकड़े हजारों में)

अन्न	खेतों का क्षेत्रफल एकड़ों में		वृद्धि + कमी —
	१९४६-४७	१९४७-४८	
चावल	६०,६८७	५६,६५६	(–) १,३११
गेहूँ	२४,३४८	२०,२०६	(–) ४१३६
ज्वार	३७,८४४	३५,६६५	(–) २,१७६
बाजरा	२१,४४२	१६,६२६	(–) १,८१६
मक्का	७,८८८	७,७५५	(–) १३३
रागी	५,१७४	५,१०८	(+) ६६
जौ	७,०८२	७,१२७	(+) ४५
चना	१६,६७१	१८,४६८	(+) १,५२७

पैदावार के आँकड़े

आँकड़े हजार टनों में

अनाज	पैदावार		वृद्धि + कमी —
	१६४६-४७	१९४७-४८	
चावल	१६,८५६	१८,७६०	(–) १,०९६
गेहूँ	४,७४४	५,३४८	(+) ६०४
ज्वार	५,२७७	५,७३०	(+) ४५३
बाजरा	२,६६७	२,५२५	(—) १४२
मक्का	२,०३५	२,१११	(+) ७६
रागी	१,४७६	१,३६१	(—) ८५
जौ	२,९४१४	२,४८८	(+) ७४
चना	३,५६६	४,३१०	(+) ७११

पुस्तक-परिचय

कर्म व्यवस्था—(पुरुषार्थ और प्रारब्ध का समन्वय)। ले० श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा। प्रकाशक—यज्ञदत्त शर्मा, निराला प्रेस आगरा। पृष्ठ स० ३२२। मूल्य ४)। साइज २०×३० सोलह पेजी।

बा० पूर्णचन्द्र जी आर्यसमाज के उन व्याख्याताओं व विचारकों में प्रमुख हैं जिन्होंने आर्य-सिद्धान्तों का वैज्ञानिक ढंग पर गहन तुलनात्मक अध्ययन किया है। आर्य समाज के मञ्च से उनके गम्भीर व्याख्यानों द्वारा सदैव ही नवीन ढंग से सिद्धान्तों का नूतन विवेचन होता रहा है। वैदिक धर्म का सबसे प्रमुख मौलिक सिद्धान्त, 'कर्म' और 'कर्मफल' का सिद्धान्त है लोक व्यवहार में जीव के स्वतन्त्र कर्त्ता होने से तदवीर (कर्म) और तकदीर (भाग्य-भोग्य) को ठीक २ न समझ सकने के कारण जहाँ संसार में एक ओर अन्ध श्रद्धा व विश्वास फैल रहा है वहाँ दूसरी ओर अकर्मण्यता व निराशा फैल जाती है। इस गड़बड़ के कारण 'आस्तिकता' और ईश्वर विश्वास नष्ट होकर उच्छृङ्खलता बढ़ रही है। 'कर्म' सिद्धान्त के साथ जीवात्मा, पुरुषार्थ, मृत्यु और प्रारब्ध के मुख्य विषय हैं अतः इन ४ विषयों पर ४ खण्डों में विस्तार से विवेचन किया गया है। ५ वे खण्ड में यम, नियम, पञ्चमहायज्ञ, व्यवहार में सत्य, राजनीति, -शपथ, दुःख, पाप, सभ्यता, ईश्वर दर्शन, आदि ६३ विषयों पर विचार प्रकट किये गये हैं। इन सब विषयों का पाश्चात्य वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से भी तुलनात्मक विवेचन दिया गया है।

पुस्तक सरल, अत्यन्त उपयोगी और 'कर्म' सिद्धान्त के सार को प्रकट करनेवाली है। मृत्यु के अनन्तर आत्माओं से बातचीत करने के प्रश्न पर भी उचित प्रकाश डाला गया है।

कर्म व्यवस्था जैसी उत्कृष्ट पुस्तक प्रकाशन के लिये आर्यजगत आपका आभारी रहेगा। आर्य सिद्धान्तों का अनुशीलन करने वाले प्रत्येक आर्य पुरुष को और सभी आर्य समाजों को अपने २ पुस्तकालय में पुस्तक की एक प्रति रखना चाहिये।

शक्ति रहस्य—(मांस भोजन मीमांसा)। लेखक—पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार। प्रकाशक—आ० प्र० सभा पञ्जाब जालन्धर शहर। पृष्ठ सं० १३५। मूल्य १)।

संसार में आजकल धर्म विरोधी भावना फैलती जा रही है। अतः भोगवाद के इस युग में मांस का व्यवहार भी अधिकाधिक होता जाता है। परिणाम यह है कि जनता की मानसिक दशा अशान्तिक हो गई है और विलास बढ़ रहा है। वैदिक धर्मावलम्बियों का आर्यसमाज जैसी संस्था में 'घास' मांस' के झगड़े के कारण दो दल तक हो गये। पं. यशपाल जी ने धर्म और भोजन का सम्बन्ध', मनुष्य शरीर की स्वाभाविक रचना, शक्ति किसमें है माँस व निरामिष भोजन समीक्षा, भोजनतत्व मीमांसा, वेद व माँस भक्षण आदि विषयों पर पृथक-२ अध्यायों में अत्यन्त उत्तम ढङ्ग से प्रकाश डाला है। पं० जी यतः स्वयं वैदिक प्रचारक हैं, स्वभाव ही से उत्साही, कभी हार न मानने वाले धुनी व्यक्ति हैं अतः पुस्तक में भी यह सब गुण लक्षित हुये हैं। पुस्तक संग्रहणीय और उपादेय है।

प्रकाशतरङ्गिणी—

(कविता संग्रह) रचयिता—प्रकाशचन्द्र कविरत्न। प्राप्ति स्थान प्रकाश कुटीर पहाड़गञ्ज अजमेर व आर्य समाज अजमेर। पृष्ट सं० ९४। मूल्य १)।

प्रकाशचन्द्र जी आर्य समाज के सुप्रसिद्ध कवि, भजनीक, और प्रचारक हैं। आप अत्यन्त भावुक कवि हैं, वैदिक धर्म की धुन है, उत्कट देश भक्त भी हैं अतः आप की कविताओं की धूम है। प्रस्तुत पुस्तक आपकी चुनी हुई उत्कृष्ट कविताओं का संग्रह है। कवितायें सामूहिक रूप से गाने योग्य, जनता को उत्साहित कर देने वाली काव्य रस तथा देश भक्ति और जाति भक्ति व धर्म प्रेम से ओत प्रोत हैं। कवितायें लगभग सभी प्रस्तुत विषयों पर हैं इसलिये सामूहिक गायनों में उसका उपयोग थोड़ा यत्न करने पर भी आसानी से उठाया जा सकता है। पुस्तक संग्रहणीय है।

मस्तिष्क रोग चिकित्सा—

प्रकाशक—कविराज गनेशप्यारे त्रिपाठी, आयुर्वेदभूषण, मुक्तिधाम नीचीबाग, बनारस। इस छोटी सी सुन्दर इस पुस्तिका में विभिन्न उन्मादों के लक्षण और कारणों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है और बनारस में इस बीमारी को दूर करने करने के लिये आयुर्वेदीय चिकित्सालय स्थापना पर बल दिया गया है इस बीमारी से ग्रसित महानुभाव लाभ उठा सकते हैं।

× × ×

१६३८ में भारत में वनस्पति घी का कुल उत्पादन १,३०,००० टन था।

× × ×

भारत में १६४८-४९ में लगभग २,०६,४६,००० एकड़ में ज्वार बोई गई, जबकि पिछले वर्ष ३,१८६२,००० एकड़ में बोई गई थी। बाजरा १,५८,०७,१०० एकड़ में बोया गया, जबकि पिछले वर्ष १,६६३७,००० एकड़ में बोया गया था। मक्का ६६,३०,००० एकड़ में बोई गई जब कि पिछले वर्ष ७३,२६,००० एकड़ बोई गयी थी।

(पृष्ठ ६ का शेष)

सम्भव हो न हो। कहा जा सकता है कि सार्वदेशिक सभा का वैधानिक सम्बन्ध न होते हुये भी उसके आशीर्वाद या मारेल सपोर्ट से बड़ा लाभ हो सकता है, सम्भव है कि सघ अपने शैशवकाल में आशीर्वाद से अनुप्राणित हो सके, किन्तु किसी भी सर्वांगीण राजनीतिक दल, पार्टी अथवा समूह के लिये किसी विजातीय चैरिटेबल, लिटरेरी और साइन्टिफिक सोसाइटी के आशीर्वाद अथवा मारेल सपोर्ट के आश्रय में जीवित रहने या रखने के उद्योग का क्या प्रयोजन है। निश्चय ही यदि सार्वदेशिक सभा से स्वतन्त्र कोई भारतीय संघ विशुद्ध राजनीतिक क्षेत्र में प्रविष्ट होता है और उसमें हर मजहब और मिल्लत के लोगों को सम्मिलित होने की सुविधा प्रदान करता है तो आर्यसमाज, प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजों से तो इस प्रकार के सघ या दल अथवा पार्टी के साथ किसी प्रकार का भी ग्रन्थिबन्धन सम्भव ही नहीं हो सकता है। क्यों कि आर्यसमाजमें तो महाशय जी की धारणानुसार समस्त ससार के लिये जो आर्य समाज बनाया गया है, उसमें एकदेशीय बातों का व्यवहार सम्भव ही नही हो सकता है। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के कर्णधारों को यह भी विचार करना पड़ेगा कि यदि सामूहिक रीति से आर्यसमाज अपने को राजनीतिक ससार के सम्बन्ध में अछूत घोषित करने की नीति को सदा के लिये स्वीकार करले और आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाले नर और नारियों को पूर्णरूप से राजनीति में भाग लेने का आदेश भी दे तो अनायास एक ही आर्य समाज में भारतीय लोक संघी, साम्यवादी, समाज वादी, अराजकतावादी, राष्ट्रीय स्वयसेवकसघी, हिन्दुमहासभाई, कांग्रेसी, सर्वोदयी, अवसरवादी, और आतंक वादी आदि २ सब प्रकार के अनमेल, परस्पर भिन्न और विरोधी विचार एव कार्यक्रमों के लोग अपने अपने विचारों के प्रचार करने के लिये आर्य समाज की वेदियों और समाचार पत्रों के स्तम्भों को अनायास ही साधन बनाने ही नही लगेंगे अपितु वास्तव में आज भी स्वेच्छापूर्वक बनाते हुये पाये जाते है क्या फिर इस सब वेजोड समाज का नाम किसी अर्थ में भी आर्यसमाज हो सकेगा? और क्या इसकी सत्ता भी रह सकेगी? क्या महर्षि दयानन्द सरस्वती का यही अभिमत था कि धार्मिक और सामाजिक कार्यों में तो आर्यसमाज निश्चित और स्पष्ट वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर सामूहिकरूप से अपना कार्य करे और उस कार्य में किसी भी आर्य सभासद् को स्वेच्छाचारिता का अवसर न दिया जाय, किन्तु राजनीतिक व्यवहारों और कार्यों में आर्यसमाज सर्वथा उदासीन, अकर्मण्य, अशक्त, निर्जीव और निस्तेज बना रहे किन्तु अवसरवादिता के अनुसार व्यक्तियों को परस्पर भिन्न अथवा विरोधी विचारों के प्रचार और व्यवहार की पूर्ण छूट देता रहे। वस्तुतः जिस देश में राजनीतिक अराजकता उत्पन्न करने या उसको प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रोत्साहित करने के घातक कार्यों को जो व्यक्ति या समूह करने का दुःसाहस करते है वह न केवल अपने ही स्वार्थों पर कुठाराघात करते है अपितु देशद्रोह के सहज अपराधी अपने को बनाकर राष्ट्रघाती बनते है। आर्य समाज समूहरूप और व्यक्तिगत रूप से किसी प्रकार और किसी अवस्था में भी इस अनार्यजुष्टता का आखेट न कभी बना है और न अब बनाया ही जाना चाहिए। आर्यसमाज जिस किसी देश में होगा, उसके प्रत्येक जीवित और प्रगतिशील व्यवहार में अपनेधर्म और सस्कृति के प्रभाव को अवश्य ही डालता रहेगा। तभी आर्यसमाज के अस्तित्व की सार्थकता है। अन्यथा आर्यसमाज तो कौतुकागार में रखने योग्य वस्तुमात्र बन जायगा। और यदि सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट रूपी तिनके के सहारे आर्यसमाज या सार्वदेशिक सभा अपने को अछूता रखना चाहे तो उनको निश्चितरूप र. समझ लेना चाहिये कि १ आर्यसमाज सोसाइटीज ऐक्ट से सहस्रगुना बड़ा है, २ सोसाटीज ऐक्ट में साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) शब्द में राजनीति (पॉलटिक्स) उसी प्रकार से विद्यमान है कि जैसे गुड में मिठास। ऐसा, राजनीति और आर्य समाज विषयक समिति के किन्हीं २ राजनीति के अग्रणी पडितो का निश्चित मत है। ऐसी अवस्था में महाशय जी आर्यसमाज को राजनीति से कैसे अछूता रखना चाहते हैं?

प्रथम आर्य उपदेशक महा सम्मेलन के लिये
आर्य जनता से दो शब्द

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारक ऋषि भक्त प्रगतिशील आर्य बन्धुओं को यह जान कर प्रसन्नता होगी, कि आर्यसमाज के कार्यक्रम को अधिक प्रभावपूर्ण एव व्यापक स्वरूप देने के लिये १५ से १७ मई तक ऐतिहासिक नगरी लखनऊ में प्रथम आर्य उपदेशक महा सम्मेलन होने जा रहा है। इसमें भारत भर के आर्य उपदेशक जहां भाग लेगे वहां आर्य जनता को भी बड़ी मात्रा में सम्मिलित होकर सम्मेलन को सफल बनाना चाहिये और आर्यसमाज के उस स्वर्णिम युग को फिर से एक बार उपस्थित कर देना चाहिये जब हर आर्यसमाज का सदस्य उपदेशक (मिश्नरी) बन कर काम करता था।

साथ ही दूसरा एक निवेदन यह है कि आर्य ब्राह्मणों के इस विशाल सांस्कृतिक यज्ञ में आपको अपनी आहुतियां किस रूप में देनी चाहिये यह आप स्वयं ही सोच सकते हैं। इस यज्ञ में पड़ी हुई आहुति सहस्रों गुनी बन कर आप तक पहुँचेगी।

शुभ और और उपयोगी कार्य के लिये आर्य जनता ने कभी हाथ नहीं खींचा, मुक्तहस्त होकर सहयोग दिया है। आशा है इसमें भी आर्थिक सहयोग देकर इस धर्म यज्ञ को पूर्ण सफल बनायेंगे।

नोट—सम्मेलन का कार्यालय ५, हिवेट रोड लखनऊ पर १ली जनवरी से अपना कार्य कर रहा है। इसी पते पर सब पत्र व्यवहार करें।

निवेदक—

१—रामचन्द्र देहलवी
२—बिहारीलाल शास्त्री
३—बुद्धदेव विद्यालङ्कार
४—सुखलाल आर्य मुसाफिर
५—रामानन्द शास्त्री (बिहार)
६—नरेन्द्र (हैदराबाद)
७—दीनबन्धु (कलकत्ता)
८—रामचन्द्र विद्यारत्न (सी० पी०)
९—भगुदत्त तिवारी (स्वागताध्यक्ष)
१०—वाचस्पति शास्त्री (महा० स्वा०)
११—प्रकाशवीर, प्रधान मन्त्री सम्मेलन।

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनायें

प्रतिनिधि चित्र

युक्त प्रान्त के समाजों को विदित हो कि वार्षिक प्रतिनिधि चित्र २६ व २८ मार्च को समाजों में डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। जिस किसी समाज में न पहुँचे हों तो कृपया सभा कार्यालय से पुनः मंगालें और २० मई तक दशांश आदि के साथ सभा में भेजते जावें।

सभा व समाजों का वर्ष और निर्वाचन

सभा व समाजों का वर्ष सौर सम्वत् के अनुसार १३ अप्रैल को समाप्त होगा—किन्तु हिसाब किताब की दृष्टि से सभा व समाजों का वर्ष ३१ मार्च १९४९ को समाप्त हो गया।

सभा के निश्चयानुसार १ अप्रैल से ३१ मार्च तक हिसाब किताब का वर्ष नियत किया जाना स्वीकार किया गया।

(अ) आर्य सभासदों की सूची १५ अप्रैल तक तैय्यार की जावे।

(ब) वार्षिक निर्वाचन तथा प्रांतीय सभा के प्रतिनिधियों का निर्वाचन १५ मई तक किया जावे।

(स) वार्षिक चित्र २० मई तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

सभा का वृहदधिवेशन दिनांक ५, ६ जून ४९ को मैनपुरी में होना निश्चित हुआ है। प्रतिनिधियों को चाहिये दूर्वीय प्रत में अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर सभा के अधिवेशन में भाग लें।

५ जून की रात्रि में प्रांतीय आर्य सम्मेलन भी होगा सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिये प्रस्ताव सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रांत का अन्तरंग सभा का अधिवेशन १० अप्रैल १९४९ को सभाभवन लखनऊ में होगा—कृपया सदस्य गण नियत तिथि से पूर्व पधारने का कष्ट करें। रामदत्त शुक्ल सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

उपदेशकों व प्रचारकों को सूचित किया जाता है कि वे जो भी धन गुरुकुल, आर्यमित्र या आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड का प्राप्त करें वह तुरन्त उन उन विभागों को भेज दें, अपने पास कदापि न रोके।

सुरेन्द्रशर्मा कोषाध्यक्ष, आ० प्र० सभा, यू० पी०

आर्य्य-जगत्

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तिलहर (जिला शाहजहांपुर का वार्षिकोत्सव ता० २१, २२, २३, २४ अप्रैल सन् १९४८ ई० को बड़ी धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। कुंवर सुखलालजी आर्य मुसाफिर, पूज्य पं० रामचन्द्रजी देहलवी तथा अन्य उपदेशकों व प्रचारकों के पधारने की आशा है। मंत्री

जिलास्थ सहारनपुर के आर्य समाजों को सूचना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन १५ मई १९४९ दिन रविवार समय १२ बजे स्थान आर्यसमाज मन्दिर लाला पार सहारनपुर में श्री आचार्य वृहस्पतिजी शास्त्री देहरादून निवासी की अध्यक्षता में होगा। जिला समाजों के प्रतिनिधि महोदय समय पर पहुँच कर श्री आचार्यजी को निर्वाचन में सहयोग दें।

—२३-२-४९ को जिला उप प्रतिनिधि सभा बलिया के उपमंत्री डा० सुदर्शनसिंह के अथक परिश्रम के फलस्वरूप रेवती आर्य समाज (बलिया) का साप्ताहिक अधिवेशन हुआ। यह समाज शिथिल हो गया था। इस कार्य में डा० रामचन्द्रसिंह पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहे।

—आर्य समाज मुरेरवा बाजार का पंचम वार्षिकोत्सव चौ० महादेव प्रसाद के सभापतित्व में समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें पं० विद्यानन्द जी स्वामी ब्रह्मानन्द जी रामचन्द्र शर्मा विद्याधर पं० द्विजराज शर्मा आदि के व्याख्यानों और भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा उपस्थित नर नारियों ने २६७) आर्य समाज मन्दिर निर्माण के लिए दान देने के वचन दिये शीघ्र ही लाल साहब अहरा की दी हुई भूमि पर निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया जायगा।

उत्सव

ार्य समाज ज्वालापुर (हरिद्वार) ८० वाँ वार्षिक महोत्सव ४, ५, ार्च को समारोह पूर्वक मनाया । श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ स्वामी आनन्द प्रकाश जी तीर्थ, पं० सुखदेव जी वेद वाचस्पति, आचार्य बृहस्पति जी श्री आर्य नरदेव शास्त्री जी तथा ्री प्रभावती जी के भाषण ।

—आर्य समाज ग्वालियर का ्सव ता० २४ फरवरी से २७ ्वरी तक बड़े समारोह के साथ ाया गया जिसमें स्वा० आत्मा- द जी, स्वा० परमानन्द जी प० वदेव जी विद्यालन्कार, पं० ्यमित्र जी शास्त्री वेद तीर्थ ादि व्याख्याता व अनेक प्रचारक ास्थित थे। देश का नाम आर्य त, राष्ट्रभाषा हिन्दी करने विष- क प्रस्ताव भी पास हुए ।

—आर्य समाज दादरी (बुलन्द हर) का वार्षिक उत्सव ता० १८, १, २० फरवरी को बड़ी धूम धाम मनाया गया ।

—आर्य समाज अड़ींग (मथुरा) अपनी धर्म पत्नी की पुण्य स्मृति में एक कमरा बद्री प्रसाद जी अग्रवाल निर्माण करा रहे हैं जिसकी आधार शिला ता. २२-४-४९ शुक्रवार को प्रातः ८ बजे पूज्य राज गुरु धुरेन्द्र शास्त्री अपने कर कमलों से रखेंगे सेठ जी को इस पुनीत कार्य के लिये अनेक धन्यवाद है ।

—बम्बई आर्य समाज (गिरगाँव विट्ठल भाई पटेल रोड) का ७४ वाँ वार्षिक उत्सव ता. ७-४-१९४९ से ता. १०—४—४९ तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा । ता ७-४-४९ रामनमी के दिन सायकाल नगर कीर्तन जुलूस निकलेगा । ता ८—९ और १६ को चौपाटी पुल के नीचे के मैदान में उत्सव होगा । आर्य समाज के गण्यमान्य विद्वानों तथा स्थानिक नेताओं के धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर प्रवचन होंगे ।

—ग्रा० अतरछेड़ी तै० आँवला जि० बरेली में ता० १५ मार्च १९४९ ई० को आर्य कुमार सभा की योजना के अनुसार होली पर अछूतोद्धार समारोह से मनाया गया जिस में आर्य कुमार अछूतों के गले मिले तथा उन्हें कुँवें पर चढ़ा कर उन के हाथ से पानी पिया ।

—आ० स० सरकड़ा बिजनोर में दयानन्द सप्ताह का कार्य क्रम धूम धाम से मनाया गया, और इसी समय महाशय सौराज सिंह जी व लाला रामकिशन जी व ला० सरजू प्रसाद जी ने १५००) को जगह आर्य समाज मन्दिर व कन्या पाठशाला बनवाने के लिये दान दी ।

—आ० स० अलवर का उत्सव बहुत सफलता से समाप्त हुआ । इसमें श्री स्वा. नित्यानन्द महाराज, श्री देश भक्त कु० चांदकरण जी, श्री ठा० उदयसिंह जी श्री इन्द्रसेन जी प्रेमी, श्री प हर भजनलाल जो वानप्रस्थी, श्री पं० ईश्वर चन्द्र जी दर्शना चार्य आदि विद्वान नेता और भजनोपदेशक पधारे थे । ता० ११ को नगरकीर्तन निकाला गया ।

—श्री प० लोक नाथ शर्मा जी महोपदेशक तर्कवाचस्पति को जो समाजें बुलाना चाहे वे आर्य समाज दीवान हाल देहली के पते पर पत्र व्यवहार करें ।

कोटद्वारा प्रदर्शिनी में प्रचार कार्य

ता० ६ मार्च के कोटद्वारा आर्य समाज के मैदान में जिले के सभी प्रमुख अधिकारियों तथा आर्य वीर दल के स्वयं सेवकों ने मा० गिरधारी लाल जी एक्साइज मिनिस्टर का स्वागत किया तथा एक विशाल जुलूस निकाला तदनन्तर प्रदर्शिनी स्थल पर पहुँच कर मन्त्री महोदय ने समाज सुधार तथा मद्यनिषेद सम्मेलन का उद्घाटन किया ।

डा० विश्व बंधु शास्त्री की अध्यक्षता में एक विराट सभा हुई । जिसमें गढ़वाल की सामाजिक कुरीतियों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया । मा० चौ. साहब ने गढ़वाल की पिछड़ी हुई जातियोंमें आर्यंयुवकों द्वारा की जाने वाली समाज सुधार की प्रगति पर संतोष प्रगट किया । और जनता से हरिजनों के उत्थान में अधिकाधिक सहयोग देने की अपील की । स्वा० दयानन्द की विचार धारा पर प्रकाश डालते हुए सभी वर्गों के लोगों को मिलकर गढ़वाल जिले की अवस्था सुधारने के लिए कुछ सुझाव रखे ।

श्री विश्व बन्धु शास्त्री ने गढ़वाल निवासियों से अपील की कि जनता जन्मगत ऊँच नीच जातियों को भुलाकर भाई २ की तरह मिलकर अपने जिले उन्नति करे ।

आर्यमित्र का पढ़ना प्रत्येक आर्य - परिवार को आवश्यक है

नवाब रामपुर अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति निर्वाचित

अलीगढ़ २८ अप्रैल । अलीगढ़ विश्वविद्यालय कोर्ट की वार्षिक बैठक में नवाब रामपुर को अलीगढ़ विश्व विद्यालय का कुलपति निर्वाचित किया गया ।

श्री वी के. कृष्णमेनन आयरलैंड में भी भारतीय दूत रहेंगे

नयी दिल्ली, १७ अप्रैल । परराष्ट्र विभाग की एक विज्ञप्ति में घोषित किया गया है कि ब्रिटेन स्थित भारतीय हाई कमिश्नर श्री वी० के० कृष्ण मेनन आयरलैंड में भी भारत के दूत नियुक्त हुए हैं । अपने वर्तमान पद के साथ ही आप यह नया कार्य भार भी सभालेंगे ।

१ मई को प्रांत के नये गवर्नर लखनऊ आयेंगे

लखनऊ, सोमवार । युक्त प्रान्त के मनोनीत गवर्नर श्री एच० पी० मोदी १ मई को सन्ध्या समय लखनऊ पधारेंगे । उसी दिन रात को आप गवर्नर की शपथ ग्रहण करेंगे ।

न्याय और शासन विभाग अलग

लखनऊ, मंगलवार । विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि प्रांतीय सरकार के निश्चयानुसार आगामी पहली मई से प्रान्त के लगभग ११ जिलों में जिनमें लखनऊ भी शामिल है, न्याय विभाग एवं शासन विभाग अलग-अलग कर दिया जायगा । इसके अनुसार जूडीशियल मजिस्ट्रेट हाई कोर्ट के अन्तर्गत होंगे और परगना हाकिमों की अदालतों में व्यवस्था सम्बन्धी मामलों के मुकदमे हुआ करेंगे ।

बिहार के गवर्नर दावत से उठकर चले गये

मुजफ्फरपुर, १८ अप्रैल । एक प्रीतिभोज के अवसर पर बिहार के गवर्नर श्री एम० एस० अणे ने दावत खाने से इनकार कर दिया क्योंकि निमंत्रित व्यक्तियों की संख्या राशन योजना के अन्तर्गत निश्चित संख्या से अधिक थी । माननीय गवर्नर के साथ आमंत्रित अन्य सरकारी अधिकारी बिना दावत खाये उठकर चले गये ।

लंका राष्ट्रमंडल में ही रहेगा

कोलम्बो, १७ अप्रैल । लंका के प्रधान मन्त्री श्री डी० एस० सेनानायक ने आज कहा कि राष्ट्र मण्डल में रहने अथवा न रहने के सम्बन्ध में भारत का निर्णय लंका के लिए बड़ा महत्व रखता है । लंका ब्रिटेन के राजा के प्रति वफादार है और चारों ओर का वातावरण भी ब्रिटेन के पक्ष में है ।

प्रधान मन्त्री सेनानायक लन्दन सम्मेलन में भाग लेने के लिए आज विमान द्वारा बम्बई रवाना हो गए ।

कश्मीर में हिंद और पाकिस्तान के कमांडरों में समझौता

श्रीनगर, १८ अप्रैल । कश्मीर में हिन्द की सेनाओं के कमांडर मेजर जनरल थिमैय्या और पाकिस्तानी सेनाओं के कमांडर मेजर जनरल नजीर अहमद की एक बैठक सबेरे ११ बजे हुई । इस बैठक में पाकिस्तान के कमांडर ने उस स्थानों से अपनी फौजों को हटा लेना स्वीकार किया जिन पर पाकिस्तान ने अभी हाल में अधिकार कर लिया था ।

यह बैठक कश्मीर में विराम सन्धि के कुछ मसलों पर विचार करने के लिए हुई थी । स्मरण रहे विराम सन्धि हो जाने के बाद भी पाकिस्तानी सेनाओं ने पिछले कुछ दिनों में भारतीय क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था ।

अखिल भारतवर्षीय

प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन

स्वामी अभेदानन्दजी अध्यक्ष निर्वाचित

युक्तप्रान्त की राजधानी लखनऊ नगर में १५ से १७ मई तक होने वाले प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन के अध्यक्ष आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के विजयी अधिनायक श्री अभेदानन्दजी महाराज चुने गये हैं ।

इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री के. एम. मुंशी १५ मई को करेंगे ।

प्रकाशवीर
प्रधान मंत्री सम्मेलन

रूस शक्ति से ही दबेगा

वाशिंगटन, १६ अप्रैल । अमेरिका के परराष्ट्र मंत्री श्री अचेसनने एक प्रेस सम्मेलन में कहा कि पश्चिमी यूरोप को सशक्त बनाने से सोवियत संघ से समझौता होने की सम्भावना बढ़ती जा रही है ।

आपने कहा कि अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन में पश्चिमी जर्मनी के प्रश्न पर जो समझौता हुआ है उससे पश्चिमी राष्ट्रों की स्थिति मजबूत हो गई है । पश्चिमी यूरोप के आर्थिक पुनरुत्थान के लिए बनाई गई योजना और सशस्त्र आक्रमण रोकने के लिए किया गया अतलान्तिक समझौता भी इसी प्रकार के कार्य हैं जिनसे पश्चिमी राष्ट्रों की मजबूती बढ़ गई है ।

अचेसन ने इस बात पर जोर दिया कि रूस से उसी दशा में बात चीत चलाई जा सकती है जब कि रूस बर्लिन की नाकेबन्दी हटा ले ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सदस्यों के दैवी पथ प्रदर्शन के लिये प्रार्थनाभवन

लेक सक्सेस १८ अप्रैल । संयुक्त राष्ट्र संघ के सेक्रेटरी जनरल श्री त्रिग्वेली के पास ये मांग आ रही थी कि राष्ट्र संघ के प्रधान कार्यालय में एक ऐसा प्रार्थना भवन बनाया जाय जहां सब धर्मों के व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों के दैवी पथ प्रदर्शन के लिए प्रार्थना कर सकें । ऐसा प्रार्थना भवन प्रधान कार्यालय में न्यूयार्क के पूर्वी भाग में बनाने की सेक्रेटरी जनरल ने आज्ञा दे दी है ।

हिमालय की चोटी पर वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित करने का आयोजन

नयी दिल्ली, १६ अप्रैल । इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु में ६ भारतीय वैज्ञानिकों का एक दल भारत सरकार की ओर से यह पता लगाने के लिये हिमालय पहाड़ की यात्रा करेगा कि उसकी किसी चोटी पर वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की जा सकती है या नहीं । गत वर्ष भी एक दल इसी उद्देश्य से हिमालय गया था और उसने कई चोटियों की देखभाल की थी ।

भारत सरकार हिमालय पहाड़ में एक ऐसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित करना चाहती है, जिससे कई काम निकल सकें । यह प्रयोगशाला स्विटजरलैंड की जुगफ्रोजाक प्रयोगशाला के ढंग की होगी और लगभग १५ हजार फुट की ऊंचाई पर स्थापित की जायगी । इस प्रयोगशाला में निम्नलिखित विषयों के अलग-अलग विभाग होंगे । (१) हिम और हिम नदी, तथा उनसे भारतीय नदियों को लाभ (२) नक्षत्र और तारागण की चाल और बनावट का निरीक्षण, (३) ब्रह्माण्ड किरण (४) ऊपर के वायुमंडल की बनावट का सूर्य से प्रकाश का निकलना, उल्का, सीपी रङ्ग के बादलों आदिका अध्ययन, (५) भूगर्भ विज्ञान और भूगर्भ स्थित वस्तुओं की बनावट का निरीक्षण, (६) मध्य एशिया की उच्च सम भूमि सम्बन्धी अन्तरिक्ष विज्ञान, और (७) पशु वर्ग तथा वनस्पति वर्ग का अध्ययन ।

आयरलैंड पूर्ण स्वतन्त्र

डबलिन, १८ अप्रैल । ब्रिटेन के बादशाह से सदियों पुराना संबन्ध तोड कर आयरलैण्ड की सरकार ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और आज से आयरलैण्ड अब एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र है ।

आधी रात के बाद ही तत्काल २१ तोपों की सलामी दी गई और गिरजाघरों के घण्टे बजने लगे । तोपों की सलामी, गिरजाघरों की घण्टा-ध्वनि फौजी परेड और राष्ट्रीय गीत के सुमधुर झंकार के बीच रिपब्लिकन ऐक्ट, १९४८ लागू हुआ ।

प्रेसीडेण्ट केली ने फौजी परेड के अवसर पर सलामी ली । देश के दूर-दूर भागों से भी डबलिन में बहुत से लोग आये हुए थे ।

श्री डी० वेलरा की पार्टी ने समारोह में कोई भाग नहीं लिया । संसार के कई राष्ट्रों ने शुभ कामना के सन्देश भेजे ।

आर्यावर्तीय

प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन में आने के लिये

डिब्बों का रिज़र्वेशन

लखनऊ में १५ से १७ मई तक होने वाले अ० भा० उपदेशक महासम्मेलन के लिये हमारे कार्यालय में जैसे पत्र आ रहे हैं उससे प्रतीत होता है बहुत से स्थानों पर अभी से तय्यारियां प्रारम्भ हो गई हैं । गर्मी के दिनों में दूर से आने में कोई विशेष असुविधा न पड़े इसके लिये सबसे अच्छा प्रकार यह है अपने तथा अपने आस-पास के नगर के व्यक्तियों से परामर्श करके अभी से उस तिथि के लिये डिब्बा रिज़र्व करा लीजिये । रेलवे विभाग अपनी ओर से आजकल पर्याप्त सुविधायें दे रहा है । कई स्थानों पर ऐसी व्यवस्था वहां के सज्जन कर भी रहे हैं ।

इससे आपके स्वागत में भी सुविधा होगी और लखनऊ स्टेशन पर फिर एक बार मथुरा शताब्दी की स्मृति हरी हो जायेगी ।

पहुंचने के समय और ट्रेन से पूर्व ही कार्यालय को ५, हिवेट रोड लखनऊ से सूचित कर दें ।

भवदीय—
प्रकाशवीर, प्रधान मंत्री सम्मेलन

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

मा कस्याद्भुतक्रतू पक्ष भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा ।

ऋ. ५ । ७० । ४

हम शरीरों से किसी का दान भेंट न भोगें । शेष, दायभाग, विरासत मे प्राप्त धन से तथा सन्तान की कमाई से भी न भोगें ।

गुरुवार २४ अप्रैल १९४१

सजीव कार्यक्रम

आधुनिकता का यह एक अद्भुत प्रभाव है कि मानव अपने व्यक्तिगत जीवन मे और सामाजिक एव राष्ट्रीय जीवन क्षेत्रो मे होने वाले विविध प्रकार के कार्यों के विषय मे समय समय पर जिस प्रकार से अनेक योजनाये और कार्यक्रम तैयार करने के आयोजन करता रहता है, उसी अनुपात से उसके सक्रिय प्रयत्न नहीं होते हैं । और इसीलिये जो-२ बड़ी-२ महत्वाकाक्षाओं के साथ प्राय अग्रणी विचारकगण अपने नेतृत्व को सफल बनाना चाहते हैं, उनके विषय मे उनके मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ करते हैं । इस शोचनीय स्थिति के अनेक कारण हो सकते हैं, किन्तु उनमें से एक महत्वपूर्ण कार्यविघातक कारण होता है अवसर के अनुरूप निश्चित योजना को प्रभावपूर्ण विधि से व्यवहार मे न लाना । उदाहरण के लिये यदि कोई अन्यथा सब प्रकार से स्वस्थ व्यक्ति एक सुन्दर बन्दूक ले कर यथेच्छा सब ओर दागने लगे और इस अभ्यास मे अपने को थका ले, किन्तु फिर भी यह सम्भव नहीं है कि उसको एक सफल लक्ष्यभेदी सैनिक कहा जाय । दूसरी ओर एक चतुर सैनिक कि जिसने आवश्यक अभ्यास करके लक्ष्य-भेद करना अच्छी प्रकार सीखा है, उसके लिये बन्दूक उठाने और एक ही बार दाग कर लक्ष्य भेद करने मे न तो अधिक समय की ही अपेक्षा होती है और न विशेष अध्यवसाय करके बहुत से कारतूस ही नष्ट करना आवश्यक है । उसके लिये तो सब कार्य सुकर और प्रयास का परिणाम भी निश्चित सफलता ही होता है । इसी प्रकार व्यक्तिगत कार्य की भाति ही सार्वजनिक बड़े-२ कार्यों की सुसिद्धि के विषय मे नियत लक्ष्य, निश्चित प्रयत्न और अवसरोचित अध्यवसाय करने से सफलता अवश्यभावी हो जाती है, इस तत्व को प्राय व्यक्तिगत कार्यों में और अधिकतर सार्वजनिक योजनाओं के पूर्ण करने के अवसर पर विस्मृत कर दिया जाता है । यही कारण है कि परिश्रम से बनाई गई अनेकों योजनाओ का परिणाम जैसा प्रभाव उत्पन्न करने वाला अभिलषित होता है, वैसा प्राय नहीं होता है ।

अवसर के अनुरूप योजना और तदनुरूप अध्यवसाय सफलता का निश्चित साधन है, तो वर्त्तमान समय और परिस्थिति के अनुरूप हम किस कार्यक्रम को सुविधा के साथ कार्य मे परिणत करे कि अधिक से अधिक प्रभाव और सफलता प्राप्त हो सकती है । इस प्रश्न पर विचार करने वालो के दृष्टि पथ मे अनेक ऐसे कार्य अनायास आ सकते हैं कि जिनको सार्वजनिक हितसाधन के निमित्त आचरण में लाया जा सकता है । ऐसे ही अनेक कार्यो मे से एक ऐसा सार्वजनिक कार्य है कि जिसकी ओर अब तक अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका है । सभी जानते हैं कि हमारे देश के नब्बे प्रतिशत जन ग्रामो मे निवास करते हैं और लगभग पचासी प्रतिशत निरक्षर हैं, इतना ही नहीं अपितु अपने अज्ञान के कारण दरिद्रता और उससे अनायास उत्पन्न होनेवाले अनेकों क्लेश तथा व्याधियां भारतीय जनता को सताती रही हैं । उन सबसे भयकर राजनीतिक दासता की महामारी का अवाछनीय व्यापक प्रकोप था । सौभाग्य से यह राजरोग समाप्त हो गया है किन्तु उसके समाप्त होने पर भी रोगमुक्त कृशगात रोगी के लिये जितनी सावधानी की आवश्यकता होती है, उसमे अणुमात्र भूल होने से अन्य अनेक प्रकार के दोषो का प्रकोप भी सम्भव हो जाता है अतएव विशेष सावधानी की परम आवश्यकता है । अगले दोमासो मे देश के सभी प्रान्तों और प्रदेशो मे अध्यापक, छात्र, वकील और कचहरियों मे कार्य करने वाले अन्य अनेक शिक्षित नागरिक अवकाश प्राप्त करते हैं । इस ग्रीष्मावकाश मे अपने २ निश्चित कार्यों से सर्वथा विरत होने के कारण उन सभी को एक ऐसा सुअवसर मिल जाता है कि जिसको सार्वजनिक हितसाधन योजना पूर्ति में भली भाति उपयोग मे लाया जा सकता है ।

युक्त प्रान्त मे ४९ जिले है, उनमें लगभग ६ करोड जनता निवास करती है, जिनमे से ८० प्रतिशत से अधिक प्रान्त के एक लाख १२ हजारग्रामों में रहते हैं । इन अपने ग्राम वासी भाई और बहनों से साक्षात् सम्पर्क प्राप्त करने, उनकी स्थिति का वास्तविक परिचय प्राप्त करने, उनके दुःख और सुख की वार्ता से अभिज्ञ होने, और परिस्थिति के अनुसार उनके साथ सहानुभूति पूर्वक सहृदयता का व्यवहार करने के लिये यह अत्यावश्यक है कि बड़े २ नगरों, उपनगरो और पुरो के सुशिक्षितजन थोड़ा शारीरिक कष्ट उठाकर ग्रामों मे जावे और निश्चित कार्यक्रमानुसार ग्रामीण जनता के अनेक अभाव जनित कष्टो और बाधाओं को दूर करने के साधनो पाय उनके समक्ष साधु भावना मे प्रस्तुत करे । अपनी निरक्षरता, सीधेपन और अज्ञान के कारण देश के स्वतन्त्र हो जाने पर भी अनेक शासनाधिकारी, तथा कथित नेतागण, उत्कोचग्रहण करने वाले निम्न शासक, भ्रष्टाचार से लूटने वाले भेडिये व्यापारी, आडम्बरी धर्म प्रचारक, और अनाचारी सुधारक ग्रामीण जनो को अनेक प्रकार से कष्ट देते रहते हैं । उन सबो के कर्कश पाशो से उन्मुक्त करने के लिये यह अत्यावश्यक है कि इन ग्रामीण भाइयों और बहनों को साक्षर बनाना जाय, उनम से रूढिवाद और मिथ्याचार को दूर किया जाय, अनेक प्रकार के मादक द्रव्यों के सेवन से उनको बचाया जाय, अनेक प्रकार की कुरीतियों कुप्रथाओं, भ्रमात्मक विचारो से उनको सुरक्षित रखने के लिये जिस प्रकार के सद्विचारों, सुप्रथाओं, उच्च भावनाओं श्रेष्ठ व्यवहारो और स्तुत्य आचारो की ओर उनको प्रेरित एव प्रवृत्त किया जाय इन सब कार्यों के सुसंगठित रूप से करने के लिये न केवल राष्ट्रीय सरकार ही प्रयत्न करे, अपितु सरकारी स्थानीय अधिकारिवर्ग के सहयोग और सुविधा से सास्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, और साहित्यिक सभायें और संस्थायें भी इस योजना मे पूर्ण सहयोग प्रदान करे, किन्तु कार्य आरम्भ करने के पूर्व रूचि रखने वाली सभी संस्थायें और सभायें मिलकर एक व्यावहारिक कार्यक्रम निश्चित करके प्रत्येक जिले में कार्यक्षेत्रों को विभाजित करके सुचारू रूप से कार्यकर्त्ताओं को नियुक्त करे । एक-२ टोली में सुविधानुसार ३,५, या ७ व्यक्ति एक साथ भ्रमण करे । नियत दिनों में नियत स्थानो मे निश्चित कार्यक्रमानुसार जो दिनचर्या बनी हो, उनके अनुसार सब कार्य करे, इन दिनो अपने जीवन को नितान्त सादा, अल्पव्ययी, अनाकर्षक, सेवाभावमय और आदर्शपूर्ण बनावें कि उनके उदाहरण से ग्रामीण भाई शिक्षा प्राप्त कर सके । अपने भाषण से न्यून किन्तु अपने साक्षात व्यवहार से भारतीय सस्कृति की विविध विशेषताओं को उनके सन्मुख प्रस्तुत करे । स्वतन्त्र भारत राष्ट्र के भाग्य निर्माता ग्रामीण भाई किस प्रकार अपने २ नागरिकता के उत्तरदायित्वपूर्ण कर्त्तव्य को सुचारु रूप से पालन करे, इस पर अधिक बल दिया जाय, साथ ही परस्पर भेदभाव का दूर करके सुमति, सौजन्य, सौहार्द शिष्टता सद्भावना और सहानुभूति के साथ पारस्परिक साधारण व्यवहारो में वर्त्तें । इस सम्बन्ध मे भी उनको सचेत और सावधान किया जाय ।

क्या आर्य समाज के अग्रणी विचारक अपने अन्य उपयोगी और आवश्यक कार्यों के साथ अगले दो मासो के लिये उपर्युक्त सजीव कार्यक्रम को प्रभावपूर्ण रूप से सम्पन्न करने मे सक्रिय आयोजन करेगे ? आर्य समाज इस प्रान्त मे अन्य सभी सभाओं और सस्थाओं से सुसंगठित और सुव्यवस्थित कहा जाता है । प्रान्त मे एक सहस्र से अधिक स्थानीय आर्य समाज हैं । इनमें कार्य करनेवाले सैकड़ों हैं, इन के प्रचारक और उपदेशक सतत प्रचार कार्य करते रहते हैं । धार्मिक-सास्कृतिक, साहित्यिक, और सामाजिक प्राय इत्यादि समस्त सार्वजनिक जीवन क्षेत्रो मे इनका प्रवेश रहता है । शिक्षा सस्थाओं की दृष्टि से भी आर्य समाज प्रमुख है । इसलिये अपने कर्त्तव्य पालन कार्य मे आर्य समाज को सुचतुर और सफल पथप्रदर्शक बनना उचित है ।

रियासतों का विलीनीकरण

भारत की पुरातन राजनैतिक व्यवस्था व मध्ययुग के मुस्लिम शासन काल में निरन्तर बनते बिगड़ते हुये विविध राज्य व अनेक रियासतें 'अंग्रेजी शासन काल' में स्थिरता प्राप्त कर गई थीं। अपने राज्य विस्तार की प्रथम शताब्दी में, अंग्रेजों ने, उस समय के भारतीय राजाओं व रियासतों को सन्धियों द्वारा स्थायित्व व संरक्षण देकर राज्य परिवर्तनों को स्वाभाविक राजनैतिक प्रक्रिया को रोक दिया था। परिणाम यह हुआ कि भारत का वह भाग जो ब्रिटिश भारत के नाम से प्रसिद्ध था आधुनिक युग की प्रगति में तीव्रता से अग्रगामी होने लगा और शेष 'रियासती भारत' मध्यकालीन पिछड़ी हुई दशा में हो रह गया।

इस अस्वाभाविक असमानता के कारण आशंका थी कि भारत के इन दो पृथक २ राजनैतिक विभागों का भेद कहीं भारतीय स्वतन्त्रता व उन्नति में बाधक न हो जाय परन्तु यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भारतीय नरेशों और रियासतों ने अपनी प्राचीन राजपरम्परा, शान-शौकत और व्यक्तिगत स्वार्थों का परित्याग कर भारतीय संघ में सम्मिलित होने के निश्चय द्वारा देशभक्ति का अपूर्व परिचय दिया है। इस प्रकार स्वतन्त्रता के अनन्तर रियासतों की अत्यन्त उलझी हुई समस्या ६ मास के स्वल्प काल में ही सरलता से सुलझ गई और देश की एकता का प्रथम चमत्कार पूर्ण अध्याय इस प्रकार समाप्त हुआ।

परन्तु देश को निष्कण्टक उन्नत के लिये देश की इतनी एकता ही पर्याप्त नहीं है। किसी भी देश में एक पृथक राजनैतिक इकाइयों की सत्ता का रहना स्वभावतः ही देश की एकता के लिये आशंकाजनक सिद्ध हो सकता है। इसी दृष्टि से भारतीय जनमत और उसके नेता यह अनुभव करते हैं कि रियासतों का भारत में विलीन हो जाना ही भारतीय स्वतन्त्रता की रक्षा तथा उसके विकास के लिए परमावश्यक है। स्वागतयोग्य व प्रसन्नता की बात यह है कि देशी नरेश भी दूरदर्शिता व देशभक्ति की भावना से, समय की गति का अनुमान कर, धीरे २ रियासतों को भारत में विलीन करने के लिये उद्यत हो रहे हैं।

बड़ौदा सर्वदैव प्रगतिशीलता के लिये प्रसिद्ध रहा है अतः बड़ौदा और कोल्हापुर जैसी बड़ी रियासतों के शासकों ने अपनी २ रियासतों को बम्बई प्रान्त में मिलाना स्वीकार कर लिया है। भोपाल, हैदराबाद आदि रियासतों के समीपस्थ प्रान्तों में विलीनीकरण का जन आन्दोलन तीव्रता से हो रहा है, यद्यपि यह ठीक है कि सभी का शीघ्र ही विलीनीकरण सम्भव नहीं है तब भी आशा की जाती है कि कालान्तर में अधिकतर रियासतें समय की गति को पहचान कर भारत में विलीन हो जायगी।

युक्त प्रान्त मे भरतपुर, रामपुर, बनारस और टिहरी आदि कुछ छोटी २ रियासतें अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की रक्षा के लिय यत्न कर रही है परन्तु वर्तमान ढग की बहुव्यापी शासनप्रणाली की दृष्टि से इस प्रकार की छोटी २ रियासतों का पृथक अस्तित्व व ठीक २ शासन व्यवस्था का संचालन सम्भव नहीं है। यद्यपि टिहरी रियासत के सविधान निर्माताओं ने जनवरी सन् ४९ में रियासत के पृथक् अस्तित्व रखे जाने का निश्चय किया है परन्तु इसमें सन्देह है कि कवल २० लाख ३४ हजार की स्वल्प आय तथा ४५०० वर्गमील वाली यह छोटी सी रियासत अपनी शासन व्यवस्था को उन्नत रूप में विकसित कर जनता के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

यह बहुत सम्भव है कि कुछ रियासतों के जननेता रियासतों की पृथक सत्ता रहने के पक्ष में हों परन्तु समय की गति उनके प्रतिकूल प्रतीत होती है, अतः दीर्घ काल तक रियासतों की पृथक सत्ता रहना सम्भव प्रतीत नहीं होता। रियासतों के नरेशों ने बुद्धिमत्ता पूर्वक, जनमत के निर्णयानुसार, राज्य सचालन स्वीकार कर लिया है अतः अब जनता का कर्तव्य है कि वह भी इस सक्रान्ति काल में बुद्धिमत्ता पूर्वक ऐसा निर्णय और नीति स्वीकार करे जिससे सम्पूर्ण देश सुव्यवस्थित रूप से इन समस्याओं से निवृत्त होकर उन्नति की ओर अग्रसर हो सके।

**
**

श्री बीरबल साहनी का देहान्त

१० अप्रैल रविवार को श्री बीरबल साहनी की हृदयगति रुक जाने के कारण देहान्त से ससार एक महान् वैज्ञानिक से वञ्चित हो गया। श्री बीरबल जी लखनऊ विश्वविद्यालय के बोटनी (कृषि विज्ञान विभाग) के प्रोफेसर और विज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे। कृषि विज्ञान के आविष्कार क्षेत्र में आपका नाम सदैव ही प्रतिष्ठापूर्वक स्मरण किया जायगा। अभी कुछ समय पूर्व स्टाकहालम (योरोप) में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय बोटेनिकल कांग्रेस के प्रधान निर्वाचित होने से आपने भारत माता का मुख उज्वल किया था।

इस ज्ञान विज्ञान के शुष्क क्षेत्र में सम्पूर्ण जीवन लगा देने पर भी आपका हृदय शुष्क न था और उनको सदैव ही देश के सांस्कृतिक और देश हितकारक कार्यो मे अभिरुचि रही थी और वे कट्टर देश भक्त थे और हिन्दी के प्रबल पक्षपाती थे। मुक्त हस्त होकर शिक्षार्थी निर्धन विद्यार्थियों की सहायता करते थे।

आपने गत ३ अप्रैल रविवार को 'पैलियो बोटेनी इन्स्टीच्यूट' नामक वैज्ञानिक संस्थान की स्थापना की थीं जिसकी आधार शिला प्रधान मन्त्री प० नेहरू जी ने रखी थी। भाग्य की विचित्र लीला है कि ठीक एक सप्ताह के अनन्तर उसी समय व स्थान पर अमर सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. बीरबल के मरणधर्मा शरीर को कुटिल काल ने देश से छीन लिया।

'मित्र' दुःखित परिवार से समवेदना प्रकट करता है।

* * *

श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय मंत्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा देहली ने आर्य समाज स्थापना दिवस पर सार्वदेशिक सभा के लिये संगृहीत होने वाले धन को भेजने के विषय मे निम्न विज्ञप्ति प्रकाशनार्थ भेजी है —

आशा है सभा के आदेशानुसार भारत तथा विदेश की समाजों ने आर्य समाज स्थापना दिवस गत ३०-३-४९ को समारोह पूर्वक मनाया होगा और सभा की वेद प्रचार विषयक अपील पर धन संग्रह किया होगा। समाजों को एकत्र किया हुआ धन शीघ्र से शीघ्र इस सभा मे भेज देना चाहिये।

सभा कार्यालय से इस धन की प्राप्ति के लिये समाजों को पृथक २ रूप मे लिखना और स्मरण दिलाना पड़ता है। यदि समाजें इस ओर विशेष ध्यानदेकर स्वय ही धन भिजवाना अपना एक आवश्यक कर्तव्य समझ लें तो पत्र व्यवहार मे जो धन और शक्ति का अपव्यय होता है वह न होने पावे। जो समाजें इस दिवस के उपलक्ष्य में अपना भाग समाजों को नहीं भेजतीं वे अनुशासन भंग का अपराध करती है अतः विश्वास है कि इस बार सभा को इस प्रकार की शिकायत का अवसर प्राप्त न होगा। कुछ समाजें भूल से अपना भाग अपनी प्रान्तीय समाजों को भेज देतीं हैं। अतः उन्हें यह धन इस सभा में भेजने में विशेष सावधानी रखनी चाहिये। प्रान्तीय सभाओं से सभा को इस प्रकार का धन प्राप्त तो हो जाता है, परन्तु डाक का दुहरा व्यय इसके भेजने में व्यर्थ ही लग जाता है। ऐसा न होना चाहिये।

आर्य जगत् क यह धारणा है कि सार्वदेशिक सभा के पास प्रचुर धन राशि है और उसको अपना कार्य चलाने के लिये समाजों की सहायता की विशेष आवश्यकता नहीं है। सभा में जो राशियां हैं वे विशेष कार्य के लिये नियत हैं और उनका धन उन्हीं कार्यों में व्यय हो सकता है। सभा के प्रचलित व्यय के लिये ऐसी कोई राशि नहीं है। यही कारण है कि सभा का व्यय प्रतिवर्ष आय से बहुत बड़ी राशि में बढ़ जाता है। इस समय राशि १००००) तक पहुच चुकी है। यदि समाजों से प्रतिवर्ष कम से कम ६०००) स्थापना दिवस की आय के रूप में प्राप्त हो जाया करे तो इस व्यय की सुगमता से पूर्ति हो सकती है और धीरे-२ अन्य उपयोगी योजनायें भी जो धनाभाव के कारण हाथ मे नहीं ली जा सकती, मूर्त रूप धारण कर सकती हैं अत समाजों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

* * *

"आजमगढ़ जिले के प्रसिद्ध आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री अल्गूराय नाथ जी दिसम्बर मास मे सन्देह से यू० पी० मेन्टेनेन्स आफ पब्लिक आर्डर एक्ट के अनुसार पकड़े गये थे, और अब तक जेल मे निरुद्ध थे, विशेष प्रसन्नता की बात है कि प्रान्तीय सरकार ने उनको अब मुक्त कर दिया है। अल्गूराय नाथ जी को बढ़ेहुए उत्साह के साथ आर्य समाज सम्बन्धी विविध कार्यों के करने का सुअवसर प्रदान करने के उपलक्ष्य में प्रान्तीय सरकार का यह कार्य प्रशंसनीय है।

स्वतन्त्र भारत में हैदराबाद आर्यसमाज का
वार्षिकोत्सव

(प्रकाशवीर शास्त्री विद्याभास्कर)

त्याग और बलिदान सफल हुए। कठिनाइयों का सुपरिणाम सामने आया। आज हैदराबाद का निवासी प्रत्येक नर और नारी चैन की सांसें ले रहा है। कुछ सौ वर्ष पूर्व औरङ्गजेब इस्लामो सल्तनत के जिन स्वप्नों को लेकर दक्षिण के जङ्गलों में पहुँचा और आज अपनी कब्र के साथ उन स्वप्नों को भी सदा के लिये सुला कर सहस्रों मन मिट्टी के नीचे सो रहा है। उन्हीं स्वप्नों को एक बार हैदराबाद में

श्री स्वा० रामानन्द जी तीर्थ अध्यक्ष
हैदराबाद स्टेट कॉंग्रस
आप १७ मई को आर्य उपदेशक महा सम्मेलन के अवसर पर लखनऊ पधार रहे हैं।

रिज़वी और उसके अनुयायियों ने पूरा करना चाहा था; परन्तु पटेल की हल्की सी ललकार (पुलिस कार्यवाही) ने उनकी आंखें खोल दीं। सन् ३८ के आर्य सत्याग्रह ने जो क्षेत्र तय्यार किया था कल जनरल राजेन्द्रसिंहजी की वीरवाहिनी ने उस पर मानवता का बीज बोया और आज वह सन्देश, जिन्हे कल तक लोग डरते-डरते सुनते थे, निर्भीक होकर सुने और सुनाये जाते हैं।

आर्यसमाज सुल्तान बाज़ार का, पुलिस कार्यवाही के पश्चात् यह प्रथम वार्षिकोत्सव इसका प्रमाण था। शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र जी देहलवी जिन पर अभी तक स्टेट में प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था अपने नाम के इतिहास की अमरता का स्मरण कराते हुये ठीक १४ वर्ष बाद हैदराबाद पहुँचे थे, आपके साथ में आर्य सत्याग्रह के प्रमुख अधिनायक

श्री वशीलालजी वानप्रस्थी
संस्थापक गुरुकुल घटकेश्वर

श्री स्वा० अभेदानन्दजी महाराज भी गये थे। वार्षिकोत्सव में लाखों की संख्या में सोत्साह उपस्थित हो कर अपने नेताओं के दिव्य सन्देशों को सुनने वाली भीड अपनी मूक भाषा में रह रह कर यह कहती थी आज वह हैदराबाद नहीं है जिसके लिये कल आपने वह कष्ट सहे थे। हैदराबाद के सर्वमान्य

श्री प० नरेन्द्रदेवजी, मन्त्री
आर्यप्रतिनिधि सभा हैदराबाद
हैदराबाद के एकमात्र युवक नेता

नेता बैरिस्टर विनायकरावजी और कर्मठ सेनानी प० नरेन्द्रदेवजी जो कुछ ही दिनों पूर्व जेल के सींखचों से बाहर निकल कर आये है उनकी सार्वजनिक सेवाओं के परिणामस्वरूप आज स्टेट में आर्यसमाज हर घर तक पहुँचा हुआ है। कोई प्रगतिशील संस्था ऐसी नहीं जिसकी कमर पर आर्यसमाज का हाथ न हो। युवक सम्राट प० नरेन्द्रदेवजी की सार्वजनिक सेवाओं का ही यह परिणाम है जो वहां के आन्ध्र वा. प्रान्त की कांग्रेस ने पंडितजी को अपना अध्यक्ष चुन कर उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त को है। गुरुकुल घटकेश्वर जो पीछे रिज़वी शाही का शिकार हो चुका है, के संस्थापक प० वशीलालजी व्यास की मौन सेवायें, श्वेत वस्त्रों में सन्यास धारण किये हुये और निर्वासित होकर भी जिन्होंने हैदराबाद की स्वाधीनता को अलख बाहर जगाई है वह भाई गंगारामजी (जो अब व्रत पूर्ण करने के पश्चात् गृहस्थी होने जा रहे हैं) का कठोर तप और कृष्णदत्तजी की लेखनी तथा मनोहरलालजी की वाणी आज हैदराबाद को विजयनगर बनाने जा रही है। कल जो हैदराबाद का इतिहास बनने जा रहा है उसमें इन महान विभूतियों का नाम स्वर्णाक्षरों में होगा।

इन पंक्तियों का लेखक आज से दो वर्ष पूर्व जब हैदराबाद गया था तब जो चेहरों पर परवशता की झलक दिखाई देती थी आज वह मुस्कहास बन कर अपने पिछले दिनों की मानो हसी सी उडा रही थी। समय है, हरेक पर आता है। पर जब वह बीत जाता है तो केवल अपनी स्मृति छोड जाता है। उस्मानिया यूनिवर्सिटी के छात्रों की उपसभा में जब मैं हिन्दी पर भाषण देने बुलाया गया और उनकी प्रसन्नमुख मुद्रा को

प० विनायकरावजी विद्यालंकार
बार-एट लॉ
प्रधान आ० प्र० सभा हैदराबाद स्टेट

देखा तो प्रतीत हुआ आज न केवल जनता अपितु युवक विद्यार्थी वर्ग भी अब तो उतनी ही गति से आगे बढना चाहता है जितनी गति से उनकी मनोवृत्तियों को अब तक दबाकर रक्खा गया था।

श्री कृष्णदत्तजी बी० ए०
सहसम्पादक "आर्यभानु"

हैदराबाद का नाम विजयनगर

एक सुझाव जो इन पंक्तियों द्वारा मैं वहां के निवासियों एवं सर्व साधारण तक पहुँचाना चाहता हूं वह यह कि जैसे उन्होंने मुहल्लों के नाम बदलकर हुसैन आलम का सुभाष नगर और फील खाने का चन्द्रिकानगर आदि रक्खे हैं वैसे ही हैदराबाद का नाम

(शेष पृष्ठ ८ में)

हिन्दू कन्या के उत्तराधिकार का प्रश्न

डाक्टर अनन्त सदाशिव आल्तेकर
अध्यक्ष, प्राच्य भारतीय संस्कृति और इतिहास विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय काशी

प्रस्तावित 'हिन्दूकोड बिल' में जो यह व्यवस्था की गयी है, कि पैतृक सम्पत्ति कन्याको उसके भाई के बराबर हिस्सा दिया जाय, यह एक सबसे बड़ा विवादग्रस्त विषय है। इस सम्बन्धमें सबसे पते की बात यह है कि अखिल भारतीय महिला सम्मेलन इस अधिकार के लिए बराबर जोर देता आ रहा है, पर वह इस विषय पर सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पास करने में असमर्थ रहा। सम्मेलन में कई सुशिक्षित महिलाओं ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। और तो और इस विषय में सुधारवादियों में भी मतैक्य नहीं। एक बार तो राव कमेटी ने लेखक के विचार को स्वीकार भी कर लिया था और उसने प्रस्ताव रखा था कि केवल अविवाहित कन्याओं को ही उत्तराधिकार मिलना चाहिए। बाद में प्रस्ताव रखा गया कि सभी कन्याओं को भाई के आधे हिस्से के बराबर भाग मिलना चाहिए। अब यह प्रस्ताव किया गया है कि हिस्सा आधा नहीं, पूरा मिलना चाहिए। मैंने इन मतभेदों की चर्चा करते हुए इस विचार पर जोर दिया था कि यह समस्या वास्तव में पेचीदी है और इसका समाधान गम्भीरता से किया जाना चाहिए। संयोग से इस विषय पर हमारा अतीत इतिहास पर्याप्त प्रकाश डालता है। हमारा इतिहास यह बतलाता है कि किसी समय हिन्दू समाज यह भी मानता है कि महिलाओं को सम्पत्ति में कोई अधिकार नहीं, परन्तु प्राचीन काल से यह भी प्रचलन रहा है कि जिस कन्या को कोई भाई नहीं उसको अपने पिता की सम्पत्ति में पूरा अधिकार है। ऋग्वेद में यह बात आयी है कि भ्रातृ विहीन कन्याओं को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार मिलना चाहिए। बुद्ध साहित्य में भी यह चर्चा है कि माताएँ अपनी कन्याओं को मनाया करती हैं कि वे विवाह कर अपनी पैतृक सम्पत्ति का उपभोग करें न कि बैरागिनियों की मण्डली में सम्मिलित होकर वैराग्य लें। बाद में सभी स्मृतिकारों ने इस अधिकार का समर्थन किया।

अविवाहित कन्याएँ

आधुनिक काल में हर जगह यह बात अच्छी तरह प्रचलित है कि भ्रातृहीन कन्या अपने पिता की सम्पत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त करती है। अब मुख्य प्रश्न है कि कन्या को पूरा उत्तराधिकार मिलना चाहिए जैसा कि बम्बई में प्रचलन है या उसको परिमीमित रूप से उत्तराधिकार दिया जाय, जैसाकि हर जगह होता है। बम्बई में जो प्रथा चालू है उसका अनुभव तो यह बतलाता है कि कन्या को पूर्ण उत्तराधिकार प्रदान करने से कोई हानिकर परिणाम नहीं होता, इसलिए हमें चाहिए कि सर्वत्र भ्रातृ विहीन कन्याओं को हम पूर्ण उत्तराधिकारिणी बनाते चलें। दूसरा हमें उन कन्याओं के बारे में सोच विचार करना है जो अविवाहित हैं और जिनके भाई हैं। क्या उनको भी उत्तराधिकार प्राप्त होना चाहिए? अपने अतीत इतिहास पर दृष्टि डालने से यह पता चलता है कि उनको वैदिक काल में भी यह अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद ११ १७७ में यह चर्चा आई है कि एक कुमारी को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त हुआ था, पर उत्तराधिकार का कितना अंश प्राप्त हुआ था, इस का उल्लेख नहीं मिलता। धर्मसूत्र और स्मृतियां कुमारियों के इस अधिकार को इस लिए स्वीकार नहीं करतीं कि उन दिनों समाज में कुमारियां रहती ही नहीं थीं। ईसासे कोई चार शताब्दी पूर्व से हिन्दू लड़कियों के लिए विवाह आवश्यक कर दिया गया, ताकि समाज में कोई कुमारी न रहने पावे जिससे उत्तराधिकार को स्वीकार करना पड़े। अब समय से ऐसा परिवर्तन हुआ कि हमारे समाज में कुमारियों का एक वर्ग होने लगा। कुछ तो कुमारी इस लिए रह जातीं थी कि वे विवाह कर ही नहीं सकतीं, और कुछ ऐसी थीं जो विवाह करना ही नहीं चाहतीं। वर्तमान कानून के अनुसार कुमारी पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्त नहीं कर सकतीं। वस्तुस्थिति यह है कि उनके पति तो होते नहीं जिनकी सम्पत्ति में उनको हिस्सा मिले। उचित तो यह है कि हम पुनः वैदिक प्रणाली का प्रचलन आरम्भ कर दें और अविवाहित लड़कियों को हिस्सा दें। अधिकांश महिलाएं जो अविवाहित रहती हैं, स्वयं कुछ अर्जन कर लेती हैं। उन पर अपने विवाहित भाइयों की तरह पारिवारिक उत्तरदायित्व का भार नहीं रहता। इसलिए यह सुझाव उचित है कि उनको अपने पिता की सम्पत्ति में अपने भाई के हिस्से का आधा मिलना चाहिए। व्यवस्थापिका सभा को इस बात का व्यवस्था करनी चाहिए। अविवाहित कन्याओं को पैतृक सम्पत्ति में अपने भाइयों के हिस्से का आधा हिस्सा मिलना चाहिए। हिस्सा प्राप्त कर लेने के बाद यदि वह विवाह कर लेती है तो उसका हिस्सा जब्त कर लिया जाय।

इस प्रस्ताव पर अधिकांश लोगों का मत तो यह है कि विवाहित लड़कियों को पैतृक-सम्पत्ति में हिस्सा दिया जाय। इस विचार के वकील यह दलील पेश करते हैं कि कन्या भी अपने माता पिता की उसी तरह सन्तान है जिस तरह उसका पुत्र, इसलिए आज के समता के युग में यह उचित नहीं कि कन्या उत्तराधिकार से वञ्चित केवल इसलिए रखी जाय चूंकि वह लड़की है, लड़का नहीं। अपने इतिहास पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि हिन्दू समाज सदा से इस अधिकार का विरोधी रहा है। ऋग्वेद, भ्रातृविहीन कन्या को उत्तराधिकार देने की व्यवस्था करता है, भाई को यह आदेश देता है कि वह किसी भी अवस्था में अपनी पैतृक-सम्पत्ति में अपनी बहिन को हिस्सा दे। इसके सबन्ध में तर्क यह दिया जाता है कि बहिन एक-दूसरे परिवार की सदस्या है, इसलिए जिस परिवार में उसका जन्म होता है उसमें उनको कोई अधिकार नहीं। बाद में स्मृतियों ने भी विवाहित कन्या के पक्ष में संशोधन करने का ध्यान नहीं रखा। और तो और, बृहस्पति भी जिन्होंने यह तर्क उपस्थित किया है कि भ्रातृविहीन कन्या को इसलिए उत्तराधिकार मिलना चाहिए कि पुत्र की तरह उसका भी जन्म पिता से ही हुआ है, इस सुविधा से लाभ उठाने की व्यवस्था सभी कन्याओं को नहीं देते। उनकी व्यवस्था केवल भ्रातृविहीन कन्या के लिए ही है। स्मृतिकारों में केवल शुक्र ही एक ऐसे हैं जिन्होंने भाइयों के समान कन्या के उत्तराधिकार का समर्थन किया है। उनका मत है.—

समानभागा वैकार्याः पुत्राः स्वस्य चवैस्त्रियः
स्वभागार्धहरा कन्या दौहित्रस्तु तदर्धभाक्

अर्थात् पिता जब अपनी सम्पत्ति का बटवारा करने लगे तब उसे चाहिए कि समान भाग अपने पुत्रों और अपनी पत्नी को दे, किन्तु साथ ही आधा हिस्सा कन्या को और चतुर्थांश अपने दौहित्र को दे। वास्तव में पिता द्वारा सम्पत्ति में किये जानेवाले विभाजन की बात की ही, यह चर्चा करता है। बिना दानपत्र लिखे मर जाने के विषय में शुक्र का मत है कि विधवा को सम्पत्ति का चतुर्थांश तथा कन्या को अष्टमांश मिलना चाहिए।

यथा.—

और किसी भी स्मृति में इस बात की व्यवस्था नहीं कि कन्या को उत्तराधिकार मिलना चाहिए। इसका कारण ढूंढने के लिए दूर नहीं जाना है। स्मृतिकाल में हिंदू समाज में लड़कियों का विवाह अत्यावश्यक था और उस समय यह सोचा जाता था कि विवाहित कन्याओं को सम्पत्ति में उत्तराधिकार अपने पतिकुल में ही मिलना चाहिए, न कि अपने पितृकुल में। उस समय का हिंदू समाज इस बातपर विशेष ध्यान रखता था कि अपनी बहिन के विवाह में भाई अपनी सम्पत्ति में से उचित रूपसे व्यय करे। उस समय सामान्य रूपसे यह नियम प्रचलित था कि अपनी बहिनके विवाह में भाई अपनी पैतृक सम्पत्ति में से अपने हिस्से का चतुर्थांश खर्च करे। यह भी निश्चय था कि यदि योग्य विवाह में अधिक भी खर्च करना पड़ जाय तो भाई इसके लिए अपने हिस्से से भी खर्च करे। साथ ही यह भी बात थी कि यदि विवाह में खर्च चतुर्थांश से भी कम पड़ जाय तो इस के लिए बहिनको कोई अधिकार नहीं था कि शेष रोकड़ का दावा करे।

हमारी स्मृतियों में बहिनके शिक्षा-व्यय के बारे में कोई चर्चा नहीं की गयी है, क्योंकि जिस समय स्मृतियां लिखी गयी है उस समय स्त्रीशिक्षाका प्रचलन नहीं था। क्या हम उस पुरातन परम्परा के आधार पर ही आधुनिक युगमें कन्या के उत्तराधिकार की उपेक्षा करते जाय या इस अधिकार को हम स्वीकार कर लें! यदि सामाजिक कल्याण के विचार से इन प्रश्नों पर हम विचार करें तो हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भाई के साथ ही साथ विवाहित कन्या के उत्तराधिकारको मान लेने से अनेक असुविधाएं उत्पन्न हो जायगी। उन असुविधाओं के सामने कन्या को अपने उत्तराधिकार को कार्यान्वित करने में बड़ी कठिनता होगी। यह बात नहीं कि कन्या के विवाह के अवसर पर ही सदा पिता का देहान्त हो जाता है। उनका देहान्त कभी-कभी विवाह के पश्चात औसतन करीब १० साल बाद होता है। इस अवधि में विवाहित कन्याओं का सम्बन्ध नये परिवारों के साथ उत्तरोत्तर घनिष्ट होता जाता है और पितृकुल से उनकी अभिरूचि उसी प्रकार क्रमशः कम होती जाती है। यह वही बात है जो होनी चाहिए। ऐसी हालत में उस विवाहित कन्या को इस बात की चिन्ता नहीं रह जाती कि पितृकुलकी आर्थिक अवस्था किस प्रकार की है। पितृकुलको बुरा भी देखना पड़ जा सकता है। और उसको परिस्थितिवश अपना आभूषण भी बेचना पड़ जा सकता है। बुरे दिन आने पर इस प्रकारकी कारवाई अप्रकट रूपसे की जाती है। यदि सम्पत्ति विभाजन के

अवसर पर उपर्युक्त परिस्थिति में खर्च किये गये धन के बाद जो धन शेष रह जाय और उस शेष धन को भाई अपनी बहिन के सामने उपस्थित करे तो बहिन यही सोच सकती है कि भाई ने बेईमानी से धन छिपा लिया है, क्योंकि उसके विवाह के अवसर पर जो धन उसके पिता के पास था, वह धन अब विभाजन के समय नहीं है। साथ ही धूर्त और चलते पुर्जे भाई को भी चल सम्पत्ति यह कहकर छिपाने का मौका मिल जा सकता है कि वे चीजें बिक गयीं। भारत वर्ष में ऐसे इने गिने परिवार हैं जो अपनी चल सम्पत्तिको बैंक में रखते हैं, इसलिए सम्पत्ति विभाजन के अवसर पर भाई-बहन के बीच जो द्वेष और मनमुटाव उत्पन्न होगा उसका निवारण असम्भव हो जायगा। ऐसी हालत में वस्तुतः बहिन यही सोचेगी कि उसको जितना मिलना चाहिए उससे बहुत ही कम मिल रहा है।

कठिनाइयों की इतिश्री नहीं

भूमिसम्पत्ति में हिस्सा देने की बात कठिनाइयों से और भी परिपूर्ण है। भारतवर्ष में कब्जे में जो जमीन है, वह बहुत ही कम और आर्थिक रूपमें उपयुक्त नहीं। यदि भाई के साथ ही साथ कन्या को हिस्सा दिया गया तो उस जमीन का आकार प्रकार तुरतही छोटा हो जायगा। यह एक राष्ट्रीय संकट है।

अस्तु, यहा यह भी विवाद खड़ा किया जा सकता है कि कन्या के जन्मना अधिकार की उपेक्षा राष्ट्रीय संकट के नाम पर भी नहीं की जानी चाहिए। इस तर्क में बल अवश्य है, पर हम यहाँ यह भी बता देना युक्तिसंगत समझते हैं कि कठिनाइयां इतनी ही नहीं और भी हैं। यह तो स्वाभाविक नियम है कि विवाह के अनन्तर कन्या रहने के लिए दूसरी जगह चली जाती है। अतः वह एक प्रकार से अनुपस्थित रहने के कारण अपने हिस्से का पूर्ण उपभोग करने में सदा असमर्थ ही रहेगी। अन्त में उसे अपने हिस्से को बेचना ही पड़ेगा।

गृह सम्पत्ति की कठिनाइयां तो और भी उलझनपूर्ण हैं। विवाहित कन्याको अपने हिस्से के मकान में या तो किरायेदार रखना पड़ेगा जिसको सम्भव है कि भाई न चाहता हो, या अपने हिस्से के मकान को उसको बेच ही देना पड़ेगा। अधिकांश परिवार मकान बनाने के समय शक्ति से अधिक व्यय करते हैं, अतः गृहविभाजन के समय सम्भव है कि भाई अपनी बहिन के हिस्से के बदले में उसका मूल्य न चुका सके जिससे कोई अवाञ्छनीय व्यक्ति आकर अपने खानदान के मकान में कब्जा कर ले। इसका परिणाम यह होगा कि भाई बहिन के बीच सद्भावनाका अन्त हो जायगा। यदि मकान किसी छोटे गांव में बना हो तो वहां अपने पैतृक मकान के हिस्से को बेचने के लिए बहिन को एक तो खरीदार मिलना कठिन है और दूसरी बात यह कि यदि भाई उस हिस्से को खरीदना भी चाहे तो उसको इस काम के लिए आवश्यक नकद रुपया भी मिलना कठिन है। गांवों में मनुष्यों की कमी नहीं परन्तु वहां के मकानों से किराया मिलना कठिन है। इसी प्रकार अचल सम्पत्ति के अधिकार को व्यवहारतः कार्यरूप में परिणत करना तो और भी कठिन है।

पारिवारिक ऋण

भारत निर्धन देश है। यहां के अधिकांश किसान ऋण भार से दबे हैं। यदि कन्या को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार दिया गया तो ऋण का विषय लेकर वह चिल्ला उठेगी। क्योंकि जब वह पिता की सम्पत्ति में हिस्सा बांटने की अधिकारिणी होगी तब साथ ही साथ उसको पिताके ऋणमें भी हिस्सा बटाना होगा। यदि प्रस्तावित विधान स्वीकृत हुआ तो निर्धन परिवारों की कन्याओं को विवाह करने में कठिनाई होगी, क्योंकि भावी दामाद को इस बात का भय होगा कि यदि उसकी पत्नी दिवालिया निकली तो उनको ही अपने ससुर के ऋणको चुकाना होगा। हिन्दू समाज में यों तो सदा से ही कन्या का विवाह ठीक करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रस्तावित विधानके पास हो जाने से तो उनकी कठिनाइयों की सीमा ही नहीं रह जायगी। ससुर को तब अपने भावी दामाद को यह विश्वास दिलाना होगा कि उनकी (दामाद की) पत्नी आर्थिक रूपसे दिवालिया नहीं है। न कन्या को और न कन्या के पतिको ही यह अवसर मिलेगा कि वह वधू के पिता के आर्थिक लेनदेन पर नियन्त्रण रखें या उस पर निगरानी रखें। यदि विवाह के अनन्तर सुयोग या दुर्योग से पिता को ऋण लेना पड़ा तो उसकी चुकती के लिए कन्या और उसके पति को अन्ततः अदालत का मुंह देखना ही पड़ जायगा। यह सच है कि अभी ऋण का पूरा उत्तरदायित्व पुत्र को ही ढोना पड़ता है परन्तु विवाहित कन्या पर भार लादना कुछ उचित नहीं जचता, क्योंकि पुत्रको भांति कन्या को लेनदेन के मामलों में देखभाल करने का कभी मौका ही नहीं मिलता। यदि प्रस्तावित विधान स्वीकृत हुआ तो अधिकांश निर्धन मातापिता को कन्या का विवाह करना बहुत ही कठिन हो जायगा।

वर्तमान कानून अनुचित

वर्तमान कानून महिलाओं के लिए उचित नहीं। पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा बटाने का अभी वे दावा दायर नहीं कर सकतीं और उनकी हालत तब और दयनीय हो जाती है जब उनके पति का जीवन कुत्सित आचरण में संलग्न हो जाता है या वे दूसरे विवाह के लिए तैयार हो जाते हैं। पति यह कह कर उत्तरदायित्व से अपने को बचा लेता है कि उसकी पत्नी, उसके साथ रहना नहीं चाहती। क्या कोई भी स्वाभिमानिनी महिलाएं ऐसे घर में अवैतनिक नौकरानी बन कर रहना पसन्द करेगी जहाँ वह महारानी बन कर कभी रह चुकी है? महिलाओं का भविष्य सुखद और प्रसन्नता सूचक हो, इसके लिए सर्वोत्कृष्ट मार्ग तो यही है कि उनको पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार न प्रदान कर उनके पति की सम्पत्ति में उनके अधिकार के विस्तार की व्यवस्था की जाय। बहुविवाह (एक स्त्री के अनेक पति या एक पति की अनेक स्त्रियां) तो रोक ही देना चाहिए। यदि यह प्रमाणित हो जाय कि पति के दुराचरण के कारण ही पत्नी उससे दूर रहना चाहती है तो ऐसी अवस्था में पत्नी को केवल गुजारा ही नहीं मिलना चाहिए, बल्कि पत्नी निस्सन्तान हो तो पतिकी सम्पत्ति में उसको आधा हिस्सा मिलना चाहिए। यदि पत्नी पुत्रवती हो तो पुत्रके बराबर उसका पतिकी सम्पत्ति में हिस्सा मिलना चाहिए। याज्ञवल्क्य का तो मत है कि ऐसी स्थिति में पत्नी को पति की सम्पत्ति [illegible] तिहाई हिस्सा मिलना चाहिए। यदि वर्तमान कानून में इस प्रकार का संशोधन किया गया तो परित्यक्त पत्नियों को अपने भाइयोंकी मरजी पर निर्भर नहीं करना पड़ेगा।

भावापन्न पत्नी

तथापि यहां पर भी तर्क किया जा सकता है कि कानून में इस प्रकार का संशोधन पर्याप्त नहीं। यदि कन्याको पिताकी सम्पत्ति में जन्मना उत्तराधिकार दिया गया तो विवाह के बाद वह अपने पिता की सम्पत्ति की एकमात्र स्वामिनी हो जायगी। उसको कुछ आय की अधिकारिणी बना दिया जायगा जिसका उपयोग वह अपने पतिकी अनुमति के बिना ही कर सकती है। वर्तमान प्रथानुसार पत्नी अपने पतिकी सम्पत्ति में केवल सिद्धान्ततः सहभागिनी है, व्यवहारतः नहीं। स्वाभिमानिनी पत्नी कभी यह नहीं चाहेगी कि आवश्यकता पड़ने पर छोटी रकम के लिए वह बारबार अपने पति का मुंह जोहे। इसके विपरीत पत्नी को पैतृक सम्पत्ति से यदि कोई आय होती हो तो वह अपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रताका अनुभव कर सकती है और पतिके निष्ठुर व्यवहार से उसके स्वाभिमान पर तनिक कुठाराघात नहीं हो सकता। भावापन्न पत्नियों के सम्बन्ध में उपर्युक्त तर्कों में भले ही कुछ बल हो, परन्तु अधिकांश मामलों में इन तर्कों से काम नहीं चल सकता। ऐसे पति और पत्नियों की संख्या अधिक है जिनके हिताहित परस्पर एक हैं। यदि कोई पत्नी यह अनुभव करती है कि अपने पति से आवश्यक रकम मांगने से उनके स्वाभिमान पर ठेस लगती है या कोई पति यह सोचता है कि अपनी पत्नी को गृहकार्य के लिए आवश्यक रकम देकर वे उनको उपकृत कर रहे हैं तो यह दुःखद विवाह का उदाहरण है। ऐसे विवाह सम्बन्ध को सुमधुर बनाने के लिए आवश्यक काररवाई करनी होगी, उत्तराधिकार कानून में केवल संशोधनमात्र से काम नहीं चल सकता।

हजारों वर्ष से महिलाओं पर घर के स्वामी की हैसियत से पुरुष का आधिपत्य चला आ रहा है और हो सकता है कि इस आधिपत्य में महिला के प्रति पुरुष का आचरण आक्रमणकारी हो, यदि वह ऐसा करना न भी चाहता हो। भावापन्न और तुनक मिजाजी स्त्रियों की भावनाओं को ठीक रखने के लिए कानून भले ही पति की आयका कुछ अंश (मान लीजिए ५ या १०प्रतिशत) पत्नी के लिए निर्धारित कर दे, ताकि आय के उस अंशका व्यय पत्नी अपनी इच्छानुसार कर सके। विवाह के कारण पत्नी को पति की आय में हिस्सा बटाने का अधिकार भी है। पैतृक सम्पत्तिमें जन्मना उत्तराधिकार प्राप्त करने की अपेक्षा विवाह के कारण पति की सम्पत्ति में अधिकार रखने की बात पत्नी के लिए होनी चाहिए। केवल भावापन्न पत्नियों के लिए पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार की बात बहुत ही उलझनपूर्ण है।

यदि उपर्युक्त बातों के आधार पर वर्तमान कानून में संशोधन किया जाय तो इसके लिए आवश्यक नहीं कि पैतृक सम्पत्ति में कन्या के हिस्से की व्यवस्थाकर वस्तुस्थिति को गुत्थियों से जकड़ दिया जाय। स्वभावतया ९० प्रतिशत दम्पत्तियों का जीवन परस्पर सुखद है, अतः ऐसी स्थिति में पत्नी को पति से मांग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

नये कोड की रूप रेखा

साधारण अवस्था में भले ही ऐसे कुछ व्यक्ति हों जहां पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा न रहने के कारण महिलाएं आपे से बाहर हो जाती हों। आवश्यक सहायता के लिए उनको नये अधिकार पति से

"सभा का वृहदधिवेशन"

(ले०—श्री वीर सेन आर्य, लखनऊ)

संयुक्त प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा का वृहदधिवेशन इस वर्ष ५, ६ जून ४९ को गाजीपुर में होगा। इस अधिवेशन में सभा के सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों को नियमानुसार अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है। किन्तु, प्रायः देखा गया है कि प्रान्त की लगभग ८०० आर्यसमाजों में से केवल २०० के लगभग आर्यसमाजों के ही प्रतिनिधि वार्षिक अधिवेशन में भाग लेते हैं। वर्ष भर पश्चात् इकट्ठा होने वाले यह प्रतिनिधि भी ५-६ घण्टे में सभा के अधिकारियों का निर्वाचन करके अपने अपने स्थानों को वापस चले जाते हैं। फिर, साल भर तक सभा के सभी विभागों को केवल दो-तीन अधिकारी येन केन प्रकारेण,चलाते रहते हैं। परिणाम स्वरूप हम देखते हैं कि संयुक्तप्रान्त में आर्यसमाज प्रगतिशील नहीं है। सर्वत्र शिथिलता है। आर्यप्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत जितने विभाग हैं उनकी दशा दिन प्रति दिन शोचनीय होती जा रही है। आखिर इस शिथिलता और निराशा का कारण क्या है? कारण स्पष्ट है। बहुधा कार्यकर्त्तागण अपना काम ठीक ठीक नहीं

लेखक

करते। अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह नहीं निभाते। निर्वाचन के समय जो जोश दिखाया जाता है वह चुनाव के बाद ही समाप्त हो जाता है। फिर कार्य कैसे हो। दूसरा कारण यह है कि अधिक आर्यसमाजें केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता को अनुभव नहीं करतीं और उनके प्रतिनिधि सभा के कार्यों में दिलचस्पी लेना अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। यदि प्रान्त की सब आर्यसमाजें प्रान्तीय संगठन को शक्तिशाली बनाने का संकल्प कर योग्य प्रतिनिधियों को भेजें तो सभा की दशा में सुधार होना कोई कठिन बात नहीं है। सभा के वृहदधिवेशन में प्रतिनिधियों की संख्या कम होने का एक मुख्य कारण यह है कि अधिवेशन में चुनाव के अतिरिक्त और कोई विशेष कार्यक्रम नहीं रखा जाता। इसलिये अधिवेशन में अधिकतर वही प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं जिन्हें चुनाव में दिलचस्पी होती है। आर्यसमाज के वह कार्यकर्ता जो चुनाव की पार्टीबाजी से अलग रह कर ठोस काम करना चाहते हैं सभा के इस "चुनाव अधिवेशन" में सम्मिलित नहीं होते। अस्तु—

प्रान्त में समाज व सभा को उन्नतिशील बनाने के लिये कुछ सुझाव आर्य जनता के विचारार्थ उपस्थित किये जाते हैं—

(१) सभा के वृहदधिवेशन के अवसर पर प्रथम दो दिन तक आर्यप्रतिनिधियों की एक 'विचार परिषद्' हो, जो प्रान्त की समस्याओं और आवश्यकताओं पर विचार करे तथा प्रचार का निश्चित कार्यक्रम बनावे। इस परिषद् में समाजों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त उन आर्य विद्वानों, सन्यासियों तथा उपदेशकों को भी निमन्त्रित किया जाय, जो प्रतिनिधि नहीं हैं, किन्तु जिनकी सम्मति से सभा को लाभ पहुँच सकता है। इस परिषद् में कार्यक्रम निश्चित हो जाने के बाद सभा के अधिकारी उसे पूरा करने का प्रयत्न करें। चुनाव से भी अधिक आवश्यक कार्य ऐसी परिषद् का आयोजन है।

(२) जिस जिले में सभा का अधिवेशन हो उसमें कम से कम दो मास पूर्व से प्रचार का प्रबन्ध करके जिले भर में आर्यसमाज की धूम मचा दी जाय। अधिवेशन के दिनों में 'प्रान्तीय महोत्सव' करके वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का विशेष आयोजन किया जाय।

(३) चुनाव का कार्य अधिवेशन के अन्तिम दिन रखा जाय। प्रान्त के अधिक प्रतिनिधि अधिवेशन में भाग लें। सभा के अधिकारी ऐसे ही योग्य व्यक्ति बनाये जायें जो सभा के लिये समय दे सकते हों। कम से कम प्रधान और मन्त्री तो वही महानुभाव बनाये जावें जो यदि पूरा नहीं तो अधिक से अधिक समय सभा के कार्यों में दे सकें।

(४) सभा के प्रेस व पत्र की स्थिति को अधिक उन्नत किया जाय।

(५) सभा का मुख्य कार्यालय प्रान्त की राजधानी लखनऊ में होते हुये भी इस जिले में आर्यसमाज शिथिल अवस्था में है। यह बड़े खेद और आश्चर्य की बात है। सभा के संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिये आवश्यक है कि सभा और समाज का लखनऊ में अच्छा प्रभाव हो। सभा को सर्व प्रथम लखनऊ में आर्य समाज के व्यापक प्रचार की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। इस कार्य को यहाँ की आर्यसमाजों के सहयोग से आसानी के साथ किया जा सकता है।

आशा है इन प्रस्तावों पर सभा के अधिकारी उचित ध्यान देने की कृपा करेंगे।

★ ★

(पृष्ठ ५ का शेष)

भाग्यनगर न रखकर विजयनगर रक्खा जाय। भाग्यवन्ती तो एक वेश्या थी जो निजाम के किसी पूर्वज के यहां रही होगी उसको प्रसन्न करने के लिये भाग्यनगर नाम चला था, जिसका स्मरण अब एक कलंक का कारण होगा। अब तो जब हैदराबाद के साथ विजय के तीन २ इतिहास लगे हुए हैं, औरंगजेब को हराकर शिवाजी की विजय का और कल रिजवी शाही पर विजय, और तीसरा आर्य सत्याग्रह की विजय का इसके अतिरिक्त हैदर का अर्थ भी विजयी है तब क्यों न विजय नगर नाम रक्खा जाय।

★

मिलने चाहिए। भावापन्न पत्नियों के खर्चे के लिए नये कानून द्वारा इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। अन्त में मैं यही चाहता हूँ कि कन्या के अधिकार के लिए अविलम्ब निम्नलिखित परिवर्तन किये जाने चाहिए—

(१) यदि २५ साल की उम्र तक कन्या का विवाह न हुआ तो पैतृक सम्पत्ति में उस के भाई के हिस्से के बराबर आधे हिस्से का अधिकार उसको मिलना चाहिए। विवाह के बाद उसको यह अधिकार नहीं रह जायगा।

(२) कन्या को यह भी मांगने का अधिकार देना चाहिए कि साधारणतया अपनी पैतृक सम्पत्ति से अपने भाई के हिस्से का आधा हिस्सा उसे मिले, चतुर्थांश हिस्सा नहीं जैसा कि स्मृतियों का मत है, और यह हिस्सा कन्या की शिक्षा और विवाह में खर्च किया जाय। शिक्षा और विवाह के बाद यदि कोई रकम बच जाय तो इसकी अधिकारिणी वह नहीं हो सकती।

(३) दुराचारी पति के लिए यह सम्भव नहीं कि दाम्पत्य अधिकारों के लिए वह अदालत की शरण ले। यदि अदालत को यह विश्वास हो जाय कि पर्याप्त कारणों से पत्नी अलग रहने के लिए विवश है तो उसको (पत्नी को) केवल गुजारा ही न मिले, अपितु, पुत्र के हिस्से के बराबर हिस्सा दिया जाय।

(४) नैत्य खर्च के लिए पत्नी को अधिकार हो कि वह अपने पति की आय से पाँच या दस प्रतिशत अपने पास रख ले। (स्वतन्त्र भारत से)

निम्न लिखित आर्य समाजों के उत्सव—

अंकित तिथियों में मनाये गये नगर कीर्तन समारोह के साथ निकाले तथा अनेक विद्वान् आर्य नेताओं तथा भजनोपदेशकों ने प्रचार किया:—

(१) आ० स० उतरौला गोंडा-२५ से २८ फरवरी
(२) गु० कु० महाविद्यालय विरालसी ८ से १० मार्च
(३) श्री दयानन्द वैदिक आश्रम गदपुरी (गुड़ गाँवा) ५ से ७ मार्च
(४) आ० स० अमौना ४ से ६ मार्च तक
(५) गुरुकुल सिकन्दराबाद २४ से २७ फरवरी
(६) ऋषि आश्रम देवरादेव (अलवर) २५ से २७ फरवरी
(७) आ० स० तिवाया सहारनपुर १३ से १६ मार्च
(८) मगलौर सहारनपुर में वेद कथा १६ से २० मार्च
(९) आ० स० शेरकोट बिजनौर २६ से ०२ मार्च
(१०) पकुलीलालपुर १४ से १६ मार्च
(११) आ० स० झरिया २४ से २७ मार्च
(१२) आ० स० जलालाबाद
(१३) आ० स० पीलीभीत २७ से २९ मार्च
(१४) बहसुमा मेरठ १८ से २० मार्च तक वैदिक धर्म सम्मेलन
(१५) आ० स० उन्नाव २७ से ३० मार्च
(१६) आ० स० डालटनगज ८ से १० अप्रैल
(१७) आ० स० भूगारक नारनौल २१ से २४ मार्च

खलासी लाइन (कानपुर) में आर्यसमाज की स्थापना

ता० १७ मार्च को श्रीमान प० कालीचरनजी मौलवी आलिम फाजिल की विशेष प्रेरणा द्वारा श्रीमान बा० शिवव्रतजी के मकान पर आर्य समाज की स्थापना हुई जिसका अस्थाई निर्वाचन हुआ। श्री हरद्वारीलालजी प्रधान, श्री शिवव्रतजी उपप्रधान तथा श्री देशबन्धु प्रधान मंत्री चुने गये।

गुरुकुल अयोध्या के संचालकों से

इधर कुछ समय से कतिपय मान्य व्यक्तियों के पत्र गुरुकुल अयोध्या में प्रबन्ध को अव्यवस्था के विषय में आ रहे हैं। आर्य जगत् की एक विशिष्ट संस्था होने के नाते हम उन्हें यहां प्रकाशित नहीं करना चाहते। परन्तु संचालकों से इतना निवेदन अवश्य करेंगे कि जहां तक हो प्रबन्ध में सतर्कता तथा सुचारुता होनी ही चाहिये जिससे कि किसी को ऐसा लिखने या कहने का कम-से कम अवसर मिले। हम आशा करते हैं कि यह संस्था दिनों दिन अधिक उन्नति करती हुई वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा का प्रसार करेगी।

—सम्पादक

निर्वाचन

आ० भा० दयानन्द साल्वेशन मिशन

प्रधान—ला० देवी चन्द्र एम० ए०
उ० प्र०—ला० रामदास बी० ए० बी० टी मलिक वेनीराम एम० ए०
मन्त्री—ला० हरिराम बनेजा एम० ए०
उपमंत्री—ला० यशपाल एम० ए०

—आर्य कुमार सभा हापुड़ के नव निर्वाचित पदाधिकारियों की सूची

प्रधान	श्री अविनाशचन्द्र जी आर्य
कार्य कर्ता प्रधान	श्री हरिश्चन्द्र जी
उपप्रधान	श्री भारत भूषण जी
मन्त्री	श्री विजेन्द्र जी आर्य
उपमन्त्री	श्री रामकुमार जी श्री वेदभूषण जी
कोषाध्यक्ष	श्री मूल चन्द्र जी

अखिल भारतवर्षीय प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन लखनऊ के बारे में

भारत की समस्त आर्यसमाजों से नम्र निवेदन

युक्तप्रान्त की राजधानी लखनऊ नगर में आगामी मई सास में १५ से १९ तारीख तक होने वाले प्रथम आर्य उपदेशक महा सम्मेलन की सूचना विज्ञप्तियों तथा समाचार पत्रों द्वारा आप तक पहुँच ही चुकी है। आर्यसमाज के प्रचार क्रम को स्वतन्त्र भारत में सुसंगठित एवं प्रभावोत्पादक स्वरूप प्रदान करने तथा प्रगतिशीलता लाने के लिये जो यह विशाल आयोजन हो रहा है इसमें भारत भर से लगभग पांच सौ आर्य-ब्राह्मण (उपदेशक, प्रचारक, सन्यासी, महिला-उपदेशिकायें) पधार रहे हैं। गत शताब्दी के आर्यसमाज के इतिहास में इस प्रकार का यह प्रथम ही सम्मेलन है। इसको सफल बनाने के लिये हर प्रान्त की समाजों से हमारा कुछ यह निवेदन है।

१—१३ मई से १९ मई तक किसी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव न किया जाय।

२—जो उपदेशक आपके आस-पास या आपके नगर में रहते हैं उनके बिना कहे ही उनके लखनऊ आने जाने का मार्ग व्यय अपनी समाज से देने की कृपा करें। यदि संकोचवश वह न लें तो हमारे कार्यालय में निम्न पते पर भेज दें, उन्हें यहां से दे दिया जावेगा।

३—जिन समाजों से कोई उपदेशक, प्रचारक सन्यासी सम्बन्धित न हो वह कम-से-कम एक उपदेशक का व्यय जो अनुपात से २०) बीस रुपये होगा कार्यालय को भेज कर अपने सहयोग का परिचय दें।

४—आपके नगर से जितने महानुभाव उपदेशार्थ अथवा दर्शकार्थ आवें उनकी सूचना पूर्व ही दें जिससे ठहरने आदि की व्यवस्था उनको ठीक मिले।

नोट—और जो अपने सुझाव हों देने की कृपा करें।

कार्यालय—
५, हिल्टन रोड,
लखनऊ।

भवदीय—
प्रकाशवीर शास्त्री
प्रधान मन्त्री।

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव जो निम्न तिथियों में होंगे!

१. आ. स. इटारसी—२१ से २४ अप्रैल तक। २. आर्य विवेक विद्यालय अमरोहा—१० से १२ मई तक। ३. आ. स तिलहर २५ से २८ अप्रैल। ४. आ.स. मुजफ्फरपुर—५ से ८ मई। ५. आ स. कुन्दरकी १५ से १६ मई। ६. आ स. मिठौरा बाजार, गोरखपुर—१ से ३ मई

आर्य साहित्य प्रदर्शिनी

१४वें संयुक्त प्रांतीय आर्यकुमार सम्मेलन बिजनौर के अवसर पर आर्य साहित्य की एक प्रदर्शिनी होने जा रही है। इस प्रदर्शिनी में वेदों से आज तक प्रकाशित समस्त आर्य साहित्य प्रदर्शित किया जायगा। सम्मेलन १०, ११, १२, १३ जून ४९ होने जा रहा है।

आ० स० खरगूपुर (गोंडा)

—श्री प० गयाप्रसाद जी प्रधान। श्री गणेशदत्त जी उप प्रधान। श्री मोहन लाल जी आर्य मंत्री। श्री प० पारस नाथ जी उप मंत्री श्री प० भगवती प्रसाद जी उपमंत्री। श्री लाला गिरधरगोपालजी कोषाध्यक्ष, श्री रामलुटावनजी पुस्तकाध्यक्ष श्री रामलालजी गुप्ता बी०ए० निरीक्षक।

—गुरुकुल महाविद्यालय विरालसी स्नातक समिति का निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ है।

प्रधान श्री विद्यावतंस धर्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री। उपप्रधान श्री प० ब्रह्मदत्तजी शर्मा विद्यावतंस आयुर्वेदाचार्य। मंत्री श्री प्रियव्रत शास्त्री। उपमंत्री नारायणदत्तजी शास्त्री। कोषा० देवदत्तजी शास्त्री।

आर्य साहित्य प्रदर्शिनी

१४ वें संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन बिजनौर के अवसर पर आर्य साहित्य की एक विशाल प्रदर्शिनी होने जा रहा है। इस प्रदर्शिनी में वेदों से आज तक प्रकाशित समस्त आर्य साहित्य प्रदर्शित किया जायगा। सम्मेलन १०,११,१२,१३ जून ४९ को होने जा रहा है।

६ वर्षमें प्रांतके सभी बालिग शिक्षित हो जांयगे

लखनऊ, १४ अप्रैल। प्रांतीय सरकार द्वारा स्थापित बालिग शिक्षा समिति ने १ करोड़ रुपये के खर्च की एक योजना सरकार को दी है जिसके अनुसार ६ वर्ष में प्रांत के सभी बालिग शिक्षित किए जा सकेंगे। उक्त समिति के अध्यक्ष लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एम. के. सिद्धान्त थे।

योजना के अनुसार १४ वर्ष से ४० वर्ष तक के व्यक्तियों को शिक्षा देने के लिए १०० सरकारी और १५० सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल प्रांत के सभी जिलों में खोले जायेंगे। हर दूसरे वर्ष प्रत्येक स्कूल क्षेत्र में स्थानान्तरित कर दिया जायगा और प्रत्येक केन्द्र में एक समय पर १५० व्यक्ति शिक्षित होंगे।

कार्यालय—नारायण स्वामी भवन ५, हिवेट रोड
तार का पता—'आर्य सभा' लखनऊ

सम्पादक—प० धर्मपाल विद्यालङ्कार

वर्ष ५२ } अङ्क १६ }
लखनऊ वैशाख कृष्ण ३० गुरुवार सवत २००६ वि २८ अप्रैल सन् १९४९
दयानन्दाब्द १२४, आर्य्य सवत् १९७२९४९०४९

{ वार्षिक मूल्य ६) छ मास का ४)
प्रति =) विदेश में ८)

भारत, राष्ट्रमडल [ब्रिटिश कामनवेल्थ] मे रहेगा

ब्रिटिश नरेश राष्ट्र मडल का प्रधान रहेगा

भारत स्वतन्त्र प्रजातन्त्र होगा

लदन, २७ अप्रल । आज ब्रिटिश प्रधान मत्री क निवास स्थान स प्रकाशित एक सरकारी वक्तव्य में घोषणा की गयी कि राष्ट्र मडल क अन्दर हिंद को स्वतन्त्र प्रजातन्त्र क रूप में रखने का निर्णय कर लिया गया है । २६ ता० को राष्ट्र मडल क प्रधान मत्रियों क सम्मेलन म उक्त आशय का समझौता हुआ ।

वक्तव्य म कहा गया है कि पिछल सप्ताह ब्रिटन, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान, लका क प्रधान मत्री एव कनाडा क परराष्ट्र मत्री यहा आपस म मिले और सब ने विचार किया कि हिंद न प्रजातन्त्रात्मक विधान अपनान का जो निर्णय किया तथा राष्ट्र मण्डल की सदस्यता जारी रखन की इच्छा प्रकट की है उससे उत्पन्न वैधानिक स्थिति को किस प्रकार हल किया जाय। वार्ता बहुत ही सद्भावना पूर्ण वातावरण में हुई और राष्ट्र मडल देशों क सभी सरकारों के प्रतिनिधियों ने पूरी तरह विचार विमर्श करने के बाद निम्नलिखित घोषणा प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

"ब्रिटेन, कनाडा, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, हिंद, पाकिस्तान और लका की सरकारों ने शीघ्र ही हिंद में होने वाले वैधानिक परिवर्तन पर विचार किया । य देश ब्रिटिश राष्ट्र मडल क सदस्य की हैसियत से सम्बद्ध हैं और ब्रिटिश ताज क प्रति निष्ठा रखते हैं जो उनक परस्पर स्वतन्त्र सम्बन्धों का प्रतीक भी है ।

हिंद सरकार न राष्ट्र मण्डल क अन्य देशों को सूचित किया है कि नय विधान क अनुसार हिंद की एक परम सत्ताधारी स्वतन्त्र प्रजातन्त्र की हैसियत हो जायगी । साथ ही हिंद न इच्छा प्रकट की है कि वह राष्ट्र मण्डल की पूर्ण सदस्यता स्थिर रखना चाहता है और ब्रिटिश राज्य को राष्ट्र मडल क स्वतन्त्र सदस्य राष्ट्रों क स्वतन्त्र सहयोग का प्रतीक तथा इसक नाते राष्ट्र मडल का शिरमौर स्वीकार करन को तयार है ।

दूसर देशों की सरकारें जिनकी सदस्यता क आधार म किसी प्रकार का अन्तर नहीं पडता है, हिंद को इस क अनुसार सदस्य स्वीकार करन को तैयार है । तदनुसार ब्रिटन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, हिंद, पाकिस्तान एव लका घोषणा करते है कि व राष्ट्र मडल क स्वतन्त्र और बराबरी क सदस्य की स्थिति से एक बद्ध बने रहेंगे और शांति, स्वाधीनता एव उन्नति क लिए स्वतन्त्रता पूर्वक परस्पर सहयोग करते रहेंगे ।

* * *

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली नव वर्ष का निर्वाचन

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवशन २४।४।४९ को बलिदान भवन दिल्ली में श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति क सभापतित्व म सम्पन्न हुआ । इसमे भारतवर्ष क प्रत्यक प्रान्त क ५० प्रतिनिधि सदस्यों न भाग लिया । आगामी वर्ष क लिय निम्नप्रकार अधिकारियों तथा अन्तरग सदस्यों का निर्वाचन स्वीकृत हुआ ।

अधिकारी

प्रधान श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति देहली,
उप प्र श्री बा पूर्णचन्द्जी एडवोकेट आगरा,
,, ,, माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त स्पीकर लजिस्लटिव असेम्बली मध्यप्रात
प० मिहिरचन्द जी धीमान् कलकत्ता,
म त्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम०ए०
उप म लाo रामगोपालजी दुशालवाले दिल्ली,
कोषाध्यक्ष ला० नारायणदत्त जी नई दिल्ली,
पुस्तकाध्यक्ष ला० हरशरण दास जी रईस गाजियाबाद । १७ अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुय तथा आगामी वर्ष क लिय ४८८५) रु० का बजट स्वीकृत हुआ ।

आर्यमित्र का उपदेशक सम्मेलनाङ्क एक अक बन्द रहेगा

१२ मई को अ० भा० उप० महासम्मेलन के उपलक्ष्य मे प्रकाशित होने वाले "उपदेशक सम्मेलनाङ्क' क कारण ५ मई का आर्यमित्र बन्द रहेगा । कृपया ग्राहक व एजेण्ट नोट कर ल । यह सम्मेलनाङ्क विशेष सग्रह की वस्तु होगा । गण्यमान्य विद्वानो क लेख, कवितायें, जीवन परिचय तथा अनेक चित्र इसकी शोभा बढायेंगे । एक प्रकार से यह आर्य समाज का इतिहास होगा ।

अपनी प्रति क लिय अभी से लिख ।

इस अङ्क का मूल्य ॥) होगा ।

गाधी हत्यकाड का मुकदमा

शिमला, २९ अप्रैल । सरकारी तौर पर घोषणा की गई है । कि पूर्वी पजाब हाईकोर्ट में महात्मा गाधी हत्याकाण्ड क अपराधियो की अपीलो की सुनवाई २ मई से शुरू होगी ।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का सचित्र साप्ताहिक मुखपत्र

कोल्हापुर तथा दक्षिणी रियासतों का विलीनीकरण

बम्बई २२ अप्रैल। गुजरात तथा दक्षिण की सभी रियासतें जिनमें कोल्हापुर भी शामिल है और जिनका शासन प्रबन्ध नागरिक प्रशासन अधिकार के अन्दर बम्बई सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था १५ मई को बम्बई प्रान्त में पूर्ण रूप से मिला दी जायगी।

एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि बड़ोदा रियासत जिसका शासन प्रबन्ध १ मई को प्रबन्धक और विशेष कमिश्नर अपने हाथ में ले लेंगे, १ जुलाई को प्रान्त में मिलाई जायेगी।

साधारण जनता के उत्थान की प्रगति असन्तोषजनक

—सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

अहमदाबाद २३ अप्रैल। विश्व विद्यालय कमीशन के अध्यक्ष डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने यहाँ पर एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि हमने राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर ली है परन्तु सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक स्वाधीनता अभी हमें नहीं मिल सकी है। स्वाधीनता की ज्योति और उल्लास को साधारण जनता अभी नहीं महसूस कर पायी है। जन साधारण के लिए अभी यह संभव नहीं हो सका है कि वह सुन्दर और सुखकर मानव जीवन व्यतीत कर सके जो कि प्रजातंत्र का उद्देश्य होता है।

हिंद में मेहनत कश मजदूरों के उत्थान का कार्य संतोषजनक रूप से आगे नहीं बढ़ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्त से विशेषकर ग्रामीण जनता में तो क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाना चाहिये।

पूर्वी पंजाब में डिप्टी स्पीकरों का पद समाप्त

शिमला, २६ अप्रैल। केन्द्रीय कांग्रेस पार्लमेंट्री बोर्ड के निर्णयानुसार पूर्वी पंजाब में डिप्टी मिनिस्टरों के पद समाप्त कर दिये गये हैं। फलतः पूर्वी पंजाब के सब ६ डिप्टी मिनिस्टरों ने अपने त्याग-पत्र आज प्रधान मन्त्री श्री भीमसेन सच्चर को दे दिये।

नेहरूजी और डाक्टर मलान

लन्दन २७ अप्रैल। आज यहां हिंद और दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्रियों की पहली गुप्त बैठक हुई। जब नेहरूजी ने डाक्टर मलान को दावत दी।

तीन वर्ष पहले हिंद ने दक्षिण अफ्रीका से दौत्य सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था (अपना हाई कमिश्नर वापस बुला लिया था) उसके बाद दोनों देशों के मंत्रियों ने पहली बार व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया।

डच अधिकारी का अनशन

हेग, २६ अप्रैल। पूर्वी सुमात्रा के भूतपूर्व गवर्नर जोखीर वान सुटेलेन ने रानी जुलियाना को तार द्वारा सूचित किया है कि यदि हिन्देशिया सम्बन्धी नीति में बुनियादी परिवर्तन नहीं होता तो मैं शनिवार को [illegible] करना शुरू कर दूंगा।

उन्होंने हिन्देशिया सम्बन्धी ढुलमुल और बेपरवाही की नीति को चलाने वालों के इस्तीफे की मांग की है और कहा कि हिन्देशिया को डच राजतन्त्र के अन्तर्गत हालैण्ड के समान ही स्वतन्त्रता दी जाये।

अ० भा० उपदेशक महासम्मेलन

आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि अ. भा उप. महासम्मेलन जो पहले डी. ए. वी. कालिज के प्रांगण में होने वाला था अब लखनऊ क्लब (हजरतगंज आउट्रम रोड) के मैदान में होगा। तिथियां वही हैं।

हाई स्कूल की परीक्षायें पीछे हट जाने से ऐसा निश्चय करना पड़ा है, क्योंकि डी. ए. वी. कालिज परीक्षा का केन्द्र है और १६ मई तक वहां परीक्षायें हैं, जब कि सम्मेलन १५ से १७ तक होना है। कृपया नोट करलें।

यह नया स्थान सभा भवन के भी निकट है।

सिंध लौटनेवाले हिंदुओं के मकान खाली नहीं किये जायँगे

करांची, २४ अप्रैल। सिंध सरकार ने अपने जिला अधिकारियों को सूचित किया है कि वे इस बात को देखें कि वापस आये गैर मुसलिम शरणार्थियों के लिए स्थान ढूंढने का फल ऐसा न हो कि पहले के बसे हुए मुसलिम शरणार्थियोंको घर या दुकानों से निकाल दिया जाय।

इस संबंध में यह याद रखने की बात है कि सिंध सरकार ने अपने प्रान्त से बाहर गये व्यक्तियों को वापस आने की अनुमति दे दी है।

अमेरिकी विमानों से १ लाख १० हजार का सोना पकड़ा गया

बम्बई, २६ अप्रैल। बम्बई के चुंगी अधिकारियों ने आज सुबह और कल सान्ताक्रूज हवाई अड्डे पर काहिरा से आए हुये दो अमेरिकी विमानों के चालकों से १, १०, ६०० रुपये मूल्य का सोना पकड़ा है।

भाषावार प्रांतों का निर्माण अवांछनीय

आ० कृपलानी

हैदराबाद, २० अप्रैल। आचार्य कृपालानी ने यहाँ पत्रकारों के सामने भाषण करते हुए कहा कि—अन्य बहुत से नारों की तरह आज भाषावार प्रांत' भी एक नारा हो गया है।

"मैं तो भाषावार प्रांत के प्रश्न को एक पेचीदा सवाल का एक पहलू मात्र समझता हूँ। आर्थिक और शासन प्रबन्ध सबंधी सुविधाओं का उचित ध्यान रखना चाहिए, और फिर सीमावर्ती इलाकों का सबसे बड़ा सवाल है। हमारे देश में बिलकुल अलग अलग भाषावारप्रांत होना असंभव बात है। हमेशा ऐसे स्थान होंगे जो दुभाषिये रहेंगे।

आगे आपने कहा—मैं, इस समय कोई फेरफार करने के खिलाफ हूँ, क्योंकि रद्दोबदल से नयी समस्याएं खड़ी होंगी जिन्हें हम सुलझा न पायेंगे। हमारे लिए इसी समय अनेकों समस्याएं सुलझाने के लिए पड़ी हुई हैं।

बिहार में भीख मांगना अपराध

पटना, २३ अप्रैल। बिहार असेम्बली ने एक बिल प्रवर समिति के सुपुर्द कर दिया जिसमें असेम्बली से यह प्रस्ताव किया गया कि भीख मांगना जुर्म करार दे दिया जाय और भिखारियों को काम कराने के लिए बाध्य किया जा सके।

यह बिल कांग्रेसी सदस्य श्री महेश प्रसाद ने प्रस्तुत किया था।

दहेज प्रथा अपराध घोषित हो

पटना, २३ अप्रैल। बिहार प्रान्तीय असेम्बली ने कल एक बिल प्रवर समिति के सुपुर्द कर दिया जिसमें असेम्बली से मांग की गयी है कि विवाहों में दहेज लेना तथा देना अपराध घोषित किया जाय।

यह बिल प्रान्त में बसे हुए हिन्दुओं, जैनों, और सिखों पर लागू होगा। मुसलमानों पारसियों और ईसाइयों पर लागू नहीं होगा।

बिल श्रीमती सुन्दरी देवी (कांग्रेस) ने प्रस्तुत किया था।

बर्मा से ८ हजार भारतीय

नई दिल्ली- २६ अप्रैल। ज्ञात हुआ है कि बर्मा में जब से अशांति आरंभ हुई है तब से अब तक लगभग ८००० भारतीय शरणार्थी भारत लाये जा चुके हैं। उनमें से अधिकांश गरीब लोग हैं और उनके मद्रास तथा बम्बई लाने का खर्च भारत सरकार की ओर से शरणार्थी सहायक ने किया है।

ऐडमिरल निमिज की यात्रा स्थगित

लेक सक्सेस। कश्मीर जनमतगणना के प्रबन्धक एडमिरल चेस्टर निमिज ने अपनी यात्रा अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी है। आप अप्रैल के अन्त में भारत के लिये रवाना होने वाले थे।

आप के कार्यालय से ज्ञात हुआ है कि अभी आप के रवाना होने की तिथि नहीं निश्चित की जा सकती क्योंकि कश्मीर में स्थिति स्पष्ट नहीं जान पड़ती।

मार्शल च्यांग को तीन साल के अंदर पुनः विजय की आशा

शंघाई, २७ अप्रैल। २५ वर्ष से चीन के सर्वेसर्वा मार्शल च्यांग-काई शेक जिन्होंने तीन माह पहले राजनीति से सन्यास ले लिया था आज एकाएक फिर क्षेत्र में उतर आये जब आपने चीनी जनता से कम्युनिस्टों के खिलाफ डट कर मोर्चा लेने की अपील की और यह आशाप्रकट की कि तीन वर्ष के अदर सरकारी सेनाओं की जीत हो जायगी।

११ विदेशी कम्पनियोंको पूंजी लगाने की आज्ञा

नयी दिल्ली, २२ अप्रैल। भारत सरकार ने पूंजी जारी करने वाले विभाग के नियन्त्रण के द्वारा ११ विदेशी कम्पनियों को देश में पूंजी लगाने की आज्ञा प्रदान की है। सभी कम्पनियों की पूंजी ५ लाख से अधिक है। इन ११ कम्पनियों में फेयरलेप्लेस सिक्योरिटीज लिमिटेड कम्पनी भारत में ७२ लाख की पूंजी तथा मेसर्स काम्पटन पार्किन्सन वर्क्स ३६ लाख की पूंजी लगाने को तैयार है। ६ अन्य कम्पनियों के प्रार्थना पत्रोंपर विचार किया जारहा है

ग्राहकों से

५ मई का आर्यमित्र बन्द रहेगा। जिनका वार्षिक मूल्य मई में समाप्त हो रहा है उनको '१२ मई का उपदेशक सम्मेलनांक' वी. पी. द्वारा प्राप्त होगा। अलग से एक सूचना भी उनको इसी-अंक में भेजी जा रही है। इस विषय में विशेष १० मई तक सूचित कर दें। वी. पी. प्राप्त होने पर छुड़ाने की कृपा करें। विज्ञापनदाता पत्र व्यवहार करें।

—अधिष्ठाता

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य्यमित्र

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्त न स्व-प्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रम.द मतन्द्राः ॥

ऋ. ८।२।१८ अ. २०।१८।३

देव लोग यज्ञ कर्म करते हुए की इच्छा करते हैं। निद्राशील सुस्तों को नहीं चाहते। स्वयं आलस्य रहित देव लोग भूल करने वाले का नियमन करते हैं।

गुरुवार २८ अप्रैल १९५६

सभा का वार्षिक अधिवेशन

युक्त प्रान्तीय आ० प्र० सभा का ६२ वाँ वार्षिक अधिवेशन प्रतिवर्ष की भाँति ५,६ जून को गाजीपुर में होना निश्चित हुआ है सम्भवत आर्यसमाजें इस अधिवेशन के लिये अपनी २ तैय्यारी कर रही होंगी।

संयुक्त प्रान्तीय आ प्र सभा ने अपने इस ६२ वर्ष के जीवन में अनेक परिवर्तन देखे हैं, देश ने दो वर्ष पूर्व तक विदेशी राज्य के नियन्त्रण में विविध राजनैतिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक उलटफेर देखे जिनके प्रभाव से आर्यसमाज भी अपने को अछूता नहीं रख सका है। समय असमय हम यह अनुभव करते आये कि हम जो कुछ करना चाहते हैं वह नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि राज्य अपना नहीं। अपने कार्यक्रम की गति को इस प्रकार से आर्यसमाज ने चलाया कि जिससे वह विदेशी राज्य के होते हुए भी देश व जाति के लिये अधिक से अधिक उपयोगी हो सके। इसलिये हमने अपनी प्रगति पर भी सन्तोष किया कि हम जो कुछ भी कर पाये हैं वह उन परिस्थितियों में पर्याप्त था, न कि वह हमारे कार्य की सीमा थी। हम करना बहुत चाहते थे, अब भी चाहते हैं, क्यों कि हमारे उद्देश्य विशाल हैं महर्षि ने उदात्त विश्वजनीन कार्यक्रम देकर आर्यसमाज को ऐसी संस्था का स्वरूप दिया कि इसकी आवश्यकता संसार को सदा बनी रहे।

इन्हीं सब बातों पर विचार करने के लिये हमारे सम्मेलन, अधिवेशन, उत्सव आदि होते रहते हैं। प्रतिनिधि सभा का प्रतिवर्ष होने वाला अधिवेशन भी अपने कार्यक्रम में प्रगति तथा दृढ़ता लाने का ही एक प्रयत्न है। परन्तु अब उस प्रयत्न तथा उत्तरदायित्व की गुरुता अधिक बढ़ जाती है जब कि सबसे बड़ी विकट समस्या, मार्ग का प्रधान रोड़ा (विदेशी राज) हट चुका है। हम पग पग पर अपनी विवशता उस रूप में नहीं दिखा सकते जिस तरह पहले कह दिया करते थे। आज तो कुछ करना ही होगा, अपने उद्देश्यों का मूल्य समझ कर दूसरों को भी समझाना होगा। परिस्थितियाँ यदि अब भी अनुकूल नहीं तो उन्हें अनुकूल करना होगा। सदा झुकनेकी प्रवृत्ति छोड़नी होगी। मानवता के मार्ग को तो सुन्दर व प्रशस्त बनाने का प्रयत्न करना ही होगा। आ. स. के उद्देश्य महान हैं, उनके पीछे दिव्यात्मा महर्षि का आशीर्वाद है, और अगाध भारतीय संस्कृति का लोकोत्तर ज्ञान है।

भारत स्वतंत्र होने के बाद प्रांतीय सभा का यह दूसरा अधिवेशन है इसमें भाग लेने वाले प्रतिनिधि गण ने अपने वर्ष के कार्यक्रम का इस प्रकार निश्चित करना है जिससे आने वाला वर्ष पूर्व से अधिक श्रेष्ठ हो। हम प्रतीत हो कि हम कुछ आगे बढ़े हैं। समाज तथा साथ-साथ व्यक्तिगत जीवना में भी जो निरन्तर एक मूक शिथिलता आती जा रही है उसे दूर करने का प्रयत्न करना है, १२ महीना के विगत कार्य काल में जो अड़चनें आई हैं उनका उपचार भी सोचना है, और साथ-२ देखना है कि भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर भी आर्यसमाज देश व जाति के लिये अधिक से उपयोगी किस रूप में हो सकता है?

पर क्या यह सब होगा?

अनुभव बताता है कि प्राय: जिस समय वार्षिक अधिवेशन की चर्चा होती है या कोई अधिवेशन की तयारियों की बात कही जाती है तो उसका अभिप्राय अधिकांशत निर्वाचन लगाया जाता है अन्य सब कार्यक्रमों की अवहेलना करके निर्वाचन को महत्ता दी जाती है अधिवेशन की तैय्यारी निर्वाचन की तैय्यारी समझी जाती है या थोड़े शब्दों में यूं कहें तो उपयुक्त होगा कि "वार्षिक अधिवेशन" का अभिप्राय ही कुछ ऐसा हो गया है कि हर कोई इसको "वार्षिक निर्वाचन" के रूप में प्रधानता देता है।

हमने देखना है कि हमारा दृष्टिकोण, देश जाति के निर्माण में लगने वाले मस्तिष्कों का यह दुरुपयोग, समाज के उपकार को मुख्य मानने वाले आर्यजनों की यह सीमित परिधि कहाँ तक क्षम्य है? और इससे कहाँ तक हम अपनी प्रति वर्ष की घोषणाओं को पूरा कर पाते हैं।

यह ठीक है कि किसी संस्था के संचालन लिये उपयुक्त व्यक्तियों का नेतृत्व अत्यावश्यक है और उनका निर्वाचन भी अत्यन्त बुद्धिमता तथा उदारता से होना चाहिये। परन्तु इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि सारी शक्ति इसी में व्यय की जाय और अन्य कार्यों से निस्पृह होकर बैठा जाय, और फिर यह भी कहा जाय कि "आर्यसमाज कुछ शिथिल होता जा रहा है।"

भारत का यह संक्रान्ति काल है, किसी देश का संक्रान्ति काल तद्देशीय संस्थाओं के लिये जीवन मरण की समस्या भी बन जाया करता है। यदि ऐसे समय संस्था या उसके कर्णधार जनता का समुचित मार्ग प्रदर्शन करने की क्षमता रखते हैं, उनके सम्पर्क में आने वाले साधारण जन कुछ विशेषता का अनुभव करते हैं, क्लान्त दु:खीजन यदि निकटता में आंशिक भी शान्ति प्राप्त कर पाते हैं तो वह संस्था अवश्य आगे बढ़ती जायगी। जन सम्पर्क का उत्तरोत्तर घटते जाना तथा आत्मविश्वास की कमी, ये कारण किसी भी संस्था की अवनति के लिये पर्याप्त हैं। विचारों में अनुदारता भी एक प्रमुख दोष है।

इसलिये आज अधिक न लिखते हुये हम इतना ही कहेंगे कि इस वार्षिक अधिवेशन में प्रान्त भर के प्रमुख कार्यकर्ता भाग लेंगे, जो गतवर्ष की गति विधि पर दृष्टिपात करके अग्रिम वर्ष का कार्यक्रम तैय्यार करेंगे। इस सब के लिये आवश्यक है कि हम केवल रस्म अदा करने की भावना लेकर न आयें, अंधेरे में तीर मारने की प्रवृत्ति ने आज आर्यसमाज को अवांछित स्थिति में ला कर खड़ा कर दिया है। पराये तो क्या आकर्षित होंगे, अपने भी ऊबने लगे हैं। निश्चित व ठोस कार्यक्रम तथा उसको पूर्ण करने के लिये विचारों की दृढ़ता न होने पर इससे अधिक आशा भी क्या की जा सकती है।

हमारा विचार है कि बदले हुये समय को देखकर आर्य समाजें भी अपने उत्तरदायित्व को समझें। प्रान्त में लगभग १००० समाजें हैं सब के प्रतिनिधियों को चाहिये कि आर्य समाज की प्रगति को बढ़ाने के लिये निश्चित योजनायें लेकर अधिवेशन में अवश्य पधारें। यदि लगन व आत्म विश्वास हो तो यात्रा कष्ट या स्थान की दूरी उस में बाधक न होकर साधक ही बनते हैं। असुविधायें तो उत्साही पुरुष की सहायक हुआ करती हैं। आर्यसमाज तो असुविधाओं में फला फूला है और फिर आज तो वे नहीं के बराबर हैं। प्रान्त के अधिक से अधिक प्रतिनिधि एकत्रित होकर एक समिति बनायें जो अधिक से अधिक समय देकर योजनाओं को कार्यान्वित कराने में सहायक हों। हम आशा करते हैं कि प्रान्त के सभी आर्यजन, इस अवसर पर अपने २ कर्तव्य का पालन करने में पीछे न रहेंगे। सम्मिलित प्रयत्न यदि थोड़ा भी हो तो अधिक गुण दिखाता है। यदि आर्यसमाज धुंधलेपन से बाहर निकलकर स्पष्ट योजनायें जनता को दे सकेगा और उनके लिये कुछ भी क्रियाशील होगा तो निश्चित रूप में उसका भविष्य उज्ज्वल होगा।

समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता

गत २५ फर्वरी को लेकसक्सेस में राष्ट्र संघ ने 'समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता की स्थिति का अध्ययन कर रिपोर्ट देने के

लिये १२ सदस्यों की एक समिति का निर्माण किया है।

'समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता' और 'सम्पादन कला' के उच्च स्तर किये जाने की आवश्यकता को कौन स्वतन्त्रता प्रेमी अस्वीकार कर सकता है। अखबारों द्वारा ही जनता की सच्ची भावना का प्रकाशन होता है और वे ही अत्यन्त सुगमता से चाहे कल्याणदायक नेतृत्व दें और चाहे असत्य प्रचार द्वारा हानि पहुँचा दें। वर्तमान प्रचार युग में पत्रों का महत्व विशेष रूप से बढ गया है।

इस देश में समाचारपत्रों के प्रकाशन काल से ही 'विचारशील महानुभाव पत्रों पर राज्य के किसी प्रकार के अनुचित दबाव के विरुद्ध आन्दोलन करते रहे हैं। प्राय, देखा गया है कि जब कभी जनतन्त्रात्मक प्रणाली का, जिसका आधार ही दलबन्दी पर होता है, प्रादुर्भाव हुआ, शासनारूढ दल ने अपने विरुद्ध मत रखने वालों पर अनुचित आघात किया है। इसके अतिरिक्त पत्रों की स्वतन्त्रता अपहरण होने की एक दूसरी दिशा से भी आशंका हो गई है। इस अर्थ प्रधान युग में धनिक व्यवसायी वर्ग तथा प्रबल राजनैतिक दल पत्रों को खरीद कर स्वतन्त्रतापहरण करते हुये देखे गये हैं।

गत २४ मार्च को भारतीय पार्लियामेण्ट में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि केन्द्रीय सरकार के शासन के अन्तर्गत छोटे से प्रदेश में ही ४० समाचार पत्रों से जमानत ली गई व पत्र बन्द कर दिये गये गये। इससे भारत जैसे विशाल देश की पत्रों की स्वतन्त्रता का अनुमान लगाया जा सकता है।

कांग्रेस के प्रधान (राष्ट्रपति) डा० पट्टाभिसीतारमैय्या ने मद्रास में एक प्रेस कान्फ्रेंस में वक्तव्य दिया था—

'राष्ट्रीय सरकार के अन्तर्गत भारतीय समाचारपत्र जिस स्वाधीनता का उपभोग कर रहे हैं, निश्चय से उसकी मात्रा उस स्वाधीनता से कम है जिसका उपभोग वे नौकरशाही के जमाने में करते थे। राष्ट्रीय सरकार के अन्तर्गत प्रेस की स्वाधीनता कम होनी चाहिये।' तात्पर्य स्पष्ट है। उनके मत में पत्रों का कर्तव्य सरकार की हाँ में हाँ मिलाना है।'

दूसरी ओर गत ९ जनवरी को 'बाम्बे समाचार पत्र सघ' द्वारा भारत के गवर्नर जनरल राजगोपालाचार्यजी स्वागत के अवसर पर पत्रों की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में सघ द्वारा ध्यान आकर्षित किया गया था। उत्तर में श्री राजगोपालाचार्य ने विचार प्रकट करते हुये कहा कि 'भारतीय विधान में विचार प्रकाशन स्वातन्त्र्य के आधारभूत अधिकार के अन्तर्गत ही प्रेस की स्वतन्त्रता समाविष्ट है। मैं भारत सरकार की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि भारतीय समाचारपत्रों और इङ्गलैण्ड के समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता में कोई असमानता नहीं है।"

इसी प्रकार १६ जनवरी को नवम मराठी पत्रकार सम्मेलन' में श्री आर आर दिवाकर मन्त्री सूचना व ब्रॉडकास्टिङ्ग विभाग ने भी वक्तव्य देते हुये देशी भाषाओं के समाचार पत्रों के स्तर को ऊंचा करने की आवश्यकता पर बहुत बल दिया है। समाचार पत्रों का स्तर ऊंचा करने के लिये आवश्यक है कि पत्रों की स्वतन्त्रता अधिक-से-अधिक अक्षुण्ण रखी जावे और प्रेस सम्बन्धी पिछले प्रतिबन्धों पर पुनर्विचार किया जावे।

स्वर्गीय श्री गणेशशंकर विद्यार्थी, बी जी हार्नीमैन, सी वाई. चिन्तामणि और कालीनाथ राय आदि अनेक प्रसिद्ध पत्रकार पत्रों की स्वतन्त्रता के लिये निरन्तर स्तुत्य संघर्ष करते रहे हैं। भारत में वारेन हेस्टिङ्ग के समय तक तो सत्य अंश में कोई समाचार पत्र प्रकाशित होते ही न थे, क्योंकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी समाचार पत्रों को गन्दे, हानिकारक और व्यर्थ समझती थी। अंग्रेजों की राजधानी कलकत्ता होने के कारण वहां से हीं सर्व प्रथम समाचार पत्र "बङ्गाल गजट" व "कलकत्ता जनरल एडवरटाइज़र" सन् १७८० ई० में मि० हिकी ने प्रकाशित किया था। मि० हिकी एक व्यवसायी प्रकाशक थे। उनके पत्रों में प्रकाशित समाचारों से तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिङ्ग तक असन्तुष्ट हो गये थे और साधारणत अंग्रेज असन्तुष्ट रहने लगे थे। स्वीडन के पादरी रेव० जोहन, जे० कीर्नाण्डर ने मि० हिकी के विरुद्ध इसलिये दावा कर दिया था कि पत्र में उनके द्वारा गवर्नमैण्ट को चर्च बेचने का अपमान जनक समाचार प्रकाशित हुआ था। इसमें मि० हिकी को ४ मास कैद और ५००) जुर्माना हो गया। इसी पत्र में श्रीमती वारेन हेस्टिङ्ग के सम्बन्ध में अश्लील और निन्दाजनक किसी समाचार के प्रकाशन पर राज्याधिकारियों द्वारा बराबर आक्रमण होते रहे और अन्त में उसे सन् १७८२ ई० में अखबार बन्द कर अपने जीवन के अन्तिम दिन निर्धनता और आपत्ति में बिताने पड़े।

१७९९ ई० में वैलज्ले ने सर्वप्रथम बङ्गाल प्रेसीडैन्सी के समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध का कानून जारी किया। लार्ड मिन्टो ने भी असंतुष्ट अधिकारियों द्वारा अपने कार्यों की पत्रों में समालोचना के कारण प्रैस के कानूनों को लागू किया था परन्तु लार्ड हैस्टिंग व्यक्तिगत रूप से इसप्रकार के प्रतिबन्धों के विरुद्ध थे उन्होंने १८१८ में पिछले सब प्रतिबन्धों को हटाकर जनता के लिए हानिकर विषयों पर न लिखने के सिद्धान्त मात्र का निर्देश किया।

१८१८ में 'कलकत्ता जनरल' के सम्पादक जेम्स सिल्क वकिंघम नियत हुये वे बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे इससे यह पत्र अधिकारियों, सैनिक आफिसरों और व्यापारियों में अत्यन्त प्रिय हो गया। कौंसिल के एक प्रमुख सदस्य जोहन आदम इस पत्र से पहिले से असंतुष्ट हो गये थे और कम्पनी के अधिकारियों के विरूद्ध व चीफ जस्टिस और कलकत्ता के विषप के विरूद्ध भी समालोचना होने के कारण सरकार की ओर से उन्हें बार बार चेतावनी व धमकी भी दी गई इसी बीच में उसके समाचार पत्र में सन् १८२२ ई० में एक सैनिक मित्र' (A military friend) द्वारा लिखित पत्र से सरकारी क्षेत्रों में बड़ी हलचल मच गई और जोहन आदम तथा कौंसिल के अन्य सदस्यों ने गर्वनर जनरल हेस्टिङ्ग को उन्हें देश निकाला दे देने का परामर्श दिया, परन्तु हेस्टिंग ने इसे स्वीकार नहीं किया। वकिंघम के दौर्भाग्य से जनवरी १८२३ में हेस्टिङ्ग का कार्य काल समाप्त हो गया और जोहन आदम कार्यकर्ता गर्वनर जनरल बन गया। उसने वकिंघम का हिन्दुस्तान में रहने का लायसैन्स रद्द कर दिया इतना होने पर भी भारत में उत्पन्न जोहन फ्रान्सिस सैन्डे के सम्पादकत्व और जेम्स सदरलैण्ड व सैन्डफोर्ड आर्नोट के सहायक सम्पादकत्व में पत्र प्रकाशित होता ही रहा। गवर्मेन्ट ने ३० अगस्त १८२३ के अङ्क में प्रकाशित किसी लेख पर आर्नोट को भी देश निकाल दे दिया और पत्र बन्द हो गया

वकिंघम के चले जाने के बाद जोहन आदम ने पत्र प्रकाशन के लिये अनिवार्य रूप में आज्ञा लेने का प्रैस कानून बना दिया। भारतीयों द्वारा भी पत्र प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो गया था और श्री गोविन्द चन्द्र कौर, आनन्द गोपाल मुखर्जी ने बङ्गाली समाचार पत्र और सङ्कवाद कौमुदी और हरिहरदत्त ने उर्दू और हिन्दुस्तानी जामाए० जहानुम' अखबार प्रकाशित करने के लिये प्रार्थना पत्र दिये। कुछ समय के अनन्तर ६ फरवरी १८३५ में श्री विलियम आदम, श्री द्वारका नाथ टैगोर श्री रसिक लाल मलिक, ई० एम० गोर्डन श्री रसूमीदत्त आदि कलकत्ता के अनेक स्वदेशीय तथा योरोपियन प्रमुख व्यक्तियों ने जोहन आदम के व्यर्थ और अनुचित प्रतिबन्धों को हटाने लिये गर्वनर जनरल को प्रार्थना पत्र दिया। परिणाम स्वरूप सरकार के मन्त्री ने गर्वनर जनरल की ओर से प्रैस कानून में सुधार करने का वचन दिया।

अन्ततोगत्वा श्री मैटकाफ ने समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता के पिछले कानूनों को हटाकर पुनस्थापन किया और सर विलियम बेन्टिङ्क के उदार निर्देशों के अनुसार भारत सरकार के तत्कालीन ला मैम्बर लार्ड मैकाले ने १६ अप्रैल सन् १८३५ ई० को 'प्रैस कानून' का प्रसिद्ध सविधान निर्माण कर प्रैस की स्वतन्त्रता में विशेष सहयोग दिया। उस समय से अब तक उसी कानून के मौलिक आधार पर समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता संचालित हो रही है।

भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के दीर्घ काल में विदेशी अंग्रेजी सरकार समय समय पर प्रतिबन्ध लगाती रही है और भारतीय नेता उसके विरुद्ध बराबर सघर्ष करते रहे हैं। स्वर्गीय सर तेज बहादुर सप्रू ने भारत सरकार के कानून सदस्य के पद से सन् १९१० में पुराने प्रैस एक्ट में अनेक स्वतन्त्रता जनक संशोधन किये थे।

अब देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है इसलिए यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि कल्याणकारी स्वतन्त्र वातावरण उत्पन्न करने के लिये पराधीनता काल के प्रकाशन-प्रतिबन्धों का इस प्रकार पुन-संशोधन किया जावे कि जिससे सरकारी अनुचित दबाव से निर्भय हो कर और संकुचित राजनीति व दलबन्दियों से ऊपर उठकर समाचार पत्र जनता तथा देश की उन्नति के लिये उत्तम परामर्श दे सके।

पूर्वी पंजाब का नया मंत्रिमंडल

शिमला २० अप्रैल। पूर्वी पंजाब के प्रधान मंत्री श्री भीमसेन सच्चर आज सवेरे यहाँ आ गये।

पूर्वी पंजाब के मंत्रिमंडल में निम्नलिखित व्यक्ति रहेंगे — श्री भीमसेन सच्चर डा० गोपीचन्द्र भार्गव चौधरी लहरीसिंह सरदार उज्जल सिंह सरदार जोगेन्द्रसिंह मान सरदार गुरुबचनसिंह बाजवा और श्री पृथ्वीसिंह आजाद।

पूर्वी पंजाब के इस नये मंत्रिमंडल ने सात मंत्रियों में ६ मंत्री शरणार्थी हैं जो पश्चिमी पंजाब के हैं। केवल चौधरी लहरीसिंह पूर्वी पंजाब के हैं। नये मंत्रिमंडल में कोई भी कांग्रेसी सिक्ख नहीं लिया गया।

एक स्वतन्त्र दृष्टि कोण

राम

श्रीधर शर्मा एम काम

अनेक हृदयों में अवतार के रूप में और अनेक में महापुरुष बनकर वास करने वाले मर्यादा पुरुषोतम श्री रामचन्द्र जी सचमुच भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक और राष्ट्रीयता के महापुजारी थे।

उनके जन्म के समय हमारा देश भारतवर्ष अनेक छोटे और बड़े राज्यों में विभक्त था। आवागमन के सुगम साधन न थे। विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण का भाग उत्तरी भारत अथवा आर्यावर्त से सर्वथा पृथक था। देश के दक्षिण में लङ्का द्वीप का राजा शक्तिशाली और कूटनीतिज्ञ रावण सारे संसार में अपना शासन स्थापित करना चाहता था। उसने अपने साम्राज्य का बहुत बड़ा विस्तार भी किया था। किन्तु यह स्वतन्त्र भारत उसकी महत्वाकांक्षा के पूरी होने में बाधक था। वह इस पर अधिकार करना चाहता था पर यह कार्य उसकी शक्ति के बाहर था। अत उसने कूटनीति से काम लिया। उसने कम उन्नतिशील दक्षिण भारत में अपने अड्डे बनाये और उनको सुदृढ करके क्रमश उत्तर की ओर अग्रसर हुआ। कूटनीति से सबसे पहले ब्राह्मणों को विध्वंस करने का निश्चय किया। ब्राह्मण उस समय के सामाजिक शरीर में मस्तिष्क का कार्य करते थे। रावण का विचार था कि मानसिक शक्ति का नाश करके कितने ही शक्तिशाली शत्रु को परास्त किया जा सकता है। इस उद्देश्य से उसने नगरों के कोलाहल से दूर परम शांति और प्राकृतिक सौंदर्य के उन अनुपम केन्द्रों को जो कि भारत के साहित्य और विज्ञान के कोष थे जहाँ देश के श्रेष्ठतम मस्तिष्क संसार त्यागी ऋषि मुनियों के रूप में मानवता और देश की चिंता में रत रहा करते थे विध्वंस करना प्रारम्भ कर दिया।

भारत का मस्तिष्क पहली चोट से ही सावधान हो गया। हमारे ऋषि मुनियों से रावण की कूटनीति छिपी न रही। किंतु इसका उपचार क्या था। क्या उत्तर भारत की विनाशकारी सेनायें दक्षिण के इन सैकड़ों मीलों के दुगम स्वतन्त्र राज्यों के बीच होकर आनेवाले मार्गों को पार कर लङ्का में विजय की पताका फहरा सकता हैं? यह प्रश्न उनके सामने आया। और उनको स्वत ही उत्तर मिला कि यह सम्भव नहीं है।

फिर क्या हो। उन्होंने विचार किया कि रावण की इस बढ़ती हुई शक्ति से लोहा लेने को क्षमता केवल दक्षिण के राज्यों में है किंतु क्या वह हमारे लिये इतना बड़ा शत्रु उत्पन्न करेंगे। क्या नर बलिदान करेंगे? क्या किसी प्रकार उन से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित हो हो सकते हैं और इसी बहाने से क्या उत्तरी और दक्षिणी भारत को संगठन के एक सूत्र में बाधकर आसेतु हिमाचल एक राष्ट्र का रचना की जा सकती है? हाँ हो सकता है। किन्तु कैसे? क्या राजदूतों के द्वारा, सन्धियों से? सेनाओं से? नहीं। तो फिर उनकी दृष्टि ने चारों ओर ढूढना शुरू किया। उनको एक ऐसे नवयुवक की आवश्यकता थी जो बलशाली हो, योग्य हो चतुर हो और नीतिज्ञ हो। जिसमें शील हो शान्ति हो गम्भीरता हो निर्भीकता हो और हो वीरता साहस तथा उत्साह की भावना ये। जो देश प्रेम में डूबा हुआ हो। और धीरे धीरे वह दृष्टि पड़ी अयोध्यापति महाराज दशरथ के ज्येष्ठ राजकुमार रामचन्द्र और उनके भाइयों पर। इनमें उनको यह सब गुण दिखलाई दिये। उनके नेता मुनिवर विश्वामित्र महाराज दशरथ के पास गये और विदेशी राक्षसों के इन अन्याचारों से पीड़ित जनता की करुण कहानी सुनाकर उनकी रक्षा के लिये राम लक्ष्मण की याचना की। दशरथ ने सारा सैन्य बल उनके चरणों पर रख दिया किन्तु उन्होंने उसको ठुकरा दिया। उनको तो चाहिये थे केवल राम और लक्ष्मण और उनको वे मिले।

अपने साथ रखकर उन्होंने उन दोनों बालकों को साहित्य युद्ध विद्या और नीतिशास्त्र आदि में पारंगत किया। देश प्रेम की अमिट भावना जागृत की। हृदय को वीरता साहस और निर्भीकता से भर दिया। और जब उनको पूर्ण कुशल पाया, तब अनेक स्थानों पर उनकी परीक्षा ली।

मिथिला के राजा के जनक ने अपनी गुण शीला, वीरांगना और सुन्दर कन्या सीता का स्वयंवर किया था। विवाह के लिये एक शर्त थी। जो शङ्कर का धनुष का चिल्ला चढ़ायेगा वही सीता का पति होगा। और यह शङ्कर का धनुष क्या था हिन्दु पुराणों के अनुसार शङ्कर विनाश के देवता हैं। जब राक्षसी शक्तियाँ बहुत बढ़ जाती हैं और संसार भर में छा जाती हैं तो वह उनका अंत करते हैं। शिव के धनुष का जो चिल्ला चढ़ायेगा वह शिव के कार्य को भी पूरा करेगा। दूसरे शब्दों में राक्षसी शक्तियों का अंत करने का बीड़ा उठायेगा।

सारे संसार के शासकगण आमन्त्रित थे। मानवी भावना उस युग तक आज की प्रकार पतित न हुई थी। सम्पूर्ण संसार के प्रतिनिधियों के सम्मुख मिथ्या घोषणा करने का साहस कोई न कर सका। तब पूर्व निश्चय के अनुसार राम उठे और उस धनुष के टुकड़े कर दिये। राक्षसों दूसरों की स्वतन्त्रता को हड़पने वाली और उन पर अत्याचार करने वाली शक्तियों के प्रति यह एक महान चुनौती थी।

फिर राम अयोध्या आये। वृद्ध पिता ने उनको शासन का भार देना चाहा। किन्तु राम का कर्म तो निश्चित था। कैकयी इसमें सहायक हुई।

उसके प्रयत्न से ही दृढ़ प्रतिज्ञ राम अपनी नव विवाहिता पत्नी और सहोदर भाई को लेकर दक्षिण भारत से मैत्री करके उसको भारत में मिलाने और उसकी सहायता से भारत के महान शत्रु रावण पर विजय प्राप्त करने चले।

इसके आगे की घटनायें अत्यंत स्वाभाविक हैं। राम ने पग पग पर अपनी योग्यता वीरता, साहस बुद्धिमत्ता और देश प्रेम का परिचय दिया। अवसर पा कर नीति से काम लेते हुए उन्होंने रावण की पथभ्रष्ट भगिनी को दंड दिया। इस बीच सीताहरण हुआ। विरही राम इधर उधर घूमे। इसी अवसर पर अत्याचारी बाली को मारा और दक्षिण के शक्ति शाली शासक सुग्रीव उसके अधिकारों और उसकी प्रजा की सहानुभूति प्राप्त की। उनकी सहायता से लंका पर चढ़ाई की तय्यारी की। कन्या कुमारी पर पहुचकर भारत के दक्षिण छोर पर रामेश्वर धाम की स्थापना की। हनुमान की सहायता से सत्य नुरागी विभीषण को अपनी ओर मिला कर रावण के भेद भाव जान और उस पर विजय प्राप्त की। फिर अयोध्या लौटे।

इस प्रकार से इस महान (राम) ने केवल अपने साहस, वीरता योग्यता, चातुर्य शील और अन्य गुणों से उस समय के भारत की दो सबसे बड़ी समस्यायें हल कीं। रावण का अंत किया और उत्तर और दक्षिण भारत को सदा के लिए एकता के सूत्र में बांध दिया। और तभी तो वह महापुरुष आज भी हम भारतीयों के हृदय में विराजमान हैं और हमारे श्रेष्ठतम नेता स्वर्गीय बापू भी उन्हीं के आदर्शों को एक बार फिर राम राज्य के रूप में भारत में चरितार्थ देखना चाहते थे।

भारत और लंका एक हैं

— आचार्य कृपालानी

कोलंबो २३ अप्रैल। लंका भारतीय कांग्रेस का नवा वार्षिक अधिवेशन कल यहां 'सरोजनी नगर' में प्रारम्भ हुआ। सरोजिनी नगर चाय बागानों के प्रधान स्थान हटने में बनाया गया था।

अधिवेशन के सभापति आचार्य कृपालानी ने अपने भाषण में कहा. मैंने कभी हिंद और लंका के लोगों को अलग अलग नहीं समझा। मैंने हमेशा उन्हें जातीय और सांस्कृतिक दृष्टि से एक समझा है। भारत कई बार राज्यों में बट चुका है पर इससे उसकी मौलिकता कभी नष्ट नहीं हुई है।

हिंद और लंका दो स्वतन्त्र राज्य हैं इससे दोनों का अलग अलग हो जाना जरूरी नहीं हो जाता। हम लोगों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया था तो हम केवल अपने लिए नहीं बल्कि सारे एशिया की पददलित जनता के लिए लड़ रहे थे। तब तो यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि हम गुलामी में एक, रहने के बाद स्वतन्त्रता में अलग अलग हो जाय।

जनता के कुछ भाग को नागरिकता से वंचित रखने की बात केवल लंका ही नहीं और जगह भी देखने में आ रही है। परन्तु यहां के सभी भारतीयों को अपने न्यायोचित अधिकारों के लिये लंकावासियों की हैसियत से लड़ना चाहिये गौतम बुद्ध की तरह महात्मा गांधी ने हम शिक्षा दी है कि बुराई बुराई से नहीं भलाई से दूर की जा सकती है। मैं चाहता हूँ कि बुद्ध के देश में आप बुद्ध के वचनों को न भूल जायं इस प्रकार हमारे विवाद शान्ति पूर्ण ढंग से हल किये जा सकेंगे।

भारतीय संस्कृति की विशेषतायें

ले पं० रामदेव वेदालकार डी ए० वी० हाईस्कूल झरिया

आज जब कि ससार में विश्व युद्ध के बादल मडरा रहे है मानवता के नाम पर दानवता का नग्न-नर्तन हो रहा है विश्वशान्ति के नाम पर विश्व सहार की योजनाये बन रही है ऐसे सक्रमण काल में भारतीय सस्कृति दया धर्म एव विश्व बन्धुत्व का अविरत सन्देश दे रही है। यद्यपि सदियों की दासता ने भारत को जर्जर बना दिया था, जब कि इस भारत की भव्य वसुन्धरा पर दयानन्द दिवाकर का उदय हुआ उन्होने वैदिक रश्मियों से सारे भूतल को प्रकाशित किया। और भारतीय सस्कृति का जागृत किया दयानन्द के अवशेष कार्य का सन्देश साबरमती के सन्त गाधी ने जग को सुनाया। प्राचीन काल में उस भारतीय सस्कृति का प्रसार सुदूरपूर्व एव पश्चिम के प्रदेशों मे भी पर्याप्त रूपेण हुआ था, जावा सुमात्रा बाली एव लका आज भारतीय सस्कृति के प्रति ऋणी होने का गवाहिय' दे रहे है।

इस भारतीय सस्कृति की कुछ मौलिक विशेषतायें थी जिनके कारण इसका प्रचुर प्रसार हुआ इस संस्कृति की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी यह समस्त पृथ्वी को कुटुम्ब समझती थी छोटे बड़े का भेद नही था सभी लोग भाई भाई की तरह रहे सब का माता पिता परमात्मा है। महात्मा बुद्ध ने अपने बारह शिष्यों को धर्मचक्र प्रारम्भ करने के पहले यही उपदेश दिया हे शिष्यों! बहुत लोगो के कल्याण करने के लिए (बहुजनहिताय) बहुत लोगो को सुख पहुँचाने के लिए (बहुजनसुखाय) और समस्त लोक पर दया दृष्टि रखने के लिए (लोकानुकम्पायें) इस धर्म का प्रचार करो इसी उदात्त भावना से अनुप्राणित होकर बौद्धधर्म समस्त एशिया एव यूरोप के भू भाग पर छा गया। इस भारतीय संस्कृति का दूसरा विशेषता यह है कि यह सस्कृति सदाचार की पृष्ठपोषिका है। भारतीय सस्कृति सदाचार को परमधर्म समझती है, अगर वेदपाठी ब्राह्मण भी सदाचार हीन हो तो वह वेद पठन पाठन का फल प्राप्त नही करता, ऐसा शास्त्रो में लिखा है। महाभारत में सदाचार की विशेषता बताते हुए भीष्म ने कहा है—

वृत्त यत्नेन सरक्ष्य वित्तमेति च याति च। अक्षीणः वित्ततः क्षीणा क्षीणा वृत्ततस्तु हतोहतः।

अर्थात् सदाचार की रक्षा सब प्रकार से करनी चाहिये। धन सपत्ति तो आती जाती रहती है, धन से रहित मनुष्य को नष्ट हुआ नहीं समझा जाता लेकिन सदाचार रहित मनुष्य का नष्ट ही नष्ट समझना चाहिये। इस प्रकार से सदाचार की प्रधानता यत्र तत्र सर्वत्र पाई जाती है। हमारी सस्कृति के अनुसार सुदृढ़ सदाचारी व्यक्तियों से समाज बनता और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है, अतः भारतीय सस्कृति मे सदाचारी मनुष्य ही सामाजिक एव धार्मिक कार्य में सफलता को प्राप्त कर सकता है कदाचारी कभी नहीं। इसकी तीसरी विशेषता यह है कि यह सस्कृति लोक एव परलोक दोनों में समन्वय स्थापित करती है, लोकाचार और लौकिक शुभकर्मों के द्वारा ही परलोक की सिद्धि होती है। पाश्चात्यों की सभ्यता भौतिक प्रधान है, खाओ पीओ मौज करो यह तो पशुओं की सभ्यता है। चार्वाक के गुरु बृहस्पति के कथनानुसार—

यावज्जीवेत्सुख जीवेत् ऋण कृत्वा घृत पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुतः।

अर्थात्—जब तक जीओ सुख से जीओ और कर्जा लेकर घी पीओ, इस भस्म होने वाले शरीर का पुर्नजन्म कहां से होगा? इस प्रकार के कुत्सित सिद्धान्तों को भारतीय सस्कृति में बुरा समझा गया है, भारतीय सस्कृति तो यह कहती है 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस्सिद्धिः स धर्मः'। जिससे लोक एव परलोक की सिद्धि हो वह धर्म है। इस अमूल्य मानवीय जीवन का उद्देश्य सिर्फ पेट पालना नही अपितु परम पिता परमात्मा के पास पहुँचने के लिए मनुष्य को शुभकर्म व्रतोपासना आदि करने चाहिए।

अत भारतीय सस्कृति में भौतिकवाद एव अध्यात्मवाद का सामञ्जस्य है।

इस भारतीय-सस्कृति की चौथी विशेषता यह है कि वर्णाश्रमधर्म को गुण कर्मानुसार मानती है। ब्राह्मण, समाज का मूर्धन्य इस लिए है क्योंकि वह विद्या एव आचार में उत्कृष्ट होता है। शत्रुओं से सकट पडने पर एक एक क्षत्रिय समाज की रक्षा के लिए रक्त बहा देगा। वैश्य उत्पादन एव वितरण के द्वारा समाज की रक्षा करता है। शूद्र समाजकी सब प्रकार से सेवा करता है। इन चारो वर्णों के सहयोग से समाज सुदृढ एव सगठित रहता है। मनुस्मृति के अनुसार शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है और ब्राह्मण भी अपने कर्म से च्युत होने पर शूद्र की कोटि में जा सकता है, ऐसा उल्लेख पाया जाता है।

इस भारतीय सस्कृति की पाचवी विशेषता यह है कि यह स्त्री जाति को समानाधिकार देती है। स्त्री के बिना गृहस्थ का कोई भी यज्ञ पूरा नहीं होता है गृहस्थ धर्म की गाडी के लिए स्त्री एव पुरुष दो चक्र के समान समझे जाते हैं, अतएव स्त्री को शास्त्रों में अर्द्धाङ्गिनी के नाम से पुकारा गया है, मनुस्मृति कार ने यहां तक कहा है—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता विराजते हैं। इस प्रकार हमारी भारतीय सस्कृति सार्वभौम, सर्वाङ्गीण एवं पूर्ण है। परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे राष्ट्रीय नेता स्वसस्कृति के महत्व को न समझ कर पश्चिम का मुह ताकते है। इतिहास इस बात को बार बार दोहराता है कि भारतीय संस्कृति अत्यन्त पुरातन तथा पूर्ण है, अन्य सस्कृतिया इससे पीछे है। आशा है स्वतन्त्र भारत में अपनी सस्कृति एवं सभ्यता का प्रचुर प्रचार होगा।

वेद वीथी

कौन मोक्ष को पाते हैं

श्री श्यामबिहारी लाल वानप्रस्थी

इम जीवेभ्यः परिधि दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्। शत जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्यु दधता पर्वतेन॥ यजु० अ० ३५–१५॥

पदच्छेदः—इमम्। जीवेभ्य। परिधिम्। दधामि। मा। एषाम्। नु। गात्। अपर। अर्थम्। एतम्। शतम्। जीवन्तु। शरद। पुरूची। अन्त। मृत्युम्। दधताम्। पर्वतेन।

अन्वय—अह परमेश्वर एषा जीवनामेतमर्थमपरो मा नु गादितीम जीवेभ्य परिधिं दधामि एवमाचरन्तो भवन्त पुरूची शत शरदो जीवन्तु पर्वतेन मृत्युमन्तर्दधताम्॥

पदार्थ मै परमेश्वर (एषाम्) इन जीवों के (एतम) इस (अर्थम) धन को (अपर) अन्य कोई (मा) नहीं (नु) शीघ्र (गात) प्राप्त कर लेवे। इस प्रकार (इमम्) इस (जीवेभ्य) जीवो के लिये (परिधिम्) मर्यादा को (दधामि) व्यवस्थित करता हू इस प्रकार आचरण करते हुये आप लोग (पुरुची) बहुत वर्षों के सम्बन्धी (शतम्) सौ (शरद) शरद ऋतुओ को (जीवन्तु) जीओ (पर्वतेन) ज्ञान व ब्रह्मचर्य्यादि से (मृत्युम्) मृत्यु को (अन्त, दधताम्) अन्दर धरो अर्थात् दबाओ दूर करो।

मननात्मक विचार धारा

इस मत्र का अन्तर्निहित आशय यह है कि मोक्ष को कौन पाता है और दीर्घजीवी कौन हो सकता है। ईश्वर ने वेद मे सीधे आदेश बहुत कम दिये है। ऋषि, मुनियो, विद्वानो के द्वारा ही साधारण जीवो को उपदेश दिया गया है। जिस शिक्षा को सीधे प्रभु जीवो को दे उसका महत्व बढ जाता है। इस मत्र में यही विशेषता है। किसी व्यक्ति की सत्य परिश्रम की कमाई का धन, द्रव्य, सम्पत्ति, स्थल, सुख, सामग्री, अधिकार कोई दूसरा हडप न करे, न चुराये, न छीने, न डाका मारे, न राह मे ठगे, न घूस ले, न दबाये और न अपहरण करे, यही मर्यादा सब जीवो के लिये प्रभु ने बाधी है। इसका उलघन करना पाप, अपराध यहा व परलोक मे दण्डनीय है। इस प्रकार आचरण करने से अर्थात् ईश्वर की इस व्यवस्था का पालन करने से मनुष्य दीर्घजीवी पूर्ण आयुवान हो सकता है। वह ज्ञान के द्वारा ब्रह्मचर्य पालन करने से मौत को दबा, हटा और दूर भी कर सकता है। यही मानव जीवन की अन्तिम सफलता कृत्यकृत्यता है।

हिन्दू कोड बिल

आर्य सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

मेरे पास अनेक पत्र आये हैं जिन में कहा गया है कि "आप अनेक विषयों में अनेक प्रकार के लेख लिखते रहते हैं, पर आजकल सर्वत्र हिन्दू कोड बिल के विरुद्ध तथा अनुकूल भी चर्चा चल रही है, आप अपने मत को निःशङ्क रूप में प्रकट क्यों नहीं कर रहे हैं। सभवत कांग्रेस गवर्नमेण्ट इस बिल को प्रस्तुत कर रही है इस लिए आपने मौन साध रक्खा है—" इत्यादि

बात यह है कि आर्य समाज के धुरीणों ने भी आजतक स्पष्ट रूप में अपना मत स्पष्ट नहीं किया। कलकत्ते के आर्य सम्मेलन ने भी सरकार से केवल यही कहा है कि इस बिलको आगामी चुनाव तक के लिए स्थगित रक्खा जावे। यह बात छिपी नहीं है और छिपा रखने में कोई लाभ भी नहीं कि आर्य विद्वानों में इस प्रश्न पर प्रचण्ड द्वैधीभाव है। कोई तो इस बिल को अथ से लेकर इति तक ग्राह्य मानते है और अधिक लोग इसके विरुद्ध हैं।

मैं तो यही मान रहा हूँ कि यह बिल अनावश्यक है क्यों कि हिन्दू जनता ने समष्टि रूप में इसके लिए स्पष्ट रूप से कोई माग नहीं की है। अंगरेजी राज्य गया किन्तु अंगरेजी शिक्षा दीक्षा और और सस्कृति से प्रभावित एक समुदाय, एक नगण्य समुदाय, हिन्दू समाज के अनन्त काल से परम्परागत प्रचलित आचार व्यवहार शास्त्र में अपना मनोवाञ्छित परिवर्तन चाहता है। उन्हीं की प्रेरणा का प्रभाव है कि इस प्रकार का बिल भारत की असेम्बली के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। बेचारे अम्बेडकर को कुवाक्य कहने से कोई लाभ नहीं है। उनको तो आगे रक्खा गया है ला मेम्बर होने के नाते वह तो उस बिल की पुष्टि करेंगे ही। हिन्दूसमाज में इस प्रकार का उलट-पलट हो यह उनका चिर मनोवाञ्छित रहा है।

यह बिल अव्यवहार्य भी है। यह बिल पास होगया और व्यवहार काल में आयगा तो हिन्दू समाज को और भी अधिक छिन्न विच्छिन्न करने के अतिरिक्त इस से कुछ भी लाभ न होगा। हाँ, अगरेजी शिक्षा दीक्षा में लालित पालित, पोषित एक छोटे से वर्ग को अपने मनोवाञ्छित को पूर्ण करने का अवसर मिलेगा। हिन्दू सपत्ति का नाश और गृह कलह के अतिरिक्त और कुछ भी पल्ले नहीं पड़ेगा।

उस बिल को आर्य लोग कैसे मानेंगे जहाँ खाली कोर्ट में जाकर केवल मौखिक रूपेण दम्पति भाव को स्वीकार करके माने हुए विवाह को और शास्त्र विधि विधान के अनुसार किये गये ब्राह्म आदि विवाह को समानता
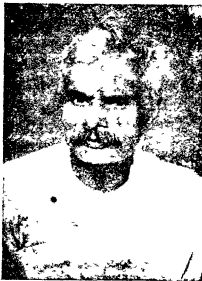
दी गयी है। इस लिए यह बिल वेद-बाह्य होने से सर्वथा त्याज्य और इसके स्वीकार करने में धर्म और सस्कृति का नाश है। इस बिल में वर्णित दायभाग भी वेद प्रतिपादित प्रथा से विरुद्ध है। ऐसे अनेक वेदमन्त्र स्पष्ट घोषित कररहे हैं कि जो वश का, वन्हि अर्थात् वोढा अर्थात् वश का चलाने वाला पुत्र है वही दायाद है न कि अवन्हि अर्थात् स्त्री जो दूसरों को विवाह में दीजाती है और जो दूसरे के वश का निर्माण करती है। न मै किसी वाद विवाद में पड़ना चाहता हूँ नहीं मेरे पास इतना समय है कि विस्तार रूप से लिखूँ। प्रत्येक नियम का अपवाद रहता ही है इस लिए शास्त्रकारों ने भी अपवाद रूप में कतिपय निर्णय कर दिये है। जिसका कोई भाई नहीं है, उस लड़की को अधिकार है कि वह अपने पिता की सपत्ति की वारिस बने इत्यादि।

इन बातों को मैं यहीं छोड़कर इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि वर्तमान भारत असेम्बली को इस प्रकार के बिल को प्रस्तुत करने का कोई अधिकार नहीं था और (सेक्यूलर) प्रचलित सभी धर्मों से अलिप्त सरकार होने के कारण उसको केवल हिन्दुओं के विषय में इस प्रकार के बिल लाने का अधिकार नहीं था। हिन्दू समाज ने कभी इस प्रकार की माग भी प्रस्तुत नहीं की। जहाँ सरकार यह महानाद कर रही है कि भारत अभी सकट परम्परा से नही निकल सका है इस लिए सरकार का सहयोग करना चाहिए वहाँ सरकार ने ही अदूरदर्शिता से ऐसे समुदाय को अशान्त बनाडाला है जिनके हाथों में ८० प्रतिशत वोट हैं जिसका कि आगामी चुनाव में उपयोग होना है। महा कांग्रेसी होने पर भी मैं निःशङ्क रूपेण इतना तो लिख ही सकता हूँ। महा-आर्यसमाजी होते हुए भी आर्यों से इतना तो कह ही सकता हूँ कि या तो अपने को वेदानुयायी कहना छोड़ दो अथवा वेदों का नाम लेकर उच्छृङ्खल वृत्ति छोड़ दो।

मैं तो स्पष्ट कहता हूं कि सेक्यूलर गवर्मेन्ट को किसी के धर्म कर्म में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि हिन्दु धर्म के आचार्य धर्माधिकारी चाहें तो वे अपनी व्यवस्थाओं से समुचित परिवतन कर सकते है पर सरकार को किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इससे सरकार का भला नहीं होगा और उसकी सत्ता उसके हाथों में स्थिर नहीं रहेगी और सरकार अपने हाथों अपने पैरों पर कुठाराघात कर रही है। मैं तो यही कहूंगा कि सरकार आगामी चुनाव तक इस बिल को स्थगित करे। सबसे अच्छा हो यदि वह इस बिल का ही वापस ले लेवे। हम कांग्रेसियों की बड़ी मुसीबत है कि एक ओर कांग्रेस सरकार की पुष्टि करना दूसरी ओर कांग्रेस को सभालना। यह कार्य तभी सुचारू रुप से हो सकता है जब कि सरकार केवल राजनीति पर दृष्टि रक्खे और इस प्रकार जनता के धर्म कर्म में हस्तक्षेप न करें। एक ओर जनतन्त्र की बात भी कही जाती है दूसरी ओर बहुमत का निरादर भी किया जाता है। वर्तमान भारत एसेम्बली अनधिकार चेष्टा कर रही है।

विनाश का कारण-'आर्य राज्य'!

(श्री निरञ्जनदेव आयुर्वेदालंकार)

किसी दिन आर्य समाज का सबसे दृढ़ दुर्ग पजाब प्रान्त में था। उस प्रान्त का विध्वंस हो जाने से वह दुर्ग अब ढह चुका है, वहाँ का आर्य समाज भी छिन्न भिन्न हो गया है। पजाब के आर्य समाज की 'अपनी नीति' को सामने रख कर, आज सम्पूर्ण आर्य समाज को अपने विषय में चिन्तन करने की आवश्यकता है।

आज अनेक आर्य पुरुषों के मन में यह विचार उठा करता है, कि आर्य समाज ने ऐसी कौन सी भूल की थी, जिसके कारण उसे पजाब—सिन्ध बिलोचिस्तान आदि में यह दिन देखना पड़ा कि वहाँ आर्य समाज का नाम निशान तक नहीं रहा।

जहाँ तक दृढ़, सदाचारी और कर्म काण्डी 'आर्य' बनने का प्रश्न है, पजाब के आर्य पुरुष सर्व प्रथम होने का दावा कर सकते ते। उन्होंने अपने को त्यागी-सच्चरित्र, कर्मकाण्डी और बलिष्ठ बनाने का प्रशंसनीय यत्न किया था। वहाँ के आर्य पुरुषों में दो पार्टियाँ होते हुए भी सगठन बल कम न था। उन्होंने यज्ञ, याग, धर्मप्रचार, वेदाध्ययन, स्त्री शिक्षा, शुद्धि, दलितोद्धार आदि भी पर्याप्त किया।

तब फिर, आर्य समाज के विनाश का कारण क्या यह हो सकता है कि उसके सिद्धान्त ही त्रुटि पूर्ण हों, और वे समयानुकूल न रह गये हों?

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का ठीक २ पारायण करने वाले आर्येतर सज्जन भी यह कहने का साहस नहीं करते कि दयानन्द का कर्त्तव्य-विधान अपूर्ण है। इसके विपरीत, अनेक विचारक इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि ऋषि दयानन्द हमारे ही देश के व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नहीं, ससार के अन्य भी देशों के लिए पथ प्रदर्शक थे। आर्य राष्ट्र की उन्नति के विचार से, उन्होंने, विभिन्न क्षेत्रों के लिए, आर्यजनों (हिंदुओं) को जो निर्देश दिये, उन्हें, सर्वांगपूर्ण और सार्वकालिक तक कहा जा सकता है।

बुद्ध के पश्चात् आने वाले बौद्धों के समान, ऋषि दयानन्द का अनुयायी आधुनिक आर्य समाज, अपने प्रतिष्ठाता के कई मन्तव्यों की गहराई को ठीक २ नहीं समझा है, इसलिए उन्हें कार्य रूप में परिणत न कर सका, इसीका आरम्भिक दुष्परिणाम पजाब पतन के रूप में हमारे सामने आया है।

जरा विचार करते ही यह स्पष्ट होने लगेगा कि आर्यसमाज की विपत्ति की समस्या, वास्तव में, अकेले आर्य समाज से ही सम्बन्धित नहीं है। पजाब में स्थित, समस्त हिन्दू जाति (नेशन) (जिसमें सनातनी, जैनी, आर्य समाजी, सिख सभी शामिल हैं)

के साथ २ ही आर्य समाज की भी क्षति हुई है। यह क्षति, हमारी नेशन के, राजनीतिक कर्म चक्र का एक परिणाम है, जिसके मूल में बड़ी भयानक गलती छिपी हुई है। यह गलती हमारी समस्त जाति (नेशन) से हुई है। जो भूल, सनातनी, जैना, और सिखों ने की, वही आर्य समाजियों ने भी की। परिणाम भी उसका सबको साथ ही साथ भुगतना पड़ा।

आर्य समाज की दृष्टि से खेद की बात यह है, कि ऋषि दयानन्द जैसे दूरदर्शी व्यक्ति का सार्वकालिक पथ प्रदर्शन हमारे पास विद्यमान था, तो भी, हम एक विकट राजनीतिक भूल के शिकार हो गये !!

यह भूल क्या थी इसका उल्लेख मैं आगे करूंगा।

यहाँ हम आर्य समाज के सम्बन्ध में विचार कर रहे हैं। आर्य समाज की विशेषता यह रही है कि वह भारतवर्ष में रहने वाली इस विराट् आर्य जाति के अंग होते हुए भी, इसका पथ प्रदर्शक रहा है। ईश्वरोपासना के क्षेत्र में, आर्यसमाज ने बहुदेवतावाद में उलझे हुए हिन्दुओं का एकेश्वर वाद के द्वारा पथ प्रदर्शन किया नैतिकता के क्षेत्र में बाह्य क्रिया कलापों से चिपके हुए हिन्दुओं के सन्मुख आर्य समाज ने यम नियमों द्वारा प्राचीन आर्य ऋषियों के आदर्श की पुनः स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का हिन्दु सन्तानों के के लिए पुनरुध्द्धार किया। समाज सुधार के क्षेत्र में संगठन, शुद्धि, दलितोद्धार विधवा विवाह स्त्री शिक्षा आदि के द्वारा हिन्दुओं को सुमार्ग पर लाने का यत्न किया। संक्षेपतः प्राय. प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज ने हिन्दू नेशन को नेतृत्व प्रदान किया है। परन्तु देखकर विस्मय और खेद होता है कि राजनिति की दिशा में में आर्यसमाज हिन्दूनेशन को नेतृत्व नहीं दे सका।

नेतृत्व आर्य समाज तभी कर सकता था, जब वह अपने राष्ट्र की इस विशाल आर्य या हिन्दू जाति की, राजनीति को अध्ययन करने का यत्न करता। आर्य समाज ने तो विगत ५० वर्षों में आर्य राजनीति को अर्थात् हिन्दू पालिटिक्स को जानने समझने यहाँ तक कि राजनीति को ठीक २ पढ़ने तक का कष्ट नहीं किया। इतना ही नहीं आर्यसमाज ने अपने 'राष्ट्र' तक का वास्तविक स्वरूप नहीं जाना। आज भी वह इस सबसे अधिक महत्व की बात को स्थिर नहीं कर पाया है, कि ऋषि दयानन्द को विचार धारा के प्रकाश में, आर्यावर्त किस 'राष्ट्र' की भूमि है ; और आर्य समाज किस 'राष्ट्र' का अंग है। इस दिशा में, आर्य समाज की दुर्बलता तब और भी खुल जाती है, जब हम देखते हैं कि आज भी आर्य समाज के अनेक नेता इस देश मे, किसी "भारतीय राष्ट्र" अर्थात् "हिन्दुस्तानी नेशन" के होने की कल्पनायें कर रहे हैं।

यदि सरसरी नजर से देखा जाय, तो भी हम पाते हैं कि ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्दर आर्यावर्तदेशीय आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य की बात लिखी है। उन्होंने आर्यावर्त के प्राचीन आर्य सम्राटों की वंशावली खोज निकालने का प्रयत्न किया है। और भूत काल के समान भविष्य में भी आर्यावर्त (भारत वर्ष) देश में आर्यों के अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय राज्य होने की एक सुनहरी आकांक्षा व्यक्त की है। (देखिये सत्यार्थ प्रकाश का आठवाँ समुल्लास)

क्या आर्य पुरुषों ने कभी विचार किया कि ये सब बातें किस दिशा ओर संकेत कर रही हैं ? एक सामान्य बुद्धि रखने वाले (परन्तु पक्षपात रहित और निर्भीक) व्यक्ति भी उपयुक्त संकेतों से इतना सा अर्थ निकाल लेगा, कि ऋषि को इस देश में आर्यों का ही राज्य अभिप्रेत था। सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश देख जाइये, ऋषि दयानन्द, इस आर्यावर्त देश में आर्य+यवन+म्लेच्छ राज्य (अर्थात् हिन्दू-मुसलमान ईसाई आदि का सम्मिलित शासन) चाहते हों इस बात का आभास तक आप को न मिलेगा। ऋषि वस्तुत आर्य राष्ट्रीयता के दृढ़ समर्थक थे; और इसी कारण उन्हों ने मुसलमानों और ईसाईयों आदि को विदेशी एवं विजातीय (अराष्ट्रीय) मानकर इन्हें शुध्द करके आर्य जाति में सम्मिलित किये जाने की व्यवस्था दी है। उनकी कल्पना यह थी कि एक ओर तो हिन्दुओं की निबलताओं को दूर कर उन्हें उन्नत सजीव और तेजस्वी किया जावे, दूसरी ओर मुसलमान ईसाई आदि शुध्द करके हिन्दुओं में मिलाये जावें। इस प्रकार इस देश के निवासी आर्य (हिन्दू) रूप में संगठित होकर प्राचीन काल के समान एक बलवान राष्ट्र की सृष्टि करें, और इस विशाल आर्य राष्ट्र या हिन्दू नेशन का आर्यावर्त में अपना राज्य स्थापित हो।

खेद का विषय है कि देश विभाजन के पहिले से लेकर आज तक सभी आर्य पुरुष समस्त हिन्दू जनता और उसके साथ साथ आर्यसमाजी भी—ऋषि दयानन्द के उपर्युक्त निर्देश के विरुद्ध चले हैं।

यद्यपि भारत के विगत ७ सौ वर्षों के इतिहास ने बार बार संकेत किया कि मुसलिम समाज अपनी विशिष्ठ अनार्य संस्कृति को त्याग कर आर्य अथवा हिन्दुतान के साथ एक रूप नहीं हो सकता; और इस प्रकार सब का मिला जुला राज्य नहीं बन सकता; तो भी हमने एक सम्मिलित खिचड़ी-राज्य का निर्माण करने लिए ही घोर प्रयत्न किया। आज भी जब कि स्वर्गीय गाँधी जी तक के महान् प्रयत्न विफल हुए हम उसी हिन्दू मुसलिम-सम्मिलित राज्य के तराने गा रहे हैं। यह सब कुछ स्पष्टतः ऋषि दयानन्द के अभिप्राय के प्रतिकूल है। क्योंकि ऋषि को आर्यों का राज्य अर्थात् हिन्दु राष्ट्रीय राज्य अभीष्ट था, और हम सब (आर्य समाजी लोग भी) एक अहिन्दू अनार्य राज्य की स्थापना के लिए कटिबध्द हैं। आर्यों की शिरोमणि सभा के उच्च अधिकारी तक हिन्दू राज्य को एक सम्प्रदाय मूलक राज्य बतला कर उसके विरुध्द घोषणायें कर रहे हैं। निश्चय ही यह आर्यों की (समस्त हिन्दुओं की) एक विकट राजनीतिक भूल थी, जो आज अब तक भी जारी है।

यदि आज कांग्रेसी राज्य के आतंक से निर्भय बनकर और कांग्रेसी नेताओं के प्रति असत्य अन्धश्रध्दा से मुक्त होकर स्वतन्त्र मस्तिष्क से विचार किया जावें, तो यही परिणाम निकलेगा कि भारत के आर्य समाजी हों या सनातनी सभी हिन्दुओं ने कांग्रेस के विदेशी और अरागत राजनीतिक आदर्श के अनुसार "हिन्दू मुसलिम ईसाई-पारसी' सब का मिला जुला राष्ट्र मान कर एक गंगा जमुनी शासन स्थापित करने की चेष्टा की है। ऋषि दयानन्द की भाषा में इस प्रकार के राज्य को "आर्य+यवन+म्लेच्छ-राज्य" कहा जा सकता है।

आर्यों के इस देश में आर्यों के ही द्वारा इस प्रकार के अनार्य राज्य की स्थापना का प्रयत्न होना जहाँ एक उपहासास्पद बात थी ; वहाँ, साथ ही यह एक अक्षम्य राजनीतिक भूल भी थी। पंजाब बंगाल सिन्ध आदि के विध्वंस का मूल कारण यही भूल है।

इस सचाई को कौन नहीं जानता कि विगत निर्वाचनों के समय जब हिन्दुओं के सामने यह अवसर आया कि वे अपने देश के लिए शासन-यन्त्र की मशीन खड़ी करें, तब आर्य हो या हिन्दु सब के सब कांग्रेसी प्रोपेगैण्डा के तूफान में बह गये और सबने मिल कर एक ऐसा शासक मण्डल तैयार किया जिसका आधार ही आर्यत्व या हिन्दुत्व के सर्वथा विपरीत था। समझदार आर्य समाजियों तक ने न सोचा कि हम दूरदर्शी दयानन्द के आर्य-राज्य स्थापना के प्रतिकूल आचरण करने जा रहे हैं। यद्यपि हिन्दु मुसलिम एकता और भाईचारे का सबका मिला जुला राज्य" यह बातें बड़ी मीठी जान पड़ती थी, परन्तु आर्य पुरुषों ने इस ओर ध्यान न दिया कि कांग्रेस का यह हिन्दुस्तानी राज्य दयानन्द का आर्य राज्य न होगा।

अन्त में उस गलत दिशा में किये गये प्रयास का, बुनियादी भूल से युक्त राजनीतिक कर्मचक्र का कुफल भी सामने आना ही था। वह जब आया तो उस भीषण सर्वनाश को लेकर आया जिसमें मुसलिम राज्य स्थापना के लिए दृढ़ संकल्प मुसलिम राष्ट्र द्वारा आर्यों पर आर्य मात्र पर समस्त हिन्दू राष्ट्र पर अवर्णनीय अत्याचार हुआ। और उसमें हमारी हमार नेताओं की आर्य हित मूलक दृष्टि न होने के कारण आर्यों का यह परम्परागत देश ही नहीं कट गया, प्रत्युत्त उनका सिर भी काटा गया मातृ देवता का अपमान हुआ देव मन्दिर भ्रष्ट हुए और धन धान्य खेत खलिहान घर बार सब छिन गये।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पंजाब आदि में आर्य समाज का विनाश इसी कारण हुआ कि भारत में सदा से रहते चले आने वाले" आर्य जनों ने ऋषि द्वारा निर्दिष्ट आर्यावर्त में आर्य राज्य स्थापना की दिशा में प्रयत्न नहीं किया, प्रत्युत आर्य-यवन म्लेच्छ राज्य की गलत दिशा में हमारी शक्तियाँ लगीं।

इस प्रसंग में आर्य समाज का उत्तरदायित्व कम नहीं है। अन्य क्षेत्रों के समान, राजनीतिक क्षेत्र में भी, समस्त राष्ट्र का नेतृत्व करना आर्यसमाज का परम्परा गत कार्य था। इस क्षेत्र में 'आर्य राज्य' अर्थात् 'हिन्दू राज्य-स्थापना' का यथार्थ और मौलिक सन्देश हिन्दुओं को देना उसी का काम था। आर्य समाज ने उसे पूरा नहीं किया। इस क्षेत्र में उसने नेतृत्व नहीं किया इतनी ही बात नहीं है, बहुत से आर्य समाजी भाई स्वयं भी मनुष्य पूजक अन्ध विश्वासी हिन्दुजन समुदाय में मिलकर भटक गये।

आर्य पुरुषों पर अन्य जनों की अपेक्षा अब भी अन्ध श्रद्धा और व्यक्ति पूजा का प्रभाव कुछ कम है। वे शायद विवेक से काम ले सकते हैं। अतः आज भ्रम या धोखे में पड़कर जो अवाञ्छनीय स्थिति हमारे देश में होगई है उसको आर्य पुरुष ही दूर कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १४ में)

ांत विभूतियां

़म्मेलन क्यों ?

लन के रूप में दिखाई देती थी पर आज राष्ट्र ने उसे अन्तर्निहित कर लिया अत अब उसकी सत्ता इस प्रकार अनुभव नहीं होती। यदि हम आर्य समाज को जन आन्दोलन क रूप म देखना चाहते हैं तो आज की समस्याओं के समाधान के लिये नये सिरे से अपनी सब शक्तियों का सगठन प्रचार के दृष्टि कोण से करना होगा। उपदेशक सम्मेलन समाज की बिखरी हुई शक्ति को प्रचारार्थ एकत्रित कर ऋषि के दृष्टिकोण का जनमत तयार करना चाहता है।

उपदेशकों का संगठन क्यों

कुछ व्यक्तियों को यह सदेह है कि उपदेशकों का सगठन भी अन्य सगठनों की भाँति प्रतिनिधि सभाओं क लिये एक मुसीबत बन जावेगा। किन्तु यह उपदेशक सम्मेलन सभाओं के कार्यमें बाधक नहीं किंतु साधक होगा। इस सम्मेलन का प्रभाव बहिर्मुख न होकर अन्तर्मुख ही अधिक होगा। इसमें एकत्रित होकर उपदेशक सबसे पूर्व अपनी, और फिर वातावरण की कमियों को देखेगा और सामूहिक रूप से उनके दूर करने की योजना बनायेगा। इस सम्मेलन के द्वारा उपदेशक प्रचार के क्षेत्र मे पहल अपने हाथ मे लेने जारहा है। अब वह बिना प्रधान तथा मंत्रियों के निमत्रण की प्रतीक्षा किये भी प्रचार क्षेत्र में आगे बढ़ेगा। जो उससे आगे चलेंगे उनका नेता क रूप मे अभिनन्दन करेगा जो साथ चलेंगे उनका सहयोगी के रूपमें स्वागत। जो पीछे पीछे चलेगे उनका सहारा देगा और जो पैर पकड कर घसीटेंगे उनके प्रति उपेक्षा की एक दृष्टि। उपदेशक की महत्वाकाक्षा यही है कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का विचार पूर्ण हो और उसमें उसका प्रमुख भाग हो।

विद्या भास्कर वाचस्पति शास्त्री
सहा० स्वागताध्यक्ष

जिनके त्याग एवं बलिदान से नवीन चेतना ग्रहण कर प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन ने नये रूप में आर्य संस्कृति की अलख जगाने का निश्चय किया है।

महात्मा हंसराज

★ ★

स्वर्गीय प० वशीधर जी पाठक, बरेली

★ ★

श्री गुरुदत्त जी विद्यार्थी

★ ★

प० गणपति शर्मा

★ ★

पं० शिवशकर काव्य तीर्थ

जो भारत की जनता में वैदिक संस्कृति की अमर ज्योति का प्रसार करने के लिये कटिबद्ध हैं

आर्यसमाज को ज़ीवन देनेवाले कतिपय कार्यकर्ता

प० विहारीलालजी शास्त्री
जिनकी वाणी से आर्यजगत् गूंज रहा है

श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त
आप राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

श्री बंशीलालजी वानप्रस्थी

शाही खडहरों में आर्य संस्कृति का शंखनाद उपदेशक महासम्मेलन में

लखनऊ चलने के लिये भारत के कोने-२ में आर्य जनता द्वारा तय्यारियाँ प्रारम्भ

आगामी मास में १५ से १७ मई तक होने वाले प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन के लिए कार्यालय में आये पत्रों से प्रतीत होता है आर्य जनता बड़ी सख्या में लखनऊ पहुँच रहा है। हैदराबाद दक्षिण, बम्बई और बगाल प्रान्त के आर्य जन मई के दूसरे सप्ताह के प्रारम्भ में ही लखनऊ चल पड़ेंगे। इधर लखनऊ में भी तय्यारियां बड़े वेग से चल रही हैं। सम्मेलन नगर का १ली मई से निर्माण प्रारम्भ हो रहा है और ८ से १४ मई तक सम्मेलन सप्ताह मनाया जावेगा जिसमें लखनऊ के हर मुहल्ले में सभाओं का आयोजन होगा।

सम्मेलन के कार्यक्रम में जहाँ उपदेशक समिति के अधिवेशनों में प्रगतिपूर्ण एव सामयिक समस्याओं पर सक्रिय योजनायें तय्यार होगी वहाँ रात्रि का खुला अधिवेशन और प्रतिदिन प्रातःकाल वृहद्यज्ञ के पश्चात् का आध्यात्मिक सत्सग तथा १७ मई का म॰..होर २॥ बजे से होने वाले आर्य संन्यासी सम्मेलन का कार्यक्रम आर्य जनता के हृदयों पर अमिट छाप छोड़ने वाला होगा।

यह प्रथम उपदेशक महासम्मेलन जिसकी अध्यक्षता आर्य जगत के माननीय नेता श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज करेंगे इसके अन्तर्गत शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र जी देहलवी की की अध्यक्षता में होने वाला आर्य सस्कृति प्रचार सम्मेलन वैदिक-मिश्नरी प० अयोध्या प्रसाद जी की अध्यक्षता में होने वाला सर्व उपदेशक सम्मेलन और कविरत्न प० प्रकाश चन्द्र जी की अध्यक्षता न होने वाले सगीत प्रचार सम्मेलन आदि में जहाँ प्रमुख आर्य विद्वानों के भाषण सुनने को मिलेंगे वहाँ प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के भी उद्गार सुनने को मिलेंगे। उपदेशक सम्मेलन का उद्घाटन श्री के॰एम॰ मुंशी, आर्य सस्कृति प्रचार सम्मेलन का उद्घाटन लोक नायक श्री हरि अणे (गवर्नर बिहार) सर्व- उपदेशक सम्मेलन का उद्घाटन श्री एच॰ पी॰ मोदी (गवर्नर युक्त प्रान्त) सन्यासी सम्मेलन का उद्घाटन स्वा. रामानन्दजी तीर्थ और संगीत प्रचार सम्मेलन का उद्घाटन श्री कुवर सुखलालजी आर्य मुसाफिर करेंगे। इसी अवसर पर आर्य विद्वानों की देख रेख में एक कोई शास्त्रीय यज्ञ भी करने का विचार है।

युवक हृदय सम्राट प० नरेन्द्रजी हैदराबाद से १ली मई को ही लखनऊ पहुँच जायेंगे। सम्मेलन नगर का निर्माण और प्रबन्ध सम्बन्धी व्यवस्था सब आप को ही देख रेख में होनी है। बिहार से आचार्य प० रामानन्दजी शास्त्री प० रामनारायण जी और श्री सर्वेन्द्रजी शास्त्री ८ मई को लखनऊ पहुँच जायेंगे। पजाब से प० शिवकुमारजी और प० रामस्वरूपजी शान्त तथा आर्य मुसाफिर प० मुरारीलालजी भी इन्हीं तिथियों में पहुँच रहे हैं।

१- स्टेशन पर स्वयसेवक, सवारियों आदि का पूर्ण प्रबन्ध रहेगा, जो सम्मेलन नगर तक सुविधा से पहुँचायेंगे।

२- सम्मेलन में आने वाले प्रस्ताव ७ मई तक कार्यालय में पहुँच जाने चाहिये।

३- जो आर्यजन सम्मेलन के प्रबन्ध कार्यों में हाथ बटाना चाहे वह कृपया अपने नाम भेज दें।

प० नरेन्द्रदेवजी
आप १७ मई को सम्मेलन प्रबन्ध व्यवस्था के लिये लखनऊ आ रहे हैं,

पं० मनोहरलालजी
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग,
आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट

उपदेशक बन्धुओं से

१ अपने पहुँचने की निश्चित तिथि और ट्रेन लिखें।
२ जो प्रस्ताव भेजने हैं वह कृपया ७ मई तक भेज देवें।
३. कुछ उपदेशक प्रचारक बन्धु ऐसे हैं जिन तक सम्मेलन की सूचना अभी भी नहीं पहुँची है, कृपया उन्हें भी साथ लेते आवें।
४. अपना ब्लाक अथवा चित्र शीघ्र भेज दें जिससे उस अवसर पर निकलने वाले आर्यमित्र के विशेषांक में दे सकें।
५. महा सम्मेलन आपका अपना है इसमें यदि कुछ भूल कार्य कर्ताओं की ओर से अबतक होगई हो या आगे होतो उसपर उनकी अनुभव हीनता के कारण अधिक ध्यान न दें, उसके लिये उन्हें सचेत कर दें या स्वयं ठीक कर लें। विस्तृत कार्यक्रम बाद में भेजा जायेगा।

सम्मेलन सगठन कोष की पुस्तिकायें

प्रथम आर्य उपदेशक महासम्मेलन सगठन कोष की पुस्तिकायें (एक-दो-पाँच वाले नोटों की कापियाँ) जिन सहयोगी सज्जनों के पास हैं, और जो सम्मेलन से आत्मीयता होने के कारण उसके पूर्ण करने में प्रयत्न शील हैं, उन सबकी हो सेवा में निवेदन है कि वह पूर्ण करके ७ मई तक कार्यालय में भेज दें। यदि किसी कारणवश ७ मई तक कोई न भेज सकें तो सम्मेलन में अपने साथ लेते आवें परन्तु ऐसा न हो जो वह खाली रह जाय। आपके इस सहयोग के लिये समिति आपकी आभारी है।

सम्मेलन नगर में दूकानों की व्यवस्था

सम्मेलन नगर में आर्य साहित्य तथा अन्य किसी प्रकार की दूकान लगाना चाहे वह ५ मई से पूर्व ही कार्यालय को लिखकर अपनी दूकान रिज़र्व करालें।

निमंत्रण

वैदिक धर्म प्रचारक सब उपदेशकों, भजनोपदेशकों, सन्यासी, स्त्री उपदेशिका, लेखक व्यायाम प्रदर्शक आदि सभी महानुभावों को हम सादर निमंत्रित करते हैं कि आप उपदेशक महासम्मेलन में भाग लेने के लिये लखनऊ पधारने की कृपा करें।

आर्य जनता को भी निमंत्रित करते हैं कि वह इस सम्मेलन में भाग लेकर वैदिक धर्म प्रचार के लिये नवीन प्रेरणा प्राप्त करें।

भोजन और निवास का उत्तम प्रबन्ध होगा।

यदि हम आप के पास और पत्र न भेज सकें तो आप मित्र की इन पंक्तियों को ही निमंत्रण पत्र समझें।

कौन क्या सहयोग दें ?

उपदेशक तथा प्रचारक इसमें सम्मिलित होकर और इसके निर्णयों को कार्य रूपमें परिणत करके।

वृद्धजन आशीर्वाद देकर, * विचारक सुन्दर योजना देकर, * प्रबन्धक प्रबन्ध में हाथ बटाकर, * पत्रकार सूचना छापकर, * धनी धन देकर, आलोचक निरीक्षण करके, * सभी महानुभाव दर्शन देकर हमारा सहयोग दें।

आपका
प्रकाशवीर
प्र॰मंत्री सम्मेलन

प० रामचन्द्र देहलवी

आपकी अध्यक्षता में १७ मई को आर्य संस्कृति प्रचार सम्मेलन होगा

आचार्य रामानन्द, महोपदेशक, (बिहार)

स्वा० रामानन्दजी, स० प्रचार मंत्री

अ म र दि वं

जिनकी आत्मायें आज भी आर्य जगत् को निरन्तर प्रेरणा दे रही हैं।

अमर शहीद स्वा० श्रद्धानन्द जी

★ ★

वाग्मिप्रवर स्वा० दर्शनानन्द जी

★ ★

स्वा. तुलसीरामजी चतुर्वेद भाष्यकार

★ ★

श्री रासविहारी तिवारी

★ ★

हुतात्मा प० लेखराम

उपदेशक

जो आर्य समाज का स्वर्ण युग
जाता है जिसका वर्णन करते हुए
आर्यो की आंखो मे आंसू झलक
हैं यदि उस युग पर दृष्टि डालें तो
पता चलेगा कि उस समय की आ
आज आर्य समाज के पास स
अधिक है उधर पचास वर्षों के
प्रयत्न से आर्य समाज ने अपनी स
और गुरुकुल तथा डी ए वी कालि
द्वारा अपने विचारों के समर्थन श विद्व
की पूरी पल्टन खड़ी कर दी है। सु
लेखक अच्छे पत्रकार कवि कहानी लेख
कुशल वक्ता उच्च कोटि के भजनोपदे
आधुनिक अर्जुन और आधुनिक भ
अच्छे मल्ल और अच्छे जादूगर सब
तो आज आर्यसमाज के पास हैं। सत्संगो
लिये निजी भवन सुन्दर पुस्तकालय त
अरबों की चल अचल संपत्ति आज आ
समाज के पास हैं। राजा महाराजा, रई
धनपति, मिनिस्टर, राजदूत, ऐसेम्बलियों
स्पीकर, जज, बैरिस्टर, वकील, दुकानद
नौकरी पेशा, किसान, मजदूर, गरीब, श्रम
सवर्ण और अछूत आर्य समाज के द
पर सभी बैठे दिखाई रहे हैं। गली कूं
बाजारों स्टेशन, और सिनेमा हालों
नमस्ते की ध्वनि गूंज रही हैं। जो क
तक ढेले बरसाते थे वे आज समाज
रुपयों की वर्षा कर रहे हैं, जो गालि
देकर घृणा प्रकट करते थे वे आज
प्रदर्शन की आशा में टकटकी लग
आर्य समाज का पथ जोह रहे हैं। इत
होते हुए भी जिधर देखो वहीं च
सुनाई देती है अब आर्य समाज की
बात नहीं रही जो पहिले थी। यह क्यों
आर्य समाज की सुधारसुधा शतध
और सहस्रधार होकर राष्ट्र के प्रत्येक अ
पर बरसी और उससे राष्ट्र का कलेव
हराभरा हुआ किन्तु जबतक उसक
विरोध होता था तबतक यह जान आर्

विवाह

जन्मपत्री, कुल, गोत्र, पैर छूना।

(र. प्र. त्रिवेदी, भूत जज, इटावा।)

जन्मपत्री के ग्रह मिलाना छोड़ो। उसे केवल आयु जानने के काम में लाना चाहिये। रामचन्द्रादि पूर्वजों के विवाह ग्रह मिला कर नहीं हुये न किसी स्मृति में यह मिलाने का उपदेश है। फलित ज्योतिष एक ठग विद्या है।

कुल की छुटाई बड़ाई पुराने पदों से न मानो। यत्न करके जातीय भाइयों से ऊँची दीक्षा लेलो।

मामा, मामी, सास, ससुर, बड़े साले व सरहज व समधी (कन्या पक्ष) के पैर छू कर दिखाओ कि तुम उन्हें नीच नहीं समझते हो। जिन कुलों की लड़की तुम्हारे यहां विवाही आई है उनको समधी (=बराबर धी) समझो। उन्हें अपनी कन्या दो।

गोत्र बदला जा सकता है। यह गोत्र जन्म वाचक शब्द है। मनुष्य अपना गोत्र बदल सकता है। गोत्र शब्द उन दिनों में बना जब हमारे देश में गाँव और गौ समुदाय लहलहाता था। गौ की बहुतायत होने के कारण चरागाहों का गोत्र कहते थे। गोत्र शब्द के दो टुकड़े हैं। एक गो=गौ, दूसरा त्र यानी त्राण भूमि। इन चरागाहों में बैल, भैंस, भैंसा आदि भी चरते थे लेकिन बैलत्र, भैंसत्र शब्द नहीं बने। हमारा मुख्य महमान था गौ समुदाय। उसी गौ शब्द के सहारे गोत्र शब्द बना। पशु शाला में बैल भी बांध लेते हैं लेकिन फिर भी उसे गौशाला ही कहते हैं।

जिस प्रकार आज कल आज़ाद पार्क, जवाहर जंगल, गांधी नगर आदि नाम चले हैं। इसी तरह पहले चरागाहों के ऐसे नाम थे जैसे गर्ग गौत्र=(चरागाह), कश्यप गोत्र, भारद्वाज गोत्र। पहले हमारे हर गाव में एक चरागाह था। जो समुदाय गर्ग गाँव में गाय चराता था वह पूरा गर्ग गोत्री कहलाता था। मान लो कि वह समुदाय जन्मजन्मान्तरों तक अपना गाँव छोड़ कर कात्यायनी गोत्र=(चरागाह) के पास जा बसे तो उसकी गाये कात्यायनी चरागाह में चरेंगी तब उस समुदाय का गोत्र कात्यायन कहलावेगा।

समगोत्री यानी एक गाव वालों में में परस्पर सम्बन्ध करना मना है। यह मनाही हिन्दुओं ही में नहीं बल्कि संसार की सभी सभ्य जातियों में है।

मान लो कि रामा और श्यामा दो ब्राह्मण एक ही छोटे गांव में रहते हैं। अब रामा के लड़के लड़की श्यामा के लड़के लड़कियों में खेलेंगे। इन लड़के लड़कियों में यह भावना पैदा होना श्रेयस्कर है कि रामा का पुत्र श्यामा की पुत्री को अपनी बहन समझे और कभी कोई ऐसी बात न सोचे जिससे लेशमात्र भी उस पुत्र की इच्छा उस पुत्री से विवाह की जान पड़े। इसी कारण गांव में ऐसा नियम है कि रामा का पुत्र श्यामा की बड़ी पुत्री को जिज्जी या जिया कहता है और श्यामा की छोटी पुत्री की ससुराल में पानी भी नहीं पीता। अंग्रेजों में भी दूर देशी घरानों से विवाह सम्बन्ध करते हैं।

इसी प्रकार एक गुरु के जितने शिष्य होते थे उन सब का एक ही गोत्र (गुरू नाम सूचक) माना जाता था। इसी कारण गुरु भाई का गुरु बहिन से विवाह नहीं होता है। आजकल कालिज के कुछ लड़के अपनी सहपाठिनी को ही लुभाने की कोशिश करते हैं। इसीलिये सहशिक्षा से लोग डरते हैं। इसी डर से कालिज के छात्रों को कालिज के प्रोफेसर अपने घरों में नहीं घुसने देते। इस तरह हर भारद्वाजआश्रमी का गोत्र भारद्वाज कहलाया। हर गर्ग गुरुकुल वासी का गोत्र गर्ग हुआ। गुरु बदलने से गोत्र बदल जाता है।

मान लो रामा का गोत्र है कात्यायन और श्यामा का भी गोत्र कात्यायन है। लोग इसका अर्थ लगाते हैं कि रामा और श्यामा दोनों कात्यायन की सन्तान हैं। कात्यायन को मरे हज़ारों साल बीत गये। क्या हमारे शास्त्रकारों का वह आशय था कि एक पुरखा की सन्तान हज़ारों करोड़ों पीढ़ी बीतने के बाद भी विवाह सम्बन्ध न करे? अगर उनका ऐसा आशय माना जाता तो एक कायस्थ दूसरे कायस्थ से विवाह न करता, क्योंकि हर कायस्थ चित्रगुप्त की सन्तान है। अगर उनका वह आशय होता तो अग्रवालों के परस्पर विवाह से उत्पन्न सन्तान कानूनी वारिस न मानी जाती क्यों कि हर अग्रवाल और अग्रवालिन अग्रसेन की सन्तान हैं।

(देखो मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक ५, और बम्बई का इण्डियन लॉ रिपोर्ट जिल्द ४ का पन्ना ४७१)।

सन्तानों में विवाह सम्बन्ध न हो इसकी मनाई के लिये मनु का नियम है कि कोई स्त्री अपने माता या पिता में से किसी के भी सपिण्ड से विवाह न करे। वशिष्ठ, पैठासी, मिताक्षरा ने भी सपिण्डों से विवाह करना मना किया है।

सपिण्ड का अर्थ है मातृपक्ष की इतनी पीढ़ी तक की और पिता पक्ष की इतनी पीढ़ी तक की सन्तान। कोई सात पीढ़ी तक ही मानते हैं। साराश यह कि सपिण्ड से दूर विवाह करने से वर वधू में खून की असमानता हो गई और सगोत्र से दूर विवाह करने से कन्या का मायका उसको ससुराल से दूर हो गया। खून का भेद इसलिये रक्खा है कि सन्तान में वर वधू एक दूसरे की शारीरिक कमी परस्पर पूरी कर सकें और ससुराल दूर इस लिये की कि माता पिता एक दूसरे को रोज़ उलहना न दे सकें।

अरोगणी भ्रातृमतीमसमानार्ष गोत्रजाम्।
पंचमात्सप्तमादूर्ध्वमातृतः पितृतस्तथा ।५३।

यह श्लोक याज्ञवल्क्य स्मृति के विवाह प्रकरण का है। इसके शब्द गोत्रजाम् पंचमात सप्तमात ..मातृत. पितृतः पर विचार कीजिये। वर अपने माता की पांच पीढ़ी और पिता की सात पीढ़ी से दूर की कन्या विवाहे। यह कन्या सगोत्र न हो। अगर जन्म का बचाव पीढ़ी बन्धन से कर दिया फिर दूसरी जन्म वाचक रोक, गोत्र शब्द में लगाने की क्या जरूरत थी। गोत्र शब्द जन्म वाचक होता तो उसकी रोक में सबही पीढ़ियों में विवाह रुक जाता और पीढ़ियों के बाहर भी रोक रहती फिर सात पांच पीढ़ी रोक रूल क्यों बनाया। ऐसी बातों से पता चलता है कि गोत्र में स्थानी रोक थी और पीढ़ी से जन्म की रोक है। स्थानी रोक स्थान बदलने से लागू नहीं रहती यानी गोत्र बदला जा सकता है।

★ ★ ★

पुस्तक-परिचय

इंडिया नहीं भारत--लेखक श्री ज्ञानचन्द आर्य, प्रकाशक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, २०, ३० सोलह पेजी २५ पृष्ठ इस लघु पुस्तिका में विद्वान् लेखक ने युक्ति प्रमाण पुरःसर उन अनेक धाराओं, और भ्रमात्मक विचारों का निराकरण करने का सफल प्रयास किया है कि जिनसे प्रेरित और प्रभावित होने के कारण पाश्चात्य के कुप्रभाव से अनेक भारतीय लोग भी अपने देश का नाम हिन्दुस्तान, या इंडिया बनाये रखना चाहते हैं और जिनको आर्यावर्त अथवा भारतवर्ष नाम अब तक अप्रिय और अस्वीकरणीय प्रतीत होता है देश का नाम क्यों भारतवर्ष ही होना चाहिये और क्यों हिन्दुस्तान अथवा इंडिया न होना चाहिये इस बात को लेखक ने सुबोध ढंग से प्रतिपादित किया है, इस पुस्तक में वैदिक इडाशब्द से इंडिया निकालने वालों के सम्बन्ध में कतिपय वैदिक प्रमाण देते हुये दर्शाया गया है कि इडा शब्द देश विशेष के अर्थ में वेद मे नहीं मिलता है और न कहीं अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ में ही इसका प्रयोग देश के नाम परक पाया जाता है वेद में इडा शब्द का अर्थ पृथ्वी, वाणी, अन्न, गौ आदि आदि होते हैं, किन्तु इन से इस देश का नाम निकालना क्लिष्ट कल्पना होगी कि जिसके लिये कोई आधार नहीं है वस्तुत इस विषय में किसी को भ्रम न होना चाहिये कि इस देश का सबसे सुन्दर नाम आर्यावर्त या भारतवर्ष ही हो सकता है, पुस्तक सचप में होने पर भी पठनीय है

<u>उपनिषद् अंक</u>—गोरखपुर से प्रकाशित होनेवाले सुप्रसिद्ध कल्याण, विशेषकर प्रतिवर्ष निकलने वाले उसके विशेषांकों से हिन्दी जानने वाले प्रायः सब लोग भलीभाँति परिचित हैं। इन विशेषांकों को जहाँ आकार, प्रकार, मुद्रण और प्रकाशन की दृष्टि से असाधारण कहा जा सकता है, वहाँ उनमें उपलब्ध पाठ्यवस्तु और अवलोकनीय चित्र-बाहुल्य का उद्रेक भी निराला ही कहा जा सकता है। इस वर्ष कल्याण का उपनिषदांक प्रकाशित हुआ है। पौने आठ सौ पृष्ठों के इस विशद विशेषांक में १३ गम्भीर गवेषणात्मक लेख, २५ संग्रहीत लेख, २१ कविताये, ५४ उपनिषद्, और २४ रंगीन एव १६ एक रंगे चित्र दिये गये हैं।

सनातन भारतीय संस्कृति साहित्य समुद्र मे औपनिषदिक साहित्य को अनेक अर्थों में सर्वश्रेष्ठ महा रत्न कहने में कोई संकोच नहीं हो सकता है। अध्यात्मविद्या से अनुस्यूत जितनी विचारधाराओं की कल्पना सूक्ष्मतम मानव बुद्धि के लिये जहाँ तक सम्भव है, उन सब का प्रचुर समावेश इस रहस्यविज्ञान-

मय साहित्य में सर्व सुलभ है। किन्तु अपनी २ विलक्षणता और संस्कारवश के अनुरूप तत्वज्ञानोपलब्धि सुकर या दुष्कर होती है। इसलिये सहस्रों, ग्रन्थों, टीकाओं, भाष्यों और अनुवादों के साथ २ स्वतन्त्र ग्रन्थों के प्रकाशित हो जाने पर भी अभी तक औपनिषदिक साहित्य की मधुरता, नवीनता, उपादेयता, उपयोगिता और महत्ता किसी प्रकार से भी पुरानी नहीं हुई है। जो जितना ही इसमें तन्मयता के साथ प्रवेश करता है, उसको उतना ही अधिक रसास्वादन सुख अधिगत होता है। प्रस्तुत अंक में मुख्य २ उपनिषदों का मूल और हिंदी अनुवाद दिया गया है, और शेष का केवल भाषा भाष्य दिया गया है। भाष्य और अनुवाद के सबंध में स्पष्ट ही है कि सम्प्रदायाचार्यों में दृष्टिकोणभेद और मतभेद होने के कारण यह सम्भव नहीं है कि सभी प्रकार के विचारों का प्रतिपादन एक ही ग्रन्थ या विशेषांक में किसी प्रकार दिया जा सकता इसलिये पाठकों को उचित ही है कि अपनी गति और मति के अनुसार भाष्य और अनुवाद को पढ़ते समय इस बात को सदा स्मरण रखना चाहिये कि मूल उपनिषद् का स्थान कोई भाष्य या टीका अथवा अनुवाद नहीं ले सकता है हां भाष्यकार, टीकाकार या अनुवादक अपने २ दृष्टिकोण, धारणाओं, और सम्प्रदायाचार्यों के प्रभाव से प्रभावित होने के अनुरूप अर्थ लगाने का प्रयास करते हैं, इन सब प्रयासों में कभी २ भेद, विरोध, संशय, भ्रान्ति अथवा जटिलता प्रतीत होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, फिर भी उपनिषद्रूपी विशुद्ध रहस्यज्ञानगंगा में प्रवेश करके अध्यात्मविद्या के अभ्यासी सनातनकाल से ज्ञानामृतपान करते आये हैं करते हैं और करते रहेंगे इसमें किसी को सन्देहलेश न होना चाहिए।

कल्याण के सुचतुर सम्पादक मंडल ने इस विशेषांक में जहाँ वेदान्तविज्ञानशास्त्र के उच्चकोटि के मर्मज्ञ सन्यासी महात्माओं के गवेषणात्मक लेखों का सुन्दर संग्रह प्रस्तुत किया है वहाँ साथ में देश के मूर्धन्य राजनीतिक सुप्रसिद्ध महापुरुषों के साथ ही साथ सुविख्यात विशेषज्ञ विद्वानों के विभिन्न दृष्टिकोणों को सुस्पष्ट प्रदर्शित करनेवाले अनेक लेखों को भी प्रकाशित किया है। स्वाध्यायशील पाठकों के लिये एक ही स्थान पर उपनिषद् रहस्य विद्या सदृश अत्यन्त दुरुह विषय को तुलनात्मक दृष्टि से मनन करने के लिये कल्याण का यह उपनिषदांक एक सुलभ साधन प्रतीत होता है। विशेषकर ऐसे समय में जब कि ग्रन्थों का मुद्रण और प्रकाशन कार्य प्रायः अवरुद्ध सा हो रहा है। कल्याण के उपनिषदांक को प्रकाशित करके वास्तव में कल्याण के सचालकों ने औपनिषदिक साहित्यानुरागियों का विशेष कल्याणसाधन किया है। इस विशेषांक, अथवा वर्ष भर का मूल्य ६ रु० ३ आना मात्र है।

★ ★ ★

सम्राट अशोक को महत्व क्यों

[श्री श्याम लाल श्रीवास्तव]

आर्य मित्र अङ्क १३, ता० ७-४-१९४९ के चौथे पृष्ठ संपादकीय टिप्पणियों के अंत में एक समाचार प्रकाशित है जिस में एक प्रश्न के उत्तर में अर्थ मन्त्री जान मथाई ने पारलेमेंट में बताया कि अगले कुछ महीनों में नये प्रकार के नोट प्रचारित किये जायेंगे जिन में इंगलैंड के सम्राट के चित्र के बजाय अशोक स्तम्भ का चित्र होगा। इधर कुछ समय से केंद्रीय मन्त्रिमण्डल तथा संविधान सभा अशोक को विशेष सम्मान देकर तत्कालीन चिन्हों को पुनः प्रचारित कर रहे हैं और ऐसा विश्वास कर रहे हैं कि वैसा करके वे प्राचीन भारत के गौरव और संस्कृति का पुनरुत्थान कर सकेंगे। परिवर्तन और संशोधन की आवश्यकता तो अवश्य है किंतु बिना गम्भीर विचार के संशोधन करने में शीघ्रता करना कभी २ बड़ी भूल हो जाती है। भारत के प्राचीन इतिहास पर पुनः विचार की और नवीन खोज की आवश्यकता है और इसमें बड़े श्रम तथा विद्या की ज़रूरत है। अशोक की महत्ता १९ वीं शताब्दी के योरोपीय इतिहास कारों ने ही बहुत कुछ अपनी कल्पना के आधार पर सिद्ध की है और इतिहास के विषय में जो मार्ग उन्होंने निर्धारित किया उसी मार्ग पर चलते हुये उन्हीं विदेशी विद्वानों की युक्तियों को आधार बनाकर अब तक स्वदेश के इतिहासज्ञ भी अशोक को उत्तरोत्तर महान बना रहे हैं किंतु अब स्वतंत्र रूप से इस विषय पर विचार होना चाहिये।

पहली बात तो यह है कि सम्राट अशोक से भारत की जनता अनभिज्ञ है। प्राचीन महापुरुषों में रघु, दिलीप, राम, भरत, युधिष्ठिर आदि सम्राटों के प्रति सर्व साधारण में श्रद्धा है और लोग इन नामों से परिचित हैं नवीन राजाओं में विक्रमादित्य, भोज तथा पृथ्वी राज तक विख्यात हैं किंतु अशोक को कोई नहीं जानता, ऐसा क्यों है? ऐतिहासिक घटनायें भूली जा सकती हैं ऐतिहासिक महापुरुष समय के प्रभाव से चमत्कारिक पुरुष बनाये जा सकते हैं किंतु उन का नाम और यश अनेकों गीतों, दन्त कथाओं और काव्यों में सुरक्षित रहता है। अशोक यदि वास्तव में एक महान सम्राट था और उस की याद आज फिर से ताजा करनी है तो वह इस प्रकार क्यों भुलाया जा सका यह सोचने की बात है! (सम्भव है बौद्ध धर्म की प्रतिक्रिया पर उनके सभी अनुयायी लोक गीतों में स्थान न पा सके हों। —सम्पादक)

यह स्वीकार कर लिया गया है कि संस्कृत साहित्य में अशोक का उल्लेख नहीं है किंतु इस प्रभाव का कारण यह अनुमान है कि अशोक बौद्ध था अतः ब्राह्मणों ने उसकी अवहेलना की है। ऐसा अनुमान ठीक नहीं है, यदि ब्राह्मण वर्ग उसका विरोधी था तो भी निंदा के रूप में ही उसका उल्लेख होना चाहिये था। अशोक का कुछ उल्लेख बौद्ध दंत कथाओं में अवश्य है किंतु योरुपीय विद्वानों ने उन सभी दन्त कथाओं को अप्रमाणित गपोड़ा कह कर त्याग दिया है। ह्वेन सांग आदि चीनी यात्रियों के लेखों में से भी कुछ बातें जो उनकी कल्पना की समर्थक हो सकीं ली गईं और शेष असत्य और भ्रम मूलक कह कर त्याग दी गईं। जितनी दंत कथायें अशोक के विषय में बौद्धों के यहाँ प्राप्त हैं उन में अशोक की प्रशंसा नहीं है प्रत्युत उसकी निंदा ही है।

अशोक के शिला लेख प्रसिद्ध हैं और उन्हीं का आधार लेकर अशोक को बड़प्पन दिया गया है। बौद्ध दन्त कथाओं के अनुसार शिला लेख बौद्ध भिक्षुओं तथा प्रजा के सहायता से दिव्य शक्तियों द्वारा तय्यार हुये। उन शिला लेखों में से किसी एक में भी अशोक का नाम नहीं है। प्रत्येक शिला लेख "प्रियदर्शी" अथवा "देवा नाम् प्रिय" से प्रारम्भ होता है। कुछ अन्य नाम भी हैं किंतु अशोक का नाम कहीं नहीं पाया गया। अब एक महाशय ने दावा किया है कि उन्हें एक शिला लेख में अशोक का नाम मिला है किंतु जो लोग अब तक उस शिला लेख को पढ़ते आये उन्हें अशोक का नाम नहीं मिला। "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा" लेकर जो अशोक का ऊंचा महल बनाया गया, वास्तव में उसका कोई आधार नहीं है।

स्वामी दयानन्द ने प्राचीन आर्य राजाओं का सूची सत्यार्थ प्रकाश में दी है। उसमें भी अशोक का उल्लेख नहीं है। हमारे पुराने महापुरुषों को, अवहेलना करके हमारे ग्रन्थों को अप्रमाणिक अनैतिहासिक बतला कर त्याग देने के बाद केवल अपनी कल्पना के आधार पर जो हमारे लिये "हीरो" पश्चिमीय विद्वानों ने बना दिये हैं उन्हें अब आंख बन्द करके स्वीकार न करना चाहिये। स्वदेशीय दन्त कथाओं के अनुसार अशोक एक कुरूप, तथा क्रूर शासक था उसने अपने बड़े भाई की हत्या करके राज्य अपहरण किया। वह एक दासी पुत्र से उत्पन्न हुआ था। प्रजा उसके पैशाशिक कृत्यों से ऊब गई। जब जुल्म करके वह प्रजा को शासित न कर सका तब सम्भवतः वह अहिंसक भी बना, यहां तक कि उसने बौद्ध

(पृष्ठ ८ का शेष)

आर्य या हिन्दू राज्य की स्थापना न करने का दुष्परिणाम हम देख चुके हैं; और आज तक भी उसे भुगत रहे हैं। अब तो हमारी दुर्दशा यहाँ तक होगई है कि दिल से 'हिन्दू राज्य' चाहते हुए भी, हमें उन नेताओं की हाँ में हाँ मिलानी पड़ती है जिनके हाथ में हमने अपनी चुटिया देदी है। परन्तु सच्चाई यह है कि यदि हम इस शेष बचे हुए भारत के, दुबारा और टुकड़े कराना नहीं चाहते हैं, यदि लाखों करोड़ों आर्य सन्तानों की पुनः हत्या और बर्बादी हमें अभीष्ट नहीं है, यदि देश में फैली हुई बेईमानी--रिश्वत- घूसखोरी और चोर बाजारी दूर करने की हमारी इच्छा है, तो हमें, यह "रोटी कपड़े के लिए स्वराज्य" का राजनीतिक ध्येय बदलना पड़ेगा, और प्राचीन "आर्य राज्य"—का उत्तम आदर्श अपनाना पड़ेगा। ★

सभा की सूचनायें

गाज़ीपुर में अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्त का आगामी बृहद् अधिवेशन ५, ६ जून १९४९ को गाजीपुर में होना निश्चित हुआ है।

अधिवेशन डी. ए. वी. कालेज भवन गाजीपुर में होगा।

स्वागत कारिणी समिति का निर्माण हो गया है। गाजीपुर के आर्य भाई अधिवेशन को सफल बनाने के लिए पूर्ण रूप से तैयारियां कर रहे हैं।

गाजीपुर पहुँचने के दो रास्ते हैं। पहिला.—गाजियाबाद टूण्डला की ओर से जाने वाले प्रतिनिधि महोदय दिलदार नगर जंकशन पर उतरें वहाँ से , माल ब्रांच लाइन द्वारा ताड़ी घाट और वहाँ से नाव द्वारा गंगा नदी पार करके गाजीपुर पहुँचना चाहिये।

दूसरा.—सहारनपुर, मुरादाबाद की ओर से जाने वाले प्रतिनिधि महोदय बनारस कैन्ट पर ट्रेन बदलकर ओ टी रेल द्वारा सीधे गाजीपुर पहुँचें।

वार्षिक प्रतिनिधि चित्रों की सूचना

सभा कार्यालय से मार्च ४९ में वार्षिक प्रतिनिधि चित्र भेजे जा चुके हैं। इससे पूर्व समाजों का ध्यान पत्रिका सं० १२ एवं चित्रों के साथ भेजी हुई आवश्यक पत्रिका द्वारा आकर्षित किया जा चुका है कि प्रत्येक सभासद से १५ मास का अर्थात् १ जनवरी ४८ से ३१ मार्च १९४९ तक का मासिक चन्दा चित्र सं० ४ में दिखाया जाना चाहिये। सभा में चित्र फिर आने प्रारम्भ हो गये हैं किंतु बार २ समाजों का ध्यान आकर्षित करने पर भी १२ मास का ही चन्दा फार्मों में भरकर भेज रहे हैं। जो सभा के निश्चयों, आदेश के विरुद्ध है। समय न्यून है, अतः फार्म भेजते समय चित्रों को पुनः देख लिया करें, अन्यथा लौट पौट करने में ही समय निकलने के कारण प्रतिनिधियों की स्वीकृति का पत्र भेजने में विलम्ब होगा। आशा है समाजें उपर्युक्त नोट के अनुसार कार्य करेंगी और चित्र नियमानुसार पूरा करके भेजने का कष्ट करें।

२—दशांश ५) रु० के स्थान में १०) और प्रतिनिधि शुल्क १) रु० के स्थान में २) भेजना चाहिये।

वार्षिक रिपोर्ट

सभा के विभाग, संस्थाओं, कन्या पाठशाला और जिला उप प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि वार्षिक रिपोर्ट शीघ्र से शीघ्र भेजने का कष्ट करें। देर से आने पर सभा की रिपोर्ट में सम्मिलित न हो सकेगी।

रामदत्त शुक्ल,
मंत्री
आ प्र. सभा यू. पी.

धर्म में दीक्षा ली और भिक्षु बना। ऐसा करके भी वह सफल न हुआ और अपने जीवन में उसके साम्राज्य के ५ टुकड़े हो गये। देश में क्षात्र धर्म का ह्रास हुआ, जिससे आगे चल कर भारत विदेशी आक्रमणों का शिकार बना। मूर्ति पूजा का भी आदि संस्थापक अशोक ही माना जाता है। आर्य्य संस्कृति तथा वैदिक पद्धति को उसके अनुशासन से महान क्षति पहुँची। आगे चल कर सम्राट समुद्र गुप्त ने, कहा जाता है उसी के एक शिला लेख पर वैदिक क्षात्र धर्म के पुनरुत्थान के लिये अपने दिग्विजय का इतिहास लिखवाया। गुप्त वंश के वीरों ने बड़ी कठिनता से पुनः आर्य संस्कृति तथा संस्कृत साहित्य का पुनःनिर्माण किया। क्या यह उचित होगा कि जिस निराकरण के लिए हमारे पूर्व पुरुषाओं ने इतना त्याग और बलिदान किया, उसको फिर हम अपने देश में लाने का उद्योग करें?

इतिहास के महत्व को स्वा० दयानन्द ने भली भांति समझा था। उन्हें इतना अवकाश नहीं मिला कि वे स्वयं प्राचीन भारत का इतिहास लिखते, किन्तु उन्होंने इस ओर विशेष ध्यान दिलाया है। हमारा कर्तव्य है कि अवैदिक तथा आर्य संस्कृति के प्रतिकूल भावनाओं को प्रविष्ट न होने दें। आर्यसमाज के लिये उचित होगा कि राजनैतिक नेताओं को जो अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा के प्रभाव में रहने के कारण आर्य संस्कृति के लिये घातक योजनायें भ्रम से बना रहे हैं उनका पथ प्रदर्शन करने का उद्योग करें। ★★

आर्य्य-जगत्

आर्यसमाजों के होने वाले उत्सव

१ आ० स० नगीना ५ से ८ मई।

२. आ० स० छपराली ६ से ८ मई।

३. आ० स० मुमियाखेड़ा (एटा) ८ से १० मई।

४ आ० स० दोहरीघाट (आजमगढ) १० से १२ मई।

५ कन्या गुरुकुल देहरादून १३ से १६ मई। माननीय सम्पूर्णानन्दजी दीक्षान्त भाषण देंगे।

—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद की अन्तरङ्ग सभा का द्वितीय अधिवेशन १ मई १९४९ को आर्यसमाज मन्दिर स्टेशन रोड मुरादाबाद में प्रातः ८ बजे से होगा। इस अवसर पर श्री चौ० चरणसिंहजी मंत्री सचिव संयुक्तप्रान्त भी पधार रहे हैं।

निरीक्षण सूचना

कानपुर प्रान्त की आर्य समाजों के समस्त मंत्री महोदयों की सेवा में निवेदन है कि निम्नाङ्कित प्रोग्रामानुसार मैं समाजों का निरीक्षण करूँगा। अतः तिथियाँ अंकित कर उचित व्यवस्था बना रक्खें।

१ अकबरपुर	८-५-१९४९
२ सरैया	९-५-१९४९
३ बिलहौर	९-५-१९४९
४. रामनगर	९-५-१९४९

नोट—१. फरुखाबाद व फतेहगढ़ आर्य समाज का निरीक्षण ता० १४-५-१९४९ को करूँगा।

२—शिकोहाबाद हाथरस तथा मैनपुरी समाजों का निरीक्षण हिसाब नियमानुसार न होने के कारण न कर सका। निरीक्षण की पुनः व्यवस्था करूँगा।

३ आर्य समाज जवाहर नगर का निरीक्षण प० रामलाल जी शर्मा द्वारा ता० २२-५-१९४९ को होगा।

विश्वम्भरनाथ तिवारी निरीक्षक

श्री राजगुरु जी पीलीभीत में

२६ मार्च सन् ४९ को आर्य समाज पीलीभीत के वार्षिकोत्सव पर श्री राजगुरु जी पधारे जिन के अत्यन्त प्रभावोत्पादक दो व्याख्यानों के परिणाम स्वरूप दैनिक आर्यमित्र के लिये यहाँ की जनता ने लगभग २०००) रु० के शेयर खरीदे। २५०)रु० गुरुकुल वृन्दावन को भी दान दिया गया।

महाविद्यालय ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संरक्षकों, हितैषियों और सर्वसाधारण जनता को सूचित किया जाता है कि १८-३-४९ को महाविद्यालय महासभा ने अपने वार्षिक साधारण अधिवेशन में यह निश्चय किया है कि सन् ४९ से ५२ तक तीन वर्ष के लिये ही प्रत्येक विद्यार्थी के संरक्षक से भोजन व्यय चलाने के लिये २०) मासिक सहायता ली जावे। यह सदा के लिये नियत शुल्क नहीं है। जब तक देशव्यापी अत्यन्त महंगाई के कारण म० वि० पर आर्थिक संकट है, तब तक के लिये ही यह सहायता ली जावेगी। यदि तीन वर्ष से पहिले ही स्थिति सँभल गई तो बीच में ही यह सहायता बन्द की जा सकती है। यह स्मरण रहे कि यह २०) केवल भोजन में ही व्यय किये जावेंगे। इसके अतिरिक्त औषधालय, छात्रावास, पुस्तकें शिक्षा, रोशनी आदि पर होने वाला समस्त व्यय महाविद्यालय ही उठावेगा। आशा है इस सूचना से उस भ्रम का निराकरण हो जावेगा जोकि कुछ अनुत्तरदायी व्यक्तियों ने यह कह कर पैदा कर दिया है कि अब महाविद्यालय निःशुल्क नहीं रहा और वहाँ भी फीस लगा दी है। म० वि० के प्रेमी हितैषी ऐसे भ्रामक म० वि० विरोधी प्रचार से सावधान रहें। शिक्षा विभाग का कार्य ता० २० जून से आरम्भ होगा। ब्रह्मचारियों को तब तक म० वि० आ जाना चाहिये।

डा नरेन्द्रदेव शास्त्री एम ए, मंत्री, हरिदत्त शास्त्री एम ए, मुख्याधिष्ठाता

—हमने गोरक्षा विषयक ठोस जागृति और विस्तृत जानकारी पैदा करने के लिये सार्वजनिक पुस्तकालय, वाचनालयों को स्वप्रकाशित गो साहित्य अपने व्यय से बिना मूल्य भेजना निश्चित किया है।

निवेदक ओंकार म. प्रभुसेवक, सञ्चालक, गोरक्षा प्रचार विभाग लखनादौन (सी० पी०)

—आर्यसमाज नगर (झांसी)
प्रधान बा. हरीसिंहजी, उप प्रधान, प. बेनीरामजी शर्मा, मन्त्री र प्रेमदत्तजी, उपमन्त्री सुन्दरभान श्री खरे, कोषाध्यक्ष प. गंगाप्रसाद शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष अयोध्याप्रसादजी शर्मा, निरीक्षक—पं आलमचन्द्रजी

—आ० स० भिनगा (बहराइच)—म० अशर्फीलाल "आर्य पथि" प्रधान तथा म० श्यामलालजी मन्त्री।

—आ० स० सीतापुर—प० गंगाधरजी शर्मा प्रधान, प० मथुराप्रसाद आर्य मन्त्री।

—आ० स० भटपुरा—प्रधान लेखराम जी, मन्त्री रविदेवजी वैद्य, कोषाध्यक्ष म० बैजनाथजी।

आर्य कुमार सभा की स्थापना

करमपुर [देहरादून] में आर्य-कुमार सभा की स्थापना हुई। निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये—

श्रीकृष्णदेव शर्मा एम ए प्रधान, श्री ओ३म्प्रकारी गोयल उपप्रधान, श्री रघुबीरसिंह सैनी मन्त्री, श्री मोतीराम वैद्य श्री मोतीराम वैश्य उप मन्त्री, श्री अजय कुमार भल्ला कोषाध्यक्ष, श्री विश्वम्भर सहाय निरीक्षक।

—१६ मार्च १९४९ को पचपेड़वा में नवीन आर्यसमाज की स्थापना हुई। श्री प० देवदत्तजी शर्मा प्रधान, उप प्रधान श्री सेठ रामभरोसेलालजी, मन्त्री म० सनमगोसेलालजी तथा कोषाध्यक्ष म० सुन्दरलालजी।

—तहसील आर्यसमाज धामपुर का उत्सव ता० ६, १०, ११ मार्च सन ४६ को मनाया गया। नगरकीर्तन सभी मुहल्लों में धूमधाम के साथ प्रचार हुआ। निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

पं० रामविशम्भरजी प्रधान, बा० रामेश्वरदयाल वर्मा उप प्रधान, म० हीरालालजी मन्त्री, प० भीकू बाजी उप मन्त्री, म० राजारामजी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज करनेलगञ्ज (गोंडा) में ता० ४-४-४९ को आर्य स्त्री समाज की स्थापना हुई यहाँ पर उपदेशिकाओं के पहुँचने की आवश्यकता है जिससे उनके उत्साह और शिक्षा में वृद्धि हो।

—श्री राम नवमी का उत्सव आर्य समाज बादशाह नगर, लखनऊ द्वारा ७ अप्रैल सन् १९४६ ई० को प्रातः समाज मन्दिर में मनाया गया। श्री चौधरी चरण सिंह जी पार्लियामेन्ट्री सेक्रेट्री ने श्री राम चन्द्र जी के जन्म के सम्बन्ध में भाषण देते हुए देश प्रेम और जाति भेद भाव न रख कर पारस्परिक प्रेम तथा मेल जोल पर ज़ोर दिया।

आर्यसमाज अजमेर का उत्सव

आर्य समाज अजमेर का ६६ वाँ वार्षिक उत्सव १ अप्रैल से ७ अप्रैल तक बड़ी धूम धाम मनाया गया। गत ५ वर्षों से युद्ध झगड़े व अन्य कारणों से उत्सव को स्थगित करना पड़ा था। अतः जनता ने बड़े उत्साह व प्रेम से सहयोग दिया। लगभग ३ मील लम्बा जलूस निकला। उत्सव में प्रतिदिन ४०, ५० हजार जनता की भीड़ रहती थी।

—कन्या गुरुकुल हरद्वार का १६वां वार्षिकोत्सव १४ से १६ अप्रैल समारोह पूर्वक मनाया गया १५ ता: को माननीय नरहरि विष्णु गाडगिल मन्त्री भारत सरकार ने आयुर्वेद विभाग का उद्घाटन किया। अन्य भी कई सम्मेलन हुये। दीक्षान्त अभिभाषण श्री महावीर जी त्यागी एवं दीक्षान्तोपदेश पूज्य स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ द्वारा हुआ।

शुभ-विवाह

—श्री पं० रूपनारायण शर्मा उपदेशक सभाकी पुत्री चि० सुलभा देवी का विवाहसंस्कार ता० १६-२-१९४९ को प० हरिशंकर जी मिश्रा एम० ए० के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार प० विद्यानन्द जी शास्त्री काशी द्वारा सपन्न हुआ। वर वधू ने अपनी प्रतिज्ञायें की जिसका प्रभाव अत्युत्तम पड़ा।

विवाह संस्कार के उपलक्ष्य में में ५१) वेदप्रचार ५०) गुरुकुल को दान में प्राप्त हुये तथा २१) विविध संस्थाओं को दिये गये।

सभा की सूचनायें

दशांश

सभा के वृहदधिवेशन में दशाश की राशि ५) के स्थान में १०) स्वीकार हो गई है। इस वर्ष पत्रा, बुलेटीन तथा आर्य मित्र द्वारा समाजों को सूचित किया जा चुका है कि १०) कम से कम दशाश न भेजना चाहिये। किंतु समाजें ५) ही भेज रही हैं। अत समाजों के मंत्रियों को चाहिये कि १०) दशाश मे चित्रों के साथ भेजें और प्रतिनिधि शुल्क २)।

बैरंग-पत्र

सभा कार्यालय में एक अप्रैल से पोस्ट कार्ड व लिफाफा बैरंग होकर आते हैं। पत्र प्रेषक महाशयों को जानना चाहिये कि)॥ के स्थान मे)॥। कार्ड और -)॥ के स्थान में =) लिफाफा हो गया है। पोस्टेज कम लगाने पर बेरङ्ग पत्र हो जाते हैं। १ ली मई से बेरङ्ग आने वाले पत्र नहीं लिये जायगे। कृपया नोट करलें।

जिला सहारनपुर के समाजों का सूचना

जिला सहारनपुर के अधिकाश आर्य भाई उपदेशक सम्मेलन मे लखनऊ आ रहे हैं। अत जिला आर्य प्रतिनिधि उप सभा सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन १५ मई के स्थान म २२ मई १६४६ दिन रविवार स्थान आर्य समाज मदिर खालापार सहारनपुर मे निर्वाचन होगा। समाजे तिथियाँ नोट कर ले।

नि० स० ३१ विशेषरूप से श्रीप्रधान जी की आज्ञा से आगरा आर्य समाज २८ मार्च १६४६ श्री मक्खीलाल जी मत्री का पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि आगरा आर्यसमाज के विधान को स्थगित करने की अवधि ३१ दिसम्बर १६४६ तक बढ़ा दी जाव।

रामदत्तशुक्ल
सभामत्री

आर्यकुमार सम्मेलन

१४वें संयुक्तप्रातीय आर्यकुमार सम्मेलन के लिये प्रान्त भर से श्री अलगूराय जी एम. एल. ए. का नाम प्रस्तावित हुआ है। कवि सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और महिला सम्मेलन के लिये क्रमश श्री प० हरिशङ्कर शर्मा, श्री प्रिंसिपल महेंद्रप्रताप शास्त्री एम ए. तथा श्रीमती शन्नोदेवीजी एम.एल.ए. ने स्वीकार कर लिया है।

सूचना

देवरिया, गोरखपूर, बस्ती, गोंडा तथा बहराइच जिले के समस्त समाज के मन्त्री महानुभावों से प्रार्थना है कि मण्डल के प्रचार सम्बन्धी सारी सूचनाओं को अब नीचे के पते से सूचित किया करें। बहुत से पत्र मुझे नहीं मिलते है जिससे प्रचार की व्यवस्था में बाधा होती है। पत्र व्यवहार का पता नोट कर लेवें।

शिवनारायण वेदपाठी, उपदेशक सभा,
आर्यसमाज पाण्डेय बाजार,
बस्ती (जिला बस्ती)

—'सुरभारती निगम विद्यापीठ शाखा गुरुकुल गिलौला प्रान्त बहराइच में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश मास अप्रैल से जौलाई तक होगा। समस्त प्रबन्ध गुरुकुल मे ही रहेगा। —अधिष्ठाता

—गुरुकुल गगाघाट का पुनरुद्धार होकर पुन कार्य प्रारम्भ हो गया है, जिससे प्राचीन वैदिक पद्धति से निःशुल्क विद्यादान होगा।

निर्वाचन

—आर्यसमाज निचलौल (गोरखपुर)—प्रधान श्री प० भागवतप्रसाद जा, मत्री हनुमानप्रसादजी, उपप्रधानम० तपेश्वर प्रसादजी, उपमंत्री धनपतप्रसादजी, कोषाध्यक्ष म० गोवर्धन प्रसादजी, पुस्तकाध्यक्ष प० देवव्रतजी।

—आ० स० पाटन—प्रधान श्री रामपालसिंहजी, उप प्र० श्री शिव राजबहादुरजी, मत्री श्री श्यामधार जी, उप मत्री श्री चन्द्रभूषणजी, कोषाध्यक्ष श्री रामाधारजी, पुस्तकाध्यक्ष श्री रामस्वरूपजी, निरीक्षक श्री श्यामलालजी, गुरुकुल मत्री श्री शिवसहायजी। —मत्री

आर्य समाज साहिब गञ्ज प्रधान श्री रामसिंह जी। मत्री श्री जयराम प्रसाद, उपमंत्री बसन्त लाल सिंह, कोषाध्यक्ष बनवारी लाल पचोटी वाला, पुस्तकाध्यक्ष शिव प्रसाद सिंह, लेखा निरीक्षक द्वारिका प्रसाद,

—गत मास देहरादून में आर्य कुमार सभा की स्थापना हुई तथ निम्न प्रकार निर्वाचन हुआः— श्री बा० कृष्णलाल जी प्रधान, श्री प० सुदर्शन जी वैद्य आयुर्वेदालंकार उप प्रधान, श्री देवेन्द्र नाथ जी प्रभाकर मत्री श्री विनयसिंह जी उप मंत्री, श्री देवेन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष, सभा का कार्य बड़े उत्साह पूर्वक चल रहा है प्रति मास एक बार समीपवर्ती ग्रामों में यात्रा का कार्यक्रम रखा है यही प्रचार कार्य होता है

आ० स० मल्लपुर (बरेली)

महाशय बालक राम जी प्रधान रामचरन मंत्री।

आ० स० पचपेड़ा

प० देवदत्त शर्मा प्रधान प० जोवनराम जी वानप्रस्थी पं० हीरा लाल जी फुलैहया (पीली भीत),

—आर्य समाज सोहना जिला गुडगावा (पूर्वी पजाब) लाला—

वृद्धि चन्द्र जी प्रधान, चौधरी भीम सिंह जी उपप्रधान, वैद्य मानिक चन्द्र जी मन्त्री, लाला काशीराम जी उप मन्त्री, महाशय ज्यानचन्द्र जी बजाज कोषाध्यक्ष, महाशय गिरधारी लाल पुस्तकाध्यक्ष महाशय खाननराम जी पुरोहित

आर्यसमाज करनेलगज गोंडा का वार्षिकोत्सव जनवरी मास मे बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआः—

पं० बेनीदत्त जी शर्मा प्रधान

श्री० रामआश्रय उपप्रधान

श्री० बलभद्र जी आर्य प्रधानमन्त्री

श्री० जनार्दनसिंह जी वैद्य (संयुक्त मंत्री

श्री० बाबूलाल जी (कोषाध्यक्ष)

प० रामनरेश जी पुस्तकाध्यक्ष

श्री पूरनमल जी निरीक्षक

—कलञीखाल में ता. १५-२-४६ आर्य समाज की स्थापना हुई जिस का चुनाव इस प्रकार हुआ—प्रधान जेठुवासिंह, उ० सूजूसिंह मन्त्री भरतसिंह उप म० हरीलाल कोषाध्यक्ष नौरतसिंह।

—आर्य समाज जमालपुर

प्रधान महाशय भोलानाथ साह जी बैंकर, उप प्र० महाशय शौकी प्र० सिंह, मन्त्री महाशय सरयू प्र० आर्य, उप मन्त्री महाशय नारायण प्र० गुप्त, कोषाध्यक्ष महाशय छट्टूलाल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष महाशय फारुलाल आर्य, लेखा निरीक्षक म० गगा प्र० आर्य।

—आर्य समाज अम्बहटा सहारनपुर का वार्षिक उत्सव ३०, ३१ मार्च तथा १ अप्रैल को मनाया गया। निर्वाचन निम्नप्रकार से हुआ—

प्रधान श्री रहतुलाल जी, उप प्रधान उग्रसेन जी, मंत्री धर्मदास जी आर्य, उप मं० सत्यप्रसाद जी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष चन्दूलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष पडित परशराम जी वैद्य।

आर्य समाज गौरी बाजार

प्रधान प० कृष्ण धारी जी आर्य उप प्र० रमेश जी आर्य, मन्त्री राम नारायण लाल जी, उप मन्त्री धर्म नारायण त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष लालता प्रसाद आर्य, पुस्तकाध्यक्ष फरगो प्रसाद आर्य।

—महाविद्यालय गुरुकुल सिकन्द्राबाद की अतरङ्ग सभा के पदाधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान श्री प० हरिदत्त जी शास्त्री सप्ततीर्थ M. A, उप प्र० ठा० बलभद्र सिंह जी M. L. A मन्त्री मा० हरबंश सिंह जी, उप म० पं० महेन्द्रकुमार जी, मुख्याधिष्ठाता वैद्यराज श्री वेद पाल जी आयुर्वेदी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री ला० सुन्दर लाल जी, निरीक्षक घासी राम जी,

T.B टी.बी "तपेदिक" और पुराने ज्वरों की मशहूर दवा 'जबरी' पर भारत के कोने-कोने से प्रशंसा पत्रों की झड़ी।

१ लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद)। २ बाबू मुन्नालाल स्टोर किपर सिमभावली शूगर मिल पो० बकसर जिला मेरठ। ३ बाबू रामसिंह घर न० ६१ राठा मण्डी, देहरादून। ४ श्री तामलहुसेन रईस, मुकाम मुनैपुर पोस्ट भरतकुण्ड (फजाबाद)। ५ डा० ठाकुरसिंह नेपाली मुकाम कढैया पोष्ट हरजखा जिला दरभगा। ६ श्री राम खेलावन राम भीखूराम पो० बाजार गुसाँई जिला आजमगढ। ७. श्री लीलाधर कापरी आर० सी० वार्ड सेनाटोरियम भवाली (नैनीताल)। ८. श्री लीलाधर चौधरी लायबरेरियन काटन मार्केट नागपुर। ९ प० चन्द्रमणि पाण्डे मुकाम कुरेहरा पोष्ट मेहनाजपुर (आज़मगढ)। १०. श्री नत्थूसिंह सोलंकी कम्पाउण्डर गवनमेंट होसपिटल महेश्वर (इन्दौर)।

आदि आदि सैकडों सज्जनों का कहना है कि यथार्थ में 'जबरी' दवा नहीं बलिक रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। ऊपर जिन सज्जनों के पूरे पते दिये गये है आप जिससे भी चाहे पूछ कर तसल्ली कर सकते हैं। फिर हमने तो परीक्षार्थ दस दिन का नमूना भी रख दिया है जिसमें तसल्ली हो सके। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा अवश्य करें।

T B. टी बी तपेदिक व पुराने ज्वर के हताश रोगियो

अब भी समझो अन्यथा फिर वही कहावत होगी—अब पछताये होत है क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' इस लिये तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। सैकड़ों हकीम, डाक्टर, वैद्य अपने रोगियों पर व्योहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिये हमारा पता केवल "जबरी जगाधरी" JABRI Jagadhri लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता लिखें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल न० १ अमीरों के लिये जिसमें साथ-साथ ताक़त बढ़ाने के लिये सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्मे भी पड़यी हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिये २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें मूल्वान जडी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन के लिये ६) रु०। महसूल आदि अलग। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नम्बर पता साफ-साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य आर्डर के साथ भेजें। यदि पार्सल Air mail से मगाना हो तो २) रु० अधिक भेजें।

रायसाहब के० एल० एन्ड सन्स रईस एन्ड बैंकर्स (२!) जगाधरी, (E P)

पुस्तक प्रेमी ध्यान दें!

आर्य साहित्य की पुस्तकों का अधिक प्रचार क्यो नही होता? इसलिये की उनका मूल्य अधिक होता है। प्रत्येक व्यक्ति मगा नहीं सकता। इसलिये हमने एक मास के लिये पुस्तकों का मूल्य काफी घटा दिया है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति मगाकर लाभ उठा सके।

नाम पुस्तक	पू०मू०	घ०मू०
नारायण उपदेश	२)	१।।।)
भारत में १८५७	२।।)	२)
वेदान्त रहस्य	१।।)	१।)
वैदिक गोता	३)	२।)
भारत में अग्रेजी अत्याचार	६)	४।।)
धर्म शिक्षा बड़ी	३)	२।=)
गीता केवल भाषा	२।।)	२)
आर्य पर्व पद्धति	१।।)	१।)
अर्चना काव्य	२)	१।।)
मृत्यु और परलोक	२)	१।।।)
सांख्य दर्शनम्	१।।।)	१।)
वैदिक युद्धवाद	१)	।।।)
आस्तिक बाद	३)	२।।=)
सभ्यता के खन्डहर	१।।)	१।=)
हमारे बच्चे	१।)	१)
निश्वास	।।=)	।।)
स्वास्थ और जल चिकित्सा	२)	१।।।)
लक्ष्मी बाई	१)	।।।)
रुपया कमाने की मशीन	१)	।।।)
वीर दुर्गादास रा०	१)	।।।)
वेदान्त दर्शनम्	१।।	१।)
समुद्रक शास्त्र	४)	३)
पाक विज्ञान	३)	२।।)
सिलाई कटाई शि०	२।।)	२)
वाल प्रश्नोत्तरी	।।)	।=)
गीता महात्मा गांधी	२।।)	२।)
बिबाह आनन्द	१।।)	१=)
लाल पजा	३)	२।।)
वीर राज पूत	१।।।)	१।=)
प्राणों के खीलाड़ी	१=)	।।।=)
अमृत वर्षा	१।।)	१।)
सरदार हरीसिंह नलवा	१।)	१)
कांग्रेस लीग हिंदू महासभा	३)	२।)
स्वास्थ और व्यायाम	२)	१।।।)
गीतांजली	१।)	१)
राजा महेन्द्र प्रताप	१।।)	१≡)
हारमोनियम तबला शिक्षा	२)	१।।)
भारत मे मश्री मिशन	१।)	।।।≡)
घर वैद्य ५ भाग	३।।।)	३)
मनुष्य जीवन की उपयोगिता	१।)	१)
देश के दुर्दिन	।।।=)	।।=)
फल उनके गुण तथा उपयोग	१।)	१)

पताः—घनश्यामदास बुकसैलर पीपल मन्डी आगरा

आरोग्य-वधक
५० साल से दुनिया भर में मशहूर
मदनमंजरी
मदनमंजरी फार्मेसी जामनगर
कलकत्ता ब्रांच—१७७ हरिसन रोड़
लखनऊ में तालदल पसारी, अमीनाबाद

समत वगरज इनफिसाल मुकद्दमा

(आडर ५ कायदा १ व ५ मजमूआ जाब्ता दीवानी, सन् १९०८ ई०)

नम्बर मुकद्दमा
बअदालत जनाब मु० साहब रिवन्यू जिला लखनऊ।

प० गुरुप्रसाद मुद्दई
बनाम
ठाकुर चन्द्रिकाबख्शसिंह वल्द तेजोसिंह मोहना खुर्द परगना महोना तहसील मलिहाबाद।

वाजेह हो कि मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत ······ दायर की है, लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख १३ माह मई सन् १९४९ बवक्त १० बजे दिन लखनऊ असालतन वा मार्फत वकील के जो मुकद्दमा के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिका मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ और कोई शख्श हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हूजिये और जवाबदेही दावा की कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपकी हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कतई मुकद्दमा के के तजवीज हुई है। पस आपको लाजिम है कि उस रोज अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज जुमला दस्तावेजात जिन पर आप बताईद इस्तदलाल करना चाहते है उसी रोज पेश कीजिये।

और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर आप बरोज मजकूर हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपसे मसमूअ और फैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख १९ माह अप्रैल सन ४९ ई जारी किया गया।

मुहर बहुक्म—असि० कलेक्टर

शीघ्र आवश्यकता

एक धनी, मानी, स्वस्थ्य, सुन्दर, शिक्षित २४ वर्षीय (चौहान ठाकुर महाराज पृथ्वीराज के वंशज सूर्यवंशी कश्यप गोत्रीय) कन्याकुब्ज आर्य नवयुवक जिनकी वार्षिक आय जिमीदारी से ५०००) रुपये के ऊपर है, के लिए सुन्दर, स्वस्थ्य, शिक्षित तथा गृहकार्य में दक्ष कन्या की आवश्यकता है सम्बन्ध बिना जाति पाँति के भी हो सकता है। ग़रीब घर की कन्या को प्रथम स्थान दिया जावेगा।

पता—श्री टीकाराम बाजपेयी
प्रथम अध्यापक,
ग्राम धर्मपुर, पोस्ट रायपुर
जिला—नैनीताल।

आवश्यकता है !

सभा के अन्तर्गत शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी आर्य पुस्तकालय भुवाली के लिये पुस्तकाध्यक्ष (लाइब्रेरियन) के लिये एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता है। वेतन ४०) रु० और एक कमरा रहने को दिया जायगा। यदि कोई योग्य व्यक्ति हो तो वेतन अधिक भी दिया जा सकता है। प्रार्थना-पत्र स्थानीय समाज के मंत्री या प्रधान के प्रमाण-पत्र के साथ सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

रामदत्त शुक्ल,
मन्त्री
आ० प्र० सभा, लखनऊ यू०पी०

आर्यमित्र विज्ञापन का उत्तम साधन है !

प्रकाशक तथा मुद्रक—ला० भगवत्प्रसाद • गयादीन आर्यभास्कर प्रेस' लखनऊ

कश्मीर रक्षा करने के लिए भारत दृढ़ संकल्प

राष्ट्रीयता का आधार धर्म नहीं होता

— पं० नेहरू

श्रीनगर, २९ मई। भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय सैनिकों की एक सभा में कहा कि काश्मीर का युद्ध केवल अधिकारों का संघर्ष नहीं वरन् सिद्धान्तों का युद्ध है।

जिस साम्प्रदायिकता के विष भरे सिद्धांत के बल पर मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की रचना की और भारत के हिंदुओं और मुसलमानों का विनाश किया उसके विरुद्ध भारत ने कश्मीर में वीरता के साथ युद्ध किया है। हम सब एक ही नाव के यात्री हैं यदि नाव डूबेगी तो हम सभी डूबेंगे।

जिस समय भारत अपनी नव-अर्जित स्वाधीनता की व्यवस्था करने में व्यस्त था उस समय आक्रमणकारियों ने खूनखराबी और लूट का साम्राज्य कश्मीर पर स्थापित कर दिया। भारत के लिये वह समय बहुत कठिन था क्योंकि कश्मीर की जनता की रक्षा के लिये हमें सैनिक और सामान दोनों वहां लाने पड़े।

कश्मीर हमारे देश का एक भाग है। यदि हम अपने ही लोगों की कठिन समय में रक्षा न करते तो भारत का सम्मान नष्ट हो जाता। हम अपने ही आदमियों की निगाह में गिर जाते। इस युद्ध का इतिहास कश्मीरियों ने अपने खून से लिखा है क्योंकि निःशस्त्र होते हुए भी पहले उन्होंने आक्रमणकारियों का सामना किया था। कश्मीर पर आक्रमण अन्तर्राष्ट्रीय नियमों की अवहेलना थी। यदि पड़ोसी देशों पर आक्रमण करने की छूट दे दी जाय तब तो कोई भी देश अपनी स्वतंत्रता की रक्षा नहीं कर सकता।

मौलिक प्रश्न यह है कि राष्ट्र का आधार क्या साम्प्रदायिकता हो सकता है? यह विष साम्राज्यवाद ने फैलाया था और मुस्लिम लीग उसी का फल था जिसने देश का विभाजन यह कह कर कराया कि वे एक राष्ट्र नहीं हैं।

भारत को यह सिद्धांत स्वीकार नहीं। इसलिए भारत में करोड़ों मुसलमान सम्मान से शांति पूर्वक रह रहे हैं।

हमने स्वतंत्रता का मूल्य अपने रक्त से अदा किया है अब हमें परिश्रम और त्याग से देश की रक्षा करनी है।

★ ★

कश्मीर नरेश लम्बी छुट्टी पर जायंगे

श्रीनगर, ३० मई। ज्ञात हुआ है कि कश्मीर नरेश महाराज सर हरी सिंह लम्बी अवधि के लिए राजकाज से छुट्टी लेकर बाहर जा रहे हैं। उनकी अनुपस्थिति में युवराज श्री करनसिंह राज्य के वैधानिक प्रमुख का कार्य करेंगे।

अंग्रेज गवर्नर हटाया जाय

लाहौर, ३१ मई। पश्चिमी पंजाब की मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव पास कर वहां के अंग्रेज गवर्नर सर फ्रांसिस मूडी को हटा कर पाकिस्तानी को नियुक्त करने की अपनी मांग को फिर दुहराया है।

कश्मीर कमीशन की बैठक में भारत पाकिस्तान के उत्तर साथ साथ खोले गये

श्रीनगर, १ जून। कश्मीर कमीशन के सभी सदस्यों के समक्ष आज तीसरे पहर भारत और पाकिस्तान सरकारों के वे मुहरबन्द लिफाफे, जिनमें कमीशन के विराम सन्धि प्रस्ताव के उत्तर भेजे गये हैं एक साथ खोले गये।

कमीशन की आज की बैठक केवल ४५ मिनट तक होती रही जिसमें दोनों सरकारों के उत्तर पढ़कर सुनाये गये। इन उत्तरों पर विस्तार से विचार करने के लिए कमीशन के सदस्यों की विशेष बैठक होगी।

कमीशन में संयुक्तराष्ट्रसंघ के प्रधान मन्त्री के विशेष दूत श्री एरिक कोलबन पाकिस्तान उत्तर लेकर श्रीनगर पहुंचे।

कासिम रिजवी का मुकदमा जून के तीसरे सप्ताह में

हैदराबाद, । ज्ञात हुआ है कि कासिम रिजवी तथा दूसरे ५३ रजाकारों पर जून के तीसरे सप्ताह में गुलबर्गा के न्यायालय में मुकदमा चलाया जायगा। कासिम रिजवी पर लूट, अग्निकांड, हत्या और हिंसा के लिए भड़काने के अभियोग लगाये गये हैं।

गवर्नर को मंत्रिमंडल के निश्चयों की सूचना मिले।

गवर्नर को धारा सभा भंग करने का अधिकार

नयी दिल्ली, २ जून। भारतीय विधान परिषद् में आज गवर्नरों के अधिकार सम्बन्धी १४७ वीं धारा पास हो गयी। इस धारा में कहा गया है कि प्रान्त के प्रधान मन्त्री का यह कर्तव्य होगा कि मंत्रिमंडल में प्रांत के शासन के संबंध में जो निश्चय किये जांय उनकी सूचना गवर्नर को बराबर देता रहे तथा धारा सभा की कार्यवाई के के बारे में गवर्नर जो कुछ जानना चाहे उसे बताये।

गवर्नर को यह अधिकार होगा कि वह किसी भी ऐसे मसले को मंत्रिमंडल में विचारार्थ भेज सके जिस पर केवल एक मन्त्री ने ही अंतिम रूप से फैसला कर दिया है और मंत्रिमंडल ने विचार नहीं किया है।

गवर्नर एक मात्र शासनाधिकारी

इससे पूर्व परिषद् ने धारा १४६ स्वीकार की जिसमें कहा गया है कि प्रान्त के शासन सम्बन्धी अधिकार गवर्नर की ओर से ही जारी किये जायगे परन्तु गवर्नर की ओर से किसी अधिकारी द्वारा जारी आदेश पर यह एतराज न किया जा सकेगा कि गवर्नर ने स्वयं नहीं जारी किया है। तदनन्तर १५१ वीं धारा पास हो गयी जिसके अनुसार प्रान्तीय धारा सभा का कार्यकाल ५ वर्ष है बशर्ते कि वह इससे पूर्व ही भंग न कर दी जाय श्री थी. एम गुप्त का यह संशोधन भी स्वीकार कर लिया गया कि संकट कालीन स्थिति के घोषणा होने पर यह कार्यकाल भारतीय पार्लियामेंट की मंजूरी पर बढ़ सकता है। पार्लियामेंट एक बार में इस काल को एक वर्ष से अधिक और संकट काल-स्थिति समाप्त होने के ६ महीने से अधिक न बढ़ा सकेगी।

धारा १५२ के अनुसार प्रांतीय धारा सभा के सदस्य को कम से कम २५ वर्ष और कौंसिल के सदस्य को कम से कम ३० वर्ष का होना चाहिए पहले यह आयु ३५ थी।

धारा १५३ के अनुसार धारा सभा की बैठक वर्ष में कम से कम दो बार होना आवश्यक है और इन दोनों बैठकों के बीच ६ महीने से कम समय होना चाहिए। इस धारा के अनुसार गवर्नर को यह हक होगा कि समय समय पर प्रांतीय धारा सभाओं की बैठक उचित स्थान व समय पर बुलावे, उद्घाटन करे या भंग कर दे। धारा १५४ से १५६ तक बिना विशेष बहस के पास हो गयीं।

तदनंतर (नयी धारा १५६-अ) संशोधन के साथ स्वीकार कर ली गई कि जिस समय स्पीकर या उप-स्पीकार (धारा सभा के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष) के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर विचार हो रहा हो वह अध्यक्ष पद ग्रहण न करें। इसके बाद कौंसिल के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के चुनाव और वोट संबंधी धारायें (१६०, १६१, १६२, १६३) पास हो गयी। यह भी तय हो गया कि कोई भी व्यक्ति दो प्रांतों की धारा सभाओं का सदस्य न हो सकेगा।

सदस्यता के अनुपयुक्त कौन है इस प्रश्नपर विचार किया गया और डा० अंबेदकर के संशोधन सहित धारा १६४ पास हो गयी।

प्रान्तों के गवर्नर राष्ट्रपति द्वारा नामजद होंगे

नेहरू द्वारा निर्वाचन पद्धति का विरोध

नयी दिल्ली, ३१ मई। भारतीय विधान परिषद् में आज प्रस्तावित विधान के मसविदे में श्री बृजेश्वर-प्रसाद (बिहार) द्वारा प्रस्तुत इस आशय का संशोधन भारी बहुमत से पास हो गया कि भारत के प्रान्तों या रियासतों के गवर्नरों को राष्ट्रपति नामजद करेगा। प्रस्तावित मूल विधान में गवर्नर के लिए निर्वाचन की पद्धति रक्खी गयी थी।

संशोधन का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि गवर्नर की नामजदगी का सिद्धान्त न केवल व्यावहारिकता की दृष्टि से अपितु जनतन्त्रवाद की रक्षा की दृष्टि से भी अत्यन्त आवश्यक है। निर्वाचन से प्रान्तों के बीच अलगाव की भावना उभड़ेगी। इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व निर्वाचन की अपेक्षा नामजदगी में अधिक सुरक्षित रहेगा।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

होतृषदनं हरितं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके ।

अथ० ७।६६।१

सेवा पथ में सर्वस्व लगाने वाले का जीवन कुन्दन हो जाता है। संसार में यशशील के आदर्श अमिट होते हैं।

ता० २ जून १९४६

उपदेशक सम्मेलन

लखनऊ में प्रथम अखिल भारतीय उपदेशक सम्मेलन १४ मई से १७ मई तक बड़ी धूम धाम से मनाया जाकर सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। सम्मेलन की सफलता इसी से अनुमान की जाती है कि उसमें आर्य समाज के प्रचार कार्य को करने वाले लगभग ३०० के साधु महात्मा, देश भर के प्रचारक और उपदेशक सम्मिलित हुये थे। सभी प्रमुख उपदेशकों का इतनी बड़ी संख्या मे उपदेशक होने के नाते एकत्र होने का यह प्रथम ही अवसर था।

इस सम्मेलन के प्रधान आ० प्र० सभा बिहार के प्रधान सुप्रसिद्ध उपदेशक महात्मा श्री स्वा० अभेदानन्द जी महाराज थे। इनके अतिरिक्त प० रामचन्द्र देहलवी, श्री प० अयोध्या प्रसाद जी कलकत्ता श्री स्वा० वेदानन्द जी महाराज, प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, श्री महात्मा खुशहालचन्द्रजी प० विद्यानन्दजी आदि सभी प्रसिद्ध प्रचारक पधारे थे।

प्रतिदिन यज्ञ से कार्य प्रारम्भ होता था-यज्ञ का कार्य श्री प० हरिदत्त जी शास्त्री के तत्वावधान मे प्रतिदिन सम्पादित होता था जिसमें श्री पुरुषादि अत्यन्त श्रद्धाभक्ति से सम्मिलित होते थे।

१४ मई को सम्मेलन के उद्घाटन कर्ता सुप्रसिद्ध राष्ट्र सेवी श्री के० एम० मुन्शी का हवाई अड्डे पर स्वागत किया गया और सायंकाल ४ बजे से अमीनुद्दौला पार्क से जुलूस निकला। सायंकाल श्री अभेदानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण किया और ७ बजे साय श्री. के. एम. मुन्शी जी का उद्घाटन भाषण हुआ जिसमें उन्होने आर्य समाज और ऋषि की प्रशंसा की।

इसी सम्मेलन में पं० अयोध्या प्रसाद जी, प० रामचन्द्र जी देहलवी के आर्य संस्कृति से सम्बन्धित रोचक भाषणों के अतिरिक्त १७ ता० के राष्ट्र भाषा सम्मेलन के अवसर पर श्री अम्बिका प्रसाद जी बाजपेई और श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त के अत्यन्त प्रभावशाली सारगर्भित व्याख्यान हुये।

सम्मेलन सभी प्रकार से, क्या प्रचार की दृष्टि से और क्या विचार की दृष्टि से सफल रहा। सफलता का श्रेय श्री भृगुदत्त जी तिवारी, प० प्रकाश वीर जी, प० वाचस्पति जी श्री तेजोनारायण जी, बा० विष्णु स्वरूप जी आदि आर्य महानुभावों को है।

श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी के नेतृत्त्व मे आर्यवीर दल ने भी प्रबन्ध मे भाग लेकर सराहनीय कार्य किया।

सम्मेलन मे अत्यन्त उपयोगी प्रस्ताव स्वीकार किये गये हैं—यदि उपदेशक तथा आर्य पुरुष उन प्रस्तावों की भावना को ग्रहण कर सहयोग पूर्वक कार्य करेंगे तो सम्मेलन के सार्थक होने में सन्देह ही क्या है।

सफलता के लिये सम्मेलन के पुरस्कर्ताओं को बधाई है।

★ ★ ★

जन वृद्धि का अभिशाप

भारत के सम्मुख जितनी भी विकट आन्तरिक समस्यायें हैं उन सबमे सबसे अधिक दुष्प्रभावजनक भयकर समस्या देश की बढ़ती हुई जन-संख्या है। आश्चर्य यह है कि इस समस्या के गम्भीर परिणामों पर स्पष्ट रूप से बहुत ही कम विचार किया जाता है।

जब कभी भारत की भोजन सामिग्री की पर्याप्तता पर विचार किया जाता है। तभी अनुमानित जन-संख्या से अत्यन्त अधिक बढ़ती हुई इस जन-संख्या की विचित्र विभीषिका, गणित द्वारा किये गये पूर्व के अनुमान को नष्ट भ्रष्टकर देती है। दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई इस जनसंख्या की वृद्धि के कारण देश मे खास पदार्थों के अत्यन्त अधिक उत्पादन व विदेशों से खाद्य सामिग्री मगवाने की आवश्यकता अधिकाधिक बढ़ती जा रही है।

भारत की कृषि योग्य भूमि पर जनसख्या का दबाव दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। यह दबाव यहा तक बढ़ गया है कि केवल १॥ बीघा ($\frac{1}{2}$ एकड़) खेती के योग्य भूमि ही प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में होने का अनुमान किया जाता है जब कि भारत मे उत्पादन का परिमाण अत्यन्त अल्प है जो इतने अधिक व्यक्तियों के मुखों के भरने के लिये अपर्याप्त है।

ऐसी अवस्था मे अन्त मे, कोई न कोई उपाय तो ऐसा सोचना ही पड़ेगा कि जिससे जन संख्या की इस वृद्धि पर विजय प्राप्त की जा सके। सम्पूर्ण ससार में वर्ष भर मे उत्पन्न ४ बालकों में से १ बालक हमारे देश भारत में उत्पन्न होता है। प्रत्येक १० वर्ष बाद की जन गणना में भारतवर्ष की जनसंख्या सम्पूर्ण इङ्गलैण्ड की जन सख्या के लगभग बराबर अधिक बढ जाती है। आश्चर्य तो यह है कि वृद्धि की उन्नति का यह क्रम उस अवस्था में है जबकि भारत के उत्पन्न १०० बच्चों में ७७ बच्चे अनेक कारणों से नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न यह है कि यह अवस्था कब तक रहेगी और देश इस दबाव को कहा तक सहन कर सकेगा ?

जर्मनी, जापान और इटली में जन संख्या की वृद्धि अकस्मात् ही नही होने लगी थी। इन देशों को संसार विजय की कामना के कारण जन वृद्धि के लिये अत्यन्त प्रयास करना पड़ा था। जन वृद्धि के प्रोत्साहन के लिये विविध कानून बनाने पड़े थे। इसके विपरीत भारत में तो अनायास ही अत्यन्त जनवृद्धि हो रही है जबकि उसे नवीन साम्राज्य बनाने की कोई आकांक्षा नहीं है, न ही १६वीं शताब्दी मे इङ्गलैंड के समान भारत यह आशा ही करता है कि उसका व्यापार विदेशों में सदैव हो फलता फूलता रहेगा और भारतीय जन संख्या की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की सदा पूर्ति करता रहेगा। भारत की अभिलाषा केवल इतनी ही है कि वह अपने देश के समृद्धि साधनों को इतना उन्नत कर लेता कि देश वासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति संसार के अन्य देशों के निवासियों के साधारण स्तर के समान हो सके।

इसमें सन्देह नहीं कि पर्याप्त खाद और फसलों के लिये पानी की सुव्यवस्था से अनेक फसलें उत्पन्न कर खाद्य सामिग्री का कई गुना उत्पादन सरलता से किया जा सकता है। बड़े - बड़े कृषि फर्मों व छोटे बड़े सभी व्यवसायों के विकास की योजनाओं के साथ - साथ जिन्हें कि कार्य रूप में परिणत करने का यत्न किया जा रहा है कृषि के पुरातन प्रकार के स्थान मे नवीन वैज्ञानिक साधनो के प्रयोगों से देश को समृद्ध किये जाने का यत्न अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इतने से समस्या हल होती प्रतीत नहीं होती।

देश की जन सख्या की वृद्धि अत्यन्त आशकाजनक तीव्र गति से बढ़ रही है। जन सख्या की वृद्धि पर प्रतिबन्ध का उपाय जितना अत्यन्त कठिन है, उतना ही कठिन भोजन और सूखा पर भी वश प्राप्त करना है। अतः सबसे प्रथम सुगम उपाय तो यह है कि जनता को यह ज्ञान कराया जावे कि वर्तमान अवस्था मे जन सख्या की वृद्धि के क्या - क्या विभिन्न अत्यन्त हानिकारक दुष्परिणाम हो रहे हैं। यह कार्य न केवल देश के स्वास्थ्य की उन्नति मे अभिरुचि रखने वाले अथवा शिक्षकों के करने का ही है अपितु देश के राजनीतिज्ञों और समाज सुधारकों का ध्यान भी इधर आकर्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

वर्तमान अवस्थाओं मे जब तक जन सख्या की आवश्यकता से अधिक जन वृद्धि न रुकेगी तब तक देशवासियों को सुखी, स्वस्थ, बुद्धिमान और समृद्ध बनाने के सम्पूर्ण प्रयत्न अन्त मे व्यर्थ ही सिद्ध होंगे।

योग्य शासन कैसे प्राप्त हो ?

गवर्नमेंट के उत्तरदायी अधिकारियों मे यह अनुभव किया जाना कि देश की ठीक-ठीक शासन व्यवस्था तथा उसकी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये शिक्षित, अनुभवी और योग्य व्यक्तियों का होना अत्यन्त आवश्यक है, शुभ लक्षण है। उनका यह विश्वास शिथिल होता जाता है कि शासन प्रयत्न आदि के प्रत्येक क्षेत्र मे कांग्रेसी जन उतने ही उत्तम हैं जितने कि इन कार्यों के लिये विशेष रूप से शिक्षा प्राप्त अन्य व्यक्ति। केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकार के मन्त्री अपने निरन्तर अनुभव से अब इस परिणाम पर पहुँच रहे हैं कि उनकी नीति व योजनाओं को ठीक रूप मे पूरा करने के लिये 'देश भक्ति' और स्वातन्त्र्य युद्ध के लिये 'त्याग की विशुद्ध परम्परा' भी अच्छे शासन सन्चालन के के लिये पर्याप्त उपयोगी नहीं है। सम्भवत इसीलिए सरदार पटेल ने मद्रास के अपने प्रसिद्ध व्यावहारिक भाषण म इस ओर निर्देश करते हुये उपयुक्त व्यक्तियों के गवर्नमैन्ट को न मिलने के कारण बाधाओं पर प्रकाश डाला था। उन्होंने कहा कि जब गवर्नमैन्ट के पास अपने शासन-कार्य के लिये पर्याप्त योग्य व्यक्ति व साधन ही नहीं हैं तो व्यवसायों का या सम्पत्ति का राष्ट्रीय करण कैसे हो जायगा। इस समय इतने बड़े देश के शासन यन्त्र को सञ्चालित करने के लिये उसके पास केवल १५०० व्यक्ति हैं। पहिले देश के शासन यन्त्र चलाने वाले व्यक्तियों मे ५५ प्रतिशत योरोपियन थे, जो पृथक हो गये। शेष मे से कुछ पाकिस्तान चले गये। इसके अतिरिक्त विदेशों में भारत के प्रत्येक राजदूतवास मे भी कुछ अनुभवी व्यक्तियों को भेजा जाना अनिवार्य था अन्यथा वहाँ का कार्य भी बिल्कुल न चलता।

कोई भी विचारशील पुरुष इसमे सदेह नहीं कर सकता कि सदिच्छा, बुद्धि व योग्यता का स्थान ग्रहण नहीं कर सकती, और बिना चतुर और अनुभवी व योग्य राजपुरुषों के गवर्नमैन्ट की उत्तम से उत्तम योजनाये भी व्यर्थ सिद्ध होंगी। अत शासन को उत्तम बनाने के लिये दलबन्दी के आधार पर नियुक्तियों की नीति का परित्याग करना पड़ेगा। विशेष कर उस दल के व्यक्तियों का जिनका काम तोड़ फोड़ रहा है। कोई रचनात्मक नहीं। बहुत से कार्यों का एक साथ प्रारम्भ कर देने से, गवर्नमेन्ट का उत्तर दायित्व स्वभावत ही बहुत अधिक विस्तृत हो गया है। ऐसी अवस्था म यदि कॉग्रेस म कोई योग्य व्यक्ति हैं भी तो वे भी गवर्नमैन्ट के अत्यधिक पेचीदा यन्त्र को चलाने के लिये सब स्थानों पर कार्य-कर्त्ता उपस्थित नहीं कर सकते।

अत भारत के इस संकट काल में अयोग्य व्यक्तियों को हटाकर शासन की योग्यता रखने वाले सर्वोत्तम व्यक्तियों का चुनाव व संग्रह किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त यह कोई बुद्धिमान का कार्य नहीं है कि प्राथमिक मुख्य कार्यों को छोड़ गौण और अनावश्यक कार्यों में अपनी शक्ति का व्यर्थ अपव्यय किया जावे। उचित तो यही है कि अब व्याख्यान देना बन्द कर मन्त्री वर्ग भी शासन कार्य मे अधिक शक्ति व ध्यान लगायें। और शासन में एक सूत्रता व निपुण कार्यक्षमता लाने का यत्न करें।

★ ★ ★

मि० चर्चिल की बोस्टन स्पीच

मि० चर्चिल के राजनैतिक विचारों से चाहे किसी को कितना ही मतभेद क्यों न हो ससार की अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों को सुलझाने में उनके विचारों को कितना ही हानिकारक क्यों न समझा जाय परन्तु इस बात को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है कि अनेक अवसरों पर की हुई उनकी भविष्य वाणियाँ सत्य सिद्ध हुई हैं। ससार के प्रबल प्रेस और राजनीतिज्ञों के उनके विरोध में आन्दोलन करते रहने पर भी उनकी युक्ति की प्रबलता व गांभीर्य से विरोधी प्रायः तिलमिला उठते हैं। वर्तमान समय के अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं और ससार की शान्ति स्थापना के सबध व अन्य राजनैतिक विषयों के विवेचन व हल करने का भी चर्चिल का एक विशेष दृष्टिकोण है, परन्तु इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि वे अपने समय के सुप्रसिद्ध युद्ध नेता और सर्व प्रमुख अन्तःराष्ट्रीय राजनीतिज्ञ हैं। इस क्षेत्र में उनकी स्थिति अब भी अपूर्व है। मनुष्य जाति के भूत और भविष्य पर विचार करते समय वे अपनी विचित्र अन्तर्भेदिनी दृष्टि से जिस उँचाई तक पहुँचते हैं वहाँ उनकी कोई समता नहीं करता।

विगत १ अप्रैल को बोस्टन के 'शिल्पकला विज्ञान सस्थान (Institute of technology) में मि० चर्चिल का भाषण भी उनकी पूर्व परम्परा के अनुकूल ही हुआ है।

उनका यह भाषण ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त विस्तृत उदार और मानवीयता से ओत प्रोत है। उन्होने कहा कि "सन् १९१४ के युद्ध के अनन्तर व्यतीत काल में मूल्य सदाचार व आध्यात्मिकता की मर्यादायें नष्ट भ्रष्ट हो गई हैं और उनके रूपों में निरन्तर परिवर्तन होते रहे हैं। यदि ससार को अब इस दुखमय जंजाल से निकालना अभि प्रेत है तो उसको अपने उस पूर्वकाल के ज्ञान होने की आवश्यकता है जब कि शान्त वातावरण में व्यवस्थित उन्नति व स्वतन्त्रता के विकास की योजनायें निश्चिन्त होकर सोची जा सकती थीं।

सन् १९१४ के प्रथम योरोपियन युद्ध के विनाश पर उन्होंने कहा—पराधीनता की शृंखला में बन्धी जनता को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है कि यदि विज्ञान का दुरुपयोग किया जावे तो वह हम सबके विनाश का कारण हो सकता है परन्तु उत्तराधिकार में प्राप्त, सुदृढ़ आधार पर स्थापित हमारी परम्परायें, शनैः शनैः विचार पूर्वक नियत की गई 'सम्मान' की मर्यादायें 'सदाचार' और 'व्यवहार' व 'दृढ़ विश्वास' जिसको कि इतने अधिक करोड़ों व्यक्ति सम्मिलित रूप से स्वीकार किये हुये हैं तथा 'स्वतन्त्रता' और 'न्याय' के सिद्धान्त उन सब वस्तुओं से बहुत अधिक मूल्यवान हैं जो कि हमें वैज्ञानिक आविष्कार दे सकता है। 'मनुष्य' 'समाज' एक एक मशीन के समान नहीं बनाये जा सकते प्रत्युत वे वनस्पति के समान धीरे धीरे विकसित होते और बढ़ते हैं। जीवन एक परीक्षा है और ससार परीक्षास्थल"।

मि० चर्चिल का यह भाषण फाल्टन के इस भाषण से सर्वथा भिन्न है जिसमें कि उन्होंने योरप के पूर्व भाग पर 'पोलीस स्टेट' के फैल जाने और ब्रिटिश कामनवेल्थ और अमरीका के मिलकर विरोध में खड़े हो जाने की बात कही थी।

मि० चर्चिल 'एक संसार राज्य' की कल्पना के भी पुरस्कर्त्ता हैं। सन् १९४२ में भी उन्होंने जब ससार युद्ध की अग्नि से झुलस रहा था, इसी प्रकार के सम्मिलित राज्य निर्माण की बात कही थी, जिसे उस समय के प्रमुख राजनीतिज्ञों ने 'ख्याली पुलाव' कहकर उनकी बातों को हसी में उड़ा दिया था परन्तु ५ वर्ष बाद ही संसार की सारी राजनीति का रुख धीरे २ उसी ओर गति कर गया है। ससार में विज्ञान जो कि भोग के प्रतीक रूप में प्रस्तुत हुआ है एक राक्षस के समान पृथ्वी को हड़पने जा रहा है। दूसरी ओर वैज्ञानिकों के भयानक नर-संहार कारक अस्त्रों से ससार भयभीत है और वह अपने गत इतिहास और पुरातन आदर्शों की ओर देखने लगा है। इस समय भी इस आर्यावर्त देश में जो लोग प्राचीन आर्य संस्कृति का विरोध करते हैं वे क्या इस वक्तव्य से कुछ शिक्षा लेंगे और दुःख जनक वस्तु स्थिति को देख धर्म विरोधी आन्दोलन के दुष्परिणामों से बचने का यत्न करेंगे !

★ ★ ★

गांधी स्मारक कोष के लिये प्राप्त हुए धन का विवरण

नयी दिल्ली, २७ मई। गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोष में अब तक ८०७६६२८६-७-१० रुपया एकत्र हो चुका है। विभिन्न प्रांतों और रियासतों से प्राप्त हुए रुपये का विवरण इस प्रकार है:—

मध्य प्रांत	१३,६३,१०६-१-१
अजमेर	१,०५,६६२-१-६
आंध्र	४,८५,०७,३-३ ८
आसाम	११,८६,८१६-३ ०
पश्चिमी बंगाल	१,३७,३८,०२५-०-०
बरार	२, ४८,७३४-७-०
बिहार	३८,०५,६९५-०-६
बंबई	२,३४,४६,१००-६-३
दिल्ली	१,६५,७६६-२-८
गुजरात	७,७७,४२६-६ ०
कर्नाटक	३,६१,६११-१२-८
केरल	३,२६,३११-१-११
महाकोशल	११,६२,१६५-७-८
महाराष्ट्र	२६,१८,१८६-१०-१०
नागपुर	१४,१६,३२६-१०-६
पूर्वी पंजाब	२६,६१,५७०-०-१
तामिलनाड	४२,२५,१४५-१५-५
संयुक्त प्रांत	८६,६३,०६०-१५-५
उत्कल	६,२२,३६४-५-०
रियासतें	
बड़ौदा	१०,००,८०८-११-१
बनारस	२८,०५५-०-०
भोपाल	३,८४४-७-३
भोर	३०,५४५-०-०
बीकानेर	२,०५,८६५-१०-०
बिलासपुर	५१-०-०
छतरपुर	५,१२५-०-०
कोचीन	३,६२,८३०-४-११
कूच बिहार	५,०८३-०-०
हिमाचल प्रदेश	६६,१३१-११-०
हैदराबाद	८,७२,४२३-८-८
जयपुर	४,१३,४४४ ११-६
जैसलमेर	२१,०००-० ०
जोधपुर	३,४५,१६२-४-८
कश्मीर	१२,६००-१४-०
कोल्हापुर	४१,३५४-३-०
भुज	२,२६६-०-०
मालवा संघ	३०,६७,५५२-५-१०
मत्स्य संघ	८६,८७८-०-६

वेदवीथी

परम पुरुषार्थ

(श्री श्यामबिहारीलाल जी वानप्रस्थी)

अश्मन्वती रीयते सं रभध्व-मुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः। अत्रा जहीमोऽशिवा ये असन् शिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥ १० ॥

यजु० ३५ म० १०॥

पदच्छेद—अश्मन्वती। रीयते। सम्। रभध्वम् । उत्। तिष्ठत। प्र तरत । सखायः अत्र । जहीमः। अशिवा। ये ।असन्। शिवान्। वयम्। उत्। तरेम। अभि। वाजान्।

अन्वयः—हे सखायः! याश्मन्वती रीयते तया वय ये ऽशिवा असँस्तान् तान् जहीमः शिवान् वाजान् अभ्युत्तरेम तथा यूय संरभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरत च ॥

पदार्थ—हे (सखायः) मित्रो जो (अश्मन्वती) जो बहुत मेघों वाली सृष्टि प्रवाह (रीयते) चलती है उसके साथ जैसे (वयम्) हम लोग (ये) जो (अत्र) इस जगत में (अशिवः) अकल्याणकारी (असन्) हैं उनको (जहीमः) छोड़ते हैं तथा (शिवान्) सुखकारी (वाजान्) अन्नादि भोगों को (अभि, उत्, तरेम) सब ओर से पार करें वैसे तुम लोग (संरभध्वम्) अच्छे प्रकार आरम्भ करो (उत्तिष्ठत) उद्यत होओ और (प्रतरत) दुःखों का उल्लंघन करो।

विशेष विचार

इस मन्त्र को विद्वान् लोग अपनी मित्र मण्डली से कह रहे हैं कि हे मित्रों! संसार रूपी नदी अनादि प्रवाह से वह रही है। सृष्टि का यह चक्र अनादि है और साथ ही अनन्त भी। दुनियां में जो (अशिव) है, दुरित है, अकल्याणकारी है, अहित कर है, अभद्र है उस को हम त्यागते हैं। मनुष्य का पहिला काम यह है कि जो ईश्वर-आज्ञा के विरुद्ध है, वेद ने जिसको निषेध ठहराया है, जो अकर्त्तव्य है उसको छोड़दे, कदापि न करे। और जो (शिवान् वाजान्) है कल्याणकारी, सुखकारी हितकर, पुष्टिकर अन्नादि से उत्तम२ वेदविहित भोग है उनको भोग कर निःसार समझ कर त्याज्य समझें गृहस्थ में कुछ उचित मर्य्यादित भोग अवश्य वाञ्छनीय है पर लक्ष्य नहीं। न यह जीवन का उद्देश्य है। जीवन का रहस्य तो 'अपरिग्रह' में छिपा है। अधिक से अधिक अपरिग्रह का अभ्यासी ही आगे बढ़ सकता है। जीवन वहन करने को जो वस्तुयें नितान्त आवश्यक हों उन्हीं का उपभोग 'भोग दर्शन' बताता है। हे मित्रो मन्त्र के इस आशय को समझ कर आरम्भ कर दो? बुराई को छोड़ना और भोगों को नियन्त्रित करना सीखो। इस बात के पूरा करने को कटिबद्ध हो जाओ, कमर कस लो और इस प्रकार त्रयताप से पार हो जाओ। आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक यह तीन ताप प्राणी मात्र को व्यथित करते रहते हैं इनसे छुटकारा पाना ही परम पुरुषार्थ अत्यन्त पुरुषार्थ है और यही उद्योग की चरम सीमा परा काष्ठा है।

★★★

आर्य उपदेशक महासम्मेलन का कार्यालय एवं कार्यकर्त्ता

अखिल भारतीय आर्य उपदेशक सम्मेलन के आगामी वर्ष के लिये श्री स्वा० अभेदानन्द जी महाराज प्रधान और प्रकाशवीर शास्त्री मन्त्री चुने गये हैं। सम्मेलन का अस्थायी कार्यालय सम्प्रति चन्दौसी (मुरादाबाद) रहेगा, इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार का पता निम्न है:— प्रकाशवीर शास्त्री

मन्त्री-अ० भा० आर्य उपदेशक सम्मेलन

चन्दौसी (मुरादाबाद)

द्वितीय आर्य उपदेशक सम्मेलन हैदराबाद में

अखिल भारतीय आर्य उपदेशक महासम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन, जिसके लिये तीन विभिन्न प्रान्तों के निमन्त्रण प्राप्त हुए थे सर्वसम्मति से हैदराबाद स्टेट में होना निश्चय हुआ है। हैदराबाद में अभी से सम्मेलन सम्बन्धी चहल पहल प्रारम्भ हो गई है।

प्रकाशवीर मन्त्री सम्मेलन

किसानों के 'दोस्त'

ले०—"श्री माधव"

शहरवालों को अन्न का बड़ा कष्ट है और उन्हें यह कष्ट और भी अधिक है जो कम तनख्वाह पाने वाले हैं तथा जिन पर गृहस्थी की जिम्मेदारी है। मांग है तनख्वाह अधिक मिले, मंहगाई का भत्ता अधिक मिले और अनाज सस्ता मिले। वास्तव में उनकी दशा से सभी को सहानुभूति है और उनकी मांगे भी कुछ जायज़ ही मालूम पड़ती हैं। लेकिन कुछ शहरी भाई है बड़े दयालु। क्यों कि वे यह चाहते नहीं कि बेचारे किसानों को किसी तरह कष्ट दिया जाय। अतएव गल्ला वसूली के वे विरुद्ध हैं, यानी वे चाहते हैं गल्ला सस्ता मिलना चाहिये और किसानों से वसूल नहीं किया जाना चाहिये लेकिन यही नहीं कहा जाना चाहिये कि शहरी भाई अपना राजनैतिक स्वार्थ पूरा करने के लिए गल्ला वसूली का विरोध करते हैं।

गल्ला वसूली का इन्तजाम खुद करके सरकार ने "ब्लेक मार्केट" करने वालों के लिये बड़ी भारी कठिनता पैदा कर दी है। अब ऐसे व्यापारी मनमाने भाव पर गल्ला खरीद कर सेर और डेढ़ सेर का न बेचने पायेंगे। ऐसे व्यापारी सरकार के विरुद्ध तरह तरह का प्रचार करें या आन्दोलन करें या आन्दोलनकारियों को सहायता दें तो इसमें आश्चर्य ही क्या! ज्ञात होता है कि व्यापारियों से भी कुछ शहरी भाइयों को बड़ी सहानुभूति है और शायद वे चाहते हैं कि बेचारे व्यापारियों पर बन्धन न लगाया जाय और मनमानी करने दी जाय लेकिन इतना होते हुये भी शहरवालों को अनाज सस्ता ही मिले।

किसानों से गल्ला वसूल किया जा रहा है और "ब्लेक मार्केट" रोकने की कोशिश की जा रही है जिससे कि शहर के रहने वालों को अनाज सस्ता मिले लेकिन ये शहरी भाई सरकार से नाराज हैं। आखिर हां क्यों न! ज़माने की खूबी!!

किसानों की नाराजी का हाल न पूछिये, सरकार के हर काम पर नाराज। अंग्रेजी हुकूमत के ज़माने में जमींदार तंग करता, पटवारी तंग करता और नहर ज़मादार तंग करता लेकिन कांग्रेस सरकार हालत बदल दी। कितनी बुरी बात की। तो फिर किसान नाराज न हों तो क्या खुश हों। यदि कपड़ा नमक मिट्टी का तेल, सुई, खेती के औजार, सीमेंट, लोहा आदि ब्लेक मार्केट में मिलते तो किंचित हमारे गाँव के भाई प्रसन्न होते और समाजवादी नेता भी शायद वाह वाह करते। क्या विचित्र है ज़माने की रफ्तार।

जमींदारी समाप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है और किसानों को मुफ्त में ज़मीन दी जा रही है। पञ्चायत राज स्थापित कर दिया गया है, क्या ये भी कोई भलाई के काम हैं? तो फिर किसान कैसे प्रसन्न हो सकते हैं।

पिछड़े गांव थे, न स्कूल थे, न अस्पताल, और न अच्छी सड़कें। शायद गांव वाले इसी में प्रसन्न थे बेकार में सरकार गांव को अच्छा बनाने का प्रयास कर रही है इस लिये भी किसान अप्रसन्न हैं।

खेती की हालत पिछड़ी थी, अच्छे बीज, अच्छी खाद, सिंचाई का प्रबन्ध आदि का नाम तक न था। लाखों मन बीज और लाखों टन खाद का प्रबन्ध कर तथा हजारों लम्बी नहरें निकाल कर सरकार बेकार में गांवों की उन्नति के प्रयत्न कर रही है। बेचारे गांव वाले नाराज़ न हों तो क्या करें?

कहा जाता है कि ज़माना बदल रहा है। बात सही मालूम होती है। अच्छा करो तो बुरा फल मिलता है। अनेक तरह से किसानों की भलाई करके, सस्ता कपड़ा सीमेन्ट लोहा, मिट्टी का तेल आदि देकर यदि किसानों से उचित मूल्य पर गल्ला वसूल किया जाता है तो किसान नाराज़। यदि ब्लेक मार्केट को रोका जाय अथवा अनाज सस्ता दिया जाय तो कोरी नेतागिरी करने वाले समाजवादी भाई नाराज।

अबसे किसानों को और शहर वालों को प्रसन्न करने का एक ही उपाय है कि कांग्रेस सरकार कहीं से अलीदीन का लैम्प ले आये और तुरन्त सारी बन्जर और परती ज़मीन को खेती से हरा भरा बना दे। यदि सरकार ऐसा लैम्प न

(शेष दूसरे कालम मे)

(चौथे कालम का शेष)

ला सके तो डा० लोहिया से मांग ले। शायद उनके पास है। अगर ऐसा भी सम्भव न हो तो डा० लोहिया की मदद से एक ऐसी मशीन बनाये जिसमें मिट्टी डाली कि अनाज हो गया। तब सब दिक्कतें मिट जायेंगी। कितना सरल उपाय है। समाजवादी नेता शायद इस प्रकार की कार्य प्रणाली से अवश्य सहमत होंगे।

उपदेशकों का सङ्गठन

(श्री ओमप्रकाश शास्त्री, विद्याभास्कर खतौली)

"यह लेख उपदेशक सम्मेलनार्थ केलिये प्राप्त हुआ था परन्तु कुछ विलम्ब से प्राप्त होने के कारण उसमें न दिया जा सका। इसलिये इस अङ्क में दिया जा रहा है।
—सम्पादक

मुझे आर्य समाज के व्यास पीठ से प्रचार करते करते लगभग १६ वर्ष और नियमित रूप से कार्य करते १५ वर्ष हो गये इस काल में आर्य समाज आर्य सभाओं व अन्य आर्य संस्थाओं में कार्य करते हुए मुझे जो उपदेशकों के सम्बन्ध में अनुभव हुआ वह इतना खेद जनक है, कि उनकी दयनीय दशा देख कर कभी कभी मुझे सचमुच अपने को सम्भालना कठिन हो गया। आर्य समाज ही इस युग की एक मात्र संस्था थी जो प्राचीन युग के आदर्शों को अपना लक्ष्य समझ कर क्षेत्र में अवतरित हुई थी। वह प्राचीन आदर्श जिसमें वर्णाश्रम व्यवस्था को आधार मान कर जगत् सुख और शान्ति प्राप्त करता था—उसे आर्य समाज ने स्वयं नहीं अपनाया, अन्यथा आज आर्य समाज के पुरोहितों व उपदेशकों की जो स्थिति आर्य समाज में है वह हमें देखने को न मिलती आज आर्य समाजें प्रायः उन जनों के हाथों में है जो अपना सम्पूर्ण समय आर्य समाज की सेवा में नहीं लगा सकते। अधिकारी वर्ग या तो सरकारी सर्विसों या वकालत पेशा लोगों का है। वस्तुतः यदि देखा जाय तो आज आर्य-समाज का व्यासपीठ भी कुछ ऐसे लोगों के हाथ में चला गया है। जिन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान भी नहीं होता।

समाज में जो प्रतिष्ठा एक पुरोहित को होनी चाहिए वह उसे प्राप्त नहीं। इसका कारण कुछ लोग कहते हैं यह है कि उपदेशकों में कुछ कमी है पर मैं ऐसा नहीं मानता। आज भी समाजों व सभाओं के अधिकांश व्यक्तियों में उपदेशकों का व्यक्तिगत जीवन श्रेष्ठ है। आज मजदूरों का संगठन है मेहनतों को यूनियन है। और उनकी एक आवाज है। जिसके कारण उनके अधिकारों का अनायास अपहरण नहीं हो पाता। इसीलिए आज उनकी रक्षा के लिए राजकीय व्यवस्था है। आज किसी भी मिल का मालिक अपने मजदूर को अनायास सर्विस से पृथक नहीं कर सकता। उसके वेतन में न्यूनता नहीं कर सकता। परन्तु समाजों व सभाओं की स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है। कोई यहाँ का प्राचीन से प्राचीन कार्यकर्त्ता भी अपने को रात्री में सोता हुआ निश्चित या निश्चिन्त नहीं समझ सकता। पता नहीं कल प्रातः कौन सा सभासद् उसके विरुद्ध कोई सी भी शिकायत करके उसे अपमानित कर सकता है। और यदि बलवान् व्यक्ति विरोध में हो तो उसे सेवा से मुक्त (?) भी कर सकता है। उसका स्वाभिमान नाम का पदार्थ समाज में वैतनिक रूप से रहते रह नहीं सकता। उपदेशकों की भी समाज में कई श्रेणियां है कोई वैतनिक कोई अवैतनिक, कोई स्वतन्त्र। इसके अतिरिक्त वे महोपदेशक अलग हैं जिन्होंने उपदेशकों का व्रत तो नहीं लिया लेकिन धनदाता होने के कारण उत्सव पर बोलने का प्रथम अधिकार अवश्य है। ऐसी स्थिति में आर्य-समाज का जो सैद्धान्तिक प्रचार उसके प्रारम्भ में था वह लुप्तप्रायः हो गया है। अतः यदि आर्यसमाज चाहता है कि उसे पुनः पूर्व सा गौरव मिले तो उसे इस पर विचार करना होगा। और प्रचार का विभाग पूर्णतया आर्यसमाज के 'ब्राह्मणों=उपदेशकों व पुरोहितों के लिए त्यागना पड़ेगा। जो प्रतिष्ठा प्राचीन युग में अन्य वर्ण ब्राह्मणों को देते थे और जो 'शिष्टाचार में सम्मिलित थी, वह उपदेशकों व पुरोहितों' को देनी ही होगी। आज ईसाई मिशनों के प्रचारक मिशनों के सञ्चालक है जिसके कारण उनका ठोस कार्य हमें देखने को मिलता है।

आर्यसमाज के सञ्चालकों को इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये ताकि ऋषि दयानन्द की उद्देश्यपूर्ति में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो सके।

★ ★ ★

काश्मीर में शत्रु को एक भी इंच बढ़ने नहीं दिया जायगा

पाकिस्तान के वादों पर भरोसा करना खतरनाक
—नेहरू

श्रीनगर, २६ मई। श्रीनगर के प्रताप बाग में एक महती सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुये, प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की कि काश्मीर भारत का ही अङ्ग है और संसार की कोई भी शक्ति कश्मीर को भारत से अलग नहीं कर सकती। आपने कहा कि कश्मीरी जनता को दिये गये वचन भारत पूरे करके ही छोड़ेगा।

नेहरूजी ने कहा कि कश्मीरियों को यह बात नहीं भुलानी चाहिये कि शुरू में पाकिस्तान ने इस बात को बिलकुल अस्वीकार कर दिया था कि कश्मीर पर कबीलियों के हमले में उसका कुछ भी हाथ था। लेकिन, उसके बाद पाकिस्तान ने यह स्वीकार कर लिया कि कश्मीर में उसके सैनिक युद्ध कर रहे थे।

पाकिस्तान के इस रवैये से इस बात का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कश्मीरी जनता के प्रति मित्रता स्थिर रखने के सम्बन्ध में पाकिस्तान की घोषणाएं कितनी सचाई पर आधारित हैं। भारतीय सैनिक शक्ति कश्मीर में शत्रु को, शक्ति द्वारा एक इंच आगे बढ़ने नहीं देगी। भारत को तो यह अनुभव प्राप्त हो चुका है कि कश्मीर तथा अन्य विषयों पर 'दूसरी ओर' से दिये गये वचनों पर विश्वास करना खतरनाक है।

आगे चल कर आपने कहा कि पाकिस्तानी रियासतों तथा सीमाप्रांत में जनता को बहुत बुरी तरह कुचला जा रहा है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

वह द्वीप जहां कोई पुरुष नहीं है?

श्री "अटल"

ब्रिटिश बोर्नियों से कुछ ही दूर एक छोटा सा द्वीप है जो बोर्नियो की राजधानी जेसेल्टन से दीख पड़ता है। उस द्वीप में केवल स्त्रियां और बच्चे ही रहते हैं। पुरुष कोई भी नहीं।

इसके पीछे एक अनोखी कहानी है। युद्ध के पहले इस द्वीप में सुलू जाति के लगभग २०० आदिम निवासी रहते थे, जो लगभग प्रतिदिन छोटे छोटे बेड़ों पर चढ़कर और उस द्वीप की पैदावार लाकर जेसेल्टन में बेचा करते थे और शाम को फिर वापस चले जाते थे। नारियल और पपीते के खूबसूरत कुंजों से द्वीप लदा पड़ा था। वे नारियल तथा समुद्री पैदावार लाकर जेसेल्टन में बेचते थे और वहां से अपनी आवश्यकताओं का सामान खरीदकर ले जाते थे। निर्धन और बर्बर होते हुए भी वे स्वातन्त्र्य-प्रिय थे और बहादुर थे।

इस समुद्र में जब जापानियों ने उन पर आक्रमण किया तो उन लोगों ने डटकर मुकाबला किया। नतीजा यह हुआ कि वहां के सभी पुरुष मारे गए। द्वीप में केवल स्त्रियां और बच्चे बच गए। जेसेल्टन से यह द्वीप एक छोटे टीले की तरह दीख पड़ता है। सबसे बड़े बच्चे की उम्र उस समय ११ वर्ष की थी, जो अब १६ वर्ष का है। स्वभावतया वह द्वीप का मुखिया बन गया। उसी का आदेश अब उस द्वीप में सर्वमान्य है।

बहुत सी स्त्रियों ने भी वह द्वीप छोड़ दिया है और वहां अब केवल १७ स्त्रियां बची हैं। द्वीप में तमाम घर खाली पड़े हैं। १६ वर्ष का राजा केवल मुट्ठी भर प्रजा, और दूर दूर तक फैला हुआ नीला समुद्र। ★★★

"हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचार मन्त्री श्री ज्योतिन हृदय एक वक्तव्य में कहते हैं—

" आज फिल्मों और रेडियो के द्वारा स्पष्ट रूप से गन्दे गानों और उर्दू भाषा का प्रचार किया जा रहा है, जो हमारे देश की राष्ट्रीयता के लिए अत्यन्त विघातक है। हम सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए गन्दी फिल्मों के नाम, उर्दू प्रचारक फिल्मों के नाम और अश्लील फिल्मी गाने एकत्र कर रहे हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि यदि आपको इस प्रकार की फिल्मों और उसके गानों का पता हो तो आप उसे लिखकर सम्मेलन के प्रचारविभाग को भेज दें। देश की संस्कृति और हिन्दी भाषा के कल्याण के लिए इस कष्ट को उठाने में, हम समझते हैं कि आपको कोई सकोच न होगा।

आशा है, देश की संस्कृति और हिन्दी प्रेमी जनता इस सम्बन्ध में हमारी सहायता करेगी।

प्रचारमन्त्री

ट्रावनकोर राज्य में ईसाइयत

[देवराज, आर्यमिश्नरी होशियारपुर]

दक्षिण भारत में ट्रावनकोर एक हिन्दु राज्य है और यह ईसाइयत के प्रचार का इस प्रान्त में बडा भारी गढ़ है। ईसाइओं के १४ भिन्न २ मिशन इस रियासत में प्रचार कार्य कर रहे हैं। और उनकी निम्न लिखित संस्थायें अपने मिशन का प्रचार करने में लगी हुई है।

हस्पताल २५, प्रचारक ४६९५, कालेज ४, स्कूल ११०९ जिन में १५९८९ विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। समाचार पत्र १७ छापा खाने १९, गिरजा घर ३९८। इन के मुकाबले में हिन्दु धर्म का प्रचार करने के लिए एक भी ऐसी सस्था नहीं जो ईसाइयत के प्रभाव को नष्ट भ्रष्ट कर सके। और हरिजनों में हिन्दु धर्म के महत्व दर्शाते हुए उनकी सभ्यता और सस्कृति की रक्षा करें। इसका परिणाम यह हुआ है कि रियासत ट्रावनकोर तथा कोचीन में कुल जन गणना का ३२ प्रतिशत भाग ईसाइयत का शिकार बन चुका है। यह संख्या प्रत्येक १० वर्ष के पश्चात् जो जन गणना होती रही है, बढ़ती रही है। १८१६ से १९४१ पर्यन्त के आंकड़े निम्न प्रकार हैं: —

वर्ष	प्रत्येक दश सहस्र की आबादी में हिन्दु	प्रत्येक १० सहस्र में ईसाई
१८१६	८२७०	१२३७
१८३६	८१४६	१२३०
१८४५	७६७५	१५२७
१८७८	७३६४	२०२६
१९२१	६९९६	२९२८
१९३१	६१६३	३१५७
१९४१	६१७६	३२७९

इन आँकड़ों से यह भली भाँति स्पष्ट है कि हिन्दुओं की जनगणना में हर दस वर्ष के पश्चात् न्यूनता आती रही है। और ईसाइयों की सख्या बढ़ती रही है। अब जब कि भारत वर्ष स्वतन्त्र हो गया है और अँग्रेज शासक हमारे देश में विद्यमान नहीं है ईसाइयों के प्रचार की भावना में कोई विशेष न्यूनता दिखाई नहीं देती प्रत्युत कई एक प्रान्तों में उन के प्रचार का क्षेत्र पहले से भी विस्तृत किया जा रहा है।

हमारे भोले हिन्दु भाई यह समझते हैं कि अब शासन हमारा है और ईसाइयत स्वयं समाप्त हो जायगी, हमें इसबात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। उनकी सेवा में मैं यह नम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत वर्ष में शासन न हिन्दुओं का है न ईसाइयों का तथा न मुसलमानों का। यह एक सैकुलर स्टेट घोषित की गई है जिस में प्रत्येक मतमतान्तरों के लोग रह सकते हैं, अपने अपने विचारों का प्रचार कर सकते है।

सारांश यह कि यहाँ प्रत्येक मतवादी को अपने २ मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है

ईसाई इस स्वतन्त्रता से पूर्ण लाभ उठा रहे हैं। समाचार पत्रों का पाठ करने वालों को यह ज्ञात होगा कि अभी कुछ मास हुए सालवेशन आरमी के सार्वभौम नेता जनरल औसंवोर्न भारतवर्ष में भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने बम्बई ट्रावनकोर इत्यादि स्थानों में अपने व्याख्यानों तथा वक्तव्यों द्वारा प्रचार किया कि उन्होंने इस वर्ष हरिजनों आदि की भलाई के लिये १२लाख रुपया व्यय करना स्वीकार किया है। जिस का तात्पर्य यह है कि इस रु० से हिन्दुओं को ईसाई मत में लाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाएगा। इन घटनाओं की विद्यमानता में भी हमारे हिन्दू भाई यह समझते है कि अब अपनी प्रचार सम्बन्धी समस्त सरगर्मियाँ बन्द कर देनी चाहिए। यदि हम इस ओर ध्यान नहीं देंगे, और ईसाई मिशन इसी प्रकार स्वतन्त्रता का अनुचित लाभ उठाते हुए हिन्दुओं को ईसाई बनाते रहेंगे तो यह एक प्रकार की आत्महत्या ही होगी। दक्षिण भारत में ईसाई मिशन क्यों उन्नत होता रहा है और हिन्दुओं के अधःपतन का वहां क्या कारण है इस पर यदि हम विचार करेंगे तो हमें यह ज्ञात होगा कि इसका उत्तरदायित्व वहां के सवर्ण हिन्दुओं पर है। ब्राह्मण तथा नाम ब्राह्मण का प्रश्न वहां भयानक रूप धारण किए हुए है। दलित जातियों के साथ अभी तक भी अच्छा व्यवहार नहीं किया जा रहा है और उन्हे घृणा की दृष्टि से देखा जा रहा है। ऐसी अवस्था में यदि वह लोग ईसाइयत की शरण न जाएँ तो और क्या करें। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर तथा अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर ने ट्रावनकोर राज्य में प्रचार तथा ईसाईओ की शुद्धि का कार्य गत कई वर्षो से प्रारम्भ कर रखा है। इस समय प० वेद बन्धु जी इस केन्द्र के अध्यक्ष हैं। उनके साथ कई अन्य प्रचारक भी कार्य कर रहे हैं। वर्षों से ईसाई हुए हिन्दू भाई अपने पैतृक हिन्दू धर्म में लौट कर आ रहे हैं। हमने ३२ अथवा ३४ प्रतिशत हिन्दू जन गणना जो ईसाई बनाई जा चुकी है उसे पुनः हिन्दू धर्म में लाना है। जाति अभिमानी हिन्दुओं में धर्म प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है। जब तक उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं आता हमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। १४ ईसाई मिशनों का मुकाबला करना कोई सुगम कार्य नहीं है। हमारे पास न इतना धन और न न इतने कार्य कर्ता ही हैं। जिस रफतार से हम वहाँ कार्य कर रहे हैं धनाभाव के कारण वह सन्तोष जनक नहीं कहा जा सकता। न जाने इस प्रकार कितने वर्ष इस महान कार्य में लगे और कितने बहुमूल्य जीवन इसकी पूर्ति में समाप्त हों। ट्रावनकोर के अतिरिक्त मालाबार मद्रास, कन्धरा, करोला कर्नाटक आदि प्रान्तों में लाखों ईसाई हैं जिनकी संख्या पचास लाख के लगभग है। ट्रावनकोर में यदि हमें पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाए तो आर्य दक्षिण भारत के प्रान्तो में इसी प्रकार प्रचार कार्य प्रारम्भ करेंगे। मैं दानवीर हिन्दू सज्जनों की सेवा मे यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि उन्हे सभा तथा मिशन की आर्थिक सहायता दिल खोल कर करनी चाहिए।

हिन्दुओ को अब अपनी गाढ़ निद्रा त्याग कर अपने भाईयो को पतित होने से रोकना चाहिए और हिन्दु सभ्यता को फैलाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसी में हमारा तथा ससार का कल्याण है

पशु संख्या में वृद्धि

हाल ही में अमेरिका के कृषि विभाग ने पशु विषयक आंकड़े एकत्रित किए हैं। उनसे पता चलता है कि गाय, [illegible] के मांस की बढ़ती हुई मांग के कारण तथा पशु खाद्यों में उन्नति होने के कारण ससार में पशु सख्या बढ़ती जा रही है। १९४९ के प्रारम्भ में अनुमान किया गया था कि यह सख्या ७६,१०,००,००० थी। यह गत वर्ष से १ प्रतिशत तथा १९३६–४० को औसत से ४ प्रतिशत अधिक है।

१९४८ में उत्तरी अमेरिका और अफ्रीका को छोडकर संसार के अन्य देशों में पशु सख्या में महत्व पूर्ण वृद्धि हुई। एशिया, यूरोप और सोवियट सघ में सब से अधिक सख्या बढी। पशु उत्पादकों ने बहुत से क्षेत्रों में १९४९ में अपना पशुधन बढाने की दृष्टि से नस्ल के पशु रोक लिये थे।

जर्मनी और चैकोस्लोवाकिया को अपवाद स्वरूप छोडकर बहुत से यूरोपीय देशों में पशुओं की सख्या युद्धपूर्व के आंकडों से बढ़ गई है अथवा उतनी ही हो गई है। कहा जाता है कि सोवियट संघ में भी यह सख्या काफी बढ़ी है, फिर भी यह युद्धपूर्व की अपेक्षा बहुत कम है। दक्षिणी अमेरिका के ब्राजिल, कोलम्बिया, उरुगुए और पैरागुए में पशु सख्या में कुछ वृद्धि हुई है। अर्जेन्टीना में अधिक संख्या में पशु वध होने के कारण वहाँ की सख्या गत वर्ष की अपेक्षा कम रही।

चार वर्ष की लगातार कमी के बाद १९४८ में अमेरिका में पशु सख्या में थोडी वृद्धि हुई। केनाडा में पशु सख्या में [illegible]तन हो रहा है। टर्की, बर्मा, फ्रैंच हिन्द चीन, भारत, जापान, फौरमूसा, श्याम, और प्रजातन्त्र फिलिपाइन में पशु सख्या में वृद्धि हुई है।

कृषि विभाग ने भविष्य वाणी की है कि यदि कृषिजन्य उत्पादन अनुकूल बना रहे तो १९५० में ससार में इस वर्ष की उच्चतम सख्या से भी अधिक पशु हो जायेंगे। युद्ध जर्जरित देशों मे बढ़ती हुई पशु सख्या से यह आशा है कि ये क्षेत्र अपनी आवश्यकता के खाद्य-पदार्थ प्रदान करने मे समर्थ होंगे।

—*—

भारत के साधु तथा उनका परिवार

(लेखक—विश्वम्भर सहाय प्रेमी)

स्वतंत्र भारत में इस समय राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी सभी बातों पर ध्यान दिया जा रहा है। राष्ट्र की ओर से मठों, मन्दिरों की व्यवस्था भी की जा रही है। कुछ प्रान्तीय धारा सभाओं में मठों और मन्दिरों की आय का सदुपयोग करने की भी चर्चा हुई है। युक्त प्रान्तीय धारा सभा भी धार्मिक संस्थाओं की सम्पत्ति का सदुपयोग करने पर विचार कर रही है। यह सब कार्य किये जाने से बहुत से दुर्गुण रुक जाने की पूर्ण आशा है। परन्तु उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जो साधु स्त्री बच्चों सहित रहते हैं और भगवा वस्त्र धारण करके साधारण गृहस्थी का जीवन व्यतीत करते हैं क्या वे इसी प्रकार रहने दिये जाय।

इस प्रश्न का सीधा सम्बन्ध भारतीय सामाजिक व्यवस्था से है। यदि हम अपनी सामाजिक व्यवस्था को उन्नत करना है तो इस प्रश्न को भी सुलझाना ही पड़ेगा। वैसे तो साधारणतया यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के वेष भूषा में सरकार को हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है। परन्तु यह प्रश्न इस सीमा से बाहर का है। जिस प्रकार रेलवे गार्ड की पोशाक पहन कर, साधारण आदमी नहीं घूम सकता, जिस प्रकार पुलिस आफिसरों की निश्चित वर्दी का सर्व साधारण में प्रयोग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार साधु महात्माओं के लिये निश्चित किये गये वस्त्रों का भी सर्व साधारण में प्रयोग नहीं होना चाहिये।

भारत की प्राचीन मर्यादा तो यह थी कि जो वेष साधु सन्यासियों के लिये निश्चित किया गया था उसे वानप्रस्थी जन भी प्रयोग में न लाते थे यद्यपि उस समय वे वानप्रस्थी गृहस्थ धर्म का त्याग कर साधना का जीवन व्यतीत करते थे। प्राचीन काल में सन्तनात्ति करने वाले व्यक्ति को साधु वेश को कलंकित करने का अधिकार न था। परन्तु भारतीय इतिहास में पतन का एक ऐसा समय आया कि त्रिया के साथ भोग विलास में रत रहने वाले व्यक्तियों ने साधु वेश को अपना लिया। इस वेश की आड़ में ऐसे व्यक्तियों ने क्या क्या निन्दनीय कर्म किये हैं, उनकी विवेचना करना व्यर्थ है। अब तो हम यह सोचना है कि इस वेष की रक्षा किस प्रकार की जाय।

मुख्य बात तो यह है कि उन साधुओं के नियमित रूप में विवाह हो जाने चाहिये जिनके पास स्त्रियां हैं और वे उनके द्वारा सन्तान उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार के साधुओं की संख्या कई लाख निकलेगी। हरिद्वार ऋषिकेश के आस पास तो ऐसे साधु एक बड़ी संख्या में रहते ही हैं। साधु होते हुये वे गृहस्थ का सारा भार वहन करते हैं। विवाह के उपरान्त वे इस वेश को त्याग दें। यदि वे ऐसा न करे तो

लेखक

उनको कानून द्वारा साधु कहे जाने का कोई अधिकार न हो।

हम इस प्रश्न की गहराई में इस लिए भी जाना चाहते है कि हमें अपने राष्ट्र का सामाजिक स्तर उन्नत करना है। सामाजिक स्तर को उन्नत करने के लिये उन दोषों को दूर करना भी अत्यन्त आवश्यक है जिनकी आड़ में सामाजिक स्थिति बिगड़ती रही है। साधु वेष को कलंकित करने वाले अनेकों साधु इस श्रेणी के मिलेंगे जो स्त्रियां को कहीं न कहीं से बहका कर लाये हो। अब हमे इस दोष को निवारण करना है तो उसके लिये साधन ढूंढने ही पड़ेंगे। हम तो चाहते हैं कि इस प्रकार के साधु अपनी सन्तान के विवाह करे और उन्हें शिक्षित बना कर योग्य नागरिक बनायें। केवल सुलफे की चिलम में दम लगाना सिखा कर वे राष्ट्र का भारी अहित कर रहे हैं।

पिछले दिनों हरिद्वार में हमने इस बात पर कई प्रमुख व्यक्तियों से वार्तालाप किया। सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध विद्वान व कार्यकर्त्ता पं० चिरंजीलाल शर्मा इस विचार के हैं और उनका कहना है कि मै चाहता हू कि बड़े बड़े साधु, विद्वान अपनी व्यवस्था देकर ऐसे व्यक्तियों को भगवा वेष धारण करने से रोक दें और स्त्रिया रखने वालों को कह दें कि वे खुले रूप में गृहस्थी बन कर रहें।

हम आशा करेंगे कि इस प्रश्न पर प्रान्तीय सरकारें गम्भीर रूप से विचार करेंगी और इस दिशा में सुधार करने का यत्न करेंगी।

पाकिस्तान में पड़ी हुई आर्यसमाज की अचल सम्पत्ति

एक सिंध निवासी

पश्चिमी पाकिस्तान जिसमें आर्य समाज की करोड़ों की सम्पत्ति है और जहाँ पर आर्य समाज का सबसे अधिक वैभव था, वहाँ पर तीन सभाएँ काम करती थी। नमें से पञ्जाब प्रतिनिधि सभा तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बहुत शक्तिशाली और प्रभावशाली संस्थाएँ थी। तीसरी थी आर्य प्रतिनिधि सभा, सिन्ध। जिसकी शक्ति बहुत सीमित थी।

उस अचल सम्पत्ति के सम्बन्ध में ये तीनों सभाएँ गवर्नमेन्ट से लिखा पढ़ी कर रही हैं। उस अचल सम्पत्ति के परिवर्तन में उस सम्पत्ति की कीमत आर्य समाज को भारतवर्ष में मिल जाय ऐसा विचार पंजाब की दोनो सभाओं का है। इस सम्बन्ध में अब कई सज्जनो से बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के मन्दिरो के साथ वे भावनायें लगी हुई नहीं है जो सिक्खो के मन में गुरुद्वारों के सम्बन्ध में अथवा सनातनियों के मन में तीर्थ स्थानों के लिये है। आर्यसमाज तो पहले भी अपने मन्दिर बेचता और बदलता रहता था। सिन्ध प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के विचार इस सम्बन्ध में कुछ भिन्न हैं। पाकिस्तान की सम्पत्ति के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध ने पास किये हैं उनमें से मैं तीन का यहाँ संकेत करना चाहता हूँ। प्रथम प्रस्ताव में तो भारतीय सरकार से यह मांग की गई कि वह उन मुसलमानो की सम्पत्ति अपने हाथ में ले जो पाकिस्तान चले गये हैं, या जो वास्तव में पाकिस्तान के नागरिक है और यहाँ पर धोखे से बैठे हुए है। यह सम्पत्ति वे पूरी जाच पड़ताल के पश्चात् पाकिस्तान से आये हुए हिन्दुओं और सिखों में बाँट दे। दूसरे प्रस्ताव में यह कहा गया है कि शिक्षा अथवा अन्य सामाजिक धर्मादा सम्पत्ति के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाय जैसा कि लोगों की निजी सम्पत्ति के साथ। अथवा, इस सम्पत्ति के बदले में पाकिस्तान के हिन्दू ट्रस्टोंके ट्रस्टियों को पूरा पूरा पवज़ा दिया जाय। तीसरा प्रस्ताव मन्दिरों और धार्मिक स्थानों के सम्बन्ध में है। इस प्रस्ताव द्वारा यह मांग की गई है कि भारतीय सरकार पाकिस्तान सरकार से यह स्वीकार करावे कि वे मन्दिरों को इस ढंग से पवित्र रखेंगे जिस ढंग से यहाँ पर मस्जिदों को रखा जाता है। आवश्यकता पड़ने पर इस विषय में संसार व्यापी आन्दोलन चलाया जावे।

आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध के अधिकारियों से जब इस विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मिलना मिलाना क्या है और यदि कुछ मिल ही गया तो रुपये के चार आने भी कठिनाई से मिलेंगे। यदि हम बारह आने गवाने को तैयार हैं तो एक रुपया चला जावे तो क्या घाटा है? यह चार आने का घाटा तो होगा परन्तु नैतिक लाभ बहुत होगा। हमारे चिन्ह वहां पर रहेंगे और किसी भी ज़माने में यदि हम फिर वहां पहुँचे तो वे चिन्ह हमारे अन्दर अधिक उत्साह पैदा करेंगे। इसी विचार से हमने प्रत्येक मन्दिर में ज़मीन के अन्दर अपने धार्मिक ग्रन्थ और अन्य वस्तुएं गाडी हुई हैं। एक और भी लाभ है, हमको झगड़ने का अवसर मिलता रहेगा। कभी किसी भी मन्दिर के सम्बन्ध में कोई अशुभ समाचार आयेगा तो हमें आन्दोलन करने का अवसर मिलेगा। लोगों की धार्मिक भावनाओं को उत्तेजना मिलेगी। इन चीज़ों की कीमत हमारी दृष्टि में अत्यधिक है।

★ ★

वे प्रातः स्मरणीय शहीद

जिनका मूल्यांकन आरम्भ हो गया है

ले० दीनानाथ व्यास, सम्पादक स्वतंत्र भारत

देश के स्वतन्त्र होने के साथ ही जनता को यह विश्वास हो गया था कि अब सरकार उन परिवारों की ओर अवश्य ध्यान देगी जो स्वतन्त्रता के संग्राम में देश के काम आये थे और जिनके परिवार तबसे अभी तक दर दर की ठोकरे खा रहे हैं। हमे स्वतन्त्र हुए डेढ़ साल से अधिक हो गया। पर हमारी सरकार का ध्यान इस ओर नहीं गया। माना कि देश पर बलिदान होनेवाले वीरों ने अपनी कीमत कभी नहीं चाही थी, किन्तु मनुष्य ससार का प्राणी है। महात्मा तो लाखों क्या करोडों में भी शायद एक ही होता होगा। ससार को खाने को भी चाहिये और जब परिवार का एकमात्र कमाने वाला ही न रहे तो उसके बलिदान की कीमत के उपदेश से पेट नहीं भर जाता। ससारी मनुष्य जब तक ससार में है, उसे उदरपोषण तो करना ही है। अत वह अधिक नहीं तो संतोषजनक बदला अपने लिये नहीं तो अपने परिवारियों के लिये चाहेगा ही। वह चाहता क्यों है? यदि देश अपने वीरों के प्रति कर्तव्य को पहिचाने तो उसे चाहने की कोई जरूरत नहीं, पर देश मे तो कृतघ्नता का बोलबाला है। आज देश मे क्या हो रहा है? जो एक बार जेल गया था वह उच्च अधिकारी है, जो अधिक बार जेल गया वह आज मिनिस्टर है। जब पुराने कांग्रेसी ही अपनी सेवाओं और त्यागों का भरपूर मूल्य ले रहे हैं, तो जिन्होंने तिल तिल कर देश के लिये अपनी जानें दी उनको उनके लिये नहीं, तो उनके वंश से भूखे मरते रहने वाले परिवारों के लिये तो कम से कम मूल्य दिये जाने की जरूरत है। आज जहा कुछ त्यागों का मूल्य लाखों कमाने मे नजर आ रहा है वहाँ जीवन न्योछावर करने वाले वीरों के परिवार क्या सरकार से भर पेट अन्न मात्र पाने के अधिकारी भी नहीं है।

पेशावर गोलीकाण्ड के वीर सैनिकों ने १६३० में सीना तान कर बृटिश अधिकारियो से कह दिया था कि हम उनके कहने से अपने देशवासियो पर गोली नहीं चलायेंगे। इन वीर सैनिकों का नेता चन्द्रसिंह गढवाली था। इन सैनिकों मे १४ को कालेपानी से लेकर तीन वर्ष तक की सख्त कैद की सजाए दी गई थीं। वीर चन्द्रसिंह गढवाली कुछ समय पहिले दिल्ली आकर सरकारी हाकिमों से मिला था। किंतु सरकार ने उन्हें सेना में लेने से साफ इनकार कर दिया। बाद मे इन्हीं सैनिकों ने सरकार से काश्मीर युद्ध में जाने की इजाजत चाही थी। किंतु सरकार ने इस बात से भी साफ इनकार कर दिया। कहने का तात्पर्य यह कि सरकार उन पर विश्वास तक नहीं करती, न उनकी देश सेवा को देशसेवा ही मानती है। सरकार के इस रुख से यह स्पष्ट हो गया कि जिन वीरों ने कॉंग्रेस के बाहिर रह कर देशसेवा मे अपनी जान गवाई, उनकी जानों की कीमत, कीमत ही नहीं मानी गई। और यदि मानी भी गई तो इतनी नगण्य कि उसका मानना न मानना बराबर हो है। सरकार ने उन्हें जो आर्थिक सहायता देने का निश्चय किया है, वह यह है कि उन्हें ६) रु० से लेकर ७) रु० मासिक तक पेंशन दी जायगी। हमारा ख्याल है कि सरकार इसमे तो कुछ न देती तो अच्छा था। आज ६) रु० की मानवी जीवन मे क्या कीमत है, साधारण सी बुद्धिवाला व्यक्ति भी समझ सकता है। आज भारतभर मे कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल है। इन मंत्रियों को जो मासिक और भत्ते मिलते हैं, वे भी उनके लिये बहुत ही कम है, उनके पास मोटर है, बगले हैं, सुसज्जित फर्नीचर हैं। जहाँ चार-चार अकों तक फैली हुई राशियाँ भी इन पहले के त्यागियों को कम पड़ रही हैं, वहाँ ये ही त्यागी देश पर बलिदान हो जाने वाले वीरों के परिवारों के लिये ७ और ६ रु० मासिक काफी समझते हैं। और उन लोगों को नौकरियों मे इसलिये स्थान नहीं दिया जाता कि आज की सरकार की दृष्टि मे उनके बलिदान देशद्रोह माने जा रहे हैं। हो सकता है कि सरकार उन्हे ऐसा नहीं मानती। फिर आखिर उन्हे क्या मानती है जो ७ रु० या ६ रु० मासिक देने जैसा उनके साथ बीभत्स उपहास करती है। यह वास्तव मे सरकार के लिये खेद का विषय है कि वे वीर आज भी अपनी कुर्बानियां देकर देश प्रेम का प्रमाण देने को उद्यत हैं और सरकार उनसे भय खाती है या सशक है।

अभी अभी प० बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने वीर शिरोमणि प्रात. स्मरणीय शहीद चन्द्रशेखर आजाद की माता जी की आर्थिक दुर्दशा पर एक लेख प्रकाशित किया था। आज़ाद का नाम आज के भारत की देशसेवा का सर्टिफिकेट है। और उस वीर को—उस ऐतिहासिक महान् तत्व को—पेट में ६ माह रखने वाली वीर माता आज भूखों मरती फिरे, इससे अधिक स्वतन्त्र भारत के लिये और कौनसी कलक की बात हो सकती है? प० बनारसीदास जी जैसे कर्मवीर के सद्प्रयत्न के फल स्वरूप पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू ने वृद्धा माता को २५० रु० भेजे। सी. पी, यू पी तथा मध्य भारत सरकार ने २५-२५ रु० मासिक की उनकी पेंशन भी नियुक्त कर दी है। पर सवाल यह है कि सरकार की आँख चतुर्वेदी जी के प्रचार के बाद खुली। और दूसरे नेहरु जी ने भारत के भाग्य-विधाता होकर भी दिया तो क्या दिया? २५० रु० से उस वृद्धा का जीवन कट सकेगा? सरकार को क्या यह ख्याल नहीं है कि और भी ऐसे सैकड़ों वीर शहीदों के परिवार विद्यमान हैं जो दाने २ के मुहताज हैं। सरकार चाहती है कि उसे जगाते रहना चाहिए। वह स्वयं भले ही निद्रित रहे। खुदीराम बोस के स्मारक का उद्घाटन करने से नेहरु जीने इन्कार कर दिया। क्यों? क्या उस अठारह वर्षीय नवयुवक, जिसने हँसते हँसते फाँसी की रस्सी चूमी थी और जिसका "केसरी" द्वारा पक्ष समर्थन करने के परिणाम स्वरूप महान् तिलक को छह साल माण्डले की जेल की हवा खानी पडी थी.—उस वीर के बलिदान की नेहरु जी के दिल में कोई कीमत ही नहीं? जिन वीरों की देश सेवा का मूल्य किसी कीमत द्वारा भी नहीं चुकाया जा सकता, उनका मूल्य भारत सरकार ६ रु० से लेकर २५ रु० मासिक की पेन्शनो द्वारा चुकाने लगी है, यह किसी भी उदार स्वतन्त्र और जनतन्त्री राष्ट्र के लिए लज्जा जनक है। इसमे किसी वाद का सवाल नहीं है। वीर और शहीद वादों से परे होते हैं।

★★★

सिद्धान्त रक्षा समिति

सयुक्त प्रान्तीय उपदेशक सघ ने निम्न आर्य विद्वानो की एक समिति बनाई है जो वदिक सिद्धान्तो पर नया-नया साहित्य प्रकाशन करेगी, तथा सदिग्ध विषयों पर अनुसधान करगी।

श्री प रामचन्द्र जी देहलवी, श्री प देवप्रकाश जी, श्री बिहारीलाल जी, श्री प शिवशर्मा जी, श्री प वाचस्पति श्री ठा. अमरसिंह जी सयोजक, श्री अयोध्या प्रसाद जी, रामानन्द जी शास्त्री बिहार, श्री विश्वम्भर जी, श्री प विद्यानन्दजी, श्री स्वामी वेदानन्दजी।

खाद्य और कृषि सम्बन्धी

देश के विभाजन के बाद के उपद्रवों में मत्स्यसत्र के मेव ३,५०,००० एकड भूमि छोड गये थे, जिसमें से १,००,००० एकड भूमि में स्थानीय लोगों ने खेती का कार्य आरम्भ कर दिया है और ४०,००० एकड भूमि में भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय के केन्द्रीय ट्रेक्टर सगठन ने यन्त्रों द्वारा खेती की है।

× × ×

१६४८ में भारत ने आस्ट्रेलिया से सबसे अधिक (७,०६,०००) टन खाद्यान्नों का आयात किया। दूसरा स्थान अमेरिका का है जहाँ से ६,५७,००० टन खाद्यान्न मगाया गया।

× × ×

भारत में ३,००० नगर है और प्रत्येक की जनसख्या ५,००० या इससे अधिक है। इन नगरों का मैला या कूडाकरकट व्यर्थ न जाने दिया जाय तो इससे ५० करोड टन कच्ची खाद तैयार की जा सकती है।

× × ×

जून १९४८ से जुलाई १६४६ तक के वर्ष में कुल १,७१,२०० टन सल्फेट आफ अमोनिया प्रान्तों को देने का निश्चय किया गया है। इससे २५,७०,००० एकड भूमि उपजाऊ हो सकेगा।

× × ×

भारत में १,७१,५०० वर्ग मील में वन है। इनमें से ५६ प्रतिशत वन सुधारे जा सकते है।

★ ★ ★

१६४८ में किसानों से कुल २३,८४,००० टन अन्न प्राप्त किया गया था।

× × ×

यदि भारत ५ करोड ताड और खजूर वृक्षों से समुचित लाभ उठाया जाय तो ५० लाख परिवारों को लाभदायक धन्धे से लगाया जा सकता है।

★ ★ ★

१६४७-४८ में समाप्त होने वाले ५ वर्षों में खरीफ फसल के अन्न का औसत उत्पादन ३,१६,७२,००० टन तथा रबी का १,१३,३५,००० टन था।

★ ★ ★

विदेशों से महगे भाव पर अन्न खरीद कर देश में सस्ते भाव पर देने में भारत सरकार को १६४८-४६ में अनुमानत. २६,५२,००,००० रु० सहायता के रूप में खर्च करने पडेंगे।

आर्य जगत् में स्त्रियों का स्थान

[कान्तिकिशोर भरतिया]

हमारे देश के प्राचीन विद्वान स्त्रियों को अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते थे। इसी कारण यहाँ सुख तथा समृद्धि का साम्राज्य था। इस समय भी यदि कोई राष्ट्र व जाति उन्नति करना चाहती है तो उसके लिये आवश्यक है कि वह स्त्रियों की उन्नति में पूर्णतः अग्रसर हो जाय। प्राचीन स्मृतिकार महात्मा मनु के शब्दों में:—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः॥

जिस कुल व स्थान में स्त्रियों का आदर होता है उसमें उत्तम देवकोटि के विद्वान आनन्द करते हैं तथा जहाँ स्त्रियों को निम्न दृष्टि से देखा जाता है वहाँ प्रायः सब कर्म निष्फल हो जाते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह नारी जाति की उन्नति में पूर्णतः सलग्न हो।

मातृशक्ति स्त्रियों में ही निवास करती है जिसकी आराधना करना अति आवश्यक है। माता तथा बालक का सम्बन्ध प्रारम्भ ही से रहता है। बालक को प्रथम शरण माता की ही गोदमें मिलती है। बालक का स्वभाव, प्रकृति तथा भविष्य बहुत अधिक सीमा तक माता पर निर्भर रहता है। माता यदि चाहे बालक को आरम्भ ही से सुसस्कारों द्वारा प्रभावित कर उसे अपनी तथा अपने देश व राष्ट्र की उन्नति करने में समर्थ कर सकती है।

योरप की नारिया भी अधिक अवनति की दशा पर पहुँच चुकी थीं। अब कुछ उन्नति करने पर भी वे वैदिक आदर्श से बहुत पीछे हैं।

योरप निवासी मातृ शक्ति को इतना आदर न दे सके जितना कि प्राचीन आर्य विद्वान देते थे। नव परिणीता वधू के कर्तव्यों का बोध कराने वाले ऋग्वेद का यह मन्त्र है:—

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वाम भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥ ऋ० १०। ८५।४६.

हे वधू तू सास, ससुर, नन्द व देवर पर रानी के समान व्यवहार कर अर्थात् वधू घर मे सब को प्रसन्न रखे तथा गृहनिवासी उसे चक्रवर्ती राजा की भाँति सम्मान करें तभी घर व देश की उन्नति सभव है।

शास्त्रानुसार स्त्री को अर्धांगिनी कहते हैं। अतः स्त्री पुरुष दोनों को एक दूसरे की अनुमति से कार्य करना आवश्यक है। घर के धार्मिक कार्यो में दोनों का सहयोग आवश्यक है।

प्राचीन काल में इस आर्यावर्त्त देश में नारी जाति अत्यन्त गौरव के पद पर पहुँच चुकी थी। वे विदुषी तथा धर्मप्रिय होती थीं। पति की हर कार्य में सहायता करती थीं। कैकेयी ने देवासुर सग्राम में लड़ कर अपने पति दशरथ की रक्षा की थी। स्त्रियां वेद की विदुषी भी होती थीं। आदि सृष्टि में जब परमात्मा ने वेदों का प्रकाश किया अनेक ऋषियों ने उन पर मनन करना प्रारंभ किया और जिस जिस ऋषि ने जिस जिस मत्र का मनन कर अपनी बुद्धि द्वारा लोक को समझाया वह उस मत्र का ऋषि कहलाया। उन मत्रदृष्टा ऋषियों में अनेक स्त्री रत्न भी सम्मिलित है जिनमें सुतजेता, दीर्घतमा, लोपामुद्रा, नोधागौतम सर्पराज्ञी आदि उल्लेखनीय हैं। जब स्त्रिया विदुषी और मन्त्रद्रष्टा हो सकती थी तो उन्हें मनु के नाम से स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् गढ कर वेदाध्ययन से वचित रखना बड़ी भूल है।

जब तक इस देश में स्त्रियों का सम्मान होता रहा देश प्रत्येक प्रकार से सुखी रहा तथा धन, ऐश्वर्य और वैभव का साम्राज्य रहा। जब से स्त्रियों का अनादर प्रारम्भ हुआ देश का अधःपतन होने लगा।

उग्र रूप में स्त्रियों का अनादर सब से प्रथम महाभारत काल में हुआ इसी कारण तभी से देश की शीघ्र अवनति होने लगी जो अभी तक रुक नहीं पाई है।

इसके पश्चात् शनै. शनैः समाज में नारी आदर के भाव से गिरती गई तथा अत्यन्त नीची दृष्टि से देखी जाने लगी। यहाँ तक कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है।

शूद्र गवार ढोल पशु नारी।
ये सब ताडन के अधिकारी॥

कहा स्त्रियों को मनु द्वारा उच्च आदर्श का स्थान देना और कहा तुलसीदास जी द्वारा मारने पीटने का अधिकार देना समय की विचित्र गति है।

महर्षि दयानन्द ने हमें स्वराज्य का मन्त्र दिया। उसी के परिणाम स्वरूप इस देश में उनके आदर्श यथानुगामी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व के कारण १५ अगस्त १६४७ को स्वतन्त्रता सूर्य का उदय हुआ। अब स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्र निर्माण का कार्य हमारे कधों पर आया है। माताओं को भी इसमें अपना सहयोग देना है। राष्ट्र का भविष्य युवकों पर और युवकों का भविष्य उनकी माताओं पर निर्भर है। अतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद माताओं का विशेषतया यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने पुत्र व पुत्रियों को आरम्भ ही से देश प्रेम, धर्मप्रेम व राष्ट्रप्रेम की अभिलाषा से पूर्ण कर दें। अब अन्त में हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें ऐसी शक्ति दे कि हम माताओं की उन्नति में पूर्णतः तत्पर हो जाय, व स्वतन्त्र देश की स्वतन्त्र माताओं का वह ऐसी सुमति दे कि वे युवकों की उन्नति कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में पूर्णत अग्रसर कर दें।

आर्य महासम्मेलन

श्री मन्त्री जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली सूचित करते हैं कि—'आर्य महासम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिये कलकत्ता आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार ने निमत्रण दिया था जो स्वीकार कर लिया गया था परन्तु उक्त सभा ने कई अनिवार्य कारणों से इस वर्ष यह सम्मेलन बुलाने में असमर्थता प्रकट की है। अतएव आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि यदि कोई अन्य प्रान्त निमन्त्रण भेजना चाहे तो वह सार्वदेशिक सभा में शीघ्र से शीघ्र प्राप्त हो जाना चाहिये।

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

गुरुकुल वृन्दावन की उपाधियां सरकार द्वारा स्वीकृत हैं। हाई स्कूल पास १८ वर्ष के अविवाहित छात्र सीधे महाविद्यालय में कक्षा ११ में प्रविष्ट हो सकते हैं। आठ वर्ष और उससे अधिक आयु के बालक योग्यतानुसार श्रेणियों में प्रविष्ट हो सकते हैं। हाई स्कूल अथवा मध्यमा पास या उतनी योग्यता वाले विद्यार्थी आयुर्वेद महाविद्यालय में भी प्रविष्ट हो सकते है। प्रवेश जौलाई के प्रारम्भ में होगा। १४ आ० मनीआर्डर द्वारा भेजकर नियमावली तथा प्रवेश पत्र कार्यालय से मगा ले। २० जून तक प्रार्थना पत्र कार्यालय में आजाने चाहिए। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

आर्य्य-जगत्

निर्वाचन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज नगीना

प्रधान बा. राजेन्द्र सिंह जी उप प्र० बा. कुन्दनलाल जी, मंत्री श्री राजेन्द्र नाथ जी, उप म. प० ऋषिदेव शास्त्री, कोषाध्यक्ष बा० शिवकुमार जी, पुस्तकाध्यक्ष बा० रामचन्द्र सहाय जी।

जिला उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर

प्रधान—कबूलसिंह जी वानप्रस्थी, उपप्रधान - अचपल सिंह जी, तेजसिंह जी, मंत्री—वेनीप्रसाद जिज्ञासु, उप मन्त्री—जीवन सिंह जी मास्टर नत्थनलाल जी, कोषाध्यक्ष—मास्टर आसाराम जी B. A. L. T., निरीक्षक—मगन लाल जी।

आर्यसमाज हलद्वानी

प. शकरलाल जी प्रधान प. धूप सिंह जी प्रधान म० बद्री नाथ जी मन्त्री मास्टर कुंज बिहारी लाल जी उपमन्त्री, म० प्रेमलाल जी, कोषाध्यक्ष म० सत्येन्द्र कुमार जी, पुस्तकाध्यक्ष,

आर्यसमाज कनखल हरिद्वार

प्रधान—श्री पं० धर्मदत्त जी वैद्य, उपप्रधान—श्री वेदप्रसाद जी जिज्ञासु, मन्त्री—मा० नत्थन लाल आर्य, उपमंत्री—छागामल जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री म० चन्द्रमानु जी आर्य, निरीक्षक—श्री बा० बसन्त लाल जी आर्य,

समाज बोपलपुर

प्रधान महाशय हृदय नारायण जी,
उपप्रधान पोथीराम जी
मन्त्री हरीशचन्द्र जी
उप मन्त्री महाशय पूर्णानन्द जी
कोषाध्यक्ष महाशय रामलाल जी
पुस्तकाध्यक्ष महाशय कँधई लाल जी

आर्य समाज जवाहर नगर कानपुर

प्रधान—प० रमेशचन्द्रजी शास्त्री एम ए प्रिन्सीपल, उपप्रधान—प. छक्कूलाल जी तिवारी म्यु कमिश्नर श्री बृजेशचन्द्र जी अग्रवाल श्री रामरतन जी सविता, मंत्री—प० विश्वम्भर नाथ जी तिवारी, उपमन्त्री—प० राजबहादुर जी दीक्षित श्री राम चन्द्र जी गुप्त एम० ए०, कोषाध्यक्ष ठा० किशोर सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष—ठा० बीरेन्द्र सिंह जी, निरीक्षक—श्री मेवालाल जी,

आर्यसमाज बनारस छावनी भोजूबीर

श्री सत्यनारायण लाल जी, प्रधान, श्री जयेन्द्रनारायण सिनहा जी उपप्रधान, श्री नानकराम जी मन्त्री, श्री खेमराज जी उपमन्त्री तथा श्री कालिका प्रसाद जी कोषाध्यक्ष व पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

—आर्यसमाज इटावा-प्रधान रायजादा बा० महेश्वरी दयालु एडवोकेट मन्त्री कविराज रत्नाकर शास्त्री, कोषाध्यक्ष बा० मूलचन्द्र वकील।

—आ० स० खुर्जा शिवदयाल सिंहजी प्रधान, लालचर जी उपप्रधान, निरंजन प्रसाद जी M A. L L B मन्त्री, वीरपाल सिंह जी उपमन्त्री, भवानी प्रसाद झा कोषाध्यक्ष, शिवचरन लाल जी खजानची बैंक निरीक्षक, फतेचन्द्र जी पुस्तकाध्यक्ष

—आर्यसमाज शाहाबाद - प्रधान बा० ज्वालाशकर वकील, उपप्रधान महाशय राधाकृष्ण, मन्त्री हरदयालजी, उपमन्त्री कृष्णनिर्जन, कोषाध्यक्ष जगदीशचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष राय मैकूलाल, आडीटर मुनीम केशवराम।

—आर्यसमाज कासगज प्रधान—श्री० ला० मिठूलालजी गुप्ता। उप प्रधान—बाबूराम जी भडसारी। उप प्रधान बा० श्रीराम जी आर्य्य, मन्त्री रामचरण जी शर्मा 'रमेश'। उपमन्त्री मोहनलाल जी सेठ। कोषाध्यक्ष लखपतिराम जी, पुस्तकाध्यक्ष मु० जयन्ती प्रसाद जी, कुलश्रेष्ठ। आय व्यय निरीक्षक बा० हीरालाल जी आर्य।

—आर्यसमाज पुरंनी प्रधान—म छज्जू सिंहजी रागी, मन्त्री—मु मुकुन्दीसिंह, अध्यापक, खजान्ची म उमरावसिंहजी।

उपदेशक—वाचनालय तथा सर्वोपयोगी पुस्तकें

भारतवर्ष का इतिहास

ले० प० भगवद्दत्त बी० ए० भूतपूर्व अध्यक्ष डी. ए वी कालेज लाहौर।

इस ग्रन्थ में आदि युग से गुप्त साम्राज्य के अन्त तक बहु मूल्य प्रमाणिक सामग्री है जो प्रत्येक विद्वानों के लिये उपयोगी और खोज पूर्ण है मूल्य १५) उपदेशक महासम्मेलन के उपलक्ष में एक मास तक के लिये १२)

मानवधर्म प्रचारक

ले० आचार्य जगतकुमार शास्त्री

इस पुस्तक में १० महापुरुषों की जीवनियों और उनके सिद्धान्तों का समावेश है जो कि तुलनात्मक दृष्टि से भी मनन करने योग्य है। भगवान रामचन्द्र, कृष्ण, महावीर, अशोक, ईसा, मुहम्मद, कबीर, नानक, दयानन्द, रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामतीर्थ और महात्मा गान्धी। ३८४ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४) मात्र।

ऋग्वेद भाष्य

ऋषि दयानन्द के किये भाष्य की पूर्ति ७ वें मण्डल का शेष भाग, महामहोपाध्याय प० आर्य मुनि कृत भाषा २॥)

८ वें मण्डल का भाष्य श्री प शिवशङ्कर शर्मा कृत भाष्य दो भागों में ६॥)

९ वें मण्डल का भाष्य प० आर्य मुनि कृत केवल एक भाग ३॥)

सब समाजें मगाकर इसे सग्रह कर लेवें समाप्त होने पर फिर छपने वाला नहीं है।

आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

महात्मा हसराज-वृहद्जीवन चरित्र २), वेद में इतिहास नहीं १), प्रभु भक्ति १), वैदिक भक्ति स्तोत्र १।), सामवेदशतक ॥=), देवयज्ञ प्रकाश ॥), दीपक १), वैदिकसिद्धान्त १।), स्वाध्याय सन्दोह ५) उपरोक्त पुस्तकें बहुत कम सख्या में है शीघ्र मंगालेवें उपयोगी हैं।

यवन मत समीक्षा

स्व० आर्य पथिक प० लेखराम कृत

"तक जीव बुराहीन अहमदिया"

इसप्रसिद्ध उर्दू पुस्तक का हिन्दी अनुवाद इस्लाम के सिद्धान्तों को जानने के लिये उपयोगी पुस्तक है। मूल्य १॥)

बुद्ध और बौद्ध धर्म

ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री मात्र ३)

कुछ उर्दू पुस्तकें

कुलियात सन्यासी—स्वामी श्रद्धानन्द के उपयोगी लेखों का सग्रह बड़ी साइज के ६०० पृष्ठ मूल्य २), वैदिक सिद्धान्त—लाला रामप्रसाद १), लेखमाला—महात्मा हंसराज ॥), विचार माला—लाला दीवानचन्द ॥) यथार्थ प्रकाश की हकीकत—राधास्वामी मतालोचन ।॥),

अनुराग रत्न

स्व० प० नाथूराम शकरशर्मा रचित कविताओं का वृहद सग्रह पृष्ठ सख्या ३२१ सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) मात्र

आर्य सिद्धान्त सागर

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने स्वर्ण जयन्ती उपलक्ष में विशेष विद्वानों द्वारा सम्पादन करा कर प्रकाशित किया है। आर्यमात्र के मनन योग्य है मू० ५)

ENGLISH BOOKS

Swami Dayanand His life & Teachings 1 0-0

rya samaj—by Lajpat Rai 3 Rs.

Arya samaj by Divan chand -18-

Maha ma gandhi two parts 3 Rs.

Voice of Arya varata by T L v swami 8 As

—आर्यसमाज कायमगञ्ज प्रधान—रामेश्वर दयाल जी, उपप्रधान—जगन्नाथ प्रसाद जी, मन्त्री—राम चन्द्र जी उपमन्त्री वेदव्रत जी प्रेमसागर जी, जगदेव प्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—लक्ष्मी नरायन जी, पुस्तकाध्यक्ष—आत्मानन्द जी,

—आर्य्य कुमार सभा, गोरखपुर। श्री सत्यव्रत आर्य्य सिद्धान्त शास्त्री प्रधान, श्री रामचन्द्र जी सिद्धान्त रत्न उप प्रधान, श्री ओ३म्प्रकाश जी सिद्धान्त सरोज मन्त्री श्री जगतवीरजी आर्य उपमन्त्री, श्री मूलचन्द्र आर्य उपमन्त्री, श्री परमेश्वर जी कोषाध्यक्ष।

आर्यसमाज अलीगढ़ प्रधान—बा. पीतमलाल एडवोकेट, मन्त्री—रामप्रसाद वकील, कोषाध्यक्ष—बा. प्यारेलाल, निरीक्षक—प० जमुनाप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष बंशीधर आर्य्य।

—जाति भेद निवारक आर्य परिवार सघ सरक्षक—श्रीमान् प० गगा प्रसाद जी रि चीफ जज देहली अध्यक्ष—धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति देहली, उपाध्यक्ष म० आनन्दभिक्षु जी गु. कु. इन्द्रप्रस्थ, सचालक प भद्रसेन जी आचार्य अजमेर, उप स चालक भगवान स्वरूप जी, न्याय भूषण, कोषाध्यक्ष म० रामप्रताप जी साभर।

—आर्यसमाज औरैया प्रधान डा० लक्ष्मीचरण बी एस् सी. प्रधानमंत्री शिवनारायण वान्दल, मंत्री बा तेजबहादुर जी, (सुशील कुमार) निरीक्षक पं० रामसेवक जी मिश्र।

आर्यसमाज वृन्दावन मथुरा प्रधान—श्री प० गगादत्त जी महोपदेशक उपप्रधान—आचार्य विश्वेश्वर जी वेदसिद्धांत शिरोमणि मत्री—पं शोभाराम पाठक सिद्धान्तालकार उपमत्री—श्री प. आर्येन्द्र जी वेदशिरोमणि, पुस्तकाध्यक्ष - श्री प. शिवदत्त जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री बाबू कुवर पाल सिंह जी, लेखा निरीक्षक—श्री मास्टर जोधसिंह जी विनीत

—आर्यसमाज मिलक रामपुर प्रधान—पं. कन्हई लाल शर्मा, उपप्रधान—राजबहादुर जी, मन्त्री—नत्थारामार्य, उपमन्त्री—म राधेश्याम जी, कोषाध्यक्ष—म. बुधसैन जी, पुस्तकाध्यक्ष—म. नन्दराम जी, मैनेजर वैदिक पाठशाला म. मंगलसैन जी, कोषाध्यक्ष — म रामदास जी

—आर्यसमाजलोदी रोड नयी दिल्ली प्रधान—श्री नकुलसेन जी सब्बर, उपप्रधान – श्री देशराज जी खन्ना तथा श्री मुकन्दलाल जी, मन्त्री—श्री कृष्णलाल जी आर्य एम ए., उपमत्री—श्री चरण सिंह जी आर्य तथा श्री मिलखी रामजी, कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तराय जी खन्ना पुस्तकाध्यक्ष श्रीकृष्णलाल जी कोहली

—आर्यसमाज श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम प्रधान—ठा. रणधीर सिंह जी, उपप्रधान—डा. नेत्रपाल जी मन्त्री—ठा. रामस्वरूप वर्मा उपमंत्री म. नरोत्तम जी, कोषाध्यक्ष—ठा. देवेन्द्रसिंह जी पुस्तकाध्यक्ष—पं. दीपचन्द्र जी, निरीक्षक—मु०.रामप्रसाद जी,

—आर्यसमाज रेकोहा (फतेहपुर) प्रधान—प. महादेव प्रसाद जी, मन्त्री—प. अनन्तराम जी शर्मा,

—आर्यसमाज ऐहन प्रधान – यशोधन सिंह जी, उपप्रधान—ताराचन्द्र जी, मंत्री—होतीलाल, जी उपमंत्री—छोटेलाल जी, कोषाध्यक्ष—ज्योतीप्रसाद जी, पुस्तकाध्यक्ष—घूरे लाल जी, निरीक्षक—रामप्रसाद जी,

—आ० स. जासपुर मल्लादागू (गढ़वाल)पट्टी प्रधान श्री खिमानन्द जी, शाह (जासपुर) उपप्रधान श्री बल्लीराम जी (दीवा) मंत्री श्री अमरदेव जी (जासपुर) उपमंत्री श्री रण जीत राम जी (जासपुर) कोषाध्यक्ष श्री घनानन्दजी (दखी) निरीक्षक श्री चमनलाल जी आर्य (बढेथ)

—आर्यसमाज रामपुर। प्रधान—कृष्णशरन आर्य, उपप्रधान—श्री नन्दकिशोर जी श्री परमेश्वरी सहाय, मन्त्री—श्री देवेन्द्र नाथ आर्य, उपमंत्री—श्री हरिश्चन्द्र आर्य, श्री रामकुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश शरन, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राधेश्याम जी, आडीटर—श्री प. गणेशरत्न,

—आर्यसमाज मुरादाबाद प्रधान—श्री जगन्नाथसिंहल. म्युनिसिपल कमीश्नर, उपप्रधान—श्री राममोहन जी श्री केदारनाथ जी वर्मा, मन्त्री—श्री जगदीश प्रसाद जी M. A. L. T., उपमंत्री—श्री बलदेव जी अग्नि होत्री साहित्याचार्य श्री बलराज जी खन्ना, कोषाध्यक्ष—श्री महाराज नारायण जी टण्डन, पुस्तकाध्यक्ष—श्री शम्भूलाल जी,

—आर्यसमाज मेरठ शहर प्रधान—श्री प० द्विजेन्द्र नाथ जी शास्त्री, उपप्रधान श्री मुसद्दीलाल जी एम ए. मन्त्री श्री श्यामलाल जी, उपमन्त्री श्री जगदीश नारायण सिंह जी श्री धर्मपाल सिंह जी पथिक श्री शिवचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष श्री विश्वम्भरसिंह जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री महेन्द्र पालसिंह जी

—आर्यसमाज कांठ मुरादाबाद। प्रधान श्री तोताराम जी, उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद जी, मन्त्री श्री फ़क़ीर चन्द्र जी. ए. उपमन्त्री श्री बाबूराम जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्यारेलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री प्राण सुख जी,

आर्य समाज आगरा नगर

प्रधान—म० मोहनलाल जी आर्य, उपप्रधान—पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, अवधनारायण एडवोकेट मंत्री—बालमुकन्द जी, सहकारी मंत्री—ओ३म प्रकाश जी शास्त्री, उपमंत्री—बाबूराम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—कर्णसिंहजी, पुस्तकाध्यक्ष—रामचन्द्र जी भूटानी, मंत्रीदयानन्द अनाथालय—हीरालाल जी, मंत्री विधवाश्रम—शालिगराम जी, मंत्री आर्य कन्या पाठशाला—परमेश्वरी सहाय जी।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस

ग्रीष्मावकाश ता० २० मई से ३० जून तक रहेगें। १ जुलाई १९४९ को गुरुकुल के विद्यालय एव महाविद्यालय विभाग खुल जायेंगे तथा शिक्षा क्रम प्रारम्भ हो जायगा। जो महानुभाव अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वह ता० १५ जून तक कार्यालय से पत्र व्यवहार करके स्वीकृति प्राप्त करने की कृपा करें।

अ. भा. उप. सम्मेलन में महिला सम्मेलन

अखिल भारतीय उपदेशक सम्मेलन में महिला सम्मेलन श्रीमती हेमलताजी के सभापतित्व में हुआ, सभापति के भाषण में आपने कहा कि जब तक हमारा जीवन ऋषि दयानन्दजी के आदेशानुसार तथा आर्य संस्कृति में नहीं ढाला जावेगा तब तक हम किसी भी कार्य क्षेत्र में सफल नहीं हो सकती हैं इसलिये हम स्त्री आर्य समाजें स्थापित करें। वैदिक धर्म की अनुयायी बन कर ही नारी जाति का उत्थान हो सकता है क्यों कि वेद ने ही सर्व प्रथम नारी का स्थान मनुष्य समाज में महान् रखा है। मातृवान पितृवान आचार्यवान पुरुषों वेद। मनुष्य समाज का सर्व प्रथम गुरु नारी जाति है इस लिये उन्हें अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिये।

★ ★ ★

सार्वदेशिक वेद प्रचार निधि

यह बात तो सर्व सज्जनों पर विदित ही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज की मुख्य केन्द्रीय संस्था है और इसको अन्यान्य विधि से वैदिक धर्म के प्रचार में बहुत बड़ी राशि व्यय करनी पड़ती है और धनाभाव के कारण धर्म्म प्रचार को अधिक विस्तृत करने में बाधा होती है। सार्वदेशिक सभा के पास आय का कोई साधन नहीं है। प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं से जो पचमांश प्राप्त होता है वह तो कार्यालय के आंशिक व्यय के लिए भी पर्याप्त नहीं होता अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि प्रत्येक आर्य नरनारी को सार्वदेशिक प्रचार निधि में अपना कोई नियत वार्षिक दान देना चाहिये। अपनी आर्थिक योग्यता के अनुसार आर्य गण १), ५), १०), २५), ५०), १ ०), २५०), ५००) या अधिक वार्षिक राशि नियत करदें तो सार्वदेशिक सभा वैदिक धर्म व प्रचार की प्रगति को तीव्र कर सकती है। इस निधि का उद्देश्य भारत और भारत के बाहर अन्य देशों में सुयोग्य प्रचारक भेज कर और प्रचार केन्द्र स्थापित कर के वैदिक धर्म का प्रचार कराना होगा। आशा है कि आर्य गण इस अत्यन्त महत्व पूर्ण निधि की पूर्ति में अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

गंगाप्रसाद उपाध्याय एम.ए.
मन्त्री

★ ★ ★

गुरुकुल सिकन्दराबाद

गुरुकुल सिकन्दराबाद का ग्रीष्मावकाश ता० २० जून को समाप्त हो रहा है। इस अवसर पर नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा।

प्रवेशार्थी छात्रों को १०) मासिक भोजन व्यय देना होगा। गुरुकुल में अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत के साथ आयुर्वेद के अध्यापन का भी प्रबंध है। जयपुर, तथा विद्यापीठ देहली की परीक्षायें दिलाने का पूरा प्रबंध है।

मुख्याधिष्ठाता

—आर्यसमाज मन्दिर कोटद्वार में गढ़वाल जिले की आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने गढ़वाल जिले में वैदिक प्रचार तथा प्रसार को सुचारु रूप से चलाने के लिये जिले की आर्य उप प्रतिनिधि सभा गढ़वाल की स्थापना २१-४-४९ को की जिसका निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।

प्रधानः—श्री भुवनेश जी विद्यार्थी बी. ए. सदस्य जिला बोर्ड तथा अध्यक्ष स्वास्थ्य विभाग जिला बोर्ड।

उप प्रधानः—श्री जयानन्द जी 'भारती' आर्यसमाज साबली।

मन्त्रीः—श्री केशव प्रसाद जी भटनागर आर्यसमाज कोटद्वार।

उप मन्त्रीः—श्री विश्वम्भर दयालु जी शेरपुर चमोली।

कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र जी लैंसडौन (वर्तमान पता—द्वारा टेकचन्द मक्खनलाल कोटद्वार)।

प्रचार मन्त्री (अधिष्ठाता) श्री पचम सिंह जी जैड़ि-दालाल १२ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुये।

..आ. स. पाठकपुर (उन्नाव) प्रधान म. वशगोपालजी वाजपेई, उप प्रधान म. श्यामाचरणजी त्रिपाठी, मन्त्री म. चन्द्रदत्त शर्मा वैद्यभूषण, उप मन्त्री म. सधनलालजी वर्मा, कोषाध्यक्ष म. शिवशकर दुबे, निरीक्षक म. रामकृष्णजी त्रिपाठी, औषधालय मन्त्री म. श्यामाचरणजी त्रिपाठी।

मुजफ्फरनगर शहर आर्य समाज

श्री रामगोपाल जी प्रधान, किशोरी लाल जी उपप्रधान, पगतराय जी, रतनसिंह जी मन्त्री, देवदत्त जी उपमन्त्री, व नन्थूलाल जी।

आर्य समाज कनखल

प्रधान श्री वैद्य धर्मदत्तजी विद्यालंकार

उप प्रधान श्री वेनी प्रसाद जिज्ञासु

मन्त्री श्री मास्टर नत्थन लाल
उप मन्त्री श्री झांगा राम जी
कोषाध्यक्ष श्री चन्द्र भानु जी

गुरुकुल वृन्दावन-मास फरवरी सन् १९४९

५) या ५) से अधिक आर्य सूची

१०) श्री मनी कृष्णा देवी जी मन्त्राणी आर्यसमाज मुरादाबाद
५) श्री गजाधर प्रसाद जी सराय थोक हरदोई
११) श्री बाबूराम महेमदी खीरी
५) „ सुनेहरी लाल जी मन्त्री आर्यसमाज उझियानी।
५) श्री सेठ बाबुलाल जी मोतीलाल लाल जी हरवै मथुरा।
५१) श्री मंत्री जी आर्यसमाज चौक मथुरा
५) श्री गंगा सहाय रामसहाय हिम्डौन जयपुर
७) श्री टीकाराम जी अर्डीन मथुरा
५) „ नारायण सहाय जी जौहरी नारायण निवास हरदोई
११) श्री सम्मन लाल लखपत राय तेली बाडा देहली
११) श्री गोवरधन दास वीरेन्द्र कुमार टोपी वाले दरीबा कला
२१) श्री गौरीशंकर श्यामसुन्दरजी पराठे वाली गली देहली।
५) श्री ओमप्रकाश जी हौजकाजी।
२१) चौधरी भूपसिंह जी देहली
२१) श्री बालाप्रसादजी बालकिशनदासजी दरीबा कला।
१०१) श्रीमती भागीरथ देवी द्वारा पन्नालाल गिरधारीलाल आर्य समाज सीताराम बाजार।
११) श्री छोटेलाल जी फराश खाना गली समासा देहली।
२१) श्री रामस्वरूप जी शकर लाल जी लुंगी-ल कूचा पातीराम देहली
११) श्री सब्बमल काटमल जी नया बाजार देहली
२१) श्री माना मल गुलजारी मल जी चावडी बाजार देहली
११) श्री अत्रीप्रसाद न्यू प्रकाश मसजिद तहव रखॉ देहली।
५१) श्री छोटेलालजी बाईखला बम्बई।
३०१) श्री हुकमचन्द्र दौलतरामजी सिल्क मार्कीट जुम्बल बाड़ो बम्बई न० २
१००) श्री ओम प्रकाश जी फर्म लाल चन्द्र दौलतराम सिल्क कालवा देवी रोड मार्कीट बम्बई न० २
१००) श्री रामकृष्ण एन्ड सन्स न्यू सिल्क मार्कीट काल'ा देवी रोड बम्बई न. २
३०१) श्री अमरनाथ जी फर्म ला० दीनानाथ एन्ड सस कालवा देवी रोड बम्बई न० २
१००) श्री हरिश चन्द्र जी मेहरा एन्ड सस न्यू सिल्क मार्कीट बम्बई न० २
१०१) श्री जगन्नाथ दलीप सिंह जी नयाबांस मोर छाप तम्बाकू वाले देहली
१०१) श्री वेस्टर्न होज़री एन्ड जनरल मिल लिमिटेड १४३ तेली बाडा देहली
२१) श्री रामस्वरूप सुन्दर लाल जी काल मरचेंट घासी राम कूचा देहली
१२) श्री हरी सिंह जी ढलाई वाले लाल कुआ देहली
२१) श्री रामनाथ जी महता नयाबांस देहली
११) श्री पन्नालाल विशम्भर नाथ नयाबांस देहली
५) श्री हरीचन्द्र दीपचन्द्र खारी बावडी देहली
२१) श्री रिच्छमल विशनस्वरूपजी घी वाले खारी बावडी देहली।
२१) श्री बाल किशन दास जी ठेकेदारी गली बहू जी देहली
२१) श्री गिरधारी लाल जी वकील मटोल पहाड़गज
११) श्री छोटे लाल सांवल दास जी चावड़ी बाजार देहली
२१) श्री गनेशी लाल श्यामलाल जी पहाड़ गंज देहली
५) श्री मोहन लाल साइकिल वाले सदर बाजार देहली
२५) श्री राम कुन्दन लाल जी प्रधान आर्यसमाज बुडाना जि० मुजफ्फर नगर
१०१) श्री मती द्रोपदी देवी जी मार्फत ला. सूर्यनारायण बिलग्राम हरदोई
५) श्री चाद बिहारी जी हरदोई
५) श्री गुरुनाराय[illegible] जी हरदोई
२०) श्री राजबहादुर जी एडवोकेट हरदोई
५) श्री गौरी शकर जी वकील हरदोई
२१) श्री रामभरोसे लाल जी द्वारा श्री शकर लाल एन्ड सन साईकिल मर्चेंट सदर बाजार आगरा
६॥'=) श्री मन्त्री जी आर्यसमाज जौनपुर

१८८३॥=) योग
३२=) ५) रु० से कम आय

१९१६।) कुल आय

★★★

पायोकिल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरद्वार

कैसे भी दाद व खुजली के लिये
दादमार
संसार की
सर्वश्रेष्ठ मरहम

बच्चे व मां के लिये अमृततुल्य मीठी घुट्टई
लाल-शर (Regd)
(लाल शरबत)
डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०
कलकत्ता

निर्वाचन

आर्यसमाज बीसलपुर

—प्रधान-श्री हृदयनारायण जी, उपप्रधान श्री पोथीराम जी, मन्त्री-श्री हरिशचन्द्र जी, उपमंत्री-श्री पूर्णानन्द जी, कोषाध्यक्ष-श्री रामलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष- श्री कंधई लाल जी.

—आर्य समाज सीसामऊ कानपुर प्रधान-म. रघुवर दयाल जी, उप-प्रधान गंगा चरण जी, मन्त्री-म. तेजभान जी मदान, उपमन्त्री म. शिवनाथ जी तिवारी, कोषाध्यक्ष म. वेदरतन गौतम, उपकोषाध्यक्ष-म. रोशन लाल जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष म फतेह सिंह जी भार्गव,

वार्षिक उत्सव

—आर्यसमाज मिठौरा बाजार का २२ वां वार्षिकोत्सव ता० २, ३, ४ मई १९४९ ई० को पूर्ण हो गया है, जिससे जनता को अतीव लाभ हुआ। दो यज्ञोपवीत संस्कार भी हुये हैं।

—आर्य मण्डल विविया जलालपुर का तृतीय वार्षिकोत्सव गत वर्षों की भाँति ता० ८, ९, १० मई सन् १९४९ ई० रविवार, सोमवार, मंगलवार को स्थान ब्राह्मपुर में बड़े धूमधाम से हुआ जिसमें बहुत रोचक और मनोहर भाषण हुये और जनता पर बहुत असर हुआ और सभा में काफी जनता ने भाग लिया।

—"आर्यसमाज कराकत (जौनपुर) का २५ वां वार्षिकोत्सव ता० ४ से ८ मई तक अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। तारीख ६ को महिला सम्मेलन में १००० देवियों ने भाग लिया। श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती, श्री ओ३म् प्रकाश जी पुरुषार्थी, माता प्रियम्वदा देवी जी तथा ठा० इन्द्रदेव सिंह जी आदि विद्वानों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।"

—आर्यसमाज निचलौल की रजत जयन्ती महोत्सव तारीख ८, ९, १०, ११ मई १९४९ को समारोह पूर्वक मनाया गया इसी अवसर पर पौराणिकों से शास्त्रार्थ रखा गया था जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा इसके अतिरिक्त आर्य सम्मेलन कवि सम्मेलन तथा सरस्वती सम्मेलन आदि हुये।

—निम्नलिखित आर्य समाजों के उत्सव निम्न तारीखों में श्री युत प० सत्यमित्र जी शास्त्री महो० सभा मन्डल सचालक के तत्वाधान में समारोह पूर्वक मनाये गये जिसमें शास्त्रार्थ महारथी पं० शिवशर्मा जी प० महादेव प्रसाद जी शास्त्री स्वा० इष्टानन्द जी प. विद्याभिक्षु जी एम. ए. आदि अनेक विद्वान् पधारे थे।

ता० १, २, ३ मई बड़हलगंज जिला गोरखपुर

ता० ४, ५, ६ मई कोपागंज जि.

ता० ७, ८, ९ मई मऊनाथ भञ्जन

ता० ११, १२, १३ मई बड़ागांव

ता० २२, २३, २४ दोहरी घाट

—३, ४, ५ मई को आर्य समाज हीमपुर (जिला बिजनौर) का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। आस पास के गाँवों की जनता की उपस्थिति बहुत अच्छी थी।

—धर्मार्थ, आर्य, औषधालय, पाठकपुर (उन्नाव) का दशमवर्ष ता० ३१-१२-४८ को समाप्त हुआ, इस वर्ष औषधालय से ग्रामीण जनता ने बड़ी संख्या में लाभ उठाया, तथा असमर्थ रोगियों के यहाँ पर जाकर प० चन्द्रदत्त जी शर्मा वैद्यभूषण ने बड़े परिश्रम से सेवा की।

—आर्य समाज भिनगा का छठवाँ वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक ता० १५, ३, ४९ से २०-३-४९ तक मनाया गया, ता० १९४९ को प्रातः काल आर्य समाज भवन भिनगा का शिलान्यास कार्य भिनगा नरेश श्री मान राजा चन्द्र मणिकान्त सिंह जू देव के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य समाज भूमि में श्री भगवती प्रसाद जी उप प्रधान और श्री ला० हरीशङ्कर जी ने एक एक कमरा तथा कामता प्रसाद जी उप मन्त्री ने यज्ञ शाला बनवाने का वचन दिया है कई सज्जनों ने ५१), ५१) रुपये का वचन दिये हैं। ता० २३, २४, अप्रैल को बरगदवाँ पड़वलिया तथा २५. २६४९ को जोखवा बाजार में आर्य समाज का प्रचार हुआ।

—गया आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ता० २८ अप्रैल से पहला मई तक बड़े समारोह के साथ मनाया गया जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध व्याख्याता पंडित अयोध्या प्रसाद जी बी० ए० वैदिक मिश्नरी कलकत्ता, प० रामनारायण जी शास्त्री, प० गगाधर शास्त्री, आदि के सारगर्भित भाषण हुये।

—आर्य समाज शाहजहाँपुर का वार्षिक उत्सव बड़े समारोह के साथ तारीख १९, २० अप्रेल व १, २ मई को मनाया गया जिसमें बड़े सन्यासी महा-उपदेशक और भजनीक पधारे थे। कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर प० बिहारी लाल काव्य तीर्थ, प० ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य और स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

उत्सव में काशी, अयोध्या, वृन्दावन, ऋषिकेश, हरिद्वार तथा दक्षिण भारत तक के दूर दूर के विद्वान सन्तों एव महात्माओं ने भारतीय संस्कृति भक्ति, ज्ञान, सभ्यता, सदाचार, विद्याप्रचार, तथा समाज सुधार आदि आदि विषयों पर भाषण किये।

हिन्दू कोडबिल के विरोध में भी सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास हुआ।

—आर्य समाज इटारसी का वार्षिक अधिवेशन ता० २१-४-४९ से ता० २४-४-४९ बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। अनेक विद्वानों के भाषण हुए।

—आर्य समाज टेकमां का तृतीय वार्षिक उत्सव ता० १९, २०, २१ मई को मनाया गया। जिसमें सुन्दर भाषण तथा धनुर्विद्या के प्रदर्शन हुये

—आर्य समाज, मुजफ्फरपुर का २६ वां वार्षिकोत्सव २० से २३ मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री स्वा० अभेदानन्द जी महाराज, प० रामनारायण जी शास्त्री आदि प्रख्यात विद्वान पधारे थे।

—श्री स्वा० हरिहर जी ने ग्राम निहाल में ३ मई से ९ तक लगातार यज्ञ कराया अत्यधिक जनता यज्ञ में श्रद्धा से सम्मिलित होती थी

श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री 'साहित्यरत्न' श्री प० विहारी लाल जी शास्त्री काव्य तीर्थ, श्री ब्रह्मानन्द जी दंडी पटा, श्री प० ओंकार मिश्र प्रणव, आदि - आदि विद्वान पधारे थे।

प्रचार

—श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी (जो पहले पाकिस्तान में रहते थे) चन्दौसी पधारे हुये हैं और नियम पूर्वक निरन्तर प्रातः ६ बजे से ८ बजे तक पारिवारिक यज्ञ कराते हैं, और प्रवचन भी होता है। इस क्रम से यहां की समाज को बड़ा लाभ पहुंचा है। यज्ञ के करने वालों की संख्या में वृद्धि हो गई है और यज्ञ के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई है। साप्ताहिक अधिवेशनों में भी प्रगति हुई है।

—आ. स गाजीपुर में ता २४।४।४९ को श्री सोमदत्तशर्मा उपदेशक सभा प्रचारार्थ पधारे आपके व्याख्यान तथा प्रचारादि से आर्यसमाज में विशेष जागृति हुई।

—ता० ... अप्रैल को सिमिगंज शिकोहाबाद में तहसील आर्य कान्फ्रेंस बड़ी धूमधाम से हुई। जिसमें समाज के पुनर्गठन और वैदिक क्रान्ति एवं चरित्र निर्माण के लिये कितनी ही उपयोगी योजनायें स्वीकार की गई।

अमेठी राज्य में वैदिक धर्म प्रचार

४ दिन तक आर्यसमाज अमेठी के उत्सव में अनेक विद्वानों के भाषण हुए। आत्मसुधार सम्मेलन स्वास्थ्य सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन गोरक्षा सम्मेलन, आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन, कवि सम्मेलन आदि समारोह भी हुए। इन सभी सम्मेलनों के मुख्य संयोजक श्री युवराज रणञ्जयसिंहजी हैं जो आजकल राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में स्थान स्थान पर भ्रमण कर रहे हैं। अखिल भारतीय आर्योपदेशक सम्मेलन लखनऊ में राष्ट्रभाषा सम्मेलन के भी संयोजक युवराज श्री रणञ्जयसिंहजी होंगे।

अमेठी के उत्सव के पश्चात गौरीगंज में सभा हुई और आर्यसमाज की स्थापना की गयी।

—आर्यसमाज बड़वाडीह (पलामू) का वार्षिक उत्सव ११, १२, और १३ अप्रैल १९४९ को हुआ।

शुद्धि समाचार

—आ० स० बड़वाडीह द्वारा ता० २३-३-४९ को बदरुद्दीन व ... की शुद्धि हुई बद्रीप्रसाद नाम रक्खा गया।

पता— नारायण स्वामी भवन, ५, हिवेट रोड

तार का पता—'आर्य सभा' लखनऊ

सम्पादक—पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार

वर्ष ५२ | अङ्क २१

लखनऊ, वैशाख शुक्र १३ गुरुवार सम्वत् २००६, वि ९ जून सन १९४९

दयानन्दाब्द १२६ आर्य्य संवत १९७२९४९०४९

वार्षिक मूल्य ६) छ:मास का ४ | प्रति ≡), विदेश में ८)

संयुक्तप्रांतीय आर्यप्रतितिनिधि सभा का नव वर्ष के लिये निर्वाचन

प्रधान	श्री राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री
उप प्रधान	श्री मदनमोहन सेठ जज
" "	श्री ठा० सुरेन्द्रविक्रमसिंहजी जज अधि० आर्यनगर सेटिलमेन्ट
" "	श्री बा० उमाशंकरजी वकील
मन्त्री	श्री प० रामदत्तजी शुक्ल एम. ए एडवोकेट
उप मन्त्री	श्री पं० धर्मपालजी विद्यालंकार
" "	श्री प० भृगुदत्तजी तिवारी तथा अधिष्ठाता आर्यमित्र
" "	श्री सत्यनारायणजी बनारस
अधिष्ठाता भूसम्पत्ति विभाग	श्री बा० कालीचरणजी
पुस्तकाध्यक्ष	श्री द्विजेन्द्र नाथ जी शास्त्री
कोषाध्यक्ष	श्री सुरेन्द्र शर्मा जी

शेष विभाग मन्त्री के आधीन रहेंगे।

श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री (प्रधान)

श्री प० रामदत्तजी शुक्ल एम.ए. एडवोकेट मन्त्री

श्री मदनमोहन सेठ जज (मुख्य उपप्रधान)

श्री पं० भृगुदत्तजी तिवारी उप मंत्री, अधिष्ठाता आर्यमित्र
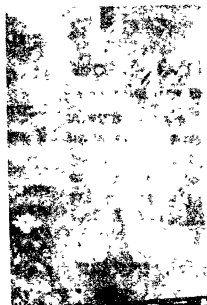
श्री प० सुरेन्द्र शर्माजी (कोषाध्यक्ष)

आर्य्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का सचित्र साप्ताहिक मुखपत्र

भारत पाकिस्तान ने कश्मीर कमीशन के सुझाव ठुकरा दिये

सेनाओं की वापसी पर दोनों पक्षों में मतभेद

श्रीनगर, ६ जून। यहाँ पर कश्मीर कमीशन के प्रमुख कार्यालय से प्रकाशित एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत और पाकिस्तान दोनों की सरकारों ने कमीशन की यह प्रार्थना ठुकरा दी है कि २८ अप्रैल को कमीशन द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों को बिना शर्त स्वीकार कर लिया जाय।

भारत और पाकिस्तान के कश्मीर सम्बन्धी झगड़े को निपटाने के लिए कश्मीर कमीशन अपनी नयी योजना इस सप्ताह के अन्त तक प्रकाशित कर देगा।

कमीशन के वक्तव्य में कहा गया है कि पहली जून से—जब भारत व पाकिस्तान के उत्तर खोले गये—कमीशन उन उत्तरों पर विचार कर रहा है। कमीशन को ऐसा जान पड़ रहा है कि कई मसलों पर भारत और पाकिस्तान के दृष्टिकोणों का अन्तर पर्याप्त कम नहीं हुआ है।

मतभेद मुख्यतः इस प्रश्न पर है कि रियासत से सब फौजों को किस प्रकार वापस बुलाया जाय जिससे कि जनमत संग्रह के अनुकूल परिस्थिति पैदा हो सके। जनमत संग्रह का सिद्धान्त दोनों सरकारों को स्वीकृत है। १३ अगस्त सन् १९४८ और ५ जनवरी सन् १९४९ दोनों दिनों के प्रस्तावों में कश्मीर कमीशन ने इसी मतभेद को दूर करने की चेष्टा की थी।

स्मरण रहे कि दोनों सरकारों द्वारा स्वीकृत विराम संधि का अत्यन्त महत्वपूर्ण निश्चय अमल में पहली जनवरी सन् १९४९ को लाया गया। आज चार महीने बीत जाने पर भी विरामसंधि प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के सिलसिले में दोनों पक्षों में कोई समझौता नहीं हो सका है।

★ ★ ★ ★

मंत्रियों के प्रति सौजन्यता पूर्ण व्यवहार करें

सरकार का आदेश

लखनऊ, ७ जून। प्रांतीय सचिवालय ने डिवीजनों के कमिश्नरों, जिला तथा दौरा जजों व अन्य विभागों के अध्यक्षों को एक परिपत्र द्वारा आदेश दिया है कि वे मंत्रियों के दौरे के अवसर पर उनके प्रति सौजन्यतापूर्ण व्यवहार करें।

भोपाल में हिंदी भी अदालत की भाषा बनी

भोपाल, ७ जून। भोपाल के चीफ कमिश्नर ने एक आज्ञा निकाली है जिसके अंतर्गत हिंदी को उर्दू के समान अदालतों में बराबर का पद मिला है। इस आज्ञा के बाद अदालतें दोनों भाषाओं में फैसले दे सकती हैं।

दक्षिण कोरिया पर एक हजार कम्यूनिस्टों का हमला

सियोल, ६ जून। दक्षिण कोरिया के सैनिक प्रधान ब्रिगेडियर जनरल चीयुंगदुक ने आज बताया है कि उत्तरी कोरिया के १००० कम्यूनिस्ट सैनिकों ने दक्षिण कोरिया पर हमला कर दिया है।

अमेरिकी सैनिक दक्षिण कोरिया खाली करने की तैयारी कर रहे हैं। खुफिया विभाग के ४४० पुलिस वालों ने त्यागपत्र दे दिये हैं, किन्तु पुलिस प्रधान ने त्यागपत्र स्वीकार करने में इंकार कर दिया है। सियोल में दंगों की रोकथाम के लिये व्यवस्था कर दी गयी है।

सिकिम का शासन भारत सरकार ने संभाला

महाराज ने शासन चला सकने में अपनी असमर्थता प्रगट की

नयी दिल्ली, ७ जून। भारत सरकार के वैदेशिक विभाग की एक घोषणा में बताया गया है कि शान्ति रक्षा के हेतु भारत सरकार आज से सिकिम का शासन भार अपने हाथ में ले रही है।

भारत सरकार की घोषणा में बताया गया है कि ६ जून को महाराज सिकिम ने राजनीतिक अफसर को यह सूचित किया कि भारत सरकार की सहायता बिना शासन चलाना कठिन है।

महाराज के अनुरोधानुसार शीघ्र ही एक दीवान सिकिम भेजा जायगा। सिकिम राज्य कांग्रेस तथा महाराज सिकिम में संघर्ष चल रहा है उसके फलस्वरूप संभावित अव्यवस्था को रोकने की क्षमता महाराज तथा उनके मन्त्री मण्डल में न होने के कारण भारत सरकार को यह कदम उठाना पड़ा है।

विधान परिषद्

नयी दिल्ली, ७ जून। आज विधान परिषद् ने रियासतों में हाईकोर्टों के निर्माण, उनका संगठन कार्य तथा अधिकारों के सम्बन्ध में ८ धारायें स्वीकृत कीं।

न्यायाधीशों के अवकाश लेने की आयु के सम्बन्ध में आज फिर बहस हुई।

प्रधान जज भारत संघ के राष्ट्रपति की सलाह से अवकाश प्राप्त जजों से हाईकोर्ट का जज बनने के लिये आमंत्रित कर सकता है इस धारा पर पर्याप्त बहस हुई। डा० अम्बेदकर ने बताया कि यह धारा ब्रिटिश और अमरीकी न्याय व्यवस्था से ली गयी है और ऐसी ही धारा सर्वोच्च न्यायालय के सम्बन्ध में विधान परिषद् द्वारा स्वीकृत हो चुकी है।

जजों द्वारा अवकाश ग्रहण करने की आयु निश्चित करने के सम्बन्ध में श्री टी. टी. कृष्णमचारी ने एक संशोधन रखते हुए कहा कि ६५ की बजाय ६० वर्ष की आयु में अवकाश लेना अनिवार्य कर दिया जाय। श्री के. एम मुंशी ने आपका समर्थन किया। श्री पी. के. सेन ने विरोध करते हुए कहा कि हमारे देश में कितने ही लोग ६० वर्ष की आयु के बाद भी जन कार्यों में संलग्न रहते हैं। श्री बृजेश्वर प्रसाद ने कहा कि इस सम्बन्ध में कोई नियम न बनाया जाय वरन् यह अधिकार प्रधान जज अथवा राष्ट्रपति को दे दिया जाय।

श्री शिब्बन लाल सक्सेना ने कहा कि रियासतों के जजों की नियुक्ति में गवर्नरों से सलाह लेने में जजों की मान रक्षा नहीं हो सकेगी।

प्रांत में शीघ्र ही प्रति दिन ७०० टन सीमेंट का उत्पादन होने लगेगा

नैनीताल, ५ जून। प्रामाणिक सूत्र से मालूम हुआ है कि युक्त प्रान्त में शीघ्र ही प्रति दिन ७०० टन सीमेण्ट का उत्पादन होने लगेगा।

प्रान्तीय सरकार मिर्जापुर से ५२ मील पर राबर्टस् गंज में अपनी पहली सीमेन्ट फैक्ट्री कायम कर रही है। प्रान्त को ३,५०० टन सीमेन्ट की प्रति दिन जरूरत है।

१ जुलाई से रामपुर का शासन केंद्रीय सरकार के हाथ में

रामपुर। रियासत विभाग के सलाहकार श्री वी० पी० मेनन ने पत्र संवाददाताओं के समक्ष कल भाषण करते हुए बताया कि हिंद सरकार ने १ जुलाई से रामपुर का शासन अपने हाथ में लेने का निश्चय किया है। बाद में रियासत युक्त प्रांत में मिला दी जायगी। रियासत की असेम्बली भंग कर दी गयी, किंतु मन्त्री १३ जून तक काम संभालेंगे।

रामपुर के नवाब ने विलीनीकरण के मसौदे पर हस्ताक्षर कर दिया।

लंका के साढ़े आठ लाख भारतीयों में से १ लाख भी नागरिक नहीं हो सकेंगे

नयी दिल्ली। लंका भारतीय कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ए० अजीज ने कहा कि लंका नागरिकता कानून के अंतर्गत साढ़े आठ लाख भारतीयों में से एक लाख भी नागरिक न बन सकेंगे। श्री अजीज ने कहा कि कानून 'अपमानजनक' है और इसे जान बूझकर भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखने के लिए बनाया गया है।

विन्स्टन चर्चिल यूरोपियन कौंसिलके प्रथम सम्मेलनके अध्यक्ष होंगे?

लन्दन। यूरोपियन कौंसिल की प्रथम बैठक में जो अगस्त में स्ट्रासबोर्ग में होगी उसमें ब्रिटेन की ओर से हर्बर्ट मौरीसन ब्रिटिशमंडल के नेता होकर जायेंगे।

ब्रिटिश सरकार इसी सप्ताह पार्लियामेंट में ब्रिटिश मंडल के सदस्यों के नाम घोषित करेगी जिसमें ११ लेबरपार्टी के, ६ टोरी तथा १ लिबरल सदस्य होगा।

ट्रावनकोर के महाराजा ने अपनी १८-२० हजार एकड़ भूमि रियासत सरकार को दी

एसोसियेटेड प्रेस को मालूम हुआ है कि ट्रावनकोर के महाराजा की १८-२० हजार एकड़ निजी भूमि ट्रावनकोर की सरकार को दे दी गयी है। इस भूमि के संबंध में रियासत की सरकार को पूरे अधिकार देने के लिए महाराजा की ओर से एक घोषणा भी हुई है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः, सत्यं ब्रवीमि बध इत् स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥

ऋ० १०। ११७। ६।

—दुर्बुद्धि मनुष्य व्यर्थ ही भोग सामग्री को पाता है, सच कहता हूँ कि वह भोग सामग्री उस मनुष्य के लिये मृत्युरूप होती है। वह न तो यज्ञ द्वारा अर्यमा आदि देवों की पुष्टि करता है न अपने साथी मनुष्यों की। वह अकेला खाने—भोग करने वाला मनुष्य पाप को ही खाने वाला होता है।

ता० ६ जून १९४९

गाजीपुर का सफल वृहदधिवेशन

भावी पुरोगम

गाजीपुर का अधिवेशन सफलता पूर्वक समाप्त हो गया। आर्यजनों के विशेष आग्रह पर, सौभाग्य से, श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी ने अग्रिम वर्ष के लिये भी प्रधान पद पर कार्य करना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार श्री पं० रामदत्त जी शुक्ल भी सर्वसम्मति से पूर्ववत् मन्त्री निर्वाचित हुये। सभा के अधिकारियों में इस वर्ष कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ परन्तु सभा को, स्वर्गीय आर्य नेता व सभा के भू० पू० प्रधान श्री मशालसिंह जी के योग्य पुत्र श्री कुंवर सुरेन्द्रविक्रमसिंह जी जज हरदोई निवासी का सहयोग प्राप्त हुआ और वे सभा के अन्यतम उपप्रधान निर्वाचित हुये।

प्रतिनिधियों की संख्या की दृष्टि से यद्यपि यह अधिवेशन अत्यन्त अधिक सफल नहीं कहा जा सकता तथापि प्रान्त की अन्तिम सीमा मेरठ गजियाबाद, मुजफ्फरनगर आदि दूरस्थ स्थानों के प्रतिनिधियों के गाजीपुर जैसे प्रान्त के एक दूसरी सीमा पर स्थित स्थान में पहुँचने से प्रमाणित होता है कि प्रान्त के आर्य पुरुष सभा के संगठन व उसके महत्व को अच्छी प्रकार अनुभव करते हैं।

सभा के साधारण अधिवेशन के साथ इस वर्ष सभा का विशेष नैमित्तिक अधिवेशन भी हुआ था। इस अधिवेशन में सभा के नियमों में गत वर्ष किये गये संशोधन के निश्चय के विरुद्ध सभा के पूर्व के ३१ की टिप्पणी को यथा पूर्व स्वीकार करने के लिये बाध्य होना पड़ा।

संस्थाओं के जीवन में कभी कभी ऐसे अवसर उपस्थित हो जाते हैं जब कि आवेशवश अथवा भावुकता वश अनुभव के विरुद्ध निश्चय हो जाया करते हैं। इसी प्रकार सभा के ३० वर्षो के कटु अनुभवों के आधार पर निर्माण किये गये कई वैधानिक नियमों में गत वर्ष परिवर्तन हो गया था और सभा के वैतनिक कार्यकर्ताओं को निर्वाचन में भाग न ले सकने और निर्वाचित न हो सकने का नियम शिथिल कर दिया गया था। एक वर्ष के अन्दर ही अन्दर उसके अनेक दुष्परिणाम प्रकट होने लगे और सभा के कार्य में असाधारण प्रकार के संकट अनुभव किये जाने लगे। अतः सभी संस्थाओं के समान ही इस वर्ष पुनः वैतनिक कार्यकर्त्ताओं के निर्वाचित न हो सकने व निर्वाचन में भाग न ले सकने से सम्बन्धित सभा के विधान की २१।१ की टिप्पणी को यथा पूर्व अङ्कित रहने देना स्वीकार किया गया है। समय के व्यतीत होने के साथ साथ धीरे-धीरे पुनः स्वस्थ साधारण स्थिति प्रत्यावर्तित हो जायगी, ऐसी आशा की जाती है।

इसी प्रकार एक द्वितीय निर्णय यह भी हुआ था कि सभा का वर्ष सौर वर्ष के अनुसार हुआ करे परन्तु इसमें भी बहुत सी व्यावहारिक कठिनाइया उत्पन्न हो गई। विशेष कर हिसाब किताब और आर्यसमाजों के निर्वाचन आदि में तथा सभा व समाजों के कार्य में ठीक-ठीक तारतम्य नहीं हो पाया और कार्य अव्यवस्थित होने लगा। अतः सभा का वर्ष पूर्ववत जनवरी से प्रारम्भ हो कर दिसम्बर तक हुआ करेगा।

यह तो हुये विधान सम्बन्धी परिवर्तन। इसके अतिरिक्त अधिवेशन की एक विशेषता यह रही कि प्रधान राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी ने सभा के कार्य को प्रगति देने, प्रचार कार्य को उन्नत करने के लिये सामूहिक तथा केन्द्रीय रूप से एक सीमा से प्रचार कार्य प्रारम्भ कर दूसरी सीमा तक प्रचार आंदोलन के संगठन की एक योजना बनाई है जिससे प्रचार में नवीन स्फूर्ति की आशा की जाती है। इसी प्रकार गुरुकुल वृन्दावन को अधिक उन्नत तथा उपयोगी बनाने तथा दैनिक आर्यमित्र की शीघ्र प्रकाशन व्यवस्था तथा लखनऊ में एक उत्तम पुस्तकालय की स्थापना की योजनायें भी निर्माण की गई हैं। आर्य पुरुषों का यदि उचित सहयोग प्राप्त होगा तो वह सब कार्य सुगमता से सम्पन्न हो सकेंगे।

गाजीपुर के आर्य पुरुषों ने इतने अधिक प्रतिनिधियों के स्वागत सत्कार तथा आतिथ्य में किसी प्रकार की न्यूनता न होने दी इसके लिये गाजीपुर के सभी आर्य पुरुष धन्यवाद के पात्र तो हैं ही परन्तु सबसे अधिक सराहना श्री महावीर प्रसाद साहुजी की है कि जिन्होंने इस वृद्धावस्था में भी अपनी अत्यन्त उद्यम शीलता, उत्साह तथा प्रबन्ध चातुर्य से अभ्यागतों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। आपकी मुक्तहस्त दान शीलता, वैदिक धर्म, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से प्रेम न केवल अनुकरणीय ही था अपितु नवयुवक आर्य पुरुषों में भी उमङ्ग, उत्साह और स्फूर्ति उत्पन्न करने वाला था। प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में आर्यसमाज के प्रधान श्री बा० देवकीनन्दनजी, डी. ए वी कालिज गाजीपुर के प्रिन्सिपल श्री बा० सत्यनारायणजी, मैनेजर श्री वसिष्ठनारायणजी, सैक्रेटरी श्री बा० शीतलाप्रसाद गुप्तजी आदि सभी आर्य पुरुष व कार्यकर्त्ता सदैव उपस्थित रहते थे परन्तु कालेज के हैड मौलवी श्री सय्यद मुहम्मद नसीर साहब की शिष्ट और मधुर स्मृति अधिवेशन में सम्मिलित, सभी आर्यपुरुषों को बहुत समय तक स्मरण रहेगी। वस्तुतः वे ही मुख्य रूप में पितनके का सहारा थे। सदैव प्रस्तुत, प्रत्येक आवश्यकता को पूर्ण करने वाले मुख्य यजमान प्रतीत होते थे। प्रबन्ध सम्बन्धी ऐसी कोई समस्या न थी जिसका वे मुस्तैदी से हल न करते हों—ऐसे परिश्रमी और कुशल कार्यकर्ता कालेज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे, इसमें सन्देह ही क्या है।

इस प्रकार यह चुनाव समाप्त हो गया। अब आर्य पुरुषों को इस संकट काल में कटिबद्ध होकर आर्य समाज के संगठन को और अधिक दृढ़ करने और उसके कार्य को प्रगति देने का यथाशक्ति से यत्न करना चाहिये। और सभा के कार्यों में पूर्ण सहयोग देकर अधिकारियों की उत्साह वृद्धि करना चाहिये।

'क्षय' की विभीषिका

दिन प्रतिदिन अत्यन्त तीव्रता से बढ़ती हुई क्षय की बीमारी से जनता त्रस्त हो उठी है। क्षय की बीमारी ग्रामों में उतनी नहीं है जितना कि घने बसे हुये बहु जनसंख्या वाले बड़े २ नगरों में है जहाँ न तो खुले हुये, निवास योग्य, गृह ही उपलब्ध हैं और न उचित पोषक भोजन ही प्राप्त होता है। कलकत्ता, अहमदाबाद, बम्बे, कानपुर आदि व्यावसायिक नगरों में जहाँ कि कारखानों के कारण श्रमिकों की संख्या बहुत अधिक हैं, यह बीमारी इतनी अधिक फैली हुई है कि इस बीमारी के ग्रास होकर श्रम करने २ उनका मृत्युमुख में चला जाना साधारण सी घटना हो गई है।

२० दिसम्बर सन् ४८ को कलकत्ता में डा० बिलीमोरिया के प्रधानत्व में क्षय बीमारी को रोकने का कार्य करने वालों (Tuberculosis workers conference) की एक सभा हुई। इस कान्फ्रेन्स में गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य की रुचि, भारत सरकार की स्वास्थ्य मन्त्री श्रीमती अमृतकौर, बङ्गाल के प्रधान मन्त्री डा० बी० सी० राय तथा अन्य क्षय विशेषज्ञ के सम्मिलित होने से ज्ञात होता है कि इस विभीषिका से जनता को बचाने के लिये सरकार का ध्यान आकर्षित हुआ है। इस कान्फ्रेन्स की कार्यवाही पढ़ने से द

ातें स्पष्ट हुई हैं। प्रथम तो यह कि भारत में क्षय की बीमारी, जितना अनुमान किया जाता था, उससे भी बहुत अधिक फैली हुई है और दूसरा यह कि इस भयकर बीमारी को रोकने का बहुत कम उपाय किया जा रहा है। वैसे तो इस सत्य के प्रकट होने मे कोई नवीनता नहीं है परन्तु यदि इन्हें संख्याओं में प्रकट किया जावें तो अवश्य ही प्रभाव डालने वाली हैं।

इस समय भारत में ५ लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष क्षय से मृत्युमुख में चले जाते हैं। डा० वैंजमिन के कथनानुसार प्रति १ लाख व्यक्तियों में से २०० से लेकर ४०० तक मनुष्य देहातों में इस बीमारी का शिकार होते है। यदि अन्य देशों से तुलना की जाय तो आस्ट्रेलिया मे प्रति लाख केवल ३३ न्यूजीलैण्ड मे ३८, अमरीका में ४०, इङ्गलैण्ड वेल्स मे ५६, स्काटलैण्ड मे ७४, नीदरलैण्ड मे ८६, फ्रान्स मे १०६ और फिनलैण्ड मे १५७ का अनुमान है।

तुलना मे भारत जैसे विशाल, खुले हुये और स्वास्थकर जल वायु वाले देश मे ४०० व्यक्तियों की मृत्यु-संख्या अवश्य हीं चौका देने वाली है। उन लाखों व्यक्तियों कीं सख्या जो अभी क्षय प्रारम्भ होने की प्रारम्भिक दशा में है, का अनुमान कर हृदय कापने लगता है। 'बीमारी अच्छा करने की अपेक्षा बीमारी रोकने के सिद्धान्त का समर्थन प्रत्येक समझदार व्यक्ति करता है। बङ्गाल के प्रधान मन्त्री डा० राय ने इसी सम्मेलन में इस प्रसग मे ध्यान आकर्षित करते हुये कहा था कि 'क्षय' और 'कोढ़' की बीमारियों का कारण अधिकतर उसके साधारण स्वास्थ की न्यूनता और हीन आर्थिक स्थिति का होना है। भारतीयों की आर्थिक स्थिति और उनके जीवन स्तर के उन्नत होने मे बहुत समय अपेक्षित है, तबतक प्रतीक्षा नहीं की जा सकती अतः इस जनसहारक बीमारी के रोकने को सर्व प्रथम कर्तव्यों में समझाजाकर इसके निरोध के उपायों की ओर तुरन्त ध्यान दिया जाना चाहिये। भारत सरकार के क्षय निरोधक विभाग के परामर्शदाता डा० वैन्जमैन ने बतलाया है कि इस समय देश को ६००० सस्थान (Clinic) और कम से कम ५ लाख रोगियों के लिये, पृथक निवास स्थान की आवश्यकता है जब कि इस समय भारत मे केवल १५ क्लीनिक्स और ७००० बैड्स है। अर्थात् क्षय के १००० बीमारों के उपचार के लिये केवल १ स्थान है—यह ऐसे बीमार हैं जिन्हें तुरन्त ही स्वस्थ लोगों से पृथक् रखकर इलाज किया जाना अनिवार्य है।

दुःख की बात यह है कि इस गम्भीर स्थिति की ओर गवर्नमैन्ट का ध्यान पूर्ण रूप से आकर्षित नहीं हुआ है। वह अपनी आय का अत्यन्त स्वल्प भाग ही इस मद मे खर्च करती है। भारत सरकार की स्वास्थ मन्त्राणी राजकुमारी अमृतकौर ने भी इस कोष में पर्याप्त धन होने पर भी विभाग में अधिक धन व्यय न किये जाने और इस बीमारी के रोकने के लिये उचित साधन व व्यवस्था न करने की असमर्थता पर दुख प्रकट किया है। दिल्ली से गत २७ जनवरी को जो अंक प्रकाशित हुये है उनसे ज्ञात होता कि देश के सबसे बड़े व्यावसायिक क्षेत्र कलकत्ता में, जूट के मजदूरों में ४ प्रतिशत व्यक्ति इस बीमारी से स्पष्ट रूप से ग्रसित हैं जब कि बङ्गाल के स्वास्थ मंन्त्री डा० के० एस० राय ने बतलाया है कि सरकार इस ३ करोड़ की जनसख्या वाले प्रान्त पर केवल १ करोड़ रुपया ही व्यय कर रही है। अभी पिछले वर्षों आस्ट्रेलिया ने 'क्षय विरोधी आन्दोलन' किया था जिसमे उसने २० वर्षों में ४० करोड रुपया व्यय करने का निश्चय किया है जब कि आस्ट्रेलिया की आबादी केवल ७५ लाख मात्र है।

क्षय से युद्ध करना सदैव ही अत्यन्त कठिन कार्य रहा है। इस कार्य में सफलता अत्यन्त धैर्य, स्थिरता और निरन्तर यत्नों द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। ज्ञात हुआ है कि बी सी. जी (B C.G) नामक टीके की (Vaccine) दवा (Bacilus calmatta Gurens) जिसका कि नवीन आविष्कार हुआ है, इस बीमारी को रोकने के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई समझी गई है और उसका उपयोग किया जायगा। इसी प्रकार भारत सरकार द्वारा इलाज के लिये एक रेडियो ग्राफिक यूनिट Mass Chest radiographic unit) की स्थापना की जा रही है जिसके इङ्गलैण्ड से उपकरण मगवाये जा रहे हैं।

देश के लिए एक केन्द्र पर्याप्त नहीं है। होना यह चाहिये कि प्रत्येक प्रान्त में कम से कम एक केन्द्र स्थापित किया जावे। यद्यपि इनमे प्रत्येक केन्द्र की स्थापना मात्र मे १ लाख १३ हज़ार तथा कार्य को चालू करने में १६ हज़ार का व्यय अनुमान किया जाता है जो प्रान्तीय सरकारों के लिये कुछ भी अधिक नहीं है।

इसके अतिरिक्त इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है, जैसा कि भोर कमेटी (Bhore Committee) ने परामर्श भी किया है एक 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य सघ' की स्थापना की जाय जो देश के प्रत्येक व्यक्ति के लिये उचित इलाज की व्यवस्था करे। यह महत्वपूर्ण कार्य केवल गवर्नमेण्ट ही कर सकती है। उचित सैनोटोरियम और हास्पिटल खोले जांय, घनी आबादी को विरल और जनता को शुद्ध दुग्ध व पौष्टिक भोजन प्राप्त करने की उचित व्यवस्था की जाय। 'पान-सुपारी' के खाने की आदत के विरुद्ध, जिसके कारण सम्पूर्ण देश का देश 'पाकिस्तान' सा दिखलाई दिये जाने की आशका है, आन्दोलन होना चाहिये और जनता को इस बीमारी तथा अन्य छूत की बीमारी से बचने की शिक्षा देने का यत्न करना चाहिये।

डा० वी. सी. राय प्रधान मन्त्री तथा उनके अन्य १२ डाक्टर सहयोगियों ने २१ फरवरी को घोषणा की है कि वैशीलेट काल्मेंट ग्यूरीन (B C G.) यदि सामूहिक ढग पर क्षय निरोध के लिये प्रस्तुत किया जावे तो क्षय से मृत्यु सख्या घटाने में अत्यन्त प्रभावकारी है, हानि रहित है और बीमार को पृथक रखने की आवश्यकता नहीं। भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के डायरेक्टर जनरल ने भी एक विज्ञप्ति द्वारा इसका समर्थन किया है।

भारत सरकार ने जून सन् ४८ मे देश मे बढ़ती हुई क्षय की बीमारी पर एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा विचार करने की घोषणा की थी। ईसके बाद अगस्त सन् ४८ से इसका सफल परीक्षण मद्रास के मदनापल्ली तथा देहली मे किया गया। सम्भव है कि चेचक के टीके समान ही प्राम्भ में जनता को सन्देह हो परन्तु यदि यह टीका उपयोगी सिद्ध हुआ, जैसा कि डाक्टर कहते हैं तो राष्ट्र को हानि पहुचाने वाले एक बडे आतङ्क से मनुष्य का छुटकारा हो जायगा।

यह टीका पेरिस के पास्टर इन्स्टिच्यूट के १३ वर्ष के सावधान परीक्षण का फल है। सन् १६२१ से इस टीके का प्रयोग मनुष्य पर किया जा रहा है। सन् ४८ के अन्त तक डैन्मार्क, नारवे और स्वीडन में १० लाख व्यक्तियों को टीका लगाया गया था। अमेरिका, कनाडा और रूस में भी इसका प्रयोग हो रहा है। १ करोड़ से अधिक व्यक्तियों के इसका टीका लगाने का अनुमान किया जाता है।

उपरोक्त घोषणा में डा० बी० सी० राय, डा० जीवराज मेहता, इण्डियन मैडीकल कौंसिल के प्रधान डा० के० एस० रे, डा० के० सी० राजा भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के डायरेक्टर आदि अनेक प्रसिद्ध डाक्टर सम्मिलित हैं।

भारतीय सरकार और प्रान्तीय सरकारों का कर्तव्य है कि देश को इस बीमारी से मरने से बचाने के लिये चुनाव आदि के व्यर्थ के प्रोपेगैण्डा में धन व्यय न कर इस उपयोगी कार्य में धन व्यय करें। केवल गवर्नमैण्ट ही यह कार्य कर सकती है, अन्य कोई नहीं।

"आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड"

५, हिल्टन रोड लखनऊ

श्रीमान् जी नमस्ते!

"आर्य मित्र प्रकाशन लि०" के हिस्सेदारों की प्रथम मीटिंग नारायण स्वामी भवन, ५ हिल्टन रोड लखनऊ में रविवार ता० २६ जून १६४६ को समय ३ बजे सायकाल होगी।

कार्य-क्रम निम्न प्रकार है—

१. कम्पनी की प्रगति की रिपोर्ट और कार्य सम्बन्धी कठिनाइयाँ।

२. डाइरेक्टरों का चुनाव।

३. अन्य विषय प्रधान जी की आज्ञानुसार।

भवदीय—

मैनेजिंग डाइरेक्टर

दयानन्द के सिन्धी सिपाही

[श्री ताराचन्द गाजरा]

१८९४ की बात है, मैं देश सुधार स्कूल में पढ़ता था, और नित्य सायकाल पिता जी के साथ सैर करने को जाया करता था। एक दिन रात को भोजन के पश्चात् पिता जी ने घर के सब लोगों को इकट्ठा किया और मुझे कहा कि खड़े होकर व्याख्यान दो। जो वक-वास उस समय मैंने की वह मुझे इस समय भी याद है। माता जी बहुत असन्तुष्ट हुई, परन्तु पिता जी ने कहा कि नाराज होने की बात नहीं, धीरे २ सीख जायेगा, मैं उसे सिखा दूंगा। सिन्ध मे आर्य समाज का पहला प्रचारक जिसके शरण में मैं बैठा वह मेरे पिता जी ही थे। मांस, शराब, तम्बाकू के विरुद्ध सारी आयु प्रचार करते रहे। आप शिकारपुर समाज के मन्त्री थे। आपके विचारानुसार स्त्रियों और पुरुषों का मेल मिलाप हानिकारक था। आप का शुभ नाम श्री देवमल गाजरा था।

१८९६ में कराची से मैं शिकारपुर पहुंचा। और कई वर्ष वहां ही रहा। उन दिनों आर्य समाज के लिये किराये पर मकान लिया गया और नियमानुसार अधिवेशन होने लगे। सक्खर से कई सज्जन पहुंच जाते थे। हम लोग उनके साथ बाजारों में से गीते गाते गुज़रते थे। इस जलसे के अगुवा श्री प० तुलाराम जी थे। वे स्वय गीत बनाते थे और स्वय गाते भी थे और सरल भाषा में व्याख्यान भी करते थे। अपनी आयु के अन्त भाग में आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध का काम करते थे, धर्म प्रेम बड़ा गहरा था, सख्त बीमार थे, परन्तु उत्सव में जाना आवश्यक समझा गया। बीमारी की परवा नही करते हुये, उत्सव में पहुँचे। व्याख्यान दिये और घर पर लौट आये, परन्तु फिर बिस्तर से नही उठ सके।

इनके अतिरिक्त श्री पं० दौलत राम जी की विद्या और शान्त स्वभाव के सामने सब लोगों का शीश झुकता था। श्री रामरतन जी की सरलता तथा उत्साह हमें आकर्षित करता था। श्री ठाकुर प्रवीण सिंह जी के मीठे गीतों पर लोग लट्टू हो जाते थे। इन तीनों के होते हुवे भी सिन्धी भाइयों का जमघट प० पूर्णानन्द जी के कमरे में ही लगा रहता था। पंडित जी जन्म के सिन्धी थे। १०, ११, वर्ष की आयु में सक्खर में स्कूल से भाग कर एक साधु के संग हो गये। काशी जाकर विद्यापार्जन किया। किसी समय लाहौर में श्री प० गुरुदत्त विद्यार्थी के इन्हे दर्शन हुये। वह आर्य समाज के सिद्धान्तो के साथ प्रेम हो गया। महात्मा मुंशीराम जी के परामर्श से गेरुवे वेष को छोडकर गृहस्थ में पुनः लौट आये। और आर्य समाज के काम मे लग गये। सैकड़ा शास्त्रार्थ किये हजारों व्याख्यान दिये, कुछ पुस्तकें भी लिखीं, विदेश यात्रा भी की थी। सिन्ध निवासियों को उन पर, उनकी शैली पर आज भी गौरव है।

१९०६ का समय था मैं कालेज में पढ़ता था। वेकेशन में घर पर आया था ताया जी के घर की बैठक में जाकर आर्य पत्रिका, आर्य मैसेन्जर, और हारबिन्जर के पत्र उलटने लगा। सिन्ध सम्बन्धी एक लेख पर दृष्टि पडी, एक कोई केवल था जिसने अपने आप को ईश्वर का अवतार प्रसिद्ध किया हुआ था, और सम्राट से लेकर पटवारी तक हरेक कर्मचारी को अपनी सभा में आने का निमन्त्रण दिया था। आर्य पत्रिका ने इस ढोंग की बड़ी समालोचना की! केवल के ढोंग ने उसके गुरु जीवन लाल को चिन्ता में डाल दिया। उन्होने भिन्न २ धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। किसी ने सत्यार्थ प्रकाश हाथ में दे दिया। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने उन्हे आर्य समाजी बना दिया। जीवनलाल जी सिन्ध के एक अच्छे कवि थे। गाने वाले भी बहुत अच्छे थे। न तबले के मुहताज़ थे न हारमोनियम के गुलाम। एक पैसा लेकर मेज़ के ऊपर आवाज़ करते चलते थे और पूरे स्वर ताल में गाते चलते थे। इनकी बोली में मनोरञ्जन पूर्ण शिक्षा का भाग अधिक होता था। कद था बडा लम्बा, वर्ण था गौर, मस्तिष्क ऊँचा। लोग उनके पीछे भागते आते थे। सिन्ध की आधी समाजें तो उनके द्वारा ही बनी। १९२२ में अन्धकोट में प्रातः काल की सन्ध्या करते हुवे स्वर्ग वासी हो गये।

१९११ का साल था। मैं एम० ए० की परीक्षा की तैयारी के लिये आर्यसमाज कराची के मन्त्री श्री देवमल गागलमल के पास रहता था। एक दिन रात के भोजन के पश्चात् समाज के प्रचार की बातो में लग गये। समाज का प्रचार कैसे किया जावे। बातो बातो मे सारी रात बीत गयी। मुझे तो न परीक्षा याद रही, न पुस्तक। न कुछ रुकावट ही अनुभव हुई। देवमलजी की लगन ऐसी ही थी। लगन के साथ विद्या भी गहरी थी। अथर्ववेद सारा याद था। छहों दर्शनों के पढ़े हुये थे। आयुर्वेद का ज्ञान भी पर्याप्त था। युवावस्था में आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से सिन्ध और बिलोचिस्तान में प्रचार कार्य करते रहे। १९१४ में सन्यास लेकर योगाभ्यास मे लग गये। चतुर्थ आश्रम में उनका नाम स्वामी देवानन्दजी था।

१९१८ मे होमरूल आन्दोलन के दिनों मे स्वामी कृष्णानन्दजी के दर्शन हुए। आप कई वर्ष लगातार आर्यसमाज का ही काम करते रहे। फिर काग्रेस और आर्यसमाज दोनों का ही काम करते रहे। काग्रेस के काम मे आप कई वार जेल मे गये। थरपारकर में जो कुछ भी आर्यसमाज का प्रचार हुआ है वह उन्हीं के द्वारा हुआ है। थरपार्कर ने ही उनको असेम्बली की कुर्सी पर बिठाया। देश के विभाजन होते ही आपने असेम्बली से त्यागपत्र दे दिया। इस समय सिन्ध के हिन्दुवो की जितनी सेवा श्री स्वामी कृष्णानन्दजी ने की है, उतनी और किसी ने नही की। अभी भी सिन्ध में वह विद्यमान है और जो बचे हुये हिन्दू वहा पर है उनके लिये ज्योतिस्तम्भ के समान है।

सन् १९२३ में एक योगी कृष्णानन्दजी हुए है। आपका जन्म सिन्ध मे ही हुआ था। आप भी स्वामी सर्वदानन्दजी के शिष्य थे। आप सिंध मे कई बार आते और ग्राम २ में फिर कर प्रचार करते रहे। आपका अन्तिम बार दर्शन १९४६ में हुआ। अब पता नही वे कहां है!

मैंने देखा नही, लेकिन कथा सुनी है। श्री धर्मवीर पं० लेखराम जी सिन्ध में पधारे थे और कई दिन हैदराबाद में रहे थे। आपका त्याग, आपकी तपस्या और आपके धर्म प्रेम का प्रभाव कई युवको पर पडा। २ युवक एकाएक घर छोड भाग गये उनमें एक चूहड़मलजी थे। आपने जाकर शास्त्रो का अध्ययन किया और सन्यासी बने। आपका नाम बालानन्द था। आपके प्रचार का क्षेत्र यू० पी० मे था। सुना है, किसी राजा ने आपको एक हाथी दिया था। जिस पर बैठ कर वे प्रचार करते थे। ऐसा भी सुना है कि इस हाथी के बिगड़ जाने से बालानन्द जी की मृत्यु हुई।

आज हम इन आदर्श उपदेशकों के त्याग, तप, धर्म प्रेम और धर्म पर बलिदान होने की भावना के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते है, और आशा करते है कि आर्य-संस्कृति के प्रचार एवं संसार में आर्यजन ऐसे ही त्याग, तप और धर्म पर सहर्ष बलिदान होने की भावना को जागृत करेंगे।

सूचना

स्वागत समिति ने अपनी १ जून की बैठक मे ऋतु मे असाधारण परिवर्तन और स्थानीय परिस्थितियो से आई अनिवार्य कठिनाइयों के कारण, १४वें संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन को, जो १० से १३ जून तक बिजनौर नगर मे होना था, अल्पकाल के लिये स्थगित कर दिया है।

सम्मेलन की तैयारिया यथापूर्व जारी हैं और स्वागत समिति पूर्ण प्रयत्न के साथ उसे सफल बनाने मे क्रियाशील है। शीघ्र ही सम्मेलन की निश्चित तिथियाँ घोषित कर दी जायगी!

क्या आप जानते हैं?

अमेरिकी टेलिफोन एण्ड टेलिग्राफ कम्पनी ने हाल ही मे सूचना दी है कि युद्धोत्तरकाल मे ३॥ वर्ष मे अमेरिका मे १ करोड से भी अधिक टेलिफोन लगाए गए हैं। ऐसा अनुमान है कि इस कम्पनी द्वारा २ लाख से भी अधिक नये टेलिफोन प्रतिमास लगाए जा रहे हे।

* * * *

अमेरिका के व्यापार विभाग की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि १९४८ मे नवीन विधियों तथा आविष्कारों के लिए १५,९९१ पेटेंट लाइसेन्स प्रदान किए गए। इस प्रकार अनुमान है कि प्रत्येक १,८०० व्यक्तियों के पीछे एक पेटेन्ट लाइसेन्स दिया गया है।

* * * *

देशकालिक परिस्थिति के उत्तरोत्तर आमूलचूल कायाकल्पिक परिवर्तनों के कारण वर्तमान युग का साधारण ही नहीं अपितु महामानव भी सतत उत्पन्न होने वाली नवीन और अभूतपूर्व समस्याओं तथा जटिल प्रश्नों के स्वरूप की वास्तविकता, उग्रता और प्रभावों को समझने में ही समीचीनतया सक्षम नहीं प्रतीत हो रहा है, उनके समुचित समाधान की तो कथा ही क्या है। भौतिक वैज्ञानिकता रूपी महामाया के घटाटोप प्रकोप और आध्यात्मिकता प्रधान सांस्कृतिक शिक्षा और संस्कारों से सर्वथा शून्य होकर विलासबहुल जीवन सामग्री संकलन में सुसलग्न मानव आज दिङ्मूढवत् ही नहीं प्रतीत हो रहा है, अपितु किंकर्तव्य विमूढ भी होता जा रहा है। समग्र राष्ट्रों के प्रमुख नेतागण अपने पूर्ण नैतिक और बौद्धिक बल का प्रयोग करके भी अन्तर्राष्ट्रीय समप्रश्नों को सुलझाना तो दूर, अपने प्रयासों से उनको और भी जटलतर और जटिलतम बनाते चले जा रहे हैं। विश्व शान्ति और साम्य के लिये दो महान् युद्ध भी हो चुके परन्तु मानव स्वभाव में जो दानवता और पैशाचिकता की मात्रा पहले थी, उसका परिमाण उत्तरोत्तर बढ़ता जाता ही प्रतीत होता है।

वर्तमान विश्व स्पष्टतया दो विचार धाराओं में साक्षात् अथवा परोक्ष रूप से विभाजित हो रहा है। एक विचार धारा का नेतृत्व अमेरिका और उसके छाया के समान सहचर इंग्लैंड के हाथों में है और दूसरी विचार धारा का नेतृत्व रूस और उसके साथी राष्ट्र कर रहे हैं। इस संघर्षात्मक विचार द्वन्द से सर्वथा असम्पृक्त और अप्रभावित होकर सर्वथा निरपेक्ष रहना किसी भी छोटे या बड़े राष्ट्र के लिये किसी प्रकार सम्भव नहीं है। क्यों कि ऐसा कोई भी देश अब नहीं है कि जो अन्य देशों से सर्वथा विरहित रहते हुये भी जीवित रह सके। यातायात, व्यापार, वाणिज्य, कला कौशल, शिक्षा, उद्योग, आदि २ अनेक सम्बन्धों के अनिवार्य होने के कारण प्रत्येक देश के लिये आवश्यक है कि वह विराट विश्व के विभिन्न राष्ट्र या संगठित समूह में कोई अपना ऐसा स्थान बनाने का प्रयास कर जिससे अवसर आने पर अनुकूल अन्य राष्ट्रों का सहयोग और सहायता प्राप्त कर एक ओर जहां आन्दोलन में अग्रसर हो सके, वहाँ साथ ही विश्व शान्ति और विश्व कल्याण साधन में भी अपना आवश्यक सहयोग प्रदान कर सके।

इन बातों को दृष्टि में रखते हुये स्वतन्त्र भारत राष्ट्र ने प्रथम विचार धारा को अपने लिये अधिक हितकर

साम्यवाद-शान्ति कैसे ?

श्री रामदत्त शुक्ल एम्०ए०, एडवोकेट, लखनऊ

" रयिं देहि विश्व वारम् " ऋ० ८।७१।३

समझकर कदाचित् संयुक्त राष्ट्र संघ (कामन वेल्थ आफ नेशन्स) के साथ ग्रन्थिबन्धन किया है। इसको द्राविडी प्राणायाम सिद्धान्तानुसार कहा जा सकता है कि भारत ने सम्प्रति अमेरिका और इंग्लैंडादि के द्वारा स्वीकृत एव प्रचारित विचार धारा को ही मुख्यतया अपनाया है। और रूस से स्वीकृत एव प्रचारित साम्यवाद और उसके प्रभाव से होने वाली प्रवृत्तियों का विरोध और दमन अपना एक आवश्यक कर्तव्य अनुभव किया है। कदाचित् इसी कारण स्थान २ पर और समय २ में भारतीय सरकार और उसके द्वारा प्रेरित प्रान्तीय सरकारें साम्यवादियों की गतिविधि को नियन्त्रित करने और उनके दूषित विचारों को साधारण प्रजा में न प्रचारित होने देने के लिये तत्परता से संलग्न है। इसीलिये न केवल शासक अधिकारि वर्ग ही अपितु देश के प्रमुख नेतागण और राष्ट्रीय महासभा के मुख्य नेता गण भी साम्यवादियों के विरुद्ध स्पष्ट रूप से प्रचार और आन्दोलन कार्य कर रहे हैं।

अन्य अनेक कारणों के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति और परम्परा के सर्वथा विरुद्ध एव मानव स्वभाव के नितान्त विपरीत होने के कारण प्रचलित साम्यवाद और उसके प्रचार के छल कपट पूर्ण कूटनीतिक साधन सार्वजनीन नैतिक स्तर को एकान्ततः विनष्ट करने वाले हैं। इसलिये प्रत्येक, संस्कृति और भारतीय परम्परा के अभिमानी का यह एक प्रमुख प्रयत्न हो जाता है कि वह न केवल व्यक्तिगत विचारों के द्वारा ही, अपितु संगठित रूप से भी वर्तमान साम्यवाद रूपी भयकर और सक्रामक महाव्याधि से न केवल भारतीय नागरिकों की रक्षा करे किन्तु विश्व के अन्य व्याधिग्रस्त राष्ट्रों की प्रजा को भी इस सर्वथा विघातक विष के दोषों से उन्मुक्त करने का पूर्ण अध्यवसाय करे। किन्तु साम्यवाद के वाचिक या अन्य प्रकार से विरोध करने मात्र से तो वास्तविक साम्यवाद की व्याधि का शमन होना कदापि सम्भव नहीं है। जिस वेग और जिस सुसगठित रूप से उनका प्रचार व्यापक रूपधारण कर रहा है और चीन जैसे विशाल राष्ट्र में जिस प्रकार साम्यवाद का लाल ध्वज द्रुतगति से बढ़ता जा रहा है, उसकी वास्तविकता और निकट भविष्य में होने वाली सम्भाव्य शक्ति को नगण्य समझकर स्वप्न-लोक में विचरने वाले अदूरदर्शियों के विकृत मस्तिष्कों की सहायता से तो कोई अवसरोचित समाधान सम्भव ही नहीं है। वस्तुतः जिस प्रकार किसी महाव्याधि को दूर करने के लिये उसके उत्पन्न होने के मूल कारणों का नितान्त उच्छेद आवश्यक होता है, ठीक उसी प्रकार साम्यवाद रूपी महाव्याधि के सम्बन्ध में भी विश्वख्यातिलब्ध सर्व श्री डा० सर्वपल्लि राधा कृष्णन् महोदय के कटक में दिये गये दीक्षान्त भाषण के इस उद्धरण पर गम्भीरता के साथ विचार कर अपने कर्तव्य का अवसरोचित निश्चयकर तदनुसार सुसगठित प्रयत्न करना आवश्यक होगा। डा० राधा कृष्णन् महोदय कहते हैं कि, "साम्यवाद बढ़ रहा है, इसकी शिकायत करने मात्र से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता है। हमको पूछना चाहिये कि साम्यवाद क्यों बढ़ रहा है। जबतक समाज रोगग्रस्त है, जब तक युवक गण असन्तुष्ट हैं, जब तक उग्र निराशा, भूख, दरिद्रता और बेईमानी उच्च स्थानों में, और नितान्त दीनता निम्नतर स्थानों में है, तब तक हम यह कहने का साहस नहीं कर सकते हैं कि साम्यवाद बढ़ रहा है, क्योंकि हम स्वय ही साम्यवाद को निमन्त्रित कर रहे हैं। हम स्वय ही उस नवीन सिद्धान्त के प्रचार को निमन्त्रण दे रहे हैं। यदि जनता निराशा से भरी हुई है तो यह नवीन सिद्धान्तों का सहारा चाहती है। साम्यवाद के सर्वथा निराकरण करने का सबसे उत्तम यही उपाय है कि दृढ़ता के साथ तत्पर हो कर नफाखोरी (प्राफिटियरिंग) भ्रष्टाचार: (करप्शन) बेईमानी (डिसानेस्टी) को सर्वथा पराभूत किया जाय। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार से भी समझौते की नीति का अनुसरण न किया जाय। यदि जनता अनुभव करती है कि यह धनिकों के लिये, धनिकों द्वारा और धनिकों की सरकार का साथ दे रही है, यदि इस प्रकार के सिद्धान्त का प्रचुर प्रचार देश में होने लगे तो यह देश भी साम्यवाद का एक सहज आखेट बन जायगा।

उपर्युक्त विचार उन समस्त दूरदर्शी मनीषियों के लिये एक प्रकार का संकेत है कि जो वास्तव में भारत और विश्व का समान रूप से कल्याण चाहते हैं। अपने-अपने धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रवृत्त सभाओं, समाजों, संघों, दलों और सम्प्रदायों सभी के लिए यह प्रश्न बड़ा महत्व रखता है। जो कुछ ऐश्वर्य हमको प्राप्त हो, वह ऐसा हो कि जिसको समान रूप से विश्व में समस्त मानव वरण करने की सुविधा प्राप्त कर सके। इस भावना से प्रत्येक नागरिक जब कभी भावित हो कर अपने २ लौकिक व्यवहार क्षेत्रों में प्रवृत्त हो सकेगा, तभी साम्यवाद का मूलाधार पूंजीवाद प्रकुपित न हो सकेगा। भारतीय संस्कृति के विचार शील विद्वानों के समक्ष यही एक महत्व पूर्ण प्रश्न है कि यह किस प्रकार अपने परम्परागत सांस्कृतिक विचार धाराओं से मानव में एक बार पुनः विश्वजनीन कल्याण की भावना जागृत करने में समर्थ हों। क्या इस दिशा में आर्यसमाज सांस्कृतिक किन्तु सुसङ्गठित पथ प्रदर्शन कर भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में विकृत विचार धारा को दूर करते हुये विश्व हित साधक विचार परम्परा प्रवृत्त करने में अग्रसर हो सकेगा ?

नौर्थवेस्टर्न नेशनल लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी द्वारा की गई पड़ताल से पता चला है कि अमेरिकी सरकार सौ वर्ष पहले की अपेक्षा आज ११०० गुना अधिक खर्च कर रही है। आज प्रत्येक १२ मिनट मे १० लाख डौलर अथवा १,४०० डालर प्रति सेसेन्ड के हिसाब से खर्च किया जा रहा है।

* * * *

अमेरिका मे इस समय ५७,००० से भी अधिक खाद्य पदार्थ बनाने वाली फर्में हैं।

* * * *

अमेरिकी रेल कार इंस्टिट्यूट की रिपोर्ट से पता चला है कि अकेले मार्च में ही ११,८८२ माल गाड़ी के नये डिब्बे अमेरिका में तैयार करके रेलों को दिये गए हैं।

* * * *

अमेरिका के व्यापार विभाग का अनुमान है कि १९४९ के प्रथम तीन महीनों में अमेरिका में ३५०,८ लाख डालर की कीमत के नये भवनों का निर्माण हुआ है। यह रकम १९४८ की इसी अवधि में नये भवनों पर खर्च हुई रकम से ५ प्रतिशत अधिक है।

संन्यास पूर्ण वैदिक है

(लेखक—स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक)

आज कल आर्यजगत् में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की बडी अवहेलना की जा रही है और वह आर्यसमाज के नेताओं द्वारा। कोई वानप्रस्थ के विरुद्ध आन्दोलन करते हैं कि वानप्रस्थ आवश्यक नहीं है और कोई सन्यास को अवैदिक बतलाते हैं। एक नेता तो यहाँ तक आन्दोलन करते देखे गए कि कमण्डलु काषाय वस्त्र आदि सन्यास के चिन्ह शङ्कराचार्य के समय से चले, इतिहास में सन्यासी का नाम नही वेद में सन्यास का विधान नहीं, वहां सन्यास या सन्यासी शब्द नहीं है इत्यादि प्रचार किया जा रहा है। यह हो सकता है कि ऐसे महानुभाव वानप्रस्थ और सन्यास की ओर चलने में अपने को असमर्थ समझते हों परन्तु उक्त सिद्धांत का अवहेलना रूप प्रचार आर्यसमाज के नेताओं द्वारा होना सर्वथा अवाञ्छनीय और निन्दनीय है। अस्तु। हमें इस लेख में केवल सन्यास के सम्बन्ध में कहना है। सन्यास के सम्बन्ध में पूर्व पक्ष के तीन प्रश्न या आक्षेप हैं जोकि पुनः क्रमशः नीचे दर्शाए जाते हैं :—

पूर्वपक्ष—

१—कमण्डलु आदि पात्र, काषाय वस्त्र (गेरुए वस्त्र), मुण्डन आदि सन्यास के चिन्ह शङ्कराचार्य के समय से चले हैं पुरातन नही हैं।

२—इतिहास मे सन्यासी का नाम नही आता अतः पहिले सन्यासी नही होते थे।

३—वेद में सन्यास का विधान नही क्योंकि वहां सन्यास या सन्यासी शब्द नही अतः सन्यास अवैदिक है।

विवेचन—

१—"कमण्डलु आदि पात्र, मुण्डन आदि सन्यास के चिन्ह शङ्कराचार्य के समय से चले पुरातन नही हैं" यह कथन असत्य है क्योंकि मनुस्मृति आदि प्राचीन धर्म शास्त्रों में इन चिन्हों का विधान है, देखिये—

> अलाबु दारुपात्र च मृण्मय,
> वैदल तथा।
> एतानि यतिपात्राणि मनु,
> स्वायम्भुवो ऽब्रवीत्॥
> (मनु० अ० ६।५४)

अर्थात् तुम्बी, काष्ठापात्र, मिट्टी का बना या बांस का पात्र सन्यासी का होना चाहिये।

तथा—

> कपालं वृक्षमूलानि कुचैलम सहायता। (मनु० अ० ६।४४)

यहां कपाल अर्थात् खप्पर भी संन्यासी का पात्र बतलाया।

और भी—

> क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्। (मनु० अ० ६।५२)

अर्थात् सन्यासी केश कटाए हुए—मुण्डन कराये रहे, कमण्डलु आदि विशेष पात्र, दण्ड और काषाय वस्त्र धारण करे*।

बौधायन धर्मसूत्र में कहा है—

> न चातः ऊर्ध्वं शुक्ल वासो धारयेत्। (बौधायन धर्म० २।१०।३६)

अर्थात् सन्यास ले लेने पर पुनः शुक्ल—श्वेत वस्त्र न धारण करे उक्त रंगे वस्त्र ही धारण करे।

२—"पहिले सन्यासी नही होते थे क्योंकि इतिहास में सन्यासी का नाम नहीं आता" इतिहास मे सन्यासी का नाम न आने से पहिले सन्यासी नहीं होते थे यह कल्पना करना ठीक नही, कारण कि इतिहास तो राजाओं के हुआ करते हैं सन्यासियों के नही पुन. उनके नाम आने का बिना विशेष घटना के क्या प्रसङ्ग।

(ख) याज्ञवल्क्य के सन्यास ग्रहण की चर्चा बृहदारण्यकोपनिषद् में विद्यमान है ही "मैत्रेयीति होवाच याज्ञवल्क्यः प्रव्रजिष्यन् वा अरे ऽहमस्मात्स्थादस्मि हन्त ते ऽनया कात्यायन्यान्त करवाणीति" (बृहदारण्य को० ६।५।२) "याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहाकि हे मैत्रेयी मैं सन्यास लेने वाला हूँ तेरा इस कात्यायनी से सम्पत्ति सम्बन्धी बटवारा करदूँ" इस वचन में 'प्रव्रजिष्यन्' शब्द "यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेद् वनाद्वा गृहाद्वा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजन्" इस ब्राह्मण वचन में दिये 'प्रव्रजेत्' के समान है तथा मनुस्मृति के सन्यास विधान प्रकरण में आये 'प्रव्रजन, प्रव्रजेत्, प्रव्रजति' शब्दों से तुलना रखता है—

> भिक्षाबलि परिश्रान्तः,
> प्रव्रजन् प्रेत्य वर्धते।
> आत्मन्यग्नीन् समारोप्य,
> ब्राह्मणः प्रव्रजेद् गृहात्।
> यो दत्वा सर्वभूतेभ्यः,
> प्रव्रजत्यभय गृहात्।
> (मनु० अ० ६।३४,३८,३६)

(ग) वादी की कल्पना है कि पहिले सन्यासी नहीं होते थे परन्तु महाभाष्य व्याकरण से तो पहिले स्त्रियां भी सन्यासिनी हुआ करती थीं यह सिद्ध होता है वहां कहा है "शङ्करा नाम परिव्राजिका आसीत्" (महाभाष्य० ३।२।१४) अर्थात् शङ्करा नाम की सन्यासिनी थी।

(घ) भगवद्गीता महाभारत इतिहास का अङ्ग है वहां सन्यास का वर्णन आता ही है—

> सन्यासेनाधिगच्छति। (भगवद्गीता अ० १८।४६)

(ङ) और फिर इतिहास कोई धर्मशास्त्र नही होता है जो उसमें सन्यासी का नाम आना चाहिये। जबकि धर्मशास्त्र मे सन्यास का विधान है तब यह कल्पना करना कि पहिले सन्यासी नही होते थे नितान्त अनुचित है। मनुधर्मशास्त्र और बौधायन धर्मशास्त्र के प्रमाण पीछे दिये जा चुके हैं। ब्राह्मणग्रन्थों मे भी सन्यास का विधान है ही। यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेद् वनाद्वा गृहाद्वा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत्' तथा अन्य प्रमाण आगे भी आने वाले हैं।

३—'वेद में सन्यास का विधान नही क्योंकि वहां सन्यास या सन्यासी शब्द नही अत. सन्यास अवैदिक है" यह कथन भी यथार्थ नहीं है। जबकि हम आर्यसामाजियों का आदर्श आचार्य ऋषि दयानन्द है वह सन्यास का विधान करता है और उसे वैदिक बतलाता है, देखिये उनके निम्न वचन—

सत्यार्थप्रकाश में—

"· सन्यास लेवे और वेदों में भी (यतयः ब्राह्मणस्य, विजानतः) इत्यादि पदों से सन्यास का विधान है (सत्यार्थप्रकाश, पञ्चम समु०)

वेद भाष्य में—

"(अपाम्) विद्याविज्ञान योग व्यायिनाम् (यतीनाम्) सन्यासिनाम्" (दयानन्दः ऋ० १ १५८।६)

(ख) यदि कोई यह कहे 'हम दयानन्द की बात नही मान[ते] स्वतन्त्र रूप से दिखलाओ वेद [में] सन्यास का विधान।' ऐसे महा[नु]भावों को भी हम बतलाना चाह[ते] हैं कि वेद में सन्यासी का पर्य[ाय] यतिशब्द और सन्यास वृत्ति [का] वर्णन तो आया है, देखिये—

> अपामर्थ यतीना ब्रह्मा भव सारथिः। (ऋ० १।१५८।६)

यहां सन्यासी का पर्याय य[ति] शब्द मन्त्र में स्पष्ट है, सन्यास[ी] को यति कहते हैं अब यह देखें—

> ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थ यतिस्तथा। (मनु० अ० ६।८७)

यहां मनु ने आश्रमों का क्रमश[ः] वर्णन करते हुये सन्यासी के स्था[न] में यति शब्द रखा है। इसी प्रका[र] कालाग्नीरुद्रोपनिषद् में भी कहा है

> ब्रह्मचारी गृहस्थो वानप्रस्थ यतिर्वा, (कालाग्नीरुद्रोप० २)

तथा—

> वानप्रस्थशतमेकेन यति[स्] तत्समम्। (नृसिंह पूर्वतापन्योपनिषद् ५।१०)

सौ वानप्रस्थ [के] समान एक सन्यासी है यह दिख[ला]ने को सन्यासी के स्थान [में] यतिशब्द है।

इस प्रकार सन्यासी का पर्या[य] यति शब्द होने और उसके वे[द] में आ जाने से वेद में सन्यास क[ा] विधान हुआ।

और भी लीजिए वेद में सन्यास वृत्ति का वर्णन—

> पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्वा नासा विवासन्नदितिमुरुष्येत् (ऋ० १। १५२। ६)

मन्त्र मे कहा है "अदिति अर्थात् मुक्ति जो प्राप्त करना चाहे वह ऐसा ज्ञानविज्ञानों वेदशास्त्रों को जानने वाला विद्वान 'पित्व' अन्न को भिक्षा करे" विद्वान् होकर भिक्षा करना सन्यासी का काम है—सन्यासवृत्ति है अब यह देखें—

> वृत्ते शरावसम्पाते भिक्षां नित्यं यतिश्चरेत्। (मनु० अ० ६। ५६)
> यतयो हि भिक्षार्थं ग्राम प्रविशन्ति (आरुण्योपनिषद् ५)

यदि कोई महानुभाव यह कहने लगें कि सन्यासी का पर्याय 'यति' शब्द वेद में आया, सन्यासी शब्द क्यों नहीं आया? इसका उत्तर में हमें यह कहना है चतुर्थाश्रमी (सन्यासी) को वेद की भाषा में 'यति' कहते हैं। केवल वेद में ही नहीं किन्तु मनुस्मृति जैसे प्राचीन धर्मशास्त्र में भी चतुर्थाश्रमी को विशेषतः 'यति' नाम से कहा है,

---

*इतिहास में राजव्यक्ति द्वारा कारणवशात् साधु अवस्था व्यतीत करते हुये उस समय काषाय वस्त्र धारण करने का वर्णन आता है, जैसे नल के वियोग में दमयन्ती ने काषाय वस्त्र धारण किया था "ततः काषाय वसना जटिला मलपङ्किनी दमयन्ती महाराज बाहुक वाक्यमब्रवीत्।" (महाभारत। वनपर्व नलोपा० अ० ७४।६)

संन्यास विधान प्रकरण में
र्थाश्रमी को एक स्थान पर
ु और छः स्थानो या सब
नों पर यति नाम दिया है,
यासी नाम तो एक बार भी वहां
। आया। उक्त सन्यास प्रकरण
मनु ने 'परिव्रजेत्' सन्यसेत्
जेत्, क्रियाओं का प्रयोग किया
'परिव्रजेत्' किया को लेकर
ुर्थाश्रमी का जैसे परिव्राजक नाम
कर्मसकारणों वेदुपरिव्राजकयो'
मनुस्मृ० ६। १। १८५) हुआ, एवं
संन्यसेत् क्रिया को लेकर सन्या-
नाम भी दिया जा सकता है
न्तु चतुर्थाश्रमी का परिव्राजक
सन्यासी नाम आंशिक नाम है
ौलिक नाम तो 'यति' ही है यह
ु के शिष्टाचार से स्पष्ट होता
। उसके पश्चात् उपनिषदों में
धिक करके तो वहां मौलिक नाम
यति' आता है हाँ किसी किसी
निषद् में आंशिक नाम 'सन्यासी'
। आता है।—

सन्यासी योगी चात्मयाजी च
मैत्र्युपनिषद् ६। १०)

उक्त उपनिषद् का काल आज
लगभग सोलह सहस्र वर्ष पूर्व
। है, उस समय का उत्तरायण
त्र मघा नक्षत्र से धनिष्ठा नक्षत्र
अर्द्ध भाग तक बतलाया है
इसका समय आज से १६ सहस्र
र्ष पूर्व होता है विशेष विवरण
लो हमारी "वैदिक ज्योतिषशास्त्र"
स्तक के ध्रुव प्रकरण में। पुनः
भगवत्गीता में सन्यासी नाम आया
श्चात् चिन्हों को लेकर चतुर्था-
मो को अन्य साहित्य में 'मुण्डो,
ण्डी' आदि अवरकोट के आंशिक
ाम भी दिये गए। परन्तु बाहिर
े भीतर संयमन करने वाला
अर्थात् बाहिरी स्थान बाहिरी कर्म
बाहिरी व्यक्ति से अपने को हटा-
कर रखने वाला 'यति' नाम चतु-
र्थाश्रमी का मौलिक नाम है सो यह
'यति' मौलिक नाम वेद में आया
।

याद्दच्छिको भवेद् भिक्षुः (परम-
हंसोपनिषद् ३), यतिमार्दाच्छिको
भवेत्। (गो उपदीप कारिका २)

उक्त मनु आदि के वचनों में
भिक्षा करना यति को बतलाया है
सन्यासी को यति कहते हैं यह भी
अनेक प्रमाणों द्वारा बतलाया जा
चुका तब उपर्युक्त "पदो भिक्षत
प्रयुनाति विद्वान्" वेदमन्त्र मे
शौक्त का विधान-सन्यास का विधान
है अतः वेद में सन्यास सिद्ध हुआ
एवं सन्यास वैदिक है अवैदिक

हैदराबाद से उर्दू-मिलाप का प्रकाशन क्यों?

श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती

आज सारे देश में इस बात का प्रचार हो रहा है कि स्वतंत्र भारत की राज-भाषा 'हिन्दी' को स्वीकार किया जाय। संयुक्त प्रान्त, बिहार, आदि हिंदी प्रान्तों में तो पहले से ही हिन्दी को प्रमुखता प्राप्त है। पर, जो अहिंदी प्रान्त-गुजरात, बम्बई, काठियावाड, महाराष्ट्र, उड़ीसा, कर्नाटक, तामिलनाड, आंध्र, केरल, हैदराबाद, ट्रावनकोर, मैसूर, बंगाल और पर्वतीय प्रदेश है- उनमें भी हिंदी को विशेष प्रोत्साहन मिल रहा है। गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी की जितनी परीक्षायें ली जा रहीं हैं, उनमें बैठने वाले परीक्षार्थियों की संख्या हजारों में ही नहीं अपितु लाखों तक पहुँच रही है। पैंसठ पैंसठ वर्ष के बूढ़े लोग तक हिंदी की परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो रहे हैं।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो कार्यक्षेत्र में अवतरित होते ही मातृ-भाषा हिन्दी न होते हुये भी हिंदी को प्रमुख स्थान दिया। उन्होंने जितने ग्रन्थ प्रकाशित कराये प्रायः सभी हिंदी भाषा में निर्मित हुये। इतना ही नहीं, स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी आर्य समाजो ने भी हिंदी को अपनाया और उसको उन्नत करने में कोई कोर कसर शेष नहीं रक्खी। उसने अपने सचालित विद्यालयों, गुरुकुलों, कन्या पाठशालाओं आदि संस्थाओं में हिन्दी को ही प्रधानता दी। पर,

जब हमको यह संवाद मिलता है कि लाला खुशहालचन्द्र खुरशन्द तथा उनके श्री पुत्र हैदराबाद से उर्दू में 'मिलाप' का प्रकाशन करने जा रहे हैं और इसके लिए अधिकारियों से स्वीकृति भी प्राप्त कर ली है, तो हमारे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहता।

हमें बड़े संकोच के साथ लिखना पड़ रहा है कि जिस हैदराबाद में इस्लाम शाही ने हिंदी को धक्का देकर बुरी तरह से राज्य भर में से बाहर फैंकने का दुस्साहस किया था और उसकी स्कूलों कालिजों, अदालतों, दफ्तरों में कोई मान्यता नहीं रही थी, और वहाँ उर्दू का ही बोल बाला था। शिक्षण, लेखन, भाषण, और प्रकाशन सभी में प्रायः उर्दू को अनिवार्यता दी गई थी और उस समय तक बराबर चालू रही जब तक कि पुलिस कार्यवाही में हैदराबाद के ढांचे को आमूल चूल बदल न दिया गया। आज हैदराबाद के भारत में मिल जाने के कारण—हिंदी भाषा को कुछ सांस लेने का अवसर मिला है, उस पर लगे प्रतिबन्ध ढीले पड़े या उठा लिये गये हैं। अतः हैदराबाद के स्कूलों, कालिजों में हिंदी को मध्यमता दी जा रही है। कुछ कुछ काम हिंदी में होने भी लगे हैं। पर आर्यसमाज के लिए कितने अपमान की बात है कि उसी हैदराबाद में लाला खुशहालचन्द्र जी खुरशन्द और उनके श्री पुत्र हिंदी को ठुकरा कर वहाँ की जनता को उर्दू में अपना राग सुनाने के लिये अपनी शक्ति का अपव्यय करने जा रहे हैं। आप आर्यसमाजी हैं। आ० प्र० नि० सभा के प्रधान हैं —तब आपको इस अनार्य भाषा के प्रसार की क्यों सूझी है?

यदि आर्यसमाज और हिन्दुओं का कोई लाभ उर्दू में 'मिलाप' प्रकाशित करने से ही सम्भव होता तो-हैदराबाद में भी आर्य प्रतिनिधि सभा है। उसके अधिकारियों व कर्मचारियों में प्रचार करने की लग्न है, उसके पास अपना साप्ताहिक हिंदी 'आर्यभानु' है —जो बड़ा सुन्दर सम्पादित हो रहा है तो उसी 'आर्यभानु' का उर्दू संस्करण प्रकाशित कर जनसाधारण को लाभ पहुँचा सकता था। पर उसने ऐसा अनुभव नहीं किया और उसने हिंदी की उपेक्षा कर के उर्दू को कभी मान्यता नहीं दी।

यह सही है कि उर्दू मिलाप लालाजी का अपना स्वकीय पत्र है। पहिले इसे लाहौर से और अब दिल्ली से निकाल रहे हैं। आर्यसमाजी जगत आप से ऐसी आशा रखता था कि दो राष्ट्र के सिद्धान्त को मानने वाले मुसलमान ही जब अपनी मनभायी उर्दू भाषा सहित पाकिस्तान चले गये—तो आपको उनकी भाषा से अब गहरा मोह नहीं रहा होगा। और जिस प्रकार आपने अपने नाम के आगे पीछे जुड़े शब्द 'लाला' व 'खुरशन्द' को संशोधित कर 'महात्मा' और 'आनन्द' इन शब्दों में परिवर्तित कर दिया है तो उसी प्रकार आप उर्दू मिलाप को परिवर्तित करके केवल 'हिंदी मिलाप' प्रकाशित करते।

हमें आशा है कि लाला जी हमारी इन पंक्तियों को अन्य किसी भाव में न लेकर उसी भाव से इस पर विचार करेंगे कि जिस भाव से प्रेरित होकर ये पंक्तियां लिखी गई हैं। यदि आप उर्दू के स्थान में केवल हिंदी भाषा में 'हिंदी मिलाप' हैदराबाद से प्रकाशित करेंगे तो ऐसा करने से जहाँ आप को आर्थिक लाभ व आर्य हिन्दुओं को प्रचार लाभ होगा वहाँ हिन्दी राष्ट्र को भी कुछ शक्ति मिलेगी

★ ★ ★

नहीं। अब अन्त में एक ऐसे वेद मन्त्र को प्रस्तुत करते हैं जिस में चारों आश्रमों का संकेत मिलता है—

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये।
यदेनश्चकृमा वयं तदवयजामहे॥
(यजु० ३। ४५)

इस मन्त्र में 'ग्रामे अरण्ये, सभायाम्, इन्द्रिये' पदों का प्रत्येक पाठ होने से चारों पृथक पृथक मर्यादाएं हैं यह स्पष्ट होता है वे मर्यादाएं हैं आश्रम सम्बन्धी अर्थात् 'इन्द्रियसंयम—ब्रह्मचर्य में जो 'ग्रामे यत्' ग्राम में-गृहस्थ में जो 'अरण्ये यत्' वन में-वानप्रस्थ में जो 'सभायां यत्' सभा में-सत्सङ्ग में-सन्यास कर्तव्य में जो हम भूल से पाप कर बैठें उस पर हम पश्चात्ताप करें।" मन्त्र में सन्यासकर्तव्य का सभा शब्द से द्योतन किया है कारण कि ब्रह्मचारी की गुरुकुल में, गृहस्थ की ग्राम में, वानप्रस्थ को वन में जीवन चर्या चलती है परन्तु सन्यासी का जीवन इन में से किसी एक स्थान में नहीं व्यतीत होता वह तो जनता को सत्सङ्ग सम्मेलन का लाभ पहुँचाया करता है अतः मन्त्र में 'सभायाम्, सभा में, ऐसा कहा गया है। इत्यलं विद्वद्वर्येषु कि बहुना।

★ ★

आर्य्य-जगत

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज पुरैनी का उत्सव १४,१५,१६ जून को होगा।

मुकुन्दी सिंह मंत्री

—आर्यसमाज फलावदा का उत्सव बडी धूमधाम से १४,१५,१६ जून सन् १९४९ई० को मनाया जायगा, जिस में श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, श्री प्रकाशवीर जी, श्री रामचन्द्र देहलवी शास्त्रार्थ महारथी, आदि महानुभव पधारेंगे।

—आर्यसमाज नवाबगंज का वार्षित्सव ता० ३० अप्रैल १-२ मई को धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक प्रचारक व उपदेशक पधारे थे। उत्सव सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

—वैसाख बदी अमावस्या को गढ़ा-ढ़ जिला बुलन्दशहर में लाला लीलाधर जी के प्रयत्न से पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी के प्रधानत्व में, पहासु आदि गस्ती सभा का जलसा हुआ। प्रभाव अच्छा रहा।

—आर्यसमाज संगलाकोटी का वार्षिकउत्सव ता० १२,१३,१४ मई बुद्धिसिंह जी वानप्रस्थी के सभापतित्व में बडी धूमधाम से मनाया गया। प्रांतीय सरकार से गाडी की सडक बनवाने का अनुरोध करने तथा छुआछूत विरोधी प्रस्ताव पास हुये।

—आर्य समाज ग्राम सुदुरी तहसील नवाबगंज 'जिला बरेली का पैंतीसवां वार्षिकोत्सव ८, ९, १०, मई को बडे समारोह से मनाया गया निर्वाचन में प्रधान श्री टोडरमल जी, उप प्रधान श्री नारायण देवजी, मंत्री श्री ईश्वरीप्रसाद जी, (टेलर-मास्टर) खजानची श्री मूलचन्द्र जी, चुने गये।

—सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासि वानप्रस्थ मण्डल (हरद्वार) ज्वालापुर जिला सहारनपुर का वार्षिकोत्सव चैत्र नव रात्र में (३० मार्च से ७ अप्रैल १९४९ तक) वानप्रस्थाश्रम में सफलता पूर्वक सपन्न हुआ। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी, श्री स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, श्री स्वामी नारायणनन्द सरस्वती जी, स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी, स्वामी प्रभुसमाश्रित जी, महात्मा सत्य-भूषण जी वानप्रस्थ के व्याख्यान हुए। प्रात. साय साधनानुष्ठान, म-पाह्नोत्तर स्वाध्यायानुष्ठान आदि अध्यात्म प्रकियाए चलती रहीं। यज्ञ, मण्डल के अध्यक्ष स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी, की अध्यक्षता में रहा।"

—आर्य समाज शाहजहाँपुर का वार्षिक उत्सव बड़े समारोह के साथ तारीख २९,३० अप्रैल व १, २ मई को मनाया गया जिसमें बड़े सन्यासी महा उपदेशक और भजनीक पधारे थे। कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर प० बिहारी लाल काव्य तीर्थ, पं० ईश्वर चन्द्र दर्शनाचार्य और स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

—गया आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ता० २८ अप्रैल से पहला मई तक बड़े समारोह के साथ मनाया गया जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध व्याख्याता पंडित अयोध्या प्रसाद जी बी० ए० वैदिक मिशनरी कलकत्ता, पं० राम नारायण जी शास्त्री, प० गगाधर शास्त्री, आदि के सारगर्भित भाषण हुये।

—आर्य समाज मिनगा का छठवाँ वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक ता० १९ ४ ४९ से २२ ४ ४९ तक मनाया गया ता० २१ ४ ४९ को प्रात. काल आर्य समाज भवन मिनगा का शिलान्यास कार्य मिनगा नरेश श्री मान् राजा चन्द्र मणिकान्त सिंह जू देव के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य समाज भूमि में श्री भगवती प्रसाद जी उप प्रधान और श्री ला० हरीशङ्कर जी ने एक एक कमरा तथा कामता प्रसाद जी उप मन्त्री ने यज्ञ शाला बनवाने का वचन दिया है कई सज्जनों ने ५१), ४१) रुपये के वचन दिये है। ता० २३, २४, अप्रैल को बरगदवाँ पड़ बलिया तथा २५, २६ ४९ को जो खवा बाजार में आर्य समाज का प्रचार हुआ।

उपदेशक—वाचनालय तथा सर्वोपयोगी पुस्तकें

उत्सव में काशी, अयोध्या, वृन्दावन, ऋषिकेश, हरिद्वार तथा दक्षिण भारत तक के दूर दूर के विद्वान सन्तों एवं महात्माओं ने भारतीय संस्कृति भक्ति, ज्ञान, सभ्यता, सदाचार, विद्याप्रचार, तथा समाज सुधार आदि-आदि विषयों पर भाषण किये।

हिन्दू कोडबिल के विरोध में भी सर्व सम्मति के प्रस्ताव पास हुआ।

निर्वाचन

आर्यसमाज बस्ती

प्रधान— लाला देश राज भारत।
उपप्रधान-बाबू जगदम्बा सहाय जी मुख्तार।
मन्त्री-राम चरित्र वैद्य।
कोषाध्यक्ष-बाबू रामप्रसाद जी

—बिजनौर आर्यसमाज श्री केवल सिंह जी एम. ए. एल. बी., प्रधान लक्ष्मीनारायण उपाध्याय मंत्री श्री बा० द्वारिकाप्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष, श्री ईश्वरदयालु आर्य प्रतिनिधि, श्री प राम चन्द्र शर्मा मैनेजर प: ने० बैंक आय व्यय निरी०।

(आर्य कुमार सभा बिजनौर)
लक्ष्मीनारायण उपाध्याय प्रधान रघुवर दयालु आर्य मंत्री।

(आर्य स्त्री समाज बिजनौर)
श्री मती मूलदेवी जी प्रधान।
श्री मती विमल कुमारीजी मन्त्राणी

जिला आर्य सभा पूर्णियाँ।

१ मई को जिला आर्य सभा पूर्णियाँ की स्थापना की गई। श्री पं. राजगुरु सुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण' के सभापतित्व में कार्य सम्पन्न हुआ।

निम्न निर्वाचन हुआ—

श्री देवराज आर्य (आ० स० पोठिया) प्रधान, जयराम चौहान (आ० स० पूर्णियाँ) उप प्रधान नाथूलाल आर्य (आ० स० कसबा) उप मंत्री, रघुनन्द प्रसाद (आ स. फारबिसगंज) कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज देहरादून का दिनांक ८-५-४९ को वार्षिक निर्वाचन में। हुआ। प्रधान, श्री प० अमरनाथ जी वैद्यशास्त्री। उपप्रधान, श्री प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार। श्री राधाकृष्ण जी सेठ। मन्त्री श्री जगदर्शन जी। उपमन्त्री श्री प० सुदर्शन जी आयुर्वेदालंकार।

—आर्य समाज गाजियाबाद।

प्रधान, श्री किशनलाल जी। उपप्रधान, सांवरमल जी व श्याम-लाल जी मन्त्री प्रो रनसिंह जो एम ए। उपमन्त्री परमानन्द जी व भगवान स्वरूप जी। कोषाध्यक्ष धर्मपाल जी। अगले वर्ष के लिए लगभग ६५००) का बजट स्वीकृत हुआ। रनसिंहएम ए।

—आर्य समाज लालापुरा के साधारण सभा की बैठक ता० १०-५-४९ को समाज भवन में हुई। श्री डा० ओ३म् प्रकाश जी प्रधान श्री रमाशंकर जी आर्य प्रधानमंत्री श्री बुद्धदेव जी आर्य कोषाध्यक्ष श्री रामसिंह आर्य पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

—आ० स० फतेहपुर बिश्नोई में १५ मई को प्रातः ६ बजे साप्ताहिक अधिवेशन के पश्चात् श्री कोषाध्यक्ष महोदय आर्य सभा फतेहपुर बिश्नोई की कन्या का चूडाकर्म संस्कार वैदिक रीति से किया गया।

श्री गोकुलप्रसाद जी आर्य प्रधान।

श्री रामप्रकाश शर्मा प्रकाश—मंत्री।

श्री लालताप्रसाद शर्मा उपमंत्री

श्री जगदीश शरण आर्य कोषाध्यक्ष।

श्री रामभरोसे लाल जी—पुस्तकाध्यक्ष।

श्री रामकुमार जी सामानअध्यक्ष

—आर्यसमाज बिलासपुर (रामपुर स्टेट) में एक नव मुस्लिम युवक को शुद्धि २३ मई सन् ४९ को श्री प० रामनरायण जी शास्त्री आचार्य आर्य संस्कृत विद्यालय बिलासपुर ने की। यह शुद्धि रामपुर स्टेट में प्रथम कही जा सकती है। यह शुद्धि श्री ला० माधवराय जी प्रधान तथा बांकेलाल जी वानप्रस्थी के विशेष प्रयत्न से हुई है। मंत्री

विवाह

—२३-५-४९ को भठिलापुरा पर० लखनेश्वर जिला बलिया के निवासी श्री ठाकुर हरदेव सिंह का शुभ विवाह एक विधवा देवी मऊ निवासी के साथ बड़े धूम-धाम के साथ पंडित नन्दलाल शर्मा तथा बा० राधामोहन लाल मुख्तार मंत्री के संरक्षण में सम्पन्न हुआ।

—ता० १५ अप्रैल को श्रीमती कृष्णा देवी वाघमरे प्रधान अध्यापिका गवनमेण्ट कन्या स्कूल राठ का विवाह स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर (हमीरपुर) में प० रामप्रकाशजी द्विवेदी के साथ सम्पन्न हुआ। उपरोक्त दोनों वर व वधू विधुर व विधवा थे।

—आर्य समाज गोरखपुर में ता० २३-४-४९ को महाशय श्यामाकरन जी की विधवा बहन का शुभ विवाह बस्ती के सब पोस्टमास्टर महाशय बनवारीलालजी के साथ सम्पन्न हुआ। कन्हैयालालजी आर्य

गीता के श्लोकों के ग्रामोफोन रेकार्ड

न्यूयार्क की एक कम्पनी (इथनिक फाकवेज रेकार्डिंग एड सर्विस कारपोरेसन) ने श्रीमद् भगवद् गीता के कुछ श्लोकों के रेकार्ड भरे है। इन रेकार्डों के प्रारम्भ में श्लोक का अंग्रेजी अनुवाद और फिर मूल संस्कृत श्लोक दिया गया है।

श्लोकों का अंग्रेजी अनुवाद कार्नेल विश्वविद्यालय के भारतीय प्रोफेसर, डा० टी० एम० पी०महादेवन ने किया है। रेकार्डों के लिये गीता के दूसरे अध्याय से जो श्लोक लिये गये हैं उनमें स्थित प्रज्ञ का वर्णन है।

लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं अपनी जीवनी क्यों नहीं लिखता। मेरा कहना यह है कि जीवनी लिखने के लिये पर्याप्त मनोरंजक सामग्री मेरे जीवन की घटनाओं में नहीं मिल सकती क्योंकि मैंने न किसी की हत्या की और न कोई सनसनीदार घटना मेरे जीवन में घटी।

निर्वाचन

—आ० स० सपडेरा, दातागञ्ज (बदायूं)। श्री स्वामी महेशानन्द जी प० यशवन्त शर्मा जो घोर प्रबल से सपड़ेरा में ११-५-४६ को आर्य समाज की स्थापना हुई। निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान, केदार सिंह जी वर्मा वध। उपप्रधान, रामेश्वर सिंह जी। मंत्री, मंगल सिंह जी। उप मन्त्री जवाहर सिंह जी। कोषाध्यक्ष रुकम सिंह जी वर्मा।

—२६-३-४६ ई० को श्री प० विश्म्भर दयाल जी मिश्र के सुपुत्र रामकुमार जी का उपनयन संस्कार श्री प० चन्द्रहेतु जी आयुर्वेद शिरोमणि द्वारा वैदिक रीत्यानुसार सम्पादित हुआ १०) गुरुकुल वृन्दावन तथा १०) वेद प्रचारार्थ प्रदान किए गए।

शुद्धि

—यमुना राज भर जो बचपन में मुसलमानों के बहकाने से मुसलमान हो गया था उसकी शुद्धि महाशय जगमोहन प्रसाद आर्य बड़ागाँव घोसी के गृह पर ता० १३-५-४९ ई० को सायकाल ५ बजे बड़े समारोह के साथ हुई।

"धन्वन्तरि"

आवश्यकता

"राजकीय सहायता प्राप्त आर्य कन्या पाठशाला (जूनियर हाई स्कूल) सिकन्द्राराऊ जि० अलीगढ़ के लिए V. T. C P. T. C. व्यायाम एवं संगीत विशेषज्ञ अध्यापिकाओं की आवश्यकता है, प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि सहित मैनेजर पाठशाला के पास भेजें।" गंगाप्रसाद (मैनेजर)
आर्यकन्या पाठशाला सिकन्दराराऊ यू० पी०।

वरों की आवश्यकता

श्री हिंदू अनाथ आश्रम मुजफ्फरपुर (विहार) में पाली पोषी गयी—शिक्षिता दो कुमारी कन्याओं के लिये शिक्षित, सुयोग्य एवं सम्पन्न २० वर्षीय कुवारे वरों की—आवश्यकता है। विहार के वरों को विशेषता दी जायगी। केवल शहर के रहने वाले उमीदवार पत्र व्यवहार करें। उत्तर के लिये =) का टिकट अवश्य भेजें।
विश्वनाथ चोधरी
मन्त्री
श्री हिंदू अनाथ आश्रम मुजफ्फरपुर (विहार)

—म० न० मराता में एक नौजवान लड़का दसवा पत्र की शुद्धि और शुद्धि के बाद उसका विवाह संस्कार भी किया गया।

माहीवासी भारत में मिलने के पक्ष में

स्वतन्त्र मतगणना भारत व फ्रांस की संयुक्त देखरेख में ही सम्भव

कालीकट, १३ जून। फ्रांसीसी उपनिवेश माही की जनता का यह विश्वास है कि 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वह न तो फ्रांस द्वारा भेंट की जाने वाली वस्तु है और न वह मतगणना द्वारा ही निश्चय की जाने वाली कोई चीज है।

उक्त शब्द उस स्मृति पत्र में कहे गये हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के उपाध्यक्ष द्वारा नियुक्त मतगणना पर्यवेक्षक एम हॉल्गर एन्डर्सन को माही की जनता के प्रतिनिधि मण्डल ने भेंट किया है।

स्मृति पत्रमे कहा गया है कि माही की जनता का बहुमत भारत के साथ मिलने के पक्ष मे है। माँग का माही की सभी बड़ी राजनीतिक पार्टिया, महाजन सभा, भारतीय सोशलिस्ट पार्टी तथा कम्युनिस्ट पार्टी ने समर्थन किया है।

पर्यवेक्षक के आश्चर्य चकित

ज्ञात हुआ है कि पर्यवेक्षक एम. ऐंडर्सन को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अभी भी १४ व्यक्ति बिना मुकदमा चले जेलों म नजर बन्द हैं। आपने कहा कि हम तो अभी तक कही बताया गया कि वे लोग रिहा हो चुके।

निर्वाचनों पर नियन्त्रण रखने के केन्द्रीय कमीशन की व्यवस्था

नयी दिल्ली, १६ जून। विधान सभा ने आज यह धारा पास की कि पार्लिया-मेंट और राज्य की धारा सभाओं के निर्वाचन पर निर्वाचन कमीशन का नियन्त्रण रहेगा। कमीशन का प्रेसीडेंट नियुक्त करेगा। इस धारा म जोरदार बहस हुई।

विधान सभा ने एक धारा पास की कि धर्म, जाति अथवा लिंग के आधार पर मतदाता सूची नहीं तैयार की जायगी।

एंग्लो इंडियनों को शिक्षा तथा नौकरी संबंधी सुविधा देने के संबंध मे धारा पास हुई। इसके अलावा यह धारा पास हुई कि पिछड़ी हुई जातियों की दशा की जाच करने और उनकी उन्नति के लिये सिफारिश करने के लिये प्रसीडेंट एक कमीशन नियुक्त करेगा।

विधान सभा जुलाई तक के लिये स्थगित

नयी दिल्ली, १६ जून। विधान सभा की बैठक आज जुलाई के लिए स्थगित हो गयी। अगली तारीख विधान सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद तय करेंगे।

सिफारिशी व्यक्तियों को फौज में न लिया जायगा

प्रधान सेनापति श्री कारिअप्पा की घोषणा

पुरी, १४ जून। भारत के प्रधान सेनापति जनरल करिअप्पा ने एक प्रीति-भोज म पत्रकारों स बातचीत करते हुए बताया कि फौजी सदर दफ्तर में "चुनाव बोर्डों को हिदायत भेज दी गयी है कि उन सब उम्मीदवारों की नियुक्ति के लिए अयोग्य समझा जाय जिनकी सिफारिश में कोई चिट्ठी पत्री या पुर्जा कहीं स आया हो और इस बात का कतई लिहाज न किया जाय कि सिफारिश कितने प्रतिष्ठित व्यक्ति ने की है।

आपने बताया कि यह आदेश देना इसलिये आवश्यक हो गया है कि कहीं अयोग्य व्यक्ति केवल सिफारिश के बल पर फौज म नौकरी न पा जाँय।

आपने इस बात पर जोर दिया कि फौज की नौकरी के लिये केवल ऊंची डिग्री और अच्छी तन्दुरुस्ती ही काफी नहीं है। उसके लिये शान्तिकाल का एक महान उपदेशक और युद्धकाल का महान नेता होना भी आवश्यक हैं।

आपने आगे कहा कि इम्तहान के तीन दिनों मे विशेषज्ञ समिति उम्मीदवारों की योग्यताओं की जाँच करेगी। पत्रकारों को आपने सहयोग करने के लिये धन्य-वाद दिया।

चन्द्रनगर-प. बंगाल सीमा पर कड़ा पहरा

चन्द्रनगर, १३ जून। ज्ञात हुआ है कि पश्चिमी बगाल और चन्द्रनगर की सीमा पर फ्रांसीसी अधिकारियों ने कड़ा पहरा बैठा दिया है और फ्रांसीसी उप-निवेश मे जाने वाली सभी सवारियों की तलाशी ली जा रही है।

यह इसलिये किया गया है कि १९ तारीख को मतगणना के दिन कोई उप द्रव करने के लिये अस्त्रास्त्र न जा सकें।

प० बंगाल असेम्बली के उपचुनाव में शरतबाबू की विजय

कलकत्ता, १४ जून। पश्चिमी बगाल असेम्बली के दक्षिण कलकत्ता क्षेत्र से उप चुनाव मे आज श्री शरत चन्द्र बोस विजयी घोषित हुए।

श्री शरत बोस को १९०३२ और कांग्रेसी उम्मीदवार श्री सुरेशचन्द्र दास को ५७०० वोट प्राप्त हुए।

श्री शरतचन्द्र बोस सोशलिस्ट रिप-ब्लिक पार्टी की ओर से जिसके वे जन्म दाता अध्यक्ष हैं, खड़े हुए थे। इस समय आप स्वास्थ लाभ करने स्विटजरलैंड गये हुए हैं।

अन्य उम्मीदवारों में से श्री दिलीप कुमार चौधरी (डेमोक्रेटिक डेजगार्ड) को ५१ तथा श्री एस. सी. राय (स्वतंत्र) को १३ और श्री एस. एम. भट्टाचार्य (जो बाद में बैठ गये थे) को १२ वोट मिले।

इन तीनों उम्मीदवारों की जमानतें जप्त हो गयी हैं।

यह उप चुनाव श्री सतीशचन्द्र बोस (शरत बाबू के बड़े भाई) की मृत्यु के कारण हुआ था। वे पश्चिमी बगाल असेम्बली के इसी क्षेत्र से सदस्य थे।

श्री शरत् बोस द्वारा अपने समर्थकों को धन्यवाद

मौन्ट्रियाक्स (स्विजरलैंड) १४ जून। पश्चिमी बगाल धारासभा में अपने निर्वाचित किये जाने पर श्री शरतचन्द्र बोस ने अपने सम-र्थकों को तार द्वारा धन्यवाद दिया है।

धन्यवाद देते हुए श्री शरत बोस ने अपने समर्थकों से, तट-स्थता की नीति अपनाने, भाषाधार प्रान्त बनाने और ब्रिटिश राष्ट्र-मण्डल से अलग रह कर स्वाधीन समाजवादी लोकतन्त्र स्थापित करने के उद्देश्य से संयुक्त और तैयार होने की अपील की है।

श्री शरत्चन्द्र बोस यहां के एक अस्पताल में एक मास से अपना इलाज करा रहे हैं। शुक्रवार को आप अस्पताल छोड़ कर ७ जुलाई तक एक पहाड़ पर विश्राम करेंगे और उसके बाद शायद एक सप्ताह के लिये लन्दन जायेंगे।

आपने २१ जुलाई को भारत लौट आने की आशा प्रकट की।

अगली जुलाई से १२ हजार नये प्राइमरी स्कूल खोलने की योजना

प्रयाग, १६ जून। युक्त प्रांत में प्राइमरी स्कूलों की इमारतें बनाने के लिए प्रांतीय सरकार ने २२ लाख रुपया मंजूर कर दिया है।

पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रांतीय सरकार जुलाई मास से लगभग १२ हजार प्राइमरी स्कूल खोलने जा रही है। ये स्कूल देहरादून, मुजफ्फर नगर, बुलंदशहर, मसूरी, पीलीभीत, नैनीताल, फतहपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा, बनारस, जौनपुर, गाजी-पुर, बलिया, लखनऊ, फैजाबाद और बहराइच जिलों में खुलेंगे।

सरदार हरदितसिंह मलिक

पेरिस, १६ जून। मालूम हुआ है कि पटियाला के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सरदार हरदितसिंह मलिक शीघ्रही फ्रांस में भारत के राजदूत नियुक्त किये जांयगे।

हैदराबाद के सरकारी खजाने की रक्षा के लिए तीन हजार रक्षकों की भरती

हैदराबाद, १५ जून। पता चला है हैदराबाद सरकार ने सरकारी खजाने की रक्षा के लिए तीन हजार रक्षकों की भरती की है। पुलिस व खजाने की रक्षा करने वाले अरबों की जगह पुलिस तैनात की गयी थी।

पाकिस्तान ने 'आजाद कश्मीर सरकार' को स्वीकार नहीं किया

रावलपिंडी, १५ जून। पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अली खां ने बताया कि जब तक कश्मीर हिन्द के साथ रहेगा या पाकिस्तान के, इस प्रश्न का फैसला करने के लिए जनमत गणना नहीं हो जाती तब तक 'आजाद कश्मीर सरकार' की स्वीकृति का प्रश्न ही नहीं उठता।

'आजाद कश्मीर सरकार' के अधि-कारी सरदार मुहम्मद इब्राहीम ने पिछले महीने पाकिस्तान से अपनी सरकार को स्वीकार कर लेने के लिए कहा था।

विद्रोही करेनों का मंत्रिमंडल बना

रंगून, १५ जून। कल रात को करेन विद्रोहियों ने अपना मन्त्रि मण्डल बनाने की घोषणा की। करेन राष्ट्रीय संघ के अध्यक्ष बाऊगी प्रधान मन्त्री बनाये गये हैं। युद्ध, गृह और यातायात विभाग के मन्त्री भी नियुक्त कर दिये गये हैं।

एक सरकारी विज्ञप्ति में आज दावा किया गया कि इरावदी डेल्टा के प्योम जिले में कम्युनिस्टों से २ गाँव छीन लिये गये। २० विद्रोही मारे गये और अनेक घायल हो गये।

डा० पट्टाभि सीता रामैय्या द्वारा दक्षिण भारतीयों से हिन्दी सीखने की अपील

मद्रास, १४ जून। कल अड्यार में गांधीनगर का उद्घाटन करते हुये कांग्रेस के अध्यक्ष डा० पट्टाभि सीतारमैया ने दक्षिण भारतीयों से शीघ्रातिशीघ्र हिन्दी सीखने की जोरदार अपील की।

आपने कहा:—"मुझे यह देख कर दुःख होता है कि दक्षिण भारत की अधिकांश जनता हिन्दुस्तानी नहीं जानती और वह बहुत पीछे रह गयी है। दिल्ली में किये जा रहे वर्तमान इतिहास के निर्माण में दक्षिण भारत का कोई मूल्य नहीं, क्योंकि हम राष्ट्र भाषा में अपने विचार व्यक्त कर सकने में समर्थ नहीं हैं।"

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

अन्तयच्छ जिघांसतो वज्रमिन्द्राभिदासतः । दासस्य वा मघवन्नार्यस्य वा, सनुतर्यवयावधम् ।
ऋ. १० । १०२ । ३

हे इन्द्र जो हमें मारना या दास बनाना चाहता हो वह चाहे दास हो या आर्य उसके शस्त्र को हम से दूर हटा दे ।

ता० १६ जून १९४९

घातक प्रवृत्तियों से सावधान !

पश्चिमीय बङ्गाल के निर्वाचन के एक क्षेत्र से चार व्यक्ति प्रान्तीय धारा सभा के लिये खड़े हुये । इनमे से श्री सुरेशचन्द्र दास कांग्रेस की ओर से और श्री शरच्चन्द्र बोस सोशलिस्ट रिपब्लिकन, श्री डा. के. राय चौधरी डिमोक्रेटिक वेनगार्ड और श्री वी. एस. सी. राय इन्डपेन्डेन्ट रूप से खड़े किये गये । इस क्षेत्र मे श्री शरत्चन्द्र को सफलता मिली । अपने २ पक्षों की ओर से आन्दोलन करके अपने दलों की प्रशंसा और विपक्षियों की उचित आलोचना करना स्वाभाविक ही है, उसका विरोध तो नहीं किया जा सकता है, क्योंकि प्रजातन्त्र वाद के सिद्धान्त को मानने वाले जहाँ स्वमत का स्वतन्त्रता से प्रचार करने का अधिकार अपने लिये वैधानिक सिद्धान्तानुसार आवश्यक समझते हैं, वहाँ अपने से भिन्न विचारों के लिये भी उसी प्रकार समान अधिकार देने की सुविधा प्रदान करते हैं, इस सिद्धान्त के विरुद्ध तानाशाही को प्रोत्साहित करता है । तानाशाही से उत्पन्न होने वाली अवश्यंभावी अराजकता और आतंकवाद के कितने व्यापक और विनाशक घोर परिणाम होते हैं, इस बात को पिछले दो महान् यूरोपीय महा युद्धों में भलीभांति अनुभव कर लिया गया है । इसलिये धारा सभाओं के निर्वाचनादि साधारण शान्तिमय आयोजन में आवेशवश या अनुचित लाभ उठाने के लिये नृशंस हिंसापूर्ण उपद्रवों को उत्पन्न करना निश्चय ही आत्मघातक प्रवृत्तियों को अनायास प्रोत्साहन देना है । इस प्रकार का व्यापक और कुत्सित कुचेष्टाओं से सर्व साधारण प्रजा का तो कोई लाभ हो ही नहीं सकता है, साथ ही सुव्यवस्थित शासक व्यवस्था कार्यों में भी अनेक प्रकार की अव्यवस्था और बाधा पड़ सकती है और उपद्रवकारियों के दमन करने के लिये जब शासन शक्ति प्रवृत्त होने लगती है तो अनायास बहुत सी शक्ति भी उसमें लगानी पड़ती है कि जिसका प्रयोजन प्रजाहित साधक अन्यान्य उपयोगी दिशाओं मे किया जाना सम्भव होता ।

हाल ही में उपर्युक्त निर्वाचन क्षेत्र मे निर्वाचन विषयक एक सभा हो रही थी उसमें उपद्रव कारियो मे से कुछ ने सोडा वाटर की बोतलें ही नहीं अपितु बम्बों का भी प्रयोग किया। राष्ट्रीय झण्डों को भी जलाया, यह सभा कांग्रेस की ओर से हो रही थी उसमे किस प्रकार के लोग उपद्रव करने के लिये आये होंगे, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है, इस प्रसग में एक बात और विचारणीय है कि पश्चिमीय बगाल के प्रधान मत्री श्री डा० विधानचन्द्र राय महोदय की सूचना के अनुसार बगाल सरकार को ज्ञात हुआ है कि साम्यवादियों की पालित व्योरा नामक सस्था की ओर से साम्यवादी लोगों के लिये एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है कि जिसके द्वारा उनको स्थान २ पर हिंसात्मक आतकपूर्ण कार्यों से ध्वसात्मक उत्पात करने, और हिंसात्मक प्रवृत्तियों की परम्परा को चालू रखने तथा जेलो मे भी उपद्रव करते रहने का आदेश दिया गया है । ऐसी दशा में साधारण नागरिकों में कि जो स्वभावत शान्ति के साथ अपने कार्यों मे प्रवृत्त हैं, विक्षोभ की आतक पूर्ण अराजकता का वातावरण उत्पन्न करने वाली विद्रोहात्मक प्रवृत्तियों, विचारों और कुचेष्टाओं का दमन करना न केवल शासकों का ही कर्तव्य है, अपितु सर्व साधारण जनता का एवं प्रमुख नेताओं का भी आवश्यक कर्तव्य है । इस कार्य मे सब को मिलकर सहयोग प्रदान करना वाँछनीय है। क्यों कि यदि कुछ दुर्बल निर्मर्याद अनुत्तर दाता और स्वेच्छाचारियों की भावनाओं विचारों, प्रवृत्तियों और कुचेष्टाओं का दमन नहीं किया जाता है तो देश मे ऐसी विक्षुब्ध परिस्थिति उत्पन्न होना सभव हो सकती है कि जिसके प्रभाव से स्वतत्रता प्राप्त कर लेने पर भी अपनी आन्तरिक कुचेष्टाओं से ही भारत जैसा विशाल राष्ट्र अपने को चीन, मलाया और बर्मा के पीछे चलता हुआ अनुभव करने लगे ।

विद्रोहात्मक और विघातक प्रवृत्तियों के दमन करने के लिये जब कहा जाता है तो इसका प्रयोजन यह न समझा जाय कि देश की सरकार अथवा कांग्रेस या अन्य किसी भी संस्था या सगठन की भूलों त्रुटियों और अनीतियों की उचित आलोचना भी न की जाय। वस्तुतः जहाँ एक ओर कुत्सित प्रवृत्तियों को दमन करना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक सरकार और उसके कार्यों की आवश्यकता एवं अवसर के अनुसार रचनात्मक आलोचना करना भी है, दोनों ही प्रकार के कार्यों मे प्रवृत होने वालों के लिये एक बात अवश्य ही ध्यान में रखनी चाहिये, वह है राष्ट्र और उसमें रहने वाली प्रजा का समान हित, इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त ही दमन और आलोचना दोनों ही कार्य होना चाहिये, सुसंगठित शासन व्यवस्था, सुव्यवस्थित समाज सगठन और सुनियन्त्रित नैतिक सन्तुलन इन तीनों के विषय मे मर्यादित और नियमितपने को व्यवहार में लाना अनिवार्य है। इस के विपरीत किसी प्रकार से भी सकुचित स्वार्थ व्यतिरेकी भावनाओं, अन्त, कलहात्मक मनोवृत्तियो, सघर्षात्मक चेष्टाओ, और आतकपूर्ण कूटनैतिक चालों के बाहुल्य से प्रजा मे अनेक प्रकार के विध्वन्सात्मक और अमानुषिक प्रवृत्तियों को उत्तेजना मिलती है कि जिसके घोर परिणामस्वरूप विनाश का कुपथ प्रशस्त हो जाता है

राष्ट्र के प्रमुख सूत्र सचालक प्रधान मत्री श्री नेहरू जी ने तथा श्री पटेल महोदय ने बगाल के नागरिकों को इस विषय मे जो चेतावनी दी है और उस सम्बन्ध मे जो जो आदेश दिये हैं, उन पर न केवल बगाल के निवासियों को ही विचार करना चाहिये वरन् भारत के प्रत्येक नागरिक को गम्भीरता के साथ अपने अपने स्थान पर विचार करना चाहिये कि भारत राष्ट्र के समुत्थानपरक बहुमुखी व्यापक आयोजन मे किस प्रकार प्रत्येक को विघातक न बनना चाहिये अपितु सहयोग पूर्वक साधक बनना चाहिये । वर्त्तमान देशकालिक परिस्थिति में अपने विचारों आचरणों और व्यवहारों से राष्ट्र में कटुता, अराजकता, आतंकवाद, और अन्त कलह उत्पन्न करने वाली शक्तियों को उत्तेजना प्रदान करना सर्वथा त्याज्य और निन्दनीय समझना चाहिए, किन्तु ऐसा होना तभी सम्भव हो सकता है कि जब प्रत्येक नागरिक अपने अपने कार्य क्षेत्र मे व्यवहार करते हुये अपने अपने उत्तरदायित्व को अनुभव करते हुये अपना अपना कर्त्तव्य पालन करे । समष्टि के कल्याण में अपना कल्याण और समष्टि के अनहित मे अपना अनहित अनुभव करे। व्यक्तिगत सकुचित स्वार्थों, महत्वाकांक्षाओं और अभिरुचियों को जबतक राष्ट्र के हितसाधनार्थ समर्पित नहीं किया जाता है, तबतक घोर प्रवृत्तियों का दमन केवल शासन शक्ति और उसके द्वारा प्रचालित केवल कानून के बल से सम्भव नहीं है ।

शासनशक्ति का प्रभाव तो जीवन के बाह्य स्वरूप को ही प्रभावित कर सकता है । आन्तरिक और वास्तविक जीवन को प्रभावित करने के लिये धार्मिक, सास्कृतिक और दार्शनिक दृढ़ विचारों का आधार चाहिये, इसलिये शासन शक्ति के द्वारा सचालित सुसगठित कानून से भी अधिक महत्व शासकों, नेताओं और प्रमुख महानुभावो के अनुकरणीय जीवन आदर्श होते हैं । महाजनो येन गत स पन्था, की उक्ति सर्व साधारण प्रजा जनों के लिये सनातन महत्व रखती है किन्तु आधुनिकता के चकाचौंध के प्रभाव में वर्त्तमान समय मे इस तत्व को हम भली भाँति अनुभव नहीं कर पाते हैं। इस महत्वपूर्ण सिद्धात को हृदयगम न कर सकने के कारण प्राय लोग परनिन्दा, पर दोषदर्शन और परापवाद इन तीनों को ही अपने लिये कर्त्तव्य मानकर तदनुसार व्यवहार करने लगते

है वस्तुतः यह परम्परा सर्वथा अश्लाघ्य और हेय हैं। मानवता को पशुता की ओर प्रेरित करने वाली है पशुता के प्रकोप से अराजकता, आतंकवाद, जिघान्सा, और अन्त कलह उत्पन्न होते हैं।

सांस्कृतिक क्षेत्र मे कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति और संस्था के लिये तो वर्तमान समय मे विशेष और सगठित प्रयत्न करके राष्ट्र मे जो दूषित वातावरण उत्पन्न करने की कूट और कुचेष्टायें की जा रही है उनका समूलाच्छेद करने का प्रयास करना चाहिये।

★ ★

शिक्षोन्नति में बाधा

भारत मे शिक्षाप्रसार के प्रयत्नों की असफलता को अब तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है। गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य जी ने अभी २.३ मास पूर्व अजमेर के भाषण में कहा था कि शिक्षा का प्रश्न, देश की वर्तमान राजनैतिक विकट स्थिति व मुद्रास्फीति से उत्पन्न महगाई से भी अधिक महत्त्व पूर्ण प्रश्न है व चिन्ताजनक है। गत वर्ष ही यह निश्चय किया गया था कि सार्जन्ट कमेटी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा विषयक परामर्श के अनुसार आगामी ४० वर्षों में देश के बालकों को अनिवार्य निश्शुल्क शिक्षा दिये जाने की योजना को शीघ्र पूर्ण किया जावे। आने वाले इस ४० वर्ष के दीर्घकाल में वर्तमान समय के बहुत से विद्यार्थी तो 'पितामह', की पदवी को प्राप्त हो चुके होगे। इतने दीर्घ समय तक कैसे प्रतीक्षा की जा सकती है। सम्भवतः इसी लिये एक दूसरी समिति ने समय की इस लम्बी अवधि को कम करके ११ से १४ वर्ष तक की आयु के विद्यार्थियों के लिये १० वर्ष की अवधि कर दी है, परन्तु यह योजना भी धन का कमी के कारण प्रगति नहीं कर रही है।

भारत सरकार के शिक्षा मत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने फरवरी के अन्त मे घोषणा की थी कि अभिलषित शिक्षा योजना को पूर्ण करने मे यत पर्याप्त समय लग जायगा इसलिये इस योजना को इसी वर्ष से पूर्ण करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया जावे। उनका प्रस्ताव यह था कि शिक्षा व्यय मे ७० प्रतिशत तो प्रान्तीय सरकारें और ३० प्रतिशत केन्द्रीय सरकार धन व्यय किया करे, परन्तु बाद में मौलना आजाद इस बात पर भी सहमत हो गये कि यदि कोई प्रान्त धनाभाव के कारण इस कार्य को प्रारम्भ करने मे अपने आप को सर्वथा असमर्थ अनुभव करे तो केन्द्र से अधिक सहायता भी दी जा सकेगी।

यदि शिक्षा का ठीक ठीक ढंग पर विस्तार करना अभिप्रेत है तब निश्चय ही बहुत से ट्रेन्ड अध्यापकों की आवश्यकता होगी। खेद का विषय है कि भारत में अध्यापकों का वेतन अत्यन्त ही न्यून है अतः अध्यापन कार्य को शिक्षित वर्ग बाधित होकर ही स्वीकार करता है। अनुभव ने बतलाया है कि १०० विद्यार्थियो के लिये कम से कम ३ शिक्षकों की ता आवश्यकता है ही। इस गणित से इस समय देश को कम से कम ९ लाख अध्यापकों की आवश्यकता होगी।

इसके अतिरिक्त बालकों को शिक्षा देने से भी अधिक वयस्क व्यक्तियों को इस प्रकार की शिक्षा दिये जाने की भी नितान्त आवश्यकता है कि जिससे वे अपने वोट (मत) के मूल्य को ठीक ठीक प्रकार मे आंक सकें, जो कि अब नवीन विधान के अनुसार प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को प्राप्त होगा। मौलाना आज़ाद का यह कहना ठीक ही है कि इस प्रकार की शिक्षा प्रारम्भ करने मे अब अधिक प्रतीक्षा नही की जा सकती। उन्होने आशा प्रकट की है कि कम से कम प्रान्तीय सरकार तो अवश्य ही आगामी वर्ष मे इस कार्य को प्रारम्भ कर देगी। खेर कमेटी ने इस योजना को पूर्ण करने के लिये ३ वर्ष की अवधि का समय पर्याप्त माना है। आशा है कि देश के हित चिन्तक नेता अब हवा में किले बनाना छोड़कर व्यावहारिकता से जनता की शिक्षा दीक्षा की उन्नति की ओर अग्रसर होने का यत्न करेंगे।

★ ★

रिक्शा वाला

लगभग दो मास हुआ जब कि केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकारों को परामर्श दिया था कि रिक्शा की सवारी को बन्द कर दिया जाय। वस्तुतः किसी मनुष्य का एक दूसरे मनुष्य द्वारा लाद कर ले जाया जाना हृदय में ग्लानि उत्पन्न करने वाला ही है। विशेषकर इस अवस्था में जब कि खींचने वाला व्यक्ति दुर्बल, निर्धन और थका हुआ दयनीय दशा में हो।

भारतीय सरकार की स्वास्थ्य मन्त्रिणी राजकुमारी अमृत कौर ने रिक्शा कुली प्रथा को रोक देने के उपाय नहीं बतलाये हैं, जिसका कि व्यावहारिक महत्त्व बहुत अधिक है (Labour Investigation Committee) 'श्रम जांच समिति की सूचना के अनुसार सन् १९४४ ई० में शिमला में दो हजार व्यक्ति, मदरास में ६ हज़ार, कलकत्ता मे ३० हज़ार, नागपुर में दो हज़ार लाइसेंस प्राप्त रिक्षा खींचने वाले व्यक्ति थे। देश में निर्धनता, बेकारी व जीविकोपार्जन की कठिन समस्या के साथ साथ इन रिक्षा वालों की संख्या भी उस समय से कई गुना अधिक हो गई है।

उपयोगिता की दृष्टि से रिक्षा के सस्ता होने मे और तङ्ग गलियों में यातायात की सुविधा के कारण यात्री इन्हें पसन्द करते हैं और पार्वत्य प्रदेशों में तो यातायात का रिक्षा ही एक मात्र उपयोगी साधन है। कुछ समय पूर्व कराची में साधारण प्रकार की रिक्शाओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था और उनका उपयोग केवल स्त्रियां व बच्चे ही कर सकते थे। श्रम जाँच समितिने रिक्शा के स्थान पर हल्की मोटर व साइकल 'रिक्षा' की प्रथा जारी करने का परामर्श दिया था परन्तु अधिक व्यय-साध्य होने की इसमें बड़ी बाधा है। इस प्रकार जब तक बेकारी दूर होकर देश की जनता की उपार्जन योग्यता नहीं बढ़ती तब तक इस रिक्षा खींचने की समस्या का ठीक ठीक हल होना सहल प्रतीत नहीं होता। अतः सम्पूर्ण देश को सम्मिलित और सहयोगिता पूर्वक देश की निर्धनता को दूर करने के उपायों को ग्रहण करना चाहिए अन्य सब दुष्परिणाम अन्योन्याश्रय हैं।

★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के निर्वाचन के पश्चात होने वाली अन्तरंग सभा ता० ६ जून १९४९ में सभा के विभागों को निम्न लिखित सज्जनों के सुपुर्द किया गया।

(१) सभा कार्यालय के आधीन:—१. उपदेश विभाग, २. आर्यसमाज रक्षा निधि विभाग, ३. शिक्षा विभाग, ४. नायक जाति सुधार विभाग, ५. दलितोद्धार व शुद्धि विभाग, ६. महिला प्रचार मण्डल, ७. जाति भेद निवारक आर्य परिवार सघ, ८. आर्य वीर दल के कार्यालय रहेंगे।

(२) घासी रामप्रकाशन विभाग, वेद सस्थान के अधिष्ठाता:— श्री रामदत्त शुक्ल जी लखनऊ

(३) आर्यमित्र व आर्यभास्कर प्रेस के अधिष्ठाता:— श्री भृगुदत्त तिवारी जी लखनऊ

(४) भूसम्पत्ति विभाग के अधिष्ठाता—श्री कालीचरणजी मेरठ—
 ,, ,, सहायक अधिष्ठाता ,, जयदेवसिंह जी ,,
 ,, ,, ,, ,, ,, दयारामजी शिकोहाबाद
 ,, ,, ,, ,, ,, फूलनासिंह जी ,,

(५) आर्य नगर सेटिलमेंट लखनऊ के अधिष्ठाता श्री कु० सुरेन्द्र विक्रम सिंह जी लखनऊ

(६) मादक द्रव्य निषेध, समाज सुधार विभाग के अधिष्ठाता— श्री रामदत्त शुक्ल जी

(७) कुमायूं अपहरण रक्षा-विभाग के अधिष्ठाता श्री बनारसीलालजी नजीबाबाद सहा० अधिष्ठाता श्री सद्गुरुशरणजी हलद्वानी

(८) गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दाबन के कुलपति— श्री पं० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री मेरठ

(९) गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दाबन के मुख्याधिष्ठाता श्री म० श्रीराम जी आर्य आगरा

(१०) शम्भूनाथ रामेश्वर देवी पुस्तकालय भवाली के प्रबन्ध कर्त्ता श्री बद्रीप्रसादजी हल्द्वानी

(११) आर्यसमाज मंदिर अल्मोड़ा रक्षा समिति के संयोजक श्री शिवनारायण जी लखीमपुर

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

काश्मीर की स्वर्गिक घाटी

कला और संस्कृति के क्षेत्र में समन्वय

प्राचीन काल से कश्मीर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और नाना प्रकार की कलाओं एवं कलाकौशलों के लिये प्रसिद्ध रहा है। कश्मीर की कला के नमूने वहां की जनता की आन्तरिक कलात्मक प्रवृत्तियों तथा भावनाओं के ही प्रतीक नहीं हैं अपितु उनमें कश्मीर निवासियों की पारस्परिक स्नेह और ऐक्य की भावना अभिव्यक्त हुई है।

कश्मीर की घाटी में ऐतिहासिक और भवन निर्माण कला के अनेक अवशेष मिलते हैं। केवल मुसलमानों के लिये एक धार्मिक पूजा स्थान के रूप में शाह हमदान की शाही मस्जिद का निर्माण किया गया था किन्तु यह मस्जिद एक बौद्ध भवन जैसा प्रतीत होती है। शाह हमदान की मस्जिद के सामने जेहलम नदी पर साम्राज्ञी नूरजहां ने पत्थर मस्जिद बनवाई थी जिसकी पत्थर की मेहराबों पर कुशान कालीन ग्रीक और बौद्ध भवन निर्माण कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसी प्रकार १३८८ में सुलतान सिकन्दर शाह द्वारा निर्मित जामा मस्जिद की मीनारों और स्तम्भों पर कुशान कालीन भारतीय भवनों की छाप पड़ी है।

मकबरे और अन्य इमारतें

झेलम नदी पर स्थित जैनुल आब्दीन की माता का मकबरा हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिये एक विशेष धार्मिक महत्व रखता है। किसी हिन्दू परिवार में चेचक या कोई दूसरी भयानक बीमारी के समय इस मकबरे की ईंटें व्याधि निवारण के लिये रखी जाती हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों के ग्राम्य गीतों में जैनुल आब्दीन को महान् राजा के रूप में याद किया जाता है। कश्मीर में प्रचलित किंवदन्तियों के अनुसार इस बादशाह को एक हिन्दू तपस्वी का अवतार माना गया है। यद्यपि इस मकबरे का निर्माण पूर्ण रूप से ईरानियत नमूने पर हुआ है किन्तु इसकी बड़ी बड़ी दीवारों पर हिन्दू प्रभाव बड़े प्रमुख रूप में झलकता है।

कश्मीर की वे इमारतें जिनका निर्माण किसी धार्मिक प्रेरणा से नहीं किया गया हिन्दू और मुस्लिम कलात्मक परम्पराओं के सम्मिश्रण की साक्षी हैं। डल झील के दक्षिण पार्श्व में स्थित: परीमहल में कभी उदारचेता शाहजादा दाराशिकोह द्वारा स्थापित ज्योतिष का एक स्कूल लगता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इस संस्था में एकत्र होकर ज्ञान संचय करते थे।

रमणीक उद्यान

कश्मीर के सुन्दर उद्यानों से भी दोनों सभ्यताओं के समन्वय की प्रतीति होती है। श्रीनगर से ६ मील दूर डल झील के तट पर बादशाह जहाँगीर द्वारा बनवाया हुआ शालीमार बाग और जहाँगीर के प्रधान मंत्री आसफखाँ द्वारा निर्मित निशात बाग सौन्दर्य के सर्वोत्कृष्ट नमूने हैं। ये बाग जिस तरीके से लगाये गये हैं वह बौद्ध हिन्दू और मुस्लिम परम्पराओं का एक मिश्रित स्वरूप है। इन बागों में पानी की नालियाँ इस प्रकार बनायी गयी हैं कि इनमें पानी कभी मंथर और कभी कभी तीव्र गति से निरन्तर प्रवाहित होता रहता है और बड़ी बड़ी हौजों में आ गिरता है। इन हौजों के चारों ओर फव्वारे लगे हुये हैं।

इन बागों के लगाते और फूलों की क्यारियां बनवाते समय मुगल बादशाहों ने निःसंदेह बौद्ध और जैन परम्पराओं का अनुसरण किया है। इन उद्यानों में पानी की नालियों के साथ साथ गुलाब के झुरमुट, नरगिस, खश-खाश और अन्य प्रकार के फूल लगे हुए हैं। बागों की बाहरी दीवारों के किनारे किनारे छायादार वृक्ष लगाये गये हैं। इसके अतिरिक्त इन वर्गाकार घास के मैदानों में कई अन्य प्रकार के फूल और फलों के वृक्ष लगे हुए हैं। एक साथ फूल और फलों के बाग लगाने की प्रथा निःसंदेह हिन्दू और इस्लामी परम्पराओं के मिश्रण का ही परिणाम है। एशिया और तुर्किस्तान के निवासियों के लिये बगीचा लगाना एक व्यावहारिक आवश्यकता थी और प्राचीन भारत में हिन्दू के लिये पुष्पों का महत्व बहुत अधिक था।

निशात बाग में एक दूसरे के ऊपर बने हुये १२ चबूतरे हिन्दू प्रभाव के स्पष्ट एवं सुदृढ़ प्रमाण हैं। हिन्दुओं में १२ राशियों को पवित्र माना जाता है और निशात बाग में बने हुए ये १२ चबूतरे इन्हीं १२ राशियों के चिन्ह हैं।

इसी प्रकार वैरीनाग बाग की एक मेहराब में बने हुए हिन्दू मन्दिर से यह प्रतीत होता है कि इस बाग को हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने ही मिलकर लगवाया था। मानसबल उद्यान में हिन्दू मंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं जो भवन निर्माण कला और व्यावहारिक जीवन सम्बन्धी हिन्दुओं तथा मुसलमानों के समन्वयात्मक दृष्टिकोण के द्योतक हैं।

कला में सामंजस्य

कश्मीर नाना प्रकार की कलाओं और कला कौशलों का केन्द्र है। यहां कागज की भिन्न भिन्न प्रकार की रंग बिरंगी वस्तुएँ बनायी जाती हैं जो सजावट के काम आती हैं। ये वस्तुएं अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। कश्मीर कलाकार ने अपने चारों ओर की लावण्य प्रकृति से प्रेरणा प्राप्त की है वह प्रेरणा उसकी सभी कृतियों में सजीव हो उठी है। कश्मीर में बनी हुई लकड़ी की वस्तुएं और

वेद वीथी

देवता परमात्मा

(श्री श्यामबिहारी लाल जी वानप्रस्थी)

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश॥

यजु० अ० ३२ म० ११॥

पदच्छेद—परि। इत्य। भूतानि। परि। इत्य। लोकान्। परि। इत्य। सर्वाः। प्रदिशः। दिशः। च। उपस्थाय। प्रथमजाम्। ऋतस्य। आत्मना। आत्मानम्। अभि। सम्। विवेश।

अन्वय—हे विद्वन्! त्वं यो भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च परीत्य ऋतस्यात्मानमभि सविवेश प्रथमजामुपस्थायात्मना तं प्राप्नुहि।

पदार्थ—हे विद्वन्! आप जो (भूतानि) प्राणियों को (परीत्य) सब ओर से व्याप्त होके (च) और ऊपर नीचे (सर्वाः) सब (प्रदिशः) उपदिशाओं तथा (दिशः) दिशाओं को (परीत्य) सब ओर से व्याप्त हो के (ऋतस्य) सत्य के (आत्मानम्) अधिष्ठान को (अभि, सम् विवेश) सामने से भले प्रकार प्रवेश करता है (प्रथम जाम्) चारों वेदों को (उपस्थाय) पठित क्रिया में परिणीत करके (आत्मना) अपने शुद्ध स्वरूप वा अन्तःकरण से उसको प्राप्त हूजिये।

मंत्र पर विशेष धारणा—

इस मंत्र का देवता परमात्मा है अतः इसमें ईश्वर का वर्णन है। इस मंत्र के शब्दों से प्रतीत होता है कोई पूर्ण योगी जिज्ञासु विद्वान् कह रहा है। जो प्रभु सब चर और अचर जगत् में व्याप्त है, ओत प्रोत है, रमा हुआ है। (भूतानि परीत्य) से सब चेतन जङ्गम जगत अभिप्रेत है और (लोकान्, सर्वाः प्रदिशः दिशः च) में भौतिक सब विश्व आ जाता है। प्राणीवलोक लोकान्तर दोनों ही अनन्त हैं। जो अनन्त में व्यापक हो वह स्वयं अनन्त अवश्य है। ऐसा जो अनन्त विश्व में व्यापक प्रभु है वह प्राप्त किस को और किस तरह हो सकता है। यह प्रश्न है जिसको जिज्ञासु को समझाना परमविद्वान का इस मंत्र में लक्ष्य है। ब्रह्म का दर्शन किसको होता है, यह बात इस प्रकार स्पष्ट की जाती है कि जो सत्य नहीं २ ऋत की मूर्ति-आधार-अधिष्ठान बन जाता है उसी को प्रभु अपनी ज्योति दिखाते हैं, पर यह काम सरल नहीं। इसके लिए सत्य की खोज उसका जानना उसका मानना उसका मन, वचन व कर्म से व्यवहार करना अनिवार्य है। यदि हम प्रभु का दर्शन चाहते हैं। दर्शन चाहना ही चाहिये। और सब चाहते भी हैं तो निरन्तर व्यावहारिक जीवन की कठिन से कठिन परिस्थिति में सचाई अटल सचाई को नहीं छोड़ना चाहिए। यदि भोग दर्शन की कसौटी में हम सत्य में प्रतिष्ठित हो गये और "अग्ने व्रतपते" व्रतं चरिष्यामि को चरितार्थ कर लिया तो ईश दर्शन में बिलम्ब नहीं। दूसरी बात मंत्र में प्रभु के पाने का ढङ्ग माध्यम बताया गया है। कर्म काण्ड उपासनादि द्वारा अन्तःकरण शुद्ध निर्मल होकर स्थित निरुहद हो जाता है तो जीव को स्वयं अपनी सत्ता से प्रभु का आनन्द अनुभूत होने लगता है। यही परम सिद्धि है। ओ३म् शम्

अल्पसंख्यकों के लिये सुरक्षित स्थान

माननीय सरदार पटेल

[—भारतीय विधान परिषद् ने अल्पसख्यको के लिए सुरक्षित स्थान रखने की पद्धति को अस्वीकृत कर दिया है, इस पर मा० सरदार पटेल ने २५ मई १९४९ को विधान परिषद् में निम्न भाषण दिया था।—सम्पादक

अगस्त १९४७ में इस समिति ने एक रिपोर्ट पेश की थी और इस पर विचार करने के बाद अल्पसख्यक समिति ने यह सिफारिश की कि जनसख्या के आधार पर अल्पसख्यकों के लिये लोक सभाओं में स्थान सुरक्षित रखे जाय। साथ ही अल्पसख्यकों को कुछ और सरक्षण देने की भी सिफारिश की गयी थी।

रिपोर्ट के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण

यह रिपोर्ट उस समय उपस्थित की गई थी जब देश की परिस्थिति भिन्न थी और उस समय देश विभाजन के परिणाम का अच्छी तरह से पता भी न था। इसके अतिरिक्त इस सभा के अध्यक्ष डा० मुकर्जी के नेतृत्व मे उच्च राष्ट्रीय विचार धारा के लोगों का एक दल विधान में अल्पसख्यकों के लिये सरक्षण की व्यवस्था करने के विरोध में था। राजकुमारी अमृतकौर ने भी इस सरक्षण व्यवस्था का विरोध किया था। किन्तु उस समय अल्पसख्यकों को यह आशका थी कि उन्हे अपनी सख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व प्राप्त नही हो सकेगा। इसलिये मतभेद के बावजूद परामर्श समिति ने उस समय यही उचित समझा कि अल्पसख्यकों की आशकाओं को दूर कर दिया जाय।

मतभेद की स्थिति

इसके पश्चात् परामर्श समिति ने एक उपसमिति नियुक्त की और इसने अपनी रिपोर्ट फरवरी में प्रस्तुत की। उस समय सिखों के प्रतिनिधियों ने कहा कि वे इस रिपोर्ट पर विचार करने के लिये तथा अपने सम्प्रदाय के लोगों से परामर्श करने के लिये समय चाहते हैं। जब यह रिपोर्ट परामर्श समिति के सम्मुख आयी तो मुसलमानों के प्रतिनिधियों ने कहा कि अल्पसख्यकों के लिये सरक्षण व्यवस्था नहीं रहनी चाहिये। बिहार के प्रतिनिधि ने इसके लिये जोर दिया और अन्य प्रतिनिधियों ने उसका समर्थन किया। उस समय थोड़ा सा मतभेद भी था और मैं नहीं चाहता था कि इतने महत्व के प्रश्न पर जल्दबाजी की जाय। सिखों के प्रतिनिधि सोच विचार के लिये समय चाहते थे, इसलिये हमने बैठक स्थगित कर दी और फिर यह बैठक इस मास के प्रारम्भ में हुई।

दृष्टिकोण में परिवर्तन

इस बार की बैठक में हमने अल्पसख्यकों के ही दृष्टिकोण में बहुत परिवर्तन देखा। डा० मुकर्जी ने यह प्रस्ताव रखा की जनसख्या के आधार पर लोकसभा में अल्पसख्यकों के लिये स्थान सुरक्षित रखने की धारा को हटा देना चाहिये। इस पर परिगणित जातियों के प्रतिनिधि श्री मुनिस्वामी पिल्ले ने यह सशोधन पेश किया कि परिगणित जातियों के लिये सरक्षण की व्यवस्था १० वर्ष तक जारी रखी जाय। सलाहकार समिति में यह राय थी कि श्री मुनिस्वामी पिल्ले का यह सशोधन स्वीकार कर लिया जाय। सिखों के प्रतिनिधियों ने भी एक प्रस्ताव रखा और सलाहकार समिति ने इस पर उचित रूप से विचार करना ठीक समझा, क्योंकि समिति के सदस्यों ने सदा ही सिखो के भावनाओ का आदर करना अपना कर्तव्य समझा है। और वे जानते है कि पजाब के विभाजन से सिखों को बहुत हानि पहुँची है। पूरी बहस के बाद समिति ने यह निर्णय किया कि सिखो का नया प्रस्ताव, जो सरक्षण धारा को हटाने का समर्थन करता है और जो यद्यपि दूसरी शर्तों पर सिखो को एक प्रकार का सरक्षण प्रदान करता है, पहले वाले प्रस्ताव से बहुत अच्छा है। समस्त स्थिति पर विचार करने के बाद समिति ने यह निर्णय किया कि बहुत कुछ सोच विचार करने बाद अल्पसख्यको ने स्वय ही यह मान लिया है कि अतीत में सरक्षण व्यवस्था का अल्पसंख्यको पर बुरा प्रभाव पडा है, इसलिये इसे हटा दिया जाय और अल्पसंख्यक समिति के प्रस्तावो को स्वीकार कर लिया जाय।

परामर्श समिति के लगभग ४० सदस्यो से केवल एक ही इस प्रस्ताव के विरोध में था। इसलिए हमने यह उचित समझा कि हम इस सभा के सम्मुख यह प्रस्ताव रखें जो इस सभा के घोषित सिद्धान्तो के बिल्कुल अनुरूप है।

सिखों की आशंका

जहाँ तक सिखो का सम्बन्ध है, एक ही ऐसा प्रस्ताव है जो परिणाम की दृष्टि से परामर्श समिति द्वारा निर्धारित सिद्धान्तो से पृथक नही है, क्यो कि परामर्श समिति ने भी यह सशोधन स्वीकार कर लिया है कि परिगणित जातियों के लिए संरक्षण रखा जाय। सिखों ने यह विचार प्रकट किया कि कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो हाल ही दीक्षित किये गये हैं और जो मूलत: परिगणित हिन्दू जाति के हैं। परिगणित जाति के हिन्दूओ के समान ही ये सिख अधिकारो से वंचित हैं। वास्तव में देखा जाय तो सिख धर्म ग्रहण करने वाले ये लोग परिगणित जाति के नहीं हैं क्यो कि सिख धर्म में परिगणित जातियाँ हैं ही नहीं और न उनमें छूआछूत का विचार है फिर भी सिखो को डर है कि यदि इन लोगो को, जो कुछ समय पहले परिगणित जातियो के लोग थे और उन्होने अब सिख धर्म ग्रहण कर लिया है, यदि परिगणित जातियों के समान अधिकार नहीं मिले तो वे फिर परिगणित हिन्दू जातियो में शामिल हो जायगे। इस प्रकार, आपको मालूम होगा कि राजनीतिक उद्देश्यो के लिए साम्प्रदाय का सहारा लिया गया है।

यह मानना पड़ेगा कि सिखों को बहुत हानि उठानी पड़ी है और उनकी वर्तमान मानसिक स्थिति को समझने के लिए हमें उदारता से काम लेना पड़ेगा। इसीलिए, जब यह प्रस्ताव मेरे सामने आये तो मैंने उनसे कहा कि आप धर्म को इतना नीचे न गिराइये कि इस प्रयत्न में धर्म का तत्व ही लोप हो जाय। लेकिन वे नहीं माने। इसलिए हमने सिखों को सलाह दी कि उन लोगो को परिगणित जातियो की श्रेणी में समझा जाय तो सरक्षण चाहते हैं। इन लोगो ने अपने आपको परिगणित जातियो की श्रेणी में मान लिया है। सिखों के लिए यह शोभनीय नहीं, किन्तु वे ऐसा ही चाहते हैं। रामदासियो की तथा तीन-चार प्रकार के अन्य वर्गों को एक परिगणित जाति माना जायगा। वे अपने आप को परिगणित सिख कह सकते हैं किन्तु परमात्मा और धर्म की दृष्टि में तो वे एक ही हैं।

हमारा उद्देश्य

अब हमारा उद्देश्य यह है कि इन श्रेणियों को यथा सम्भव शीघ्र ही मिटा दिया जाय और सबको समानता के स्तर पर ले आया जाय। यद्यपि अस्थायी रूप से हमने इस व्यवस्था को मान लिया है, फिर भी बहुसख्यक जाति का यह कर्तव्य होना चाहिये कि अल्पसंख्यकों में वह अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करे। साम्प्रदायिक तथा जातिगत भेद भावों से अतीत में हमने बहुत हानि उठायी है। अतः हमें ऐसा वातावरण उत्पन्न करना चाहिये जिसमें ये श्रेणियाँ न रहें।

इसलिए, मैं इस सभा से और विशेष कर परिगणित जातियों से अपील करता हूँ कि सिखों को जो रियायतें दी गई हैं उनका वे विरोध न करें। सिखों के हित में यह अच्छी बात नहीं है, किंतु जब तक सिखों को यह विश्वास न हो जाय कि यह गलत है, यह रियायत उन्हे प्राप्त रहनी चाहिये। जहां तक अन्य अल्पसंख्यकों का सम्बन्ध है मेरे विचार में उन्हे अपने निर्वाचन क्षेत्रों के लोगों से विचार विनिमय करने के लिये काफी समय मिल चुका है। अल्पसंख्यकों के सम्बन्ध में हम कोई निर्णय जल्दबाजी में

[शेष पृष्ठ ११ में]

ताम्बा, चाँदी तथा अन्य कीमती धातुओ पर की गयी नककाशी भी विशेष रूप से सुन्दर होता है।

इस प्रकार कश्मीर की कला के सभी क्षेत्रों में हिन्दू और मुस्लिम सभ्यताओं का समन्वय होने के साथ साथ एक विशेष नवीनता और शक्ति विद्यमान है। युगो से चले आने वाले कश्मीर के इस कला सम्बन्धी सामजस्य के जीवन भी ओतप्रोत हैं।

★ ★

मेरठ में अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी भाषा सम्मेलन किये जाने का आयोजन किया गया है इस सम्मेलन का समर्थन माननीय श्री रफी अहमद किदवई जैसे नेताओं के द्वारा किया जा रहा है पं० सुन्दरलाल डा० जाकिर हुसेन डा० तारा चन्द्र जैसे महानुभाव इसमें सम्मिलित होंगे। मेरठ में दिसम्बर १९४८ में हिंदी साहित्य सम्मेलन का विराट अधिवेशन बड़ी सफलता के साथ हो चुका है उसी समय से कतिपय हिन्दुस्तानी के समर्थक मेरठ में ही हिन्दुस्तानी सम्मेलन करने का प्रयत्न कर रहे हैं

हिन्दुस्तानी भाषा के समर्थकों के वेदों पर मिथ्या आरोप

(लेखक—विश्वम्भर सहाय प्रेमी)

इन हिन्दुस्तानी के समर्थकों ने हिन्दुस्तानी क्या और क्यो ? पुस्तक प्रकाशित की है इसमें हिन्दी की निन्दा करते हुये हिन्दुस्तानी भाषा का समर्थन किया गया है, खेद की बात है कि हिन्दुस्तानी के समर्थकों ने पवित्र वेदों पर भी हिन्दुस्तानी की आड़ में कीचड़ उछालने का प्रयत्न किया है, इनका कहना है यह बात धर्म की किताबों से साबित की जा सकती है कि ईश्वर या खुदा कोई बोली नहीं बनाता इससे आगे इन्होंने लिखा है खोजियों का कहना है कि हिन्दुस्तान की सबसे पुरानी मानी हुई और पूज्य किताब वेद में दूसरे मुल्कों के शब्द मौजूद है।

आर्यसमाज इन दोनों आक्षेपों को सर्वथा निराधार सिद्ध कर चुका है आर्यसमाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है वेद में किसी भी विदेशी भाषा का एक शब्द भी नहीं, वेद की भाषा शुद्ध संस्कृत भाषा है उसमें दूसरे मुल्कों के शब्द मानना कोरी नास्तिकता है और ये आक्षेप उन व्यक्तियों के द्वारा किये जाते हैं, जिन्होंने वेद का अध्ययन नहीं किया। जिनको वेदों पर विश्वास नहीं। अच्छा होता कि हिन्दुस्तानी के समर्थक इस मिथ्या आक्षेप से पूर्व स्व० बाल कृष्ण एम. ए. द्वारा लिखित "वेद ईश्वरीय ज्ञान है" पुस्तक पढ़ लेते या अन्य वैदिक साहित्य की पुस्तकों का स्वाध्याय कर लेते।

इनका कहना है हिन्दुस्तानी की मां अगर संस्कृत कही जा सकती है तो मौसी ईरानी है इसका अभिप्राय हिन्दुस्तानी के समर्थक यह बताते हैं कि हमें मां और मौसी दोनों को रखना है।

इन लोगों ने पाणिनी के व्याकरण का उपहास किया है। इनका कहना है पाणिनी ने संस्कृत का व्याकरण बनाकर संस्कृत झाड़ी को सुखा ही दिया इनकी दृष्टि में संस्कृत झाड़ी है और हिन्दुस्तानी कल्पवृक्ष। इनका कहना है पाणिनी ने संस्कृत का व्याकरण बनाकर वेदों की बोली को आसान ही किया था और अपने समय के विदेशियों के लिये वेदों के समझने के लिये रास्ता खोला था। अब अगर हम आज पाणिनी की तरफ दौड़ें तो यह काम इतना मुश्किल तो होगा ही जितना इलाहाबाद से जमना के पानी को धकेल धकेल कर दिल्ली लाना। पर यह बेफायदा ही होगा।' इन हिन्दुस्तानी ने समर्थकों को समझना चाहिये कि बिना पाणिनी के व्याकरण के वैदिक साहित्य का अध्ययन करना सरल नहीं। पाणिनी का व्याकरण केवल विदेशियों के लिये वेदों के समझने के लिये रास्ता खोलना मानना नितान्त भूल है किन्तु वह तो सभी के लिये मार्ग प्रदर्शित करता है। उससे जितना लाभ एक जर्मन विद्वान को पहुँचेगा उससे कहीं अधिक भारतीय को पहुँचता है। संस्कृत का अध्ययन करने वाले व्यक्ति को तो पाणिनी के व्याकरण की ओर आज भी दौड़ना पड़ेगा। हां ? हिन्दुस्तानी के पक्षपाती उससे कोई लाभ न उठा सकेंगे क्योंकि उन्हें तो मौलवी मौलाना लोगों का आश्रय लेना है

हिन्दुस्तानी के समर्थकों का कहना है हिन्दुस्तानी बहती हुई गंगा जी है और हिन्दी और उर्दू उसी में से लिये पानी की गगा जलियां है। कितना भ्रममूलक प्रचार है। इन हिन्दुस्तानी के समर्थकों का हिन्दी के महान् गौरव को इस प्रकार कलंकित करने से हिन्दुस्तानी का भला नहीं हो सकता और न हिन्दी के स्थान में हिन्दुस्तानी लोक प्रियता प्राप्त कर सकती है

संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में इनका कहना है "संस्कृत बोली की यह ताकत उन अनपढ़ लोगों ने दी जो जानवर चराया करते थे और अपना घर अपनी पीठ पर बांधे फिरते थे। लिखना वे जानते न थे क्योंकि लिखने जैसी कला उस समय तक पैदा ही नहीं हुई थी

जिस संस्कृत का ये लोग उपहास करते हैं उसी के लिये यह भी लिखते हैं 'अगर संस्कृत को हिन्दुस्तानी की मां कहा जाय तो मौसी ईरानी है' इन लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि संस्कृत अनपढ़ लोगों की भाषा नहीं थी किन्तु ज्ञानी जन की भाषा थी। संस्कृत ऋषि महर्षियों की वाणी द्वारा बोली जाती थी न कि हिन्दुस्तानी के समर्थकों के मुंह से। यदि हिन्दुस्तानी के समर्थक संस्कृत को मां समझते हैं तो उन्हें मां की पूजा करनी चाहिए न कि उसे सूखी झाडी समझना चाहिये। मां की उपस्थिति में उन्हें ईरानी मौसी के पीछे लगने की आवश्यकता नहीं

पुस्तक में सूर तुलसी मैथिलीशरण गुप्त आदि पर भी आक्षेप किये हैं। इन्होंने उर्दू हिन्दी दो लिपियों का भी समर्थन किया है। मुझे खेद है कि इन्होंने हिन्दुस्तानी के नाम पर वेद, पाणिनी तथा संस्कृत भाषा के नाम पर घृणित आक्षेप किये। आर्य समाज किसी दशा में भी यह सहन नहीं कर सकता कि कोई व्यक्ति वेद पर भ्रममूलक आक्षेप करे आर्यसमाज वेदों के आधार पर ही जीवित है वेद आर्य समाज के प्राण हैं

मुझे आशा है कि ऐसी हिन्दुस्तानी के समर्थकों का प्रत्येक स्थान पर आर्य समाज द्वारा विरोध किया जायेगा

★★

विश्व पुस्तक भंडार—

५४ अमेरिकी पुस्तकालयों ने एक योजना बनाई है। इससे विश्व में किसी भी स्थान के नये प्रकाशन की कम से कम एक प्रति प्राप्त करने का प्रबन्ध किया गया है। इस योजना को "कारसिंगटन प्लान" के नाम से पुकारा जाता जाता है।

नई खरीदी हुई पुस्तकें न्यूयार्क के सार्वजनिक पुस्तकालय में आती हैं। बाद में उनको सहयोगी पुस्तकालयों में वितरित कर दिया जाता है। पुस्तकों की विशिष्ट सूची वाशिंगटन पुस्तकालय में रखी जाती है।

आवश्यक विज्ञप्ति

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्मित सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज का एक प्रमुख धर्मग्रन्थ हैं। अब तक इसके अनेक संस्करण अनेकों भाषाओं प्रकाशित हो चुके हैं। किन्तु अभी तक सर्वाङ्ग पूर्ण (क्रिटिकल) संस्करण कि जिसमें मुद्रण, कागज, जिल्द आदि सभी उत्तम कोटि के हों, संस्करण प्रकाशित नहीं हो सका है। इस कमी को दूर करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने निश्चय किया है कि एक सर्वाङ्गीण सुन्दर संस्करण सत्यार्थ प्रकाश का निकाला जाय। सभा ने इस कार्य को सम्पादित करने के लिये एक उप समिति भी बना दी है

इस कार्य को भली भांति सम्पादन करने के लिये यह आवश्यक प्रतीत होता है कि अब तक जहां से जितने भी संस्करण सत्यार्थ प्रकाश के जिस किसी प्रेस से मुद्रित हुये हों, उनका संग्रह किया जाय और तदनन्तर हस्तलिखित प्रतियों से भी मिलान कर प्रेस कापी तैयार की जाय।

अत. जिन २ सज्जनों के पास या पुस्तकालयो मे सत्यार्थ प्रकाश के पुराने संस्करण हों वह इस कार्य के लिये प्रदान करें कि जिससे कार्य मे सुविधा हो सके। यदि कोई सज्जन बिना मूल्य न दे सके और मूल्य से ही देना चाहें तो भी मूल्य से देने की कृपा करें। कम से कम दो २ प्रतिया अवश्य भेज दें।

रामदत्त शुक्ल एडवोकेट
संयोजक समिति
५ हिल्टन रोड लखनऊ

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक सभा ने १९३५ मे आर्य समाज के नियमोपनियमों का संशोधन कर प्रकाशन किया था। यही नियमोपनियम आर्य समाज मे प्रचलित हैं। अब व्यवहार मे ऐसा अनुभव हुआ है कि प्रचलित नियमोपनियमो मे संशोधन आवश्यक प्रतीत होता है। कुछ परिवर्तन, किंवा परिवर्द्धन और कुछ संशोधन आवश्यक हैं। एतदर्थ सार्वदेशिक सभा ने एक उपसमिति बनाई है कि जो इस सम्बन्ध में आवश्यक योजना युक्त पाण्डु लिपि तैयार करे।

इसलिये आर्य समाज के अधिकारियों, कार्य कर्त्ताओं और विद्वानों से अनुरोध किया जाता है कि वह इस विषय मे अपने २ परामर्श और सुझाव भेजे कि उन पर विचार करते हुये संशोधनादि करने मे सुविधा और सौकर्य हो सके।

रामदत्त शुक्ल एडवोकेट
संयोजक समिति
२४ आजाद रोड लखनऊ

सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम पाठ

'ओ३म्' शब्द की महत्ता

(सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार)

'ओ३म्' यह परमात्मा का मुख्य नाम है। यह संक्षिप्त नाम प्रतीत होता है। जैसे E. I. R तथा O. T R आदि संक्षिप्त नाम हैं उसी प्रकार मनुष्यों की सुविधा के लिए अनेक भावनाओं से भरा हुआ यह शब्द भी परमात्मा के गुणों को संक्षेप से बताने वाला है। इस 'ओ३म्' शब्द का संबंध समस्त ब्रह्माण्ड से है। यही कारण है कि जात संस्कार में जो बालक की जिह्वा पर 'ओ३म्' लिखने का विधान है और जब मरता है तब अंत में भी उसे ओ३म् के उच्चारण की शिक्षा यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में 'ओंक्रतो स्मर' दी गई है। तात्पर्य यह है कि मनुष्यों को अपना जीवन 'ओ३म्' से प्रारंभ करके ओम् के स्मरण के साथ ही समाप्त करना चाहिए।

इस ओंकार की महिमा का वर्णन उपनिषदों एवं अन्य वैदिक साहित्य में भी पाया जाता है। प्राचीन काल से ओम् संसार व्यापक शब्द के रूप में अब तक चला आ रहा है। सैमेटिक जातियों में इसका उच्चारण 'एमिन' (Amen) और अरब जातियों में इसका रूप 'आमीन' (ओम्) हो गया है।

उपनिषदों एवं वैदिक साहित्य के अनुसार 'ओम्' की उत्पत्ति भूः भुवः स्वः से मानी गई है। इस प्रकार यह ओम् शब्द पारब्रह्म परमेश्वर के सच्चिदानन्द स्वरूप का भी द्योतक है। 'भू सत्तायाम्' धातु से 'भू' का अर्थ सत् है, भुवः अवाचिन्तने भुव. चित् को कहते है। स्वः नाम है आनन्द का। इन भू. भुव. स्व का अर्थ सच्चिदानन्द होते हैं। इस प्रकार ओम् शब्द जहाँ ईश्वर का नाम है वहाँ उससे उपरोक्त प्रकार से ईश्वर का सच्चिदानन्द स्वरूप होना भी प्रकट होता है। यही ओम् की विशेषता है।

परन्तु 'ओ म्' शब्द के आप की महत्ता का कारण क्या है यह समझने के लिए हमें उसके अन्तर्निहित भाव को समझना चाहिए। वास्तव में ईश्वर की इतनी अधिक व्यापकता बताने वाला और यह दर्शाने वाला कि संसार की सभी वस्तुओं में प्रभु की सत्ता विद्यमान है और कोई नाम नहीं। कहने के लिए प्रभु के अग्नि, वरुण, विष्णु आदि सैंकड़ों नाम कहे जा सकते हैं पर अग्नि आदि नाम सीमित हैं और प्रभु की व्यापकता को नहीं बताते। वे उसके केवल एक गुण को बताते हैं। परन्तु 'ओ३म्' यह नाम प्रभु की व्यापकता को बताता है और जप करने वाले को बताता है कि तुम मुझे सम्पूर्ण विश्व में व्यापक मानकर पारस्परिक संबंधों को मधुर एवं प्रेममय बनाओ, छल कपट छोड़ दो।

'ओ३म्' शब्द की व्याख्या माण्डूक्योपनिषद् में इसी दृष्टिकोण को सामने रखते हुए की गई है। इस उपनिषद् में लिखा है कि:—

'अकारः प्रथमा मात्रा। आप्ते. आदिमत्वाद्वा'।

'उकारो द्वितीया मात्रा। उत्कर्षात् उभयत्वाद्वा'।

'मकारः तृतीय मात्रा। मितेः अपीतेर्वा'।

अर्थात् 'अ = आप्लृ' धातु के आ का या आदि शब्द के 'आ' का ह्रस्व भाविक रूप है। 'उ' उत्कर्ष शब्द के आदि का 'उ' है या उत्तम शब्द के आदि का। 'म्' मा धातु का हल् रूप है या पीति को 'प' 'म्' के रूप में परिवर्तित होकर 'ओ३म्' का 'म्' बना है। इस प्रकार 'अ उ म्' यह ओ३म्' शब्द के अवयव कैसे प्राप्त हुये यह हमने देखा। अब यह देखना है कि इसके अनुसार इन अवयवों का अभिप्राय क्या है?

'अ' का अभिप्राय है 'प्राप्त होना' 'व्याप्त होना' या आदि वाला होना'। 'उ' का अभिप्राय है ऊपर खींचना, निकालना या दो का होना। 'म्' का अभिप्राय है 'ज्ञान वाला होना' या लीन होना। श्री पू० स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में अ उ म् इन तीन अक्षरों से तीन २ अर्थ दर्शाए हैं। यथाः—

अकार से—विश्व, विराट् अग्नि।

उकार से—तैजस्, हिरण्य गर्भ, वायु।

मकार से—प्राज्ञ ईश्वर, आदित्य।

इन उपर्युक्त अर्थों में विश्व, तैजस् और प्राज्ञ यह एक श्रेणी के नाम हैं और शरीर के साथ परमात्मा के संबंध को बतलाते हैं। हमारे शरीर की तीन अवस्थाएँ हैं जागृत्, स्वप्न और सुषुप्ति। जागृत् अवस्था का नियामक होने से उसे विश्व, स्वप्नावस्था का नियामक होने से तैजस और सुषुप्तावस्था का नियामक होने से परमात्मा को प्राज्ञ कहते हैं।

परमात्मा हमारे शरीर की जागृत् अवस्था का नियामक है जिस प्रकार वर्ण मालामें 'अ' से अधिक व्यापक न कोई स्वर है और न कोई व्यञ्जन। इसलिए इसका व्यापकत्व प्रत्यक्ष ही है। यह वर्ण माला का पहला अक्षर अथवा ओंकार की पहली मात्रा है इसलिए इसका आदिम (पहला)

होना भी स्पष्ट है। इस प्रकार विचार करने से विश्व और अकार की समता साफ प्रकट हो जाती है। इस प्रकार जो मनुष्य विश्व और ओंकार की पहली मात्रा अकार में अभेद जानकर अर्थात् जिस प्रकार वर्णों में 'अ' व्यापक है और सर्व प्रथम वर्ण है उसी प्रकार विश्व को समझकर उपासना करेगा, वह अपनी सम्पूर्ण कामनाओं पर विजय प्राप्त कर सकेगा।

शरीर की स्वप्नावस्था का नियामक होने से परमात्मा का नाम तैजस है। जाग्रतावस्था में तो सूर्यादि बाह्य ज्योतियां हमारा मार्ग प्रदर्शन कर रही होती हैं परन्तु स्वप्नावस्था में मन की आन्तरिक ज्योति काम देती है। इसलिए स्वप्नावस्था को ज्योति प्रधान या तेजः प्रधान कहा गया है। यह अवस्था पहली अवस्था से उत्कृष्ट है। इसलिए तैजस् में उत्कृष्टता का भाव भी है और उभयता का भी, इसलिए कि वह विश्व और प्राज्ञ दोनों अवस्थाओं का मध्यवर्ती है। दूसरी ओर उकार भी उत्कर्ष से लिया गया है इसके भीतर भी इसलिए यह दोनों भाव उपस्थित हैं। इस प्रकार उकार और तैजस् की समता स्पष्ट है। इस प्रकार ओंकार की दूसरी मात्रा की अभेदता को लक्ष्य में रखकर जो उपासना करता है उसमें ज्ञान की उत्कृष्टता और समता आती है।

शरीर की सुषुप्ति अवस्था का नियामक होने से परमात्मा को प्राज्ञ कहते हैं। जीव जब जागृत और स्वप्नावस्था के भोगों से थक जाता है तो परमात्मा अपनी परम कृपा से उसे विश्राम स्थान में भेज देता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि प्राज्ञ, तेजस और विश्व सृष्टि की अन्तिम गति है अर्थात् उससे समस्त जगत् की माप होती है और इसीलिए उसके भीतर प्रलय का भाव भी निहित है। प्राज्ञ स्थिति की तुलना 'ओ३म् के मकार' ओंकार की समाप्ति सूचक मात्रा है और अन्य मात्राओं का लय स्थान। उच्चारण में भी जहाँ अकार और उकार से मुंह खुलता है वह मकार से बंद हो जाता है। इस अवस्था में पहुँचकर जीव प्राकृतिक संसार (शरीरों) को पार करके अन्तर्मुखी होता हुआ आत्मामय होकर केवल आनन्द का भोग करता है।

विराट्, हिरण्य गर्भ और ईश्वर यह दूसरी श्रेणी के नाम हैं और ब्रह्माण्ड के साथ परमात्मा के सम्बन्ध के द्योतक हैं।

ब्रह्माण्ड की तीन अवस्थाएँ हो सकती हैं स्थूल, सूक्ष्म और अव्याकृत अवस्था। स्थूल जगत् जो हमें दिखाई दे रहा है उसको प्रदीप्त करने के कारण परमेश्वर को विराट कहा गया है।

सूक्ष्म अवस्था का नियामक होने से परमात्माको हिरण्यगर्भ कहा गया है। सूर्यादि सब चमकीले पदार्थ परमात्मा में गर्भ रूप में विद्यमान रहते हैं ब्रह्माण्ड की यह अवस्था हिरण्यगर्भ अवस्था है। उस अवस्था का नियामक होने के कारण परमात्मा भी हिरण्य गर्भ वाला है।

ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म अवस्था से पूर्व ब्रह्माण्ड अव्याकृत अवस्था में अर्थात् प्रकृति की अपनी कारणावस्था में होता है। इस अव्याकृत अवस्था का नियामक होने से परमात्मा का नाम ईश्वर है। जिस प्रकार मशीन के एक पुर्जे को चलाने से सारी मशीन चलने लगती है ठीक उसी प्रकार परमात्मा अपना

सौराष्ट्र [ऋषि जन्म भूमि] में आर्यसमाज की गति - विधि

[श्री मोहनलाल शर्मा, राजकोट]

ऋषि जन्मभूमि सौराष्ट्र में आज आर्यसमाज की गति-विधि देख कर हृदय दुःखित होता है। जस ऋषि ने सारे विश्व को जगा दया, उसी की जन्म भूमि आज आर्यसमाज के प्रचार से शून्य है। चालीस लाख की जन सख्या वाले सौराष्ट्र में आटे में नमक के बराबर १० या १२ समाजें हैं। इनमें जाम-नगर, पोरबन्दर, राजकोट, भाव-नगर, सोनगढ़ और टंकारा में प्रमुख समाजें हैं। किन्तु इनमें किसी समाज में ५० सभ्य है तो किसी में १५ हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी समाज की सभ्य संख्या नगण्य है। एक शहर की जन सख्या दो लाख की है किंतु वहां की आर्यसमाज की सभ्य संख्या मात्र १७ है। क्या दो लाख की जन सख्या में से केवल १७ आदमी समाज के सभ्य हों यह समाज के लिये लज्जास्पद नहीं है ? यही दशा और जो सौराष्ट्र में समाजें हैं उनकी है।

सौराष्ट्र में आर्यसमाज का प्रचार क्यों नहीं बढ़ा ? तो इसके प्रत्युत्तर में मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि "सौराष्ट्र के आर्यसमाजिक भाइयों ने ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को जीवन में नहीं उतारा। मैंने देखा है कि जो समाज के प्रमुख मत्री आदि अधिकार पर वर्षों से बैठे है उन्होंने वैदिक सिद्धांतों के प्रचार के लिये कुछ नहीं किया। जिसका परिणाम आज हम सामने देख रहे हैं कि उन्हीं आर्यों की सन्तान आज आर्य-समाजी नहीं हैं। इतना ही नहीं-किन्तु आर्यसामज के पूरे शत्रु बन बैठे हैं।

हां, सौराष्ट्र में एक कन्या गुरुकुल और लड़कों का गुरुकुल अवश्य है किंतु इन गुरुकुलों में ही प्रचार को इति श्री मान लेना ठीक नहीं है। इस समय सौराष्ट्र स्व-तन्त्र हुआ है। जब देशी राजे महा-राजे थे, उस समय आर्यसमाज के प्रचार में अवश्य बाधाएं उपस्थित होती थीं, किंतु अब परिस्थिति पलट गई है अतः इस समय आर्य समाज को जागृत हो जाना चाहिये और समय का लाभ उठाना चाहिये।

पोरबन्दर, जामनगर, राजकोट, भावनगर, आदि प्रमुख आर्यसमाजों क कार्यकर्ताओं को इस समय सगठित होकर सारे सौराष्ट्र में एक व्यवास्थत, सुदृढ़ प्रचार योजना तैयार करनी चाहिए। उन आर्य महानुभावों को शीघ्र एक समिति बुलानी चाहिये—

जिनको गणना इस समय सौराष्ट्र के आर्य जगत् में प्रमुखतया मानी जाती है। अतः मैं उन आर्य महानु-भावों से हार्दिक प्रार्थना करता हूँ कि आगे आये और सौराष्ट्र के आर्यजगत् में नवजीवन सचार करें। यदि इस समय आप लोगों ने जो कुछ नहीं किया और परस्पर के झगड़े में या निष्कर्मण्य रह कर उदासीन बने रहे तो याद रखिये कि आने वाली हमारी सन्तानें कहेंगी कि हमारे हो नेताओं ने अपनी लापरवाही से समाज को उन्नति को रोका।

मैं आशा करता हूँ कि सौराष्ट्र के आर्य कार्यकर्त्ता अवश्य जागृत होंगे और मिल कर ऋषि ऋण से उऋण होंगे।

दर्शन अर्थात् नियमन का कार्य मुख्यरूप से इस अव्याकृत अवस्था द्वारा करता है। इसलिए जगत के मूल कारण का नियामक होने के कारण परमात्मा को ईश्वर कहते हैं।

अग्नि वायु आदित्य स्थूल जगत के तीन विभागों के साथ परमात्मा के सम्बन्ध को द्योतित करते हैं। स्थूल जगत के तीन विभाग हैं पृथिवीलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक। इस तीनों लोकों में काम करने वाली मुख्य शक्तियां हैं अग्नि, वायु और आदित्य। इन तीनों का नियामक होने से परमात्मा का नाम अग्नि वायु और आदित्य भी है।

इस प्रकार उपर्युक्त ९ नामों में जड़ और चेतन संसार को सब अवस्थाओं तथा सब शक्तियों का समावेश हो जाता है। इसलिए इन अवस्थाओं और शक्तियों की दृष्टि से 'ओ३म्' की व्याख्या ९ शब्दों द्वारा पूर्ण हो जाती है। अतः जिस समय हम ओंकार का जाप कर रहे होते हैं उस समय में इन सम्पूर्ण भावनाओं को प्रभु की विश्व व्यापकता, अनन्त सामर्थ्य एव ज्ञान रूप की भावना रखनी चाहिए।

हमें समाधि अवस्था या तुरीय अवस्था तक पहुँचने के लिए जो पहला कदम उठाना चाहिए वह यह है कि हम प्रत्यक्ष दिखाई देते इस प्राणि जगत् में प्रभु की सत्ता समझें और उसके बाद ब्रह्माण्ड में। यदि हम यह बात समझ लेंगे, इसके अनुसार आचरण करना प्रारम्भ कर देंगे तब हमारे लिए ज्ञानी बनने या मुक्ति प्राप्त करने में कोई संदेह नहीं रह जायगा। यह है ओंकार के जप का महत्व॥

★★

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त के ६३वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर, स्वागताध्यक्ष—

श्री देवकीनन्दन प्रसादजी आर्य का भाषण

अभ्यागत प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये तथा गाजीपुर के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन करते हुए आपने कहा—

इस वर्ष स्वतन्त्र भारत में यह सम्मेलन महान् उद्देश्य लेकर कार्य करेगा। आगामी वर्ष में बडे महत्व पूर्ण कार्य सचालन एव सद्विचार सदाचार तथा एक सूत्र में पिरोने के समस्त उपायों पर विचार करना इस सम्मेलन का महान् उद्देश्य होगा। हमारे सभी नवीन भावी कर्णधार अपने उत्साह एव कार्य कुशलता से आर्य जाति की नौका सद्मार्ग पर चलाने का व्रत लेंगे और शीघ्र ही रंग मच पर आकर भावी कार्यक्रम संभालेंगे और वर्तमान समाजों की कुप्रथाओं, ढीलापन, आपस के राग द्वेष आदि का शीघ्र उन्मूलन करके नई प्रेम रूपी लता का धर्म, त्याग तथा तपस्या रूपी अमृत से अभिषिञ्चन करके प्रफुल्लित करेंगे। यह उद्देश्य महान् है और आशा है भावी कर्ण-धार भी अत्यन्त महानता का परि-चय देंगे।

आर्य धर्म के प्रसार की इस युग में कितनी आवश्यकता है यह सभी, देश के आचार विचार को देख कर अनुभव कर चुके हैं। अधिकांश लोगों मे स्वशासनाधि-कार होने पर भी चरित्र हीनता दृष्टिगोचर हो रही है। सच्चे, त्यागी, तपस्वियों के समुदाय में वृद्धि न की गई तो हमारा तथा राष्ट्र का अहित ही होगा। देश का बच्चा-बच्चा चाहता है कि सद्धर्म फैले, लोग सदाचारी हों, पर यह करे कौन ? अग्रसर इस मार्ग पर कौन हो ? पूर्वजों के त्यागमय मार्ग पर कौन चलावे ? यह कठिनता है, यहां तक कि स्वसिद्धान्त प्रसरित न होने से लोग अन्य देशों के मत में परिवर्तित होकर अपने ही राज्य में कटकमय हो रहे हैं।

ऐसे अवसर पर आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र बडा जटिल हो गया है। परन्तु इसका भूत गौरवशाली था, और भविष्य भी उदीयमान होगा। इसने पूर्वजों के चक्रवर्ती राज्य के मार्गों को दिखलाया, धर्म परायण बनाया तथा उच्चतम बलि, श्रेष्ठतम आत्माओं को हसते - हसते चढ़ा दिया। अतएव आर्यसमाज के सिवा कोई समाज इस जर्जरित भारतीय समाज से नहीं आगे बढ़ सकता है जो सभी को एक सूत्र में पिरोये। सारांश यह कि इस वर्ष ऐसे सम्मेलन के जो कार्य भविष्य के कार्यतन्त्र पर प्रकाश डालेंगे, बड़ी गम्भीरता से कार्य किये जावें।

ऐसे शुभ अवसर पर मैं पुनः आप सभी उपस्थित सज्जन वृन्द का हार्दिक स्वागत करता हुआ समस्त आर्य समुदाय की ओर से शुभ कामना करता हूँ कि यह अव-सर हमें भविष्य में मंगलप्रद, गौरव शाली तथा धर्मराष्ट्र एव संगठन क मार्ग में पथ प्रदर्शक बने और भावी कर्णधार तन, मन, धन से समस्त कठिनाइयों का उन्मूलन करके प्रशस्त मार्ग देश, जाति, जनता के सन्मुख रखें और पवित्र वैदिक आदेश "व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये" का राष्ट्र के नस नस में प्राण संचारित करें।

मोटरों की आग बुझाना

मोटरों में लगी आग को बुझाने के लिए अमेरिका में एक स्वयं चालित यन्त्र का आविष्कार हुआ है। मोटरों की अग्नि दुर्घटना से मोटर वाले अक्सर घायल हो जाते हैं और आग बुझाने में असमर्थ रहते हैं। आशा है कि इससे उन्हें सहायता मिलेगी।

आग बुझाने का कार्य इन्जिन के अन्दर अपने आप होता है। तापमान २५५ डिग्री तक पहुंचने पर यह यन्त्र चालू हो जाता है। तब आग बुझाने वाला द्रव कार्बन टेट्राक्लोराइड भाप बनकर आग बुझा देता है। इस यन्त्र को मोटरों से पृथक करके हाथ में पकड़ कर भी आग बुझाई जा सकती है। इस आविष्कार को सिविलियन, क्लोराडो के रेड कमिट इन्कोरपोरेशन ने बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध कर दिया है।

एयरोसोल बम—अमेरिका में एयरोसोल बम का आविष्कार युद्ध-काल में सैनिकों को मलेरिया से बचाने के लिए हुआ था, परन्तु इसका प्रयोग शान्तिकाल में कृषि और कीटाणु नष्ट करने तथा दुर्गन्ध को दूर करने में होने लगा है। घरों में इसे लकड़ी के सामान को रंगने, पालिश करने तथा कालीन को साफ करने में प्रयोग किया जाता है। पशु चिकित्सा विशेषज्ञ पशुओं को किलनी जूं आदि से बचाने के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

* * * *

अमर प्याऊ और शारदा धर्मशाला का उद्घाटन

ता० ११ मई को शारदा प्याऊ व शारदा धर्मशाला का उद्घाटन श्रीमती नागरकर साहेबा धर्मपत्नि श्रीमान नागरकर चीफ कमिश्नर साहब अजमेर मेरवाडा ने किया। पुष्कर घाटी पर यह प्याऊ और धर्मशाला बड़े ही रमणिक स्थान में श्रीमान रमेशचन्द्र जी शारदा सुपुत्र श्रीमान अमरचन्द जी शारदा जो कि चांद करण जी शारदा के बड़े भाईयों ने बनाई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा ६० वां वार्षिक अधिवेशन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान वा मालवा का बृहद् अधिवेशन ता: ११, १२ मई का बड़े ही समारोह के साथ दयानन्द आश्रम अनासागर अजमेर में हुआ। राजस्थान व मालवा के भिन्न भिन्न भागों से बहुत बड़ी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे। सर्व प्रथम ओ३म् ध्वजा-रोहण कुंवर चांदकरण जी शारदा द्वारा किया गया, निम्न अधिकारी चुने गये।

प्रधान कुंवर चांदकरण जी शारदा। मंत्री, भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण। सहकारी मंत्री, पं० राम सहाय जी व पंडित देवीशंकर जी। उपप्रधान पं० मिट्ठनलालजी भार्गव अजमेर, श्रीमान वैद्य विजयशंकर जी जयपुर। श्रीमान् राम स्वरूप जी राजगढ़ अलवर। श्रीमान शोभाराम जी गुप्त मदसौर। श्रीमान आत्माराम जी जोधपुर स्वामी वृत्तानन्द जी महराज चित्तौड़ कोषाध्यक्ष, श्रीमान धर्मसिंह जी कोठारी। आर्य मार्तण्ड के अधिष्ठाता डा० मानकरण जी शारदा चुने गये।

★★

नई बातें

कृमि निरोधक रसायन—अमेरिका के वैज्ञानिकों ने साधारण, कम दाम की रसायन 'सोडियम फ्लोसिलीकेट' के सम्बन्ध में जांच करने पर यह अनुमान लगाया है कि घरों तथा उद्योगों में इस रसायन के प्रयोग से लाखों डालरों की बचत हो जायगी। जहाजों में सामान के बक्सों को चूहों से, खाने के डिब्बों को झीगुर से बचाने के लिये, मच्छरों की रोक थाम के लिये, लकड़ी में दीमक तथा अन्य सेलूलोस सामान की रक्षा के लिये इस रसायन का प्रयोग किया जाता है।

इस रसायन के नवीन सफल प्रयोगों का श्रेय अमरिका की एक निर्लोभ सस्था 'आरमोर सरसर्च फौंडशन' को है।

नवीन प्रकार का क्लीनर—अमेरिका म नवीन प्रकार के 'सायलेक्स' नामक क्लीनर का आविष्कार हुआ है जो दिवालो और फर्श की सफाई म सहायता देता है। इसकी विशेषता यह है कि यह बेकार नहीं जाता, कारण यह कि रङ्ग द्वारा इस की जांच हो जाती है। इस गुलाबी रङ्ग के चूर्ण को पानी में डाला जाता है पानी का रङ्ग हरा हो जाता है इससे स्पष्ट होता है कि मिश्रण ठीक हुआ है। यदि आवश्यकता से अधिक चूर्ण को मिश्रित किया जाय तो पानी का रङ्ग पीला पड़ जाता है।

सड़कों का अध्ययन—१७ देशों के लगभग ६० अधिकारियों तथा इंजीनियरों ने अमेरिका म सड़कों के निर्माण सम्बन्धी विशेष पाठ्यक्रम में भाग लिया है। अमेरिकी पब्लिक रोड एडमिनिस्ट्रेशन ने इस पाठ्यक्रम का आयोजन १९ मई को वाशिंगटन में किया है। यह पाठ्यक्रम १७ सप्ताह तक जारी रहेगा। इस पाठ्यक्रम में भारत के प्रतिनिधि भी सम्मिलित थे। प्रतिनिधियों को अपना खर्च स्वय करना पड़ेगा या उनकी सरकारों को इसका प्रबन्ध करना पड़ेगा।

खाद्य और कृषि की ज्ञातव्य बातें

१ बम्बई प्रांत ने इस वर्ष ४,००,००० टन अनाज प्राप्त करने का अपना लक्ष्य रखा था। इसमें से वह अभी ही १,३५,००० टन अनाज प्राप्त कर चुका है।

२. भारत में कृषि का व्यय प्रति व्यक्ति ११ आ कनाडा में २० रु. १४ आ. ५ पा तथा अमरीका म ७७ रु ६ आ. ११ पा है।

३ युद्ध के बाद भारत म १९३८-३९ की अपेक्षा, सहकारिता समितियों की सख्या में ४१ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सदस्यों की सख्या में ७०.९ प्रतिशत तथा पूजी में ५४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

क्षय नाशक औषधि—रटगर्स यूनिवर्सिटी 'न्यू जर्सी' के जीवाणु विभाग के अध्यक्ष डाक्टर सेलमैन वाक्समैन ने जिन्होंने १९४३ में क्षय नाशक औषधि 'स्ट्रैप्टोमाइसिन' का आविष्कार किया था हाल ही म एक नवीन श्रेष्ठतर औषधि 'न्यामाइसिन' का आविष्कार किया है। यह 'पैनिसिलिन तथा स्ट्रैप्टोमाइसिन की अपेक्षा श्रेष्ठतर अचूक औषधि है। यह उन कीटाणुओं का भी नाश कर देती है जिन को स्टप्टोमाइसिन नष्ट नहीं कर पाती है।

इस नवीन औषधि से व विकार नहीं होगे जो स्ट्रैप्टोमाइसिन से हो जाते हैं। इस पर अभी और खोज जारी है।

रक्षक ध्वनियन्त्र—अमेरिका की जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी ने स्वयचालित रक्षक ध्वनियन्त्र का आविष्कार किया है जो कारखानों में काम करने वाले सड़कों पर चलने वालों आदि लोगों को सावधान कर देता है।

यह नवीन यन्त्र एक छोटे से ग्रामोफोन से मिलता है। इसमें शब्द ध्वनियां एक चुम्बक के तार में अकित हो जाती हैं और लाउड स्पीकर द्वारा प्रसारित होती हैं। इसमें से सावधान हो जाओ आदि शब्द निकलते हैं।

नई 'एक्स रे मशीन'—अमरिका में एक चलती फिरती विशाल 'एक्स रे मशीन' व्यवहार म लाई जा रही है। इस से ठोस लोहे क भीतर की न्यूनतम दरार की भी फोटो ले ली जाती है। इस मशीन से उत्पन्न हुई किरणें ठोस लोहे में १६ इंच भीतर तक घुस जाती हैं और सब कुछ दिखा देती हैं।

इन नवीन मशीन स सैकड़ों वैज्ञानिकों तथा औद्योगिक इंजिनियरों को धातुओं में दरार हो जाने से उत्पन्न कठिनाइयों को दूर करने म बहुत सहायता मिलेगी। इससे वे प्रारम्भिक अवस्था में ही न्यूनतम दरारों का पता लगा कर उन्हे आगे बढ़ने स रोक सकेंगे।

★ ★

[पृष्ठ ६ का शेष]

नहीं करना चाहते। यदि वे इस निर्णय पर पहुँच गये हैं कि वर्तमान परिवर्तित स्थिति में एक असाम्प्रदायिक राष्ट्र का स्थापना करना सभी के हित में है, तो उन्हे बहुसख्यको पर भरोसा करना चाहिए। साथ ही बहुसख्यकों को भी उनका ख्याल रखना चाहिए। किंतु कुछ समय बाद हमें यह बात ही भुला देनी चाहिए कि अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक क्या हैं। हम यह स्मरण रखें कि यहा एक ही सम्प्रदाय है और वह है एक राष्ट्र। इन्हीं विचारो से मैं यह प्रस्ताव रखता हूँ कि परामर्श समिति की रिपोर्ट पर विचार किया जाय।

समाचार संकलन

भारत के लिये मोटरें

१९४८ में भारत ने ब्रिटेन से १२,१२१ मोटरें तथा ३५७४ लदूदू मोटर गाड़ियां खरीदी, जब कि पाकिस्तान ने ११२९ तथा २८७ ब्रिटिश मोटर लारियां आयात की थीं। और ब्रिटेन में एक ऐसी मोटर भी लगभग तैयार की जा चुकी है जो एक गैलन पेट्रोल में चालीस मील तथा एक घन्टे में ७५ मील दूर तक चल सकती है। पहली मोटरों की अपेक्षा इसमें कई एक विशेषतायें पैदा की गई हैं।

सम्राट की प्रथम महिला ए. डी. सी.

ब्रिटेन की डब्ल्यू. आर. एन. एस. की डायरेक्टर पचास वर्षीय कुमारी बूलकोम्बे एक प्रथम महिला हैं जिन्हें सम्राट की अवैतनिक ए. डी. सी. नियुक्त किया गया है। यह महिला बाल्यकाल में अपने पिता के साथ संसार भ्रमण करने के अतिरिक्त प्रथम युद्ध काल में नौ सेना की एक क्लर्क भी रह चुकी है, इनके स्वर्गीय पिता नौसेना के एक बड़े अफसर थे।

बाप दादों के लिये बोर्डिंग स्कूल

ब्रिटेन में एस्सेक्स काउन्टी कौंसिल वयस्क शिक्षा के लिये ऐसे बोर्डिंग स्कूल खोलना चाहती है जहां बाप दादे अथवा बड़ी आयु के आदमी अकेले या परिवार सहित आकर रह सकें और उन्हें विभिन्न विषयों को अध्ययन करने का अवसर मिलता रहे। इस कार्य के लिये काउन्टी के कई भागों के बड़े बड़े मकानों को "निवास केन्द्रों" में बदल कर पहले-पहल दो सप्ताहों में एकसप्ताह तथा सप्ताहिक शिक्षा क्रमों को चलाने का प्रबन्ध किया जायेगा।

ब्रिटिश शराब का अधिक निर्यात

ब्रिटेन ने जनवरी १९४९ में १५४२४०८ पौंड की मदिरा निर्यात की, जिस में से ८५६४७३ पौंड (१.१४ करोड़ रुपये) की अमेरिका ने खरीदी थी। भारत, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड दक्षिणी अमेरिका तथा कैनेडा आदि को भी भारी मात्रा में व्हिस्की भेजी गई थी। ब्रिटिश सरकार ने भविष्य में ८५ लाख गैलन अथवा १ करोड़ १० लाख पौंड (२२.६१ करोड़ रुपये) की शराब बाहर भेजने का लक्ष्य बनाया है।

भारतीय चाय का सबसे बड़ा ग्राहक

भारत और पाकिस्तान में पिछले वर्ष ६० करोड़ पौंड चाय उत्पन्न की गई थी, जिसमें से आधी ग्रेट ब्रिटेन ने खरीद कर अपने को सब से बड़ा ग्राहक प्रमाणित कर दिया है।

रेडियो द्वारा अंग्रेजी की शिक्षा

विदेशों में वितरण करने के लिये बी. बी. सी. ने लन्दन में "इंगलिश बाई रेडियो" नामक एक फिल्म तैयार की है; जिसको देखने से यह पता चलेगा कि संसार के लोग रेडियो कार्यक्रम की एक माला सुनकर अंग्रेजी कैसे सीखते हैं। हर सप्ताह दो सौ पाठों के प्रस्तुत करने में ब्राडकास्टिंग समय के ५० घन्टे लगते हैं।

★ ★

सूचना

श्री घनश्याम दास आर्य निःशुल्क वैदिक विद्यालय देवरिया गत १८ वर्षों से इस प्रांत में शिक्षा का प्रसार कर रहा है। जिसमें ऋषि दयानन्द प्रदर्शित आर्ष पाठ विधि के अनुसार शिक्षा दी जाती है। प्रवेश काल मई मास से लेकर १५ जुलाई तक है। प्रवेश चाहने वाले प्रवेश नियमावली विद्यालय से मंगालें। श्री घनश्याम दास आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनायें

उपदेश विभाग—

सभा के नवीन निर्वाचन के पश्चात अन्तरंग सभा ने उपदेश विभाग का पृथक अधिष्ठाता या सहायक अधिष्ठाता का निर्वाचन न करके अन्य विभाग सभा कार्यालय के साथ मन्त्री के आधीन रखना निश्चित किया है। अतः उपदेशक, प्रचारक सम्बन्धी समस्त पत्र व्यवहार किसी व्यक्ति विशेष के नाम न कर सभा के "अधिष्ठाता उपदेश विभाग ५ हिवेट रोड लखनऊ" के पते पर करना चाहिये।

आर्यवीर दल की सूचना—

सभा के नवीन निर्वाचन में 'युक्त प्रान्तीय आर्यवीर दल' का पृथक अधिष्ठाता का निर्वाचन न होकर इस वर्ष के लिए उक्त विभाग का कार्यालय सभा के मुख्य कार्यालय के साथ रखना निश्चित हुआ है। अतः प्रान्तीय आर्यवीर दल के संचालकों एवं प्रधान, मन्त्रियों तथा दलपतियों सैनिकों को सूचित किया जाता है कि समस्त पत्र व्यवहार सभा कार्यालय "नारायण स्वामी भवन ५ हिवेट रोड लखनऊ" के पते पर करना चाहिए। और उक्त विभाग सम्बन्धित धन किसी व्यक्ति विशेष को न देकर सभा के श्री कोषाध्यक्ष, ५ हिवेट रोड लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें। प्रान्तीय आर्य वीर दल के 'सेनापति' के नियुक्ति की सूचना शीघ्र आर्य मित्र द्वारा दी जावेगी।

आशा है आर्यवीर दल के संचालक महोदय सभा के निर्देशों के अनुसार कार्य करेंगे।

सभा मन्त्री

नायक जाति की छात्र वृत्तियां

सभा के आधीन नायक जाति समाज सुधार विभाग है—इस विभाग की ओर से प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी नायक जाति के बालक-बालिकाओं को शिक्षार्थ छात्र वृत्तियां दी जायगी—प्रार्थना पत्र ३० जून १९४९ तक सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

प्रार्थी का नाम, पिता का नाम व पता तथा जीविका का साधन—

विद्यार्थी किस कक्षा में और किस पाठशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, स्कूल, कालेज में शिक्षा पा रहा है और परीक्षा फल क्या रहा—स्थानीय स्कूल के मुख्य अध्यापक या प्रिन्सिपल का प्रमाण-पत्र साथ में आना चाहिये—

छात्र वृत्ति केवल नायक जाति के विद्यार्थियों को ही दी जायगी।

रामदत्त शुक्ल
मन्त्री
आ. प्र. सभा यू. पी.

★ ★

सुगम प्रचार योजना

आर्य उप प्रति निधि सभा जिला पीलीभीत के अन्तर्गत एक प्रचारक मण्डली लगातार पाँच वर्ष से वेदप्रचार का कार्य कर रही है। इस में एक भजनोपदेशक दूसरे ढोलक बजाने वाले तथा तीसरे सज्जन मैजिकलालटेन द्वारा प्रचार करते हैं। जो आर्य समाजें या ग्राम निवासी इस मण्डली को अपने जिले में प्रचारार्थ बुलाना चाहें वे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

अधिष्ठाता उपदेश व प्रचार विभाग। आर्य उपप्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज पूरनपुर

आर्य्य-जगत्

निर्वाचन

—आ० स० मऊ नाथ भंजन का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान—म० अम्बिकारायजी, उप प्रधान—म. रामरतनलाल जी तथा म. मंगलारायजी, मंत्री—देवशरणजी, उप मंत्री—म. त्रिविक्रमप्रसादजी तथा म. रमाशंकरजी। कोषाध्यक्ष—म० कामता पांडेय जी। मंत्री

—आर्यसमाज तिलहर—प्रधान ला. नारायणदासजी सर्राफ, उप प्रधान—म. देवदत्तजी म्यू कमि०, ला. रामलालजी सर्राफ, मंत्री—ठा वीरपालसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—मा दामोदरदासजी, निरीक्षक—बा. सुशीलचन्द्रजी।

आ० स० कलौंदा—

प्रधान—श्री केदारसिंहजी उप प्रधान रामरतनसिंह जी, मंत्री—श्री भीमसेनजी, उप मंत्री—श्री रमेशचन्द्रजी, कोषाध्यक्ष श्री पूरनसिंहजी आर्य, निरीक्षक—श्री सुकवीरसिंहजी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हीरा लाल भारतीय।

—गुरुकुल विरालसी—पं० शुकदेवजी शास्त्री मंत्री तथा ब्र० त्रिजेन्द्रजी कुलपति नियुक्त किये गये।

—आ० स० चिलकाना—प्रधान श्री नानकचन्दजी उपप्रधान श्री राजा रामजी, मंत्री-श्री दर्शनलाल अध्या० प्राइमरी पाठशाला चिलकाना।

—आ. स. मण्डी धनौरा—प्रधान - म. बिन्दालालजी, मंत्री चैतन्य स्वरूपजी गुप्त, कोषाध्यक्ष—म० सागरमलजी।

उत्सव

—अखिल आर्यावर्त्तीय सन्यासी महा मण्डल का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन गत १५, १६, १७ मई १९४९ को लखनऊ में हुआ। निम्न लिखित मुख्य प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए।

१—अखिल आर्यावर्त्तीय सन्यासी महामण्डल का यह अधिवेशन विद्वान् संन्यासियों की विचारपूर्ण सम्मति से घोषणा करता है कि विद्वान् योग्य आर्य सज्जनों के लिए पचास वर्ष की आयु पर गृहस्थाश्रम का त्याग ऐच्छिक नहीं अपितु शास्त्रीय दृष्टि से अनिवार्य एवं व्यावहारिक उपादेयता को देखते हुये परम आवश्यक है। क्योंकि योग्य आर्य सज्जनों के गृहस्थाश्रम में चिपके रहने से सच्चे अर्थों में वैदिक धर्म के प्रचार की प्रगति आगे नहीं बढ़ सकती।

२—अखिल आर्यावर्त्तीय सन्यासी महामंडल का यह अधिवेशन संन्यासी महानुभावों से साग्रह अनुरोध करता है कि वैराग्यहीन एवं गुण, कर्म, स्वभाव से अब्राह्मणों के संन्यास में दीक्षित किए जाने की प्रवृत्ति को सर्वथा बन्द कर दें।

३—यह "मण्डल" समस्त प्रचारक संन्यासी महानुभावों से अनुरोध करता है कि आप लोग अपना प्रचार क्षेत्र मुख्यतया ग्रामों को मण्डल बना कर और विशेषतया कथा द्वारा आध्यात्मिक प्रचार करें।

आवश्यक सूचना

अखिल आर्यावर्त्तीय संन्यासी महा मण्डल से सम्बन्धित समस्त संन्यासी महानुभावों से निवेदन है कि वे अपने कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रति मास कार्यालय निगमाश्रम, गंज दारानगर (बिजनौर) के पते पर अवश्य भेजें।

दिव्यानन्द सन्यासी
उपमंत्री

—'आर्य समाज किरतपुर' (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव २४-२५-२६ मई को बड़े समारोह के साथ मनाया गया, २४ मई को नगर कीर्तन नगर के विविध मार्गों से निकाला गया।

निम्न प्रस्ताव पास किये गये—

१—गौवध निषेध, २—हिन्दी राष्ट्र भाषा हो। ३—हिन्दू कोड बिल विरोध। प्रचार का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

—आर्य समाज मुमिया खेड़ा (एटा) का प्रथम वार्षिक उत्सव ८ से १० मई सन् ४९ तक बड़े समारोह के साथ पं० भूपालदेव जी की अध्यक्षता में मनाया गया। जिसका ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। वृहद यज्ञ हुआ और बहुत से स्त्री पुरुषों ने तमाखू आदि नशीली चीजों के न पीने की प्रतिज्ञा की।

शुद्धि

मुस्लिम दम्पत्ति को शुद्धि

श्रीदत्तूलाल जी के सतत प्रयत्नों से आर्यसमाज भरिया एवं कुतरा के तत्वावधान में ८६१८ वर्षों से मुस्लिम हुए एक दम्पति की शुद्धि की गयी। शुद्ध हुए पुरुष का नाम लक्ष्मीसिंह रक्खा गया, शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथों से प्रसाद वितरण किया गया जिसे स्थानीय हिन्दुओं ने बड़े चाव से ग्रहण किया।

—आर्यसमाज अनीतगंज कानपुर २४-४-४९ को एक ईसाई सज्जन 'हाबलसिंह' का शुद्धि संस्कार किया गया नाम 'हरिवंशसिंह' रक्खा गया मोहल्ले के ५० से ऊपर गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री रमाकांत मिश्र का कार्य प्रशंसनीय रहा।

—फतेहपुर यू. पी की आर्यसमाज ने इलाहाबाद निवासी श्री मुहम्मद अली व उनकी माता श्री मती अमीना देवी को २०-५-४९ को सायंकाल आर्य समाज मन्दिर में शुद्ध करके वैदिक धर्म का अनुयायी बना दिया है प्रमुख व्यक्तियों ने जलपान किया।

—अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के उपदेशकों को प्रयत्न से ट्रावनकोर रियासत में प० वेदबन्धु जी की अध्यक्षता में ५२६ ईसाईयों की शुद्धि की गई है। रियासत की आबादी ६० लाख है जिसमें से २५ लाख ईसाई बन चुके हैं। उनको वापस लाना आर्यसमाज का काम है। ईसाई लाखों रु० वार्षिक रियासत के लोगों को ईसाई बनाने में खर्च करते हैं।

देव चन्द्र, प्रधान मिशन होशियारपुर

गुरुकुल वृन्दावन की

दान सूची बाबत मास मार्च सन् १९४९

५) या ५) से अधिक

७) श्री रतनलाल जी पुत्र श्री ज्वाला प्रसाद बरेली।

५) श्री कालूराम श्यामसुन्दर जी जयपुर।

११) श्री रुड़मल, हीरा लाल जी फतेहगंज फैजाबाद।

११) श्री धनीराम जी वैश्य द्वारा बैजनाथ जी रास्तपुर कानपुर।

२५) श्री नत्थी लाल जी बुद्ध सेन जी वर्मा आर्य समाज राजा का ताल फीरोजाबाद (आगरा)

१५) श्री गयाप्रीलाल जी शामली मुजफ्फरनगर।

२१) श्री रामस्वरूप जी शर्मा सिद्धांतालङ्कार नगला दयाली आगरा

५) श्री रामप्रकाश जी कोषाध्यक्ष आर्य समाज हसनपुर मुरादाबाद।

२५) श्री रतन लाल जी ओम्-प्रकाश जी फीरोजाबाद (आगरा)

१०) श्री विद्यावती देवी धर्म पत्नी डा. राधाकृष्ण जी बदायूं।

२६।-) मुरलीधर जी अग्रवाल मन्त्री धर्मादा कमेटी लखीमपुर।

१०) श्री गोवरधन दास जी रस्तोगी लखनऊ।

५) श्री विद्याराम जी दुबे द्वारा रावत रामसिंह जी कुर्मी इटावा।

११) श्री बाबूराम जी श्रीवास्तव बुकिंग क्लर्क कानपुर।

७) श्री लज्जारामजी प्रधान आर्य समाज कचूरा हरदोई।

५) श्री डा० तिन्कूलाल जी सदर बाजार शाहजहाँपुर।

५००) श्री बा. रामकुमार जी अग्रवाल चरस्टीव मैक इन्डस्ट्रीज ४ लोइन रेंज कलकत्ता।

२०) श्री मन्त्री जी आर्य समाज गयाकटोली कानपुर।

५) श्री विद्याधर जी वैद्य शाह जी की कोठी कानपुर।

१०) श्री धर्मराजजी मल्ला कानपुर

५) श्री देव सैन जी शुक्ला बैंकर्स कानपुर।

५) जोहरीलाल जी अहिल्या मूसां खूही कलां कानपुर।

२५) मन्त्री जी आर्य समाज दर्शनपुरवा कानपुर।

१५) मन्त्री जी आर्यसमाज प्रीमर स्टेट कालपी रोड कानपुर।

१०) श्री धीरेन्द्र जी वर्मा द्वारा मन्त्री जी आर्यसमाज कटरा प्रयाग।

५) श्री मती मनोरमा देवी जी बीना नगर पञ्जाब।

५) श्री मती कलावती देवी शाहपुरा काङ्गड़ा।

१००) श्री चैयरमैन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मथुरा सहायता गुरुकुल

१००) श्री चैयरमैन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मथुरा सहायता चैरीटेबिल अस्पताल।

१०००) गवर्नमेंट से सहायता गुरुकुल उन्नति के लिये—

५१) मन्त्री जी आर्यसमाज गंज डुडवारा जिला एटा

२२१), ५) से कम आय का कुल योग—११६७६।-)

दयानन्द विद्यालय

सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासि वानप्रस्थ मण्डल (हरद्वार) ने उपदेशक तय्यार करने के लिए दयानन्द विद्यालय खोलने का निश्चय किया है। गुरू पूर्णिमा (१० जुलाई) से विद्यालय चालू हो जाएगा। प्रवेशार्थी अपना प्रार्थना पत्र १५ जून से पूर्व आचार्य्य दयानन्द विद्यालय ज्वालापुर (जि० सहारनपुर) के नाम भेज दें।

शोक समाचार

—आर्य समाज रानी मंडी अतरसुइया, प्रयाग के संस्थापक तथा आजन्म प्रतिष्ठित सभासद श्री हकीम नवलकिशोर जी का १५ अप्रैल सन् १९४९ ई० को सायंकाल स्वर्गवास हो गया आप की आयु ८३ वर्ष की थी। परमेश्वर आप की आत्मा को शान्ति तथा दुखित परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—आर्यसमाज पुरैनी जि० बिजनौर के उत्साही मंत्री श्री मुन्शी मुकुन्दसिंह जी के इकलौते पुत्र का १२ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है ईश्वर से प्रार्थना है कि वह स्वर्गीय बालक की आत्मा को सद्‌गति तथा शोकातुर परिवार तथा सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करे। इस कारण आर्य समाज का उत्सव भी अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया गया है।

—आर्यसमाज बिहारीपुर में अपने अनथक कार्यकर्त्ता श्री बालमुकुन्दजी टण्डन के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। स्वर्गीय श्री टण्डनजी चिरकाल से आर्यसमाज और अनाथालय तथा अन्य बरेली की आर्य संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे और उन्होंने अपने जीवन में समाज की सेवायें की हैं। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना तथा उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रगट की गई

परीक्षाओं की नवीन पाठ विधि

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद की सिद्धान्त शास्त्री, भास्कर, रत्न आदि परीक्षाओं की नवीन पाठविधि छप कर तैयार हो गई है वह केन्द्रों को भेजी जा रही है। जो सज्जन अपने यहाँ इन धार्मिक परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित करना चाहें वे निम्न पते से पाठ विधि तथा नियमावलि मुफ्त मंगा लें। परीक्षायें जनवरी के अन्त में होंगी। गत वर्ष इन परीक्षाओं में ५,००० से अधिक छात्र सम्मिलित हुए थे।

डा० सूर्य देव शर्मा
एम. ए., डी. लिट्
परीक्षा मंत्री, (अजमेर)

मारवाड़ी समाज में आदर्श विवाह

२६-५-४९ ई० को सेठ मांगीलाल जी खंडेलवाल सरकार वाले के सुपुत्र सेठ मूलचन्द्रजी खंडेलवाल मंडावा वाले की आयुष्मती कन्या का विधवा विवाह आर्यसमाज के द्वारा बड़े ही धूमधाम से हुआ। लड़की की अवस्था करीब १८ वर्ष तथा वर महोदय की २८ वर्ष की है। इस विवाह में यहां का खंडेलवाल समाज बड़ी प्रसन्नता के साथ सम्मिलित रहा। आर्यसमाज को वर पक्ष से २१) तथा लड़की पक्ष से ५) दान मिले।

देहरादून आर्यकुमार सभा

आर्यकुमार सभा देहरादून की ओर से दिनांक ८,९,१० मई को आर्यसमाज मन्दिर में श्री प० ज्ञानेन्द्र देव जी सूफी का मनोहर भाषण हुआ। जिसमें आपने बतलाया कि २७,२८ वर्ष के निरन्तर प्रयत्न करने के बाद भी हिन्दू, मुस्लिम एकता वास्तविक रूप में नहीं हो पाई है। यदि सच्चे रूप में हिन्दू, मुस्लिम एकता स्थापित करना है, तो उन्हें अपनी सभ्यता और संस्कृति में मिलाना चाहिये, इसके लिये आर्य समाज का शुद्धि का कार्यक्रम ही एक सफल साधन है। आपने कहा कि यह कहना कि जितने भी झगड़े व हत्यायें होती हैं, वे सब धर्म के कारण होती है, यह बात असत्य है। धर्म कभी भी परस्पर वैर रखना नहीं सीखता। ये सब राजनैतिक दलों की चालें होती हैं।

—बारी (मुंगेर) आर्य समाज के मंत्री के सुपुत्र का ता० ८।५।४९ को 'अक्षरारम्भ संस्कार' बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प० विन्देश्वरी शर्मा का संस्कार सम्बन्धी प्रभावोत्पादक व्याख्या भी हुआ। अन्यान्य संस्कार को कराने लिये भी जनता से अनुरोध किया गया।

—गुरुकुल विद्या सभा सिरासी तथा गुरुकुल बालीपुर की सार्वजनिक सभाओं में श्री पं काशीराम जी भजनोपदेशक के सुयोग्य सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी के आकस्मिक देहावसान पर शोक प्रकट किया गया। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्‌गति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य की प्रार्थना की गई

—२५ वर्ष तक आर्यसमाज की निरन्तर सेवा करने वाले और ब्यावर के हिन्दुओं में प्रबल जागृति पैदा करने वाले पहलवान नामक राम जी के निधन पर, ब्यावर के नागरिकों की शोक सभा समाज भवन में हुई। जिसमें सभी प्रमुख व्यक्तियों ने श्रद्धांजलियाँ अर्पित की और समवेदना और सहानुभूति का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

—ता० ४।६।४९ को ग्राम मलाई गुरा-दुसर गढ़वाल में श्री मदनलाल जी की अध्यक्षता में निम्न लिखित समाजों की एक सार्वजनिक सभा हुई कई महानुभावों के व्याख्यान व भजनीकों के भजन आदि हुये। आर्यसमाज चिबनगर गुराडस्यू Rgd. आर्य समाज बड़ेली उ मौदाडस्यू Rgd आर्य समाज मौदाडी द. मौदाडस्यू Rgd. आर्य समाज पाखरी उ मौदाडस्यू

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, इन्दौर द्वारा सञ्चालित 'आर्यावर्त का

'वेदाङ्क'

ता० ८ अगस्त ४९ को श्रावणी पर्व के शुभावसर पर प्रकाशित हो रहा है।

आर्य विद्वानों एवं कवियों से अनुरोध है कि ता० १० जुलाई तक अपनी रचनाएं भेजने की कृपा करें।

लेखकों की सुविधा के लिये विषयों का चयन किया गया है' परन्तु लेखक अतिरिक्त विषय चुनने में स्वतन्त्र हैं।

"सृष्टि विज्ञान, वेदावतरण, चतुः संहिता, वेदार्थ, वेद प्रवाह, वेदाधार, वैदिक राष्ट्र विधा, वैदिक शिक्षा पद्धति, वैदिक जीवन, वेद का स्वरूप, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेद का पठन-पाठन, वेद प्रचार, वेद प्रचारक, वैदिक नारी, वैदिक वीर, वैदिक शासन पद्धति, वेद निष्ठा, वेद प्रचार के उपाय, वैदिक योग, वैदिक दर्शन इत्यादि।

'वेदाङ्क' संग्रहणीय एवं स्थायी अङ्क के रूप में प्रकाशित हो रहा है और यह प्रयत्न किया जायगा कि यह अङ्क आर्य जगत् के लिये उपयोगी सिद्ध हो।

सम्पादक (आर्यावर्त)

—आ.स. श्री ठा० नारायणसिंहजी प्रधान
श्री शिवचरनसिंहजी उप प्रधान
श्री बालकिशनजी मन्त्री कलियान दास जी कोषाध्यक्ष

—आर्यसमाज गोरखपुर

प्रधान	श्री हृदय नारायण जी
उप प्रधान	श्री रामगोपाल जी
"	श्री बालकृष्ण जौहरी जी
मन्त्री	श्री शिव औतार जी
उप मन्त्री	श्री ओंकारनाथ कविराजजी
" "	श्री लालजी पाण्डेयजी
कोषाध्यक्ष	श्री बुद्धदेव जी गुप्त
पुस्तकाध्यक्ष	श्री ठाकुरप्रसादजी इंजी०

—एटा आर्य समाज, प्रधान, मेवाराम जी वकील। उपप्रधान, किशोरीलाल जी इंजीनियर। मंत्री, गौरीशंकर जी वैद्य। उपमंत्री, सत्यदेव शर्मा उपाध्याय। कोषाध्यक्ष, सत्यदेव जी आर्य। पुस्तकाध्यक्ष, मथुराप्रसाद जी। निरीक्षक, ब्रजभूषण जी मुख्तार।

—ग्राम हलवन्त निवासी श्री ठा० रामलालसिंहजी महरवाल के सुपुत्र कृष्णपालजी का वैदिक विवाह संस्कार सभा के उपदेशक श्री पं० रामकौशिक जी ने सम्पन्न कराया जिसका प्रभाव जनता पर उत्तम पड़ा।

विवाह उपलक्ष में ठाकुर साहब ने लगभग सौ रुपए के विविध संस्थाओं को दान किया, जिसमें से २०) आ० प्र० सभा युक्तप्रान्त को भी दिया। इसके अतिरिक्त हरिजनों को विवाह शादी के अवसर पर काम में आने वाले वार्ले दो बड़े पीतल के बर्तन दान देकर उनके कष्टों को दूर किया।

—ता० १०-३-४९ गुरुवार को महाराजपुर में श्रीमती कृष्णकुमारी देवी का शुभ विवाह संस्कार श्री फूलचन्द जी पाठक के साथ वैदिक रीत्यानुसार श्री स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा झांसी द्वारा सम्पादित हुआ। स्वामी जी ने मन्त्रों की व्याख्या बड़े ही सुन्दर ढंग से की जिसका कि महाराजपुर मलहरा की जनता पर गहरा असर पड़ा विन्ध्य प्रदेश के लिए यह अन्तर जातीय विवाह सामाजिक पुनरुत्थान की दृष्टि से अपना अलग दीपक महत्व रखता है।

—आर्य कन्या महा विद्यालय, बड़ोदा नवीन कन्याओं का नये सत्र से प्रवेश-आर्य कन्या महा विद्यालय, बड़ोदा का नया सत्र ता० १६ जून से आरम्भ होता है। नयी कन्याओं का प्रवेश ता० १६ जून से ३० जून तक चालू रहेगा। जो अपनी कन्या को प्रविष्ट कराना चाहें वे निम्न पते पर शीघ्र ही पत्र व्यवहार करें। मासिक शुल्क ३०) हैं

—ला० किशनस्वरूप जी रस्तोगी की कन्या वेद वती का विवाह संस्कार सिरसी निवासी ला. बनारसी प्रसाद जी के सुपुत्र बा. विद्यासागर जी के साथ वैदिक रीतिअनुसार आर्यसमाज हसनपुर के के मन्त्री जी द्वारा सम्पादित हुआ कन्या पक्ष की ओर से १९) और वर पक्ष की ओर से २५) स्थानीय आर्यसमाज व स्कूल को दान दिया।

—श्री माथुर वैश्य जातीय में विधवा विवाह—श्री लाला रंगदास जी राजा रामपुर निवासी की विधवा कन्या शारदा देवी का जिसकी आयु १६ साल की है विवाह कानपुर निवासी श्री मान लाला प्यारेलाल जी के सुपुत्र ओमप्रकाश जी के साथ हुआ जिसकी आयु २० साल की है।

—आर्यसमाज के मंत्री श्री पं. गोकुलचन्द जी ने अपनी पुत्री विमलादेवी की शुभ विवाहोत्सव संस्कार श्री प० [illegible] नारायण जी शास्त्री ज्वालापुरी अलीगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के [illegible] के साथ संस्कार वैदिक रीति से पं० देवी शरण जी आचार्य साधु आश्रम प० ओंकार मिश्र जी महोपदेशक सभा द्वारा कराया गया और वर कन्या ने विवाह संस्कार स्वर्ण पढ़ा।

अफगान क्षेत्रपर पाकिस्तानी हवाई जहाज द्वारा बमबारी

? मरे और अनेक घायल

काबुल, १४ जून । अफगानिस्तान को एक समाचार समिति के कथनानुसार अफगानिस्तान की दक्षिणी प्रान्तीय सैनिक कमान ने घोषणा की है कि परसों प्रातःकाल एक पाकिस्तानी हवाई जहाज ने अफगान क्षेत्र में मुगला कुरम पर बमबारी की थी जिससे १५ व्यक्ति जान से मर गये।

अफगानी दक्षिणी सैनिक कमान को आदेश दे दिया गया है कि स्थिति को बड़ी होशियारी और गम्भीरता से देख रेख में रखें और किसी भी आकस्मिक घटना के लिए तैयार रहें।

अफगानिस्तान द्वारा पाकिस्तान से जवाब तलब

सीमा उलंघन और बमबारी करने का कड़ा आरोप

काबुल, १५ जून । अफगानिस्तान की "बख्तर" नामक समाचार समिति का कहना है कि कल अफगानिस्तान के वैदेशिक मंत्री श्री अली मुहम्मद ने पाकिस्तान राजदूत को बुलाया और उनसे अफगानियों पर पाकिस्तानी विमानों द्वारा बमबारी किये जाने के विरुद्ध जोरदार शिकायत की।

वैदेशिक मन्त्री ने कड़े शब्दों में पाकिस्तानी विमानों के सीमा उलंघन करने और अफगान क्षेत्र पर बमबारी करने का विरोध किया और तुरन्त जवाब मांगा।

श्री अली मुहम्मद ने पाकिस्तानी राजदूत से कहा कि यह बमबारी इसलाम, मानवता, अन्तर्राष्ट्रीय अधिकारों व नियमों, दो सरकारों की परस्पर राजनीतिक जिम्मेदारियों और दो अच्छे पड़ोसियों के सम्बन्धों, सभी के विरुद्ध है।

श्री अरविन्द फ्रांसीसी भारत को भारत में मिलाने के समर्थक

पांडीचेरी, १३ जून । श्री अरविन्द घोष के एक प्रवक्ता ने बताया कि श्री अरविन्द इस बात के पक्ष में हैं कि पांडीचेरी और अन्य फ्रांस शासित प्रदेश भारत में शामिल हों और भारत संसार का आध्यात्मिक नेता बने।

आश्रम का एक व्यक्ति भी फ्रांस का शासन रखने के पक्ष में नहीं है।'

विहार में एशिया का सबसे बड़ा रासायनिक खाद का कारखाना

नयी दिल्ली, १५ जून । ज्ञात हुआ है कि बिहार में रासायनिक खाद का जो कारखाना सिंदरी में खुलने जा रहा है वह एशिया में अपने किस्म का सबसे बड़ा कारखाना होगा। इसके निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है।

अमेरिका के इंजीनियरों ने इस कारखाने का डिजाइन तैयार की है। ब्रिटिश निर्माणकर्ता इसका निर्माण कर रहे हैं और अमेरिका, ब्रिटेन तथा भारत में बनी मशीनें इसमें लगायी जा रही हैं। ६० करोड़ के व्यय से बनने वाला यह कारखाना अगले मार्च तक उत्पादन आरम्भ कर देगा और ३ महीने के भीतर यह ? हजार टन रासायनिक खाद तैयार करने लगेगा।

कारखाने का पूरा काम शुरू हो जाने पर उसमें १ करोड़ २० लाख गैलन पानी, ? हजार टन खड़िया मिट्टी और १४ सौ टन कोयले की प्रतिदिन खपत होगी। अनुमान है कि यहां बनी हुई खाद अन्य देशों की खाद से सस्ता पड़ेगा।

राजस्थान में खड़िया मिट्टी पर्याप्त मात्रा में आसानी से मिल रही है। यहीं से यह सिंदरी भेजी जायगी। यहां की खड़िया मिट्टी खाद बनाने के अलावा सीमेंट बनाने के काम भी आयगी।

भारत में इंगलैंड के नए डिपुटी हाई कमिश्नर

जंग न लगने वाला रासायनिक द्रव इसमें धातु को डुबा कर साफ करने से फिर जंग नहीं लगता

लालकिले और पूर्वी पंजाब हाईकोर्ट में गांधी हत्याकाण्ड के मुकदमे पर एक दृष्टि

विगत १० फरवरी को दिल्ली के लाल किले में स्थापित विशेष अदालत के जज श्री आत्मा चरण ने गाँधी हत्या कांड के मुकदमे का फैसला करते हुये हत्याकाण्ड के प्रधान अभियुक्त नाथूराम विनायक गोडसे तथा नारायण आप्टे को फांसी की सजा दी थी। फैसले में हत्याकाण्ड के पांच अन्य अभियुक्तों विष्णु रामचन्द्र करकरे, मदनलाल कश्मीरीलाल पाहवा, शंकर किस्तैया, गोपाल विनायक गोडसे, तथा डा० सदाशिव परचुरे को आजन्म कैद की सजा दी गया था। विशेष जज ने शंकर किस्तैया की उमर कैद घटाकर ७ साल की कड़ी सजा देने की सिफारिश भी की थी। विशेष जज के फैसले के मुताबिक श्री वी. डी. सावरकर को रिहा कर दिया गया था।

अब तक फरार

इनके अतिरिक्त तीन अन्य अभियुक्त गंगाधर एस दण्डवते, गंगाधर जाधव तथा सूर्यदेव शर्मा अभी तक फरार हैं।

पूर्वी पंजाब हाईकोर्ट में विशेष जज के उक्त फैसले पर अभियुक्तों की ओर से अपील दायर की गयी थी।

लालकिले का मुकदमा

लालकिले की विशेष अदालत में मुकदमा २७ मई को शुरू होकर गांधीजी की हत्या के ग्यारह मास बाद ३० दिसम्बर को समाप्त हो गया था। मुकदमे के दौरान में सबूत पक्ष की ओर से १४९ गवाह पेश किये गये थे जिनके बयान ७२० पृष्ठों में लिये गये थे। सबूत पक्ष की ओर से अदालत में ४०४ कागजात और ८० वस्तुए जाच पड़ताल के सिलसिले में जमा कराई गयी थीं। मुकदमे का फैसला देते हुए विशेष जज ने नाथूराम गोडसे को हत्या का और हत्या का षड्यन्त्र कारी दोनों करार दिया था। अन्य अभियुक्तों पर हत्या के षड्यन्त्र का अभियोग लगाया गया था।

पूर्वी पंजाब हाई कोर्ट में अपील

अपील करने पर पूर्वी पंजाब हाई कोर्ट के जजों जस्टिस ए एन भण्डारी, जस्टिस अच्छूराम, जस्टिस जी डी खोसला की फुल बेंच की ४६ बैठकें हुईं जिसमें सबूत व सफाई पक्षों ने अपनी अपनी बहस की। अपील की सुनवाई के दौरान में प्रधान अभियुक्त नाथूराम गोडसे ने अपनी बहस स्वयं की।

अभियुक्तों की ओर से श्री सी. बैनर्जी श्री एन डी डांगे, श्री पी. एल. इनामदार, तथा श्री डी एम अवस्थी ने बहस की। सबूत पक्ष की तरफ से श्री सी. के दफ्तरी श्री. एन के पेटीगारा तथा सरदार करतारसिंह चावला उपस्थित हुये थे।

सफाई पक्ष की ओर से बहस के दौरान में कहा गया था कि महात्मा गांधी की हत्या का कोई षड्यन्त्र नहीं रचा गया था। गांधी जी की हत्या एक ही व्यक्ति का कार्य था जिसके लिये अन्य अभियुक्तों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। बहस के दौरान में सफाई पक्ष की ओर से यह भी कहा गया कि यदि षड्यन्त्र मान भी लिया जाय, तब भी यह षड्यन्त्र २० जनवरी १६४८ को असफल हो गया था। पहले षड्यन्त्र की समाप्ति के बाद नये व्यक्तियों और नये शस्त्रास्त्र द्वारा नया प्रयत्न शुरू किया गया था। नये प्रयत्न में मदनलाल, गोपाल गोडसे, शंकर किस्तैया और दिगम्बर बागडे (मुखबिर] शामिल नहीं थे और नयी योजना में किसी प्रकार के हथगोले और बारूदी पलीते का प्रयोग नहीं किया गया था। बहस में यह भी कहा गया कि डा० सदाशिव परचुरे ने अपनी स्वेच्छा से इकबाल नहीं किया था।

सबूत पक्ष की ओर से कहा गया था कि मुकदमें में प्राप्त सबूतों से षड्यन्त्र सिद्ध होता है। ३० जनवरी को जो योजना पूरी की गयी थी वह पहली योजना के अनुसार थी। कुछ व्यक्ति (अभियुक्त) इस योजना में नहीं थे, लेकिन बाकी अभियुक्तों ने ३० जनवरी की योजना कार्यान्वित की थी। सबूत पक्ष ने कहा था कि हत्या का षड्यन्त्र ९ जनवरी १६४८ से आरम्भ हुआ था जिसका अन्त गांधी जी की हत्या में हुआ था।

बहस में कहा गया था कि महात्मा गांधी की हत्या की योजना नाथूराम गोडसे तथा दूसरे अभियुक्तों ने १२ जनवरी से पहले सोची थी, क्योंकि गोडसे ने अपने बयानों में खुद ही यह कहा था कि वह मुस्लिमों को सन्तुष्ट करने की नीति समाप्त कराने के लिए शांतिपूर्ण ढंग से कांग्रेस सरकार पर दबाव डालने में असफल हुआ था।

★ ★ ★ ★

महाराजकुमार कश्मीर को शासक के अधिकार मिले

श्री नगर, २० जून। कश्मीर के महाराजा ने एक घोषणा की है कि मेरी अनुपस्थिति में महाराजा कुमार करण सिंह के वह सभी अधिकार होंगे जो मुझे हैं। उनको कानून बनाने सजाओं को माफ अथवा कम करने के भी अधिकार होंगे।

कश्मीर के महाराज स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ समय के लिए राज्य से बाहर जा रहे हैं।

पाकिस्तान जाता हुआ डेढ़ लाख का समान पकड़ा गया

गोरखपुर, १६ जून। ओ० टी० रेलवे के वाच और वार्ड कर्मचारियों ने एक लाख तीस हजार का ऐसा माल बरामद किया है जो चोरी चोरी पाकिस्तान भेजा जाने वाला था। ओ० टी० रेलवे के प्रेसनोट में कहा गया है कि इस सिलसिले में चौबीस व्यक्ति गिरफ्तार किये गये हैं जिन में आठ रेलवे कर्मचारी भी हैं। एक दफा एक सौ गाँठ कपड़ा दो डिब्बों से बरामद किया गया जो खाली कहकर पाकिस्तान भेजे जा रहे थे। दूसरी दफा इसी प्रकार दो सौ से अधिक मिट्टी के तेल के कनस्टर पाकिस्तान भेजे जा रहे थे। इसी प्रकार तीसरी दफा कथित खाली डिब्बे से बहुत सा नमक बरामद किया गया था इसके अतिरिक्त दो गाँठ बोरे, एक गाँठ कपड़ा और स्टेशन यार्ड से चुराये गये तीन बोरे शक्कर बरामद किये गये।

विश्व सरकार काँग्रेस में भारतीय प्रतिनिधि भाग लेंगे

नयी दिल्ली, २० जून। विश्व सरकार सम्बन्धी भारतीय संघ के, जिसकी स्थापना अभी हाल में हुई है, मंत्री ने घोषणा की कि संघ स्टाक होम में आगामी २० अगस्त को होने वाली विश्व सरकार काँग्रेस में शामिल होने के लिये अपने ४ प्रतिनिधि भेजेगे।

इटली और मिस्र में हिंद के राजदूतों की नियुक्ति

नयी दिल्ली, २१ जून। हिंद सरकार के विदेश विभाग की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि हिंद सरकार ने पूर्वी पंजाब हाई कोर्ट के चीफ जज दीवान रामलाल को इटली में तथा बम्बई के पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य श्री आसफअली फैजी को मिस्र में अपना राजदूत नियुक्त किया है।

संगीत राष्ट्रीय कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग

नयी दिल्ली, २० जून। गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी ने कहा कि 'संगीत' हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रम का एक आवश्यक अङ्ग है क्योंकि संगीत व्यक्तियों को एकता के बन्धन में बाँधता है जो कि अन्य कोई नहीं कर सकता। यहां तक कि भाषा और धर्म भी नहीं।

श्री राजगोपालाचारी ने, जो कि अखिल भारतीय संगीत समाज के एक समारोह में भाषण कर रहे थे, कहा कि प्राचीन संगीत कला का पुनरुत्थान होना ही चाहिये।

समान संस्कृति के लिये टण्डनजी की अपील

नयी दिल्ली. २० जून। युक्त प्रान्तीय धारा सभा के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने दिल्ली के राजनीतिक सम्मेलन में भाषण देते हुए भारत में समान संस्कृति स्थापित करने के लिये जोरदार अपील की।

आपने कहा कि धर्म में उपयोगी बातों के सिवाय बेकार बातों का त्याग किया जाना चाहिये। भारत में धर्म के नाम पर तथा जनता के संकुचित दृष्टिकोण के कारण बहुत रक्तपात हुआ है।

शरणार्थियों की समस्या का उल्लेख करते हुए टण्डनजी ने कहा कि शरणार्थियों को बसाना सरकार की जिम्मेदारी है चाहे इसके लिये जनता पर टैक्स ही क्यों न लगाना पड़े।

आपने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं से जन सेवा करने पर जोर दिया और कहा कि उन्हें सरकारी पदों के पीछे नहीं जाना चाहिये। आपने यह राय प्रकट की कि आवश्यकता पड़ने पर कांग्रेसी नेताओं को सरकारी पद त्याग कर जन सेवा में तत्पर होना चाहिये।

भोपाल की राज्य भाषा हिंदी

भोपाल, २१ जून। भोपाल के सरकारी कर्मचारियों को आदेश दिया गया है कि पहली जुलाई से ६ महीनों में उन्हें हिंदी आवेदन पत्रों को पढ़ने और उन पर साधारण हिन्दी में आज्ञायें लिखने की योग्यता हो जानी चाहिये।

हिंद सरकार द्वारा भोपाल का शासन अपने हाथों में लेने के पश्चात् उर्दू के स्थान पर हिंदी न्यायालय की भाषा बन जायगी।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः ।

अ० ४।१६।२

जो दो मनुष्य एक साथ बैठकर गुप्त मन्त्रणा करते हैं सर्वव्यापक अन्तर्यामी प्रभु तीसरा होकर उसको जानता है।

ता० २३ जून १९४९

प्रगतिशील पुरोगम

वर्तमान समय में जितनी संस्थायें, सभायें, दल, पार्टियां, सम्मेलन, समारोह और आन्दोलन स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से भारत राष्ट्र में चलाये जा रहे हैं, उन सभी में एक बात समान है। सभी सर्व साधारण जनता के साथ प्रभावपूर्ण है सम्पर्क स्थापित करना चाहते और अनुभव करते हैं कि जितना ही अधिक जन सम्पर्क बढ़ेगा उतनी ही अधिक उनको महत्वाकांक्षा पूरी हो सकेगी। इस लक्ष्य को पूर्ति के लिये केवल आर्जव पूर्ण साधनोपायों का अनुसरण करना ही पर्याप्त नहीं समझा जाता है, अपितु परिस्थिति और आवश्यकतानुसार कुटिल, कपट और छलपूर्ण उपायों से भी कार्य सिद्धि करने में सकोच नहीं किया जाता है। इन सबके बहुमुखी प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप जनता का कितना हित साधन और कल्याण होता है, इसका पर्यालोचन करने वाले सहृदय महानुभाव अत्यल्प ही कहीं कोई विरले ही दृष्टिगोचर होते हैं। वस्तुतः वैयक्तिक स्वार्थी व्यक्तियों की भांति ही सामूहिक सकुचित और व्यतिरेकी स्वार्थों को दृष्टि में रखते हुये संस्थायें भी जब प्रवृत्त होती हैं, तो उनके कार्यों से जनहित सम्पादन नहीं हो पाता है, वरन अन्तःकलह प्रधान प्रवृत्तियों का प्रकोप ही होता है।

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं में आर्यसमाज को अनेक अर्थों में प्रमुख संस्था कहा जा सकता है। इसके विविध कार्यों में जिस सुसंगठितपने की परम्परा प्रतीत होती है, उस प्रकार की अन्यत्र प्रायः असुलभ ही है। फिर भी आर्यसमाज के बहुमुखी कार्यों के अधिकतर केन्द्र बड़े बड़े नगर और कहीं-कहीं बड़े-बड़े उपनगर ही रहे है। अभी तक ग्रामों में आर्यसमाज के कार्य प्रभाव पूर्ण विस्तार से संचालित करने की आवश्यकता को भली भांति अनुभव नहीं किया गया है। इस उदासीनता का एक परिणाम यह हुआ है कि प्रायः ग्राम निवासी आर्यसमाज के सम्पर्क में न आने के कारण अनेक सामाजिक रूढ़ियों में अब तक आबद्ध हैं कि जो उनके मध्य में बहुत पहले ही दूर हो जानी चाहिये था। प्रस्ताव और निश्चय रूप में तो अनेक महा-सम्मेलनों में आर्यसमाज ने भी बड़ा-बड़ा ग्राम प्रचार, ग्राम सुधार, आदि-आदि के विषय में योजनायें बनाई और उनको चलाने के लिये अनेक प्रकार के आयोजन भी होते रहे परन्तु वस्तुतः परिस्थिति वैपरीत्य अथवा प्रयास सातत्य के अभाव से सफलता लाभ नहीं के बराबर ही हुआ।

अबकी देशकालिक बाह्य परिस्थिति सोलह आने आर्यसमाज कार्य के सर्वथा अनुकूल ही है। शिक्षा, समाज सुधार, कुरीति निवारण, सुरीति प्रचार, संस्कृतिक आयोजन, सार्वजनीन धर्म प्रचार, मादक द्रव्य निषेध आंदोलन, क्षात्र धर्म प्रचार, कला कौशल और औद्योगिक उन्नति विस्तार आदि २ सभी क्षेत्रों में जितनी शक्ति हो, उसके अनुसार कार्य करने का सुयोग प्राप्त है। परन्तु परिस्थिति सर्वथा अनुकूल होने पर भी यदि अन्तस्थिति आशानुरूप किन्हीं कारणों से न हो तो भी कार्य सिद्धि सम्भव नहीं होती है। इस विषय में विशेष गम्भीरता के साथ विचार करने की आर्यसमाज के अग्रणी विचारकों को आवश्यकता है। अनेक बार आर्यसमाज के हितैषियों ने व्याख्यानों और लेखों के द्वारा इस बात का परामर्श दिया कि चुने हुये आर्य विद्वान किसी एक स्थान पर एकत्रित होकर देशकालिक परिस्थिति के अनुसार प्रभावपूर्ण योजना तैयार करें और उस योजना को व्यवहार में लाने के पूर्व सर्व साधारण से उसकी उपयोगिता और उपादेयता को भली भांति समझाने का व्यापक आन्दोलन किया जाय। इसके अनन्तर सुसंगठित रूप से समस्त आर्यसमाज और जो-जो सत्कार्य आर्यसमाज से सहानुभूति रखती हो उनके सहयोग से कार्य संचालित किया जाय किन्तु खेद है कि अब तक इस दिशा में आवश्यक कार्यवाही नहीं हो सकी। सार्वदेशिक, प्रान्तीय, स्थानीय, आर्यसमाज और परोपकारिणी सभाओं के साधारण और अन्तरंग के अधिवेशनों में तो ऐसा कोई अवसर आ ही नहीं सकता है कि जिस समय इस सम्बन्ध में शान्ति के साथ गम्भीर विचार हो सके, और न बड़े बड़े सम्मेलनों में ही प्रदर्शनात्मक कार्यक्रमों की अधिकता से यह कार्य होना सम्भव हो सकता है। इसलिए ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के लिये तो अन्य सब प्रकार के कार्यक्रमों और पुरोगमों को सर्वथा दूर रखते हुये शान्ति और गम्भीरता के साथ बिना किसी समय के अनावश्यक प्रतिबन्ध के विद्वानों को मिलकर विचार करना चाहिये। इस प्रकार की परिषद् में पधारने वाले महानुभावों को अपने अपने निजी मतों या सम्मतियों के सम्बन्ध में ही आग्रह न होना चाहिये अपितु लोकसंग्रह की दृष्टि से जो बात अधिक से अधिक उपादेय प्रतीत हो उसी को स्वीकार किया जाना चाहिये किसी प्रकार से भी सकुचित मनोवृत्ति या भावना, कार्य साधक न होकर कार्य में बाधक ही हो सकती है।

स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्र और उनके द्वारा समस्त विश्व के कल्याण साधन के लिये वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, साहित्यिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक औद्योगिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक और नैतिक आदि आदि विभिन्न जीवन के व्यष्टि एवं समष्टि क्षेत्रों के लिये ऐसे किन मौलिक सिद्धान्तों का अवलम्बन किया जा सकता है कि जिससे राष्ट्रों में और व्यक्तियों में सुमति, सद्भावना, सौख्य और शान्ति की स्थापना हो सकती है, साथ ही ऐसा कौनसा कार्यक्रम व्यावहारिक रूप में आर्यसमाज की ओर से संचालित किया जा सकता है कि जो न केवल अल्प संख्यक भारतीय आर्य समाजियों के लिये ही आवश्यक और हितकर हो अपितु मानव मात्र के कल्याण का समानरूप से साधक हो सके, प्रायः संसार के सभी उन्नत और सभ्य देशों में उपयुक्त विषयों के सम्बन्ध में अनुभव और उपयोगिता के आधार पर नवीनतम योजनाओं को विचारपूर्वक बना कर उनके अनुसार मानव राष्ट्रों और समाजों का हित साधन करने के लिये विविध अध्यवसाय किये जा रहे हैं, स्वतन्त्र भारत राष्ट्र भी अग्रणी देशों में अपना महत्व पूर्ण स्थान रखता है इसलिये जहाँ इसके प्रमुख विचारकों के समक्ष रोटी, कपड़ा निवास, शिक्षा, रक्षा, स्वास्थ्य उत्पादन और वितरणादि के अनेक ऐहिक जटिल प्रश्न चिन्ता के विषय बन रहे हैं, वहाँ उन सब से अधिक महत्व और चिरकालीन मूल्य रखने वाले प्रश्न है मानवता को उत्कृष्ट स्तर पर स्थापित करने वाले आर्ष संस्कृति के उन शाश्वत मूल सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित ऐसे व्यावहारिक कार्यक्रमों के कि जिन को सर्व साधारण के दैनिक जीवन में समानरूप से व्यवहृत किया जा सके और जिनके व्यवहार से वर्तमान मानव में दानवता, असुरता, राक्षसपन, और पैशाचिकता की मात्रा कम हो और उसका स्थान मानवता, देवत्व पितृत्व और ऋषित्व को प्राप्त कराया जा सके।

इसमें सन्देह नहीं है कि हमारे वेदादि सनातन शास्त्रों में सार्वकालिक और सार्वजनीन कल्याण साधक अनेक अन्यत्र सुदुर्लभ अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं, किन्तु जब तक उनको भली प्रकार समझकर देशकालिक परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार योग्य योजना के रूप में आचरणीय नहीं बनाया जा सकता है तब तक उनका महत्व तो केवल स्वाध्यायशील कतिपय विद्वानों के लिये ही सीमित है, क्यों कि जिस प्रकार किसी भी औषधि की महिमा उसके किसी ग्रन्थ में लिखितरूप से रहने से ही नहीं है, किन्तु आवश्यकतानुसार उसके प्रयोग द्वारा सफल सिद्ध होने पर ही है, इसी प्रकार मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिये आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने शास्त्रों का का आलोडन करके इस प्रकार की योजनाये और उनके अनुसार बने हुये कार्यक्रमों को न केवल प्रस्तुत ही करें अपितु उनको आचरण और अनुभव में लाकर सिद्ध करें कि वस्तुतः उनके उपयोग से ही दानव-मानव और देव बन सकता है - अनुकूल परिस्थिति से लाभ उठाने का सुयोग प्रस्तुत है, क्या आर्य विद्वान इस ओर उचित ध्यान देकर अग्रसर होंगे ?

किदवाई साहेब की नेक राय

श्री रफी अहमद किदवई साहेब को साधारणतया प्रत्येक भारतीय और विशेषतया प्रत्येक युक्त प्रांत का निवासी जानता है। कांग्रेसके महान् आन्दोलन में आरम्भ से ही सम्मिलित होकर किदवई साहेब ने अद्भुत चतुरता के साथ न केवल कांग्रेस का नेतृत्व ही किया है, अपितु जब आप युक्त प्रांत के गृह सचिव रहे और अन्त में जब से आप केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल मे डाक्तारादि विभाग के मन्त्री बने हैं तब से जो कुछ कर रहे हैं, उससे देश भली भांति परिचित है। सरकार के एक प्रमुख अधिकारी होते हुये भी युक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की राजनीति सूत्र सञ्चालन जैसे महान् उत्तरदायित्व पूर्ण नेतृत्व के कार्य संचालन में एक दल के आप प्रमुख नेता हैं। कांग्रेस के सगटनात्मक कार्यों के नियन्त्रण में समय २ पर जिस पटुता का आप परिचय देते रहते हैं, उससे चिर रशीन राजनीतिज्ञ सुपरिचित हैं।

श्री किदवई साहेब ने श्रीमती लक्ष्मीबाई जयन्ती महोत्सव के सभापति रूप से झांसी में अनेक महत्वपूर्ण और मार्मिक बातें कह डालीं। यदि समाचार पत्रों का वि[illegible] ठीक है तो भारत के प्रत्येक देशभक्त को वर्त्तमान राजनीतिक परिस्थिति, कांग्रेस आंदोलन और सरकार की उपयोगिता एवं उपादेयता के विषय में विशेष गम्भीरता के साथ विचार करना उचित है। आपकी सम्मति में कल के देश भक्त भी आज भ्रष्टाचार, अनाचार, और अन्य पतनात्मक दोषों से दूषित हो गये हैं। कांग्रेस ने अंग्रेजों की राजनीतिक दासता से तो देश को मुक्त करा दिया, किन्तु आर्थिक दरिद्रता, अशिक्षा, तथा अन्य अभावों से देश पहले की अपेक्षा और अधिक दुरवस्थाओं मे जकड़ा जा रहा है। कांग्रेस सरकार जब भ्रष्टाचार को दूर करना चाहती है तो जिनको नियुक्त करती है, वह ही स्वयं भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। नैतिक पतन हो चुका है और प्रायः लोग किसी न किसी प्रकार से अतिशीघ्र अधिक धनी होने की धुन में मस्त हैं।

श्री किदवाई साहेब की दृष्टि में इन सब बुराइयों का मुख्य कारण है विदेशीय अंग्रेजों का देश को कङ्गाल और असहायावस्था मे छोड़ कर चले जाना। किंतु इतना कह देने से भारतीय नेताओं, भारतीय एवं प्रांतीय सरकारों का उत्तर दायित्व तथा कथित दुरवस्था के उत्पन्न होने देने अथवा उसका आवश्यक उपचार न कर सकने का भार सर्वथा दूर नहीं हो जाता है। अब जबकि अपने देश में ही अपना राज्य है और अपने ही नेता गण राज्य शासन भार वहन कर रहे हैं तो फिर भाग्य वा विगत अंग्रेजों को कोसने से क्या लाभ है। आज तो प्रत्येक शासक अधिकार, प्रत्येक सार्वजनिक नेता, प्रत्येक कार्यकर्त्ता और प्रत्येक भारतीय नागरिक का समान उत्तरदायित्व वर्त्तमान परिस्थिति के अच्छे या बुरे होने में है। और इस पर भी यदि किदवाई साहेब जैसे नेक और ईमान्दार देश भक्त ऐसा ही अनुभव करते हैं कि जैसा वह कहते हैं तो ऐसी कौनसी बाधा है कि जिसके कारण आप जैसे महापुरुष राजनीति और शासन भार वहन कार्य से सर्वथा विरत होकर कोई ऐसा कार्य क्यों नहीं करने लगते कि जिसमें आपको भी सन्तोष हो और औरों को भी किसी प्रकार वा आपके सम्बन्ध में भ्रम न हो। आपके कथनानुसार वर्त्तमान पुराने कार्यकर्त्ता उस उत्तरदायित्व पूर्ण शासन कार्य के करने मे असफल भी हो रहे हैं और आप स्वयं भी चाहते हैं कि युवक लोग उस कार्य को बहुगुणित साहस और उत्साह के साथ करने के लिये प्रस्तुत हों।

श्री किदवाई साहेब की यह भी सलाह है कि आगामी निर्वाचन के समय निर्वाचकों को चाहिये कि वह किसी व्यक्ति या दल विशेष की पूर्व सेवाओं आदि के सम्बन्ध [illegible] ध्यान न दें किंतु केवल उन्हीं व्यक्तियों को अपना मत प्रदान करें कि जो सच्चरित्र, योग्य और वर्त्तमान समस्त प्रश्नों के भलीभाँति सुलझाने की क्षमता रखते हों। आपकी यह नेक सलाह देखने में तो बड़ी सुंदर और आकर्षक प्रतीत होती है किन्तु क्या मानव स्वभाव जैसा कुछ अबतक बना हुआ है, उसको भी किसी प्रकार सर्वथा बदला जा सकता है। क्या इतिहास और व्यक्तियों के अच्छे बुरे, छोटे और बड़े कार्यों का अब निर्वाचन के समय कोई मूल्य और महत्व न होगा। और ऐसा किसी अलौकिक वैज्ञानिक शक्ति से सम्भव भी हो जाय तो क्या मानव स्मृति अपना कार्य सर्वथा त्याग देगी। क्या कभी कहीं तथाकथित डिमाक्रेसी में ऐसा व्यवहार हो भी सका है। हां किसी उपजाऊ मस्तिष्क में तो ऐसा काल्पनिक व्यवहार सम्भव हो सकता है। किन्तु वास्तविक मानव जगत् में ऐसा होना दिवास्वप्न ही है। जब कभी निर्वाचन होगा, उस समय दल और पार्टियों की ओर से लोग खड़े होंगे अथवा खड़े किये जावेंगे। उनकी प्रशंसा के, फिर चाहे वह सत्य हो या असत्य, सैकड़ों लोग पुल बान्धते हुये दिखाई पड़ेंगे। विरोधियों की उसी प्रकार तथ्यातथ्य बातों से भर्त्सना की जायगी और किसी न किसी प्रकार से विजय प्राप्त करने के लिये छल, कपट कूट सभी उपाय किये जावेंगे। विशेषकर इस भारत जैसे दरिद्र और अशिक्षित देश में। क्योंकि श्री किदवाई साहेब जिन मतदाताओं को सम्बोधित कर रहे हैं, उनकी संख्या १७ करोड़ से भी अधिक होगी कि जिनमें से ४ करोड़ से अधिक साक्षर मत दाता न होंगे। ऐसी अवस्था में क्या किसी मस्तिष्क मे यह बात आ सकती है कि जिन बुराइयों को रोकने मे देश को स्वतन्त्रता दिलाने वाले त्यागी तपस्वी कांग्रेस के नेता और उनकी सरकारें सफल न होसकीं और जो भ्रष्टाचार को रोकने में स्वयं ही भ्रष्टाचार के सहज आखेट बन गये और जिनको पर्याप्त संख्या में ऐसे कार्यकर्त्ता शासक न मिल सके कि जो भारतीय और प्रान्तीय सरकारों को ईमान्दारी और सच्चाई के आधार पर चला सकें, तो क्या अबोध, अशिक्षित, दरिद्र, असंगठित, सहस्रों वर्षों से अनेक प्रकार से अत्याचारों के नीचे दबे हुये बेचारे ग्रामीण जनों में किसी जादू से ऐसी योग्यता अकस्मात् उत्पन्न हो जायगी या करदी जायगी कि जिस के प्रभाव से वह देवलोक से ऐसे सर्वगुणोपेत योग्य व्यक्तियों का ही निर्वाचन करेंगे कि जिनके जीवन कार्यों के विषय में तो उनको कुछ भी नहीं ज्ञात हो परन्तु निर्वाचन के उपरान्त वह सर्वथा योग्य हो जावें। इस प्रसंग में हमको महाभारत की वह बात स्मरण में आजाती है कि जब धृतराष्ट्र ने सुना कि भीष्म, द्रोण, कर्ण जैसे महारथी मारे जा चुके हैं, फिर भी आशा लता से आबद्ध नेत्रहीन राजा का विश्वास होता था कि "शल्यो जेष्यति पाण्डवान्"।

श्री किदवाई साहेब एक प्रमुख आशावादी कर्मठ नेता और शासक हैं। उनके इस प्रकार के भाषणों से सर्व साधारण जनता में अनायास भ्रमात्मक धारणा उत्पन्न होना सम्भव है। क्योंकि यदि यह उनके व्यक्तिगत विचार हों तो, उनका अधिक महत्व नहीं है, उनके सदृश उत्तरदायित्वपूर्ण कांग्रेसी और भारतीय सरकार के मन्त्री की ओर से ऐसे निराशा जनक और असहायावस्था के द्योतक विचारों का प्रचार सर्वथा अनवसरोचित ही है, ऐसा अनुभव करके यह पंक्तियां लिखीं गई हैं। इसी दृष्टि से इन पर पाठक विचार करें।

रेडियों पर वेद की कथा

कुछ समय से देश भर में यह आन्दोलन उठ रहा है कि आल इंडिया रेडियो से जैसे अन्य धर्म ग्रन्थों के वाक्यों का पाठ होता है तथा कथा होती है, वैसे ही वेद मन्त्रों का पाठ और वेद कथा को भी समय मिलना चाहिये। इस देश के ८० फी सदी निवासी वेद से मान्यता रखते हैं। उन के धर्म का मूलाधार वेद है। यह आश्चर्य की बात है कि हर देश के केन्द्रीय रेडियो स्टेशन से मत मतान्तरों के वाक्यों का नियम पूर्वक पाठ किया जाता है परन्तु भारतीय धर्म, भारतीय सभ्यता, और भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेदों का बहिष्कार ही होता है। हमारी चिरकालीन मानसिक पराधीनता ने हमारे हृदयों में भी ऐसी भावना उत्पन्न कर दी है कि हम अपनी वस्तुओं को हीन और हेय समझते हैं। यह मांग सर्वथा उचित ही है कि आल इंडिया रेडियो से नियम पूर्वक प्रति दिन प्रातः वेद मन्त्रों द्वारा मङ्गलाचरण होना चाहिये। और समय २ पर वेद कथा होनी चाहिये। श्री दिवाकर जी जैसे दूरदर्शी सज्जन जिस विभाग के मुख्य अधिकारी हों उस विभाग से हमें पूर्ण आशा रखनी चाहिये कि वह देश की जनता द्वारा उच्च स्वर से की गई मांग की अवहेलना न करेगा और यथा समय शीघ्र प्रति दिन वेद मन्त्रों के पाठ तथा नियत समयों पर वेद कथा के कार्य को जारी करा देगा।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रधान
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

वैदिक धर्म प्रचार और संन्यासिमण्डल

श्री स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती निगमाश्रम गज, दारानगर

भारतीय वैदिक आश्रम व्यवस्था की मौलिकता और आर्य जीवन का चरम सीमा सन्यास में जा कर चरितार्थ एवम् परि समाप्त होता है। अथवा यों कहो कि आर्य जीवन का प्रारम्भ इकाई से चलकर पारिवारिक एवम् आश्रमीय अनेकत्व में अनुगत होता हुआ अन्त में इकाई की ही भावना बद्ध बनाकर लौकिक लीला का संवरण करता है। इस अन्तिम इकाई का नाम ही सन्यास है परिव्राट्, यति, मस्करी, त्यागी, लिङ्गी अत्याश्रमी आदि उसी के अनेक नाम हैं।

सांसारिक झंझटों के जटिल जाल से विमुक्त होकर दूसरों को मुक्ति पथ पर ले जाना उसके जीवन की उदारता एवम् उद्योग शीलता है। जो स्वयम् विमुक्त नहीं वह दूसरे को सुपथ का अनुगामी कब और कैसे बना सकता है।

महामुनि कपिल ने ठीक ही कहा है—(उपदेश्योपदेष्टृत्वात्तत्सिद्धिः, इतरथान्ध परम्परा) अर्थात् उपदेशक के ठीक होने पर ही उपदेश की सार्थकता है। नहीं तो अन्ध परम्परा का बोल बाला हो जाता है। धार्मिक भावनाओं के प्रसार में तो इस मौलिकता की अनिवार्यता है ही, साथ ही लौकिक भावनाओं को उच्च स्तर पर पहुँचाने के लिए भी सच्चे उपदेशक और शिक्षक वाञ्छनीय हैं।

संसार का धार्मिक इतिहास इस बात का द्योतक है कि जब जब जगती में आर्योचित भावनाओं का ह्रास और दानवी प्रवृत्तियों का उदय होता रहा तब तब अनेक त्यागी तपस्वी एवम् चरित्रवान सन्यासी महानुभावों ने आकर आमूल चूल परिवर्तन किया और कदाचार के स्थान पर सदाचार को स्थापित किया। तात्कालिक जनता ने उनके आदर्श जीवन तथा पवित्र भावनाओं का स्वागत करते हुये स्वयम् को अनुगामी बनाने का भरसक प्रयत्न किया। इतिहासों में ऐसे महानुभावों को नाम संख्या पर्याप्त मात्रा में मिलती है। परन्तु संसार की गति एक रूप नहीं रहती। उसमें अनेकता का आ जाना स्वाभाविक ही है। अभी थोड़े दिन की बात है परम तपस्वी महर्षि दयानन्द ने पतनोन्मुख आर्य जाति को संभाला और उसे आदर्श भावनाओं से सम्पन्न विभूषित करने का सफल प्रयत्न किया।

परन्तु ऋषि निर्दिष्ट वैदिक आदर्शों की ओर देशवासियों का ध्यान यथेष्ट रूप में अवस्थित न रह सका, फिर वही पुरानी आदत अवनति की ओर ले जाने लगी।

मानव-दानवों से होड़ लगाने लगा। कुरीतियों ने जाति के भव्य कलेवर को कुरूप बना दिया अनार्यता जाग उठी। आज राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर भी हमारा देश सुख शान्ति से विमुख होकर अनैतिकता की ओर प्रबल वेग से बढ़ रहा है यह विचारशीलों के लिए एक दुःख की बात है।

परम हितकारक सर्वोद्धारक शान्ति सुधा प्रसारक वैदिक धर्म के उदात्त एवम् उपयोगी उपकरणों के होते हुए देश में कदाचार अनैतिकता का ताण्डव नृत्य किस सहृदय व्यक्ति को नहीं अखरता। ऋषि दयानन्द सरीखे महानुभाव की पुनः आवश्यकता है। पर वे अब इतनी जल्दी कैसे आ सकेंगे। आज आर्य कहे जाने वाले व्यक्तियों की संख्या लगभग ५० ६० लाख कूती जाती है फिर भी सुधार और उद्धार का कार्य शिथिल प्रायः प्रतीत होता है। किमाश्चर्यमतः परम्। अब भी समय है यदि आर्य समाज सचेत होय और ऋषि निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए अपनी आश्रम व्यवस्था को ठीक कर ले जिससे कि सुयोग्य व्यक्ति सन्यासी बनकर वैदिक वैजयन्ती हाथ में ले, सुधार कार्य में अग्रसर हो जांय। बिना सन्यासियों के सुधार कार्य चलना अति कठिन है। दुःख है कि आज आर्य समाज के सुयोग्य व्यक्ति सन्यास आश्रम को ऐच्छिक कह कर उपेक्षा कर देते हैं और जब कभी सन्यासियों की समालोचना का अवसर आता है तो सारी वाग्मिता खर्च करने को तैयार हो जाते हैं। सन्यासियों में अयोग्य संख्या की वृद्धि कहकर जनता में सन्यास आश्रम के प्रति उपेक्षा के भाव करते हैं। मैं अयोग्य सन्यासियों का समर्थक नहीं हूँ और यह भी नहीं कहता कि प्रत्येक व्यक्ति को सन्यासी बनना ही चाहिए। साथ ही यह भी नहीं चाहता कि सन्यास नाम की कोई चीज संसार में न रहे। हर रूप और रंग का होना ही संसार का स्वरूप है। अस्तु जब योग्य व्यक्ति सन्यास आश्रम में आ जायेंगे तो अनुपयुक्त संख्या स्वयम् ही न रहेगी। जैसे सूर्योदय से जगतीतल का अन्धकार मिट जाता है। जब सन्यास आश्रम का प्रखर रूप अवस्थित होगा तो किसी भी व्यक्ति को यह कहने का अवसर न होगा कि हम सन्यासी इसलिए नहीं बने कि हमारा गौरव न रहेगा।

आज हमें इस विषय में भली प्रकार विचार करना चाहिए और (आश्रमादाश्रमं गच्छेत्) की उक्ति को चरितार्थ करना चाहिए। सन्यास आश्रम के ठीक हुए बिना वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य सुचारु रूप से नहीं चल सकता। ऋषि दयानन्द भी सन्यासी थे और उनके क्रियाकलाप का सम्पूर्ण दायित्व सन्यासियों के ऊपर है। अब भी समय है यदि आर्य सन्यासी अपनी संघ शक्ति को जागृत करके कुछ आगे बढ़ें। संघ शक्ति बिना कोई कार्य सुचारु रूप से नहीं चल सकता। भले ही महर्षि दयानन्द सरीखे आचार्य के एकाकी जीवन इसके अपवाद रूप में हों, परन्तु सभी में वैसा अदम्य उत्साह एवम् कार्यक्षमता नहीं हो सकती। हां जब अनेक व्यक्ति मिलकर किसी एक मार्ग का अनुसरण करते हैं तो तदनुमारूप शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। हमें इस समय उन साधु महानुभावों से कुछ नहीं कहना जो दैहिक उपकरणों के लिए प्रयत्नवान् होते हुए भी इस दृश्यमान संसार में मिथ्यात्व की भावना रखते हैं। और इस नैसर्गिक रचना क्रम को स्वप्न सृष्टि से उपमित करते रहते हैं। अथवा जो देह रखते हुए आरोग्य के इच्छुक बनकर किसी प्रकार से मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहते हैं। हमें तो केवल उन सन्यासी महानुभावों से ही निवेदन करना है जो अपने को ऋषि दयानन्द का अनुयायी कहते हैं और वर्तमान संसार को वैदिक संस्कृति एवम् आर्य सभ्यता का पुजारी बनाना चाहते हैं। आइये आज समय की मांग के अनुसार अपने याग तथा विचार विनिमय से संघ शक्ति का उद्बोधन कीजिए जिससे कि वर्तमान में धर्म चिह्नों से दुर्भेद एवम् धर्म विप्लव में पड़ी हुई आर्य जाति का सर्व सुधार और वैदिक धर्म का अभ्युदय हो प्रगति शील बने एवम् भारत आश्रम व्यवस्था सुचारू रूप में आकर देश का कल्याण करे।

सामा सत्योक्ति परपातु [illegible]

★ ★

कर्तव्य ?

यह भी कैसा कर्तव्य है जो नेत्रों को चूर कर देता है और स्त्रियों को विधवा और बच्चों को अनाथ बना देता है? यह कैसी राष्ट्रीयता है जो युद्ध की आग भड़काती है और बन्दूक की नलियों से पूरे के पूरे राष्ट्रों का खात्मा कर डालती है? और कोई भी लक्ष्य क्या जिन्दगी से भी अधिक महान् है? यह भी कौन सा कर्तव्य है जिसके जादू में वे सारे ग्रामवासी किसान, जिन्हें शक्तिशाली और अति धनी वर्ग के लोग जानवरों से भी अधिक गया बीता समझते हैं, अपने अत्याचारी शासकों का यश बढ़ाने के लिये भेड़ों की तरह बधस्थल की ओर चल पड़ते हैं। अगर कर्तव्य राष्ट्रों की शान्ति भंग करता है और राष्ट्रीयता मानव जीवन का सन्तोष छीन लेती है तो ऐसे कर्तव्य और राष्ट्रीयता को भगवान् ही समझ सकता है।

—खलील जिब्रान

आर्यमित्र विज्ञापन का उत्तम साधन है ?

जमींदारी उन्मूलन बिल

इसी वर्ष जमींदारी बिल अन्तिम रूप में स्वीकृत हो जायगा

जमींदारों के अधिकार सरकार स्वयं लेगी

गाँव पंचायतों को भूमि व्यवस्था के व्यापक अधिकार

जमींदारों को पक्की निकासी का ८ गुना मुआवजा। ५ हजार से कम लगान देने वालों को पुनर्वासन भत्ता

युक्तप्रान्तीय सरकार ने जमींदारी उन्मूलन बिल का जो मसविदा तयार किया है उसकी मुख्य बातें यह हैं- एक निश्चित तिथि को भूमि पर मध्यवर्तियों के अधिकार समाप्त करने की घोषणा की जायगी और सभी जमींदारियों पर सरकार का अधिकार हो जायगा। जमींदारों को उनकी वर्तमान आय का ८ गुना मुआवजा दिया जायगा। ५ हजार से कम आय वालों को पुनर्वास अनुदान दिये जायंगे। भूमि व्यवस्था का भार गाँव बिरादरियों को दिया जायगा। हर ४० वर्ष के बाद नया बन्दोबस्त होगा।

बिल में निम्नलिखित १२ अध्याय हैं

अध्याय १—में बिल की प्रस्तावना है। इस एक्ट का नाम जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था ऐक्ट है। यह ऐसे क्षेत्रों में जिनमें यू. पी. टेनेन्सी ऐक्ट लागू नहीं होता है तथा निम्नलिखित क्षेत्रों में लागू नहीं होगा— (१) म्यूनिसिपैलिटी, नोटिफाइड एरिया, कन्टूनमेंट और टाऊनएरिया। (२) सरकारी जमींदारियां या स्थानिक अधिकारों की जमींदारियाँ। (३) सार्वजनिक प्रयोजनों के लिये प्राप्त की गई भूमि।

किन्तु म्युनिसिपैलिटी इत्यादि को छोड़कर ऐसे सब क्षेत्रों में सरकारी आज्ञा द्वारा यह ऐक्ट प्रचलित किया जा सकता है, जिन क्षेत्रों में यह ऐक्ट इस प्रकार समय समय पर प्रचलित किया जाये, टेनेन्सी और लैन्ड रेवेन्यू ऐक्ट उचित रूप से संशोधित कर दिये जायेंगे। जिन क्षेत्रों में यह ऐक्ट प्रचलित नहीं किया जायगा उनमें वे ऐक्ट वैसे ही प्रचलित रहेंगे जैसे अब हैं।

मध्यवर्तियों के स्वत्वाधिकार समाप्त करने की घोषणा

अध्याय २, में मध्यवर्तियों के स्वत्वों की प्राप्ति (एक्वीजीशन) के परिणामों की व्यवस्था है। प्राप्ति की दो अवस्थायें होंगी। पहले विज्ञप्ति द्वारा सरकार घोषणा करेगी कि प्रान्त भर में सब मध्यवर्तियों के अधिकार ले लिये जायेंगे। फिर वास्तविक प्राप्ति एक दूसरी विज्ञप्ति द्वारा की जायगी। चाहे एक ही विज्ञप्ति प्रान्त भर के लिए जारी की जाय और चाहे विशिष्ट क्षेत्रों के लिये समय समय पर अलग अलग विज्ञप्तियां प्रकाशित की जायंगी। इस दिनांक को स्वत्वाधिकार का दिनांक कहा गया है।

स्वत्वाधिकार के दिनांक पर जंगलों, मीनाशयों, कुओं, तालाबों, जलप्रणालियों, रास्तों, आबादी के स्थलों, हाटों, बाजारों, खानों और खनिज पदार्थों सहित सब भूमि में उसके नीचे के और मध्यवर्तियों के सब अधिकार समाप्त हो जायेंगे और सब भारों से मुक्त हो कर सरकार के स्वत्वाधिकार में आ जायेंगे। स्वत्वाधिकार के दिनांक के बाद लगान असबाब और सायर से होने वाली सब आय प्राँतीय सरकार को देय हो जायेगी। इस प्रकार प्राप्त की गई जमींदारियों से वसूल किये जा सकने वाले बन्धक और अन्य भारों के ऋण समाप्त हो जायेंगे और ऐसे सब व्यवहार अथवा कार्यवाहियाँ रद्द कर दी जायंगी जो किसी डिग्री के निष्पादन के सम्बन्ध में प्राप्त की गई भूमि की कुर्की और नीलाम के लिये हों। भोग बन्धक दृष्टि बंधक में परिवर्त्तन हो जायगे। और इसकी भी व्यवस्था कर दी गयी है कि बंधकी अपना रुपया उस मुआवजे से वसूल कर ले जो मध्यवर्ती को मिलेगी। निजी जंगल या मीनाशय के सम्बन्ध में ८ अगस्त, १६४६ ई. के बाद मध्यवर्तियों द्वारा दिये गये ठेके स्वत्वाधिकार के दिनांक पर अवैध हो जायेंगे, किन्तु सब निजी कुये आबादी के वृक्ष और इमारतें उस व्यक्ति के स्वामित्व में कायम रहेंगी, जिसके स्वामित्व में वे स्वत्वाधिकार के दिनांक पर था।

सीर की व्यवस्था

यू० पी० टेनेन्सी ऐक्ट के निर्देशों के अनुसार सब सीर भूमि का परिच्छेद कर दिया जायगा अर्थात् उसकी सीमा निर्धारित कर दी जायगी। जिससे कि यदि किसी भाग में वंशानुगामी अधिकार इस ऐक्ट के अधीन उत्पन्न हों तो वह सम्बन्धित काश्तकार के लिये सुरक्षित रहेंगे। यदि किसी व्यक्ति के कब्जे में सीर भरण पोषण के लिये हो तो वह उस ही प्रकार के कब्जे में रहेगी। परन्तु उतने ही समय तक जब तक उसको भरण पोषण का अधिकार रहे।

ठेकेदार और भोग बन्धकियों के अधिकार

स्वत्वाधिकार के दिनांक पर ठेके समाप्त हो जायेंगे, किन्तु यदि भूमि किसी ठेकेदार के निजी जोत में हो और यदि वह सीर न हो तो उस भूमिमें जो साधारणतया अधिक से अधिक ५० एकड़ हो सकती है, उसको वंशानुगामी अधिकार प्राप्त हो जायेंगे। यदि इसके विपरीत ठेका देने के दिनांक पर वह भूमि ठेका देने वाले की सीर या खुदकाश्त थी तो ठेके की शेष अवधि या पांच वर्ष, इनमें जो भी कम हो, के लिये उस पर ठेकेदार का अधिकार होगा। भोग बंधकी को ठेकेदार से भिन्न माना गया है। उसका बंधक और रुपया चुका दिये जाने पर भूमि खाली हो जायगी, परन्तु यदि ऐसी कोई भूमि बंधकी के निजी जोत में हो तो स्वत्वाधिकार के दिनांक पर सीर या खुदकाश्त न हो, तो वह वंशानुगामी काश्तकारों के दर से लगाये गये लगान का पांच गुना देकर उसमें वंशानुगामी अधिकार प्राप्त कर सकता है। यदि वह इस प्रकार रुपया न दे तो बन्धकी के सब अधिकार समाप्त हो जायेंगे और उसकी बेदखली हो सकेगी।

नये भौमिक अधिकारों में सबसे ऊंचे वर्ग का भौमिक अधिकार, भूमिधारी अधिकार मध्यवर्तियों को उनकी सीर के ऐसे भाग में दिये गये हैं जिनमें वंशानुगामी अधिकार उत्पन्न नहीं होते और जो जमींदारी में उनके अंश से अधिक न हों।

ऐसे अधिकार ऐसी अन्य भूमियों में भी उत्पन्न हो जायेंगे जो मध्यवर्तियों के निजी जोत में हों, अर्थात् खुदकाश्त और मध्यवर्ती का बाग। दूसरा वर्ग सीरदार का है। सीरदारी अधिकार ऐसे सब काश्तकारों को दिये जा रहे हैं जिनको यू० पी० टेनन्सी ऐक्ट के अधीन दखिलकारी के अधिकार हैं, उदाहरण के लिये (१) शरह मुअय्यन काश्तकार, (२) अवध में विशेष शर्तों के काश्तकार, (३) साकितुलमल्कियत काश्तकार (४) दखिलकार काश्तकार (५) मारूसी काश्तकार (६) माफीदार (७) रियायती शरह के लगान के काश्तकार (८) बागदार।

असामी भी रहेंगे

गैर दखिलकार काश्कार अर्थात् सीर के ऐसे काश्तकार जिनको परिच्छेद के बाद वंशानुगामी अधिकार न मिलते हों, सरकारी आज्ञा द्वारा विशेष कार्यवाही के अधीन "काबिज" के रूप में दर्ज किये गये व्यक्ति और दखिलकार काश्तकारों के शिकमी "अधिवासी" बनाये जा रहे हैं। गैर दखिलकार काश्तकार बाग भूमि के शिकमी काश्तकारों के बंधकी और भरण पोषण के लिये सीर पर काबिज व्यक्ति असामी के वर्ग में रखे जा रहे हैं।

१ जुलाई के बाद हुये हस्तान्तरण वैध न माने जायेंगे

यदि इस ऐक्ट के निर्देशों से बचने के लिए मध्यवर्तियों ने कुछ कार्यवाहियाँ की हों या वे भविष्य में ऐसा करें तो उनको निष्फल करने का भी प्रबन्ध किया गया है। यदि १ जुलाई सन् १६४८ के बाद किसी मध्यवर्ती ने भारी नजराना ले कर कम लगान पर तय या पट्टा दिया हो तो ऐसी जोत का लगान वंशानुगामी स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। १ जुलाई १६४८ ई० के बाद किया हुआ कोई भी हस्तान्तरण वैध नहीं समझा जायगा, चाहे यह विक्रय, बन्धक या दान के रूप में किया गया हो

मुआवजे की व्यवस्था

अध्याय ३ का विषय मुआवजा निर्धारण है। प्रत्येक ऐसे मध्यवर्ती को जिसका अधिकार आगामी या स्वत्व प्राप्त कर लिया जाय, उतना मुआवजा दिया जायगा जो आगे चल कर की गई व्यवस्था के अनुसार निर्धारित हो। यदि मुआवजा निर्धारण में ६ मास से अधिक लग जाय तो सरकार अन्तरिम मुआवजा देगी और उसका हिसाब बाद में किया जा सकेगा। स्वत्वाधिकार के दिनांक तक मुआवजे पर २॥ प्रतिशत ब्याज दिया जायगा।

प्रत्येक मध्यवर्ती को दिया जाने वाला मुआवजा निर्धारित करने के लिये मुआवजा अधिकारियों के न्यायालय स्थापित किये जायेंगे। स्वत्वाधिकार के दिनांक से ठीक पहले वाले कृषि वर्ग में बने अधिकार अभिलेखों के आधार पर वह सब कार्यवाही की जायगी। ऐसे अभिलेखों के इन्द्राज निश्चायक समझे जायेंगे, यदि वे किसी साधिकार दीवानी या माल के न्यायालय द्वारा रद्द या संशोधित न कर दिये जांय। मुआवजा अधिकारी पहले मुआवजा निर्धारण तालिका का एक पांडुलेख तैयार करेगा जिसमें प्रत्येक जमींदार के सम्बन्ध में ऐसे प्रत्येक मध्यवर्ती की कच्ची और

पक्की निकासी दिखायी जायगी। कच्ची निकासी सायर और जगल की आय और खानों और खनिज पदार्थों के निमित्त मध्यवर्ती को मिलने वाली आय और स्वामित्व भी सम्मिलित किया जायगा। और इस प्रकार प्रत्येक मध्यवर्ती की कच्ची निकासी मालूम की जायगी। इस प्रकार मालूम की गयी कच्ची निकासी में से कटौतियाँ करके पक्की निकासी मालूम की जायगी। ये कटौतियाँ निम्न लिखित के बारे मे होगी —

(१) कोई ऐसी रकम जो मध्यवर्ती द्वारा भूराजस्व, लगान, अब्वाब या स्थानीय कर के रूप में देय हो। (२) कच्ची निकासी पर १५ प्रतिशत की दर से लगाये जाकर प्रबन्ध का व्यय और और लगान का ऐसा बकाया जो वसूल न हो सकता हो । (३) प्राप्ति के बाद मध्यवर्ती के निज जोत में बची हुई हुई भूमि पर साकित्‌उलमिल्कीयत काश्तकारों के लगान की दर से लगाई गई धनराशि (४) खानों और खनिज पदार्थों के निमित्त स्वामित्व की आय पर दिया गया इन्कमटैक्स (५) यदि मध्यवर्ती स्वय किसी खान को चलाता हो तो उससे कुल आय का ६५ प्रतिशत। इस कटौती का कारण यह है कि प्राप्ति के बाद भी मध्यवर्ती को उसके लाभ के के लिये खान चलाने की अनुमति दी जायेगी। (६) कोई कृषि आयकर जो मध्यवर्ता ने दिया हो।

मुआवजे पर आपत्तियां

जब मुआवजा तालिका का पाडुलेख इस प्रकार तैयार हो जाय तो उससे प्रभावित होने वाले सब व्यक्तियों को आज्ञा दी जायगी कि वे मुआवजा अधिकारी के समक्ष उपस्थित हों और आपत्तियाँ प्रस्तुत करें। मुआवजा अधिकारी की आज्ञा से डिस्ट्रिक्ट बोर्ड जज के यहाँ अपील हो सकेगी किन्तु यदि मध्यवर्ती द्वारा बताई गई और मुआवजा अधिकारी द्वारा तै की गई कच्ची निकासी में २५०० रु. से अधिक का अन्तर हो तो अपील सीधी हाई कोर्ट में हो सकेगी। डिस्ट्रिक्ट जज की आज्ञा से भी हाई कोर्ट की अपील किन्हीं ऐसे आधार पर हो सकेगी।

८ गुना मुआवजा

मुआवजा निर्धारण तालिका से संबंधित जमीदारियों मे किसी मध्यवर्ती के स्वत्व के निमित्त उसको उसकी पक्की निकासी का आठ गुना मुआवजा मिलेगा यदि किसी मध्यवर्ती के स्वत्व ठेकेदार के पास हो तो मध्यवर्ती और ठेकेदार के बीच में मुआवजे का अनुपात ठेकेदार द्वारा दिए गये नजराने, ठेके की अवधि और ठेकेदार द्वारा दी जाने वाली वार्षिक धनराशि इत्यादिक संगत बातों पर विचार कर निश्चित किया जायेगा।

अध्याय ४ —में मुआवजा देने की रीति बताई गई है। ऐसे मध्यवर्ती को मुआवजा मिलेगा जिसका नाम मुआवजा निर्धारण तालिका में दर्ज हो। यदि मुआवजा दिये जाने से पहले मध्यवर्ती मर जाय तो वह उसके वैध प्रतिनिधि को मिलेगा। यदि मध्यवर्ती अवयस्क हो या ऐसा व्यक्ति किसी अन्य असमता के वश हो तो नियत किये जाने वाले किसी अधिकारी या बैंक में प्रतिकर जमा कर दिया जायगा।

प्रथम वर्ग से वक्फ, ट्रस्ट और इंडायमेंट की दशा में मुआवजा ट्रेजरार आफ चेरीटेबल इंडायमेट के पास जमा कर दिया जायगा। और तीसरे वर्ग की दशा में मुतवल्ली या प्रबन्धक (मैनेजर) को दिया जायगा। दूसरे वर्ग की दशा में मुआवजे को दो भागों मे बाटा जायगा। पहला भाग उनसे सम्बन्धित होगा जो बिलकुल धर्मार्थ या पुण्यार्थ हो और दूसरा ऐसे प्रयोजनों से पूर्णरूप से सबधित होगा जो पुण्यार्थ या धर्मार्थ से भिन्न हो।

पुनर्वासन अनुदान

अध्याय ५—पुनर्वासन अनुदान से सम्बन्धित है। प्रत्येक मध्यवर्ती का, जिसके संयुक्त प्रात मे स्थित सब जमीदारियों के भूराजस्व का जोड़ ५,००० रु० से अधिक न हो, ऐसा पुनर्वास अनुदान मिल सकेगा जो उसकी पक्की निकासी का निम्नलिखित गुना हो—

	भूराजस्व के अनुसार मध्यवर्तियों की श्रेणियां		पुनर्वासन अनुदान के रूप में मिलने वाला पक्की निकासी का गुना
	१.		२.
१.	२५ रु. तक		२०
२.	२५ रु. से अधिक	५० रु. तक	१७
३.	५० ,, ,, ,,	१०० ,, ,,	१४
४.	१०० ,, ,, ,,	२५० ,, ,,	११
५	२५० ,, ,, ,,	५०० ,, ,,	८
६.	५०० ,, ,, ,,	२००० ,, ,,	५
७.	२००० ,, ,, ,,	३५०० ,, ,,	३
८.	३५०० ,, ,, ,,	५००० ,, ,,	२

खान और खनिज पदार्थ

अध्याय ६—खानों और खनिज पदार्थों में अधिकारों के सम्बन्ध में है। ऐसे सब खानों के विषय में, जो स्वत्वाधिकार के दिनांक पर मध्यवर्ती द्वारा स्वयं चलाई जा रही हो, वह समझा जायगा कि वह प्रांतीय सरकार द्वारा मध्यवर्ती को पट्टे पर दी गई है। यदि किसी मध्यवर्ती ने अपनी जमीदारी के अन्तर्गत किसी खान या खनिज पदार्थों का पट्टा किया हो तो पट्टेदार पट्टे का शेष अवधि के लिये प्रांतीय सरकार का पट्टेदार समझा जायगा, किन्तु यदि कोई अन्वेषण या विकास कार्य न किया गया हो तो तीन मास की नोटिस देकर पट्टा समाप्त किया जा सकेगा।

गाव बिरादरियों को अधिकार

अध्याय ७—में ग्राम समाज या गाँव बिरादरी और गॉव सभा के कार्यों का विवरण है। स्वत्वाधिकार के दिनाँक के बाद प्राँतीय सरकार विज्ञप्ति द्वारा यह घोषित कर सकती है कि निर्दिष्ट दिनाक से गांव की ऐसी सब भूमि जो किसी की जोत में न हो, गाव की सीमा के भीतर सब जगल किसी जोत में स्थित वृक्षों से भिन्न सब वृक्ष, बाग, आबादी, सार्वजनिक कुएं, मीनाशय, हाट, बाजार, तालाब, निजी घाट, जल प्रणालियाँ, रास्ते और आबादी स्थल गाव बिरादरी के स्वत्वाधिकार मे आ जायेंगे। पचायत राज ऐक्ट द्वारा सस्थापित गाव सभा गाव पचायत द्वारा ऐसे सब अधिकारों का उपयोग और ऐसे सब कर्तव्यों का पालन करेगी जो इस ऐक्ट द्वारा या अधीन दिये या लगाये जाय। इस प्रकार गांव पंचायत पर गाव बिरादरी के स्वत्व में आई सब भूमिका सामान्य अधीश्वर प्रबन्ध और नियंत्रण का भार रहेगा। किंतु प्रांतीय सरकार प्रबन्ध ठीक न होने पर किसी अन्य अधिकारिणी को भी सौंप सकती है।

नये खातेदारों के अधिकार

अध्याय ८—मे नये खातेदारों के अधिकारों और दायित्वों का विवरण है। अध्याय २ के अधीन स्वत्वाधिकार के दिनाक पर भूमिधर हो जाने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त भूमिधारी अधिकार सीरदार ही प्राप्त कर सकेंगे। कोई काश्तकार जो स्वत्वाधिकार के दिनाक पर सीरदार हो सकने वाला हो, स्वत्वाधिकार के दिनाक से पहले ही प्रातीय सरकार को अपने लगान का दस गुना दे सकता है।

इस प्रकार देने पर उसका लगान आधा हो जायगा। यदि लगान देने के दिनाक और स्वत्वाधिकार के दिनाक के बीच में वह अपनी जोत से बेदखल हो जाय तो ऐसी बेदखली वैध नहीं मानी जायगी और स्वत्वाधिकार के दिनाक पर उस काश्तकार को भूमिधर के रूप में फिर से दखल मिल जायगा। गांव सभा द्वारा बनाने गये किसी भी नये सीरदार को यह अधिकार होगा कि वह दखल मिलने के दिनांक से एक वर्ष के भीतर अपने लगान का दस गुना देकर भूमिधर के विशेषाधिकार प्राप्त कर ले और तब उसको अपने प्रारम्भिक भूराजस्व का आधा ही भूराजस्व देना होगा।

भूमिधर का अधिकार होगा कि वह अपने जोत के अन्तर्गत सब भूमियों पर अकेले ही काबिज रहे और उसका जैसे चाहे उपयोग करे, किंतु सीरदार या आसामी भूमि का उपयोग उन्हीं प्रयोजनों के लिये कर सकेगा जिनका सम्बन्ध कृषि, फलोत्पादन या पशुपालन से है। भूमिधर का स्वत्व हस्तान्तरित हो सकेगा। किंतु कोई भूमिधर कोई भूमि विक्रय या दान द्वारा ऐसे व्यक्ति को हस्तान्तरित नहीं कर सकेगा जिसके पास अपने कुटुम्बियों सहित पहले से ३० एकड़ से अधिक क्षेत्रफल की भूमि हो। भूमिधर अपनी भूमि का भोग बन्धक भी कर सकेगा।

सीरदार का स्वत्व हस्तान्तरित नहीं किया जा सकेगा। कोई भूमिधर या सीरदार अपनी भूमि दूसरे को नहीं उठा सकेगा। किन्तु यदि वह किसी असमता के वश में हो तो वह ऐसा कर सकेगा। ऐसी दशा में पट्टेदार आसामी हो जायगा।

भूमिधर सीरदार या असामी के मरने पर उसका जोत मे उसका स्वत्व यू० पी० टेनेन्सी ऐक्ट मे दिये गए हैं। किसी जोत का बटवारा इस प्रकार नहीं हो सकेगा जिससे कोई जोत ६ एकड़ से कम की रह जाय।

दो वर्ष परती रहने पर बेदखली

सीरदार अपनी जोत का इस्तीफा गाव पचायत को दे सकता है और असामी ऐसे व्य ना है जो उससे लगान पाने का अधिकारी हो। यदि कोई सीरदार या असामी अपनी जोत का कृषि, फलोत्पादन या पशुपालन से सम्बन्धित प्रयोजनों में बराबर दो कृषि वर्ष तक न लाए तो यह समझा जायगा कि उसने अपनी जोत का परित्याग कर दिया है।

जब भूमिधर या सीरदार के स्वत्व का अन्त हो जाय तो गाव पचायत उस भूमि पर कब्जा कर सकेगी और किसी और व्यक्ति को सीरदार के रूप मे उस भूमि को उठा सकेगी।

किसी भूमिधर को बेदखली नहीं हो सकेगी किन्तु यदि वह अवधि के भीतर अपनी भूमि से किसी अवैध कब्जा करने वाले व्यक्ति को बेदखल न करे तो उसके स्वत्व समाप्त हो जायेंगे।

अधिवासियों के स्वत्व

अध्याय ६—में उन अधिवासियों का विवरण है जिनका उल्लेख अध्याय २ में किया गया है। किसी अधिवासी को उसकी भूमि से बेदखली नहीं हो सकेगी, जब तक यह सिद्ध न हो जाय कि उसका लगान बाकी है या उसने अपनी जोत का हस्तान्तरण किया है या उसने भूमि का उपयोग ऐसे प्रयोजन में किया है जिसका सम्बन्ध कृषि, फलोत्पादन या पशु पालन से नहीं है उसको व सब अधिकार और निरोधाधिकार रहेंगे जो उसको स्वत्वाधिकार के दिनांक से ठीक पहले वाले दिनांक पर प्राप्त थे। इस ऐक्ट के प्रारम्भ से ५ वर्ष व्यतीत होने पर किसी समय प्रान्तीय सरकार इस प्रकार अधिवासियों को यह आज्ञा दे सकती है कि वह उस लगान का १५ गुना सरकार को दे जो सीर या खुद काश्त दशा में मरूसी दरों से लगाया जाय। इस प्रकार रुपया जमा कर देने पर अधिवासी भूमिधर घोषित हो जायगा।

भूराजस्व

अध्याय १०—का विषय भूराजस्व का निर्धारण है। ऐसी सब भूमि के लिये भूराजस्व देना होगा जो किसी भूमिधर या सीरदार के पास हो और यदि प्रांतीय सरकार ऐसा निर्देश करे तो गाँव सभा ऐसा सब भूराजस्व वसूल करेगी जो ऐसे गाँव या गाँवों पर निर्धारित किया जाय जिसके लिये वह गाँव सभा स्थापित की गई हो। प्रत्येक गाँव सब भूमिधर और सीरदार भूराजस्व के देनदार संयुक्त रूप से और अलग अलग होंगे।

यदि कोई भूमि स्वत्वाधिकार के दिनांक पर किसी मध्यवर्ती के निजी जोत में हो तो भूराजस्व मौजूदा देय धन के बराबर होगा। यदि कोई सीरदार अपने लगान का दस गुना देकर भूमिधर हो जाय तो उसका अपने लगान का आधा भूराजस्व के रूप में देना होगा। दखीलकार काश्तकार को जो स्वत्वाधिकार के दिनांक पर सीरदार हो जाय उस लगान के बराबर भूराजस्व देना होगा जो स्वत्वाधिकार के दिनांक से ठीक पहले वाले दिनांक पर वह देता था।

४० वर्ष बाद नया बन्दोबस्त

आगामी ४० वर्षों तक नया बन्दोबस्त नहीं किया जायगा और बाद में होने वाले प्रत्येक बन्दोबस्त में ४० वर्ष का अन्तर रहेगा। बन्दोबस्त करते समय बन्दोबस्त अधिकारी (सेटलमेंट आफिसर) खेती का साधारण व्यय घटा कर बची हुई आनुमानिक औसत उपज का ध्यान रखेगा।

भूमिधर के सम्बन्ध में लागू प्रतिशत किसी भी दशा में सीरदार के लागू प्रतिशत से आधे से अधिक न होगा।

किसी कृषि सम्बन्धी आपत्ति के आ जाने पर प्रांतीय सरकार कुल भूराजस्व या उसके किसी भाग को छोड़ दे सकती है या उसकी वसूली स्थगित कर सकती है। जलमग्न होने वाली महलों की प्रकार के निर्दिष्ट क्षेत्रों के विषय में गाँव पंचायत प्रति वर्ष क्षेत्रफल के परिवर्तन की रिपोर्ट देगी और उनको भूराजस्व घटाया या बढ़ाया जा सकेगा।

कुर्क नीलाम की प्रथा जारी रहेगी

भूराजस्व का बकाया कुर्क नीलाम द्वारा वसूल किया जा सकेगा जैसा आज कल प्रचलित है। कलेक्टर को यह अधिकार होगा कि वह ऐसे गाँव को कुरकी करले जिस पर भूराजस्व बाकी हो और उसको अपने प्रबन्ध में ले ले, किन्तु ऐसी कुरकी पाँच साल से अधिक तक न रह सकेगी।

सहकारी खेती

अध्याय ११—सहकारी खेती के सम्बन्ध में है। यदि ऐसे दस या अधिक कृषक जिनके पास सब मिलाकर ५० एकड़ या उससे अधिक भूमि एक गाँव में हो और वह सरकारी रीति से खेती करना चाहें तो वह अपने सामूहिक खेत (फार्म) की रजिस्ट्री के लिये रजिस्ट्रार को लिखित प्रार्थना पत्र दे सकते हैं और नियत जाँच के बाद उनको रजिस्ट्री का सार्टीफिकेट दे दिया जायगा। यदि किसी लाभ हीन खाते के दो तिहाई हिस्सेदार सरकारी खेत की रजिस्ट्री के लिये प्रार्थना पत्र दें तो शेष एक तिहाई हिस्सेदार भी उस सोसाइटी में सम्मिलित किए जायंगे। किसी सहकारी खेत की रजिस्ट्री हो जाने पर कलक्टर इस सम्बन्ध में प्रार्थना पत्र दिए जाने पर उस सहकारी खेत वाले व्यक्तियों के क्षेत्रफल का एकीकरण कर देगा। उस रजिस्ट्री में भूमि में व्यक्तिगत अधिकारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। सहकारी खेत के सम्बन्ध में सरकार से ऐसी सुविधायें मिल सकेंगी जैसी कि कृषि आयकर से आंशिक या पूर्ण छूट, सिंचाई, स्वास्थ्य के और अन्य सरकारी विभागों से मिलने वाली सुविधाओं की प्रधानता और उसके भूराजस्व में नियत किए जाने वाले नियमों के अनुसार कमी भी की जा सकेगी।

अधिकारियों की नियुक्ति और उनके अधिकार

अध्याय १२ में विविध विषय हैं, जैसे कि इस ऐक्ट के प्रयोजनों के लिए अधिकारियों की नियुक्ति और उनके अधिकार और कर्तव्य। इसकी विशेष प्रकार से व्यवस्था की गई है कि यदि स्पष्ट रूप से उसका निर्देश न हो तो इस ऐक्ट अधीन की जाने वाली किसी कार्यवाही के सम्बन्ध में दीवानी न्यायालय में कोई वाद या व्यवहार नहीं किया जा सकेगा और न किसी न्यायालय को ऐसे विषय में हुक्म इम्तनाई जारी करने का अधिकार होगा जो इस ऐक्ट के अनुसार नियुक्त किसी अधिकारी द्वारा किए गए या किए जाने वाले कार्य सम्बन्धित हों।

★ ★ ★

दैनिक संगठन

[लेखक—पूर्णचन्द्र एडवोकेट उपप्रधान सार्वदेशिक सभा]

आर्य समाज के प्रचार को प्रगति देने के लिये सार्वदेशिक सभा ने निश्चय किया है कि साप्ताहिक अधिवेशनों के अतिरिक्त दैनिक सत्संग भी हुआ करें। जिसमें दैनिक सन्ध्या, हवन, संगीत प्रवचन लगभग १ घन्टे में हुआ करें। इस निश्चय के अनुसार आर्य समाज आगरा नगर में भी दैनिक सत्संग की प्रथा को क्रियात्मक रूप देकर प्रारम्भ कर दिया है। दैनिक सत्संग की उपस्थिति सम्प्रति २५–३० के लगभग हो जाती है। मेरा अपना अनुभव यह है कि दैनिक सत्संग होना अति आवश्यक है। अब यह पर्याप्त नहीं है कि केवल सप्ताह में एकबार मिलकर सात दिन तक फिर नाम न लिया जाय देश को अब आर्यसमाज के प्रचार की अति आवश्यकता है। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् स्वराज्य की रक्षा के लिये सदाचार और व्यवहारिक आस्तिकता की हर समय आवश्यकता है। और सदाचार की वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि धर्म न केवल राजनीति और समाज सुधार को मर्यादित करने वाला हो परन्तु हर व्यक्ति गत और सामाजिक कार्यों को रूप देने के लिये तर्क से संशोधित करना पड़ेगा और साम्प्रदायवाद से बचना होगा और जब धर्म को सार्वजनिक रूप में साम्प्रदायिकता से मुक्त कर के संसार के सन्मुख रक्खा जायगा तो उस रूप में धर्म, व्यवहारिक जीवन का अंग और आधार बन सकेगा और इस से संसार के सम्बन्ध परस्पर प्रेम में और मर्यादित हो सकेंगे। राजा प्रजा का सम्बन्ध, राष्ट्र और नागरिकों का सम्बन्ध, धनवान और किसानों के सम्बन्ध यह सब सम्बन्ध विचार आचार और व्यवहार की दृष्टि से शान्ति उत्पन्न करने वाले और उन्नति की ओर ले जाने वाले होंगे। ऋषि दयानन्द का उद्देश आर्यसमाज की स्थापना से धर्म को प्रचलित सम्प्रदायवाद से बचाना और व्यवहारिक जीवन का अंग बनाना था और ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार यह आवश्यक है। कि आर्य समाज में कार्य करने वाले दैनिक सत्संग में सम्मिलित होकर वैदिक धर्म के सांचे में अपने जीवन को ढाल और उसके लिये उनके सन्देश को दूसरों तक भी पहुँचा सकें। दैनिक सत्संग की विधि सार्वदेशिक सभा को निश्चित करके घोषित करनी चाहिये। दैनिक यज्ञ किस प्रकार हो और किन २ मन्त्रों में हो यह निश्चय हो जाना चाहिये। जिसमें समय भी कम लगे और उपयोगिता की दृष्टि से कोई कमी न रहे और प्रवचन के लिये कोई आधार और विधि ऐसी निर्धारित हो जिससे प्रत्येक समाज में यदि कोई प्रवचन करने वाला न हो तो उस लिखित पुस्तक से पढ़ कर कार्य चलाया जा सके। प्रवचनों में यथा सम्भव क्रम होना चाहिये जैसे हवन मन्त्रों की व्याख्या हो सन्ध्या के मन्त्रों की व्याख्या हो और सम्मिलित प्रार्थना के मन्त्रों की व्याख्या हो, दैनिक प्रार्थना के आठ मन्त्रों की इनमें से एक २ मन्त्रों को लेकर प्रति दिन व्याख्या की जा सकती है। ऋषि दयानन्द ने जो मन्तव्य और अमन्तव्य सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में लिखे हैं उन पर एक २ को लेकर विचार हो सकता है। उपस्थिति बढ़ाने के लिये विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। साप्ताहिक सत्संगों में भी सदस्य पर्याप्त संख्या में नहीं आते इसलिये आर्य समाज के उपनियमों में उपस्थिति का एक उपनियम रखना पड़ा। हमने यह देखा है कि महात्मा गांधी को जो अपने प्रचार में सफलता हुई उसका एक कारण यह भी था कि उन्होंने सायंकाल के समय दैनिक प्रार्थना को अपने कार्य क्रम का एक अंग बना लिया था। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयम् सेवक संघ वालों को जो अपने प्रचार में सफलता हुई वह भी उनका दैनिक मिलना था। दैनिक सत्संग को आवश्यक जीवन

निर्वाचन

आ० स० अमरोहा

छोटेलाल प्रधान, हेतराम उपप्रधान सत्यप्रकाश मंत्री, मथुराप्रसाद व मुक्खन लाल, उपमंत्री शिव प्रसाद कोषाध्यक्ष

आ० स० आर्यनगर

प्रधान, मुरारी शरण आर्य सर्राफ उपप्रधान, प सीताराम, मन्त्री कृष्ण चन्द्र गुप्ता, उपमन्त्री, ला० लेखराज। कोषाध्यक्ष, बाबू भद्रगुप्त विद्या भूषण। पुस्तकाध्यक्ष, म० जमुनाप्रसाद।

आ० स० सीहोर

अधिष्ठाता पटेल बिहारी लाल जी। प्रधान श्री जगन्नाथ प्रसाद। उपप्रधान श्री हरिकृष्ण सिंह आर्य। मन्त्री श्री उदय सिंह। उपमन्त्री नन्दलाल। कोषाध्यक्ष श्री उमरावसिंह विशारद डा. अ. कन्या पाठशाल। पुस्तकाध्यक्ष श्री बाबूलाल।

आर्य समाज आरा

श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह प्रधान। श्री वसावनराम श्री सचिदानन्द सहाय उप प्रधान, श्री रामप्रसाद अग्रवाल प्रधान मन्त्री, श्री पन्नालाल गुप्तार्य श्री जगतबिहारी उपमन्त्री। श्री कलाक चन्द राम कोषाध्यक्ष। श्री सचिकान्त गुप्त पुस्तकाध्यक्ष। श्री रूपश्री-राम श्री लेखा निरक्षक।

आ० स० मिलक रामपुर

प्रधान, [श्री राधेवल्लभ शरण जी. उपप्रधान, पं० सत्यदेव आर्य। मन्त्री, काशी राम आर्य। उपमन्त्री, महाशय कल्यानराय जी। कोषाध्यक्ष, मु० जगदम्बा प्रसाद। पुस्तकाध्यक्ष, प० देवेन्द्र शर्मा।

चौन्दकोट आर्यसमाज

प्रधान, श्री सदानन्द डाक्टर। नौगावखाल अस्पताल। उपप्रधान श्री मानसिंह बड़ेत। मन्त्री श्री केशरसिंह उपमन्त्री श्री रुद्रदत्त कोषाध्यक्ष श्री शीशरामजी। निरीक्षक श्री कृपाराम।

—आर्यसमाज बड़हलगंज, कोपागंज, मऊनाथभञ्जन, बड़ागाँव, दोहरीघाट का सम्मिलित वार्षिकोत्सव श्री युत प० सत्यमित्र जी शास्त्री महोपदेशक सभा मण्डल संचालक के तत्वाधान में ता० १ मई से १४ मई सन् ४९ ई० तक मनाया गया जिससे ८८४) आय तथा इतना ही व्यय हुआ।

—गुरुकुल डौरली का नया साल १ जुलाई सन् १९४९ ई० से आरम्भ हो रहा है इस वर्ष गुरुकुल में २५ नये ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जावेंगे जो महानुभाव अपने बालक को प्रविष्ट कराना चाहें वे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

आचार्य
द० म० गुरुकुल डौरली

आर्य समाज सीपरी बाजार झांसी

प्रधान, श्री अशरफीलाल। उप प्रधान, श्री डा० भगत जी। प्रधानमंत्री श्री ओमप्रकाश जी आर्य, उपमन्त्री श्री खचोरेल ल जी, कोषाध्यक्ष श्री दुर्गासिंह पुस्तकाध्यक्ष श्री मुलखरा जी।

स्थायी समिति आर्य कुमार सभा झरिया सभापति श्रीयुत रामवनी प्रसाद साहू उपसभापति श्री नायनन्दन प्रसाद सिंह मन्त्री श्री शिव नारायण पोद्दार उप मन्त्री श्री लक्ष्मी नारायण प्रसाद कोषाध्यक्ष श्री रामलाल जाजवाल पुस्तकाध्यक्ष श्री नित्यानंद देव।

का अंग समझ कर इसमें शामिल होना चाहिये दैनिक सत्संग में न आने के तीन कारण हो सकते हैं। १ स्वास्थ्य सम्बन्धी २ व्यवसाय सम्बन्धी ३ स्वभाव सम्बन्धी स्वभाव के कारण प्रातःकाल जल्दी नहीं उठते या उठते ही दैनिक समाचार पत्र पढ़ने में लग जाते हैं या आलस्य में समय गुजार देते हैं। उन को तो अपना स्वभाव बदलने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिये और केवल स्वभाव के कारण यदि वे दैनिक सत्संग में नहीं आते तो दुख की बात है। जिनको व्यवसाय सम्बन्धी अड़चन है अर्थात जिनको ड्यूटी पर उसी समय जाना है। उनके लिये कठिनाई अवश्य है। स्वास्थ्य सम्बन्धी अड़चन भी ऐसी हो सकती है। जिसके कारण कठिनाई हो सकती है। फिर भी यदि सदस्यों में श्रद्धा हो और वो दैनिक सत्संग में आना आवश्यक समझें तो हर एक प्रकार की अड़चनों को हटा सकते हैं जिन समाजों ने अभी तक दैनिक सत्संगों का प्रबन्ध न किया हो उनको अति शीघ्र आरम्भ कर देना चाहिये। छोटा समाजों के लिये दैनिक सत्संग वार्षिकोत्सव से भी अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सभासदों की सूचा

सन् १९४९ ई०

१. श्री राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री जी, सर्वदानन्द साधु आश्रम पो० साधु आश्रम जि० अलीगढ़—प्रधान।
२. ,, मदनमोहन सेठ जी एम ए., एल एल.बी., रि.डि.जज व अपीलान्ट सेल्स टेक्स जज लखनऊ—उपप्रधान।
३. ,, सुरेन्द्र विक्रमसिंह जी बी.ए, एलएल बी. रि.डि. जज वर्तमान सेल्स टेक्स जज लखनऊ—उपप्रधान।
४. ,, उमाशंकर जी एडवोकेट फतेहपुर—उपप्रधान।
५. ,, रामदत्त शुक्लजी एम ए, एलएल बी. एडवोकेट आबाद रोड लखनऊ—मन्त्री
६. ,, भृगुदत्त तिवारीजी एम.ए, एलएल बी. वकील गणेशगंज लखनऊ—उपमंत्री
७ ,, धर्मपाल विद्यालंकार जी, टिकटगंज, बदायूं—उपमन्त्री
८. ,, सत्यनारायण जी एम ए.बी.टी. प्रो. गवर्नमेण्ट ट्रेनिंग कालेज, आर्य समाज काशी बनारस—उपमन्त्री
९ ,, सुरेन्द्र शर्मा जी अशोक भवन लखनऊ—कोषाध्यक्ष
१०. ,, द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री सि. शिरोमणि आनन्दपुरी मेरठ—पुस्तकाध्यक्ष
११ ,, पूर्णचन्द्र जी बी.ए, एलएल.बी. एडवोकेट माईथान आगरा—सहा. पुस्तका.
१२. ,, श्रीरामजी आर्य माईथान आगरा—सहा. पुस्तकाध्यक्ष
१३. ,, रामप्रसादजी आर्य मैन्दू जि. अलीगढ़—सहा. पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सभासद

१. श्री रत्नसिंह जी एम. ए. मन्त्री आर्य समाज गाजियाबाद मेरठ
२. ,, हरशरणदास जी रईस शिवाजी भवन गाजियाबाद मेरठ
३. ,, दयाराम जी आर्य समाज शिकोहाबाद मैनपुरी
४, ,, आचार्य विश्वश्रवा जी वेद मन्दिर ९९ बाजार मोतीलाल बरेली
५. ,, रामबहादुर जी मुख्तार आर्य समाज पुरनपुर पीलीभीत
६. ,, बनारसीलाल जी आर्य नजीबाबाद जि० बिजनौर
७ ,, सद्गुरुशरण जी अध्यापक एम बी. हाई स्कूल हल्द्वानी जि नैनीताल
८. ,, ज्वालाप्रसाद जी १९८ कर्नलगंज आर्य समाज कटरा प्रयाग
९. ,, विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी आनन्दबाग कानपुर
१०. ,, स्वामी दिव्यानन्द जी आर्य समाज सदर बाजार झांसी
११. ,, मदन मोहनजी वकील आर्य समाज मोंठ झांसी
१२. ,, वशिष्ट नारायण राय जी बी.ए. एलएल.बी. आमघाट गाजीपुर
१३. ,, आचार्य देवदत्तजी शर्मोपध्याय गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज आर्य समाज काशी बनारस
१४. ,, अक्षयवरनाथ जी आर्य समाज आजमगढ़
१५. ,, द्वारिका प्रसाद मल्लजी आर्य समाज बड़हलगंज गोरखपुर
१६. ,, शिवनारायण शुक्ल जी बी.ए एलएल.बी. एडवोकेट लखीमपुर खीरी
१७ ,, देवीप्रसाद चौहरी जी नारायण स्वामी भवन लखनऊ
१८. ,, लालकुमारसिंह जी जिमीदार मुकाम पिरथीगंज जि. प्रतापगढ़
१९. ,, केदारनाथ जी आर्योपदेशक फर्रुखाबाद
२०. ,, जयदेवसिंह जी बी.ए. एलएल.बी. एडवोकेट मेरठ
२१. ,, देवेन्द्रजी रईस सराय तरीन जि. मुरादाबाद
२२. ,, कालीचरण जी आर्य लालकुर्ती मेरठ
२३ ,, धर्मवीर जी द्वारा आर्य समाज पीलीभीत
२४. ,, फूलनसिंह जी आर्य समाज शिकोहाबाद मैनपुरी
२५. ,, बृहस्पति जी शास्त्री वेद शिरोमणि ४६ मानसिंह वाला देहरादून
२६. ,, रामावतार जी प्रधान आर्य समाज जौनपुर
२७. ,, ईश्वरदयालु जी आर्य स० भाटान बिजनौर

आर्य संगीत विद्यालयका उद्घाटन

१५.६.४९ को आर्य समाज मन्दिर में आर्यकुमार सभा देहरादून द्वारा संचालित आर्य संगीत विद्यालय का समारोह हुआ। प्रार्थना व यज्ञ के पश्चात श्री प० अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री, प्रधान आर्य समाज देहरादून, ने ओ३म् पताकारोहण किया। तत्पश्चात् संगीत सम्मेलन हुआ। शिक्षा कार्य प्रतिदिन आर्य समाज मन्दिर में सायंकाल को हुआ करेगा।

नासिक में आर्य समाज का प्रचार

३४ मई को नासिक में प्रो० तारा चन्द जी गाजरा का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

३१ मई को श्री पंडित वज्रनाथ जी भूत पूर्व आचार्य ब्रह्ममहा विद्यालय ने वैदिक देश भक्ति" पर भाषण किया"।

आर्य पुनरवास मण्डल का उत्सव

७, ८, ९, को हुआ उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध की ओर से प्रो० तारा चन्द्र प्रो० हासानन्द जी पं० उदयभानु जी तथा पं० मुरलीधर जी शर्मा और कवि हीरानन्द जी आदि महानुभाव सम्मिलित हुए। सभा मन्त्री

गुरुकुल वृन्दावन

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के धन संग्रहार्थ श्री प० रामेश्वरजी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि मुख्याध्यापक गुरुकुल मई मास के तीसरे सप्ताह में अकबरपुर (कानपुर) भरथना और इटावा में गये और उक्त स्थानों से ३०८ रु० धन संग्रह करके ६ जून को गुरुकुल वापस आ गये। श्री प० भद्रजितजी आयुर्वेद शिरोमणि अकबरपुर और श्री ला० श्यामबिहारीलालजी गुप्त, शान्ति सनरल मिल्स, इटावा ने धन संग्रह कराने में विशेष सहयोग दिया। तदर्थ उक्त महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद है। ग्रीष्मावकाश के अनन्तर १ जुलाई से गुरुकुल के प्रथम सत्र की पढ़ाई का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से फार्म मंगालें।

श्रीराम
मुख्याधिष्ठाता

शुभ विवाह

ता० १८ जून को श्रीमान् मदनमोहन सेठ रि० जज का० प्रधान आ० प्र० सभा यू० पी० की सुपुत्री सौभाग्यवती पुष्पलता का पाणिग्रहण संस्कार आगरा निवासी श्री गुलाबचन्द जी कपूर असि० कलक्टर गोंडा के साथ वैदिक रीति से श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री प्रधान सभा ने सम्पन्न कराया। अनेक प्रतिष्ठित गण्य मान्य महानुभाव संस्कार में सम्मिलित हुये थे।

—करोवन (उन्नाव) निवासी श्री रघुनाथजी शर्मा के सुपुत्र श्री ब्रह्ममित्रजी शास्त्री जिला वारिधि का पाणिग्रहण संस्कार १६ जून को श्री बैजनाथ शुक्ल (लखनऊ) की सुपुत्री के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

संस्कार में 'स्वतन्त्र साप्ताहिक' जागरण दैनिक, नवजीवन, अधिकार आर्य मित्र तथा सार्वदेशिक के सम्पादक तथा अन्य अनेक प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

—स्वा० आत्मानन्द सरस्वती यो। महाराज निःशुल्क गुरुकुल विद्यालय करोवन उन्नाव का उद्घाटन [यज्ञ] ता० २६ जून ४६ रविवार को होगा। छात्रों का प्रवेश इसी समय होगा। प्रवेशार्थी सज्जन निम्न पते से पत्र-व्यवहार करें।

श्री स्वा० आत्मानन्दजी सरस्वती
योगमण्डल
निःशुल्क गुरुकुल, करोवन
[उन्नाव]

मंडल प्रचार योजना

नाम मण्डल	नाम मण्डल संचालक	नाम उपदेशक प्रचारक
(१) देहरादून, सहारनपुर	पं० बृहस्पतिजी शास्त्री देहरादून।	पं. रामकौशिकजी उप०, म० हुकमसिंहजी प्रचारक।
(२) मुज़फ़रनगर, मेरठ, बुलन्दशहर	पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री मेरठ।	प. निरंजनदेवजी उप०, म० श्रवणसिंहजी, म. महेशचन्दजी प्रचारक।
(३) आगरा, मथुरा, एटा, मैनपुरी, अलीगढ़।	पं० रामप्रसाद जी शर्मा मैंडू (अलीगढ़) सहायक पं० दयाराम जी शिकोहाबाद।	पं. श्रीकृष्णजी शर्मा उप म. गोविंदरामजी शर्मा, म. गंगाशरण जी सैलानी प्रचारक।
(४) बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुरस्टेट, गढ़वाल।	पं० बनारसीलाल जी नजीबाबाद (बिजनौर) सहा० पं० देवेन्द्रजी सरायतरीन।	पं. प्रकाशवीर शास्त्री महो., पं. तोतारामजी उप. म. महिपालसिंहजी, म. सर्वगुणप्रसाद जी प्रचारक।
(५) बरेली, नैनीताल, अलमोड़ा, बदायूँ, शाहजहाँपुर, पीलीभीत।	पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार बदायूँ सहा. बाबू रामबहादुर जी पूरनपुर।	प. ओंकारजी मिश्र शास्त्री उप. पं. लक्ष्मणदेवजी उप., म. मुकुन्दरामजी शर्मा प्रचा., म. रघुवरदत्तजी शर्मा प्रचा.
(६) इलाहाबाद, कानपुर, फतेहपुर, फर्रुखाबाद, इटावा।	बाबू उमाशंकर जी फतेहपुर। सहा. बाबू विशम्भरनाथ जी तिवारी कानपुर।	प रूपनारायणजी शर्मा उप. प० सोमदत्त जी शर्मा उप, म. मानसिंहजी शर्मा प्रचा म. शिवबिहारीजी प्रचारक।
(७) बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर बलिया।	पं० देवदत्तजी शास्त्री बनारस	प सत्यमित्रजी शास्त्री महो, पं. धर्मराजसिंहजी उप, म. श्रीपालसिंहजी म महादेवप्रसाद जी प्रचारक।
(८) गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, देवरिया।	बाबू अक्षयबरनाथ जी आजमगढ़।	प. शिवनारायण जी वेदपाठी उप., म. वेदमित्रजी, म. भगवानदत्त जी शर्मा प्रचारक।
(९) फैजाबाद, गोंडा, बहराइच सुलतानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी।	प० केदारनाथ जी आर्य फैजाबाद।	प. महादेवप्रसादजी शास्त्री उप., प. रामनिवासजी उप. म रुद्रदत्तसिंहजी म. रामपालसिंहजी, म. भगवहादुरजी प्रचारक।
(१०) लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई, खीरी।	प० शिवनरायण जी शुक्ल लखीमपुर।	पं. वाचस्पतिजी शास्त्री, महो., प. श्यामाचरण जी उप., म. धर्मदत्त जी आनन्द, म. बालकृष्ण जी शर्मा प्रचारक
(११) झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर।	बाबू मदनमोहनजी मोंठ। सहा० स्वामी दिव्यानन्दजी महाराज झाँसी।	प. राजेन्द्रदेवजी उप. म. हेमचन्द्र जी, म. देवव्रत जी प्रचारक।

नोट—सब उपदेशक, प्रचारक महानुभावों को चाहिये कि अपने २ मण्डल संचालकों के परामर्शानुसार अपने२ मण्डल में ही प्रचार कार्य करें, अन्यथा किया गया प्रचार उपदेश विभाग को स्वीकार नहीं होगा।

रामदत्त शुक्ल
सभामन्त्री तथा अधिष्ठाता उपदेशक विभाग

गेहूं व चावल की खुली बिक्री बन्द न होगी

लखनऊ २० जून। युक्तप्रान्तीय सरकार के एक प्रवक्ता ने इस समाचार का प्रतिवाद किया है जिसमें कि प्रान्तीय सरकार ने गेहूँ और चावल के खुले बाजार को बन्द करने का निश्चय किया है। प्रवक्ता का कहना है कि यह विषय अभी विचाराधीन है।

जनता का असंतोष दूर करने के लिए कोई न कोई रास्ता निकालना पड़ेगा

—प० नेहरू

नेहरू जी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के समक्ष एक भाषण में कहा कि उन्हें भय दूर करके वर्तमान स्थिति का सामना करना चाहिए। वर्तमान स्थिति को सभालने के लिए कोई न कोई रास्ता अवश्य निकालना पड़ेगा। आपने आगे कहा कि यह कल्पना के बाहर की चीज है कि कुछ गुंडे सड़कों पर उत्पात करें और जनता उसे बर्दाश्त करती रहे। हिंद की कम्युनिस्ट पार्टी अराजकता फैला कर देश को कमजोर करना चाहती है वह वास्तविक कम्युनिज्म नहीं फैलाना चाहती।

नेहरू जी ने कांग्रेस जनों के स्वार्थ सिद्धि की निंदा की और कहा कि ताज्जुब है कि एक बार चुनाव संबंधी कांग्रेस की सभा भंग होने पर कांग्रेसजन इतना डर गये कि उन्होंने फिर सभा करने का साहस नहीं किया। आपने कहा कि इस चीज का अंत होना चाहिए।

आपने कहा कि बम फेंकने से क्रांति नहीं होती। आपने साथ ही यह भी स्वीकार किया कि जनता कांग्रेस और सरकार से असंतुष्ट है। इस असंतोष को दूर करने के लिए रास्ता ढूंढना पड़ेगा। जनता को मौका देना होगा कि वह हमें रखे या निकाल बाहर करे।

अंत में आपने कांग्रेस जनों से अपील की कि वे बिना किसी की परवाह किये अपना फर्ज अदा करें।

हिंद में पाकिस्तानी गुप्तचर

हिंद सरकार का गुप्त आदेश पत्र पाकिस्तानी प्रेस में प्रकाशित

नयी दिल्ली, २० जुलाई। हाल ही में हिन्द सरकार को देश में पाकिस्तानी गुप्तचरों के व्यापक जाल के बारे में नये प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

हिंद के कुछ प्रमुख उद्योगों में पाकिस्तानी मुसलमानों की नियुक्ति के बारे में हिन्द सरकार का एक गुप्त आदेश-पत्र पाकिस्तानी समाचार पत्र में मय पत्र नम्बर तारीख आदि के छपने से सरकार बहुत सतर्क हो गयी है।

मालूम होता है कि हिंद सरकार ने प्रान्तीय सरकारों को एक पत्र भेजकर उनका ध्यान आकृष्ट किया था कि तेल कूपों, लोहे के कारखानों और अन्य प्रधान उद्योगों और कारखानों में बहुत बड़ी संख्या में पाकिस्तानी मुसलमान नियुक्त हैं। वे अधिकांशतः ऐसे काम पर हैं जिन्हें भारतीय कर सकते हैं। पाकिस्तानी मुसलमानों की नियुक्ति में एकता उतनी ही संख्या में भारतीयों का कम काम मिलता है दूसरे सुरक्षा की दृष्टि से यह उचित नहीं समझा गया कि ऐसे आदमी काम पर रहें जिनका इस देश से कोई प्रेम नहीं और संकट के समय जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

इस सम्बन्ध में यह कहा जा रहा है कि यह ऐसी कारवाई थी जिसे कोई भी सरकार संदिग्ध प्रकार के विदेशियों को हटाने में कर सकती थी। सरकार के एक गुप्त आदेश-पत्र का मय नंबर तारीख आदि के पाकिस्तानी प्रेस में छप जाना इस शक को और भी मजबूत करता है कि पाकिस्तानी गुप्तचर यहां काम कर रहे हैं।

कुछ महीने पहले हिन्द के शस्त्रास्त्र कारखाने से पाकिस्तान को भेजा गया गुप्त संवाद पकड़ लिया गया था। उससे इस बात का एक और प्रमाण मिला कि हिन्द में विदेशी गुप्तचरों का दल काम कर रहा है।

कांग्रेस मंत्रिमंडलों के विरुद्ध अविश्वास के प्रस्ताव पास न किये जायँ

प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को वर्किंग कमेटी का आदेश

नयी दिल्ली १८ जुलाई। कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने एक प्रस्ताव पास कर प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को आदेश दिया है कि वे किसी कांग्रेस मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव न पास करें। यदि प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों को किसी प्रकार की शिकायत हो तो वे उसे केन्द्रीय पार्लमेंटरी बोर्ड या वर्किंग कमेटी के सामने प्रस्तुत करें।

भारत की तीन महान विभूतियों के विचार—

राष्ट्रभाषा पद पर हिन्दी का समर्थन

योगिराज अरविंद

"भाषार भेदे आर बाधा हइवेना, सकले स्व-स्व मातृ भाषा रक्षा करियाओ साधारण भाषा रूपे हिन्दी भाषा के ग्रहण करिया सेई अन्तराय विनष्ट करिबे।"

(भाषा के भेद से और बाधा नहीं पड़ेगी, सब लोग अपनी मातृभाषा की रक्षा करके हिन्दी को साधारण भाषा के रूप में पढ़कर इस भेद को नष्ट कर देंगे।)

श्री केशवचन्द्र सेन

"यदि भाषा एक न हइले भारतवर्षे एकता ना हय तबे ताहार उपाय की? समस्त भारतवर्षे एक भाषा व्यवहार कराई उपाय। एखन जातोगुली भाषा भारते प्रचलित आछे, ताहार मध्ये हिंदी भाषाई प्राय सर्वत्र प्रचलित। एई हिन्दी भाषा के यदि भारतवर्षेर एकमात्र भाषा करा जाय तबे अनायासे एकता शीघ्र सम्पन्न हइते पारे। किन्तु राजार साहाय्य ना पाइले औ कखनोई सम्पन्न हइबे ना। भारतवासीदेर मध्ये अनैक्य थाकिबे ना। ताहार परस्पर एक हृदय हइबे। भाषा एक ना हइले एकता हइते पारे ना।"

समस्त भारत में एक भाषा का ही व्यवहार इसकी एकता का साधन है। इस समय भारतवर्ष की प्रचलित भाषाओं में एकमात्र हिन्दी ही प्राय सर्वत्र बोली जाती हैं। इस हिन्दी को यदि भारतवर्ष की एक मात्र भाषा बना दिया जाय तो [illegible] जल्दी अनायास ही देश में [illegible] जाय, किन्तु राज-सहायता के [illegible] यह काम पूरा न होगा। [illegible] भारतवासियों के बीच फूट न रहेगी वे सब एक [illegible] हो जायेंगे। एक भाषा के बिना [illegible] असम्भव है।

श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

"अंग्रेजी भाषा द्वारा [illegible] किन्तु हिन्दी शिक्षा ना करिले [illegible] मेई चलिबे ना। हिन्दी भाषाय पुस्तक [illegible] वक्तृता द्वारा भारतेर अधिकांश स्थ[illegible] मंगलसाधन करिबेन।

हिन्दी भाषार साहाय्ये भारत[illegible] विभिन्न प्रदेशेर मध्ये याहारा ऐक्य [illegible] संस्थापन करिते पारिबेन ताहारा [illegible] भारतबंधु नामे अभिहित हइय[illegible] सकले चेष्टा करून, यत्न कर[illegible] परेई हउक मनोरथ पूर्ण हइबे।"

अंग्रेजी भाषा के द्वारा [illegible] किन्तु हिन्दी शिक्षा के बिना [illegible] प्रकार कार्य नहीं चलेगा। हिन्दी [illegible] में पुस्तक-रचना और वक्तृता के [illegible] भारत के अधिकांश स्थानों का [illegible] साधन होगा।

हिन्दी भाषा की मदद से भार[illegible] के विभिन्न प्रदेशों के बीच एकता [illegible] पित कर सकने वाले ही सच्चे [illegible] बन्धु नाम से पुकारने योग्य हैं। [illegible] मिलकर प्रयत्न करें चाहे कित[illegible] लग जाय अन्त में यह वाञ्छ[illegible] होगी।

हैदराबाद का कम्युनिस्ट मंत्रिमंडल !

हैदराबाद, १७ जुलाई। हैदराबाद पुलिस की विशेष शाखा द्वारा हाल ही में ली गयी तलाशियों में जो तमाम कम्युनिस्ट साहित्य बरामद हुआ है उसमें हैदराबाद के लिए निश्चित किये गये 'कम्युनिस्ट मंत्रिमण्डल' की की सूची भी पुलिस के हाथ लगी है।

उक्त सूची के अनुसार कम्युनिस्ट मंत्रिमण्डल के प्रधान मंत्री होंगे श्री मकदूम मोहिउद्दीन, उपप्रधान मंत्री श्री अजमतउल्ला खाँ कैसर, अर्थ मंत्री श्री एन० गुप्ता, न्याय मंत्री श्री जवाद रिजवी वैदेशिक मंत्री श्री आर० नारायण रेड्डी, गृह मन्त्री रविया, श्रम मन्त्री श्री मोहम्मद कासिम अकील, शिक्षा मन्त्री श्री राजबहादुर गौड़, रेल मन्त्री श्री एन० ए० वसीम, यातायात मन्त्री श्री समद [illegible] और [illegible] मन्त्री श्री किशनलाल।

उपर्युक्त 'मन्त्रियों' में [illegible] समय हैदराबाद रियासत की [illegible] में बन्द हैं।

शहीदों की पुण्य स्मृति[illegible]

पटना सचिवालय के [illegible] स्मारक बनेगा

पटना १७, जुलाई। पटना [illegible]वालय के सामने शहीदों की पुण्य[illegible] में जहाँ कि १९४२ के अहिंसा[illegible] के अहिंसात्मक क्रांति के अवसर [illegible] स्थान पर ७ विद्यार्थी शहीद [illegible]

इस स्मारक के बनाने [illegible] एक लाख रुपया व्यय होगा [illegible] स्मारक वस्तु कला का [illegible] उदाहरण होगा। उक्त स्मार[illegible] शिलान्यास बिहार के भूतपूर्व म[illegible] बाबू रामदास दौलतराम ने किया [illegible]

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

"क्षिणोमि ब्रह्मणामित्रान्"
अथर्व ३ । १९ । ३

मैं [illegible] से शत्रुओं को नष्ट करता हूँ।

ता० २१ जुलाई १९४९

आर्यसमाज का स्वरूप

प्रत्येक प्रगतिशील जीवित प्राणी का परिचय दो प्रकार से होता है। प्राणी के स्थूल रूप से, जिसे उसका शरीर कहा जाता है और दूसरे उसके सूक्ष्म रूप से कि जिसे उसका आत्मा या जीव कहते हैं। दोनों के समन्वितरूप से विद्यमान रहने पर ही उस व्यक्ति प्राणी का परिचय, प्रगति, और प्रभाव से अन्य प्राणिवर्ग सम्पर्क मे आते हैं। ऐसा होना सम्भव नहीं है कि कोई शरीर के अभाव में आत्मा या आत्मा की अविद्यमानता में शरीर से किसी प्रकार का कार्य ले सके। परस्पर वियोग व्यवहार जगत् में सर्वथा व्यर्थ और अनुपादेय ही समझा जाता है। इसीलिये प्रत्येक देश और काल में प्राणिमात्र का यह प्रमुख प्रयत्न रहता है कि किसी न किसी प्रकार से आत्मा और शरीर दोनों को स्वस्थावस्था में बनाये रखकर व्यवहार लोक में प्रगतिशील होकर अग्रसर हों। इस सर्वतन्त्र नियम का किसी प्रकार के प्राणिवर्ग में कोई अपवाद नहीं उपलब्ध होता है। मानव जीवन में तो सबसे अधिक वर्त्तमानकाल में जीवित रहने के लिये या यों कहिये कि शरीर और आत्मा को सयुक्त अवस्था में रखने के लिये ही नाना प्रकार के आयोजन किये जाते हैं। शरीर विज्ञान, आयु विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान मनोविज्ञान, सदाचार विज्ञान, आदि २ की सृष्टि और विकास इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिये हैं।

उपर्युक्त सर्वतन्त्र सिद्धान्त को यदि संस्थाओं, जातियों, समाजों या राष्ट्रों में में व्यवहृत होते हुये देखा जाय तो बहु प्रकार से साम्य प्रतीत होने लगता है। कोई भी ऐसी मानव रचित समष्टि जिसका कर समठित संस्था, समाज, जाति या राष्ट्र कल्पना में भी नहीं लाये जा सकते हैं कि जिनका न तो कोई लक्ष्य प्रयोजन या उद्देश्य ही हो और न उस लक्ष्य प्रयोजन या उद्देश्य की पूर्ति के लिये किसी प्रकार का सामुदायिक संगठन, विधान या नियमन व्यवस्था न हो। इस दृष्टि से अतीतकाल में हुई चेष्टाओं और वर्त्तमानकाल में प्रचलित संस्थाओं तथा भविष्य में होने वाले संगठनों का विश्लेष और विवेचन किया जा सकता है।

आर्य समाज को ७४ वर्षीय आयु सम्पन्न एक जीवित, जाग्रत और प्रगतिशील समाज कहा जाता है। इस आर्य-समाज को अपने युग के महान् विचारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जन्म दिया। अपने जन्म काल से ही इसके प्रमुख विचारकों और प्रचारकों ने विविध प्रकार से, वाणी और लेखनी द्वारा वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृतिपरक समस्त प्रकार के सूक्ष्म विचारों और परम्पराओं का सबल प्रतिपादन और उसके विरुद्ध अनेक मिथ्या रूढ़ियों, संकुचित सम्प्रदायों, घातक कुरीतियों, विद्रोहात्मक विचार धाराओं, संक्रामक अनाचारों, और विनाशक सिद्धान्तों का दृढ़ता के साथ निराकरण किया। इतना ही नहीं अपितु अपनी मान्यता के अनुसार स्वीकृत लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त शिक्षा, समाज सुधार तथा निराश्रितों के संरक्षणार्थ विविध प्रकार की संस्थाओं को भी स्थापित कर सचालित किया। विचार और प्रचार का उग्र युग अपनी तीव्र गति के साथ संस्था बहुल परिवर्तित काल में न चल सका। निदान सर्वसाधारण आर्य समाजियों में जो विशिष्ट कर्मनिष्ठा और सिद्धान्त दृढ़ता थी वह भी संस्था युग में कुछ २ शिथिल होने लगी है। किन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि संस्था युग मे आर्य समाज का स्थूल रूप अथवा शरीर उत्तरोत्तर वृद्धि करता ही रहा। इसी युग में स्थान २ पर आर्य समाजों के विशाल आर्यसमाज मन्दिरों का निर्माण हुआ, शिक्षादि संस्थाओं के अनुरूप सार्वजनिक आर्थिक सहायता से और सरकार की विशेष आर्थिक सहायता से विशाल भवनों का निर्माण हुआ। इस दिशा में प्रायः आर्य समाज मन्दिरों से कहीं विशाल गगनस्पर्शी अट्टालिकायें शिक्षा संस्थाओं की हो गई हैं। इस अर्थ में आर्य समाजों के आकार प्रकार से संस्थाओं के शरीर बृहत्तर हो गये। अपेक्षाकृत इस प्रकार आर्य समाज के शरीर की भी वृद्धि को देखकर अनेक आर्य समाज के नेता, अधिकारी कार्यकर्त्तागण और हितैषि वर्ग बड़े प्रफुल्लित हो आत्म गौरव अनुभव करने लगते हैं। वस्तुत स्थूल अर्थ में यह प्रसन्नता की बात हो भी सकती है। पर जब हम गम्भीरता के साथ विचार करने लगते हैं कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक ने आर्यसमाज के आधार भूत दश नियमों का जिस लक्ष्य की पूर्ति के हेतु निर्माण किया था तो निश्चय ही हमको अपनी स्थिति और आर्य समाज के स्थूलतर शरीर में निवास करने वाली सर्वथा संकुचित और अविकासोन्मुख आत्मा के सम्बन्ध में वास्तविक विषाद और क्षोभ अनुभव होने लगता है। क्योंकि स्वतन्त्र भारत हो जाने पर हम देखते हैं कि राष्ट्र सब ओर से विभिन्न जीवन क्षेत्रों में वायुवेग के साथ अग्रसर होने के लिये नाना प्रकार से उत्सुक सा हो रहा प्रतीत होता है। सब ओर चहल पहल है। विशाल महत्वाकांक्षा, उल्लास, साहस, भावो द्रेक प्रत्येक राष्ट्रीय, सामाजिक और औद्योगिक आयोजन मे प्रतीत होता है। किन्तु जब कोई गम्भीर विचारक भारत की धार्मिक अथवा सांस्कृतिक अवस्था और उसके सम्बन्ध में हते हुये अन्तः कलहजनक परस्पर विरोधी संघर्षात्मक क्रान्तिकारी विचार धाराओं और मान्यताओं पर विचार करता है तो एक बार रोमहर्ष होने लगता है। क्यों हमारे वेद महर्षियों के तप और त्यागमय जीवनों, विचारों और परम्पराओं से परिपूर्ण देश में ही विदेशीय, विघातक, अनाचार, दुराचार, कदाचार, भ्रष्टाचार, अनीति, और अराजकता के साथ आतंकवाद का स्वेच्छाचार पूर्वक हुडदंग मचाने की अनेक प्रकार की कुटिल और कूट संगठित कुचेष्टायें हो रही हैं। घृणित, अमानुषिक और हिंस्र साधनों से समस्त देश को अन्त कलह और अराजकता का कुरुक्षेत्र बनाने के षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। ऐसी विकराल दुरवस्था में आर्य समाज और उसके नेतागण अपना सामर्थ्य और प्रभाव आर्य समाज के पहले से ही स्थूल शरीर को और वपुष्मान् बनाने के प्रयास में तन्मयता के साथ संलग्न हैं। राजनीतिक दासता की सूचीभेद्य तमिस्रा में जो दयनीय दशा भारतवासियों की हो गई थी, उससे सहस्रगुणा अधिक दुर्दशा आज हो रही है। कहने को तो हम स्वतन्त्र राष्ट्र के स्वाभिमानी नागरिक हैं। परन्तु अन्नवस्त्र, निवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि २ समस्त जीवनाधारी के लिये आज हमारा तथा कथित स्वतन्त्र राष्ट्र दूसरे देशों की दया पर निर्भर है। परतन्त्रताकाल में तो हमने विदेशी वस्त्रो की होली जलाई और प्रण किये कि हाथ का कता और हाथ का बुना हुआ ही बस हम धारण करेंगे। किन्तु आज तो हम अपने हाथों से दूसरे देश के व्यापारियों से प्रत्येक जीवनोपयोगी वस्तु के लिये याचना करते है। अभी तक अपने देश में अपना राज्य होते हुये भी हम आर्थिक दासता से तो सर्वथा जकड़े हुये हैं। इधर हमारे स्वतन्त्र देश के नागरिक अपने उत्तरदायित्व को अभी तक अनुभव नहीं कर रहे हैं। उनके विचार में वह अब भी सोलह आना सरकार पर ही सब बातों के लिये निर्भर हैं। व्यापारी वर्ग दूसरी ओर भ्रष्टाचार ही अपने लिये देश भक्ति का कार्य समझते हैं। प्रजा के प्राणों का शोषण करके भी अपना संकुचित स्वार्थ सिद्ध करने पर जोंक की भांति लगे हुये हैं। इसी स्वतन्त्र देश में अनेक सरकारी अधिकारिगण भी अपने उत्कृष्ट प्रजापालन धर्म को सर्वथा भुलाकर उत्कोचादि द्वारा अपना काम बनाते देखे जाते हैं। इन सब व्याधियों से सर्वथा ग्रस्त देश धार्मिक और सांस्कृतिक सन्देश की प्रतीक्षा म सतृष्ण दृष्टि से आर्य समाज की आत्मा के विकास से प्रभावित होकर अपने भाग्योदय के लिये समुत्सुक है। आर्य समाज के कर्णधार नेतागण क्या अब भी आर्य समाज के शरीर की अपेक्षा उसके आत्मा के विकसित करने के साधक आयोजन करने म लगेंगे। और क्या स्वतन्त्र राष्ट्र को धार्मिक एव सांस्कृतिक पथप्रदर्शन प्रदान करना अपना मुख्य कर्त्तव्य अनुभवकर तदनुसार

एक विस्तृत और आचरणीय पुरोगम प्रस्तुत करेंगे। क्योंकि यदर्थं आर्यों घूते सस्य कालोबमागत।

★ ★

साधना मन्दिर

राष्ट्र उत्थान, समुदय, समुन्नति और समृद्धि के प्रमुख साधक हैं उस राष्ट्र के जयनशील, रयेष्ठ, सभेय और पराक्रमी वीर युवक गण शक्तिसम्पन्न और विचक्षण युवकों को सस्कार और शिक्षा के द्वारा सुविकसित और पूर्ण चरित्रबलोपेत बनाना न केवल राष्ट्रीय सरकार का ही कर्त्तव्य है, अपितु राष्ट्र के समस्त नागरिकों की चिन्ता और अभिरुचि का विषय है, अभी तक दुर्भाग्य एव दासतापाश में आबद्ध रहने के कारण इस विषय में सरकार तो सर्वथा प्रमाद करती ही रही, किन्तु अज्ञानवश सर्वसाधारणजनों में भी किसी प्रकार रुचि नहीं रही है, परिणाम यह हुआ कि अपेक्षा कृत भारतीय नर और नारियों की शरीरिक अवस्था अत्यन्त दयनीय हो गई, अब सौभाग्य उदय हुआ है, राष्ट्र ने अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लिया है अतः राष्ट्र के नव युवकों और नव युवतियों को अपनी शरीर सम्पत्ति को पूर्णरूप से विकसित करने का सुयोग भी प्रस्तुत हो रहा है,

अपनी परिमित शक्ति और साधनों के अनुरूप प्रान्तीय एव केन्द्रीय सरकारों की ओर से अनेक योजनाओं को प्रचारित किया जा रहा है कि जिनके परिणामस्वरुप भारतीय युवकों को सुदृढ और पुरुषार्थ सक्षम बनाया जा सके। किन्तु इन विविध लाकोपकारक योजनाओं में भी यदि सर्वसाधारण जनता और विशेष कर सार्वजनिक सस्थाओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त न हो तो उनकी सफलता में बड़ा स देह है, क्या कि प्राय लोगों की धारणा बन जाती है कि जो कुछ सरकार की ओर स किया जा रहा है, उसस तो प्रजाजनों का विशेष लाभ सम्भव नहीं है, इसलिये हमको निरपेक्ष रहकर अपने अपन कार्यों में ही लगे रहना चाहिये।

आर्य समाज की ओर स पहले आर्य कुमार सभाओं और फिर आयवीर दलों का सगठन इसी उद्देश्य से किया गया कि नवयुवकों म जहा एक ओर शारीरिक व्य यामादि के द्वारा शरीर सुदृढ तथा पुरुषार्थ क्षम बने वहाँ साथ ही स्वाध्याय, प्रवचन, वाद विवाद, समाज सेवादि कार्यों के अभ्यास से नागरिकता के विविध कर्त्तव्यों की भी शिक्षा और अभ्यास होता रहे, दोनों प्रकार की योजनाओं से शारीरिक एव मानसिक दोनों प्रकार का विकास सम्भव था, किन्तु समन्वित रूप से सचालन और नियमन न हो सकने के कारण उत्तरोत्तर आर्य कुमार सभाओं में केवल कुछ बौद्धिक अभ्यास मात्र रहने के कारण और वीर दलों में प्रधान रूप शारीरिक व्यायामादि ही रहने के कारण विशेष आकर्षण प्रतीत न हुआ, इसलिये इन दोनों सस्थाओं का यथोचित व्यापक विकास और विस्तार अवरुद्ध सा प्रतीत होने लगा।

अब अत्यन्त आवश्यकता इस बात की सर्वत्र अनुभव की जा रही है कि हमारे देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उसको पचाकर उससे होनेवाले अनेक लाभों और सुविधाओं को किस प्रकार बद्धमूल किया जाय, दूसरे शब्दों में, कहाँ है वह कर्मठ और सूक्ष्म बुद्धि सम्पन्न समर्थ राष्ट्रहित साधक जो अपने अनुकरणीय चरित्रबल से राष्ट्र के विभिन्न कर्मक्षेत्रों में चट्टान की भाँति अडिग रहते हुये राष्ट्र की अभिवृद्धि करने में सफल सिद्ध होने की क्षमता अपने में रखते हैं, आज तो हमारे राष्ट्र के सूत्र धारों को सबसे अधिक इसी बात की चिन्ता लगी रहती है कि प्रथम श्रेणी के चरित्रबलोपेत कर्मठ व्यक्ति, देश और विदेश में अपने उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों को सफलता के साथ सम्पन्न करने वाले नवयुवक, सर्वथा योग्य व्यक्तियों का पर्याप्त सख्या में मिलना कठिन सा हो रहा है, ऐसे सुदृढ व्यक्ति जो भय और प्रलोभन दोनों से सर्वथा अछूत हों और अत्यन्त विषम अवस्था में भी अपने राष्ट्र की यश पताका को समुन्नत करने में अपने प्राणों तक का उत्सर्ग नि सकोच होकर कर सके।

उपर्युक्त आवश्यकता को पूर्ति का एक मात्र उपाय है, स्थान स्थान पर साधना मन्दिरों की स्थापना। साधना मन्दिर केवल व्यायाम करने के अखाड़े मात्र ही न हों, अपितु वह ही उन समस्त प्रकार की प्रगतियों के प्रमुख केन्द्र कि जिनमें सम्मिलित होने वाले नागरिकता के सभी पार्श्वों की शिक्षा व्यवहाररूप से प्राप्त कर सकें, क्यों कि केवल शरीर बलवान् बनाने और अन्य प्रकार से सैनिक शिक्षादि सुविधानुसार प्राप्त कर लेने पर भी बौद्धिक विकास के बिना अभ्यासी व्यक्ति में चरित्रबल, सद्भावना सुमति, सौहार्द्र, पुरुषार्थप्रियता, पराक्रमशीलता और परहितचिन्ता के उत्कृष्ट भावों का उदय होना सम्भव नहीं है, इस क रण अभ्यास पूरा हो जाने पर भी यदि मानवता के उच्च भावों से प्रभावित होकर समाज और राष्ट्र क्षेत्रों में सफल होने योग्य व्यक्ति न बना सका तो सारा आयोजन ही व्यर्थ हो सकता है, व्यष्टि और समष्टि जीवन की अभिन्नता को हृदयगम करते हुये "अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहते हुये सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना" इस आदर्श सिद्धांत को व्यावहारिक रूप देते हुये अपने को अनुकरणीय उदाहरण रूप में प्रस्तुत कर सकने का नाम ही सफल साधना मन्दिर योजना हो सकता है, अथवा, "ग्रामे ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे ग्रामे कथा शुभा, मल्ल शाला पाठशाला पर्वणि पर्वणि उत्सव" अर्थात् ग्राम ग्राम में सभा का निर्माण किया जाय, ग्राम २ में शुभ कथा का आयोजन हो, ग्राम ३ में मल्लशालायें बनाई जाय और ग्राम ग्राम में पर्व-पर्व पर उत्सवों को मनाने का प्रबन्ध किया जाय। इस पच विध योजना को ग्राम २, कस्बा कस्बा, नगर नगर और पुर पुर, में प्रचलित करने से समस्त देश में एक अभिनव स्फूर्ति का अलौकिक सचार हो सकता है प्रत्येक साधना मन्दिर एक एक अनुभवी सचालक के आधीन सचालित हो, समय समय पर आवश्यकतानुसार अन्य प्रभावशाली विशिष्ट व्यक्तियों की भी सहायता प्राप्त कर ली जाय, वर्ष में होने वाले विशेष पर्वोत्सवों के अवसरों पर अनेक प्रकार के प्रदर्शनात्मक कार्य हो सकते है कि जिनसे आकृष्ट हो अनेक नवयुवक दीक्षित होकर अभ्यास कर सके, इन साधना मन्दिरों में सदाचार सम्बन्धी मौलिक नियमों को व्यावहारिक रुप से परिपालन करनेवाले और भारतीय सस्कृति तथा भारतीय राष्ट्रीयता के आदर्शों के विश्वासी नव युवकों और नव युवतियों को पृथक् साधना मन्दिरों में प्रविष्ट होकर अभ्यास करने की सुविधा होनी चाहिये, चालू राजनीति के कूटनैतिक प्रपच से सर्वथा पृथक् रहते हुये विशुद्ध नागरिकता, राष्ट्रीयता और सास्कृतिकता का पूर्ण विकास हो सके, इस प्रकार की सुव्यवस्था होनी चाहिये, उसके लिये उपासना स्थान व्यायामस्थान, पुस्तकालय, वाचनालय, सभास्थान, क्रीडाक्षेत्र, अतिथिशाला और विश्रामस्थानादि आवश्यक आश्रय स्थान होना चाहिये कि जिन में प्रत्येक ऋतु में अभ्यास होने में किसी प्रकार की कोई बाधा न पड़े, यथासम्भव ग्राम के बाहर स्वच्छ वायुमडल में ही साधना मन्दिरों का निर्माण होने से अभिलषित प्रयोजन सिद्ध होना सम्भव है, आरम्भ में सर्वत्र बड़े बड़े विशाल भवन बनाने का प्रयास न करना चाहिये आवश्यकता और सुविधानुसार काम चलाऊ स्थान म ही कार्यारम्भ करने से उत्तरोत्तर क्रमशः उन्नति हो सकती है, इस प्रसग में किसी को यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि इस योजना में किसी प्रकार का कोई सकुचित स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, दल बन्दी, पार्टीबन्दी और अन्य भेदभावना का लेशमात्र समावेश है, विशुद्ध राष्ट्रोन्नति इस योजना का प्रयोजन है और राष्ट्रोन्नति कर सकने के योग्य चरित्रवान् कर्मठ एव सुविज्ञ नवयुवक और नवयुवतियों को नागरिक बनाने की शिक्षादीक्षा इस योजना का प्रमुख लक्ष्य है, शासक और शासित दोनों वर्गों का इसकी सफलता से हित है, जो सज्जन इस योजना के पक्ष में कुछ विचार रखते हों और अनुभव करते हों कि इस प्रकार की कोई योजना उपादेय है तो वह अवश्य ही इस सम्बन्ध में अपने विचार परामर्श प्रकट करें।

★ ★

ग्राम जागृति - केन्द्र

अग्रेजों के शासन के गत २०० वर्षों में ग्राम वासियों के जीवन स्तर को उन्नत करने की दिशा में कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया था। सरकारी उच्च पदाधिकारी, गवर्नर और गवर्नर जनरल व वायसरायों तक में ग्रामों की दशा सुधारने में रुचिन्यूनता और निरपेक्षता रही है। या तो वे ग्रामोन्नति के दूर व्यापी महत्वपूर्ण लाभ को अनुभव ही नहीं कर सके अथवा उन्होने अपना उद्देश्य केवल शासन व व्यवस्था को रखने मात्र तक सीमित रखना उचित समझा इसी लिये अग्रेज शासक प्राय विभिन्न योजनाओं द्वारा केवल ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करने मात्र से सन्तुष्ट होते रहे जिससे कि जनता चाहें तो उससे अपना जीवन स्तर ऊँचा कर सके। इतने प्रयासमात्र से ही जनता का स्वय उद्बोधन होना सम्भव ही न था अत वह उसी अनुन्नत दशा में पड़ी रही और अपनी उत्तम आर्थिक दशा हो जाने पर भी उन्नत न हो सकी।

उदाहरण के रूप में पञ्जाब के नहरों की नवीन बस्तियों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इन स्थानों के निवासियों का जीवनस्तर अत्यन्त निम्न रहा यद्यपि अनेक वर्षों तक वहाँ के निवासी ससार के अत्यन्त धनी कृषकों में गिने जाते रहे हैं।

कृषक की दृष्टि से इन ग्राम वासियों का जीवन स्तर ऊँचा रहने पर भी आधुनिक सुधारक प्रगतिशील तथा चैतन्य विकसित मनुष्य की दृष्टि से उन्नत नहीं हो पाया। हमारे देश का ग्रामीण प्राय.

[शेष पृष्ठ ११]

लीग की छोटी बहिन

[ले०—पं० बिहारीलाल शास्त्री]

जब से पाकिस्तान बना है, और बाकी हिन्दुस्तान में ठंडी पड़ी है, तबसे जमीयतुल उलमा ने लीग का काम संभाला है। २४ जून का अलजमीयत हमारे सामने है। इस में टंडन जी के ऊपर खूब टीका टिप्पणी की गई है। और राष्ट्र भाषा तथा एक संस्कृति होने की बात को हंसी में उड़ाया गया है और हिन्दी के साथ उर्दू का भी समर्थन किया गया है, दूसरा नोट इसमें आर्यसमाज के ऊपर है, जिसका शीर्षक "आर्य समाज के मशगले" है। इसमें आर्य समाजियों के लिये कठोर से कठोर शब्दों का प्रयोग किया गया है और धमकी भी दी गई है आर्य समाजियों को बदजुबान स्तालगेनी और गलत बयानी करने के लिये मशहूर बताया है और आर्य समाज के विरुद्ध सरकार को भी भड़काया है अन्त में आर्य समाज को धमकी दी है कि 'यह सौदा महंगा पड़ेगा' और सरकार से अपील की है कि मुसलमानों का तुर्की बतुर्की जवाब देने दिया जाय।

इस लेख को पढ़ने से किसी भी आर्य समाजी को आश्चर्य हुये बिना रह नहीं सकता। यह लेख उसी ढंग का है, जिस ढंग के लेख मुसलमानी अखबार अंग्रेजों के समय में लिखा करते थे, कांग्रेस सरकार को सचेत होना चाहिये कि जिन मिथ्या प्रचारों के कारण पाकिस्तान बना, उन मिथ्या प्रचारों को यदि अब भी चालू रहने दिया तो सम्भव है किसी दिन हिन्दुस्तान में 'जेबी पाकिस्तान' की मांग न होने लगे। दो जुबाने और दो तहजीब ही तो दो कौम बनाने वाली हैं। और इन्हीं विचारों के सबब पाकिस्तान बना। अफसोस है कि जमैतुलउलमा इसी विष के बीज फिर सब में बखर रही है। और उल्टा "आर्य समाज को कसती है, जले पर नमक छिड़क रही है, आर्य समाजी पाकिस्तान में अपनी करोड़ों रुपया की सम्पत्ति लुटवा के आया है, आर्य समाज के मंदिरों में आज मांस की दुकानें खुली हैं—सैकड़ों आर्य समाजी कत्ल हो चुके हैं। जहर के घूंट पीकर आर्य समाजी शान्ति से बैठा है फिर भी उसे धमकी दी जाती है। मुसलमान लोग अब क्या तुर्की ब तुर्की जवाब देंगे, संन्यासियों पर गोली चला चुके, पंडितों के पेट छुरों से फाड़ चुके, अबलाओं का अपमान कर चुके वेद शास्त्रों को जला चुके, क्या अभी कुछ और बाकी है? है तो वह भी कर गुजरें, आर्य समाज तो संतोष और शांति का सागर है—तुम्हारे अत्याचारों की अग्निवर्षा इस सागर को न सुखा सकेगी।

टंडन जी के ऊपर टीका टिप्पणी करते हुये लिखा है—

"मुसलमानों ने कभी गैर मुस्लिमों को नापाक नहीं समझा कभी इन से छूत छात नहीं की कभी इनके साये से परहेज नहीं किया।

मुसलमानों ने कभी किसी तबका को नापाक और अछूत नहीं समझा कभी नस्ल की बुनियाद पर इन्सानियत के टुकड़े नहीं उड़ाये कभी ऊँच नीच की तफरीक पैदा कर के करोड़ों इन्सानों को गुलाम नहीं बनाया।

लेखक

मुसलमानों ने हमेशा आलमगीर मुसावात और बैनुल अकवामी अख्वत को अपना ईमान समझा"।

जमीयत के इस उपर्युक्त दावे पर वही विश्वास कर सकता है जिसने कुरान हदीस और मुस्लिम इतिहास को कभी न देखा हो! "या ऐ युहल्ल जीन आमनू इन्नमल मुश्रिकीन नजसुन" सू० ९ रु० ४ आयत २८ में यह वाक्य कुरान के ही है। स्पष्ट शब्दों में कुरान गैर मुसलमानों को नजिस नापाक गन्दा बता रहा है। मौ० मुहम्मदअली के अनुवाद में "नजसुन" के लिये 'Unclean' शब्द दिया हुआ है जिस के अर्थ हैं 'अपवित्र' रही छूत छात की बात वह भी साफ है कि शिया लोग हिन्दुओं के हाथ का खानपान नहीं करते और चमारों को कुओं पर चढ़ने से जिले बिजनौर में मुसलमानों ने ही रोका और जब इस में असफल रहे तो अपने घरों में नल लगवा लिये और हिन्दू कुओं का बहिष्कार कर दिया है।

नस्ल के टुकड़े करने की बात तो इतनी साफ है कि जिन का वंश रक्त सभ्यता आज तक एक थी वह लोग केवल इस्लामी विष पी लेने के कारण अपने भाइयों के शत्रु बन गये। और देश के दो टुकड़े कर डाले। जमैयत के मौलाना झूठी डींगें हांक कर कब तक हिन्दुओं को धोखे में डालते रहेंगे। इसी अखबार में निर्वाचन में मुसलमानों के स्थान पृथक रखने की मांग की गयी है और विधान परिषद के निर्वाचन ऐक्य का विरोध किया गया है तथा निर्वाचन ऐक्य के समर्थन करने वाले मुसलमानों का फर्ज बतलाया गया है। जो मांग (मुसलमानों को पृथक् रखने की पहले लीग किया करती थी अब जमैयत कर रही है। हां हिन्दू कभी मतभेद के कारण किसी मनुष्य को 'नजिस' या वाजिबुल कत्ल, नहीं समझा केवल आचरण से ही अछूत या अशुद्ध कहा है। रही गुलाम बनाने की बात तो आज दुनिया भर में सिर्फ मुसलमान ही गुलामों का व्यापार करते हैं। और केवल अल्लामियों का घर मक्का ही गुलामों का रख रहा है। अरब राज्यों में प्रति वर्ष हजारों गुलाम बेचे और खरीदे जाते हैं। जमैयत के इस धृष्टता पूर्ण झूठ पर आश्चर्य होता है।

हिन्दुस्तान में आज आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है कि जो मुसलमानों की चाल से हिन्दुओं को सावधान करती रहती है। कांग्रेस नेताओं में टंडन जी ने मुसलमानों की मनोवृत्ति को कुछ कुछ समझा है। इसलिये जमैयत की आंखों में ये दोनों खटक रहे हैं। पर जमैयत को समझ लेना चाहिये कि यह चाल बाजी अब चलने की नहीं। जमैयत का असली स्वरूप अब हिन्दू जनता समझती जाती है और इस्लाम तथा इस्लामी हुकूमत की सूरत पाकिस्तानियों ने सब हिन्दुओं को दिखा दी है जमैयत अपना बदले और हिन्दू संस्कृति से नेताओं के भरोसे पर आर्यसमाज न ठोके। देश की जनता आर्य के साथ है। सत्य का पक्ष आर्य का पक्ष है? जमैयत को मुंह की पड़ेगी।

★ ★

अछूफुट्टा मारक दवा

फसलों और चरागाहों को फुट्टा से बचाने के लिए क्लोरडेन टोक्सफीन नामक दो रासायनिक का परीक्षण किया गया है। किसानों की काफी सहायता मिल अमेरिकी कृषि विभाग ने तीन परीक्षण के बाद यह पता लगाया ये दोनों दवाएँ पहले बरते हुए उ की अपेक्षा अछफुट्टों पर अधिक निय रखती हैं, उनको जल्दी मार देत और इनका असर अधिक दिनों रहता है।

इन दवाओं को पत्तियों पर छ कने से या इनका लासा बना कर र अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। इ खा कर अछूफट्टा जल्दी मर जाता ये दोनों विषैली दवाएँ हैं और इ बरतने में सावधानी रखनी चाहि जिन जगहों पर दवा डाली गई है जानवरों को कुछ हफ्ते तक चर के लिए नहीं देना चाहिए।

अमेरिका के सैनिक शक्ति आंकड़े

वाशिंगटन, । अमेरिका सैनिक प्रबन्ध विभाग का अनुमान कि अमेरिकी सेना में ३१ मई १६,१८,६०० सैनिक थे।

वायुसेना में निरन्तर २ मास वृद्धि हो रही है। अप्रैल के ४,१८,५ सैनिक बढ़ कर मई में ४,१०,८ सैनिक हो गए।

अनुमान है मई में अन्य सैनि सेवाओं में कुछ कमी हुई है। मई ६,६४,६०० सैनिक थे जो अप्रैल १०,६०० कम है। नौ सेना में ४४ ००० थे जो अप्रैल से २,७०० कम हैं मैरीन में ८७,६०० थ जो अप्रैल ४०० कम हैं। इन आंकड़ों में सनि सेना के समस्त स्थायी तथा अस्थाई सैनिक शामिल हैं।

ईसाई मिशनरियों का कार्य

लैंडोर लैंग्वेज स्कूल [मंसूरी]

(लेखक—हजारीलाल 'विशारद' ए० एल० टी०)

स्थापना

[भ]ारत भूमि बहुत ही उर्वरा है। जो भी बीज डाला जाय, वह [भ]ांति बढ़ता तथा फूलता [है]। विशेष कर धार्मिक [विचा]रों के फैलने के लिये तो यह जगत प्रसिद्ध है। संसार के मुख्य धर्म यहाँ बहुत ही पनपे; इधर कुछ काल से ईसाई कुछ अधिक चमक रहा है अपनी शाखा उपशाखाएं इस के कोने कोने में फैलाने का कर रहा है। यह कार्य पाश्चा[त्य] देशों, विशेष कर संयुक्त राज्य [अमे]रिका द्वारा हो रहा है। और [...]ओं की संख्या में अमेरिकन [...]री इस काम में अपने सभी [...] साधनों द्वारा लगे हुए हैं। उन [...]पास प्रचार के अनेक साधन हैं। [इ]न में से प्रत्येक को आवश्यकता [अनु]सार काम में लाया जाता है। [इस] देश की भिन्न २ भाषाओं में [बा]इबिल का अनुवाद छपवा कर [...]म मूल्य में लोगों के पास पहुँ[चा]ना तथा स्वयं उनके पास पहुँच [क]र अपना सन्देश देना ये दो [प्र]धान साधन हैं। इन में से पुस्तकों [द्वा]रा प्रचार तो अधिक प्रभाव[श]ाली नहीं है, परन्तु व्यक्तिगत [प्र]चार यद्यपि अधिक व्यय साध्य [है] तथापि अत्यन्त प्रभावकारी भी [है], जिस का प्रत्यक्ष फल आज [ह]मारे सामने उपस्थित है।

इस कार्य के लिये जो व्यक्ति इस देश में पधारे, उनके सामने एक कठिनाई उपस्थित हुई, अर्थात् इस देश के लोग उनकी भाषा नहीं समझ सकते थे और वे इस देश की भाषा नहीं बोल सकते थे। इस लिये यह अत्यन्त आवश्यक था कि दोनों एक ही भाषा का प्रयोग करें। इस का एक उपाय तो यह था कि इस देश के लोगों को उन प्रचारकों की भाषा सिखाई जाय, और ऐसा किया भी गया, परन्तु इस उपाय में उनको कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई; क्योंकि इस देश की चालीस करोड़ जनता को विदेशी भाषा सिखलाना कोई हँसी - खेल नहीं था। इसलिये दूसरा उपाय यह था कि प्रचारक लोग स्वयं इस देश में बोली जाने वाली भिन्न २ भाषायें सीखें और तब उन भाषाओं द्वारा प्रचार करें। यह प्रयोग किया और वह सफल हुआ।

आरम्भ में तो ये लोग जिस स्थान पर रहते थे, वहीं के लोगों से अथवा उन लोगों में से किसी एक से भाषा सीखते थे और जब पहाड़ पर जाते थे तब या तो अपने साथ किसी ऐसे व्यक्ति को ले जाते थे जो उनको भाषा सिखा सके अथवा पहाड़ पर ही किसी व्यक्ति इस काम के लिये खोज लेते थे। क्रमशः जब कुछ लोगों को पता लगा कि पहाड़ पर ऐसे लोगों की भी आवश्यकता है, जो भाषा सिखा सके तब कुछ लोग इस काम के लिये भी पहाड़ पर पहुँचने लगे। परन्तु भाषा सिखाना इतना सरल कार्य नहीं है, जितना कि कुछ लोग समझते हैं। इस कारण यह कार्य सन्तोष जनक रूप से नहीं हो सका, और लोग लगातार सोचते रहे कि कोई ऐसा उपाय निकाला जाय जिससे यह कार्य सुचारु रूप से हो सके।

अन्त में कुछ लोगों ने यह निश्चय किया कि लैंडोर में (मसूरी में) एक पाठशाला खोली जाय, जिसमें इन विदेशी प्रचारकों को जो मिशनरी कहलाते हैं, हिन्दी तथा उर्दू सिखाई जाय। इस कार्य का श्रेय विशेष कर डाक्टर फोरमैन और मिस जानसन को दिया जा सकता है क्योंकि उन्हीं के प्रयत्न से मई सन १९१० ई० में लैंडोर में एक पाठशाला खोली गई जिसका नाम लैंडोर लैंग्वेज स्कूल रक्खा गया। तब से यह पाठशाला बराबर अपना कार्य कर रही है और एक बड़े कालेज का रूप धारण कर रही है। यहाँ से प्रति वर्ष सैकड़ों मिशनरी भाषा सीख कर भारत के भिन्न २ प्रान्तों में प्रचार कार्य करते हैं।

प्रबन्ध

पाठशाला का प्रबन्ध एक बोर्ड के हाथ में है, जो पाठशाला चलाने के लिये एक प्रिन्सिपल और आवश्यकतानुसार एक दो सुपरवाइजर नियुक्त करता है, और प्रिन्सिपल अपने सुपरवाइजरों की सहायता से पाठशाला का कार्य सम्भालता है।

कई वर्ष से रेवरेंड आर सी. स्मिथ साहब इस के प्रिन्सिपल है. आप संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक हैं। आप का जन्म इसी भारत देश में हुआ था, इस कारण आप को हिन्दी तथा उर्दू का अच्छा ज्ञान है। आप बहुत ही योग्य, हँसमुख, मिलनसार, तथा सहिष्णु सज्जन हैं। आप के प्रबन्ध से विद्यार्थी तथा अध्यापक सभी सन्तुष्ट रहते हैं। यही कारण है कि यह पाठशाला दिन प्रति दिन उन्नति करती हुई कालेज का रूप धारण कर गयी है।

विद्यार्थी

इस पाठशाला में संयुक्त राज्य अमेरिका, कैनैडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड डैनमार्क नार्वे स्वीडन, फिनलैंड, आदि संसार के भिन्न भिन्न देशों के मिशनरी आते हैं, जिनकी संख्या इस वर्ष लगभग ढाई सौ है। इन में विवाहित, अविवाहित, स्त्री तथा पुरुष सभी सम्मिलित हैं और सब एक साथ अध्ययन करते हैं।

पाठ्यविषय

इन सब का पाठ्य विषय केवल एक ही है अर्थात् भाषा। भारत विभाजन के पहिले हिन्दी और उर्दू दोनों ही लिपियों में भारतीय भाषा सिखाई जाती थी, परन्तु विभाजन के पश्चात् उर्दू सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम हो गई है और संभव है कि एक या दो वर्ष पश्चात् इस विषय की शिक्षा का अन्त हो जाय।

शिक्षा का विषय केवल एक ही होते हुए भी विद्यार्थियों का समय चार भागों में विभक्त कर दिया गया है। एक घंटा व्याकरण के लिये, एक घंटा पाठ्य पुस्तक के लिये, एक घंटा वार्तालाप के लिये और एक घंटा उपदेश के लिये। इस प्रकार पाठशाला का कार्य प्रति चार घंटे होता है।

विद्यार्थियों का पाठ्य - काल केवल दो वर्ष है। और इतने ही समय में ये लोग काम चलाऊ भाषा सीख लेते हैं।

पाठ्य-क्रम

पाठ्य-क्रम सुचारु रूप से चलाने के निमित्त विद्यार्थी छोटी छोटी श्रेणियों में विभाजित कर दिये जाते हैं और हर एक श्रेणी में पांच से दस तक विद्यार्थी रक्खे जाते हैं इस वर्ष हिन्दी प्रथम वर्ष की चौदह और द्वितीय वर्ष की छः श्रेणियां हैं। साथ ही पांच श्रेणियां उर्दू की भी हैं। इस प्रकार कुल पचीस श्रेणियों में विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

शिक्षक

पाठशाला में तो केवल चार ही घंटे शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी लोग सुबह शाम घर पर भी पढ़ते हैं। इस कारण कुछ अधिक शिक्षकों की आवश्यकता होती है। इस साल चालीस से अधिक शिक्षक कार्य करते रहे हैं।

शिक्षण-काल

पाठशाला मई की पहिली तारीख के आस पास आरम्भ होती है और अगस्त के अन्त तक अर्थात् केवल चार मास चलती है।

अवकाश

जून के अन्तिम सप्ताह में लगभग दस दिन तक मध्यग्रीष्म काल के लिये पाठशाला का कार्य स्थगित रहता है।

वेतन

अध्यापकों का वेतन उनकी योग्यता के अनुसार तेरह रुपया प्रति घण्टा से सत्ताईस रुपया प्रति घंटा प्रतिमास तय है और प्रत्येक शिक्षक को छः से आठ घंटे तक प्रति दिन काम करना पड़ता है, सप्ताह में दो दिन अर्थात् शनिवार और रविवार को छुट्टी रहती है।

संस्था का रूप

यद्यपि यह संस्था ईसाइयों द्वारा उन्हीं के लिये स्थापित की गई है, और विद्यार्थी तथा संचालक सब वही हैं, ऐसी अवस्था में शिक्षकों का अधिक संख्या में ईसाई होना एक स्वाभाविक बात है। तथापि वर्तमान प्रिंसिपल साहब धर्मान्ध सज्जन नहीं हैं किन्तु एक न्याय प्रिय पुरुष हैं। वे केवल शिक्षक की योग्यता ही देखते हैं। उसका धर्म नहीं। इस कारण यहाँ ऐसे भी शिक्षक हैं जो ईसाई नहीं हैं और सब के साथ समानरूप से व्यवहार किया जाता है।

भारत में यह एक आदर्श संस्था है, जिससे हमको बहुत कुछ सीखना है। आशा है कि यह संस्था अपने आदर्श पर स्थिर रहेगी और बहुत सी आवश्यक बातें हम इससे

दरिद्रता मानव जीवन का अभिशाप है। सचमुच में दीनहीन दरिद्र मानव इस संसार में जीने का अधिकारी नहीं होता। वह संसार बड़ा विचित्र है जो धनवान् व्यक्ति होते हैं वे संसार के सब गुणों के आश्रयदाता समझे जाते हैं। विविध विद्याओं के विद्वान् लक्ष्मी के दास बनकर दर दर ठोकरें खाते नजर आते हैं, लेकिन मूर्ख धनवान् नाना प्रकार के आनन्द रस का पान करते दिखाई देते हैं। हे दरिद्रते! तेरा आलिंगन जिसने भी किया, उसने अपने जीवन को भार स्वरूप समझा, गोखले, अब्राहम लिंकन जैसे विरले ही मनुष्य तेरे पापी पंजे से निकल कर ख्याति प्राप्त करते हैं, हे लक्ष्मी! तेरी कृपा जिस मनुष्य पर होती है, वह मनुष्य इस असार संसार को सारयुक्त समझने लगता है, वह इस नरलोक का राजा समझा जाता है, प्रभूतभृत्य उसकी आज्ञापालन में चक्कर लगाया करते है परमोत्कृष्ट पण्डित उसकी प्रशंसा में पीयूषवर्षिणी पंक्तियों को लिखने में अभिमान अनुभव करते है क्रान्तिदर्शी कवि उसकी स्मृति म छन्दोबद्ध काव्यों का निर्माण करते हैं। सहस्र सलाह कारों से राज प्रसाद का प्रकोष्ठ परिपूर्ण रहता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

लक्ष्मी त्वयालंकृतमानवा ये

पापै र्विमुक्ता नृपलोकमान्या।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति
दुशीलिन शीलवता वरिष्ठा।

अर्थात् हे लक्ष्मि! तुमको आलिंगन करने वाले मनुष्य पापन्ताप स विमुक्त

दरिद्रता

[ले०—प० रामदेव वेदालंकार बी० ए० बी० हाई स्कूल करिया]

होते हैं। राज परिवार में मान्यता को प्राप्त करते हैं, गुण से रहित मनुष्य भी गुणी समझे जाते हैं। कुत्सित चरित्र वाले होते हुए भी सुचरित्रों म श्रेष्ठ समझे जाते हैं। जो मनुष्य धनवान् होता है वह समाज म कुलीन समझा जाता है सभ्यसमाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता हैं, चाहे वह अष्टावक्र ही क्यों न हो लेकिन वह दर्शनीय समझा जाता है। वह महामूर्ख होता हुआ भी समाज में पण्डित का स्थान ग्रहण करता है अविद्वान् होता हुआ वह समाज में महान् वक्ता समझा जाता है। धन की महिमा जितनी भी गायी जाय थोड़ी है किसी कवि ने ठीक कहा है—

यस्यास्ति वित्त स नर कुलीन
स पण्डित स श्रुतवान् गुणज्ञ
स एव वक्ता स च दर्शनीय
सर्वेगुणा काचन माश्रयन्त।

महा कवि बाणभट्ट ने अपनी कमनीय कादम्बरी में ठीक कहा है कि लक्ष्मी न तो रुप न परिचय का ख्याल करती है, न सदाचारी दुराचारी की ही पहचान रखती है, इसी प्रकार वह पात्र, अपात्र योग्य अयोग्य, किसी की भी पर्वाह नहीं करती। सचमुच में प्राचीन साहित्यिकों ने लक्ष्मी की सवारी उल्लूक बतलाया है, उल्लू सूर्य के शुभ्र प्रकाश का अवलोकन नहीं करता, वह रजनी के गहनन्तम में प्रकाश का अनुभव कर विचरण करता है। धनवान् व्यक्ति को भी शुभ कार्यो के करने में रुचि नहीं होती लेकिन वह कुत्सित कार्य करने में प्रवृत होता है। दरिद्र मनुष्य तो असमर्थता स पापों म प्रवृत होता है, वह अपनी दरिद्रता के कारण अपनी नैतिकता को तिलाञ्जलि दे कुत्सित कार्य करता है। महाभारत क शान्तिपर्व मे ठी० ही कहा है —

दरिद्र पातक लोके न तच्छंसितुमर्हति।
अर्थात् इस लोक के बीच दरिद्रता अत्यन्त ही पाप जनक है। आगे महा भारतकार ने कहा है कि दरिद्र पुरुष को निर्बल जानकर लोग मिथ्यापवादों से दूषित करते रहते हैं। इस पृथ्वी पर पतित और निर्धन दोनों को ही शोक करना पड़ता है, इससे नीच और निर्धन पुरुषों में कुछ विशेषता नहीं है। आगे महाभारत मे ही आता है—

अर्थेभ्योहि विवृद्धेभ्य सम्भृतेभ्यस्ततस्तत
क्रिया सर्वा प्रवर्तन्ते पर्वतेभ्य इवापगा।
अर्थादधर्मश्च कामश्च स्वर्गश्चैवनराधिप।
प्राणयात्रापि लोकस्य विना ह्यर्थ नसिध्यति
अर्थेनतु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधस
विच्छिद्यन्ते क्रिया सर्वा ग्रीष्मे कुसरितो यथा।"

महाभारत शा प. अ ८ श्लोक १६ १८

अर्थात् जैसे सम्पूर्ण नदियाँ पहाड़ों से निकलकर धीरे धीरे फैलती है, वैसे ही बहुत से धन से सब कर्म क्रम स सिद्ध होते हैं। महाराज! धन के बिना इस पृथ्वी के बीच मनुष्यों को धर्म अर्थ काम वा स्वर्गगमन और प्राणयात्रा भी नहीं हो सकती। जैस ग्रीष्म काल म छोटी छोटी नदियाँ सूख जाती हैं वैस ही इस लोक म धन से हीन अल्प बुद्धि वाले मनुष्यों के सम्पूर्ण कार्य नष्ट हो जाते हैं। किसी कवि ने धनहीन जीवन का बड़ा ही दु खमय वर्णन किया है—

वरवन व्याघ्रगजेन्द्र सेवितम्
द्रुमालय पक्वफलाम्बु भोजनम्।
तृणानि शैय्या परिधान वल्कल
नबन्धुमध्ये धनहीन जीवनम्।

अर्थात् व्याघ्र और हाथियों वाले जङ्गल में निवास करना अच्छा है, वृक्षों की आड़ म रह जाना अच्छा है घासों पर सोना और वल्कल पहनकर रहना अच्छा है, लेकिन भाइयों के बीच में धन रहित होकर जीवन यापन करना समुचित नहीं। इस जगत् म जिनके पास धन है, वही सर्वगुण सपन्न है, वही स्व र्गाधिकारी हैं। निर्धन पुरुष को यह लोक और परलोक कोई भी सुखदायक नहीं। महाभारत में कहा गया है—

धनात्कुल प्रभवति धनाद्धर्म प्रवर्धते
नाधनस्यास्त्ययं लोको न पर पुरुषोत्तम।
नाधनो धर्मकृत्यानि यथावदनुतिष्ठति।
धनाद्धि धर्म स्रवति शैलादभिनदी यथा
शा प अ ८ श्लोक २२ २३,

अर्थात् धन से ही लोगों के कुल गौरव और धर्म की वृद्धि होती है, निर्धन पुरुष को यह लोक और परलोक कोई भी सुखदायक नहीं होता जैसे पहाड़ से नदी प्रकट होती हैं, वैसे ही धन से धर्म उत्पन्न होता है।

अर्थशास्त्र के महामानव मंत्री चाणक्य ने धर्म का आधार अर्थ को ही बतलाया है। 'धर्मस्य मूलमर्थं' पञ्चतन्त्र नामक ग्रन्थ में भी इसी बात की परिपुष्टि की गई है। धनाद्धर्मस्तत सुखम्" अर्थात् धन से ही धर्म किया जाता है धर्म से सुख मिलता है। इन सब प्रमाणों एवं साक्षियों से सिद्ध है कि मानव जीवन के विकास एव उन्नति में धन का बहुत बड़ा स्थान है। निर्धनता के लिए ईश्वर एव धर्म को दोषी ठहराना उसी प्रकार है जैसे तलवार को गालियां देना। ईश्वर ने मनुष्य में स्वकर्तृत्व एव बुद्धि दी है मनुष्य उद्योग एव पुरुषार्थ के द्वारा धनोपार्जन करके समाज में परमोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। हमारे शास्त्रकारों ने बड़े अभिमान स कहा है—

उद्योगिन पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी,
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैव निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

अर्थात् उद्योगी मनुष्य को लक्ष्मी आलिंगन करती हो, भाग्य देगा यह तो कायर पुरुष बोला करते हैं। भाग्य को छोड़कर पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ करने पर भी यदि सफलता न मिलो तो पुन पुरुषार्थ करना चाहिए, एक न एक दिन अवश्य सफलता मिलेगी क्योंकि यह पृथ्वी वीरभोग्या वसुन्धरा है जो वीरता धीरता, गम्भीरता एव पौरुष दिखलाते हैं वही इस पृथ्वी के सच्चे अधिपति एव भोक्ता हैं। यही हमारे शास्त्रों एव ऋषिमुनियों का मन्तव्य है।

★ ★

अपनायेंगे। मुख्यतया इनका त्याग तथा अपने मिशन की धुन। सहस्रों मील दूर देशों से आते हैं, श्रद्धाभक्ति से पढ़ते हैं और लाखों रुपया व्यय करते हैं और बस एक ही धुन। क्या आर्य जगत् में ऐसी वैदिक मिशनरी बनाने वाली तथा ठोस कार्य करने वाली एक भी संस्था है? कहाँ संसार का उपकार जैसा विशाल उद्देश्य और कहाँ साधनों का त्याग का, धुन का, धन का इतना अभाव!!!

[श्री नरदेव शास्त्री जी इस मिशनरी कॉलेज को देखने के लिए पधारे थे तब मुझे उन्होंने प्रेरणा की थी कि इस कॉलेज के विषय में मैं संक्षिप्त रूप में परिचयात्मक लेख लिखूं। उन्हीं की आज्ञा का पालन मैंने किया है]

★ ★

वेद वीथी

मित्रता

[श्यामबिहारीलाल वानप्रस्थी]

दृते दृंहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

पदच्छेद—दृते। दृंह। मा। चक्षुषा। सर्वाणि। भूतानि। सम्। ईक्षन्ताम्। मित्रस्य। अहम्। चक्षुषा। सर्वाणि। भूतानि। सम्। ईक्षे। मित्रस्य। चक्षुषा। सम्। ईक्षामहे।

अन्वय:—हे दृते! येन सर्वाणि भूतानि मित्रस्य चक्षुषा मा समीक्षन्तामहं मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे एवं वयं सर्वे परस्परान् मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे तथास्मान् दृंह।

पदार्थ—हे (दृते) अविद्या रूपी अन्धकार के निवारक जगदीश्वर वा विद्वन्! जिससे (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (मा) मुझको (सम्, ईक्षन्ताम) सम्यक् देखें (अहम्) मैं (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणियों को (समीक्षे) सम्यक् देखूं। इस प्रकार सब हम लोग परस्पर (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (समीक्षामहे) देखें इस विषय में हमको (दृंह) दृढ़ कीजिये।

मन्त्र पर भावनायें

साधारण मनुष्य जो दुनियां दारी व्यवहार में रत हैं वह प्रभु अथवा विद्वान को संबोधित करते हैं कि हे दयानिधे! संसार के सब प्राणी हम को मित्र की दृष्टि से देखें और हम सब प्राणियों को उसी प्रकार की भावना से देखें। इस प्रकार हम सब आपस में एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। इस व्यवहार में प्रभु हमें दृढ़ करें। आपस में व्यवहारार्थ प्रभु का आदेश इस मन्त्र में कितना सुन्दर स्पष्ट शब्दों में है। हमारा अपना मनुष्यों का वर्ताव आपस में प्रीति का होना चाहिये। मनुष्यों में ही नहीं अपितु प्राणी मात्र जीवधारी मात्र के साथ सहृदयता का आचरण हम करें। किसी का अहित न चाहें।

यदि कोई व्यक्ति बुरा, दुष्ट भी है तो भी उसकी दुष्टता, बुराई दूर करने की भावना रक्खे। मनुष्य मनुष्य का वध वा पशु हिंसा का तो वैदिक आदर्श में प्रश्न ही नहीं उठता। वैदिक अनिवार्य हिंसा दूसरी चीज़ है। उस का इस मंत्र के निहित अभिप्राय से कोई सम्बन्ध नहीं। आज तो संसार में मनुष्य मनुष्य का शत्रु बना हुआ है। प्रायः एक व्यक्ति दूसरे की घात में रहता है। एक सम्प्रदाय विपक्षी को नष्ट ही करना चाहता है। विचारों का भेद मात्र कलह ईर्ष्या द्वेष हिंसा का कारण बना हुआ है। फलतः घातक से घातक साधनों के अविष्कार में राष्ट्र लगे हुये हैं। पुष्कल मात्रा में धन का अपव्यय हो रहा है। वैज्ञानिक अनुसन्धान प्रेम और प्रभु की ओर न लग कर अणु शक्ति की खोज में प्रवृत्त है। प्रभो! न जाने वह दिन कब आवेंगे जब दुनिया शान्ति, समृद्धि, स्वस्थता, प्रेम और अन्ततः प्रभु की गोद में आल्हाद लेगी। प्रभु करें कि ऐसा शीघ्र अतिशीघ्र युग आजाय और शान्ति का साम्राज्य और शान्ति का साम्राज्य छा जाय।

ओ३म् शम्

★ ★ ★ ★ ★ ★

परिवर्तनशील केसीन

दूध के सफेद नाम पोषक तत्व का सीन कहते हैं। यह वह पदार्थ है जिससे पनीर बनाई जाती है। यह कागज बनाने में, कागज और धागा रंगने में और ठंडे पानी के पेंट और गोंद बनाने में इस्तेमाल की जाती है। हाल ही में औद्योगिक और सरकारी अनुसन्धान-कर्त्ताओं ने केसीन के धागा कातने की प्रक्रिया मे उन्नति की है। इससे नये प्रकार का तन्तु तैयार हुआ है जो 'बटा हुआ केसीन तन्तु' नाम से पुकारा जाता है।

★ ★ ★ ★ ★

वंजर भूमि से खाद्य

अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में प्रेसिडेन्ट ट्रूमैन ने जिस समय एक तार के बटन को दबाया उसी समय पश्चिम की ओर २५०० मील पर स्थित एक विशाल जल विद्युत उत्पादन यन्त्र चालू हो गया। मिस्टर ट्रूमैन ने जिस जैनेरेटर को चालू किया है वह ग्रैन्ड कूली बांध पर १० वां जल विद्युत निर्माण सयन्त्र है। इस बाँध का निर्माण अमेरिका की सब से बड़ी नदी कोलम्बिया पर हुआ है। आगामी दो वर्षों में और भी जल विद्युत निर्माण सयन्त्र जैनेरेटर्स स्थापित किये जाएंगे।

१९५२ में जब १८ वां अन्तिम जैनेरेटर चालू हो जायेगा उस समय विस्तृत सिंचाई करने वाले पम्पों को बाध पर लगाया जाएगा। इस पानी से १० लाख एकड़ ऊसर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकेगा।

इस के उपरान्त शीघ्र ही भूतपूर्व निर्जन भूमि में नये लोग बसने शुरू हो जायगे और वहाँ वे खेती से फसलें पैदा करेंगे और इस विशाल क्षेत्र में नवीन उद्योगों तथा नगरों के कर्मचारियों को खाद्य प्रदान करेंगे।

१९४१ में जब इस बाध का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ था उसी समय से नवीन उद्योगों को इस बाध पर स्थापित जेनरेटरों द्वारा विद्युत शक्ति दी गई थी परन्तु इस निर्जन भूमि में उद्योग का विकास इस तीव्रता से हुआ है कि कुछ वर्षों के भीतर ही ग्रैंड कूली बाध इन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सिद्ध होगा।

अनुमान है कि १९५२ तक ग्रांड कूली में ११,९४००० किलोवाट बिजली उत्पादन होने लगेगी। विश्व में किसी भी एक स्थान पर इतना उत्पादन नहीं हो रहा है। इन्जिनियरों का कहना है कि रासायनिक, धात्विक तथा आणविक सयन्त्रों के लिए, जो हाल ही में बने हैं इस से भी अधिक विद्युत शक्ति की आवश्यकता होगी।

अमेरिका में १९४० से जन संख्या में १७ प्रतिशत वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादन में जिस में पशुधन तथा पशुधन उत्पादित पदार्थ शामिल नहीं हैं, केवल २५ प्रतिशत ही वृद्धि हुई है। अमेरिका में प्रति व्यक्ति आय सर्वोच्च है।

ग्रान्ड कूली तथा अन्य कोलम्बिया नदी योजनाओं द्वारा एक बार जब बिजली तथा पानी की व्यवस्था हो गई तो उस क्षेत्र में विकास इतनी तीव्रता से हुआ जिसकी कि स्वर्गीय प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट को स्वप्न में भी आशा नहीं थी।

प्रेसिडेन्ट ट्रूमैन ने अमेरिकी कांग्रेस से अनुरोध किया है कि टैनेसी घाटी योजना के समान वह कोलम्बिया घाटी योजना को स्थापित करने की अनुमति प्रदान करे।

अमेरिका के गृह विभाग के उप मन्त्री श्री गिरड डेविडसन ने कोलम्बिया नदी योजनाओं के सम्बन्ध में कहा था कि हम सभी नदी घाटियों की प्रादेशिक आत्म निर्भरता के लिए प्रयत्नशील नहीं हैं और न ही हम एक पर दूसरे का प्रभुत्व चाहते हैं। हमारा यही सिद्धान्त सम्पूर्ण विश्व के लिए भी है। हम पूर्ण विकसित राष्ट्रों की सन्तुलित एकता के अभिलाषी हैं।

आप ने कहा कि ग्रान्ड कूली के विषय में प्रैसिडेन्ट ट्रूमैन ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा था कि अमेरिका समेत संसार के सब देश विश्व के मानवी और प्राकृतिक साधनों के सुचारू रूप से उपयोग करने के रचनात्मक कार्यक्रम से अधिक लाभ उठा सकेंगे।

साम्यवाद से लड़ने के लिए स्वतन्त्रताएं आवश्यक

[डा० एलबर्ट]

न्यूयार्क, २ जुलाई फ्रान्स अधिकृत उत्तरी अफ्रीका लैम्बरीन अस्पताल के ७४ वर्षीय मिशनरी डाक्टर एल्बर्ट श्वाइत्जर ने विश्वास प्रकट किया कि साम्यवाद से लड़ने का सर्वोत्तम उपाय है लोगों को अधिक से अधिक भौतिक और आध्यात्मिक स्वतन्त्रताएं प्रदान करना।

डा० श्वाइत्सर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उत्कृष्ट डाक्टर, दार्शनिक और संगीतज्ञ हैं। आप एस्पेन, कोलराडो में गोइथ द्विशताब्दी के अधिवेशन में जा रहे हैं। आपने कहा कि युद्धकाल में जो अमेरिकी लोगों ने मेरे अस्पताल के कार्यों में सहायता दी है उसके लिए मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ। मुझे अमेरिका को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई है।

डाक्टर श्वाइत्जर अमेरिका से लौटने के बाद अपने अस्पताल में श्वेत कुष्ठ की चिकित्सा पर अमेरिका में हुए नवीनतम अनुसन्धानों का प्रयोग कुष्ठरोगियों पर करेंगे। आपके अस्पताल में लगभग १५० कुष्ट रोगी इस समय हैं।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ

लेखक—श्री राधा कृष्ण तिवारी एम० ए०

राष्ट्र भाषा हिंदी की मान्यता के लिए देश में जो आंदोलन चल रहा है उसके विपरीत प्रस्तुत होने वाले तर्कों और मतों में भाषा विषयक तथ्यों तथा भाषा की प्राकृत प्रवृत्तियों का किंचित दुर्लक्ष्य किया जाता रहा है। भाषा के विषय में यह मूल सिद्धात सर्व सम्मत है कि वह जन-जन को कृत्रिम निमित नहीं है प्रत्युत अपनी समूची समर्थताओं के साथ वह अपना व्याप स्वय विस्तारित करती है। क्या हिंदी अपने विकास और व्यापकता की दृष्टि से देश की अन्तर प्रांतीय भाषा मानी जा सकती है? इसका उत्तर क्या के अतिरिक्त क्यों? और किस प्रकार? के प्रश्नों को उलट पलट कर देखने से मिलेगा। अन्त में वे उत्तर स्वयं यह सिद्ध करने के प्रतीक और प्रमाण होंगे कि इस अधिकार से वंचित रखने वाले तर्क और मत अपने में कितना तथ्याथ्य रखते हैं।

हिंदी के जन्म और विकास पर दृष्टिपात करने से विदित होगा कि एशिया खड की आर्य-भाषाओं के अन्तर्गत एक कालक्रम विशेष में प्रचलित भारतीय भाषायें ही हिदी के मातृवंश की भाषाए थी। 'सुधरी हुई' संस्कृत भाषा के पूर्व व्यवहृत भाषा प्राकृत नाम स जानी जाती थी जिसका प्रभाव वैदिक सस्कृत तथा वद मन्त्रों तक म पाया गया है पीछे जाकर पाणिनि प्रभृति भाषा शास्त्रियों ने व्याकरण के नियमो द्वारा उसे परिमार्जित और अविकारी रूप मे ला दिया।

आज से ढाई हजार वर्ष पहले सस्कृत का प्रचलन विद्यमान था जिसमे अशुद्ध शब्दा के प्रयोग ने कालांतर में पाली नामक भाषा को जन्म दिया। पाली बौद्ध काल की पवित्र और साहित्यिक भाषा बनकर रही। भारत वर्ष के बाहर लंका ब्रह्मदेश, श्याम आदि देशों तक पाली का विस्तार हो गया था। पाली में २।५ संस्कृत और शेष संस्कृत के विकृत रूपों का समावेश था। पाली का नाम आगे चल कर प्राकृत ने लिया जिसमें संस्कृत शब्दों के अधिकाश विकृत रूप व्यवहृत हुए। कालिदास के साहित्य में इसी भाषा के शब्दों के उपयोग मिलते हैं।

विक्रम संवत के ८ सौ ६ सौ वर्ष पहले तक प्राकृत भाषा का प्रचार रहा। प्राकृत के विकास काल में उसकी तीन शाखायें फूट निकली जो क्रमश मागधी, शौरसेनी, और महाराष्ट्री नाम से प्रसिद्ध हुई। मागधी मगध को, शौरसेनी मथुरा के आस पास की तथा महाराष्ट्री महाराष्ट्र प्रदेश को भाषाएं बनीं। इन सब शाखा-प्रशाखाओं के प्रचलन से प्राकृत का स्वरूप बदला जिसके फल स्वरूप अपभ्रंश "बिगड़ी हुई भाषा" ने उसका स्थान लिया। अपभ्रंश भाषा ११वीं शताब्दि तक प्रचलित थी। यही काल था जब उसकी "नागर" और "अध मागधी" नामक शाखाओं ने हिंदी का स्वरूप खड़ा किया। संस्कृत से हिंदी के बीच की भाषाओं के क्रमिक परिवर्तनों का उल्लेख यहां किया जाता है जिनके द्वारा हिंदी शब्दों का स्वरूप खड़ा हुआ —

सस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश	हिंदी
भगिनी	बहिनी	बहिनी	बहन
यज्ञोपवीत	जण्णोवइअ	उपवीत	जनेऊ

उत्तर भारत के पूर्व और पश्चिम में हिंदी को अवधी बुन्देली ब्रज भाषा कन्नौजी, हिंन्दुतानी बोलियां सस्कार में आयीं। इसी पश्चिमी हिंदी के रूप मे राजस्थानी और गुजराती की उत्पत्ति हुई। पन्द्रहवीं शताब्दि के आसपास राजपूताना और गुजरात मे एक ही प्रकार की हिंदो की बोली व्यवहृत थी जिसे डा० टोसीटोरी के मत से प्राचीन राजस्थानी भाषा कहा जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत के बाद प्राकृत और प्राकृत के बाद अपभ्रंश की सीधी पंक्ति खड़ी होती है और अपभ्रंश के स्रोता से भारत को प्रांतीय भाषाओं और बोलियों का प्रादुर्भाव होता है जो आगे जाकर अपने अपने वायुमंडलों में फूलती फलती रही। भाषाओं के व्यवहार में यह मानी हुई बात है कि अन्य भाषाओं के सयोग से उनमें परिवर्तन हो जाता है। उदाहरणार्थ पंजाबी, सिंधी गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला आदि भाषाए यद्यपि संस्कृत के वंश की ही भाषाएं हैं तथापि सभी भाषाओं में सस्कृत के उतने तत्सम शब्द नहीं देखे जाते जितने पश्चिमी भाषाओं की अपेक्षा दक्षिणी और पश्चिमी भाषा में प्रचलित हैं। विदेशियों के आक्रमण और उनको रेलपेल के कारण हमारी पश्चिमी भाषाओं में जहां हम अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेश देखते हैं वहा बंगला, उड़िया, मराठी, तामिल, मलयालम आदि में संस्कृत के ही तत्सम रूप हमे मिलते हैं।

अपने प्रारम्भिक काल में बोली और लेखन के रूप में हिंदी के प्रसार के कारण उसमें भी उपयुक्त बात लागू होती है। साथ ही साथ उसके बोलने वालों द्वारा एक क्रमिकता के साथ हिंदी के शब्दों में परिवर्तन आया।

तत्सम् तथा तद्भव शब्दों का प्रश्न

इसलिये हम देखते हैं कि उनका भावी स्वरूप "तत्सम और तद्भव" और "देशज" शब्दों में प्राप्त होता है। संस्कृत के तत्सम शब्द जैसे समुद्र, बसन्त, सन्त, दर्शन, कवि आदि ज्यों के त्यों हिंदी में व्यवहृत है किंतु वत्स का बच्चा, कर्ण का कान, नकुल का नेवला, भक्त का भात आदि संस्कृत के तद्भव शब्द भी उतनी ही व्यापकता के साथ उपयोग में आते हैं। भारत के आदिम वासियों के व्यवहार में आने वाले अनेक शब्द जैसे ऊटपटाँग, चौ चपाट, झाड़झंखाड़, घबड़ाहट, चट आदि शब्दों का "देशज" नाम के अन्तर्गत समावेश हिंदी में हुआ

इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि संस्कृत के हिंदी में व्यवहृत "तत्सम शब्द कर्ण, वत्स, बसत, दर्शन, कवि आदि को लेकर हम भारत की अन्य सभी प्रांतीय भाषाओं के जितने समीप बैठ सकते हैं उतने समीप चौं-चपाड़ उबड़ खाबड़ झाड़झंखाड़, चटपट, झुट-मुट जैसे शब्दों को लेकर नहीं। हिंदी की व्यापकता में एक और विशेषता जोड़ने वाली बात हम इसे कह सकते हैं कि अपने "तत्सम" शब्दों के साथ जहाँ वह मराठी, गुजराती, बगला, तामिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि का प्रतिनिधित्व करती है वहा "तद्भव" शब्दों की सम्पत्ति हिंदी की अनेक बोली जाने वाली बोलियों की सम्पत्ति है तथा उसके देशज शब्दों का भडार भारत के आदिम निवासियों के साथ साम्य स्थापित करता है।

आचार्य रघुवीर का मत

इस विषय में प्रसिद्ध भाषा शास्त्री आचार्य रघुवीर का मत मान्य है कि हिंदी में ऐसे शब्द इने गिने ही नहीं है जो उत्तर भारत और दक्षिण भारतीय भाषाओ में साम्य रखते हैं प्रत्युत संस्कृत के प्राय सभी शब्द किसी भी सीमा तक सभी भारतीय भाषाओं में स्वच्छन्दता के साथ उपयोग में आते हैं। ये शब्द हिन्दी में बड़ी प्रचुरता के साथ बोलने और लिखने की भाषा में आते है। भारत की संस्कृति का देश के सभी प्रांतों में एकसा प्रभाव होने के कारण धार्मिक तथा पौराणिक, व्यवहारों, नामों और पारिभाषिक शब्दों में भी हम एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं।

रात दिन के व्यवहार में आने वाले गणित भूगोल, विज्ञान, सगीत कला तथा शास्त्रीय विषयों के नाम और पारिभाषिक शब्दावली हिंदी और अन्य सभी भाषाओं में अपना एकात्म रखती है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों के समावेश से भारत का किसी भी प्रांतीय भाषा में लिखा जाने वाला साहित्य अन्तरप्रांतीय भाषाओं के योग्य बन सकता है।

भारतीय लिपियां ब्राह्मी से उद्भूत

हिंदी के इस अखिल भारतीय भाषायी संपर्क की स्थिरता को स्वीकार करने के बाद लिपि का विचार करने पर ज्ञात होगा कि उसमें भी एक निकट सम्बन्ध है। आज की देव नागरी लिपि से अत्यन्त किंचित मराठी में और गुजराती में तथा बंगला में थोड़े से अधिक अन्तर के सिवाय तामिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम की लिपियों में जो भेद है वह कालांतर मे प्रयुक्त हुआ है। वस्तुतः समूची भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी से उद्भूत हैं। एक समय में भारत के उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम मे एक ही वर्णमाला प्रचलित थी। आगे चलकर यद्यपि यह भिन्नता प्रातीय भाषाओं की लिपियों म आ गयी परन्तु वर्णों की आकृतियों के परिवर्तन के बाद भी ध्वनि प्रणाली वही बनी आती रही। अतएव यह विना विवाद स्वीकार किया जाता है कि दक्षिण भारतीय भाषी भाषी देव नागरी लिपि सुगमता के साथ सीख सकते हैं।

हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं की यह निकटता एक काल में स्थापित कृत्रिम या आधुनिक नहीं है। इसके पीछे अढ़ाई सौ वर्षों का इतिहास है जिसकी क्रमिकता म बाधना एक अप्राकृत चेष्टा कही जायगी। इस विषय में किये जाने वाले तर्क और मत, भाषा के वैज्ञानिकों के न होकर राजनीतिज्ञों के कहे जा सकते हैं। राष्ट्र की एकता और तादात्म्य की स्थापना के लिये भाषा लेखनी और वाणी को जो महत्व दिया जाता है उसका निर्वाह हिंदी के उसी भावी स्वरूप में किया जा सकता है जिसमे सस्कृत माध्यम द्वारा अन्यान्य सभी प्रातीय भाषाओं का समन्वय स्थापित किया जा सकता हो। इसके विपरीत साधनों अथवा राष्ट्र भाषा के कृत्रिम स्वरूप स्थिर करने का प्रयास भाषा और उसके व्यवहार में सदैव का संघर्ष तथा राष्ट्र की प्रगति में निरन्तर का अवरोध खड़ा करना जैसे होगा। ★★

भूल सुधार

सभा की पत्रिका स० ४ ता० ६।७।४६ में नीचे दिये हुए पतों में न० ४ मे "जयपुर" के स्थान में जबपुर छप गया है। वास्तव में जयपुर के पते पर प्रस्ताव भेजने चाहिये।

सभा मन्त्री

[पृष्ठ ४ का शेष]

अपने धन का सोने चांदी के आभूषणों में विवाहादि तथा मुकद्दमों आदि में अपव्यय करता हुआ देखा जाता है। जब कभी ग्राम वासियों को इन विषयों में धन को कम व्यय करने के लिये तथा अधिक श्रम के लिये कहा जाता है तो वह समझता है कि उसको, शिक्षा देने के स्थान में, मजाक उड़ाया जाता है और उसे हीन समझा जाता है। इस मनोवृत्ति के प्रतिक्रिया रूप में सभी प्रयत्न व्यर्थ होते हैं।

यह उद्देश्य केवल आर्थिक दशा को उन्नत करने मात्र से नहीं होगा। यह ठीक है कि 'धन' उन्नति में एक आवश्यक सहायक उपकरण है परन्तु जीवन के पूर्ण उन्नत विकास के लिये उनके सम्मुख भारतीयों के श्रेष्ठ प्राचीन आदर्शों को रखा जाना आवश्यक है। खेद है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने देश में अपना राज्य होने पर भी अभी तक इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

देश का भविष्य उत्तम गृह तथा उसके आधार गृह देवियों की उत्तमता पर अवलम्बित है। नगरों में कन्याओं और देवियों के सम्मुख जो आदर्श रखा जा रहा है उससे 'स्वदेश' के 'विदेश' बन जाने की आशंका उत्पन्न हो गई है। इस घातक प्रवृत्ति को दूर कर देवियों में सादगी, स्वास्थ्य शिक्षा, शुद्ध सस्ते स्वदेशी वस्त्र परिधान और अन्ध विश्वास से पृथक होकर उनमें धन के अपव्यय को रोकना और शिक्षा स्वास्थ्य आदि में अपने धन को व्यय किये जाने की शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है। ग्रामों में अधिकतर इस बात का परिज्ञान नहीं है कि वे अपने धन का अधिक से अधिक सदुपयोग किस प्रकार करें, अत: देश की अधिक जनसंख्या, कृषकों की उन्नति की ओर प्रगति अत्यन्त शिथिल है। 'रामराज्य' स्थापित करने की बात कही बहुत है परन्तु वह तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि सम्पूर्ण राष्ट्रीय योजनाओं का केन्द्र बिन्दु, राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लक्ष्य को छोड़कर, पिछड़ी हुई ग्राम्य जनता को ठीक आधार पर शक्षित करने की भावना से न बनाया जायगा और उन्हें अपने लाभ जनक कार्यों में धन व्यय करने की शिक्षा न दी जायगी। ★★

वेद-प्रचार-सप्ताह

श्रावण शु० १५, २००६ वि० से भाद्रपद कृ० ७, २००६ वि०
तदनुसार ८ अगस्त १९४९ से १६ अगस्त १९४९ तक

श्रीमान् मान्यवर मन्त्री जी और प्रतिनिधि महोदय !

निवेदन है कि इस वर्ष "वेद-प्रचार-सप्ताह" मिती श्रावण शुक्ला १५ से भाद्रपद कृष्णा सप्तमी सम्वत् २००६ तदनुसार ता० ८ अगस्त से १६ अगस्त १९४९ तक मनाया जाना है। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार दिया जाता है। पूर्ण विश्वास है कि आपका आर्य समाज अभी से सप्ताह को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न करेगा।

वेद-प्रचार-सप्ताह का उद्देश्य आर्यों की मुख्य धर्म-पुस्तक वेद का सन्देश जनता तक पहुँचाना है, जिससे जनता में वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति तथा वैदिक सभ्यता के लिये प्रेम जाग्रत हो और उन पर चलने का प्रयत्न करे।

कार्यक्रम

श्रावणी पर्व—सप्ताह का आरम्भ श्रावणी पर्व से होता है। वेद-विश्वासी संसार की दृष्टि में श्रावणी का महत्त्व अन्य सर्व पर्वों की अपेक्षा महान् है। इस पर्व का लक्ष्य विश्व में वैदिक स्वाध्याय का विस्तार करना' वैदिक जीवन का सञ्चार तथा पवित्र वैदिक वातावरण निर्माण करना है।

(१) **श्रावणी पर्व**—मिती श्रावण शुक्ला १५ ता० ८ अगस्त १९४९ दिन सोमवार को मनाया जाना है। प्रत्येक आर्य परिवार में सूर्योदय से पारिवारिक यज्ञ की योजना की जाय।

(२) **पुनः** पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त हो ७॥ बजे तक समस्त आर्य सज्जनों को आर्य मन्दिर मे उपस्थित हो जाना चाहिये। नियत समय पर वेद पाठ आरम्भ हो जाय, तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निश्चित "पर्व पद्धति" के पृष्ठ संख्या १०६ से १०९ तक का सम्पूर्ण विधान किया जाय। पूर्णाहुति के पूर्व प्रत्येक वेद विश्वासी को गम्भीरता पूर्वक वेद तथा वेदानुकूल शास्त्रों के स्वाध्याय का पावन व्रत धारण करना चाहिये। इस अधिवेशन मे वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान् का भाषण होना चाहिये।

श्रावणी का दिन विशेष प्रकार से वेद के पारायण मे व्यतीत करना चाहिये। रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद-कथा की जाय।

इसी दिन—

सत्याग्रह स्मारक बलिदान दिवस

भी मनाया जावेगा। इसके लिये प्रात श्रावणी की उपाकर्म पद्धति के अन्त मे सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित उन दो कविताओं का पाठ होना चाहिये, जिसमें से एक में परमात्मा से बल और संगठन की प्रार्थना तथा कर्त्तव्य पूरा करने की भावना है, तथा दूसरी में उन अमर हुतात्माओं का शुभ नाम हैं, जो गत हैदराबाद सत्याग्रह मे अमर पद को प्राप्त हुई हैं।

सायं या रात्रि को नगर में सार्वजनिक सभा की जानी चाहिये, जिसमें गत हैदराबाद सत्याग्रह की बातें सुनायी जावें और वीर हुतात्माओं के प्रति श्रद्धाजलियां अर्पित की जावें।

कृष्ण-जन्मोत्सव—पर्व-समाप्ति मिति भाद्रपद कृष्ण सप्तमी दिन मंगलवार ता० १६ अगस्त १९४९ को आर्य जाति के महान् नेता श्रीकृष्णचन्द्र के पावन जन्मोत्सव पर होनी है।

जन्मोत्सव के उपलक्ष में आर्य मन्दिरों में प्रातःकाल विशेष यज्ञ किया जाय।

रात्रि को समाज मन्दिरों में अथवा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर कृष्ण के सन्देश में भावपूर्ण गम्भीर भाषणों की योजना की जानी चाहिये।

इस दिन अथवा सप्ताह में किसी एक दिन आर्य वीरदल का विशेष रूप से प्रदर्शन किया जावे और पारितोषिक वितीर्ण किये जावें।

सप्ताह के शेष दिनों में प्रति दिन—

प्रात—समाज मन्दिरों में विशेष यज्ञ की योजना की जाय।

मध्याह्न में—वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक ग्रन्थ विक्रय किये जावें और ट्रैक्ट वितीर्ण किये जावें। साथ ही आर्य समाज के नवीन सदस्य बनाये जावें, और दलितोद्धार, शुद्धि, हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया जाय-हिन्दुस्तानी के विरोध में सभायें की जावें और प्रचार किया जाय।

रात्रि को—मन्दिरों में वेद कथा की योजना की जाय जिसमें वेदों की अपौरुषेयता, वैदिक सिद्धांतों का मन्त्रों द्वारा प्रतिपादन, वेद भाष्य की वैदिक शैली दयानन्द भाष्य का महत्व, मन्त्रों का अर्थ संगति आदि विषयों पर प्रकाश डाला जावे। अभी से आर्य सभासदों को प्रेरित किया जाय कि वे उपर्युक्त विषयों में से किसी विषय पर विशेष स्वाध्याय तथा मनन कर सप्ताह के लिये विशेष निबन्ध अथवा व्याख्यान तैयार करें।

संक्षेप में वेद प्रचार सप्ताह—प्रत्येक आर्यसमाज के आन्तरिक निरीक्षण का सप्ताह है। आर्यसमाज को अपने परम धर्म पालन करने की कितनी लग्न है और आचार्य मे कितनी भक्ति है, इसका निरीक्षण इस सप्ताह की सफलता मे छिपा हुआ है।

एक रुपया निधि

प्रत्येक आर्यसमाज का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने सभासदों तथा अन्य वैदिक धर्म से प्रेम रखने वाले महानुभावों से वेद प्रचार के लिये कम से कम १) एक रुपया प्रति सज्जन इस वेद प्रचार सप्ताह मे संग्रह करके सभा के श्री कोषाध्यक्षजी के पास ५, हिवेट रोड लखनऊ के पते पर तुरन्त भेज देवें। और इस धन से ।) प्रति आर्यसभासद वेद-प्रचारार्थ शुल्क जो सभा ने दिसम्बर १९३६ ई० में समाजों पर अनिवार्य कर दिया है, चुका दें। यह धन सीधा सभा के कोष में भेजा जावे।

नारायणस्वामी-भवन,
लखनऊ
१२-७-१९४९

रामदत्त शुक्ल,
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त-प्रान्त

निरीक्षक सूचना

निम्न जिलास्थ समाजों को सूचित किया जाता है कि निम्न लिखित सज्जन आर्य समाजों के लिए निरीक्षक नियुक्त किये गये हैं। समाजों के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि उनके पहुँचने पर समाज, संस्था का निरीक्षण करावें और सभा का प्राप्तव्य धन भेजने की कृपा करें।

१—जिला बिजनौर—श्री ईश्वर दयालु जी आर्य।

२—बुलन्दशहर—श्री शिवलाल जी आर्य।

३—मुरादाबाद—श्री राममोहन जी आर्य।

४—बरेली—श्री आ० विश्वश्रवा जी।

सूचना सं० (२)

कानपुर व उन्नाव जिलास्थ आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा निरीक्षक श्री विश्वम्भर नाथ तिवारी जी कानपुर १ ली अगस्त ५९ से समाजों का निरीक्षण कार्य प्रारम्भ करेंगे। उनके पहुँचने पर समाज व संस्था का निरीक्षण करावें और सभा का प्राप्तव्य धन, दशांश, शुद कोटि, वेद प्रचारादि का देकर सभा को कृतार्थ करें।

रामदत्त शुक्ल सभामन्त्री

कन्या की आवश्यकता

मेरे एक प्रतिष्ठित धनी क्षत्रिय मित्र, जिनकी मासिक आय लगभग ५००) है, के सुन्दर, सुशील, स्वस्थ १८ वर्षीय पुत्र के लिए जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं एक सुन्दर, स्वस्थ, शिक्षित गृहकार्यों में चतुर १५ वर्षीया कन्या की आवश्यकता है।

आर्य विचार वालों को श्रेय दिया जायगा, दान दहेज का कोई बन्धन नहीं है।

पत्र व्यवहार कन्या के चित्र (फोटो) सहित निम्न पते पर करें— २७ १

रामलाल गु शी मेम्बर कैंटूमेंट बोर्ड सदर बाज़ार छावनी, लखनऊ।

'आर्य वर के लिये'

आवश्यकता है एक सुन्दर सुशील जो गृह कार्यों में प्रवीण हो १६ से १८ वर्ष कुमारी व बाल विधवा हिन्दी पढ़ी हुई आर्य कन्या की, वर की आयु २५ वर्ष की है। आप की दुकान में माहवारी आय ४००) से अधिक है।

पता—बद्री प्रसाद आर्य द्वारा, दौलतराम एण्ड सन्स नया बाजार मोती प्याउ के सामने अजमेर

आवश्यकता

२ अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। एक ट्रेंड दूसरी साधारण कक्षाओं के लिये। वैदिक धर्मावलम्बी को विशेषता दी जावेगी। शीघ्र पत्र व्यवहार कीजिये

मंत्री आर्य समाज

कश्मीर युद्ध बंदी-सीमा संधि की शर्तें प्रकाशित

तीस दिन के अन्दर फौज हट जांय

श्रीनगर, ३१ जुलाई। आज कश्मीर कमीशन ने करांची में भारतीय तथा पाकिस्तानी प्रतिनिधियों में कश्मीर की युद्ध बन्दी सीमा के बारे में होने वाले समझौते को प्रकाशित कर दिया है।

समझौते में कहा गया है कि निश्चित युद्धबन्दी सीमा के आगे पड़ी हुई अपनी अपनी फौजों को हटाने के लिये उभयपक्षों को समझौता स्वीकार करने के बाद तीस दिन का समय दिया जायगा

इस तीस दिन की अवधि के बीच किसी भी पक्ष को अपने लिये निश्चित क्षेत्रों पर उस समय तक कब्जा करने का अधिकार न होगा जब तक स्थानीय कमांडरों में इसके बारे में आपसी समझौता न हो जाय।

समझौते का मुख्य मुख्य बातें निम्नलिखित हैं —

(१) समझौते द्वारा निश्चित युद्ध बन्दी सीमा के उस क्षेत्र को छोड़कर जहाँ किशन गंगा नदी सीमा बनाती है, प्रत्येक स्थान पर उभय पक्षों की सेनाएँ सीमा के पाँच सौ गज पीछे रहेंगी।

(२) सीमा के अन्दर यदि किसी स्थान पर किसी पक्ष की सेनाओं द्वारा कब्जा तय हुआ है तो उस पर उनका कब्जा रहेगा। लेकिन दूसरे पक्ष की सेना को उससे पाँच सौ गज पीछे रहना होगा।

(३) युद्ध वन्दी सीमा के पीछे दोनों पक्षों को अपनी सेनाएँ सगठित करने का अधिकार होगा किन्तु नयी रक्षा चौकिया बनाते समय कटीले तार या बारूदी सुरगों का प्रयोग न होगा।

जिन जगहों मे युद्धबन्दी सीमा में कोई बड़ा हेर फेर नहीं हुआ है उनमें उभयपक्ष अपनी सेनाएँ न बढ़ाएँगे। साथ ही साथ जिन जगहों मे सीमा परिवर्तन होगा वहाँ भी कश्मीर राज्य की हद के अन्दर सेना में वृद्धि सीमा परिवर्तन के सिलसिले मे न होगा

टेहरी-गढ़वाल युक्त प्रांत का अग

लखनऊ, पहली अगस्त को टेहरी गढ़वाल रियासत युक्त प्रान्त का भाग बन गई और प्रान्त के कुल जिलों की संख्या ५० हो गई। इससे प्रान्त की आबादी मे ४ लाख क्षेत्र फल म ४५१५ वर्ग मील तथा आय म ४० लाख रुपये की वृद्धि होगी।

इतिहास मे प्रथमबार दो गढ़वाल प्रदेश, जिनकी एक ही संस्कृति और भाषा है, एक ही प्रान्त के भाग बन रहे हैं। आज से १३० वर्ष पहले नेपाल युद्ध तक दोनों गढ़वाल प्रदेश एक ही राजा के अधीन थे। तत्कालीन राजा ने गुरखों के विरुद्ध युद्ध में वीरगति पायी थी और उनके पुत्र को अँगरेजों ने वर्त्तमान टेहरी रियासत दी थी। वर्त्तमान महाराज मानवेन्द्र शाह प्रथम टेहरी नरेश की १६ वीं पीढी में हैं।

पूरी टेहरी रियासत हिमालय का अग है और तिब्बत से इसकी सीमा मिलती है। गगोत्री, यमुनोत्री के अतिरिक्त बद्रीनाथ का मन्दिर भी इसी रियासत मे है। प्रतिवर्ष हजारों यात्री तीर्थ करने आते है। महाराज ही बद्रीनाथ व केदारनाथ मन्दिरों के सरक्षक हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

हिंदीके तार भेजनेकी व्यवस्था में और प्रगति

नयी दिल्ली, २ अगस्त। सरकारी तौर से घोषित किया गया है कि आगरा, कानपुर, लखनऊ पटना गया, जबलपुर, नागपुर और इलाहाबाद के बीच हिन्दी में तार आ जा सकते हैं। इन जगहों के भीतरी स्थानीय डाकखानों मे इसकी व्यवस्था है।

नयी दिल्ली कांग्रेस १ सतम्बर से सत्याग्रह करेगी

नई दिल्ली, ३ अगस्त। गरमा गरम बहस के बाद नयी दिल्ली की कांग्रेस कमेटी ने आज यह निश्चय कर लिया कि सरकारी अधिकारियों द्वारा शराब के नये लाइसेन्स दिये जाने के विरुद्ध पहली सितम्बर से सत्याग्रह शुरु किया जाय।

पता लगा कर सूचित करें

१६ वर्ष प्रकाश नामका मेरा पौत्र कि जा नबो कक्षा तक पढ़ा है, एक हाथ टूटा, मफ़र कुष्ट का चन्ह पेर के टखन म है, रंग गेहुआ, चेहरा लम्बा है। एक मास पहले से गोला गोरकरण नाथ से कहीं चला गया है। पता लगाने वाले सज्जन का आवश्यक व्यय के अतिरिक्त २५) रु० पारितोषक दिया जायगा। चि. प्रकाश के वियोग से घर के सभी लोग अत्यन्त दुःखी है। निवेदक—पुरुषोत्तमदेव शुक्ल, वैद्य, पो० गोलागोकरणनाथ जिला खीरी।

कम्युनिज्म का प्रसार रोकने की अमरीकी योजना

अतलांतक — संधि के राष्ट्रों को ४५ करोड़ डालरके शस्त्र दिये जायँगे

वाशिंगटन, अमरीका की सरकार ने कांग्रेस से १ अरब ४५ करोड़ डालर की विदेशों को हथियारों की मदद देने की योजना स्वीकार करने की अपील की हैं। सरकार का कहना है कि रूस और अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिज्म के प्रसार के कारण यह व्यय जरूरी हो गया है। यह उत्तरी अतलांतक सधि के अन्तर्गत पहली कारवाई बनाई जाती है।

अमरीकी परराष्ट्र विभाग द्वारा प्रस्तुत बिल के मसविदे और साथ ही राष्ट्रपति ट्रूमन द्वारा भेजे गये एक विशेष संदेश के द्वारा दुनिया भर के राष्ट्रों को अणुबम के अलावा और सभी शस्त्रास्त्र भेजने का अधिकार दिया गया है।

इस कारवाई का कारण बताते हुए परराष्ट्र विभाग की ओर से कहा गया है कि रूस के राजनीतिक आक्रमण तथा अन्तराष्ट्रीय कम्युनिज्म के प्रसार से दुनिया में एक नया खतरा और असुरक्षा की भावना फैल गयी है। इस लिए हमने जो नेतृत्व ग्रहण किया है, उसके कारण अपने मित्रराष्ट्रों को अपनी रक्षा के लिए उचित साधन प्राप्त कराना हमारा कर्तव्य है।

पश्चिमी यूरोप अतलांतक समझौते वाले राष्ट्रों—ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम को सहायता देने में १ अरब डालर व्यय होंगे। परराष्ट्र विभाग के ४१ पन्ने के स्मृतिपत्र में कहा गया है कि उन राष्ट्रों की रक्षा हमारी रक्षा है और जब तक उनकी फौजी कमजोरी से हमले का खतरा बना रहता है, हमें चिन्ता रहेगी।

१५ अगस्तको प्रांतमें पंचायत राज का उद्घाटन होगा

लखनऊ, ३ अगस्त। सयुक्त प्रांत मे पंचायत राज का उद्घाटन १५ अगस्त १९४९ ई० को होगा जबकि गांव सभाओं की सामान्य बैठके होंगी जिनमे गाँव सभाओं के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष गाँव पंचायतों के सदस्य, पंचायती अदालतों के पंच तथा सरपंच और मंत्री शपथ लेंगे।

उद्घाटन कार्यक्रम मे फल वृक्षारोपण, प्रभातफेरिया, भजन, कीर्तन, झंडों फहराना, ईश्वर बन्दना, खेल कूद, बच्चों को मिठाइया बाँटना और रात्रि में निवास स्थान तथा सार्वजनिक इमारतों में रोशनी करना सम्मिलित हैं।

उद्घाटन के पश्चात् तत्काल ही गाव पंचायतो की प्रारम्भिक बैठकें होंगी जिनमे ३१ मार्च १९५० ई० तक के लिए अनुमानित बजट तैयार किया जायगा। तीन माह के लिए एक कार्यक्रम बनाया जायगा और निम्नलिखित समितियां बनाई जायगी।

१, शिक्षा समिति, २ स्वास्थ्य समिति, ३ सफाई समिति, ४ ग्राम सुरक्षा समिति, ५, विकास समिति। प्रत्येक पंचायत से, अपने कार्यालय, पुस्तकालय वाचनालय और एक छोटे से चिकित्सालय के लिये अपने क्षेत्र में एक पंचायत घर स्थापित करने को कहा गया हैं। ये भी आदेश जारी किए गए हैं कि प्रत्येक गाव सभा जिला बोर्ड तथा शिक्षा विभाग की सहायता से ३१ मार्च १९५० ई० तक लड़कों और लड़कियों के लिए कम से कम एक एक स्कूल खोले।

पंचायतों के उत्तरदायित्व

पंचायतों पर अपने क्षेत्र में एक वर्ष के अन्दर ही सभी सार्वजनिक सड़कों की मरम्मत तथा उनका सुधार कराने, सार्वजनिक कुओं को साफ रखने, सभी सम्प्रदायों के सदस्यों के लिए सामूहिक प्रार्थना के निमित गाँधी स्मारक चबूतरे बनवाने, अखाड़े और व्यायामशाला खोलने तथा जन्म और मृत्यु के रजिस्टर रखने का प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी होगी। दीवाली, होली, प्रत्येक तिमाही की पूर्णिमा तथा २५ सितम्बर से लेकर २ अक्टूबर तक गाँधी जयन्ती सप्ताह के अवसर पर सफाई के विशेष आयोजन किये जायेंगे।

करों तथा फीसों द्वारा वसूल की गई रकमों में वृद्धि करने के हेतु पंचायतों से कहा गया है कि वे अपने सदस्यों से स्वेच्छापूर्वक दान देने तथा कार्य करने को अपील करें।

यदि किसी गाँव या अदालती पंचायत का कोई सदस्य तीन महीने के अन्दर साक्षर नहीं हो जाता तो उसे उसके पदसे हटाया जा सकेगा।

सयुक्त प्रांतीय सरकार ने प्रत्येक जिले में जिला पंचायत अफसर के पद पर एक २ डिप्टी कलेक्टर की नियुक्ति की है। ये अफसर अपने जिलों का दौरा करेंगे तथा गाँव और अदालती पंचायतों को सहायता एव परामर्श देंगे। ये अफसर मुकदमे के कार्यों से मुक्त कर दिये गए हैं।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

स जातुभर्मा श्रद्धधान ओज पुरो विभिन्दन्नचरद् वि दासीः ।

ऋ० १-१०३-३

आर्य अपनी भुजा में वज्र लिये अपने बल पर भरोसा करके दस्युओं के दुर्गों को तोड़ता हुआ विचरता है ।

ता० ४ अगस्त १९४९

वेद प्रचार सप्ताह

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, उसका पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।" आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७७ में यह आर्य समाज का तीसरा नियम प्रकाशित किया। बहत्तर वर्ष हो चुके, इतने दीर्घ काल में आर्य समाज में सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से इस परम धर्म का आचरणत कहाँ तक पालन किया है, इसका परिचय कराने और भविष्य के लिये सचेत होकर किन्तु बहु गुणित उत्साह, श्रद्धा और आस्था के साथ इस परम धर्म को परिपालन करने के लिये संलग्न होने की प्रेरणा करने के लिये प्रतिवर्ष परमपावनी श्रावणी और वेदप्रचार सप्ताह आर्यसमाज तथा आर्यों के लिये साक्षात् उपस्थित होकर स्पष्ट सन्देश देते हैं, इस नियम में 'परम धर्म' शब्द का जान बूझकर प्रयोग किया गया प्रतीत होता है। भूलकर नहीं, इसलिये कोई आर्य अथवा आर्यसमाज या अन्य संस्था यह बहाना नहीं कर सकते हैं कि यह तो एक वैकल्पिक विधि है, यह तो एक अपवाद विधि है, यह तो एक विशेष विधि है, यह तो एक विशेष वर्ण के लिये विधि है, यह तो एक विशेष आश्रम के लिये विशेष विधि है, यह तो एक विशेष वर्ग के लिये विशेष विधि है, यह तो एक विशेष काल के लिये विशेष विधि है, यह तो एक विशेष देश के लिये विधि है अथवा यह तो एक विशेष अवस्था के लिये विशेष विधि है। क्यों महर्षि ने अपने ग्रन्थों में अन्य किसी कर्त्तव्य को परम धर्म कहीं नहीं कहा प्रतीत होता है।

औपनिषदिक श्रुति में विस्पष्ट शब्दों में विद्याव्रत स्नातक को विदा करते हुये आदेश दिया है कि 'सत्य वद, धर्म चर' और नत मस्तक हो अभिनव स्नातक ने अपने अन्तस्तल से आचार्य को श्रद्धापूर्वक आश्वासन दिया कि, 'सत्यं वदिष्यामि, धर्मं चरिष्यामि' और आचार्य से विदा लेकर क्या इस प्रतिज्ञा को सर्वथा "गुरवे समर्पित" गुरु को ही समर्पित कर दिया। नहीं २ यावज्जीवन धर्माचरण करते रहने का पुनीत व्रत अपने जीवन का परम धर्म समझकर उसका पूर्णरूप से पालन किया। हमारी अनार्यजुष्टता के कारण वेदों ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, धर्मसूत्रों, स्मृतियों, दर्शनों, इतिहासों, पुराणों, गाथाओं, नाराशंसियों आदि सभी से प्रभावित होने वाला जीवन काल हमारे देखते २ विलीनप्राय हो गया।

'धर्म चर' के स्थान पर जब से हमने 'धर्म वद' 'धर्म लिख' 'धर्म पठ' 'धर्म शृणु' को अपनाकर अपने को कृतार्थ माना, तब से ही विलास प्रियता, अनास्था, अश्रद्धा, अकर्मण्यता, दासता, परमुखापेक्षता, अकिंचनता, दरिद्रता और अनात्मता से हम पूर्ण रूप से जकड़े गये। जकड़ी हुई इस दुरवस्था में हम वेदानुयायी कथनमात्र को तो बने रहे, प्रति वर्ष श्रावणी का पावन पर्व भी मनाते रहे, समय २ पर गृहस्थ जीवन में होनेवाले संस्कारादि कृत्य भी वैदिक मन्त्रों से पंडित लोग करवाते रहे, कहीं २ यज्ञ भी वेद मन्त्रों से किये जाते रहे, परम्परा से वेद पाठी लोग सस्वर अपनी २ शाखाओं का पाठ भी करते रहे, मध्य काल में पौराणिकता की रूढ़ियों और स्वार्थवाद से प्रभावित होकर जो वेद-भाष्य रचे गये, उनसे वेद की महिमा और भी न्यूनतर हो गई, और अन्त में इन्हीं भाष्यकारों के भाष्यों को पढ़कर विदेशी विद्वानों ने वेदों को गडरियों के गीत, काल्पनिक गाथायें, किसानों के बेजोड़ आख्यान और बहुदेवतादि की उपासना का आधार घोषित किया। दूसरे शब्दों में सुन्दर स्वच्छ सुवर्ण का भी मृण्मय नगण्य एक सर्वथा हेय वस्तु समझा गया। धर्म चर को त्यागने का यह घोर परिणाम हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस सब दुरवस्था को हृदयगम किया और देखा अपने प्रज्ञा नेत्रों से अतीत आर्यों के गौरवपूर्ण इतिहास को, कैसे विश्वविजयी आर्य, चक्रवर्त्ती साम्राज्य करने की क्षमता रखनेवाला सहस्र वर्ष व्यापिनी राजनीतिक दासता पंक में ग्रस्त हुआ। आर्य से हिन्दू बनाया गया। यह सब देखा। हिमालय की चट्टान से भी कठोरतर महर्षि का सहृदय हृदय करुणा से आप्लावित हो गया, स्मृति पटल पर वेदर्षि अग्नि से लेकर जैमिनि पर्यन्त समस्त ऋषि परम्परा स्पष्ट रूप से अंकित हो गई, विक्षुब्ध होकर 'किं करोमि, कथं च वेदोद्धारो भविष्यति' इस विचार से निरन्तर समस्त समाधिजन्य मोक्ष सुख की कामना का सर्वथा त्याग कर एक दृढ़ प्रतिज्ञ व्रती की भांति महर्षि ने यावज्जीवन वेदोद्धार के निमित्त समर्पित किया, परन्तु अन्य आचार्यों की भांति मठ, गद्दी, या अन्य ऐसी प्रकार की ऐहिक परम्परा को स्थापित करके किसी विशिष्ट सम्प्रदाय को नहीं चलाया, प्रचुर सम्पत्ति के स्वामी बनकर सांसारिक ऐश्वर्य भोगने का भी लेश मात्र स्वप्न में भी विचार नहीं किया, अपने लिये न कुछ किया और न छोड़ा, हां ४० वर्ष तयारी करने के उपरान्त गुरु विरजानन्द महाराज के आशीर्वाद को और साथ ही महर्षि के बीज मन्त्र "सत्य वद, धर्म चर" के ब्रह्मास्त्र को लेकर, "यद् वेदेषु विहित तत्सत्यम्" एवं "न वेद बाह्यो धर्मः" इस प्रकार के असत्य अमोघ अस्त्रों के प्रभाव से समस्त भारत खंड को वैदिक धर्म की ओर पुनः आकृष्ट कर दिया। कार्य को सतत होते रहने के लिये और अपने नश्वर शरीर को परिमित अनुभव करते हुये महर्षि ने अपनी दूर दर्शिता से अपनी प्रतिज्ञात ऋषि परम्परा कार्य की सुपूर्ति के लिये आर्य समाज की स्थापना १८७५ में की। आर्य समाज के तीसरे नियम में जानबूझकर आर्यों के लिये "परम धर्म" का विधान किया। सन् १८८३ में महर्षि ने अपने सांस्कृतिक और धार्मिक मन्त्र को अधूरा ही छोड़कर "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो," यह कहकर शरीर छोड़ा, यश शरीर से तो महर्षि अमर हैं,

पुण्यश्लोक आचार्य दयानन्द शरीर से आज हमारे मध्य में यद्यपि नहीं हैं, तथापि उनकी विमल कीर्ति की ज्योत्स्ना किस सहृदय आर्य की धमनियों में बहने वाले रक्त को कारण नहीं बना देती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वैदिक प्रथा नुसार उपाकर्म विधि मनाने की क्रिया की जाती है और उस के अन्त में ... का भी पाठ किया जाता है, किस प्रकार उत्तरोत्तर ऋषि महर्षियों ने अन्तर पूत जीवनों के द्वारा वैदिक परम्परा को अविच्छिन्न बनाये रक्खा और उन पुण्यप्रद अनुष्ठान में कितने तप ऋषि मुनियों ने यावज्जीवन वेदाध्ययनाध्यापन सत्र को सफलता के साथ संचालन किया, इसका महत्व में पारायण किया जाता है, परन्तु इस पारायण काल में जब आज का आर्य या वैदिक धर्मी अनुभव करता है कि जैमिनि मुनि के उपरान्त आजतक इस चिरन्तन परम्परा कड़ी को अविच्छिन्न रूप से चलाने का प्रयत्न अन्य कितने वैदिकों ने किया तो उसका हृदय विषाद में विक्षुब्ध होने लगता है। क्योंकि नाममात्र के वैदिकधर्मी का क्या महत्व और मूल्य है। सत्य या धर्म का साक्षात्कार ही उस उत्कृष्ट परम्परा-तन्तु से हमको जोड़ता है और एक बार उस के साथ सम्बद्ध हो जाने पर हमारा जीवन भी वैदिक ज्ञानालोक में आभासित हो सकता है, अपने आभासित और आलोकित जीवन से ही हम तथा कथित वेद प्रचार में तेजस्विता को अनुप्राणित कर सकते हैं।

इन पंक्तियों के प्रकाशित होते २ श्रावणी का परम पावन पर्व और रक्षा बन्धन पर्व दिवस आ जावेंगे, उनको सभी वैदिक समारोह पूर्वक मनाने का आयोजन करेंगे, किन्तु क्या अब भी हम गम्भीरता के साथ इस बात पर विचार करने के लिये प्रस्तुत हो सकेंगे कि अपने "परम धर्म" परि पालनार्थ किस प्रकार "धर्म चर" के अनुष्ठान से हम अपने

जीवनों को वस्तुत आर्योचित बनाने का व्रत धारण करें, किस प्रकार वेद की श्रुतियों को पुस्तक के स्थान में शनै २ कंठ और हृदय एवं आचरण में धारण करने के लिये अदम्य उत्साह के साथ अग्रसर हों, तपः प्रभाव और देव प्रसाद से वेद विज्ञान को अपने अन्दर धारण कर बचाने के लिये जिस आर्ष प्राण और मन की आवश्यकता है, उसकी आस्था श्रद्धा से हम विकसित करने में समर्थ हों। तथास्तु।

★ ★ ★

लोकमान्य तिलक

आज से २६ वर्ष पूर्व ता० १ अगस्त १९२० को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्वर्गवास हुआ। लोकमान्य का जन्म २३ जुलाई १८५६ में पूना के निकट कोहन ग्राम में हुआ था। जन्म से ही सस्कार शक्ति सम्पन्न और असाधारण बुद्धिवैभव युक्त होने के कारण अपने शिक्षाकार्य को पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न करके अन्य किसी आजीविकोपार्जन के लिये ही अपना जीवन समाप्त करने के स्थान पर लोकमान्य ने अपने जीवन को सार्वजनिक जीवन क्षेत्र में पूर्णरूप से समर्पित करने का व्रत धारण किया। किस प्रकार अपने समय के एक अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न युवक होते हुये भी उन्होंने उन सब क्षेत्रों से जानबूझ कर अपने को दूर रक्खा कि जिनके लिये उस समय के शिक्षित युवक सदा लालायित रहते थे। वकालत, अध्यापन, शासक, विचारक, अनुसन्धान कर्त्ता, तत्ववेत्ता, वैज्ञानिक और संकुचित अर्थ में नेता आदि - आदि अनेक सासारिक वैभव और यश को देने वाले सभी जीवन मार्गों का अपने लिये तुच्छ मूल्य अनुभव करते हुये लोकमान्य ने अपने आदर्श जीवन का देशभक्ति, को ही अपना श्रेष्ठ धर्म मान कर अनुकरणीय रीति से अलौकिक कौशल के साथ प्रस्तुत किया, यह सब तो अब इतिहास का विषय है। किन्तु जिस पवित्र जीवन का प्रत्येक सदृश्य लोकमान्य के चरित्र मे ओतप्रोत आभासित पाता है, उसकी आज स्वतन्त्र भारत के सूत्र सचालकों के लिये कितनी अधिक आवश्यकता है, यह वर्त्तमान समय में सभी अनुभव करते हैं, क्यों कि लोकमान्य ने अपने जीवन - ग्राम मे आते ही अनुपम बुद्धि बल के आधार पर जिस प्रकार वि य प्राप्त की, उसकी तुलना के लिये अन्य उदाहरण मिलना कठिन है।

महान् पुरुष की जयन्ती मनाने अथवा उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक ही महत्व हो सकता है। वह है उस महापुरुष के उदात्त गुणों को अपने जीवन मे धारण करना। जिस मात्रा और परिणाम मे उन गुणों का आधान अनुचरों के जीवन मे होता जाता है, उसी के अनुरूप उस महान् पुरुष की कीर्त्ति उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है। ऐसा न करके यदि केवल किसी महापुरुष के जीवन की घटनाओं को किसी विशेष दिन पर केवल दुहरा कर ही सन्तोष कर लिया जाता हो तो, वस्तुत यह रस्म मात्र आत्म विडम्बना ही होगी। उसका कोई अच्छा प्रभाव अनुचरों पर कभी नहीं पड़ेगा।

इसलिये आज लोकमान्य के बेहोशी में निकले हुये अस्पष्ट वाक्य हमारे लिये पथ प्रदर्शक होने चाहिये। अपने जीवन के अवसान के सन्निकट बेहोशी के समय उनके शब्द थे, "१८१८,१९१८ हन्ड्रेड इयर्स, भाट ए लाइफ स्लेवरी," "सेवन हन्ड्रेड रुपीज, दि सेलरी आफ् एन एडीटर, भाट केन दीज लार्डलिंज डू।" अर्थात्—१८१८,१९१८ सौ वर्ष, दासतापूर्ण कैसा जीवन, और "सात सौ रुपये, एक सम्पादक का वेतन, यह नवाब लोग क्या कर सकते हैं।" यह थे लोकमान्य के अस्पष्ट किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण अन्तिम वाक्य। लोकमान्य के अनुयायी और उनके नाम से अपने को गौरवान्वित अनुभव करने वाले स्वतन्त्र भारत के देशभक्त आज इन वाक्यों की लक्षणा, और व्यजना से कितने दूर जाते हुए प्रतीत होते हैं। "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, उसको मैं अवश्य प्राप्त करूँगा" लोकमान्य के इस मूल मन्त्र की साधना में रत स्वराज्य को वस्तुत सुराज्य, जन राज्य और राम राज्य बना कर प्रजा रजन करने वाले लोकमान्य के आदर्श जीवन को अपने अपने सार्वजनिक, नहीं २ व्यक्तिगत जीवन के लिए भी ज्योतिस्तम्भ मानने वाले भारतीय देश भक्त नर और नारी कहाँ हैं? प्रतिवर्ष १ अगस्त का पवित्र दिवस आता है। प्रति वर्ष हम भारतीय देशभक्त गण लोकमान्य के गुणों का गान करते हैं। समारोह के साथ उत्सव मनाते हैं। परन्तु जिस प्रकार १ अगस्त सन् २० को रात्रि के १ बज कर ४५ मिनट पर सर्व प्रथम अग्रेजों की शैतान सरकार से पूर्ण असहयोग कर सजीव उदाहरण उपस्थित किया, उसी प्रकार से क्या आज हम लोकमान्य के आदर्श जीवन का अनुकरण करते हुये अपने राष्ट्र की समुन्नति और समृद्धि के लिये अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में आये हुये समस्त दोषों को दूर करते हुए अपने अन्दर उस चरित्र बल का आधान न करेंगे कि जो लोकमान्य के लोकसंग्रह करने के लिये प्रिय था।

★ ★ ★ ★

विजय की साधना में प्रवृत्त आर्यवीर

अनुशासन सं० ४

अमर श्रुति के शब्दों में "द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा भूयासम्" देवजनों के यजन करने योग्य पुण्यक्षेत्र आर्यावर्त्त की विशाल भूमि पर अगणित नक्षत्रराशि सम्पन्न द्यौ की भांति बाहुल्ययुक्त तथा विस्तृत पृथिवी के तुल्य विस्तारयुक्त हम आर्यवीर बनें, किन्तु मातृभूमि को देवयजनि, शब्द से सम्बोधित करने की क्षमता और द्यौ की भांति असंख्य नक्षत्रों को अपनी कुक्षि में धारण करने की विशालता तथा पृथिवी के समान सब प्रकार के प्राणियों को ही नहीं अपितु अन्यान्य विविध पदार्थों को समान रूप से आश्रय देने वाली भूमि माता के समान विस्तृत हृदय होने के लिये जिस तेजस्विता की आवश्यकता होती है, उसका संकेत तीसरे अनुशासन में किया गया है। जर्मन देश के प्रकाण्ड मनीषी फ्रेडरिक नीत्से के शब्दों में प्रायः उनही का पारायण किया गया प्रतीत होता है, नीत्से कहते हैं—

'मैं उन समस्त लक्षणों का (हृदय से) स्वागत करता हूँ कि जो अधिक ओजस्वी और अधिक सघर्ष प्रधान युग के उदय की घोषणा करते हैं, उस भावी युग में शौर्य को पुनः अभ्युत्थान, प्रतिष्ठा का पद प्रदान किया जायगा, क्योंकि वह युग एक और उत्कृष्टतर युग के लिये मार्ग निर्माण करेगा, एव उस शक्ति को सुसगठित करेगा कि जिसकी नवीनतर युग को आवश्यकता होगी वह युग शूरता को पूर्णरूप से विकसित करेगा, उच्च विचारों और उनके परिणामों के निमित्त महासमर की दीक्षा का सुअवसर समुपस्थित करेगा। इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये सम्प्रति ऐसे अनेक अग्रणीवीर पुरुषों की आवश्यकता होगी कि जो अवस्तु (अभाव) से उत्पन्न नहीं किये जा सकते हैं और ठीक इसी प्रकार न ऐसे पुरुष वर्त्तमान सभ्यता एवं नागरिक संस्कृति (सिटी कल्चर) की बालू और कीचड़ से ही उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है कि जो शान्त, एकान्त सेवी, दृढ़ सकल्प सन्तोषी और अज्ञात कार्यों में सतत सलग्न रहने के अभ्यासी हों, ऐसे पुरुष कि जिनमें प्रत्येक पदार्थ में विजेतव्य अंश के शोध करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति हो, ऐसे पुरुष जिनमें तेज, धैर्य और ऋजुता हो एव बड़े २ आडम्बरों के प्रति घृणा हो तथा विजय के प्रति विशाल हृदयता और पराजय के क्षुद्र अहकार के प्रति सहिष्णुता हो, ऐसे पुरुष कि जिनमें समस्त विजेताओं की भांति सूक्ष्म और स्वतन्त्र विवेक शीलता हो और समस्त प्रकार की विजय और कीर्त्ति के उपार्जन में भाग्य के प्रभाव के जानने की क्षमता हो। ऐसे पुरुष कि जिनके भोज के दिन और कार्य करने के दिन और शोक दिवस विशिष्ट होते हैं, तथा जो अनुशासन के अभ्यासी और दृढ़ हों, जो हानि लाभ दोनों अवस्थाओं में साम्य भावना युक्त और दोनों दशाओं में अपने कर्त्तव्य पालन में समबुद्धि हों, ऐसे पुरुष कि जो अत्यन्त भयंकर परिस्थिति में भी दृढ़ता के साथ कर्मठ रहने वाले, अत्यन्त विलक्षण और अत्यन्त प्रसन्नचित्त हों। क्योंकि मेरा विश्वास करो—अत्यधिक उपज प्राप्त करने और अस्तित्व से आत्यन्तिक आनन्द लाभ करने का रहस्य है:—"अत्यन्त तेजस्विता के साथ जीवित रहना।"

रामदत्त शुक्ल एम. ए. एडवोकेट
अधिष्ठाता आर्यवीरदल

★ ★ ★ ★

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(ले०—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल झज्जर)

गताङ्क १४ जुलाई से आगे—

२

तम्बाकू के प्रयोग से सुप्रसिद्ध डाक्टर रिचार्डसन ने निम्न परिणाम निकाला है

१—गीली भाप बनती है।

२—कार्बन बनती है।

कार्बन गले और कलेजे की नालियों में जम जाता है।

३—अमोनिया (Ammonia) है। जो अधिक काल तक पीते रहने से जिह्वा को फाड़ डालता है। गले को खुश्क करता है उससे प्यास बढ़ती है। और तीव्र धूम्रपान की इच्छा जाग्रत होती है।

४—निकोटीन प्रवाहित होती है। निकोटीन एक तीव्र विष है इसकी एक बून्द खरगोश के मुख में डाली जाये तो वह तत्काल मर जायेगा। निकोटीन को कबूतर की टांग को छुआ दिया जावे तो वह तत्काल ४ मिनट के स्वल्प समय में मर जायेगा।

डाक्टर बोड ने बिल्ली की जिह्वा पर एक बून्द निकोटीन को डाला तो बिल्ली तत्काल ५ मिनट में मर गयी।

तम्बाकू की हरी हरी पत्तियों को पीसकर शरीर की खाल पर लगाने से विषैला प्रभाव होता है।

इसी प्रकार अन्य विष हैं जो ऊपर दिखाये जा चुके हैं।

कोलिडीन।

तम्बाकू में कोलिडीन जहरीला क्षार है। इससे स्नायुओं में दुर्बलता आती है और चक्कर आने लगते हैं।

प्रुसिक एसिड।

प्रुसिक एसिड ज्ञान तन्तुओं को मलिन कर देता है। शिर में भारीपन रखता है। और मन में अरुचि उत्पन्न करता है।

कार्बन मोनक्साइड।

तम्बाकू में कार्बन मोनक्साइड दम घोटकर मार डालने वाली गैस है। इसके प्रभाव से मनुष्य की श्वास धीरे धीरे चलने लगती है। हृदय की गति तेज हो जाती है। रोमाञ्च और ऐंठन होती है। आंखों की पुतलियाँ फैल जाती हैं और ठण्डा पसीना, ठण्डा बदन और मूर्च्छा उत्पन्न करती है।

फुरफुरल

फुरफुरल विष मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं को ढीला कर देता है इससे आचार और शुद्ध विचार नष्ट होते हैं।

एक्रोलीन एक गैस है जो मन में चिड़चिड़ाहट उत्पन्न करती है।

तम्बाकू राल

तम्बाकू पीने के अतिरिक्त खाने के काम में भी आता है। कितने ही व्यक्ति इसको पान में डलवाकर खाते हैं और कितने ही ही विशुद्ध तम्बाकू खाने के अभ्यासी होते हैं। पीने से खाना अधिक हानिकार है। यद्यपि सारा तम्बाकू अन्दर नहीं निगला जाता परन्तु पुनरपि राल को तो थूका ही जाता है। राल में प्रभु ने भोजन को पचाने को अद्भुत शक्ति को उत्पन्न किया है। शरीर में जितनी भी अधिक राल की विद्यमानता होती है उतना ही शीघ्र भोजन पचता है और तम्बाकू खाने वाला व्यक्ति इसको तम्बाकू के साथ ही बाहर थूकता रहता है। इस प्रकार से पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है। और व्यक्ति शीघ्र ही अपने अमूल्य जीवन से हाथ धो बैठता है। डाक्टरों का विचार है कि पन्द्रह बीस वर्ष की आयु का कम हो जाना तो साधारण सी बात है।

राल का परिमाण।

पर्याप्त तम्बाकू खाने वाला व्यक्ति एक दिन में ३ पिन्ट राल थूक देता है। कतिपय डाक्टरों का विचार है कि ६ मास में थूकी हुई राल का भार मनुष्य के अपने भार के बराबर होता है।

कुछ एक डाक्टरों का अभिमत है कि जो मनुष्य प्रत्येक पाच मिनट में चाय के चम्मच के बराबर राल थूकते हैं वह अपने शरीर में से ६ टन शक्ति खो देते हैं।

रेय और शीरा।

पीने वाले तम्बाकू के अवयव शीरा और रेय मिट्टी हैं। जिन में मिलकर तम्बाकू चिलम में रख कर पीने योग्य बनता है।

गुड़ और खन्ड निकाल लेने के उपरान्त गन्ने के रस का जो रद्दी भाग रह जाता है वह शीरा कहलाता है। चीनी के मिलों में चीनी निकालने के उपरान्त रस का शीरा ही शेष रहता है। वह सड़ता रहता है यह तम्बाकू बनाने के काम आता है। ग्राम कस्बों और नगरों में भूमि को गहरा खोदकर हजारों मन शीरा उस में भर देते हैं। वर्षों तक उस में भरा पड़ा रहता है।

जितना पुराना शीरा होता है उतना ही तम्बाकू तेज कश वाला होता है। पीने वाले उसे खूब पसन्द करते हैं।

इन शीरे की खत्तिया में जो जानवर गिर जाते हैं। वह निकल नहीं पाते शीरे में ही मिल जाते हैं। कुत्ते और बिल्लियाँ उन खत्तियों में प्रायश गिर कर शीरे में मिल जाती हैं! चूहे गिरगट छिपकली और गिलहरियों की तो गणना ही क्या? हजारों और लाखों की संख्या में गिर कर शीरे में तन्मय हो हो जाते हैं। और मक्खियों का तो ठिकाना ही क्या?

कितनी गिरती होंगी अनुमान ही लगाया जा सकता है। क्योंकि मक्खी मीठे पर ही शीघ्र उड़कर बैठती है।

रेय मिट्टी भी ऊसर भूमि का क्षार है जो कपड़े धोने के काम आता है वह तम्बाकू में डाला जाता है कहा जाता है कि गधे के पेशाब वाली मिट्टी भी रेय बन जाती है।

तम्बाकू और घी

समस्त भोज्य पदार्थों के लिये घृत उपादेय पदार्थ है। बिना घी का भोजन सूखा कहलाता है। ग्राम में उसको कच्चा भोजन कहा जाता है और घृत में पकाया हुआ पक्का। यद्यपि घृत रहित और घृत सहित दोनों प्रकार के भोजनों को अग्नि पर पकाया जाता है। परन्तु घृत रहित कच्चा कहलाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि भोज्य पदार्थों में घृत की इतनी बड़ी उपयोगिता होते हुये भी घृत तम्बाकू के लिये उपयोगी नहीं है। सैकड़ों मन तम्बाकू को सेर भर घी बिगाड़ देता है। बस थोड़ा सा पड़ते ही तम्बाकू पीने के काम का नहीं रहता।

इसलिए निस्सङ्कोच कहा जा सकता है कि तम्बाकू भोज्य पदार्थ नहीं है।

सुप्रसिद्ध डाक्टर हम्फ्रे ने तम्बाकू के भारी प्रचार को देख भारी दुःख का अनुभव किया। उन्होंने कहा है कि "बनमानुष भी इसे खाना पसन्द नहीं करेगा। पुनः यह बुद्धिमान आदमी इसे क्यों खाते हैं। इसमें न तो पोषक तत्व है और न पाचक है और मानसिक और शारीरिक शक्ति का बढ़ाने वाला भी नहीं है। यह तो हमारा प्रबल शत्रु है। जो नसों को काट डालता है। पेट को नष्ट कर डालता है और प्यास को बढ़ाता है।

टाइफाइड और मलेरिया

पहिले तम्बाकू का जब प्रचार न था, टाइफाइड और मलेरिया ज्वर के रोगियों का नाम न था परन्तु तम्बाकू के सेवन से इन रोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। वर्ष भर में लाखों व्यक्ति इन रोगों से मर जाते हैं। परीक्षणों द्वारा मालूम हुआ है कि तम्बाकू सेवन करने वालों पर टाईफाइड और हैजे आदि का शीघ्र प्रभाव होता है

कतिपय व्यक्तियों का विचार है कि तम्बाकू मलेरिया के कीटाणुओं को कम करता है। मलेरिया नहीं हो पाता। डाक्टर साल का कथन है कि मैं इस कथन को कि तम्बाकू मलेरिया को कम करता है कोरी मूर्खता और नासमझी ही समझता हूँ। तम्बाकू के सेवन से रोगों में भारी वृद्धि हुई है। ग्रामों में कहावत है कि तम्बाकू अपने पीने वालों से कहता है कि ऐ पीने वालो! मैं तम्बाकू तुम्हारे—

खांसी करूं खुर्रा करूं दमा पै
इतने पर भी न छाड़ो फिर क्या कै

तम्बाकू को निर्जन स्थान में जहां वायु का अधिक प्रवाह न हो मुँह और नाक से कपड़ा बाँध कर कूटा जाता है। और भूमि में गाड़ कर सुखाया जाता है नहीं तो बड़ी कठिनाई होती है। कूटते हुए, तम्बाकू पीने वाले और खाने वालों को भी भारी धसक आती है। कितने तो धसकते धसकते मूर्छित हो जाते हैं। इसलिये तम्बाकू मनुष्यों के लिये तो क्या प्राणिमात्र के लिये अस्वाभाविक है। बकरी भी इसके पत्ते को नहीं खाती। गधा कूड़ी पर रहना पसन्द करेगा, परन्तु तम्बाकू के क्षेत्र की ओर नहीं जायेगा।

तम्बाकू के विषय में भारी विवेचना की जा रही है। मेडिकल बोर्ड के निमन्त्रण पर इङ्गलैंड में तम्बाकू के दोषों पर निबन्ध लिखा गया जिस पर ५००) पारितोषिक दिया गया। उस निबन्ध का कुछ सार अंश निम्न प्रकार है—

१—तम्बाकू का प्रयोग अप्राकृतिक है, क्योंकि कोई भी बनचर पशु इसे नहीं चरता।

२—सर्व प्रथम जब मनुष्य इसे पीता है तो वह बीमार पड़ जाता है। यदि वह सबसे पहिले फल को खाये, चाहे वह फल उसे रुचिकर भले ही न हो, तब भी मनुष्य फल खाने से रुग्ण नहीं होता।

३—तम्बाकू आनन्द दायक नहीं है। आनन्द दायक वस्तु हानि नहीं करती।

४—अकेले इङ्गलेंड में १ करोड़ २० लाख पौण्ड मूल्य का तम्बाकू वार्षिक पिया जाता है। इसके सब सामग्री सहित २ करोड़ पाउण्ड वार्षिक व्यय होते हैं।

५—यह गन्दी आदत है।

६—यह दांतों को बिगाड़ देती है।

बारूद खाना—बंगाल

—कुंवर शिवराज सिंह इन्दौर

आंग्ल साम्राज्य की रक्षा में निमग्न मि० एमरी ने जिस (महाकवि रवीन्द्र के शब्दों में) सोने के बंगाल को भूख से तड़पते व एड़िया रगड़ते देख कर कहा था कि "हम क्या करें भारत की जन संख्या इतनी बढ़ गई है कि यदि बंगाल मे ३५ लाख व्यक्ति भूख से मर जाए तो कोई आश्चर्य नहीं" वही बंगाल [जय प्रकाश नारायण के शब्दों में] बारूदखाना बन गया है। वहा ऐसे बादल प्रतिक्षण छाये रहते है [बंगाल के प्रधान मन्त्री श्री बी० सी० राय के शब्दों मे] जिनके बरस पड़ने की कभी भी आशंका हो सकती है।

इन पंक्तियों का लेखक स्वय ८ तक बंगाल मे रहा था, जब कि हिन्दुस्तान का कल तक गोरा मालिक जापान के विरुद्ध भारत को प्रयोग करने के लिये आज के "बारूदखाने का निर्माण करने वाले "कम्युनिस्ट" को अपना हथियार बनाए था और वह "कम्युनिस्ट' भी गोरी सरकार के काम में रोड़ा न अटके इस उद्देश्य से उसे दूध का धुला समझ कर प्रत्येक सभव उपाय से उसकी सरकारी नीति का समर्थन करता था। वे दिन ऐसे थे जब कलकत्ता पर कभी भी जापानी हवाई जहाजों के बम पड़ने की आशंका बनी रहती थी। लेखक स्वय उन्हीं दिनों एक सभा मे भाग लेने गया तो ३ घन्टे की सभा में २ बार 'साइरन' [खतरे का घंटा] बजा, सभा स्थगित हुई, क्लिअर [वातावरण साफ] होने पर पुनः श्रोता एकत्रित हुए कि फिर साइरन बजा और जनता इसी निमित्त बनाए शेल्टरर्स [बमों से बचने के सुरक्षा गृहों] में चली गई। युद्ध का ऊट किस करवट बैठेगा यह कहा नहीं जा सकता था। और "कम्युनिस्ट" था जो एक ही सांस में फैसिस्ट जापान को हराने के लिए हिन्दुस्तान के सब दुख सुख भूल कर अग्रेज की मदद करने का उपदेश दिए जा रहा था।

जब फासिस्ट जापान व नाजी जर्मन समाप्त हो गए और कल के अंग्रेज के मददगार कम्युनिस्ट का, प्यारा लाल झडा एशिया के दो तिहाई हिस्से पर फहराने लगा है तब उसने भी उचित अवसर जान भारत की राष्ट्रीय सरकार के विरूद्ध जिहाद बोल दिया है। जिस भूखे बंगाली के घर वह कल तक जाकर देखना भी पसद नहीं करता था। जिसे बंगाल की गली में—बिना कफन—बब जाते देख कर उसके कान पर जू भी नहीं रेंगती थी, रोटी व कपड़े की तलाश में सबसे अधिक उसे ही परेशान देख कर, उसने चीना माओ की फौजों की भांति लड़ाकू सेना बनाने का स्वप्न देखना प्रारम्भ कर दिया है। उसकी इस युद्ध दावाग्नि के लिए ईंधन सामग्री तो तैयार ही थी।

जिसन १९४४, ४५ का बंगाल केवल—कलकत्ता की विशाल अट्टालिकाओं में ही बैठकर नहीं—गाँव २ व गली २ घूम कर देखा है उसके सामने आज के बंगाल का चित्र उसी समय उपस्थित हो जाता था। "खेते शोते पाई न बाबा" [कुछ भी खाने पीने को नहीं मिलता हैं] की पुकार मचाने वाले लाखों करोड़ों मानव, ककाल बने, केवल सांस के सहारे जीने वाले, लाखों नंगे भूखे, बंगालियों का कोलाहल कब प्रलयकारी परिवर्तन ला देगा, यह तभी से प्रतिक्षण सम्भावना दिखाई देती थी। जिस पूंजी पति महाजन की रक्षा करना पहले से ही सरकार अपना कर्तव्य समझती है, तथा खेतीहर किसान की रग २ में से रक्त खींच कर अपना विशाल भवन बना लेने वाला जमींदार, जिसने अपनी पाप की कमाई से भगवान का एक मंदिर भी बनवा दिया है। वे दोनों लाखों मन अनाज अपने कोठों में छुपाकर और महगा होने की राह देख रहे थे। वे सोच रहे थे कि लाखों मनुष्यों की बलि से ही हमारा उदरयज्ञ पूरा होगा और इस भूखे नगे मानव समूह से रक्षा करने के लिए आने वाली किसी भी सरकार को हमारे चाँदी के टुकड़ों की तलाश में सहयोग करना ही होगा। अपने शासकीय ढाँचों को बनाए रखने के लिए जिस फौज व पुलिस की आवश्यकता होगी उसके लिए हम अपनी तिजोरियाँ खोलकर फिर एक बार दानी, देश भक्त और सरकार के प्यारे बन जायेंगे। उन्होंने एक बार भी यह न सोचा कि काल का रथ अपनी द्रुत गति से चल रहा है और उनके इस अनैतिक कमजोर सहारे को तोड़ता हुआ, उन्हें अपने पैरों तले रोंदता हुआ आगे ही आगे बढ़ता जाएगा। उन्होंने एक बार भी यह न सोचा कि "हमारी यह आत्मघातिनी नीति कहीं हमारी समाप्ति की ही निमित्त न बन जाए। कलकत्ते की उच्चतम अट्टालिकाओं के नीचे जब दम तोड़ते बंगाली को ऊपर से धनिक रमणियाँ उपेक्षा से देखती थीं, और ३,३ दिन तक सड़ती हुई लाश को देख कर जब बड़े २ धन कुबेर अपनी नाक पर रूमाल रख कर निकल जाते थे तब शायद ही कोई भावुक कवि उन्हें यह कहने को मिलता होगा कि "दम तोड़ते हुए यह बेबस न जाने कितनों के उत्थान पतन का संदेश दिए जा रहे हैं।"

संक्षेप में सरकारी नीति का उस समय समर्थन करने वाले "कम्युनिस्ट" को उन सभी परिस्थितियों का लाभ उठाने का अवसर मिला है। शायद इसी लिए बंगाल का मध्यमश्रेणी का बाबूसमाज तथा कृषक एवं श्रमिक वर्ग एकत्रित होकर किन्हीं सुनहरे सपनों की पूर्ति में जुट पड़े लगते है। वे सपने कितने भीषण रक्तपात, अगणित विभीषिकाओं व महानाश के कितने क्रूर दृश्यों के पश्चात उपस्थित होंगे और हो भी सकेंगे या नहीं, यह उसे भूल गया है। कम्युनिस्ट द्वारा दिखाए गए सपने बगबासी को इतने लुभावने प्रतीत होते हैं कि वह परिणाम की चिन्ता किए बिना ही व्यग्र होकर सारे देश को सर्वनाश की उस भट्टी में झोंक देना चाहता है, जिसमें से चीन अभी निकला नहीं है और बर्मा जला हुआ सुलग रहा है।

प्रश्न यह है कि सोनार बंगाल [सोने के बंगाल] के शस्य श्यामल धान [चावल] के खेतों को जिन्हें एक बार १९४२ में समुद्री तूफान तबाह कर कृषि के अयोग्य बना चुका है जिसके कारण अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी तथा अन्य प्रदेशों को भोजन सामग्री प्रदान करने वाला बंगाल अपने ३५ लाख लालों की बलि देने को बाध्य हुआ, राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की भेंट पुन चढ़ाकर, पुनः कृषकाय बंगाली के रक्त से अरुण बनने दिया जाए कि नहीं? बंगीय प्रधान मन्त्री, श्री बी० सी० राय, तो स्वास्थ्य सुधारने स्वीटजरलैन्ड पधारे पर उनका स्वास्थ्य सुधरने से बंगाल का ज्वर शान्त हो सकेगा ऐसा कहने का हमारे पास कोई आधार नहीं। विशेषतया जब कि शरद बाबू के चुनाव परिणाम ने कम से कम बंगाल में तो कांग्रेस को नगा कर ही दिया है। इधर चिनगारियां बर्मा के किनारों का अतिक्रमण करती हुई लेनिन के शब्दों में "योरोप का रास्ता नापती हुई कलकत्ता में से होकर गुजर रही हैं।"

शरद बाबू की नाव तो इन्हीं से धक्का खाती २ किनारे पर लग गई है। यह मानने के लिए हमारे पास इससे अधिक प्रमाण क्या चाहिए जब कि कम्युनिस्टों ने इसे अपनी सबसे बड़ी विजय माना है

इस तूफान के नेतृत्व करने की अपेक्षा हम शरद बाबू चाहे न भी करें परन्तु किनारों को तोड़ कर बहता हुआ यह जल, प्रलयचिन्हों की रूपरेखा नहीं है यह कैसे मान लिया जाय, जब कि एक के बाद दूसरी घटनाएं स्पष्ट ही अशुभ लक्षणों को प्रकट कर रही हैं। निर्धनता व जीवन सामग्री के अभाव के साथ ही गत ५ वर्षों के भीषण अकालों निर्वासनों तथा उपद्रवों से टूट गया जनता का आधार, उस पर भी निकटवर्ती देशों की अशान्त राजनैतिक अन्तः स्थिति हिन्दुस्तान के इस बारूद खाने को खतरा पैदा नहीं कर देगी, यह सोचने का समय नहीं रह गया है। समय का वेगवान रथ बढ़ा जा रहा है और उसकी मंजिल उसके सामने है। यह सब देख कर तब और भी पीड़ा उठती है, जब कि आज की सरकारों के सामने हमें दमन, गोलीकान्ड, गिरफ्तारियों के अतिरिक्त कोई नैतिक मार्ग शेष रह गया नहीं दिखाई देता। कल के जनता के मानस का निर्माण

७—इससे अनेक रोग शरीर में प्रवेश करते हैं। यह शारीरिक विकास को रोक देता है। बचपन में खाने से स्वाद शक्ति बिगड़ जाती है। सूंघने और सुनने की शक्ति भी दुर्बल हो जाती है। गले में घाव हो जाते हैं। हृदय कमजोर हो जाता है। पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। स्नायु मण्डल छिन्न-भिन्न हो जाता है। हाथ कांपने लगते हैं इच्छा शक्ति नष्ट हो जाती है। मनुष्य संशय और सन्देह मे पड़ा रहता है। ओज और स्मरण शक्ति नष्ट हो जाती है। मनुष्य पशु के समान हो जाता है। पेट और आंखों के नीचे नासूर हो जाते हैं। धूम्रपानी व्यक्ति के घाव विलम्ब से अच्छे होते हैं। समय को नष्ट करता है और धूम्रपानी की शराब को इच्छा होती है।

८—तम्बाकू पीने से अग्नि लग जाती है जिससे जन हानि भी होती है।

९—तम्बाकू मस्तिष्क को अचेत रखता है और मनुष्य लापरवाह हो जाता है। वास्तव में भारत के ग्रामों में जहाँ पक्के मकान नहीं है। अग्नि अधिकतर तम्बाकू पीने वालों के द्वारा ही लगती है। ग्राम के ग्राम स्वाहा हो जाते हैं। कच्चे घरों की मिट्टी तक जल जाती है ग्रामीण लोग कहा करते हैं कि अग्नि मिट्टी को भी नहीं छोड़ती। मिट्टी भी जलकर राख हो जाती है। बेचारे ग्रामीण रोटी से भी हाथ धो बैठते हैं। महीनों तक भर पेट भोजन नहीं मिलता।

क्रमशः

भारत और अमेरिका

(सन्तराम बी ए)

अमेरिका इस समय संसार में कदाचित सब से उन्नत देश है । वह धन कुबेर है । संसार के प्रायः सभी दूसरे राष्ट्र उसके हाथ की ओर ताकते हैं। मार्शल योजना के द्वारा उसने बहुत से देशों को आर्थिक सहायता दी है । अमेरिका की सैनिक शक्ति भी सब से बढ़ी चढ़ी है । परमाणु बम्ब जैसा प्रलयंकर भीषण अस्त्र उसके पास है। इसलिये सब कोई उससे कांपता है। महाभारत काल में जो स्थिति श्रीकृष्ण की थी, वही स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय रंगमञ्च पर आज अमेरिका की है । महाभारत में जिधर कृष्ण हों उसी की जय निश्चित थी। वैसे ही आज जिस पक्ष में अमेरिका हो, उसी की विजय होती है। यूरोप के गत दोनों युद्धों में अमेरिका ने अंग्रेजों की डूबती नैया को तैराया था। अमेरिका यदि समय पर उनकी सहायता को न आ पहुँचता, तो आज इतिहास किसी दूसरे ही ढंग से लिखा जाता। ऐसे उन्नतिशील, शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण राष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक अवस्था का अध्ययन हमारे देशवासियों के लिये भी बड़ा हितकर सिद्ध होगा ।

स्वर्गस्थ आत्मा भाई परमानन्द जी एक क्रान्तिकारी महापुरुष थे । ब्रिटिश सरकार उनको पकड़ कर कठिन दण्ड देना चाहती थी पर वे किसी प्रकार आँखें बचाकर भारत से भाग कर अमेरिका चले गये । वे वहां कोई पांच वर्ष रहे । जब वे वहां से लौटे तो मैंने उनसे वहां के सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न किये । उत्तर में जो बातें उन्होंने मुझे बताईं, वे उन्हीं के शब्दों में आगे दी जाती हैं । उन्होंने बताया—

एक समय वहां दो सिक्खों का परस्पर झगड़ा हो गया । बात अदालत में गये। सिख अंग्रेजी नहीं जानते थे और जज पंजाबी नहीं समझता था । मुझे दुभाषिये का काम करने के लिये अदालत में बुलाया गया । मैं गया और दोनों की बात एक दूसरे को समझा दी ।

इस घटना के कई दिन बाद मैं एक दिन बाजार में जा रहा था कि 'गुड मार्निंग' (नमस्कार) का शब्द मेरे कान में पड़ा । मैंने बोलने वाले को ढूंढने के लिये इधर उधर दृष्टि डाली पर कोई दृष्टिगोचर न हुआ इस पर मैं आगे चल पड़ा । मैंने एक ही पग उठाया था कि फिर वही शब्द जोर से सुन पड़ा । दाँये बायें देखने पर तो कुछ न दीखा पर जब ऊपर की ओर आंख उठाई तो देखा कि एक सज्जन मुझे संकेत से ऊपर बुला रहे हैं मैं सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर उनके पास गया । वे बोले क्या आपने मुझे पहचाना ? मैंने कुछ पल सोचने के बाद कहा, 'महाशय, मैं आपको पहचान नहीं सका तब उन्होंने कहा कि आप अमुक दिन अमुक मुकदमें में दुभाषिया बन कर मेरी अदालत में आये थे। तब मैंने झट जज महाशय को पहिचान लिया। उन्होंने मेरा बड़ा आदर सत्कार किया और मिलते रहने को कहा। उस जज का ऐसा सौजन्यपूर्ण व्यवहार देखकर मैं अनायास मन ही मन भारत में जजों के जनता के साथ दुर्व्यवहार पर विचार करने लगा ।

श्री भाई जी के मुख से यह वृत्तान्त सुन मुझे अपने एक दूसरे मित्र के साथ घटी घटना का स्मरण हो आया। मेरे ये मित्र एक समय अपने एक सम्बन्धी की लड़की के विवाह पर गये। वहाँ एक जज साहब भी आये हुए थे। जज साहब कचहरी में तो जज थे ही, पर घर में, अपने भाई बन्धुओं में, चौके रसोई में टट्टी और स्नानागार में भी अपने आपको जज ही समझते थे। जज साहब और मेरे मित्र लड़की वाले की बैठक में बैठे थे। जज साहब से कोई एक हाथ की दूर पर एक लोटा पड़ा था। जज साहब ने पास बैठे हुए मेरे मित्र से आदेशपूर्ण स्वर में लोटा उठा देने को कहा। मेरे मित्र को यह देख हँसी और क्रोध दोनों हो आये। हँसी तो इसलिये कि एक हाथ की दूर पर पड़ा हुआ लोटा भी ये स्वयं नहीं उठा सकते। और क्रोध इसलिये कि इस बैठक को भी अपनी अदालत का कमरा समझ कर यह सब पर हुकूमत चला रहे हैं। उन्होंने आप लोटा उठाने कर देने के बजाय जोर से छत पर नौकर को आवाज दी कि अरे भगना, जरा जज साहब को लोटा उठा देना। इस पर जज साहब विस्मित से हो गये, बोले आप नौकर को क्यों आवाज दे रहे हैं ? आप ही उठा कर क्यों नहीं दे देते ? मेरे मित्र ने कहा, लोटा तो आप से भी उतनी ही दूर पड़ा है जितनी दूर मुझसे फिर आप मुझे क्यों आदेश कर रहे हैं ? यह सुन जज साहब लज्जित हो गये ।

भाई परमानन्द जी ने दूसरी घटना भी सुनाई। उन्होंने कहा जिस मकान मालकिन के घर में रहा करता था उसका एक छोटा सा बालक था। एक दिन भारत से कुछ चिट्ठियाँ मुझे प्राप्त हुईं उनको देख बालक कहने लगा — मैं आप के देश की भाषा और लिपि देखना चाहता हूँ, मुझे अपनी चिट्ठी खोल कर दिखाइये । मैंने लिफाफा खोला तो उसमें अँग्रेजी में लिखी हुई चिट्ठी देख कर बालक को बड़ा विस्मय हुआ। वह बोला—ऐं ! यह तो मेरा अंग्रेजी है। क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं ? आप मेरी भाषा में चिट्ठी क्यों लिखते हैं । बालक के इन शब्दों को सुनकर मेरा सिर लज्जा से झुक गया ।

सचमुच हम भारतीयों के लिये यह है भी बड़ी लज्जा की बात। अंग्रेजों के अन्धानुकरण में हम इतना बह गये हैं कि सिंह को सिनहा, गुप्त को गुप्ता, नारायणदास सहगल को एन डी सहगल और श्री मती विजय लक्ष्मी को मिसेज विजयलक्ष्मी हिन्दी अक्षरों में लिखते हैं ।

अमेरिका वालों की एक बहुत बड़ी विशेषता, समता और स्वाधीनता का भाव है। वहाँ किसी में दूसरे को अपने से हीन या नीच समझने की प्रवृत्ति नहीं है। इसी प्रकार वहाँ कोई अपने को भी दूसरे से हीन नहीं समझता। यूरोप के होटलों में जाइये। वहाँ के नौकर आपको 'स्वामी' कह कर सम्बोधन करेंगे वे आप से गिड़गिड़ा कर टिप या बख्शीश माँगेंगे। पर अमेरिका में यह अवस्था नहीं। वहाँ होटलों के नौकर आपसे कहेंगे 'प्यारे' मैं आपकी क्या सेवा करूं ? वहाँ नौकर गिड़गिड़ा कर टिप नहीं मांगेगा वरन् होटल का मालिक आपके बिल में ही दूसरे खर्च के साथ नौकर की टिप भी लगा देगा। यूरोप में धन दौलत की चमक दीख पड़ने पर भी वहाँ के लोगों की भावना भूखी है। पर अमेरिका में सब भावना तृप्त है।

अमेरिका में लोग जितना भीख माँगने और मुफ्त में खाने को बुरा समझते हैं। उतना और किसी बात को नहीं। वहाँ जूठे बर्तन मल कर लकड़ी फाड़ कर और दूसरे का जूता साफ करके रोटी कमाने में कोई लज्जा की बात नहीं समझी जाती । इसके विपरीत भारत में काम करके खाना लज्जा की बात और मुफ्त में माग कर खाना बड़ाई समझी जाती है ।

दूसरे देशों के जो मनुष्य पहले विदेश जाते हैं वे विदेश में जाकर अपने देश का गौरव स्थापित कर देते हैं उसके बाद यदि वहां के घटिया लोग भी विदेश जाते हैं तो उनका भी अच्छे मनुष्यों जैसा ही सम्मान होने लगता है दुर्भाग्य से हमारे भाई जो पहले अमेरिका और कनाडा गये प्रायः सब अपढ़ गँवार थे। उनसे भारत का गौरव उन देशों में बहुत घट गया था मेरे एक मित्र श्री गोपालसिंह खालसा अमरिका में कई वर्ष रहे हैं । उन्होंने बताया कि हमारे अपढ़ सिख भाई अमेरिका में जाकर ऐसा असभ्य व्यवहार करते हैं कि उससे सारे भारत का अपयश फैल जाता है । उन्होंने सुनाया कि हमारा जहाज होनोलूलू बन्दर में ठहरा था। सब यात्री उतर कर अपने लिये फल खरीद लाये । कोई नारंगी की टोकरी खरीद लाया और किसी ने सेब खरीदे। पर हमारे भाई पौण्डों का एक बहुत बड़ा गट्ठर सिर पर उठाये हुए जहाज की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे । पौण्डों के लम्बे लम्बे पत्त फर्श पर घिसटते आते थे। दूसरे यात्रियों के लिये जहाज पर चढ़ने का रास्ता बन्द हो गया था। हमारे सब भाई डेक के यात्री थे। वहाँ लम्बे लम्बे पौण्डों के गट्ठर को रखने का स्थान भला कहाँ होता। वे पौण्डों

करने वाले नेता भी शासन की बागडोर हाथ में आते ही सरकारी भाषा के अतिरिक्त जन भाषा में बोलना ही भूल गए हैं। उन्हें यह भी भूल गया कि आतंकवाद से बढ़कर आज का कमजोर अस्त्र दूसरा कोई नहीं। आतंकवाद के सहारे कुछ समय के लिए मानव शरीर को बन्दी चाहे बनाया जा सकता है परन्तु विचारों का क्रीडा क्षेत्र कभी बन्दी नहीं बनाया जा सकता। उसे तो नैतिक तथा व्यावहारिक मार्गों से ही जीता जा सकता है। विशेष तया जब कि प्रजातन्त्र ही शासन का एक मात्र आधार हो। बंगाल कांग्रेस का नैतिक आधार किस धरातल पर है और कहां तक वह अपने आपको जीवित रख सकेगी इसके लिए तो एक ही दृष्टांत पर्याप्त है कि स्वयं कांग्रेस क्षेत्रों के निराशा वातावरण को देख कर श्री बी० सी० राय विदेश जाते समय इससे अधिक कुछ न कह सके कि मैं केवल उमड़ते हुए बादल की ही बात कह सकता हूं इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। राय के उक्त शब्द किसी गंभीर चेतावनी के रूपक ही समझे जा सकते हैं जो बादल बरसने की गर्मी को देख कर ही कहे गए प्रतीत होते हैं। क्या भारत भी किसी अग्नि परीक्षा में प्रविष्ट होने जा रहा है ? यह प्रश्न है जो आज प्रत्येक विचार शील व्यक्ति की चिन्ता का विषय बन गया है समय ही इसका उत्तर देगा ?

को जहाज की छत पर ले गये जहाँ लाइफ बोट रखे थे। वहाँ उन्हें चूस-चूस कर उन्होंने छिलकों से लाइफ बोट भर दिये। दूसरे दिन जब कप्तान छत पर आया और लाइफ बोटों को छिलकों से भरा देखा तो हमारे भाइयों को बहुत बुरा भला कहने लगा।

सान फ्रांसिस्को नगर में एक बहुत उच्च कोटि का सिनेमा हाल था। उसके समूचे फर्श पर मखमल बिछी थी, जिससे चलने फिरने से किसी प्रकार का शोर न हो। प्रत्येक दर्शक को एक लड़की स्वयं साथ जा कर उसकी जगह बिठा आती थी। उस सिनेमा में उच्च कोटि के लोग ही जाते थे। पर भारतीयों को इस सिनेमा में जाने की अनुमति नहीं थी। पढ़े लिखे भारतीयों ने सिनेमा के स्वामी से इसके विरुद्ध अपील की। उस ने कहा 'तुम्हारे सिख मजदूर यहाँ आ कर बहुत असभ्यता करते हैं, यदि आप उनका दायित्व लें, तो मैं निषेधाज्ञा वापस लेता हूँ।' शिक्षित भारतीयों के दायित्व लेने पर सिनेमा में भारतीयों को भी जाने की अनुमति मिल गई।

एक दिन क्या हुआ कि कुछ सिख मजदूर खेतों में सिंचाई करके आये। उनके बूट घुटने तक कीचड़ से सने थे। सिर और दाढ़ी मिट्टी से भरी थी। सिनेमा का टिकट लेकर वे उसी प्रकार भीतर घुस गये। दर्शकों को उनके स्थान पर बैठाने वाली लड़की जब उन्हें उनकी जगह बैठाने चली, तो उसे धक्का मार उन्होंने अलग हटा दिया कि तुम हमें बैठाने वाली कौन? हटो परे हम आप ही बैठ जायेंगे।

उनके बूटों के कीचड़ से वह मखमल का कालीन सारा गन्दा हो गया। भीतर जाकर उन्होंने सिनेमा के पर्दे की ओर पीठ कर ली और कुर्सी पर पीछे के दर्शकों की ओर मुँह करके बैठ गये। जब किसी स्त्री का चित्र पर्दे पर आता तो वे आपस में जोर-जोर से हँसते हुये अश्लील शब्द बोलते। उनके शोर से दूसरे दर्शकों को बहुत कष्ट हुआ। सिनेमा वाला ने जब उन्हें रोकना चाहा तो वे बोले 'क्या हमने पैसे नहीं दिये?' जब उसने गुरुद्वारे को फोन किया कि अपने भाइयों की करतूत आकर देख जाओ तो दो-तीन पढ़े लिखे जिम्मेदार भारतीय उनको समझाने सिनेमा पहुँचे तो उनको देखते ही वे चिल्ला कर बोल उठे आ जाओ रे आ जाओ ...ड डर नहीं। हम टिकट आप ही ले ...। उनकी ऐसी कुचेष्टा और दुर्व्य... उनका माथा ... ...। बड़ी कठिनाइयों से उन ... समझाया जा सका।

इसलिये विदेश में पहले उच्च कोटि के भारतीय ही जाया करें तो अच्छा हो। निकृष्ट लोगों का डाला हुआ निकृष्ट संस्कार दूर करने में बाद को बड़ी देर लगती है।

अमेरिकन लोगों को नई बातें सीखने का बड़ा शौक रहता है। एक बार की बात है कि एक तालाब में विश्वविद्यालय के कुछ छात्र स्नान कर रहे थे। उनमें कुछ भारतीय छात्र भी थे। अमेरिकन छात्रों ने भारतीयों से कहा—अपने देश का कोई नया खेल बताओ।' इस पर एक भारतीय छात्र ने डुबकी लगाई और पेंदी में पहुँच कर मुट्ठी में ईंट का टुकड़ा या थोड़ी सी रेत उठा ली और पानी के ऊपर आ कर कहने लगा 'ये भागू तेली के खरबूजे हैं।' बस इस प्रकार डुबकी लगा कर ईंट, रोड़े या मिट्टी निकाल लाने का नाम 'भागू तेली के खरबूजे' खेल पड़ गया। दूसरे दिन वहाँ के स्थानीय अखबार में मोटे अक्षरों में छप भी गया—'नया भारतीय खेल, भागू तेली के खरबूजे'।

अमेरिका वालों को भारतीय पीतल का लोटा और खद्दर की चादर को मजीठ में रँग कर उस पर रेशम के धागे से काढ़े हुए बेल बूटे और फूल पत्ते बहुत अनोखी चीज लगते हैं। इसलिये वे ऐसे लोटे और गुलकारी सालू बड़े महंगे दामों पर भी चाव से खरीद लेते हैं। वे मशीन की बनी वस्तुओं की अपेक्षा हाथ से तैयार की हुई वस्तुएँ अपने ड्राइङ्ग रूम सजाने के लिए अधिक पसन्द करते हैं।

भारत और अमेरिका की संस्कृति में बड़ा अन्तर है। भारत के लोग पुरानी वस्तु को अधिक महत्व देते हैं। कोई धर्म, कोई ग्रन्थ, कोई रीति रिवाज जितना पुराना होगा, भारतीयों को उतना ही अधिक मान्य होगा। इसके विपरीत अमेरिका में अपटूडेट चीज को ही पसन्द किया जाता है। वहां घड़ी होगी तो अपटूडेट, वासकट होगी तो अपटूडेट और पुस्तक पसन्द की जायगी तो बिलकुल नये संस्करण की। वे पुराने को बोदा समझ कर नवीन को ग्रहण करने में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। पर हमारे यहाँ प्राचीनता की पूजा में, कुरीतियों के साथ चिपटे रहने में भी बड़ा गौरव माना जाता है।

☆

दैनिक सत्संग

ला. पूर्णचन्द एडवोकेट उपप्रधान सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज के प्रचार को प्रगति देने के लिये सार्वदेशिक सभा ने निश्चय किया है कि साप्ताहिक सत्संगों के अतिरिक्त दैनिक सत्संग भी हुआ करें जिसमें दैनिक सन्ध्या हवन संगीत प्रवचन लगभग एक घन्टे में हुआ करें। इस निश्चय के अनुसार आर्य समाज आगरा नगर ने भी दैनिक सत्संग की प्रथा को क्रियात्मक रूप देना प्रारम्भ कर दिया है। दैनिक सत्संग में उपस्थिति सम्प्रति २५,३० तक पहुँच जाती है। मेरा अपना अनुभव यह है कि दैनिक सत्संग होना अति आवश्यक है। अब यह पर्याप्त नहीं है कि केवल सप्ताह में एक बार मिलकर सात दिन तक फिर नाम न लिया जाय देश को अब आर्य समाज के प्रचार की अतिआवश्यकता है। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् स्वराज्य की रक्षा के लिये सदाचार और आस्तिकता की हर समय आवश्यकता है और सदाचार की वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि धर्म न केवल राजनीति और समाज सुधार को मर्यादित करने वाला हो परन्तु हर व्यक्तिगत और सामाजिक कार्य का आधार धर्म ही होना चाहिये। इसके लिये धर्म को सार्वजनिक रूप देने के लिये तर्क से सयोजित करना पड़ेगा। सम्प्रदायवाद से बचाना होगा और जब धर्म का सार्वजनिक रूप साम्प्रदायिकता से मुक्त होकर संसार के सन्मुख आयगा तो उस रूप में धर्म व्यवहारिक जीवन का अंग और आधार बन सकेगा और इस से संसार के सब सम्बन्ध परस्पर प्रेम में और मर्यादित हो सकेंगे। राजा प्रजा का सम्बन्ध राष्ट्र और नागरिकों का सम्बन्ध धनवान और निर्धनों का सम्बन्ध चाहे पूँजीपति या मजदूरों के सम्बन्ध हों चाहे जमींदार और किसानों के सम्बन्ध यह सब सम्बन्ध विचार आचार और व्यवहार की दृष्टि से शान्ति उत्पन्न करने वाले और उन्नति की ओर ले आने वाले होंगे।

ऋषि दयानन्द का उद्देश आर्य समाज की स्थापना से धर्म को प्रचलित सम्प्रदायवाद से बचाना और व्यवहारिक जीवन का अंग बनाना था और ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार यह आवश्यक है कि आर्य समाज में काम करने वाले दैनिक सत्संग में सम्मिलित होकर वैदिक धर्म के साँचे में अपने जीवन को ढालें और उसके लिये उसके सन्देश को दूसरों तक भी पहुंचा सकें। दैनिक सत्संग की विधि सार्वदेशिक सभा को निश्चित करके घोषित कर देनी चाहिये दैनिक यज्ञ किस प्रकार हो और किन २ मन्त्रों से हो यह निश्चय हो जाना चाहिये। जिससे समय भी कम लगे और उपयोगिता की दृष्टि से कोई कमी न रहे और प्रवचन के लिये भी कोई आधार और विधि ऐसी निर्धारित हो जिससे प्रत्येक समाज में यदि कोई प्रवचन करने वाला न भी हो तो उस लिखित पुस्तक से पढ़कर कार्य चलाया जा सके। प्रवचनों में यथा सम्भव क्रम होना चाहिये। जैसे हवन मन्त्रों की व्याख्या हो सन्ध्या के मन्त्रों की व्याख्या हो और सामाजिक प्रार्थना के मन्त्रों की, दैनिक प्रार्थना के आठ मन्त्रों को, इनमें से एक २ मन्त्रों को लेकर प्रति दिन व्याख्या की जा सकती है। ऋषि दयानन्द ने जो मन्तव्य और अमन्तव्य सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में लिखे हैं उन पर एक २ को लेकर विचार हो सकता है। आर्योद्देश रत्नमाला के एक रत्न पर विचार हो सकता है। उपस्थिति के बढ़ाने लिये विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। साप्ताहिक सत्संगों में भी सदस्य पर्याप्त संख्या में नहीं आते इसलिये आर्य समाज के उप नियमों में उपस्थिति का एक उप नियम रखना पड़ा। हमने यह देखा है कि महात्मा गाँधी को जो अपने प्रचार में सफलता हुई उसका एक कारण यही तो था कि उन्होंने सायंकाल के समय दैनिक प्रार्थना को अपने कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग बना लिया था। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों को अपने प्रचार में सफलता हुई वही उनका दैनिक मिलना था। दैनिक सत्संग को आवश्यक जीवन का अंग समझकर सबको सम्मिलित होना चाहिये। दैनिक सत्संग में न

माननीय शिक्षा मन्त्री का गुरुकुल वृन्दावन में

शुभागमन

२९.७-४९ शुक्रवार के मध्यान्ह २॥ बजे शिक्षा मन्त्री श्री बा० सम्पूर्णानन्द जी और शिक्षा विभाग के संचालक श्री आइनी महोदय, तथा जिलाधीश आदि तथा अन्य मान्य सज्जन गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में पधारे। गुरुकुल वासियों की ओर से श्री राष्ट्रगुरु सुरेन्द्रशास्त्री जी प्रधान सभा तथा प० धर्मपालविद्यालंकार सहायक मन्त्री सभा तथा प० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री कुलपति आदि ने उनका स्वागत किया। प्रारम्भ में 'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्' आदि वैदिक राष्ट्र गान प्रार्थना हुई। तदनन्तर जन मन गण अधिनायक आदि द्वारा राष्ट्रगीत तथा संस्कृत में ब्रह्मचारियों द्वारा सम्वाद व संस्कृत का अभिनन्द पत्र, दिया गया।

मा० शिक्षा मन्त्री जी ने अपना अभिनन्दन उत्तर देते हुये कहा "आर्य समाज ने संस्कृत के पुनरुद्धार के लिये उत्कृष्ट प्रयत्न किया है। तथा आर्य समाज की इस अनुपम सेवा को अस्वीकार करना भारी कृतघ्नता होगी। आम देश में बहुत से इस प्रकार के शब्द प्रचलित हैं जिनका ठीक २ अभिप्राय जानना कठिन है इसी प्रकार का एक वाक्य 'संस्कृत मृतभाषा' वाक्य है परन्तु यदि उसका यही अभिप्राय लिया जावे जो कि इस प्रकार के वाक्य का प्रयोग करने वाले अभिप्राय रखते हैं तो यह सर्वथा ही निरर्थक है। हिन्दू समाज उनके शताब्दियों की आपत्तियों और आघातों के होने पर भी अब तक जीवित रहा है और भविष्य में भी वह जीवित रहेगा। उसके साथ साथ २ जब तक हिन्दू मात्र के घरों में जन्म से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक सब संस्कार उनकी उपासना स्तुति आदि इस संस्कृत भाषा में रहेंगे तब तक संस्कृत मृत भाषा नहीं हो सकती। संस्कृत के राष्ट्र भाषा होने की क्षमता में मुझे लेशमात्र भी सन्देह नहीं क्योंकि किसी भी प्रान्त को प्रान्तीयता के नाते इसमें आक्षेप नहीं है। अभिनन्दन पत्र में काशी के संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की ओर संकेत किया है कुछ व्यक्ति काशी की पंडित मण्डली को रूढ़िवादी अप्रगतिशील कहते हैं। मैं काशी का रहने वाला हूँ, उन संस्कृत के विद्वानों के निकट सम्पर्क में रहता हूँ, उनकी मुझ पर कृपा है। मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि काशी के पंडितों में बहुत परिवर्तन हो गया है मनु भगवान के एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः के प्राचीन गौरव को प्राप्त करने के लिये उनके मन में दृढ़ अभिलाषा, तीव्र उत्कण्ठा तथा महत्वाकांक्षा है—संसार के गुरु होने की भावना है जो कि अत्यन्त आशा जनक है। परन्तु इसके साथ यह भूलना नहीं चाहिये कि समय बड़ा प्रबल है जिसके अनुसार शिक्षा पद्धति पठन पाठन शैली, तथा वैज्ञानिक आविष्कारोंके कारण कुछ परिवर्तन की आवश्यकता, है। समय के अनुसार उसे अर्थ करी शिक्षा बनाने की आवश्यकता है। न सब पुरातन ही उत्तम है न सब नवीन ही उत्तम है। वर्तमान सभी वैज्ञानिक सिद्धान्तों को प्राचीन ग्रन्थों में ढूंढने की प्रवृत्ति कुछ लाभ जनक नहीं है यदि कहीं वैज्ञानिक सिद्धान्त भविष्य में गलत सिद्ध हुआ तो निरन्तर उनके अर्थ करने से प्राचीन सत्य ग्रन्थों का महत्व नष्ट हो जायगा। इसलिये संस्कृत के प्रेमियों का कर्तव्य है कि वे सब प्राचीन तत्वों को ठीक २ यह मानकर समय के अनुसार अपने आपको ढालने का भी यत्न करें। अन्तमें आपने ऋषिदयानन्द और आर्य समाज तथा गुरुकुलों द्वारा इस ओर प्रगतिकी अत्यन्त सराहना की।

आने के तीन कारण हो सकते हैं १—स्वास्थ्य सम्बन्धी २—व्यवसाय सम्बन्धी ३—स्वभाव सम्बन्धी। जो स्वभाव के कारण प्रात. काल जल्दी नहीं उठते या उठते ही दैनिक पत्र पढ़ने में लग जाते हैं उनको तो अपना स्वभाव बदलने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिये और केवल स्वभाव के कारण यदि वो दैनिक सत्संग में नहीं आते तो पुरानी बात है। जिनको व्यवसाय सम्बन्धी अड़चन है अपितु जिनको इसी पर सब समय जाना है उनके लिये कठिनाई अवश्य है। स्वास्थ्य सम्बन्धी अड़चन भी ऐसी हो सकती है। फिर भी यदि सदस्यों में श्रद्धा हो और वे दैनिक सत्संग में आना व्यवसाय समझें तो हर प्रकार की अड़चनों को हटा सकते हैं। जिन समाजों ने अभी तक दैनिक सत्संगों का प्रबन्ध न किया हो उनको प्रतिदिन आरम्भ कर देना चाहिये छोटी समाजों के लिये दैनिक सत्संग व पिकोरसब से भी अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

★ ★

संयुक्त प्रान्त में वेद प्रचार

श्री स्वामी इष्टानन्द जी महाराज ८ से १६ अगस्त, कथा आ स. बाँदा।

व्याख्यान वाचस्पति श्री पंडित रामदयालु जी शास्त्री अवैतनिक उपदेशक, १५ व १६ अगस्त, प्रचार आ. स. सासनी (अलीगढ़)।

श्री प० रामेश्वर दयालु श्री शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि अवै. उप., ८ से १६ अगस्त कथा आ. स. आगरा नगर।

प० रामचन्द्र जी आर्य पुरोहित अवै. उप ८ से १६ अगस्त कथा आ. स. अलीगढ़।

पं० सत्य मित्र जी शास्त्री महोपदेशक ८ से १६ अगस्त कथा आ. स नगीना।

प० महादेव प्रसाद जी शास्त्री उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ. स. पूरनपुर।

प रूपनारायण जी शर्मा उपदेशक ८ से १६ अगस्त कथा आ स. खागा।

प० लक्ष्मणदेव जी उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ स. गोलागोकरननाथ।

प० राजेन्द्र देव जी उपदेशक ८ से १६ अगस्त कथा आ. स. हमीरपुर।

प० सोमदत्त जी शर्मा उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ स. फतेहपुर गयन्द।

प० रामकौशिक जी उपदेशक ८ से १० अगस्त, कथा आ. स. सरायतरीन हयातनगर।

प० शिवनारायण जी वेदपाठी उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ स. शाहजहाँपुर।

प० श्यामाचरण जी उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ. स. बहराइच।

पं० धर्मराज सिंह जी उपदेशक ८ से १६ अगस्त, कथा आ. स. इटावा।

म० भवर्णसिंह जी प्रचारक ८ १६ अगस्त, प्रचार आ स. बहजोई।

म० मुकन्दराम जी शर्मा प्रचा० ८ से १२ अगस्त, प्रचार आ स. शाहाबाद (हरदोई), १६ से १८ अगस्त, प्रचार आ. स. कुंदार।

म० गंगाशरण जी वैरागी प्रचारक ८ से १६ अगस्त, प्रचार आ स. इटावा।

म० गोविन्द राम जी शर्मा प्रचा. ८ से १६ अगस्त प्रचार आ. स. सरायतरीन हयातनगर।

म० व्रजबहादुर जी प्रचा० ८ से १६ अगस्त, प्रचार आ. स. फैजाबाद।

म० धर्मदत्त जी आनन्द प्रचारक १६ से १८ अगस्त, प्रचार आ. स. पीलीभीत।

म० सवगुण प्रसाद जी प्रचा० ४ से ८ अगस्त, प्रचार आ. स. नवाबगंज।

म० बालकृष्ण जी शर्मा प्रचा० ८ से १६ अगस्त, प्रचार आ. स गोलागोकरन नाथ।

म० महेशानन्द जी प्रचारक ८ से १६ अगस्त, प्रचार आ. स. नगीना।

म० देवव्रत जी प्रचारक ८ से १६ अगस्त, प्रचार आ स. हमीरपुर।

म० महादेव प्रसाद जी प्रचा० ७ से ६ अगस्त, मेला प्रचार, द्वारा आ. स. बलिया, ११ से १६ अगस्त प्रचार आ. स चौक प्रयाग।

म० मानसिंहजी शर्मा प्रचारक ८ से १६ अगस्त प्रचार आ० स० फतेहपुर और खागा।

म० महिपालसिंह जी प्रचारक १५ व १६ अगस्त प्रचार आ. स. सासनी अलीगढ़।

म० भगवानदत्त जी शर्मा प्रचा. ८ से १६ अगस्त प्रचार आ. स. कटरा प्रयाग।

म. हुकमसिंह जी प्रचारक ८ से १६ अगस्त प्रचार आ. स. जीरपुर।

नोट—सभा के समस्त उपदेशक, प्रचारक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह सप्ताह का प्रोग्राम समाप्त करने के बाद अपने २ मंडलों में प्रचारार्थ पहुँचने का कष्ट करें।

रामदत्त शुक्ल
अधि० उप० विभाग
आर्यप्रतिनिधि सभा यू० पी०

★ ★

रणवीर स्वर्ण जयन्ती सप्ताह

श्री रणवीर हाइयर सेकन्डरी स्कूल अमेठी राज्य में स्वर्गीय राजकुमार श्री रणवीर सिंह जी की ५० वीं. जन्म तिथि के अवसर पर १५ से २१ जुलाई तक श्री रणवीर स्वर्ण जयन्ती सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया। राजकुमार श्री रणवीर सिंह जी ने केवल २१ वर्ष के अल्प जीवन में ही बड़े २ आश्चर्य जनक कार्य किये थे। छोटी अवस्था से ही वे कहानी उपन्यास तथा कवितायें लिखने लगे थे। आपने बहुत सी धार्मिक सामाजिक तथा साहित्यिक सभाएँ और पाठशालाएँ स्थापित की थी? वे अच्छे लेखक कवि और वक्ता थे।

इस सप्ताह के कार्यक्रम में अनेक प्रकार के खेल तथा विविध सम्मेलन सुप्रसिद्ध विद्वानों की अध्यक्षता में हुए हैं, जिन में हि० सा० सम्मेलन के भू० पू० प्रधान सम्पादकाचार्य जी अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा सम्मेलन, संयुक्त प्रा० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री, न्यायभूषण की अध्यक्षता में आर्य संस्कृति सम्मेलन, महाकवि 'सिरस' की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन तथा श्री देवकी दीन शर्मा की अध्यक्षता में समाज सुधार सम्मेलन विशेष उल्लेखनीय है। स्वर्ण जयन्ती सप्ताह का उदघाटन राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री ने किया।

१७ जुलाई को राष्ट्रभाषा सम्मेलन का उदघाटन माननीय राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने किया। लगभग १५००० जनता के समक्ष राजर्षि महोदय ने भाषण करते हुए कहा कि हिन्दी १४-१५ करोड़ जनता की मातृभाषा है और २४-२५ करोड़ जनता इसे भली भाँति समझती है। राष्ट्रभाषा के ऊपर ही देश की संस्कृति निहित है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी के द्वारा ही देश को स्वराज्य मिला है। महात्मा जी ने कहा था कि मेरे लिए तो हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।" हिन्दी ने जनता के हृदय में स्वराज्य के लिए अनुराग उत्पन्न किया है। उर्दू या हिन्दुस्तानी भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। वह अन्य देश का प्रेम सिखाती है। बहुत से लोग अलग संस्कृति का स्वप्न देखते हैं। इस देश में १० संस्कृतियां चलें यह मूर्खता है। यहां एक ही संस्कृति चल सकती है। हिन्दी भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। यदि कांग्रेस ने उसका विरोध किया तब वह अपनी शक्ति खो देगी। जन मत की अवहेलना कोई कर नहीं सकता।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन के पश्चात् युवराज श्री रणञ्जय सिंह जी एम० एल० ए० [केन्द्रीय] ने राजर्षि श्री टण्डन जी का स्वागत करते हुए हिन्दी को राज भाषा बनाने के लिए बल दिया तथा श्री टण्डन जी को मान पत्र भेंट किया। सम्पादकाचार्य बाजपेयी जी का भाषण भी महत्वपूर्ण था। सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि हिन्दी राजभाषा तथा देवनागरी राजलिपि हो। सम्मेलन के उपरान्त राजर्षि महोदय राजभवन पधारे और हस्तलिखित पुस्तकों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा श्री जंगबहादुर सिंह पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

अन्तिम दिन श्री युवराज रणञ्जय सिंह जी की अध्यक्षता में सभा हुई उसके उपरान्त पारितोषिक वितरण किया।

इस अवसर पर हस्तलिखित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी महत्वपूर्ण रही।

★ ★ ★

गुरुकुल महेश्वर (निर्वाचन)

श्री सुखदेव जी पटेल प्रधान देवदत्तजी उपप्रधान देवदत्त जी हीरालाल जी कुश्वा उप प्रधान श्री मान बाबूलाल जी आर्य मन्त्री श्री मान मुकुन्द जी रामा जी कोषाध्यक्ष श्री मान चम्पा लालाजी उप मन्त्री श्री मान मुरार जी लाला जी व्यवस्थापक।

शोक समाचार

आर्य जगत् को यह जानकर दुःख होगा कि कुबेर इन्टर कालेज बिदाई के हिन्दी अध्यापक श्री पं० शान्ति नन्दनजी एम. ए. का कालरा से स्वर्गवास हो गया।

पं० शान्ति नन्दन जी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे उन्होंने बड़ा उच्च शिक्षा अपने ही श्रम की से करीब तीन विषयों में एम. ए. किया और डो. लिट्ट की तैयारी में थे कि क्रूर कृतान्त ने उद्यान उजाड़ डाला।

पंडित जी ने अपने विद्यार्थी जीवन से ही इस जिले (बदायूँ) में आर्य कुमार सभा के द्वारा, तथा जिलोपसभा के द्वारा वैदिक धर्म की जो सेवा की है वह उन्हें चिरस्मरणीय बनाने वाली है। वह वर्षों कुमार सभा, जिलोपसभा के मंत्री रहे और आर्य समाज के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा थी।

उनकी मृत्यु से उनके वृद्ध पिता तथा पत्नी और ५ बच्चे असहाय हो गये हैं।

पंडित जी हिन्दी के अच्छे लेखक और कवि भी थे उनके लेख और कवितायें पत्रों में बड़े आदर के साथ छापी जाती थीं उनके स्वर्गवास से आर्यसमाज की भारी क्षति हुई है।

आवश्यकता

एक आर्य अनुभवी योग्य ट्रेंड सहायक अध्यापक की है। जो हिन्दी गणित भूगोलादि विषयों को भली भाँति पढ़ा सके। प्रार्थना पत्र के साथ न्यूनतम वेतन क्या स्वीकार होगा। (उल्लेख करें)

पता—प्रबन्धक—आर्य संस्कृत विद्यालय, बिलासपुर-रामपुर स्टेट जिला मुरादाबाद

१०० रु० इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ठ की अद्भुत जड़ी जिसके चन्द रोज़ के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर वैद्य कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो -) का टिकट भेज करके शर्त लिखा लें। गुण हीन होने पर १००) इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०। मूल्य पेशगी भेजने से आधा दाम माफ़।

पता—वैद्यराज सूर्यनारायण सिन्हा हब्बीपुर पो० एकंगरसराय (पटना)

आरोग्य-वर्धक

२० साल से दुनिया भर में मशहूर

मदन मंजरी गोलियां

कब्जियत दूर करके पाचनशक्ति बढ़ाती हैं, दिल, दिमाग को ताकत देती हैं और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल बुद्धि आयु बढ़ाती हैं। डि० रु० १।)

गर्भामृत चूर्ण

प्रदर ऋतुदोष, गर्भाशय की सूजन, प्रसूति रोग बन्ध्यत्व व कमजोरी दूर करके शरीर को सम्पूर्ण तन्दुरुस्त बनाता है। मू० रु० ७॥)

मदनमंजरी फार्मेसी आर्मिनगर कलकत्ता ब्रांच—१७७ हरिसनरोड लखनऊ मातावदल पसारी, अमीनाबाद

वर चाहिये

एक १४॥ वर्षीय गहोई वैश्य (अग्रवाल) वसल गोत्रीय स्वस्थ सुन्दर सिद्धान्त रत्न उत्तीर्ण गृह कार्य में हर प्रकार दक्ष कन्या के लिये योग्य वर चाहिये। वर स्वस्थ सुन्दर सुशिक्षित आयु २०,२२ वर्ष कुमार वैदिक धर्म वैश्य मात्र हो। कन्या एक प्रसिद्ध कुलीन ग्रामीण आर्य परिवार से है, विवाह पूर्ण वैदिक रीति से होगा। कृपया अधिक धन के इच्छुक व असत्यवादी सज्जन पत्र लिखने का कष्ट न करें।

रामदेव शास्त्री
ग्राम भटपुरा पो० असमोली
(मुरादाबाद)

"दमा" और पुरानी खाँसी के रोगियों। नोट कर लो

६-१०-४९ (अब चूके तो फिर साल भर तक पछताओगे) 6-10-49

हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत विख्यात महौषधि चित्रकूट बूटी के दो हजार पैकट आश्रम में रोगियों को मुफ्त बांटे जावेंगे, व (शरद पूर्णमासी) ता० ६ अक्तूबर को एक ही खुराक जोर में खाने सेवदा के लिए इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। बाहर वाले रोगी जो समय पर यहां न आ सकें। वह सदा की तरह २।=) २ विज्ञापन रजिस्ट्री आदि खर्च अभीसे मनीआर्डर भेज कर तुरन्त मंगा लें। जिस में समय पर सेवन करके पूरा लाभ उठा सकें। देर करने से फिर गत वर्ष की तरह सैकड़ों को निराश होना पड़ेगा, नोट कर लें कि—वी० पी किसी को नहीं भेजी जाती है। अमीर आदमी धर्मार्थ बाँटने के लिए कम से कम २५ आदमियों के लिये ४०) भेजें। जल्दी करें।

पता—रायसाहब-के०एल०शर्मा रईस आश्रम (२) "जगाधरी" पूर्वपंजाब

अवध के वितरक — एस एस मेहता एण्ड को०, २०, ३९ औरामरोड लखनऊ

आवश्यकता

मेरा एक लड़का २४ वर्ष का व एक लड़की सोलह वर्ष की विवाह योग्य हो गये हैं। लड़का Imperial Bank Gorakhpur में १५०) मासिक वेतन पाता है, हृष्ट पुष्ट व सुन्दर है। जात-पात का कोई विशेष बंधन नहीं। वैश्य मात्र होना चाहिए।

लड़की के वास्ते वर Intermediate से कम पास न हो। अगर नौकरी करता हो तो और अच्छा है।

पता—छुन्नूलाल, अलीनगर, (गोरखपुर)

उत्कृष्ट पुस्तकें

१. वैदिक सम्पत्ति (सजिल्द)	६)
२. गीता-रहस्य (तिलक) १॥) छो व.	११)
३. सत्यार्थ प्रकाश १॥।) उर्दू	३)
४. दृष्टान्त सागर सजिल्द	२॥)
५. सच्ची देवियाँ सजिल्द	१)
६. दयानन्द चरित्र	२॥)
७. चाणक्य नीति	।।।)
८. सुमन सग्रह (प.बिहारी लाल)	२)
९. सत्य नारायण की कथा	॥)
१० धर्मशिक्षा ≶) प्रति	१२) सैकड़ा
११. आर्य सत्संग	।=)
१२. पाक विज्ञान सजिल्द	३)
१३. नारी धर्म विचार	१।)
१४ स्त्री हित उपदेश	।।।)
१५. संगीत रत्न प्रकाश सट	३॥)
१६ भारत वर्ष का इतिहास सचित्र	॥=)
१७. मुसाफिर भजनावली	१।)

हवन कुण्ड लोहा १।), तांबा ३), हवन-सामग्री १।) सेर, जनेऊ १।) कोडी

इसके अलावा हर प्रकार की पुस्तकों के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखिए। पता बहुत साफ साफ लिखिए।

श्याम लाल वासुदेव भारतीय
आर्य पुस्तकालय बरेली

सुन्दर, तथा सन्तोषजनक

छपाई के लिए
भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस,
लखनऊ में
पधारिए

अदालती नोटिस

सम्मन

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिए]

समन बगरज इनफिसाल मुकद्दमा (आर्डर ५, कायदा १ व ५ मजमूआ जाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई०)

न० मुकद्दमा

बअदालत जनाब जुडीशियल मजिस्ट्रेट साहब बहादुर न० २ मुकाम लखनऊ जिला लखनऊ।

हसई बनाम अर्जुनसिंह वगैरह।

मुद्दई

बनाम

अरजुनसिंह वल्द दलजीतसिंह ठाकुर साकिन मौजा परठिया परगना व तहसील मोहनलालगंज जिला लखनऊ।

मुद्दाअलेह।

वाजेह हो कि मुद्दई ने आपके नाम एक नालिश बाबत् दफा १८३ दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख २६ माह अगस्त सन् १९४९ ई० बवक्त १० बजे दिन बमुकाम लखनऊ असालतन या मार्फत वकील के जो मुकद्दमा के हालात से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिका मुकद्दमा का जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्श हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हूजिये और जवाबदिही दावा की कीजिए। और हरगाह वही तारीख जो आपकी हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कतई मुकद्दमा के तजवीज हुई है। पस आपको लाजिम है कि उस रोज अपने जुमला गवाहों को जिनकी शहादत पर नीज जुमला दस्तावेजात जिस पर आप वताईद अपनी जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हैं उसी रोज पेश कीजिये।

और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर होंगे तो मुकद्दमा बगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसल होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज बतारीख को जारी किया गया।

मोहर अदालत बदस्तखत—कलेक्टर

मुद्रक तथा प्रकाशक—डा० जगन्नाथप्रसाद भगवानदीन द्वारा भास्कर प्रेस लखनऊ

पाकिस्तान से लौटने वाले मुसलमानों को भी नागरिकता का अधिकार प्राप्त

नागरिकता सम्बन्धी ६ धाराएं मूल रूप में स्वीकृत

नयी दिल्ली, १२ अगस्त। भारतीय धान परिषद म तीन दिन की न के बाद ... धाराएं स्वीकृत हा ीं जिनमें कि भारतीय नागरिकता की रेभाषा की गयी थी। और नागरिकता शता का ब्योरेवार उल्लेख किया गया ।

इन धाराओं पर होनेवाली बहस का ... गणेश प० जवाहरलाल नेहरू ने र अन्त डा० अम्बेदकर ने किया। समें बहुत से प्रमुख सदस्यों ने भाग या।

उक्त ६ धाराओं के अन्तर्गत भारत में शुरू से रहने वाले पाकिस्तान आने वाले शरणार्थियों, भारत सर र से स्थायी अनुमति पत्र लेकर पाकि- ान से वापस होने वाले निष्क्रांतों तथा देशों में रहने वाले भारतीयों भारतीय नागरिकता, अधिकार कायम रहने तथा पार्लिया- को नागरिकता नियमों में परिवर्तन ने का अधिकार देने का विधान ा।

नागरिकता सम्बधी धाराओं में यत: पाकिस्तान से लौटने वालों को ारिकता अधिकार देने का विरोध ा। आलोचकों की दलील यह थी कि इससे हिन्दुओं और सिक्खों के साथ अन्याय होगा और निष्क्रान्त सम्पत्ति की व्यवस्था में गड़बड़ी होगी।

उक्त आपत्ति का उत्तर पंडित नेहरू, श्री अल्लादी कृष्ण स्वामी अय्यर, पंडित कुंजरू, श्री गोपाल स्वामी आयंगर तथा डा० अम्बेदकर ने दिया।

उक्त धारा के पक्ष में बोलनेवाले लगभग सभी प्रवक्ताओं ने विरोधियों की इस दलील के उत्तर में कि इससे निष्क्रांत सम्पत्ति की व्यवस्था में गड़बड़ी पड़ेगी, कहा कि नागरिकता और सम्पत्ति के प्रश्न एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं।

डा० अम्बेदकर के भाषण के बाद इस धारा पर पेश होनेवाले बीसियों संशोधनों का फैसला करने में २० मिनट लगे।

डा० देशमुख, प्रो शिब्बन लाल सक्सेना, श्री नजीरुद्दीन अहमद तथा श्री जसपत राय कपूर ने अपने संशोधन वापस ले लिया। ठाकुर दास भार्गव के सभी संशोधन तथा अन्य सदस्यों द्वारा उपस्थित शेष संशोधन अस्वीकृत हो गये और नागरिकता सबंधी ६ धाराएं मूल रूप में स्वीकार कर ली गयीं।

... हटाकर हिंदी को राजभाषा घोषित करने में जल्दबाजी करने का इन तीनों ...ों ने विरोध किया इसके विपरीत ... के समर्थक प्रांतों के प्रतिनिधियों ने बात पर जोर दिया था कि अंग्रेजी ... स्थान पर १५ वर्ष बाद हिंदी तभी ... भाषा हो सकेगी यदि अभी से प्रत्येक ... में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का ...: अधिकाधिक प्रयोग आरम्भ कर ... जाय।

भाषा समिति के सदस्य सर्व श्री संथानम, श्यामाप्रसाद मुकर्जी, पुरुषोत्तम दास टंडन, बालकृष्णशर्मा 'नवीन' घन- श्यामसिंह गुप्त और राजकुमारी अमृत- कौर हैं। यह समिति मसविदा समिति के सदस्यों से विचार विमर्श करके अन्तरिम काल की व्यवस्था के लिए विधान में जोड़ी जाने के लिए एक धारा तैयार करेगी।

टंडनजी ने अनुरोध किया कि जिस दिन भारत का नया विधान लागू हो उसी दिन राष्ट्रभाषा की घोषणा भी होनी चाहिए।

★ ★ ★ ★

...बेल पुरस्कार श्री अरविंद को मिले

बम्बई ... ज्ञात हुआ है कि नोबुल पुर- ... पाने वाली मैडम गेब्रीला मिस्ट्रल श्रीमती ... नोबुल के पुरस्कार के लिए श्री अरविंद ... गोपाल स्वामी आयंगर, श्री गाडगिल श्री जयरामदास दौलतराम, डा मुकर्जी, श्री नियोगी, श्री ... श्री जगदुलाल त्रिवेदी, श्री पट्टाभि प० पन्त, श्री श्रीकृष्णसिंह श्री खेर, कई राज्यों के राजप्रमुख ... विश्वविद्यालयों के कुलपति, आचार्य कृपालानी तथा श्री तुषार ... उपयुक्त आशय ... का समर्थन किया है

★ ★ ★

बेझर को छोड़, अन्य सभी अन्न खुले बाजार में बिकने बन्द

व्यापारियों के स्टाक सरकारी मूल्य पर खरीद लिये जायेंगे

राशन वाले नगरों में पहली सितम्बर से पूरी राशनिंग

प्रान्त के खाद्यमन्त्री श्री चन्द्रभानु गुप्त द्वारा नयी राशन नीति की घोषणा

लखनऊ, १२ अगस्त। आगामी ६ सितम्बर से प्रांत के राशनिंग वाले शहरों कस्बों में केवल मक्का और बेझर (जौ चना व जौ मटर की मिलावट) को छोड़कर शेष सभी प्रकार के खाद्यान्न की खुले बाजार में बिक्री बन्द कर दी जायगी। राशन कार्ड पर प्रति यूनिट छः छटाँक मिलने वाले राशन के मोटे अन्न में १ छटाँक की वृद्धि कर कुल राशन ७ छटाँक प्रति यूनिट हो जायगा। और राशनिंग क्षेत्रों में आने वाले अतिथियों के लिए १५ घन्टे के अन्दर तीन दिनों के लिए अस्थायीराशन कार्ड दिये जाया करेंगे राशन व्यवस्था में उपयुक्त महत्वपूर्ण परिवर्तनों की घोषणा आज खाद्यमन्त्री श्री चन्द्रभान गुप्त ने एक पत्रकार सम्मेलन में की।

पूर्ण राशनिंग चालू करने के लिये युक्त प्रांतीय खाद्यान्न राशनिंग आदेश प्रकाशित किया जा रहा है जो आगामी १ सितम्बर से लागू हो जायगा। इस १५ दिन की अवधिमें व्यापारी, बैंक इत्यादि अपनी उचित व्यवस्था कर लेंगे। आदेश की मुख्य बातें ये हैं —

१ — राशनिंग वाले कस्बोंमें आने वाले अतिथियों के लिए पहले दो दिन से तीन दिन के लिए अस्थायी राशन कार्ड बन जायेंगे। बादमें राशन दफ्तर द्वारा अवधि बढ़ा दी जायगी। यह सुविधा उन नवागन्तुकों को न दी जायगी जो किसी के घर न आकर केवल भ्रमण के लिए आयेंगे। इसके अतिरिक्त बाहर से आने वाले अपने साथ ५ सेर तक गल्ला ला सकेंगे।

२—वे पदार्थ जिनकी खुली बिक्री बन्द करदी जायगी ये हैं—गेहूँ, चावल (जिसमें धान भी शामिल है) चना, जौ, बाजरा, और ज्वार तथा उनसे बनी हुईया उनकी मिलावट की चीजें (केवल बेझर को छोड़कर), सूजी, मैदा लेप्सी चूरा है।

बेझर में, जो कि खुले बिक सकेगी, चना और जौ में से प्रत्येक की मात्रा कम से कम ३० प्रतिशत होनी चाहिए। यदि वह जौ व मटर की मिलावट है तो उसमें मटर की मात्रा कुल बेझर की ७० प्रतिशत से कम न होगी। यदि जौ व चना की मात्रा उपयुक्त सीमा से अधिक है तो वह मिलावट खुले बाजार में न बिक सकेगी।

३—पूर्ण राशनिंग आमतौर से १ सितम्बर से आरम्भ होगी पर जिला अधि- कारियों को अपनी सुविधानुसार उसकी तिथि बढ़ाने का अधिकार होगा।

४—पूर्ण राशनिंग व्यवस्था लागू होने के समय व्यापारियों के पास जितना भी गल्ला होगा वह सब सरकारी खरीद के भाव पर लेलिया जायगा।

आगरा, रुहेलखंड इलाहाबाद, लखनऊ, मेरठ (देहरादून छोड़कर) कुमायूँ (अल्मोड़ा, नैनीताल, गढ़वाल के जिले छोड़ कर) तथा फैजाबाद (गोंडा व बहराइच जिले छोड़ कर) कमिश्नरियों के राशन में ५ छटाक गेहूँ १ छटाक चावल या उसके स्थान पर गेहूँ या अन्य राशन का अन्न तथा २ छटाक मोटा अन्न अर्थात कुल ७ छटाक मिलेगा।

देहरादून अल्मोड़ा, नैनीताल, और गढ़वाल के पहाड़ी जिलों, बनारस गोरखपुर कमिश्नरियों तथा गोंडा व बहराइच में गेहूँ ३ छटाक, और चावल २ छटाक या उसके स्थान पर अन्य अन्न दिया जायगा। इस प्रकार प्रांत का चावल खाने वाली जनता का ध्यान रखा गया।

खाद्यमन्त्री ने बतलाया कि इस वर्ष युक्तप्रांत केन्द्र को ५० हजार टन चावल, ६ हजार टन जौ और ८ हजार टन चना देगा, बदले में उसे २ लाख ६७ हजार टन गेहूँ मिलेगा। खाद्य मन्त्री ने बतलाया कि प्रांत में चावल खाने की आदत कम होती चली जा रही है। पिछले वर्षों प्रतिदिन युक्तप्रांत में ८ हजार टन चावल खाया जाता था जब कि इस वर्ष केवल ४॥ हजार टन चावल की खपत हुई है।

५४ और नें कस्बों में राशनिंग

खाद्य मन्त्री ने बतलाया कि पिछली बार राशनिंग योजना के अन्तर्गत हमने ७२ नगरों को शामिल किया था। इस बार अभी १५ और नगरों व म्युनिसि- पल्टियों में राशनिंग कर रहे हैं। राशनिंग नगरों की संख्या बराबर बढ़ रही है

(शेष पृष्ठ १५ में)

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

वयं स्याम यशसः जनेषु
ऋ० ४।५१।२१
हम सब मनुष्यों में यशस्वी हों ।

ता० १८ अगस्त १९४९

स्वतन्त्रता का तृतीय वर्ष

संसार व्यापी महायुद्ध के अनन्तर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक के परिणाम स्वरूप भारतीय स्वतन्त्रता के जीवन के २ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। तृतीय वर्ष प्रारम्भ होने जा रहा है। देश में घटित हो रही बहुत सी घटनायें और चिन्ह यह प्रकट कर रहे हैं कि आने वाला आगामी वर्ष अपने पूर्ववर्ती वर्षों की अपेक्षा भारत के भावी राजनैतिक स्वरूप को न केवल न्यूनाधिक स्पष्ट करने वाला ही होगा अपितु अत्यन्त महत्वपूर्ण भी सिद्ध होगा। संसार के सभी स्वतन्त्रता के प्रेमी, प्रजातन्त्र शासन पद्धति के सिद्धान्त के अनुशीलन कर्त्ता विद्यार्थी तथा राष्ट्र संघ (कामनवेल्थ) के सदस्य अन्य सभी देश जिनके सहयोग के कारण भारत का प्रगति की आशा की जाती है, भारत की गतिविधि को आशंकामिश्रित आशा से देख रहे हैं।

भारत की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस में, जिसके नेतृत्व में देश प्रगति कर रहा था, आन्तरिक न्यूनताओं के कारण विनाशात्मक चिन्ताजनक चिन्ह प्रकट होने लगे हैं। अनेक असम्भव प्रतिज्ञाओं के पूर्ण न हो सकने से देश में असन्तोष बढ़ रहा है, सुखस्वप्न टूट रहा है। संस्था में ही शक्ति व उच्च स्थान प्राप्त करने के लिये व्यक्तिगत झगड़े, पारस्परिक स्पर्धा और आन्तरिक भेद व विद्रोह प्रारम्भ हो चुका है। प्रजातन्त्र के सिद्धान्त की दृष्टि से स्वभावतः ही इस प्रकार की मनोवृत्ति को अनिवार्य रूप से अस्वास्थ्य कर दशा उत्पन्न करने वाला नहीं कहा जा सकता। चाहे कितना ही योग्य और उत्तम व्यक्तियों का राजनैतिक दल क्यों न हो, किसी प्रकार भी स्थायी रूप से एक दलीय शासन को वाञ्छनीय नहीं समझा जा सकता है। वस्तुत स्वयं एक दलीय शासन का विचार मात्र ही प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली के मौलिक सिद्धान्त का विरोधी और स्वतन्त्रता का विघातक है।

इतना होने पर भी भारत की वर्तमान राजनैतिक प्रगति अनुत्साह जनक नहीं है। प्रधान मन्त्री पं० नेहरू जी तथा कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी ने बम्बई, पश्चिमी बङ्गाल तथा युक्त-प्रान्त की कांग्रेस की अन्तःस्थिति तथा कांग्रेस के प्रति परिवर्तित होनेवाली जनता की मनोवृत्ति का अध्ययन कर देश में नवजीवन संचार के लिये कार्यकर्ताओं के आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है। इसीलिये बम्बई कांग्रेस के प्रधान श्री एस० के० पाटिल के परामर्श पर कांग्रेस का रचनात्मक कार्यक्रम के आधार पर पुनर्जीवित किया जा रहा है। बिहार और युक्त प्रान्त में भी इसी प्रकार के प्रयत्न हो रहे हैं। इससे आशा होती है कि कांग्रेस के सार्वजनिक कार्य में अभिरुचि रखने वाले कार्यकर्ता अपनी न्यूनताओं तथा अदूरदर्शिता पूर्ण कार्यों से पृथक होकर अत्यन्त शीघ्रता से परिवर्तित होते हुये समय के अनुकूल अपने आपको कर सकेंगे और आन्दोलन कारी मनोवृत्ति को छोड़कर देश को कल्याण मार्ग में प्रवृत्त कर सकेंगे। कांग्रेस की कार्य कारिणी ने बङ्गाल में, जो कि एक विशेष प्रकार की समस्या का प्रान्त है, नवीन निर्वाचनों का निर्णयकर बुद्धिमत्ता का ही कार्य किया है। पिछले शासन विधान के अनुसार मतगणना का क्षेत्र सीमित होने पर भी, तथा प्रान्त में विशेष उत्तेजना होने के कारण झगड़ा हो जाने की आशंका होने पर भी, नवीन चुनावों का निर्णय कर बुद्धिमत्ता का ही कार्य किया है। उक्त निर्णय स्वस्थ मनोवृत्ति का परिचायक है। बङ्गाल में चुनाव के निर्णय का चाहे कुछ ही परिणाम क्यों न हों परन्तु प्रजातन्त्र के सिद्धान्त की दृष्टि से प्रान्त की वर्तमान अनिश्चित तथा निराशाजनक स्थिति में आ पड़ने की अपेक्षा उत्तम परिणाम निकलने की ही आशा की जाती है।

लगभग गत १॥ वर्षों में राजनैतिक गिरफ्तारियों की अधिकता तथा गिरफ्तारियों के प्रकार से स्वतन्त्रता के पददलित किये जाने का आक्षेप अनेक प्रसिद्ध न्याय विशेषज्ञों द्वारा भी किया जाने लगा था परन्तु अब स्वदेशीय सरकार की समालोचना का उतना अवसर नहीं रहा है जितना कि पहिले था। देहली के अभियोग के अनन्तर समाजवादी नेता कारागार से मुक्त कर दिये गये हैं, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर से प्रतिबन्ध हटालिया गया है तथा अधिकतर अकाली नेताओं को भी जेल से मुक्त कर दिया गया है।

इस तृतीय वर्ष के अत्यधिक प्रभाव शाली और परिवर्तन कारी वर्ष होने की सम्भावना इसलिये है कि शीघ्र ही भारतीय विधान भी पूर्ण हो जायगा। उसके आधार पर साधारण निर्वाचन के लिये अनेक राजनैतिक दल अभी से उद्योग कर रहे हैं। जनता की बढ़ती हुई साधारण निराशा को सुगमता से दूर नहीं किया जा सकता है। प्रथम तो आशायें ही इस प्रकार की दिला दी गई थी जिनका पूरा किया जाना सहल व सम्भव न था, दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय जगत् की आर्थिक व्यवस्था ही, युद्ध के अनन्तर इतनी अस्थिर तथा आशंका जनक हो उठी है कि उसका दुष्प्रभाव भारत जैसे नवीन स्वतन्त्रता प्राप्त देश पर बहुत अधिक हुआ है। परिणाम यह है कि जनता का आर्थिक कष्ट बढ़ता जाता है। यही असन्तोष और कम्यूनिज्म के असन्तुलित प्रभाव की वृद्धि में सहायक हो रहा है। इस बढ़ते हुये महान असन्तोष की वृद्धि का एक कारण और भी है और वह देश में एक 'दलीय शासन' का स्थापित हो जाना है। इस प्रकार का शासन सभी स्थानों में असन्तोष को दूर करने में सर्वथा असमर्थ रहा है। इसके अतिरिक्त इस सिद्धान्त को कौन अस्वीकार कर सकता है कि 'शक्ति मनुष्य को भ्रष्ट करने का प्रायः कारण हो जाती है' इसी प्रकार निस्सन्देह सरलता, सत्य, त्याग, और नैतिकता के स्तर को उच्च रखना, शासन व शान्ति के क्षेत्र के अन्दर रहने की अपेक्षा शासनाधिकार से बाहिर रह कर ही अधिक सहल है।

भारत का वर्तमान केन्द्रीय मन्त्रि मण्डल ठीक २ वैधानिक ढंग का प्रतिनिधि मन्त्रि मण्डल न होकर सामयिक संरक्षक मन्त्रि मण्डल है। वह अभी गत ब्रिटिश शासन का वारिस मात्र है। इसलिये विगत दो वर्ष चाहें कितने ही विक्षोभ जनक और दुःख पूर्ण क्यों न रहे हों अथवा इस समय में विशेष परिवर्तन व उन्नति लक्षित न हुई हो फिर भी देश का भविष्य आशापूर्ण है ही। वयस्क मताधिकार का क्या परिणाम होगा इसकी पहिले से ही कल्पना करना असम्भव है। आने वाला यह तृतीय वर्ष इस प्रश्न की प्रथम स्पष्ट रूप रेखा अंकित करेगा।

इसके अतिरिक्त आशंका का एक अन्य कारण दूसरी दिशा में भी है। २ वर्ष हुये भारतीय नेताओं की पारस्परिक सम्मति से भारत का विभाजन होकर भारत और पाकिस्तान दो सर्वथा पृथक २ देश निर्मित हुये थे। देश विभाजन के कार्य को व्यावहारिक रूप में परिणत करने के लिये स्वीकार किये गये मार्ग व अनुभव शून्य व्यवहार के अनेक भयंकर दुष्परिणाम हुये। सामूहिक हत्यायें, अत्यधिक सम्पत्ति विनाश, निर्वासित शरणार्थियों की समस्या, परित्यक्त सम्पत्ति व्यवस्था, अपहृत स्त्रियों की समस्या, सिंचाई की नहरों के जल का विवाद तथा काश्मीर आदि के प्रश्न से देशवासियों के हृदय विचलित हैं। यह समस्यायें ठीक ढंग से हल नहीं हो रही है। विशेष बात यह है कि इन समस्याओं के हल होने का महत्व इतना अधिक नहीं है जितना कि दोनों देशों में तथा उनके निवासियों में परस्पर अविश्वास व विरोध कम होकर सहयोग व शान्ति पूर्वक अपने झगड़ों का निर्णय करने की मनोवृत्ति का उत्पन्न होना है। दोनों देशों में इस प्रकार के अविश्वास व विरोध के कारण ही अभी तक किसी नियम में सफल समझौता नहीं हो सका है। इस तृतीय वर्ष में इस आशा से प्रविष्ट होना उत्साह वर्द्धक होगा कि सम्भव है दोनों देशों के नायकों को सुबुद्धि प्राप्त हो जाय और इतने से कुछ समस्यायें हल हो सकें।

★ ★

तिब्बत की रहस्यमय राजनीति

गत ५ अगस्त शुक्रवार को प० नेहरू जी ने दिल्ली की एक प्रेस कान्फैन्स में अनेक विषयों की चर्चा के साथ साथ आनुषांगिक रूप से तिब्बत में किसी प्रकार के विद्रोह हो जाने के समाचार का भी खण्डन किया है। प्रथम तो तिब्बत के भारत से सदैव ही सौहार्दपूर्ण राजनैतिक सम्बन्ध रहे हैं। परन्तु अब भारत सरकार के एक भारतीय श्री हरेश्वर दयाल को, सिक्किम में पोलीटिकल एजेन्ट नियत करने से आशा की जाती है कि सम्बन्ध और भी अधिक उत्तम हो जायेंगे। अब तक इस स्थान पर सदैव अंग्रेज एजेन्ट रहते थे। इसके अतिरिक्त भारत और तिब्बत का एक इस प्रकार का प्रगाढ सांस्कृतिक सम्बन्ध है जिससे भारतीयों के हृदयों में तिब्बत के सर्वथा पृथक राजनैतिक इकाई होने का अनुभव नहीं होता। अभी कुछ दिनों पूर्व २ अगस्त को भारत सरकार के निमन्त्रण पर तिब्बत के शासक 'दलाई लामा' के भाई श्री सी० कुशो अपनी धर्मपत्नी सहित दिल्ली पधारे हैं।

राजनैतिक दृष्टि से तिब्बत न केवल एक रहस्यमय जादूगर लामाओं का ही देश है अपितु वह अत्यन्त पिछड़ा हुआ देश समझा जाता है। वहाँ न राजतन्त्र शासन प्रणाली है न प्रजातन्त्र, वहाँ अवतार प्रणाली पर शासन चलता है। गद्दी का स्थान रिक्त होने पर विशेष लक्षण युक्त लामा को देश भर में से खोजकर गद्दी पर बिठा दिया जाता है। ऐसी अवस्था में हवाई जहाज द्वारा दलाई लामा के भाई को व उनकी पत्नी को भी योरोपियन वेश में देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ा है और तिब्बत पर योरोपियन आचार विचार की प्रगति का अनुमान हुआ है।

किसी समय पूर्व में तिब्बत इतना शक्तिशाली हो गया था कि वह ७वीं शताब्दी में चीन के सम्राट से राजस्व ग्रहण करने लगा था, परन्तु पारस्परिक झगड़ों के कारण तिब्बत निर्बल हो गया और १०वीं शताब्दी में उसपर चीन के मान्चू वंश के सम्राटों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। वर्तमान योरोपियन राजनैतिक युग में, सन् १७८३ ई० में भारत के सुप्रसिद्ध विदेशी अंग्रेज गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिङ्ग ने तिब्बत में, ताशी लामा के पास जो कि तिब्बत के प्रमुख धार्मिक गुरु हैं तथा जिनकी दलाई लामा से निरन्तर राजनैतिक प्रतिस्पर्धा रहती है एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा। तिब्बत सरकार के अंग्रेजों को सदा सन्देह की दृष्टि से देखने के कारण उसमें कोई सफलता नहीं हुई। सन् १९०३ में तिब्बत से सन्धि करने के लिये भारत सरकार ने एक सैनिक दल के साथ पुन प्रतिनिधि मण्डल भेजा। दलाई लामा तो चीन भाग गये परन्तु अन्य राजकीय कर्मचारियों के साथ किसी प्रकार सन्धि हो गई इस सन्धि के अनुसार अंग्रेजी व्यापार के लिये दो बाजार खोले जाने तथा दोनों देशों के परस्पर व्यापार पर चुंगी हटा लेने का निश्चय किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि तिब्बत किसी अन्य विदेशी सत्ता को कोई प्रदेश ठेका पर नहीं देगा।

सन् १९१० में चीन ने तिब्बत पर पुन आक्रमण कर दिया। दलाई लामा भारत में, दार्जलिङ्ग भाग आये। भारतीय ब्रिटिश सरकार ने उनका अत्यन्त सत्कार किया। जब सन् १९११ में चीन में क्रान्ति हुई तो दलाई लामा ने तिब्बत लौटकर पुन शासन सम्भाल लिया। ब्रिटिश सरकार ने भी तिब्बत पर चीन के किसी प्रकार के अधिकारों को अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार अन्त में शिमला के सन् १९१४ के सम्मेलन में चीन ने भी तिब्बत की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लिया। सन् १९१८ में पुन चीन और तिब्बत में सीमा सम्बन्धी विवाद उठ खड़ा हुआ परन्तु अंग्रेजों ने बीच में पड़कर समझौता कर दिया। सन् १९३३ में १३ वे लामा की मृत्यु पर ६ वर्ष के अनन्तर १३ वर्ष के नवीन दलाई लामा का अनुसन्धान कर सन् १९३९ में अभिषेक किया गया। उस समय से दलाई लामा के दरबार में चीन का राज प्रतिनिधि रहने लगा।

इस समय चीन गृह युद्ध में ग्रस्त ही रहा है। चीनकी राष्ट्रीय सरकार का पतन निश्चित सा प्रतीत होता है इस राजनैतिक परिवर्तन का प्रभाव चीन पर पड़ना स्वाभाविक ही है। तिब्बत और चीन के दीर्घकालीन पारस्परिक संघर्ष के इतिहास में एक नवीन प्रकार के, कम्यूनिज्म के भय की आशंका का हो जाना अस्वाभाविक नहीं है।

चीन और तिब्बत के पारस्परिक राजनैतिक नीतियों से सम्बन्धित सभी तथ्यों के प्रकट होने में अभी बहुत सन्देह है। संसार के इस सबसे अधिक रहस्यमय देश के सम्बन्ध में हांककांक से यह समाचार प्राप्त हुआ था कि तिब्बत में कम्यूनिस्टों द्वारा प्रेरित विद्रोह प्रारम्भ हो गया है जिससे बाधित होकर तिब्बत की सरकार को लासा से चीनी राज प्रतिनिधि मण्डल को चले जाने की आज्ञा देनी पड़ी है। तिब्बत सरकार को अपने देश में कम्यूनिस्टों की कार्यवाहियों से चाहे कोई भय हो अथवा न हो परन्तु यदि गत ४० वर्षों का इतिहास कुछ निर्देश करता है तो इस घटना से इतना निर्देश तो मिलता ही है कि उसके समीपवर्ती बड़े देश चीन का तिब्बत पर अब कोई प्रभुत्व नहीं रहा है। सन् १९११ की क्रांति के अवसर पर तिब्बत में चीनी सेनाओं को आत्म समर्पण करना पड़ा था और दलाईलामा विजयी होकर भारत से पोटाला लौटे थे।

अब चीनी प्रतिनिधि मण्डल के तिब्बत से बाधित होकर चले जाने से तिब्बत के दोनों प्रमुख लामाओं में पुनः संघर्ष उत्पन्न हो गया है जिसका तिब्बत की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। चीन की राष्ट्रीय सरकार द्वारा इस समय पन्चेम लामा का प्रमुख रूप से सहायता देना, न केवल लासा के अधिकारियों से अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने की दृष्टि से असामयिक ही सिद्ध होगा, अपितु तिब्बत में भी स्वय गृह संघर्ष प्रारम्भ किये जाने का कारण बनेगा।

* *

भारत के यह प्रतिनिधि ?

"भगवद्गीता से बाईबिल उत्कृष्ट है" यह नवीन आविष्कार स्विटजरलैण्ड स्थित भारत सरकार के राजदूत श्री धीरजलाल भूलाभाई देसाईने उस समय प्रकट किया जबकि वे भारतीय राजदूत नियुक्त होने के कारण पोप के सन्मुख 'वेटकिन' में अपना प्रमाणपत्र उपस्थित कर रहे थे। आपने पोप के सन्मुख ईसाइयत की प्रशंसा में कहा कि "उनके विचार में संसार का ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं जो ईसाइयों की इन्जील की तुलना में समान ठहरता हो। भारत को यद्यपि गीता पर गर्व है किन्तु उसकी 'सर्मन आफ दि माउन्ट' से कोई तुलना नहीं है। इस सर्मन (उपदेश) पर लाखों गीतायें कुर्बान की जा सकती है।"

यदि वस्तुत भारत के प्रतिनिधि ने ऐसा कोई वक्तव्य दिया है, जैसा कलकत्ते के नेशन आदि अनेक पत्रों में प्रकाशित हुआ है तो विचारणीय यह है कि किसी राजनैतिक व्यक्ति का किन्हीं दो धार्मिक ग्रन्थों को इस प्रकार की किसी धार्मिक गुरु के सन्मुख तुलना करना कूटनीतिक राजनैतिक सीमा के अन्तर्गत किस प्रकार समझा जा सकता है।

भारत मे अनेक सम्प्रदाय और मत है। इन विभिन्न मतों के होते हुये भी भारत के करोड़ों व्यक्ति गीता को न केवल अत्यन्त आदर और श्रद्धा की दृष्टि से ही देखते हैं अपितु संसार के सन्मुख ज्ञान, कर्म, उपासना का सर्वोत्तम आर्य संस्कृति निदर्शक ग्रन्थ मानते है।

हम स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना स्वतन्त्र मत रखने और उसे प्रकट करने का स्वतन्त्र अधिकार है परन्तु किसी राजनैतिक प्रतिनिधि का राजनैतिक क्षेत्र असीमित नहीं हैं। राजनैतिक क्षेत्र में गीता जैसे सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक ग्रन्थ को इस प्रकार तुलना में हीन प्रकट करना व चाटुकारिता करना क्षन्तव्य नहीं हो सकता।

भारत सरकार के कई भारतीय राजदूत इससे पूर्व भी इस प्रकार की अनेक निन्दनीय भूलें कर चुके हैं। यदि यही प्रवृत्ति प्रचलित रही तो इससे न केवल भारत को ही संसार में अपमानित होना पड़ेगा प्रत्युत भारत की पुरातन संस्कृति और सभ्यता की उत्कृष्टता को भी अत्यन्त आघात पंहुचेगा जिस पर कि प्रत्येक भारतीय गर्व और अभिमान अनुभव करता है।

वेद वीथी

अग्निर्देवता

ले०—श्यामबिहारी लाल वानप्रस्थी

कौन मनुष्य दीर्घ अवस्था वाले होते हैं ?

अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषञ्च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। यजु० अ० ३५ म० १६

पदच्छेद—अग्ने। आयूंषि। पवसे। आ। सुव। ऊर्जम्। इषम्। च। नः। आरे। बाधस्व। दुच्छुनाम्।

अन्वय हे अग्ने! त्वमायूंषि पवसे न ऊर्जमिषं चासुव दुच्छुनामारे बाधस्व॥

पदार्थः—हे परमेश्वर वा विद्वान आप (आयूंषि) अवस्थाओं का (पवसे) पवित्र करते हैं (नः) हमारे लिये (ऊर्जम) बल (च) और (इषम्) विज्ञान को (आ सुव) अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिये तथा (दुच्छुनाम) कुत्तों के समान दुष्ट हिंसक प्राणियों को (आरे) दूर वा समीप में (बाधस्व) ताड़ना दीजिये।

मंत्र पर विशेष विचार।

यह मंत्र सस्कार विधि में सामान्य प्रकरण में आया है। मनुष्य को जब अध्यात्म का चस्का लग जाता है तो उसकी स्वाभाविक इच्छा दीर्घ जीवन प्राप्त करने की हो जाती है। उसी का यह मंत्र उपाय बतलाता है। यही इसका महत्त्व है।

मनुष्य परमेश्वर वा विद्वान से प्रार्थना करते हैं कि आप आयु को शुद्ध पवित्र करने वाले हो। उपदेश के द्वारा स्वास्थ्य के बढ़ाने वाले पदार्थ प्राप्त करा कर आप आयु को, अवस्था को बढ़ाते हो। मनुष्य यदि प्रभु की आज्ञा को पाले और ठीक २ आचरण करे तो उसकी आयु विस्तार युक्त होती है। दो पदार्थों की और माँग की गई है बल, और विज्ञान की। बल के अन्दर शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सभी बल समाविष्ट हैं। इन तीनों बलों को बढ़ाने का साधन वेद भगवान ने बताया है। मनुष्य को ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों पदार्थों का ज्ञान होना चाहिये। आरम्भ प्रकृति के ज्ञान से होता है। पहिले प्रकृति की प्रत्येक अवस्था, विचार, फैलाव का पूरा २ ज्ञान, जानकारी हम को होनी चाहिये। उस के आगे जीव का परिचय निश्चयात्मक प्राप्त करना चाहिये। अन्तिम ज्ञान प्रभु का है। इसी से अत्यन्त तुष्टि हो जाती है। फिर ज्ञान की पिपासा, जिज्ञासा की समाप्ति हो जाती है। यह सब कुछ तभी सम्भव है जब हम दुष्टों से, राक्षसों से, दस्युओं से दुराचारी मनुष्यों से पृथक रहें। अत मंत्र के अन्तिम शब्दों में यही प्रार्थना है। ओ३म् शम्।

★ ★ ★ ★

१५ अगस्त के उपलक्ष में—

स्वतन्त्रता सन्देश

"माननीय प० गोविन्द वल्लभ पंत"

भगवान की कृपा से, महात्मा गांधी के अनुग्रह और नेतृत्व के प्रभाव से, हमारे अन्य नेताओं के त्याग और बलिदान से, कांग्रेस के स्वयंसेवकों और अन्य देश हित के लिये कार्य करनेवाले नवयुवकों, वृद्ध स्त्री पुरुषों आदि सब के सहयोग से हमारे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। वह बात याद रखनी है कि स्वतंत्रता सब से बहुमूल्य रत्न है। अब तक हम पराधीन थे, हमारा देश निर्जीव था। किसी भी भारतीय की संसार में कोई भी स्थिति नहीं थी। हमारा देश इंगलैंड जैसे छोटे टापू के अन्दर फँसकर विलीन हो गया था। संसार के चित्रपट में एटलस में, भारत का नकशा रहता था परन्तु वह निर्जीव व मृतप्राय देश था। भारतीय कहीं जाते थे तो वे पराधीन देश में, दूसरे देश के नीचे अधीनता को स्वीकृत किये हुये होने के कारण उपेक्षा और बहुत अंश में घृणा से देखे जाते थे। हम अपने ही देश में ऐसी गिरी हुई हालत में थे कि कोई भी आदमी जो
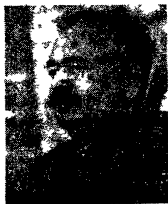
कि भारतीय नहीं होता था वह अपने को हमसे ऊँचा समझता था और उसके अधिकार हमसे अधिक होते थे। यदि वह कोई जुर्म या चोरी भी करता था तो उसके ऊपर हिन्दुस्तानी को मुकदमा करने का भी अधिकार नहीं था। उनके लिये जेल अलग होते थे और हर तरह के विशेष अधिकार उनको प्राप्त थे।

हमारे देश में इस स्वाधीनता के आने से भारी परिवर्तन हुये हैं और इस बहुमूल्य रत्न ने देश का स्तर ऊंचा किया है और नव युग "राम राज्य" पर प्रकाश किरणें डाली हैं। हमारे दिलों में इस स्वाधीनता के प्राप्त करने से जो आह्लाद और संतोष हो सकता है वह पूरी तरह से होना चाहिये। देश का प्रत्येक नर नारी अनुभव करे कि अब हम स्वतंत्र हैं और स्वतंत्र होकर इस मानव समाज में एक समता का स्थान रखते हैं। वे इस बात को समझें कि हमारे यहाँ एक नई ज्योति आई है और हम जो कि अंधकार में फंसे हुये थे अब उस ज्योति के सहारे से आगे बढ़ सकते हैं, और उसके साथ साथ उनको यह भी अच्छी तरह से मालूम हो जाय कि इस स्वाधीनता की रक्षा करना हर एक का परम कर्तव्य है। कोई भी काम ऐसा न हो जिससे हमारी स्वाधीनता में, इस स्वतंत्रता देवी के पूजन में, कोई बाधा पड़ती हो। हर काम को करने में हमें इस कसौटी को सामने रखना है कि जिस स्वाधीनता और स्वतंत्रता को हमने पाया है उसको हम इस अपने काम के द्वारा सुदृढ़ करेंगे या निर्बल करेंगे। इससे हमारी स्वाधीनता या स्वतंत्रता की रक्षा होगी या वह खतरे में पड़ जायगी। यदि हम इस कसौटी को सामने रखेंगे तो हमारे बहुत से कामों में अपने लिये एक सरल मार्ग निश्चित करने का आधार मिल जायगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश के सब निवासी विशेषकर वो कि देहात में रहते हैं, जिनके सामने इन प्रश्नों की विवेचना पूरी तरह से नहीं होती, वे भी इस स्वतंत्रता के महत्व को अच्छी तरह से समझें।

हमने स्वतंत्रता प्राप्त की और अब इस स्वतंत्रता के आधार पर हमको नव भारत का निर्माण करना है। हमें अपने देश में शान्तिपूर्ण उपायों के द्वारा आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति करनी है। जो प्रश्न और देशों में रक्त बहाकर और ध्वंसात्मक उपायों द्वारा किये गये हैं उन्हीं आदर्शों उद्देश्यों और क्रान्ति को हम अपने देश में अमन से, शान्ति से और सद्भाव से करना चाहते हैं। इसी के लिये महात्मा गांधी ने हमको सब से बड़ा मंत्र बताया है और वह है अहिंसा और शान्ति का।

कोई दूसरा कितनी भी आगे बढ़ी हुई किसी आर्थिक क्रान्ति का चाहने वाला हो, उससे कम हम नहीं चाहते। हम भी चाहते हैं कि हमारे देश के जो कोई भी गरीब दुखी और दबे हुये लोग हों वह ऊपर आवें। जो आज तक दुखी रहे हैं वह सुखी हों। और सब को इस स्वतंत्रता की जीवित भावना को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप में देखने समझने और इस आह्लाद का आनन्द लेने का अवसर मिले।

हमारे देश में जो इस वक्त निर्जीवता है, जो लोगों में उत्साहहीनता है, जो हम में अपनी उन्नति की ओर स्वावलम्बन के आधार पर कार्य करने की कमी है, उसको हम दूर करें। हम "राम राज्य" चाहते हैं, हम सर्वोदय चाहते हैं और उसको प्राप्त करने के लिये हमें इस बात का उद्योग करना है कि हमारे देश के रहने वाले प्रत्येक नागरिक प्रत्येक स्त्री पुरुष में यह भावना हो जाय कि अब इस स्वतंत्र भारत में उसके लिये खुला हुआ क्षेत्र है। हर एक को ऊँची से ऊँची जगह पर पहुंचने के लिये पूरी तरह स्वच्छन्द रीति से कार्य करने के लिये अवसर प्राप्त है।

हम चाहते हैं कि एक ऐसा नया युग आये जिसमें देश के स्त्री पुरुषों को देखकर, यहां के सुख शान्ति, संतोष और आध्यात्मिकता के ऊँचे आदर्शों से प्राप्त की हुई स्थिति को देखकर संसार के सब लोगों में यह हौसला हो जाय कि यह भारतीय संस्कृति के आधार पर अपने देशों का नव निर्माण करने में इसी तरह से उद्योग करके सफलता प्राप्त करें। इस आदर्श को हम व्यवहार रूप में संसार के सामने रखना है। हम सारे मानव समाज को भारतीयता की प्राचीन संस्कृति के आदर्श के अनुसार ऊंचे से ऊंचे स्तर पर उठाना चाहते हैं। हम मनुष्य मनुष्य के बीच के भेद भाव को दूर करना चाहते हैं। और हम समझते हैं कि सबका एक दूसरे से नाता जुड़ा हुआ और मिला हुआ है। हम आज कल रेडियो सुनते हैं, संसार के किसी भी स्थान की बात क्षण में सुनने को मिलती है। टेलीफोन के जरिये संसार में जहाँ भी चाहें बातें कर सकते हैं। इस तरह सारा संसार आज एक हो रहा है और अब टुकड़ियों को बनाकर कोई लाभ न होगा। जो भेद भाव है उसे दूर करने का हमें प्रयत्न करना चाहिये। महात्मा जी ने हमको बताया है कि किसी के लिये हमारे हृदय में वैर और वैमनस्य न हो और सब की उन्नति में जो कुछ सहारा दे सकें दें, और यह समझकर दें कि हम इससे दूसरों का भला करते हैं, और दूसरों का भला करते हुये अपने को भी ऊंचा उठाते हैं। हम भारत वासियों

(शेष पृष्ठ १२ में)

नजले की बीमारी

[लेखक—डा० ड्रेवर आई विलियम्स]

सुनने में आता है कि उचित इलाज करने से नजला एक सप्ताह में चला जाता है, यदि चिकित्सा के बिना भी रहा जाये तो प्रकृति स्वय सात दिनों में जुखाम को दूर कर देती है। अभी हाल तक नजला नाशक दवा की खोज करने के सारे प्रयत्न असफल रहे हैं और संसार में यह व्यापक रोग करोड़ों काम के घंटों की हानि पहुँचाता रहता है।

फिर भी पिछले ढाई वर्षों में ब्रिटेन की चिकित्सा अनुसन्धान परिषद के तत्वाधान में सेलिस्बरी स्थित हारवर्ड अस्पताल में इस समस्या को हल करने के सम्बन्ध में गहरा अध्ययन और अनेकों परीक्षायें की जा चुकी हैं। यद्यपि नजले (सर्दी) को दूर करने वाली कोई मार्के की दवा अथवा इलाज का पता नहीं चल सका, तो भी स्वास्थ्य सचिवालय को इस कार्य की वास्तविक प्रगति और अब तक सन्दिग्ध रहने वाली कई एक महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डालने का अवसर मिल गया है।

जानवर मुक्त होते हैं

नजला सम्बन्धी अध्ययन के लिये सदा ही यह कठिनाई सामने रही है कि ऊँची वनमानुष को छोड़ कर अन्य कोई जानवर इस मर्ज का मरीज नहीं बन जाता, फिर यह कोई ऐसा भयानक रोग नहीं जिसके लिये रोगी उन अस्पतालों अथवा शफाखानों की ओर भाग दौड़ करते फिरें, जहाँ उन्हें अच्छी तरह देखा समझा जा सकता है। इसी लिये प्रयोगशाला का कार्य महान कठिन दिखाई देता है। विस्तृत अनुसन्धान के लिये बहुत से स्वयसेवकों को बटोरने का कार्य पहली बार सेलिस्बरी के अस्पताल में ही सम्पन्न हुआ है। इसकी स्थापना के ढाई वर्षों में लगभग एक हजार लोग स्वेच्छा से अस्पताल की यात्रा कर चुके हैं, हरेक स्वयसेवक को दस दिनों तक रहना पड़ता था।

इस बात की बहुत सतर्कता रखी गई थी कि कोई स्वयसेवक अस्पताल कर्मचारियों के पास रहते हुए नजला न पकड़ सके ताकि परीक्षाओं के परिणामों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। अनुसन्धान कर्त्ताओं ने इन लोगों पर अपना प्रयोग चालू रखते हुए अन्य ग्रहण शील जानवर खोजने का भी कई बार प्रयत्न किया लेकिन असफलता ने साथ न छोड़ा। इस मानवीय दुर्बलता की तुलना में जगली चूहे, बन्दर, नेवले जैसे जानवर इस रोग के प्रभाव से मुक्त पाये गये हैं।

स्वयसेवकों की स्वीकृति पर उनके शरीर में नजला पैदा करने की एक सफलप्रद प्रणाली पूर्ण कर ली गई है।

एक जुखाम ग्रस्त व्यक्ति की नाक से बार बार बहने वाली गन्दे पानी की बून्दों को एक बिल्कुल स्वस्थ आदमी की नाक में पहुँचा कर नजले की बीमारी पैदा की जाती है। यह विधि अधिकांश मामलों में सफल सिद्ध हो चुकी है, हालांकि हरेक पर विभिन्न प्रकार का असर पड़ता है। दूसरी खोज यह है कि नजले से बीमार होने का पता चलने के २४ घन्टे पूर्व ही रोग शरीर में पैदा हो लेता है। इन परीक्षाओं से यह भी पता चला है कि जाहिरा नजले के बीमार दिखाई न देने वाले कुछ लोग भी सर्दी के विषैले तत्व को लिये फिरते हैं।

इसी तरह एक अन्य पृथक समुदाय का यह ख्याल है कि लम्बी यात्रा से आने वाले जहाज विषैलातत्व मार्ग में ही छोड़ आते हैं। केपटाउन से १२ दिनों में आने वाला जहाज नजला साथ ले आता है। लेकिन केप होर्न घूम कर पनामा से आने वाला जहाज इस बीमारी से रास्ते में ही मुक्त हो लेता है।

हालांकि सफलता नहीं मिली पर, मुर्गी के अन्डा सेते समय यह विषैलातत्व छोड़ कर नजला पैदा करने का कई बार प्रयत्न किया जा चुका है। जो बार प्रचलित प्रणालियाँ अन्य विषैलेतत्वों के लिये सफल सिद्ध होती रहीं, वे इस जगह

कहां उत्तर दूँ

इस सप्ताह मे मेरे पास ऐसे ६ पोस्टकार्ड आये हैं जिन में से किसी पर लेखक का नाम नहीं, पता भी पूरा नहीं, है किसी पर नाम है परन्तु पता नहीं है, किसी पर नाम और पता है परन्तु पोस्ट आफिस की मुहर लगने से पढ़ा नहीं गया है। सब पत्र आर्यमित्र और वैयक्तिक रूप में मुझ से सम्बन्ध रखते हैं। उत्तर अविलम्ब माना है। मैं चिन्तित हूँ कि उत्तर कहां दूँ। मुझ से उत्तर चाहने वाले सज्जन जवाबी पत्र (उस पर अपना पूरापता लिखकर) भेजा करें तो मुझे उत्तर देने में अधिक सुविधा होगी।

निवेदक—
धुरेन्द्र शास्त्री

असाधारण रुकावट

नाक की सिनक अथवा बहने वाले पानी में मिला विषैलातत्व कई रूप में असाधारण रुकावट वाला पाया जाता है। यदि ठेठ सर्दी में नाक घुटी रहे या बहे नहीं, तो रोग का विषैलातत्व दो वर्षों के पश्चात भी अपना असर किये बिना नहीं चूकता। चिकित्सा सम्बन्धी कई एक पत्रों में यह भी पढ़ने को मिला है कि थोड़े से लोगों के एक समूह में नजला अधिक दिनों तक नहीं ठहरता, कुछेक सप्ताहों के पश्चात समाप्त हो जाता है, दोबारा तभी फैलता है, जबकि कोई बाहर की दुनिया से इसे साथ लेकर आये। एक जर्मन जाति यह अनुभव करती है कि उनके बीच फैली नजले की बीमारी जाड़ों में समुद्री किनारा छोड़ने वाले अन्तिम जहाज के दो सप्ताह पश्चात बिल्कुल चली जाती है। लेकिन बसन्त ऋतु मे पहला जहाज आते ही जुखाम रोग दोबारा फैलने लगता है।

आकर कारगर साबित नहीं हो सकी। यह नजले की बीमारी जो एक हट्टे-कट्टे अथवा तगड़े आदमी को कुछ ही दिनों में परेशान और गिरा-पड़ा सा कर देती है, यह एक बन्द चूजे की कोमल खलड़ी पर असर करने में बिल्कुल बेकार साबित होती है।

नजले की बीमारी पैदा होने के सम्बन्ध में लोगों के विभिन्न मत पाये जाते हैं लेकिन अधिकतर यही कहा जाता है कि जुखाम एक से उड़कर दूसरे को जकड़ता है, और कुछ लोगों का यह विश्वास है कि पर्गों द्वारा ठंड पकड़ने, वायु के झोंकों और इसी तरह सर्दी खाने से नजला हो जाता है। इस अस्पताल की परीक्षाओं से दोनों ही बाते ठीक जचती हैं।

मनुष्य का शरीर कड़ाके का जाड़ा झेलने में दुर्बल पड़ते ही ठन्ड के प्रभाव से नजले का शिकार हो जाता है या फिर उसे पड़ी-पड़ी के छिनकू तथा

छींकू मनुष्य के निकट सम्पर्क में आ पर अपनी नाक और दम की झड़प देखनी पड़ती है।

इधर उधर पड़ा चिथड़ा अथवा मैली कुचैली चीर से रुमाल का काम लेना बहुत ही खतरनाक होता है। गन्दा मटुवा रुमाल विषैलेतत्व को बढ़ने फैलने में बहुत सहायता देता है, एक से अनेक सूक्ष्म जीवाणु बनते रहते हैं। धोबी के घर से धुलकर आये प्रत्येक साफ सुथरे रुमाल पर भी मलिनता नाशक किसी द्रव्य को छिड़क कर इस खतरे से बचना चाहिये।

जिस प्रकार नजला एक से उड़कर दूसरे आदमी पर प्रहार करता है उसी तरह रोगी का एक से लेकर दूसरे वर्ष तक इसका शिकार होना पड़ता है। इसी बात के आधार पर नजले की प्रसिद्ध इलाज विधियाँ खोजने का प्रयत्न किया जाता है। स्वयसेवकों पर सामान्य जीवन की अपेक्षा अस्पताल में बहुत ही ज्यादा रोग प्रभाव प्रवेश किया गया लेकिन एक बार के असर डालने में पाँच में से केवल दो आदमी इस प्रणाली को झेल सके और पूरे वर्ष भर नजले का शिकार न होने वाले बहुत ही थोड़े लोग पाये गये थे।

क्योंकि एक बीमार को अस्थायी रूप से तभी मुक्ति मिलती है जबकि दूसरा इस में फस लेता है, इस लिये अच्छे होने वाले कुछ स्वयसेवकों को दो सप्ताहों से पूर्व ही दोबारा नजले का रोगी बनाना ठीक समझ कर परीक्षायें चालू रखी गई थी।

मौसमी रोग नहीं है

आमतौर पर यह विश्वास किया जाता है कि ठन्डी ऋतु के परिणाम स्वरूप नजला फैलता है, और इसके आक्रमण का अपना एक मौसम होता है। लेकिन अनुसन्धान कर्त्ताओं को इस बात में सन्देह मालूम देता है। केवल इन्गलैण्ड में नजला दिसम्बर में आरम्भ होता है जबकि मध्य गरमी काल की अपेक्षा तापक्रम कुछ नीचा रहता है। अन्य देशों में जाड़े की अपेक्षा वर्षा-कालिक वायु के कारण नजला फैलता है। गरमी में इस लिये बचे रहते हैं कि लोग बन्द कमरों में घुटकर सोने बैठने की जगह, खुली हवा में अपना अधिकांश समय काटते हैं, जिससे नजला कम ही होता है।

सग्राम सत्र

श्री रामदत्त शुक्ल एम० ए०, एडवोकेट

"अस्माकं या इषवस्ता जयन्तु" अथर्व

कल्पारम्भ से कि जब से पृथिवी तल पर मानव सृष्टि का विकास हुआ है तभी से जहाँ एक ओर मानव ने अपने व्यष्टि अथवा समष्टि व्यवहारों की ससिद्धि के लिये अनेक शान्तिमय साधनोपायों को आचरण में लाने का प्रयास किया है, वहीं साथ ही उसने आवश्यकता और परिस्थिति को अपने विपरीत अनुभव कर हिंसात्मक साधनोपायों का भी परिस्थिति, शक्ति और प्रभाव के अनुरूप उपयोग किया हैं। दूसरे प्रकार के मार्ग को ही पारिभाषिक शब्द के रूप में सग्राम या युद्धादि नामों से कहा और लिखा गया। सग्राम अथवा संघर्ष के लिये दो व्यक्तियों से लेकर लाखों और करोड़ों सुसगठित और सुसज्जित समूहों में परस्पर सग्राम की मानव ने कल्पना की है। विभिन्न देशों में विभिन्न कालों मैं बराबर संग्राम होते रहे हैं। ससार के इतिहास में ऋग्वेद में अनेक प्रकार के सग्रामों का वैज्ञानिकरीति से विशद वर्णन प्राप्त होता है। उसके अनन्तर अन्यान्य अनेक ग्रन्थों की गाथाओं और इतिहासों में भी युद्धों का उल्लेख अद्भुत रोचकता के साथ दिया गया मिलता है।

यद्यपि सग्रामों के होने पर सम्बद्ध देशों और जातियों में अस्ख्य युवकों का सहार, अतुल धन और सम्पति का विनाश, अगणित स्त्रियों और पुरुषों की दुर्दशा हो जाती है, तथापि प्राप्त ऐतिहासिक साहित्य के विवेचन से स्पष्ट प्रकट होता है कि "युद्धाच्छ्रेयोन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते" युद्ध से बढ़कर क्षत्रिय का अन्य कोई कर्त्तव्य नहीं है, गीता के इस वाक्य का समस्त देशों और जातियों ने समान रूप से स्वीकार किया है। यहा तक कि उन धर्मों के प्रवर्त्तकों और मानने वालों ने भी कि जो तत्वतः अहिन्सा धर्म मे विश्वास रखने वाले थे, युद्ध को देश और राष्ट्र हितसाधनार्थ आवश्यक माना ही नहीं अपितु उसका असाधारण क्रूरता के साथ व्यवहार भी किया है। उदाहरणार्थ बौद्धों और ईसाइयों ने अपने प्रवर्त्तकों की उत्कृष्ट शिक्षाओ के होते हुये भी अनुकूल अवसर की आवश्यकताओं को अनुभव करते हुये तदनुसार सग्रामदीक्षा लेने में सकोच नहीं किया है। ऐटम बाम्ब द्वारा हीरोशिमा और नागासाकी की प्रलयकरी घटनायें बाइबिल के उन मानने वालों के हाथों से की गई हैं कि जो एक गाल पर तमाचा के आघात किये जाने पर दूसरा गाल तमाचा खाने के लिये फेरने की शिक्षा गत दो सहस्र वर्ष से लेते रहे हैं। अन्य देश और जातियों के लोगों ने भी अवसर आने पर युद्धदीक्षा लेकर अपनी शोर्य प्रवृत्तियों का प्रचण्ड परिचय दिया है। इतना ही नहीं अपितु युद्ध में मरने वाले और मारे जानेवालों के लिये स्वर्ग के द्वार सदा खुले रहते हैं और स्वर्ग में होने वाले सब प्रकार के सुखों की उनको अनायास उपलब्धि होती रहती है, ऐसा प्रत्येक देश, जाति और राष्ट्र के इतिहास में स्पष्ट अक्षरों में चिरकाल से अकित किया जाता रहा है। इसी स्वर्ग की भावना से विविध प्रकार के आन्दोलनों द्वारा अबोध जनों को प्रलोभन दे २ कर सेनाओं में लाखों की सख्या में दीक्षित करने की प्रथा भी चिरकाल से सर्वत्र समान रूप से चली आ रही है। कभी धर्म के नाम पर तो कभी देश की स्वतन्त्रता के नाम पर, कभी सभ्यता की रक्षा के नाम पर, तो कभी जातीयता के नाम पर बड़े २ सग्राम किये जाते रहे हैं। पिछले दो योरोपीय महान् युद्ध तो प्रजातन्त्रवाद और छोटे देशों की स्वतन्त्रता के लिये करोड़ों जनों की बलि देकर और अरबों की सम्पत्ति का क्षय करके लड़े गये हैं।

सृष्टि के आरम्भ से इतना सब कुछ होने पर भी आज भी इस विषय में बड़ा भारी मतभेद है कि केवल शान्तिमय साधनोपायों का ही समस्त मानवीय व्यवहारों के लिये अनुसरण किया जाय अथवा आवश्यकता होने पर परिस्थिति के अनुसार उग्र और घोर सहारक सग्रामो का भी उपक्रम किया जा सकता है।

प्रस्तुत लेख में सग्राम को एक सत्र अर्थात् यज्ञ कहा गया हैं और साथ ही एक श्रुति वाक्य दिया गया है कि जिसका अर्थ है, "हमारे जो बाण हैं, वे विजयी हों" इन दोनो के साथ वैदिक साहित्य में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म भी कहते हैं। तो क्या सग्राम भी एक श्रेष्ठतम कर्म कहा जा सकता है। सूक्ष्मदृष्टि से विचार करने पर प्रतीत होता है कि वस्तुत सग्राम अथवा युद्ध का मूल कारण केवल सेनायें या शस्त्रास्त्र अथवा बड़े २ योद्धा नहीं होते हैं। किन्तु इसके मुख्य सूत्रसचालक होते हैं वह सुप्रसिद्ध विचक्षण राजनीतिज्ञ कि जिनके दूरदर्शी विचारों, योजनाओं, आदर्शों के आधार पर देश के शासनतन्त्र और नैतिक व्यवहारों का सचालन होता है। फिर चाहे जीवन क्षेत्र शिक्षा विज्ञान, कला, उद्योग, दर्शन, धर्म, संस्कृति, सभ्यता अथवा तत्वज्ञान किसी प्रकार का ही क्यों न हो। प्रमुख राजनीतिज्ञ ही युद्ध करते हैं और शान्ति की भी स्थापना करते हैं। उच्च शासनाधिकारी तथा सेनासचालक योद्धा गण तो केवल उनकी प्रेरणाओं और आदेशों के अनुसार आचरण मात्र करते हैं। इसलिये राजनीतिज्ञ राष्ट्र के प्रमुख नेता की कलम में युद्ध विजेता महासेनापति के ऐटम बाम्ब से भी अधिक भयकर सहारक शक्ति होती है।

इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय पर विवेचन करने से प्रकट होता है कि राष्ट्र मे उन व्यक्तियों का कर्त्तव्य क्षेत्र और उसका प्रभाव कितना विराट् है कि जो राष्ट्र म निवास करने वाले शासकों, साधारण प्रजाजनों और उच्चतम राजनीतिज्ञों के हृदयों और मस्तिष्कों का समान रूप से प्रभावित करने का अत्यन्त उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करने म सल्लग्न हैं। दुर्भाग्य से आज भारत राष्ट्र में अनेक प्रकार के शत्रुओं का भयकर और सक्रामक आक्रमण एक साथ हो रहा है। भ्रष्टाचार, आर्थिक दरिद्रता निरक्षरता, दुराचार, चोरबाजारी, रूढिवाद, अराजकता, आतकवाद और सकुचित सम्प्रदायवाद इत्यादि २ इन नवग्रहों के आकस्मिक आक्रमण के विरुद्ध घोर सग्राम करने की वर्त्तमान समय म अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रकार के सग्राम को दीक्षा लेकर प्राणपण पूर्वक पराक्रम प्रदर्शित करने वाले वीर योद्धाओं के लिये केवल कानून का सहारा, शासनप्रदत्त सुविधा और बाह्य शस्त्रास्त्रों की आवश्यकता नहीं है। वीरों के लिये तो आवश्यकता है अनुकरणीय चरित्रबल, व्यवहारिक जीवन की पवित्रता, विवेक बुद्धि, कर्म निष्ठा, आर्जव, दूरदर्शिता, सद्भावना, सौजन्यता और सांस्कृतिक आदर्शो के प्रति दृढ आस्था की एस भी सम्पति सम्पन्न और पुरुषार्थ प्रिय नागरिक वीरो की आवश्यकता कि जो आजीवन उपर्युक्त नवग्रहों के ग्रहणों से राष्ट्र कल्याण साधन के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग करने की पवित्र दीक्षा लेकर लोक सग्रह की श्रेष्ठ साधना करे। खेद है कि अभी तक हमारे राष्ट्र के शासकों और अन्य सार्वजनिक सस्थाओं के प्रमुख सचालकों ने पशु से और दानव से मानव बनाने और उन मानवो में से भी पितर, देव और ऋषि बनाने के लिये कोई आयोजन करने की आवश्यकता को अनुभव नहीं कर पाया है। इसलिये साधनों और उपकरणों के सग्रह और सगठन मे सल्लग्न रहने के कारण साध्यों एव लक्ष्यों की ओर दृष्टि ही नहीं जा रही है। उदाहरण के लिये रोटी का प्रश्न सर्व प्रथम बताया जाता है बुद्धि का नहीं। इसलिये अधिक से अधिक भोजन सामग्री उत्पादन पर ही बल दिया जाता है, भोजन को पचाने वालों की बुद्धि में विवेक उत्पन्न करने की उतनी चिन्ता आवश्यक नहीं समझी जाती है। श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के कहने पर भी कि मास मे २ दिन उपवास करने से ही १५ प्रतिशत अन्न की बचत होती है, कोई शासनाधिकारी या नेता यह नहीं कहता है कि मास मे ४ दिन उपवास करने और ४ दिन अर्द्ध उपवास करने से कितनी बचत हो सकती है। और न किसी ने स्वय इस के अनुसार उपवास अथवा अर्द्ध उपवास करके उदाहरण ही प्रस्तुत करने का कष्ट उठाया है।

शासित प्रजा प्रायः शासकों के जीवन को देखकर उनका अन्धानुकरण करती है। "यथा राजा तथा प्रजा" का सिद्धान्त भी यही है। इसलिये राष्ट्र के पिता को अत्यन्त सादगी के साथ न्यूनतम वस्त्राच्छादन साधारणतम भोजनाहार, दुग्ध जलमात्र पेय, साधारण निवासगृह कुटी, सत्य अहिंसाव्रत पालन समय २ पर उपवास, जीवन सम्बन्धी अन्य अनेकों अनुष्ठानों को करते देखकर साधारण भारतीयों ने महात्मा जी का अन्धानुकरण किया था। किन्तु उन्हीं विश्वबन्धु राष्ट्र पिता के नाम का जाप करने वाले, उनका कीर्तन करने वाले उनके चित्रों की उपासना करने वाले और उन्हीं के नाम पर सब कुछ न्यौछावर कर सत्य और अहिंसाव्रत का होंठ से स्मरण करने वाले आज अधिकार पर आरुढ होकर क्या कर रहे हैं और क्या नहीं कर रहे हैं, यह स्पष्ट है माननीय रफी अहमद किदवाई साहेब के शब्दों म कल का देशभक्त आज का भ्रष्टाचारी बन चुका है इत्यादि। वस्तुत शक्ति की उपलब्धि मात्र, मद्य से कहीं अधिक मात्रा म मादकता उत्पन्न करती है। इस तत्व को जो जानते हैं वह बड़ी सावधानी और सयम के साथ धारे प्राप्त शक्ति को पचाते हैं और अप्राप्त शक्ति को अक्षुता पूर्वक अधि त ... का उपयोग करते हैं अधिकार प्राप्त करके अपने का निधि का सेवक अनुभव करते हुये प्रजा के अनुरजन में या लगे रहना ही अपना धर्म मानकर तदनुसार आचरण करते हैं। प्रजा के सु

सिर्फ इकन्नी के लिये

लेखक—श्री विराज

(अपव्यय तो बुरा है ही परन्तु कभी २ अत्यल्प व्यय में कितना कष्ट दायक तथा दुःखद परिणाम लाने वाला होता है यह भी विचारने की वस्तु है। यहाँ की हुई कुछ घटनायें इस बात को स्पष्ट करती हैं।)

—सम्पादक

(१)

सन् १९४२ में बनारस जिले में एक सार्वजनिक रास्ते पर एक लाश पड़ी मिली। इस मृत व्यक्ति की मुठ-भेड़ कुछ डाकुओं से हुई थी जिन्होंने धन की आशा से इसे मार डाला था। मार डालने के बाद डाकुओं ने उसके कपड़ों की तलाशी ली। आप कल्पना कर सकते हैं कि उनके मनोभाव क्या रहे होंगे जब कि उन्हें तालाशी में सिर्फ चार पैसे मिले। इस बात से वे इतने निराश हुए कि इन चार पैसों को वे मृत व्यक्ति की छाती पर रख कर चले गये। जब लाश पुलीस ने हस्तगत की तब तक वे पैसे लाश की छाती पर रखे हुए थे।

कई बार अज्ञान में या ज्ञान में भी ऐसा हो जाता है पर ध्यान नहीं रहता। ऐसी दशा में सिर्फ एक इकन्नी के लिए लोग ऐसे काम कर जाते हैं जिन्हें वे समझते बूझते कदापि न करें। यदि उपरिलिखित कहानी के ही डाकुओं को भीषण ज्ञान हो जाता कि वे हत्या का अपराध केवल चार पैसे के लिए कर रहे हैं तो वे कभी न करते।

(२)

बेहद परेशानी

एक हमारे मित्र हैं उनके पिता की आपबीती सुनिये। वे एक बार अपनी माता जी के साथ दिल्ली से मुरादाबाद जाने को थे। स्टेशन पर आकर देखा तो भीड़ काफी थी। शायद कोई मेला था। सामान बहुत तो नहीं था पर एक बड़ा सा विस्तर था। जिस प्लेट फार्म पर आ कर बैठे, वहां न लाकर गाड़ी किसी दूसरे प्लेटफार्म पर ला खड़ी की गई। बड़ी दिक्कत में फसे। कुली से पूछा तो उसने विस्तर के दस आने मांगे। इन्हों ने कहा कि आठ आने तो दे देंगे, इससे ज्यादा नहीं। कुली जाते २ कह गया कि नौ आने से कौड़ी कम वह नहीं लेगा। देखा जाय तो विस्तर के लिए आठ आने भी बहुत ज्यादा थे। पर ऐसे समय ज्यादा और कम कुछ नहीं होता, जो इस समय सौदा पट जाय वही ठीक होता है। पाकिस्तान से जो हिन्दू शरणार्थी भारत की ओर आते थे, उन्हें दस रुपये मे पानी का एक गिलास खरीद कर पीना पड़ता था। उस क्षण यह बहुत महगा नहीं जान पड़ता था। इसीलिये कहता हूँ कि जब जो सौदा पट जाय वही ठीक है।

पर उन्होंने हठ किया। कहा आठ आने ही यदि इस मजदूरी का दाम हो, तो यह खुद कर लेनी भली है। न भले की इसमें कोई बात नहीं। विस्तर उन्हों ने सिर पर रखा उसका कुछ हिस्सा आखो के सामने आ गया, जिससे रास्ता तो दिखता रहा पर यह पता न रहा कि उस भीड़ भाड़ में माता जी उनसे कहां अलग हो गईं। प्लेटफार्म पर पहुँचे तो बहुत परेशान। इस भीड़ भाड़ में माताजी को कहाँ खोजें। विस्तर एक डिब्बे में पटक काफी ढूढ़ मचाई, पर कोई लाभ न हुआ। जब गाड़ी चलने लगी तो निराश होकर उन्होंने विस्तर फिर गाड़ी से नीचे उतार लिया। टिकट और पैसे उन्हीं के पास थे, अत. बिना माता जी को साथ लिये जाना सम्भव न था। यहा मिल, वहांमिल, यहां कह, वहां तार दे, न जाने कितनी दिक्कत उठा कर जब वे शाम को स्टेशन पर उदास बैठे थे, तभी एक ट्रेन मुरादाबाद से आई। उसमें से संयोगवश एक परिचित व्यक्ति उतरा और उसने बताया कि माता जी को मुरादाबाद स्टेशन पर उसे मिलीं थी। तब जाकर जी में जी आया।

(३)

मुंशी प्रेमचन्द्र की बात

एकबार स्वर्गीय मुंशी प्रेमचन्द जी ने श्री जैनेन्द्र कुमार को निमंत्रित किया, एक बार बनारस आइए, तो आपको अपने गाव ले चलेंगे।

कलकत्ते से लौटते हुए दो दिन के लिए जैनेन्द्र कुमार बनारस में उतरे। मुंशी जी ने उनका प्रेम से स्वागत किया और प्रोग्राम बना कि अगले दिन दोनों गाँव जाएंगे।

अगले दिन गाँव जाने को उद्यत हो कर दोनो तांगे के अड्डे पर पहुचे। उस अड्डे से गांव तक मुंशी जी संभवतः छः आने पैसे देकर जाते थे। उस तांगे वाले ने सात आने मांगे। मुंशी जी कब ठगे जाने वाले थे। बोले कोई आज नये तो नहीं जा रहे हैं। रोज छः आने में जाते हैं तो आज सात आने क्यों देगे तुम नहीं जाओगे तो तुम्हारा कोई भाई जायेगा।

कुछ संयोग ऐसा हुआ कि कोई भाई जाने को तैयार नहीं हुआ। सभी ने सात की मांग रखी। दो घटे तक तांगे वाले के किसी सस्ते भाई की इन्तजार होती रही। अन्त में निराश होकर दोनों साहित्यकार घर लौट आये और जैनेन्द्रकुमार जी के साथ प्रेमचन्द्र जी का अपने गांव जाना न हो सका। बाद में शायद किन्हीं क्षणों में मुंशी जी ने सोचा हो कि यदि उस समय एक आना अधिक खर्च ही किया जाता तो अच्छा रहता।

(४)

सावरकर गिरफ्तार

प्रसिद्ध भारतीय क्रान्तिकारी वीर विनायक दामोदर सावरकर को ब्रिटिश सरकार ने इंगलैंड में गिरफ्तार कर लिया था और उन्हें वहां से जहाज द्वारा भारत भेजा था। जब जहाज फ्रांस के तट पर मार्सेलीज के पास पहुंचा तो वीर सावरकर पहरेदारों को धोखा देकर जहाज पर से कूद पड़े और समुद्र में तैर कर किनारे जा पहुंचे। पता चलने पर जहाज ने उनका पीछा किया। वीर सावरकर पहले तट पर पहुच गये थे अत वे भागे पीछे पीछे जहाज की पुलिस भी भागी। भाग कर श्री सावरकर शहर में पहुँच गये वहां बिजली की ट्रामगाड़ियां चल रही थीं। पर सावरकर के पास पैसा नहीं था। यदि उनके पास उस बहुमूल्य क्षण में एक इकन्नी होती तो वे ट्राम पर चढ़ कर आसानी से पीछा करने वालों के चगुल से बाहर निकल जा सकते। पर इकन्नी उनके थी नही और इसका मूल्य उन्हें १८ साल की कड़ी सजा काट कर चुकाना पड़ा।

★ ★ ★

में अपना दुख और प्रजा के दुःख में अपना दुःख मानते हैं। क्योंकि "राजा कस्मात् प्रजा रजनात्" राजा को राजा कहते ही प्रजारजन के कारण हैं।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि वर्तमान भारत के उत्कर्ष, उन्नति, विकास और समृद्धि के लिये इस बात की परमावश्यकता है कि देश के प्रमुख सांस्कृतिक विचारक प्रथम स्वयं को और उसके अनन्तर अन्य संस्कारसम्पन्नोपेत नागरिकों को संग्राम सत्र में दीक्षित कर आवश्यक तैयारी के उपरान्त उपर्युक्त नवग्रहों के विरुद्ध संग्राम करने में प्रवृत्त हो जावें। जहां कहीं जब कभी अवसर मिले इनके सन्मुख घोर पराक्रम पूर्वक पुरुषार्थ करें। इस युद्ध कौशल के प्रसंग में किसी जातिभेद, वर्णभेद, सम्प्रदायभेद, वर्गभेद, श्रेणीभेद, दलभेद, पार्टीभेद, समाजभेद और धर्मभेद, का अणुमात्र विचार किये बिना घोर घमासान करके इन दुर्गुणों को आमूल उच्छिन्न करने के लिये राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के हृदय और मस्तिष्क दोनों को समान रूप से भारतीय सांस्कृतिक जीवन के लिये बद्धपरिकर होकर अग्रसर हो जाना चाहिये। किन्तु इस संग्राम सत्र की निर्विघ्न परिसमाप्ति के लिये जहां एक ओर उच्च आदर्श चरित्रबल की सर्व प्रथम आवश्यकता है, वहीं उसके अनुरूप व्यवहारिकता की ओर ध्यान रखना भी अनिवार्य है। इन दोनों के साथ ही सार्वजनिक जीवन की सफलता के लिये सातत्य और सुसंगठन भी अत्यन्त आवश्यक है। विनयशील व्यक्तियों के चुस्त संगठन और अडिग नेतृत्व, संग्राम विजय की सफलता का मूल होते हैं।

राजनीतिक तमिस्रा की सहस्राब्दी का भाग्य से अवसान हो गया है। विज्ञान के आलोक से चिरकालीन रूढ़िवाद का भी अन्त हो चुका है। सामाजिक कुरीतियों का असहिष्णु पक्ष भी शनैः २ शुष्कप्राय हो रहा है, भारतीयों की पारस्परिक वैमनस्यप्रियता धीरे २ तिरोहित हो रही है, सुमति और सद्भावना से प्रभावित होने के कारण भारतीय राजा और नवाब तथा इनके आतंकवादी शासन के बोझ से बोझिल प्रजाजन भी अब अखंड भारत राष्ट्र में स्वातन्त्र्य समीर का स्पर्श करने लगे है। आज भारत राष्ट्र एशिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र स्वीकार किये जाने के कारण उसका यशस्वी प्रधान अमात्य महाद्वीपके महासम्मेलन का सर्वसम्मति से प्रमुख स्वीकार किया जा चुका है। तेंतीस कोटि प्रजाजनों का हृदय सम्राट् अनायास पूर्वजों के पुण्य प्रताप से विश्व की दृष्टि में अभिषेचनीय और अर्घ्य बनचुका है। आज समस्त विश्व का मानव दानवता को तिलाजलि देकर "स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा" को चरितार्थ करने के लिये सतृष्ण नेत्रों से भारत की ओर देख रहे हैं। क्या भारत के सांस्कृतिक सत्र के ऋत्विग गण अपने पुरुषार्थ का अपराजित परिचय देने के लिये प्रवृत्त होंगे?

★ ★ ★ ★

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(लेखक—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल झज्जर)

गताङ्क ४ अगस्त से आगे

बीड़ी सिग्रेट पीने वालों के वस्त्र भी जल जाते हैं। वस्त्रों से ही पीछा नहीं छूटता प्राणों की आहुति भी देनी पड़ती है। अनेकों व्यक्ति इसी के द्वारा विकराल काल के कवल बन गये।

देहली के एक करोड़ पति सेठ के औरस पुत्र को सिग्रेट पीने का भारी अभ्यास हो गया वह बहुत बीड़ी पीता था एक दिन मलमल का ढीला कुर्त्ता और पतली धोती पहने हुए बिस्तरे पर लेटकर सिग्रेट पी रहे थे। धोती और कुर्त्ता वायु के झकोरे से इधर उधर उड़ जाता था सिग्रेट की थोड़ी सी ऊष्णता से तन्द्रा आ गई और सिग्रेट वाला हाथ सीने पर पड़ा सिग्रेट से आग लग गयी। कुर्त्ता जलने लगा सीना भी जला। हवा के कारण पाञ्च मिनट में काम हो गया भगदड़ मच गयी नौकर चाकर आये डाक्टर को टेली फोन किया गया। परन्तु कुछ न बना लड़के की मृत्यु हो गयी।

अमेरिका की एकप्रसिद्ध दूकान सिग्रेट की राख झाड़ने से ही आग लग कर भस्मसात् हो गयी जिसमें दो लाख पौंड की हानि हुई इसी प्रकार ६ घर २ जहाज और १०० स भी अधिक व्यक्ति जलकर मर गये। पशु भी ग्राम में आग लग जाने पर अनेकों मर जाते हैं।

अमेरिका में सिग्रेट से आग लग जाने की हानि का माध्यम २४ करोड़ रुपये वार्षिक है। सन् १९१९ में ग्रायेडाल कारखाने में आग लग गयी। लाखों की सम्पति के साथ १४० बालिकायें भी जल कर स्वाहा हो गयीं।

तम्बाकू और क्षयरोग !

आज क्षयरोग का भारत में बोलबाला है। लाखों व्यक्ति क्षयरोग के रोगी हैं। इस रोग से बचने के लिये स्वच्छ खुले वायुप्रद मकानों के निवास पौष्टिक एवं स्वास्थ्य प्रद भोजन की आवश्यकता पर पूरा बल दिया जा रहा है। अकेले मद्रास प्रान्त के लिये खुले हवा दार मकानों पर एक अरब रुपये का अनुमान लगाया गया है। जब एक अरब रुपया मद्रास के लिये चाहिये तो संयुक्त प्रान्त आगरा अवध के लिये कितना अपेक्षित होगा? और पुन अन्य प्रान्तों पर कितना भारी व्यय होगा इसका अनुमान हो लगाया जा सकता है। यह सब कुछ दरिद्र और भूखे भारत के लिये कम से कम अभी सम्भव नहीं है।

इसी निर्धनता के कारण अंग्रेजी ढङ्ग के अस्पताल और सेनिटोरियम भी नहीं बनाये जा सकते क्योंकि इनके लिये भी तत्काल पॉच अरब रुपये की आवश्यकता पड़ेगी, और कम से कम पांच लाख रोगी शय्या भी चाहिए जब कि केवल इस समय ७००० शय्यायें ही विद्यमान हैं।

उपरोक्त सुविधायें होने पर भी रोग का समूल नष्ट होना सहसा ही सम्भव नहीं है। इसका एक मात्र कारण मादक द्रव्यों का सेवन तत्काल बन्द कर दिया जाये। तम्बाकू का सेवन किसी भी प्रकार न किया जाये। तम्बाकू का खाना और पीना बन्द हो जाना चाहिये।

कैंसर आदि अनगिनत रोगों के साथ ही साथ क्षयरोग का कारण भी तम्बाकू है तम्बाकू के बन्द हो जाने से स्वास्थ्य स्वयं से समय में अनुकरणीय हो जायेगा।

सुप्रसिद्ध डाक्टर राइट का कहना है कि "तम्बाकू के द्वारा निकोटाइन विष के अन्दर प्रविष्ट होने से क्षयरोग का सामना करने की मनुष्य की शक्ति कम हो जाती है हृदय पर तम्बाकू का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। हृदय की ओर नाड़ी की फड़कन बढ़ जाती है। फफड़े खराब हो जाते हैं। आयु भी घट जाती है"

आयु कम होने का हिसाब न्यू इङ्गलैंड की बीमा कम्पनी ने १८००००० बीमा वालों का ६० वर्ष का हिसाब लगाया है। जो व्यक्ति तम्बाकू का सेवन नहीं करते थे वह सब से अधिक दिनों तक जीवित रहे। जो जितना अधिक तम्बाकू पीते थे वह उतनी ही जल्दी मरे।

स्त्रियों में तम्बाकू का प्रचार कम है। तम्बाकू पीने वाली स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम है। इसलिये वह अधिक दिनों तक जीवित रहीं।

संसार की समस्त मृत्यु संख्या का सातवां भाग क्षयरोग की देन है। जनसंख्या को लिया जाये तो पाञ्च व्यक्तियों में से एक इस रोग से मरता है।

इङ्गलैण्ड का गौरव शाली समुन्नत प्रान्त वेल्स भी क्षयरोग से नहीं बच सका है। वहाँ पर भी प्रति वर्ष चौव्वन हजार चार सौ पैंतीस मनुष्य क्षयरोग के अकाल में ग्रास हो रहे हैं।

बहुजन सख्या वाले विशाल नगरों, बड़ी बड़ी राजधानियों, व्यापारिक केन्द्रों तथा बड़े बड़े कारखानों में जहाँ तम्बाकू आदि नशीली चीजों का सेवन होता है, वहाँ यह विशेष रूप से पाया जाता है।

मध्यकाल में क्षयरोग राजगृहों में ही दिखाई देता था इसलिये क्षयरोग राजरोग कहलाता है। यह रोग प्राय शरीर के अवयव शिथिल हो जाने पर चौथी अवस्था मे ही हुआ करता था परन्तु आज भारत में क्षयरोग का प्रकोप बालकों से लेकर वृद्धों तथा राजप्रासादों से लेकर कृषक की झोंपड़ियों तक है। धनी निर्धनी युवक भी इससे नहीं बचे हैं। २६ वर्ष से ३० वर्ष की अवस्था मे होने वाली मृत्युओं मे ५२०७ प्रतिशत मृत्युएं क्षयरोग से ही होती हैं। यदि आज यह पूछा जाये कि भारत में सबसे अधिक प्रकोप किस रोग का है? तो उत्तर मिलेगा कि क्षयरोग और मलेरिया दोनों रोगों का भारी प्रकोप हो रहा है। जनता बड़ी परेशान है।

क्षयरोग से प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति मौत के मुंह मे चले जाते हैं। क्षयरोग का इतना भारी प्रकोप है कि भारत मे प्रति मिनट एक व्यक्ति क्षयरोग से मर जाता है। २४ घण्टों अर्थात् एक दिन रात में जिन की सख्या १४४० हो जाती है और प्रति मास में ४३२०० व्यक्ति मर जाते हैं। इस प्रकार एक वर्ष मे पाञ्च लाख अठारह हजार चार सौ व्यक्ति अपने अमूल्य जीवन को क्षयरोग के समर्पित कर देते हैं। और अपनी ऐहिक लीला को समाप्त कर जाते हैं। उनके सम्बन्धी पुरुष देखते ही देखते रह जाते हैं।

भारत में क्षयरोग का प्रसार भिन्न२ आयु में किस प्रकार है इसका अनुमान निम्न तालिका से लगाया जा सकता है कि क्षयरोग से कितना विनाश हो रहा है

आयु	प्रतिशत
१ से ५ वर्ष तक	११.४
६ ,, १० ,, ,,	३०.१
१० से १५ वर्ष तक	३३ १
१६ ,, २० ,, ,,	३८.१
२१ ,, २५ ,, ,,	५०.
२६ ,, ३० ,, ,,	५. ७
३१ ,, ४० ,, ,,	५६—
४१ ,, ५० ,, ,,	५६.४

भारत सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य के हाई कमिश्नर की रिपोर्ट के अनुसार प्रति वर्ष छ लाख व्यक्ति क्षय रोग से मर जाते हैं और लगभग तीस लाख व्यक्ति इस रोग मे ग्रस्त हैं। मानव शरीर शास्त्रों के महा पण्डित सुश्रुतकार ने अपने सर्व प्रसिद्ध सुश्रुत ग्रन्थ म शरीर की वृद्धिः यौवनम् सम्पूर्णता और किञ्चित्परिहाणि यह चार अवस्था बतलाई हैं। उन्होंने "आषोडशाद्वृद्धिः। आपञ्चविंशतेर्यौवनम्। आचत्वारिंशतः सम्पूर्णता तत किञ्चित्परिहाणिश्चेति"। के अनुसार शरीर की सम्पूर्णता चालीस वर्ष तक बतलाई है। तदुपरान्त किञ्चित्परिहाणि चौथी अवस्था का समय है। उस समय इस शरीर में जो धातु बढता है वह शरीर में नहीं रहता। स्वप्न प्रस्वेदादि के द्वारा बाहर निकल जाता है।

सुश्रुत के मतानुसार यही अवस्था विवाह के लिये उत्तम है। तभी गृहस्थ आश्रम सुखी सम्पन्न हो सकता है। आयु भी चार सौ वर्ष के लगभग होती है।

वैद्यक के परम प्रामाणिक ग्रन्थ चरक के प्रणेता महोदय ने चरक ग्रन्थ मे क्षयरोग के कारणों पर प्रकाश डाला है, उन्होंने —

"अयथा बलमारम्भं वेगसधारण क्षयम्
यक्ष्मण कारण विद्याच्चतुर्थं विषमाशनम्"

१—इस पाञ्चभौतिक शरीर से अपनी शक्ति और साहस से अधिक कार्य करवाना।

२—वेगसधारण—मल मूत्र आदि शरीर के प्राकृतिक वेगों का रोकना।

३—शरीर की अत्यन्त उपयोगी वस्तु वीर्य का क्षय करना।

४—विषम भोजन का करना।

यह चार कारण ही मुख्यतया बतलाये हैं। इस के अतिरिक्त और भी कारण हैं। तम्बाकू का सेवन चरक के समय में नहीं होता था इसलिये तम्बाकू के विषय में कुछ नहीं लिखा।

परन्तु इसमें सन्देह नहो कि क्षय रोग छुआ छूत की बीमारी है। जो हुक्के के द्वारा अधिक फैलती है।

तम्बाकू शरीर को ऐसी सूखी घास बना देता है जिसको क्षय रोग रूपी अग्नि वेग से भस्म कर देती है। वास्तव में तम्बाकू से शरीर इतना दुर्बल हो जाता है कि जो क्षय के प्रवाह को नहीं रोक सकता है।

क्षय रोग मानव शरीर के लिये ऐसी बारूद है जिससे यह शरीर एक दम फड़ाका हो जाता है। यदि मानव शरीर का शास्त्रोक्त समय तक सुरक्षित रखना है तो शरीर को पुष्ट करने वाले सात्विक आहारों का उपयोग करना होगा।

तम्बाकू, गांझा, चुरुट, शराब, अफीम, चण्डु, चरस आदि भोज्य पदार्थ नहीं हैं। इनके खाने से उदरपूर्ति भी नहीं होती यह तो बुद्धि और शरीर को नष्ट करने वाली वस्तुएं हैं। मनुस्मृति में लिखा है कि "वर्जयन्मधु मांसञ्च" शराब और मांस का सेवन नहीं करना चाहिये।

क्रमशः

यन्त्र-मानव जो मानव से अधिक चतुर है

लेखक—श्री मनोज शर्मा

कुछ महीने पहले अमेरिका में एक बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रयोग हुआ। एक व्यक्ति ने एक बटन दबाया और बटन दबाते ही सैकड़ों मील दूर न्यूफाउन्ड लैण्ड के एक तुषाराच्छादित हवाई अड्डे से एक हवाई जहाज उड़ा। उसको कोई आदमी नहीं चला रहा था। उस पर एक यन्त्र मानव ('रोबोट') बैठा हुआ था, जो सुदूर रेडियो तरंगों से संचालित होता था। इसी यन्त्र-मानव ने यान को चालू किया, उसको ठीक दिशा में निर्देशित किया और जब वह इंगलैण्ड के ऊपर उड़ रहा था तो उसे दूसरा रेडियो संकेत मिला जिसके अनुसार उस यन्त्र मानव ने बड़ी ही चतुराई से अपना वायुयान जमीन पर उतार लिया और मैदान की एक संकरी पट्टी पर जहाज दौड़ाता हुआ उसे ठीक स्थान पर खड़ा कर दिया।

एक प्रसिद्ध सैनिक उड़ाका कैप्टेन टाम वेल्स उसी जहाज पर था, लेकिन उसने एक पुर्जा भी नहीं छुआ। वह महज पीछे की सीट पर एक तटस्थ दर्शक की भांति बैठा हुआ था। उसका कहना है कि वह स्वयं शायद जहाज को इतनी चतुराई से नहीं चला सकता था, जितनी चतुराई से इस फौलाद के उड़ाके ने चलाया। कैप्टेन टाम वेल्स का कहना है कि रोबोट मानव मस्तिष्क से भी ज्यादा शीघ्रता से परिस्थिति को समझ लेता है और मनुष्य के हाथों से भी ज्यादा कुशलता से कार्य को निबटा लेता है।

लेकिन रोबोट का केवल इतना ही काम नहीं है। अमेरिका में इस प्रकार के हजारों यन्त्र-मानव बन रहे हैं जो खेत, खलिहान, कालेज, कारखाने, होटल और रेलवे स्टेशनों पर काम करेंगे। कैलीफोर्निया के सेन्टजाय नामक स्थान में तो एक पूरा कारखाना है जिसमें इस प्रकार के सैकड़ों यन्त्र-मानव काम करते हैं। आदमियों का तो केवल इतना काम है कि वे इधर-उधर घूमकर बटन दबाते हैं और हर मशीन की जाँच करते रहते हैं कि कहीं वह खराब तो नहीं हो गई है। यन्त्र-मानव नाशपातियों के ढेर में से सड़ी नाशपातियों निकालकर फेंक देते हैं और अलग अलग साइज की नाशपातियों निकाल कर छाँट लेते हैं। उसके बाद अपनी फौलाद की उँगलियों से वे नाशपातियों को छीलते हैं उनके बीज निकालफेंकते हैं, और उनकी फाँके बना लेते हैं। उसके बाद वे उन फाँकों को डिब्बे में भर डिब्बों की हवा निकाल देते हैं और उतना ही सिरका या शीरा भर देते हैं।

"धन्यवाद!"

इतना ही नहीं! वे हर डिब्बे पर लेबिल चिपकाते हैं। सिरके वाले डिब्बों पर सिरके का और शीरे वाले डिब्बे पर शीरे का। उसके बाद वे उन डिब्बों को पार्सल में पैक करके उनको ठीक ठीक पते पर भेजते हैं। जिन दूकानों पर ये डिब्बे बिकते हैं वहाँ भी अक्सर ये यन्त्र-मानव होते हैं जो आपको डिब्बे देते हैं और दाम लेने के बाद धीमे से कहते हैं 'धन्यवाद!'

कुछ यन्त्र मानव तो अच्छे खासे बातूनी होते हैं। बोस्टन में एक बहुत ही बड़ी है दूकान जहाँ सभी चीजें बिकती हैं। उसकी लिफ्ट में एक यन्त्र मानव है जो न केवल लिफ्ट चलाता है, बल्कि हर मंजिल पर बोलता जाता है। "यहाँ कपड़े मिलेंगे"—"यहाँ किताबों का विभाग है।" "यहाँ सिलाई होती है," आदि। एक टाइपिस्ट यन्त्र-मानव भी बना है जो आपकी पाण्डुलिपि को बड़ी ही सफाई से टाइप कर सकता है। कुछ दिनों बाद तो यह भी सम्भव होगा कि आप इस यन्त्र मानव टाइपिस्ट से बोलते जाय और वह टाइप करता जाय। और यह तो अभी आरम्भ है! आगे देखिए होता है क्या!

यन्त्र-मानव के कुछ गुण तो मानवोपरि होंगे। उदाहरण के लिए उसकी आख में एक्सरे किरणों का प्रयोग किया जा सकेगा। उसकी नाक में इतने सूक्ष्म यन्त्र लगाए जाएंगे कि उसकी घ्राण शक्ति के आगे मानव भी हार मानेगा। उसके कान में भी ऐसे यन्त्र लगेंगे, जिससे कि वह सूक्ष्मतम ध्वनि को भी ग्रहण कर सकेगा।

इनका मस्तिष्क भी कहीं अधिक तीव्र होता है। वे गणित में मानव से कहीं अधिक तेज होते हैं। इन्टरनेशल बिजनस मशीन कारपोरेशन ने तो ऐसे यन्त्र मानवों का निर्माण किया है जो तीन दिन के अन्दर अगली तीन शताब्दियों के हर एक पखवारे में चन्द्रग्रस्त का ठीक ठीक समय बता सकते हैं। मानव मस्तिष्क में जो भूरा द्रव पदार्थ होता है, उसके स्थान पर वे अल्युमूनियम का एक पदार्थ रखते हैं, जिसमें विद्युत् उत्पादित स्मृति-चिन्ह बहुत दिनों तक सुरक्षित रहते हैं।

इतना ही नहीं यन्त्र-मानव अपना इलाज भी खुद ही कर लेता है जैसे हम लोग जिस समय भी अपने में कोई निर्बलता या बीमारी अनुभव करने लगते हैं, उसी समय फौरन डाक्टर के पास जाकर अपनी चिकित्सा कराते हैं, उसी प्रकार यदि काम करते करते किसी भी यन्त्र-मानव में कोई दोष आ जाता तो वह काम करना रोक कर चुपचाप अपनी जगह से उठकर 'मरम्मत विभाग' में चला जाता है। वहाँ जब इन्जीनियर आता है तो वह उसका इलाज करता है।

प्रिन्सटन में एक दूसरे प्रकार के यन्त्र मानव का निर्माण हो रहा है जो ऋतुओं की आगामी सूचना दे सकेगा। सारे देश में फैले हुए सैकड़ों हजारों यन्त्र-मानव निरीक्षक किसी एक केन्द्रीय स्थल को अपने स्थानीय मौसम का विस्तृत हाल भेज देगा जहाँ एक विशाल यन्त्र-मानव उन सबों का झटपट तुलनात्मक अध्ययन कर उनके आधार पर आगामी ऋतु का हाल घोषित कर देगा।

लाभ

इन यन्त्र-मानवों से कई लाभ हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि यन्त्र मानव उन कार्यों को अधिक कुशलता से कर सकते हैं, जिनको करने में साधारण मानव को अधिक देर लगेगी। इसके अलावा बहुत ही अस्वास्थ्यकर

अरे, यह भजन, कीर्तन और माला जपना छोड़! किवाड़ बन्द करके मन्दिर की निर्जन अन्धेरी कोठरी में बैठा तू किसकी पूजा कर रहा है? अपनी आँख भी तो खोल कर देख, तेरा भगवान् तो तेरे सामने है ही नहीं!

वह तो वहाँ है, जहाँ किसान कड़ी भूमि को जोत रहा है और जहाँ सड़क बनाने वाला पत्थर के टुकड़े तोड़ रहा है। वर्षा में और धूप में सदैव उनके साथ रहता है और उसके वस्त्र धूलि धूसरित रहते हैं। अस्तु, अपना यह पवित्र परिधान तू उतार फेंक और उसी की भाँति तू भी धूलि भरी भूमि पर आ जा!

मुक्ति? अरे मुक्ति है कहाँ? हमारे प्रभु ने तो स्वयं अपने आप को प्रसन्नता पूर्वक सृष्टि के बन्धनों में बाँध रक्खा है और हमारे साथ सदा के लिए बँध गया है।

तो निकल आ अपनी समाधि से और दूर हटा यह सब पुष्प-धूप-दीपादि का आडम्बर! यदि प्रभु का अनुकरण करने में वस्त्र फट ही जाते हैं अथवा मलिन हो जाते हैं तो कौन-सी हानि है? कर्मयोग में प्रवृत्त होकर, उसके साथ पसीना बहा कर और उसका साथ देकर तू उससे मिल क्यों न जा!!

× × × ×

मेरी अभिलाषाएँ बहुत हैं और उनके लिए मेरा क्रन्दन भी अत्यन्त करुणा-जनक है; परन्तु तूने अपनी कठोर अस्वीकृतियों द्वारा सदैव मेरी रक्षा की है और तेरी यही प्रबल अनुकम्पा मेरे जीवन में पूर्ण रूप से व्याप्त हो गई है।

वासनाधिक्य के अवगुणों से मेरी रक्षा करता हुआ तू दिन-प्रतिदिन मुझे अपने इन साधारण परन्तु महान् उपहारों के योग्य बनाता जा रहा है, जो तूने मुझे अयाचित रूप से दे रक्खे हैं। जैसे आकाश और प्रकाश; शरीर, जीवन और मन!

कभी तो मैं आलस्य में पड़ कर पिछड़ जाता हूँ और कभी उद्बुद्ध होकर अपने लक्ष्य की खोज में दौड़ पड़ता हूँ, पर तू निष्ठुरता पूर्वक अपने आप को मुझसे छिपा लेता है।

दुर्बल और अनिश्चित कामना के अवगुणों से बचता हुआ और मेरी याचनाओं को अस्वीकृत करता तू दिन प्रतिदिन मुझे अपनी पूर्ण स्वीकृति का पात्र बनाता जा रहा है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ
(गीताञ्जलि से)

देश भर के विद्वानों द्वारा हिंदी राष्ट्रभाषा घोषित

राष्ट्रभाषा सम्मेलन का महत्वपूर्ण निर्णय

नई दिल्ली, ७ अगस्त। देश की समस्त भाषाओं के विद्वानों ने अपने सर्व सम्मत प्रस्ताव द्वारा हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में घोषित कर दिया। यही नहीं एक अन्य प्रस्ताव द्वारा राष्ट्र भाषा तथा प्रांतीय भाषाओं में पारस्परिक समन्वय की जो नई नीति अपनाई गयी उससे राष्ट्र भाषा के रूप तथा प्रचार में ही नहीं प्रांतों के आपसी सम्बन्ध में भी महान अंतर आ जायगा। आज सात अगस्त को केवल राष्ट्र भाषा के प्रतिष्ठापन ही नहीं, संस्कृत के सम्मान ही नहीं, प्रांतीय भाषाओं के संवर्धन की जो दिशा देश के शीर्ष पर स्थित इस विद्वत सम्मेलन ने दी वह, प्रांतीयता के नाश तथा राष्ट्रीय एकता के संस्थापन में अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

डा० कुन्हन राजा

सर्व प्रथम डाक्टर कुन्हन राजा ने, जो मद्रास में संस्कृत के विभागाध्यक्ष हैं तथा मलयालम के प्रकाण्ड विद्वान हैं, राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में भाषण दिया। आपने कहा कि इस समय मैं अंग्रेजी में बोल रहा हूँ पर जब हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित हो जायगी मैं हिन्दी में ही बोलूंगा। यदि उसे पूरी राष्ट्रभाषा बनने में पंद्रह वर्ष लगेंगे तो मैं १५ सप्ताहों में ही सीख लूंगा। इस समय तो मैं अपने नेताओं का एक स्वामिभक्त अनुयायी होने के कारण अंग्रेजी में ही बोल रहा हूँ क्योंकि हमारा विधान एक विदेशी पार्लमेंट की कृपा से बनी विधान परिषद् द्वारा विदेशी भाषा में बन रहा है।

मैं दक्षिण से आ रहा हूँ और मुझे कोई आशंका नहीं है कि हिन्दी के बारे में वहां दो मत होंगे। मैं समस्त दक्षिण की ओर से बोल सकता हूँ। कुछ ही वर्षों के अन्दर आप देखेंगे कि कि दक्षिण के लोग उन लोगों से अच्छी हिन्दी बोलते दिखाई देंगे जो तथाकथित हिंदी क्षेत्र से आते हैं। हम किसी भी भाषा से नहीं डरते कि कोई विदेशी भाषा हम पर थोप दी जायगी, हम तो प्रत्येक भाषा को एक भाषा मात्र मानते हैं और उस पर काबू करते हैं।

हिंदी के बारे में कोई निर्णय क्यों नहीं हो रहा है। मुझे यह देख कर एक धक्का सा लगा कि उद्देश्य प्रस्ताव में राष्ट्रभाषा की चर्चा तक नहीं है। जो धारा ९९ है, वह भी राष्ट्रभाषा का निर्णय नहीं। जब एक धर्मातीत राज्य के विधान में धार्मिक स्वतन्त्रता का मौलिक अधिकारों में उल्लेख हो सकता है तो राष्ट्रभाषा का उल्लेख यह-स्थगन है।

आपने आगे कहा कि जनता की भाषा की बड़ी आवाज उठाई जाती है। मुझे ऐसी किसी भी भाषा का ज्ञान नहीं जो वहां के केवल साधारण जनों ने बनाई हो। अंग्रेजी को लन्दन के टैक्सी ड्राइवरों ने नहीं बनाया है। आक्सफोर्ड तथा कैंब्रिज के विद्वानों ने बनाया है। उर्दू सेना के पड़ावों की भाषा है। आप सेना के पड़ावों की भाषा चाहते हैं या स्कूल तथा कालेजों में निर्मित भाषा चाहते हैं।

हम संस्कृत को छोड़ नहीं सकते। हमें उसकी सांस्कृतिक कार्यों के लिए आवश्यकता है। [illegible] कौन सी बड़ी नहीं होती! मुझे तो संस्कृत सबसे सरल लगती है इसी प्रकार यह कहना भी गलत है कि हम अंग्रेजी बिना काम नहीं चला सकते। अगर स्पेन और इटली का अंग्रेजी बिना काम चल सकता है तो हमारा काम हो क्यों न चलेगा? यह नहीं हो सकता है कि राष्ट्रीय होने के लिए तो एक भाषा की आवश्यकता पड़े और सभ्य होने के लिए दूसरी की।

अगर हम अंग्रेजी से ही चिपके रहना चाहते हैं तो अच्छा यह हो कि हम हिन्दी को हिमालय में भेज दें, प्रांतीय भाषाओं को अरब सागर में डुबा दें और अंग्रेजी को बुलालें। पर कृपा कर दो भाषायें न रखिये।

श्री नीलमणि फूकन

आसाम के श्री नीलमणि फूकन ने कहा कि उर्दू तो हिंदी से पृथक नहीं है। उसका तो हिंदी के साथ—साथ अपने आप प्रवेश हो जाता है। मणिपुर के श्री इन्द्रमोहन सिंह ने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी तथा देव नागरी लिपि का समर्थन किया। नेपाली (नेपाल) के श्री मिश्र अमृतानन्द ने कहा कि हिमालय अंचल की जनता तो हिन्दी को चाहती है। असली कठिनाई उसको होती है जो अपनी भाषा भी नहीं जानता। जो अपनी प्रांतीय भाषा जानता है वह हिंदी आसानी से सीख सकता है।

मुझे चेकोस्लोवाकिया से एक पत्र मिला हिंदी में। एक २२ वर्षीय युवक ने तीन साल में अपने आप हिन्दी सीख ली थी। भारतीयों के दिल में [illegible] है। हिंदी तो एशिया की भाषा हो सकती है। बर्मा, सिंहल तथा अन्य स्थानों के लोग हिंदी सीखना चाहते हैं। नेपालियों को तो हिन्दी बिना पढ़े समझ में आ जाती है और उनकी लिपि देवनागरी है ही।

अपनी भाषा

श्री कुन्हन राजा ने इस समय परिषद का मुख्य प्रस्ताव उपस्थित किया उन्होंने कहा कि जब हम पर अंग्रेज लोग बड़ी कुशलता से शासन करते थे और बड़ी सुनियन्त्रित सेना तथा पुलिस और कुशल शासन था, हम क्यों स्वतन्त्रता चाहते थे। चाहे शासन कुशल हो या भ्रष्ट, हमें स्वतन्त्रता की आवश्यकता थी। हम अपना शासन चाहते थे। इसी प्रकार हम कोई उपयोगी भाषा नहीं चाहते। हम अपनी भाषा चाहते हैं। हम ठीक उसी प्रकार अपनी भाषा चाहते हैं जैसे अपना स्वास्थ्य विभाग तथा अपनी पार्लमेंट और अपना विधान चाहते हैं।

डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि बंगाल ने अखण्ड भारत का विचार राष्ट्र को दिया था। हिंदी अखण्ड भारत की प्रतीक है। यह बात बंगाल में १८७२ में ही स्वीकार कर ली गई थी जब श्री केशवचंद्र सेन ने हिन्दी का समर्थन किया था। भूदेव मुखर्जी ने, जो बिहार में देवनागरी लिपि प्रचलित करने के लिए उत्तरदायी थे, १८७८ में ही हिंदी को राष्ट्र भाषा के योग्य बताया था। मैं १९२१–२२ से हिन्दी का समर्थक रहा हूं। मैं और मेरे एक मित्र महादेव वैद्य पेरिस के रेस्तरां में अंग्रेजी में बात कर रहे थे तो एक फ्रेंच हमारी मेज पर आ गया। उस समय मैंने उनसे संस्कृत में बात चीत करनी शुरू की (वे हिंदी नहीं जानते थे) क्योंकि जब देश के लिए स्वतन्त्रता मांगते थे और अंग्रेजी में बात करते थे तो विदेशी हमारा मजाक बनाते थे।

चटर्जी ने एक उदाहरण देते हुये कहा कि मैंने हरद्वार में एक साधू को धोती पहचान कर सोचा कि यह बंगाली है तो बंगला में बात की पर वह हिंदी बोला। मैंने कारण पूछा तो कहा की "संन्यासी होता हिंदुस्तानी बोलता।" इस प्रकार बंगला बोलने वाला प्रांतीय समझा जाता और हिन्दी राष्ट्रीयता का प्रतीक बन गई। हिंदी राष्ट्रभाषा तो हो ही गई है हमें उसे कानूनी मान्यता देनी है। शब्दों का स्रोत हमारा संस्कृत में ही होगा। लिपि के सम्बन्ध में सुनीति बाबू ने कहा की मैं समझता हूँ कि देवनागरी कि वैज्ञानिकता केवल वर्णमाला के यथास्थान रखने में है। यदि रोमन को इस प्रकार से बैठाया जा सके तो वह भी उपयोगी होगी पर इस समय जनमत देवनागरी के पक्ष में है और मैं अपना निजी मत दबाकर भी हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि का राष्ट्र लिपि के रूप में समर्थन करता हूँ।

हिंदी तो एक बहुत बड़ी देन है। हमें उत्तर भारत में यात्रा करते समय (हिंदी के कारण) कोई कठिनाई नहीं होती जैसी यूरोप में यात्रा के समय होती है। हिन्दी आर्यों तथा द्रविड़ों की संयुक्त रचना है। दोनों संस्कृतियों का पहला सम्मिश्रण पुराण काल में हुए, जो नैमिषारण्य में लिखे गये। तब से मध्यदेश की भाषा सारे भारत की भाषा रही है। ब्रह्मावर्त की भाषा ही राष्ट्र की सांस्कृतिक भाषा रही। पाली भी बिहार से संबंधित नहीं वरन शौरसेनी प्राकृत का एक भाग है। जिस समय बंगला भाषा बन रही थी बंगला कवि मथुरा की भाषा में भी कविता करते थे। शौरसेनी अपभ्रंश सारे उत्तर की कविता भाषा थी। और फिर ब्रज भाषा तो सारे उत्तर की काव्य भाषा बहुत समय तक रही। हिन्दी बोलने वाले पन्द्रह करोड़ हैं और इनके साथ अन्य आर्य भाषा [illegible]वार के लोगों

परिस्थितियों में किए जाने वाले कार्य भी इन्हीं यन्त्र-मानव द्वारा हो सकते हैं। अब मान लीजिए बेलजियन कांगो का एक सैकड़ों मील लम्बा चौड़ा ऐसा भयानक दलदल है, जहाँ कोई आज तक न गया हो। उस दलदल को सुखाना है। उसमें आदमी जा नहीं सकते। आप हवाई जहाज से सैकड़ों यन्त्र मानवों को पेराशूट के सहारे उन दलदलों में उतार दें और वे बिना किसी खटके के अपना काम कर सकते हैं। कोयले की खानों में जहाँ अक्सर विस्फोट होते हैं और सैकड़ों व्यक्तियों की जानें जाती हैं, उनमें इन्हीं यन्त्र-मानवों को कार्य करने भेज दें। एक कोने में बहुत खतरनाक बम बनाने का एक कारखाना है। आप जानते हैं, उसमें कितने लोग काम करते हैं? केवल ५ लड़कियां। वे उस कारखाने से दो मील दूर एक बहुत सजे हुए घर में बैठी बटन दबाया करती हैं और बाकी सभी काम यन्त्र-मानव करते हैं।

ये यन्त्र-मानव धीरे धीरे आदमी को इन कार्यों से मुक्त कर देंगे और फिर उसके बाद एक दिन आएगा, जब मनुष्य को अधिक अवकाश रहेगा और यदि वह उस अवकाश का उचित उपयोग कर सका तो वह अपनी सभ्यता को बहुत ऊँचे शिखर पर ले जा सकेगा।

(संगम से)

को जो हिंदी समझ लेते हैं या हिंदी समझने वालों की संख्या पच्चीस करोड़ हो जाती है। इस प्रकार देश में आर्य भाषा बोलनेवाले उत्तर प्रतिशत हैं। हिंदी, अंग्रेजी तथा उत्तरी चीनी के बाद संसार की तीसरी भाषा है।

डा० अमरनाथ झा

डा० अमरनाथ झा ने, जो बुखार में कम्पित मंचपर आये, और बोले, कहा कि मेरी मातृ भाषा भी हिन्दी नहीं है। यद्यपि हिंदी मेरी मातृ भाषा नहीं पर अपनायी हुई भाषा है। मैं पिछले बीस वर्ष से इस मत का समर्थक हूँ कि अगर भारत में राष्ट्रभाषा होने की क्षमता किसी भाषा में है तो केवल हिंदी में है। मेरा जीवन अंग्रेजी अध्ययन अध्यापन में कटा, अंग्रेजी लिखने पढ़ने में मैंने कुछ यश भी अर्जित किया पर किसी भारतवासी का यह कहना कि अंग्रेजी देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है न केवल देश का अपमान करता है वरन् बड़ी मूर्खता है। अगर कोई हिंदू उर्दू बोलता है तो मुसलमान उससे कहते हैं कि आप अच्छे जबान हैं। अगर कोई अंग्रेज जवाहर लाल नेहरू का नायडू की अंग्रेजी की तारीफ कर देता है तो हम फूले नहीं समाते। कोई विदेशी ऐसा नहीं है जो शुद्ध अंग्रेजी जानता हो। जैसा बर्नार्डशा ने कहा था किसी विदेशी को यह कोशिश न करनी चाहिए कि शुद्ध अंग्रेजी बोले। शुद्ध अंग्रेजी बोली ही नहीं जा सकती। यह कितनी लज्जा की बात है कि हम आज तक शिक्षा केंद्रों में अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दें। यह अंग्रेजी में पढ़ने वाले सज्जन अशुद्ध अंग्रेजी बोलते लिखते थे। अंग्रेजी का उपकार हम नहीं भूल सकते पर अंग्रेजी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। सब प्रान्तों के निवासी हिन्दी को ही ग्रहण करेंगे।

हिंदी के दो रूप होंगे राष्ट्रीय व प्रान्तीय। राष्ट्रीय रूपमें संस्कृत का बाहुल्य होगा प्रान्तीयमें वह जनताकी भाषा होगी। हिंदी भाषा भाषियों को प्रान्तों में जाकर हिंदी लिखने बोलने की कठिनाइयों को देखना चाहिये। हिन्दी वालों ने कुछ संस्कृत शब्दों के साथ भी बलात्कार किया है। हिंदी वालों की 'आत्मा स्त्रीलिंग क्यों हो गयी। यह मेरी समझ में नहीं आया। संस्कृत शब्दों के साथ जो अनुचित व्यवहार किया है उसे हटाना है।

इनके अतिरिक्त समस्त प्रान्तीय संस्थाओं के ३० प्रतिनिधियों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। श्री सातवलेकरजी ने कहा कि हमारी वर्णमाला हमारे समाज की प्रतिनिधि है। प्रस्ताव तुमुल करतल ध्वनि के बीच स्वीकृत हुआ।

✦✦✦✦

सर्वोदय समाज और उसका कार्य

ले०—श्रीआनन्द "आनन्द" प्रधान मन्त्री राजस्थान प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्

हमारे प्रान्त की दो रियासतों अलवर और भरतपुर में बसने वाले मेवों को लेकर इस समय काफी आन्दोलन चल रहा है। यह तो सबको मालूम है कि पिछले वर्ष ५० हजार मेव अपनी प्रसन्नता से वैदिक धर्म में दीक्षित हुए थे. और अब भी वे वैदिक धर्म में ही रहना चाहते हैं।

परन्तु विश्वबन्धुत्व के मिथ्या हामी सर्वोदय समाज के कुछ अवसरवादी कार्यकर्ता अपने साथ दो भूतपूर्व मुस्लिम लीगी गुण्डों को लेकर जो इस समय अमियस्त में हैं, अलवर भरतपुर के उन शुद्ध मेवों को येन केन प्रकारेण पुन. मुसलमान बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके इस मिथ्या प्रयत्न को देख कर आर्य जगत् में पर्याप्त असन्तोष फैल रहा है और समस्त भारतवर्ष की एवं विदेशों की आर्यसमाजों द्वारा इसका विरोध हो रहा है।

सर्वोदय समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला यह कार्य क्या सर्वोदय समाज के सिद्धान्तों के विपरीत नहीं है?

सर्वोदय समाज की दृष्टि में संसार की जातियाँ व धर्म सब समान हैं। फिर उनको यह चिन्ता क्यों हुई कि हिन्दू हुए मेवों को पुन: मुसलमान बनाया जावे। क्या यह नहीं कहा जा सकता कि उनका यह कृत्य सर्वोदय के सिद्धान्त की खुले आम अवहेलना कर रहा है। सर्वोदय समाज के कार्यकर्ताओं को तो अपना रचनात्मक काम करते हुए अपने उद्देश्य की ओर जाते रहना चाहिए।

क्या यही सर्वोदय समाज का रचनात्मक कार्य है कि हिन्दुओं को मुसलमान बनाना? या सर्वोदय की आड़ में कोई राजनैतिक षड़यन्त्र तो नहीं रचा जा रहा है? क्या सन् १९५१ के चुनावों में भावी एम० एल० ए० बनने के लिए उनसे वोटों की प्राप्ति के लालच में तो यह कार्य नहीं किया जा रहा है? अगर ऐसा नहीं है तो फिर सर्वोदय समाज के कार्यकर्ताओं को इन जातीय झंझटों में फसने की क्या आवश्यकता है।

क्या राष्ट्रपिता पूज्य बापू का यही रचनात्मक कार्य है? क्या आप दुनियां को साम्प्रदायिक २ चिल्लाते २ स्वयं साम्प्रदायिक नहीं बन रहे हैं। इस समय जो अलवर के मेवों में प्रचार किया जा रहा है वह साम्प्रदायिक प्रचार नहीं है तो और क्या है? जो जाति अपनी खुशी से अपने भाइयों में सम्मिलित हुई भयभीत करके पुन: उनसे विछोह कराना यह कहाँ तक विश्व बन्धुत्व है? यह तो आज का वातावरण व उनकी आत्मा ही बता सकती है। मैं भारत सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि इस तरह से जो सज्जन साम्प्रदायिक विद्रोह फैलाने का प्रयत्न कर रहे हैं उन्हें तत्काल रोका जाय।

✦✦✦✦

(पृष्ठ १ का शेष)

को इस बात का गर्व है कि एक जमाना था कि जब हमारा देश संसार का मुकुट बना हुआ था और संसार को उसने उपदेश दिया था और शान्ति स्थापित की थी। आज हम फिर चाहते हैं कि हमारा देश, जो संसार में अपनी संस्कृति से अपने प्राचीन इतिहास से, अपनी सभ्यता के प्रभाव से इस स्थान को प्राप्त करने का हक रखता है? वह फिर और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उठे और उसकी ऊंचाई को देखकर मानव समाज इसका अनुगमन करे और महात्मा जी के बताये गये भारतीय आदर्शों पर सारे संसार में शान्ति और सुख स्थायीरूप से स्थापित हो और मानवता का कल्याण हो।

इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये स्वाधीन भारत के नर नारियों को कई पीढियों तक भगीरथ प्रयत्न करना होगा इस महान कल्पना को सजीव रूप देने के लिये अनेक मिशनरी और स्वयंसेवक चाहिए जो इसी के लिये अपने जीवन को बलिदान करदें। आज इस देश के जनसेवकों में सब से बड़ी आवश्यकता है सेवाभाव और मिशनरी स्प्रिट की।

हमारे देश में, विदेशों से, अमेरिका और इंगलैंड से जो भी सालवेशन आर्मी में आदमी आते हैं, उनको मुश्किल से ५०, ६० रु० माहवारी मिलते हैं। इतनी दूर आकर काम करने को मिलता है, मोटी रोटी खाते हैं, बहुत से नंगे पैर चला करते हैं, एक लबादा कुरता अपने ऊपर डाल लेते हैं, रात दिन अस्पतालों में या क्रिमिनल ट्राइब्स के बीच ये सेवा कार्य करते हैं। क्या यह हमारे लिये किसी तरह से गर्व की बात है कि जब कि इतनी दूर से आकर लोग इस प्रकार सेवा करते हैं हम उसी तरह से अपने लोगों की सेवा करने में अब तक सफल नहीं हुये हैं? मगर इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। सेवा का वृक्ष स्वतन्त्रता के जल वायु में उभरता, पनपता और उठता है। पराधीन भारत के ठिठुरे और जकड़े वातावरण में इस वृक्ष का लहलहाना कठिन था किन्तु अब हम आजाद हो गये हैं और पोषक जल वायु सुलभ है। अस्तु स्वतन्त्र भारत की प्रभात बेला में इस प्रकार के मिशनरी सेवकों का प्रादुर्भाव होना ही चाहिये। और उसी पर इस देश और सारे संसार का कल्याण निर्भर है।

✦✦✦✦

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल वृन्दावन के उपदेशक पाठक शमानन्द सिद्धान्त शास्त्री साहित्य शिरोमणि ने सन् १९४९ के मास जनवरी से जूलाई तक निम्न लिखित स्थानों से भ्रमणान्तर गुरुकुल की सहायतार्थ ६०७॥=) प्राप्त किये।

नाम स्थान—ऐतमादपुर, शिकोहाबाद, काल्पी, उरई रनियां, भर्थना, छिबरामऊ, मैनपुरी, एटा, फतहगढ़, कन्नौज, भागाव, बेवर, जसराना, नवाबगंज, फतहपुर, इलाहाबाद, कोंच, पुखरायां, हरदोई, कोसकलां, अतरौली, अमरोहा, नगीना, चटापुर, रामपुर, खुर्जा आदि के दानदाताओं को धन्यवाद है।

श्रीराम
अधिष्ठाता गु० कु० वृन्दावन

कुल महाविद्यालय ज्वालापुर

ता० ८ अगस्त को म० वि० ज्वालापुर में श्रावणी का शुभ पर्व बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातः बृहद् यज्ञ श्री सेठ जोरावरमलजी जालान की ओर से हुआ तथा श्री प० छेदीप्रसादजी व्याकरणाचार्य का प्रवचन हुआ। मध्यान्होत्तर श्री कुलपति स्वा० आनन्दप्रकाशजी तीर्थ के सभापतित्व में सभा हुई जिसमें श्री प० सत्यव्रतजी शास्त्री, श्री प० प्रहलादजी शर्मा वैद्य आदि महानुभावों के श्रावणी के महत्व पर भाषण हुये।

सत्यव्रत शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता

सूचना

बनारस कमिश्नरी (बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, बलिया) के समस्त जिला आर्योपसभाओं तथा समाजों के मंत्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि कमिश्नरी के जिलों में निम्न प्रकार के सभा के उपदेशकों एवं प्रचारकों की नियुक्तियां प्रचारार्थ की गई हैं। अतः आप लोगों का कर्त्तव्य है कि इन महानुभावों से प्रचार कार्य करावें। शुद्धि कार्य की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इन महानुभावों को मार्ग व्यय आदि के अतिरिक्त वेद प्रचार में विशेष रूप से धन देकर रसीद ले लिया करें।

१. श्री महादेव प्रसादजी जौनपुर, २. श्री ठा० शीतलसिंहजी मिर्जापुर, ३ श्री प० सत्यमित्रजी शास्त्री महो० बलिया ४. श्री ठा० धर्मराजसिंहजी बनारस व गाजीपुर

कन्या पाठशाला भवन का शिलान्यास

पीपरी बाजार बनारस में आर्य कन्या पाठशाला—भवन का शिलान्यास ४-८-४९ ई० को लगभग ५ हजार उपस्थित जनता के सम्मुख प्रान्तीय शिक्षा सचिव मा० श्री सम्पूर्णानन्दजी के कर कमल द्वारा सम्पन्न हुआ। शिक्षा मन्त्री जी ने अपने भाषण में अपने प्रान्त में बालिकाओं की शिक्षा के अधिक प्रचार पर जोर दिया और आश्वासन दिलाया कि जनता के साथ सरकार भी इस कार्य में पूर्ण सहयोग देगी।

प्रधान मंत्री
आर्य समाज मारवाड़ी बाजार काशी।

—प० रामचन्द्र ने कायमगंज समाज में आकर नरहरिपुर, कुबेरपुर, अनाईपुर, कायमगंज में भजनों द्वारा प्रचार किया और दो विद्यार्थी गुरुकुल वृन्दावन को भिजवाये। अनाईपुर के रामनारायणजी वर्मा के पुत्र का मुण्डन-संस्कार विधिवत कराया। आपके प्रचार का प्रभाव बहुत उत्तम रहा। आपने विद्यार्थियों को गुरुकुल भेजने पर जोर दिया।

निर्वाचन

—आर्यकुमार सभा अजमेर की नई स्थापना और उसका नीचे लिखा चुनाव हुआ—

प्रधान बद्रीप्रसादजी आर्य, मंत्री उदयरामजी आर्य, कोषाध्यक्ष हरिश्चन्द्रजी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष नारायणसिंहजी आर्य।

आर्यकुमार सभा गोरखपुर का पुनर्गठन

आर्यकुमार सभा गोरखपुर को विशेष गति देने के लिए उसका पुनर्गठन किया गया। उत्साही पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ—

१—प्रधान श्री सत्यव्रत आर्य सिद्धान्तरत्नजी, २—उपप्रधान श्री नागेन्द्रजी, ३—मंत्री श्री श्यामलाल जी, ४—उपमंत्री म० रामचन्द्रजी सिद्धान्त रत्न, ५—कोषाध्यक्ष म० अखिलानन्दजी आर्य सिद्धान्त रत्न ६—पुस्तकाध्यक्ष श्री स्वामी कार्तिकेयजी निरीक्षक श्री सूर्यदेवजी प्राणाचार्य।

—गुरुकुल सिकन्दराबाद की छात्र-वर्द्धिनी सभा का चुनाव निम्न भांति से हुआ—

सभापति म० महावीरप्रसाद विशारद
उप सभापति ,, जगदीशप्रसाद शर्मा
मन्त्री ,, ओमप्रकाश 'विशारद'
उपमन्त्री ,, यतीन्द्रकुमार 'वामा'
कोषाध्यक्ष ,, आनन्दप्रकाश शर्मा सिद्धान्त शास्त्री
निरीक्षक ,, [illegible] सिद्धान्त रत्न विशारद

स्त्री आर्यसमाज टिकार जिला हरदोई

प्रधाना श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी, उपप्रधाना श्रीमती गायत्री देवी, मंत्रिणी श्री बेटी तक़दार कुंवरि, उप मंत्रिणी श्रीमती बिटोली देवी, कोषाध्यक्ष श्रीमती जमुना देवी, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती जनौरा देवी, निरीक्षक मामलसिंह आर्य।

—रामपुर की आर्यसमाजों के प्रतिनिधि गण की एक मीटिंग रामपुर आर्यसमाज मन्दिर में श्री प० बलदेवजी के सभापतित्व में ता० २४-७-४९ को हुई। निश्चय हुआ कि आर्य वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य उप प्रतिनिधि सभा रामपुर बनाई जाये जिसके निम्न पदाधिकारी निश्चित हुये—

१. प्रधान म. बा० ओंकारशरण जी विद्यार्थी, २ उप प्र० म हरिप्रसादजी आर्य, म मुरारीलालजी आर्य, ३. मन्त्री म. सत्यदेवजी, ४ उप मन्त्री म काशीरामजी, म देवेन्द्रनाथजी, ७. कोषाध्यक्ष श्री चोखेलाल जी

आठ अन्तरङ्ग सदस्य निर्वाचित हुये। —मन्त्री

आर्यसमाज झालू

प्रधान म० ला० अशर्फीलालजी उ० प्र० नन्दकिशोरजी, मंत्री म० प्यारेलालजी आर्य उप मन्त्री म० आनन्दप्रकाशजी, कोषाध्यक्ष म० ओ३म्प्रकाशजी, पुस्तकाध्यक्ष म० म० श्यामप्रकाशजी।

आर्यसमाज गया—

प्रधान म० यदुवंशीसहायजी, उपप्रधान डा० बालमुकुन्द सहायजी, प्रधान मन्त्री म० दीनेश्वर प्रसाद कर्ण 'विशारद', उपमन्त्री म० केदारनाथजी, कोषाध्यक्ष म० किशुनराम जी लेखा निरीक्षक म० गेन्दुसावजी, पुस्तकाध्यक्ष म० वेणीमाधवजी।

आ० स० उज्जैन

श्री प० बसन्तीलालजी आयुर्वेदाचार्य प्रधान, प० पन्नालालजी नागर उप प्रधान, मा० रविवर्माजी आर्य मन्त्री, प० मिट्ठूलालजी उपाध्याय उप मन्त्री, ठा० इन्द्रसिंहजी पुस्तकाध्यक्ष, सेठ लक्ष्मीनारायणजी कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज छपरा

प्रधान श्री रामकृष्ण राय
प्रधान श्री इन्द्रमणि जी तिवारी
श्री जगन्नाथ प्रसाद गुप्त
मंत्री श्री वैद्यनाथ प्रसाद
अध्यक्ष श्री कैलाश पति जी
निरीक्षक श्री सुदर्शन प्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष श्री रामनाथ विद्यार्थी

आर्यसमाज संयोगितागंज (इन्दौर)

प्रधान श्री नाथूलालजी वर्मा, उपप्रधान मन्नालालजी विश्वकर्मा, मंत्री म० सीतारामजी वर्मा 'दिव्य' उपमन्त्री श्री गुरु शर्मा, प्रचार मन्त्री श्री जगप्रसाद मिश्र, पुस्तकाध्यक्ष श्री रुजी स्वामी, कोषाध्यक्ष श्रीनिवासजी आर्य।

(शुद्धि संस्कार)

—आ० स० शाहगंज ने अन्न के मुसलमान अकबर हुसेन की शुद्धि की शुद्धि संस्कार होने के बाद महाशय श्रोम् प्रकाश नाम रक्खा गया। उपस्थिति आर्य सभासद तथा हिन्दू जनता की अच्छी थी।

—दिनांक २ अगस्त को बलिया जिला के भोपाल पुर ग्राम में श्री सुदामा रामजी तथा उनके परिवार को शुद्धि गाव की पवित्रत मयवकी की अध्यक्षता में गायत्री मन्त्र द्वारा की गई। इसमें श्री श्याम सुंदर जी मलिक का विशेष हाथ था। इस परिवार में पांच पुरुष तथा दो स्त्रियां हैं।

—आर्यसमाज जलालाबाद (शाहजहांपुर) द्वारा २८ वर्षीय नौमुस्लिम नवयुवक की शुद्धि की गई। उसका नाम अशर्फीलाल रखा गया।

अपील - पत्रिका

सेवा में,
श्रीमान, मन्त्री जी
आर्य समाज
महोदय नमस्ते,

सेवा में सानुरोध निवेदन है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रान्त ने प्रान्त की समस्त समाजों पर गुरुकुल की सहायतार्थ एक धन राशि नियत की है, जिससे गुरुकुल को नियत वार्षिक सहायता प्राप्त रहे।

कृपया इस धन को यथासम्भव शीघ्र गुरुकुल भेज कर अनुगृहीत करें और इसकी सूचना सभा कार्यालय को भी देने का कष्ट करें। यदि गुरुकुल की ओर से धन संग्रहार्थ कोई महानुभाव आपके यहां पधारें तो उन्हें अधिक से अधिक सहायता प्रदान कराने की कृपा करें।

निवेदक:—
नरेन्द्र शास्त्री　　रामदत्त शुक्ल
सभा प्रधान.　　सभा मन्त्री.

आर्य सन्यासी चाहिये

जो आर्य संन्यासी अपने लिए एक कुटी बनाकर औषधियों द्वारा जनता की सेवा वैदिक तथा सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहें उन्हें कई समाजें अपनी ओर से सुविधाएं पहुँचाना चाहती हैं। प्रचार क्षेत्र आस पास के ग्राम होंगे और रहने का प्रबन्ध समाजें करेंगी। आगरा जिला के समाजों की मांग है। पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—प्रभुशरण मन्त्री जिला आर्य प्रति निधि सभा दयानन्द आगरा।

आटे के साथ मूंगफली की खली मिलायी जायगी प्रांत की जेलों में प्रयोग

लखनऊ, । ज्ञात हुआ है कि विशेषज्ञों की राय पर युक्तप्रांत की सरकार ने १५ प्रतिशत मूंगफली की खली आटे मे मिलाने की सिफारिश की है। विशेषज्ञों की राय यह है कि मूँग फली की खली में प्रोटीन (मांस पेशियां बनाने वाला पदार्थ) पर्याप्त मात्रा में होता है और उसे मिलाने से आटा अधिक पौष्टिक हो जाता है। इसका प्रयोग आर्थिक दृष्टि से भी लाभकर होगा क्योंकि इसकी कीमत १० रू० मन से अधिक नहीं है।

प्रयोग स्वरूप जेलों के राशन में मूँ-गफली की खली और आटा मिला कर दिया जायगा।

निजाम पर बम फेंकने के अपराध में दण्डित दोनों बन्दी रिहा

हैदराबाद, निजाम की मोटर पर ४ दिसम्बर १९४७ को बम फेंकने के अपराध में पंडित श्री नारायण राव तथा श्री गन्दिहा आज जेल से मुक्त कर दिये गये।

श्री नारायण राव २० वर्ष और श्री गन्दिहा २० वर्ष का कारावास दण्ड भोग रहे थे।

(पृष्ठ २ का शेष)

उत्पादन और जनसंख्या

खाद्य मन्त्री ने बतलाया कि १९४० से जनसंख्या में २१

उत्पादन में केवल दस प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आपने कहा कि भारत भर में ५० लाख व्यक्ति प्रति वर्ष बढ़ते हैं।

खाद्यमन्त्री ने यह भी बताया कि प्रांत में रबी व खरीफ की फसल में कुल ९९ लाख टन अन्न पैदा हुआ जिसमें से केवल ६ लाख टन सरकार ने वसूल किया। वसूल होने वाले अन्न में ४० प्र श गेहूं, ४१ प्रतिशत चना तथा शेष मोटे व मिलावट के अन्न हैं। युक्त प्रान्त में प्रांतीय सरकार के हिसाब से कुल कमी लगभग ६ लाख टन की है।

★ ★

आवश्यकता

ब्रह्मचारियों की देख रेख रखने योग्य शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण दृढ आर्य-समाजी आयु लगभग ४० या उससे अधिक हो और जिन्हें ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने व उच्च सदाचारी बनाने की रुचि हो, आवश्यकता है। खाने पीने के लिए ४० रु० व महगाई ६ रु० कुल ४६ रु० मासिक भेंट दिया जायगा। एकाकी हों या जो अकेले रह सकें ऐसे सज्जन प्रार्थना पत्र भेजें क्योंकि उन्हें हर समय ब्रह्मचारियों के साथ रहना होगा। ३५१ B

श्रीराम
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा)

आवश्यकता

मेरा एक लड़का २४ वर्ष का व एक लड़की सोलह वर्ष की विवाह योग्य हो गये हैं। लड़का Imperial Bank Gorakhpur में १५०) मासिक वेतन पाता है, हृष्ट पुष्ट व सुन्दर है। जात-पात का कोई विशेष बंधन नहीं। वैश्य मात्र होना चाहिए।

लड़की के वास्ते वर Intermediate से कम पास न हो। अगर नौकरी करता हो तो और अच्छा है।

पता—छब्बूलाल, अलीनगर,
(गोरखपुर)

आवश्यकता

भागीरथी आर्य कन्या पाठशाला लालकुर्ती मेरठ के लिये—

(१) एक योग्य, अनुभवी अध्यापिका जो हिन्दी तथा संस्कृत मे विशेष योग्यता रखती हो।

(२) एक अपर मिडिल P T C अनुभवी अध्यापिका की आवश्यकता है।

(३) दो अनुभवी योग्य अध्यापकों की पुत्र पाठशाला के लिये आवश्यकता है।

वेतन तथा स्वीकृति ग्रेड अनुसार दिया जायेगा। प्रार्थी दृढ आर्य विचार के हों और प्रार्थना पत्र २५ अगस्त तक आने चाहिये। ६५० बी०

मैनेजर

कश्मीर में विराम संधि पर भारत-पाकिस्तान सम्मेलन

श्री नगर १३ अगस्त। कश्मीर कमीशन के सदर दफ्तर से आज यह घोषणा की गई है कि कश्मीर में विराम संधिके संबंध में भारत पाकिस्तान के संयुक्त सम्मेलन का जो निमंत्रण कमीशन ने भेजा था उसके संबंध में दोनों सरकारों ने सिद्धान्ततः अपनी लिखित स्वीकृति दे दी है।

रेलों के विकास के लिए विश्व बैंक से भारत को ३ करोड़ ४० लाख डालर का ऋण

४ करोड डालर और मिलने की आशा

वाशिंगटन, १६ अगस्त । विश्व बैंक ने भारतीय रेलों के विकास और पुनर्निर्माण के लिये भारत को ३ करोड़ ४० लाख डालर ऋण देना स्वीकार कर लिया है ।

ऋण की घोषणा करते हुये विश्व बैंक के अध्यक्ष श्री यूजीन ब्लैक ने कहा है कि निकट भविष्य में भारत को और भी ऋण दिये जायगे । इस प्रकार ऋण की कुल रकम लगभग ७ करोड़ ५० लाख डालर हो जायगी ।

तीन करोड़ चालीस लाख डालर का ऋण इंजन, बायलर और फुटकर पुर्जे खरीदने में खर्च किया जायगा ।

ऋण पन्द्रह साल के लिए दिया गया है । इस पर तीन प्रतिशत ब्याज और एक प्रतिशत कमीशन बैंक को दिया जायगा । विश्व बैंक १५ अगस्त १९५० से भारत को यह रकम देना शुरू कर देगा ।

शिकोहाबाद की सफलता

१८ अगस्त को प्रातः काल ८॥ बजे वर्षा के कारण भीगता हुआ आर्य समाज मन्दिर शिकोहाबाद में पहुंचा । शिकोहाबाद में आने का मुख्यकारण रूपधनी की यज्ञ शाला का निरीक्षण करना और सम्भव हो तो उसकी दयनीय दशा को दूर कर सुप्रबन्ध करना था । जिला एटा में रूपधनी एक ग्राम है । वहाँ के रईस स्वर्गीय श्री चौधरी गुलाब सिंह जी महर्षि दयानन्द जी महाराज के अनन्य भक्त एवं शिष्य थे । उन्होंने यज्ञशाला बनवाई थी और उसमें कुछ सम्पत्ति भी लगा दी थी । इस समय उन के प्रपौत्र हैं । पारस्परिक मत भेद के कारण यज्ञशाला दुरवस्था के दुर्दिन स दब गई है । श्री युत चौधरी लायकसिंह जी रईस उरावर ने इच्छा प्रकट की कि यदि धुरेन्द्र शास्त्री इस कार्य के लिए कुछ यत्न करें तो यज्ञशाला के दुर्दिन दूर हो सकते हैं । मैं इसी आशा पाश में पड़ कर वहाँ आया था कि यत्न ही नहीं अपितु प्रचुर प्रयत्न भी करना पड़ेगा तो वह भी करूँगा । परन्तु वहां आने पर वर्षा बाधक ऐसी हुई कि शिकोहाबाद से मैनपुरी तक जाना भी असम्भव हो गया ।

दो दिन समाज मन्दिर में बैठे बैठे बीत गये तब मैंने सोचा कि शिकोहाबाद की यह मेरी यात्रा नितान्त निष्फल न हो इस लिए मैंने श्री प० दयाराम जी मन्त्री आर्यजिलोपसभा, और प्रधान श्री ठाकुर फूलसिंह जी से कहा कि अब रूपधनी जाना तो कठिन है वेद प्रचार के लिए ही कुछ धन इकट्ठा कर दो और आर्य मित्र के कुछ शेयर भी बिकवा दो । दोनों सज्जनों ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और रविवार की सायंकाल ५७१ पौने छः सौ इकहत्तर की थैली वेद प्रचार के लिए मुझे दे दी और १५०० रुपया शेयरों का भी दे दिया अर्थात् तीन हजार के शेयर भी बिकवा दिये । इन दोनों सज्जनों का सभा की ओर से मैं हृदय से आभार मानता हुआ मुदित मन से कहता हूँ कि शिकोहाबाद की मेरी यह यात्रा सफल रही ।

धुरेन्द्र शास्त्री प्रधान सभा

आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत, स्वतन्त्र भारत राष्ट्र के द्वितीय स्वतन्त्रता पर्व दिवस के पवित्र अवसर पर हार्दिक हर्ष प्रकट करते हुये प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकारों के प्रति लोकहित साधक समस्त योगक्षेम सम्बन्धी आयोजनों में पूर्ण सफलता लाभ करने के निमित्त मंगल कामना करती है ।

रामदत्त शुक्ल

सभा मन्त्री
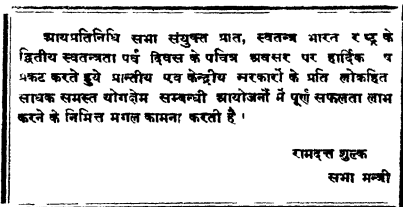
राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर समझौते का नया मसविदा

नयी दिल्ली, २९ अगस्त । विधान परिषद् की मसविदा समिति ने कांग्रेस दल की आज की बैठक में राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में एक समन्वयात्मक मसविदा प्रस्तुत किया । कांग्रेस दल के अधिकांश सदस्यों द्वारा इसके स्वीकार कर लिये जाने की सम्भावना है । कल की बैठक में इस पर अन्तिम रूप से निर्णय हो जायगा ।

इस मसविदे में कहा गया है कि देवनागरी लिपि में हिंदी संघ की सरकारी भाषा होगी । नये विधान के लागू होने के बाद से १५ वर्षों तक संघके सभी सरकारी कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा अभी तक यह नहीं निश्चय हो पाया है कि अंक अंग्रेजी में लिखे जायँगे अथवा संस्कृत में ।

नये मसविदे में यह भी व्यवस्था की गयी है कि इन १५ वर्षों के मध्यवर्ती काल में राष्ट्रपति सरकारी कार्यों में अंग्रेजी के साथ हिन्दी के प्रयोग का भी आदेश दे सकते हैं । १५ वर्षों के बाद पार्लियामेंट किसी विशेष कार्य के लिए अंग्रेजी के प्रयोग की व्यवस्था कर सकती है ।

भाषा के परिवर्तन के सम्बन्ध में मसविदे में यह सुझाव रखा गया है कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिनिधियों का एक कमीशन बनाया जाय जो सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और अंग्रेजी कम करने तथा अंकों के सम्बन्ध में अपने सुझाव देगा । इस कमीशन का निर्णय विधान लागू होने के ५ साल बाद होगा और उसे अपने सुझाव रखते समय देश की औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगति और सरकारी कर्मचारियों के हित को ध्यान में रखना होगा ।

कश्मीर के सम्बन्ध में संयुक्तराष्ट्र संघ में निराशा

लेकसक्सेस, २० अगस्त । संयुक्त राष्ट्र संघ के उच्चाधिकारियों और कश्मीर के बारे में जानकारी रखने वाले क्षेत्रों में इस बात से पर्याप्त निराशा फैल गयी है कि भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाला विरामसंधि सम्मेलन अब न होगा । सम्मेलन क्यों समाप्त कर दिया गया इस सम्बन्ध में भी इन क्षेत्रों को केवल इतना पता है कि कमीशन ने स्वयं ही यह सम्मेलन समाप्त करने का फैसला किया है ।

समझौते की आशा सहसा क्यों समाप्त हो गयी इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि कमीशन के विराम संधि सम्बन्धी प्रस्तावों पर भारत और पाकिस्तान की सरकारों ने जो उत्तर दिये हैं उनका गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने के बाद ही कमीशन इस परिणाम पर पहुँचा है । कमीशन की राय है कि दोनों पक्षों में इतना अधिक मतभेद है कि उन में समझौता असम्भव है ।

कश्मीर मतगणना के व्यवस्थापक एडमिरल निमिज, जिन्होंने विगत सप्ताह कहा था कि उन्हें कश्मीर कमीशन की सफलता और प्रगति पर अत्यन्त "उत्साह और हर्ष" का अनुभव हो रहा है, आज निराश थे । उन्होंने एक पत्रकार से कहा कि मैं भी आप लोगों की तरह एक दम अंधकार में हूँ । मुझे नहीं पता कि यह अप्रिय घटना कैसे हो गयी ।'

सुरक्षा समिति में भारत के चुने जाने की पूरी संभावना

ब्रिटेन, फ्रान्स व अमरीका पूरी तरह समर्थन करेंगे

लेकसक्सेस, १६ अगस्त । यहां पर संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्बन्ध में जानकार अधिकारी क्षेत्रों से इस आशय के संकेत मिले हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के सितम्बर मास के अधिवेशन में सुरक्षा समिति की सदस्यता के लिए जो चुनाव होने वाले हैं उनमें भारत के चुने जाने की काफी सम्भावना है । इस सितम्बर में तीन अस्थायी सदस्यों कनाडा, अर्जेन्टाइना और सोवियत यूक्रेन के स्थान रिक्त हो रहे हैं ।

काश्मीर में

एडमिरल निमिज के मध्यस्थ होने की सम्भाव !

साथ ही मतगणना प्रबन्धक का कार्य भी करते रहेंगे

लेकसक्सेस, १२ अगस्त । संयुक्त राष्ट्र संघ के केन्द्रीय कार्यालय में प्रेस ट्रस्ट के भारतीय प्रतिनिधि श्री डी० पी० वागले को ज्ञात हुआ है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ कश्मीर के विवाद में सम्भवतः ऐडमिरल निमिज को मध्यस्थ नियुक्त करेगा और भारत तथा पाकिस्तानकी सरकारों से अनुरोध करेगा कि मत गणना प्रबन्धक के साथ ही मध्यस्थ का कार्य भी एडमिरल निमिज को सुपुर्द किया जाना दोनों सरकारें स्वीकार कर लें ।

निमिज मध्यस्थ बनने को तैयार

एडमिरल निमिज ने भी कहा था कि यदि इस प्रकार की वार्ता चल रही हैं तो उसमें उनका हाथ नहीं है एडमिरल चुपचाप बैठे रहना नहीं चाहते और यदि उन्हें सुरक्षा परिषद ने मध्यस्थ का भार सौंपा तो निश्चय ही वे इसे स्वीकार कर लेंगे ।

कश्मीर कमीशन का वक्तव्य

श्रीनगर, १६ अगस्त । कश्मीर कमीशन की ओर से एक वक्तव्य प्रकाशित करके उन कारणों पर प्रकाश डाला गया है जिनके कारण २१ अगस्त को होने वाला संयुक्त सम्मेलन रद्द कर दिया गया है । वक्तव्य में कहा गया है कि कमीशन को यह स्पष्ट हो गया था कि यदि सम्मेलन बुलाया गया तो अन्य मुद्दों के बारे में तो मतैक्य होना असम्भव है ।

कार्यसूची के सम्बन्ध में सबसे बड़ी कठिनाई आजाद कश्मीर सेनाओं के विघटन और निःशस्त्रीकरण तथा कश्मीर रियासत के उत्तरी क्षेत्र की सुरक्षा और शासन के प्रश्न को लेकर था ।

वक्तव्य में कहा गया है कि कमीशन शीघ्र ही दोनों सरकारों को अपने अगले कदम के बारे में सूचित करेगा ।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः ।
(ऋ० ४ । ३३ । ६)

नेताओं लोगों ने सदा सत्य का पालन किया है ।

ता० २५ अगस्त १९४९

शिक्षाप्रसार व धर्म

जबतक ब्रिटिश आधार विचार पर और परम्पराओं पर भारत की राजनीति आश्रित रहेगी तब तक केवल अशिक्षा को ही देश के सभी दुःखों के लिये उत्तरदायी समझा जायगा। भारत में विदेशीय अंग्रेजी शासन पर यह आक्षेप बहुत समय से किया जाता था कि इसने देश के जन साधारण को जानबूझ कर इसलिये अशिक्षित रखा कि जिससे उसका साम्राज्य भारत में अधिक से अधिक समय तक स्थायी रह सके । परन्तु अब देश के राष्ट्रीय नेता व विचारक उग्र तथा क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित होकर यह कहने लगे हैं कि सब दुःखों का मूल आर्थिक शोषण की वर्तमान व्यवस्था ही केवल इस कारण प्रचलित है कि जनता में ठीक २ शिक्षा का अभाव है ।

अब भारत स्वतन्त्र हो गया है अत स्वभावतः ही उसके सन्मुख अनेक राजनैतिक और आर्थिक समस्यायें उपस्थित हो गई हैं। इन समस्याओं की ओर ध्यान दिया जाना तथा अनेक उन्नति परक योजनाओं को कार्य में परिणत करने का यत्न करना बहुत उत्तम है परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं है कि इन अनेक योजनाओं के कारण बहुत से अत्यन्त आवश्यक मौलिक सुधारों की ओर देश का बहुत कम ध्यान आकृष्ट हो रहा है। इन्हीं महत्व पूर्ण सुधारों में से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य 'अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा' का कार्य है।

यह ठीक है कि निर्वाचन के समय 'मत' प्राप्ति के लिये बहुत सी अनेक आकर्षक असम्भव घोषणायें और प्रतिज्ञायें प्रायः की जाती हैं। परन्तु उन सभी प्रतिज्ञाओं का पूर्ण न हो सकना आवश्यक नहीं है। जन गणना में वयस्क मताधिकार के लिये मत सूचिका तय्यार करना ही एक तो वैसे ही कठिन कार्य है परन्तु अशिक्षा के कारण तो वयस्क मताधिकार द्वारा अभिलषित उद्देश्य के पूर्ण होने में ही सन्देह उत्पन्न हो जाता है। वर्तमान विधान के अनुसार देश में अशिक्षित व्यक्तियों को भी 'मत' देने का अधिकार शीघ्र ही प्राप्त हो जायगा। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि इसके क्या २ दुष्परिणाम हो सकते हैं।

जन साधारण में पठन पाठन की योग्यतामात्र उत्पन्न करने के लिये पश्चिमी बङ्गाल की सरकार ने एक समिति की स्थापना की थी। इस समिति का मत है कि यदि जनतन्त्र प्रणाली के ठीक २ लाभ अपेक्षित हैं तो वयस्कमताधिकार और वयस्क शिक्षा में साथ २ प्रगति होना आवश्यक है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये, शिक्षा विशेषज्ञों की समिति के परामर्शानुसार एक पञ्चवर्षीय योजना का प्रारम्भ किया था। इस योजना के अनुसार पुस्तकालयों, वाचनालयों, घूमनेवाले सिनेमा, थियेटरों, फिल्मों तथा अन्य इसी प्रकार के मनोरञ्जक उपकरणों द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक शिक्षा तथा साधारण शिक्षा को विस्तारित तथा उन्नत करने का प्रयत्न किया है। उसने प्रथम वर्ष ही १०० शिक्षा केन्द्र स्थापित किये जिनमें ४०० शिक्षक कार्य करते रहे। उस गवर्नमेंट का यह भी विचार है कि इस प्रकार के १०० नवीन शिक्षा केन्द्र प्रतिवर्ष स्थापित किये जाँय। जिनमें से प्रत्येक शिक्षा केन्द्र में ४० वयस्क विद्यार्थी रहें। यह सब प्रयत्न शिक्षा के केवल इस आदर्श को सन्मुख रख कर किया गया है कि इस प्रकार जनता इतनी शिक्षित हो जायगी कि वह समाचार पत्र पढ़ने की योग्यता सम्पादन कर सके।

प्रश्न यह है कि शिक्षा के केवल इस आदर्श को पर्याप्त समझा जाना चाहिये अथवा नहीं ? समाचार पत्रों के पढ़ सकने मात्र की योग्यता सम्पादन कर लेने से व्यक्ति के पूर्ण मानसिक विकास का हो जाना स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इससे तब तक विशेष लाभ होने की सम्भावना नहीं है जब तक कि समाचार पत्रों के निरन्तर पढ़ने की रुचि और सत्यासत्य विवेक की योग्यता जनता में न हो। यह भी कठिनाई है कि ग्राम वासियों की आर्थिक दशा भी इतनी उन्नत नहीं है कि वे इस बोझ को सहज ही सह सकें। ग्राम वाचनालय का एक पत्र सम्पूर्ण ग्राम के लिये पर्याप्त नहीं हो सकता। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि शिक्षा व साक्षरता स्वयं में उद्देश्य नहीं है। राजनैतिक मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों का मत है कि वर्तमान समय में उच्चशिक्षा न देकर केवल साधारण शिक्षा देने मात्र को पर्याप्त समझना ही 'एकाधिपत्य शासन' का प्रवर्तक सिद्ध हुआ है। साधारण शिक्षा का ज्ञानमात्र ही व्यक्ति को अपने अधिकार और उत्तरदायित्व का ज्ञान कराने के लिये पर्याप्त नहीं है। अधिकार की अपेक्षा 'उत्तरदायित्व' का अनुभव प्रजातन्त्रवादी शासन की आधार शिला है।

भारत के ग्राम निवासियों और नगर निवासियों के शिक्षा स्तर में स्पष्ट ही अत्यन्त विषमता है। उनके रहन सहन, रुचि और निवास शैली में अत्यन्त अस्वाभाविक भेद जनक असमानता उत्पन्न हो गई है जो कि विदेशी अंग्रेजी शासन व शिक्षा का एक भयानक दुष्परिणाम हुआ है। स्वयं नगरों में भी विभिन्न वर्गों में इस प्रकार की विषमता प्रायः लक्षित होती है। नगरों की इस शिक्षा की विषमता को दूर करने का एक परीक्षण देहली म्यूनिसिपैलिटी द्वारा किया गया। पर्याप्त धन व्यय करने के अनन्तर यह सिद्ध हुआ। कि पश्चिम के ढंग पर नकल की गई इस प्रकार की योजनाओं में जनता का कोई उत्साह नहीं है। सब्जीमण्डी का बस्ती के अतिरिक्त जो कि हरिजनों की बस्ती है अथवा जुम्मा मस्जिद और बेलीमारान में जहाँ कि मुसलमानों के मस्जिद आदि धार्मिक स्थान अधिक हैं, अन्य स्थानों पर शिक्षार्थियों का लगभग अभाव ही रहा। हाँ, यह प्रायः अवश्य देखा गया कि जब किसी प्रसिद्ध नेता का रेडियो से भाषण होता था तो उसे सुनने के लिये समीप के व्यक्ति एकत्रित हो जाते थे, अन्यथा शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से स्थान निर्जन ही रहता था।

शिक्षा प्रसार का एक दूसरा सफल परीक्षण भी हुआ। भारत की जनता स्वभावत ही धर्मपराण जनता है। वह धार्मिक प्रवचन सुनने के लिये अत्यन्त श्रद्धा से एकत्र होती है। इस मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन कर गिवाड़ा के पास गतवर्ष एक ग्राम में शिक्षा देने के प्रारम्भ व अन्त में धार्मिक कथाओं व प्रवचनों के किये जाने के कारण ही जनता में पठन पाठन की इतनी अधिक रुचि बढ़ गई कि उस स्थान का ६० प्रतिशत व्यक्ति पठित हो गया।

क्या इस परीक्षण से शिक्षा विभाग स्वयं शिक्षा ग्रहण करेगा। और शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य, मनुष्य को धार्मिक और सदाचारी बनाने का यह प्राचीन अनुभवसिद्ध उपाय ग्रहण कर सच्चे अर्थों में शिक्षित आर्यजन बनाने का उपक्रम करेगा ?
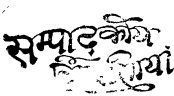
नैपाल की स्वतन्त्रता

१० अगस्त को लेक सक्सेस में नैपाल को अपनी अपनी स्वतन्त्रता के समर्थन में वक्तव्य देना पड़ा है।

कई मास पूर्व नैपाल के सुरक्षा कौंसिल में सम्मिलित किये जाने के प्रार्थना पत्र पर नैपाल के पृथक स्वतन्त्र देश होने की राजनैतिक स्थिति पर सन्देह प्रकट किया गया था। रूस के प्रतिनिधियों ने नैपाल का सुरक्षा कौंसिल में सम्मिलित किये जाने का विरोध इस आधार पर किया था कि वह स्वतन्त्र देश नहीं है और पश्चिमीय प्रजातन्त्र राज्यों का आश्रितमात्र है। सुरक्षाकौंसिल में इस प्रकार के अवसरों पर विवाद से धीरे धीरे स्पष्ट होता जा रहा है कि इस तरह की राजनैतिक घोषणायें अपने अपने देशों में अपने अपने दल को सशक्त बनाने, अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में विपक्षी दल के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से की जाती हैं—अमेरिकन इङ्गलिश गुट और रूसी गुट के चक्की के पाट में अन्य छोटे छोटे देश व्यर्थ ही में घसीट लिये जाते हैं।

नैपाल के सम्बन्ध में, उसकी विशेष भौगोलिक परिस्थिति के कारण, संसार को पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं है। नैपाली सैनिकों की संसार व्यापी महायुद्धों में जगत प्रसिद्ध शूरवीरता की कहानियों से योरोपियन जनता को केवल इतना ही ज्ञान प्राप्त हो सका है कि नैपाली लोग अत्यन्त उत्कृष्ट स्वामी भक्त सीधे सादे सैनिक जाति के आयुधजीवी पुरुष हैं जिनका खुखरियों का भय शत्रु दल में विचित्र प्रकार का आतंक उत्पन्न कर देता है।

नैपाल के सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक तथा ब्रिटिश पार्लियामैंट के सदस्य मि० परसीवाल लैण्डन ने लिखा है कि न तो नैपाल को कभी कोई शक्ति विजय कर सकी और न उस पर कभी किसी विदेशी शक्ति का अधिकार व प्रभाव ही रहा। इस शताब्दी के प्रारम्भ में एक अवसर पर जब लार्डकर्जन नैपाल जाना चाहते थे, नैपाल के महाराजा चन्द्र ने उनके नैपाल प्रवेश की अनुज्ञा केवल इसलिये नम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दी थी कि वे भारत के वायसराय व गवर्नर जनरल जैसे विशेष राजपद पर आसीन थे। महाराजा ने यह सावधानता केवल इस लिये अंगीकार की थी कि नैपाल की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में कहीं भ्रम उत्पन्न न होने पावे। अथवा राजनैतिक स्थिति में कोई उलझन न पड़ सके।

नैपाल के सन् १८१८ में ब्रिटेन के विरुद्ध १७९२ ई० में चीन और १८५५ में तिब्बत के विरुद्ध युद्ध घोषणा उसकी स्वतन्त्रता को सिद्ध करने वाली है।

सन् १९१४ के विगत महायुद्ध के अनन्तर जब तत्कालीन राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) का निर्माण हुआ तब सन् १९२४ में उक्त संघ में भी नैपाल को स्वतन्त्र देश मानकर ही उसमें सम्मिलित होने का निमन्त्रण भेजा गया था। ऐसी अवस्था में नैपाल की स्वतन्त्रता तो असंदिग्ध है ही—हाँ, यह अवश्य है कि स्वतन्त्र नैपाल का भारत के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनैतिक इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि भारत में चल रहे आन्दोलनों से नैपाल को सर्वथा ही प्रभावित न होने देना सम्भव नहीं है। भारत के प्रत्येक आन्दोलन का प्रभाव स्वतः ही नैपाल पर पड़ता है।

अभी पिछले दिनों समाजवादी दल द्वारा भारत में नैपाल के विरुद्ध प्रदर्शन व आन्दोलन आदि सञ्चालित किये गये थे। इस प्रकार के आन्दोलन न केवल अस्वाभाविक ही थे किंतु दूरदर्शी बुद्धिमान राजनीतिज्ञ इस प्रकार के आन्दोलन को एक दूसरे मित्र देश के आन्तरिक मामलों में बाह्य प्रभाव का हस्तक्षेप मानकर अनुचित समझते थे। यह ठीक है कि नैपाल का राज्य सञ्चालन व शासन आधुनिक ढंग के पश्चिमीय शासन प्रणाली के अनुसार नहीं है परन्तु इसमें भी सन्देह का कोई कारण नहीं है कि वहां की अधिकांश जनता वर्तमान गुण विहीन प्रजातन्त्र वाद के दूषण से बची हुई है तथा प्रतिदिन के उत्तेजनात्मक आन्दोलनों से मुक्त है।

नैपाल के सम्बन्ध में भारत के राज सञ्चालकों ने जिस दूरदर्शिता पूर्ण नीति को स्वीकार किया है वह न केवल भारत ही के लिये हितकारी सिद्ध होगी अपितु उससे नैपाल में भी स्वयमेव कल्याण कारी सामयिक परिवर्तन स्वभावतः ही होते रहेंगे।

★

एशिया का संक्रान्तिकाल

एशिया भूखण्ड के अन्दर सभी राष्ट्र इस समय विशेष राजनैतिक परिस्थितियों में से गुजर रहे हैं। गत संसार व्यापी महायुद्ध में पराजित होने के कारण, योरोपियन प्रथम श्रेणी के शक्ति शाली राष्ट्रों को चुनौती देने वाला महाशक्तिशाली जापान अपनी स्वतन्त्रता खोकर मित्र राष्ट्रों की संरक्षता में अपनी स्वतन्त्रता का आगमन कर रहा है, उसका गर्वित हृदय कुचला हुआ है। अपने पड़ोसी अन्य राष्ट्रों को आत्मसात करने की महत्वाकांक्षा के पूर्ण होने की न केवल निकट भविष्य में कोई आशा ही नहीं रही है अपितु उसकी स्वयं स्वतन्त्रता भी उसे कब प्राप्त होगी, इसका कुछ निश्चय नहीं है।

संसार के सर्वाधिक महा प्रदेश, चीन की राष्ट्रीय सरकार के भाग्य निर्णय की अन्तिम घड़ियां उपस्थित हैं। गत वर्ष मध्ययोरोप में हुये परिवर्तनों के समान ही, एशिया में भी नवीन प्रकार के इतिहास का निर्माण करने वाली अनेक शक्तियां चुपचाप कार्य कर रही हैं। सभी देशों में उनकी प्राचीनतम सामाजिक परम्परायें व राजनैतिक प्रथायें क्रान्तिकारी ढंग से परिवर्तित हो रही हैं इससे सर्वत्र खिंचाव उत्पन्न हो गया है। चीन जैसे घनी संख्या वाले देश के कम्यूनिज्म के प्रभाव में चले जाने से जो परिवर्तन होगा उसके ठीक ठीक परिणाम को आंकने के लिये समय अपेक्षित है। बर्मा को भी नवीन स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है परन्तु वहाँ भी अव्यवस्था और गृह युद्ध चल रहा है। इस प्रश्न का कुछ अधिक महत्व नहीं है कि वहाँ वर्तमान सरकार रहती है अथवा विदेशी शक्ति द्वारा सञ्चालित कम्यूनिस्ट सरकार। सिद्धान्त की दृष्टि से बर्मा ने कम्यूनिज्म के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है, मलाया और इन्डोचीन में भी अत्यधिक अशान्ति है, इन्डोनेशिया की स्थिति अत्यन्त संदिग्ध है, अफगानिस्तान से भी प्रायः व्यग्रता जनक समाचार प्राप्त होते रहते हैं। हाँ-भारत सीलोन और पाकिस्तान में अपेक्षाकृत शान्ति है।

इसलिये पश्चिम के प्रजातन्त्र वादी देश यहां तक कि वाशिंगटन और लन्दन भी, उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से हतबुद्धि कर देने वाली एशिया की इस स्थिति को व्याकुलता के साथ देख रहे हैं। एशिया की इस महाप्रलय की आंधी से बचाने की उनकी एक मात्र आशा भारत की राजनैतिक स्थिरता की चट्टान पर टिकी हुई है। प्रजातन्त्र वादी देशों का भारत के, एशियावासी देशों के राजनैतिक नेतृत्व पर विश्वास है। भारतीय नेताओं की बुद्धिमत्ता का ही यह परिणाम निकला कि, स्वतन्त्रता के अनन्तर देश में अभूत पूर्व हिंसायें तथा भयङ्कर दंगे फिसाद होने पर भी राष्ट्र शीघ्र ही शान्ति व व्यवस्था स्थापित कर सकने की योग्यता का अपूर्व उदाहरण संसार के सम्मुख उपस्थित कर सका।

यह श्रेय प्राप्त होने पर भी यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इस समय देश की मनोदशा जिस दिशा की ओर गति कर रही है, यदि उसे दिशा की ओर उसे प्रगति करने दिया जायगा तो संसार की शान्ति, व्यवस्था व प्रगति की सम्पूर्ण आशायें शीघ्र विनष्ट हो सकती हैं। कारण चाहे जो कुछ भी हो, इस मानसिक वृत्ति के उत्पन्न होने में चाहे किसी पर इसका उत्तरदायित्व हो, परन्तु अब सम्पूर्ण उपायों से परिस्थिति को अधिक दूषित होने से रोकना ही कल्याण कारी है। इन बिगड़ती हुई परिस्थितियों के दो रूप हैं। प्रथम तो यह कि भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध, धीरे २ खराब हो रहे हैं। दोनों ही देशों की रक्षा, आर्थिक समृद्धि और व्यावसायिक उन्नति अन्योन्याश्रित हैं। दोनों देशों में इन विषयों में इतनी घनिष्टता है कि उन्हें सर्वथा ही पृथक २ नहीं किया जा सकता है। इसलिये राजनैतिक बुद्धिमता इसी में है या तो परस्पर मिलकर विवादग्रस्त विषयों का समाधान कर लिया जावे अथवा अन्य किसी मध्यस्थ द्वारा दोनों में बढ़ती हुई विरोध भावना को दूर करने का यत्न किया जावे। काश्मीर का प्रश्न निस्सन्देह बहुत पेचीदा है। दोनों देशों में जनवरी सन ४९ की विराम सन्धि से उत्पन्न हुई आशा एक एक निराशा में परिणत होती जा रही है। काश्मीर में दोनों देशों द्वारा स्वीकृत सीमारेखा के निर्णय हो जाने पर भी पाकिस्तान के नवीन रवैये से स्थिति के फिर अधिक उलझ जाने की आशंका होने लगी है। सुरक्षा कौन्सिल द्वारा नियुक्त कमीशन का यत्न किस रूप में कहां तक, कब तक सफल हो सकेगा यह कहना कठिन है। इसी प्रकार शरणार्थियों द्वारा परित्यक्त सम्पति का प्रश्न अधिक उलझता जा रहा है। सिंचाई के लिये गंगा, व्यास और सतलुज आदि नदियों के जल का प्रश्न भी हल नहीं हो सका है। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों देशों में 'शान्तियुद्ध' चल रहा है वह स्थिति दोनों देशों के 'लिये घातक सिद्ध हो सकती है। विशेषकर उस अवस्था में जब देश में अराजकता का आशङ्का हो।

द्वितीय कारण यह है बङ्गाल के दोनों भागों, आसाम, मद्रास के कुछ भाग तथा हैदराबाद आदि विशेष कर पश्चिमी बङ्गाल और कलकत्ता में अत्यन्त खेद जनक, अशान्ति जनक दुर्घटनायें दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। इन दुर्घटनाओं को निरपेक्ष दृष्टि से देखा जाय अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होगा। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद की आंधी का यह प्रारम्भिक रूप है। यदि दलबन्दी व काल्पनिक आत्म प्रतिष्ठा से ऊपर उठकर देश के नेताओं ने समय रहते ठीक ढंग से इसके मूल कारणों के विनाश का उपाय नहीं किया तो वह समय दूर न होगा जबकि

(शेष पृष्ठ ६ में)

आर्य्यमित्र

ज़मींदारी उन्मूलन की पृष्ठभूमि

दुर्गादत्त पन्त :

औद्योगीकरण का आधार

समय परिवर्तन के साथ सामाजिक संबंधों और उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन होता रहता है। प्रत्येक देश में इस प्रकार के उदाहरण मिलते हैं। आज का युग यन्त्रयुग, अथवा मशीन युग कहा जाता है। प्रत्येक देश उन्नति के लिए औद्योगीकरण के मार्ग पर आगे बढ़ता है। अपने देश की उन्नति के लिए हमारे लिए भी आवश्यक है कि हम औद्योगीकरण की चेष्टा करें।

वास्तव में औद्योगीकरण ऐतिहासिक रूप से सामन्तवादी प्रथा की समाप्ति के बाद का युग है। अर्थात् औद्योगीकरण की सफलता के लिए सामन्तवाद का समाप्त होना आवश्यक है। प्रश्न है—ऐसी आवश्यकता क्यों पड़ती है। सामन्तवादी प्रथा (यानी जमींदारी, ताल्लुकेदारी, नवाबी आदि) के कारण भूमि का स्वामी जमीन का जोतने बोने वाला न होकर सामन्त होता है। फलतः किसान को मेहनत का फल - लगान, गल्ला, अन्य वसूलयाबी आदि की शक्ल में जमींदार के पास चला जाता है। और किसान दिन पर दिन गरीब होता जाता है उसे अधिक उत्पादन के लिए उत्साह नहीं मिलता और जमीन पर बोझा बढ़ता रहता है जिससे किसान की गरीबी और भी बढ़ती जाती है। सामन्तवादी युग में किसान ही की आबादी सबसे अधिक होती है, बहुमत जनता के गरीब होने से कारखानों का माल बिक नहीं सकते। अतएव वह पनप नहीं सकते। कारखानों के पनपने के लिए यह आवश्यक है कि किसान अच्छे खरीददार बनें, किसान अच्छे खरीददार तब बन सकते हैं जब उनकी कमाई उनके पास रहे, उनकी कमाई उनके पास तब रह सकती है जब वे जमीन के स्वयं पूर्णाधिकारी हों। और ऐसा ज़मींदारी प्रथा समाप्ति पर ही हो सकता है। इस भांति औद्योगीकरण के लिए, जमींदारी प्रथा [समाप्ति] आवश्यक होती है।

यहाँ पर एक बात पर और ध्यान देने की आवश्यकता है, वह यह कि यह भी एक सत्य है कि औद्योगीकरण के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती है। यह मजदूर देहातों की अतिरिक्त आबादी में से ही प्राप्त हो सकते हैं। वास्तव में औद्योगीकरण के लिए देहात में अतिरिक्त मजदूरों का होना आवश्यक है। इस सत्य को तो पूंजीवादी, समाजवादी अथवा साम्यवादी, अर्थ नीति पर आस्था रखने वाले सभी स्वीकार करते हैं। अतएव जमींदारी प्रथा का अन्त इस प्रकार होना चाहिये कि जमीन पर भविष्य में बोझा न बढ़े और उद्योगों के लिए यहाँ की अतिरिक्त आबादी मजदूरों के रूप में प्राप्त होती रहे। यदि हम इतिहास को देखें तो हमको ज्ञात होगा कि जिन २ देशों में औद्योगीकरण का मार्ग अपनाया गया वहां २ धीरे २ जमीन पर से बोझा कम होता गया अर्थात् देहातों की अतिरिक्त आबादी गुजर के लिए जमीन पर निर्भर नहीं रही वरन् वह धीरे धीरे शहरों की ओर जाकर औद्योगीकरण में सहायक हुई।

देश की उन्नति के लिए सामन्तवादी प्रथा का अन्त आवश्यक है। आंकड़ों को देखते हुए ज्ञात होता है कि किस प्रकार हमारे ही प्रान्त में किसानों की मेहनत का बड़ा भाग लगान के रूप में उनसे ले लिया जाता है। १९४२, ४३ ई० में जमींदारों ने किसानों से १७ करोड़ २७ लाख रुपया लगान वसूल किया जब कि उन्हें सरकार को ६ करोड़ रुपये से भी कम मालगुजारी देनी पड़ी। इस भांति शेष लगभग ११॥ करोड़ रुपए केवल मध्य वर्गी होने के नाते उनकी सम्पत्ति हो गए। कोई भी सरकार ६ करोड़ से भी कम रुपए की वसूली के लिए ११॥ करोड़ रुपया कमीशन न देना पसन्द करेगी।

साम्राज्यवाद का प्रभाव

हमारे देश के किसानों की खराब हालत का ऐतिहासिक कारण हमारी दासता भी रही है। इतिहास के प्रत्येक विद्यार्थी को ज्ञात है कि मुगलकाल के अन्तिम दिनों में हमारे यहाँ कपड़े का व्यापार तथा अन्य उद्योग वा ललित-कला सम्बन्धी काफी उन्नति हो रही जा रही थी। यदि उस प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से विकास करने का अवसर मिलता तो हमारा देश भी औद्योगीकरण में काफी उन्नति कर लेता किंतु ऐसे ही काल में साम्राज्यवादी शक्तियों ने इस में पदार्पण कर हमारी प्रगति को रोक दिया।

ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर यहाँ की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को नष्टभ्रष्ट कर उसे ब्रिटेन की आवश्यकता के अनुकूल बनाने की चेष्टा की। अतएव इन्होंने भारत वर्ष को कच्चा माल खरीदने और पक्का माल बेचने की मंडी बनाया। फलस्वरूप हमारे यहाँ उद्योगों की उन्नति के लिय कोई अवसर ही न रहा। यही कारण है कि हमारे यहाँ जमीन पर बोझा बढ़ता गया।

इस प्रकार नवीन व्यवस्था की सुरक्षा के लिये इस बाहरी शक्ति को भारत में अपना सामाजिक आधार उत्पन्न करने की आवश्यकता भी पड़ी। इसीलिये आज के जैसे जमींदार वर्ग की उत्पत्ति हुई।

आबादी का बटवारा

सारे देश के अनुकूल हमारे प्रान्त की आबादी भी सदैव बढ़ती रही है। गाँवों की आबादी बढ़ने के कारण भी जमीन पर बोझा अधिकाधिक होता गया, फलतः जमीन छोटे छोटे टुकड़ों में बट गयी जिससे उत्पादन में कमी हुई और किसानों की गरीबी बढ़ी।

१९३१, ४१ की जनगणना के अनुसार हमारे प्रान्त की आबादी ५॥ करोड़ के लगभग थी लेकिन पंचायतों के चुनाव के अवसर पर ज्ञात हुआ कि आजकल प्रान्त के ११४२१५ गांवों में ५४०००३/४ लाख की आबादी है। शहरों की आबादी लगभग ८० लाख है। इस भांति, आजकल प्रान्त की कुल आबादी लगभग ६ करोड़ २० लाख है। जिसमें ८७ फीसदी गाँवों की आबादी है और लगभग १३ फीसदी शहरों की।

गाँव में रहने वाले सभी लोग अपनी खेती नहीं करते कुछ तो अपनी खेती करते हैं, कुछ खेतिहर मजदूर हैं और कुछ अन्य पेशों का काम करने वाले हैं जिनका अनुपात निम्नलिखित है

५६.५ प्रतिशत खेतीबाड़ी करने वाले,
२.२ ,, जमींदार या काश्तकार जो खेती नहीं करते किंतु जमीन पर निर्भर रहते हैं या उनके कर्मचारी।
१४.५ ,, खेतिहर मजदूर
१०.८ ,, खेती न करने वाले लोहार बढ़ई नाई, चमार, तेली दुकानदार, अध्यापकगण मेनेजर क्लर्क, जमीदारों के कारिन्दे पटवारी, अन्य सरकारी कर्मचारी आदि
८७.०

हमारे प्रान्त में एक परिवार में लगभग ४.७५ मनुष्य का औसत आता है इसके आधार पर प्रान्त में खेती करने वाले, जिसमें जमींदार भी सम्मिलित हैं लगभग ७५ लाख परिवार हैं।

हमारे यहां प्रत्येक परिवार के लिये खेती बाड़ी के काम में सहायता देने के लिए ०.२ खेतिहर मजदूरों की आवश्यकता होती है।

भूमि का बटवारा

आजकल हमारे यहां कुल ४१[illegible] लाख एकड़ जमीन पर खेती होती है जिसका बटवारा नीचे लिखे ढंग का है

आराजियों का रकबा एकड़ों में	पूरा रकबा एकड़ों में	खाना २ के कुल जोड़ पर कुल रकबे का प्रतिशत
५ से अधिक नहीं	२६,५३,४३१	२.२
५ से अधिक पर १ से अधिक नहीं	१,६६,५६,०००	३.८
१ से अधिक पर २ से नहीं	७२,०५,५६७	८.१
२ से अधिक पर ३ से नहीं	१४,२६,८६०	८.७
३ से अधिक पर ४ से नहीं	६,६२,४६६	८.४
४ से अधिक पर ५ से नहीं	७,०३,६७२	७.६
५ से अधिक पर ६ से नहीं	५,१४,६५५	६.८
६ से अधिक पर ७ से नहीं	३,७८,४८०	२.६
७ से अधिक पर ८ से नहीं	७,८३,७००	.५१
८ से अधिक पर ९ से नहीं	७,१५,६८०	४
९ से अधिक पर १० से नहीं	१,७० ७७६	३.६
१० से अधिक पर १२ से नहीं	२,०६,३४५	१.५
१२ से अधिक पर १४ से नहीं	१,३८ ७०२	१.३
१४ से अधिक पर १६ से नहीं	६५ ६७०	.४
१६ से अधिक पर १८ से नहीं	६८,०४०	.८
१८ से अधिक पर २० से नहीं	५१ ४४५	.४
२० से अधिक पर २५ से नहीं	७०,४१२	३.८
२५ से अधिक	१,१४,६५५	१२.६
कुल जोड़	४,१३,१६,४८०	१००,००

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(लेखक—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल झज्जर)

(गताङ्क से आगे)

"बुद्धि लुम्पति यद्द्रव्य मदकारी तदुच्यते" बुद्धि को नष्ट करने वाला द्रव्य मदकारी कहलाता है। ऐसा शार्ङ्गधर संहिता में लिखा है।

सात्विक आहार।

आहार का मन और शरीर के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है लोकोक्ति भी है जैसा खाइये अन्न वैसा ही बनेगा मन।

सात्विक आहार वह कहलाता है जो शरीर का स्वाभाविक भोजन है जिस के खाने से मन सन्तुष्ट रहे वमन आदि न हो वह—

ताजा, रसयुक्त, हल्का, सादा, स्नेहयुक्त, प्रिय और मधुर होना चाहिये।

जैसे फल, दूध, घी, मक्खन, गेहूँ, चावल, मूंग, आदि २

फलाहार —

फलों से बुद्धि निर्मल होती है। मानसिक विकार शान्त होते हैं। चित्त प्रसन्न रहता है। आयु की वृद्धि होती है। वीर्य पुष्ट होता है शारीरिक दुर्बलतायें नष्ट होती हैं। इसलिये फलाहार और दुग्धपान अत्युत्तम है।

आजकल अपने आहार पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। जो कुछ मिले अटरम सटरम सब कुछ पेट में डाल दिया जाता है। तम्बाकू का ऊपर से सेवन करते हैं। यह बुरी आदत है। भोजन सात्विक होना चाहिये और तम्बाकू आदि नशीली चीजों का सर्वथा त्याग कर देना चाहिये।

आज भारत में जबकि आयु का माध्यम ही २३ वर्ष रह गया है। ऐसे गिरे हुए समय में ४० वर्ष तक शरीर की पुष्टि की बात कहना अड़तालीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने वाली बात पर कोई विश्वास नहीं करता।

परन्तु यदि मानव के आहार मे परिवर्तन हो जाये तो सचमुच मानव जीवन में भारी परिवर्तन स्वल्प से समय में ही हो जायेगा। और पुनः सुश्रुत के उपरोक्त कथन पर विश्वास होने लगेगा।

मानव शरीर में नासिका (घ्राण) शक्ति को इसलिये लगाया है कि नासिका से सूंघ कर सुगन्धित भक्ष्य पदार्थों का उपयोग करें दुर्गन्धि वाले पदार्थों को त्याज्य समझें।

तम्बाकू भी दुर्गन्धि वाला पदार्थ है। इससे सर्वथा दूर रहें। प्राकृतिक भोजन करें।

नहीं तो परिणाम विपरीत ही होता है। यह अनुभव सिद्ध बात है।

बन्दर मांस नहीं खाता। वह मांस के अतिरिक्त अपना स्वाभाविक भोजन कर अपने जीवन को व्यतीत करता है। यदि बन्दर को बान्धकर उसे अस्वाभाविक भोजन मांस दिया जाये तो वह स्वल्प काल में ही मर जाता है। जङ्गल में चरने वाला हरिण हरी हरी घास और खेती को खाता है। यदि उसे बान्ध कर उसे जानवर का मांस खिलाया जाये तो हरिण अधिक काल तक जीवित नहीं रह सकता।

एक व्यक्ति ने एक हरिण पाला उस के घर कुत्ता भी था कुत्ता मांस का शोरबा पीता था और मांस खाता था और हरिण घास। परन्तु अभ्यास कराने से हरिण मांस खाने लगा। परन्तु वह एक वर्ष भी जीवित नहीं रहा रोगी हो कर मर गया। रोग भी उसे क्षयरोग ही हुआ।

यही अवस्था मनुष्य की है मनुष्य अपने प्राकृतिक भोजन फलाहार दुग्धाहार आदि से अपने जीवन को बढ़ा सकता है। और सुश्रुत के वाक्य को सच्चा करके दिखा सकता है। परन्तु तम्बाकू आदि नशीली चीजों से रहना होगा। स्वाभाविकता का उल्लंघन करने पर बड़ी हानि होती है। काम नहीं चलता।

किसी बच्चे वाली स्त्री को यदि मांस खिलाया जाये तो दूध उतरना बन्द हो जायेगा। और यदि स्वाभाविक भोजन दिया जाये तो दूध उतरने लगता है। यह प्रत्यक्ष बात है। जितना भी नशीली और अप्राकृतिक वस्तुओं का सेवन कम होता जायेगा उतना ही क्षयरोग भी कम होता जायेगा।

जो व्यक्ति निर्बल हो गये है उन्हें क्षयरोग से बचने के लिये खुली हवा में रहना चाहिये। दूध भी ऐसे पशु का न पिया जाये जो कमजोर और रोगी हो। हुक्का पीकर थूकने वाले व्यक्ति से दूर रहना चाहिये।

तम्बाकू विष नहीं ?

कोई तम्बाकू को मादक द्रव्य कहते हैं और कतिपय विष। यदि तम्बाकू विष है तो तम्बाकू पीने से मनुष्य तत्काल मर जाना चाहिए। तम्बाकू धुएं के द्वारा अन्दर पहुँचता है और धुंआ भी भीतर नहीं रोका जाता। इस लिये इतना विष नहीं पहुँचता कि मनुष्य की मृत्यु हो जाये। क्यों कि—

प्रभु ने मनुष्य के शरीर की रचना भी विचित्र ढङ्ग से की है। प्राणि की प्राण शक्ति प्रत्येक वस्तु का सामुख्य अपनी शक्ति द्वारा करती हैं वह विष का मुकाबला भी करती है परन्तु वह तत्काल पराजित हो जाती है और मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। तम्बाकू के धुएं के विष में इतनी शक्ति नहीं है कि तत्काल प्राण शक्ति को पराजित कर सके इस लिये तत्काल मृत्यु नहीं होती है। हाँ-कालान्तर मे समर्थ हो जाती है। इसको यूं समझना चाहिए कि जैसे सीमेंन्ट का बना कुए का चबूतरा मिट्टी के घड़े के बार बार रखने से घिस जाता हैं। इस्पात लोहे की निब कागज पर बार २ चलने से घिस जाती हैं, परन्तु मालूम नहीं होता। ठीक इसी प्रकार हृदय, मस्तिष्क, दांत, गला, रक्त की संचालक नाड़ियों शनै शनैः धूम्रपान से खराब हो जाती हैं। परन्तु धूम्रपानी को दिखाई नहीं देता।

एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। मरने से एक दिन पहिले वह डाक्टर के पास गया था। पारिवारिक जनों में सन्देह हुआ कि इसकी मृत्यु कैसे हुई ? मृत शरीर को पोस्टमार्टम (सरकारी परीक्षण) के लिये भेजा। वहाँ पर चार डाक्टरों ने परीक्षा की। उसके कलेजे में तम्बाकू का धुँआ और तम्बाकू का विष ठसा हुआ था इसी कारण से मृत्यु हुई। मालूम हुआ कि वह व्यक्ति २

इसमें कुल सीर और खुदकाश्त की ७१,२७,३०० एकड़ जमीन शामिल है जो १८,१८,०५० जमीदारों में बटी हुई है अर्थात् प्रत्येक जमीदार के पास औसतन ३.७५ एकड़ सीर और खुदकाश्त है। सीर और खुदकाश्त की जमीन उस जमीन का लगभग १४.५ प्रतिशत है।

इसके अतिरिक्त हमारे यहां खेती योग्य परती जमीन का रकबा लगभग ६१.५ लाख एकड़ है।

गांवों की आबादी और उसके भिन्न २ स्तर तथा खेती की समस्त भूमि और उसका वर्तमान बटवारा आदि से सबंधित आवश्यक आंकड़े तथा बढ़ती आबादी की समस्या, भूमी पर से बोझा घटाने की आवश्यकता और औद्यागीकरण के लिये आवश्यक पृष्ठभूमि का वर्णन यहां सक्षेप में दिया जा चुका है। ऐसी परिस्थितियों में प्रान्तीय सरकार ने "जमीदारी उन्मूलन बिल" को प्रान्त के सम्मुख रखा है।

इस बिल के द्वारा विधानवादी पथ पर अग्रसर होकर एक सामाजिक क्रान्ति का श्रीगणेश हो रहा है। जो सामाजिक क्रान्ति विधान के अन्तर्गत होती है वह "खूनी क्रान्ति" से भिन्न होती है। 'खूनी क्रान्ति" में मानव के जीवन, मानवीय मान्यताओं को महत्व नहीं प्रदान किया जाता वरन् तब एक समाज की लाशों पर खड़े होकर नवीन सामाजिक परिस्थिति का आह्वान किया जाता है। जिसके कारण मानवीय गुणों का लोप हो जाता है और नवीन परिस्थिति पाशविकता को आधार बना, स्वय आधार के अनुकूल पाशविक प्रवृत्ति की हो जाती है। सन् १७७९ ई० में फ्रांस में यही हुआ। रूस का इतिहास इसका जीता जागता उदाहरण है। वहा खूनी क्रान्ति के बाद जिस प्रकार पवित्र मानव जीवन की अवहेलना की गयी, जिस प्रकार पहले कुलक्स और बाद को स्वय किसानों के जीवन के साथ होली खेली गयी वह इस बात का सबसे बड़ा सबूत है कि खूनी क्रान्ति अमानुषिकता और बर्बरता को जन्म देती है। इसलिये मानव जीवन को मूल्यहीन बनाकर रूस ने क्रान्ति के १५ वर्ष बाद (क्योंकि लगभग १६३२ तक रूस में खेती की दशा ठीक नहीं रही) जो परिणाम प्राप्त किये उससे इस बिल के परिणामों की तुलना नहीं करनी चाहिये।

विधान के अन्तर्गत होने वाले परिवर्तन में यह सिद्धांत अन्तर्हित रहता है कि परिवर्तन का ऐसा स्वरूप हो जिसके आधार पर प्रत्येक पक्ष को अपना भविष्य निर्माण करने में सहायता मिल सके और राष्ट्र की उन्नति के हेतु नवीन अवसर तथा नयी परिस्थिति उत्पन्न हो। इसी दृष्टिकोण से इस बिल की आलोचना होनी चाहिये।

केवल यह कह देना कि अमुक उपाय अथवा साधन उचित नहीं तो नकारात्मक आलोचना है। अतएव प्रत्येक आलोचक का यह भी कर्तव्य है कि जब वह बिल की आलोचना करे तो यह भी सुझाव रखेकि वर्तमान परिस्थिति में जमींदारी उन्मूलन का और अधिक अच्छा उपाय क्या हो सकता था ?

यदि हम ध्यान से परिस्थिति पर गौर करें तो हमें ज्ञात होगा कि आज की आवश्यकता यह है कि १-किसी प्रकार जमीन का बोझा कम हो तथा उत्पादन अधिक हो और २-औद्योगीकरण इस भांति हो कि स्थानान्तरित श्रम शक्ति का उचित उपयोग कर राष्ट्र सम्पत्ति बढ़ाई जा सके जिससे देश के प्रत्येक निवासी के रहन सहन का स्तर ऊंचा हो सके। क्या यह बिल इन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है ? यदि करता है तो यह अवश्य प्रगतिशील बिल है।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रख कर इस बिल के विभिन्न पहलुओं पर गौर करना चाहिये, तभी आलोचनाओं का वास्तविक मूल्य ज्ञात होगा।

वेद वीथी

मनुष्य लोग नित्य कैसा विचार करें

लेखक—श्यामबिहारी लाल वानप्रस्थी

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता, गोभाज इत् किला-सथ यत्सनवथ पूरुषम्।

यजु० अ० १२ म० ७९

अर्थ—हे मनुष्यो औषधियों के समान (इत्) जिस कारण (वः) तुम्हारा (अश्वत्थे) कल रहे वा न रहे ऐसे शरीर में (निषदनम्) निवास है। और (वः) तुम्हारा (पर्णे) कमल के पत्ते पर जल के समान चलायमान संसार में ईश्वर ने (वसतिः) निवास किया है। इससे (गोभाज) पृथिवी का सेवन करते हुये (किल) ही (पूरुषम्) अन्नादि से पूर्ण देह को (सनवथ) औषधि देकर सेवन करो, और सुख को प्राप्त होते हुये (इत्) इस संसार में (असथ) रहो।

भावार्थ—मनुष्यों को ऐसा विचार करना चाहिये कि हमारे शरीर अनित्य और स्थिति चलायमान है। इससे शरीरों को रोगों से बचा कर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का अनुष्ठान शीघ्र करके अनित्य साधनों से नित्य मोक्ष के सुख को प्राप्त होवें। जैसे औषधि और वृक्ष आदि फल फूल पत्ते स्कन्ध और शाखा आदि से शोभित होते हैं वैसे ही रोग रहित शरीरों से शोभायमान हों।

मंत्र पर विशेष भावना

इस मन्त्र पर मनुष्यों को प्रति दिन विचार करना चाहिये। ऋषि लोग मनुष्यों को समझा रहे हैं। ऐ मनुष्यो! तुम्हारे शरीर का कोई ठिकाना नहीं है कि कल ठहरेगा वा नहीं। यह तो क्षणभंगुर पानी के बबूले के समान है अनेक कारण इसके विनाश के हैं रोग इसको क्षण भर में दबा देते हैं। परन्तु एक पल में उसे नष्ट कर सकती हैं। दैवी आपत्तियों के चक्र में ह पस सकता है। भाव यह है कि अनेक स्थितियों में इस का विनाश सम्भव है। जरावस्था के थपेड़े इस को जीर्ण कर देते हैं। यह है इस शरीर की स्थिति। फिर यह संसार जिसमें यह शरीर स्थित है। कमल के पत्ते पर जल बिन्दु की नाईं चञ्चल है इस प्रकार की स्थिति प्रभु ने तुम्हारी यहां को है। अब सोचना यह है कि ऐसी अवस्था में तुम्हें यहां क्या करना है। सब से प्रथम औषधि आदि के सेवन, पथ्य आहार उचित व्यवहार से इस शरीर को पुष्ट निरोग बनाकर धर्म, अर्थ, काम मोक्ष का अनुष्ठान शीघ्र करना चाहिये। बलवान शरीर से अपने कर्त्तव्य को समझ कर पालना उचित है। उसमें जो अर्थ, धन, भोग सामिग्री इकट्ठी हो उस का वैदिक भोग करना ठीक है। अनुचित अमर्यादित अशास्त्र विहित भोग वाञ्छनीय नहीं। धर्म, अर्थ और भोग तीनों ऐसे हों जो मोक्ष मार्ग को सरल बनावें उसके बाधक न होकर साधक हों। यही जीवन का साफल्य है। यही सुख व शान्ति का मार्ग है। अन्यथा बन्धन की बेड़ी और जकड़ जायगी। बन्ध का पाशा ढीला न होकर और कसेगा। आवागमन का चक्र और लम्बा हो जायगा, ऐ दुनिया के प्रमत्त मनुष्यो! सोचो कि प्रभु अपनी कल्याण मयी वाणी के द्वारा कैसा सुवर्णमय उपदेश दे रहे हैं। मोक्ष का ही परम पुरुषार्थ है। यही विचार नित्य प्रात मन में लाना चाहिये तभी कल्याण होगा।

★ ★

वा चार वर्ष की आयु (बाल्य काल से तम्बाकू) पीने लगा था।

विष भक्षण के उपरान्त यदि तत्काल मालूम हो जाये, तो उसको उपचार के द्वारा बाहर लाना कदाचित सम्भव हो सकता है। परन्तु धूम्रपान के विष को बाहर निकालना सम्भव नहीं क्योंकि वह तो अन्दर हुक्के की नली की कीट के समान जम जाता है। तम्बाकू का तेल अत्यन्त भयङ्कर विष है। अमेरिका के निग्रो (रेडइंडियन) लोग तम्बाकू की पत्तियों का तेल निकालते हैं और उस तेल को तीर की नुकीली तीक्ष्ण नोक पर लगाकर भयङ्कर शिकारी जन्तुओं पर छोड़ते हैं। उस विषयुक्त तीर के घुसते ही शिकारी जन्तु मूर्छित होकर भूमि पर गिर जाता है और मर जाता है।

"श्री मैकफेडन" का कथन है कि एक सिग्रेट में जितना तम्बाकू आता है उसका सत पिचकारी के द्वारा रक्त में मिला देने से व्यक्ति मर गया।

पश्चात "डा. केयेवे" ने विष की परिभाषा निम्न प्रकार की है।

"जो खाद्य पदार्थ जीवित शरीर की नसों में चेतन शक्ति को नष्ट करता है, अथवा जीवन का ह्रास करता है वह विष है"।

डाक्टर साहब की व्याख्या युक्ति युक्त ही है इस व्याख्या की कसौटी पर तम्बाकू विष ही जँचता है। कहा जाता है तम्बाकू का प्रुसिक ऐसिड विष तो अब तक के उपलब्ध विषों में महान् भयङ्कर विषम विष है। इसके तेजाब की एक बून्द से बिजली छू जाने जैसा धक्का लगता है और मनुष्य मर जाता है। इसी प्रकार फ़रफरोल शराब से पचास गुणा अधिक विषैला है। प्रभु ने भारत को उपमान विहीन रचा है। यदि भारत की उपमा किसी देश से दी जाये तो भारत के समान भारत ही है। अन्य कोई नहीं। परन्तु दुर्भाग्य से विदेशी मादक द्रव्यों का सेवन यहाँ भी होने लगा। तम्बाकू पीने से भारतीय भी नाटे होने लगे। रङ्ग काला होने लगा है।

परीक्षण से मालूम हुआ है कि फ्रान्स के सिपाहियों को नस्ल अब छोटी हो गयी है क्योंकि वह पचास वर्ष की आयु से पहिले तम्बाकू सेवन करते थे। टर्की के सैनिक तम्बाकू और अफीम के सेवन के कारण ही कद में छोटे हो गये। वही रोग भारत में भी घर कर गया है न मालूम कब इससे पीछा छूटेगा।

हमारी सेनाओं के सैनिक भी भारी सख्या में धूम्रपान के अभ्यासी हो गये हैं। धूम्रपान हो क्या? न मालूम अंग्रेज ने कितने पापों का अभ्यास कराया। इसी प्रकार अन्य विष भी बड़े भयङ्कर हैं।

डा० हरलाल का कहना है कि—"समस्त संसार के विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि तम्बाकू एक ऐसा विष है। जिसका स्पर्श भी स्वास्थ्य के लिये हानिकर है और वास्तव में जो व्यक्ति तम्बाकू पीता है। वह जान बूझकर मृत्यु को अपने पास बुलाता है।"

क्रमशः

विश्वकवि की वाणी

मेरे प्रभो! मेरी तुझ से यही प्रार्थना है कि तू मेरे हृदय दौर्बल्य के मूल पर कुठाराघात कर!

मुझे शक्ति दे कि मैं अपने सुख दु:खों को अविचल भाव से सहन कर सकूँ।

मुझे बल दे कि मैं सेवा द्वारा अपना प्रेम सार्थक कर सकूँ।

मुझे शक्ति दे कि न तो मैं कभी दीन दुखियों से विमुख हूँ और न धृष्ट पराक्रम के आगे शिर ही झुकाऊँ।

मुझे बल दे कि मैं अपने मन को दैनिक जीवन की तुच्छ बातों से परे रक्खूँ।

और मुझे यह भी सामर्थ्य दे कि मैं अपना पौरुष, प्रेम पूर्वक तेरी इच्छा में लीन कर दूँ।

* * * *

जब मेरा हृदय कठोर और शुष्क हो जाए तो मुझ पर करुणा वृष्टि करते हुए आना!

जब मेरे जीवन से माधुर्य का लोप हो जाए तो सङ्गीतसुधा का सञ्चार करते हुए आना!

जब संसार के कार्यों का कोलाहल मुझे चारों ओर से तुमुल गर्जना-पूर्वक घेर ले और मेरा पारलौकिक सम्बन्ध तोड़ दे तब हे मेरे शान्ति स्वरूप स्वामिन्! तुम अपनी शान्ति और सुख लेकर मेरे समीप आ जाने की कृपा करना!

(शेष तीसरे कालम में)

(चौथे कालम का शेष)

जब मेरा दीन हृदय एक कोने में दबक कर बैठ रहे तो मेरे राजन्! मेरा द्वार बल पूर्वक तोड़ कर तुम अपने राजकीय समारोह के साथ आ जाना!

जब भ्रम और मलिनता मेरे कामना मेरे मन को अन्धा कर देती है शुद्ध स्वरूप हे अनिद्र! अपने प्रचण्ड आलोक एवं गर्जना के साथ आने की कृपा करना!

आर्य कुमार सभा और साधना मन्दिर

शंकरदेव वेदालङ्कार

कुछ नवयुवक आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं का विचार है कि आर्यकुमार सभा और आर्यवीर दल दोनों ही संस्थायें देश के नवयुवकों में वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति का प्रचार करने में असफल रहीं। दोनों में से कोई भी संस्था नवयुवकों का बौद्धिक एव शारीरिक विकास एक साथ न कर सकीं, नवयुवकों को सुदृढ और पुरुषार्थ सक्षम न बना सकीं। आर्य कुमार सभाओं का कार्य तो कुछ बौद्धिक अभ्यास मात्र तक ही सीमित रहा और आर्यवीर दलों का प्रधान रूप से शारीरिक व्यायामादि ही रह जाने के कारण इनमें से कोई भी संस्था नवयुवकों के पूर्ण विकास में कारण न बन सकी। अत नवयुवकों का विचार है कि एक तीसरी संस्था ऐसी खोली जाए कि जिसमें नवयुवकों का शारीरिक एव मानसिक विकास एक साथ हो सके इस संस्था में उनके लिए स्वाध्याय, वाद विवाद और प्रवचन आदि बौद्धिक उन्नति की सुविधाओं के साथ शारीरिक व्यायाम और समाज सेवा के साधन भी जुटाये जाए। यह संस्था देश के नवयुवकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सकेगी। इस संस्था का नाम होगा "साधना मन्दिर"।

किन्तु जहाँ तक मैंने आर्य कुमार सभा के संगठन का अध्ययन किया है वहाँ तक मैंने यही देखा है कि नवयुवकों के लिए वह एक पूर्ण संस्था रही है। उसमें नवयुवकों के बौद्धिक एव शारीरिक शिक्षण पर समान रूप से जोर दिया गया है। जिस समय आर्य वीर दल की स्थापना नहीं हुई थी आर्यकुमार सभाओं के अधीन व्यायाम शालाए होती थीं और उनके स्थलों पर स्वयसेवक मण्डलियाँ थीं। इन स्वयसेवक मण्डलियों ने कुम्भ जैसे विशाल मेलों का भी प्रबन्ध अपने हाथ में लिया था। और जब आर्य वीर दल की पृथक स्थापना हुई और उसने शारीरिक शिक्षण का कार्य अपने हाथ में लिया तो आर्यकुमार सभा ने शारीरिक शिक्षण की ओर से अपना हाथ खींच लिया। अन्यथा केवल धन और शक्ति का दुरुपयोग ही होता। आर्यकुमार सभा को दोनों ही विकास अभीष्ट हैं और वह इस ओर पर्याप्त प्रयत्न शील रही है।

अत यह सर्वथा अनावश्यक है कि आर्यकुमार सभा के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था को जन्म दिया जाए। यदि हम यह भी मान लें कि आर्यकुमार सभा एकाङ्गी है तो उस अवस्था में भी हम इसी संस्था को सर्वाङ्गीण बनाने में प्रयत्न करना चाहिये। यदि आर्यसमाज में कुछ व्यक्ति न्यूनता अनुभव करते हैं तो उन्हें अपना शक्तियों को उस न्यूनता को पूर्ण करने में लगाना चाहिए। यदि ऐसा न किया गया तो जहाँ धन, शक्ति और समय का दुरुपयोग होगा वहाँ समाज में संघर्ष की भी सम्भावना है। मेरा विचार है कि जिन लोगों ने इस प्रकार के किसी संगठन के निर्माण का विचार किया है उन्हें यह कार्य भली भाँति विचार कर करना चाहिए। इससे न तो आर्यकुमार सभाएं चल सकेंगी और न 'साधना मन्दिर'। उनको चाहिए कि वे वर्तमान आर्य कुमार परिषद् के उत्थान के लिए हा वहाँ के अधिकारियों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर कार्य करें। और अपना सारा उत्साह और बल उसी में लगाए। परिषद् को तो वैसे भी धन, जन की अत्यन्त आवश्यकता है। परिषद् के वर्तमान अधिकारी गण परिषद को आकर्षक बनाने में प्रयत्नशील हैं। अत इस कार्य में समस्त आर्य युवकों को योग देना चाहिए। यदि इस प्रकार प्रति दिन नई नई संस्थायें खुलती गई तो आर्यसमाज का भविष्य निःसन्देह अन्धकारमय हो जाएगा।

कविता-कलाप

बन कर दीप जलो।

स्नेह बूंद हो जब तक तन में पथ से मत विचलो।
तम आवृत हैं सभी दिशायें।
घिरी गगन में सघन घटायें
पथ न सूझता किंचित साथो।
कंकड़ पत्थर भरी गुफायें।
ज्योतिष्पुंज करो जन मग को, आर्य वीर सभलो।
बन कर दीप जलो॥

घर घर बढो प्रकाश पुञ्ज हे।
शक्ति लिये उर में प्रचण्ड हे।
धर्म देश हित व्रती तपस्वी।
सत्य त्याग के चलित स्तम्भ हे।
अनय अविद्या के दृढ़ गढ को आज सैन्य कुचलो।
बन कर दीप जलो॥

आज देश का व्रत रोता है।
आज देश का प्र[illegible] सोता है।
मनुज, मनुज की अहित साधना
में अपना जीवन खोता है।
मानवता के सजग केन्द्र हे! मानव हित व्रत लो।
बन कर दीप जलो॥

बधो न स्वार्थ जनित सीमा में।
बोलो जन जन की ग्रीवा में।
लक्ष्य तीर सा चलो ध्येय पर।
रुको न दुःखों की पीड़ा में॥
विश्व बन्धु शंकर सा विष पी देव-क्लेश हर लो।
बन कर दीप जलो।

आर्य जाति का सुयश उदय हो।
चक्रवर्ति साम्राज्य अजय हो।
दयानन्द के जय घोषों से
पूरित जल थल नभ "नीरव" हो।
करो राष्ट्र की अमर साधना ओ३म ध्वजा धर लो।
बन कर दीप जलो॥

फिर फहरेगी ओ३म पताका
यहा चलेगा ऋषि का साका।
देश विदेशी राज नीति का
होगा फिर से आर्य विधाता।
प्रण निश्चय है, व्रत निश्चय है आर्यों का सुन लो।
बन कर दीप जलो॥

—"नीरव" उपाध्याय

आय प्रतिनिधि सभा को सूचनाएं

धन-रसीद संबंधी सूचना

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा, युक्त-प्रान्त के निमित्त अथवा उसके किसी विभाग यथा वेद प्रचार, गुरुकुल, भगवान दीन आर्य भास्कर प्रेस, आर्य-मित्र, आर्य समाज रक्षानिधि विभाग, मादक द्रव्य निषेध-समाज सुधार, आर्य वीर दल, शुद्धि दलितोद्धार विभाग, महिला प्रचार मंडल, भूसम्पत्ति विभाग, आर्य मित्र-प्रकाशन लि० क० आदि २ के लिये जो महानुभाव धन प्रदान करें, उसकी, धन प्राप्त कर्त्ता से रसीद अवश्य ले लिया करें। सभा की रसीद छपी हुई हैं, उनका ही सभा सम्बन्धी धन प्राप्त कर्त्ता प्रयोग किया करें। धन दाता गण भी सभा की मुद्रित मोहर छपी रसीद को ही प्रमाणित समझें।

—श्री प० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज आज कल जयपुर में है। उनका पता-द्वारा पी० एस० रस्तोगी एम० बी० बी० एस० ५६।१०४ पृथ्वीराज राड जयपुर है। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं ऐसा उन्होंने पत्र में लिखा है। यद्यपि कोई चिन्ताजनक बात नहीं प्रतीत होती। अभी २३ दिन हुये उनका "मृत्यु के बाद जीव की गति "विषयक ३० पृष्ठों का अपने हाथ से लिखा हुआ लेख प्राप्त हुआ है।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभास्थ अन्तरंग सभा सदों को सूचित किया जाता है कि सभा की अन्तरंग का अधिवेशन २६ व ३० सितम्बर १९४६ को स्थान हरदोई में होना निश्चित हुआ है। कृपया अन्तरंग की तिथि नोट करने एव पधारने का कष्ट कीजिये।

निरीक्षक सूचना

निम्न देवियों को युक्त प्रान्त के स्त्री समाज, कन्या पाठशालाएँ, विधवा आश्रम तथा अनाथालयों का निरीक्षण करने का कार्य क्षेत्र जिलों का विभाजन नियत किया गया है। उनके पहुचने पर निरीक्षण करावें

नाम निरीक्षक	नाम जिला
[१] श्री प्रेम सुलभावती जी ज्वालापुर	सहारनपुर, बिजनौर तथा बनारस व गोरखपुर कमिश्नरी
[२] श्री मती शकुन्तला देवी जी सदर मेरठ	मुजफ्फर नगर व मेरठ —
[३] श्री मती दुर्गादेवी जी आर्य-अलीगढ़	बुलन्द शहर, अलीगढ़ मथुरा, आगरा इटावा तथा मैनपुरी
[४] श्री मती कैमलतादेवी जी-अलीगढ़	एटा, बरेली, बदायूँ, पीलीभीत, शाहजहाँपुर फर्रुखाबाद
[५] श्री मती गोपी देवी -मुरादाबाद	मुरादाबाद, रामपुर नैनीताल
[६] श्री मती कलादेवी जी प्रयाग —	प्रयाग, फतेहपुर कानपुर
[७] श्री मती प्रियम्वदा देवी जी हरदोई-	फैजाबाद लखनऊ कमिश्नरी

राम[illegible]
तथा मंत्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

अपनी इस उदासीनता के लिये इस को पछताना पड़ेगा। वस्तुतः इस प्रकार की [illegible] देश के कुछ भागों में भी नहीं है। सभी प्रश्नों में और सम्मुख देश में है।

* *

स्वतन्त्रता दिवस पर पशु-वध

कांग्रेस के अध्यक्ष तथा टाउन एरिया के मेम्बर्स की करतूत

मालूम हुआ है जिला आजमगढ़ में कस्बा मुबारकपूर में गत १५ अगस्त ४६ को स्वतन्त्रता दिवस पर पशु-वध किया गया उससे वहां की जनता में बड़ा क्षोभ तथा उत्तेजना उत्पन्न हो गई थी। कहा जाता है कि इस कार्य में वहां के कांग्रेस अध्यक्ष तथा टाउन एरिया के मेंबर का, जो कांग्रेस टिकट पर ही चुने गये थे का हाथ रहा है। इसके कारण आर्य समाज के एक कार्य कर्त्ता ने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया था जो अधिकारियों के आश्वासन पर भग किया गया। स्वतन्त्र भारत में भी अब मुस्लिम मनोवृत्ति का यह एक उदाहरण है।

—आर्य समाज सयोगिता गंज इन्दौर में पीरखाँ नामक मुसलमान परदेशी पुरा इंदौर निवासी की शुद्धि की गई उनका नाम प्रभुदयाल रखा गया। एक यवन महिला की भी शुद्धि की गई।

—आर्य समाज सयोगितागंज इन्दौर की ओर से श्रावणी पर्व ता० ८-८-४६ को बड़े ही समारोह पूर्वक मनाया गया। १ नये व्यक्तियों को यज्ञोपवीत धारण करवाया गया। साथ ही ता० ७-८-४६ से ता० १६-८-४६ एक सप्ताह तक खुशालचद जी का वेदों पर प्रवचन हुआ तथा ता० १७-८-४६ को रात्रि को कृष्ण जन्म दिवस पर एक सभा की गई।

भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना

श्री भारतीय कला मंदिर (संगीत विद्यालय) के अन्तरगत् श्रीमान् प० पन्नालाल जी 'पीयूष' वैदिक धर्म विशारद, संगीत सुधाकर भजनोपदेशक ने अजमेर में मार्टन्डल ब्रिज के पास कैसरगंज में उपरोक्त विद्यालय स्थापित किया है जिसका उद्घाटन श्रीमान् कु० चादकरण जी शारदा ने गत जून में किया था। इस में संगीत शिक्षा तथा आर्यसमाज की वेदी पर उत्तम २ कोटि के सिद्धांत विज्ञ साहित्यिक एवं संगीतज्ञ भजनोपदेशक प्रचार में आर्य इस उद्देश्य की पूर्ति यह विद्यालय कर सकेगा। आर्यजनों को इस से लाभ उठाना चाहिये। आर्य सार्वदेशिक सभा व प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अपनी ओर से ऐसे व्यक्तियों को भेजना चाहिये जो भजनोपदेशक बनकर वैदिक धर्म का प्रचार करें।

वेदप्रचार सप्ताह

गढवाल आर्य समाज दहली की ओर से तदनुसार ७ अगस्त १९४६ से १७ अगस्त १९४६ तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम धाम के साथ मनाया गया आर्यों की धर्म पुस्तक वेद का का सन्देश जनता को सुनाया गया वैदिक धर्म, वैदिक, संस्कृति, वैदिक सभ्यता के लिये जनता में प्रेम जागृत किया,

हैदराबाद के अमर शहीद सत्याग्रहियों के प्रति सभा की ओर से श्रद्धांजलिया अर्पित की गई,

आर्य जगत के महान नेता श्री कृष्ण चन्द्र जी के जन्मोत्सव पर यज्ञ किया गया

"शोक-प्रस्ताव"

आर्य समाज बनारस छावनी लिंडवीर में स्थानीय आर्य समाज के मनोनीत उपप्रधान श्री ज्येन्द्र नारायण सिन्हा जी की ता० २३ ७ ४६ के असामयिक मृत्यु पर शोक सभा की गई। श्री सिन्हा जी ने श्री दयानन्द हाई स्कूल से इसी वर्ष में अवकाश प्राप्त किया था। आप आर्य समाज के प्राचीन स्तम्भ होते हुये भी बनारस कांग्रेस के प्राचीन कर्णधारों में एक थे। आप एक उत्कर्ष आशा वादी थे। यह सभा अपने मनोनीत नेता के देहावसान पर बहुत दुखित है। तथा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को शान्ति दे।

वेदवाणी का नवीन वर्ष का विशेषाङ्क (सामवेदाङ्क)—

के रूप में विजयादशमी पर प्रकाशित होगा जिसमें समालोचनात्मक लेखों के साथ साथ सरल हिन्दी अनुवाद सहित पूरा सामवेद पाठकों की सेवा में अर्पित किया जायगा केवल सामवेदाङ्क का ही मूल्य ४) होगा वेद प्रेमी सज्जन तथा संस्थायें अपनी प्रति शीघ्र सुरक्षित करा लें।

—'आर्य समाज फैजाबाद में वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम धाम से ता० ८ से १६ अगस्त तक मनाया गया। जिसमें आर्य जगत के प्रमुख गायक कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर प० बृज बहादुर जी भजनोपदेशक आ० प्र० नि० सभा लखनऊ तथा आर्य प्रति निधि सभा लखनऊ यू० पी० के प्रधान श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री आदि महान विद्वानों के (व्याख्यान) उपदेश हुये।

—" आर्य समाज गाजियाबाद की ओर से वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह के साथ ८ अगस्त से १६ अगस्त तक मनाया गया। प्रतिदिन प्रात ६ से ८ तक यजुर्वेद से यज्ञ तथा रात्रि में श्री आचार्य विश्वश्रवा जी द्वारा वेद कथा की गई। इस अवसर पर कुमार सभा द्वारा १३४ वैदिक पुस्तकें जनता में बांटी गई।

उत्सव सूचना

आर्य समाज दौराला (शुगरमिल) जि० मेरठ का ६ वां वार्षिकोत्सव विजयादशमी के भाई ७,८ और ६ अक्टूबर १९४६ ई० तदनुसार आश्विन पूर्णिमा और कार्तिक वदि १,२ शुक्र, शनि और रविवार को समारोह के साथ मनाया जायगा। उत्सव पर पधारने के लिये गण्य मान्य महानुभावों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

—सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस, वेद प्रचार सप्ताह तथा स्वतन्त्रता दिवस, हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में श्रावण शुक्ला पूर्णिमा ८ अगस्त को सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया तथा श्रावणी की पर्व पद्धति से हवन किये गये

आर्य समाज पूरनपुर

आ० स० पूरनपुर में वेद-प्रचार-सप्ताह श्रावण शुक्ल १५, २००६ से भाद्रपद कृष्ण ८, २००६ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्रावणी को बृहद्यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् हैदराबाद सत्याग्रह दिवस मनाया गया। रात्रि को आर्य समाज मन्दिर में प्रतिदिन श्वेताश्वतर उपनिषद की कथा अत्यन्त सरल एवं सरस ढंग से श्री पं० महादेव प्रसाद जी शास्त्री उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी० ने कहीं। नित्य प्रति समाज मन्दिर में यज्ञ हुआ।

—आर्य समाज कांठ जिला मुरादाबाद ने वेद प्रचार सप्ताह ८ अगस्त से १६ अगस्त तक मनाया। श्रावणी तथा जन्माष्टमी पर्व मनाए। दो यज्ञोपवीत संस्कार हुए। प्रतिदिन आर्य समाज मन्दिर में यज्ञ हुआ।

स्वतन्त्रता दिवस।

१५-८-४६ को प्रातः काल 'ओ३म् ध्वज' मन्दिर पर फहराया गया। तथा सारा मन्दिर तिरंगी राष्ट्रीय पताकाओं से सुसज्जित किया गया। हवन किया गया। तदुपरान्त ईश्वर से राष्ट्र को समृद्धि शाली तथा वैभव सम्पन्न और त्यागी सदाचारी विद्वानों से भरपूर होने की प्रार्थना की गई।

सत्याग्रही आर्य कुमारों की विजय

आर्य कुमार सभा, गोरखपुर की ओर से जन्माष्टमी के अवसर पर मन्दिरों में वेश्या नृत्य एवं अन्य सभी प्रकार के नृत्य कराने के विरोध में सत्याग्रह किया गया। कुमारों के अतिरिक्त आर्य एवं आर्येतर जनता ने भी सत्याग्रह में भाग लिया था। सत्याग्रही मन्दिरों में जाकर 'मन्दिरों में नाच कराना पाप है' वेश्या नृत्य महा पाप है आदि नारें लगाते थे और प्रार्थना करते थे कि अविलम्ब नृत्य बन्द किया जावें।

अनेकों मन्दिरों में जिनमें नाच हो रहे थे। सत्यग्रहियों ने वेश्या नृत्य एवं अन्य सभी प्रकार के नृत्योंको बन्द कराया तथा भविष्य के लिए न कराने की प्रतिज्ञा भी कराई। आर्य कुमारों के इस सत्याग्रह का गोरखपुर की जनता पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा। अनेकों मंदिर प्रबधकों ने इस दुष्कृत्य के लिए क्षमा याचना भी की। आर्य कुमार पूर्ण सफल रहें।

आ० स० नौठ (गढ़वाल)

प्रधान, श्री खेमचन्द जी आ०, मंत्री जुगटराम, उ० प्र० कामरूप, उ० म० रामदयाल, कोषाध्यक्ष बलीराम, निरीक्षक खुशहालचन्द जी प्रेम।

सार्वदेशिक प्रकाशन मिमिटेड

आर्य जनता की देर से यह मांग थी कि आर्य समाज का अपना एक दैनिक पत्र होना चाहिये तदनुसार सार्वदेशिक सभा के सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के नाम से एक कपनी की योजना बनाई थी जो दैनिक पत्र के साथ २ आर्य समाज के साहित्य का भी प्रकाशन करेगी। इस कम्पनी के २ लाख रुपये के शेयर्स बिक चुके हैं और कंपनी ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया है। अभी पटौदी हाउस दर्यागंज में अपना प्रेस (छापाखाना) खोल दिया गया है और आर्य साहित्य के प्रकाशन का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। प्रेस के स्वावलंम्बी हो जाने पर कुछ और अधिक रुपये के शेयर्स बेचकर धन समह करने के बाद दैन्कि पत्र का भी प्रारंभ किया जायेगा।

उर्दू को कन्या पाठशालाओं में अनिवार्य करने पर आ० स० अजमेर का प्रस्ताव—

आर्यसमाज अजमेर की यह सभा चीफ कमिश्नर साहब अजमेर मेरवाड़ा का ध्यान इंस्पेक्टर्स आफ स्कूल्स अजमेर की ता० २२ जौलाइ १६४६ की आज्ञा स० १२८६।२३०२ की ओर आकर्षित करना चाहती है जिसके द्वारा प्रांत की कन्या पाठशालाओं में लड़कियों को उर्दू पढ़ाना आवश्यक किया गया है। इस सभा को यह देख कर दुःख व आश्चर्य हुआ कि राष्ट्र भाषा व लिपि के जिस प्रश्न पर अभी तक विधान सभा कोई निश्चय नहीं कर सकी है उसे शिक्षा विभाग की एक स्थानीय अधिकारिणी द्वारा इस प्रकार अनुचित ढग से लादने की कोशिश की रही है। आशा है स्थानीय सरकार शीघ्र इस शरारत पूर्ण आज्ञा को वापिस लेने का प्रबन्ध करेगी क्यों कि यह स्पष्ट है कि इस से जनता में घोर असन्तोष और विरोध उत्पन्न होना निश्चित है। लड़कियों के लिये जिनकी मातृ भाषा हिन्दी है उर्दू अनिवार्य करना न केवल अनावश्यक ही है बल्कि मुस्लिम लीगी दो राष्ट्रवाद का परिचायक है।

—आ० स० परमपुरवा (गोबिन्द नगर) कानपुर में वेद सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें बड़े उत्साह पूर्वक प्रभात फेरी भी निकाली गई। नित्य प्रति रात्रि को आर्यसमाज के विशाल मैदान में वेद के सिद्धान्तों पर भाषण और भजन हुआ करते थे। आर्यसमाज की ओर से परिवारिक सत्सङ्ग हर सप्ताह किसी आर्य के घर हुआ करता है।

—समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि श्री श्री प० विशुदेवजी शास्त्री जो कि कुछ समय से महाविद्यालय गुरुकुल सिकन्दराबाद के प्रचारादि कार्य करते थे वे गुरुकुल की अन्तरङ्ग सभा के गत अधिवेशन के निश्चयानुसार अब आचार्य पद के भार से मुक्त हो चुके हैं।

आर्य समाज मंदिर उज्जैन में श्रावणी-महापर्व

८-८-४६ सोमवार को प्रातः काल १ बजे से आर्य समाज मंदिर उज्जैन में श्रावणी महापर्व बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आगन्तुक महानुभावों ने पाविक महायज्ञ में भाग लिया तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण किये। यज्ञादि कर्म की समाप्ति के पश्चात् यज्ञ के आचार्य श्री पंडित बद्रीलाल जी आयुर्वेदाचार्य का श्रावणी पर्व की महत्ता पर प्रभाव शाली भाषण हुआ।

महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

१५ अगस्त को म० वि० ज्वालापुर में स्वाधीनता दिवस की द्वितीय वर्ष गांठ बड़े समारोह से मनाई गई। प्रात प्रभात फेरी निकाली गई पश्चात् ध्वजा रोहण श्री स्वा० आनन्द प्रकाशजी तीर्थ के द्वारा हुआ—आपने सक्षेप में झण्डे के महत्व पर प्रकाश डाला, मध्यान्होतर श्री पं० नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ के सभापतित्व में सभा हुई जिसमें अनेक महानुभावों के भाषण हुये।

आर्य्यमित्र

—आज़मगढ़ जिले के दुवारी ग्राम से एक हरिजन की लड़की जिसकी उम्र १० वर्ष की है आज ४ वर्ष पहले एक मुसलमान ले गया था। आर्य समाज दुवारी के मंत्री तथा अन्य कार्य कर्ताओं के सतत प्रयत्नों से वह लड़की पुलिस कर्मचारी दारोगा तथा कुछ सिपाहियों द्वारा बरामद हुई है। लड़की की शुद्धी की गई उसके कुटुम्ब के लोगों ने प्रेम पूर्वक लड़की को रख लिया है।

—आर्य समाज शाहजहाँपुर का वार्षिकोत्सव ता० ६,७,८,९ अक्टूबर १९४९ ई० का होना निश्चित हुआ है

इस आर्य समाज के आधीन श्री म० दयानन्द अनाथालय गत २७ वर्षों से स्थापित है जो एक रजिस्टर्ड उप सभा द्वारा सन्चालित होता है उसमें अनाथ बालक बालिकाओं तथा स्त्रियों को उपयोगी उद्योग सिखाये जाते है।

—आर्यसमाज शमसाबाद जिला आगरे का ३५वा वार्षिकोत्सव दशहरे पर तारीख ३० सितम्बर से १ व २ अक्टूबर सन् १९४९ ई० दिन शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को मनाया जावेगा।

—ता० १ अगस्त को महाविद्यालय ज्वालापुर में तुलसी जयन्ती तथा तिलक जयन्ती का महोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया उसमें श्री प० सत्य व्रत जी शास्त्री श्री प० छेदी प्रसाद जी व्याकरणाचार्य श्री रामकिंकर जी वल्लभ पांडेय, श्री मा० रामानन्द जी घोष B A आदि महानुभावों के भाषण हुये।

—गुरुकुल म० वि० ज्वालापुर की ऋतु परम सुहावनी है ग्रीष्मावकाश के पश्चात् २१ जून से म० वि० की दीर्घकालीन शिक्षा सत्र नए वर्ष से आरम्भ हो गया हैं लगभग १०० ब्रह्मचारी आ गये हैं म० वि० ज्वालापुर की नवीन पाठ विधि प्रकाशित है जो शीघ्र ही शिक्षा प्रेमियों के पास पहुंचेगी म० वि० में संस्कृत तथा हिन्दी की पढ़ाई का विशेष प्रबन्ध है, जो संस्कृत भाषा के प्रेमी अपने बालकों को शहरी वातावरण से दूर रख कर प्राचीन प्रथा के अनुसार शिक्षा दिलाना चाहें वे मुख्याधिष्ठाता गु० कु० महाविद्यालय ज्वालापुर से पत्र व्यवहार करें यहाँ प्रायः सभी प्रान्तों के छात्र संस्कृत शिक्षा का अध्ययन करते हैं।

मुख्याधिष्ठाता

नोटिस निस्बत दिखाने वजह के (नमूना आम)

बअदालत जनाब नीलाम अफसर साहब बहादुर कचहरी सिटी लखनऊ।

मुकद्दमा नम्बर १५
जमुनाप्रसाद वगैरह डिगरीदार
बनाम
नन्हूसिंह वगैरह मदयूनान

१—नन्हूसिंह वल्द रघुनाथसिंह कौम ठाकुर साकिन खसरवारा, २—मझासिंह व ३—मुनेसरसिंह पुत्र रघुनाथसिंह कौम ठाकुर, ४—टीकासिंह व ५—परतापसिंह पुत्र मानसिंह कौम ठाकुर साकिन नरायनपुर परगना बिजनौर तहसील व जिला लखनऊ ने दरख्वास्त इस अदालत में गुजरानी है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप असालतन या मार्फत किसी वकील के जो हालात मुकद्दमा से बखूबी वाकिफ किया गया हो वक्त १० बजे दिन बतारीख ३० माह अगस्त सन १९४९ ई० अदालत में हाजिर होकर दरख्वास्त के खिलाफ वजह दिखलाइये। अगर ऐसा न करेंगे तो दरख्वास्त मजकूर आपकी गैरहाजिरी में समाअत की जावेगी।

आज बतारीख १२ माह अगस्त सन १९४९ ई० मेरे दस्तखत मोहर अदालत से जारी किया गया।

बहुक्म जज मोहर अदालत

आर्थिक संकट दूर करना सबसे बड़ा सवाल

बाहरी आक्रमण से डर नहीं

कानपुर २८ अगस्त । स्थानीय फूलबाग में भाषण करते हुये प्रधान पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि देश की वर्तमान पीढ़ी के सामने आज की सबसे बड़ी समस्या है राष्ट्र की आर्थिक स्थिति सुधारना । आपने कहा, किसी बाहरी आक्रमण से हमें कोई भय नहीं है। हमारे लिए सबसे बड़ी चिन्ता की बात है देश की आन्तरिक दुर्बलता और विशेषकर, आर्थिक स्थिति। नेहरू जी ने आगे कहा कि अपनी प्राचीन संस्कृति का कायम रखते हुए और उन नये आदर्शों का जिन्होंने विश्व में क्रांति उत्पन्न कर दी हैं ग्रहण कर ही भारत प्रगति कर सकता है। कम्युनिस्टों और

राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ की चर्चा करते हुए प्रधान मन्त्री ने कहा कि यदि देश उनके मार्गों पर चलेगा तो निश्चय ही विनाश का आवाहन करेगा।

कम्यूनिस्ट चुनाव के द्वारा सत्ता प्राप्त करना नहीं चाहते बल्कि हिंसा के द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं। यदि उनके इस मार्ग का अनुकरण किया गया तो इससे सारा देश नष्ट हो जायगा। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ जनता में संकीर्णता की भावना पैदा कर रहा है और ऐसी चीजें कर रहा है जो भारतीय संस्कृति के बिल्कुल विपरीत हैं।

अगले कदम पर विचार

प्रधान मन्त्री ने आगे कहा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को हटाकर हमने अपनी प्रगति का पहला चरण समाप्त किया है अब हमें यह सोचना है कि हमारा अगला कदम क्या होगा हम कहां जाना है।

नेहरू जी ने कहा, कुछ लोगों का यह पेशा हो गया है कि वे केवल हमारी बुराइयों की ओर लक्ष्य करते हैं। हम आलोचनाओं से नहीं घबराते और न अपनी कमियों के प्रति आंखें बन्द करना चाहते हैं। किन्तु आलोचनायें रचनात्मक होनी चाहिये और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को ध्यान में रख कर होनी चाहिये।

बाहरी आक्रमण का डर नहीं

बाहरी आक्रमण की आशंका की चर्चा करते हुए नेहरू जी ने कहा कि हमारे लिए ऐसा कोई खतरा नहीं है जिसका हम विश्वास के साथ सामना न कर सकें जिन पर देश की रक्षा का भार है। व पूरी तरह सतर्क हैं। इसम शक नहीं कि सशस्त्र सेनायें बाहरी हमलों से देश की रक्षा करती हैं किन्तु किसी राष्ट्र की शक्ति मुख्यतः आर्थिक दृढ़ता और जनता के दिल और दिमाग की ताकत पर निर्भर करती है।

संस्कृति का उल्लेख करते हुए आप ने कहा कि हमारी सांस्कृतिक परम्परा अत्यन्त प्राचीन और गौरवपूर्ण रही है। इसी ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक के विशाल जनसमुदाय को एक सूत्र में बाँध रखा है अतः हमें अपनी इस बल को सुरक्षित रखना है। साथ ही हमें यन्त्र युग की नयी संस्कृति को भी ग्रहण करना होगा अन्यथा हम और देशों से पीछे पड़ जायेंगे और अपनी संस्कृति की भी रक्षा न कर पावेंगे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की कड़ी टीका करते हुए आप ने कहा कि यदि हमने उसकी संकीर्णता अपनायी तो देश का भविष्य अन्धकार मय है।

◆◆◆◆

पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारों का मामला संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश किया जायगा

संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो सिख स्वयं ही अपना मार्ग तय करेंगे

अम्बाला, ३० अगस्त। सभी गुरुद्वारा समितियों के ३० से अधिक पदाधिकारियों ने यहाँ पर एक सम्मेलन कर के यह निश्चय किया है कि धार्मिक स्थानों की पवित्रता के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाले अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के विशेषज्ञों की एक विशेष समिति बनायी जाए जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने पाकिस्तान में स्थित सिख गुरुद्वारों का मामला पेश करेगी।

यदि पाकिस्तान सरकार ने कोई संतोषजनक उत्तर न दिया तो सिख अपना मार्ग स्वयं तय करेंगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तलाक एवं उत्तराधिकार का समर्थन करेगा ?

—श्री गोलवलकर

नयी दिल्ली, २५ अगस्त। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक श्री माधव सदाशिव गोलवलकर ने करीब एक सौ पत्रकारों के बीच भाषण करते हुए इस बात पर जोर दिया कि संघ हिंदुओं के पुनरुत्थान के लिए स्थापित एक विशुद्ध सांस्कृतिक संघटन है और राजनीति से उसका कोई सरोकार नहीं है।

हिन्दू कोड बिल

हिन्दू कोडबिल पर प्रश्न किये जाने पर आपने कहा कि मैं जेल में था अतः मैं बिल का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन नहीं कर सका हूं। जहाँ तक तलाक का सम्बन्ध है हिन्दुओं के एक अत्यन्त छोटे वर्ग को छोड़कर जो अपने को ब्राह्मण समझता है अन्य सब हिन्दुओं ने तलाक के अधिकार का उपयोग किया है। मैं कह सकता हूँ कि (तलाक का विरोध करने वाले) लोग एक बहुत छोटे अल्पमत के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। मैं नहीं समझता कि यह कहाँ तक न्याय संगत है।

इसी प्रकार उत्तराधिकार के मामले में भी भारत के कई भागों में स्त्रियों को सदैव ही व्यवहार में उत्तराधिकार के पूरे हक मिले हैं। हिन्दू कोड से हिन्दू समाज छिन्न-भिन्न हो जायगा या नहीं, यह मैं कोड का ठीक से अध्ययन किये बिना नहीं कह सकता। परन्तु मैं निजी तौर पर ऐसे सब सामाजिक परिवर्तनों का स्वागत करूँगा जिनसे सब लोग (स्त्री हों या पुरुष) अधिक सुखी, सबल और सुरक्षित हो सकें।

कासिमरिजवी पर एक और अभियोग

हैदराबाद, २८ अगस्त। कैसर कासिम रिजवी पर आज एडवोकेट जनरल श्री डी वी श्रीखण्डे ने एक नया अभियोग विशेष अदालत में पेश किया जिसमें कहा गया है कि १० जनवरी १९४८ को सायंकाल ५ से ८ बजे के बीच में बीबी नगर में जो हत्याकांड और डाकेजनी हुई थी उसमें भी कैसर कासिम अली रिजवी शामिल था। रिजवी के अतिरिक्त उस अभियोग में इक्कीस अभियुक्त और हैं। जिनमें से ६ गिरफ्तार किये जा चुके हैं और बाकी १५ अभी तक फरार हैं। फरार लोगों में कासिम रिजवी का बेटा अय्यब रिजवी भी शामिल है।

बीबीनगर स्टेशन के अन्दर से कुछ लोगों ने महात्मा गाँधी की जय का नारा लगाया। इस पर रिजवी के नेतृत्व में रजाकारों की चार टुकड़ियों ने लोगों को मारा, घर में घुस कर लूटा और आग लगायी। कुछ लोगों को बन्द रखा और खून से सने कपड़े जला डाले। उस दिन की लूट में रजाकारों को ३१२६७ रुपये प्राप्त हुए थे।

संस्कृत विश्वविद्यालय बनने में अड़ंगा

गवर्नर जनरल द्वारा आपत्ति

काशी, २८ अगस्त। ज्ञात हुआ है कि भारत के गवर्नर जनरल राजा ने काशी संस्कृत विश्वविद्यालय के बनने पर आपत्ति प्रकट की है। अभी तक अधिकृत रूप से यह नहीं ज्ञात हुआ है कि आपत्ति का क्या कारण है, लेकिन प्राप्त सूचनाओं के आधार पर इस बात का अनुमान लगाया जाता है कि सरकार यह नहीं चाहती कि काशी में दो दो विश्व विद्यालय चलें। यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार से काशी हिंदू विश्वविद्यालय की ओर से ही यह कार्य वाई करने का अनुरोध किया गया है।

प्रांतीय सरकार ने भारत सरकार को लिखा है कि संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थापित किये जाने में जो आपत्ति की गई है उससे देश की महान क्षति होगी। अतः राष्ट्रीय हित में भारत सरकार को अपनी आपत्ति वापस कर लेनी चाहिये। यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार इस प्रश्न पर गंभीरता से सोच रही है और शीघ्र ही अपना निर्णय देगी।

शराब बंदी में जल्दबाजी न करो

नेहरू जी की सलाह

बम्बई, ३० अगस्त। यहां के प्रेसजनों के बीच बोलते हुए श्री एस के, पाटिलने बताया कि नेहरू जी ने शराबबंदी के मामले में जल्दी न करने की सलाह दी है।

अक्तूबर में निष्क्रांतों की सम्पत्ति पर ताले

२० [illegible] के नाम नोटिस जारी

[illegible] (सिंध) ३० अगस्त। निष्क्रांत सम्पत्ति के डिप्टी कस्टोडियन ने बताया है कि यहाँ पर लगभग २० बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओं पर ताले लगा दिये गये हैं, जिनमें बर्फ और लकड़ी के कारखाने भी हैं। इस सम्बन्ध में आवश्यक जाँच की जा रही है।

इनके अलावा २० अन्य बड़ी संस्थाओं के नाम नोटिस जारी कर गये हैं। जिनमें जे बी मंघाराम की बिसकुट फैक्टरी, डालमिया फ्लोर मिल तथा [illegible] की सीमेंट फैक्टरी शामिल हैं।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य मित्र

ओ३म् मा प्र गाम पथा वयं मा यज्ञा-दिन्द्र सोमिनः । मान्तस्थुर्नो अरातयः ।
(अ० १३ । १ । ५६)

हे ऐश्वर्य शालिन् प्रभो ! हम सोम युक्त होते हुये श्रेष्ठ पथ से कदापि विच लित न हों। हमारे बीच में शत्रु अज्ञानी न रहें ।

ता० १ सितम्बर १६४६

भाषा संकट

स्वतंत्र भारत राष्ट्र की विधान परिषद एक सार्वभौम सेकुलर (लौकिक) विधान निर्माण करने के लिये चिरकाल से सलग्न है। अब तक जो कुछ भी रूपरेखा इस विधान की बनी है उसमें अभारतीय राष्ट्रों के विधानों से अधिकतर सामग्री संकलित की गई प्रतीत होती है। भारतीय संस्कृति को विशेष महत्व नहीं दिया गया प्रतीत होता है। तथापि राष्ट्र पताका के मध्य में धर्म चक्र, राष्ट्र की मुद्रा में सत्यमेव जयते और राष्ट्र पिता की धारणा में रामराज्य की कल्पना भारतीय संस्कृति के तीन विस्पष्ट द्योतक प्रतीक हैं, कि जिनको कोई भी भारतीय नागरिक अपने दृष्टिपथ से किसी प्रकार दूर नहीं कर सकता है। किन्तु उस पाकिस्तान ने कि जिसके सिन्ध, बिलोचिस्तान पश्चिमीय पंजाब, सीमाप्रान्त और पूर्वीय बंगाल ५ प्रान्त हैं और जिनमें से किसी प्रान्त की भाषा उर्दू नहीं है फिर भी उसने अविलम्ब समस्त पाकिस्तानी नागरिकों के लिये उर्दू को ही राष्ट्र भाषा घोषित कर दिया। उस समय हिन्दुस्तानी के किसी हिमायती ने भी यह सलाह नहीं दी कि पूर्वीय बंगाल में उर्दू बंगला अक्षरों में लिखी जाय अथवा सर्वत्र हिन्दुस्तानी ही राष्ट्र भाषा मान ली जाय। दुर्भाग्य की बात है कि अभी तक भारत में राष्ट्र भाषा, शिक्षा का माध्यम भाषा, सरकारी कार्यालयों और न्यायालयों की भाषा, प्रान्त की भाषा और राष्ट्र की भाषा तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा आदि २ अनेक ऐसे प्रश्न हैं कि जिन सबके विषय में मुंडे २ मतिभिन्ना के अनुसार अनेक मत एवं विचार प्रस्तुत किये जाते हैं। यहाँ तक कि विधान परिषद् के कानूनी पंडितों को अभी तक यह नहीं ज्ञात हो सका कि हमारी भाषा क्या होनी चाहिये। इस सम्बन्ध में यहाँ तक विचार हो रहा है कि १५ वर्ष तक तो राष्ट्रीय कार्यों के लिये अंग्रेजी ही यथा पूर्व अधिष्ठित रहे। हिन्दी या हिन्दुस्तानी का संघर्ष अभी तक समाहित नहीं हो सका है। अभी तक द्विराष्ट्र सिद्धान्त के अनुसार द्विभाषा और द्विलिपि सिद्धान्त का आग्रह पूर्वक प्रयत्न किया जा रहा है। इस आग्रह का और कोई भी आधार नहीं कहा जा सकता है सिवाय कुछ लोगों का यह कहना कि महात्मा जी हिन्दुस्तानी को नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में चाहते थे। किन्तु ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जब महात्मा जी ने ऐसा विचार किया था तो वह समस्त देश को अखंड रखते हुये हिन्दू मुसलिम एकता को स्थापित करना चाहते थे। पर बटवारे के अनन्तर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्र ही जब बन गये तो फिर अब उस मेलजोल वाली नीति का प्रयोजन ही कहाँ शेष रहा।

युक्त प्रान्त बिहार, राजस्थान, मध्य देश, हिमाचल देश और पूर्वीय पंजाब आदि में १८ करोड़ के लगभग हिन्दी बोलने और समझने वाले हैं। इन प्रान्तों और प्रदेशों ने हिन्दी नागरी को ही स्वीकार भी कर लिया है। परन्तु हमारे हरदिल अजीज लीडरों को प्रबल बहुमत की स्पष्ट उपेक्षा करते हुये बल पूर्वक थोड़े से लोगों को प्रसन्न करने के लिये हिन्दुस्तानी और उर्दू को किसी न किसी रूप में भारत पर लाद देना ही कल्याण कर प्रतीत हो रहा है। इस प्रसंग में मौलाना आजाद साहेब तो यह तक कहते हैं कि भारत में जितनी भाषायें हैं वह सब भारतीय हैं। और अल्प मत वालों पर बहुमत वालों की भाषा लादी नहीं जा सकती है। खेद है कि मौलाना साहेब जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति को यह कहने का किस प्रकार साहस हुआ। आपके हिसाब से तो फिर अंग्रेजी ही राष्ट्र भाषा हो जानी चाहिये। क्योंकि स्वल्पतम उसके बोलने वाले हैं और उन पर अन्य कोई भाषा लादी नहीं जा सकती है। इस तर्क से तो अंग्रेजों ने ही क्या अपराध किया था कि जिनको निकालने के लिये भारत छोड़ो का आन्दोलन कांग्रेस ने चलाया था। क्यों कि अंग्रेज के चले जाने से देश के शासनाधिकारियों में उत्कर्ष की वृद्धि हुई है अथवा अपकर्ष की, यह बात तो प्रत्येक सड़क पर चलने वाला भी समझता है। अब स्वाभाविक तो यही होता कि अंग्रेज के साथ उसकी भाषा भी यहाँ से चली जाती। किन्तु खेद है कि हमारे राष्ट्र के कर्णधार उसको अपने कल्याण के लिये कम से कम १५ वर्ष के लिये और लादे रखना चाहते हैं। स्वतन्त्र होने पर तो हमको यह भी बताया जाता है कि भारत का कल्याण इसी में है कि उसके उद्योग धन्धों और कलाकौशल को बढ़ाने के लिये विदेशों की पूंजी भारत में लगाई जावे, और भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश माना जावे। आर्थिक, औद्योगिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में यदि भारत को परमुखापेक्षी बनाने का नाम ही यदि स्वतन्त्रता है तो परतन्त्रता और क्या है? कदाचित् इसी परम्परा के अनुसार हम में से कुछ लोग इस बात का प्रयास कर रहे हैं कि भारत में राष्ट्रीय भाषा भी इसके विधान की भाँति ही कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा, इस उक्ति के अनुसार अरबी फारसी, तुर्की, इराकी, मिश्री, अंग्रेजी, यूनानी लेटिन, चीनी, जापानी, फ्रेन्च, जर्मन और रशियन भाषाओं का एक घोल बना लिया जाय। उसी को राष्ट्र भाषा कहा जाय। आश्चर्य तो यह है कि विशुद्ध हाथ का कता और हाथ का बुना वस्त्र बड़े गौरव के साथ धारण करनेवाले सज्जन इस बात में अणुमात्र लज्जा अनुभव नहीं करते हैं कि यदि उनको वस्त्र के नितान्त स्वदेशी होने में गर्व अनुभव होता है तो फिर भाषा के निकृष्ट घोल को दुराग्रह के साथ देश पर उसकी इच्छा के सर्वथा विपरीत लादने से राष्ट्र कितना असन्तुष्ट और क्षुब्ध हो जायगा। प्रजातन्त्र के साधारण सिद्धान्त के आधार पर भी वर्तमान भारत में हिन्दी और उसकी नागरी लिपि के अतिरिक्त अन्य कोई प्रान्तीय या विदेशीय भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं स्वीकार किया जा सकता है। क्यों कि प्रजा का जिस ओर प्रबल बहुमत होता है, प्रजातन्त्र में वही बात मान्य होती है। अन्यथा तानाशाही और आतंकवाद से किये गये निर्णय अविलम्ब प्रजा के द्वारा ठुकरा दिये जाते हैं। हो सकता है कि भाषा के विषय में अपने किन्हीं विचारों और धारणाओं के कारण किन्हीं नेताओं अथवा उच्च अधिकारियों को किसी प्रकार की भाषा को ही राष्ट्र भाषा स्वीकार करवाना अभिमत हो। परन्तु उनको भी गम्भीरता के साथ अपने निजी विचारों को प्रजा के प्रबल बहुमत के समक्ष केवल आग्रह के आधार पर मनवाने से विरत रहना चाहिये। इससे राष्ट्र का हित नहीं सम्भव है। अनेक अनहित ही सम्भव हैं।

पक्ष विपक्ष में जो कुछ भी कहा जा सकता था, वह सब कहा गया और लिखा गया। इस पर भी यदि किन्हीं नेताओं को सन्देह हो कि वस्तुत भारतीय प्रजा किस भाषा को राष्ट्र भाषा स्वीकार करना चाहती है तो सीधा सा उपाय है जनमत, जनमत ले लिया जाय और उसी के अनुसार राष्ट्रभाषा घोषित की जाय। क्यों कि विधान परिषद् में बैठे हुये थोड़े से लोग वस्तुत प्रजा की मनोवृत्ति का ठीक प्रकार से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते, जब कि उनको अपने निजी विचारों को मनवाने का आग्रह हो गया हो। आज कश्मीर में जनमत क्यों लिया जाना उचित समझा जाता है? केवल इसीलिये कि जनमत ही सर्वश्रेष्ठ साधन राष्ट्र के शासन पद्धति का निर्णायक हो सकता है। फिर यदि किन्हीं कारणों से विधान परिषद् के विधानशास्त्री यदि स्वयं प्रजा के हितों की रक्षा करने में अपने को असमर्थ अनुभव करते हों तो जनमत के द्वारा ही इस प्रश्न का क्यों न निर्णय किया जाय।

हिंदुस्तानी के हिमायतियों से हम पूछना चाहते हैं कि क्या कभी स्वप्न में भी आपने कश्मीर की राष्ट्रभाषा पर विचार कर अपना मत प्रकट किया? क्या आजतक किसी ने भी कहने का साहस किया कि कश्मीर में बहुमत और अल्पमत दोनों प्रकार के नागरिकों की सुविधा के लिये हिन्दुस्तानी भाषा होनी चाहिये और उसकी लिपि उर्दू

देवनागरी हो ? कश्मीर म तो बहुमत की भाषा उर्दू को ही उर्दू लिपि में स्वीकार किया गया है किन्तु भारत म बहुमत की भाषा हिन्दी और नागरी लिपि अस्वीकरणीय है । यही भाषा सकट है ।

★ ★ ★

गोधन

यों तो जब से भारत देश एक स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया है तभी से अनेक प्रकार के लोग राष्ट्र में उत्पन्न होने वाले विभिन्न जटिल प्रश्नों का समाधान करने के लिये अपनी धारणाओं के अनुसार नयी नयी योजनाएं प्रकाशित करते रहते हैं । किन्तु इस प्रकार की योजनाओं के निर्माता गण जब देश कालिक परिस्थिति को दृष्टि म रखते हुये तदनुरूप योजनायें नहीं बनाते हैं तो प्रायः उनकी योजनायें हितबुद्धि से प्रेरित होने पर भी अव्यवहार्य उपहासास्पद और व्यर्थ प्रतीत होती हैं । विशेषकर ऐसे अवसर पर कि जब शासक वर्ग के उपजाऊ मस्तिष्क से कोई ऐसी अनोखी योजना प्रस्तुत की जाती है ।

भारत के स्वतन्त्र हो जाने के उपरान्त गवादि उपयोगी और उपादेय पशुधन की पूर्णरूप से कानून के द्वारा परिरक्षा होगी ऐसी सर्व साधारण की धारणा थी किन्तु दो वर्ष बीत चुके अभी तक केवल इतना ही प्रतीत होता है कि सरकार एक ऐसा कानून बनाने का विचार कर रही है कि जिसके अनुसार १४ वर्ष से न्यून आयु के पशुओं का वध न हो सकेगा । १४ वर्ष से अधिक आयु प्राप्त पशुओं का वध होता ही रहेगा । यद्यपि इस देश के अंग्रेजों के पूर्व मुसलमान बादशाही के शासन काल में भी गोवध निषिद्ध था तथापि स्वतन्त्र राष्ट्र में अपनी आयु का सर्वश्रेष्ठ भाग लोकहित में व्यतीत करने वाले पशुओं को उनके वध के द्वारा ही पुरस्कृत किया जाना ही उचित समझा जायेगा ?

इतना ही नहीं ता० २५ अगस्त को युक्त प्रान्त के कृषि मन्त्री माननीय मि० निसार अहमद शेरवानी महोदय ने पी. टी आई के सम्वाद दाता को अपना वक्तव्य देते हुये कहा कि

(The existence of 92 00 000 decrepit, old and useless cattle in the Province greatly affected their food resources Some method would have to be devised to stop the wastage of food by such cattle The problem, therefore had to be viewed on not sentimental grounds but on ratior … s

अर्थात् ' प्रान्त म ९२००००० दुर्बल वृद्ध और अनुपयोगी पशुओं की स्थिति के कारण अन्न के प्राप्ति साधनों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है । कोई-न कोई उपाय सोचना ही पड़ेगा कि जिससे इस प्रकार के पशुओं से होने वाली अन्न सम्बन्धी हानि को रोका जा सके । इसलिये इस प्रश्न पर केवल भावुकता के कारणों से ही विचार न करना चाहिए अपितु बौद्धिक आधारों पर विचार करना चाहिये ।"

उपर्युक्त वक्तव्य का सीधा अर्थ एक ही हो सकता है कि ९२००००० दुर्बल वृद्ध और अनुपयोगी पशुओं को इसलिये जीवित न रखा जाय कि उनके न रहने से से अन्न की विशेष मात्रा बच सकेगी । इस प्रश्न पर भावुकता के कारणों से विचार न करते हुये केवल बौद्धिक आधार ही विचार करने की नेक सलाह कृषि मन्त्री महोदय ने दी है । उनके ऐसा कहने से प्रकट होता है कि देश मे बहुत से लोग पशु वध को भावुक कारणों से अनुचित समझते है और कुछ लोग व्यापारिक दृष्टि से और धार्मिक दृष्टि से भी पशु वध को उचित समझते हैं । इन दोनों प्रकार के विचारों को छोड़कर यह बात तो सभी को स्वीकार है कि भारत में सत्तर प्रतिशत से अधिक लोग कृषि कार्य करते हैं और इस कार्य में पशुओं को ही एक मात्र साधन माना जाता है । इन पशुओं का उपयोग न केवल हल चलाने, गाड़ी चलाने तथा दुग्धादि की प्राप्ति के लिये किया जाता है अपितु सभी प्रकार के पशुओं से खाद और ईंधन की भी प्राप्ति होती है । निर्बल वृद्ध और अनुपयोगी पशुओं के मल मूत्रादि से खाद और ईंधन प्राप्त किये जाते हैं । ऐसी अवस्था में भी यदि यह बात बुद्धिगम्य हो कि ९२००००० पशुओं से प्रान्त को युक्त कर दिया जाय और अन्न बचा लिया जाय तो उस बुद्धि को भी विकृत बुद्धि ही कहा जा सकता है । अन्यथा क्या कभी किसी मस्तिष्क में यह कल्पना भी उत्पन्न हो सकती है कि निर्बल, वृद्ध और अनुपयोगी स्त्री-पुरुषों से होने वाले अन्ननाश को बचाने के लिये कोई ऐसा ढंग सोचा जा सकता है कि जिससे उनको दिये जाने वाला अन्न बच जावे । फिर तो अनेक आतुरालय, चिकित्सालय स्वास्थ्य आश्रम आदि संस्थाओं को सर्वथा बन्द ही करना होगा क्योंकि उनमें जिन लोगों को आश्रय दिया जाता है वे निर्बल, वृद्ध और अनुपयोगी व्यक्ति ही होते हैं । वस्तुतः इस प्रकार की योजना मनुष्यता से कोई सम्बन्ध नहीं रखती है । पशुता का तो सिद्धान्त ही यही है ।

★ ★ ★

जनता का निर्वाह कष्ट

इस दीर्घकाय महादेश भारत मे जन साधारण की सामाजिक दशा के अनुसन्धान के लिये ठीक २ तथ्य व गणनाएं प्राप्त नहीं हैं । इस कारण जनगणना द्वारा प्राप्त जो थोड़े बहुत अंक प्राप्त हो सकते हैं उन्हीं के आधार पर भारतीयों की आर्थिक स्थिति का अनुमान किया जा सकता है ।

भारतीय जनगणना के कमिश्नर मि० यीट्स ने सन् १९५१ की होनेवाली जनगणना के सम्बन्ध मे कुछ परामर्श दिये हैं । इन परामर्शों मे एक परामर्श यह भी है कि देश की स्थिति का ठीक२ तथा शीघ्र परिज्ञान होने के लिये एक स्थायी जनगणना विभाग की स्थापना की जावे । इस स्थायी विभाग का यह कर्तव्य होगा कि वह निरन्तर देश की सामाजिक तथा उससे सम्बन्धित आर्थिक दशा की खोज करता रहे और सरकार को उचित परामर्श देता रहे ।

भारत सरकार द्वारा नवीन प्रकाशित मध्यवर्ग के वेतन भोगी कर्मचारियों के आय का जो विवरण प्रकाशित हुआ है वह भारत के साधारण वित्त रखने वाली जनता की दुर्दशा का उत्तम दिग्दर्शन कराने वाला है । सन् १९३९ ई० के द्वितीय संसार व्यापी महायुद्ध के अनन्तर मुद्रास्फीति का मध्यम वर्ग की जनता पर अत्यन्त घातक प्रभाव हुआ है । इसी प्रकार देश का धनिक वर्ग भी, उन कुछ एक व्यक्तियों को छोड़कर जिन्हें विशेष अवस्थाओं के कारण लाभ उठाने का अवसर प्राप्त हो गया है, अपेक्षया अधिकाधिक निर्धन ही हो रहा है । तात्पर्य यह कि सामूहिक रूप से देश समृद्ध होने के स्थान में अधिकाधिक निर्धन होता जा रहा है । अनेक व्यक्तियों का कथन है कि देश में श्रमिक वर्ग की अवस्था पूर्वापेक्षया बहुत उन्नत हो गई है क्योंकि उनके विविध संगठनों तथा सरकार द्वारा नियत पञ्च अदालतों की तत्परता तथा श्रमिकों के निर्वाहव्यय के स्तर के आधार पर, समय २ पर होने वाले निर्णयों के कारण उनकी अवस्था में बहुत बिगाड़ नहीं हुआ है । परन्तु वस्तुस्थिति का ठीक २ ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से इस कथन की सारहीनता अप्रकट नहीं है ।

यह तो स्पष्ट ही है कि मध्य वर्ग नागरिक की आय को बचत स्वभावतः ही अत्यन्त न्यून होती है परन्तु वर्तमान महार्घता के कारण न केवल बचत होना ही असम्भव है प्रत्युत साधारण निर्वाह मात्र ही असम्भव हो उठा है । इसके अतिरिक्त उनको बाधित होकर अपनी स्थिति व सम्मान की रक्षा के लिये कुछ न कुछ आवश्यक व्यय करना ही पड़ता है । यह ठीक है कि सरकारी कर्मचारियों को विशेष संरक्षकता प्राप्त है जिसके कारण उन्हें महगाई आदि उपवेतन प्राप्त है परन्तु वह भी इस समय पर्याप्त सिद्ध नहीं हो रहे — अन्य वैयक्तिक वैतनिक कर्मचारियों की अवस्था तो अत्यन्त दयनीय हो उठी है ।

उदाहरण रूप में सन् १९४६ की गवर्नमैन्ट की रिपोर्ट के अनुसार ५००) मासिक से न्यून वेतन पाने वालों की दशा पर दृष्टिपात करने से उनकी ठीक २ दुरवस्था का ज्ञान हो जायगा ।

मद्रास म इस प्रकार के कर्मचारियों के प्रत्येक परिवार की आय १५९) तथा देहली २८६) मासिक है जब कि इनमें से ३०) मासिक वेतन पाने वाले लेखकों की संख्या भी बहुत अधिक है । विशेष बात यह है कि मद्रासियों में से ५ व्यक्तियों मे १, और देहली निवासियों म २ की आनुमानिक आय ही केवल इतनी है कि वे निर्वाह मात्र कर सकें । पञ्जाब म ३७% और कलकत्ता मे ५५% परिवार ऋणभार के भारी बोझ से दबे हुये हैं । अनुमान किया जाता है कि इस ऋणग्रस्तता का एक बड़ा कारण बीमारी और विवाह आदि हैं । इसी प्रकार बम्बई में प्रत्येक परिवार के आश्रितों की आय सवा चार (४¼) रुपये, बिहार उड़ीसा मे ६॥) और युक्त प्रान्त में ९।) मात्र ही है ।

इतनी कम पारिवारिक आय के अनुसार उनके व्यय की तो कोई तुलना ही नहीं की जा सकती है । रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि आय का आधे से भाग भोजन पर व्यय होता है । यद्यपि सरकारी कर्मचारियों को मकान आदि निवास स्थानों की अधिक सुविधा प्राप्त है क्योंकि उन्हें अपने वेतन आय के १०% पर मकान उपलब्ध हो जाते हैं, तथापि एक २ कमरे में दो २ या अधिक व्यक्तियों को भी प्रायः रहना पड़ता है उत्तम और खुला निवास स्थान प्राप्त होना तो बहुत दूर की बात है देहली और कलकत्ता जैसे नगरों मे तो शरणार्थियों की अधिक संख्या आ जाने से निवासयोग्य मकानों के प्राप्त होने की समस्या और भी अधिक विकट हो गई है । वस्त्र और जलाने की लकड़ी आदि में आय के १२ प्रतिशत से १५ प्रतिशत तक व्यय होने का अनुमान है । इसके अतिरिक्त कम से कम १० प्रतिशत से लेकर ४० प्रतिशत तक जीवन के अन्य आवश्यक कार्यों में व्यय होता है । यात्रा, बालकों की शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काश्मीर

"हिमांशु"

सुखद काश्मीर आज एक दुखद पहेली बन गया है। उत्तुंग हिमश्रृंगों से आवृत एवं मधुर हरीतिमा से विभूषित, झील, झरनों और प्रपातों के इस मनोहर प्रदेश में देश-विदेश के सहस्रों मानव नैसर्गिक सुख शान्ति प्राप्त करने आते थे, किन्तु आज उनकी आशा पूरी न होगी। वहां का वातावरण अशान्त और जन-जीवन अस्तव्यस्त है। क्रूर आक्रमणकारियों के दानवी आघातों के फलस्वरूप दिव्य धाम हतप्रभ हो गयी है और बहुत सी रमणीक बस्तियां उजड़ी तथा वीरान दिखायी देती हैं। जहां मृदुल केसर का सौरभ और कमनीय कुसुमों का पराग उड़ता था, वहां अब तक कभी कभी बारूद की दुर्गंध भर जाती है। यद्यपि भारतीय सेनाओं ने शत्रुओं का दमन कर दिया है। विपत्तिसंकटपूर्ण परिस्थितियों में भारत ने काश्मीर को बर्बर कबीलियों के विनाशक पंजे से बचाया यह इतिहास की एक अद्वितीय घटना है।

इस समय काश्मीर में युद्ध की स्थिति नहीं है, काश्मीरी जनता को यह तय करना है कि यह रियासत भारतीय संघ में रहे अथवा पाकिस्तान में शामिल हो। वास्तव में यह एक आत्म निश्चय का प्रश्न है, जिसपर काश्मीर का भाग्य और भविष्य निर्भर है। उसका कल्याण किधर है। रक्षक शासक के साथ रहने में अथवा भक्षक आक्रमणकारियों के अंकुश के नीचे आने में? भारत और पाकिस्तान की नीति एवं कार्यों की समीक्षा करके कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इसका उत्तर क्षण में दे सकता है। फिर भी इस सम्बन्ध में जनता की राय लेना वाञ्छनीय है। भारत ने सन् १९४७ में ही यही प्रस्ताव पाकिस्तान के प्रणेताओं के सम्मुख रखा था किन्तु उन्होंने इसे ठुकरा दिया था। अब संयुक्त-राष्ट्र-संघ का निर्णय दोनों राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया है।

लेकिन शुद्ध 'जनमत' प्राप्त करने के लिये शान्तिपूर्ण स्थिति अनिवार्य है, लाखों की संख्या में जिन काश्मीरियों ने भय वश अपने घरबार छोड़ भारत में शरण ली है उन्हें वापस लाना और पुनर्संस्थापित करना भी आवश्यक है। तथा यह नितान्त आवश्यक है कि आततायी कथित 'आज़ाद काश्मीर फौज' निःशस्त्र की जाय और उसमें भरे हुए पाकिस्तान के लोगों को निकाल दिया जाय। किन्तु यह स्थिति निकट भविष्य में सम्भव प्रतीत नहीं होती। कमीशन द्वारा करायी गयी सन्धि के विपरीत पाकिस्तान की ओर से आचरण हो रहा है। उधर के लोग अब भी छुटपुट हमले कर देते हैं। यद्यपि उन्हें मुंह की खाकर लौटना पड़ता है। रज़ाकारों के समान कथित, आज़ाद काश्मीर फौज, के सिपाही जनता के उत्पीड़न का कारण बने हुए हैं और कलहप्रिय काश्मीरियों को पथभ्रष्ट करने के लिए कलह प्रिय साम्प्रदायिक अवसरवादियों द्वारा जाल बिछाये जा रहे हैं। सारांश यह कि शुद्ध जनमत के लिए उपयुक्त क्षेत्र तैयार करने में बाधाएं उपस्थित की जा रही हैं। अतएव यह भारत की दृढ़ता की परीक्षा का समय है। यदि उसने काश्मीर की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया है तो उसका यह भी कर्तव्य है कि उसे अन्त तक निभाए और राजनीतिक कुचक्रों के मिटाने और सामान्य स्थिति लाने के पूर्व पग पीछे न हटाये। मानवता की यही मांग है जनतन्त्र की यही पुकार है। आज भारत की साख समस्त संसार में जम चुकी है। लोक-मंगल उसका मूलमन्त्र है। वह किसी से घृणा नहीं करता, लेकिन उन लोगों को अन्धकार के गर्त में गिरते भी नहीं देख सकता जिनका उससे अनादि काल से अटूट सम्बन्ध है।

सच पूछा जाय तो काश्मीर भारतीय सभ्यता का एक प्राचीनतम केन्द्र है और सदा से दोनों की आर्थिक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। भारतीय संघ का आदर्श रामराज्य है जिसमें बिना भेदभाव के सबके हितों की रक्षा होती है और सबको उन्नति के समान अवसर प्राप्त हैं। सर्वोदय ही उसका लक्ष्य है, पाकिस्तान में गैरमुस्लिमों के साथ जो घृणित व्यवहार हुए अथवा आज भी जिन असमर्थताओं के वे शिकार बने हुए हैं वैसा व्यवहार न यहां किसी के साथ हुआ और न हो सकता है। यहां की मुस्लिम जनता जीवन के नाना क्षेत्रों में हिन्दुओं अथवा अन्य किसी भी भारतीय के समान ही सुविधाओं का उपभोग कर रही है और साम्प्रदायिक भेदभाव के लिये शासन में कोई स्थान नहीं है। यहाँ केन्द्रीय एवं प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों में मुस्लिम मन्त्री मौजूद हैं। मुस्लिम गवर्नर भी हैं, राजदूत हैं, जज हैं और पुलिस, तथा फौज की विभिन्न शाखाओं के उच्चाधिकारी हैं। उनके धर्म का सम्मान होता है और धार्मिक उत्सवों एवं समारोहों के लिए उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है। इतने ही से यह भलीभाँति समझा जा सकता है कि भारत कितना उदार है।

पाकिस्तान की नीति और चाल ढाल बिल्कुल भिन्न है। हमें वह समय याद है जब राज सत्ता हस्तान्तरित हो रही थी, हमारे नेताओं के कंधों पर शासन का भारी बोझ आ रहा था और जर्जरित ढांचे को सुधारने की बहुमुखी समस्या उनके सामने उपस्थित थी। ऐसे कठिन काल में पाकिस्तान के प्रणेताओं को खून की होली खेलने की सूझी और कितने भीषण हत्याकांड हुए।

सिन्ध, पश्चिमी पंजाब, सीमाप्रान्त और पूर्वी बंगाल मिल जाने पर भी उन्हें सन्तोष न हुआ। सन्तोष तो उसे होता है जिसकी नियत साफ हो। यहाँ तो रंग ही और था। जिस साम्प्रदायिक संकीर्णता के वशीभूत वह नर संहार कराया गया वही दानवी लिप्सा काश्मीर पर चढ़ाई करने का कारण बनी। शुरू में वह कहते रहे कि काश्मीर पर होने वाले आक्रमणों में हमारा हाथ नहीं है लेकिन बाद में राष्ट्र संघ के सम्मुख इसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने समझा यह था कि काश्मीर असहाय है और इस समय भारत शान्ति व्यवस्था और शरणार्थी आदि दुरूह समस्याओं को हल करने में लगा है इसलिये इस मधुर फल को भी लगे हाथ निगल लेना कठिन नहीं है। कितनी बड़ी कृतघ्नता थी यह। भारत ने बड़े भाई की हैसियत से रोज़ रोज़ का कलह दूर करने के लिए मनचाहा हिस्सा उन्हें दे दिया था, सुख से राज्य करते और पाकिस्तान की उन्नति करते। भारत ने कभी भी इनके प्रति द्रोह की भावना नहीं रखी अपितु मुसलमानों की रक्षा के निमित्त अपने उद्धार कर्ता की भी बलि चढ़ा दी। कितने खेद का विषय है कि ऐसे लाभानुभव करी देश को हिन्दू इण्डिया कह कर घृणित प्रचार किया जाता है। कौन विश्वास करेगा इस मिथ्या आरोप पर! भारत शान्ति, सत्य और अहिंसा का समर्थक है। राष्ट्र पिता गाँधी जी का उसके लिये यही सन्देश था और इसी सिद्धान्त को लेकर राष्ट्रोन्नति में वह संलग्न है

काश्मीर को आत्म निर्णय करना है, वह चाहे जिसके पक्ष में राय दे। लेकिन जनमत लेने के लिये निष्पक्ष साधन अपेक्षित है। फिर पाकिस्तान की ओर से वहां सामान्य परिस्थितियां लाने में रुकावटें पैदा क्यों की जा रही हैं। कथित 'आज़ाद काश्मीर फौज' को क्यों नहीं निःशस्त्र किया जाता है और जिन लोगों से यह कह कर लूट-खसोट करायी गयी थी कि 'माल तुम्हारा, मुल्क हमारा' उन्हें उन स्थानों से क्यों नहीं हटाया जाता जहां वे गैर कानूनी कब्जा किए हैं?

जनमत के लिये निर्वाचकों की सूची बननी है, नष्टभ्रष्ट गांव और नगर फिर से बनने हैं, जिनके लिये बहुत बड़ी मात्रा में निर्माण सामग्री आवश्यक है और फिर उनमें प्रवासी निवासियों को लाकर बसाना है। साथ ही पुनर्संस्थापित लोगों के लिये भोजन वसन का प्रबन्ध करने के अतिरिक्त काम धन्धा चलाने के लिए रुपये और वस्तुओं की व्यवस्था होनी है। इसके बिना शुद्ध जनमत सम्भव नहीं है।

भारत की कामना काश्मीर को सुरक्षित एवं सम्पन्न देखने की है और भारतीय संघ में रह कर ही वह आज के संसार में उन्नति कर सकता है। पाकिस्तान का क्या मन्तव्य है यह वह जाने, लेकिन पूर्व प्रसंग तो यही सिद्ध करता है कि उसकी नियत साफ़ नहीं है। भक्षक रक्षक कैसे हो सकता है?

★ ★ ★

अमरीकी महिलाओं की रुचि

१९४० की अपेक्षा इस समय अमेरिका में लगभग ४५ लाख अतिरिक्त महिलाएं सेवा नियुक्तियों में अप्रैल १९४९ तक हुईं। विभिन्न व्यवसायों में भरती के बाद कुल संख्या १,६३,५६,००० तक पहुंच गई। कुल अमेरिकी श्रम शक्ति में महिलाएं २८ प्रतिशत हैं। १९४० के पूर्व यह संख्या केवल ६ प्रतिशत थी।

१९४० से अब तक जो महिलाएं श्रम विभाग में प्रविष्ट हुई हैं उनमें आधी के लगभग क्लर्की की ओर आकर्षित थीं।

दफ्तरों में काम करने वाली महिलाओं की संख्या अप्रैल में ४५,४२,००० थी। इस क्षेत्र में कुल नियुक्त व्यक्तियों की तुलना में यह संख्या ६१ प्रतिशत है।

श्रम, दस्तकारी तथा निरीक्षण कार्यों में लगी हुई महिलाओं की संख्या ३४,४६,०० हैं। परन्तु घरेलू कार्यों में १९४० से अब तक ५ लाख महिलाओं की संख्या घट गई है।

वेदवीथी

सर्वव्यापक की स्तुति

श्यामबिहारीलाल वानप्रस्थी

विभक्तारम् हवामहे वसो-
श्चित्रस्य राधसः ।
सवितारं नृचक्षसम् ॥
य० ३० मन्त्र ४ ॥

हे मनुष्यों ! जिस (वसोः) सुखों के निवास के हेतु (चित्रस्य) आश्चर्य-स्वरूप (राधसः) धनका (विभक्तारम्) विभाग करने हारे (सवितारम्) सब के उत्पादक (नृचक्षसम्) मनुष्यों के अन्तर्यामि स्वरूप से सब कामों के देखने हारे परमात्मा की हम लोग (हवामहे) प्रशंसा करें। उस की तुम लोग भी प्रशंसा करो ॥

मन्त्र पर भावना

इस मन्त्र में विद्वान लोग मनुष्यों को उपदेश कर रहे हैं कि हे मनुष्यों ! जिस ऐसे परमात्मा की हम स्तुति करते हैं उस की तुम भी स्तुति करो। वह प्रभु कैसा है ? सब सुखों का साधन वा आश्चर्यरूप जो धन है उसका विभाग करने वाला है। वह कर्मो के अनुसार धन बांटता है। सब को बराबर ऐश्वर्य नहीं देता। किसी को वह राजा बनाता है तो कोई कंगाल पैदा होता है। यह इतना भेद क्यों है। इस का आधार एक मात्र है, और वह है स्वकर्म। इस में तो संदेह ही नहीं कि संसार यात्रा में धन से अनेक सुख मिलते हैं। इसी लिये वेद में मनुष्य को सम्पन्नता का जीवन प्राप्त करने का उपदेश स्पष्ट है। 'वय स्याम पतयो रयीणाम्' यह प्रभु के ही वचन हैं। धन का स्वरूप बड़ा आश्चर्य जनक, मनोहर और लोभायमान है। ऐसा कोई विरला ही होता है जो इस के प्रभाव से बचे। सब इसी के पीछे दौड़ते हैं। कठोपनिषद् का 'हीरो' नचिकेता सरीखा कोई हो इसे लात मारता है। जो ऐसा करता है वह भव पार हो जाता है। उस को तो अलौकिक धन, धनों का धन मिल जाता है। फिर वह इस तुच्छ धन मिट्टी को क्या चाहना करे। उसकी कामनायें समाप्त हो जाती हैं। वह सर्व द्रष्टा 'नृचक्षसम्' है। सब के हृदय में बैठा सब की सब पड़ताल करता है। मन के संकल्प भी उस से बचे नहीं रहते। यदि हम निश्चयात्मक रूप से ईश्वर को 'नृचक्षस' समझ जावें तो पाप कहाँ क्योंकर हो। पाप तभी होता है जब हम प्रभु को भूल जाते हैं और यह समझते हैं कि हमें कोई देख नहीं रहा है। संसार के अधिकारी वर्ग के सामने भी मनुष्य अपराध करने से डरता है। सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस, कलेक्टर, कमिशनर, गवर्नर, जज और राजा की उपस्थिति में प्रजा नियम तोड़ने में हिचकती है, अथवा उन की दृष्टि को बचाकर ही कुचेष्टा करती है। पर जब हृदय को यह विश्वास हृदयंगम हो जावे कि उपरोक्त इन सब का महाराज तो हमारे भीतर ही विराजमान है और वह कुछ यहां तक कि संकल्प मात्र भी जान लेता है फिर पाप कैसा, अपराध कहां ? ऐसा विश्वासी तो ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध कुछ भी करना नहीं चाहता। यही परम अवस्था है। इसी में पहुँचने का उद्योग महान पुरुषार्थ है।

★ ★ ★ ★ ★

कवि !

(नारद उपाध्याय)

कवि सुनाना यदि तुम्हें, तो दो सुना रणगान सत्वर ।
प्रणय-वीणा तार कितनी बार तुमने झनझनाये ।
प्रेयसी के इंगितों पर राग-रञ्जित गीत गाये ॥

बैठ कर सरिता पुलिन पर कुमुदिनी का हास देखा ।
मत्त मधुपी के निकट आ प्रेम का उल्लास देखा ॥
पर कभी देखी भला है वीर की मुस्कान जिस्वर ?
कवि सुनाना यदि तुम्हें तो दो सुना रण गान सत्वर ॥

मोल कब तुमने वियोगिनि के नयन जल का न आंका।
सत्य कह दो कवि ! विरह का ताप कम कब कब न आंका ॥
कब न गिन पाये हृदय-धड़कन मिलन में दो उरों की ?
तूलिका चल स्वप्न चित्रों से कहो किस काल रोकी ?

पर कभी देखा अरे कविराज ! है तलवार का स्वर ?
कवि सुनाना यदि तुम्हें तो दो सुना रणगान सत्वर ॥
हाँ अगर, तो साथ चल कर आज रणप्रांगण दिखा दो ।
शस्त्र की झनकार के संग वीर-गुरु गर्जन सुना दो ।

बह रही है रक्त की सरिता जहां अविराम कल कल ।
तैरते हैं रुण्डमाला खिल रहे हों ज्यों कमल दल ॥
क्रान्ति के अगार परसे छेड़ दो अब भैरवी स्वर ।
कवि सुनाना यदि तुम्हें तो दो सुना रणगान सत्वर ॥

अमेरिका में

अमेरिका में लगभग ५ करोड़ २० लाख महिलाएं तथा कन्याएं घर में सिलाई का कार्य करती हैं। वे अपने पोशाकें तथा घरों में प्रयुक्त होने वाले वस्त्रों का निर्माण करती हैं

* * * *

अमेरिका में विगत तीन वर्षों में ५०,००,००० नये मकानों में विद्युत प्रकाशों का विस्तार हुआ है। इसी अवधि में ४३,००० नये बड़े उद्योगों तथा ७,२०,००० नये व्यापारिक तथा छोटी औद्योगिक फर्मों में बिजली की व्यवस्था की गई है।

* * * *

अमेरिकी पाठक प्रतिदिन ५ करोड़ १० लाख समाचार पत्र खरीदते हैं।

* * * *

अमेरिका के प्रवीण व्यवसायों में नवीन शिक्षार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। संघीय तथा राज्य के श्रम विभागों में २,१९,००० व्यक्तियों से अधिक के नाम रजिस्टर्ड हुए हैं, जब कि १९४७ में केवल ९२,००० व्यक्तियों के नाम रजिस्टर्ड हुए थे।

* * * *

१९०५ से १९४८ की अवधि में अमेरिका के कारखानों में काम करने वालों की प्रति घण्टा औसत आमदनी पांच गुनी बढ़ गई है।

* * * *

ऊंचाई मापने का वैज्ञानिक यन्त्र

अमेरिका में ३० मील की ऊंचाई को मापने के लिए एक नवीन वैज्ञानिक यन्त्र "टीकेटिज" को प्रयुक्त किया जाता है। इस यन्त्र का विकास जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी ने किया है। इसको 'हिप्सोमीटर' का नाम दिया गया है।

इस को आकाश में उड़ने वाले गुब्बारे के साथ बांध दिया जाता है। यह यन्त्र इस सिद्धान्त पर काम करता है कि 'जैसे जैसे ऊंचाई में वृद्धि होती जाती है वैसे वैसे तरल पदार्थों का बुद्बुदांक (बौयलिंग पोइन्ट) गिरता जाता है

—अमेरिका में प्रति पाँच कृषक परिवारों में से एक परिवार के पास अपने घर पर शाक उगाने के लिए एक छोटा सा उद्यान है, और प्रति १२ ऐसे परिवारों के पीछे एक परिवार मुर्गी पालता है।

अमेरिकी व्यापार विभाग के अनुसार ३,१९,००,००० कृषक परिवार हैं, जिनमें ७५,००,००० परिवार अपने घरों के छोटे २ बगीचों में अपना शाक पैदा करते हैं। जिस समय यह आंकड़े लिए गए उस समय २७,५०,००० कृषक परिवारों के पास ५,००,०,००० मुर्गियाँ थीं।—

यूनिवर्सिटी पुस्तकालय

अमेरिका में प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में १५,००,००० पुस्तकें हैं। स्कूलों के कमरों से बाहर इस स्थान पर विद्यार्थी और शिक्षक दोनों अपने अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार साथ साथ कार्य कर सकते हैं। इसमें १,००० विद्यार्थियों तथा ५०० महोपाध्यायों के लिए अनुसन्धान व्यवस्था है।

इस पुस्तकालय में खुली आलमारियों में पुस्तकें रखी हुई हैं। इससे विद्यार्थी मन चाही पुस्तक आसानी से निकाल लेते हैं। इसमें मानव प्रकृति विज्ञान तथा समाज विज्ञान के ३ विभाग हैं। इसमें सभा भवन और अलग २ अध्ययन करने के लिए कमरे भी बने हुए हैं।

व्यक्ति रेडियो

कुछ दिनों में ही अमेरिका के लोगों में सड़कों पर लोग अपने आप बात करते हुए चलते फिरते दिखाई देने लगेंगे। वास्तव में वे एक विचित्र नवीन आविष्कृत रेडियो द्वारा दूसरों से बात कर रहे होंगे।

नवीन प्रकार के रेडियो सेट में समाचार प्राप्त करने और भेजने का प्रबन्ध है।

पर्वतराज हिमालय की ओर

ले०—रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, ऐडवोकेट,

पुण्यक्षेत्र आर्यावर्त्त की समस्त सांस्कृतिक परम्परा का उद्गम स्थान पर्वतराज हिमालय सनातन काल से रहा है " उपह्वरेगिरीणाम् " इस ऋग्वेदिक श्रुति के अनुसार आर्यजाति के अग्रणी महर्षियों, ऋषियों, मुनियों, यतियों, तपस्वियों, और ब्रह्मविदों ने अपनी उत्कृष्ट साधनाओं के लिये हिमालय को किसी न किसी पावन स्थली का केन्द्र बनाया, जिस प्रकार पावनी गंगा गंगोत्री के गह्वर से निकल कर १५०० मील बहती हुई गंगा सागर में, विशाल समुद्र में अभिन्न रूप से मिल जाती है, उसी प्रकार से पर्वत राज हिमालय से अनुस्यूत आर्य संस्कृति की सार्वजनीन ज्ञान गंगा रूपिणी संस्कृति समस्त आर्यावर्त और उसके अनन्तर पृथ्वी के विभिन्न देशों में कालक्रमानुसार विस्तार को प्राप्त हुई। "स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः" भगवान् मनु के इस अनुशासन के अनुसार समस्त विश्व के मानवों के कल्याणार्थ वैदिक संस्कृति चरित्र की शिक्षा के लिये केन्द्र बनी रही। देश देशान्तरों से ज्ञान पिपासु जिज्ञासुजन सहस्रों वर्ष पर्यन्त औपनिषदिक महर्षियों के चरणों में बैठकर हिमालय की उपत्यका मे मानवता के उत्कृष्ट चरित्र की ही शिक्षा नहीं ग्रहण करते रहे, अपितु मानव से देव और ऋषि बनने की अध्यात्म विद्या-सम्बन्धी अनुष्ठान करते रहे।

काल पुरुष के स्वाभाविक संक्रमण प्रभाव से पुण्यक्षेत्र आर्यावर्त, अन्तःस्थिति प्रकृतिस्थ न रहने के कारण शनैः २ अवनति की ओर अग्रसर होता गया। अविद्या के वितत पाशों ने इसको सब ओर से जकड़ लिया। अपने स्वर्णिम गुणों को परित्याग कर भोगवाद की परम्परा का इसने अनुसरण, नहीं २ अन्धानुसरण करना ही अपने जीवन का औचित्य स्वीकार किया। परिणाम अतिशय संघातक हुआ, उत्तरोत्तर 'विषमप्यमृतं क्वचिद् भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया' महाकवि कालिदास की इस उक्ति के अनुसार आर्यावर्त के लिये अपना सांस्कृतिक अमृत भी विष तुल्य और विदेशियों का विष भी अमृत के रूप में प्रतीत हुआ। निदान अमृत के परित्याग और हालाहल विष के उदरसात् करने से मादकता और तज्जनित उन्माद परम्परा की सहस्र गुणी अभिवृद्धि होती गई, अन्ततो गत्वा 'भारतीय संस्कृति के अनुपम ज्योतिस्तम्भ भगवान् श्रीकृष्ण के इस अमर वाक्य का उनके उपासकों और भक्तों के लिये न कोई अर्थ ही रहा और कोई उपयोग ही, कि 'ब्रह्मचर्यं महद् घोरं कृत्वा द्वादश वार्षिकं, हिमवत् पार्श्वमास्थाय रुक्मिण्या सहचारिणा ' अर्थात् बारह वर्ष पर्यन्त अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ हिमालय की उपत्यका में मैंने ब्रह्मचर्य के घोर व्रत का अनुष्ठान किया। इस उत्कृष्ट चारित्रिक साधना के स्थान को अर्वाचीन विदेशी शासकों, उनके धर्म और संस्कृति के प्रसारकों, विधर्मी व्यापारियों एवं भारतीय विधर्मी जनों ने 'स्थितः पृथिव्या मिव मानदंडः' पृथिवी भर के लिये चरित्र की दृष्टि से कल्पारम्भ से विद्यमान पर्वतराज हिमालय को अपनी विलास प्रियता और निकृष्ट स्वप्रवृत्तियों के लिये सहज लीलागार बना दिया।

विश्वदानी प्रकृति की श्रेष्ठतम वेदिका को देखते २ हमने श्मशान से भी अधिक वीभत्स और घृणित बना डाला। किन्तु 'भुंक्ष्व भोगान् यथाकामं पिब भीरु रमस्व च' राक्षसराज रावण की इस उक्ति के अनुसार अध्यात्म साधना के स्थान भी अत्यन्त शोचनीय दुरवस्था को प्राप्त हो गये।

परिस्थिति के नितान्त परिवर्तित होने से भारत राष्ट्र स्वतन्त्र हो गया। विदेशियों की राजनीतिक दासता से उन्मुक्त हुआ। अनायास अपना विकास अपनी सांस्कृतिक आधारभूत परम्पराओं के अनुसार कर सकने का सुयोग प्राप्त हुआ है। प्रत्येक भारतीय का ध्यान सहस्र वर्ष के उपरान्त एक बार पुनः पर्वत राज हिमालय की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। क्यों कि आज भी हिमालय अपने उसी पवित्र स्थान पर स्थित है कि जिस पर प्रजापति ने कल्पारम्भ में उसको देवतात्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया था। पर्वतराज हिमालय निर्विकल्पक समाधि की अवस्था में ही यद्यपि पुण्य क्षेत्र आर्यावर्त की गतिविधि का मूक साक्षीमात्र रहा है, किन्तु उसकी चिरकालीन निस्पृह साधना से यदि वर्त्तमानकालीन भारतीय चाहें तो अलौकिक प्रेरणा सहज ही प्राप्त हो सकती है। किन्तु पाश्चात्यता के मद भीने बाह्याडम्बर के घटाटोप से चमत्कृत अभिनव भारत को अपनी आत्मा का साक्षात्कार स्थली हिमालय की उपत्यका में समाधिनिष्ठ होने का अवसर कब प्राप्त होगा, यह कहना कठिन है। क्योंकि दुर्भाग्यवश आज भी भारतीय राष्ट्र के भाग्य की रूपरेखा हिमालय के स्थान में नई दिल्ली की विशाल अट्टालिकाओं और भवनों में विचार विनिमय पूर्वक निर्मित हो रही है किन्तु यह कैसे सम्भव हो सकता है कि प्रकृति के सर्व श्रेष्ठ प्रदेश हिमांचल का परम सूक्ष्म और पावन वातावरण किसी मानवीय नगर के भवन में अधिगत हो सके। इसलिये "विनायकं विकुर्वाणो रचयामास वानरम्" की उक्ति वतमान विधान परिषद् के द्वारा सर्वथा चरितार्थ सम्भव होगी, यह कौन साहसपूर्वक कह सकता है।

भारत के प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक का यह अत्यन्त आवश्यक कर्त्तव्य है कि वह अब अपनी साधना, नहीं २ आध्यात्मिक साधना का केन्द्र पर्वतराज हिमालय को ही बनाने का प्रयास करे। प्रसिद्ध और केन्द्र स्थानों पर अनुकूल साधनों के साथ अध्ययन, स्वाध्याय, प्रवचन, अनुसन्धानालय, सर्वांगपूर्ण पुस्तकालय, प्रकाशनालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, वनस्पति विज्ञान अनुसन्धानालय भौतिक विज्ञान अनुसन्धनालय, खनिजत खान्वेषणालय आदि २ विभिन्न विद्याओं के पारदर्शी विद्वान्गण अपने जीवनों को राष्ट्र हित साधक शोधों के निमित्त अर्पित करें। उनके साथ कुशाग्रबुद्धि और उदीयमान युवक शिक्षाग्रहण करते हुये अनुकरणीय चरित्र विद्वानों के सम्पर्क से राष्ट्र के लिये सुचतुर नेतृत्व करने की साधना में तन्मयता के साथ दीर्घकाल पर्यन्त संलग्न हों। पर्वतीय जनों की आर्थिक अवस्था अत्यन्त दयनीय है। इसलिये साधारण जीवनोपयोगी वस्तुओं का आवश्यकतानुसार उनको प्राप्त होना प्राय सम्भव नहीं होता है। अधिकतर लोग या तो कुलियों का कार्य करते हैं अथवा थोड़ी कृषि कर अपना भरण पोषण करते हैं। किसी प्रकार का उद्योग, कलाकौशल, शिल्प, आदि २ का सुसगठितरूप से कोई सुप्रबन्ध न होने के कारण और शिक्षा एवं साधनों के अभाव से पर्वत निवासी कर्मठ और विचक्षण होते हुये भी अपना जीवन राष्ट्र के लिये अधिक उपयोगी नहीं बना सकते हैं। उनके लिये प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों की ओर से यथोचित सहायता होनी चाहिये कि जिससे वह अपने जीवन का भली-भाँति विकास करने में समर्थ हो सकें।

प्रसन्नता की बात है कि सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य के केन्द्र स्थान भुवाली नैनीताल में रामेश्वरीदेवी शम्भूनाथ आर्य पुस्तकालय अनेक वर्ष से प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रबन्ध से सार्वजनिक उपयोगों के लिये संचालित है। पुस्तकालय भुवाली के प्रमुख मध्यस्थान में विद्यमान है। इसमे प्रत्येक जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय के व्यक्ति समान रूप से लाभ उठा सकते हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी उर्दू आदि २ भाषाओं की लगभग दो सहस्र पुस्तकें पुस्तकालय में हैं। अनेक दैनिक, साप्ताहिक, अर्द्धमासिक और मासिक पत्र एवं पत्रिकायें वाचनालय में आती हैं। इनको पढ़ने के लिये सभी को समान सुविधा दी जाती है। किन्तु भुवाली जैसे महत्वपूर्ण स्थान में कि जहाँ सैकड़ों सुशिक्षित क्षयरोगी वर्षों रह-कर चिकित्सालाभ करते हैं और जिनको समय यापन एवं मनोरंजन के लिये अनेक प्रकार की पुस्तकों, पत्र और पत्रिकाओं की आवश्यकता होती है। परन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण प्रबन्ध कर्त्री सभा के लिये अभी तक आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकालय को सार्वांगपूर्ण बनाने का सुअवसर नहीं मिला है। इस अत्यन्त आवश्यक आयोजन के लिये आशा की जाती है कि न केवल प्रान्तीय और भारतीय सरकार के विभिन्न विभाग अपने २ समय २ पर प्रकाशित होने वाले साहित्य यों ही बिना मूल्य इस पुस्तकालय के लिये भिजवाने की व्यवस्था करेंगे, अपितु अन्य प्रकाशक महानुभाव भी अपनी २ पुस्तकों का एक एक प्रति इस पुस्तकालय में भेजकर पुण्य के भागी बनेंगे। क्योंकि उनके स्वल्पतम सहयोग से ही निकट भविष्य में ही यह केन्द्रीय पुस्तकालय पर्वत प्रदेश का एक प्रमुख पुस्तकालय होने योग्य हो जायगा। हम जानते हैं कि ऐसे अनेक स्वाध्यायशील महानुभाव हैं कि जिनके घरों में अनेक उपयोगी पुस्तकें पड़ी हैं कि जिनका वह स्वयं भी कोई उपयोग नहीं करते हैं और न उन पुस्तकों की सुरक्षा का ही उचित प्रबन्ध हो रहा है। इस प्रकार के सज्जन भी अपनी २ पुस्तकों में से जितनी सार्वजनिक उपयोग के लिये देना चाहें, वह पुस्तकालय के लिये प्रदान कर सकते हैं। पुस्तकालय की ओर से पुस्तकों को सुरक्षित रखते हुये उनको उचितरीति से ही वितरित करने का सुप्रबन्ध रहेगा। और यदि कोई सज्जन चाहें तो उनकी पुस्तकों की अल्मारी उनके नाम से ही पुस्तकालय मे स्थापित की जा सकेगी। इस प्रकार की अल्मारियों को स्मारक के रूप में सुरक्षित रूप में रक्खा जा सकेगा। भारतीय एवं प्रान्तीय सरकार के प्रकाशन विभाग, मद्यनिषेध समाज सुधार विभाग, कृषि विभाग, उद्योग विभाग, कलाकौशल विभाग रेडियो विभाग आदि २ से हमारा विशेष अनुरोध है वह इस पुस्तकालय में अपने २ प्रकाशन भिजवाकर पर्वत प्रदेश केन्द्र वं

संयुक्त प्रान्त

(१९४८-४९)

(१९४८-४९ के वर्ष में हमारे प्रान्त में किन २ विशेष कार्यों का सूत्र पात हुआ और क्या २ प्रमुख कार्य प्रान्त की उन्नति तथा प्रगति के लिये किये गये इसका संक्षिप्त विवरण इस लेख में प्राप्त होगा ।) —सम्पादक

संयुक्त प्रान्त में सन् १९४८ स्वतन्त्रता युग का प्रथम पूर्ण वर्ष असाधारण प्रतिकूल परिस्थितियों का देन के रूप में प्रारम्भ हुआ। युद्ध तथा देश विभाजन के कारण देश को आवश्यक वस्तुओं की कमी, बढ़ी हुई सीमता यातायात की कठिनाइयाँ और बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति सामने थी। गतवर्ष बाढ़ के कारण खरीफ की फसल को बहुत नुकसान हुआ। परन्तु इन विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी सरकार ने राष्ट्र निर्माण के कार्यों पर समुचित ध्यान दिया और वर्ष की समाप्ति तक कई महत्वपूर्ण बातों में सफलता प्राप्त हुई।

पंचायत राज

संयुक्त प्रान्त में १५ अगस्त १९४९ से ग्राम पंचायतों का कार्य प्रारम्भ हो गया है इसमें ?७२ लाख प्रमाणमत वयस्कों द्वारा लगभग ३५,००० गांव सभाओं तथा ८,१०० पंचायती अदालतों का चुनाव हुआ ५० पंचायत निरीक्षकों को, जो पंचायतों का निरीक्षण एवं पथ प्रदर्शन करेंगे, व्यापक रूप से ट्रेनिंग दी गई है। पंचायती अदालतों के मंत्रियों तथा सरपंचों का ट्रेनिंग के लिये भी शिविर खोले गये हैं। कुल मिला कर ८७,१०० व्यक्तियों को ट्रेनिंग दी जायगा।

जमींदारी उन्मूलन

प्रान्तीय धारा सभा में प्रस्तुत जमींदारी उन्मूलन बिल के अनुसार मध्यवर्तियों अर्थात् जमींदारों को उनकी पक्की आय का आठगुना प्रतिकर के रूप में मिलेगा और छोटे छोटे जमींदारों को जो लगान १,००० से अधिक मालगुजारी नहीं देते क्रमबद्ध पुनर्वासन अनुदान जो बीस से दो गुना तक होगा, दिया जायगा।

आर्थिक तथा कानूनी कठिनाइयों को दूर करने के हेतु किसानों से स्वेच्छापूर्वक अपने लगान का दस गुना जमींदारी उन्मूलन कोष में देने के लिये कहा गया है। जो किसान इस कोष में धन देंगे उन्हें भूमिधर कहा जायगा और उन्हें अपनी जोतों के अन्तरण के अधिकार होंगे और उन्हें अपने मौजूदा लगान का केवल ५० प्रतिशत मालगुजारी के रूप में देना होगा। किसानों के एक दूसरे वर्ग अर्थात् सीरदारों को भी, जो जमींदारी उन्मूलन कोष में धन देने में असमर्थ हैं, अपनी जोतों में स्थायी एवं मौरूसी अधिकार प्राप्त होंगे। किन्तु कृषि, फलोत्पादन तथा पशुपालन के अतिरिक्त किसी अन्य प्रयोजन के लिये वे अपनी जोतों का उपयोग न कर सकेंगे।

किसी भी व्यक्ति को ३० एकड़ से अधिक भूमि प्राप्त करने की अनुमति नहीं दी जायगी।

कृषि योग्य भूमि तथा उपनिवेशीकरण योजना

भारत में सबसे महान् प्रयत्न दिसम्बर १९४७ में गंगा खादिर के ४७,००० एकड़ भूमि को तोड़ने का कार्य प्रारम्भ किया गया। २२,००० एकड़ भूमि को कृषि योग्य बनाने का कार्यक्रम बना था, जिसमें से लगभग १०,००० एकड़ के भूमि को कृषि योग्य बनाया जा चुका है और इस क्षेत्र को बड़कों द्वारा एक हजार एकड़ के चौकोर टुकड़ों में बांट दिया गया है। जिसके मध्य से १३ मील लम्बी एक सड़क जाती है। इस भूमि से १३,००० मन ज्वार के चारा के अतिरिक्त खरीफ फसल में ४०,००० मन धान तथा ७२,००० मन गन्ना पैदा हो चुका है। रबी की फसल भी बहुत अच्छी होने की आशा है। कुल ७,५०० एकड़ के क्षेत्र में कोई न कोई फसल उगाई जाती है।

तराई भाभर में लगभग १५० वर्ग मील का क्षेत्र है जिसकी २०,००० एकड़ भूमि पर खेती हो सकती है विगत वर्ष में ७,५०० एकड़ भूमि को तैयार किया गया और उसमें खरीफ की फसल बहुत अच्छी हुई। इस वर्ष बरसात शुरू होने के पहले १०,००० एकड़ भूमि को और कृषि योग्य बनाने में काफी सफलता मिली है।

गंगा खादिर में ७८८ कुटुम्बों को, जिनमें अधिकांश शरणार्थी हैं और जिनकी संख्या ३,३१८ है भूमि दी गई है और स्थायी रूप से उन्हें वहां बसाया गया है। ४१५ घर बनवाये गये हैं और इस वर्ष भी ९१६ घर बनवाये जा रहे हैं। इस वर्ष रबी फसल की कटाई के बाद १,२०० कुटुम्बों को और बसाने का प्रस्ताव है खेती के औजारों तथा बैलों की खरीद के लिये वहां बसने वाले लोगों को कर्ज के रूप में ५,३८,००० रुपये की रकम दी गई है। एक नए नगर हस्तिनापुर की योजना भी तैयार है, जो यहां बसने वाले लोगों के लिये सांस्कृतिक एवं औद्योगिक केन्द्र होगा। इसकी जनसंख्या १०,००० होगी और इसे डाकखाना, तारघर, अस्पताल तथा स्कूलों की सुविधायें प्राप्त होंगी। भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू इस नगर का शिलान्यास कर चुके हैं।

विद्युत् शक्ति

प्रान्त में इस समय १॥ लाख किलोवाट बिजली का प्रबन्ध किया गया है। दीर्घकालीन योजनाओं से यह मात्रा १० लाख किलोवाट तक बढ़ जानेकी सम्भावना है। बड़ी-बड़ी योजनाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित योजनाएँ हैं। :—

शारदा कोनाल हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट, मुहम्मद पुर पावर स्टेशन, हरदुआगंज एक्सटेंशन प्रोजेक्ट, रिहन्द डैम स्कीम, यमुना पावर स्कीम, पथरी पावर स्टेशन, एक्सटेंशन आफ सोहावल पावर स्टेशन, बेतवा पावर प्रोजेक्ट, गोरखपुर स्टेट ट्यूब वेल इलेक्ट्रिफिकेशन स्कीम।

केवल रिहन्द डैम स्कीम में ही २६ करोड़ रुपये लग जाने की आशा है।

ट्यूब वेल

कुल मिला कर प्रान्त में ४८० लाख एकड़ खेती योग्य भूमि है। २६० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधाएं अब भी देनी हैं। नए ट्यूब वेलों की योजनाओं के अधीन चालू आर्थिक वर्ष समाप्त होने के पूर्व ही ५०० ट्यूब वेलों से काम लिया जा सकेगा। इनसे २,४०,००० एकड़ भूमि में सिंचाई होगी जिससे कृषि उत्पादन में ५४,००० टन की वृद्धि होगी। ५०० और ट्यूब वेलों के लगाने का भी प्रस्ताव है।

उद्योग

देश भर में तयार होने वाली शकर की आधे से भी अधिक मात्रा संयुक्त प्रान्त ही में तैयार होती है। अन्य बहुत सी योजनाएं भी कार्यान्वित होने को हैं। यह आशा की जाती है कि आगामी आर्थिक वर्ष तक चीपरी में सीमेन्ट फैक्ट्री काम करने लगेगी। नकली रेशम बनाने की योजना लगभग तैयार हो चुकी है। स्विस विशेषज्ञों का एक दल बारीक काम की मशीनें, जैसे रेडियो, विज्ञान के आपरेटस आदि बनाने के लिए नियुक्त किया गया है। तराई में १५० से भी अधिक पक्के मकान बसने वालों के लिये तैयार हो चुके हैं

गंगा खादर और तराई के अतिरिक्त घाघरा खादर में भी २०,००० एकड़ भूमि में कार्य हो रहा है जिस में से १५,००० एकड़ में तो खेती हो भी सकती है।

पूर्वगामी वर्ष में २८,००० एकड़ बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। आशा की जाती है कि १९४९ की खरीफ की फसल के लिए ४०,००० एकड़ बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया जायगा। इसमें नैनीताल तराई और बुन्देलखण्ड क्षेत्रों की २०,००० एकड़ भूमि, नैनीताल जिले के काशीपुर ब्लाक की १०,००० एकड़ भूमि, मुजफ्फर नगर घाघर कैनाल क्षेत्र की १,५०० एकड़ भूमि, जालौन जिले की ३,००० एकड़ कांस वाली भूमि, हमीरपुर जिले की भी १,५०० एकड़ वैसी ही भूमि तथा बाराबंकी जिले से हटकर घाघरा खादर की ५,००० एकड़ भूमि शामिल है।

साधारण सत्वर जनता का उपकार करें। नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक सभा, बिरलाट्रस्ट प्रकाशन विभाग, आदि २ संस्थाओं से भी अनुरोध है कि वह अपनी पुस्तकों को प्रतियां भेजकर इस सार्वजनिक पुस्तकालय को सुसम्पन्न बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें। पर्वतंर ज हिमालय के अन्य अनेक स्थानों पर भी इसी प्रकार सार्वजनिक आयोजन करने का संकल्प है कि जिससे पार्वतीय प्रदेशों के निवासियों का कल्याण साधन हो सके। वह भी स्वतन्त्र भारत राष्ट्र के उपयोगी नागरिक हैं, यह अनुभव कर सकें।

* * *

सिंचाई

सरकारी नहरों और ट्यूब वैल द्वारा जिस क्षेत्र में सिंचाई हुई वह १९४५-४६ में ५२ लाख से बढ़कर इस समय ५७ लाख हो गया है। आगामी सात वर्षों में सरकारी साधनों द्वारा १० लाख एकड़ में सिंचाई होने की सम्भावना है। ५६,००० एकड़ भूमि में जूट की खेती की जा रही है और १९४९-५० में इस क्षेत्र में १०,००० एकड़ भूमि की वृद्धि और कर दी जायगी।

सहकारिता

चालू वर्ष में सहकारी समितियों की संख्या १९४६ ई. की २१,८७५ से बढ़कर ३४,२९५ हो गई।

सड़कें

प्रान्त को १४,००० मील राष्ट्रीय प्रान्तीय सड़कों तथा पक्की जिला सड़कों की तथा ३८,००० मील जिला और गांव सड़कों की आवश्यकता है। सरकारी सड़कों के प्रोग्राम में लगभग ६५,००० मील नई पक्की सड़कों का निर्माण, लगभग १९,००० मील कच्चा सड़कों तथा ३,००० मील पक्की सड़कों का सुधार ३,००० मील लम्बी सीमेन्ट कांक्रीट ट्रे कवेज तथा १,००० मील वर्तमान स्थानीय पक्की सड़कों का पुनर्निर्माण भी शामिल है। १९४८ के मध्य तक जिला बोर्ड को १,७५७ मील लम्बी सड़कों का पुनर्निर्माण किया गया और ७३८ मील लम्बी नई पक्की सड़कें, २,६६१ मील लम्बी नई कच्ची सड़कें तथा १२८ मील लम्बी सीमेन्ट कांक्रीट ट्रे किया गया।

यातायात

रोडवेज की व्यवस्था बहुत से प्रदेशों में १९४७ के अन्त में चालू की गई थी और १९४८ में प्रान्त के ९ यातायात प्रदेशों में से ८ में काम चालू किया गया। इस समय चलने वाली सरकारी बसों की संख्या ६२० है। आशा है कि १९४९—५० में बसों की यह संख्या १,५०० तक पहुँच जायगी।

शिक्षा

प्रान्त में ५ वर्षों में २२,००० स्कूल खोलने का विचार है। ६७० स्कूल तो खोले जा चुके हैं और १९४९—५० में ४,४०० स्कूल और खोले जायंगे। ८७ म्युनिसिपल नगरों में से ८६ में प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य करदी गई है। ११ नगरों में ग्यारहवीं कक्षा ... ६९०० से भी अधिक विद्यार्थी सैनिक शिक्षा पा रहे हैं। भारत सरकार की नैशनल कैडेट कोर स्कीम ८ केन्द्रों में कार्य कर रही है जिसमें सीनियर डिवीजन की १६ कम्पनियां और जूनियर डिवीजन के २४ ग्रूप काम कर रहे हैं।

चिकित्सा तथा जन स्वास्थ्य

ग्रामीण क्षेत्रों में १०० ऐलोपैथिक, १२२ आयुर्वेदिक और यूनानी तथा २०० मैटर्निटि सेन्टर खोले गए हैं। सरकार १९४९—५० में प्रान्तीय कुष्ठ योजना पर कार्य करने का इरादा कर रही है। इस योजना में प्रान्त को क्षेत्रों में विभाजित करने का भी विधान है। १९४७ से १९४९ तक प्रान्त के ११ जिलों में मद्यनिषेध योजना की गई।

पुरुषार्थी

इस समय प्रान्त में कुल पांच लाख शरणार्थी हैं। ४० केन्द्रों में उपयोगी व्यवसायों के लिए बहुत से पुरुषार्थियों को ट्रेनिंग दी जा रही है। ३००० दूकान तथा ४,००० दूकान सहित मकान बनकर लगभग तैयार हो चुके हैं और १९४८—५० ६,००० क्वार्टरों के निर्माण की भी योजना है।

राजनैतिक पीड़ित

पैप्सबाइजर सरकार द्वारा ३५ लाख रुपए का सामूहिक जुर्माना किया गया था वह अधिकतर वापस कर दिया गया है।

राजनीतिक पीड़ितों को मुआविजे और पेंशनें देने में साढ़े बारह लाख रुपए खर्च किए गए। १९४८ में दिसम्बर तक १० लाख रुपए खर्च किए गए। इस वर्ष इस उद्देश्य के लिए १३ लाख रुपए दिए गए।

हरिजन तथा अन्य पिछड़ी हुई जातियां

इस उद्देश्य के लिए १९४९—५० में २१ लाख रुपए दिए गए हैं। हरिजन तथा अन्य पिछड़ी हुई जातियों की शिक्षा तथा सुधार के अन्य साधनों को कार्यान्वित करने के लिए १९४५—४६ का ६,७ लाख रुपए का अनुदान चालू वर्ष में बढ़ा कर २१.५ लाख कर दिया गया।

पुलिस तथा प्रान्तीय रक्षा दल

प्रान्तीय आर्म्ड कांस्टैबुलरी की १९४७ में कम्पनियों की संख्या ३६ से बढ़ा कर १९४८ में ११८ कर दी गई। दिल्ली हैदराबाद और टेहरी रियासत में कुछ कम्पनियां नियुक्त की गई। प्रान्तीय रक्षा दल के लिये प्रस्ताव किया जाता है कि १२ लाख व्यक्तियों का एक दल बनाया जायगा। ६ लाख तो भरती भी हो चुके हैं। १८,००० आर्गनाइजरों तथा इन्स्ट्रक्टरों को ट्रेनिंग मिल चुकी है। चार जिलों में महिलाओं की प्लैटूनें तथा कम्पनियां भी बनाई गई हैं।

* * *

पंजाब में मातृ भाषा की समस्या

महाराजा रणजीत सिंह के राज्य काल में भी पंजाबी राज भाषा न थी

सिखों के दशवें गुरु ने अपनी वाणी हिन्दी में लिखी

हिन्दी का विरोध अज्ञानता पर आश्रित है या शरारत पर।

[श्री डा० गोकुल चन्द नारंग]

इस सिद्धान्त पर बहुत बल दिया जाता है कि बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृ भाषा में होनी चाहिये। किसी को भी इस पर आपत्ति नहीं हो सकती। जो व्यक्ति भाषा और लिपि के स्वतन्त्र चुनाव पर बल देते हैं वे इतने मूर्ख नहीं कि वे अपने बच्चों को विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा दिये जाने को अब भी पसन्द करें। जो माता पिता अपने बच्चों के लिए हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का चुनाव करेंगे वे इस लिए नहीं कि वे गुरुमुखी को हानि पहुंचाना चाहते हैं या किसी जाति से उन्हें द्वेष है। उनका चुनाव तो इस आधार पर होगा कि कल सारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी होने वाली है इस लिए क्यों न उनके बच्चे उसी भाषा को आरम्भ से ही अपनाएं। यदि वे ऐसा नहीं करते तो निस्सन्देह वे अपने बच्चों को शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में देश के दूसरे भागों के बच्चों से पिछड़ने का साधन जान बूझ कर जुटाते हैं।

परन्तु केवल यही एक कारण नहीं है जिस के आधार पर गुरुमुखी की अपेक्षा हिन्दी को महत्व दिया जाना अभीष्ट है। एक कटु सत्य जिसे भुला दिया जाता है यह है कि पूर्वी पंजाब की भाषा हिन्दी से इतनी भिन्न नहीं है जितनी कि तामिल, तेलगु बंगाली, मराठी या गुजराती। शब्द रचना की दृष्टि से वह हिन्दी से अधिक भिन्न नहीं है। अन्तर है तो केवल इतना कि गुरुमुखी इतनी सुधरी हुई नहीं जितनी कि हिन्दी। कोई पंजाबी यहां तक कि छोटी आयु का एक बच्चा भी ऐसा नहीं मिलेगा जो कि सरल हिन्दी को न समझ सके। सभी सार्वजनिक भाषण—वे धार्मिक हों या राजनीतिक, हिन्दी में किए जाते या हिन्दुस्तानी में। हजारों पंजाबी उन्हें सुनते हैं और किसी को कभी यह शिकायत नहीं हुई कि उनकी समझ में नहीं आते।

इसका स्पष्टीकरण दूर नहीं। गत १०० वर्षों से शिक्षा का माध्यम तथा अदालती भाषा पंजाब में उर्दू रही है। उर्दू या हिन्दुस्तानी, जैसा कि कई इसे इस नाम से याद करते हैं, हिन्दी के सिवा और कुछ नहीं। केवल अन्तर है तो यह कि उस में फारसी तथा अरबी शब्दों की अधिकता है। यह निश्चित है कि सभी पंजाबी हिन्दी समझते हैं। यदि अरबी फारसी तथा संस्कृत के शब्दों को उस में अधिकता न हो। संयुक्त पंजाब के हिन्दुओं को विदेशी लिपि में पढ़ाये जाने पर आपत्ति थी। अब जब कि हम इस स्थिति में अपने आप को पाते हैं कि उस विदेशी लिपि को बदल सकें तो क्यों न हम हिन्दी को, कि जिसे हम गत सौ वर्षों से पढ़ते आ रहे हैं, उसकी अपनी लिपि और शुद्ध रूप में अपनाएं और और समय के साथ २ चलें? रहा लिपि का प्रश्न सो क्यों न हम उस लिपि को अपनाएँ जिसे शेष सारा देश अपनाने जा रहा है। इससे भिन्न मार्ग को अपनाना देश-द्रोह होगा। यदि साम्प्रदायिकता के संकुचित भावों से प्रभावित हुये बिना निश्चय किया जाना होता तो निस्सन्देह प्रत्येक पंजाबी सर्व सम्मति से हिन्दी को उसके बिगड़े हुए रूप में, (जिसे पंजाबी कहा जाता है) अपनाने के बजाय उसके शुद्ध और सुधरे हुए रूप में अपनाने को उद्यत होता। ऐसा करके मातृ भाषा के प्रति कोई अन्याय न होता। यह अब भी मातृ भाषा ही होगी—केवल अधिक सुधरे हुए रूप में। ऐसा करके हम खालसा पंथ के जन्मदाता के ही चरण चिन्हों पर चलेंगे जिन्होंने कहीं २ कुछ पदों को छोड़ शेष सारा ग्रन्थ हिन्दी में प्रस्तुत किया। सिखों के दशवें गुरु ने अपनी सारी वाणी हिन्दी में लिखी। निस्सन्देह उनके सारे उपदेश अपने शिष्यों के लिए ही थे—जो कि सब के सब पंजाबी थे विशेषतः माझा और मालवा जिलों के। किसी को भी दसवें गुरु महाराज पर पंजाबी के प्रति द्वेष की भावना का आरोप लगाने का साहस नहीं हो सकता।

वास्तव में झगड़ा केवल लिपि का

लम्बाई और तम्बाकू

किसी देश के निवासी अधिक लम्बे होते हैं तो किसी के नाटे। और किसी के मोटे होते हैं तो किसी के पतले। कहीं के मनुष्यों की नाक चपटी होती है तो किसी देश के निवासियों की खोपड़ी खराब होती है। परन्तु विधाता ने भारत के मनुष्यों को उपरोक्त दोषों से दूर रक्खा है। यहाँ के मनुष्य सुडौल होते हैं। न अधिक लम्बे, न अधिक नाटे। यहाँ मनुष्यों को ही क्या कहा जाये यहां की प्रत्येक वस्तु इसी प्रकार की है। इस लिये स्वतन्त्र भारत के सिपाही अपने खान पान के दायित्व को समझें। भारत का निरामिष भोजन ही भारतीयों के लिये लाभकारी है जो विविध पानों से दूर हो। इसी में भारत की भारतीयता है, नहीं तो पाश्चात्यों का अनुकरण ही है। प्रकृति ने भारत को श्रेष्ठता प्रदान की है। इसलिये भारत सब देशों का गुरु रहा। और आज भी यदि हमारे देशवासी महत्व को समझेंगे तो उसको प्राप्त करने के लिये जुट जायेंगे। इसी में सबका कल्याण है, और भारत माता का कल्याण है। इसलिये हमारा उत्तरदायित्व बढ़ गया है जिसको हम प्राणपण से

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(लेखक—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल [illegible])

([illegible] से आगे)

निभायें। नहीं तो संसार की दृष्टि में हलके हो जायेंगे।

आतिथ्य और तम्बाकू

आजकल तम्बाकू आतिथ्य सत्कार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु समझा जाता है। परन्तु भोले मानव यह नहीं समझते कि हम अतिथियों को भी विष का पान करा रहे हैं। प्राचीन काल में पूज्य जनों के सत्कार के लिये निम्न वस्तु लिखी हैं—आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। मधुपर्काचमनं स्नानं वसनाभरणानि च, गन्ध पुष्पे धूपदीपौ नैवेद्य वन्दनं तथा।

सत्कार पूर्वक बैठने के लिये आसन देना, कुशल पूछना, पग धोने के लिये जल देना, मधुपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभरण, गन्ध और फूल, धूप और भोजन, नमस्कार यह सत्कार के लिये अपेक्षित थे। इनमें धूम्र पान का उल्लेख नहीं है। इसलिये अतिथि सत्कार में तम्बाकू का प्रयोग बन्द कर देना चाहिये।

तम्बाकू और पुराण

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में तम्बाकू का वर्णन कहीं भी नहीं मिलता। क्योंकि पहिले तम्बाकू हमारे यहां था ही नहीं। पुराण नवीन हैं पुराणों में तम्बाकू का वर्णन मिलता है। अब पुराण में तम्बाकू को तमाल कहा गया है और भारी निन्दा की गई है।
प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्वे वर्णाश्रमेऽन्तरा। तमालं भक्षितं येन स गच्छेन्नरकार्णवे॥

घोर कलियुग के प्राप्त हो जाने पर सब वर्ण और आश्रमों के बीच जिसने तम्बाकू का सेवन किया है वह नरक के समुद्र में जायेगा।

इतना ही नहीं और भी लिखा है—
धूम्रपानरत विप्र दानं कृत्वा तु यो नरः। दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणो ग्राम सूकरः।

धूम्रपान में रत ब्राह्मण को जो व्यक्ति दान देता है वह सीधा नरक को जाता है और दान लेने वाला ब्राह्मण देवता भी नहीं बचा वह ग्राम का सूअर बनता है जो शौच खाता है। पुराणों में श्रद्धा रखने वाले पाठक वृन्द तत्काल तम्बाकू का सेवन तत्क्षण बन्द कर दें। नहीं तो नरक दुःख भोगना पड़ेगा। जिससे प्रत्येक व्यक्ति बचना चाहता है। साथ ही सूअर बनने से भी बचना चाहिये।

वास्तव में तम्बाकू का सेवन करने वाला व्यक्ति नरक की काल कोठरी में ही वास करता है। यही तो नरक है जहाँ वह वास करता है।

तम्बाकू और बालक

बालकों में तम्बाकू का प्रयोग विद्युत की गति के समान बड़े वेग से बढ़ता जा रहा है। जिन बालकों के पिता, चाचा, दादा आदि पूर्वज तम्बाकू का सेवन नहीं करते उनके बालक भले ही तम्बाकू से बच जायें। यद्यपि स्कूलादि स्थानों में अन्य लड़कों के सम्पर्क से उनका पीना भी सम्भव है। परन्तु जिनके पिता आदि तम्बाकू का सेवन करते हैं उनके बालकों का तम्बाकू से बचना कठिन ही नहीं कठिनतर और कठिनतम है। क्योंकि बालक अपने माता पिता का अनुकरण अवश्य करता है। यही कारण है कि हुक्का पीते हुए अपने पिता को देख कर बालक भी उसी प्रकार दम लगाता है। अपने सामने निषेध करे तो पीछे अवश्य दम लगाता है। और जो पिता अपने बच्चे से चिलम भरवा कर पीते हैं वह तो अपने बालकों को आरम्भ में ही हुक्के का सेवन सिखा देते हैं।

समझदार व्यक्ति भली प्रकार समझते हैं कि किसी वस्तु का कारण बिना बतलाये निषेध करना उसकी प्रवृत्ति को बढ़ाना ही है। हुक्का, सिग्रेट और बीड़ी पीने वाले व्यक्ति जब अपनी सन्तान को हुक्का सिग्रेट और बीड़ी पीने का निषेध करते हैं तो सहसा ही समझदार बालक के मन में यह भाव आता है कि यह क्यों पीते हैं? यदि यह कहा जावे कि तम्बाकू हानिकर है तो बालक यह सोचते हैं कि तम्बाकू हानिकर है तो प्रत्येक के लिये ही हानिकर होना चाहिये। हमें क्यों रोका जाता है? हमारे लिये व्यर्थ का बहकावा है। इस लिये समय पा कर कहा दम लगाते हैं। इतना ही नहीं बालक पतली खोखली सी लकड़ी को उठा कर उसके एक सिरे को जला कर दूसरी ओर से पीते हैं और धुआं निकालते है। बालक को तम्बाकू के हलाहल विष से बचाने का एकमात्र उपाय यही है कि अपने आप तम्बाकू का सेवन बन्द कर दें।

अपनी सन्तान को अच्छा और बुरा बनाना सर्व प्रथम माता और पिता के ही आधीन है। क्योंकि "मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद" के अनुसार श्रेष्ठ माता पिता और आचार्य वाला बालक ही श्रेष्ठ बनता है। बालक का सर्व प्रथम गुरु माता है। ज्यों ज्यों बढ़ता जाता है पिता का उत्तरदायित्व बढ़ता जाता है। और जब पाँच वर्ष से ऊपर हो जाता है आचार्य के आधीन कर देने का समय आता है।

वास्तव में बालक की प्रवृत्ति अनुकरण परक होती है। इसलिये बालक अनुकरण करता है। अच्छे बुरे का विवेक करने वाली बुद्धि बालक में नहीं होती है।

वह बुद्धि कुछ बड़ा हो जाने पर, आचार्य कुल में आती है। जब आचार्य कहता है "यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नेतराणि" परन्तु इतने पर भी बालक अनुकरण कर अपना अनुभव करने का प्रयत्न करता है। इसलिये जब माता पिता आचार्य ही मादक द्रव्यों से बचें तभी बालकों से भी बचे रहने की कुछ आशा की जा सकती है। इसलिये अपना न सही अपनी सन्तान के हित को दृष्टि में रखते हुए तत्काल हुक्का बन्द कर देना चाहिए और कभी दृष्टि रखनी

ही है। कभी किसी ने यह मांग नहीं की कि जो गुरुमुखी लिपि को अपनाना चाहते हैं उन्हें इसकी आज्ञा न हो। कोई भी उन्हें देवनागरी पढ़ने पर विवश नहीं करता। वे जो देवनागरी को पसन्द नहीं करते, इसे बेशक न अपनाएँ। परन्तु उनको जो अपने बच्चों को देवनागरी लिपि में शिक्षा देना चाहते हैं, हिन्दी छोड़ कर गुरुमुखी को ही अपनाने पर विवश क्यों किया जाए।

क्यों नहीं लिपि के सम्बन्ध में आत्म निर्णय के सिद्धान्त को लागू किया जाता? किसी को दूसरों के बाल बच्चों का उनके माता पिता से अधिक हितचिन्तक होने का ढोंग रचाने की ढील क्यों दी जाय। चुनाव का सिद्धान्त किसी भी पक्ष के लिए अन्यायकारी नहीं है। यह सर्व सम्मत बात है कि जो लिपि बच्चा अपने प्रारम्भिक जीवन में अपनाता है—सारी आयु वह उसे प्रिय रहती है और वह उस लिपि में अधिक प्रवीण हो जाता है। दूसरी लिपि में उतनी (Proficiency) प्राप्त करने के लिए कई वर्षों के निरन्तर अभ्यास की जरूरत है।

भाषा के आधार पर दो भाग—

जो व्यक्ति पूर्वी पंजाब को भाषा के आधार पर दो भागों में विभक्त करने पर बल देते हैं वे भूलते हैं कि कोई नया विभाजन पंजाब के पहले विभाजन जैसे परिणाम पैदा कर देगा। इसके अतिरिक्त यह दोनों भागों में उन लोगों से अन्याय करेगा जो उस भाग की भाषा को अपनाना नहीं चाहते—क्योंकि पंजाबी वाले भाग में पंजाबी न बोलने वाले भी पर्याप्त संख्या देश के विभाजन के कारण बसने पर विवश हो गये हैं।

देवनागरी लिपि—

मुझे देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में केवल यह कहना है कि गुरुमुखी के पक्षपातियों की यह धारणा निराधार है कि पंजाबी के लिए देवनागरी लिपि उपयुक्त नहीं है। यह धारणा अज्ञानता अथवा शरारत पर आधारित है। अज्ञानियों और शरारतियों के सिवाय संसार के सभी भाषा विशेषज्ञ यह मानते हैं कि देवनागरी लिपि संसार भर में सब से अधिक प्राकृतिक वैज्ञानिक और सम्पूर्ण लिपि है। पंजाबी की कोई ऐसी ध्वनि नहीं है जो देवनागरी लिपि में लिखी न जा सके।

हां आर्थिक कठिनाई का प्रश्न उठ सकता है परन्तु केवल ५ प्र० अधिक व्यय होगा। यह व्यय उस झगड़े के मुकाबले में जो भाषा के प्रश्न पर उठ सकते हैं कोई महत्व नहीं रखता। हमें यह अतिरिक्त व्यय प्रसन्नता पूर्वक सहन करना चाहिए।

पूर्वी पंजाब यूनिवर्सिटी ने अपना निर्णय दे दिया है। यदि सरकार अपने तौर पर निश्चय न कर सके तो जनता की ही राय ले ले। ('प्रकाश' से)

चाहिए कि अपने बालक तम्बाकू सेवन के व्यसन में न फंस जावे। इससे सर्वथा बचे रहें। इस आरम्भिक शिक्षा का माता पिता पर ही दायित्व है। इसके लिये माता पिता को भारी त्याग करना पड़ता है। तभी कहीं सुधार का तन्तु देखने को मिल सकेगा, पर पहिले अपने को उस दोष से मुक्त करना होगा।

एक व्यक्ति जिसकी आयु ४६ वर्ष हो चुकी थी उसके चार लड़के थे। दो लड़के तम्बाकू के व्यसन से बराबर नकार करने पर भी न बच सके। छोटे दो लड़कों को वह बचाना चाहते थे। उन छोटे छोटे लड़कों में से एक लड़का और उन दोनों तम्बाकू पीने वालों में से एक लड़का अपने पिता सहित एक बारात में गये। बरात में हुक्का बज रहा था सब को पीता हुआ देख उस न पीने वाले लड़के ने भी एक दम लगाया। पिता ने निषेध किया तो वह रुक गया परन्तु उस पीने वाले लड़के ने कहा कि पिता जी आप क्यों पीते है? इस सामयिक कथन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस ४६ वर्षीय व्यक्ति ने हुक्का पीना छोड़ दिया। उस को आरम्भ में पांच चार दिन तक कष्ट भी हुआ परन्तु उस ने साहस को नहीं छोड़ा। हुक्के को नहीं पिया। परिणाम यह हुआ कि वह पहिले से अपने को अधिक स्वस्थ अनुभव करने लगा। सहसा ही हुक्के के त्याग का पीने वाले दोनों युवक बालकों पर भारी प्रभाव पड़ा और उन्होंने भी हुक्का पीना छोड़ दिया। अब उस परिवार से हुक्के की प्रथा सदा के लिये उठ गयी वह परिवार आर्य बन गया। उनके यहाँ किसी प्रकार की किसी भी नशीली वस्तु का सेवन नहीं होता। क्या हमारे वृद्ध पुरुष जो अपने परिवार की समृद्धि और सम्पन्नता के स्वप्न देखना चाहते हैं इसका अनुकरण करेंगे। प्रभु वह दिन शीघ्र लावे कि सात समुद्र पार से आया यह तम्बाकू सात समुद्र पार ही क्या द्वितीय लोक से भी उठ जावे। इसका नाम आज भी न रहे। क्यों कि यह मानव के सेवन की वस्तु नहीं है। अभी पीछे ७ जून के दीपक साप्ताहिक समाचार पत्र में निकला था कि एक भैंस पाव भर तम्बाकू खा लेने से मर गयी।

यद्यपि स्कूलों और कालेजों में मास्टर और प्रोफेसर प्रायः तम्बाकू का सेवन करते हैं। परन्तु स्कूल और कालेजों में भी भगवान की दया से कोई कोई अध्यापक बड़े ही अच्छे आ जाते हैं। उन्हें विद्यार्थियों का ध्यान रहता है। वह सुधारात्मक दृष्टि से काम करते हैं। एक ऐसे ही सुधारप्रिय अध्यापक ने एक विद्यार्थी को सिग्रेट पीते हुए देख लिया। अध्यापक को यह देखकर भारी दुःख हुआ। उसने लड़के को बुलाकर समझाया। लड़का नटखट था पर्याप्त प्रयत्न करने के उपरान्त भी उसने सिग्रेट पीना नहीं छोड़ा। नित्य प्रति पीता ही रहा। और पहिले की अपेक्षा अधिक पीने लगा। पहिले छिप कर पीता था तो उसने सब के समक्ष पीने में भी हिचकिचाहट नहीं की। बात बढ़ गयी। अध्यापक से न रहा गया। वह उसके पिता के पास पहुँचे और कहा श्रीमान् जी आप का लड़का सिग्रेट पीता है। यह एक ऐसी बुरी वस्तु है कि इससे प्रत्येक को बचना चाहिये। परन्तु लड़के के पिता ने उत्तर दिया आप तो मास्टर हैं। आप का रहन सहन ही इस प्रकार का है कि आप तम्बाकू से बच सकते हैं। मेरी तो इस हुक्के के बदौलत ही नम्बरदारी स्थिर है। चार आदमी मेरे पास आकर इसी के कारण बैठते हैं। चार आदमी ही क्या प्रात सायं प्रति दिन इसी के कारण यह जमघट देखने को मिलता है। मुझ से जितना हो सकता है चिलम भर कर भरवा कर इन की सेवा करता हूँ। चार आदमियों में इसी के कारण मेरा आदर होता है। अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ। यदि बालक तम्बाकू सेवन से बच गया तो घर पर आने वालों को कौन सेवा करेगा। बाप दादा से आई नम्बरदारी उठ जायेगी। कहीं का भी न रहूगा। इसलिये क्षमा चाहता हूँ आप सिग्रेट छुड़ाने का प्रयत्न न करें, आप भी पीने के लिये प्रेरणा करें तो बड़ी कृपा होगी। और नम्बरदार जो व्यक्ति हुक्का नहीं पीते क्या वह आदरणीय नहीं बनते? क्या वह आतिथ्य सत्कार नहीं करते? अध्यापक ने कहा।

मास्टर जी! हुक्का ही बिरादरी की नाक है जिसका हुक्का बन्द उसे बिरादरी और गाँव से पृथक् समझना चाहिये। लड़के के पिता ने कहा।

इस पर अध्यापक ने हंसकर कहा कि जो हुक्का नहीं पीते क्या उनकी बिरादरी सभा और सोसाइटी ही नहीं है? जब ऐसे ही पिता हों जो जान बूझ कर ही पिलाना चाहें तो पाठक स्वयं विचार करें कि कैसे काम चल सकता है? देश के नवयुवक कैसे इस हलाहल विष से बच सकते हैं।

क्रमशः

आत्म विसर्जन

(श्रा विराज)

बेल्जियम के एक कालिज में दो भाई पादरी बनने की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। बड़े भाई का विचार प्रचारक बन कर दक्षिण के द्वीपों में जाने का था। जब कभी वह समुद्र पार अपने धर्म के प्रचार और पीड़ितों की सेवा के लिये जाने की बातें करने लगता तो उसकी आँखें एक अद्भुत आभा से चमकने लगतीं और वह उत्साह से अपनी हथेलियाँ मलने लगता।

परन्तु उसके स्वप्न पूरे न हुए। वह बीमार पड़ गया। ज्वर ने उसे जर्जर कर दिया। निराशा और उदासी से वह पीला पड़ गया। एक दिन अचानक ही उसका छोटा भाई उसके बिस्तर पर आकर बैठा और बोला, 'यदि तुम्हारी जगह मैं दक्षिण के द्वीपों में प्रचार के लिये जाऊँ, तो तुम्हें सन्तोष होगा?"

बड़ा भाई 'हाँ' या 'न' कुछ भी नहीं कह सका, पर उसके रोग से मुरझाये हुए होंठों पर हलकी सी मुस्कराहट खेल गई। क्षण भर के लिये उसकी धुँधली आँखें चमक उठीं। उसने असीम स्नेह के साथ छोटे भाई का हाथ अपने हाथ में लेकर दबा लिया।

उसी दिन जोसेफ डैमियन ने कालिज के अधिकारियों के सामने दक्षिण के द्वीपों में प्रचारार्थ जाने के लिये प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर दिया।

एक दिन वह पुस्तक लेकर पढ़ने बैठा था। उसी समय कालिज के अधिकारी ने आकर उसे बताया कि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई है। डैमियन हार्दिक आनद से उन्मत्त हो उठा और हर्ष के आवेग को न सँभाल सकने के कारण कमरे में से निकल कर खेल के मैदान में टहलने चला गया।

'इसका दिमाग कुछ खराब तो नहीं है?' दूसरे विद्यार्थियों ने आपस में कहा।

बात भी ऐसी ही थी। अपने घर द्वार, माता पिता, सगे सम्बन्धी और इष्ट मित्रों को छोड़ कर जहाँ की भाषा, रीति रिवाज और रहन सहन से वह बिलकुल अपरिचित था, ऐसे किसी सुदूर अज्ञात अदृष्ट देश में जाकर असभ्य, अशिक्षित विदेशियों के बीच में जाकर जीवन बिताने को उत्सुक होना कुछ दिमाग खराब होने का सा ही चिन्ह दिखता है। हमारे इस संसार में जब कोई व्यक्ति सर्वथा इस छुरे की धार के समान तीक्ष्ण बलिपथ पर चल निकलता है, तब समझदार लोग 'पागल हो गया है' कह कर उसकी ओर दया दृष्टि से देखने लगते हैं, इससे बढ़ कर खेद और करुणा की बात कोई नहीं है।

यौवन से नारी का रूप निखर उठता है, यह सत्य है। परन्तु कभी किसी किशोर का भी रूप देखा है? गौर विशाल मस्तक हो, पीछे की ओर मुड़े हुए केश हों, सपनों और उमगों से भरे हुए नेत्र हों, ओजस्वी मुख मंडल से उत्साह फूटा पड़ रहा हो, छाती के नीचे समस्त संकटों की अवहेलना करने वाला निर्भीक साहसपूर्ण हृदय हो, यह कोई असाधारण लोकोत्तर वस्तु नहीं है। फिर भी ऐसा किशोर रूप कहीं कहीं ही दीख पड़ता है, और जहाँ वह दीख पड़ता है, वहाँ सौ सौ सुन्दरियाँ आत्म निवेदन को उत्सुक हो उठती हैं!

पर ऐसा अनिंद्य सुन्दर रूप भी जोसेफ डैमियन के किसी काम न आया। उसने उठती जवानी में ही संसार को त्याग दिया। माता पिता, स्नेही बन्धु बान्धव और सांसारिक प्रलोभनों की अपेक्षा उसने एक लोक विस्मृत प्रचारक बन कर लोक सेवा का व्रत ले लेना ही अधिक पसन्द किया।

नवयौवन के उत्साह से भरा हुआ तपस्वी डैमियन दक्षिणी समुद्रों को पार करके दक्षिण द्वीपों में पहुंचा और तेतीस वर्ष की आयु तक निरालस्य भाव से धर्मप्रचार और सेवा का कार्य करता रहा।

एक दिन उसने बिशप को कहते सुना, मोलोकाई में पीड़ित और परित्यक्त कोढ़ियों की सेवा के लिये किसी को भेजना चाहता हूँ, पर कोई जाने को तैयार नहीं होता। उनसे अधिक दुखी और उनसे अधिक उपेक्षित संसार में कोई नहीं है।'

कोढ़ियों की दुःख गाथा सुन कर पादरी डैमियन का हृदय रो उठा और उसने बिशप से मोलोकाई जाने की अनुमति माँगी। बिशप ने डैमियन के स्वस्थ और सुन्दर देह की ओर देखा और अपनी आँखों के आँसुओं को संभालते हुए अनुमति दे दी। आखिर वे भी तो मनुष्य हैं, जो इस महाभयंकर व्याधि से पीड़ा पा रहे हैं। सबसे अधिक तिरस्कृत और उपेक्षित होने के कारण सेवा की सबसे अधिक आवश्यकता तो

उन्हीं को है। अशिक्षित और असंस्कृत लोगों की सेवा का कार्य छोड़कर पादरी डेमियन ने तिरस्कृत और उपेक्षित कोढ़ियों की सेवा का कार्य अपनाया।

कोढ़ से अधिक घृणित बीमारी संसार में और कोई नहीं है। जिसे एक बार वह हो जाय, वह कभी ठीक नहीं हो सकता। उनके अंग प्रत्यंग धीरे धीरे गल-गल कर गिरने लगते हैं। नाक गल जाती है, ओठ गल जाते हैं, उँगलियाँ गल जाती हैं। इतना ही नहीं, यह फैलने वाली बीमारी है। यदि दस कोढ़ियों के साथ दस स्वस्थ मनुष्य रहने लगें, तो शीघ्र या विलम्ब से उन सबको भी कोढ़ हो अवश्य हो जायगा। इस लिये गाँव या शहर के लोग कोढ़ियों को गाँवों या शहरों में नहीं आने देते थे। कोढ़ी लोग अलग इकट्ठे रहते थे। वे पशुओं से भी गन्दा जीवन व्यतीत करते थे। उनके शरीर घृणित घावों से भरे और आत्माएं पाप से दबी हुई थीं। जोसेफ डेमियन ने स्वेच्छा से इन सबकी सेवा का महान व्रत स्वीकार किया।

जोसेफ डेमियन ने इन लोगों में पहुंच कर उन्हें बताया कि परमात्मा तुम्हें भूला नहीं है। वह अब भी तुम्हें भूला नहीं है प्यार करता है।' उसकी आँखों, उसकी मधुर हँसी, और उसकी प्यारभरी आवाज को देख कर और सुन कर कोढ़ियों को सचमुच विश्वास हो गया कि परमात्मा उन्हें प्यार करता है। उन्होंने अपने जीवन सुधारने प्रारम्भ किये। अपने पापों पर उन्हें लज्जा और पश्चात्ताप होने लगा। पशु से वे मनुष्य बने और डेमियन के मुख की ओर देख कर और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए वे परमेश्वर के सच्चे पुत्र बनने का प्रयत्न करने लगे।

ईश्वर उन्हें प्रेम करता था या नहीं, यह बात किसी दिन असंदिग्ध रूप से जानी नहीं जा सकी। पर इतनी बात निश्चित थी कि जोसेफ डेमियन उन्हें सचमुच प्यार करता था।

सोलह साल तक वह अद्वितीय, लोकोत्तर आभा वाली दीपशिखा निरन्तर जलती रही। इसके प्रकाश में कितने ही पतित पावन बन गये, पशु पुरुषोत्तम बन गये। डेमियन ने नरक को स्वर्ग बना दिया।

उसने कोढ़ियों के लिये प्रार्थना मन्दिर, निवास भवन, अस्पताल और पुस्तकालय बनवा दिये। वह स्वयं अपने हाथों से कोढ़ियों के भयंकर घावों की मरहम पट्टी करता था; मरते समय उन्हें सान्त्वना देता था और उनके लिये कब्रें खोदता था।

बाहर की दुनियाँ के लोग उसका वृत्तान्त सुनते थे और आश्चर्य से अवाक् रह जाते थे। बड़े २ नेता उसके पास प्रशंसा के पत्र भेजते थे, अनेक वस्तुओं के पार्सल उसके रोगियों के लिये भेजते थे। बहुत से लोग उसके दर्शन करने और कुछ सहायता करने भी आते थे।

इसी प्रकार सोलह साल तक निरन्तर सेवा करते रहने के बाद आखिर एक दिन चेतावनी आ पहुंची, दयाहीन कोढ़ ने अपना कड़ा हाथ उस पर भी फैला दिया था। एक दिन वह किसी काम के लिये पानी उबाल रहा था। असावधानी से उबलता हुआ पानी उसके पैर पर गिर पड़ा। पर वह चकित रह गया जब कि उसके पैर में गर्म पानी का स्पर्श अनुभव नहीं हुआ।

'क्या मुझे कोढ़ हो गया है?' उसने जा कर डाक्टर से पूछा।

'मुझे बताते हुए अपने ऊपर घृणा होती है, डाक्टर ने रोते हुए कहा—'पर हाँ, आपको कोढ़ हो गया है।'

उसी दिन से प्रार्थना में 'मेरे कोढ़ी भाइयों' के स्थान पर 'हम कोढ़ी भाई' शब्दों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया।

उसे अपने कोढ़ी हो जाने पर रत्ती भर भी पश्चात्ताप या विषाद नहीं था। 'यदि मोलोकाई छोड़ कर जाने से मैं स्वस्थ भी होता होऊं, तो भी मैं जीते जी इस स्थान को छोड़ कर कहीं नहीं जाऊंगा' वह कहा करता था।

मृत्यु बड़ी क्रूरता तथा शीघ्रता पूर्वक उसके देह में घुस रही थी, पर वह अविचल भाव से पहले की ही भाँति रोगियों की सेवा में लगा रहा। जो कुछ सुख और सन्तोष उसने जीवन में पाया था, उसके लिये वह परमात्मा का धन्यवाद करता था। कभी एक क्षण के लिये भी उसके मन में यह भाव नहीं आया 'हे भगवान् मैंने कौन से बुरे कर्म किये थे, जो तूने मुझे यह दण्ड दिया।' जो कुछ था, उससे वह पूर्ण सन्तुष्ट था।

उसकी मृत्यु शय्या के पास तीन पादरी और तीन धर्म सेविकाएं बैठी थीं। 'स्वर्ग में जाकर हमें भूल तो नहीं जाओगे, पिता?' एक पादरी रोने लगा।

'कभी नहीं! यदि परमात्मा मुझपर दयालु हुआ, तो मैं इस कोढ़ी गृह के सब निवासियों के लिये उसका आशीर्वाद मांगूंगा।'

'और एलिजा की भाँति अपना लबादा मुझे नहीं दे जाओगे क्या?' पादरी ने फिर कहा।

'तुम इसका क्या करोगे?' फिर थोड़ा रुक कर कहा 'वह कोढ़ से भरा हुआ है!'

पर उससे अच्छा वस्त्र क्या संसार में और कोई था?

★ ★ ★

मास जून में

गुरुकुल वृन्दावन में ५) और ५) से अधिक के दानदाताओं की सूची

५) श्री [illegible] रिटायर्ड मजिस्ट्रेट [illegible] जिला अलीगढ़।
१०) श्री [illegible] रईस [illegible]।
५) श्री रघुनाथसहायजी आर्य भवन म० [illegible] मोहल्ला [illegible] लखनऊ।
५) श्री मेवारामजी [illegible] मथुरा।
५) ,, करोड़ीमलजी कोठी मथुरा।
७५) मंत्रीजी आर्यसमाज फतेहपुर।
२५) श्री सेठ रामगोपालजी [illegible] हिंदी बाजार गोरखपुर।
३१) होतीलाल जी इंजिनियर [illegible] गोरखपुर।
११) शिवनाथ [illegible] प्रसाद जी साहब गंज गोरखपुर।
५) [illegible] प्रसाद जी साहब गंज गोरखपुर।
५) द्वारकादास कम्पनी साहब गंज गोरखपुर।
५) हरिकृष्ण दास रामेश्वर लाल जी साहब गंज गोरखपुर।
११) मदनमोहन कम्पनी (बा० कन्हैया लाल [illegible]) साहबगंज गोरखपुर।
५) सागरमल जी साहबगंज गोरखपुर।
५) ठाकुरप्रसाद शंकर लाल जी साहब गंज गोरखपुर।
२१) रायबहादुर मधुसूदन दास रईस गोरखपुर।
५१) राम हर्ष जी भण्डारी रईस पहाड़पुर गोरखपुर।
१५) पुरुषोत्तम दासजी [illegible]नन्दन प्रसाद सर्राफ गोरखपुर।
१७॥) मंत्री जी आर्यसमाज गोरखपुर द्वारा भिन्न २ सभासदों से।
२५) लाल जी (म० बिशुन मोहन सहाय जी) गोरखपुर।
१५) चौधरी राम[illegible] चन्द जी रईस गोरखपुर।
५१) ठाकुर प्रसाद जी हैड क्लर्क इनजिनियर ओ० टी० रेलवे गोरखपुर।
२१) [illegible] शर्मा जी इन्जिनियर [illegible] मिल गोरखपुर।
५१) परमेश्वरी दयाल जी [illegible] गोरखपुर।
१०) पुरुषोत्तमदास जी रईस [illegible]नगर गोरखपुर।
११) बा० [illegible] जी वर्मा गोरखपुर
१०) रामचन्द्र जी [illegible] गोरखपुर।
५) [illegible] स्वरूप जी [illegible] कानपुर।
५) श्री राम जी गुप्ता एण्ड कम्पनी कानपुर।
११) श्री रामगुलामजी [illegible]पुर कानपुर
७) श्री [illegible]चरनजी [illegible] [illegible]पुर कानपुर।
५) श्री [illegible]जी वैद्य [illegible]पुर, कानपुर।
११) श्री [illegible] [illegible]स्वरूपजी [illegible] [illegible]पुर कानपुर।
११) ,, कुंजबिहारी [illegible]नाथजी [illegible]पुर कानपुर।
१५) ,, रामसहायजी [illegible]जी भरथना जिला इटावा।
५) ,, भगवद्दयालजी [illegible] भरथना जिला इटावा।
७) ,, कृष्णगोपाल बाबूरामजी भरथना जिला इटावा।
५) ,, [illegible]मल रामगोपालजी भरथना जिला इटावा।
७) ,, रामजीवन स्वामीदीनजी भरथना जिला इटावा।
११) ,, रामे[illegible]दयाल पुत्तूलालजी भरथना जिला इटावा।
५) ,, रोशनलाल प्रभूदयालजी भरथना जिला इटावा।
११) नाथूरामजी [illegible] भरथना इटावा।
११) ,, बलदेवप्रसाद मनोहरलाल जी भर० इटावा।
११) ,, कन्हैयालालजी ज्वालाप्रसादजी भरथना इटावा।
५) ,, प्यारेलाल [illegible]जी भरथना इटावा।
५) ,, [illegible]मल रामस्वरूपजी भरथना इटावा।
५) रामदयाल लक्ष्मीनारायणजी भरथना इटावा।
५) [illegible] दास श्याम सुन्दर जी भरथना इटावा।
१५) [illegible] लाल ठाकुर दास जी होम-गंज इटावा
५) [illegible]मल जी होम गंज इटावा
११) मेवा राम सेवा राम जी होम-गंज इटावा
११) रामनाथ ओम प्रकाश जी होम गंज इटावा
७) सीता राम दुर्गा प्रसाद जी
२१) सूरज प्रसाद जी कोठी पुराना शहर इटावा
११) बाबजी दादा भाई जी होम-गंज इटावा
५) मुन्नी लाल बाबूराम जी इटावा
५) पन्नालाल रंगलाल जी [illegible]पुरा इटावा
१) [illegible] [illegible] जी [illegible] जी [illegible] [illegible] पुरा इटावा

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनाएँ

अन्तरंग सभा ता० ४ जून १९४९ के निश्चय की लिपि

२१—विषय २४ उपसभा सहारनपुर का विषय विचारार्थ प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि पूर्व से निर्मित और सभा से सम्बद्ध आर्योपप्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर कि जिसका निर्वाचन श्री आचार्य वृहस्पति शास्त्री जी ने २२ मई १९४९ को सिविल लाइन्स आर्य समाज सहारनपुर में करवाया है जिसके प्रधान श्री कबूलसिंह जी और मन्त्री श्री वेनीप्रसादजी जिज्ञासू हैं, उसी को वैधानिक रूप से सभा नियमानुसार स्वीकार करती है और सहारनपुर जिले की सभा से सम्बद्ध समस्त आर्य समाजों को आदेश देती है कि उक्त आर्योपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर से ही अपना सम्बन्ध रखें, अन्य किसी तथा कथित आर्योपप्रतिनिधि सभा से कोई सम्बन्ध न रखें।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

धन-रसीद संबधी सूचना

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा, युक्त-प्रान्त के निमित्त अथवा उसके किसी विभाग यथा वेद प्रचार, गुरुकुल, भगवान दीन आर्य भास्कर प्रेस, आर्य-मित्र, आर्य समाज रक्षानिधि विभाग, मादक द्रव्य निषेध=समाज सुधार, आर्य वीर दल, शुद्धि दलितोद्धार विभाग, महिला प्रचार मडल, भूसम्पत्ति विभाग, आर्य मित्र-प्रकाशन जि० क० आदि २ के लिये जो महानुभाव धन प्रदान करें, उसकी, धन प्राप्त कर्त्ता से रसीद अवश्य ले लिया करें। सभा की रसीद छपी हुई हैं, उनको ही सभा सम्बन्धी धन प्राप्त कर्त्ता प्रयोग किया करें। धन दाता गण भी सभा की मुद्रित मोहर छपी रसीद को ही प्रमाणित समझें।

---

७) तोताराम मधुसूदन दास जी घी गोदाम गाजीपुर इटावा

११) मुनशी राम जयनारायन जी लखना इटावा

१०१) गैन्दालाल गोपीनाथ जी तम्बाकू मर्चेन्ट दुगड्डा जिला गढ़वाल

५०) श्री मती रामलता देवीजी धर्म-पत्नी स्व० नेकरामजी, द्वारा श्री पुत्तूलाल जी सक्सेना मुकाम बरालिक डा० कायमगज जिला फरूखाबाद

१०) श्री मती द्रोपदी देवी जी पुत्री स्वर्गीय लाला मोहन लाल जी पोखर अनूप शहर जि. बुलन्द शहर

१००) श्री घनश्याम सिंह जी आर्य उप सभापति कॉंग्रेस कमेटी हमीरपुर

५) शीतल प्रसाद ईश्वरी प्रसाद जी प्रधान आर्यसमाज गढ़ीपुख्ता डा. थाना भवन जि. मुजफ्फर नगर

५) नवल किशोर जी कोषाध्यक्ष आर्य समाज गढ़ी पुख्ता डा० थाना भवन जि. मुजफ्फरनगर

६॥।=) विश्वनाथ प्रसाद जी बाजपेई गंगा गंज डा. गजनेर जि. कान-पुर

५) दयाराम जी मिश्र जलालाबाद जि. फरूखाबाद

२०) ५) रु० से कम देने वालो की रकम

२९३=।=) कुल आय माह जून १९४९

(पृष्ठ ४ का शेष)

से सम्बधित धुलाई आदि, डाक व्यय, बीमारी आदि का व्यय भंगी तथा म्यूनिसिपल टैक्स और दिल बहलाव आदि अनेक आवश्यक कार्यों के लिये व्यय करने का कोई साधन व सामर्थ्य ही शेष नही रहता।

डा० वी० नटराजन ने, कि मद्रास सरकार के आर्थिक परामर्श दाता हैं, गत १० वर्षों के अङ्क देकर बतलाया है कि यद्यपि भारत सरकार की आय इन १० वर्षों में १४ अरब ८२ लाख से बढ़कर ५६ अरब ५७ लाख—अर्थात् चौगुनी-हो गई है परन्तु भारतीय नागरिक की व्यक्तिगत आय ६७॥) से घटकर ६०॥।) मात्र ही रह गई है अर्थात् १० प्रतिशत न्यून हो गई है। यह स्थिति रुपये के वर्तमान मूल्य के चौथाई रह जाने को दृष्टि में रखते हुवे अत्यन्त ही हृदय वेधक और हतोत्साह करने वाली है।

निस्सन्देह गवर्नमेंन्ट का कोष भी असित नहीं है और श्रमिक वर्ग के दबाव के कारण व्यक्ति गत व्यवसायों के पतनो न्मुखी होने से महगाई बढ़ रही है, तब भी भारत सरकार जिस प्रकार अनुत्पादक कार्यों में व्यय कर रही है वह न केवल अनुचित ही है प्रत्युत मूर्खता पूर्ण है। अतः उचित तो यही है कि हमारी राष्ट्रीय सरकार नवीन नवीन योजनाओं म नवीन नवीन परिव्ययों को न्यून करे और देश के धन को उत्पादन बढ़ाने के सभी कार्यों में सहायता देकर मध्य वर्ग की जनता की आय वृद्धि तथा उनके जीवन स्तर को ऊंचाकर इस दुरवस्था को सुधारने का यत्न करें अन्यथा शीघ्र ही असन्तोष की बढ़ती हुई ज्वाला किसी दिन देश मे दावाग्नि का रूप धारण कर ले तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

आर्य जगत् की महान् क्षति

आर्य जगत मे यह समाचार अत्यन्त क्षोभ के साथ सुना जायगा कि हमारे प्रान्त के एक प्रसिद्ध आदर्श आर्य श्री ठा० रघमान सिंह जी का देहावसान १५ अगस्त की प्रात ८१ वर्ष की आयु में हो गया। आपकी गणना युक्तप्रान्त के उन पुरातन वेदिक धर्मी आर्य पुरुषों में थी कि जिनके उत्साह, त्याग और कर्मण्यता के कारण ही आर्यसमाज व वेदिक धर्म इतना फला फूला है। आप अलीगढ़ जिले के सुप्रसिद्ध जिमीदार व रईस थे और आर्यसमाज बरौठा के प्राण थे। अलीगढ़ व समीप की आर्य समाजों व आर्यसंस्थाओं को आप से सदैव प्रेरणा व सहायता प्राप्त होती रहती थी। अनेक वर्षो तक आ० प्र० सभा के अन्तरङ्ग सभासद, भूसम्पति विभाग तथा गुरुकुल वृन्दावन के अधिष्ठाता तथा साधु आश्रम हरदुआगंज के स्तम्भ रहे। आपकी शुद्धि कार्य मे विशेष अभिरुचि थी जिसके कारण अलीगढ़ में धूम मचगई थी। आप अपने पीछे एक विशाल परिवार छोड़ गये हैं जिसमें कवि कर्ण जी, ठा० श्रवण सिंह जी, प० यशपाल जी, तथा श्री महेशचन्द्र जी आदि सदस्य आज भी वैदिक धर्म तथा आर्य समाज की प्रशसनीय सेवा कर रहे हैं।

ग्वालियर आ० स० के प्रधान सुप्रसिद्ध डा० महावीर सिंह जी अपने इन्हीं सुप्रसिद्ध पिता के योग्य पुत्र हैं। वैदिक कर्मकाण्ड में आपकी इतनी निष्ठा थी कि मृत्यु से केवल ६ दिन पूर्व ही बाधित होकर, असमर्थ होने के कारण सध्या अग्नि होत्र छूट सका।

आर्यमित्र आपके विशाल परिवार से सहानुभूति प्रकट करता है तथा शांति के लिये प्रार्थना करता है।

* * *

जन्माष्टमी महोत्सव

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का महोत्सव ता० १७-८-४९ को समारोह के साथ मनाया गया। प्रातः विशेष यज्ञ किया गया। पश्चात् इसी महोत्सव के उपलक्ष में एक परिषद् हुई।

इ। महोत्सव की खुशी में श्री सेठ [illegible] जी देहली, द्वारा गुरुकुल के समस्त कुलनिवासियों को भोज दिया गया जिसमे कि कुल के सभी निवासी सपरिवार निमन्त्रित थे।

जिला आर्य्योप पतिनिधि सभा, सहारनपुर

कनखल, (हरिद्वार) यू. पी.

आर्य जीवन बनावें।

संसार का उपकार करने की हमारी प्रतिज्ञा उस समय पूर्ण हो सकेगी जबकि हम अपने जीवन को आर्य बनावेंगे। दूसरों का सुधार करने से पूर्व हम अपने आपको सुधारना होगा। अपने परिवार की उन्नति के लिये हमें जितनी शक्ति लगानी पड़ती है उससे अधिक हमें समाज व विश्व की उन्नति के कार्य मे लगाने की आवश्यकता है; हमारी इस ओर से विमुखता ने हमारे आर्य-समाज के पुनीत कार्य को शिथिल बना रक्खा है, इस मन्द गति को दूर करने के लिये जिले में विशेष ता० १७ जुलाई सन् १९४९ को नुकड़ तहसील में तहसील की आर्य-समाजों के अधिकारियों व कार्य-कर्त्ताओं के सहयोग मे एक प्रचार कमेटी का निर्माण किया गया है जिसके संयोजक वैद्य सुखदेव जी शास्त्री बनाये गये हैं।

आशा है हम अपनी पूरी लगन, संगठन के साथ निम्नलिखित योजना को पूरा करेंगे।

१—आर्य-समाजों के साप्ताहिक सत्संगों में परिवार सहित सम्मिलित होना, दैनिक सत्संग में सम्मिलित होना। दूसरों को प्रेरणा करना।

२—अमावस्या, पूर्णिमा को परिवारों मे सत्संग करना। परिवार सहित उसमें सम्मिलित होना।

३—वेदों तथा सद् ग्रन्थों का स्वाध्याय प्रतिदिन नियम पूर्वक करना।

४—आर्य पर्व, पुण्य दिवस, वैदिक संस्कारोंको समारोह पूर्वक मनाना।

५—स्त्रियों का सत्कार, बच्चों से प्रेम, विद्वानों व वृद्धों के प्रति आदर भाव, दलितों से सहानुभूति तथा उनके उत्थान का कार्य लगन पूर्वक करना।

६—मादक द्रव्यों का निषेध, शिक्षा विस्तार प्राणायाम, सफाई, शारीरिक उन्नति के लिये व्यायामशाला स्थापन, आर्य वीरदल, आर्य कुमार सभा, स्त्री समाजों की स्थापना का कार्य करना।

७—हिन्दी भाषा विस्तार, मातृरक्षा प्रचार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अनमेल विवाह समाज पतन के कार्यों से जनता को बचाना।

वेणीप्रसाद जिज्ञासु

खुर्जा में स्वर्ण जयन्ती

आर्य समाज खुर्जा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव ता० ६, ७, ८, ९ अक्टूबर १९४९ ई० को होना निश्चय हुआ है आशा है आर्य जनता अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर उत्सव को सफल बनायेगी।

—आर्य समाज मुरादाबाद में वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम धाम के साथ मनाया गया तथा जनता पर इसका बहुत उत्तम प्रभाव रहा। जनता ने इसमें खूब सहयोग दिया।

—ता० ११-८-४९ को उज्जैन निवासी सुगराबाई की शुद्धि की गई जो कि जन्म से मुसलमान थी। तत्पश्चात आप का आर्य नवयुवक श्री नन्दराम जी मल्हारगंज इन्दौर निवासी के साथ विवाह संस्कार समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ महिला का नाम सावित्री देवी रक्खा गया है इन ४ महीनों में समाज द्वारा यह १२ वीं शुद्धि है।

सिंगापुर में वैदिक विवाह

—आर्य समाज सिंगापुर ने बुकितिमा ६॥ मील में श्री मान एस. चीमन लाल तथा श्री मती बसन्त कौर का विवाह संस्कार वैदिक रीति अनुसार ता. ७-८-१९४९ को कराया। जनता की उपस्थिति अच्छी थी। समाज को वर की ओर से २१ डालर दान मिला

समाज मन्दिर में ता० १५-८-४९ को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। प्रातः ध्वजारोहण हुआ। दिन में हवन ईश्वर वन्दना हुई इसी अवसर पर इन्डीया कांग्रेस सिंगापुर की ओर से डी० ए० वी० हिन्दी स्कूल के बच्चों को श्री मान डा० कोडा सिंह जी द्वारा मिठाई बांटी गई।

—ता० ७ से १२ अगस्त तक आर्य सं० चकुंद (इटावा) में वेद प्रचार सप्ताह पर पं० रामचन्द्र आर्य भजनोपदेशक गुरुकुल बदायूं एवं प्रमुख सदस्य आर्य समाज कुसमरा (मैनपुरी) ने प्रचार किया साथ ही में दानक यज्ञ के अतिरिक्त मुंशीलाल की वन्धु के यहाँ बृहत यज्ञ हुआ।

—ता० २१ से २४ अगस्त तक ग्राम, शहर, (इटावा) में पं० रामचन्द्र आर्य भजनोपदेशक ने प्रचार किया यह पहिला मौका है कि यहाँ वैदिक धर्म प्रचार हुआ। भविष्य में समाज स्थापित होने की सम्भावना है।

—आर्य समाज शहर मुजफ्फरनगर में ८ अगस्त ४९ से १६ अगस्त ४९ तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया प्रातः हवन व कथा रात्रि भजन व व्याख्यान श्री जयजगदीश जी मनुचेर ने बाजे द्वारा और श्री ओ३म स्वामी जी ने प्रचार बड़े परिश्रम से किया दिन में सन्ध्या व हवन की पुस्तकें बिना मूल्य बांटी गईं। वेद वाणी घर घर पहुंचाने का प्रयत्न किया गया।

—ता० १६-८-४९ मङ्गलवार को श्री कृष्ण जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर एक व्यक्ति ने जिनका नाम मलीवक्श जन्म से मुसलमान था। अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। शुद्धि संस्कार श्री स्वामी शिवानन्द जी वेदतीर्थ के द्वारा हुआ। उत्तम सज्जन का नाम शम्भू प्रसाद नाम रक्खा गया। शहर में अधिकांश प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

वानप्रस्थ संस्कार

गत कृष्णजन्माष्टमी पर दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर में वैदिक पत्र 'सविता' के सम्पादक तथा स्थानिक 'वेदसंस्थान' के आचार्य प० विद्यानन्द जी विदेह का असाधारण उपस्थिति के बीच वानप्रस्थाश्रम प्रवेश संस्कार सम्पन्न हुआ। श्रद्धांजलि तथा शुभकामना प्रकट करने वालों में विशेष उल्लेखनीय सर्व श्री केशवदेव जी कपूरिया, शरण वियोगी, डा० सूर्यदेव शर्मा, कु० चांद करण शारदा, पं० जियालाल, प्रो० घीसूलाल, ठा० मदन सिंह, डा० शुक्ला तथा संस्थान के सदस्य थे।

आचार्य विदेह वेदों के प्रकाण्ड पंडित और राष्ट्रीय भावनाओं के व्यक्ति हैं। आर्यसमाज और देश को उनसे बहुत आशायें हैं।

—दयानन्द राष्ट्रिपाठशाला रानीसराय (आजमगढ़) में वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम धाम से मनाया गया। तथा जन्माष्टमी तथा हैदराबाद सत्याग्रह दिवस भी मनाया गया जिसमें श्री वासुदेव जी आर्य तथा माधो जी आर्य जी द्वारा बौद्धिक तथा भजन हुये जनता पर सुन्दर प्रभाव पड़ा।

—आर्य समाज कुसमरा मैनपुरी में वेदप्रचार सप्ताह खूब धूमधाम से मनाया गया ता० ८-८-४९ श्रावणी के दिन हैदराबाद सत्याग्रह दिवस भी मनाया गया सब सभासदों ने शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की भजन व व्याख्यान हुये। सप्ताह भर प्रात. समय प्रभातफेरी तथा सम्मिलित सन्ध्योपासन तथा हवन नित्यप्रति और सायंकाल को वेदों की कथा, जन्माष्टमी को विशेष यज्ञ तथा सांयकाल को योगिराज श्री कृष्ण चन्द्र के जीवन पर भाषण हुये।

आर्यकुमार सभा गाजियाबाद

"वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर वैदिक साहित्य का प्रचार करने के लिये आर्य कुमार सभा ने वैदिक साहित्य की बिक्री का भार अपने ऊपर लिया और साहित्य की बिक्री में बड़े उत्साह से नगर के आर्य पुरुषों के घर २ पर जाकर उन्हें पुस्तकें दीं। इस प्रकार सप्ताह भर में सभा ने १५० पुस्तकें बेचीं इसके अतिरिक्त १५ नये सभासद बनाये।"

आर्य महापुरुष का देहावसान

अलीगढ़ जिले के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी श्री ठा० रामानन्दसिंहजी का ८१ वर्ष की अवस्था में १५ अगस्त को प्रातः ७। बजे देहान्त हो गया।

ठाकुर साहब एक अत्यन्त गम्भीर, दूरदर्शी एवं मनस्वी महापुरुष थे। अलीगढ़ के ही नहीं प्रत्युत समस्त प्रान्त के आर्यजन उनके उदात्त जीवन से भली भांति परिचित हैं। उनका सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा में बीता। आर्यसमाज की गति विधि का परिचय प्राप्त करने के लिए कई बार उन्होंने सारे देश का भ्रमण किया। कई वर्ष तक वे प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर रहे।

अलीगढ़ जिले के साधु आश्रम के तो वे प्राण थे। उन्होंने अपने परिवार को पवित्र ऋषि भावना के मार्ग का सच्चा अनुगामी बनाया। उनके ६ पुत्र आज सब पदों पर प्रतिष्ठित हैं। ठाकुर साहब के निधन से आर्यसमाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवङ्गत आत्मा को शान्ति और दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करे।

नया प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (लाहौर) श्यामचौरासी जिला होशयारपुर में नया प्रवेश १२ सितम्बर से प्रारम्भ हो रहा है। कालेज की अपनी स्वीकृत परीक्षाओं तथा पंजाब यूनिवर्सिटी की शास्त्री परीक्षा की निःशुल्क पढ़ाई होती है। धार्मिक तथा संस्कृत शिक्षा का यह प्रसिद्ध केन्द्र है। पत्र व्यवहार करें।

वार्षिकोत्सव

—आ० स० नैनीताल का वार्षिकोत्सव ता. १०, ११, १२ व १३ सितम्बर सन् ४९ को बड़े समारोह से मनाया जायेगा। प्रतिष्ठित उपदेशक व भजनीकों के पधारने की आशा है। मंत्री

—आ० स० पानीपत का वर्षिकोत्सव इस वर्ष ता० १६, १७, १८ सितम्बर को होना निश्चय हुआ है। नगर कीर्तन १६ सितम्बर शुक्रवार को होगा।

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन में स्वातन्त्रता समारोह अतीव उल्लास एवं उत्साह के साथ मनायागया। प्रातः काल प्रभात फेरी लगाई गई। तदनन्तर विश्व शान्ति सूचक राष्ट्रीय चक्राङ्कित तिरंगा ध्वजारोहण श्री आचार्य जी के करकमलों से हुआ। पुनः विशेषयज्ञ स्वराज्य सूक्त सहित हुआ। इसी अवसर पर एक विराट्परिषद् का आयोजन किया गया। श्री मुख्याधिष्ठाता श्रीराम जी द्वारा वृक्षारोपण का कार्य प्रचालन किया गया जिसमें स्वयं उन्होंने एवं अन्य उपाध्याय वर्ग ने वृक्षारोपण किये।

निर्वाचन—

आर्य समाज सरधना, मेरठ

प्रातः श्रावणी पर्व सविधि समाप्ति के पश्चात् कारण वश, रुका हुआ वार्षिक निर्वाचन निम्न रूप से सम्पन्न हुआ—

१ प्रधान—महाशय हरकेशसिंह
२ उप प्रधान—चौ० शिवनाथ सिंह
३ सहा० उपप्र०—ला० धन श्याम दास
४ मन्त्री—श्री बाल कृष्ण त्यागी
उपमन्त्री—मु० भिक्कनलाल वर्मा
प्रचार मंत्री—श्री ज्ञान चन्द, सुपरवाइजर
निरीक्षक—म० रघुवीर सिंह
कोषाध्यक्ष—बा० आनन्द ओ३म प्रकाश

निर्वाचन—

आ० स० मूड़बरेली

श्री—श्रीराम जी—प्रधान,
„ रामस्वरूप „—उपप्रधान,
„ हरिश्चन्द्र „—उपप्रधान,
„ गजेन्द्रस्वरूप „—उप मंत्री
„ उजागिर राय „—कोषाध्यक्ष
„ प्रतापनारायन „—मैनेजर संस्कृत पाठ शाला।
„ जगदीश जी शर्मा—पुस्तकाध्यक्ष
„ रामचन्द्र „—मैनेजर कन्या पाठशाला
„ गोपाल स्वरूप जी बी०—निरीक्षक
„ लालता प्रसाद जी—मंत्री

—इस वर्ष आर्य समाज लालगंज ने श्रावणी पर्व और वेदप्रचार सप्ताह बड़े समारोह से मनाया श्रावणी पर्व के दिन श्री राजेन्द्र प्रसाद जी वर्मा, श्री शिवशंकर जी मिश्र निवासी प्रचारक सार्वदेशिक सभा देहली) और श्री पं० रामलाल जी पहास, के पर्व की महानता और वेदमन्त्रों पर स्फूर्ती दायक प्रवचन हुए। उसके बाद आर्य समाज के आगामी वर्ष के अधिकारियों का चुनाव हुआ।

प्रधान—श्री डा० रघुनाथ सिंह जी वर्मा एम० बी० बी० एस
उपप्रधान—श्री प्रो० शारदा जी वर्मा एम० ए०
प्रधान मन्त्री—श्री सेठ चन्द्राजी आर्य
उपमन्त्री—श्री हरीसिंह जी गौर
प्रचार मन्त्री—श्री कृपाराम जी आर्य सि० शास्त्री
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र जी दूबे
निरीक्षक—श्री चुन्नीलाल जी वर्मा बी० ए०

शोक समाचार

लाल गंज आर्य समाज के प्रधान तथा मंडल लाल गज कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष पं० श्यामसनोहर जी तिवारी का असामयिक निधन सोमवार ता० ८-८-४९ को स्वर्ग हुआ। आप लालगंज के प्रमुख शान्ति प्रिय तथा समाज सुधारक थे, वृद्धावस्था में भी बहुत उत्साहित व्यक्ति थे। आप के मृत्यु से लालगंज को बहुत क्षति हुई जिसकी पूर्ति कठिन है। लालगंज की जनता ईश्वर से प्रार्थना करती है कि स्वर्गीय आत्मा को तथा उनके संतप्त परिवार को शान्ति प्रदान करें।

आवश्यकता

गुरुकुल महाविद्यालय श्री गुरुकुल वैद्यनाथ धाम (संथाल परगना) के आचार्य पद के लिये संस्कृत (हिन्दी) अंग्रेजी एवं वैदिक सिद्धान्तों में प्रवीण कमठ आर्य विद्वान् की आवश्यकता है। जो सुव्यवस्थितता का कार्य भी सम्पादित कर सकता हो। योग्यतानुसार वेतन दिया जायेगा। १० सितम्बर तक सभी के साथ आवेदन पत्र आना चाहिए।

आर्य समाजें नोट करें

कवि भूषण संगीताचार्य

जगदीश भूषण

आर्य भजनोपदेशक ग्रामोफोन सिंगर मुहल्ला गुढ़यारी मकान नं. १२१ शाहदरा देहली को वार्षिकोत्सवों—विवाहों पर भजन द्वारा व्याख्यान तथा प्रचार के लिये याद करें।

भारत-हैदराबाद सम्बन्ध अस्पष्ट

भारतीय विधान परिषद् के श्री कामथ के एक प्रश्न के उत्तर में परिषद् के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद ने कहा कि हैदराबाद का भारतीय सरकार से क्या सम्बन्ध है यह अभीतक निश्चय नहीं हुआ है। उन्होंने विन्ध्य प्रदेश से अभी तक विधान परिषद् में प्रतिनिधि न आने पर खेद प्रकट किया।

दिल्ली जाने पर टैक्स

१ सित०। दिल्ली म्यूनिसिपैलिटी ने निश्चय किया है कि ३० मील से अधिक दूर से आने वाले यात्रियों से, चाहे वे रेलवे, सड़क अथवा हवाई जहाज से आवें कर लिया जायगा। पहिले दर्जे के यात्रियों से ८ आना, द्वितीय दर्जे से ४ आना और तीसरे दर्जे वालों से दो आना लिया जायगा। यह टैक्स भारत सरकार की स्वीकृति पर लागू होंगे।

चीनी का मूल्य कम

१ सित०। चीनी के मूल्य घटाने के लिये भारत सरकार ने देश भर में सभी चीनी मिलों के बिके और बिना बिके स्टाक चाहे वह मिलों के भीतर हो या बाहर, कब्जा कर लेने का निश्चय किया है। डी० २४ किस्म की चीनी का मूल्य २८॥), डी० २९ किस्म का २६) प्रतीत मन तथा अन्य किस्मों का इसी मूल्य के अनुपात से मूल्य निर्धारित होगा। यह मूल्य शूगर सिण्डीकेट से दिसम्बर सन् ४८ में भी निश्चय किये गये थे।

आशुतोष लहरी पर प्रतिबन्ध

२ सित०। हिन्दू महासभा के प्रधान मन्त्री श्री आशुतोष लहरी के कलकत्ते से दिल्ली आने पर दिल्ली मैजिस्ट्रेट ने २ मास के लिये आदेश दिया है कि वे न तो कोई सार्वजनिक भाषण दें, न किसी सभा प्रदर्शन, जुलूस में भाग लें। न किसी अन्य व्यक्ति से सुरक्षा के प्रतिकूल कार्य में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क रखें। अन्यथा ३ वर्ष की कैद या जुर्माना हो सकता।

उन्नाव में गाड़ी उलटी

१ सित०। उन्नाव के पास एक मालगाड़ी के पटरी पर किसी जानवर के कट जाने के कारण उलट जाने पर बड़ी तथा छोटी लाइन बन्द हो गई। फल स्वरूप ८ वैगन नष्ट हो गये और श्री गोलवलकर जी का लखनऊ से भाषण सुन कर लौटने वाले १० हजार यात्रियों को कानपुर तक पैदल आना पड़ा। रेलवे को इस दुर्घटना से बहुत हानि पहुँची है।

जमींदारी और औद्योगिक सम्पत्ति का मुआविजा

१ सितम्बर—विधान परिषद् के कांग्रेस दल ने निश्चय किया है कि जो सम्पत्ति सरकार हस्तगत करेगी चाहे वह कृषिभूमि अथवा व्यापारिक सम्पत्ति हो व औद्योगिक, उनके मुआवजे का आधार समान होगा। इस प्रकार का बिल राष्ट्रपति की अनुमति के बिना कानून न बन सकेगा और अनुमति के बाद कानून में वर्णित मुआवजे के सम्बन्ध में अदालत में मुकदमा न चल सकेगा। प० नेहरू जी ने प्रस्ताव किया था, पन्तजी ने समर्थन।

श्री गोलवलकर जी के विचार

—स्थानीय पत्रकार सम्मेलन में श्री गोलवलकर जी ने कहा कि देश में एक दृढ केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता है। भारतीय विधान पश्चिम की नकल के आधार पर है। उसे ऊपर से न लाया जाय प्रत्युत स्वतः विकसित होने दिया जाय। हिन्दुओं के राज्य सत्ता की कल्पना असाम्प्रदायिकता के ही आधार पर है। बौद्ध और मुगल साम्राज्य ही साम्प्रदायिक आधार पर कायम हुये थे, शेष समस्त भारतीय राज सत्तायें असाम्प्रदायिक रही हैं। यदि उद्योगों का राष्ट्रीय करण राष्ट्र के हित में है तो जनता का नियन्त्रण अपेक्षित है अन्यथा उसे व्यक्तिगत अधिकार में में ही रहने देना चाहिये। भूमि के राष्ट्रीय करण के सम्बन्ध में आपने कहा कि अन्नोत्पादक किसान का हित जिस योजना में है हम उसका स्वागत करेंगे परन्तु जमीदारी समाप्त करने पर सरकार व किसानके बीच मध्यस्थ तो बाकीही रहेंगे। अन्तर केवल इतना होगा कि जमीदारों का स्थान नौकरशाही ले लेगी। लखनऊ व्यापार मण्डल के उत्तर में कहा कि उपभोग हीन स्वामित्व प्राचीन भारतीय उद्योग की आधार शिला है अतः व्यवसाइयों का कर्तव्य है कि वे ट्रस्टी के रूप में व्यवसाय करें। वर्ग संघर्ष से सफलता व समृद्धि नहीं हो सकती।

बम्बई की बन्द होने वाली मिलें

२ सित०—बम्बई सरकार ने उन सूती मिलों को जिन्होंने अपने मजदूरों का कामबन्द करने की सूचना दी है, अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का परामर्श दिया है अन्यथा वह नये डायरैक्टर नियुक्त करने पर विचार करने के लिये वाध्य होगी।

नवीन कम्युनिस्ट पार्टी

२ सि०—सूरत ज्ञात हुआ है कि कम्युनिस्ट पार्टी के भू० पू० प्रधान मंत्री श्री पी० सी० जोशी ने एक पृथक कम्युनिस्ट पार्टी बनाली है। यह पार्टी विध्वंसक नीति और सरकार के विरुद्ध सीधे आन्दोलन पर विश्वास नहीं रखती।

हिन्दी का प्रश्न खटाई में

२ सित० दिल्ली—ज्ञात हुआ है कि भारत की राष्ट्रभाषा के प्रश्न को कांग्रेस पार्टी ने अनिश्चित छोड़ दिया है। अब भारतीय विधान परिषद् में खुले वोट द्वारा इस प्रश्न का फैसला होगा। प्रस्तावित 'मुंशी आयंगर' मसविदे में देवनागरी लिपि में लिखित किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय अंकों सहित हिन्दी को राज भाषा बनाने का विधान है। अन्तारम अवधि १५ वर्ष रखी गई है। इस बीच भारत के सरकारी काम अंग्रेजी में होंगे। विरोध व पक्ष में ७७ वोट आये।

राष्ट्रपति ट्रूमैन व एटली की अपील

२ सि० काश्मीर के सम्बन्ध में अमेरिकन राष्ट्रपति ट्रूमैन और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री एटली ने भारत व पाकिस्तान के प्रधान मन्त्रियों को अपीलें भेजी हैं कि वे काश्मीर के झगड़े में एडमिरल निमिज को 'पंच' मान लें।

जापान में तूफानों की भरमार

२ सि० टोकियो—जापान में कई दिनों से निरन्तर तूफान आ रहे हैं। ३१ को रात को ८० मील प्रति घन्टे की रफ्तार से चलने वाले तूफान के कारण योकोहामा बन्दरगाह में ७ जहाज डूब गये, १० इधर उधर बहक गये जो ४ व ७ हजार टन से अधिक थे। ४७ जापानी मर गये। ५०० मकानों में पानी भर गया। टोकियो की सड़कों पर पानी भरा है।

जमींदारों का सम्मेलन

३ सित० लखनऊ, कैसरबाग की बारादरी में जमींदारों का वृहत्सम्मेलन हुआ। प्रांत से १५ हजार प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये राजा जगन्नाथ बक्स-सिंह ने कहा कि जमींदारों के १ करोड़ से अधिक वोट हैं यदि वे चाहें तो सरकारों को बना और बिगाड़ सकते हैं। कुंवर जगदीश प्रसाद ने कहा कि इस भूमि सुधार का अर्थ यह होगा कि भूमि पर निजी स्वामित्व का स्थान हृदयहीन सरकारी जमींदारी प्रथा ले लेगी जिसका सञ्चालन कम वेतन पाने वाले अनुभवहीन भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा होगा।

राजा महेन्द्रप्रताप ने कहा कि कांग्रेस सरकार किसानों और जमींदारों के बीच फूट फैलाकर गवर्नमेंन्ट पर कब्जा रखना चाहती है। कुंवर गुरुनारायण ने कहा कि जमींदारों को निराश नहीं होना चाहिये, अपने पक्ष का निर्भीक [illegible] चाहिये। [illegible] ने कहा कि इस कानून से भौमियों में बसने वाले किसानों को भी बहुत हानि पहुँचती है। सब देशों में बुनियादी अधिकारों की रक्षा की जाती है तो उसका पूरा मुआविजा दिया जाता है तथा उसे अदालत में जाने का अधिकार रहता है परन्तु अपने आपको जनता की सरकार कहने वाली कांग्रेस सरकार ने बुनियादी अधिकारों पर ही कुठाराघात किया है। सरकार के दिल में चोर घुसा है इसलिये वह अदालत में जाने का अधिकार नहीं देना चाहती।

हरिराम सेठ ने कहा कि कांग्रेस द्वारा घोषित किये गये ५ अरब मुआविजे में से केवल वह १३७ करोड़ ही दे रही है और फिर भी उसे उचित बतलाती है। सरकार केवल ट्रेक्टर का टैक्स ही ५०) एकड़ लेती है जब कि वह मुआविजा केवल ३५) एकड़ ही दे रही है।

राजा वीरेन्द्रशाह एम० एल० ए० ने कहा कि गवर्नमेन्ट स्वयं मध्यस्थ जिमीदार बनना चाहती है और सबको मजदूर बना देना चाहती है।

अन्त में ६ प्रस्ताव स्वीकृत हुये और प्रान्त में आन्दोलन करने के लिये लगभग ३० हजार रुपया एकत्र भी हुआ।

काशी में गुरु जी का भाषण

काशी, १ सितम्बर। यहाँ पूर्वी जिलों से आये हुये दस हजार संघी स्वयं सेवकों की अनुशासित सभा में भाषण देते हुए सर संघ चालक श्री माधवराव गोलवलकर ने स्वयं सेवकों को सहिष्णुता, प्रेम और बलिदान के आदर्शोंको कार्यान्वित करने की शिक्षा दी और कहा कि वे राजनीतिक तथा अन्य सभी मतभेद भुलाकर देश की सेवा करें।

गुरु जी ने कहा कि हमारी सरकार के सामने बड़ी २ समस्याएं हैं जिनके समाधान में निस्वार्थ सेवा और बलिदान द्वारा योग देना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि दशा सुधारने के लिए लोग सरकार की आलोचना कर सकते हैं। किन्तु स्वार्थ भाव अथवा किसी गुप्त उद्देश्य से आलोचना करना ठीक नहीं है।

गुरु जी ने कहा, संघ न किसी दल के आधीन है न अपना कोई राजनीतिक दल बनाना चाहता है। इसका उद्देश्य देश और संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है। भारतीय संस्कृति के आधार पर चारित्र्य निर्माण के लिए संघ का आन्दोलन बहुत महत्वपूर्ण है। कि युद्ध-ध्वस्त संसार को इस समय शांति की आवश्यकता है और वह भारतीय संस्कृति से ही संभव है राष्ट्र भाषा का प्रश्न जीवन के सांस्कृतिक [illegible] है। हिन्दी ही हमारी [illegible] सकती है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य मित्र

भग्वर्ये लक्ष्मी दीनाय राय: समर्यवर्य । ऋ० १, १२, ११

ऐश्वर्यशाली प्रभो ! हमें धन प्रदान कीजिये और धन का दान करने का कर्म कर दीजिये ।

ता० ८ सितम्बर, १९४९

योग्यता की परीक्षा

कौन बुद्धिमान पुरुष इस बात को अस्वीकार कर सकता है कि आधुनिक भारत के निर्माण में आर्य समाज का प्रमुख भाग नहीं है। गत ७५ वर्षों के पूर्व की दो सन्तियों का इतिहास इस बातका साक्षी है कि ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने ऋषि द्वारा प्रदर्शित उज्ज्वल प्रकाश से अपने मार्ग को अनुदीप्त कर सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रचार, तथा सबसे अधिक सब धर्मों के मूल 'वेद' द्वारा निर्दिष्ट वैदिक धर्म के आधार भूत वर्णाश्रमधर्म, तथा आर्यसंस्कृति के विशुद्ध कल्याणकारी रूप को जनता में प्रसारित किया। इस प्रचार का मुख्य परिणाम यह हुआ कि देशवासियों की 'हीनत्व की भावना' नष्ट हो गई, 'स्वाभिमान' उत्पन्न हुआ, विश्वास हुआ कि भारत वासी असभ्य जंगली नहीं है, भारतीयों के पास उत्तम आदर्श, संस्कृति कला, साहित्य, समाज विधान है और उनका 'सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य' भी बहुत समय तक रहा है।

इस अभिमानजनक अनुभूति ने देश में परतन्त्रता के विरुद्ध ग्लानि उत्पन्न की, तथा सर्वप्रथम आवश्यकता, देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये तीव्र अभिलाषा जाग्रत करदी। आर्यसमाज को अपने आन्दोलन में अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई, उसकी कीर्ति व प्रभाव विस्तार देश में चारों ओर व्याप्त हो गया।

देश से उत्पन्न यह जागृति व चेतना एकाकी न रह सकती थी अतः आधुनिक राजनीति युग में योरुप के देशों की राजनैतिक उन्नति के समकक्ष हो जाने की आकांक्षा प्रबल हो उठी। यूरोप राष्ट्रों के आदेश, सभ्यता, व 'स्व' संस्कृति के आदर्श का अनुसरण कर आर्यों को न केवल स्वदेशवासियों के ही क्षणिक क्रोध का भाजन होना पड़ा अपितु विदेशी सरकार का भी कठिन प्रहार हुआ। उसे राजद्रोही संस्था समझा गया, 'सत्यार्थ प्रकाश' राजद्रोह प्रचारक ग्रन्थ कहा जाने लगा, आर्य पुरुषों पर राजद्रोह के अभियोग चले, उन्हें नौकरियों से पृथक किया। विधर्मियों ने भी स्वार्थवश आर्यसमाज को बदनाम किया और उस विद्वेष प्रचारक 'रंगीला रसूल' आदि प्रसिद्ध करना चाहा। आर्यसमाज ने इन कठिनाइयों का धैर्य से सामना किया। आर्य पुरुषों के उत्साह, त्याग, कष्ट सहन के सामर्थ्य की पराकाष्ठा तथा संगठित कार्य प्रणाली ने उन्हें इस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण कर दिया।

इसी बीच में १९१४ का महायुद्ध प्रारम्भ हो गया। भारतवासियों ने स्वतन्त्रता लाभ की आशा से अंग्रेजों की सहायता की था परन्तु युद्ध की समाप्ति पर भारत की राजनैतिक महत्वाकांक्षायें अपूर्ण ही रहीं। देश में घोर निराशा हुई और राजनैतिक भयानक जन आन्दोलन प्रारम्भ हुये। इन आन्दोलनों को प्रबल करने के लिये अनेक चमत्कार' पूर्ण भावनायें की गईं, अनेक 'चमत्कार' की घटनायें प्रचारित की गई। समय समय पर भूकम्प के समान यह आन्दोलन १५ अगस्त ४७ तक देश को विलोड़ित करते रहे। निस्सन्देह इन कष्टों में बड़े बड़े विचारशील सच्चे महानुभाव डगमगा गये। प्रकारान्तर से अधिकांश आर्यपुरुष भी अपने मुख्य कार्य, वैदिक सिद्धांतों तथा आर्य संस्कृति की, प्रतिष्ठा से विरत हो राजनीतिक स्वतन्त्रता के आन्दोलनों का संचालन करने लगे। आर्यसमाजों के सकीर्तन उत्सवों में राजनैतिक स्वतन्त्रता का ही प्रचार होता। आर्य व्याख्याता, उपदेशक, प्रचारक, भजनीक आर्यसमाज की वेदि से द्वयर्थक भाषा प्रयोग से राजनैतिक चेतना का उद्बोधन करते रहे। लाखों आर्य पुरुषों ने जेल कष्ट भी उठाये।

इसका एक घातक परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज के सम्पूर्ण तपे हुये उत्साही कार्यकर्ता अन्य दलों की दलदल में फंस गये। २५ वर्ष की इस दलदल से अब उनका निकलना सम्भव प्रतीत नहीं हो रहा है। अनेक आर्य पुरुषों का अपनी मातृ संस्था आर्य समाज से स्नेह न्यून हो गया। उत्साही, विचारशील तपस्वी कार्यकर्ताओं की न्यूनता आर्य समाज की मन्द गति का कारण हुई।

इन आन्दोलनों का एक दूसरा अत्यन्त घातक परिणाम यह भी हुआ कि 'स्वराज्य' व 'स्वतन्त्रता' के पुनीत आन्दोलनों की आड़ में चतुर, अनुकरणपरायण, राजनीतिज्ञों द्वारा अनेक ऐसे विदेशी अकल्याणकर सिद्धांत देश में प्रचलित किये गये जिनका वैदिक सिद्धांतों व आदर्शों से कोई सामञ्जस्य नहीं था। प्रारम्भ में उन्हें सहन किया गया, उनके प्रचार को न केवल रोका ही नहीं गया अपितु क्षणिक उद्देश्यपूर्ति का साधन भी बनाया गया। इस उपेक्षावृत्ति के कारण परिस्थिति एकाएक इतनी अधिक परिवर्तित तथा प्रतिकूल हो गई प्रतीत होती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति का उद्देश्य पूर्ण हो जाने पर आर्यपुरुष अपने आपको उपेक्षित तथा अवांछनीय परिस्थिति में अनुभव करते हैं। न केवल उनके हाथ से नेतृत्व ही निकल गया अपितु देश का वातावरण वैदिक धर्म व आर्य संस्कृति के भी प्रबल विरुद्ध हो गया प्रतीत होता है।

स्थिति यह है कि इस समय संस्था के रूप में आर्य समाज का आत मन्द प्रतीत होती है अतः कभी २ निराशा जनक बातें भी सुनाई देने लगती हैं। अनेक जोशीले आर्यपुरुष राजनीति के चमक दमक वाले क्षणिक आकर्षण से प्रभावित होकर आर्यसमाज को भी राजनीति में भाग लेने का परामर्श देते दिखाई देते हैं। आर्य समाज के नेताओं और विचारकों ने अनेक बार बहुत समय तक इस पर विचार किया है और वे अन्त में इसी निर्णय पर पहुंचे हैं कि सामूहिक रूप से आर्य समाज को प्रचलित राजनीति में भाग न लेना चाहिये। क्षण २ में सिद्धान्त परिवर्तन कर लेने वाली राजनीतिक संस्थाओं के समान आर्य समाज क्षणिक संस्था नहीं है—उसका उद्देश्य सर्वतोमुखी, बहु व्यापी तथा स्थायी रूप में सांस्कृतिक है।

आर्य पुरुषों के सन्मुख एक विशेष समस्या यह आ खड़ी हुई है कि भारतीयों पर पश्चिमीय अवैदिक आचार विचार, रहन सहन शिक्षा दीक्षा तथा आप्राकृतिक सिद्धांतों का इतना गहरा प्रभाव पड़ चुका है और देश की मनोदशा लगभग ठीक उसी स्थिति पर पहुंच गई प्रतीत होती है जो कि ऋषि दयानन्द के आगमन के समय से पूर्व थी। इस स्थिति का ठीक २ अनुमान विदेशी अंग्रेज राज में भी न हो पाया—उस समय हुआ जब कि अपने देश का भविष्य निर्माण हम स्वयं करने लगे और अपने अनुभव विरुद्ध आदर्शों के परित्याग के लिये कटिबद्ध हुये।

दौर्भाग्य की बात यह है कि महात्मा गांधी जी जैसे सात्विक भारतीय वेश भूषा, सब भारतीय आदर्शों के प्रतीक प्रभावशाली महापुरुष का अपने आपको अनुयायी कहने वाले जिन राजनैतिक नेताओं के हाथ में देश की बागडोर इस समय है वे 'हिन्दी' के स्थान में 'हिंदोस्तानी' उत्तम आर्य संस्कृति के स्थान में अकबर की 'हिंदुस्तानी संस्कृति', नैसर्गिक रूप से विकसित होने वाली स्वाभाविक समाज व्यवस्था के स्थान में रूस की 'नवीन व्यवस्था' लादने में कटिबद्ध हैं। यह देखकर अनेक आर्य पुरुष हतबुद्धि हो गये हैं।

क्या किंकर्तव्य विमूढ़ होने से कुछ हो सकेगा? यदि थोड़ा सा भी स्थिर होकर गम्भीर विचार किया जावे तो शीघ्र ही ज्ञात होने लगेगा कि निराशा का कोई कारण नहीं है। परिस्थितियों की दशा शनैः २ से उनके अनुकूल हो रही है। नवीन २ कानून तथा चुनावों की उत्तेजना अलक्षित रूप में धीरे २ शांत हो रही है। जनता की असंतुलित मनोदशा में स्थिरता आ रही है। वस्तुत देश इस समय एक ऐसे चौरस्ते पर खड़ा है जहां से दिग विपथगामी होने पर वर्ग संघर्ष आदि द्वारा अशान्ति के गर्त में भी गिर सकता है और प्राचीन आर्य आदर्शों का ग्रहण कर शांति का मार्ग भी स्वीकार कर

सकता है। यही समय आर्य पुरुषों के कार्य उत्साह से करने का है।

शर्त यह है कि उन्हें अपने सिद्धान्तों का ठीक २ ज्ञान हो, उनमें विश्वास हो, कार्य प्रणाली पर भरोसा हो कार्यकर्त्ताओं में चरित्र हो तथा सबसे अधिक सिद्धान्तों के युक्तियुक्त प्रतिष्ठा कर सकने की योग्यता हो

कहीं ऐसा तो नहीं है कि आत्म प्रतारणावश हम अपनी अयोग्यता को ढकने का यत्न कर रहे हों और व्यर्थ ही अन्यों पर दोषारोपण करते हों।

* * *

सम्पादकीय टिप्पणियां

अपराधी जातियों को स्वतन्त्रता

भारत में ऐसी अनेक जातियां हैं जिनका न तो अपना कोई निश्चित निवास स्थान है और न जीविका निर्वाह के लिये कोई साधन ही है। इनमें से कुछ जातियां अपने जीवन निर्वाह के लिये घूमती रहती हैं। इस प्रकार की जातियों में कुछ जातियाँ ऐसी भी हैं जिनके स्वभाव में चोरी आदि अपराध करना समाविष्ट हो गया है।

सरकार ऐसी जातियों को 'अपराधी जाति' घोषित कर सन्देह जनक व्यक्तियों को सामूहिक रूप से उन सुधार करने वाली केन्द्रीय संस्थाओं में निरुद्ध कर देती थी' जो कि विशेष रूप से इसी कार्य के लिये निर्माण की जाती थीं। ब्रिटिश सरकार ने इस प्रकार के अनेक उपनिवेश देश के विभिन्न स्थानों में स्थापित किये हुये थे जो भारत सरकार के १८७१ के कानून के अन्तर्गत सन्चालित होते थे।

१४ अगस्त को एक समाचार से ज्ञात हुआ है कि बम्बई सरकार ने अब इस प्रथा को समाप्त कर दिया है तथा अपराधी जातियों के परिगणन की व्यवस्था को हटा देने की घोषणा की है। इस घोषणा के परिणामस्वरूप शोलापुर के निकट उम्मेदपुर की औद्योगिक बस्ती में रहने वाले ४६०० पिछड़ी जातियों के व्यक्तियों को मुक्त कर दिया गया है। प्रतिरोध के प्रतीक रूप उनके निवास स्थान के चारों ओर लगे कांटेदार तारों को काट दिया गया है।

बाम्बे सरकार ने बम्बई के अपराधी जाति कानून को रद्द कर दिया है। इस आज्ञा के अनुसार हुबली बस्ती के ७०२, अहमदाबाद के २५४२ तथा प्रान्त के विविध स्थानों में नजर बन्द व्यक्ति और ५७१ व्यक्तियों पर से पुलिस का निरीक्षण हटा लिया गया है। इस आज्ञा के परिणाम स्वरूप २ लाख व्यक्तियों के ऊपर से स्वभाव जन्य अपराध का कलंक हट गया है।

सदिच्छा पूर्वक किये गये इस प्रतिबन्ध को हटाने का क्या परिणाम होगा, यह कहना कठिन है। स्थिति यह है कि सरकारी तथा प्रवक्ताओं द्वारा गत दो वर्षों से सम्बन्धित अंकों के प्रकाशन से अपराधों की अनेक गुणा वृद्धि में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता है।

अपराधों की वृद्धि तथा बढ़ती हुई अराजकता के कारण आतंक, आशंका व त्रास देश में अधिकाधिक बढ़ता ही जा रहा है। सर्वप्रमुख नेताओं व समाचार पत्रों का जनता के विचारों को अन्य दिशा में प्रवाहित करने का प्रबल आन्दोलन भी देश शक्तियां में बढ़ते हुये इस त्रास को न्यून करने में असमर्थ हो रहे हैं।

अपराध करने की प्रवृत्ति रखने वाली जातियों के बम्बई सरकार द्वारा एकाएक स्वतन्त्र कर देने का परीक्षण यदि हानिकारक सिद्ध नहीं हुआ तो अन्य प्रान्तों द्वारा भी इस परीक्षण का अनुकरण किया जाना उचित होगा।

आदर्श आर्य कर्मवीर

स्वर्गीय श्री ठा० खमानसिंह जी

[श्री पं० हरिशंकरजी शर्मा]

अत्यन्त दु:ख से लिखना पड़ता है कि आर्य्यसमाज के वयोवृद्ध सेवक तथा वैदिक धर्म के अनथक प्रचारक वयोवृद्ध श्री ठा० खमान सिंहजी का १५ अगस्त १९४९ ई० को प्रातः काल ८१ वर्ष की अवस्था में, उनके जन्म ग्राम औरंगाबाद पो० हरदुआगंज जिला अलीगढ़ में देहान्त होगया। ठाकुर साहब को अन्त तक होश रहा और उन्हें जरा भी घबराहट नहीं हुई। मृत्यु-शैया पर पड़े-पड़े अन्त समय तक सबसे यही कहते रहे कि "वैदिक धर्म-प्रचार का काम बन्द न हो।" मृत्यु से दो घंटे पूर्व ठाकुर साहब ने कहा था "अब इस फटे हुए चिथड़े को उतार कर नया चोला पहनना है।" जिस दिन ठाकुर साहब की मृत्यु हुई, 'स्वतन्त्रता-दिवस' था। एक दिन पहले वे 'राष्ट्रिय झंडा' फहराने की तैयारी कर रहे थे कि मृत्यु की घड़ी आ गयी और 'स्वतन्त्रता-दिवस' के प्रातः काल वे शरीर-बन्धन को त्याग कर सदा-सर्वदा को स्वतन्त्र हो गये। मृत्यु के समय ठाकुर साहब का सारा परिवार उनके समीप था। आपके ज्येष्ठ पुत्र मेजर डाक्टर महावीर सिंह [एम० बी०, बी० एस०, डी० टी० एम० और एच डी० पी० एम (इंग्लैंड) सिविल सर्जन] भी लश्कर से, अपने पिताजी की सेवा के लिये ग्राम पहुंच गये थे। बहुत चिकित्सा की, सेवा-शुश्रूषा में जरा भी कमी न की गयी। परन्तु प्रभु की इच्छा को कौन रोक सकता है—

"मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती—
कहता हूँ कि बेहुक्मे खुदा कुछ नहीं करती।"

ठाकुर खमान सिंह प्रसिद्ध समाज सेवी थे। वे बचपन में जैसे पक्के सनातनी एवम् शिव-उपासक थे, यौवन में वैसे ही सुदृढ़ आर्यसमाज प्रेमी तथा वैदिक धर्म्म-प्रचारक बने। अलीगढ़ तथा समीपवर्ती जिलों में घूम-घूम कर उन्होंने आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ किया कितने ही नवीन आर्यसमाज कायम किये। कदाचित ही उधर ऐसा कोई उत्सव होता था जिसमें वे जोत्साह भाग न लेते थे। जिस समय शुद्धि-आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ, अर्थात् अबसे कोई पचास वर्ष पूर्व तो ठाकुर साहब ने उसमें क्रियात्मक भाग लिया, यहाँ तक कि कुल और बिरादरी की बिलकुल परवा न कर शुद्ध हुओं के साथ अपने एक पुत्र का विवाह सम्बन्ध तक कर डाला। उस समय विवाह सम्बन्ध तो दूर रहा, शुद्ध हुओं के हाथ से पानी पीना भी बड़ी भयंकर बात समझी जाती थी। आपने अछूतपन निवारण में भी बड़ा योग दिया। अब से प्रायः ४५ वर्ष पूर्व श्री विरजानन्द साधु आश्रम की स्थापना में ठाकुर साहब ने स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज को यथेष्ट सहायता दी। बरौठा आर्यसमाज की किसी समय, युक्तप्रान्त भर में बहुत बड़ी ख्याति थी। उस ख्याति के मूल में ठाकुर साहब का ही हाथ था। वे ही उक्त समाज के वर्षों मन्त्री रहे थे। उन्हीं के मन्त्रित्व-काल में बरौठा समाज अपनी उन्नति के चरम लक्ष्य तक पहुँच गया था। आप प्रान्तीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान, अन्तरङ्ग सदस्य, और हरदुआगंज ग्राम के अधिष्ठाता भी कई वर्ष रहे। ठाकुर खमानसिंह बड़े कर्मठ थे। नित्य नियमानुसार सन्ध्या, हवन करते थे। स्वाध्याय का तो उन्हें व्यसन-सा था। सदैव सद्ग्रन्थों का अध्ययन करते रहते थे। उनका सैद्धान्तिक ज्ञान प्रशंसनीय था। वे बड़े अच्छे वक्ता और लेखक थे। घण्टों गम्भीर विषयों पर बोलते रहते थे। जहाँ ठाकुर साहब ने अपने धार्मिक और सामाजिक जीवन की उन्नति की वहाँ आर्थिक अवस्था को भी सन्तोषजनक रीति से सुधारा। कृषि कर्म ऐसी सुन्दर और सफल रीति से किया कि अचिर काल में ही वे लगभग एक लाख की चर अचर सम्पत्ति के स्वामी बन गये। दान देने में भी वे कंजूसी न करते थे। अपनी सन्तान को भी उन्होंने धार्मिक साँचे में ढालने का पूर्ण प्रयत्न किया। आपके ज्येष्ठ पुत्र मेजर डाक्टर महावीरसिंह सिविलसर्जन तो आर्यसमाज के रत्न हैं। वे जहाँ रहे आर्य्यसमाज का भला करते रहे। अब

(शेष दूसरे कालम में)

(दूसरे कालम का शेष)

वर्षों से लश्कर (ग्वालियर) में हैं। वहाँ के समाज के प्रधान हैं, और जनता में उचित रीति से आदर्श आर्य्य माने जाते हैं। आप विलायत भी हो आये हैं, परन्तु आर्यसमाज के प्रेम को आपने कभी क्षण भर के लिये भी विस्मृत नहीं किया। ठाकुर खमानसिंहजी महाकवि शंकर के अभिन्न मित्रों में से थे। एक बार कुछ दिनों के लिये दोनों मित्रों में कुछ मनो मालिन्य-सा होगया था परन्तु अति शीघ्रही वह दूर होगया और फिर दोनों व्यक्ति जीवन-भर परम मित्र बने रहे। ठाकुर साहब का जिद्दी स्वभाव जरूर था, वे अपनी निश्चित धारणा के विपरीत कुछ सुनने-सहने को कम उद्यत होते थे। यह कदाचित इस लिये था, कि वे कर्मवीर थे, क्रियात्मक कार्य करने के अभ्यासी थे, दूसरों की कोरी योजनाएँ उन्हें पसन्द न थीं इसलिए वे व्यर्थ की बातें सुनकर बिगड़ जाते थे। अस्तु, इन पंक्तियों के लेखक को ठाकुर साहब पुत्रवत् मानते थे। लेखक भी अपने पूज्य पिता के पूज्य मित्र के चरण छूकर अपने को धन्य समझता था। ठाकुरसाहब ने पूर्ण आयु प्राप्त की। वे धन-धान्य और परिवार से सम्पन्न थे। मरणोपरान्त उनकी कीर्ति और पुत्र रूप में भाई महावीर सिंह की देन उनके जीवन साफल्य की सबसे बड़ी विभूति है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

आर्यसमाज - संघ - और हिन्दुसभा

[श्री निरञ्जनदेव आयुर्वेदालंकार]

देश में इस समय अनेक विचार धारायें प्रचलित हैं। 'राष्ट्रीयता' व विशिष्ट 'संस्कृति' के आधार पर राष्ट्र निर्माण का विचार सर्वत्र देश में चल रहा है आर्य पुरुषों में भी 'आर्य' और 'हिन्दु' शब्द संघर्ष प्राय होता ही रहता है। लेखक महोदय 'हिन्दू' शब्द को 'धर्म वाचक' स्वीकार नहीं करते प्रत्युत राष्ट्रवाचक (जाति वाचक ?) संज्ञा स्वीकार करते हैं। केवल इस उद्देश्य से कि विचार के लिये सभी दृष्टिकोण उपस्थित हो सकें, प्रस्तुत लेख प्रकाशित किया जाता है। —सम्पादक

आर्य समाज के साथ 'संघ' और 'हिन्दू सभा' का नाम देखकर कुछ लोगों को आश्चर्य होगा, परन्तु यदि प्रोपेगेण्डा के दुष्प्रभाव से पृथक् रहकर विचार किया जाय तो ज्ञात होगा कि इन तीनों संस्थाओं में एक विशिष्ट समान विचार धारा भी प्रवाहित है।

आर्य समाज इन सब संस्थाओं में सब से प्राचीन संस्था है। इसके प्रवर्तक श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का यह मन्तव्य था कि भारत वर्ष आर्यों का आदि देश है, वे कहीं बाहर से नहीं आये। आर्य लोग यहीं उत्पन्न होकर यहीं फले फूले, यहीं उन्होंने अपनी सभ्यता, संस्कृति का विकास किया, और इसी देश पर किसी अज्ञात युग से उनका राज्य रहा है।

स्वामी जी ने वर्तमान हिन्दुओं को इन्हीं प्राचीन आर्यों का वंशज माना, और इस मत का प्रचार किया कि हम हिन्दुओं को अपने आपको 'आर्य' कहना चाहिए। इसी विचार से वर्तमान हिन्दी भाषा को भी उन्होंने 'आर्य भाषा' नाम दिया। आर्यों की धार्मिक विचार धाराओं का आदि स्त्रोत वे वेदों को मानते थे। संस्कृति,—प्राचीन काल के आर्यों की उन्हें अभीष्ट थी, और इतिहास परम्परा, स्वायंभुव आदि ऋषि मुनियों से लेकर, सम्राट् पृथवीराज पर्यन्त हिन्दू राजाओं की उन्हें मान्य थी।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द जी हिंदु समाज का,—हिन्दी भाषा—वैदिक धर्म-आर्य संस्कृति और प्राचीन आर्य जातीय इतिहास—परम्परा के आधार पर, आर्यावर्त (भारतवर्ष) में प्रतिष्ठित देखने के इच्छुक थे। वे भारत में राज्य भी आर्यों का ही स्थापित करनेके समर्थक थे।

स्वामी जी की इस विचार धारा को हम 'आर्य राष्ट्रीयता' की विचारधारा कह सकते हैं।

श्री स्वामी जी महाराज ने अपने मन्तव्यों का प्रचार करने के उद्देश्य से १८७५ ई० में आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने—"सब संसार का उपकार करना इस समाजका मुख्य उद्देश्य है"—इस सार्वभौमहित भावना को लेकर कार्य आरम्भ किया, परन्तु उनकी विशेषता यह रही कि "सब संसार का हित" उन्होंने, सब को 'आर्य' बनाने में ही अनुभव किया। स्वामीजी ने संसार को 'विश्व-मानवता' में आर्यों को विलीन नहीं होने दिया, प्रत्युत आर्यों की श्रेष्ठता को प्रमाणित करके, संसार के अन्य लोगों को 'आर्य' बन जाने के लिये आह्वान किया।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि स्वामी दयानन्द जी महाराज, हिंदुओं की सत्तानष्ट करके न तो उनका 'कास्मोपोलिटन' बन जाना पसन्द करते थे, और न उनका ईसाई—मुसलमान—पारसी आदि में घोलमेल ही उचित समझते थे।

यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेने की है, कि स्वामी जी की इस तथाकथित आर्य राष्ट्रीयता के अन्दर, किसी मुसलमान ईसाई आदि का तब तक समन्वय न हो सकता था, जब तक कि ये लोग, अपना धर्म और संस्कृति सभ्यता परिवर्तन करके 'आर्य' अथवा 'हिन्दु' रूप ग्रहण न कर लेते थे। यह भी स्पष्ट है कि स्वामी जी को हिन्दुओं का, वर्तमान 'हिन्दुस्तानी' रूप भी स्वीकार्य न हो सकता था।

यह एक विशिष्ट विचार धारा है जो स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों और उनके पत्र-व्यवहार आदि को पढ़ने से स्पष्ट विदित होती है। इस को जैसा कि प्रथम कहा जा चुका है—'आर्य राष्ट्रीयता' की विचार धारा कह सकते हैं। ईसाई मुसलमान आदि से—भाषा, धर्म, संस्कृति आदि के आधार पर हिन्दुओं को प्रथक् रखकर, उनका स्वतन्त्र रूप से अभ्युदय करना, इस विचार धारा का एक विशेष उद्देश्य दिखाई पड़ता है।

अब हम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर एक दृष्टि डालते हैं। संघ का जन्म डाक्टर केशव बलराम हेडगेवार के द्वारा सन् १९२५ ई० में उस समय हुआ जब भारत के राजनीतिक क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा प्रवर्तित कॉंग्रेस की—हिन्दुस्तानी' राष्ट्रीयता का बोलबाला था और हिन्दु-मुसलिम एकता का जोर था।

संघ 'हिन्दु' शब्द का आधार लेकर खड़ा हुआ। संघ ने भी स्वामी दयानन्द जी के समान हिन्दु (आर्य) को एक प्रथक् और स्वतन्त्र सत्ता के रूप में देखा यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि हिन्दु शब्द का, इस संस्था के सन्मुख, कोई राजनीतिक महत्व न था। हिन्दुओं का केवल सामाजिक संगठन करने के विचार से इस संस्था का बहुत सीमित सा कार्य क्षेत्र रहा। एक विशेष पद्धति के अनुसार नित्य, निश्चित स्थान पर एकत्रित होकर, हिन्दु समाज संगठन सम्बन्धी कुछ विचार करना, शारीरिक व्यायामादि करना और संगीत गाना इस संस्था का एक निराला कार्यक्रम है। ये लोग गेरूआ रंग के प्राचीन हिन्दुध्वज को अपनी पताका मानते थे। इस संगठन में भी—आर्य समाज की तरह—आज तक किसी मुसलमान ईसाई आदि के लिए कोई स्थान तब तक नहीं था, जब तक कि वह हिंदुसमाज में दीक्षित न हो लेता। सारांश यह कि संघ 'हिन्दु' शब्द को केन्द्र बनाकर, उसके चारों ओर एक विशेष परिधि में, अपने कार्यकलाप का सञ्चालन करता है। इस संस्था के स्वयं-सेवक सबके सब हिंदू होते हुये भी अपने को 'राष्ट्रीय' घोषित करते हैं।

आर्य समाज और संघ में सैद्धान्तिक समता केवल इतनी बात में रही कि दोनों का राष्ट्रीय आधार एक (आर्य या हिंदु) ही रहा। [अद्भुत बात यह है कि, राष्ट्रीय आधार की इस समता की तरफ किसी का ध्यान न जाता था। इसके विपरीत संघ और आर्य समाज, दोनों ही एक दूसरे को उपेक्षा से देखते रहे]

संघ ने जिस आधार को 'हिंदु' नाम दिया—आर्य समाज उसे 'आर्य' नाम से पुकारता चला आ रहा था। जिसे आर्य समाज 'आर्यावर्त' कहता था उसे संघ ने 'हिन्दु भूमि' नाम दिया। यह 'आर्यत्व' हो या 'हिन्दुत्व'—नाम भेद होने पर भी मूलतत्व एक ही था।

यहाँ हम इन दोनों संस्थाओं की भिन्न २ प्रवृत्तियों और प्रथक् २ कार्य क्षेत्रों की चर्चा नहीं कर रहे हैं।

तीसरी संस्था 'हिन्दु महासभा' है। इसका जन्म संघ से भी पूर्व सन् १९१३ ई० में हुआ। हिन्दु सभा विशुद्ध राजनीतिक संस्था थी। यह राजनीतिक क्षेत्र में 'हिन्दु' शब्द को लेकर खड़ी हुई। संस्था आरम्भ में हिन्दुसंरक्षण के कार्य में व्यस्त रही, और श्री विनायक दामोदर सावरकर के नेतृत्व में आने के पश्चात् जनता के सन्मुख विशेष रूप से आई।

श्री सावरकरजी ने 'हिन्दु राष्ट्रवाद' को जन्म दिया, और प्रबल युक्तियों द्वारा, स्पष्ट शब्दों में यह स्थापना की कि इस देशकी वास्तविक नेशन' (राष्ट्र) हिन्दु हैं अत 'हिन्दुत्व' ही यथार्थ राष्ट्रीयता है।

उनका मन्तव्य था कि शताब्दियों से इस देश की जो राष्ट्रीयता चली आ रही थी, वही आज भी रहेगी। विदेशियों के आ घुसने से, या बहुत भारी संख्या में बढ़ जाने से भी, राष्ट्रीयता यहाँ की नहीं बदल सकती। राजनीतिक उलझनों के स्थिर हल के रूप में उन्होंने 'राष्ट्रीयता' की तात्विक व्याख्या की और यह मन्तव्य रखा कि शताब्दियों से चली आ रही हिन्दुओं की एक जातीयता, एक प्रेरक भाषा, एक प्राचीन संस्कृति और एक ही इतिहास परम्परा को मानते हुए, जो लोग इस भारत देश को अपने पूर्वजों की भूमि और अपनी धर्म भूमि स्वीकार करते हों, वे 'हिन्दु' कहलायेंगे। इस तथ्य को हिन्दू सभा ने स्वीकार किया और घोषणा की कि वह इस देश में इसी प्रकार के 'हिन्दु प्रजातन्त्र' की स्थापना करना चाहती है।

इस प्रकार हिन्दु सभा स्पष्ट रूप से ही हिंदुत्व का आधार लेकर खड़ी हुई। यदि ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि आर्य समाज जिसे 'आर्य' नाम से प्रकट करता है संघ जिसे 'राष्ट्रीय' नाम देता और हिन्दु सभा जिसको 'हिन्दु' शब्द से पुकारती है वह मूल तत्व एक ही है।

इस उपर्युक्त—आर्यत्व (या हिंदुत्व) भावना को सर्व प्रथम श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने जन्म दिया। उन्होंने वेदों की शिक्षाओं के आधार पर आर्यों के वैयक्तिक सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के स्वतन्त्र विकास का संकेत किया। उनका 'आर्य' शब्द सरल, गौरव पूर्ण और प्राचीन होता हुआ भी बड़े गूढ़ अर्थों को छिपाये हुए था। मध्य-काल में श्री केशव बलराम हेडगेवार ने इसी भावना को संगठन के आन्दोलन द्वारा हिन्दु समाज में फैलाने का यत्न किया। वे भी हिन्दुत्व के आधार पर हिन्दुओं की स्वतन्त्र-संगठन-सत्ता के समर्थक थे। अन्त में श्री विनायक दामोदर सावरकर जी ने इसी भावना का राजनीतिक मंच से विस्तृत स्पष्ट और युक्तियुक्त प्रवचन किया तथा हिन्दुसमाज के राष्ट्रीय जीवन को इस भावना से भर देने का शंखनाद किया।

यदि यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने आर्य नाम लेकर और आर्यावर्त में 'आर्यों के चक्रवर्ती राज्य' की बात कह कर प्राचीन ऋषि मुनियों के समान एक गूढ़ सूत्र की रचना की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक श्री हेडगेवार ने उक्त सूत्र की सामाजिक व्याख्या की, और हिन्दु सभा के प्रति-

जंजीबार में आर्यसमाज का प्रचार

(ले०—कुंवर जोरावरसिंह)

अफ्रीका महाद्वीप के कीनिया व युगान्डा दो प्रदेशों में प्रचार करने के पश्चात् मैं वापिस स्वदेश गया और भारत में ५ मास रह कर पुनः अफ्रीका के टांगानिका प्रदेश में लौट आया। राजधानी दारेस्सलाम में २० भाषण दिये। २३ जून को विमान द्वारा मैं जंजीबार गया जहां जंजीबार के प्रसिद्ध आर्य बन्धु गोकुलदास रूघाणी के घर पर मुझे ठहराया गया।

जंजीबार ५० मील लम्बा व २० मील चौड़ा हरियाली से लदा हुआ हिन्दमहासागर में एक बड़ा ही सुन्दर द्वीप है। यहां का शासक एक अरब मुसलमान है जो कि सुल्तान कहलाता है। परन्तु सुल्तान तो नाम मात्र का है वास्तव में सारा राज्य प्रबन्ध अंग्रेजों के हाथ में है। जंजीबार के शासन में पेम्बा नाम का एक दूसरा द्वीप भी है जो कि जंजीबार से ६० मील दूर इससे कुछ ही छोटा है। इन दोनों द्वीपों में सारे संसार की लौंग की पैदावार का तीन चौथाई उत्पन्न होता है। यों तो यहाँ नारियल जायफल, काली मिर्च व काजू भी पैदा होते हैं परन्तु मुख्य उपज लौंग ही है। यहां का अधिकांश व्यापार भारतीयों के हाथों में है।

यहाँ के मूल निवासी हब्शी हैं। परन्तु अरब व भारतीय भी अच्छी संख्या में हैं। ढाई लाख की कुल बस्ती में से लग भग १६ हजार भारतीय हैं। जिसमें ६ हजार हिन्दू हैं। शेष खोजा बोहरा व अन्य मुसल्मान हैं। हिन्दुओं में कच्छ के भाटिया लोग अधिक हैं। सबसे पहले १७८४ ई० में मस्कत से सुल्तान सैयद बिन अहमद के साथ एक व्यापारी भाटिया पेठीही इस द्वीप में आई थी। ये भाटिया लोग सुल्तान के बहुत विश्वास पात्र थे तथा चुंगी व राज्य कोष का सारा ही प्रबन्ध इनके हाथों में था। सारे ही अफ्रीका प्रदेश में सब से प्रथम आने वाले यही भारतीय थे। और भारत की खोज में निकले हुए वास्कोडिगामा को यहीं पर एक गुजराती मांझी ने भारत का पता दिया था।

सारे संसार में बदनाम गुलामों के व्यापार का केन्द्र यही जंजीबार था। अफ्रीका तो उस समय नितान्त उजाड़ था। अफ्रीका के जंगलों से हजारों की संख्या में जंगली हब्शियों को पकड़ कर यहीं लाया जाता था और अमेरिका व अन्य देशों के दलालों के हाथों बेचा जाता था। इन गुलामों का मूल्य उस समय पशुओं से भी कम होता था। यह आप को इसी से पता चलेगा कि १८७० ई० में छोटे लड़के व लड़की का मूल्य १५ से २५ रुपये, बड़े स्त्री व पुरुष का मूल्य २५ से ९० रुपये तथा अरबी गधे का मूल्य ६० से १२५ रुपये था। स्त्रियों को खरीदते समय इस बुरे ढंग से उनकी जाँच की जाती थी कि किसी भी सभ्य मनुष्य का सिर लज्जा से झुके बिना नहीं रह सकता। मनुष्यता का कलंक वह गुलाम प्रथा आज संसार से मिट चुकी है परन्तु उन अत्याचारों की कहानियां आज भी आप को जंजीबार में सुनने को मिल सकती हैं। आप यह जान कर प्रसन्न होंगे कि जिस स्थान पर गुलामों का बाजार लगा करता था आज वहाँ पर आर्य्यसमाज मंदिर बना हुआ है जहाँ कि वेदमन्त्रों के गान से आकाश गूँजा करता है तथा विश्व कल्याण कारी ओ३म् ध्वजा फहराती रहती है।

जंजीबार द्वीप के जंगलों में यों तो कितने ही छोटे छोटे ग्राम हैं किन्तु बड़ा और राजधानी का नगर जंजीबार ही है। जिसका नाम इसी द्वीप के नाम पर रक्खा गया है। इसमें फिरते समय आप को यही प्रतीत होगा कि आप भारत के ही किसी नगर में आगये हैं। उसकी छोटी २ गलियाँ वृन्दावन की कुंजगलियों की याद दिलाती हैं। यहाँ आर्यसमाज का एक सुन्दर मंदिर है जहाँ कि प्रति शनिवार को साप्ताहिक अधिवेशन होता है। पहले तो एक आर्यकन्या पाठशाला भी आर्यसमाज के अन्तर्गत थी परन्तु कुछ समय से वह हिन्दू कन्या पाठशाला में मिलादी गई है। यद्यपि यह काम हिन्दू संगठन की दृष्टि से किया गया था परन्तु वह अभी तक हो नहीं सका। यहाँ के हिन्दुओं के परस्पर के परस्पर के वैमनस्य को देखकर हिन्दू जाति हितैषीका सिर लज्जा से न झुक जायगा।

आज से १० पूर्व यहां आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव था। उस स्वर्ण काल में यहाँ स्वामी स्वतंत्रानन्द जी, पं० चमूपति जी, महता जैमिनि जी, ठा० प्रवीण सिंह जी, पं० महारानी शंकर जी, स्वामी भवानी दयाल जी, प्रभृति विद्वान, आचुके हैं। गत दश वर्षों से भारत से यहाँ कोई भी प्रचारक न आने से आर्य समाज दिन पर दिन शिथिल होता चला गया है। भाटिया लोगों के विरोध के कारण भी आर्य समाज को बड़ा धक्का लगा है जो कि यहाँ बहु संख्यक होने के साथ ही प्रमुख व्यापारी भी हैं। वे लोग इतने कट्टरपंथी हैं कि इस बीसवीं शताब्दी में और दूर विदेश जंजीबार में भी किसी भी अन्य जाति के हिन्दू के साथ भी बैठकर भोजन नहीं कर सकते। इनमें से कई लोग थियोसोफिस्ट भी बनगये हैं परन्तु आर्य समाज जैसी विश्व कल्याणकारी संस्था की गंध भी इनको नहीं सुहाती।

जंजीबार में मैंने आर्य समाज हिन्दू मण्डल, सिक्ख गुरुद्वारा व हिन्दू महिला मण्डल के तत्त्वावधान में २० भाषण वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति, प्राचीन इतिहास, स्वतन्त्र भारत, हिन्दू संगठन व इनसे सम्बन्धित विषयों पर दिए। यहाँ के कार्यकर्ताओं ने बताया कि एक ही साथ लगातार इतने व्याख्यान देने वाला मैं पहला ही प्रचारक हूं। अधिकांश भाटियों के अतिरिक्त सभी हिंदू बिना किसी धार्मिक भेद भाव के बड़ी संख्या में व्याख्यानों में आते रहे। यद्यपि यहाँ की लगभग सभी हिन्दू जनता गुजराती भाषा भाषी हैं परन्तु हिंदी सभी समझ लेते हैं। अन्तिम दिन आर्यसमाज की ओर से मुझे मान-पत्र भी दिया तथा एक थैली भी। विद्यार्थिनी मण्डल की ओर से संगीत व नृत्य का प्रोग्राम भी रक्खा गया था। मुझ जैसे साधारण प्रचारक को भी इतना सम्मान तथा सहायता दी इसी से आप अनुमान कर सकते हैं कि यहाँ की जनता कितनी भावुक तथा प्रेमी है।

पेम्बा द्वीप के हिन्दू भाइयों के आग्रह पर मैं पेम्बा भी गया। यहाँ स्टीमर से जाना पड़ता है। स्टीमर सप्ताह में केवल एक ही बार आता और जाता है। कुल १० घण्टे का मार्ग है। मेरे साथ में जंजीबार आर्यसमाज के मन्त्री रघुनाथजी महता पेम्बा गये। पेम्बा के वेटे बन्दर पर जा कर हम लोग पहुँचे तो देखा कि वेटे तथा चाके चाके दोनों ही ग्रामों के प्रमुख हिन्दू बन्दरगाह पर स्वागतार्थ उपस्थित हैं। सारे ही द्वीप में उत्साह की एक लहर सी दौड़ गई थी। पेम्बा द्वीप के इतिहास में पन्द्रह वर्ष पूर्व केवल महता जैमिनि एक बार प्रचारार्थ गये थे और वह भी दो दिन के लिये ? अतः भूखों की तरह लोग भाषणों पर टूट पड़े। १०-२० मील दूर से लोग भाषण सुनने आते थे।

पेम्बा के ६ दिन के प्रवास में १५ भाषण दिये। वहाँ आर्यसमाज नहीं है। वेटे और चाके चाके वहाँ के दोनों प्रमुख ग्रामों में हिंदू मण्डल हैं। अतः हिंदू मण्डल के तत्त्वावधान में वेटे में ८ तथा चाके-चाके में ७ भाषण दिये। जिनमें दोनों ही ग्रामों में एक-एक भाषण हिंदू मुसलमान सबके लिये तथा दो - दो भाषण स्त्रियों के लिये गुजराती भाषा में दिये। क्योंकि

जी ने उस सूत्र का सच्चा राजनीतिक भाष्य उपस्थित कर दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्य-समाज, संघ और हिन्दू सभा, समान आधार पर खड़े होने वाले एक ही कोटि के संगठन हैं। भेद इतना कि जब कि आर्य समाज का क्षेत्र सर्व तो मुखी और सर्वव्यापी है।

यहाँ आकर स्वभावतः अनेक प्रश्न खड़े होते हैं। एक प्रश्न यह भी उठता है जब उपर्युक्त हिन्दुत्व आधार के कारण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को वर्तमान कांग्रेसी सरकार साम्प्रदायिक घोषित करती है, यहाँ तक कि उसे गैरकानूनी भी घोषित कर दिया गया और हिन्दुसभा को भी साम्प्रदायिक होने का फतवा प्रायः दिया जाता है, तब आर्य राष्ट्रीयता (या वर्तमान हिन्दुत्व) का आधार रखने वाला आर्य समाज भी 'साम्प्रदायिक' है या नहीं ?

आर्य समाज के सन्मुख यह गूढ़ प्रश्न है कि वर्तमान राजनीतिक युग में अब वह किस मार्ग पर चलना चाहता है ? स्वामी दयानन्द का आर्य या 'हिन्दु' राष्ट्रीयता का मार्ग उसे अभीष्ट है, या वह वर्तमान कांग्रेसी सरकार की इच्छानुकूल तथा-कथित कांग्रेसी नेताओं के 'हिन्दुस्तानी' राष्ट्रीयता के मार्ग पर बढ़ना चाहता है ?

★ ★

भंग अँग्रेजी हुई फिर भी उसे छानते

[श्री रणञ्जयसिंह युवराज-अमेठी राज्य]

दिल्ली में भाषा का विवाद हो रहा है किन्तु
सीधी सोही बात है सज्जन सभी जानते ।
नाम जब देश का है करते पसन्द हिन्द
भाषा तब हिन्दी क्यों न हिन्द की हैं मानते ।
नाम हिन्दुस्तान जब कदापि स्वीकार नहीं
हठ हिन्दुस्तानी भाषा की हैं वृथा ठानते ।
भारत भूमि त्याग चले गये अंग्रेज तब
भङ्ग अंग्रेज़ी हुई फिर भी उसे छानते ॥१॥
भारत दिव्य देश की भारती है भाषा भव्य
अथवा आर्य्यावर्त की आर्य्य भाषा मानिए ।
अरबी जैसे अरब की हिन्दी भी हिन्द की है
होकर "आज़ाद" पूर्ण रूप पहचानिए ।
गये अंग्रेज न अभीष्ट उनकी छत्र छाय
कृपया अंग्रेज़ों का न तम्बू अब तानिए ॥२॥

वहां की बहुत ही कम स्त्रियाँ हिंदी समझ सकती हैं। चाके चाके में अन्तिम भाषण के दिन लगभग सारे ही द्वीप के हिन्दू एकत्र थे। मुझे मान-पत्र दिया गया। सभा का बहुत आग्रह था कि मैं एक सप्ताह और ठहरूँ परन्तु आगामी सप्ताह का स्टीमर ही बन्द था और इस प्रकार दो सप्ताह ठहरना पड़ा। अन्त में जञ्जीबार लौट आया वहाँ से १८ जुलाई के विमान से दारेस्सालाम।

चाके चाके ग्राम की एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक है। लगभग आधा ग्राम थियोसोफिस्ट बन चुका था और पेम्बा के शेष हिन्दुओं को थियोसोफिस्ट बनाने की योजना थी। इसके लिये एक पारसी थियोसोफिस्ट प्रचारक उन्हीं दिनों वहाँ आये हुये थे। अतः थियोसोफिस्टों के सम्बन्ध में व्याख्यान देना पड़ा। जिसका परिणाम यह हुआ कि नया थियोसो-फिस्ट तो बना ही नहीं वरन् पुरानों में से भी कइयों ने अपने प्रमाण पत्र फाड़ फेंके। इस प्रकार एक अनिष्ट होते होते बच गया।

जंजीबार राज्य की ६ हजार हिन्दू जनता को नगण्य न समझना चाहिए क्यों कि यह भारतवर्ष नहीं है जहाँ कि करोड़ों हिन्दू हैं। जंजीबार जैसे सुदूर विदेश में इतनी संख्या बहुत मानी जाती है। इन सब भारतीयों की अपनी मातृ भूमि भारत के लिये तथा अपने धर्म का ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का पाठ जपने वाला आर्यसमाज व उसकी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा की विदेश प्रचार की ओर उपेक्षा इसी से ज्ञात है कि १० वर्ष में उसने एक भी प्रचारक वहाँ नहीं भेजा। और यदि कोई स्वतन्त्र प्रचारक वहाँ जाने का साहस भी करता है तो प्रोत्साहन देने के स्थान में भ्रमात्मक आक्षेप होने लगते हैं कि जनता से धन लेकर प्रचार करते हैं।

वहाँ की जनता दिन पर दिन अपनी सभ्यता संस्कृति व धर्म को भूलती जा रही है यदि शीघ्र ही ध्यान नहीं दिया गया तो बड़े अनिष्ट की आशंका है। वहाँ धन की कमी नहीं है, कमी है प्रचारकों की। यदि कोई प्रचारक वहाँ जाना चाहें तो उनका सब प्रबन्ध किया जा सकता है। क्या सार्वदेशिक सभा इधर ध्यान देगी?

यह विवरण मैं टांगानिका प्रदेश के म्वांज़ा नगर से लिख रहा हूं जो कि विक्टोरिया झील के तट पर बसा हुआ है। यदि पाठकों ने पसन्द किया तो अन्य लेख भी इस देश के विषय में भेजूँगा।

★ ★ ★

ज रचना (विधान निर्माण) अपने भारतीय संविधान के अनुप्राणित आदर्शों पर ही करनी चाहिये।

संघ का कार्य इसी संविधान और आदर्शों को व्यवहार में लाना था परमात्मा को हमारी परीक्षा लेनी थी और परीक्षा हो चुकने पर संकट चला गया। जो, थोड़ा कष्ट भोगा है उसे भूल जाना चाहिए। केवल अपने संयम और जनता के प्रेम को याद रखना चाहिए जिससे प्रतिबंध हटा। स्थानवत् पुरखुराने की प्रवृत्ति भूलकर शुद्ध भावना से ध्येय निष्ठा रखकर आगे बढ़ने से ही देश का हित होगा।

देश के विभाजन के कारण प्रायः एक करोड़ बंधु निराश्रित और विपन्न होकर हमारे पास आये। हम ३५ करोड़ आदमी इन एक करोड़ को क्यों नहीं आत्मसात कर सके, इनका पुनर्वास नहीं कर सके। इसलिये कि इनके दुःखों की चोट हमारे दिल में नहीं लगी। यदि हममें आत्मीयता होती तो ३५ करोड़ के लिये एक करोड़ को हजम कर लेना बड़ी बात न थी।

चारित्र्य को बढ़ाने से ही हम वह दिव्य ज्योति जगा सकेंगे जो सारे जगत को दिव्य प्रकाश दे सकेगी। तभी हम प्राचीन ऋषियों का यह वचन पूरा कर सकेंगे।

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वंस्व चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वे मानवाः।" अर्थात इस देश के मनीषी अपने पुण्य चरित्र से समस्त संसार को सदाचार की शिक्षा दें।

★ ★

पाकिस्तान की ढिलाई

९ महीने में केवल ३६५ स्त्रियां बरामद

नयी दिल्ली, ३१ अगस्त। भारत सरकार के कथनानुसार मई के अन्त तक भारत से १०९२१ अपहृत मुसलिम औरतें व बच्चे बरामद किये गये। इसके विपरीत पाकिस्तानसे ५८०१ गैर मुसलिम औरतें व बच्चे बरामद किये जा सके। पिछले ९ महीनों में तो पाकिस्तान अधिकारी केवल २६५ औरतें व बच्चे बरामद कर सके। ४० हजार ऐसे व्यक्तियों के नाम अब भी भारत सरकार के रजिस्टर पर चढ़े हुए हैं जिनकी पाकिस्तानमें छानबीन की जा रही है।

९ हजार अपहृत स्त्रियाँ व बच्चे अब भी ऐसी हैं जिनका पाकिस्तान में अब तक कुछ पता नहीं लग सका है।

सिंधके हिंदुओं की जमीनें हड़पने की मांग

कराची, ३१ अगस्त। सिन्ध प्रान्तीय मुस्लिम लीग की कार्य समिति ने कल एक प्रस्ताव कर प्रान्तीय सरकारसे यह मांग की है कि प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा ने मार्च ४९ में भूमि संग्रहण की रद्द करने के संबंध जो बिल स्वीकृत किया था उसपर पाकिस्तानके गवर्नर जनरल का शीघ्र हस्ताक्षर कराने का प्रयत्न करें। प्रस्तावमें कहा गया है कि हिन्दुओंने जो खेतीकी भूमि सिन्धमें छोड़ी है उसमेंसे अधिकांश उन्होंने अवैध ढंग से मुसलमानोंसे लेली थी अतः इसके लिए मुआवजा पाने के अधिकारी वे नहीं हैं।

टीटो विरोधी रूसी सेना जर्मनी से रवाना

बेलग्रेड, ३१ अगस्त। विश्वसनीय क्षेत्रों से समाचार मिला है कि रूमानिया और युगोस्लाविया की सीमा की ओर सोवियट रूस ने सेना और सैनिकविमान भेजना शुरू कर दिया है। आस्ट्रिया के पुरराष्ट्र विभाग के सूत्रों से आज बताया गया कि चेकोस्लोवाकिया की सीमा रक्षक सेनाओं ने आज चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया सीमा बन्द कर दी।

जनरल करिअप्पा आभूषित

नयी दिल्ली, ३१ अगस्त। आज सुबह एक विशेष समारोह में अमेरीका के राजदूत श्री लायहेंडरसन ने राष्ट्रपति ट्रूमन की ओर से निजी तौर पर प्रधान सेनापति जनरल करिअप्पा को "लीजन आफ मेरिट" की उपाधि से आभूषित किया।

आम चुनाव जनवरी तक समाप्त

कलकत्ता, ३१ अगस्त। पश्चिमी बंगाल सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि प्रांत में होने वाला आगामी आम चुनाव आगामी जनवरी के अन्त तक समाप्त हो जायगा।

चुनाव संयुक्त निर्वाचन के आधार पर होगा। केवल परिगणित जातियों के लिये स्थान सुरक्षित रहेंगे।

अधिकारी अध्यापकों का सम्मान करें

पूर्वी पंजाब सरकार का आदेश

शिमला, २९ अगस्त। पूर्वी पंजाब सरकार ने सरकारी अफसरों को यह आदेश दिया है कि अध्यापकों के साथ और विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापकों के साथ वे सम्मान और मर्यादा-पूर्ण व्यवहार करें। इसका उद्देश्य अध्यापकों का स्तर ऊंचा करना है।

पुलिस और माल विभाग के अधिकारियों को विशेष रूप से आदेश दिया गया है कि सामाजिक उत्सवों में समय समय पर प्राइमर और मिडिल स्कूलों के हेडमास्टरों तथा अध्यापकों को आमन्त्रित किया करें।

आवश्यक विज्ञप्ति

कुछ आर्य समाजों और प्रतिनिधि सभाओं की ओर से सार्वदेशिक सभा से यह पूछा गया है कि वे दूसरी संस्थाओं की प्रार्थना पर अपने भवनों का उनके अधिवेशनों के लिये दे सकते हैं या नहीं। श्री प्रधान जी ने इस विषय में यह आज्ञा दी है कि आर्य समाज आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध आर्य संस्थाओं की आर्य समाज के काम के लिये होने वाली मीटिंगस के लिये ही भवन देने चाहियें अन्य को नहीं। यह घोषणा अत्यावश्यक है क्योंकि आज कल के नैतिक तथा धार्मिक वातावरण में प्रायः समाजों के भवनों में होने वाले जल्सों को जनता भ्रम से आर्य समाज के अपने समझ लेती है और कभी २ यह भ्रान्ति सरकारी क्षेत्रों में भी हो जाती है जिसके दुष्परिणामों से बचने के लिये पीछे से अनावश्यक कष्ट उठाना पड़ता है। आशा है कि सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध समस्त आर्य समाजें और प्रतिनिधि सभायें इस पर विशेष ध्यान देंगी।

कुछ ऐसी संस्थायें हैं जो आर्य समाज के संगठन से सम्बद्ध नहीं हैं सभा के बलिदान भवन को अपनी मीटिंग के लिये मांगती हैं। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने अपनी ९-८-४९ की बैठक में निम्न निश्चय किया है।

(निश्चय संख्या १५)

विज्ञापन का विषय सं० १५ बलिदान भवन में बाहरी संस्थाओं की मीटिंगों की अनुमति दिये जाने पर विचार का विषय प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि आर्य समाज के संगठन से सम्बद्ध संस्थाओं की आर्य सामाजिक कार्यों के लिये होने वाली मीटिंगों को आज्ञा दी जा सकती है।

यह घोषणा भी अत्यावश्यक है जिससे जनता में सार्वदेशिक सभा के उद्देश्यों और कार्यकर्ताओं के प्रति किसी प्रकार की भ्रान्ति उत्पन्न न हो।

गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम०ए० मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

भारतीय 'लोक संघ' की स्थापना

भारतीय लोक संघ के प्रधान मन्त्री पं० बुद्धदेव विद्यालंकार राजस्थान के भ्रमणार्थ अजमेर गये हुए हैं। संघ का संक्षिप्त विधान एवं परिचय पत्र 'भारतीय लोक संघ क्यों ?' प्रकाशित हो गया है। जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक महानुभाव 'भारतीय लोक संघ पटौदी हाउस दरियागंज देहली' से यह परिचय पुस्तक मंगा सकते हैं। लोक संघ के प्रधान श्री स्वामी आत्मानन्दजी अस्वस्थ होने से पीड़ित हैं, अतः उनके स्थान पर पं० रामचन्द्र देहलवी उप प्रधान संघ अध्यक्ष कार्य सम्पादन करेंगे।

शाम दिवाकर 'हंस' मंत्री

दयानन्द सरस्वती कर्णवास-स्मारक

महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास का केस श्री राम बाबू सक्सेना की अदालत में आरम्भ हो गया है। यह स्थान दफा १४५ के अन्तर्गत कुर्क कर दिया गया है। ता० २१-८-४९ को आर्यसमाज की ओर से कर्णवास के दो वृद्ध ठाकुर मुकुन्दसिंहजी आयु ८० वर्ष और ठा० कुञ्जीलालजी आयु ८२ वर्ष आदि ४ गवाह लिये गये जिनका बयान है कि यह कुटिया आदि ऋषि दयानन्द के समय के हैं। मंत्री आर्यसमाज छिबाई तथा श्री डा० चन्द्रदत्त कौशिक कैप्टिन छिबाई निवासी जिनके बाबा ने इस स्थान के निर्माण कार्य में धन इत्यादि से योग दिया था की शहादत हुई। अन्य गवाही के लिए १७ सितम्बर निश्चित हो गई है। वकीलों ने निःस्वार्थ भाव से पैरवी की।

मोहनलाल मंत्री

नाहन सिरमौर में वेदामृत वर्षा

महात्मा खुशहाल चन्द्र "आनन्द" प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब ने स्वयम् पधार कर तथा अपने साथ पूज्य महता सावनमल वानप्रस्थी पं० गुरुदत्त स्नातक वेदालंकार तथा महाशय रामपाल मदनमोहन विमल भजन मंडली सहित १०-११-१२ जून को आर्यसमाज सराहां (पच्छाद) जि० नाहन और १३-१४-१५ जून दयानन्द हिन्दी पाठशाला नाहन में वेदामृत वर्षा की। १२ जून ४९ को महात्मा जी की प्रधानता में एक सार्वजनिक सभा भारत वर्ष नाम तथा आकाशवाणी रेडियो पर प्रति दिन वेदों की कथा किये जाने तथा राष्ट्रभाषा देवनागरी हिन्दी स्वीकार किये जाने तथा हिमाचल प्रदेश में देवनागरी वर्णमाला रखी जाने के प्रस्ताव पास किये।

गोविन्द सिंह, प्रचार प्रधान

आ० स० नवाबगंज (गोंडा)

१ प्रधान:—श्री मोहनलाल जी एम,ए.
एल, एल० बी, बीटी।
२ उपप्रधान:—श्री रुद्रदेव जी वैद्य।
३ मन्त्री:—श्री शिवकुमार लालजी।
४ उप०मन्त्री—पं० देवदत्तजी।
५ कोषाध्यक्ष—श्री व्रजराजशरण जी
सिद्धान्त शास्त्री।
६ निरीक्षक—श्री शिवनारायणजी।

भिवानी आर्य समाज

प्रधान—श्री ला० जौहरीमलजी आर्य, उपप्रधान—श्री ला० हनुमान दासजी म्यूनिसिपल कमिश्नर मंत्री श्री ला० मनीरामजी आर्य उपमन्त्री देवप्रिय डिलोढिया, कोषाध्यक्ष श्री ला० पूनमचन्द्रजी आर्य, निरीक्षक श्री ठा० फतेसिंहजी।

—आर्य समाज कटरा प्रयाग ने अगस्त ८ से १६ तक वेद-प्रचार-सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्मोत्सव बड़े उत्साह पूर्वक मनाया। प्रति दिन भजन तथा विद्वानों के व्याख्यान होते थे। ८ अगस्त—डा० बाबूरामजी प्रयाग विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग, ऋत और सत्य तथा मानव जीवन की उन्नति। ९ अगस्त म. बालमुकन्दजी 'वेदों की आज्ञापालन में ही हमारा कल्याण है। १० अगस्त डा० लक्ष्मीनारायण जी प्रधान वैदिक जीवन का महत्व। ११ अगस्त डा. सत्य प्रकाश जी विज्ञान विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय, वेदों का वैज्ञानिक अध्ययन, १२ तथा १५ अगस्त डा० सत्य प्रकाश जी, विज्ञान विभाग, प्र. वि. वि. वेदों का वैज्ञानिक अध्ययन। १३ तथा १४ अगस्त—प. रघुवर मिट्ठूलाल शास्त्री, संस्कृत विभाग प्रयाग विश्व विद्यालय — वेदों का रहस्य

—आर्यसमाज हालू बाजार भिवानी स्थापित की गई और निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये श्री शिवकरण दास जी प्रधान, केशव दास जी सभा मन्त्री, गोकल चन्द जी कालड़ा उप मन्त्री, देवराज जी मल्होत्रा निरीक्षक

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज सिकन्दरपुर (अलीगढ़) श्री ठा० रामानसिंह जी ओरङ्गाबाद (अलीगढ़) के निधन पर शोक प्रकट करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—सरदारसिंह मंत्री

वेद प्रचार सप्ताह

श्री आर्य समाज टिकार (हरदोई) ने ता० ८ अगस्त से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े समारोह से मनाया। श्रावणी के दिन प्रथम यज्ञ हुआ। करीब ७०० स्त्री व बच्चों का जुलूस ओ३म् के झन्डे के साथ निकाला गया। जुलूस में अत्यन्त उत्सव था। तदनन्तर सभा की गई जिसमें ठा० बलवन्तसिंह आर्य व गंगासिंह आर्य व मौलवी दिलदार हुसेन के बड़े उपयोगी विषयों पर प्रभावशाली भाषण हुये।

—आर्यसमाज कर्णपुर इस में श्रावणी पर्व तारीख ८ अगस्त, वेदप्रचार सप्ताह ९ से १६ अगस्त तक, जन्माष्टमी पर्व १७ अगस्त तक समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातः सामूहिक यज्ञ, यजुर्वेद की कथा होती रही। जन्माष्टमी पर्व पर्व पद्धति के अनुसार मनाया गया।

—गढ़वाल आर्य समाज देहली की ओर से श्री प. महेश प्रसाद जी जोशी डिमाल के अध्यक्षता में गढ़वाल भूमि पंच-कुइया रोड में ८ अगस्त से १७ अगस्त १९४९ तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम धाम से मनाया गया। श्रावणी पर्व (रक्षाबन्धन) के दिन श्री दिवानचन्द जी का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। हैदराबाद के अमर शहीद वीर सत्याग्रहियों के प्रति श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गई। श्री कृष्णचन्द्र जी के जन्मोत्सव पर महान यज्ञ किया गया।

श्री बनवारीलाल चौहान उ मंत्री

आवश्यक-सत्याग्रह

ज्ञात हुआ है कि डी ए वी कालेज कानपुर के छात्रावास में एम० ए० के छात्र श्री शङ्करदेव जी वेदालंकार १ सितम्बर से अनशन कर रहे हैं। उन्होंने कालेज के अधिकारियों से मांग की है छात्रावास के प्रत्येक भोजनालय को हरिजनों के लिये खोल दिया जाय। इनके जन्म से हरिजन होने के कारण ही उनको वहाँ सायं तक एक भोजनालय में साफ़ न की गई तथा छात्रावास के लग भग १५ भोजनालयों में से केवल एक सिंधी के भोजनालय में ही श्री शङ्करदेव जी भोजन कर सकते हैं। अन्य भोजनालयों के सभी पाचक उन्हें अपने यहां अन्य छात्रों के साथ भोजन खिलाना अस्वीकार करते हैं।

यह ठीक २ ज्ञात नहीं है कि यह भोजनालय वैयक्तिक व्यापार की दृष्टि से स्वतन्त्र है अथवा डी० ए० वी० कालिज के संरक्षण में है। ज्ञात ऐसा ही होता है कि ये भोजनालय स्वतन्त्र हैं परन्तु इतना होने पर भी डी० ए० वी० कालिज से इसके सम्पर्क की सम्भावना की जाती है। उससे वहाँ के अधिकारी अपने प्रस्ताव को प्रयोग में लाकर इस समस्या का हल कर सकते हैं। आशा है वे उचित व्यवस्था कर देंगे ताकि आर्यसमाज पर किसी प्रकार का कलङ्क न लगे।

आवश्यक सूचना

श्री प० [illegible] जी सिद्धान्त भूषण उपदेशक, श्री पं० मुकुन्दराम जी शर्मा, श्री पं० रघुवरदत्त जी शर्मा भजनोपदेशक, आपके आर्य समाज में प्रचारार्थ पधारेंगे—आप उनके प्रचार का प्रबंध कीजिये—तथा वेदप्रचार, मार्गव्यय, शुद्धि, शिक्षा [illegible], गुरुकोटी [illegible] इन्हें देकर सभा की मन से सहायता कीजिये। उक्त महानुभाव निम्न लिखित जिलों में कार्य [illegible] कर रहे हैं—जिला, बरेली, पीली भीत, नैनीताल, अलमोड़ा, बदायूँ, शाहजहाँपुर। धर्मपाल विद्यालंकार

आगरा नगर आ० स० समाचार

आर्यसमाज आगरा नगर में ता० १-८-४९ को एक [illegible] नामक मुसलमान की शुद्धि की गई। वह १५ वर्ष पूर्व मुसलमान हो गये थे। आर्य नाम रामसिंह रक्खा गया।

ता० ८ से १६ अगस्त, तक वेदप्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया श्री पं० सुरेन्द्र जी आर्य गौर की वेद की कथा होती रही।

ता० ६ अगस्त को श्री पं० दामोदर [illegible] जी औंध जिला सितारा का एक [illegible] भाषण हुआ।

मोहनलाल आर्य

आर्य समाज सोरा

समाज में वैदिक सप्ताह बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री स्वामी भूमानन्द जी की कथा हुई। १५ ता० को "हिन्दी ही राष्ट्र भाषा होनी चाहिये" विषय पर निबन्ध पढ़े गये। विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया गया। तथा श्री हरिप्रेमजी शर्मा संयोजक की अध्यक्षता में विद्यार्थियों का प्रतियोगिता संपन्न हुआ। —मन्त्री

—आर्य-विवेक आश्रम में वेद कथा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ८ अगस्त से १६ अगस्त तक अथर्ववेद की कथा एक मास तक होती रही। कथा स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने की। आर्यविवेक आश्रम कैलाश तट ग्राम [illegible] प० [illegible]—बरेली।

सिटी आर्य्य समाज लखनऊ ५५वां वार्षिकोत्सव

विजया दशमी के पुण्य पर्व पर १, २, ३ और ४ अक्टूबर १९४९ को अमीनुद्दौला पार्क में बड़े समारोह के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है। आर्य सम्मेलन, शुद्धि प्रचार सम्मेलन, [illegible] सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं पुरुषार्थी सम्मेलन होंगे। श्री महात्मा खुशहालचन्द्र जी 'आनन्द' श्री पंडित रामचन्द्र जी देहलवी, श्री कुंवर [illegible], श्री [illegible]सिंह जी भजनोपदेशक, पधारेंगे।

—वीरसेन आर्य मंत्री।

बिहार प्रां० आर्य प्रतिनिधि सभा का २१वां वार्षिक अधिवेशन

पटना १० अगस्त। बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का २१ वां वार्षिक अधिवेशन बांकीपुर, पटना में समारोह सहित श्री [illegible] सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञ तथा प्रार्थना के पश्चात ९ बजे से अधिवेशन आरम्भ हुआ जिसमें प्रान्त के आर्य समाजों के प्रायः ३०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। हिन्दी तथा नागरी को राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्र लिपि बनाने देश का नाम भारत वर्ष रखने तथा विदेशों में सांस्कृतिक दूत भेजने आदि के विषय में प्रस्ताव स्वीकृत हुए सभा का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ प्रधान श्री [illegible]नन्दन सिंह जी। उप प्रधान श्री [illegible] वकील आ [illegible] नारायण एडवोकेट श्री प० [illegible] शर्मा [illegible] श्री [illegible], [illegible]। प्रधान मंत्री श्री प० वासुदेव शर्मा जी मंत्री श्री प० बदरी नारायण शर्मा बी.ए. श्री इन्द्र देव नारायण वकील श्री कुंवर सिंह जी तथा श्री रामप्रसाद जी।

विरजानन्द वैदिक संस्थान ज्वालापुर को दान

—श्री मनोहर लाल [illegible] दीन [illegible] डावरी [illegible] उज्जैन ने अपनी जमीन नम्बर नः २१६ सी: वाके बाजार महाराज वाड़ा वार्ड उज्जैन है जिस का क्षेत्र फल ६४०८ मुरब्बा फिट या ०४६ मुरब्बा गज होता है स्वामी [illegible] जी की प्रेरणा से दयानंद [illegible] आश्रम बनाने के लिये दान कर दी है रजिस्ट्री करादी है। मनोहर लाल [illegible] दीन [illegible] कुटी उज्जैन।

काशी राज्य युक्तप्रांत में मिलेगा

काशी नरेश और श्री मेनन में सब बातें तय हो गयी

नयी दिल्ली, २७ अगस्त। पता चला है कि आज सुबह भारत सरकारके रियासती विभागके सलाहकार श्री वी. पी. मेननसे मिलकर काशी नरेशने काशी राज्य के युक्तप्रांत में शामिल होनेके सम्बन्धमें सभी बातें अन्तिम रूपसे तय कर ली हैं।

आशा है कि काशी नरेश बम्बई जाकर सरदार वल्लभ भाई पटेल से भेंट करेंगे और विलय पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे।

युक्तप्रांतीय कांग्रेस कमेटी का आदेश

कानपुर, २८ अगस्त। पुरुषोत्तमदास टंडन की अध्यक्षता में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस जनों को आदेश दिया है।

सरकार को दिये गये सहयोग के आश्वासन को कार्यरूप में परिणत करने के लिये (१) सप्ताह में एक दिन उपवास करो। (२) अनाज की फिजूल खर्ची न होने दो। (३) मोटा अनाज खाओ। (४) और जितने भी जमीन मिल सके उसमें सब्जी आदि पैदा करो।

—श्री आर्यसमाज टिकार जिला हरदोई—प्रधाना श्रीमती चन्द्रकांता देवी, उप प्रधान-श्रीमती गायत्री देवी मंत्रिणी श्री बेटा [illegible] कुमार उप मंत्रिणी—श्रीमती [illegible] देवी, कोषाध्यक्षा—श्रीमती जमुना देवी, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती [illegible] देवीजी, निरीक्षक श्री [illegible]सिंहजी।

[illegible] में आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक ११।८।४९ को आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर की ओर से महोपदेशक पं० [illegible]जी [illegible] निवासी का ३ दिन तक वैदिक संस्कृति पर व्याख्यान हुआ। फल स्वरूप आर्यसमाज की स्थापना हुई। निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—[illegible]जी वर्मा, उपाध्यक्ष—सेठ [illegible] जी [illegible] रामजी चौधरी, मंत्री—पं० [illegible] दासजी आर्य, उपमंत्री सेठ [illegible] प० [illegible] जी पारीक, कोषाध्यक्ष—[illegible] [illegible], निरीक्षक—वैद्यराज पं० [illegible] शास्त्री आयुर्वेदाचार्य।

[illegible] आर्य मन्त्री

मध्यप्रांत धारासभा में अंग्रेजी समाप्त

नागपुर २६ अगस्त। मध्यप्रांत और बरार प्रांतीय धारा सभा के सदस्यों को धारा सभा विभाग की ओर से एक गश्ती चिट्ठी भेजकर यह सलाह दी गयी है कि वे हिंदी या मराठी में ही प्रश्न करें। अंग्रेजी में किये गये प्रश्न स्वीकार नहीं किये जायंगे।

प्रांतीय धारासभा का अगला अधिवेशन १२ सितम्बर से आरम्भ होगा। कहा जाता है कि धारासभा के ११२ में से कुल १२ सदस्य ऐसे हैं जो दोनों में से एक भी भाषा नहीं जानते। १५ अगस्त सन् ४७ से अध्यक्ष ने आदेश दे दिया था कि सारी कारवाई हिंदी या मराठी में ही होगी। पर अब तक सदस्यों को अंग्रेजी में प्रश्न पूछने की सुविधा थी हालांकि उनको उत्तर हिन्दी या मराठी में ही मिलते थे।

गोलवलकर नेहरुजीसे मिले

नयी दिल्ली, ३० अगस्त। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पर संघचालक श्री माधवके प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू से मिले और १५ मिनट बातचीत की। मुलाकातके बाद श्री गोलवलकर ने पत्रकारों से कुछ भी कहने से इन्कार किया। आपने केवल यही कहा कि आप कुछ समय बाद नेहरू जी से फिर मिलेंगे।

यह नेहरुजी से श्री गोलवलकर की पहली भेंट है।

हबसी गायक पर हमला

पीकस्किल [न्यूयार्क], २८ अगस्त। कल रात को यहाँ एक आमोद उद्यान में २ घंटे तक [illegible] का दंगा फसाद होने के फल स्वरूप ११ व्यक्ति घायल हो गये। यह दंगा कुछ भूतपूर्व सैनिकों द्वारा एक हबशी गायक पाल राबसन को रङ्ग मञ्च पर आने से रोकने के सिलसिले में हुआ था।

५ हजार की भीड़ ने जिसमें अधिकांश श्वेत थे; लाठियों पत्थरों तथा अन्य हथियारों से हमला किया। पर्दे को फाड़ डाला, कुर्सियों को आग लगा दी। बहुत मोटरें इस फसाद में उलट गयीं।

आवश्यक सूचना

इलाहाबाद कमिश्नरी तथा उन्नाव प्रान्त के आर्यसमाजों के मन्त्रियों को सूचित करता हूँ कि सभा की ओर से आर्यसमाजों में प्रचार तथा शिथिल समाजों के पुनर्जीवन के निमित्त [illegible] व उपदेशक नियत कर दिये हैं। [illegible] जो समाजें प्रचार कराना चाहें वह मुझे सूचित करें ताकि उचित प्रबन्ध किया जा सके। समाज को उचित है कि प्रचारकों का मार्गव्यय व भोजन तथा वेद प्रचार के लिये भी सभा को कुछ देने तथा दिलाने का प्रबन्ध करें जिससे सभा ऋणों के भार से सभा मुक्त रह सके। कानपुर, उन्नाव का आर्यसमाजों का निरीक्षण भी प्रारम्भ कर दिया है जिसकी तिथियाँ पत्र द्वारा सूचित की जा रही हैं।

विश्वम्भरनाथ तिवारी
सहायक मुख्याधिष्ठाता
आ० प्र० सभा यू०पी० (कानपुर)

साप्ताहिक 'आर्य'

रविवार २७ भाद्रपद २००६ विक्रमी, तदनुसार ११ सितम्बर १९४९ ई०

आर्य समाज का काया-कल्प

(१)

भारतवर्ष और विश्व का काया-कल्प हो रहा है। कांग्रेस और अनेक संस्थाएं भी अपना काया-कल्प-रूपान्तर करने की कोशिश में हैं। परन्तु आर्य समाज में इस प्रकार की कोई गति व आन्दोलन नहीं दिखाई देता। परिवर्तित स्थितियों में, आर्य शिक्षणालयों में प्रचार प्रणाली धन संग्रह प्रणाली में परिवर्तन की भारी आवश्यकता है। आर्य समाज के सगठन में कई त्रुटियां हैं, जिनके कारण आर्य समाज का संगठन शिथिल हो रहा है। अनेक यत्न करने पर भी स्थानीय आर्य समाजों में दैनिक सत्संग भी मुश्किल से संगठित होते हैं। आर्य समाज की क्रान्तिकारी विचारधारा को राष्ट्र के बड़े भाग ने स्वीकार कर लिया है। इस दृष्टि से आर्य समाज का आकर्षण भी कम हो गया है। आर्यसमाज के सगठनको क्रियाशील और सचाई पर आश्रित बनाने के लिये आवश्यक है कि प्रारम्भिक सभासदों के शताश शुल्क देने के नियम को स्पष्ट और निश्चित किया जाय जिससे प्रत्येक सभासद उसका स्पष्टता और ईमानदारी के साथ पालन कर सके। वर्तमान समय में यह सचाई है कि अधिकांश सभासद एक दूसरे के सम्बन्ध में शताश शुल्क देने की सचाई के सम्बन्ध में अविश्वास प्रकट करते हैं। इस पारस्परिक अविश्वास को दूर करने तथा आर्थिक पवित्रता को कायम करने के लिये शुल्क की मात्रा ।) या ।।) प्रतिमास नियत हो जानी चाहिये।

इसके अतिरिक्त समाज के अधिकारी कौन व्यक्ति बन सकते हैं, इस विषय में भी परिवर्तन होना चाहिए। कम से कम जो व्यक्ति आर्य समाज का सभासद् तीन वर्ष तक रह चुका हो और स्वय हिन्दी, संस्कृत तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कर चुका हो उसे ही समाज का अधिकारी तथा अन्तरंग सभा का सदस्य बनाया जाना चाहिए। ऐसे सभासद् तथा अधिकारी ही आर्य समाज को प्रगतिशील संस्था बना सकेंगे। इस समय सार्वदेशिक सभा प्रान्तीय समाओं तथा स्थानीय समाजों के जो सगठन हैं वह परस्पर इतने असम्बद्ध हैं, या यह कह सकते हैं कि उनका परस्पर सम्बन्ध इतना शिथिल और ढीला है कि सब सगठन मिलकर किसी आन्दोलन का प्रबलता के साथ संचालन नहीं कर सकते। इस समय यदि देखा जाय तो आर्य समाज के संगठन में सब से कम प्रभावशाली तथा आकर्षक सगठन परोपकारिणी सभा तथा सार्वदेशिक का है। इसके मुकाबले में आल-इण्डिया कांग्रेस कमेटी का प्रभाव उसके आधीन संस्थाओं पर अनुकरणीय है।

आर्य समाज की प्रचार प्रणाली में—आश्रम मर्यादा की दृष्टि से परिवर्तन की आवश्यकता को हरेक अनुभव करता है। परन्तु इसके अतिरिक्त इस बात पर भी विचार करने की आवश्यकता है कि हमें केवलमात्र मौखिक प्रचार पर निर्भर नहीं होना चाहिए। जनता की आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक आवश्यकतों को पूर्ण करने के लिये भी कोई नया प्रोग्राम देश की परिवर्तित स्थितियों में बनाना चाहिए। आर्य समाज के नेताओं का अधिकाश सम्पर्क अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित था। उसे व्यापारी मजदूर किसान तथा ग्राम जनता के साथ सम्बद्ध करने के लिये हमें केवल शिक्षणालयों का ही सहारा नहीं लेना चाहिए। अपितु जनता के हरेक भाग की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये आर्य समाज क्या मार्ग प्रदर्शन करता है इसका भी प्रचार होना चाहिए। हम इस लेख माला में क्रमशः आर्थिक राजनैतिक और सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से आर्य समाज का प्रोग्राम क्या होना चाहिए, इस पर प्रकाश डालेंगे। —भीमसेन

हिन्दी गुरुमुखी समस्या:—अभी तक इसका कोई सन्तोषजनक समाधान नहीं हो सका है। अकालियों के स० करतार सिंह ज्ञानी ने घोषणा की है कि केन्द्रीय सरकार के मुख्य नेता इस प्रश्न का शीघ्र फैसला करेंगे और पञ्जाब का मन्त्रिमण्डल उसी के अनुसार प्रबन्ध करेगा। समाचार पत्रों में इस सम्बन्ध में जो भविष्य-वाणियां प्रकाशित हो रही हैं, उनमें पूर्वी पञ्जाब को भाषा के आधार पर गुरुमुखी पञ्जाब और हिन्दी भाषा भाषी पञ्जाब के रूप में विभक्त किया जायगा। साथ ही जहां ४० में से कम से कम १० विद्यार्थी हों—दोनों में से किसी एक भाषा को पढ़ना चाहें, उसके शिक्षण का भी प्रबन्ध किया जायगा। हिन्दी भाषा भाषी पञ्जाब में शिक्षा का माध्यम हिन्दी होगा और पञ्जाबी भाषाभाषी पञ्जाबमें गुरुमुखी पञ्जाबी। पटियाला पेप्सु यूनियन के अधिकारियों ने भी उसी प्रकार की नीति घोषित की है। हमारी सम्मति में यह व्यवस्था पञ्जाब में भाषा के आधार पर साम्प्रदायिकता का बीज बो रही है। गुरुमुखी लिपि सिक्खों की मजहबी लिपि है। इसे पंजाबी नहीं कहा जा सकता। गैर सिक्खों को गुरुमुखी पंजाबी पढ़ने के लिए बाधित करना साम्प्रदायिकता के सामने सिर झुकाना है।

इस सम्बन्ध में हम पूर्वी पंजाब के आर्य समाजों से बल पूर्वक कहना चाहते हैं कि वह अपने शिक्षणालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी को ही रखें। और अपने स्कूलों में पढ़ने वाले हरेक विद्यार्थी के लिये देवनागरी हिन्दी पढ़ना अनिवार्य आवश्यक रखें। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि माता पिता को चाहिए कि बालक के पांच वर्ष का होने पर उसे देवनागरी हिन्दी की वर्णमाला सिखाई जाय। तदनन्तर अन्य भाषाओं की शिक्षा दी जाय। आर्य घरों में देवनागरी शिक्षण का कार्य माता पिता को करना चाहिये, इसी प्रकार से आर्य स्कूलों मे भी प्रबन्ध होना चाहिए। जो लोग शुरू में गुरुमुखी पंजाबी पढ़ेंगे, उन्हें ऊपर की श्रेणियों में संस्कृत हिन्दी पढ़ने में भारी दिक्कत होगी। उनका उच्चारण भी भ्रष्ट और विकृत हो जायगा। जिस प्रकार प्रारम्भ में उर्दू पढ़ने वाले, आयु के अन्तिम भाग तक सन्ध्या हवन के मन्त्रों तथा संस्कृत का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते, उसी प्रकार से प्रारम्भ से ही गुरुमुखी पंजाबी के कारण उच्चारण दोष पैदा हो जायगा। इस दृष्टि से आर्य स्कूलों तथा आर्य कन्यापाठशाला के सचालकों को इस समय सरकारी सहायता के प्रलोभन में फंस कर अपने यहां किसी भी दशा मे हिन्दी शिक्षण को ढीला नहीं करना चाहिए। गुरुमुखी पंजाबी हिन्दी समस्या के राजनैतिक उद्देश्य से कई हल ढूंढ कर जनता के सामने उपस्थित किये जा रहे हैं। इन समाधानों से समस्या सुलझने के स्थान पर दिन प्रति दिन पेचीदी हो रही है। इस समस्या का एकमात्र हल यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में तथा सरकारी अदालतों तथा कार्यों में दोनों को समकक्ष स्थान दिया जाय। जो जिस भाषा में कारोबार व शिक्षण करना चाहे, उसे उसी में कार्य करने की सुविधा होनी चाहिए। तभी यह विवाद समाप्त हो सकता है।

सोमनाथ मन्दिर पर अपव्यय:—समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कर वहां फिर से लिंग मूर्ति का प्रतिष्ठान करने के लिये ३० लाख रुपया व्यय करने के लिये एक ट्रस्ट बनाया गया है। भारत की राजनैतिक पराधीनता का मूल कारण सोमनाथ मन्दिर है। यहां के पुजारियों ने हिन्दू देवताओं की निःसार पूजा द्वारा देश जाति को निर्बल बना दिया था। सोमनाथ मन्दिर के चारों ओर एकत्रित सम्पत्ति भोगवाद ने भारतीयों को पराश्रित और निस्तेज बना दिया था। स्वतन्त्र भारत में फिर से उस बुराई को पैदा करने की भूमिका बंध रही है। यदि यथार्थ दृष्टि मे हम सोमनाथ मन्दिर के स्थान को ऐतिहासिक दृष्टि से जनता की भावनाओं को उत्तेजित करने वाला बनाना चाहते हैं तो इस स्थान पर सैनिक महाविद्यालय व मिलिटरी कालेज स्थापित करना चाहिए। जहां सच्चे क्षत्रिय तैयार किये जायें जोकि भविष्य में विदेशों से होने वाले आक्रमणों को रोकने में समर्थ हों। यदि पौराणिक काल की भान्ति फिर से सोमनाथ मन्दिर में लिंग प्रतिष्ठा करके इसे मूर्तिपूजकों का मक्का बनाया गया तो आश्चर्य नहीं कि समयान्तर में यह फिर भारत की पराधीनता का कारण बनेगा। यह भी सुना है कि भारतीय सरकार के उप प्रधान मन्त्री इस लिंग प्रतिष्ठान समारोह में भी भाग लेंगे। लौकिक राज्य के अधिकारियों का इस प्रकार के साम्प्रदायिक समारोहों में भाग लेना कहां तक उचित है इस पर भी विचार करना चाहिए। जहां तक सौराष्ट्र और सोमनाथ के भूमि भाग की रक्षा का प्रश्न है। इसको सुदृढ़ बनाना ठीक है, परन्तु लिंग प्रतिष्ठान द्वारा सोमनाथ के मन्दिर को व्यक्ति पूजा भोगवाद का केन्द्र बनाना अनुचित है। जनता को चाहिए कि इसके विरुद्ध आवाज उठा कर वहां सैनिक शिक्षणालय और विद्या मन्दिर बनाने का आन्दोलन करे। —भीमसेन

पंजाब की भाषा और लिपि

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, दयानन्दमठ दीनानगर)

—गताङ्क से आगे—

इन छ गुरुओं की वाणियाँ हैं। इसी ग्रंथ में भक्तों की वाणिया भी हैं जैसे कबीर, परमानन्द, नामदेव, रविदास, मीरांबाई आदि। यह सब व णियाँ हिन्दी में हैं पजाबी मे नहीं हैं। कबीर आदि की वाणियाँ हिन्दी मे छपी हुई हैं जो भाषा उनकी वहाँ है वही ग्रथसाहिब में हैं। इस भाषा को सब हिन्दी ही मानते हैं। इस लिये श्री गुरुग्रथ साहिब में भी हिन्दी ही है। जैसी भाषा उनकी है वैसी ही छ गुरुओं की है दोनों सम होने से गुरुओं की भाषा भी हिन्दी ही है। जिस समय यह ग्रथ लिखा गया था उस समय सतों की भाषा हिन्दी ही थी। अत गुरुओं ने भी जो कुछ लिखा हिन्दी मे ही लिखा। जैसे लेखक की भाषा में अपनी प्रान्तीय भाषा की पुट होती है वैसी इस में भी है परन्तु भाषा पजाबी नहीं है।

दूसरा ग्रथ गुरु गोबिन्द सिंह जी का दशम ग्रथ है। इस की भाषा तो शुद्ध हिन्दी है। उन के पास जो ५२ कवि थे वह सब हिन्दी के लेखक थे। ज्ञानी ज्ञानसिंह जी ने "पथ प्रकाश" में लिखा है:—

वाणी दशम ग्रथ की भाई। आप रची गुर कुछ रचवाई॥
पर्व अठारह भ.रत करे। उपनिषदों पुराण बधरे॥
गोबिन्द गीता सहित उपदेश। इत्यादिक पुस्तक विशेष॥
सस्कृत ते हिन्दी भाषा। रचवाए गुरु रचे विलासा॥

ज्ञानी जी ने स्पष्ट लिखा है कि सस्कृत और हिन्दी भाषा लिखवाई गई है। इस लिए दशम ग्रथ शुद्ध हिन्दी ग्रन्थ है। इसके पश्चात् इतिहास ग्रन्थ भी सब हिन्दी भाषा में हैं। जिस की इच्छा हो, पन्थ प्रकाश, गुरुप्रताप सूर्य प्रकाश, गुरु विलास आदि पढ़ कर देख लें। हां तवारीख खालसा और भाई गुरदास दिया वारां पजाबी में हैं अतः सिक्खों की इस युक्ति में कुछ सार नही है। कारण यह कि उन के धर्म ग्रन्थ पजाबी नहीं हैं। इस के अतिरिक्त आर्यो के धर्मग्रन्थ मूल तो सस्कृत मे हैं। परन्तु उन की सब टीकाए हिन्दी में ही हैं। यदि किसी महानुभाव ने अपने स्वतन्त्र विचार प्रकट किये हैं तो वह भी हिन्दी मे लिखे हैं जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने "सत्यार्थ प्रकाश" हिन्दी मे लिखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी का कल्याण मार्ग तथा अन्य अनेक महात्माओं के ग्रन्थ हिन्दी मे प्रकाशित हुए हैं इसी प्रकार आर्यो का समस्त साहित्य सस्कृत और हिन्दी में ही है। जैसे सिक्ख अपने धर्म ग्रन्थ पढ़ने के इच्छुक हैं वैसे ही आर्यो के हृदय में भी अपने धर्म ग्रन्थों का स्वाध्याय करने की प्रबल इच्छा है। अत. सिद्ध हुआ कि दोनों के धर्म ग्रन्थ हिन्दी भाषा में हैं। इस लिए पजाब मे पजाबी न हो कर हिन्दी भाषा ही होनी चाहिए।

कई अन्य हेतु भी हिन्दी के पक्ष मे हैं —

१ पजाबी मे सब विषयों के लिए अपने शब्द नहीं हैं। उस को नवीन शब्द लेने पड़ेंगे और अनेक शब्द नवीन भी तैयार करने होंगे। इन नवीन शब्दों के विषय में विचार करना है कि वह फारसी से लिए जाए अथवा हिन्दी से। कोई यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि पजाबी मे फारसी के शब्द लिए जाए। फारसी विदेशी भाषा है इस का पंजाबी के साथ कोई मेल नहीं है। फारसी का व्याकरण पजाबी से सर्वथा भिन्न है। इस लिए सिक्खों को पंजाबी में हिन्दीशब्द लेने के सिवा अन्य कोई उपाय नहीं है। और नवीन शब्द बनाने के लिए पंजाबी में धातु ही नहीं जिन से नवीन शब्द बनाए जा सकें। सुतरां नवीन शब्द रचना में उनको हिन्दी का आश्रय लेना होगा। इस के सिवा और कोई मार्ग नहीं है। यह आज कल कई सिक्ख भी लिख रहे हैं कि पजाबी बिना हिन्दी के अकारथ है। जब यह दशा है तो हिन्दी को ही पजाब की भाषा स्वीकार कर लेना बुद्धिमत्ता है।

२. पजाबी में इस समय तक कोई साहित्य नहीं इस का प्रधान कारण यह है कि जो सिक्ख आज पजाबी की दुहाई दे रहे हैं उन्हों ने पजाबी के लिये कुछ काम नहीं किया। पंजाबी भाषा में कुछ किस्से मिल जाएगे उदाहरणार्थ पजाबी की सब से उच्च परीक्षा मे "हीरवारसशाह,, का होना ही सिद्ध करता है कि पजाबी साहित्य शून्य है। पजाबी में कोई भी विषय नहीं है। परन्तु हिन्दी में बी. ए.-ऐम. ए. तक सब विषयों का पाठ्य क्रम छपा हुआ है। इस लिए अति उन्नत हिन्दी भाषा का परित्याग करके ग्रामीण भाषा को ग्रहण करने में हानि अधिक है और लाभ कोई नहीं है।

३. पजाब के सिवा कई अन्य प्रान्त हैं जिन में हिन्दी भाषा प्रचलित है। वहा की धारा सभाओं ने हिन्दी स्वीकार करली है। जैसे कि विहार, संयुक्तप्रान्त, मध्य प्रदेश, राज्यस्थान आदि। इस के अतिरिक्त भारत वर्ष की राष्ट्र भाषा हिन्दी ही होगी अन्य कोई भ षा नहीं हो सकती। अन्य सब भाषाए संस्कृत और हिन्दी से मिलती हैं। फारसी से उनका कोई मेल नहीं है। उन की वर्णमाला, उच्चारण और लेखन आदि सब हिन्दी के समान हैं इस लिए वह प्रान्त आसाम, बम्बई, उत्कल और मदरास हिन्दी के पक्ष में हैं। अतएव भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होगी। हमें भी इसका अनुकरण करना योग्य है क्यों कि केन्द्रिय भाषा सब को सीखनी होगी। इस से ही सब काम चलेंगे। इस का त्याग नहीं हो सकता। पजाबी का त्याग करने में कोई कष्ट नहीं है। हिन्दी को अपनाकर हम देश के साथ रह सकेंगे पृथक् नहीं होंगे।

४. पजाबी भाषा हिन्दी का अपभ्रंश है इस लिये पंजाबी वालों को हिन्दी सीखना कठिन नहीं है। सिक्खग्रन्थों के लेखक हिन्दी के ही ज्ञाता थे। इस लिये इन्हों ने हिन्दी शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया है पंजाबी का शब्द भंडार अति अल्प है यदि यह कहा जाए कि पंजाबी कभी साहित्यक भाषा नहीं हुई है। यह केवल बोलचाल की भाषा रही है, तो इस में कोई अत्युक्ति नहीं है अतः पजाबियों का कर्तव्य है कि वह हिन्दी ही पढ़ें।

५. जन गणना के अनुसार भी पजाब की भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए जब पजाब का बटवारा हुआथा उससमय पजाबमे जनगणना इस प्रकार थी—

आर्य	सिक्ख
७५५०३७२	३७५७४०१

यह सख्या सन् १६४१ की जनगणना की है उसके पश्चात् १६ दिसम्बर सन् १६४८ के " वीरभारत" में छपा कि आर्यो की सख्या ६८–१ प्रतिशत और सिक्खों की ३०–४ प्रतिशत है। २७ सितम्बर सन् १६४८ के 'अजीत' में "चुनाव कमिश्नर" पूर्वी पजाब की जो रिपोर्ट छपी थी उस में —

आर्य	सिक्ख
७३२४६७२	३२००३८४

इस प्रकार सिक्ख लगभग $\frac{1}{3}$ हैं। इस से भी आर्यों की भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए पजाबी नहीं।

६. शिक्षा के आंकड़े इस प्रकार हैं—

सन्	भाषा	स्कूल से	प्राईवेट	सर्वयोग
१६४५	पंजाबी	१५७१	६१८	२१७६
,,	हिन्दी	४३३४	४७८६	१६२३
१६४६	पजाबी	१८५३	८३८	२६६१
,,	हिन्दी	५१६१	५२६७	१०४२८
१६४८	पजाबी	२६६०	७२८+७४२	३५२०
,,	हिन्दी	७६६०	३६६७+४५५१	१६१७८

(क्रमश)

एक धार्मिक गाथा:—

माता गार्गी का उपदेश

[ले०—श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज वैं०सा०आश्रम रायपुर(अब्दुल्लापुर)]

— गतांक से आगे —

★

यदि आप समय के सदुपयोग में इतनी सावधान न हों तो मैं बलपूर्वक कहूँगी कि आप को अवश्य ही सावधान होजाना चाहिये। कन्याओं का निरीक्षण मेरी अनुपस्थिति में उपाचार्या जी कर सकी थीं। वे विद्या, सदाचार और संयम की दृष्टि से एक ऊची महिला हैं। हमारे कन्या महा विद्यालय में वे ही अध्यापिकाएं रक्खी जाती हैं जो विद्या, सदाचार और नियन्त्रण की कला में प्रवीण हों। कन्याओं के जीवन का निर्माण ऐसी ही महिलाए कर सकती हैं। जीवन जैसी अमूल्य वस्तु को साधारण हाथों मे नहीं दिया जा सकता। ऐसी ही सुयोग्य महिलाओं के हाथ में कन्याओं का समर्पण कर मैं आश्रम से चल सकी हूँ और आप की सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर सकी हूँ।

सुनीति—माता जी हम बहुत दिनों से आप की कीर्ति सुना करती थीं। सौभाग्य से आज आप के दर्शनों से अपने आप को पवित्र कर रही हैं। हम अब ही विद्यालय से पढ़ कर निकली थीं कि आपके शुभ दर्शन हुए। मैं देख रही हूँ कि आप के केश हम लोगों के केशों से बहुत अधिक चमक रहे हैं। आपने न तेल लगाया है और न कघी पट्टी करके केशों को सजाया है। हा ये धोए हुए निर्मल अवश्य हैं। क्या कृपा कर बतलाएगी कि ये इतने क्यों चमक रहे हैं?

देवी—आज कल नगर के विद्यालयों की कन्याएं आत्मा, मन और बुद्धि के शृगार की अपेक्षा केशों के शृगार पर अधिक ध्यान देती हैं और सम्भवतः इस लिये आपकी दृष्टि प्रथम केशों पर ही गई है। पुत्री बाहर के तेल और शृगार की चमक केशों पर तभी तक रहती है जबतक वह सुरक्षित है। उस के सूखते ही वह बाहरी चमक समाप्त हो जाती है और फिर से शृंगार करना पड़ता है परन्तु अन्दर का तेज कभी सूख नहीं सकता और उसकी चमक से बाल सदा ही चमकते रहते हैं। उलझ जाने पर तेज लगाना और कघी से बालों को साफ कर लेना हम पाप नहीं समझते, परन्तु कई प्रकार के सुगन्धित तेल लगा कर और कई प्रकार की मांगें निकाल कर केशों को सजाना हम ब्रह्मचर्य के नियमों का भग करना समझते हैं। यह सजावट की भावना मन में उठती ही तब है जब कि उस में काम-वासना का उदय हो चुका होता है। छोटी छोटी बालिकाओं के बाल माताए दिन में दो दो बार ठीक कर देती हैं। परन्तु वे उन्हें फिर उलझा लेती हैं और अपने आप उनके ठीक करने का उन्हें कभी ध्यान ही नहीं आता देखा देखी भी कन्याए कई बार सजावट आरम्भ कर देती हैं और फिर वे शीघ्र ही वासनाओं का ग्रास बन जाती हैं। इस शृगार से स्वभाव से ही उन के मन में ये विचार काम करने लगते हैं कि लोग मेरे केशों को देखें और मेरी सराहना करें। ऐसा विचार आने पर वे स्वय भी दूसरों के शृगार को इधर उधर देखना आरम्भ कर देती हैं, और मन में वासनाओं का उदय होने लगजाता है ऐसी अवस्था में चाहे वे प्रयत्न से अपने शरीर को बचाए भी रक्खें परन्तु मन का बचाना असम्भव हो जाता है और रज रूपी अन्दर का तेल धीरे धीरे क्षीण होना आरम्भ हो जाता है। उस तेल की ही चमक थी जो केशों को चमका रही थी अब केश शुष्क होने लगजाते हैं, उन पर चमक नहीं रहती, और वृद्ध अवस्था से पहले ही सफेद होने आरम्भ हो जाते हैं। जो कन्याए शृगार नहीं करतीं न उन्हें यह इच्छा होती है कि उन्हें कोई देखे और न वे स्वय ही किसी की ओर देखने की चेष्टा करती हैं, वे नीची गर्दन किये हुए ही अपने निश्चित स्थान पर पहुच जाती हैं, इसलिए उनके मन मे कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, और अपने ब्रह्मचर्य व्रत की रक्षा करने में समर्थ हो जाती हैं। हमारे प्राचीन महर्षि मनोविज्ञान के इस अङ्ग को भली भान्ति जानते थे जो ब्रह्मचारी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त किया करते थे उन्हें देखने के लिए शीशा, बाल बाहने के लिए कघी, सिर पर बाधने का दुपट्टा और पैरों में पहनने को जूता आचार्य उस समय दिया करते थे, जब वे स्नातक होकर घर जाने लगा करते थे। इससे पहिले उन्हें किसी प्रकार का शृगार करने की आज्ञा नहीं हुआ करती थी। कन्याए भी जब स्नातिका हो कर घर आजाती थीं, विवाह की वेदी पर बैठ जाती थीं और पाणिग्रहण हो लेता था उस समय वर उनके ब्रह्मचर्य के समय से बधे हुए केशों के जूड़े को 'मुञ्चामि त्वा वरुणस्य पाशात्' (तुझे विद्या के लिए स्वीकार करने वाले आचार्य के बन्धन से खोलता हूँ) यह मन्त्र पढकर करते थे और उसी समय केशों को कघे से साफ कर केशों का शृगार किया करते थे। कन्या के ओढ़ने के लिए सुन्दर वस्त्रों का जोड़ा भी वर की ओर से उसी समय दिया जाया करता था। इस से पहले ब्रह्मचर्य व्रत के काल मे शास्त्र की दृष्टि से कन्याओं को किसी प्रकार का शृगार करने की आज्ञा नहीं होती थी। आप किसी विद्यालय मे पढ़ती है, ब्रह्मचारिणी हैं। मैं आप के केशों में सुगन्धित तेल की चमक और सुगन्धि देख रही हूँ। उन मे कई प्रकार की मागें खुली देख रही हूँ। मुख मण्डल पर निर्बलता की झलक देख रही हूँ और इसी लिए आप के भावी गृहस्थ आश्रम को दुख मय देख रही हूँ। मैं आप को कह देना चाहती हूँ कि यह निर्बलता आपने ऋषियों के नियत किए हुए ब्रह्मचर्य के नियमों को तोड कर खरीदी है। मैं बाल ब्रह्मचारिणी हूँ। आप ने मेरे केशों की चमक के कारण पूछे हैं। इसके कारण का निर्देश मैं कर चुकी हूँ यह उसी शरीर को प्रधान शक्ति रुपी तेल की चमक है जो ब्रह्मचर्य के कठोर नियमों का पालन करने से, कन्याओं के रज कोश में शक्ति के रूप में सञ्चित होती है, और अपनी चमकीली प्रभासे केशों को ही नहीं सारे शरीर को चमका देती है।

विमला—माता जी! आप की भुजाएँ तथा पिंडलियें गठी हुई हैं। छाती विशाल है, मध्य भाग अत्यन्त संकुचित है। क्या आप के शरीर की बनावट स्वभाव से ही ऐसी है अथवा आपने अपने शरीर का विशेष प्रकार के भोजन से ही निर्माण किया है। भोजन हम भी करती हैं परन्तु हमारे शरीर ढीले ढाले हैं। आप का शरीर मीलों चल कर इतने परिश्रमके बाद थका हुआ प्रतीत नहीं होता। परन्तु आप की तरह पहाड़ों पर चढ़ना तो दूर रहा हम तो सीधे मार्ग पर भी थोड़ी दूर चल कर हॉप जाती हैं। आशा है आप मेरे इस प्रश्न का उत्तर देकर अनुगृहीत करेगी

देवी—मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आपने यह प्रश्न किया। आपके इस प्रश्न का उत्तर मेरे जीवन की सारी पहेली है वे मातापिता पापी हैं जो निर्बल संतान को जन्म देते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन न करने से शरीर निर्बल हो जाता है। निर्बल शरीरों में वीर्य भी निर्बल होता है, क्यों कि इसी के निर्बल अथवा क्षीण होने से शरीर मे निर्बलता आती है। निर्बल वीर्य से प्रथम तो सन्तान पैदा ही नहीं होगी और होती भी है तो निर्बल होती है। जैसे कि निर्बल वृक्ष का बीज प्रथम तो उगता ही नहीं और उगता भी है तो उससे पैदा हुआ वृक्ष सूखा सड़ा और निर्बल ही होता है वह फलता फूलना नहीं और थोडे ही काल में सूख कर नष्ट हो जाता है। यह ही दशा निर्बल नर नारी की सन्तान की होती है। निर्बल

सन्तान सदा रोगी रहती है। वह माता पिता की सेवा करने के विपरीत उन के लिए भार और दुःख का कारण बन जाती है। इस प्रकार का गृहस्थ स्वर्गधाम नहीं नरक धाम बन जाता है। अब आप समझ गई होंगी कि कन्याओं की निर्बलता मे ऐसे स्थानों पर निर्बल माता पिता कारण हो जाते हैं। ऐसी कन्यायें भी यदि परिश्रम करें, तप करें और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें तो अपनी शक्ति को बढा सकती हैं।

यद्यपि ब्रह्मचर्य से प्राप्त हुई शक्ति के धनी माता पिताओं की सन्तान से इनका मेल नहीं हो सकता परन्तु फिर भी वे माता पिता से प्राप्त हुई अपनी निर्बलता को बहुत अंशों मे दूर कर सकती है ब्रह्मचर्य शक्ति के धनी माता पिता की सन्तानें भी यदि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करेंगी तो वे भी ब्रह्मचर्य के क्षीण हो जाने से निर्बल ढीली ढाली और रोगी ही होंगी। इन कन्याओं की निर्बलता मे माता पिता का कोई हाथ नहीं है इन्हों ने अपना सर्वनाश अपने आप किया है। कन्याओं के ढीली ढाली अथवा निर्बल होने मे मैंने दो कारण बतलाए हैं। एक माता पिता का अपराध और दूसरा अपना अपराध अब आप स्वय सोचले कि आपकी निर्बलता मे इन दोनों में से कौन कारण है।

अब मैं आप को अपनी जीवन कथा सुनाने लगी हूँ। इसी से आप को मेरे शरीर के गठन और शक्ति सग्रह के रहस्य का पता चल जाएगा एक बार हमारी आचार्या ने विद्यालय के धर्म शिक्षा-काल में एक मन्त्र पढ़ा था वह मत्र यह था—

उद्बुद्ध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना,
दीर्घायुत्वाय शत शारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी तथासो,
दीर्घत आयु सविता कृणोतु॥

(हे बुद्धि मती विदुषी देवियो सौ वर्ष की लम्बी आयु की प्राप्तिके लिए सावधान हो जाओ। घर मे जाओ तो ऐसी बन कर जाओ कि स्वामिनी कहला सको, तुम यत्न करोगी तो भगवान् तुम्हें अवश्य लम्बी आयु देंगे।)

इस मन्त्र को सुन कर मेरी आँखें खुल गई। 'हम अपनी आयु बढा सकती हैं' 'हम घर की स्वामिनी बन सकती हैं' वेद के ये सदेश उसी दिन मन के अन्दर गूजते सुनाई देने लगे 'हमें लम्बी आयु देने के लिए भगवान् को भी विवश होना पड़ेगा' इस सन्देश की छाप तो मन पर और भी गहरी पड़ी। बार बार यह प्रश्न सामने आने लगा कि वे कौन से शुभ कर्म हैं जिन के आचरण से हम इन शक्तिओं को प्राप्त कर सकेंगी मेरे साथ पढने वाली और भी बहनें थीं। उन्हों ने भी आचार्याजी के इस उपदेश को सुना था। परन्तु न जाने क्यों, उन्हों ने वेद के पवित्र मन्त्र की चर्चा ही नहीं की। सम्भव है उन्होंने इसे ध्यान से न सुना हो। कई देवियें उपदेशों को बोलने वाले के भाषण का ढग जानने के लिए सुनती हैं। इस उपदेश में हमारे काम की कौन कौन सी बातें हैं। इस चुनाव की ओर उन का ध्यान ही नहीं होता। ऐसी बहिनें उपदेशों में अपना समय नष्ट करने के लिए क्यों जाती हैं यह समझ में नहीं आता मैंने तो इस उपदेश को सावधान हो कर सुना था और उसी समय से मेरे हृदय पट पर लिखा हुआ यह मन्त्र मुझे अपनी थाह तक पहुँचने के लिए विवश कर रहा है। अपनी इस कामना को पूर्ण करने के लिए मैंने कोई यत्न उठा नहीं रक्खा। आचार्या जी के पास गई तो उन्हों ने भी —

आयुर्विद्या यशो बल प्रतिभान चान्ने प्रतिष्ठितम्। (आयु, विद्या, यश, प्रतिभा अर्थात् स्फुर्ति, ये सब अन्न मे प्रतिष्ठित हैं।) यह उपनिषद् का वाक्य पढ़ कर अपने उत्तर को समाप्त कर दिया। सम्भव है उन्हों ने यह सक्षिप्त उत्तर इसलिए दिया होगा कि मैं इस वाक्य का स्वयं मनन करूँ, और वह अन्न खोज निकालू जिससे आयु, विद्या, यश और बल बढते हैं, तथा प्रतिभा का प्रकाश मिलता है। इस मनन से मेरी बुद्धि पदार्थों का सार जानने की अभ्यासी हो जावेगी और तप तथा परिश्रम से प्राप्त किया हुआ वह पदार्थ मेरे अधिक आदर का पात्र होगा। हो सकता है उनका यह भी पवित्र भाव रहा हो, परन्तु आरम्भ में तो मेरे लिए यह उत्तर बुझौवल ही बना हुआ था। मैंने व्याकरण की दृष्टि से अन्न शब्द की उधेड़बुन आरम्भ की, यहां से भी मुझे 'जो खाया जाता है उसे अन्न कहते हैं' केवल यह भाव मिला इसके अतिरिक्त और कुछ न मिला। इस दूसरी बार के दृष्टिपात से मेरे हृदय में इस भाव का उदय अवश्य होगया कि जिस वस्तु को हम खाते हैं वह हमारे शरीर का अङ्ग बन जाने पर ही हमारा अन्न कहला सकती है। अब मैनें विज्ञान की दृष्टि से इस की खोज आरम्भ की। मनुष्य अपने अन्न को शास्त्रों की दृष्टि से ही जान सकता है। अपने अन्न को पचानने की उसमें स्वाभाविक शक्ति नहीं। शास्त्र अथवा कोई आप्त पुरुष उसे न बतलाये तो वह विष भी खा लेता है जो कि उसकी मृत्यु का साधन है प्रकृति देवी की गोद में उत्पन्न हुए वृक्ष और पशु पक्षी स्वभाव से ही अपने अन्न को पहचान लेते हैं। जहां वृक्ष का बीज डाला जाता है उस भूमि में अनेक वृक्षों का अन्न विद्यमान है परन्तु वह वृक्ष भूमि में से अपने अनुकूल अन्न को ही चुन चुन कर ग्रहण करता है दूसरे वृक्ष के अन्न को वहीं पड़ा छोड़ देता है एक ही भूमि मे बोए हुए नीबू नीम और गन्ना अपने अपने रस को ही भूमि में से ग्रहण करते हैं दूसरे के रस को नहीं। यदि इन में से कोई एक दूसरे के रस को खा लेता तो रोगी हो जाता और फिर उस अपने अन्न को भी उसने एड़ी से लेकर चोटी तक अपने सब अगों में फैलाने की और उसे उन अगों का अग बनाने की पूरी चेष्टा की है। वृक्षों की इस क्रियाको देख कर मुझे अपने अन्न को पहचानने का गुर मिल गया। अब मैंने इस प्रकार विचार करना आरम्भ किया। मेरे शरीर में वायु, पित्त और कफ ये तीन धातुएँ काम कर रही हैं। सब शरीरों में ये धातुएँ एक जैसी नहीं होतीं किसी शरीर में वायु, किसी में कफ और किसी में पित्त अधिक होता है। इस प्रकार इन तीनों की न्यूनता अधिकता के कारण शरीरों के स्वभाव भिन्न भिन्न हो जाते हैं। यद्यपि इन धातुओं को विज्ञान की दृष्टि से और भी कई भागों में बाटा जा सकता है। परन्तु मैंने इस मोटे नियम पर ही विचार किया और यह समझ में आगया कि ये तीनों धातुएँ मेरे शरीर मे जिस मात्रा मे हैं उसी मात्रा के अनुपात से बना हुआ अन्न मुझे खाना चाहिये।

वृक्ष जो कुछ खाते हैं उसे अपने शरीर का अंग बना लेते हैं। भगवान ने इस कार्य के लिए उन्हें स्वाभाविक प्राण शक्ति दी है। यह प्राण शक्ति मनुष्य को भी अपना अन्न पचाने के लिए चाहिए। उसे अपनी इस शक्ति को उन्नत रखने के लिए ब्रह्मचर्य, व्यायाम और प्राणायाम का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा किए बिना मनुष्य अपने अन्न को अपने शरीर का अंग नहीं बना सकता। इस विचार के सामने आते ही मैंने एक क्षण की भी प्रतीक्षा नहीं की। तत्काल ही अपना भोजन और उसका कार्यक्रम निश्चित किया और उचित व्यायाम तथा प्राणायाम आरम्भ कर दिये। वृक्ष आयु के लगभग चौथे भाग तक बिना फूल और फल के रहते हैं। वे इस अवस्था मे अपनी शक्ति का एक बिन्दु भी नष्ट नहीं होने देते।

(क्रमशः)

स्वास्थ्य के तीन स्तम्भ

(लेखक—श्री डा० रघुवरदयाल जी पैन्शनर अम्बाला छावनी)

"चरक" में स्वास्थ्य के ३ बड़े असूल वर्णन किये गये हैं —

त्रय उपस्तम्भा इत्याहारः,
स्वप्नो ब्रह्मचर्य इतिः।

स्वास्थ्य के ३ बड़े स्तम्भ अच्छा आहार, खूब गहरी नींद, व वीर्यरक्षा हैं।

१. अच्छा आहार

आहार में बहुत सी बातों का ख्याल करना पड़ता है, यह बलदायक हो, पुष्टिकारकहो, सात्विक हो पर सब से बढ़ कर यह कि आहार तामसिक न हो।

"तामसिक" आहार से रोग व शारीरक क्लेश पैदा होते हैं। इस की पहिचान गीता में श्री कृष्ण ने यूं की है—

यातयामं गतरसं, पूति-
पर्युषितं च यत् ॥
उच्छिष्टमपि चामेध्यं,
भोजनं तामस प्रियम्
(गीता-१७-१०)

अर्थात् "रक्खा हुआ (Preserved) जिस का रस सूख गया हो, बदबूदार, गला सड़ा और जूठा बासी आहार तामसिक लोगों को अच्छा लगता है"।

इस लिये डबल रोटी, बिसकुट, कुलचे, बासी रोटी, गले सड़े फल, जूठा भोजन यह सब खाद्य पदार्थ तामसिक हो जाते हैं।

घी दूध, मक्खन, मलाई, ताजा सब्जियां और फल सात्विक भोजन हैं।

इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य के लिये भोजन के सम्बन्ध में निम्न लिखित बातों का जानना भी अत्यावश्यक है।

१. भोजन नियत समय पर करें, जब जी चाहा खालेना और जो मिले खालेना रोगों को निमन्त्रण देना है।

२. खाने की चीजों को शुद्ध वस्त्र से या जाली से ढांप कर रक्खें। इस पर मक्खियां न बैठने दें।

३. भोजन शाला सुथरी, हवादार और रमणीय होनी चाहिये। जहां देखा वहीं खाना शुरु करदिया यह भी स्वास्थ्य के दृष्टि कोण से बुरा है। सुश्रुत में आया है—

भोक्तारं विजने रम्ये
निःसंबाधे शुभे शुचौ।
सुगन्धि पुष्प रचिते
सम देशेऽथ भोजयेत् ॥

भोजन करने वाले को विजने (एकान्त) रमणीय, सबाधे (बाधा रहित undisturbed) उत्तम और पवित्र जगह में जो सुगन्धी से भरी और फूलों से सजी हो और सम (हमवार हो) ऊँची नीची न हो भोजन करना चाहिये। इसी लिये चारपाई पर भोजन करना वर्जित है।

४. भोजन से पहिले हाथ धोलें/जूता पहिन कर भोजन न करें क्यों कि न जाने कितनी प्रकार के कीटाणु जूतों में लगे आते हैं।

५. जिन कपड़ों में शौच जावें उनको पहिन कर भोजन न करें—हो सके तो भोजन के समय के वस्त्र अलग हों तो अति उत्तम है।

६. भोजन हौले २ धीरज से खूब चबा २ कर करें। मीठी वस्तु को विशेष कर मुंह में अधिक देर रक्खें क्यों कि मिठास को थूक (Saliva) ही पचाती है। मिठास ही पचाती है। मिठास में थूक न मिले तो नीचे जाकर मिठास नहीं पचती।

७. भोजन के पीछे फलाहार बहुत उत्तम है।

८. इन सब बातों के लिये दांत मजबूत और साफ रक्खें।

६. व्यायाम व दौड़ कर आने के पीछे तत्काल भोजन करना स्वास्थ बिगाड़ता है।

१० अधिक खाने से थोड़ा खाना अच्छा है। भोजन को रुचिकर बनाने के लिये इस में परिवर्तन होता रहना चाहिए।

यह सिद्धान्त न भूलें कि "आहार शरीर के लिये है न कि शरीर आहार के लिये"।

२. गूढ़ निद्रा

गूढ़ निद्रा स्वास्थ्य का दूसरा स्तम्भ है। सुश्रुत के कथनानुसार-

भुक्त्वा राजवदासीत यावदन्नक्लमो गत.
ततः पदशतं गत्वा वामपार्श्वे सविशेत् ॥

अर्थात् भोजन करके राजा की भांन्ति विश्राम करे जबतक अन्न का भार (खुमार) महसूस होता रहे। जब यह हट जावे तो उठ कर सौ कदम टहले फिर बाईं करवट लेट जावे तो नींद खूब आवेगी।

अच्छी नींद के लिए मनुष्य को चिन्ता रहित (unworried) भी होना चाहिये और बहुत खा खा कर आमाशय फूला नहीं होना चाहिये। कविने कहा है—

चिन्ताअवाल शरीर में बिनदावा लगजाय
प्रकट धुआ नहीं देखिये उरधुआंभरजाए

३. ब्रह्मचर्य

सारे जग में देखलो ब्रह्मचर्य का मान
बल आयु आरोग्यता सर्वगुणों की खान
ब्रह्मचर्य नर देह का सभी सुखों का मूल
जो इसको नहीं पालते जन्मदुखोंका मूल

सुश्रुत के अनुसार—

आयुस्तेजो बल वीर्य्यं,
प्रज्ञा श्रीश्च महायश।
पुण्य च यत्प्रियत्व च,
हन्यते ऽब्रह्मचर्य्यया ॥

अर्थात् मनुष्यों के ब्रह्मचर्य का धारण न करने से आयु, तेज बल, वीर्य, बुद्धि, शोभा, सौन्दर्य पुन्य और प्रीती सब नष्ट हो जाते है।

इन तीन आरोग्यता के स्तम्भों का पालन करने के लिए व्यायाम करना और सयम (नियम बद्ध) जीवन से रहना भी शारीरक व्याधियों से बचाने में सहायक होते हैं अंग्रेज विद्वान का कथन है "Health is the daugheer of excarcise & temperauoe because excercise threws off Superfluities and temperauce preveuts then" अर्थात् स्वास्थ्य "व्यायाम और सयम" की उपज है क्यों कि व्यायाम से गन्दे परमाणु बाहर निकल जाते हैं। और सयम से गन्दे पैदा नहीं होता।

वैदिक सप्ताह में मेरी दक्षिण यात्रा

(श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० सार्वदेशिक सभा देहली)

★

आर्य समाज लातुर (हैदराबाद राज्य) के निमन्त्रण पर मैं ७-८-४६ को प्रात काल लातुर पहुचा और १६ ता० तक रहा। इस काल मे मैंने ८ व्याख्यान सन्ध्या पर प्रात-काल और ७ व्याख्यान वैदिक धर्म का महत्व, समाजवाद, भारतीय संस्कृति, स्वामी दयानन्द का विश्व पर उपकार, सुख और शान्ति के साधन, श्रीकृष्ण चरित्र, इत्यादि पर दिये।

लातुर ६००० की आबादी का एक सम्पन्न कस्बा है। लातुर आर्य समाज के लिये सड़क के एक किनारे पर एक प्रभावशाली स्थान पर सुन्दर भूमि क्रय कर ली गई है। इसमे एक अखाड़ा बन गया है, एक और टीन डाल कर लगभग ५०० आदमियों के बैठने के लिये साप्ताहिक सत्सग के लिये स्थान बना लिया गया है। शेष भूमि खाली पड़ी है जिसमें वार्षिक उत्सव, सत्सग आदि अच्छी तरह हो सकते हैं। भवन निर्माण के लिये भी तैयारिया हो रही हैं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि लातुर के सामाजिक भाई सिद्धान्तों को समझने और उनके विषय में व्याख्यान सुनने से प्रेम रखते हैं। जात-पांत तोड़ कर आर्य परिवारों, से प्रेम बढ़ाने के साधन हैदराबाद राज्य में विशेषता से पाये जाते हैं। कई लड़कियां गुरुकुल हाथरस की स्नातिका और कई नवयुवक अन्यान्य गुरुकुलों के पढ़े हुये हैं। कुछ डी० ए० वी० कालेज शोलापुर में भी पढ़ते हैं। नगर के सामाजिक भाइयों के लिये आदर है। समाज ने सम्प्रति १०१) दयानन्द पुरस्कार निधि के लिये मेरी भेंट किये और अधिक देने का वचन दिया। १७-८-४६ को मैं शोलापुर पहुचा। श्री पंडित श्रीरामजी शर्मा डी० ए० वी० कालेज के निमन्त्रण पर उनके निवास स्थान पर ठहरा। शोलापुर डी० ए० वी० कालेज हैदराबाद सत्याग्रह के पश्चात् उसी की स्मृति के रूप मे स्थापित किया गया था। आज यह बम्बई प्रान्त का एक अत्यन्त उच्च श्रेणी का कालेज है। इसमे १५०० से अधिक विद्यार्थी हैं। भवन बड़ा सुरम्य है। प्रबन्ध बड़ा अच्छा है। नगर और निकटस्थ स्थानों मे इसका अच्छा प्रभाव है। यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि प्रिय श्रीराम जी वेद प्रचार में गहरी रुचि रखते हैं। वे अंग्रेजी के एक अच्छे लेखक हैं। महात्मा हंसराज जी का अंग्रेजी जीवन-चरित्र उनकी लेखन शैली का एक उज्ज्वल प्रमाण है। वे मराठी के आर्य समाज का साहित्य तैयार कराने में लगे हुए हैं। अभी मराठी मे शुद्धि विषय पर एक गवेषणापूर्ण पुस्तिका छप रही है। शोलापुर मे विशेषतया इसलिए गया था कि सार्वदेशिक सभा ने ४-५ वर्ष हुये मेरे द्वारा समाज मन्दिर के लिये ६०००) में एक भूमि क्रय की थी और उसके निर्माण के लिये ६०००) अपने कोष मे सुरक्षित रक्खे थे। प्रयत्न हो रहा था कि समाज मन्दिर बन जाय। मैं उसी की प्रगति को तीव्र करने वहां गया था। मुझ यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री प्रिन्सिपल साहब, श्री लक्ष्मीनारायण जी राठी, श्री लोहे जी इञ्जीनियर तथा समाज के प्रधान और मन्त्री इसके विषय में भूले हुये नहीं हैं। नक्शा म्युनिसिपैलटी से पास करा लिया गया है। ५०००) के लगभग दान एकत्र हो चुका है। सीमेन्ट न मिलने के कारण देरी हो रही है।

मेरी प्रेरणा पर यह निश्चित हुआ कि १००००) के लगभग जो अपने हाथों मे है खर्च करके अभी इतना स्थान बना लिया जाय जिससे साप्ताहिक सत्सग वहा लगना प्रारम्भ हो जाय। १० वर्ष पहले तो १४-१५ हजार में अच्छा भवन बन जाता था, परन्तु आज उसके लिये कम से कम २५ हजार रुपया चाहिये। आज कल समाज के सत्सग एक दर्जी की दूकान के ऊपर किराये के अट्टे में होते हैं। जो प्रभाव की दृष्टि से अत्यन्त अनुपयोगी हैं। कोई प्रतिष्ठित पुरुष वहां नहीं पहुँच सकता। आर्य पुरुषों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि शोलापुर के नगर की परिस्थिति में कुछ परिवर्तन होने के कारण जो भूमि समाज मन्दिर के लिये ली गई है वह अत्यन्त प्रभाव युक्त है। उसके दो तरफ सड़कें हैं। म्युनिसिपैल्टी ने अभी हाल में वहां एक अच्छा बाजार लगाया है। और उसके सामने ही म्युनिसिपैल्टी का एक पार्क हैं। इससे समाज की भूमि का मूल्य कई गुना बढ़ गया और यदि अच्छा भवन बन गया तो बौद्धिक धर्म प्रचार में इससे बड़ी सहायता मिलेगी। सत्याग्रह से पहले शोलापुर में आर्य समाज का कोई चिह्न न था और अब भी वहां के स्थानिक भाई सम्पन्न कोटि के नहीं हैं। शोलापुर महाराष्ट्र प्रान्त का एक औद्योगिक केन्द्र है। मैंने बम्बई प्रान्त की प्रतिनिधि सभा का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट किया है क्योंकि शोलापुर बम्बई प्रान्त मे है। पूना, कोल्हापुर, शोलापुर, अहमदनगर, मनमाड, धोन्य, महाराष्ट्र संस्कृति के केन्द्र है। यदि इन स्थानों में आर्य समाज बल पकड़ जाये तो उसका प्रभाव भारत-भर की संस्कृति पर पड़ सकता है क्योंकि पूना अब भी संस्कृत साहित्य का केन्द्र है। वहां के विद्वानों पर आर्य समाज के सिद्धांतों की छाप नहीं है अतः उनकी साहित्यिक कृतियों से वैदिक धर्म के प्रचार से अधिक सहायता नहीं मिल रही। यह इस शक्ति पुंज को अपने कार्य का साधन कैसे बनायें इस पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करना होगा। मैं शोलापुर केवल १ ही दिन रहा और वहां के सत्पुरुषों के सहयोग से एक दिन में भी बहुत कुछ कार्य हो गया, यह सन्तोष की बात है।

इसके पश्चात् मैं बम्बई आया और प्रसिद्ध काकडवाडी समाज में ठहरा। श्री विजय शकर जी को मैंने पहले से ही लिख दिया था। उनसे और कई अन्य सज्जनों से बम्बई की आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज की प्रगति के सम्बन्ध में बातचीत हुई। बम्बई भारत यूनियन का एक अत्यन्त प्रभावशाली प्रान्त है। गुजराती, मराठी, कन्नड तीन तो मुख्य भाग हैं ही। इनके अतिरिक्त और कई भाषायें यहां बोली जाती हैं। बड़ौदा स्टेट बम्बई प्रान्त में विलीन हो गई है, परन्तु खेद का स्थान यह है कि बम्बई जैसे बड़े प्रान्त में आर्य समाज का बहुत ही कम प्रभाव है। महाराष्ट्र और कन्नड भागों में तो कुछ काम हो ही नहीं रहा। समाज मे द्वेष की अग्नि बहुत है। मैंने कई सज्जनों से इस विषय मे बात-चीत की। कुछ ने यह भी परामर्श दिया कि यदि मैं महीने दो महीने वहा ठहर सकूं वा प्रान्त मे भ्रमण कर सकूं तो शायद कुछ काम हो जाय। मैंने वहा के लोगों से कह दिया है कि यदि उनकी इच्छा होगी तो उनकी सुविधा पर कुछ समय निकाल दूगा।

पुस्तक परिचय

वैदिक गृहस्थाश्रम

यह उत्तम पुस्तक श्री प्रोफेसर विश्वनाथ जी, वेदोपाध्याय द्वारा लिखी गई है। गृहस्थाश्रम के सम्बन्ध में वेदों में जो विचार मिलते हैं उनका समग्र सार इस पुस्तक में रख दिया है। गृहस्थ सम्बन्धी २८५ मन्त्रों की विशद व्याख्या इस पुस्तक में है। ४०० पृष्ठ हैं। बहुत सुन्दर जिल्द है। प्रत्येक आर्य परिवार में इस पुस्तक का स्वाध्याय होना चाहिये। दाम ५) रु० डा० व्यय पृथक् है।

मिलने का पता :—

वैदिक-साहित्य-मण्डल

६, लच्छमन-चौक देहरादून

आर्य जगत्

आर्य महिला सम्मेलन करनाल

पूर्वी पंजाब प्रान्तीय आर्य महिला सम्मेलन जिसका मुख्य कार्यालय आ० स० कवाड़ी बाज़ार अम्बाला छावनी में है, और जिसका कार्य-क्रम आर्या स्त्री समाज के तत्वावधान में सुचारू-रूपेण चल रहा है, की एक बैठक गत २७ अगस्त को आ० स० मन्दिर करनाल में हुई, जिसमें देवियां भारी सख्या में उपस्थित हुईं, सम्मेलन की दो बैठक हुईं, जिनके प्रधान क्रमशः श्री चौ० सिंहराम जी और श्रीमती यशोदा देवी जी थीं। इन बैठकों में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किए गये, एक प्रस्ताव करनाल नगर की सफाई के विषय में था, जिसके लिए श्री मती यशोदादेवीजी, कर्मदेवी जी शान्तिदेवी जी, विद्यावतीजी, कृष्णादेवीजी आदि १६ देवियों ने अपने नाम पेश किये।

एक अन्य प्रस्ताव अशिक्षिता देवियों को शिक्षिता बनाने के विषय में था, इसे भी क्रियात्मिक रूप देने के लिए अनेक देवियों ने अपने नाम पेश किए। इसके अतिरिक्त रात्रि को खुला अधिवेशन हुआ, जिसमें श्रीमती मानकौर जी अम्बाला, श्री मती उर्मिला देवी जी सोलन श्रीमती दयावती जी व शान्तादेवी जी फ़िरोजपुर, श्रीमती विमलादेवी तारावती जी के मनोहर भजन, कविताएं और व्याख्यान हुए। श्रीमती शान्तादेवी जी का भी अत्युत्तम भाषण हुआ मन्दिर स्त्री पुरुषों से खचाखच भरा हुआ था।

अन्त में श्रीमती मानकौर जी ने सम्मेलन की गतकार्यवाही सुनाई, और सम्मेलन निर्विघ्न समाप्त किया गया।

—मानकौर सयोजिका

आ०स० कच्चा बाज़ार अम्बाला छा०

आ० स० मन्दिर में श्री प्रो० जगदीशभूषणजी के ३० अगस्त से ३ सितम्बर तक मनोहर भजनोपदेश होते रहे, जनता ने खूब रस लिया।

४ सितम्बर के सत्सग मे श्री डा० रघुवरदयाल जी का कर्म के विषय पर महत्वपूर्ण भाषण हुआ।

उसी दिन शाम को ४॥ बजे से ७ बजे तक मोहनलाल तथा बुलाकीदास भवनों की आधार शिला रखने का कार्य-क्रम श्री डा० एम डी० चौधरी जी की प्रधानता में स० समारोह सम्पन्न हुआ, प्रथम यज्ञ के पश्चात् श्री प मुनीश्वरदेव जी सि० शि० ने प्रार्थना कराई, और प्रो० जगदीश जी के गायन के बाद श्री सदानन्द जी आर्य ने ध्वजारोहण किया साथ ही आपने अपने भाषण में आ० स० के कार्य कर्ताओं की निष्काम सेवाओं तथा लग्न की सराहना की, और ऋषि दयानन्द के प्रति अति श्रद्धा के भाव प्रकट किए। यह दृश्य दर्शनीय था, पश्चात् श्री राजा रामसिंह जी आर्य ने अपनी सक्षिप्त रिपोर्ट सुनाई, और अपील की जिसपर १२००) एकत्रित हुआ, मुख्य २ राशियां इस प्रकार हैं :—श्रीमती सरलादेवी जी ध० प० म० सदानन्द जी आर्य ५००) डा० एम० डी० चौधरी जी, २५०) डा० रघुवरदयाल जी, १००) श्री राजा-रामसिंहजी आर्य, ५१) श्री नानकचन्दजी ५१) श्री रामचरन जी, २१) श्री छज्जूराम जी, २५) श्री कर्मचन्द जी, ५१) आर्य स्त्री समाज कच्चा बा० १५१) इसके बाद श्रीमती सरलादेवीजी ने मोहनलाल भवन और श्रीमती दयावती जी ध० प० श्री कृष्णमुरारी जी ने बुलाकीदास भवन की आधार शिला रखी। स्त्रियों की ओर से आपको पुष्पमालाएं भेंट की गई।

—राजा रामसिंह आर्य मंत्री

आ० स० पौण्टा मे प्रचार

श्री अमरसिंह जी की भजन मण्डली द्वारा गतमास चूहड़पुर ताजेवाला पौण्टा और कोलर में धूम धाम से प्रचार हुआ। जनता दूर २ से आकर प्रचार को सुनती रही, पौण्टा में श्री ओंप्रकाश जी सेठ दुलीचन्दजी श्री गेंदाराम जी व श्री धनीराम जी ने प्रचार के लिए अत्युत्साह दिखाया उक्त महानुभाव विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, सेठ जी का यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराने का शुभ सकल्प है उक्त स्थानों से सभा को सहायता भी प्राप्त हुई है। —सम्वाददाता

आ० स० खरड़

समाज ने २१ अगस्त को अपने एक विशेष अधिवेशन में ६ अगस्त को पटियाला स्टेशन पर अकालियों के द्वारा किए गये 'ओ३म् के झण्डे के अपमान कार्य की घोर निन्दा की है, और राज प्रमुख से न्याय की माग है।

—सोहनलाल मत्री

आ० स० हाल बाज़ार भिवानी

ठा० रत्नपालसिंहजी ने ३ दिन खूब प्रचार किया, प्रचारार्थ आर्य वीर दल भिवानी ने अपना कार्यालय हमें दे दिया है, एतदर्थ धन्यवाद किया जाता है।

गत सप्ताह श्री पं० वासुदेव जी ने १ विवाह सं० और १ सीमन्तोनयन स० कराये। समाज की ओर से सस्कारों के प्रबन्ध का विशेष ध्यान रखा जाता है, ४ सितम्बर के सत्सग में श्री देवराजजी की कथा के बाद श्री म० गणेशदत्तजी आर्य सेवक का सस्कारों के महत्व पर अति प्रभावशाली भाषण हुआ। समाज का उत्सव ७-६ अक्तूबर को धूम धाम से मनाया जायगा।—गणेशदत्त आर्य सेवक

एक सुझाव

वैदिक कर्मकाड के लिए ऋषि दयानन्द ने सस्कारविधि नामी ग्रथ रचा, और विद्वान् लोगों ने उसी के अनुसार कार्य करा दिया, आर्य समाज का कार्य-क्षेत्र विस्तृत हो रहा है सब जगह उपदेशक महोदय नहीं पहुंच सकते। ऐसी अवस्था में स्थानीय सभासदों को यह कार्य करना पड़ता है यदि सोलह सस्कारों के अलग २ पुस्तक रच दिए जाएं जिस में सिलसिले वार सारे मन्त्र और विधि दर्ज हो ताकि सफे भी न पलटने पड़े और विधि भी पूरी हो जाय साधारण पढ़ा लिखा आर्य सभासद भी सस्कार करा सके। उदाहरणार्थ श्री प चन्द्र भानु जी उपदेशक आ० प्रतिनिधि सभा ने विवाह सस्कार भाषा टीका पुस्तक लिखी उसी शैली पर शेष १५ ट्रैक्ट भी छप जावेंगे तो सस्कारों की सख्या दुगुनी चौगुनी हो सकती है। —गणेशदत्त आर्य सेवक

आ० स० नगीना (गुड़गावा)

का दूसरा वार्षिकोत्सव २७ से ३० सितम्बर तक बडे समारोह के साथ मनाया जावेगा जिसमें बडे बड़े विद्वान् उपदेशक तथा भजनीक पधारेंगे।

—मन्त्री

आर्य पत्र से प्रेम

आर्य स्त्री समाज अम्बाला छावनी म० वि० के पुरुषार्थ से नगर की अनेक देवियां आर्य पत्र की स्थायी ग्राहक बन गई हैं, इस दिशा मे माता मानकौर जी बहिन सरलादेवी जी और बहिन शर्वती-देवी जी का सहयोग अति प्रशसनीय है।

लाडवा के मत्री श्री डा०वेणीप्रशाद जी आर्य ने नगर से आठ ग्राहक बनाकर भेजे हैं।

जगाधरी मे श्री प० विद्याधर जी व श्री नन्दकिशोर जी के सहयोग से १० ग्राहक बने। माडलटौन जगाधरी अब्दुल्लापुर में श्री० ठाकुराम जी और श्री हुक्मचन्द जी गुलाटी के सहयोग से १४ ग्राहक बने, छछरौली में श्री ईश्वरीप्रशाद जी के सहयोग से ७ और बराला मे श्री इन्द्रसेन जी के सहयोग से १० ग्राहक बने।

अम्बाला छावनी की तीनों आर्य-समाजों के सहयोग से इस समय तक नगर मे ६० से ऊपर स्थायी ग्राहक बन चुके हैं। प्रति सप्ताह 'आर्य' की लगभग २० प्रतियां वैसे बिक जाती हैं।

मै चाहता हूं कि इसी प्रकार प्रत्येक आर्य-पत्र प्रेमी जहा है वहा आर्य परिवार बढाने मे सहयोग देकर कृतार्थ करें।

—मुनीश्वरदेव

आ० स० कपूरथला

आर्य समाज कपूरथला मे श्रीमान मा० रणधीर सिंह जी पुरोहित का काय करेंगे प्रतिदिन प्रात काल स्वाध्याय और सायकाल ५ से ७ तक बच्चों को सन्ध्या व हिन्दी धर्म शिक्षा सिखायेंगे। माता पिता को अपने बच्चों को आर्य समाज में धर्म शिक्षा पढने के लिये भेजना चाहिये

आर्य समाज मे हिन्दी प्रचारणी सभा १० वर्ष से कार्य कर रही है। श्री मान् प० जयदेव जी विद्यालकार इन्सपैक्टर आर्य स्कूल के पुरुषार्थ से इसका सम्बन्ध प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन से हो गया है। पटियाला यूनियन में हिन्दी को राजभाषा बनाया जाय हिन्दू बच्चों को हिन्दी की सुविधा दी जाय।

—फकीरचन्द मत्री

यश पाल सिद्धान्तालंकार प्रिंटर और पब्लिशर द्वारा आर्य प्रेस लिमिटिड, निकलसन रोड अम्बाला छावनी से मुद्रित होकर 'आर्य' कार्यालय आर्य प्रेस निकलसन रोड, अम्बाला छावनी से प्रकाशित हुआ।

वेदप्रचार

आर्य समाज सुन्दरपुर में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूम धाम से मनाया गया। श्री प. रामकौशिक जी द्वारा प्रातः यज्ञ एवं रात्रि में कथा होती रही। समीप के तीन चार ग्रामों के मनुष्यों ने अपने अपने ग्राम में भी पण्डित जी को निमन्त्रण भी दिया। २५ रुपया वेद-प्रचार में प्राप्त हुए। श्री प. जी पूरे आश्विन मास तक ग्राम ग्राम के ग्रामों में भ्रमण करेंगे। जो सज्जन अपने यहाँ कथा और यज्ञ कराने के इच्छुक हों वे प्रधान आर्य समाज सुन्दरपुर पो० बिहारीगढ़ जिला सहारनपुर के पते पर पत्र व्यवहार करें। मु.धीधर आर्य

—श्रीमान् डो. एन. कमरवानी चिकित्साध्यक्ष क्षय-आरोग्यालय भवाली ने अपने विवाह उपलक्ष में भवाली आर्य समाज को २१) इक्कीस रुपये दिए। भवाली आर्य समाज आप को हार्दिक बधाई देता है। आपने भवाली में आर्य-समाज भवन निर्माण के लिये हर प्रकार से सहयोग देने का वचन दिया है।

आर्य समाज दानापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दानापुर का वार्षिकोत्सव आश्विन शुक्ल द्वितीया तृतीया, और चतुर्थी तदनुसार २४ २५ और २६ सितम्बर को होगा पुरानी तिथि परिवर्तितकर दी गयी है। पहले दसम आश्विन शुक्ल पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी को हुआ करता था। तिथि परिवर्तन का को ध्यान में रखें।

आर्य समाज चौगाँवा

सभाके उपदेशक प. निरञ्जनदेवजी २८ अगस्त को चौगाँवा पधारे। समाज शिथिल थी। आपके प्रयत्न से समाज पुनर्जीवित की गई। १०) सभा से सम्बन्ध रखने के निमित्त उन्हें दिये गये। मन्त्री

—आर्य समाज सिकन्दरपुर (बलीया) का वार्षिकोत्सव ता० २९ ३० सितम्बर व ता० १ २ अक्तूबर सन ४९ को बड़े समारोह से मनाया जायेगा प्रतिष्ठित उपदेशक व भजनीकों के पधारने की आशा है ता. २९ सितम्बर को नगरकीर्तन है।

आर्यमित्र के ग्राहक बनना प्रत्येक आर्य का मुख्य कर्त्तव्य है।

धारा सभायें ही मुआवजे की दर निश्चित करेंगी

बिना मुआवजा दिये कोई सम्पत्ति हस्तगत न की जायगी

नयी दिल्ली, १२ सितम्बर। विधान परिषद् ने आज प्रधान मंत्री नेहरू जी द्वारा प्रस्तावित मुआवजे संबंधी विधान की धारा को दो संशोधनों के साथ स्वीकार कर लिया।

युक्तप्रांत के प्रधान मंत्री पं० गोविंद वल्लभ पंत ने धारा का समर्थन करते हुए यह चेतावनी दी कि जमींदारी उन्मूलन के प्रश्न पर विचार करते समय हमें चीन और बर्मा में होने वाली घटनाओं की अवहेलना नहीं कर सकते। आपने कहा कि जो वर्ग राष्ट्रहित में बाधक होगा उसे कुचल दिया जायगा।

दो संशोधन

परिषद् ने उक्त धारा में दो संशोधन स्वीकार कर लिये। एक संशोधन श्री जसपतराम कपूर ने प्रस्तुत किया जिसमें निष्क्रांत सम्पत्ति के बारे में विशेष व्यवस्था करने की माँग की गयी थी। दूसरा संशोधन श्री काल वेंकट राव ने प्रस्तुत किया। इसमें यह व्यवस्था की गयी है कि प्रांत की व्यवस्थापक सभाओं द्वारा स्वीकृत बिलों की अवधि १ वर्ष से बढ़ा कर १८ महीने कर दी जाय। बिहार और मद्रास के जमींदारी बिलों को मान्यता देने के उद्देश्य से यह संशोधन पेश किया गया था।

धारा की मुख्य बातें यह हैं कि बिना कानूनी स्वीकृति के और बिना मुआवजा दिये किसी भी व्यक्ति को उसकी सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायगा।

प्रांतीय धारा सभाओं द्वारा बनाया गया कोई भी सम्पत्ति अधिकरण कानून तब तक वैध नहीं माना जायगा जब तक राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त नहीं हो जाती। विधान के लागू होने के १८ मास पूर्व प्रांतीय धारा सभाओं द्वारा स्वीकृत इन बिलों पर तीन मास के भीतर राष्ट्रपति की स्वीकृति ले लेनी होगी और इस प्रकार जो कानून बन जायगा और उसमें मुआवजे की जो दर निश्चित हो जायगी उस पर किसी अदालत में आपत्ति नहीं उठायी जा सकती।

चंगेजखां की कब्र लूटी

हांगकांग ६ सितम्बर। पीपिंग रेडियो से घोषणा की गई है कि लाँचो प्रांत की राजधानी कॉचू के पास चंगेज खाँ की बनी कब्र को राष्ट्रीय सेनायें लूट ले गईं वे १८ वीं शताब्दी के ६५ सम्राट का चित्र और अन्य स्मारक वस्तुयें भी उठा ले गईं।

पंचायती निर्णय

६ सितम्बर। सोलापुर जिले के एक गाँव की बात है। एक दूध वाला अपनी गायें दुहने जाता है। उसे वह बर्तन नहीं मिलता है जिसमें वह रोज दूध दुहा करता था। बाद में कुछ दूरी पर एक खेत में वह बर्तन मिलता है। दूध वाला बर्तन पाकर चुप हो जाता है। उस गाँव में पंचायत अदालत भी जिसने अपना काम प्रारम्भ कर दिया है। पंचायत अदालत को इस घटना का पता चलता है। अदालत दूध वाले को तलब कर पूछती है 'क्या तुम बता सकते हो कि यह चोरी किसने की होगी।" उत्तर—'नहीं।" प्रश्न—"तुमको किसी पर सन्देह है।" उत्तर "नहीं।"

अदालत ने दूध वाले पर पाँच रुपये जुर्माना किया।

दूध वाले ने हैरान होकर जानना चाहा कि उस पर यह जुर्माना क्यों किया गया। अदालत ने बताया कि उस पर यह जुर्माना इसलिये किया गया है क्योंकि उसने यह नहीं बतलाया कि चोरी किसने की होगी। यदि वह बतला देता तो अदालत को मामले की छानबीन करने में आसानी होती।

हिंदी के समर्थन में सन् १९४२ की तरह का आँदोलन

प्रयाग, १२ सितम्बर। प्रयाग समाज सेवा संघ के तत्वाधान में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्रों ने घोषणा की कि सन १९४२ का आन्दोलन मुख्यत छात्रों का आन्दोलन था और उसी के कारण भारत को आजादी मिली। यदि भाषा की समस्या शीघ्र हल न हुई और हिंदी को शीघ्र ही राष्ट्रभाषा स्वीकार न किया गया तो उसी प्रकार का एक आन्दोलन फिर आरम्भ किया जायगा।

उक्त सार्वजनिक सभा हिंदी राष्ट्रभाषा के समर्थन करने के लिए बुलायी गयी थी।

एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से माँग की गयी कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली तथा भारतीय अंकों सहित हिंदी को अविलम्ब राष्ट्रभाषा घोषित किया जाय और अंतरिम अवधि को पन्द्रह से घटाकर दसवर्ष कर दिया जाय। दस साल बाद अंग्रेजी का प्रयोग बिलकुल समाप्त करके हिंदी का राष्ट्रभाषा की हैसियतसे प्रयोग आरम्भ किया जाय।

पटना में श्री गोलवलकर

५ सि०—पटना। एक प्रेस कान्फ्रेंस में बोलते हुए माधवराव सदाशिव गोलवलकर ने घोषणा की कि हमने कांग्रेसी सरकारों का कभी विरोध नहीं किया है। हमने अब भी यह नीति नहीं छोड़ी है। आपने कहा—संघ का राजनीति से कोई मतलब नहीं, संघ एक संस्कृति के आधार पर छिन्न-भिन्न हिन्दू-समाज को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है। कम्यूनिज्म हिन्दू संस्कृति का शत्रु है। वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में कहा—ऊँच-नीच के भेद-भाव उपेक्षा करने से मिटते हैं, बल से नहीं। यदि हिन्दुओं को उनकी संस्कृति के आधार पर संगठित करना है, तो निश्चित है कि ऊँच-नीच, छूत-अछूत, सवर्ण अस्पृश्य आदि के प्रश्न उठ नहीं सकते। एक महती सभा में भाषण करते हुए आपने कहा कि प्रान्तीयता भाषा सम्बन्धी विवाद और सत्ता पाने के उद्देश्य से की गई राजनैतिक गुटबन्दी उचित नहीं है। असहिष्णुता हिंदू-संस्कृति के एकदम विपरीत है। श्री गोलवलकरजी ने शिकायत की कि पत्रों में उनके सम्बन्ध में लगातार भ्रमक प्रचार किया जाता है।

× × ×

अमरीका की तीन शर्तें

५ सि०—आन्टरेपिस। अमरीकन सचिव जान स्नाइडर ने कल रात सभी वैदेशिक सरकारों से अपील की है कि पिछड़े हुए देशों के विकास के लिये सहायता पाने के इच्छुक राष्ट्रों को तीन शर्तें पूरी कर बाधायें दूर कर देना चाहिये। १. पूंजी लगाने वालों के लिये सुविधा जनक शर्तें हों २. मुनाफे को डालर में परिवर्तित करने की सुविधा की गारंटी हो। ३. अमरीकन पूंजी द्वारा खोले गये उद्योगों के राष्ट्रीयकरण होने पर पूरे मुआवजे का आश्वासन दिया जावे।

× × ×

काशी विश्वविद्यालय में रंगभेद

५ सि०—काशी विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रकाशित पत्रिका के सितम्बर अंक में रंगभेद को प्रोत्साहन देने का आरोप लगाया है। होल्कर अतिथिगृह को केवल श्वेत विदेशी छात्रों के लिये सुरक्षित कर दिया गया है। इस छात्रावास में जापानी और सिंहली छात्र की प्रविष्ट होने की प्रार्थना अस्वीकृत कर दी गई है।

राजस्थान में जागीरदारी उन्मूलन

जोधपुर—५ सि०। राजस्थान के प्रधान मन्त्री प० हीरालाल शास्त्री ने जोधपुर रेडियो से भाषण करते हुए आशा प्रकट की कि राजस्थान में १ वर्ष के भीतर जागीरदारी प्रथा समाप्त कर दी जायगी।

× × ×

भारतीय पार्लियामेंट का चुनाव आगामी जाड़ों में होगा

नयी दिल्ली, १२ सितम्बर। सरकारी क्षेत्रों में यह चर्चा है कि आगामी जाड़ों में भारतीय पार्लियामेंट का चुनाव करने का निश्चय कर लिया गया है ताकि २६ जनवरी को नया विधान लागू किया जा सके।

विधान परिषद् की बैठक इस सप्ताह के अन्त तक समाप्त होकर अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में फिर शुरू होगी और विधान का द्वितीय वाचन समाप्त करेगी। तीसरे वाचन के लिये नवम्बर के पहले सप्ताह में परिषद् की बैठक फिर होगी।

पार्लियामेंट का चुनाव पिछले चुनाव की भांति प्रांतीय धारा सभाओं द्वारा अप्रत्यक्ष ही होगा।

भारतीय पार्लियामेंट का अगला अधिवेशन २१ नवम्बर से आरम्भ होगा।

+ × ×

राष्ट्रीय झण्डे का उपयोग

सीतापुर, ५ सि०। सीतापुर तहसील के पगुरोई गाँव के किसानों ने १५ अगस्त को वहाँ की जमींदारिन की सीर के खेत में तिरङ्गा झण्डा गाड़ दिया। अब किसान उसे हटाने से इनकार करते हैं। जिमींदारिन एक विधवा ठकुराइन है मजबूरन झण्डा लगाने को एक अन्य टुकड़ा भी देने को तैयार है।

+ + +

लाहौर और करांची के नोट बन्द

दिल्ली ८ सितम्बर। भारत सरकार ने एक घोषणा द्वारा १२ सितम्बर से 'लाहौर' और 'करांची' के अंकित १०० के नोटों को वापिस कर लिया है। भारतीय सरकारी बैंकों से उनका रुपया लेने में कोई कठिनाई न होगी।

।मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

आर्य मित्र

"ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति"
ऋ० ४ । २३ । ८

ऋत का ध्यान भी कुटिलता को दूर करता है।

ता० १५ सितम्बर १९४९

युनीवर्सिटी कमीशन रिपोर्ट

सुप्रसिद्ध कलकत्ता युनीवर्सिटी कमीशन ने लगातार दो वर्ष के परिश्रम के उपरान्त जो रिपोर्ट प्रकाशित की थी उस कमीशन के अध्यक्ष थे इङ्गलिस्तान के प्रसिद्ध शिक्षा विशेषज्ञ सर सेडलर साहेब। इस रिपोर्ट के परामर्शानुसार लखनऊ, ढाका, बनारस, अलीगढ़ और प्रयाग में रेजिडेन्शल युनिवरसिटियों की स्थापना की गई। इन नवीन शैली के विश्वविद्यालयों से अब तक जिस प्रकार की शिक्षा देने की व्यवस्था प्रचलित रही, उससे शिक्षा प्राप्त करने वाले, शिक्षा देने वाले, छात्रों के अभिभावक, सरकारी श्रेष्ठ अधिकारी गण, तथा राष्ट्रीय नेता गण सभी असन्तुष्ट रहे हैं। क्यों कि इस बात में सभी एक मत हैं कि भारत जैसे विशाल देश के लिये जिस प्रकार के चरित्र वान, दृढ सङ्कल्प, सूक्ष्म दर्शी, उद्यमशील, प्रभावशाली और सफल नागरिकों की विविध क्षेत्रों के लिये आवश्यकता है, उसके अनुरूप विद्या और व्रत समर्थ स्नातक इन नवीन विश्वविद्यालयों से उत्पन्न नहीं किये जा सके। इन विश्वविद्यालयों की असफलता में अन्यान्य अनेक कारणों के साथ उनका व्ययभार, विलास प्रियता और कृत्रिमता भी प्रमुख कारण कहे जा सकते हैं।

सार्वजनीन असन्तोष का अनुभव करते हुये वर्तमान स्वतन्त्र भारत की केन्द्रीय सरकार ने पुन विश्व विद्यालयों की स्थिति का पूर्ण अनुसन्धान करके उनके सम्बन्ध में आवश्यक सुधार विषयक परामर्श देने के लिये सर डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन महोदय की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया। इसमें एक अमेरिकन, एक अँग्रेज शिक्षा विशेषज्ञ सदस्य थे तथा शेष भारतीय सज्जन रहे। खेद का इतना ही विषय है कि इनमें से कोई व्यक्ति भी हिन्दी का मर्मज्ञ न था, संस्कृत की तो कथा ही क्या कहनी। इसके विपरीत हिंदुस्तानी के जनकों में से प्रमुख और अरबी, फारसी के विशेषज्ञ एक सज्जन जान बूझ कर उसके सदस्य बना दिये गये। इस विचित्र कार्य का कारण सभी समाचार-पत्रों को पढ़ने वाले सज्जन अनुभव कर सकते हैं।

कमीशन ने २३ विश्वविद्यालयों में पहुंच कर अनुसन्धान किया। पूरे नौ मास के उपरान्त ७०० पृष्ठात्मक रिपोर्ट को कमीशन के अध्यक्ष सर राधाकृष्णन् महोदय ने शिक्षा मंत्री माननीय मौलाना अबुल कलाम आजाद साहेब के कर कमलों में प्रस्तुत किया। अभी तक पूरी रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुई है। अध्यक्ष महोदय ने रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये जो छोटा सा वक्तव्य इसके सम्बन्ध में दिया, वही समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है। उसी के आधार पर समाचार पत्रों में टीका टिप्पणी प्रारम्भ हो गई है। पूरी रिपोर्ट प्रकाशित होने पर ही उसकी वास्तविक उपयोगिता और उपादेयता को आंका जा सकेगा।

सम्प्रति प्रकाशित वक्तव्य से प्रकट होता है कि अध्यक्ष महोदय के मतानुसार विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं की शिक्षा को अधिकाधिक भारतीय ढंग का बनाया जाना उचित है। भारतीयता अब तक इस देश की शिक्षा प्रणाली में नहीं रही है। इस प्रसङ्ग में आपने कहा कि जैसे इङ्गलिस्तान में लेटिन और ग्रीक की शिक्षा दिया जाना इसलिए आवश्यक है कि उन भाषाओं के प्राचीन साहित्यों में वे प्राचीन ऐतिहासिक और साहित्य तत्व भरपूर हैं कि जिनके आधार पर वर्तमान संस्कृति और सभ्यता अनुप्राणित होती है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा पाने वालों में भारतीयता के आधार पर चरित्र बल उत्पन्न करने की सम्पूर्ण व्यवस्था की जाय कि जिससे जीवनोपयोगी सभी कार्यों में देशकालिक परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार को सुचारु रूप से संचालित कर सकें। तीसरे वर्तमान परीक्षा प्रणाली की चर्चा करते हुये आपने कहा कि सरकारी नौकरियों में नियुक्ति के लिये परीक्षाओं को मुख्यता न दी जाय अपितु अन्य प्रकार से भी योग्यता और क्षमता को आंका जाय। चौथे शिक्षण शैली प्रधानतः आधुनिक हो कि जिससे विदेशी भाषा अंग्रेजी के स्थान पर अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाय। पांचवें प्रारम्भिक शिक्षा मातृ भाषा में, माध्यमिक प्रांतीय या प्रादेशिक भाषा में और विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रान्तीय अथवा राष्ट्रीय भाषा में दी जाय। आपके मतानुसार नागरी वर्णमाला में आवश्यक सुधार पूर्वक हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान धीरे धीरे देने की व्यवस्था की जाय। किन्तु धीरे-धीरे का अर्थ अनन्त काल न समझा जाय, प्रयत्न ऐसा किया जाय कि राष्ट्र भाषा के तुल्य सर्वाङ्गपूर्ण होने पर अंग्रेजी के स्थान में उसका व्यवहार कर दिया जाय। छठवें शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा के विषय में आपका मत है कि चूंकि भारत एक लौकिक (सेकुलर स्टेट) राज्य है अतः उसमें किसी धर्म विशेष की शिक्षा का प्रबन्ध सम्भव नहीं है। उसके स्थान पर शान्त मौन ध्यान और विख्यात महापुरुषों के आदर्श चरित्रों के सम्बन्ध में शिक्षा दी जा सकती है। छठे शिक्षा संस्थाओं के वाइसचान्सलर आदि अधिकारियों को निर्वाचन पूर्वक शीघ्र-शीघ्र परिवर्तित न किया जाय अपितु उनको दीर्घकाल पर्यन्त कार्य करते रहने की सुविधा प्रदान की जाय।

अत्यन्त संक्षेप में उक्त कमीशन द्वारा उल्लिखित कतिपय तत्वों का निर्देश किया गया है। इनके तत्वों के सम्बन्ध में भी मतभेद की सम्भावना है, किन्तु जब तक पूरी रिपोर्ट प्रकाशित न हो जाय तब तक किसी प्रकार का निश्चयात्मक विचार सम्भव नहीं है। इसलिये सम्प्रति अध्यक्ष महोदय के वक्तव्य के कतिपय वाक्यों के विषय में विचार आवश्यक प्रतीत होता है। अध्यक्ष महोदय कहते हैं कि, "फार मीडियम आफ इन्स्ट्रक्शन फार हायर एडुकेशन इङ्गलिश शुड बी रिप्लेस्ड अर्ली ऐज प्रेक्टिकेबिल बाई एन इंडियन लेंगुएज विच केननाट बी संस्कृत आन अकाउन्ट आफ भाइटल डिफीकल्टीज" — "पब्लिक ऐंड हायर सेकण्डरी ऐन्ड युनिवरसिटी स्टेजेज शुड बी मेड कनवरसेन्ट विद थ्री लेंग्वेजेज दि मादरटङ्ग, दि फेडरल लेंगुएज ऐन्ड इङ्गलिश दि लास्टनेम इन आर्डर टु अक्वायर दि एबीलिटी टु रीड बुक्स इन इङ्गलिश"—अर्थात् शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में अंग्रेजी को यथा सम्भव परिवर्तित कर उसके स्थान पर उच्च शिक्षा के लिये कोई भारतीय भाषा को स्वीकार किया जाय किन्तु वह संस्कृत न हो, क्यों कि ऐसे करने में अनेक महत्वपूर्ण कठिनाइयां हैं—माध्यमिक और विश्वविद्यालय शिक्षा की अवस्था में छात्रों को तीन भाषाओं का पर्याप्त अभ्यास कराया जाय। मातृ भाषा, राष्ट्र-भाषा और अंग्रेजी अन्तिम भाषा का अभ्यास इसलिये आवश्यक है कि जिससे छात्र अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों को पढ़ सकें। उपर्युक्त उद्धरण में अध्यक्ष महोदय का अंग्रेजी भाषा के प्रति प्रगाढ़ अनुराग और भारतीयता भारतीय संस्कृति, भारतीय आचार व्यवहार, भारतीय ऐतिहासिक परम्परा, भारतीय तत्वज्ञान और भारतीय अध्यात्मवाद यह सब जिस भाषा और साहित्य में परिपूर्णतया सन्निहित हैं, उस संस्कृत के प्रति अक्षम्य उपेक्षा अनास्था और अनादर का स्पष्ट परिचायक है। हमारा यह मत नहीं कि इस प्रकार के सर्वथा अभारतीय और अनार्य बुद्ध विचार किसी भारतीय के लिये उचित नहीं है। प्रत्युत खेद इसी बात का है कि ख्यातनामा राजा राममोहन राय महोदय के इसी प्रकार के असत्परामर्श से लार्ड विलियम बन्टिक की सरकार ने संस्कृत भाषा और उसके साहित्य का सर्वथा मिटाने की कुत्सित चेष्टा की थी, उसी से अभी तक देश नहीं पनप सका था फिर अब "अस्माभिः न च द् जलद मुञ्चसि, मा विमुञ्च वज्रं पुन स्तिवजि निर्दय कस्य हेतोः" । उस समय तो विदेशियों का शासन था, भारत राजनीतिक दासता में जकड़ा था पर आज अपने ही राज्य में अपने ही हाथों से हम उस संस्कृति, सभ्यता, परम्परा इतिहास, दर्शन तत्वज्ञान अध्यात्म सब को

अपने साहित्य में प्रचुर मात्रा में सनातन काल से धारण करने वाली समस्त भाषाओं की एक मात्र जननी व पोषिका संस्कृत भाषा को सर्वथा ऐसे विचित्र काल में परित्याग करने के लिये तैयार होने की नेक सलाह देने का दुःसाहस कर रहे हैं कि जब अफगान सरकार तक ने अपने काबुल विश्वविद्यालय में साहित्य विषय का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिये संस्कृत अनिवार्य विषय बना दिया हो तो अपने अग्रणी नेता विचारकों के सम्बन्ध में शेक्सपियर के शब्दों में यही कहा जा सकता है कि, "O judgment, thou hast fled to brutish beasts and men have lost their reason"

★ ★ ★

पंचायत राज

संयुक्त प्रान्त में १५ अगस्त का दिन संभवत: भारत के द्वितीय स्वतंत्रता दिवस के मनाने से भी अधिक महत्व का सिद्ध हो सकता है। इस दिन प्रान्त में पंचायत राज की स्थापना द्वारा सामाजिक व शासन सम्बन्धी परीक्षण का प्रारम्भ १ लाख १४ हजार गाँवों में किया गया है। ३५ हजार ग्राम पंचायतों ने देश के प्रति वफादारी और जन सेवा की प्रतिज्ञा ग्रहण की है। इन पंचायतों का ग्राम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ेगा और इससे ५ करोड़ ४० लाख ग्राम वासी प्रभावित होंगे।

कहा जाता है कि 'ग्राम पंचायत' की स्थापना महात्मा गान्धी जी के 'राम राज्य' के स्वप्न को पूरा करने वाली सिद्ध होगी। भारत में वयस्क मताधिकार के आधार पर यह प्रथम ही निर्वाचन है जिसमें लगभग २ करोड़ ७० लाख व्यक्तियों ने भाग लिया है। यह ग्राम पंचायतें प्रत्येक ग्राम की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और राजनैतिक विषयों में भी अपना मत दिया करेंगी। इन पंचायतों में एक ग्राम सभा रहा करेगी जो वर्ष में दो बार हुआ करेगी और कर लगाने के प्रस्तावों पर विचार किया करेगी। पंचायती अदालतें, जिनकी संख्या ८ हजार है, छोटी छोटी दीवानी, माल और अपराध सम्बन्धी मुकदमों का भी निर्णय किया करेंगी।

इस प्रकार एक अत्यंत ही क्रान्तिकारी सामाजिक व शासन सम्बन्धी यह सुधार व परिवर्तन, स्वभावत: ही, लाभ दायक भी सिद्ध हो सकता है और हानि कारक भी। प्रसिद्ध है कि भारत की आत्मा ग्रामों में निवास करती है यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि किताबी शिक्षा का न होना मात्र ही ठीक ठीक न्याय व निर्णय करने में सर्वथा असमर्थ होती हैं परन्तु यह भी सत्य है कि ग्रामों में अशिक्षा व अन्धविश्वास का राज्य है। उनका नैतिक और सांस्कृतिक धरातल भी ऊंचा समझना भ्रांति है और ग्रामवासियों की उपरोक्त विषयों में अनुभव शून्यता प्रारम्भिक कृषि सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों के ठीक ठीक संचालन में अयोग्य सिद्ध हो सकती है अत: अत्यंत आशा जनक परिणाम की कल्पना करना अथवा सर्वथा ही हानिकारक परिणाम उत्पन्न होने की कल्पना करना, दोनों ही समय से पूर्व की कल्पनाएं हैं।

इसी प्रकार दीवानी, माल, फौजदारी के विवादों में स्थानीय ज्ञान भी न्याय बुद्धि की न्यूनता तथा बलशाली दलों के भय के कारण ठीक ठीक न्याय होने में न केवल कठिनता उत्पन्न करने वाले ही हो सकते हैं अपितु अत्याचार पूर्ण भी हो सकते हैं। स्थानीय विषयों में रुचि न रखने के कारण दलबन्दी व राग द्वेष से सर्वथा पृथक, स्थान से दूर रहने वाला निष्पक्ष शिक्षित न्यायकर्त्ता न्याय के लिए अधिक योग्य सिद्ध होने का अनुभव है। या तो पंचायतों का कार्य उसी प्रकार संचालित हो जैसा कि भारत में पूर्व में प्रथा थी और शासन का न्याय में कोई हस्तक्षेप न होता था अथवा राज शासन के नियमों के अनुसार ग्राम्य पंचायत के निर्णय मान्य हों। दोनों प्रणालियों का सम्मिश्रण अनेक अस्वभाविक समस्यायें उत्पन्न कर सकता है।

अब ग्राम्य पंचायतें और ग्राम्य अदालतें स्थापित हो गई हैं। उन पर भारी उत्तरदायित्व डाल दिया गया है। इनकी सहायता के लिए तथाकथित शिक्षित इन्सपेक्टरों की नियुक्ति की गई है। इनमें अधिकतर कम आयु के व्यक्ति और न्याय प्रणाली के सूक्ष्म विवेचन की योग्यता से रहित व्यक्ति हैं। इस विचित्र परीक्षण को जिसमें कि सामाजिक व आर्थिक विषयों में मौलिक रूप में ही विभिन्नता पाई जाती है, बड़ी उत्सुकता तथा आशंका की दृष्टि से देखा जा रहा है। काश्मीर के कुछ भागों में भी कुछ समय पूर्व पंचायतें प्रारम्भ की गई थीं, राजस्थान में भी पंचायत का कार्य प्रारम्भ होने जा रहा है परन्तु अब तक के अनुभव ने केवल इतना ही सिद्ध किया है कि इससे सरकारी अदालतों में छोटे छोटे विवादों की संख्या कम हो गई है, अन्य कुछ नहीं। भारत में नवीन क्रान्ति उत्पन्न करने में युक्त प्रान्त में सरकार द्वारा ग्राम्य पंचायतों का निर्माण अपना विशेष स्थान रक्खेगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं है।

आर्यसमाज का 'संघ' से विरोध क्यों है?

श्री निरंजनदेवजी आयुर्वेदालंकार का एक लेख 'आर्यसमाज, संघ और हिंदू सभा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उक्त लेख में प्रकट किये गये विचारों के समान ही अनेक आर्य पुरुष विचार रखते हैं। अतः कुछेक आर्य पुरुष इस प्रकार की संस्थाओं में भाग लेते आये हैं। ऐसे महानुभावों की संख्या भी कम नहीं है कि जिन्होंने भ्रम में पड़ कर 'आर्यसंस्कृति' व आर्य जाति के उद्देश्य से, पहिले तो इन संस्थाओं में भाग लिया परन्तु बाद में शीघ्र ही यह अनुभव हुआ कि इन संस्थाओं में आर्य सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्राय: बहुत न्यून है। अधिकतर यह संस्थायें या तो अन्य राजनैतिक संस्थाओं के समान ही चुनाव लड़ने की साधन मात्र हैं अथवा उद्देश्य की अपेक्षा केवल संगठन को ही अधिक महत्व देती हैं। 'संगठन, संगठन के लिये' का उद्देश्य रख कर कोई संस्था बहुत समय तक स्थाई नहीं रह सकती। इस तत्व को समझने वाले 'संघ' के स्वयंमेव ही विलय होने का अनुभव करते हैं।

हिंदू सभा के सम्बन्ध में भी लगभग ऐसी ही बात है। हिंदू सभाओं के नेताओं अथवा स्वयं हिंदूसभा के प्रस्ताव द्वारा जो उद्देश्य व कार्यक्रम कुछ समय पूर्व घोषित किया गया है, विशेषतः आर्थिक व राजनैतिक, उसमें और कौंग्रेस के उद्देश्यों में कोई भेद प्रतीत नहीं होता। केवल 'पार्टी नाम' का भेद है। ऐसी अवस्था में 'हिंदू संस्कृति' शब्द का प्रयोग स्थानानुकूल नहीं बैठता है।

कांग्रेस के सम्बंध में भी लगभग यही बात है। कांग्रेस आंदोलन में भी महात्मा गाँधीजी ने 'आर्यसंस्कृति' व समाज सुधार का जो पुट देने का यत्न किया था उसको लक्ष्य में रख कर तथा 'स्वतन्त्रता प्राप्ति' जैसे पुण्य उद्देश्य के लिये ही आर्य पुरुषों ने कांग्रेस में भाग लिया था। उन्हें कांग्रेस के स्वतन्त्रता के आंदोलन में आर्यसदाचार, नैतिकता, सामाजिक सुधार, शिक्षा व देशोन्नति व आर्य संस्कृति की ऋषि दयानन्द प्रदर्शित प्रगतिशीलता लक्षित हुई थी। परन्तु अब उसकी विदेशी अस्वास्थकर अनुकरण परायणता तथा 'स्वभाषा' 'स्व संस्कृति' विरोधी प्रवृति के कारण आर्य पुरुषों का भ्रम टूट रहा है और वे असमंजस में पड़ गये हैं। सर्व प्रमुख राजनैतिक नेताओं के विभिन्न विभिन्न वक्तव्यों के कारण कौंग्रेस के उद्देश्यों के सम्बन्ध में भी आशंकायें उत्पन्न हो गई हैं।

इसी प्रकार 'संघ' की भी दशा है। 'संघ' का न तो कोई सिद्धान्त ग्रन्थ ही है और न उसके 'सांस्कृतिक' व 'राजनैतिक आदर्श' ही स्पष्ट हैं। स्वभावत: उसकी स्थापना विशेष २ अवस्थाओं में, रक्षात्मक आवश्यकता के कारण, प्रतिक्रिया के रूप में हुई प्रतीत होती है। संघ में सम्मिलित होने वाले जन साधारण की यही भावना है 'राजनीति, संघ के कार्य क्षेत्र के बाहर है' ऐसा संघ के गुरु श्री माधवराव जी गोलवालकर की घोषणा है। अत: संघ के 'हिन्दू राष्ट्र व आर्य राष्ट्र' का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। यही कारण है कि समाज व्यवस्था के सांस्कृतिक रूप को संघ स्पष्ट नहीं कर सका है।

आर्यसमाज जैसी संस्था का जिसके सम्मुख संस्कृति का विशिष्ट रूप लिखित रूप में निश्चित है, जिसके उद्देश्यों व कार्यप्रणाली में संकुचितता, साम्प्रदायिकता तथा आक्रामक प्रवृति का सर्वथा अभाव है तथा जिसमें व्यक्ति धर्म राष्ट्रियता अन्तर्राष्ट्रीयता में विरोध न होकर सामंजस्य है, इन संस्थाओं से उद्देश्य समता की कल्पना नहीं की जा सकती है। 'संघ' से सबसे अधिक आशंका का कारण तो यह है कि 'संघ शक्ति' निरुद्दिष्ट व पथ भ्रष्ट होकर कहीं अत्यन्त हानिजनक सिद्ध न हो जाय। अस्पष्ट उद्देश्य व अनिश्चित कार्य प्रणाली के कारण जिसकी सम्भावना सदैव ही रहेगी। ★★

उझियानी का भड़ार परिवार

उझियानी, जिला बदायूं में लगभग अर्धशताब्दी पूर्व रायबहादुर श्री व्रजलाल भड़ार ने मिल व्यापार प्रारम्भ किया। पंजाब के आर्य पुरुषों का वैदिक धर्म, आर्यसमाज और हिन्दू जाति का प्रेम साथ लाये थे अत: उन्होंने न केवल हिन्दू जाति की रक्षा व उसकी उन्नति के सभी कार्यों में सम्मिलित होना ही प्रारम्भ किया अपितु मुक्त हस्त होकर धन देना भी प्रारम्भ किया। कोई व्यक्ति उनके यहां से निराश होकर नहीं लौटा। उनके कार्य का परिणाम यह हुआ कि उझियानी जैसा छोटा-सा कस्बा प्रसिद्ध व्यापार की मण्डी तथा आधुनिक प्रकार की विशाल अट्टालिकाओं का नगर हो गया। भड़ार महोदय जीवन पर्यन्त असेम्बली और कौंसिल के सदस्य रहे अनेक वर्षों तक डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चेयरमैन रहे। विशेषता यह है कि वे 'राजा' और 'प्रजा' दोनों में समान रूप से सम्मानित हुये।

(शेष पृष्ठ ६ में)

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है हिन्दुस्तानी कदापि नहीं

संस्कृत मृत नहीं, जीवित भाषा है

(माननीय श्री सम्पूर्णानन्द)

देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी' होगी यह निश्चित ही है परन्तु फिर भी विवाद समाप्त नहीं हुआ है। पं जवाहर लालजी नेहरु उर्दू के पक्षपाती हैं, मौलाना आजाद हिन्दुस्तानी के। हिन्दुस्तानी, की निस्सारता प्रस्तुत लेख से प्रमाणित होती है जो सामयिक और पठनीय है। —सम्पादक,

हम लोग तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन देखना चाहते रहे हैं अब तक यही मानते आये हैं कि हिन्दुस्तानी उर्दू से प्रायः अभिन्न है। फारसी अरबी के कुछ शब्दों की जगह संस्कृत के तद्भव या देशज शब्दों को दे देने तथा विदेशी शब्दों के लिये देशी व्याकरण का प्रयोग करनेसे . उदाहरण के लिये सुल्तान का बहुवचन सलातीन की जगह सुल्तानों मान लेने से उर्दू हिन्दुस्तानी बन जाती है। ऐसे लोग जो, उर्दू के हिमायती हैं, देख रहे हैं कि आज के राजनैतिक वातावरण मेंउर्दू पक्ष की विजय नहीं हो सकती।इस लिए वह हिंदुस्तानी का समर्थन करते हैं। उनका यह विश्वास है कि यदि भाषा का नाम हिन्दुस्तानी रह जाय तो वह उसके उर्दू स्वरूप की रक्षा कर ले जायगे।

उर्दू पक्षियों के सिवाय हिन्दुस्तानी के समर्थकों में एक ऐसा दल है जो महात्मा जी से सम्मत इस परिभाषा को स्वीकार करता है कि हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो उत्तर भारत में प्राय. सर्वत्र समझी और बोली जाती है। उर्दू वालों के अनुसार यह सौभाग्य उर्दू को प्राप्त है, हिन्दी वाले कहते है कि हिन्दी ही वह लोकभाषा है। परन्तु यदि इसका नाम हिन्दुस्तानी मान भी लिया जाय तो एक आक्षेप रहता है। इसमें हाट, बाजार की बोलचाल की तो क्षमता है,प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा भी इसमें दी जा सकती है, परन्तु इसमें ऐसे शब्द नहीं हैं जिनका व्यवहार सरकारी कामों या उच्च शिक्षा में किया जा सके। ऐसे कामों के लिये कहीं से शब्द लेने होंगे। यदि इसके लिये अरबी फारसी का सहारा लिया गया तो हिन्दुस्तानी उर्दू बन जायगी। यदि संस्कृत को आधार बनाया गया तो भाषा हिन्दी हो जायगी।

इस तर्क के तथ्य को अस्वीकार करना असम्भव है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुस्तानी के आचार्यों ने इस विषय पर खूब विचार किया है। फलस्वरूप हमारे सामने "हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दुस्तानी शब्दावली, प्रस्तुत है। इसको इसी महीने में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा, ने प्रकाशित किया है। शब्दावली के मुख्य रचयिता महात्मा भगवानदीन हैं और "दो शब्द' लिख कर सर्व श्री काका कालेलकर सत्यनारायण और सुन्दरलाल तथा श्रीमती रामेश्वरी नेहरु ने इसका समर्थन किया है। व्यास, बुद्ध महावीर, कबीर नानक, सूर, तुलसी और गांधी जी की आत्माओं का भी मूक आशीर्वाद प्राप्त कर लिया गया है।

जैसा कि "दो शब्द" के आरम्भ में कहा गया है "हिन्दुस्तानी एक जीती जागती बोली है,, और यह भी मानना होगा कि शब्दावली के रचयिता और समर्थक सभी जागते जोगी हैं। अत मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि उन अभागों को, जिनके हाथ में इस पुस्तक की प्रति न पहुँची हो, इसके टकसाली शब्दों का बोध करा दूँ।

हिन्दी-राष्ट्रभाषा के मुख्य समर्थक मा श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन

हम लोग जिस राज में रहते हैं उसको "इंडियन यूनियन,, कहा जाता है। राजशास्त्र में यूनियन का विशेष अर्थ होता है। कई राजसत्ताओं के विशेष प्रकार से मिलने पर यूनियन बनता है। शब्दावली में "इंडियन यूनयन" को "हिन्द इकावा' कहा गया है। लाख सिर खपने पर भी हिन्दीवाले इतना सुन्दर शब्द न ढूंढ पाते। राजशास्त्र के बड़े बड़े सिद्धान्त छोटे से "इकावा" शब्द में समा गये। "मीटिंग" के लिए सभा और "रेप्रेजेन्टेटिव" के लिए प्रतिनिधि तो सभी बोलने लगे हैं, परन्तु ऐसा करते समय हम यह भूल जाते हैं कि खड़ी बोली में "मिलन' और "ओरिया' मौजूद है। यह ठीक है कि मिलनी विवाह में एक रस्म होती है और "ओर" के होते हुए भी 'ओरिया" कहीं सुना नहीं जाता। परन्तु ऐसे आक्षेप उठाना जीवित बोली की शक्ति को न पहचानने का सूचक है। इन्क्वायरी के लिए "धूछना" "कन्सालिडेशन" के लिए 'ठोंसियाना' 'रिबेल' के लिऐ 'बिगड़ैल प्रेजर्व के लिये सतना, "रेसिप्रासिटी" के लिए" फरफिराव 'इन्स्ट्रक्टर"के लिए "सिखइया" और "पब्लिशर" के लिए 'निकलिया" यह ऐसे जानदार शब्द हैं कि गढ़ने वाले की कलम को चूम लेने को जी चाहता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ा है। "जिऑग्राफी" के लिए दो पर्याय दिये गए हैं "जुगराफिया और भूबारता" "जुआलोजी" 'प्रानी विद्या" है और "मेटीरियलिज्म" "माटीवाद" हो गया है। इस भाडागार के कितने रत्न सामने लाए जायँ। "पेसिव रेजिस्टेंस" अब निष्क्रिय प्रतिरोध की जगह "चुपहट' हो गया है, 'इम्प्लिसिट" की जगह "हई" कहने से काम चल जायगा और "सब सकरा को "उपखड जैसे किसी अनगढ़ नाम से पुकारने की जगह 'छुटकट' कहा जा सकेगा। अब सरकार लोगों को सनद (सर्टिफिकेट) रजियाया करेगी। 'विकेन्द्रीकरण' कितना भोंडा लगता है उसकी तुलना में "निरबिचवान" सुनकर जी फड़क उठता है। किसी किसी शब्द की व्युत्पत्ति ठीक समझ में नहीं आती। उदाहरण के लिए 'आउट्रेज का पर्याय 'किमहोरा लीजिये। परन्तु शब्द का गोत्र पूछकर क्या होगा, उसका स्वगुण ख्याता। नामधातु तो खूब ही बने हैं। नकुछितना, अन्तियाना, इकयाना, पूछ-ताछना, ऐकटयाना, दुशियाना, शाकयाना इस सजीव भाषा कहते हैं।

इस शब्दावली के साहस की प्रशंसा तो करनी ही होगी। ऐसा मानना चाहिए कि या तो उनको इस बात का कुछ भी आभास नहीं है कि लोग उनको क्या कहेंगे या उनको लोकमत की परवाह नहीं है। ऐसे गम्भीर विद्वान् कभी उतावले होंगे ऐसा सोचना तो उनका अपमान करना है। वह आशा करते हैं कि ऐसी भाषा इस देश में चल जायगी, इससे बढ़कर आश्चर्य को और क्या बात होगी! हिन्दी की अपनी सैकड़ों वर्षों की साहित्यिक परम्परा है और फिर वह संस्कृत की सहस्रों वर्षों की परम्परा की दायाद है। उर्दू के पीछे भी अरबी फारसी की परम्परा है। चाहे यह परम्परा हमारी संस्कृति से भले ही अनमेल हो। ऐसे देश में इस प्रकार के शब्दों को प्रचलित कराने का यत्न कोई असाधारण व्यक्ति ही करेगा। मैं असाधारण का विश्लेषण नहीं करता। एक बात खूब याद आई। विश्लेषण करने वाले को अब सुधार, लाभ या अलगाऊ कहना होगा। अस्तु। शब्दों के अभिधार्थ से बढ़कर कभी कभी उनके व्यक्तितार्थ का महत्त्व अधिक होता है। ध्वनितार्थ सैकड़ों वर्षों के व्यवहार से विकसित होता है। अब हमसे कहा जाता है कि हम ऐसे शब्दों को छोड़कर नये गढ़े शब्दों का प्रयोग करें जिनके पीछे कुछ थोड़े से व्यक्तियों का हिन्दी या संस्कृत द्वेष मात्र है।

हिन्दी-राष्ट्रभाषा के प्रमुख विरोधी माननीय श्री जवाहरलाल नेहरू

मैं यह द्वेषवाली बात यों नहीं कह रहा हूँ, इसके लिए आधार है। जहाँ विदेशी शब्द लिए गए हैं वहाँ उनके उच्चारण की रक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। जुगराफिया कानून फौजदारी जैसे शब्दों में अधाव दुरुस्त गैन फ, काफ का शुद्ध रूप रखा गया है, परन्तु संस्कृत शब्दों की कथा न्यारी है पहले तो उन को छोड़ देने का पूरा यत्न किया गया है। भगवान जैसा सीधा शब्द भी न आ सका जो सारे देश में प्रचलित है, जिसे लाखों बच्चे प्रत्येक प्रान्त में बोल रहे हैं भूगोल से भी अधिक प्रचलित प्रश्नोत्तरी है परन्तु उसको भी बाहर निकाल दिया गया, सार्वत्र विचार का तो भला पूछना ही कौन। जहाँ संस्कृत के शब्द आये भी हैं तो उनके तद्भव रूप दिए गए हैं, तत्सम रूप नहीं। औसर, जग, नेम बरता सुर करना, समन्दर, दीन, की भरमार है। बेचारा धर्म भी न बच पाया। 'ह्यूमन' के पर्याय में 'मानवधर्मा' नहीं वरन् 'मानवधरमी' आया है। यह तो स्पष्ट है कि इस हिन्दुस्तानी ने उन सब बातों की ओर से जिनमें भारत की भारतीयता है, मुँह फेरने का निश्चय कर लिया है। इस देश की परम्परा और संस्कृति से उसे स्फूर्ति नहीं लेनीहै। तब फिर हम ऐसी भाषा को लेकर क्या करेंगे?

भारत की राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मं।
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः ॥
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति।
न वै भिन्नाः प्रशमं रोचयन्ति ॥
न वै तेषां स्वदते पथ्यमुक्तम्।
योगक्षेमं कल्पते नैव तेषाम् ॥
भिन्नानां वै मनुजेन्द्र परायणं।
न विद्यते किञ्चिदन्यद् विनाशात् ॥
(महाभारत में विदुर, धृतराष्ट्र के प्रति)

अर्थ

विदुर उवाच — हे धृतराष्ट्र ! जब लोगों में फूट पड़ जाती है—तब,
(१) वे धर्म—कर्म नहीं कर सकते।
(२) उनको सुख नहीं मिल सकता।
(३) उनका कहीं भी गौरव नहीं होता

जब तक रत्ती भर भी अवसर मिलेगा तब तक यह लोग अपना प्रयत्न जारी रखेंगे। जिन प्रान्तों में इनका बस चलेगा वहां इसी भाषा में पाठ्य पुस्तकें लिखी जायेंगे ताकि दस पाँच वर्ष के बाद लाखों ऐसे व्यक्ति हो जायँ जो इसी कृत्रिम भाषा से परिचित हों। यह अभागे विद्यार्थी शुद्ध हिन्दी के जीवित प्रवाह से ही दूर न पड़ जायेंगे, परन्तु उनका सम्बन्ध उस पीयूषमय स्रोत से भी विच्छिन्न हो जायगा जो हिन्दी ही नहीं वरन् उर्दू को छोड़कर सभी भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित कर रहा है। यदि यह षड्यन्त्र सफल हो गया तो यहां अरबी संस्कृति तो नहीं जमेगी, परन्तु उस संस्कृति का लोप हो जायगा जिसका प्रतीक संस्कृत है। हमको सावधान रहना होगा।

यदि ऐसा प्रयास ऐसे लोग करते जिनके नाम अरबी फारसी शब्दों से बने हैं तो उनका सामना अपेक्षया सुकर होता, परन्तु महात्मा, तपस्वी, पंडित कहलानेवालों का जादू दूर तक चल जाता है। यह हिन्दी और संस्कृत का अधिक सफल विरोध कर सकते हैं यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तानी के समर्थकों को संस्कृत से कोई विरोध नहीं है। जो उसे पढ़ना चाहे पढ़े। ठीक है, परन्तु संस्कृत हमारे लिये चीनी, ग्रीक, प्राचीन, मिस्री, आदि के समान भाषा नहीं है। उसके शब्दों में हमारे सहस्रों वर्षों की अनुभूतियां, आशायें, आकांक्षायें निहित हैं। एक एक शब्द का उच्चारण पुरानी कोई स्मृति को जगा देता है, हृदय को झंकृत कर देता है। संस्कृत मृत नहीं, जीवित है। उसका हमारे आचरण से अटूट सम्बन्ध है और हमारी राष्ट्रभाषा की बनावट में भी उसका हाथ रहा है, होगा। जो लोग किसी भी रूप में इस बात का विरोध करते हैं, वह लोग हमारे राष्ट्रहित के विरोधी हैं।

पांच सहस्र और चालीस वर्ष पूर्व की बात आज भी सच

[आचार्य नरदेवजी शास्त्री, 'वेदतीर्थ']

[आचार्य नरदेव शास्त्री आ० समाज के ख्याति प्राप्त विद्वान् नेताओं में से हैं। वे कांग्रेस के कार्यों में भी प्रमुखता से भाग लेते रहे हैं। प्रश्न यह है कि क्या एकता स्वयं में उद्देश्य है अथवा किन्हीं उद्देश्यों व सिद्धांतों की पूर्ति का साधन मात्र है। सिद्धांत भेद होने पर एकता कैसे सम्भव है ?] सम्पादक

(४) उनको शान्ति की बातें अच्छी नहीं लगती,
(५) उनको हित की, पथ्य की बातों का स्वाद नहीं आता, अथवा मिलता,

बस उनकी एक ही गति होती है, वह यह कि

विनाश, विनाश, विनाश

आज इस वाक्य को लगभग साढ़े पाँच सहस्र वर्ष होते हैं, जिसकी सत्यता भारत वर्ष ने ७०० वर्ष के यवन काल में अनुभव की। जिसकी सत्यता का अनुभव दो सौ वर्ष की अंग्रेजी शासनकाल की दशा में हमने अनुभव किया और अब अपना राज हो गया

लेखक

तो भी, अब भी वह फूट की बेल बराबर फल रही है। उसको काटते भी जा रहे हैं, फिर फूट निकलती है, किसी प्रकार भी निर्मूल नहीं होने पाती।

हिन्दुओं में कहिए, आर्यों में कहिए है एक ही बात—किस बात में कम थे, हमारे पूर्वज। धन-धान्य, ऐश्वर्य, वीरता धीरता, बुद्धिमत्ता, सत्ता, महत्ता आदि, में किस बात में कम थे— जब हमारे देश में यवनों के आक्रमण होते रहे तब भी और जब वे सिर पर शासक रूप में बैठे तब भी हम फूटे ही रहे और भिन्न भिन्न होकर यवनों के शासन काल को दृढ़ तथा लम्बा करते गये। पर लक्ष्मी तो चला है, चञ्चला है, झट विचलित हो जाती है। उसके रूठने में देर नहीं लगती। कभी कभी दुष्टों का भी बहुत देर तक साथ देती है। कभी कभी देर तक भक्तों से भी दूर रहती है। सारांश लक्ष्मी का आज तक न कोई ठेकेदार बन सका और न बन सकता है —

मुसलमानों की क्रूरता बढ़ी, उनमें भी आलस्य प्रमाद आ गया, उनमें भी फूट पड़ गयी और वे भी जर्जर हो गये और अंग्रेज आ गये और हमारे सिर पर पूरे दो सौ वर्ष रहे। कभी हिन्दुओं को रगड़ा, कभी मुसलमानों को कभी दोनों को पीसा। पर अंग्रेजों की साम्राज्य लालसा, लोभ इतना अधिक बढ़ गया कि उनको भी जाना पड़ा और गये ठीक उसी विद्या के कारण जो कि वे दो सौ वर्ष तक भारतीयों को सिखाते रहे। अंग्रेज गया उसका शासन गया, उसकी छाया गयी पर उसकी माया अब भी काम कर रही है। कहता हूं अंग्रेज जिस परिस्थिति में हमको छोड़ गया था, उसमें तो और कोई होता तो स्वतन्त्रता के साथ डूब जाता। मैं कहता हूं इस समय जितना बड़ा भारत वर्ष एक भारत संघ राज्य के नीचे है उतना गत २००० वर्ष में कभी नहीं था। यवनों ने सिन्ध प्रदेश पर जब आक्रमण किया था, वह हिन्दुओं के सौ गण राज्य थे। फिर भी फूट के कारण डूब ही गये।

मुसलमान क्रूरता से गया, हिन्दू फूट से मरा, अंग्रेज लोभ–महालोभ से गया।

अस्तु अंग्रेज और मुसलमानों की जो गति विधि हो आज तो हमें हिंदुओं की आर्यों की फूट की बात कहनी है। अंग्रेज भारत के दो मुख्य टुकड़े कर गया साथ ही देशी राज्यों के ६६५ छोटे मोटे टुकड़े करने की व्यवस्था भी कर गया था। पटेल सरदार की बुद्धिमत्ता थी कि उसने सब को एक सूत्र में बांधा, उन सबको एक छत्रच्छाया के नीचे लाया। हिन्दुराजे मुसलमान नवाबों की बातों में आकर स्वतन्त्र रहने को फिर रहे थे। यदि देशी राज्य पृथक, संघटन करते तो सोचिए कि कितना अनर्थ होता ! काश्मीर का महाराजा हरि सिंह 'स्वतन्त्रता' के स्वप्न तब तक देखता रहा जब तक पाकिस्तान ने उसका गला नहीं दबाया। भिन्नता, विभिन्नता ने पहिले भी हमको नष्ट किया था अब भी हम नष्ट हो रहे हैं। जूनागढ़ का प्रश्न हल हो गया। हैदराबाद सीधा होगया, भोपाल की अकड़ भी ठिकाने लग गयी, समझदार रामपुर पहिले ही समझ गया था, काश्मीर देर में समझा, पहिले ही—जब माउन्टबेटन ने समझाया था कि किधर रहना है फैसला करलो, तब यदि महाराज हरिसिंह भारतवर्ष के साथ रहने का ऐलान कर—घोषणा करते तो भारत संघ को न तो युद्ध करना पड़ता, न इतनी हानि उठानी पड़ती। एक झगड़ा और, और पाकिस्तान भी सीधा हुआ जाता है। देर है पर अन्धेर नहीं। इस प्रकार ये झगड़े मिटे, और रहे - सहे मिटते जा रहे हैं, पर हमारे भाई कम्यूनिस्ट घर को बरबाद करने पर तुले हैं। हमारे समाजवादी भाई भी व्यर्थ ही जनता में मतभेद उत्पन्न करा रहे हैं, ये सब अधिकतर हिन्दू ही हैं। जहाँ जहाँ अंगरेजी शिक्षा अधिक थी वहीं कम्यूनिस्ट भी जोर पकड़ रहे हैं, मदरास को देखिए, बंगाल को देखिये। इस प्रकार हमारे ही भाई फूट डालरहे हैं—सरकार को बदनाम कर रहे हैं — सरकार जब बड़े-बड़े जोर के धक्कों को सह गयी तब कम्यूनिस्ट और समाजवादियों के साधारण धक्कों को अवश्य ही झेलेगी। कम्यूनिस्ट तथा समाजवादियों के प्रचार तथा प्रसार को रोकने की शक्ति आर्यसमाज में है, पर यह सावधान होकर बलपूर्वक उठे तब न ?

भारतवासियो, सावधान। बड़ी कठिनता से, बड़े चिरकाल के पश्चात् स्वतन्त्रता मिली है। कहीं भिन्नता, विभिन्नता, में स्वनाश मत कर बैठना। महात्मा विदुर के वचनों को सदैव स्मरण रखना - वे वचन आज भी अक्षरशः सत्य हैं।

कमी क्या है ?

[श्री चन्द्रनारायण, एम० ए० एल-एल० बी० बरेली]

भारत वर्ष की समस्त धार्मिक राजनैतिक तथा सामाजिक संस्थाओं में आर्य-समाज के पास सब से अधिक चल और अचल सम्पत्ति है, सब से अच्छे उपदेशक व्याख्यान दाता तथा भजनीक है, प्रत्येक विषय के प्रकाण्ड विद्वान हैं, बड़े २ गुरुकुल और कालेज हैं, सब से अधिक सदस्यों की संख्या है। इतना होते हुये भी क्या कारण है कि आर्य समाज को आज गौरव और मान—जो पचीस वर्ष पूर्व था—प्राप्त नहीं है। इसका कारण क्या है? स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के पश्चात् आर्य समाज के लिये कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया, और पहली सी अड़चनें भी नहीं रहीं फिर भी आर्य समाज आज तटस्थ क्यों है?

कांग्रेस की गिरावट, सोशिलिस्टों का के थोथापन और कम्यूनिस्टों के उत्पात से तंग आकर जनता सुख और शान्ति के साधन जानने के लिये आर्य समाज की ओर ताकती है किन्तु कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज ने इस अवसर से लाभ न उठाने की शपथ सी खाली है। यह सब क्यों है? कमी क्या है? इन सब का एक ही उत्तर है। नेतृत्व की कमी है। आर्य समाज के पास नेता भी बहुत से हैं—नेताओं का नेता कोई नहीं है। स्व० स्वामी श्रद्धानन्दजी के पश्चात् आर्य समाज के पास कोई सार्वभौमिक नेता नहीं रहा, श्री नारायण स्वामी जी के पश्चात् रहा सहा नेतृत्व भी जाता रहा है।

होने को सार्वदेशिक सभा भी है—सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी हैं। नेतृत्व का कार्य्य सार्वदेशिक सभा ही कर सकती है। कांग्रेस की वर्किङ्ग कमेटी कांग्रेस का नेतृत्व करती है कि नहीं? फिर सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग आर्य समाज का नेतृत्व क्यों नहीं करती? उत्तर मिलेगा कि सार्वदेशिक सभा मक्खियां थोड़े ही मारती है कुछ तो करती ही है। परन्तु बात यह है कि कांग्रेस कमेटी (आल इण्डिया) के प्रतिनिधि जनता द्वारा चुने जाते हैं उनका कांग्रेस क्षेत्र में प्रभाव रहता है—वहां निर्वाचन में संघर्ष होता है—संघर्ष ही जीवन है। सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन कब और कैसे होता है इसका बहुत से आर्य समाजियों को भी ज्ञान नहीं—तो संघर्ष कैसे हो—जीवन कैसे हो? सार्वदेशिक सभा का आर्य जनता से सीधा सम्बन्ध नहीं—जनता पर इसी लिये उसका कोई प्रभाव नहीं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान का पद उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कांग्रेस के प्रधान का। किन्तु आर्य जनता को प्रायः यह भी ज्ञात नहीं होता कि हमारा प्रधान कौन है? जब आर्य जनता और आर्यों की शिरोमणि सभा के प्रधान में ही कोई सम्पर्क स्थापित नहीं होता तो—आर्य-जनों पर उसका क्या प्रभाव होगा? अतएव यह अत्यावश्यक है कि आर्य सार्वदेशिक सभा का प्रधान समस्त आर्यों के वोट से चुना जावे न कि थोड़े से व्यक्तियों द्वारा। यह सही है कि ऐसा होने पर प्रधान का निर्वाचन एक कठिन कार्य हो जावेगा। किन्तु कुल्हिया में गुड़ फोड़ लेने की अपेक्षा—अधिक प्रभाव शाली और संघर्ष पूर्ण तथा जीवन प्रद होगा। यही क्रम प्रांतों के निर्वाचन में भी अपनाना चाहिए।

दूसरी कमी है—प्रोपेगंण्डा की। आर्य समाजों के उत्सव होते हैं, वहां व्याख्यान होते हैं—प्रचार होता है, किन्तु प्रेस द्वारा उनका कहीं उल्लेख नहीं होता। अंग्रेजी उर्दू अथवा हिन्दी का कोई भी दैनिक आर्य समाज के प्रचार के समाचार नहीं छापता। न व्याख्याताओं के विचार ही प्रेस द्वारा जनता तक पहुंचते हैं। आर्य समाज के पास तो 'प्रेस' न होने के बराबर है। सार्वदेशिक सभा का मुख पत्र है 'सार्वदेशिक' जो मासिक निकलता है। प्रान्तीय सभाओं के पास हैं तो साप्ताहिक पत्र, वह भी अपटूडेट नहीं। समाजियों के पास दैनिक समाचार पत्र उर्दू में भी है—हिन्दी में भी—किन्तु उनमें आर्य समाज और आर्य समाजियों का उल्लेख नहीं। अतएव आवश्यक है कि आर्य समाज के पास एक उच्चस्तर का अंग्रेजी, हिन्दी व उर्दू का समाचार हो जिसके द्वारा आर्य समाज का प्रचार हो।

प्रचार के नए २ साधन बन चुके हैं—किन्तु आर्य समाज को या तो वह उपलब्ध नहीं हैं या आर्य समाज उनका उपयोग करने में असमर्थ हैं। ब्राडकास्टिंग स्टेशनों से गुरुनानक गोस्वामी तुलसीदास मुहम्मद साहब, चैतन्य महाप्रभु आदि की जयन्ती की कार्यवाहियां ब्राडकास्ट की जा सकती हैं तो दयानन्द निर्वाणोत्सव अथवा ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ब्राडकास्टिंग स्टेशनों से कोई प्रोग्राम क्यों नहीं ब्राडकास्ट किया जा सकता है? किन्तु यह हो तो तब जब आर्य समाज इस ओर ध्यान दे और दृढ़ निश्चय के साथ इस कार्य को करें। ऋषि दयानन्द के जीवन की फिल्म बनवाकर विदेशों में भिजवाई जावे जिससे पाश्चात्य देशों को ऋषि जीवन, ऋषि कार्य, ऋषि निर्मित वैदिक साहित्य का परिचय हो। ग्रामोफोन कम्पनी द्वारा आर्य सामाजिक भजनों को घरों में पहुँचाया जावे। आर्य समाजी भजनों ने नारियों की अभिरुचि में घोर परिवर्तन कर डाला था किन्तु (सिनेमा के गानों के सामने वे मध्यम पड़ रहे हैं। अतः आवश्यकता है कि शुद्ध वैदिक सभ्यता और संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाले गीतों का प्रचार किया जावे।

आर्यन कांग्रेस प्रतिवर्ष किसी न किसी स्थान पर हुआ करें, जिससे आर्यजगत में नई स्फूर्ति व नया जीवन आवे। आर्यन कांग्रेस का प्रतिवर्ष कराना सार्वदेशिक सभा का कार्य होना चाहिए और कांग्रेस के निश्चयों को कार्य-रूप में परिणत करना भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा का कार्य हो। तब तो नवीन जीवन का संचार हो सकता है।

अनुशासन की भी कमी है। ऐसी आर्य समाजें हैं जो प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक सभा के नियमोंपनियमों को नहीं मानती फिर भी आर्य समाज के नाम से कार्य करती हैं। यह सर्वथा निन्दनीय है। कांग्रेस के नाम से कोई व्यक्ति दूसरी कांग्रेस नहीं खोल सकता, लेकिन सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित विधान का उल्लंघन करते हुये आर्यसमाजें चल रही हैं। ऐसी आर्य समाजें जिन्होंने अपने नियमों में यह बना लिया है कि वे प्रान्तीय प्रतिनिधि अथवा सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत नहीं रहेंगी। आर्य-समाज संसार इसे देखकर चुप है। क्यों? क्या आर्य समाज इतना निर्बल है कि ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध अनुशासन की कार्य-वाही नहीं कर सकती। मैं तो समझता हूँ कि कर सकता है और करना चाहिये। किन्तु यह हो तो तभी सकता है जब कि हमारा संगठन दृढ़ हो और हम अपनी शक्ति लगाकर ऐसे व्यक्तियों को मजबूर कर दें कि वे प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत रहें।

यह थोड़े से विचार विचारार्थ उपस्थित किये हैं आशा है कि आर्य महानुभाव इन पर विचार करेंगे।

कुछ आंकड़े

गेहूँ

द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ से गत वर्ष तक भारत में गेहूँ का उत्पादन किस प्रकार घटता गया है उसका ब्योरा निचे दिया जाता है।

सन्	१९३८—३९ के उत्पादन को १०० मानकर
१९३९—४०	[illegible]
१९४०—४१	९८.१
१९४१—४२	९१ ९
१९४२—४३	९९ ०
१९४३—४४	९० २
१९४४—४५	९७ ७
१९४५—४६	८४ १
१९४६—४७	६७ ०
१९४७—४८	[illegible]

ऊन

इस वर्ष ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि संसार में ऊन के कुल उत्पादन ३७००० लाख पौंड होगा। गत वर्ष ऊन का कुल उत्पादन [illegible] लाख पौंड था। अमेरिका और कनाडा में गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कम ऊन उत्पन्न हुआ है। एशिया में उत्पादन बढ़ा है। इस वर्ष एशिया में ऊन [illegible]२० लाख [illegible] होने का अनुमान लगाया जाता है।

पेट्रोल

सन् १९४८—४९ में १०६६ लाख गैलन विदेशों [illegible] गया जिसका मूल्य १० ६७ करोड़ रुपया है। बन्दरगाह पर पेट्रोल का मूल्य प्रति गैलन १३ आना से लगाकर १५ आने पड़ता है। १९४९—५० में भारत सरकार को केवल पेट्रोल कर द्वारा १२ करोड़ रुपये प्राप्त होंगे।

आर्यसमाज और डी० ए० वी० स्कूल

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना प्राचीन वैदिक धर्म और संस्कृति के प्रचार और प्रसार के लिये की थी। उन्हें प्राचीन आर्य सभ्यता का पुनरुत्थान अभीष्ट था इसलिये उन्होंने धर्म प्रचार के साथ साथ सामाजिक और नैतिक सुधार के लिये भी आवाज उठाई थी। देशोन्नति में शिक्षा को अनिवार्य साधन मानकर उन्होंने शिक्षा का आदर्श भी हमारे सामने रक्खा था। उनके समय में ही देश पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित हो चुका था और राजा राममोहन राय आदि सुधारकों ने भारतीय संस्कृति को पश्चिमी सभ्यता का पुट देना शुरू कर दिया था। परन्तु स्वामी दयानन्द की दृष्टि का रंग उससे बिलकुल भिन्न था। वैदिक आदर्शों से हट कर चलना वह किसी भी स्थिति में उचित नहीं समझते थे। उन्हें इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का मध्यम मार्ग (Compromise) पसन्द न था।

हमारी शिक्षा के लिये उन्होंने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को ही आदर्श माना। अन्य किसी भी शिक्षा पद्धति को उन्होंने हमारे लिये हितकर नहीं समझा। यद्यपि उनके समय में ही पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की कुछ कुछ हवा यहां तक आ चुकी थी और लोगों का इस ओर आकर्षित होना स्वाभाविक भी था परन्तु स्वामी जी ने उसकी नितान्त अवहेलना की और सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में प्राचीन शिक्षा पद्धति और पाठ विधि लिखकर गुरुकुल प्रथा का ही जोरों से समर्थन किया।

स्वामी जी के स्वर्गारोहण के पश्चात कुछ दिनों तक आर्य समाज के कार्यकर्त्ता उसके आदर्शों पर चलते रहे परन्तु धीरे धीरे उन में अपने आदर्शों के प्रति ढीलापन आने लगा। कुछ उदार दल के आर्य नेताओं ने समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में ही धर्म प्रचार का सुभीता समझा। इधर इसाइयों के मिशन स्कूल और कालेज खुलने लगे जिनके द्वारा इसाई धर्म के प्रचार में सुविधा होने लगी। आर्य समाज के नेताओं ने भी शायद कुछ इसी भाव से प्रभावित होकर दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेजों और स्कूलों की स्थापना की योजना बनाई। उनका विचार था कि इन संस्थाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी धार्मिक वातावरण में अंग्रेजी शिक्षा का अध्ययन करेंगे और वैदिक धर्म के प्रेमी और प्रशंसक बनेंगे। विचार अच्छा था और कुछ दिनों तक डी ए वी स्कूलों और कालेजों का वही ध्येय रहा। धार्मिक वातावरण पैदा किया गया और वैदिकसिद्धान्तों की शिक्षा दीक्षा आदि का कार्यक्रम अनिवार्य रूप से रक्खा गया। इस से लाभ भी हुआ। अनेक विद्यार्थी आर्य धर्म प्रेमी और चरित्रवान बन कर निकले। परन्तु यह व्यवस्था अधिक समय तक न रह सकी। इन संस्थाओं के प्रबन्धकों ने शायद नवयुग से प्रभावित होकर धार्मिक कार्य क्रम को अनिवार्य रखना संकुचित भावना का द्योतक समझा और अंग्रेजी सरकार तथा अन्यधर्मावलम्बियों के सामने अपनी धार्मिक उदारता का परिचय देने के लिये उन्होंने इस आवश्यक धार्मिक कार्यक्रम को बन्द अथवा नाम मात्र का कर दिया। धीरे धीरे वे अन्य प्रतिबन्ध भी ढीले कर दिये गये जिनके कारण ये संस्थाएं दूसरी शिक्षा संस्थाओं से विशेषता रखती थीं। अब यह विचार भी प्रायः जाता रहा कि इन संस्थाओं में काम करने वाले अध्यापक जहां तक सम्भव हो आर्य धर्मानुरागी ही हों। यहीं तक नहीं, कहीं २ तो अब प्रधानाध्यापक भी इन में आर्य समाजी नहीं देखे जाते। अध्यापकों के आचार विचार के अनुरूप ही स्कूल और कालेजों का वातावरण बनता है। जब शिक्षक ही आर्य सिद्धान्त से अनभिज्ञ हों तो विद्यार्थियों का क्या कहना। उपयुक्त अध्यापकों का अभाव भी बहुत कुछ प्रबन्धकों की कठिनाई का कारण हो सकता है परन्तु यदि इन संस्थाओं को धार्मिकता का जामा पहनाना उनको अभीष्ट होता तो इस कठनाई का हल भी असाध्य न होता। असूल से गिर कर यदि ये संस्थाएं कायम भी रहीं तो उनका प्रयोजन नहीं के बराबर है चाहे उन से कितने ही अन्य लाभ क्यों न हों। आज इन संस्थाओं का नाम भले ही "दयानन्द" और "वैदिक" शब्दों से विभूषित हो, परन्तु वे किसी भी सरकारी अथवा सहायता प्राप्त साधारण विद्यालय से भिन्न नहीं हैं।

मेरे विचार में इन संस्थाओं की उपयोगिता भव्य इमारतों, विद्यार्थियों की संख्या अथवा उत्तम परीक्षा फल से नहीं है बल्कि इन्हें हम तभी उपयोगी कह सकते हैं जब इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थी, यदि सब नहीं तो अधिकांश, चरित्रवान, सदाचारी और वैदिक सिद्धान्तों के प्रेमी बनकर निकलें। और नहीं तो कम से कम इतना तो अवश्य ही था कि इन संस्थाओं का धार्मिक स्तर इसाइयों के मिशन स्कूलों और कालेजों के बराबर ही होता और इन से निकलने वाले विद्यार्थी यदि आर्यसमाजी न बन सकते तो आर्य संस्कृति के प्रेमी तो अवश्य होते। परन्तु देखा यह जाता है कि इन धार्मिक संस्थाओं के अधिकांश विद्यार्थी प्रायः अधार्मिक, अनीश्वरवादी और प्राचीन संस्कृति विरोधी बन कर निकलते हैं। वे भले ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हों लेकिन यदि उन पर सदाचार और आध्यात्मिकता की छाप न पड़ी तो इन संस्थाओं की विशेषता ही क्या। यदि इन संस्थाओं ने विद्यार्थियों के अन्दर ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव भी पैदा न किया तो इनके अस्तित्व का क्या औचित्य है और इनका परिश्रम कहाँ तक सफल है।

आज ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म से सम्बन्ध रखने वाली इतनी शिक्षा संस्थाओं के होते हुए भी आर्य समाज में शिथिलता बढ़ती ही जाती है और समाज मंदिरों में ताले पड़ते ही जाते हैं। हर साल असंख्य विद्यार्थी इन संस्थाओं से निकलते हैं लेकिन आर्य समाज के सदस्यों की संख्या नहीं बढ़ती। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि इन संस्थाओं ने ऋषि के मिशन में कोई योग नहीं दिया। तो क्या 'दयानन्द' और 'वैदिक' शब्दों का लगाव इन संस्थाओं के साथ रखना निरर्थक और आर्य जगत के लिये अपमान जनक नहीं है।

आज देश में पुनर्निर्माण की योजनाएं बन रही हैं। आर्य समाज को भी इसकी जरूरत है। आर्य समाज की शक्तियां बिखरी हैं जिन्हें पुन सगठित करने के लिये हमें गम्भीरता पूर्वक विचारना होगा कि हमने अपने उत्तरदायित्व की कहां कहां अवहेलना की है। क्या अच्छा हो यदि हम सोच सकें कि आर्य समाज का महत्व उसकी संस्थाओं से नहीं है बल्कि संस्थाओं का महत्व आर्य समाज से है॥

मैं, तुम, वे, सब अधूरे

—श्री कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'—

"चश्मा लिये बिना आपका सिर दर्द ठीक हो ही नहीं सकता !" एक अनुभवी मित्र ने कहा, तो मैं मजबूर होगया कि आंखों के डाक्टर को आंख दिखाऊं !

जीवन के आरम्भिक वर्षों में बाबा जी ने जो वर्णमाला पढ़ाई थी, उसकी तीव्र परीक्षा करके डाक्टर ने कहा—योर लाङ्ग साइट इज आलराइट ! तुम्हारी दूर से देखने की शक्ति तो ठीक है !

साथी परीक्षा की जो थकान मुझ पर छा-सी रही थी, उसे उतारते हुए मैंने कहा—डाक्टर, संसार में लाङ्ग साइट तो सभी की ठीक है, निर्बल तो शार्ट साइट-पास से देखने की शक्ति-ही है।

डाक्टर चौंका है, यह मैंने उसकी मुद्रा से जाना। ठीक भी है, वह आये दिन ऐसे रोगी देखता है जिनकी दूर से देखने की शक्ति निर्बल है और मैं कह रहा हूं कि डाक्टर लाङ्ग साइट तो संसार में सभी की ठीक है।

राह टटोलते-से उसने कहा—'जी'

मैंने उसके चारों ओर जैसे एक जाला और पूर दिया—जी, क्या डाक्टर, ठीक बात है, संसार में दूर देखने की शक्ति तो सभी की ठीक है, निर्बलता ने तो पास देखने की शक्ति को ही घेर रक्खा है ! और तभी मैंने वह सारा जाला समेट-सा लिया—डाक्टर, तुम्हारी स्त्री को सारे गुण मुझ में और सारे दुर्गुण तुम में दिखाई देते हैं, पर मेरी स्त्री को सारे गुण तुम में और सारे दुर्गुण मुझमें दिखाई देते हैं, यह इसके अतिरिक्त और क्या है कि लाङ्ग साइट इज आल राइट !

डाक्टर मुस्कराया—बस-बस पण्डितजी, और मुस्कराया कि जोर से हंस पड़ा। तब सुनाई मैंने उसे एक अपनी कहानी। साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश करते ही मैं बनाया गया एक विशेषांक का सम्पादक ! यह सूचना पत्रों में छपी और वे पत्र मेरी जन्मभूमि के पुस्तकालय में भी आये।

समय की बात; मैं पुस्तकालय में बैठा भीतर एक पुस्तक देख रहा और बाहर बरामदे में कुछ लोग पढ़ रहे पत्र। उस समाचार पर दो तीन का ध्यान गया और आश्चर्य कुहरा-सा उन पर बरसा, तो बात चल निकली। यह सुनकर दूर बैठे एक सज्जन ने पूछा कौन प्रभाकर ? उन मित्रों ने बताया-समझाया, तो वे बोले—"अच्छा' वो रामा मिस्सर का लौण्डा !" मैंने सुना और मान लिया कि मैं उनके पास हूं, तो सम्पादक, लेखक या और कुछ अतिरिक्त नाम कैसे हो सकता हूं ? मैं हूं सिर्फ 'रामा मिस्सर का लौण्डा' और बस नहीं !

डाक्टर साहब हंसे और तब सुनाई उन्होंने अपनी भी कहानी—मैंने डाक्टरी पास की तो अपने ही कस्बे में काम आरम्भ किया। मैं जब देहात से आए बीमार को देख रहा होता, पास-पड़ौस की कोई बुढ़िया अपने पोते को लिये आती और जोर जोर से मुझे कहती—'अरे रामधन, ले इसकी आंख में जरा-सी दवा डाल दिये !' यह सुनना भी एक साधारण बात थी—"अब तो भाई,बड़ा आदमी होगया है तू !" ऊब कर दवाखाना यहां उठा लाया और अब मजे में हूं।

डाक्टर साहब हंसे, तो मैंने भी उनकी हंसी में अपनी हंसी मिला दी—तो अब तो आप मान गये कि संसार में दूर से देखने की शक्ति अधिकतर लोगों की खरी है ?

जगजीवन की स्त्री एम० ए० पास है, संगीत में तानसेन और नृत्य में उदयशङ्कर के पास बैठती है। स्वतन्त्रता दिवस की क्लब गोष्ठी में उसने अपनी कला का जो प्रदर्शन किया, उसकी धूम मच गई।

वासुदेव की स्त्री साधारण पढ़ी लिखी है, नम्र है, सेवाशील है, रात दिन अपने पति और परिवार की सेवा में लीन रहती है।

रात में प्रायः जगजीवन कहता है—गाना बजाना तो मनुष्य सिनेमा में जाकर भी देख-सुन सकता है, अपनी पत्नी से वह कुछ और ही आशा करता है। वासुदेव की पत्नी साक्षात देवी है, दिन भर काम करती है और क्या मजाल कि बिना पैर दबाये वासुदेव को रात में सोने दे !

प्रायः ठीक इसी समय वासुदेव कहता है—खाना-बर्तन, झाड़ू-बुहारू, पैर दबाना और कपड़े धोना; यह सब दस रुपये का नौकर भी कर लेता है, मनुष्य अपनी स्त्री से कुछ और ही आशा करता है ? देवी जो ! जगजीवन की स्त्री है, क्लब जाती है, अफसरों से मिलती है और अपने पति के दस काम बना कर लाती है ! अगर वह बैठी पैर ही दबाती रहे, तो क्या फायदा ?

यहीं एक प्रश्न—यदि जगजीवन और वासुदेव परस्पर अपनी पत्नियाँ बदल दें, तो क्या सन्तुष्ट हो सकते हैं ? ऊपर से कहने को जी चाहता है—हाँ, पर अनुभव इसका समर्थन नहीं करता। कुछ सप्ताहों में ही जगजीवन का मन गूँजती स्वर लहरी और थिरकते घुँघरुओं के लिये और वासुदेव का मन पिंडलियों को हरकल का विष चूसने को उचकती उंगलियों के लिये विकल हो उठेगा ?

फिर ? यह एक प्रश्न है, जो मन में यहां उमड़ता है। प्रश्न छोटा सा है, पर इसके भीतर जिज्ञासा के पुराण बिखरे हैं। फिर कुछ नहीं, यह बात है कि मनुष्य क्या चाहता है ? यह चाहता है, वह चाहता है ? ना, सत्य यह है कि वह सब चाहता है, न यह, न वह; चाहता है वह यह भी और वह भी, और कमाल यह है कि एक ही स्थान में एक ही पात्र में। पर जीवन का सत्य चिर अतीत में संस्कृत के कवि ने पा लिया था, जो इस प्रकार है—

प्रायेण सामग्र विधौ गुणानां
पराङ्मुखी विश्व-सृज प्रवृत्ति

—ब्रह्मा जी की प्रवृत्ति सब गुणों को एक ही स्थान में एकत्र करने के विरुद्ध है !

इकराम और हरिसिंह, दो पुराने साथी। इकराम ऐसा कि दुश्मनों के भी काम करता चले और यही नहीं कि दूसरों के काम आना उनका स्वभाव, यही उनका चाव भी, अपना समय और शक्ति लगा कर दूसरों के काम करे और उनमें रस भी ले। हरिसिंह उस दिन मिला, तो नाराज; इकराम के बारे में उसे शिकायत कि एक बात कही थी, उसने नहीं मानी ! बात न मानना इकराम के स्वभाव के ही विरुद्ध, फिर यह क्या बात ? जांच की, तो जाना कि इसी वर्ष में इकराम ने दस काम सवारे हैं। ग्यारहवें काम के समय वह बीमार हो गया और काम न कर पाया। अब हरिसिंह उन दस कामों की कहीं चर्चा नहीं करता, उस एक काम के नारे सब जगह लगाता है। उसके मन में उन दस कामों का आभार तो कहीं नहीं है, इस एक काम की हुंकार पूरी-पूरी छाई है—उस बच्चे की तरह जो दिन भर की सेवा को सांयकाल का पैसा न मिलने पर भूल जाता है और रूठा फिरता है।

एक सार्वजनिक मित्र हैं जो तेलूराम। वे तब थे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रधान। उन्होंने मित्रों का एक मर्मस्पर्शी, पर मनोरंजक संस्मरण सुनाया। बोले—"हरेक चाहता है कि मैं इस पद पर रहते कॉंग्रेस की प्रतिष्ठा का ध्यान रक्खूं और हरेक चाहता है कि मैं इस पद पर रहते उसकी मांग को भी पूरा कराऊँ !" कोई भला आदमी बम्बई और करांची के किनारों को एक साथ कैसे मिलायें ?

डाक्टर कहता है, वकालत में बड़ा आनन्द है, वकील कहता है आनन्द तो बस डाक्टरी में है। एडीटर को आडीटर और आडीटर को एडीटर सुख में दिखाई देता है। बात यह है कि जो हमें प्राप्त है, हम उसे नहीं देख पाते, जो दूर है, वह हमारी उत्सुकता का केन्द्र है - उसके छिद्र हमें दिखाई नहीं देते !

जीवन का सच्चा पथ यह नहीं है कि जो हमें प्राप्त नहीं, उसके लिये रोते रहें। जीवन का सच्चा पथ यह है कि सोच समझ कर जो हमने पा लिया उसे पहचानें, उसे अपने अनुकूल बनायें, उसमें रस लें और सन्तोष का सुख पायें।

सब कुछ अधूरा हमें मिला, सब कुछ पूरा दूसरों को, यह मृगतृष्णा है, जीवन का विभ्रम है। जीवन का सबसे बड़ा सत्य है—अपूर्णता। मैं, तुम, वे, सब अपूर्ण, अपने में सब अधूरे, इस अपूर्णता का समन्वय, इस अधूरे पन का सदुपयोग ही जीवन की सबसे बड़ी कला है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

रायबहादुर वृजलाल भद्दार की मृत्यु के अनन्तर अपने पिता के समान ही, उनके दोनों पुत्र श्री अमृत राज भद्दार और श्री राजा पुरुषोत्तम राज भद्दार बैरिस्टर, सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेते रहे। उभिवानी स्टेशन के समीप का आर्यसमाज मंदिर श्री वृजलाल भद्दार के प्रयत्नों का ही परिणाम है। राजाजी ने (बहुत समय पूर्व ही से लोकप्रियता तथा उदारता के कारण जिले में 'राजा जी' के नाम से विख्यात है) अपने स्वर्गीय पिता जी की स्मृति में आर्यसमाज का अवशिष्ट मन्दिर बनवाने के लिये ५ हजार रुपये का दान दिया है। वैसे तो आप सदा ही धन से आर्यसमाज की सहायता करते रहते थे परन्तु इस समय अपूर्ण मंदिर के निर्माण की आवश्यकता पूर्ति कर आपने आर्य पुरुषों का हृदय जीत लिया है।

भद्दार जी ने तो सात्विक दान दिया ही है परन्तु आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध व्याख्याता प० बिहारीलाल जी काव्यतीर्थ का उद्योग व प्रेरणा भी प्रशसनीय है। प० जी की एक ही धुन है, [illegible] की एक ही साध है—आर्यसमाज। श्री रामप्रसाद जी प्रधान, तथा श्री सियाराम जी का प्रयत्न भी सराहनीय है। आशा है—आर्य पुरुष इससे उत्साह प्राप्त कर [illegible] समाज के कार्य को बढ़ाने में यत्नशील रहेंगे।

आर्य्य-जगत्

पांच सहस्र का दान

आर्यसमाज उफ्फानी को, अपने स्वर्गीय पिता जी का स्मारक रूप समाज मन्दिर बनाने के लिए श्री पुरुषोत्तम लाल जी बघवार (राजाजी) ने पांच सहस्र का दान दिया है।

श्री राजा जी यहाँ के म्युनिसिपल चेयरमैन हैं और इस जिले में जीवन संचार करने वाले स्वर्गीय श्री व्रजलाल जी बघवार स्थानीय मिल मालिक के छोटे पुत्र है।

हैदराबाद राज्य के पूर्व प्रधान मन्त्री महाराजा सर किशनप्रसाद जी की छोटी कन्या आपको विवाही है अतः आप हैदराबाद के जागीरदार भी है।

उफ्फानी में आपकी योग्यता पूर्ण जन सेवाओं के कारण यहां की जनता आपको अपना राजा समझती है और "राजाजी" कहकर पुकारती है। इस दान को दिलाने में श्री रामप्रसाद जी प्र० आ० स० तथा श्री सियाराम जी भंडारी का प्रयत्न प्रशंसनीय है।

सुनहरीलाल मिश्र
मंत्री

१००) का पुरस्कार
कवियों से निवेदन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विशेष महत्वपूर्ण अवसरों पर कुल वन्दना तथा कुल गीत, गाये जाते हैं, भाषा-भाव आदि की दृष्टि से बहुत सुन्दर होने पर भी वे शुद्ध भारतीय पद्धति पर बने हुए नहीं हैं। हिन्दी कवियों से निवेदन है कि वे जयन्ती के शुभावसर पर नये कुल वन्दना तथा कुल गीत का उपहार देने की कृपा करें जो भारतीय पद्धति पर बने हों। अर्थात् गजल आदि के रूप में न हों और सामूहिक संगीत के भी उपयुक्त हों। सर्वोत्तम रचनाओं के लिए ५०), ५०) पत्र पुष्प की व्यवस्था की गई है। —मुख्याधिष्ठाता

स्कूलों के कमरों में नये रंग

स्कूलों में पुराने स्लेटी और खाकी रंग की जगह पर नये प्रकार के रंग प्रयोग किये जायेंगे जिनसे विद्यार्थियों में उत्साह बढ़े। इस कार्य क्रम के संचालकों ने परीक्षण द्वारा पता लगाया है कि रंगोंका मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। लाल रंग से काम करने में फुर्ती, नीले रंग से बौद्धिक कार्यमें शान्ति, और हरे रंग से मानव शक्ति का संचय होता है। इससे छोटे बच्चों को नियंत्रण में रखने और बड़े बालकों में एकाग्रचित्तता उत्पन्न करने में सहायता मिलेगी।

रजत जयंती

आर्यसमाज बनारस छावनी भोजूबीर का रजत जयंती महोत्सव ता० ५, ६, ७ और ८ नवम्बर १९४९ तक समारोह के के साथ मनाया जायेगा। मन्त्री

विवाहित महिलायें काम पर

अमरीका के गणना विभाग ने सूचना दी है की अमरीका में काम पर लगी हुई अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा विवाहित महिलाओं की संख्या अधिक है। १९४८ में ८३,००,०० विवाहित महिलायें काम पर लगी हुई थीं, इस के विपरीत अविवाहित महिलाओं की संख्या ५५,००,००० थी। १९४० की गणना के अनुसार ६७,००,००० अविवाहित और ५०,००,००० विवाहित काम पर लगी हुई थीं। इसका कारण गत वर्षों में विवाहों का अधिक संख्या में होना है। अप्रैल १९४८ में विवाहितों की संख्या ३,४०,००,००० थी, जो १९४० की गणना से ६०,००,००० अधिक है। यह भी स्मरण रहे कि नगरों की अपेक्षा ग्रामों में काम पर लगी हुई विवाहित महिलाओं की संख्या दुगुनी है।

बिजली की नवीन ट्यूब

अमरीकी वैज्ञानिकों ने एक नवीन प्लास्टिक ट्यूब का आविष्कार किया है जिस के द्वारा प्रकाश की किरणों को ऐसे स्थान पर पहुंचाया जा सकता है जहां प्रकाश का पहुंचना असम्भव होता है। साधारणत बिजली के प्रवाह का मार्ग सीधा है किन्तु इस नवीन ट्यूब यन्त्र द्वारा इस का प्रवाह इच्छानुसार बदल दिया जाता है। इस नवीन यन्त्र को लाइट पाइप का नाम दिया गया है, और वेस्टिंग हाउस अनुसन्धान प्रयोगशाला पिट्सबर्ग (पैनसिलवेनिया) द्वारा इसका आविष्कार किया गया है। पाइप हलके पीले रंग के साफ प्लास्टिक से बनता है जिसे फोस्टराइट कहते हैं। यह इतना लचकदार होता है कि यथेच्छा से मोड़ा जासकता है।

—उत्तरी इँग्लैंड में एक नई भट्टी केवल १७ दिनों के अन्दर तैयार की जा सकी और जानकार लोगों का कहना है कि इससे पहले संसार में कहीं भी ऐसा काम इतने कम समय में समाप्त नहीं हुआ।

जब लन्दन के गाई अस्पताल में टेलीविजन यन्त्र स्थापित हो जाएगा तब वह संसार का पहला अस्पताल होगा जिसमें औषधिशास्त्र की शिक्षा टेलीविजन की सहायता से दी जाएगी।

—मित्रराष्ट्रों की खाद्य और कृषि परिषद् द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि चाहे आगामी दो वर्षों में धान की उत्पत्ति एक करोड़ टन बढ़ जाए फिर भी चावल खाने वाले लोग अपनी युद्ध से पहले की खूराक का स्तर नहीं प्राप्त कर सकते।

—योरप का सबसे महान टेलीविजन केन्द्र लन्दन में खोला जाएगा। बी०बी०सी० भी अपनी टेलीविजन सर्विस का विस्तार करने वाली है और टेलीविजन अनुसन्धान के लिए २.१३ करोड़ रुपयों का खर्च स्वीकृत हुआ है।

—वाशिंगटन, अमेरिकी जन गणना विभाग के नवीनतम अनुमान से पता चला है कि संयुक्त राज्य महाद्वीप की जन संख्या जिस में विदेशों के सैनिक भी सम्मिलित हैं १ अप्रैल को लगभग १४,८५,२७,००० थी।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि १९४९ के प्रथम तीन मास में ५,८०,००० व्यक्तियों की वृद्धि हुई है। इतनी ही वृद्धि इसी अवधि में १९४८ में भी हुई थी।

पं. नेहरूजी की घोषणा

दिल्ली १० सितम्बर। प्रधानमन्त्री पं० नेहरू जी ने विधान परिषद में यह दृढ़ निश्चय फिर से दोहराया कि जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की कांग्रेस की प्रतिज्ञा को पूर्णतया, सर्वांश में और शत प्रतिशत पूरा किया जायगा। कोई भी कानून अथवा कोई भी जज हमारे मार्ग में बाधक नहीं हो सकता। मुआवजे के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि हम अपने वचनों का सम्मान सीमा के भीतर ही करते हैं परन्तु जनता की प्रतिनिधि पार्लियामेंट के सार्वभौम निश्चय पर निर्णय देनेका अधिकार सर्वोच्च न्यायालय अथवा किसी न्यायालय को नहीं हो सकता।

मद्रास में जिमीदारियों पर सरकारी कब्जा

८ सित०। जमींदारी बस्ती कानून के अन्तर्गत मद्रास सरकार ने आन्ध्र की विजयानगरम बोबीली, पीठपुरम, वेंकटगिरि तथा तामिलनाड की रामनद व शिवगंगा रियासतें हैं। सरकार ने प्रान्त की ३३ बड़ी रियासतों पर कब्जा किया है जब कि २६०० जिमींदारों की रियासतें तथा ५०० इनामी रियासतें हैं। १ करोड़ ४० लाख एकड़ भूमि पर इसका प्रभाव पड़ेगा। सरकार को लगभग १५ करोड़ ७५ लाख रुपया मुआवजा देना पड़ेगा।

काश्मीर कमीशन—भारत—पाकिस्तान

पत्र-व्यवहार

नई दिल्ली ७ सितम्बर। काश्मीर कमीशन ने जो पत्र व्यवहार प्रकाशित किया है उससे ज्ञात होता है कि भारत सरकार का कथन है कि प्रथम 'आजाद काश्मीर सेनायें विघटित कर दी जाये और उन्हें निःशस्त्र कर दिया जाये। बिना यह कार्य हुये भारतीय फौजों के पीछे हटने की बात न होनी चाहिए।

पाकिस्तान सरकार का कथन है कि कमीशन के १३ अगस्त सन ४८ के प्रस्तावों के विरुद्ध तथा उसकी सीमा के बाहर भारत सरकार के वर्तमान प्रस्ताव हैं। उन प्रस्तावों में आजाद काश्मीर सेना का कहीं जिकर भी नहीं है, न काश्मीर सेना के विघटन व निश्शस्त्रीकरण का कोई जिकर है। अतः जबतक वह भारतीय फौजों के हटने का कार्यक्रम न जान लेगी तब तक कमीशन की विराम सम्बन्धी शर्तों पर कोई भी निश्चय न करेगा।

पाकिस्तान में भारतीय कपड़ों की होली

करांची—६ सि०। भारत से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों के प्रति भारत सरकार की तथा कथित शत्रुता पूर्ण नीति के विरोध में कल करांची में भारतीय रूमालों और सूत की होली जलाई गई।

× × ×

संघ का विधान

दिल्ली —६ सि०। संघ का विधान प्रकाशित हुआ है जिसमें २५ धारायें हैं उद्देश्य, हिंदू-समाज के बिखरे भागों को 'धर्म' और 'संस्कृति' के आधार पर हिंदू-समाज में नई शांति व जीवन लाना है। किसी अन्य राजनैतिक संस्थाका पदाधिकारी संघ का पदाधिकारी न हो सकेगा। १८ वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति इसका सदस्य हो सकता है।

× × ×

रंगभेद के परिचय कार्ड

जोहान्सवर्ग —६ सि०। द० अफ्रीका के प्रधान मंत्री डा० डेनियल मलान ने घोषणा की है कि योरोपीय जाति को बचाने के लिये प्रत्येक नागरिक को एक परिचय कार्ड रखना पड़ेगा। जिसमें योरोपीय, आफ्रीकी, अश्वेत तथा भारतीय का परिचय लिखा रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय दल 'एपारथीड' जातीय रंगभेद को रखने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ है तथा वह कम्यूनिस्ट खतरे का भी मुकाबला करेगा।

× × ×

आसाम का नाम 'कामरूप'

गौहाटी—६ सि०। आसाम व्यवस्थापिका सभा के आगामी अधिवेशन में आसाम का नाम बदल कर पुरातन नाम 'कामरूप' रखे जाने के लिये एक गैर सरकारी प्रस्ताव उपस्थित किया जायगा।

× × ×

कम्प-वायु की शल्य चिकित्सा

अमरीका के डा० 'जुडा एबिन' ने बताया कि ११ कम्पवायु के रोगियों की शल्य चिकित्सा की गई और उन सब को लाभ हुआ। एक ४६ वर्ष का मनुष्य जो पांच वर्ष से चल नहीं सकता था शल्य चिकित्सा द्वारा बिलकुल ठीक हो गया। दूसरा रोगी इसी चिकित्सा द्वारा भारी से भारी काम करने योग्य हो गया। एक सयोजक यन्तु के काटने से मस्तिष्क की मांसपेशी नियन्त्रण करने में समर्थ होती है। और हाथ पैरों का कांपना बन्द हो जाता है।

'जयपुर' राजधानी होगी

दिल्ली ७ सि०। भारत सरकार ने विज्ञप्ति निकाल कर घोषित किया है कि भारत के उप प्रधान मन्त्री सरदार पटेल ने जयपुर को (राजस्थान राज) की राजधानी बनाने का निश्चय किया है।

जीरोग्राफी : : छपाई की नवीन विधि

बिना स्याही चित्रांकन तथा शुष्क फोटो-ग्राफी को जीरोग्राफी कहते हैं। जीरो-ग्राफी का आविष्कार न्यूयार्क के चेस्टर कार्ल्सन ने किया और इस का विकास ओहियो के कोलम्बसनगर में बैटली मैमोरियल इन्स्टिट्यूट ने हैलोइड कम्पनी के सहयोग से किया। हेलोइड कम्पनी के अध्यक्ष जोजफ का का कहना है कि जीरोग्राफी से तस्वीरें और छपे हुए शब्द अन्य विधियों की अपेक्षा बहुत कम खर्च से तैयार किये जा सकते हैं। आपने कहा कि यह नवीन विधी व्यावहारिक है और शीघ्र ही व्यापारिक ढंग पर उपलब्ध होने लगेगी।

नये प्रकार का सूत

'बेंडिक्स कम्पनी' के अनुसन्धान निर्देशक क्रीफ ने कहा कि इस कम्पनी द्वारा आविष्कृत नवीन प्रकार का सूत मजबूत और ऐंठ रहित होगा। इस से सिलाई उद्योग में भारी परिवर्तन होगा। इस धागे में ऐंठ नहीं बनाई जाती किन्तु रेशे वेल्डिंग द्वारा चिपका दिए जाते हैं। 'नाईलोन' से यह बनाया गया है। इसे 'नाइमो' कहते हैं। सब से पहले यह जिल्दबन्दी के उद्योग में और इसके बाद जूते तथा चमड़े के अन्य उद्योगों में काम मे लाया जाएगा।

२८ लाख जरायम पेशा व्यक्ति

लखनऊ ७ सि०। युक्त प्रांत की सरकार ने २८ लाख जरायम पेशा लोगों को बसाकर उन्हें सुधारने की योजना बनाई गई है। गत ७८ वर्षों से इनमें १५ लाख व्यक्तियों पर प्रतिबन्ध लगे हैं। युक्तप्रान्त में इनकी ६ बस्तियां हैं जिनकी जन संख्या ३ हजार है। इन के अतिरिक्त विभिन्न जिलों व थानों मे ३५ हजार रजिस्टर्ड और १४ हजार गैर रजिस्टर्ड हैं जिनपर ५ लाख रुपया खर्च होता है। जिन ५ बस्तियों का प्रबन्ध गैर सरकारी संस्थाओं के हाथ में है सरकार उन्हें शीघ्र लेने वाली है।

सूचना

"कतिपय महानुभाव सभा विषयक पत्र व्यवहार अब भी मुझसे करते हैं। मैंने सभा की सेवाओं से त्याग पत्र दे दिया है, अतः अब कोई सज्जन सभा सम्बन्धी पत्र-व्यवहार मेरे नाम से न करें।

मेरा निजी पत्र-व्यवहार डी. ए. वी. कालेज लखनऊ के पते पर करें।

वाचस्पति शास्त्री

—आर्य्य - समाज, मुजफ्फरपुर अपने नगर और जिले में स्थायी प्रचारार्थ, वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता, त्यागी एवं कर्मनिष्ठ एक वानप्रस्थी अथवा सन्यासी महात्मा को श्रद्धापूर्वक आवाहन करता है। जो महात्मा आना चाहें, वे अपना परिचय किसी आर्य्यसमाज के मन्त्री द्वारा भेजने की कृपा करें। वैदिक धर्मी गृहस्थ पण्डित महानुभाव भी लिखें।

द्वारका प्र० ठाकुर मन्त्री

भारत सरकार का आर्थिक संकट

६ सित०—ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष सरकार को ४५ करोड़ का घाटा होने जा रहा है जब कि ४९ लाख की बचत होने का अनुमान किया गया था और सन् १९५० में भारत की रोकड़ बाकी ५८ करोड़ का अनुमान था। स्मरण रहे कि १५ अगस्त सन् ४७ को स्वतन्त्रता प्राप्ति के अवसर पर रोकड़ बाकी २१२-३० करोड़ थी। यदि इस वर्ष के खर्च में कमी न गई तो वह घट कर केवल १३ करोड़ ही रह जायगी। कहा जाता है कि इस संकट का मुख्य कारण आयात निर्यात की नीति तथा फौजी खर्च का बढ़ाना है। अलबत्ता भारत का सिविल व फौजी खर्च सन् ३८-३९ में क्रमशः ३८९७ करोड़ व ४६१८ करोड़ था। वह सन् ४८ में १९०८ करोड़ और ४९ में ९४६२ करोड़ है।

× × ×

आ. प्र. सभा की आवश्यक सूचना

अंतरङ्ग सभा ता० ३० सितंबर १९४९ के निश्चय सं० ३५ की नकल

उपदेशकों का पृथक्करण—

विज्ञापन का विषय स० ६, सितम्बर २९ को विचार विनियम के बाद ३० को पुन प्रस्तुत हुआ। तिथि ४ जून सन् १९४९ का आर्यप्रतिनिधि सभा का निश्चय स० २६ तथा सभा की ओर से श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री और श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री महोपदेशकों को भेजे गये पत्र तथा उनके विषय में सभा कार्यालय मे प्राप्त उनके उत्तर पत्र भी पढ़े गये, विशेष विचार विनिमय के पश्चात् तथा सम्बद्ध हिसाब किताब सम्बन्धी पत्र हिसाब लेखा आदि सुने गये। उक्त दोनों उपदेशकों को ता० २९,३० सितम्बर को हरदोई में होने वाली वर्तमान अन्तरंग सभा में उपस्थित होने के लिये विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था जिससे वे यदि चाहें तो आवश्यक समाधानात्मक स्पष्टीकरण दे सकें, परन्तु वे उपस्थित नहीं हुए। सब बातों पर विचार होने के उपरांत निश्चय हुआ कि.—

१. पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री व प० वाचस्पति जी शास्त्री महोपदेशकों ने अपने वैतनिक सेवाकाल में अपने-अपने कार्यों को डायरी और बिल आदि भरे हैं उनमें से अनेक अयथार्थ हैं।

२. अपने-अपने सेवाकाल में समय-समय पर जो धन राशि उक्त दोनों महोपदेशकों ने समाजों, संस्थाओं तथा विविध व्यक्तियों से प्राप्त की उनमें से कतिपय धन राशियों को सभा कोष में 'अ' पूरा जमा नहीं कराया 'ब' सर्वथा जमा न करा कर अपने पास रख लिया 'स' दानदाताओं एव सभा के पास एक ही धन की भिन्न भिन्न प्रकार की रसीदें दी।

सभा की सम्मति से उपर्युक्त कार्य सभा के वैतनिक कर्मचारी होते हुये, सभा को हानि पहुंचाकर अपना अनुचित आर्थिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से जान-बूझ कर, दुर्भावना से, किये गये हैं। उनके यह कार्य उपदेशक पद के सर्वथा अशोभनीय हैं और राजनियमानुसार भी दण्डनीय हैं।

I. इस दशा में पं० प्रकाशवीरजी व पं० वाचस्पति जी को सभा की सेवाओं से, प प्रकाशवीरजी को ५ जून से पं० वाचस्पति जी को ६ जुलाई से पृथक (Dismiss) किया जाता है। तथा

II. आर्यसमाजों को सूचित कर दिया जावे कि सभा, समाजों के उत्सवों आदि में उक्त उपदेशकों को निमंत्रित किया जाना अनुचित समझती है। तथा निश्चय करती है :—

III प० प्रकाशवीर जी व पं० वाचस्पति जी को सभा में ३ तीन वर्ष तक प्रतिनिधि स्वीकार न किया जावे। तथा

IV यह भी निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी को अधिकार दिया जावे कि यदि वे उचित समझें तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने की व्यवस्था करें। सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

नेहरू जी ११ अक्तूबर को अमरीका पहुंचेंगे

वाशिंगटन, २९ सितम्बर। अमरीकी वैदेशिक विभाग ने घोषणा की है कि भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू मंगलवार ११ अक्टूबर को राष्ट्रपति ट्रूमन के अतिथि के तौर पर वाशिंगटन आयेंगे। वे वाशिंगटन, पश्चिमी तट और दक्षिणी रियासतों का दौरा करने के बाद कनाडा भी जायेंगे।

अणु समस्या पर स्तालिन ट्रूमन एटली सम्मेलन करने की मांग

लन्दन, २८ सितम्बर। ब्रिटिश पार्लियामेंट के ४० मजदूर दली सदस्यों ने प्रधान मन्त्री श्री एटली से मांग की है कि वे अणु शक्ति संबन्धी गत्यावरोध को हल करने के लिये श्री ट्रूमन और मार्शल स्टैलिन के साथ अविलम्ब विचार विमर्श करें।

भारत में फल भेजना बन्द

क्वेटा की खबर है कि बलूचिस्तान के फल व्यापारियों ने भारत पाकिस्तान द्वारा विनिमय की शर्तें तय होने तक के लिए भारत की मंडियों को फल भेजना बन्द कर दिया है। पिछले कुछ महीनों से बलूचिस्तान बंबई को हर हफ्ते ७ हजार मन फल भेज रहा था।

अभूतपूर्व गिल्टी

देहरादून, ७ सितम्बर। स्थानीय सिविल सर्जन श्री बी. बी. दास ने एक शरणार्थी स्त्री के गुर्दे के पास से एक अद्भुत प्रकार का गिल्टी (मांस का लोथ) निकाली। कहते हैं कि इस प्रकार की गिल्टी आज तक कहीं देखने में नहीं आयी। तोल में यह पाव भर से अधिक था। इसका आकार एक बच्चे के सिर का था जिस पर कि लम्बे-लम्बे बाल थे। आंखों और मुख के निशान भी थे। मुंह में दो दांत भी थे। यह गिल्टी केप्टेन दास ने सुरक्षित रख ली है और चिकित्सा क्षेत्र में खोज के लिए किंग जार्ज मेडिकल कालेज लखनऊ भेजी है।

अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से भारत को कृषि सुधार के लिये १ करोड़ डालर का कर्ज

वाशिंगटन, २६ सितम्बर। अन्तर्राष्ट्रीय बैंक ने आज घोषणा की है कि उसने कृषि सम्बन्धी उत्पादन में सुधार करने के लिए भारत को १ करोड़ डालर का कर्ज दिया है।

भारत सरकार ने सन और टाट पर निर्यात-चुंगी बढ़ा दी

नयी दिल्ली २६ सितम्बर। भारत सरकार के वाणिज्य विभाग की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि सरकार ने सन जूट और टाट पर निर्यात चुंगी ८०) से बढ़ा कर ३५०) प्रतिटन कर दी है।

पाकिस्तान के अवमूल्यन न करने से भारत के व्यापार पर जो प्रभाव पड़ा है उसे रोकने के लिए ही भारत सरकार ने उपर्युक्त कदम उठाया है।

सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत सरकार ने अवमूल्यन के बाद कच्चे जूट और उससे तैयार माल की कीमतों की समस्या पर विचार किया। कीमतों की वृद्धि से उन देशों को जूट के निर्यात में कमी हो जायगी जिन्होंने भारत के समान ही अपनी मुद्रा का मूल्य घटाया है। इसका अनाज की कीमतों पर भी प्रभाव पड़ेगा। सरकार ने भारतीय जूट मिल संघ के प्रतिनिधियों से वार्ता की और उन्होंने सरकार को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उनका कहना है कि गत वर्ष ऊँची कीमतों के कारण बहुत सी जूट मिलों को घाटा हुआ और वे कहीं से भी ऊँची कीमत पर जूट खरीदने को तैयार नहीं। ऐसी दशा में वे सरकार की कीमत न बढ़ने देने की नीति का पूर्ण समर्थन करेंगे। निर्यात में कीमतें न बढ़ने देने के अलग उपाय किये जा रहे हैं।

पंच और सरपंच कुयें में

मिरजापुर, १७ सितम्बर। जिले के एक गाँव में गत रविवार को एक अत्यन्त मनोरंजन घटना हुई। गाँव के एक पंच और सरपंच एक बनिया महिला से टैक्स के दो सौ रुपये वसूल करने गये। बातचीत में रात हो गयी। डरा धमका कर पंचों ने उससे रुपये का सन्दूक निकलवा लिया और अंधेरे में ले भागे। महिला के चिल्लाने पर पड़ोसियों ने उनका पीछा किया। भागते हुए सरपच सन्दूक सहित कुयें में गिर पड़े। उन्हें बचाने के प्रयत्न में पंच महोदय भी कूद गये। गाँव वालों ने रात भर कुयें पर पहरा रखा। सुबह होने पर पुलिस आयी और पंच और सरपंच को गिरफ्तार कर उनका चालान कर दिया।

कांग्रेस का अधिवेशन इस वर्ष न होगा

नयी दिल्ली, २४ सितम्बर। ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन नहीं होगा। अधिवेशन आगामी वर्ष के आरम्भ में होगा।

अधिवेशन स्थगित करने का कारण यह बताया जाता है कि कांग्रेस के प्रारम्भिक सदस्यों की भर्ती तथा गांव पचायतों का जो कांग्रेस की इकाइयां हैं चुनाव अक्तूबर तथा दिसम्बर तक समाप्त नहीं हो पायेगा।

अखिल भारतीय कांग्रेस ने सभी कांग्रेस समितियों को लिखा है कि प्रारम्भिक सदस्यों की भर्ती की अंतिम तिथि ३१ अक्तूबर है।

श्री सम्पूर्णानन्द के घर में चोरी

बनारस, २९ सितम्बर। युक्तप्रांत के शिक्षा मन्त्री बाबू सम्पूर्णानन्द के बनारस के मकान से चोर कपड़े, बर्तन किताबें, अनाज तथा अन्य वस्तुएं उठा ले गये। मकान में कुछ दिनों से ताला लगा हुआ था।

चोरी का पता कल शाम को लगा जब कि शिक्षा मन्त्री का एक नौकर लखनऊ से घर की सफाई करने के लिए बनारस आया।

कहा जाता है कि चोरों ने चोरी के बाद मकान में फिर वही ताला लगा दिया।

कासिम रजवी द्वारा निर्दोष होने का दावा

हैदराबाद, २९ सितम्बर। आज भूतपूर्व रजाकार नेता सैयद कासिम रिजवी ने 'इमरोज' के सम्पादक श्री शोएबुल्ला खां की हत्या के संबंध में अपने विरुद्ध लगाये गये 'हत्या का षड़यंत्र' तथा हत्या में सहायता देने के अभियोगों को अस्वीकृत करते हुए विशेष अदालत के सामने कहा कि मैं निर्दोष हूँ। विशेष अदालत के सदस्य मीर अहमद अली खाँ ने दो अन्य अभियुक्तों अब्दुल मुनीम खां तथा मोहसिन रजा के विरुद्ध अभियोग पढ़कर सुनाया। दोनों पर हत्या के लिए षड़यंत्र करने, शोएबुल्ला खां के साले मुहम्मद इस्माइल खां पर तलवारों से आक्रमण कर उनकी हत्या कर डालने की कोशिश करने के अभियोग लगाये

'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य मित्र

त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं
दधासि श्रवसे दिवे दिवे ।
यस्तातृषाणः उभयाय जन्मने
मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये ॥
ऋ० १।३१।७ ॥

हे प्रकाशक देव ! जो द्विपद चतुष्पद वा मनुष्य मनुष्येतर दोनों के भले के लिए अत्यन्त तृषित है, प्यासा है उस मनुष्य को तू यश के लिए प्रति दिन श्रेष्ठ अमृत पद में पहुंचाता है और उस ज्ञानी पुरुष के लिए तू सुख करता है और अन्न भी ।

ता० ६ अक्टूबर १९४९

विजय-दशमी

सनातन काल से भारतवर्ष के निवासी विशेष उल्लास पूर्वक संवत्सर में ऋतु ऋतु और पर्व पर्व पर आने वाले पर्व दिनों और त्यौहारों को सुख में, दुःख में और भीषणतम संकट के कराल काल में भी असाधारण समारोह और उत्साह के साथ मनाते रहे हैं, संसार के इतिहास में न कोई ऐसा देश पाया जाता है और न कोई ऐसी जाति कि जहाँ इतने अधिक हर्ष दिवस इतने उमंग के साथ मनाने का आयोजन किया जाता हो। भारतीय जनता का चिरन्तन काल से इतना उत्साह प्रदर्शन करना कोई आकस्मिक घटना नहीं है और न यह वैचित्र्य कोई ऐन्द्रजालिक रहस्य ही कहा जा सकता है। वस्तुतः आर्यजाति और उसकी सनातन विश्व-जनीन सांस्कृतिक परम्परा की यह भी एक विशेषता ही है कि जिनके कारण भारतीयता की आत्मा का अस्पष्ट किन्तु निश्चित दिक् संकेत प्राप्त होता रहता है, ।

विशेष सौभाग्य वर्त्तमान समय की परिवर्तित देश कालिक परिस्थिति के कारण अनुभव होना चाहिये। आज अपने ही स्वतन्त्र भारत में अपने ही राज्य को अनुभव कर प्रत्येक भारतीय नागरिक अपने हृद्गत आनन्दोल्लास का शब्दों द्वारा प्रकाश करने में चाहें समर्थ न हो, किन्तु प्रत्येक के अन्तस्तल में आनन्दोद्रेक और अवर्णनीय उमंग है, इसमें सन्देह नहीं कि चिरकाल पर्यन्त व्यापिनी राजनीतिक दासता के कारण भारतीयों में शासन करने की आवश्यक क्षमता, अपने देश की सुरक्षा और सर्वांग उन्नति करने के साधन समीचीनतया सुप्रयुक्त करने की योग्यता और स्वदेशी एवं विदेशी कूट नैतिक कुचक्रों से बचकर स्वोन्नति में पूर्णरूप से अग्रसर होने की यथोचित तत्परता प्राप्त करने में भी समय तो लगेगा ही, फिर भी सुअवसर और सुयोग आज हम भारतीयों को ऐसा सुलभ है कि जैसा गत सहस्र वर्ष में कभी नहीं मिला था, इस विषय में किसी को अणु मात्र भी सन्देह नहीं हो सकता है।

विजयादशमी का आज हमारे लिये क्या महत्व और किस प्रकार का सन्देश है, शरद् ऋतु में प्रति वर्ष आनेवाली विजया दशमी के अवसर पर दो बड़े-बड़े पर्वों को मनाने की परम्परा भारत में चली आती है। एक दुर्गा पूजा और दूसरा रामरावण महायुद्ध सूचक राम लीला या दशहरा, इन दोनों पर्वों के बाह्य और विकृत प्रदर्शनों को महत्व न देते हुये यदि उनके आन्तरिक स्वरूप पर विचार किया जाय तो वर्त्तमान भारतीय राष्ट्र में निवास करने वाले नागरिकों को महान् सन्देश उपलब्ध हो सकता है। क्योंकि वर्त्तमान भारत राष्ट्र के समक्ष स्वतन्त्र होने पर भी जो जो महान् समस्यायें उपस्थित हैं और जिस प्रकार के विकटतम प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं उनके सुचारु समाधान के लिये जिस प्रकार के अनुभवी, कर्मठ व्यक्ति और सब प्रकार के साधन आवश्यक होते हैं, उनका प्रायः बाहुल्य नहीं है, निदान बड़ी बड़ी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं को रखते हुये भी आर्थिक, सैनिक, और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से प्रभावित होकर विवश हो, भारत को कभी २ इच्छा न रहते हुये भी दबाना पड़ता है। सर्व साधन सम्पन्न होने पर ऐसा सम्भव नहीं हो सकता था, उदाहरण के लिये कश्मीर का प्रश्न है, तथा कथित सरहदी लुटेरों और उनके पृष्ठ-पोषक पाकिस्तानी सैनिकों ने कश्मीर पर आक्रमण किया, उस कश्मीर पर कि जिसके शासक ने अपने राज्य को भारत संघ की छत्रच्छाया में रखना स्वीकार कर लिया था। युद्ध आरम्भ हुआ, भारतीय सेना ने असाधारण वीरता के साथ लुटेरे बर्बरों को अनेक स्थानों से मार भगाया, किन्तु सर्वथा कश्मीर से उनको खदेड़ कर निकाल देने के पूर्व ही परिस्थिति की प्रतिकूलता के कारण ही भारतीय सरकार को शान्तिमय निर्णय करने के लिये विश्वराष्ट्र सम्मेलन में यह विषय भेजना पड़ा, किन्तु अत्यत आश्चर्य है कि उस संस्था ने कि जिसमें प्रतिमास नये पति का वरण किया जाता है, अपनी दीर्घसूत्रता, अकर्मण्यता और कुत्सित छल कपट पूर्ण कूटनीतिज्ञता का अभव्य परिचय दिया है, उसको देखकर प्रत्येक राजनीतिक न्यायप्रिय विचारक तो यह स्वीकार करने के लिये विवश हो जाता है कि इंडोनेशिया, पैलेस्टाइन और कश्मीर कहीं भी तो विश्वसंघ ने कुछ नहीं कर पाया। हाँ, अनेक सीधी और सुलझी हुई समस्याओं को और भी जटिलतर अवश्य कर दिया है। यहां तक कि कनाडा के प्रतिनिधि को कहना पड़ा कि क्या संघ ऐसे प्रश्नों को ले लेता है कि जिनके सम्बन्ध में वह अपने निर्णयों को लागू कर ही नहीं सकता है। विश्व संघ तो पुरानी मरी खपी लीग आफ नेशन्स से भी व्यर्थ सा सिद्ध हो रहा है। अस्तु फिर भी कश्मीर का प्रश्न उसके समक्ष रखने के लिये भारत सब विवश हुआ। इससे प्रतीत होता है कि यदि हमारे अन्दर अन्य उन्नत राष्ट्रों की भांति सैनिक तैयारी पर्याप्त मात्रा में होती तो निश्चय ही हम स्वयं ही शीघ्र इस प्रश्न को जैसे हैदराबाद में रजाकारों के पैशाचिक अत्याचारों में और आतंकवादी निजामशाही से केवल साढ़े चार दिन में ही निर्मुक्त कर सके वैसे ही कश्मीर को भी प्रकृतिस्थ कर सकते। किन्तु परिस्थिति की विवशता ने तो विश्वसंघ के द्वार पर जा कर न्याय याचना करने के लिये विवश कर ही दिया।

आज अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में भारत राष्ट्र के लिये साहसी वीरों, वीरांगनाओं, वर्तमान समय में प्रचलित समस्त प्रकार के वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों की विपुल मात्रा में आवश्यकता है। इसलिये नहीं कि हम किसी दुर्बल देश पर आक्रमण कर उसको अपने साम्राज्य वृद्धि का सहज पशु बनाना चाहते हैं, अपितु अपने स्वतन्त्र राष्ट्र को एकान्ततः उन हिंस्र और दुर्दान्त पशुबलोपेत अत्याचारी प्रवृत्तियों को जो समय समय पर परस्व अपहरण पूर्वक शोषण करना चाहते हैं, उनकी कुचेष्टाओं से मानव मात्र का परित्राण करने के लिये सुसंगठित शक्ति ही एक मात्र प्रभावोत्पादक साधन वर्त्तमान देशकालिक परिस्थिति में आवश्यक अनुभव किया है। किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं है कि भारतीय संस्कृति के अनुसार अध्यात्मशक्ति प्रधान ब्रह्म शक्ति, सदा सैन्य बल प्रधान क्षात्रशक्ति की अपेक्षा श्रेष्ठ तर मानी जाती रही है। फिर भी भगवती दुर्गा देवी और भगवान् राम ने अपने अनुकरणीय उदाहरण से हमको सुस्पष्टतया बतलाया है कि क्रूरतम आसुरी शक्तियों का असाधारण प्रकोप हो जाने पर उनसे सर्व साधारण मानव प्रजा का परित्राण करने के लिये और दानवी प्रवृत्तियों को परास्त करके मानवी और दैवी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर विश्व कल्याण के लिये क्षात्र बल के घोर प्रयोग की भी आवश्यकता होती है, क्योंकि स्वभावतः दुर्गा देवी और राम दोनों ही करुणा और दया के मूर्तिमान स्वरूप ही थे। 'क्षत्रियैर्धार्यते चापं नार्त्त शब्दो भवेदिति' मर्यादा पुरुषोत्तम राम का यह आघोष सुस्पष्ट इसी बात का निदर्शक है कि कहीं भी दुःखी की पुकार न सुनाई पड़े। इसलिये हर वीर पुरुष या क्षत्री को धनुरादि शस्त्रास्त्र धारण करने का व्रत लेना पड़ता है।

क्या राम लक्ष्मण और भगवती दुर्गा की भांति अन्य किसी मानवी सहायता के बिना केवल अपने बुद्धि और पराक्रम पर निर्भर रहते हुए जिस प्रकार इन भारतीय महा विभूतियों ने अनुकरणीय और अलौकिक पुरुषार्थ एवं पराक्रम प्रदर्शित कर दुर्दान्त दानवों की संहार प्रवृत्तियों का मूलोच्छेद कर मानवता और दैवी प्रवृत्तियों की पुनः प्रतिष्ठा की, उसी परम्परा का अनुगमन

करते हुए विजयादशमी के पवित्र पर्व पर प्रत्येक राम और दुर्गा का भक्त उनके दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करने का पावन व्रत ही नहीं लेगा, अपितु उसी के पूर्ण रूप से परिपालन करने में अपने जीवन को राष्ट्र हित साधक कार्यों में प्रस्तुत करेगा। आज अपने राष्ट्र को सब प्रकार से शक्तिमान और समृद्धशाली बनाने का गुरुतर भार भारत के प्रत्येक मानव पर है। प्रति क्षण अपने जीवन कार्यों के अनुपात से हम राष्ट्र को शक्तिमान या अशक्त बना सकते हैं। अतः सावधानी के साथ पुरुषों को मर्यादा पुरुषोत्तम राम और स्त्रियों को देवी दुर्गा के अनुकरणीय चरित्रों को अपने जीवन में अङ्कित कर विजया दशमी के दिन दृढ़ सङ्कल्प पूर्वक 'वीर भोग्या वसुन्धरा' इस मूल मन्त्र का अनुष्ठान करते हुये, वीराग्रणी अर्जुन का यह वचन स्मरण रखना चाहिये, "अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्"।

—

बड़ी व्यवस्थापिका सभायें

भारतीय विधान परिषद्, भारत के विधान निर्माण के अत्यन्त विषम तथा विवादास्पद विषयों का निर्णय कर चुकी है। इन विषयों में धारा संख्या १८० बड़ी व्यवस्थापिका सभाओं से सम्बन्ध रखती है। इस विषय की गुरुता इसी बात से स्पष्ट है कि विवाद के अवसर पर विधान परिषद् ने इस प्रश्न को ड्राफ्ट कमेटी को पुनः विचार भेज दिया था जहाँ से यह पुनः विधान परिषद् में आया यद्यपि कुछ होने पर भी बड़ी व्यवस्थापिका सभाओं के निर्माण किये जाने के सम्बन्ध में तो निश्चय हो गया परन्तु उनके विधान और अधिकार का निर्णय मन्त्रों तथा पार्लियामेन्ट के भविष्य के निर्णय के लिये छोड़ दिया गया है।

एक ही प्रान्त में दो प्रकार की व्यवस्थापिका सभाओं की स्थापना का प्रश्न आधुनिक विधान विशेषज्ञों की दृष्टि से अत्यन्त विवादास्पद है। अनेक वैधानिक विचारकों का मत है कि द्वितीय बड़ी व्यवस्थापिका सभा का "साधारण सभा" के निश्चयों पर पुनर्विचार करने के अधिकार की प्रक्रिया के अनेक लाभ हैं। बड़ी व्यवस्थापिका सभायें प्रायः उत्तेजित वादानुवाद के वातावरण से पृथक रहकर शीघ्रता व उत्तेजना में निर्माण किये गये कानूनों व निश्चयों के दोष निराकरण का एक उत्तम साधन हैं। ब्रिटिश 'साधारण सभा' और 'लार्ड सभा' का संघर्ष वैधानिक पण्डितों के लिये जनतन्त्रीय भावना के विकास का उत्तम उदाहरण है।

भारत में इस प्रकार की द्वितीय धारा सभाओं का होना सर्वथा ही एक नवीन प्रणाली है। पुरातन (Counsil of Stete) बड़ी धारा सभा का विधान ही न केवल विचित्र था अपितु उसका निर्माण भी अत्यन्त विचित्र प्रकार का था। जिसके कारण वह कुछ अधिक प्रभावशाली व उपयोगी सिद्ध न हुई। उसके बाद विवाद भी अपने समकालीन साधारण धारा सभाओं से अधिक उत्कृष्ट श्रेणी के न होते थे। विशुद्ध जनतन्त्रवाद के समर्थक सदा ही इस प्रकार की धारा सभाओं को जनसाधारण की इच्छा के विरुद्ध उन्हें प्रतिक्रियावादी संस्था के रूप में अनुभव करते थे और उनकी स्थापना अनुचित समझते थे। योरुप के अनेक देशों में विशेषत फ्रांस में, भी इस प्रकार की द्वितीय धारा सभाओं की स्थापना का कुछ उत्तम अनुभव नहीं हुआ है। दोनों सभाओं के निर्माण के सम्बन्ध में विधान विशेषज्ञों के मतभेद से उत्पन्न इस अव्यवसायात्मिका बुद्धि का प्रदर्शन भारतीय विधान में भी हुआ है। यद्यपि अब यह निश्चय कर दिया गया है कि कुछ एक प्रान्तों में द्वितीय साधारण सभायें होंगी परन्तु उनके निर्माण प्रकार का विशद रूप रेखा भारतीय विधान में अंकित नहीं की गई है। प्रारम्भ में प्रस्ताव यह था कि केन्द्रीय शासन द्वारा नियुक्त गवर्नर प्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल की संख्या का ⅙ भाग द्वितीय बड़ी व्यवस्थापिका सभा के लिये मनोनीत किया करेंगे। अब धारा संख्या १६० के द्वारा यह निश्चय हुआ है कि बड़ी Council के सदस्यों की संख्या एसेम्बली (साधारण सभा) के सदस्यों की संख्या के ¼ से अधिक न होगी और वह संख्या ४० से किसी अवस्था में भी कम न होगी। इस कौंसिल के प्रतिनिधियों की ⅓ संख्या म्युनिसिपैलिटी डिस्ट्रिक्टबोर्ड आदि द्वारा निर्वाचित की जायगी। 1/12 विश्वविद्यालयों द्वारा तीन वर्ष से अधिक स्नातकों की डिग्री प्राप्त व्यक्ति चुने जायेंगे। 1/12 सदस्य तीन वर्ष से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों द्वारा तथा ⅓ साधारण सभा द्वारा तथा एसेम्बली में चुने गये सदस्यों के अतिरिक्त व्यक्तियों में से चुने जावेंगे तथा शेष प्रान्त के गवर्नर द्वारा उन व्यक्तियों में से मनोनीत किये जायेंगे जो कि साहित्य विज्ञान आदि के विशेषज्ञ होंगे।

लेजिसलेटिव कौंसिल (बड़ी व्यवस्थापिका सभायें) के अधिकार के सम्बन्ध में स्थिति कुछ अनिश्चित सी प्रतीत होती है। प्रारम्भ में प्रस्ताव यह था कि दोनों धारा सभाओं में परस्पर मत भेद होने पर, दोनों सभाओं के सम्मिलित अधिवेशन के बहुमत का निर्णय मान्य होगा परन्तु इस प्रक्रिया का परित्याग इस लिये कर दिया गया है कि इससे प्रजातन्त्र के सिद्धान्त से अत्यन्त न्यून सिद्धान्त पर सगठित संस्था को बहुत अधिक शक्ति प्राप्त हो जाने की सम्भावना थी। यह तो स्पष्ट ही है कि किसी निर्णय को स्थगित कर देने का अधिकार पुनर्विचार करने के अधिकार से अधिक शक्तिशाली है। परन्तु अब जब द्वितीय बड़ी धारा सभाओं के निर्माण का निश्चय हो ही गया है तो उनको उचित अधिकार दिया जाना आवश्यक ही है। निश्चय हुआ है कि प्रान्तीय सरकारें इस सम्बन्ध में अपना पृथक पृथक निर्णय करेंगी, जिनके निर्णय का आधार समय समय पर पार्लियामेन्ट निर्धारित करती रहेगी। तात्पर्य यह है कि यदि दो प्रकार की धारा सभाओं का निर्माण देश में सन्तुलित मनोवृत्ति को स्थापित करने में समर्थ हुआ तो उनकी उपयोगिता में सदेह ही क्या किया जा सकता।

———

मध्य भारत में आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध

ज्ञात हुआ है कि मध्यभारत के चीफ सेक्रेटरी महोदय ने अपनी ३१-३-४९ की आज्ञा द्वारा सरकारी कर्मचारियों को किसी भी राजनैतिक अथवा धार्मिक संस्थाओं में भाग न लेने का आदेश दिया है।

इस आज्ञा के कारण मध्यप्रान्त में आर्यसमाज के कार्य को क्षति पहुंच रही है। राज कर्मचारियों का राजनैतिक आंदोलनों अथवा राजनैतिक संस्थाओं में भाग न लेकर निष्पक्ष रहने की आज्ञा के बुद्धिमत्ता के सम्बन्ध में कोई आक्षेप का कारण नहीं है परन्तु सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थाओं के सम्बन्ध में इस प्रकार की आज्ञा व्यक्ति के सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होने के नागरिक अधिकार पर स्पष्टतः ही प्रतिबन्ध है।

अंग्रेजी शासन काल की इसी प्रकार की आज्ञाओं द्वारा आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था पर प्रतिबन्ध लगाने के इस कार्य ने विदेशी दासता के पुराने समय का पुनः स्मरण करा दिया है। यह कार्य सम्भवतः आर्यसमाज की स्थिति को ठीक २ न समझ सकने अथवा व्यक्ति के नागरिक अधिकारों और राजकार्य के उत्तरदायित्व के भेद को ठीक २ समझ न सकने के कारण ही हुआ है।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर का एक शिष्ट मण्डल मध्य भारत संघ राज्य के जनरल सेक्रेटरी महोदय से मिलने गया है। निश्चित चीफ सेक्रेटरी महोदय अंग्रेज न होकर भारतीय ही हैं अतः आशा की जाना चाहिये, कि वे अवश्य ही विप्रतिपत्ति को समाधान कर देंगे और अपने आर्य प्रजाजन के साधुवाद के पात्र होंगे।

सिंध के गैर-मुसलमान

पाकिस्तान निष्क्रांत सम्पत्ति कानून के अंधेर का फल

नई दिल्ली, २८ सितम्बर। सिन्ध के गैर मुसलमानों (हिन्दुओं) का वहाँ से भागना जो गत जुलाई मास में रुक गया था, अब फिर से आरम्भ हो गया है।

भारत सरकार के पुनर्वास विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि पाकिस्तान में निष्क्रांत सम्पत्ति कानून के 'मनमानी' तौर पर लागू किये जाने के बाद से ही सिंध से गैर मुसलमानों का यहाँ आना शुरु हुआ है। पाकिस्तान में निष्क्रांत सम्पत्ति कानून २६ जुलाई को लागू किया गया और अगस्त में २५० गैर मुसलमान सिंध से भारत आये सितम्बर के पहले पखवारे में १ हजार व्यक्ति सिंध से भारत आये हैं।

अधिकारी ने बताया कि सिंध में निष्क्रांत संपत्ति कानून बड़ी सख्ती से लागू किया जा रहा है और संदेह मात्र पर ही गैर मुसलमानों की सपत्ति सरकार के कब्जे में कर ली जाती है। सन्देह के आधार पर ही सैकड़ों मकान, व्यापार और औद्योगिक केन्द्र तथा सिनेमा भवन को मोहर बन्द कर दिया गया है।

क्षेय . ... पर

रात्रि का अन्धकार घनीभूत हो गया था। हमारे दिन भर के समस्त व्यापार समाप्त हो चुके थे। हमने सोचा कि अब तो रात में कोई अतिथि आने को शेष रह नहीं गया है तथा गाँव के सब द्वार बन्द हो चुके हैं। परन्तु कुछेक लोगों ने कहा, "अभी महाराज तो आने को बाकी ही हैं।" हमने हँसकर कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

फिर ऐसा ज्ञात हुआ कि द्वार कोई खटखटा रहा है। हमने यही समझा कि वह हवा के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अस्तु, दीपक बुझाकर सब सोने को लेट रहे। कुछेक लोग फिर बोले, 'अरे, दूत आ गये।" हमने हँसकर यही कहा, "नहीं जी, यह हवा ही है।"

रात के सन्नाटे में पुन कुछ खटका हुआ। नींद भरे हुए हम लोगों ने समझा कि कहीं दूर पर मेघ गर्जन कर रहे हैं। पृथ्वी काँप उठी, दीवारें हिल पड़ी और हमारी नींद उचट गई। कुछ लोगों ने कहा, "हो न हो, यह पहियों का ही शब्द है', परन्तु नींद में ऊँघते हुए हमने फिर भी यही बड़बड़ा दिया, "अजी नहीं, यह केवल बादलों की गड़गड़ाहट ही है।"

अवश्यम्भावी

रात्रि अभी शेष ही थी कि दुन्दुभिनाद सुनाई पड़ा। किसी ने आवाज़ दी, 'जागो, अब विलम्ब न करो।" हमने दोनों हाथों से कलेजा थाम लिया और भय से काँपने लगे। किसी ने कहा "लो, वह महाराज की ध्वजा फहराती आ रही है।" हम झट उठ खड़े हुए और बोले, "अब विलम्ब का समय नहीं है।"

महाराज आ पहुँचे—पर उनके स्वागत के लिए आरती और मालाएँ कहाँ हैं? कहाँ है उनके बैठाने को आसन, कहाँ है मण्डप, और कहाँ है शृङ्गार-सामग्री? हाय रे दुर्भाग्य? यह कैसी घोर लज्जा की बात है! किसी ने कहा, "अरे, यह सब रोना-धोना व्यर्थ है, अपने इन रिक्त करों से ही उनकी अभ्यर्थना करो और उन्हें अपने सूने ही घर में लिवा लाओ।"

अरे, द्वार खोल दो और शङ्ख-ध्वनि होने दो। इस घोर रात्रि में हमारे अँधेरे और निर्जन घर के राजा पधारे हैं! आकाश में मेघ गरज रहे हैं और रह-रहकर दामिनी की दमक से अन्धकार काँप सा उठता है। अपनी वही पुरानी और फटी हुई चटाई लाकर आँगन में बिछा दो। आज तो आँधी के साथ सहसा ही दुःख-रजनी के राजा का आगमन हुआ है॥

—विश्व कवि रवीन्द्र नाथ

(गीताञ्जलि से)

—०—

—सार्वदेशिक सभा ने अफगानिस्तान के राजदूत से पूछा था कि अफगानिस्तान के स्कूलों में संस्कृत का पाठ्य क्रम क्या रक्खा गया है, उनका उत्तर आर्य जनता की जानकारी के लिये प्रकाशित किया जाता है। यह उत्तर मन्त्री सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुआ है:—

UNiVERSITY OF KABUL

FACULTY OF LITERATURE

Syllabus of Sanskrit

FIRST YEAR

(I) Alphabet (Devanagri) Vowels and consonents, Deciphering of letters and reading (Oral)
(II) Dictation and Sulekha in Devanagri and Roman & Orthographical signs,
(III) Text Rijupatham
(IV) Sanskrit Grammar and Translation

SECOND YEAR

(I) Sulekha of Sanskrit
(II) Sanskrit grammar ann Translation
(III) Sanskrit Text and Translation, Sanskrit Manjusa
(IV) Pure Devanagri Dictation and Oral reading

THIRD YEAR

(I) Sanskrit Phonology
(II) Sulekha, Dictation of Sanskrit in Devanagri and Roman,
(III) Text Bhagvad Gita (Oral & Translation)
(IV) Sanskrit Prosody.
(V) History of Sanskrit Literature,

FOURTH YEAR

(I) History of Sanskrit Literature
(II) Vedic Text (Upanisada)
(III) Uttar--Rama-Charitam by Bhava Bhuti (Text)
(IV) Higher Sanskrit Grammar aed Vedic Grammar.

काबुल-विश्वविद्यालय

साहित्य विभाग

संस्कृत-पाठविधि

प्रथम वर्ष

(१) देवनागरी वर्णमाला स्वर और व्यञ्जन अक्षरों की पहचान और मौखिक पाठ
(२) देवनागरी और रोमन में सुलेख व इमला।
(३) पाठ्य पुस्तक—ऋजुपाठम्
(४) संस्कृत व्याकरण और अनुवाद।

द्वितीय वर्ष

(१) संस्कृत सुलेख
(२) संस्कृत व्याकरण और अनुवाद।
(३) संस्कृत और अनुवाद, "संस्कृत मन्जूषा"
(४) शुद्ध देवनागरी इमला और मौखिक पाठ।

तृतीय वर्ष

(१) संस्कृत वर्णोच्चारण।
(२) संस्कृत सुलेख और इमला देवनागरी और रोमन लिपि में।
(३) पाठ्य पुस्तक—भगवद्गीता (मौखिक और अनुवाद)
(४) संस्कृत छन्द।
(५) संस्कृत साहित्य का इतिहास।

चतुर्थ वर्ष

(१) संस्कृत साहित्य का इतिहास।
(२) वैदिक पाठ्यपुस्तक (उपनिषद्)
(३) पाठ्य पुस्तक—भवभूति कृत "उत्तर रामचरित'
(४) उच्च संस्कृत व्याकरण तथा वैदिक व्याकरण।

'एक मुस्लिम प्रान्त में उपयोगिता की दृष्टि से संस्कृत को जो स्थान मिला है क्या उससे अपने देश के नेता मन्य कुछ शिक्षा ग्रहण करने का प्रयत्न करेंगे और जब कि भारत ही संस्कृत का जन्म स्थान है और विश्व का उत्कृष्टतम साहित्य तथा संसार के लिये अनुकरणीय, विश्ववारा वैदिक संस्कृति इसी भाषा में अक्षय निधि के रूप में सुरक्षित है। क्या स्वतन्त्र होने पर भी हमारी गुलामी मनोवृत्ति दूर न होगी।

विजय-दशमी का संदेश

(लेखिका, सुशीला 'विद्यार्थी' 'विद्यालकृता' 'साहित्यरत्न')

प्रत्येक देश, जाति तथा राष्ट्रों के इतिहास मे त्योहारों का भो निराला ही स्थान है। वे उनमें नव चेतना, नव-जीवन, तथा नये उत्साह का सचार करते हैं इन देश और जाति को चिर सचित पुण्य स्मृतिया व नानाविध गौरव गाथायें निहित होती हैं। इसलिये प्रतिवर्ष उन पर्वो को मनाते समय उनसे सम्बन्ध रखने वाली घटनायें भी नवीन रूप धारण कर कुछ प्रेरणा सी देने लगती हैं। साधारण जन त्यौहारों के ऊपरी महत्व को तो याद रखते हैं पर उनसे मिलने वाले सदेश को सुनना आवश्यक नहीं समझते।

विजय दशमी का पर्व भी उन्नति की चरमसीमा पर पहुँची हुई 'पूर्वा सस्कृति विश्ववारा' के सुन्दर आदर्शों तथा आर्य सभ्यता के महत्व का प्रतीक है। राम ने लका पर चढ़ाई की। अपनी अनुपम वीरता तथा हनुमान जैसे वानर वीरों की सहायता से रावण को मारा—राक्षस कुल का सहार किया अन्ततोगत्वा लकापर विजय पाई। वहाका राज्य विभीषण को देकर स्वय सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौट गये। वहाँ रामचन्द्र जी के विजय के उपलक्ष्य म सर्वत्र खुशियां मनाई जाती है। घर घर बाजे बजते हैं विजयोत्सव मनाये जाते हैं। विजयी राम के, तपस्वी राम के चरण म अयोध्या वासी अपने अन्तस्तल की भक्ति भावनाओं के धूप-दीप नैवेद्य अर्पण करते हैं। तभी से अनार्य र जा पर आर्य सम्राट् की विजय आसुरी शक्तियों पर दैवी शक्ति की जीत के रूप म प्रतिवर्ष यह पर्व मनाया जाने लगा है। विजय- दशमी नाम ही इस सत्य का साक्षी है।

जनता अत्यन्त उत्साह से महीनों पहिले से इस त्योहार को मनाने की तैयारियां करता है। राम लक्ष्मण और सीता जी के स्वाग बनाये जाते हैं। कागज का रावण खड़ा करते हैं। ठीक उस पर्व के दिन उस रावण को जलाया जाता है जिसे देख देखकर जनता आनन्दित होती है। ठीक है आनन्दित होना ही चाहिए पर केवल राम-सीता व लक्ष्मण के ऊपरी रूप धारण करने तथा कागजी रावण जलाने तक ही अपनी इति कर्तव्यता नहीं समझनी चाहिये। विजय-दशमी का सदेश इससे बहुत उत्कृष्ट कई गुनामहान् तथा प्रभावोत्पादक है।

विजय-दशमी का महत्व दो बातों के कारण है—

१ आसुरी शक्ति का विनाश।

२— त्याग की प्रतिष्ठा।

अत्याचारी रावण के आतक से साधारण जनता मे त्राहि त्राहि मची हुई थी। देव तथा ऋषिगण भी रावण तथा राक्षसों के अत्याचारों से सत्रस्त हो रहे थे। राक्षस गण उनके यज्ञो मे मांस तथा रुधिर फेंक कर उन्हें भयभीत किया करते थे। नर भक्षी राक्षस यत्र तत्र घूम घूम कर मनुष्यों का जीवन भी सकट-ग्रस्त किये हुये थे। इसलिये चिरकाल से रावण तथा राक्षसों के विनाश की इच्छा उग्र रूप धारण कर रही थी। अत स्वाभाविक ही था कि रावण तथा अत्याचारी राक्षसों के नाश और वीराग्रणी राम के विजय के समाचारों से ऋषियों के हृदय हर्ष गद्‌गद् हो उठें। और देवों और मनुष्यों के हृदय मे भी प्रसन्नता का पारावार उमड़ उठे। तभी से दुष्टों के विनाशक तथा आर्यत्व के सस्थापक दिवस के रूप में चिरन्तनकाल से 'विजया' का पर्व धूम धाम से मनाया जाता है। इस पर्व का दूसरा महत्व है

त्याग की प्रतिष्ठा

राम ने सोने को लका जीती, अपनी साम्राज्य पिपासा की पूर्ति के लिये नहीं धर्म-सस्थापन के लिये। रावण को मारा, उसका राज्य हड़पने के लिये नहीं। उसी के धर्म परायण भाई विभीषण को देने के लिये। आर्य सस्कृति की महानता का यही मूलमत्र है। युग कवि मैथिली शरण जी के शब्दों में.—

आर्य वीरो की है यह बान।

त्याग तपस्यायें बलिदान॥

अगर लका का राज्य जीत कर अयोध्या मे मिला लिया जाता तो विजय-दशमी का पर्व आर्य सस्कृति के गौरव का चिन्ह न बनता। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' 'मागृध कस्यचिद्धनम्' त्यागपूर्वक भोग करना, किसी के धन का लालच न करना यही वैदिक सभ्यता का सार है जिसका मूर्त रूप मर्यादा पुरुषोत्तमराम के जीवन में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

प्रचीन काल में इतने महापुरुष हो गये पर राम का चरित्र मानव मन को क्यों कर इतना आकर्षित कर सका कि मानव उसे ईश्वर ही समझ कर आराध्य देव मान सका। आज भी मनुष्य अपने अन्त करण के प्रेम और भक्ति की सुगन्ध से सने पुष्प राम के काल्पनिक चरणों में भेट चढ़ा कर अपने आप को कृत-कृत्य समझता है। कविता-कामिनी कान्त मैथिलीशरण जी तो —

राम तुम मानव हो,
ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व मे रमे हुये,
नहीं सभी कहीं हो क्या?
तब मैं अनीश्वर हूँ,
ईश्वर क्षमा करें,
तुम न रमो,
मन तुम में रमा करे?

इन शब्दों से अपने मन-रमण राम को अपना आराध्य देव समझ कर ही उन्हें भावनाओं का नैवेद्य अर्पण करते हैं। राम की प्रतिष्ठा भारत ही नहीं विश्व के कोने - कोने तक, देश, काल और जाति की सीमायें लाघ कर सर्वत्र अपना प्रभाव फैला चुकी है। विश्व-वन्दनीय महात्मा गाधी भी राम के चरित्र को आदर्श के रूप मे स्वीकार करते थे। देश मे राम राज्य की स्थापना करना ही उनका चिर स्वप्न था, जिसकी अधूरी साध ही वे हृदय में लिये चल बसे। क्यों कर? राम की इस लोक प्रियता तथा जन-मन-गण अधिनायकत्व का रहस्य उनकी त्याग और अनुराग मयी वृत्ति में है। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग और अनुराग की भावनाओं से ओत प्रोत है। वे सुनते हैं आज अपूर्व समारोह से पिता दशरथ उनका राज्याभिषेक करने वाले हैं तो हृदय का हर्ष सीमा का उलघन कर उछलने नहीं लगता। कुछ समय बाद सुनते है पिता ने भरत को राज्य दे दिया है तथा उन्हें १४ वर्ष का बनवास मिलने

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वेदवीथी—

परमेश्वर की उपासना

श्री श्यामबिहारीलाल वानप्रस्थी

देव सवित प्रसुव यज्ञ प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्व. केतपू. केतम्‌ पुनातु। वाचस्पतिर्वाच न स्वदतु। यजु० अ० ११ म० ७।

पदार्थ—हे (देव) शुद्ध ज्ञान देने और (सवित.) सब सिद्धियों को उत्पन्न करने हारे परमेश्वर आप (न:) हमारे (भगाय) ऐश्वर्य के लिये (यज्ञम्) सुखों को प्राप्त कराने हारे व्यवहार को (प्रसुव) उत्पन्न कीजिये तथा (यज्ञपतिम्) इस सुखदायक व्यवहार के रक्षक जन को (प्रसुव) उत्पन्न कीजिये (गन्धर्व.) पृथिवी को धरने (दिव्य) शुद्ध गुण कर्म और स्वभावों में उत्तम और (केतपू.) विज्ञान से पवित्र करने हारे आप (न:) हमारे (केतम्) विज्ञान को (पुनातु) पवित्र कीजिये। और (वाचस्पति) सत्य विद्याओं से युक्त वेदवाणी के प्रचार से रक्षा करने वाले आप (न.) हमारी (वाचम्) वाणी को (स्वदतु) मधुर कीजिये।

मन्त्र पर विशेष विचार।

मनुष्य अपने महाराज प्रभु को सबोधन करते हैं कि हे पिता आप शुद्ध ज्ञान को देने हारे हैं और सब सिद्धियों के प्रदान कर्त्ता हो। आप का दिया हुआ ज्ञान वेदरूप में अत्यन्त शुद्ध है। उस में कोई मिलावट प्रवेश नहीं। दुनियां के और साहित्य में मिलावट की सभावना है। वह तो बहुधा प्रक्षिप्त है। पर प्रभु के प्रदत्त वेद में मिलावट को अवसर कहां। मनुष्य आप को उपासना से और योगी आप के आत्मिक सहयोग से सब ऐश्वर्य और सब सिद्धियों को प्राप्त करता है। आप हमारी समृद्धि के लिये सुखप्रद व्यवहार को पैदा कीजिये और साथ ही ऐसे राजा को उत्पन्न कीजिये जो सब उत्तम सुखदायक बातों की रक्षा करे। आप शुद्ध हो अत्यन्त पवित्र हो। सब ससार के धर्त्ता हो। शुद्ध ज्ञान देकर आप हमारे अन्तःकरण को शुद्ध विवकी बनाते हो। कृपा करके प्रभु हमारे विज्ञान को, बुद्धि. विचारो को पवित्र कीजिये, सत्य वेदवाणी का सचार आप ने ऋषियो के हृदय में किया था और आवश्यकतानुसार विद्वानों द्वारा इस ज्ञान की रक्षा आप करते हो। आप हमारी वाणी को मधुर कोमल कीजिये जिस से कटु भाषण के अपराध व दुष्परिणाम से हम बचें, हम सत्य मधुर भाषी हों।

———

राष्ट्रभाषा समस्या समाधान

[श्री प० रामदत्त शुक्ल एम० ए० एडवोकेट]

भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता १५ अगस्त १६४७ को प्राप्त हुई, परन्तु उस स्वतन्त्रता के साथ अखंड भारत दो स्वतन्त्र राष्ट्रों इंडियन यूनियन और पाकिस्तान यूनियन में विभाजित ही नहीं किया गया अपितु उस विभाजन के साथ ही साथ निर्ममता से सहस्रों निरीह नर नारयों की हत्या हुई, लाखों अकिंचन बनाकर निर्वासित किये गये, अरबों की चल और अचल सम्पति का अपहरण किया गया, और सब से अधिक लज्जा की बात हुई सहस्रों अबलाओं का सतीत्व नाश एव पैशाचिकता के साथ बलात्कार पूर्वक अपहरण। फिर भी भारत स्वतन्त्र राष्ट्र बन ही गया, किन्तु अब भी कश्मीर की जटिल समस्या त्रिशंकु की भाति अन्तराल में ही लटक रही ह। कश्मीर भारत के साथ रहेगा, पाकिस्तान के साथ रहेगा अथवा विभाजित होकर दो भागों में विभाजित किया जायगा। इन तीनों विकल्पों मे से क्या होगा, इस सम्बन्ध में कोई निश्चित बात कहना सम्भव नहीं है। देखिये क्या होता है।

इधर जब से भारत राष्ट्र के सूत्र संचालकों द्वारा अभिनव स्वतन्त्र राष्ट्र के लिये नव विधान निर्माण करने के निमित्त नई देहली के गगनस्पर्शी प्रसाद में श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के सभापतित्व में विधान परिषद् के अधिवेशन हो रहे है, लगभग दो वर्ष का समय व्यतीत हो चुका है। विधान का द्वितीय वाचन चल ही चल रहा है, कहा जाता है कि अबतक केवल दो करोड़ रुपया इस परिषद् के निमित्त व्यय हो चुका है, कदाचित् तीनों वाचनों के अन्त तक एक करोड़ और व्यय हो जायगा।

इस विधान के विधाता प्रायः ऐसे ख्यातनामा विधान शास्त्र और कानून शास्त्र के अंग्रेजी के प्रकांड वकील विद्वान् रहे हैं कि जिन्होंने भगीरथ प्रयत्न करके अमेरिका, कनाडा, रूस, इङ्गलैंड, फ्रान्स, स्विटजर लैंड, आयरलैन्ड, आदि आदि देशों के विधानों का मन्थन करके उनमें से जितने अधिक रत्न निकालना सम्भव हुआ, निकालकर भारतीय विधान में समाविष्ट करने का प्रयास किया, प्रयत्न करने पर भी अब तक प्रकाशित अंग्रेजी के मूल विधान अथवा उसकी पांडुलिपियों में भारतीय राजशास्त्र का कोई मौलिक तत्व समाविष्ट किया गया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है, सम्भव है कि लौकिकताः (सेकुलरिटी) के अनन्य उपासक हमारे विधान विधाताओं के इस भय से कि कहीं उनको संप्रदायवादी या आतंकवादी न कह बैठे, इसलिये ही भरातीयता से नवविधान को सर्वथा असम्पृक्त रखना उचित समझा हो। इस प्रकार यह नवविधान भारतीय परम्परा रूपी अश्वत्थ या बट वृक्ष सदृश सुदृढ स्तम्भ और महामूल के साथ सुसंगठित रूप में विकसित होने के स्थान मे आकाश वेलि की भाति पर परम्पराओं रूपी वृक्षों को आधार मानकर पनपाया जा रहा है। किन्तु हमें स्मरण रखना चाहिये कि प्रकृति के अटल शाश्वत साम्राज्य में पीपल या बट सदृश आमूल और अभिनरूप से सुसम्बद्ध महावृक्षों की शक्ति, आयु और प्रभाव को आकाश वेलि किसी प्रकार कभी भी प्राप्त नहीं कर सकती है। फिर उसको पनपाने वाले चाहें एक नहीं अनेकों ब्रह्मा ही स्वयं क्यों न हों, अस्तु,

अब तक विधान परिषद् के वैधानिक पंडितों के सन्मुख जितने प्रश्न उपस्थित होते रहे उनमें सबसे कठिन और जटिल प्रश्न राष्ट्रभाषा का प्रश्न रहा है, इस दुरूह विषय के सम्बन्ध में समाचार पत्रों व्याख्यानों, सभाओं, सम्मेलनों, उत्सवों और विविध नेताओं के वक्तव्यों में इतनी विभिन्न, विचित्र विरोधी, संगत असंगत, सम्बद्ध और असम्बद्ध युक्ति प्रमाणोपेत बातें कहीं गई और लिखीं गई है कि कदाचित इतनी अन्य किसी विषय पर चिरकाल से नहीं कहीं गई होंगी। अन्त मे विधान परिषद् में आने के पूर्व यह समस्या विधान परिषदीय कॉंग्रेस कमेटी पार्टी के समक्ष कितने ही दिनों मथी जाती रही, निदान श्री मुंशी और आयंगर महोदय के पचायती प्रस्ताव को प्रस्तुत करने का अवसर आया, इसके अनुसार हिन्दी भाषा और नागरी लिपि को स्वीकार किया जाय ऐसा विचार हुआ, किन्तु साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय अंक माला को भी स्वीकार किया जाय, अंग्रेजी को १५ वर्ष पर्यन्त और राज भाषा के रूप में चलने दिया जाय। इत्यादि बातों से युक्त प्रस्ताव प्रस्तुत होने के पूर्व विशेष प्रयास परस्पर मेल या समझौता करने के लिये किया गया किन्तु मेल और समझौता तो सजातीय द्रव्यों में ही सम्भव है, विजातीय में कदापि नहीं, यह बात विधान विधाता गण कदाचित् भूल गये, अन्त में विधान परिषद् में तीन सौ संशोधनों के साथ श्री मुंशी आयगर प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ पक्ष विपक्ष से चार दिन तक जिस प्रकार से वाक् युद्ध होता रहा, उसके सम्बन्ध में अमृत बाजार पत्रिका ने विधान परिषद् प्रांगण की तुलना 'मछली बाजार' से की है। हमको तो अनेक विधान विधाताओं के भव्य भाषणों को पढ़कर और भारत जैसे विशाल महाराष्ट्र की मानमर्यादा एव गौरव को दृष्टि में रखते हुये धर्मचक्रयुक्त त्रिवर्ण ध्वज 'सत्यमेव जयते' तथा सत्य और अहिंसा के अनन्य उपासक और भारत में पुन अपने त्याग तथा तप के प्रभाव से रामराज्य की स्थापना करने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी इन सब का स्मरण कर अत्यन्त विषाद का अनुभव हुआ। अकस्मात् 'आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' कहना पड़ा।

विभाजित होकर स्वतत्र हुये भारत राष्ट्र में भी राष्ट्रभाषा, लिपि और अंकों के संबंध में इतना घोर विरोध, रोष, आवेश और कटुता। सैकड़ों वर्ष पूर्व अमेरिका में उत्तर और दक्षिण दो भागों में इस बात पर युद्ध हुआ था कि उत्तरीय भाग कहता था कि दास प्रथा को दूर कर दिया जाय, किंतु दक्षिण अमेरिकावासी उस दूषित प्रथा को चालू रखने के लिये हठ कर रहे थे, अत में सम्पूर्ण अमेरिका से कालांतर में दास प्रथा समूल नष्ट कर दी गई। आज दुर्भाग्योदय से दक्षिण के अंग्रेजी शिक्षा के कुप्रभाव से अङ्कमाला के केवल छ अङ्कों का विदेशीस्वरूप ही बनाये रखने के लिये महाभारत करने के लिये तुल गये, क्योंकि अंग्रेजी के १, २, ३ और शून्य लगभग नागरी अंकमाला के समान हैं, शेष छ अङ्कों में अंन्तर है। फिर गत सोलह सौ वर्षों से जो अङ्कमाला भारत मे अनवरत व्यवहार में आ रही हो और जिसका व्यवहार सौ वर्ष पूर्व दक्षिण में भी उत्तर भारत के समान ही होता रहा हो, उसके लिये इतना घोर और दुराग्रह किस लिये, अथवा बड़ों की सभी बातें बड़ी होती हैं, इस न्याय के अनुसार ही श्री पं० लक्ष्मीकांत मैत्र, डा० अम्बेडकर, श्री नजीमुद्दीन सदृश सज्जनों ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये संशोधन प्रस्तुत किया, मौ० अब्दुलकलाम साहेब शिक्षा मन्त्री महोदय ने रोमन लिपि में हिंदुस्तानी, मौ० हफीजुर्रहमान, सैयद करीमुद्दीन के नागरी उर्दू दोनों लिपियों में हिंदुस्तानी, श्री सतीशचन्द्र सामन्त ने बंगला, श्री फ्रेन्क अन्थानी ने रोमन लिपि में हिंदी आदि २ अनेक विधान विधाताओ ने अपनी मति, वृत्ति और प्रगति के अनुसार उग्र, उग्रतर और उग्रतम भाषण दिये। श्री आयंगर, श्री नेहरू, श्री गाडगिल, श्री मुकर्जी, श्री मुंशी आयगर प्रस्ताव के पक्ष में विस्तार के साथ बोले। श्री टण्डन जी, श्री धुलेकर, श्री रविशंकर शुक्ल, श्री अलगूराय हिंदी नागरी और नागरी अंग के पक्ष मे, श्री शंकरराव देव का उत्कट और उग्रतम भाषण हिंदी के विरोध में हुआ। अंत मे स्वनामधन्य श्री मौ० हसरत मोहानी ने प्रबल विरोध किया। बड़े विवाद के उपरांत हिंदी को राष्ट्रभाषा, नागरी को लिपि, १५ वर्ष के लिये अंग्रेजी को राजभाषा और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय वर्णमाला को स्वीकार किया गया। यह निश्चय भी बहुमत से हुआ, इस प्रकार राष्ट्रभाषा की समस्या का समाधान अनेक प्रकार की कटुता और पारस्परिक विक्षोभ के साथ हुआ। अच्छा है साम्प्रतिक चिंता का विषय तो समाप्त हो गया है, किंतु अभी राष्ट्रभाषा का रूप विनायक होगा या वानर, यह तो बहुत कुछ हिंदी समर्थक प्रांतों की सरकारों और सार्वजनिक नेताओं की अवसरोचित प्रगतिशीलता पर ही निर्भर रहेगा। क्योंकि इन्हीं की दीर्घसूत्रता और अकर्मण्यता का परिणाम है १५ वर्षीय अंग्रेजी की और दासता, यदि अपने कथनानुसार इन्होंने अपने-अपने प्रांतीय क्षेत्रों में होने वाले सार्वजनिक और सरकारी कार्यों में हिंदी भाषा तथा नागरी का व्यवहार किया होता, तो यह असम्भव था कि अंग्रेजी अंग्रेज के चले जाने के उपरात भूत की भांति बलात १५ वर्ष के लिये और लाद दी जाती। खेद है कि विवाद के मध्य में एक सज्जन ने यहाँ तक कहने का दुःसाहस किया कि जो लोग हिंदी न जानने वाले अंग्रेजी जानने वाले सरकारी नौकरी कर रहे हैं उनके लिये राष्ट्रभाषा का प्रश्न रोटी का प्रश्न है। भला ऐसे सूक्ष्मदर्शियों ने क्या कभी स्वप्न मे उस समय इसी प्रकार आँसू बहाने का आडम्बर किया था, जब प्राणपण से देश के नवयुवकों ने सन् ४२ के घोर आंदोलन में "अंग्रेज भागो" के आंदोलनो में प्राणों का उत्सर्ग किया था। किंतु इस अभागे देश ने तो चिरकाल से न केवल राजनीतिक दासता को अलंकार समझ कर अपने ऊपर लादना स्वीकार किया है, अपितु सांस्कृतिक, साहित्यिक, भाषा विषयक, वेष विषयक, भोजन विषयक,

(शेष पृष्ट ८ पर)

महर्षि के वेद भाष्य पर चार टीकाएं

[आचार्य विश्वश्रवा, वेदमन्दिर, बरेली]

महर्षि स्वा० दयानन्द सरस्वती जी ने ऋग्वेद और यजुर्वेद पर जो भाष्य लिखा है वह न गुरुकुलों में ही पढ़ाया जाता है और न विद्वानों के ही पठन पाठन में है। यह वेद भाष्य ऐसा ही है जैसा पौराणिकों के ठाकुरजी। अर्थात् श्रद्धा है पर उपयोग कुछ नहीं। स्वामीजी ने लिखा है कि मेरे वेद भाष्य से सूर्य के समान संसार में प्रकाश हो जायगा। वास्तव में वह वेदभाष्य ऐसा ही है कि जिस से सूर्य के समान प्रकाश हो सकता है। इस वेदभाष्य के पढ़ने वालों के सामने यह कठिनाई रहती है कि इस के पढ़ने से यह बात स्पष्ट नहीं होती कि लिखा क्या है। सायण महीधर चाहे कितना गन्दा अर्थ क्यों न करें पर उस गन्दे अर्थ का कुछ वाक्यार्थ तो बनता है।

वास्तव में आचार्यों के भाष्यों पर जब तक शिष्यों ने विस्तृत टीकाएं नहीं लिखी तब तक वे स्पष्ट नहीं हुए। शंकराचार्यादि के भाष्यों पर रत्नप्रभा आदि टीकाएं लिखी गई पर ऋषि दयानन्द के भाष्यों पर आर्य जगत् के पिछले किसी पण्डित ने लिखने का साहस न किया। श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने यजुर्वेद भाष्य के दस अध्यायों पर जो कुछ भी लिखा है वह पद भाष्य है। जिज्ञासु जी के इस विवरण से मन्त्रों के अर्थ या वाक्यार्थ नहीं समझे जा सकते। मन्त्रों का अर्थ विवरण लिखने के बाद भी उतना ही गूढ़ रहता है जितना पहले था। वेद पढ़ने वाला सबसे पहले यह चाहता है कि आखिर मन्त्र का स्पष्ट अर्थ क्या है। आर्य समाजी लोग वेदभाष्य छोड़ कर वैदिक विनय आदि पढते है क्योंकि वैदिक विनय समझ में तो आता है।

(प्रथम कठिनाई)

स्वामी जी के वेदभाष्य में जहां पदार्थ है वहां अन्वय या वाक्य क्रम नहीं है और जहां अन्वय है वहां अर्थ नहीं है अतः न अन्वय पढ़ने पर अर्थ का पता चलता है और न पद का अर्थ पढ़ने पर वाक्यार्थ का पता चलता है। सायण आदि के समान ऋषि ने भी पदार्थ को अन्वय क्रम से ही क्यों नहीं रखा, इसमें कोई कारण अवश्य है और वह कारण यह हैं कि ऋषि ने अन्वय या भावार्थ में जो बाते लिखी है तन्मात्र पदार्थ नहीं है। इस विषय में ऋषि ने यास्क की शैली अपनाई है जिस को एक पृथक् लेख में उदाहरण सहित विस्तार से लिखूंगा।

(दूसरी कठिनाई)

ऋषि ने अपने वेदभाष्य में प्राचीन ग्रन्थों के प्रमाण दिये हैं। उन प्रमाणों को लिख कर ऐसी बात लिख दी है कि उन ग्रन्थों को खोल कर देखा जावे तो वह उस प्रकरण के अनुसार संगत नहीं बैठता जैसे—

"अयं वा अग्निः प्रजाश्च प्रजापतिश्च"

(शत. ६।१।२।४२)

यह शतपथ का प्रमाण देकर लिख दिया है कि—यहां प्रजा शब्द से भौतिक और प्रजापति शब्द से ईश्वर अग्नि लिया जाता है। शतपथ को जब खोल कर बैठते हैं तो माथा चकराता है कि कैसे जोड़ तोड़ मिलावें। वास्तवमें कारण यह है कि आज कल जो शतपथ आदि आर्ष ग्रन्थों का पठन पाठन है वह भ्रष्ट है। स्वामी जी ने इन ग्रन्थों को आर्षशैली से पढ़ा था तदनुसार प्रमाण देते हैं।

(तीसरी कठिनाई)

तीसरी कठिनाई व्याकरण की भी है जैसे—पुरोहित शब्द की व्युत्पत्ति कर्तृवाचक करके निरुक्त का प्रमाण दिया है कि—

" पुरोहितः पुर एनं दधति "

(निरु० २।१२)

जो कि कर्मवाच्य है। अर्थात् कर्तृवाचक व्युत्पत्ति करके अर्थ किया है कि पुरोहित वह है 'जो धारण करता है' और जो प्रमाण दिया है उस का अर्थ है "जिसको धारण करते हैं वह"

(चौथी कठिनाई)

ऋषि ने एक एक शब्द के अनेक अर्थ किये हैं और उन की सिद्धि के लिये अनेक निर्वचन और धातुएं लिखदी हैं पर किस निर्वचन का किस से सम्बन्ध है यह नहीं दिखाया गया है। वस्तुतः यह काम भाष्य की टीका लिखने वालों का है। ऋषि का भाष्य 'आकर' ग्रन्थ है उस पर टीकाओं की आवश्यकता है। मेरी इच्छा यह है कि जैसे महाभाष्य पर प्रदीप और उद्योत लिखे गये इसी प्रकार ऋषि के वेदभाष्य पर प्रदीप और उद्योत लिखे जायें। मेरा विचार अपने जीवनमें ऋषि के सब वेद-भाष्य पर प्रदीप लिखने का है उद्योत के लिये सन्तान को आदेश दे जाऊंगा।

सैकड़ों कठिनाइयों के होते हुए मैं अकेला इस कार्य पर लगा हूँ यह मेरा दुःसाहस है। न तो मेरा किसी संस्था से सम्बन्ध है और न धन ही है। वेदभाष्य मेरी समझ में आता है अतः न लिखना कृतघ्नता है।

यदि मेरे पास पुस्तकालय तथा सब प्रकार की सुविधाएं होनी निश्चित कर दे तो मैं इस को पांच वर्ष में समाप्त कर देता। पर वर्तमान परिस्थिति में १५ वर्ष लगेंगे। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वेदभाष्य पर चार टीकाएं तीन भाषाओं में लिखी जावें।

(संस्कृत में)

मेरा अपना ऐसा विचार है कि वेदभाष्य की स्पष्ट टीका संस्कृत में ही लिखी जा सकती है। पण्डित लोग संस्कृत भाषा के द्वारा ही विषय अच्छी तरह समझते हैं और संस्कृत भाषा में ही समझाया जा सकता है। वेद पढ़ने वाले विद्यार्थी भी संस्कृत टीका के द्वारा ही पढ़ सकते है अतः मुख्यतया यह भाष्य संस्कृत में लिखा जा रहा है

(वर्तमान आर्यभाषा में)

जो लोग संस्कृत नहीं जानते उन्हें हिन्दी भाषा के द्वारा वेदार्थ समझाने के लिये हिन्दी भाषा में भी यह वेदभाष्य का टीका रहेगी। कोई भी व्यक्ति हिन्दी भाषा जानने वाला इस टीकाके द्वारा स्वामी जीके वेदभाष्य को समझ सकेगा।

(अंग्रेजी भाषा में)

ऋषि दयानन्द अपने वेदभाष्य का अंग्रेजी अनुवाद कराकर विदेश भेजना चाहते थे। पर जब वेदभाष्य समझ में ही नहीं आया तो अंग्रेजी अनुवाद कौन करे। अब स्पष्ट हुआ वेदभाष्य अंग्रेजी में भी अनुवाद कर दिया जावेगा। १—अन्वय, २—पदार्थ, ३—भावार्थ, ४—ऋषि देवता आदि पर पृथक् पृथक् टीकाएं लिखने का विचार है विस्तृत बयान अगले लेख में करूंगा।

राष्ट्रभाषा समस्या समाधान

(पृष्ट ७ का शेष)

विचार विषयक, विधान विषयक, आचार विचार परम्परा विषयक दासताओं को छप्पर बनाकर अपने ऊपर लादे रहने को ही अपना अहोभाग्य अनुभव किया है। नहीं तो ऐसा कौन अभागा भारतीय है कि जो यह न जानता हो कि सैकड़ों वर्षों से फारस और फारसी प्रचलित रहने के पश्चात् भी अन्त में ईरान और ईरानी बन गये, सियाम आज थियालैंड हो गया। इसी प्रकार अन्य जीवित राष्ट्रों ने अपनी-अपनी परम्पराओं को स्थापित रक्खा।

इस सब समुद्र मन्थन में हमको तो माननीय शिक्षा-मंत्री मौलाना अब्दुल-कलाम महोदय की बात हो सबसे अधिक महत्व की प्रतीत हुई, आपकी नेक राय में रोमन लिपि में हिंदुस्तानी भाषा राष्ट्र भाषा बनाई जानी चाहिये। श्री मौलाना साहेब की योग्यता और अनुभव अन्य सभी सज्जनों से विशिष्ट है, आपका जन्म मक्का शरीफ में हुआ। आपकी शिक्षा अधिक समय तक मिश्र के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र कैरो में हुई, आप जहाँ अरबी के एक प्रकाण्ड विद्वान् हैं, वहाँ राजनीति में राष्ट्रपिता महात्मा जी के अभिन्न हृदय साथी ही नहीं अपितु सात वर्ष पर्यन्त कांग्रेस महासभा के लगातार अध्यक्ष भी रहे हैं और अब भारत सरकार के सुविख्यात शिक्षा मंत्री हैं, इसलिये आपकी सम्मति का विशेष महत्व होना ही चाहिये। परन्तु खेद है कि विधान परिषद के विधाताओं ने आपकी सलाह मानी नहीं, परंतु इस प्रसंग में साधारण व्यक्ति यह नहीं समझ सका कि डेढ़ प्रतिशत अंग्रेजी जानने वालों की सुविधा के लिये १५ वर्ष तक अंग्रेजी और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अङ्कमाला या अंग्रेजी अङ्कमाला को साढ़े अट्ठानवे प्रतिशत जन संख्या पर आतंक पूर्ण भाषणों के बल पर और राष्ट्रपिता महात्मा की दुहाई दे देकर लादना कैसे न्यायसंगत माना गया। क्या इसी का नाम प्रजातंत्र या डिमाक्रेसी किसी अर्थ में हो सकता है।

मौ० आजाद साहेब की सलाह और इसी प्रकार उड़ीसा के गवर्नर श्री आसफअली साहेब की सम्मति के अनुसार रोमन लिपि सर्वश्रेष्ठ स्वीकार करना चाहिये। ऐसी अवस्था में क्या उक्त महानुभाव और उनके अनन्य भक्तगण अब यथा सम्भव शीघ्र अरबी फारसी लिपि को त्याग कर रोमनलिपि में अरबी, फारसी और उर्दू लिखना प्रारम्भ कर देंगे। क्योंकि इतनी सुन्दर और अन्त-

(शेष पृष्ट १० पर)

(तमाकू से आगे)

तम्बाकू और गन्ध

तम्बाकू का धुआं ही गन्ध नहीं फैलाता इसके तो पौदे से भी धसक आती है। इसके पौदे को पकाया नहीं जाता है। इसको पकने से पहिले ही काट कर हरा हरा ही सूखने से पहिले ही भूमि में गहरे गढे खोद कर दबा दिया जाता है। यह भीतर भूमि में सड़ जाता है। जब इसे निकाला जाता है और सुखाया जाता है उस समय की वायु का स्पर्श भगवान किसी को न करावे सब वायु इतनी खराब हो जाती है कि इसके पास खड़ा नहीं हुआ जाता है। उस समय मनुष्य बीमार हो जाते हैं। मुख पर पट्टी बाँध मनुष्य तम्बाकू को इकठा करते हैं।

तम्बाकू और कारखाने

तम्बाकू की खत्ती की गन्ध तो असह्य है ही। तम्बाकू से बीड़ी बनाने वाले कारखानों में मनुष्य पीले-पीले मेंढक से देखे गये हैं। उनमें से कठिनता से दश प्रतिशत ही बूढे होते होंगे नहीं तो पहिले ही अपनी जीवन लीला को समाप्त कर जाते हैं स्त्रियों की आयु तो आधी ही रह जाती है। एक डाक्टर का कहना है कि तम्बाकू के कारखाने के रोगियों को आराम होने मे अन्यों से द्विगुण समय लगता है। सुप्रसिद्ध डाक्टर विलियम पाद ने लिखा है कि 'जो लोग तम्बाकू के कारखाने मे काम करते हैं वह बहुत शीघ्र सस्त और उर: की बीमारियों में फस जाते हैं, और आराम कठिनता से ही हो पाता है।"

एक बार एक सिग्रेट के कारखाने से पचास मजदूर एक अचानक बीमारी के हो जाने से अस्पताल मे लाये गये। उनको सिग्रेट का अन्तिम फिनिश देते समय (जो उन्हें दांत और जीभ के द्वारा काम करना पड़ता है) सबको एक सा ही अछूत ज्वर हो गया।

आज देश में अन्न की कमी के कारण त्राहि त्राहि मची हुई है। सरकार को विदेशों से अन्न मगा कर आवश्यकता की पूर्ति करनी पड़ रही है। परन्तु इधर २० प्रतिशत अन्न कीटाणुओं और नाना बीमारियों के कारण नष्ट हो जाता है जो लगभग ८० लाख टन के होगा।

यदि किसी प्रकार यह बचाया जा सके तो भारत में अन्न की कमी न रहे और दूसरे देशों के सामने हमारी सरकार को हाथ न फैलाना पड़े।

८० लाख टन अन्न ही नहीं, अब फसलों में संक्रामक रोग लग जाता है

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(लेखक—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल मज्जर)

अथवा वर्षा नहीं होती तो राजाओं का राजा भारतीय किसान हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाता है। उदर की पूर्ति भी नहीं कर सकता, भूखे मरता है। वह दयनीय दशा पाषाण हृदय को भी पिघला देती है। सन् १६४३ ई० मे धान की फस्ल खराब हो जाने से बङ्गाल भूखों मर गया। बङ्गाल ने अपने लाखों रत्नों को इसकी भेंट कर दिया। कहा जाता है कि बङ्गाल के दुर्भिक्ष में ४० लाख व्यक्ति मर गये परन्तु अंग्रेज सरकार यह सब देखती रही। कुछ भी नहीं किया।

मध्य प्रांत में रतुआ लग गया तो २० लाख टन गेहूँ उत्पन्न ही न हुआ। कृषि नाशक, कीटाणु तम्बाकू के कारण भी होते हैं। इसकी गन्दी हवा में कीटाणु अवश्य पनपता है क्योंकि गन्दगी कीटाणु को जन्म देती है।

सौभाग्य की बात है कि इन कीटाणुओं को समूल नष्ट करने का सरकार प्रयत्न कर रही है। बम्बई में कीटनाशक धूम्रशालायें स्थापित करने के लिये पूरी पूरी व्यवस्था की जा चुकी है। इसी प्रकार कलकत्ता और मद्रास में भी की जायेगी। परन्तु जनता का सहयोग सर्वत्र अपेक्षित है। यह धूम्र शालायें प्राचीन काल मे यज्ञों और महा यज्ञों का ही विकृत रूप दिखाई देती हैं। प्राचीन समय में सैकड़ों और सहस्रों वर्ष तक चलने वाले बहुत बड़े बड़े यज्ञ होते थे। जिनसे रोगोत्पादक कीटाणु नष्ट हो जाते थे। नवीन सस्य के समागम पर नवसस्येष्टि इसी बात का द्योतक है। वर्षा भी जब चाहे तब हो जाती थी। यदि भारतीय जन प्रति दिन हवन करने लगें तो रोग के कीटाणुओं का नाम भी ढूँढे न मिले और वर्षा भी जब चाहें तब समय पर होने लगे।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में यज्ञ की महिमा का स्थान स्थान पर गुणगान किया गया है। प्राचीन समय में यह सार्वजनिक महत्व पूर्ण कार्य समझा जाता था। भारतीय महापुरुषों का जीवन यज्ञ मय होता था। योगेश्वर कृष्ण ने गीता में यज्ञ के महत्व को बड़े ही सुन्दर शब्दों में समझाया है। यज्ञ से वर्षा होती है। आज इस बात पर अङ्गुलि गण्य व्यक्ति भले ही विश्वास कर लें परन्तु साधारण विश्वास उठ गया है। भगवान ने गीता के तृतीय अध्याय में "अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भव ॥ अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं और मेघ से अन्न की उत्पत्ति होती है। यज्ञ से मेघ की उत्पत्ति होती है और यज्ञ की सिद्धि कर्म से होती है।

यह उपदेश कर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला है। भारतीय जन तो यज्ञ न कर तम्बाकू के धुंए से दुर्गन्ध फैलाते हैं। भगवान कृष्ण के भक्त कहलाने वालों के लिये यह लज्जा की बात है। हमारा जीवन यज्ञमय होना चाहिये।

हमारी सरकार जहां धूम्रशालाएँ स्थापित कर रही है वहां पर विशाल यज्ञों की व्यवस्था कराये और तम्बाकू की खेती पर रोक लगाये। इससे कृषि नाशक कीटाणु उत्पन्न होते हैं। तम्बाकू से भारी हानि पहुँची है। जनता सरकारी आदेश की प्रतीक्षा न करे तम्बाकू की खेती को बाद कर अन्न उपजाये तभी भूख मिट सकती है।

डाक्टर और तम्बाकू।

सुप्रसिद्ध डाक्टरों ने अनुभव के उपरान्त तम्बाकू को महा हानिकर बतलाया। एक प्रोफेसर साहब ने तो यहां तक कहा है कि "मैं तम्बाकू का नाम भी नहीं सुनना चाहता इस से न मनुष्य को लाभ होता है न पशु को। विपरीत इसके मनुष्य के शरीर मे सहस्रों रोग उत्पन्न कर देता है"।

तम्बाकू के सेवन से मनुष्य का रक्त अधिक पीला हो जाता है। मस्तिष्क शक्ति क्षीण हो जाती है। और अधिक परिमाण में प्रयोग किया जाये तो विष है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक दशा में हानिकर है। रक्त खराब, मस्तिष्क भारी, और हृदय दुर्बल हो जाता है। बाल नीली, रग और पट्ठे दुर्बल हो जाते हैं। स्वास लेने के स्थान में दाग पड़ जाते है—

—डा० जे एच. केलाग एम.डी

"तम्बाकू सेवन से, अपच, त्वचा के रोग और पागलपन भी देखा गया है। परन्तु यह बीमारियां गरीबों को अधिक परन्तु बलिष्ठ भोजन खाने से धनवानों को निर्धनों की अपेक्षा कम देखी गई हैं। और रक्त की गति में बाधा पड़ जाती है। जो लोग नेत्रों के रोग से परिचित हैं, वह भली प्रकार जानते हैं कि तम्बाकू नेत्र ज्योति के लिये विशेष कर हानिकर है। तम्बाकू सेवन से ऐसी बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं जिनका परिणाम अन्धापन होता है और उनका उपचार असाध्य हो जाता है

—डा० पलापथ

सुप्रसिद्ध डाक्टर कालो Kallo ने Man the marter Riece नाम की पुस्तक में लिखा है कि एक पौण्ड तम्बाकू में ३८० ग्रेन अत्यन्त घातक विष होता है। जिसका नाम Nicotine निकोटाइन है, यदि यह ३८० ग्रेन विष ३०० आदमियों का इस प्रकार खिला दिया जाय कि वह उनके उदरों के अन्दर पहुँच जाये तो सब के सब मनुष्य उस विष के प्रभाव से मर जायेंगे। इस विष के सम्बन्ध में अनेक परीक्षण किये गये। एक कुत्ता जिसके अन्दर यह विष पहुँचा दिया गया १० मिनट के भीतर मर गया। इसी प्रकार मक्खी और मेंढक तो केवल धुएं से ही मर गये।

तम्बाकू सेवन निस्सन्देह नवयुवकों और बालकों की शारीरिक वृद्धि के लिये महान् हानिकर है। लम्बाई चौडाई मोटाई और स्फूर्ति को भी कम करता है—

—डा० विलियम हेमण्ड

तम्बाकू का प्रभाव हृदय और मस्तिष्क दोनों पर बहुत बुरा पड़ता है— —डा० पटलू

निकोटीन जो तम्बाकू का सत (विष) है वह बहुत भयङ्कर विष है इसका एक बूंद भी आदमी को जान से मारने के लिये पर्याप्त है—

—डा० चरडसन

तम्बाकू मिर्गी रोग का भयङ्कर कारण है और विचित्र रोगों का मूल है —डा० हेग

पहिले साधारणतया समझा जाता था कि मिर्गी और सकतः रोगों का होना शराब के सेवन का परिणाम है। परन्तु अब इसमें किञ्चित भी सन्देह नहीं है कि यह सब तम्बाकू का ही परिणाम है—

—डा० अकगाह्रा सपूर

तम्बाकू हृदय और मस्तिष्क दोनों के लिये हानिकर है—

—डा० पेडक

तम्बाकू [illegible] और नवयुवकों के लिये हानिकर है—

डा० यदवानी

(क्रमशः)

वनिता विवेक

भारतीय महिला और आधुनिक नारी

[कमल साहित्यरत्न]

राष्ट्र की आधारशिला नारी अनन्त काल से सृष्टि निर्मात्री के प्रतिष्ठित पद पर आसीन है। वह जगदम्बा है। त्याग ममता और करुणा की शाश्वत प्रवाहित होने वाली त्रिवेणी है। नारी अनन्त रूपा है, इतिहास के पृष्ठ नारी के उज्ज्वल आदर्शों और बलिदानो से आवृत है। अन्नपूर्णा मां रमा बन उसने विश्व को प्रकाशित किया, जीवन दान दिया। जीवन के उषाकाल से ही भीषण झंझावातो को बीहड़ बन यातनाओं को भी उसने अपनी शक्ति से सहा। वह सदा त्याग और तपस्या की मूर्ति बनी रही।

आज भारतीय नारी कुछ उन्मादक मधुर किन्तु क्षणिक स्वप्नो में डूबती उतराती आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रही है ' प्रतीची के कालिमा ग्रसित प्रकाश की ओर जा रही हैं। प्राची के शुभ धवल प्रकाश को वह नहीं पहचान रही। वह अपने कुछ खोये हुये अधिकारों को, आदर्शों को प्राप्त करना चाहती हैं, पर विकृत रूप में। जिनको वह स्वय अपनी भूलों से बिसरा चुकी। वह प्रगति के नाम पर स्वयं छली जा रही है। उसने अपना मातृत्व, पतित्व, भगिनित्व एवं क्षत्रियत्व का रूप विलुप्त कर दिया। अपने पूर्वजों के आदर्श विस्मृत कर दिये। आवेश में आ तलाक बिल, कोड बिल एव भ्रातृ सहभाग की वह मांग कर बैठी। संसार चकित हो गया, समाज श्रृंखला विश्रृंखल हो गई नारी के इस विकृत रूप को देख कर। आज नारी ने विश्वविमुग्धकारी स्वगुणों को त्याग कर, कोमलता की प्रतिमूर्ति नारी ने विष बल्लरी पर चढ़ने का असफल प्रयास किया है।

ओ भारतीय नारी! पहचानो अपने को, समझो अपने स्वत्व को, उपयोग करो अपने आदर्श का। अपने विगत इतिहास के पृष्ठ पलट जाओ। भावनाओ की नदी में न बहो। तुम्हारे अन्दर वह शक्ति है जो मानव को मानव या दानव बना दे। तुममें राष्ट्र को उन्नत और अवनत करने की सामर्थ्य है। नारी का आदर्श था—

रे मन पिय पथ का विघ्न न बन।

और—

बस सिंदूर बिंदु से

मेरा जगा रहे यह भाल।

अपने पूज्य जनो के लिये अपने सर्वस्व का त्याग कर अनन्त काल तक अपने आराध्य की आराधना करना ही भारतीय नारी का आदर्श था।

स्वहित की कामना के साथ देश की कामना उनके हृदय में रहती थी। उनकी शक्ति निहित थी क्षत्राणी रूप में, पतियों, भाइयों और पुत्रों को समरांगण के लिये उत्साह देकर तैयार करना—

"स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,

प्रियतम को प्राणों के पण में।

हमीं भेज देती थीं रण में,

क्षात्र धर्म के नाते॥"

पुरुष नारी की इच्छाओं का सम्मान करता था। नारी जब हर्षित हो कर्तव्य पथ पर जाने को विदा करती थी, तब द्विगुण उत्साह से वह देश सेवार्थ तत्पर हो जाता था। क्या तुम भूल गईं कैकेयी ने महाराजा दशरथ को किस प्रकार युद्ध में सहायता दी। क्या उनमें अधिकारो की सुरक्षा न थी, क्या गृह की साम्राज्ञी बनने में अधिकार प्राप्त न थे। क्या तुम्हारे अधिकार न्यायालय की कुर्सी पर जज ही बनकर बैठने में सुरक्षित हैं। ममता की मूर्ति कैसे कठोरता की प्रतिमूर्ति बनेगी। आज तुम आदर्श भूल गईं वीर माता जीजीबाई के; सुभद्रा के, जो कोख से ही पुत्रोचित शिक्षा दिया करती थीं। सुगृहिणी बन कर गृहकार्य करती थीं और अवसर पड़ने पर रणचण्डी बन शत्रु-दमन भी करती थीं। कितना वैभवशाली और उन्नत था तब देश।

आज नारी चाहती है, पिता की सम्पत्ति में समानाधिकार। भ्रातृ-भगिनी के पावन स्नेह सूत्र को तोड़ने चली है। जब भाई विवाह के समय अपने दोनों हाथों से लाजा देते हुए यह आदेश करता है कि बहिन! तुम सदा इसी प्रकार इसी घर में ससम्मान आती रहो, और मुझसे मेरी सामर्थ्यानुसार सदा इसी प्रकार लेती रहो। इस पवित्र भावना को भूल आज नारी चाहती है आधा बाँटना। जो बहिन, भाई पर विपत्ति देख विह्वल हो उठती थी, भाई की रक्षा के लिये सर्वस्व त्यागने को उद्यत रहती थी, पति गृह अधिक दिन रहने से भ्रातृ दर्शनों को उत्सुक रहती थी, आज वही बहिन उसी गृह से सदा के लिए सम्बन्ध विच्छेद करने को प्रस्तुत है। कोमलता की प्रतिमूर्ति नारी आज रुद्र बन कर नन्दन विपिन से दूर सूखी पल्लव हीन डाली पर बैठना चाह रही है।

आदि काल से नारी केवल एक सुगृहिणी ही न रही, अपितु वाह्य क्षेत्र में एक आदर्श नागरिक भी। उसके बलिदान और त्याग भुलाये नहीं जा सकते। उसने अनेक अवसरों पर वीर रमणी बन कृपाण और कंकण भी धारण किये हैं। आज नारी विद्रोहिणी बन कर अधिकार स्वातन्त्र्य का कुछ अनुचित लाभ उठा कर अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मारने चली है। इसका परिणाम निरन्तर ध्वंस के अतिरिक्त कुछ न हो सकेगा। ऐसी स्थिति न नारी के लिए ही सुखकर होगी और न समाज के लिए सृजनात्मक तथा उन्नति प्रदायिका होगी। समाज भयभीत है आज की नारी की विद्रोहमयी रूक्षता से। आज रमणी अपनी शक्ति को नहीं पहचान रही। आज वह भावना लुप्त प्राय. हो गई है—

अब न हाथ में बजें चूड़िया,

और न पलक में पानी हो,

अबला जीवन अंगारों पर,

अंकित अमर कहानी हो।

और नारी का यह अमर घोष क्या कहीं अब सुनाई पड़ता है—

यदि हार गया तू रण से,

तो अपनी तलवार मुझे दे,

मैं रणचण्डी सी बन जाऊं,

ऐसा अधिकार मुझे दे।

आज समाज को आवश्यकता है, लक्ष्मीबाई, हाड़ारानी जैसी वीरांगनाओं की, गोपा, उर्मिला जैसी पतिव्रताओं की, मंदालसा मैत्रेयी जैसी आत्मवेत्ता विदुषियों की। नारी ने देश को एक नहीं अनेक अमूल्य रत्न दिये। नारी ने सदा अभिशापों को भी वरदान बनाया। अत भारतीय नारी! सचेत होओ। अभिशाप बनकर नहीं, वरदान बन कर रहो। प्राची की ओर लौटो, तभी पुन: भारतीय संस्कृति चमककर भूमंडल को प्रकाशित कर सकती है। प्रतीची में क्षणिक प्रकाश के पश्चात् केवल अन्धकार है।

(पृष्ठ ८ कालम चार का शेष)

राष्ट्रीय लिपि के स्थान पर उस लिपि की दासता अब क्यों अपने ऊपर लादी जाय कि जिसका व्यवहार प्राय: नहीं हो रहा है। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण आविष्कार के व्यवहार से अनेक कटु भावनाओं का सहज ही अन्त हो जायगा। और यदि इस नेक सलाह को पकिस्तान के शासक भी स्वीकार करलें, तो भारत और पाकिस्तान के मध्य और अधिक सौहार्द बढ़ने लगेगा। क्योंकि वहाँ उर्दू को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है, परन्तु लिपि फारसी ही अभी तक प्रचलित है। इस सलाह से लिपि संघर्ष भी समाप्त हो जायगा कि अब तक जिसके कारण व्यर्थ कटुता उत्पन्न होती रहती थी।

मौ० हसरत मोहानी साहेब संभवतः सबसे पुराने मुसलमान राजनीतिज्ञ नेता हैं। राष्ट्रीय, सम्प्रदायवादी, साम्यवादी आदि २ अनेकरूपों को अवसर के अनुरूप धारण करते रहने के कारण उनके अन्दर विरोध भावना का उद्रेक स्वाभाविक ही है। अस्तु राष्ट्रभाषा समस्या का समाधान हो गया।

आयुर्वेद अनुसन्धान में अणुशक्ति

अमरीका की अणुशक्ति कमीशन के डाक्टर शील्ड वारेन के कथनानुसार रेडियो प्रभावित तत्वों के उपयोग से आयुर्वेद में अनुसन्धान कार्य पूर्वापेक्षा सरल हो गया है।

इन नवीन अणु शक्तियों का प्रयोग करने में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता है लगभग १२१ पौंड रेडियम शुद्ध करने तथा प्रयोग करने में लगभग १०० व्यक्तियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा, परन्तु अणुशक्ति के विकास के द्वारा सैकड़ों टन रेडियम के बराबर रेडियो प्रभावित तत्वों के व्यवहार करने में केवल दो ही व्यक्तियों की हानि हुई। अणुवीक्षण यन्त्र की तरह चिकित्सा क्षेत्र में अणुशक्ति एक अत्यन्त आवश्यक साधन है।

संयुक्तप्रांत के भूतपूर्व शिक्षा-संचालक

श्री चुन्नीलाल साहनी के सम्मान में प्रीतिभोज

२४ सितम्बर सन् ४९ को संयुक्त प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा के कार्यालय (५ हिवेट रोड लखनऊ) में यू. पी. के भूतपूर्व शिक्षा-संचालक श्री चुन्नीलाल साहनी के सम्मान में उनकी सेवाओं से अवकाश ग्रहण करने पर प्रीतिभोज दिया गया। आपने इस पद पर रहते हुए शिक्षा-क्षेत्र में प्रान्त की जो अमूल्य सेवायें की हैं वह चिररमणीय रहेंगी। आपका समस्त परिवार उदार आर्य विचारों के लिये प्रसिद्ध ही है अपने कार्यकाल में आपने सदा आर्योचित दृष्टिकोण को महत्व दिया है। प्रीतिभोज में निम्नप्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे—श्री वा डी. सनाल सचालक लखनऊ म्यूनिसिपल बोर्ड, श्री विजयकृष्ण चौन जज, श्री मदनमोहन सेठ जज का. प्रधान सभा, प्रिन्सिपल महेन्द्र प्रताप शास्त्री, श्री जगन्नन्दनलाल जी एडवोकेट, श्री कुं. रणञ्जयसिंह जी अमेठा, श्री प० रामदत्त शुक्ल एम ए एडवोकेट, श्री केशवराम नारग, श्री धर्मपाल विद्यालंकार, श्री भृगुदत्त तिवारी एम ए. एल एल बी., आदि। मान० श्री चन्द्रभान गुप्ता तथा मान० श्री चौ० गिरधारीलाल जी ने अपनी शुभ कामनायें भेजी। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का निम्न पत्र प्राप्त हुआ।—

सेवा में—

श्री मन्त्री जी,

आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त,

लखनऊ

श्रीमन्नमस्ते।

श्री चुन्नीलाल जी साहनी भूत-पूर्व शिक्षा-संचालक युक्तप्रान्त के सम्मान में दी जाने वाली प्रीति भेंट का निमन्त्रण प्राप्त करके मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मेरी इच्छा थी कि सार्वदेशिक सभा की ओर से मैं इस अवसर पर स्वयं उपस्थित होकर चुन्नीलाल जी साहनी को उनके सफलता पूर्वक शिक्षा संचालन के लिये बधाई देता, परन्तु कई कारणों से मैं उपस्थित होने में असमर्थ हूँ अतः आपसे निवेदन है कि सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री आदर तथा साधुवाद का सन्देश श्री साहनी साहब तक पहुँचा दें। श्री साहनी साहब के संचालन कालमें जनता, विशेष कर आर्यसामाजिक संस्थाओं को जो विशेष लाभ हुए हैं उनके लिये हम सब लोग श्री साहनी साहब के अत्यन्त आभारी हैं। वे दिल्ली में तथा अजमेर और मेरवाड़ा में प्रान्तीय शिक्षा के संचालक रह चुके थे और उस काल में उन्होंने आर्यसामाजिक संस्थाओं की विशेष सहायता की थी।

मैं व्यक्तिगत रूप से और सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री साहनी जी के दीर्घ स्वास्थ्य तथा शान्तिमय जीवन के लिये शुभ कामना प्रगट करता हूँ।

भवदीय—

गंगाप्रसाद उपाध्याय

मन्त्री

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा से निम्न तार आया:—

सार्वदेशिक सभा श्री. चुन्नीलाल जी साहनी के शिक्षा क्षेत्र में सफल और गौरवपूर्ण कार्य की समाप्ति पर बधाई देती है और सार्वदेशिक सभा उनके दीर्घ और शांतिपूर्ण जीवन के लिए प्रार्थना करती है।

———

विजयदशमी का सन्देश

(पृष्ट ६ का शेष)

वाला है तो अन्तःकरण विषाद के सागर में डूबने का प्रयत्न नहीं करता। आदि कवि कितने सुन्दर शब्दों में उस दृश्य का चित्रण करते हैं—

आहूतस्याभिषेकाय,
विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य,
स्वल्पोऽप्याकार विभ्रम ॥

उनका यह वर्णन पढ कर साक्षात् गीता के स्थित प्रज्ञ का चित्र आंखों के सामने चित्रित हो उठता है। (एक तरफ राज्य को तृणवत् समझ कर ठुकराते हैं। 'अधिक मुझको नहीं है राज्य तृण से।' नाह भरते रामे वा, विशेष वोप लक्षये। मुझमें और भरत में कोई भेद नही, कह कर अपने त्याग का आदर्श पेश करते है दूसरी तरफ भरत भी राज्य को राम का ही अधिकार समझ कर चित्रकूट जा कर पुन राम को वापिस लाने के लिये साग्रह अनुनय विनय करते हैं। राज्य, राम और भरत के बीच में फुटबाल सा बना हुआ है। दोनों एक दूसरे की तरफ फेंकते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। कितना सुन्दर दृश्य है। भ्रातृ प्रेम और त्याग का कैसा मनोहर सम्मिश्रण है।

आज स्थिति इससे बिल्कुल विपरीत है। भाई छोटी छोटी सी जायदादों के लिये झगड़ते हैं। धन लिप्सा इतनी बढ गई है कि हर बात का महत्व आर्थिक दृष्टिकोण से ही नापा जाता है आर्थिक लाभ के लिये तो हिंसा, झूठ, चोरी सब उचित ही मानी जाती है। आज युद्ध होते हैं, अन्याय व अत्याचार के उन्मूलन के लिये नहीं, अपना स्वार्थ साधने के लिये। राज्य जीते जाते हैं धर्म स्थापना के लिये नहीं अपने राज्यों की पार्थिव सीमायें विस्तीर्ण करने के लिये। ऊपर से प्रजातंत्र और समानता का ढोल पीटा जाता है। मुख में राम बगल में छुरी वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। इस लिये विजय दशमी का [illegible] केवल रामलीलायें मनाने तथा कागजी रावण के जलाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिये। कागजी रावण का वध देश से अनाचार और अनीति का नाश नहीं कर सकता। रावण का अर्थ है 'रावयति सज्जनानिति रावण'। ब्लेक मार्केटिंग करके जनता को उपयोगी वस्तुओं का छिपा कर, जनता में भुखमरी और अकाल की सृष्टि करने वाले, महंगाई द्वारा कीमतें ऊँची करके मानव के जीवन को कष्टमय बनाने वाले व्यक्ति भी रावण से कुछ कम नहीं। [illegible] —तुच्छ लोभ के [illegible] को दुःख पहुंचाने की प्रवृत्ति [illegible] है। यही [illegible] चन का दलन करती है। [illegible] विजयदशमी का इस दीन हीन भारत के लिये अगर कोई सन्देश [illegible] स्वार्थ लिप्सा का दमन करना ही है। विजय-दशमी' के दिन ब्लेक मार्केटिंग के रावण का भस्म करने का संकल्प हृदय में धारण करना चाहिये। घर-घर के दीप के बजाय प्रेम के दीप जलाने का व्रत लें। फिर से राम और भरत की तरह भ्रातृ भाव को पनपाया जाय। यही विजयदशमी का अमर सन्देश है [illegible] का क्रियात्मक अनुष्ठान देश में फिर से राम राज्य की स्थापना कर सुख शान्ति तथा समृद्धि का स्रोत बहा सकता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।

———

उठो मातृ-पद-वन्दन कर लें

राष्ट्र सृजन उन्माद व्यथित उर का न सखे क्या पीड़ा हर ले।

आर्य जगत की निखिल धरोहर
दयानन्द की अभिलाषायें ?
कुचली जाती पग पग पर हैं
उठती उर में तीव्र व्यथायें।

ले दीक्षा संगठन मंत्र की शत्रु पक्ष की शक्ति परख ले।
उठो मातृ पद वन्दन कर ले॥

आज नहीं संस्कृति अपनी
बीज हमें वह बोना है।
धर्म व्रती है, यज्ञ व्रती है।
तुम को राष्ट्र-व्रती होना है।

आर्य-राष्ट्र निर्माण करेंगे यज्ञ-अनल सन्मुख व्रत धर ले।
उठो मातृ-पद वन्दन कर लें॥

यदपि अल्प, पर शक्ति पुंज हैं
निर्भय बढ़े, सिंह सम छूटे,
राष्ट्र यज्ञ में प्राणाहुति
देने विद्युत से हम टूटे।

बने आर्य साम्राज्य अखंडित, कहते नर नारी सब निकले।
उठो मातृ पद वन्दन कर लें॥

—"नीरव" उपाध्याय

विविध-समाचार

—ससेक्स स्थित ग्रामर स्कूल म बहरे छात्रों को बोलने के अभ्यास और ओठ से अर्थ समझने की ट्रेनिंग देकर उपयोगी जीवन के लिए तयार किया जा रहा है।

—ब्रिटेन मे स्कूलों के लिए अल्मुनियम की इमारते बनाई जा रही हैं और इस प्रका के तीन स्कूल ब्रिस्टल में खोले गए हैं। ये ससार प्रसिद्ध ब्रिस्टल वायुयान के निर्माताओं अर्थात् ब्रिस्टल एयरोप्लेन कम्पनी द्वारा बनाए गए हैं। इस प्रकार यह कम्पनी अपने युद्धकालीन अनुभव का इतना अच्छा उपयोग शातिकाल मे कर रही है। अभी से इसके पास १९२ स्कूलों के आर्डर आ गए हैं। ब्रिस्टल के ये स्कूल नौ महीनों में बनकर तैयार हुए थे।

भूमि में छेद करने के नवीन यंत्र का आविष्कार

उत्तरी पश्चिमी अमेरिका मे ग्राड कुली नामक बाध के निर्माण के समय ई० डी० रोड्स ने भूमि मे छेद करने के एक नवीन यत्र का आविष्कार किया। इसके फलस्वरूप उन्हे १००० डालर का पारितोषिक मिला है।

सघीय भूसुधार विभाग ऐसे सुझावों के लिये कामकाजियों को पारितोषिक दिया करता है। अमेरिका की सरकार की भूमि सुधार, विस्तृत सिंचाई और जल विद्युतीय योजनाओं में यह बाँध भी एक है।

बध निर्माण म भूमिस्थ जल प्रवाह की गहराई जाँचना अनिवार्य है। इससे पूर्व इस विधि पर अधिक व्यय होता था तथा कठिनाई का सामना करना पड़ता था क्योंकि भूमि की प्रत्येक तह पर ऐसे सैकड़ों छेद करने पड़ते थे।

छेद करने के इस नवीन यत्र से एक छेद करने मे ही भूमि की ८ तहों का पता लग जाता है। विशेषज्ञों का कथन है कि इस यत्र से बाध निर्माण में अधिक बचत हो सकेगी।

—अमेरिका मे लाखों महिलाएँ गृह प्रदर्शन क्लबों की सक्रिय सदस्या हैं। इन क्लबों का उद्देश्य स्वास्थ्य, सुविधा, आराम, सुन्दरता तथा घर और समाज में सन्तोषजनक सम्बन्धों को प्राप्त करने में परिवारों की सहायता करना है।

गृहणियों के लिये धुलाई क्लब

थेम्स नदी तट पर बसे किंग्सटन नगर की गृहणियों को पहले सप्ताह भर के मैले कपड़ों को धोने म घण्टों हाथ थकाने पड़ते थे, लेकिन अब इन्हें इस कार्य से चालीस मिनटों में छुट्टी मिल जाती है। ये गृहणिया एक धुलाई क्लब की सदस्यायें हैं, ऐसे अनेकों क्लब सारे ब्रिटेन में चालू हो चुके हैं। सदस्यता कार्ड रखने वाली हरेक स्त्री एक बन्द स्थान में रखी अनेक मशीनों मे से किसी एक को आवश्यकतानुसार प्रयुक्त कर सकती है मशीन की नाली मे एक शिलिंग डालने पर कपड़े धुल-सुख जाते हैं। ऐसी धुलाई दुकानों पर भी की जाती है।

वृद्ध स्त्रियों के लिये घर

लन्दन के केनसिंगटन नगर मे मकानों का एक ऐसा अहाता है, जहाँ पर हारी थकी तथा थोड़े से पैसों मे गुजारा करने वाली बूढ़ी स्त्रियों को पकाने के गैस चूल्हे सहित एक कमरे का मकान १५ शि० (१० रुपये) और गुसल खाने सहित दो कमरों का मकान २१ शि० (१८ रुपये) साप्ताहिक किराये पर मिल जाता है। एक प्राइवेट सगठन ने इन मकानों का प्रबन्ध किया है और पास ही मे बीमार स्त्रियों को भी निवास स्थान प्रदान किये जाते है, जिनकी देख रेख वहाँ रहने वाली एक शिक्षित नर्स किया करती है।

घरेलू ऋण

गृह निर्माण और ऋण दात्री समाजों ने अमरीका के आन्तरिक भाग मे १९४८ मे जो ऋण दिये हैं उनकी रकम ३,५०,००,००,००० डालर से अधिक पहुच गई है। आर्थिक सहायता देने वाली कम्पनिया की सेविंग और लौन लीग की रिपोर्ट से यह भी पता चला है कि नवीन गृह निर्माण के लिए १९४७ की अपेक्षा २० प्रतिशत अधिक दिया गया। इन समाजों को जो बचत की पूजी दी गई थी वह भी १९४७ की अपेक्षा १३ प्रतिशत अधिक थी।

चलते-फिरते डाक घर

अमरीका के डाक विभाग ने बसों द्वारा उन छोटे जिलों म डाक पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया है जहाँ कि रेल के द्वारा डाक आसानी से नहीं पहुँचाई जा सकती है। बड़े शहरों से ये बसें डाक लेती हैं। जब ये चल रही होती हैं उसी समय डाक छाँट ली जाती है और छोटे स्थानों के डाकखानों को दे दी जाती है।

एटम घड़ी

अमरीका मे अणुशक्ति चालित एक घड़ी प्रकाश में आई है, जो असाधारण तौर से ठीक समय बताती है। इसकी सबसे बड़ी कमी जो अभी तक मालूम हुई है वह २३० दिन में एक सेकण्ड का अन्तर है, किंतु इसके आविष्कारक वैज्ञानिक इसके कर्मकौशल को और अधिक उन्नत और यथार्थता बोधक करने के प्रयत्न में हैं और उनका कथन है कि ऐसी घड़ी बन सकेगी जो ३०० वर्षों मे केवल एक सेकण्ड का अन्तर बताए। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्य, ज्योतिष, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और इंजिनियरिंग आदि में ऐसी घड़ी की अत्यन्त आवश्यकता है। वर्त्तमान एटम घड़ी अमोनिया गैस के अणुओं की अन्तःस्थ सततगतिशील तथा अपरिवर्त्तनशील परमाणु कम्पनों के द्वारा नियन्त्रित की जाती है।

—आर्य समाज राजा मंडी आगरे का द्वितीय वार्षिकोत्सव ता० २१ से २५ अक्टूबर तदनुसार कार्तिक कृष्णा १५ से का शु ४ तक दीपावली के उत्सव के साथ २ मनाया जावेगा श्री स्वा. ज्ञानेन्द्र जी इस उत्सव पर अवश्य पधारें। मंत्री

—आर्ष गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटाके ब्रह्मचारी वानप्रस्थी तथा सन्यासी, श्री मान् ठा० खमान सिंह जी आर्य औरङ्गाबाद (अलीगढ़) के देहावसान पर शोक प्रकट करते हैं और विश्व-नियन्ता प्रभु से प्रार्थना करते है कि दिवङ्गत आत्मा को सद्गति तथा शोका-तुर परिवार को धैर्य प्रदान करें ॥

—१ ६-४९ बुधवार का सायकाल मुबारकपुर गोला बाजार में पण्डित शिवनारायणजी वेदपाठी का उपदेश तथा व्याख्यान हुआ। जनता प्रत्येक वर्ग तथा धर्म की पर्याप्त संख्या में उपस्थित थी और जनता में पर्याप्त उत्साह था।

—आर्यसमाज बीकानेर का वार्षिको-त्सव ता० २८ सितम्बर से ४ अक्तूबर तदनुसार ७ आश्विन से १३ आश्विन तक दशहरे के अवसर पर बड़े धूम धाम के साथ मनाया गया है। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी महोपदेशक तथा उत्तम, भजनीक पधारे यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी हुआ।

—लोहरदगा आर्यसमाज का १३ वा वार्षिकोत्सव श्री रायसाहब बलदव साहुजी के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ विगत २१, २२, २३ मई १९४९ में हुआ। स्व श्री शिवनन्दन जी तीर्थ श्री प० अयोध्याप्रसाद बी. ए. वैदिक रिसर्च स्कालर श्री प रुद्रदेवजी धनुर्वेदाचार्य, प्रो. सुरेन्द्रशुक्ला आदि पधारे थे। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा सभापति जी ने लोहरदगा शान्ति आश्रम को २०००) रुपये का दान दिया। समाज के प्रति आपका विशेष ध्यान रहता है।

—४-५-६-७ अक्तूबर को आर्य-समाज गुनावठा का रजतजयन्ती महोत्सव होना निश्चय हुआ है बड़े बड़े विद्वान पधार रहे हैं।

शुभ विवाह

पटने जिले के करौना निवासी स्व-र्गीय श्री महावीरसिंह जी की त्यक्त विधवा कन्या श्रीमती दिपिया देवी जिसका उद्धार जमालपुर ई आई. आर. स्टेशन पर किया गया था उसका पाणिग्रहण बारह-बंकी जिले के मुजफ्फरपुर ग्राम पो० भिलसर के श्री हरगोविंद उपाध्याय के साथ ता० १६ ४९ को आर्यसमाज जमालपुर में करा दिया गया। कार्य का श्रेय श्री भुवनेश्वरी सहाय और श्री शुकदेव चौधरी प्रधान मन्त्री आर्यसमाज जमालपुर को है।

—आर्य्यसमाज काशीपुर (नैनीताल) का वार्षिकोत्सव ता० ८ अक्तूबर से ११ अक्तूबर तक मनाया जावेगा स्वामी अमृतानन्द जी अवश्य पधारने की कृपा करेंगे।

शोक

आर्यसमाज बदायूं के सब आर्य पुरुष, अपने आदरणीय, वयोवृद्ध आर्य सभासद तथा उपप्रधान श्रीयुत बा० राजबहादुर जी भूतपूर्व पेशकार के निधन पर अत्यन्त शोकाकुल हैं। पेशकार साहब का आर्यसमाज के प्रति, प्रेम, लगन और उत्साह अनुकरणीय थे। उनके धर्म, प्रेम, सेवाभाव और सौम्य स्वभाव की स्मृति आर्य पुरुषों के लिये चिरस्मरणीय है। सब सभासद उनकी आर्यसामाजिक सेवाओं की सराहना और आदर करते हुए उनके परिवार के साथ समवेदना प्रगट करते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को परमशान्ति प्रदान करे।

गुरुकुल सूपा समाचार

गुरुकुल सूपा की रजत जयन्ती के प्रसंग से आचार्य चन्द्रकान्त जी वेद वाचस्पति तथा श्री प. श्रुतबन्धु जी प्रचारार्थ कलकत्ता, बिहार, उड़ीसा की तरफ गए हुए है। अहमदाबाद के श्री सेठ श्री प्रेमचंद भाई की प्रेरणा से गुरु कुल में बृहद्यज्ञ तथा सहभोज की योजना की गई थी। ३००) श्री प्रेमचंद भाई लाल की ओर से तथा २००) श्री केशवलाल पानाचन्द जी ओर से संस्था को दान में मिले है

—आर्य समाज शाहाबाद का वार्षिकोत्सव ता० १०, ११, १२ तथा १३ अक्टूबर सन् ४९ ई. को होने जा रहा है प. रघुनन्दन शर्मा भजनोपदेशक अपने पते से सूचित करें तथा इस उत्सव में सम्मलित भी हों।

स्वर्गीय श्री महेशलाल जी का देहावसान

आर्य जगत् ने श्री महेशलाल जी के देहान्त का समाचार अत्यन्त खेद के साथ सुना होगा। मुझे इस समाचार से जो दुःख हुआ वह मैं किस तरह व्यक्त करूं। ऐसे कर्मठ, उत्साही तथा श्रद्धालु व्यक्ति को भी नृशंस मृत्यु का शिकार होना पड़ सकता है ऐसा विश्वास करने को जी नहीं चाहता, परन्तु फिर सोचता हूँ कि यह प्राकृतिक नियम है। आदि सृष्टि से लेकर आज तक कोई इस नियम का अपवाद न बन सका। इसी को देख कर महाकवि कालिदास ने इस अमर सत्य को इन शब्दों में व्यक्त किया था।—

"मरणं प्रकृतिः शरीरिणां वि कृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।"

'मरण ही वास्तविक स्थिति है, जीवन तो एक विकृति है'

परन्तु इस सत्य को समझते हुये भी मनुष्य कभी २ ऐसी स्थिति में धीरज खो ही बैठता है।

श्री महेशलाल जी से मेरा बहुत पुराना तथा घनिष्ट परिचय था, ऐसे उदार तथा धार्मिक वृत्ति वाले व्यक्ति कम देखने में आते हैं। आप का समाज प्रेम अनुकरणीय था। आप बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के आजीवन सदस्य तथा अन्तरङ्ग सदस्य थे युक्तप्रांत के सामाजिक कार्यों में भी आपने यथा समय विशेष उत्साह से भाग लिया। आर्य मित्र पर आप की विशेष कृपा थी, मैं समझता हूँ कि वे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही जब से उन्हें कुछ २ ज्ञान हुआ तभी से आर्य मित्र पढ़ते थे। दैनिक आर्य मित्र के हिस्से लेकर भी उन्होंने औरों का उत्साह बढ़ाया। एक आप की मुख्य विशेषता अतिथि सत्कार की थी। इस कार्य में आप को विशेष हार्दिक उल्लास मिलता था। इसीलिये आप के यहां अतिथियों का आधिक्य ही रहता था। आप मनसा, वचसा, कर्मणा आर्य थे, आपने अपने पुत्र तथा पुत्री के विवाह जात पात के बन्धन को तोड़ कर गुण कर्मानुसार किये और इस तरह एक आदर्श व्यक्ति के रूप में सब का मार्ग प्रदर्शन करते रहे। आपके देहान्त से केवल बिहार ही नहीं अपितु आर्यजगत् की एक महान् क्षति हुई है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं दुःखी परिवार तथा आर्यजगत् को धैर्य प्रदान करे। उनकी आत्मा सदा आर्यों को प्रेरणा देती रहेगी।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री
मन्त्री आ प्र सभा यू पी

—

निर्वाचन

आर्य समाज कपसाड (मेरठ) चौ. महावीरसिंह जी प्रधान, बल-वन्तसिंहजी उपप्रधान महाशय हरी सिंहजी मंत्री, लाला भरतलालजी कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज जसपुर—प्रधान श्री रामयशपाल जी, मन्त्री—रामस्वरूप "मनहर" जी, कोषाध्यक्ष—अजुध्या प्रसाद जी।

—प्रलाद आर्य कुमार सभा— प्रधान—श्रीयुत प्रो० किशोरीलाल जी एम. ए. वि. शास्त्री। उपप्रधान— [illegible] उपाध्याय शास्त्री। मन्त्री यशपाल जी, उपमन्त्री—श्री गौरीगिरि जी, पुस्तकाध्यक्ष ओंकारप्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—रामस्वरूपजी, निरीक्षक—मूलचन्द्र जी वाचनालयाध्यक्ष—सुजानसिंह जी।

शोक

अत्यन्त दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि २० तारीख की रात में ९ बज कर ३५ मिनट पर एकाएक हृदय की गति बन्द हो जाने से श्री महेशलालजी आर्य का निधन हो गया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के आजीवन सदस्य अन्तरङ्ग सभा के सदस्य और प्रान्त के एक चोटी के आदर्श आर्य समाजी थे। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करे।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज टिटौटा बीरगाँव (बुलन्द शहर) श्री ठाकुर मान सिंह जी औरंगाबाद निवासी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा उनके परिवार को धैर्य प्रदान करे।

उक्त आर्य समाज आपके ही प्रयत्न से स्थापित हुई थी आप समाज स्थापना के बाद भी कई बार यहाँ पधारे और यहाँ की जनता को अपने अमूल्य उपदेशों से तृप्त किया।

अमर सिंह राघव मन्त्री

आर्यसमाज म्वांजा (अफ्रीका) में वैदिक धर्म-प्रचार

प्रसिद्ध आर्य-प्रचारक कवि ओराकर सिंहजी ८ अगस्त को म्वांजा आये जिससे सारे नगर में उत्साह की लहर दौड़ गई।

म्वांजा नगर, २६८२८ वर्ग मील में फैली हुई अफ्रीका देश की सब से बड़ी मीठे पानी की झील विक्टोरिया के दक्षिण तट पर बसा हुआ है। यह वहाँ का मुख्य नगर है। कविजी ने यहाँ संगीत व कविता के साथ आर्य संस्कृति, वैदिकधर्म, हिन्दू संगठन, प्राचीन इतिहास व स्वतंत्र भारत के ऊपर लगा तार १६ भाषण दिये। नगर के सभी नर नारियों से सभास्थल भर जाता था। म्वाजा नगर के इतिहास में एक आर्य भजनोपदेशक द्वारा प्रचार का यह पहला ही प्रसंग था।

म्वाजा से आप विक्टोरिया झील के तटवर्ती अन्य ग्रामों मुसोमा मिसुंग्वी, मसाका व बुकोबा में भी प्रचारार्थ गये और उन ग्रामों में प्रचार करके फिर म्वांजा आये। म्वांजा के नगर जनों की ओर से आर्य समाज म्वाजा ने आप के सम्मान में विदाई समारोह रक्खा व सम्मान पत्र भी अर्पण किया। यदि समय २ पर इस देश में योग्य प्रचारक आते रहें तो अपने धर्म व सभ्यता को भूलती हुई जनता का बड़ा उपकार हो।

आप यहाँ से डकरेवे द्वीप को जायेंगे और तब टांगानिका प्रदेश के अन्य ग्रामों में तथा फिर मारीशश जायेंगे। आर्यसमाज म्वाजा अपने इस नवयुवक व प्रतिभाशाली प्रचारक की पूर्ण सफलता की कामना करता है।

नरसिंहदास

मन्त्री आर्यसमाज म्वांजा

(अफ्रीका)

नागौर में वेद-सप्ताह

सदा की भाँति इस वर्ष भी आर्य-समाज, नागौर, में वेद-प्रचार सप्ताह ता० ८ से ता० १७ अगस्त तक मनाया गया, जिसमें समाज के प्रधान पं० सुन्दर लालजी त्रिपाठी द्वारा कथा एवं उपदेश होते रहे। इस अवसर पर संगीत सुधाकर वैदिक-धर्म विशारद भारतीय कला मंदिर अजमेर के संचालक श्री प० पन्नालाल जी "पीयूष" के भी मधुर भजनोपदेश हुए। ता० १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जयन्ती महोत्सव भी समारोह पूर्वक मनाये गये।

—ता० १८-९-४९ को काशी आर्य-समाज के साप्ताहिक अधिवेशन की सार्वजनिक सभा में सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ। उसकी एक २ प्रति भूतपूर्व शिक्षा संचालक महोदय संयुक्तप्रांत तथा वर्तमान शिक्षा संचालक महोदय संयुक्त प्रांत और माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय संयुक्त प्रांत के पास भेजी गई।

प्रस्ताव

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस के दर्शन विषयक प्रधान पद पर ता० १०-९-४९ को जो श्री प० देवदत्त शर्मोपाध्याय आचार्य जी की नियुक्ति की है। इसके लिये यह सभा गवर्नमेंट को अनेकश धन्यवाद देती है। क्योंकि ऐसी निष्पक्ष न्यायोचित नियुक्तियों से ही कालेज और संस्कृत शिक्षा के गौरव की रक्षा हो सकती है। उक्त पं० जी दर्शन आदि कतिपय विषयों के पूर्ण विद्वान् एवं चरित्रवान् व्यक्ति हैं। काशी की उच्च पण्डित मण्डली एवं शिक्षित जनता में इस नियुक्ति से बड़ी प्रसन्नता है।

—इसी विषयक एक प्रस्ताव गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज के छात्रों ने भी पास किया जो निम्न प्रकार है:—

सांप्रदायिक जातिगत विद्वेष की भावना से प्रेरित होकर गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज की छात्र परिषद् के ८,१० छात्रों ने सकुचित मनोवृत्ति के आधार पर एक अध्यापक महोदय को जो कि न तो दर्शनों की कोई परीक्षा ही पास है, और न दर्शनों की गद्दी से उनका कोई सम्बन्ध ही है, उनको नियुक्त कराने की इच्छा से बिना किसी को सूचना दिये तथा बिना किसी की आज्ञा से ता० १७,९,४९ को प्रच्छन्न रूप से गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल महोदय के कमरे में उनकी अनुपस्थिति में अचानक सभा कर गवर्नमेन्ट द्वारा हाल में ही की हुई नियुक्ति के विरोध में जो प्रस्ताव किया है। जो कि रूपान्तर से 'सन्मार्ग' में छप भी चुका है, इसी छात्र परिषद् के हम छात्र इस प्रस्ताव को सर्वथा विरोध करते है, और इस निष्पक्ष प्रससनीय नियुक्ति के लिये गवर्नमेन्ट को अनेक धन्यवाद देते हैं। क्योंकि ऐसी नियुक्तियों से ही संस्कृत शिक्षा तथा इस कालेज का भविष्य उज्वल हो सकता है, आशा है कि सरकार उपर्युक्त सांप्रदायिक भावनाओं पर ध्यान न देगी।

छात्रगण

गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज

बनारस

ट्रावनकोर रियासत में शुद्धि

प० वेद बन्धु तथा उनके सहयोगी अन्य प्रचारकों के प्रयत्न से रियासत ट्रावनकोर में ८१७ ईसाइयों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में सम्मिलित किया गया है। रियासत में लाखों हिन्दू ईसाई बन चुके हैं। आश्चर्य की बात यह है कि रियासत हिन्दू है। हिंदू हैं भी बहु सख्या में, परन्तु वह ईसाईयत की बाढ़ को रोकते नहीं हैं। उन्हें ईसाई बनते देखते रहते हैं। हिंद यूनियन के हिंदुओं का कर्तव्य है कि २५ लाख हिंदुओं को को जो रियासत में ईसाई बन चुके हैं पुनः हिंदू धर्म में लाने का प्रयत्न करें। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन मिलकर इस प्रांत में कार्य कर रहे हैं, परन्तु हमारे साधन अत्यन्त सीमित हैं।

देवीचन्द

प्रधान मिशन

आर्यावर्तीय आर्य बौद्ध संघ

सर्व आर्य बन्धुओं को विदित हो कि बुद्धपुरी (कानपुर) में वेद, उपनिषत्, गीता और धर्मपद के तुलनात्मक अध्यापन का प्रबन्ध आर्यावर्तीय आर्य बौद्ध संघ के तत्वावधान में होगया है। सर्व शास्त्र विशारद प त्रियुगी नारायण जी शास्त्री साहित्यरत्न विशेषरूप से परिश्रम करते हैं। कुंवर कान्तिवीर जी गुप्त ने (संरक्षक) पद स्वीकार कर लिया है। सुयोग्य विद्यार्थियों को लाभ उठाना चाहिये।

आचार्य मेधार्थी विद्यालंकार

प्रधान

आर्य समाज बाराबंकी

आ. स. बाराबंकी का वार्षिकोत्सव २२-२३-२४ तथा २५ अक्तूबर को समारोह के साथ मनाया जायगा। इस अवसर पर सुयोग्य विद्वान तथा प्रचारक पधार रहे हैं। २२ ता० को नगर कीर्तन निकलेगा।

—इन्दौर की ओर से महोपदेशक पंडित आत्माराम जी और सनावद आर्यसमाज के मन्त्री पंडित भगवतदास जी आर्य का तीन दिन तक बकवाहा में प्रचार हुआ फल स्वरूप आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये।

(१) श्री बद्रीलाल जी विजय वर्गीय अध्यक्ष, (२) श्री चन्दुलाल चुन्नीलाल जी गर्ग उपाध्याय (३) सुखलाल मगनाम जो मन्त्री (४) पन्नालाल विजय. वर्गीय उपमन्त्री।

महिलाओं की भीड़ ने चीनी गोदाम को घेर लिया

बम्बई, २८ सितम्बर। आज यहाँ के चीनी बाजार में चीनी गोदाम को लगभग २०० महिलाओं ने घेर लिया। बिना चीनी लिये वे वहां से हटने को तैयार नहीं थी। वहीं पर अनेक दुकानों पर जमा और सड़कों पर चीनी की तलाश में घूमने वाले और लोग भी महिलाओं के इस झुंड में शामिल हो गये। दोपहर में लच के लिए गोदाम के कर्मचारी लोग दफ्तर से बाहर नहीं निकल सके।

इसी बीच में सड़क पर, जबकि ठेले पर चीनी का एक बोरा लादा जा रहा था तो भीड़ ने उस बोरे को जबर्दस्ती छीन लिया और खोलकर आपस में सबने उसकी चीनी बाट ली।

शरीर के भीतर हजारों का सोना मिला

बम्बई, २८ सितम्बर। बम्बई में फारस की खाड़ी से आज ही आये हुए ४ अरबों के शरीर से ३६ हजार रुपये का सोना बरामद हुआ। कहा जाता है कि सोने के टुकड़े अरबों के शरीर में गले से पेट में खाना पहुँचाने वाली नाली के बिलकुल नीचे के भाग में पाये गये। सोना बरामद होने के पूर्व अरबों की एक्सरे परीक्षा की गयी।

इसी प्रकार बम्बई में सोमवार को भी ४० अरबों के शरीर के भीतरी भाग से ८ लाख का सोना मिला था।

सुरक्षा समिति के चुनाव में अमरीका किसका समर्थन करेगा

लेकसक्सेस, २८ सितम्बर। अमरीका के एक अधिकृत सूत्र से मालूम हुआ है कि अमरीकी सरकार ने तय किया है कि वह सुरक्षासमिति के सदस्योंके चुनाव में रूस द्वारा खड़े किये सदस्य जैकोस्लोवाकिया के मुकाबले में यूगोस्लाविया का समर्थन करेगा।

अधिकृत रूप से यह भी मालूम हुआ है कि कनाडा द्वारा रिक्त किये जाने वाले स्थान के लिये अमरीका भारत का समर्थन करेगा।

कम्युनिस्ट चीन की राजधानी पीपिंग होगी

हांगकांग, २७ सितम्बर। चीन में पीपिंग स्थित कम्युनिस्ट रेडियो ने घोषणा की है कि चीन की कम्युनिस्ट जनतन्त्र सरकार की राजधानी, चीन की प्राचीन राजधानी पीपिंग होगी। इसका नाम बदल कर फिर से वही पुराना नाम अर्थात् पेकिंग रखा जायगा।

उत्सव

—आर्य समाज शहसवान का १९ वां वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ व १२ अक्टूबर तदनुसार कार्तिक कृष्ण २, ३, ४ व ५ को होगा।

—"आर्य्य समाज रायबरेली का वार्षिकोत्सव ता० १३, १४, १५ तथा १६ नवम्बर सन् १९४९ ई० को होगा- नगर कीर्तन ता० १३ नवम्बर को होगा।"

—आ० स० रूड़की का वार्षिकोत्सव २०, २१, २२, २३ अक्टूबर ४९ ई० को समारोह पूर्वक मनाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर प्रसिद्ध २ विद्वान् साधु सन्यासियों को निमंत्रित किया गया है।

संयुक्त राष्ट्रों के अफसर का विश्वासघात

श्रीनगर, २९ सितम्बर। कश्मीर ने आज भारत सरकार को एक आवश्यक पत्र भेज कर मांग की है कि भारत राष्ट्रसंघ में तत्काल ही इसकी शिकायत करे कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एक उच्च अफसर अमूल्य वस्तुओं से भरे हुए ७ बक्से रावलपिंडी उठा ले गये हैं।

ये सातों बक्से श्रीनगर के लायड बैंक में जमा थे। इन्हें कल राष्ट्रसंघ के एक विशेष विमान में रावलपिंडी पहुंचाया गया। ये बक्से सरदार तथा बेगम अफरीदी के थे जो आजकल कश्मीर सरकार के विरुद्ध विद्रोही 'आजाद फौज' को सहायता कर रहे हैं। कहा जाता है कि राज्य सरकार की बिना आज्ञा प्राप्त किए बक्सों को ले जाया गया है। यह घटना भारत और पाकिस्तान के बीच हुई निष्क्रांत सम्पत्ति समझौते के विरुद्ध है। ज्ञात हुआ है कि कश्मीर कमीशन के फौजी सलाहकार जनरल डेलवाय ने अपना उपर्युक्त दोष स्वीकार भी कर लिया है।

रूस द्वारा यूगोस्लाविया से संधि भंग

लन्दन, २९ सितम्बर। यहाँ पर मास्को रेडियो की घोषणा करते हुए सुना गया है कि सोवियट रूस ने गत १९४५ में यूगोस्लाविया से की गयी मित्रता तथा सहयोग की संधि को भंग कर दिया है।

रूसी घोषणा में इसका कारण यह बताया गया है कि यूगोस्लाविया ने संधि की शर्तों को बराबर तोड़ा है और रूसी सरकार और अधिकारियों को उखाड़ फेंकने की बराबर कोशिश की है और जैसा कि अभी हाल में बुडापेस्ट में हुए राजद्रोह के मुकदमे में वहाँ के भूतपूर्व वैदेशिक मन्त्री के बयानों से ज्ञात हुआ है कि यूगोस्लाविया ने रूस के विरुद्ध अत्यन्त शत्रुता पूर्ण विध्वंसक कार्रवाइयाँ की हैं और दिखलाने में केवल दोस्ती का दावा किया है।

२७ फीट सुरंग खोद कर कम्युनिस्ट कैदी भाग गये

अम्बाला, २८ सितम्बर। पूर्वी पंजाब के लुधियाना जिला जेल से विगत रविवार की रात को तीन कम्युनिस्ट नजरबन्द कैदी निकल भागे।

उक्त सूचना अधिकारी सूत्र से मिली है। यह भी बताया गया है कि नजरबन्दों ने अपनी कोठरियों से जेल के बाहर तक एक २७ फीट लंबी और ६ फीट गहरी सुरंग खोद ली थी। इसी सुरंग में होकर वे कैदी रात्रि के अन्धकार में अन्तर्धान हो गये।

इस सुरंग के बनने में कम से कम एक महीना समय लगा होगा।

सशस्त्र पुलिस सरगर्मी से खोज कर रही है पर अब तक नजरबन्दों का सुराग नहीं लग सका।

सौराष्ट्र और केन्द्र के आर्थिक विभाग मिला दिये जायेंगे

नयी दिल्ली, २ अक्टूबर। सौराष्ट्र सरकार और केन्द्रीय भारत सरकार के बीच आज एक समझौता हो गया है, जिसके अन्तर्गत आगामी पहली अप्रैल १९५० से सौराष्ट्र रियासती संघ के पूरे आर्थिक विभाग को केन्द्रीय सरकार के आर्थिक विभाग से मिला दिया जायगा। इस बीच में आय के जो-जो विषय केन्द्र के अधीन हैं, उन्हें इस तिथि से पूर्व ही केन्द्र अपने हाथ में ले सकता है, लेकिन इसकी वसूली की व्यवस्था की जिम्मेदारी संघ सरकार को ही होगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ में च्यांग सरकार की शिकायत

लेकसक्सेस, ३ अक्टूबर। संयुक्त राष्ट्र संघ जनरल असेम्बली की राजनीतिक समिति ने चीन (च्यांग) सरकार की यह अपील ठुकरा दी कि उसकी रूस के विरुद्ध शिकायत को प्राथमिकता दी जाय। चीन की शिकायत को कार्य सूची में पांचवां स्थान दिया गया है।

भारत का ब्रिटेन से आयात बढ़ा, निर्यात घटा

लन्दन, ३ अक्टूबर। यहाँ की वार्षिक व्यापारिक रिपोर्ट में बताया गया है कि सन् ४८ में ब्रिटेन ने भारत से ९,९२६,६००० पौंड का माल मंगाया और ९,६६,२१००० पौंड का माल भारत भेजा।

भारत सरकार द्वारा कम्युनिस्टों की कार्यवाहियोंका महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन

नयी दिल्ली, २९ सितम्बर। केन्द्रीय भारत सरकार ने आज भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध सरकारी तौर पर एक 'अभियोगपत्र' (चार्जशीट) प्रकाशित किया। अभियोगपत्र गृह सचिवालय की ओर से प्रकाशित एक ७२ पृष्ठों वाली पुस्तिका के रूप में है जिसका शीर्षक है 'भारत में कम्यूनिस्टों की हिंसात्मक कार्रवाइयां'।

उक्त पुस्तिका में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित या गुप्त रूप से सदस्यों के पास से पाये कागजात से उद्धरण देते हुए सिद्ध किया गया है कि 'कम्युनिस्टों ने बड़े पैमाने पर हिंसात्मक कार्रवाइयों के प्रचार स्वयं का आयोजन किया था। साथ में सरकार ने यह घोषणा भी की है कि वह 'अराजकता के दमन के लिए कृत संकल्प है'।

पुस्तिका में कहा गया है—'भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी जनवादी अधिकारों और नागरिक आजादी के दमन का नाम लेकर सरकार की आलोचना करते कभी थकती नहीं है पर अपने जबानी और लिखित प्रचार तथा खुली कार्रवाइयों द्वारा उन्होंने एक दम स्पष्ट कर दिया है कि उनकी राय में अधिकार और आजादी का मतलब यह नहीं है कि उन्हें हत्या, अङ्गभङ्ग आगजनी और तोड़ फोड़ करने तक का हक हो और राज्य तथा जनता को उन्हें रोकने या उनका विरोध करने का भी हक न हो स्पष्ट है कि यह स्थिति यदि सरकार स्वीकार कर ले तो उसे बनी रहने का अधिकार नहीं है। अतः सरकार हिंसा का दमन करने में जनता से मदद करने की अपील करती है।

कम्यूनिस्टों द्वारा कैन्टन पर चढ़ाई की तैयारी

कैन्टन, २ अक्तूबर। कम्यूनिस्ट सेनापति जनरल चनकेंग ने अपनी ३० हजार फौजें चीन के दक्षिणी प्रांत क्वांग्तुंगकी, जिसमें कैन्टन में चीन सरकार ने अपनी राजधानी बनायी है, सीमा के अन्दर बढ़ा दी।

सरकार सैनिक सम्वाद समिति ने सूचना दी है कि कम्यूनिस्ट जनरल लोनोगाओं ने घोषणा की है कि वे आगामी कुछ ही दिनों में कैन्टन पर चढ़ाई आरम्भ कर देंगे।

शंघाई और हांगकांग में कम्युनिस्ट झण्डे फहराये गये

शंघाई, २ अक्तूबर। आज सरकारी तौर पर यहां नये कम्युनिस्ट जनतन्त्र की पताका, हर भवन, दफ्तर और बस्ती पर फहराई गयी। बड़ी-बड़ी सड़कों पर भीड़ों की भीड़ें कम्युनिस्ट गीत गाती घूमी। जगह-जगह पर कम्युनिस्ट नेता माओत्सेतुंग के चित्र लगाये गये।

पीकिंग में कम्युनिस्ट सरकार की स्थापना की घोषणा के साथ-साथ, प्रथम बार कल हांगकांग के ब्रिटिश उपनिवेश में कम्युनिस्ट झण्डे फहराये गये। मजदूर बस्तियों और कारखानों के मजदूरों में कागज पर बने कम्युनिस्ट झण्डे बाँटे गये।

भारतीय सोशलिस्टों द्वारा चीन की कम्यूनिस्ट सरकार का स्वागत

बंगलोर, २ अक्तूबर। भारतीय सोशलिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कार्यकारिणी ने आज चीन में माओत्सेतुंग के नेतृत्व में नयी कम्यूनिस्ट सरकार की स्थापना का स्वागत किया।

पार्टी ने आगे चल कर यह भी राय प्रकट की कि भारत सरकार को इस नयी सरकार को मान्यता प्रदान कर देनी चाहिए और उससे राजनीतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापन करने चाहिए

जनरल डेलवोइ पदत्याग करेंगे

श्रीनगर, २ अक्तूबर। संयुक्त राष्ट्रीय कश्मीर के फौजी सलाहकार जनरल मारिस डेलवोइ कल श्रीनगर से नयी दिल्ली आगये।

सरकारी क्षेत्रों का अनुमान है कि जनरल मारिस फौजी सलाहकार का पदस्वय छोड़ देंगे।
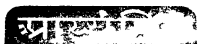
सोशलिस्ट एक गाव में भी समाजवादी व्यवस्था करके दिखायें

मालमंत्री ठाकुर हुकुमसिंह की समाजवादियों को चुनौती "समन" की मांगों का उत्तर

लखनऊ २६ नवम्बर। सोशलिस्ट पार्टी ने किसान प्रदर्शन के साथ अपनी मांगो का जो पर्चा कौंसिल भवन पर चिपकाया था उन मांगों का क्रमशः उत्तर देते हुये प्रांत के माल मन्त्री ठा० हुकुमसिंह ने सोशलिस्ट पार्टी को यह जवाबी चुनौती दी है कि सोशलिस्ट किसी एक गाव को चुन लें और उस गाव के काश्तकारों को इस बात के लिये राजी कर लें कि वे समानता के आधार पर सारी भूमि को गावों में बसने वालों में तकसीम करने के लिये छोड़ देंगे। सरकार इस उदाहरण का सहर्ष अनुकरण करेगी और इस योजना को प्रान्त के शेष भाग में लागू कर देगी।

आपने कहा कि जमींदारी उन्मूलन योजना पूरी करने में सरकार शीघ्रता से काम कर रही है और इसमें देर न होने देगी।

सोशलिस्ट पार्टी ने यह सुझाव रखा है कि जोतों की चकबन्दी होनी चाहिये। किसान यह पसन्द नहीं करेंगे कि यह चीज उन पर जबर्दस्ती लादी जाय। जब कभी इस सम्बन्ध में कार्रवाई की गई किसानों ने इसका विरोध किया और उसे रोकना पड़ा है। इसीलिये इस बिल में यह व्यवस्था की गयी है कि यह काम गाव पंचायतों द्वारा किया जाय ताकि पारस्परिक समझौते से यह काम किसान स्वयं करें।

सोशलिस्टों की इस मांग का कि तीन प्राणियों के परिवार में १२॥ एकड़ भूमि के हिसाब से भूमि का बटवारा किया जाय, जवाब देते हुये चौधरी साहब ने बताया कि प्रान्त में हिमालय से लेकर मध्य भारत तक यदि सारी भूमि भी कृषि योग्य बना ली जाय तो भी ३॥ एकड़ भूमि प्रति परिवार का हिसाब नहीं आता है।

सहकारिता के सबंध में आपने कहा कि हम स्वयं सहकारिता के पक्षपाती हैं, इस समय प्रांत में ३५००० सहकारी समितियां हैं जिनमें १५००० बहुधन्धी हैं। इनकी कुल सदस्य संख्या ३५ लाख है। ६५० बीज स्टोर हैं जिनके जरिये १९४८—४९ में ११ लाख मन बीज बाट गया है।

परती भूमि को खेती के योग्य बनाने के सम्बन्ध में सक्रिय है १९४७—४८ में २८००० एकड़ और १९४८—४९ में ४२००० एकड़ परती भूमि कृषि योग्य बनाई जा चुकी है। ४९-५० तथा ५०-५१ में क्रमशः ८३ हजार और ९० हजार एकड़ भूमि और कृषि योग्य बनाई जायगी। अभी तक ऐसी भूमि पर १००० परिवार बसाये जा चुके हैं।

२ हजार कुयें बन चुके हैं, ६००० बन रहे हैं और १२००० हजार और बनेंगे। हमारा ध्येय ४० हजार कुयें बनने का है। ५० ५१ तक १००० ट्यूबवेल बनाये जायगे।

मुआवजे का प्रश्न

विगत चुनावों में सोशलिस्टों ने समुचित मुआवजा देकर जमींदारी उन्मूलन का वादा किया था, तो अब वे यह कैसे कह सकते हैं कि जमींदारों को कोई भी मुआवजा न दिया जाय सोशलिस्ट कहते हैं कि किसी भी जमींदार को एक लाख से अधिक मुआवजा न दिया जाय। इस समय जो रकम दी जा रही है उसके हिसाब से सम्पूर्ण प्रान्त के लिए कुल अनुमान केवल १२५ लाख रुपया होगा। यह अतिरिक्त रकम प्रति बीघा एक आने से भी कम पड़ेगा। क्या यह भार बहुत बड़ा है? सोशलिस्टों की योजना के अनुसार भी काश्तकारों को जमींदारी के उन्मूलन करने पर रुपया तो देना ही पड़ता।

सोशलिस्ट पार्टी ने यह भी सुझाव दिया है कि किसी को ३० एकड़ से अधिक भूमि पर खेती न मिले। सरकार किसी भी काश्तकार को उसकी जोत के किसी भी हिस्से से चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, तब तक बेदखल न करेगी जब तक वे स्वयं अपनी जोतों का जायद हिस्सा छोड़ने की इच्छा न प्रगट करें। यदि सोशलिस्ट लोग [illegible] बड़े काश्तकारों को राजी कर सकते हैं तो सरकार जायद भूमि को जरूरतमन्दों में बांटने के प्रश्न पर विचार करेगी।

विदेशों से पूंजी लगाने के लिए प्रार्थनापत्र आये

पार्लमेन्ट में उद्योग मन्त्री का वक्तव्य

नयी दिल्ली, २८ नवम्बर। उद्योग मन्त्री डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने आज पार्लामेंट में भी प्रश्न के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विदेशी पूँजी को आमन्त्रित करने के लिए प्रधान मन्त्री ने जो घोषणा की थी उसके बाद से अब तक विदेशों से पूँजी लगाने के लिए ५९ आवेदन पत्र आये हैं।

इनसे एक करोड़ तिरासी लाख रुपये की पूँजी लगाने की स्वीकृति देदी गया है। यह पूंजी अधिकांश ब्रिटिश व्यापारियों की है जो बिजली, रेडियो, बनस्पति, कागज, हाथी दांत का सामान, चमड़े की वस्तुएँ, खेल का सामान आदि चीजों के कारखाने खोलने में लगाई जायगी।

उद्योग मन्त्री ने कहा कि पूंजी की आमतौरपर ये शर्तें हैं—(१) कारखानों में अधिकांश भारतीय पूंजी तथा (२) भारतीय प्रबन्ध हो, (३) विदेशी टेकनीशियन भारतीय टेकनीशियनों को शिक्षित करें ताकि आगे चलकर भारतीय टेकनीशियन विदेशियों का स्थान ग्रहण कर सकें।

उद्योग मन्त्री ने कहा कि इस योजना को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने में तीन से पॉच वर्ष का समय लग सकता है।

डाक्टर मुकर्जी ने यह भी कहा कि विदेशी फर्मों ने इस सम्बन्ध में पूछताछ की है और इस बात के लिए वार्ता चल रही है कि यथा शक्ति उन्हें सहायता दी जायगी।

सन् ५१ के बाद गल्ला न मंगाने का निर्णय अटल—नेहरू जी

नई दिल्ली, २८ नवम्बर। आज नयी दिल्ली में आरम्भ हुये प्रान्तों और राज्यों के कृषि अधिकारियों के सम्मेलन में प्रधान मन्त्री ने घोषणा की कि मैं यह साफ साफ कह देना चाहता हूँ कि चाहे तूफान आये या भूकंप हो हम १९५१ के बाद विदेशों से गल्ला मंगाने के अपने निर्णय को पूरा करके रहेंगे।

फिलिपाइन के फूल गाँधी जी की समाधि पर

नयी दिल्ली, २८ नवम्बर। दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के लिये फिलिपाइन्स के राजदूत श्री लोरेंजो बाटिस्टा ने आज फिलिपाइन के प्रेसिडेंट क्विरिनो की ओर से फिलिपाइन में पैदा होने वाले फूलों की एक माला तथा फिलिपाइन विश्वविद्यालय की ओर से एक दूसरी माला महात्मा गाँधी की समाधि पर चढ़ायी।

मालाएं चढ़ाते हुये आपने गाँधी जी को सम्बोधित कर कहा कि "आपकी आत्मा फिलिपाइन की जनता का पथ निर्देशन करे ताकि वे विश्वशान्ति की स्थापना के कार्य को पूरा करने में योग दे सकें।

आपने कहा कि ये पुष्प मालायें फिलिपाइनी जनता की महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों के प्रति आस्था की प्रतीक हैं।

बालिग मतदाताओं की सूची २०० गज मोटा ग्रन्थ होगा

नई दिल्ली, २९ नवम्बर। विधान परिषद् के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद ने बताया कि बालिग मताधिकार के अन्तर्गत आने वाले सोलह करोड़ मतदाताओं के नाम पर लिखने के लिये बीस लाख फुलस्कप साइज के कागज चाहिये। इन्हें यदि पुस्तकाकार दिया जाय तो पुस्तक की मोटाई लगभग २०० गज होगा। इसी से मालूम होता है कि निर्वाचन सूची बनाने का काम कितना बड़ा है। आशा है कि यह काम १९५०-५१ के शीतकाल तक समाप्त हो जायगा।

"वन्देमातरम्" भारत का राष्ट्रीय गाना होगा "जनगणमन" राष्ट्रीय संगीत रहेगा

नयी दिल्ली २५ नवम्बर। ज्ञात हुआ है कि विधान परिषद् की कार्यसमिति ने भारत के राष्ट्रीय गाना और राष्ट्रीय संगीत की समस्या सुलझा ली है। उसने फैसला किया है कि 'वन्दे मातरम्' भारत का राष्ट्रीय गाना बनाया जायगा और 'जनगणमन' संगीत होगा।

मसविदा समिति इस विषयमें प्रस्ताव तय्यार कर रही है। बाद में यह भी तय किया जायेगा कि राष्ट्रीय गान किस अवसर पर गाया जाय और राष्ट्रीय संगीत की तान कब बजायी जाय।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्यमित्र

त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं
दधासि श्रवसे दिवे दिवे।
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने
मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये ॥
ऋ० १ ३१-७ ॥

हे प्रकाशक देव ! जो द्विपद चतुष्पद या मनुष्य मनुष्येतर दोनों के भले के लिए अत्यन्त तृषित है प्यासा है उस मनुष्य को तू यश के लिए प्रति दिन श्रेष्ठ अमृत पद में पहुंचाता है और उस ज्ञानी पुरुष के लिए तू सुख करता है और अन्न भी।

१० दिसम्बर १९४८ ई०

गुरुकुल बृन्दावन

युक्तप्रान्त स्वतन्त्र भारत राष्ट्र का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण प्रान्त है, क्षेत्रफल जनसंख्या में जहां यह विशाल प्रान्त सर्व प्रमुख है, वहां आर्य समाज के पुरुषार्थ का भी युक्त प्रान्त ही अनेक अर्थों में प्रतिमान होगया है, इस प्रान्त में लगभग एक सहस्र आर्यसमाज प्रान्त के कोने २ में स्थित हैं, इन केन्द्रों में आर्य समाज की ओर से समाज सुधार शिक्षा विस्तार, कुरीति निवारण रूढिवाद उन्मूलन धार्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण जिस मात्रा और परिमाण में हो रहा है, उसी के अनुरूप आर्यसमाज की उपयोगिता और उपादेयता सर्व साधारण जनता के लिये स्वीकार की जा सकती है ग्रामों, कस्बों, नगरों और पुरों के आर्य समाजों के प्रान्तीय पुरुषार्थ का संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त है, उस प्रान्तीय सभा की ओर से संस्थापित प्राचीन आर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम प्रणाली के अनुसार व्रतचर्यापूर्वक वेदादि शास्त्रों के साथ ही साथ आधुनिक भाषाओं और उपयोगी आधुनिक विद्याओं की शिक्षाप्रदान करने के लिये गुरुकुल वृन्दावन का संचालन हो रहा है,

अपने प्रारम्भ से ही विशुद्ध राष्ट्रीय सस्था होने के कारण विदेशी सरकार से जहां एक ओर इस सस्था को किसी प्रकार की मान्यता और सहायता प्राप्त करने का कोई अवसर ही नहीं आया वहा केवल संस्कृत और आर्य भाषा को माध्यम बनाकर शिक्षा देनेवाली इस सस्था की ओर सर्वसाधारण की विशेष अभिरुचि भी नहीं हुई क्यों कि प्राय लोग यह अनुभव करते रहे कि बिना सरकारी या सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्कूल और कालेजों की शिक्षा प्राप्त किये न तो सरकारी और न अर्द्ध सरकारी नौकरियों का प्राप्त करना सम्भव हो सकता है, इसलिये गुरुकुलों की शिक्षा का महत्व ही क्या हो सकता है परिणाम यह हुआ कि कि जो लोग अपनी अच्छी आर्थिक अवस्था के कारण स्कूल और कालेजों के व्यय भार को वहन करने में समर्थ थे और अपने सन्तानों को उच्च अंग्रेजी शिक्षा दिलाकर ऊंची नौकरियां दिलाना चाहते थे, उन्हों ने अपनी सन्तानों को गुरुकुलों में प्रवेश कराना अपने लिये उचित और आवश्यक नहीं समझा। उनकी सन्तान प्राय अंग्रेजी शिक्षणालयों में ही अन्य साधारण जनों की भांति पढ़लिख कर अपनी महत्वाकांक्षा के अनुरूप कहीं किसी सेवा कार्य में लग गई हो जिन लोगों के लिये बहुव्यय से प्राप्त होनेवाली विदेशी शिक्षा सुलभ नहीं थी और जो आस्थावान् गुरुकुल शिक्षा के भक्त थे उन्होंने अपने बच्चों को गुरुकुलों में प्रविष्ट अवश्य कराया, देशकालिक परिस्थिति और गतानुगतिक परम्परा के प्राय विरुद्ध होने के कारण स्वाभाविक ही था कि गुरुकुल सस्थाओं को प्रथम श्रेणी के अध्यापक, छात्र, साधन सहायता का प्राय अभाव सा हो रहा है, फिर भी इतनी विपरीत परिस्थिति होते हुए भी उदार दानियों और श्रद्धावान् कार्यकर्ताओं के सहयोग से लगभग अर्द्ध शताब्दी पर्यन्त गुरुकुल शिक्षा सस्थाओं ने अपना कार्य चलाते रहने की जैसे तैसे व्यवस्था की, इन सस्थाओं से शिक्षा प्राप्त कर निकलने वाले विद्याव्रत स्नातकों ने कहां किस प्रकार देश जाति और धर्म की सेवा की है, यह तो इतिहास का विषय है, किन्तु इतना निःसकोच कहा जा सकता है कि सादा जीवन उच्च विचार के अनुरूप जीवन बना कर जिस किसी क्षेत्र में गुरुकुल के स्नातक अवतरित हुये उसमें अपनी शिक्षा और सहिष्णुता के कारण कोई ऐसी बाधा अनुभव में नहीं आई कि जो अन्यत्र प्राप्त शिक्षिता के लिये न हुई हो। हमको तो इस बात का गर्व होना चाहिये कि जिनके लिये साधारण अक्षराभ्यास भी सुविधा के साथ सम्भव नहीं था, उनको वेद शास्त्रादि के साथ आधुनिक विषयों का परिज्ञान बिना किसी वर्ण वर्ग श्रेणी और जातिभेद के समान रूप से कराया गया हो सकता है कि आज इस प्रकार का आयोजन कोई आश्चर्य की बात न प्रतीत होती हो किन्तु पचास वर्ष पूर्व तो ऐसा करना सर्वथा कौतूहल ही माना जा सकता था।

उपर्युक्त विवेचन से गुरुकुल के स्वरूप और महत्व का स्वल्प सा परिचय देने के उपरान्त अब उसके वर्त्तमान रूप और प्रयोजन पर विचार करने से स्पष्ट प्रकट होता है कि भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन गया है। इसलिये राष्ट्र की ऐसी कोई भी शिक्षा सस्था नहीं होनी चाहिये कि जिसको राष्ट्रीय सरकार उपेक्षा या उदासीनता की दृष्टि से देखे किन्तु प्रत्येक सस्था को राष्ट्रोन्नति में साधक बनना आवश्यक है। इस दृष्टि से गुरुकुल में बिना किसी भेदभाव के समान व्यवहार के साथ संस्कृत आर्यभाषा और अन्य विदेशीय भाषा के साथ प्राय वह सभी आवश्यक विषय पढ़ाये जाते हैं कि जो एक स्वतन्त्र राष्ट्र के सफल नागरिक के लिये महत्वपूर्ण हो सकते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम प्रणाली के अनुसार सादा जीवन उच्च विचार गुरुकुलीय छात्रों के जीवन की विशेषता है। भारत जैसे आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत न्यून स्तर में होने के कारण अंग्रेजी ढंग के शिक्षालयों की विलास बहुल शिक्षा का प्राप्त कराना देशहित की दृष्टि में जहाँ एक ओर घातक है, वहाँ विदेशीय सांस्कृतिक जीवन प्रधान नागरिकों का वर्त्तमान स्वतन्त्र राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप बनना सर्वथा असम्भव है। क्योंकि न तो यह लोग ग्रामीण जीवन यापन करने वाले भारत के करोड़ों अबोध जनों में मिलकर रह ही सकते हैं और न भारतीयता से शून्य होने के कारण राष्ट्रोन्नति के ही साधक हो सकते हैं।

कन्ट्रोल और राशन के इस विकट युग में केवल १८, २२ और क्रमशः २५ रुपये मासिक भोजन व्यय लेकर गुरुकुल वृन्दावन अपने छात्रों के लिये अन्य सब प्रकार की व्यवस्था कर रहा है प्रत्येक वस्तु कितनी महगी हो रही है यह सभी जानते हैं कहीं भी ३० रु० मासिक से न्यून में केवल सूखा भोजन नहीं प्राप्त हो सकता है। अन्य आवश्यक वस्तुओं का तो कहना ही क्या है ऐसी अवस्था में यदि व्यय दूना भी होता हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है साधारणतया एक कालेज में पढ़ने वाले छात्र का प्रति मास एक सौ रुपया अपने ऊपर व्यय करना पड़ता है। गुरुकुल में उसके आधे पचास मासिक से न्यून व्यय से निर्वाह सम्भव नहीं है। इस कमी को दूर करने के लिये अब तक उदार दानी महानुभावों की सहायता से समय २ पर कार्य चलाने का प्रयास होता रहा है किन्तु बढ़ती हुई महगाई को देखते हुये यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जहां उदार महानुभाव अपनी उदारता का परिचय देते हुये प्रान्तीय सभा के इस केन्द्रीय शिक्षा सस्था को समुन्नत करने के लिये अपनी उदारता की मात्रा को भी बढ़ावें वहाँ साथ ही प्रान्त की प्रत्येक आर्यसमाज न्यून से न्यून २५ रु० वार्षिक और बड़े आर्य समाज इसी प्रकार ५०, ७५ १०० और उससे अधिक वार्षिक देते रहें इस आय के नियमित होने से अर्थ सकट दूर हो सकता है

अब तो सरकार ने भी गुरुकुल विश्वविद्यालय को मान्यता प्रदान की है, अधिकारी परीक्षा को हाइस्कूल के बराबर और शिरोमणि उपाधि परीक्षा को बी० ए० के तुल्य स्वीकार किया है इस सुविधा के हो जाने से गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिये अल्पव्यय में ही उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र के प्रत्येक जीवन क्षेत्र में सेवा कार्य करने की सुविधा मिल सकती है,

गुरुकुल विश्वविद्यालय का वार्षिक महोत्सव २५ से २८ दिसम्बर तक बड़े समारोह के साथ होने जा रहा है इस

अवसर पर जो श्रद्धालु महोत्सव पर पहुंच सकें उनको अभी से तैयारी करनी चाहिए, और जो किन्हीं कारणों से न भी पहुंच सकें, उनको अपने प्रभाव क्षेत्र से गुरुकुल के लिये अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेजवाना चाहिये, इससे भी बढ़कर उनको प्रयत्न करना चाहिए कि उनके स्थान में यदि कोई सज्जन अपने होनहार बच्चों को शिक्षा के लिये भेजना चाहे तो उनका भी प्रवेश कराने का प्रयास करें, यह अनुभव करते हुये कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन अपने प्रान्त की केन्द्रीय संस्था है, उनकी सब प्रकार से सहायता ही नहीं करनी है, अपितु वर्त्तमान स्वतन्त्र राष्ट्र के अनुरूप समर्थ एवं सुयोग्य नागरिकता की शिक्षा और दीक्षा का यह एक अनुकरणीय केन्द्र है ऐसा अनुभव करते हुये इसके अभ्युत्थान में साधन बनने की आवश्यकता है।

अद्भुत मनोवृत्ति

कांग्रेस के इस निर्णय पर कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ संस्था के सदस्य यदि चाहें तो कांग्रेस के सदस्य बन सकते हैं, देश भर में प्रकार की विचार धाराओं के आधार पर समाचार पत्रों और व्याख्यानों में एक प्रकार का आन्दोलन चलता रहा। एक विचार वाले तो निश्चित रूप से लगातार कहते और लिखते रहे कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक फैसिस्ट, तानाशाही, साम्प्रदायिक और प्रतिक्रियावादी संस्था है, इसलिये कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय और समस्त देशवासियों का समानरूप से हितचिन्तक करने वाली संस्था के सदस्य नहीं हो सकते हैं। क्योंकि कांग्रेस में किसी प्रकार की भी संकुचित साम्प्रदायिकता के लिये किसी प्रकार का स्थान नहीं है। दूसरी विचार धारा के अनुसार यह कहा जाता रहा कि कांग्रेस एक राजनीतिक संस्था कि जिसके उद्देश्य, विधान, और वैधानिक नियम सुस्पष्ट हैं। इसलिये जो कोई भी उसका सदस्य बनने के लिये नियमानुसार आवेदन दे उसको सदस्य बनाया जा सकता है। किंतु सदस्यता स्वीकार करने के उपरान्त उस सदस्य को कांग्रेस के वैधानिक नियम और उद्देश्य के अनुसार ही आचरण करना आवश्यक है। अतः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जो कि अपने घोषित विधान, उद्देश्य, विधान और नियमों के अनुसार एक सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रगति शील संस्था है और जिसको किसी अर्थ में भी प्रचलित सरकार ने किसी प्रतिबन्ध से अवरुद्ध नहीं किया है, उसके सदस्य यदि चाहें तो कांग्रेस के सदस्य हो सकते हैं।

इन दो प्रकार की विचार धाराओं की उग्रता को दृष्टि में रखते हुए और कांग्रेस के प्रमुख नेताओं में ही परस्पर विचार भेद ही नहीं अपितु साक्षात् विरोधभावना देखकर कांग्रेस की कार्यकारिणी ने निश्चय किया है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य कांग्रेस के सदस्य हो सकते हैं, किन्तु कांग्रेस सेवक दल के अतिरिक्त अन्य किसी दल का पृथक् संगठन नहीं कर सकते हैं। कार्यकारिणी का यह निश्चय उपर्युक्त दोनों विचारधाराओं के लोगों को "सांप मरे न लाठी टूटे" इस लोकोक्ति के अनुसार प्रसन्न करने का एक विचित्र प्रयासमात्र कहा जा सकता है। क्योंकि इसका स्पष्ट अर्थ इतना ही हो सकता है कि यदि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कोई सदस्य कांग्रेस का सदस्य बनना चाहें तो वह उक्त संघ की सदस्यता छोड़ दे और यदि संघ कार्य ही करते रहना चाहे तो कांग्रेस का सदस्य बनने का साहस न करे। इस का व्यावहारिक जीवन में अर्थ यह भी है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्यों को कांग्रेस कोड के अनुसार राजनीतिक दृष्टि से सदा के लिये अछूत मान लिया जाय। और कांग्रेस को उस संस्था से सम्बद्ध व्यक्तियों की छाया से दूर रक्खा जाय। किंतु कांग्रेस का जो नीति खिलाफत कमेटी, लीग, अहरार पार्टी, रेडगार्डपार्टी, अकालीदल, और जमैयतुल उलमा के सम्बन्ध में रही है, उससे तो स्पष्ट प्रकट होता है कि उक्त समस्त संस्थायें न केवल अपने उद्देश्यों, विधान और नियमों में ही साम्प्रदायिक रही हैं, अपितु उनके कार्यक्रम और व्यवहार भी नितांत संकुचित स्वार्थमयी साम्प्रदायिकता से परिपूर्ण रहे हैं। फिर भी उक्त संस्थाओं को कभी अछूत घोषित करने का साहस नहीं किया गया। उलटे उनको कांग्रेस से मान्यता दे दे कर अपना कृपाभाजन बनाया और बना रही है। क्या जमैयतुल उलमा आज भी प्रकटरूप से एक सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक संस्था नहीं है, क्या उसका कार्यप्रणाली अब भी पूर्ण साम्प्रदायिक नहीं है। यदि हाँ तो उसको कांग्रेस क्यों अपना कृपाभाजन बना रही है। क्या इसको न्याय कहा जायगा। वस्तुतः धार्मिक साम्प्रदायिकता, आर्थिक साम्प्रदायिकता, सांस्कृतिक साम्प्रदायिकता और राजनीतिक साम्प्रदायिकता सभी संकुचित स्वार्थों और मनोवृत्तियों के आधार पर बनतीं, चलतीं और विलीन होती रहती हैं। कांग्रेस को तो अब स्वतन्त्र राष्ट्र में सार्वजनिक कल्याण साधक संस्था हो जाना चाहिये। अब इस को संकुचित राजनीतिक संस्था के रूप में ही रखकर कुछ महत्त्वाकांक्षी नेतागण न तो राष्ट्रहित साधन कर सकते हैं और न वर्त्तमान जटिल परिस्थिति को ही शान्त कर सकते हैं।

स्वर्गीय स्वामी केवलानन्द सरस्वती

प्रत्येक सहृदय महानुभाव को अपने श्रद्धा और आदर के सुभाजन सौम्यमूर्ति श्री स्वामी केवलानन्द सरस्वती जी के नाम के पूर्व स्वर्गीय शब्द देखकर महान शोक और विस्मय होगा। क्योंकि जिन महानुभाव का व्यवहार परिचित, अपरिचित, मित्र और उदासीन सभी के साथ लगभग २५ वर्ष पर्यन्त स्नेह और सौहाद का रहा हो, उनके आकस्मिक वियोग से व्यथित, व्याकुल और विक्षुब्ध हो जाना स्वाभाविक ही है। यों तो जिसका जन्म हुआ है, उसका मरण भी निश्चित ही है, किन्तु कुछ प्राणी ऐसे होते हैं कि जिनके संयोग से विशेष हर्ष और वियोग से महान् शोक या दुःख होता है। श्री स्वामी केवलानन्द जी महराज आर्य-जगत के उन इने-गिने विद्वान् सन्यासियों में थे कि जिनके सदुपदेश, विद्वत्तापूर्ण प्रवचन, गवेषणा सम्पन्न कथा, ओजस्वी भाषण मनोहर काव्य हृदयग्राही संगीत, विनोदमय गोष्ठी और सत्परामर्शों के लिये प्रायः लोग लालयित रहते थे और जब कभी श्री स्वामी जी कार्याधिक्य के कारण किसी स्थान पर किसी समारोह में न पहुँचने की सूचना देते थे, तो लोगों को बड़ा असन्तोष होता था। वस्तुतः श्री स्वामीजी स्वभावतः सभी प्रकार के लोगों के लिये स्वजन वत् आत्मीय प्रतीत होते थे। सन्यासी होते हुये भी जिस व्यवहार कौशल से श्री स्वामी जी ने अपने दारानगर स्थित आश्रम की प्रबन्ध व्यवस्था की थी, वह वस्तुतः अन्यों के लिये अनुकरणीय है। आपने ही सर्व प्रथम सन्यासियों की योग्यता और उपयोगिता दोनों को समुन्नत करने के लिये अखिल भारतीय सन्यासी मण्डल की स्थापना की थी। उक्त मण्डल के आप प्रथम प्रधान बनाये गये। लखनऊ में जब अखिल भारतीय सन्यासी मण्डल का अधिवेशन हो रहा था, तो श्री स्वामी जी की वैधानिक विचक्षणता का समुचित परिचय प्राप्त करने वाले मुग्ध हो रहे थे। क्योंकि उनको संगठन और विधान की मर्यादाओं का परिपालन वैयक्तिकता से सर्वथा दूर प्रतीत होता था।

श्री स्वामी केवलानन्द सरस्वती जी कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। प्रायः बाहिर नहीं जाते थे, किन्तु आर्यसमाज सीताराम बाजार देहली के अधिकारियों ने विशेष आग्रह किया तो स्वामी जी वहाँ गये। कथा प्रारम्भ हुई। बड़े चाव से लोग कथा श्रवण के लिये आने लगे, किन्तु ता० २० नवम्बर की रात्रि को पक्षाघात के कारण हृदयगति अवरुद्ध हो जाने से श्री स्वामी जी का शरीर छूट गया। इस आश्रम से सन्यासी होते हुये भी श्री स्वामी जी एक अनुकरणीय चरित्र कर्मयोगी की भाँति अपने उपयोगी जीवन के उदाहरण को अपने कर्तव्य पालन में तन्मयता के साथ लगाते हुये हमारे मध्य से चले गये। अभी श्री स्वामी जी की आयु लगभग पचास वर्ष की ही थी और यह आशा की जाती थी कि उनके सफल नेतृत्व का लाभ स्वतन्त्र भारत के सांस्कृतिक निर्माण कार्य में विशेष रूप से दीर्घकाल पर्यन्त प्राप्त होता रहेगा, किन्तु उन सभी आशाओं पर कराल काल के एक आघात से पानी पड़ गया। यह हमारा ही दुर्भाग्य है कि जब जिस प्रकार के नेताओं की हमको आवश्यकता अधिक से अधिक होती है, तभी हमको उनका वियोग सहना पड़ता है। जगन्नियन्ता जगदीश्वर श्री स्वामी जी महराज की आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें और हम सबको ऐसी बुद्धि एवं बल प्रदान करें कि हम उनके ध्येय की पूर्ति के लिये बहुगुणित उत्साह और लगन के साथ अग्रसर होने में समर्थ हो सकें।

कांग्रेस को ५० हजार किसानों को एकत्र करने की चुनौती

किसानों की विराट् सभा में श्री आचार्य नरेन्द्रदेव का भाषण

लखनऊ, २५ नवबर। अमीनुद्दौला पार्क में भाषण देते हुये आचार्य नरेन्द्रदेव ने प्रान्त के किसानों का इस प्रदर्शन को सफलता पर बधाई देते हुये गदगद होकर कहा कि '३४ वर्षों की देश सेवा के बाद लोगों का उदासीनता और यह बेबसी का आलम देख कर मेरे दिल में कभी कभी निराशा छा जाती थी लेकिन आज मेरा दिल इस मायूसी का तर्क कर रहा है और मुझे यह विश्वास हो रहा है कि मध्यम श्रेणी कुछ करे या न करे लेकिन किसान कुछ करके रहेगा'।

प्रांत के पुलिस मन्त्री के वक्तव्य का जिक्र करते हुये कि सरकार इस प्रदर्शन के प्रति पूर्णतया उदासीन है आचार्य जी ने कहा कि प्रांत भर के इतने किसानों के प्रदर्शन के महत्व की उपेक्षा करना इस बात का प्रमाण है कि किसानों के मामले में कोई दिलचस्पी नहीं है।

आपने बताया कि मिर्जापुर जिले में ११०० एकड भूमि से किसान इसलिये बेदखल किये जा रहे हैं कि वहां बनारस में खुलने वाली दुग्धशाला के जानवरों के लिये घास पैदा की जायगी। अन्न की कमी के इस जमाने में यह योजना हास्यास्पद है। दुग्धशालाओं से जनता को कितना लाभ होता है यह भी सर्वविदित है। लखनऊ में भी दो दुग्धशालायें हैं लेकिन उनका दूध बड़े बड़े अफसरों को ही मिलता है अस्पताल के मरीजों को नहीं।

इस किसान प्रदर्शन का उद्देश्य देश में एक नया जीवन उत्पन्न करना और किसानों में आत्मविश्वास पैदा करना तथा देहाती व शहरी जनता में सम्पर्क स्थापित करना है।

मुआवजे के संबंध में गलतफहमी

आचार्य जी ने कहा कि कांग्रेस सरकार की ओर से मेरे एक वक्तव्य का बहुत जिक्र किया जा रहा है कि जमींदारों को मुआवजा देने की बात मैंने स्वयं स्वीकार की थी और अब मैंने अपनी बात बदल दी है। आपने कहा कि १९४७ के आरम्भ में जमींदारी उन्मूलन कमेटी के प्रश्नों के उत्तर में मैंने कहा था कि १९३५ के भारत कानून की २९९ वीं धारा के कारण हमें मुआवजा देना ही पड़ेगा। अतः सिद्धान्त विरोधी होते हुये मैंने उसे स्वीकार किया था लेकिन १५ अगस्त के बाद स्थिति बदल गई। कांग्रेस सत्य और अहिंसा का दावा करती है लेकिन सत्य पर वह कितना दृढ़ है यही उसका उदाहरण है। वकील की भांति मैं भी पन्त जी से कह सकता हूँ कि उन्मूलन जाँच समिति की अधिकांश सिफारिशें उन्होंने बिल में बदल दी हैं।

दसगुना लगान वसूल नहीं होगा

दसगुना लगान किसान नहीं दे सकते क्योंकि उनके पास धन नहीं है इसलिये ६० हजार किसान प्रांत भर से लखनऊ आया है। उन्मूलन कोष की वसूलयाबी से किसानों पर जो जोर डाला जा रहा है उसका उदाहरण देते हुये आपने बताया कि पटवारियों के वेतनों में दसगुना काटा गया है। फैजाबाद में एक किसान को एक हाथ से तकावी देकर उसी समय दसगुना वसूल किया गया है। फिर भी कुल दो करोड वसूल हो सका है जिसमें १ करोड रुपया प्रचार में खर्च हो गया है। सुना है कि कांग्रेस को प्रचारार्थ ५०-६० हजार रुपया दिया गया है और कुछ पत्रों को भी इस कार्य के लिए सहायता दी जा रही है। यह भी सुना है कि गन्ने की कीमत देते समय किसानों से दसगुना काट लिया जायगा। यह सब बातें सरकार की इस घोषणा का खंडन करने के लिए काफी है कि कोष में जबरदस्ती नहीं की जा रही है।

अन्त में आचार्य जी ने बडे जोशीले शब्दों में कहा कि कांग्रेस को यह चुनौती देता हूँ कि यदि वे ५० हजार किसान भी इकट्ठा कर ले तो मैं यह दावा छोड दूँगा कि किसानों के हितों को प्रतिनिधित्व सोशलिस्ट अथवा किसान पंचायत करती है।

प्रांतीय सोसलिस्ट पार्टी के प्रधान मन्त्री सेठ दामोदर स्वरूप ने इस सफल प्रदर्शन के लिये प्रांत के सभी सोसलिस्ट कार्यकर्ताओं तथा किसानों को विधिवत् धन्यवाद दिया।

लखनऊ में सारे प्रांत के हजारों किसानों का प्रदर्शन

दसगुना लगान देने का विरोध

लखनऊ २५ नवम्बर। आज ३-३० बजे मध्यान्ह [illegible] सोशलिस्टों के नेतृत्व प्रांत के प्रायः ५० हजार किसानों ने प्रांतीय राजधानी के मुख्य कार्यालय कौंसिल हाउस के सामने एक स्वर से सरकार से यह मांग की कि वह जमींदारों को मुआविजा दिये बिना जमींदारी का अन्त कर दे।

सभा में दी गयी मुख्य मांगे ये हैं:—बिना मुआवजा दिये जमींदारी खत्म की जाय, किसानों से दस गुना लगान न लिया जाय, जमीन का फिर से बटवारा किया जाय, किसी किसान को उसकी भूमि से अलग न किया जाय, खेत हर मजदूरों की एक सेना बना कर ऊसर जमीनों को उपजाऊ बनाया जाय इत्यादि इत्यादि।

जुलूस के आगे एक लारी पर समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव, डा० लोहिया, दामोदर स्वरूप सेठ श्री मलखान सिंह श्री रघुकुलतिलक तथा प्रो मुकट बिहारी, फरीदुल हक अन्सारी तथा स्वामी भगवान प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे।

बेलीगारद के निकट बने किसान नगर से २ मील लम्बा जलूस ठीक १२ बजे रवाना हुआ और कैसर बाग गणेशगंज नाका लाटूश रोड हाबट रोड होता हुआ कौंसिल हाउस पहुँचा। अधिकारियों की ओर से कहीं कोई रुकावट नहीं डाली गयी।

जुलूस के साथ अथवा कौंसिल भवन के सामने पुलिस नहीं थी। भवन के फाटक पर जिला मजिस्ट्रेट पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल तथा स्थानीय अधिकारी उपस्थित थे।

जुलूस आने के कुछ समय पूर्व ही भवन के सभी फाटक बन्द कर दिये गये और कोई बाहर भीतर आ जा नहीं सकता था।

यह भी आदेश जारी किया गया था कि कोई भी व्यक्ति छज्जों पर अथवा छत पर बाहर निकल कर जुलूस न देखें।

जिस समय लाल टोपियों और लाल झण्डा और पोस्टरों से लैस यह विशाल जन समुदाय नारे लगाता हुआ रवाना हुआ तो एक अद्भुत दृश्य उपस्थित हो गया और बहुत से लोग सडकों पर तमाशा देखने लगे। कौंसिल हाउस के सामने भी प्रायः २० हजार दर्शक उपस्थित थे।

जुलूस इतना लम्बा होते हुए भी काफी व्यवस्थित था। किसान दो-दो और चार की कतारें बनकर चल रहे थे।

मुख्य रूप से किसान यह नारे लगा रहे थे रोटी कपडा नहीं मकान, कहां से दें दसगुना लगान रोटी कपडा शिक्षा दो, नहीं तो कुर्सी छोड दो, यह आजादी झूठी है देश की जनता भूखी है कांग्रेस के वादे झूठे हैं, भूलो मत भूलो मत लखनऊ क्यों हम आये हैं, सरकार बदलने आये हैं, आदि।

कौंसिल हाउस से लौटकर जुलूस अमीनाबाद पार्क पहुँच कर सभा के रूप में परिणत हो गया जिस में आचार्य नरेन्द्रदेव, डा० लोहिया, सेठ दामोदर स्वरूप आदि के भाषण हुए।

डा० राममनोहर लोहिया ने कहा कि वर्तमान सरकार स्वतन्त्र भारत की जनप्रिय सरकार नहीं है। बालिग मताधिकार पर चुनी गई सरकार ही जनप्रिय सरकार होने का दावा कर सकती है।

चेतक

—श्री विराम—

महाराणा प्रताप का हृदय अरावली की कड़ी से कड़ी चट्टानों के टुकड़ों से बना था। ऐसा दृढ़ कि देखकर इन्द्र का वज्र लजित हो जाय। जिसकी कठोरता से उसकी तुलना की जा सके, ऐसा महावीर इस विश्व-ब्रह्माड में दूसरा कोई नहीं हुआ।

पर उस एक दिन में महाराणा प्रताप दो-दो बार रोया।

रोती हैं स्त्रियाँ, रोते हैं कायर और असहाय। पुरुष के नयनों में पानी आ जाय, तो पौरुष लाञ्छित होता है पर उस दिन रोने की नई मर्यादा बनी। जान पड़ा कि ऐसे भी क्षण होते हैं, जिनमें न रो पड़े वह पुरुष नहीं पिशाच है।

हल्दी घाटी के मैदान में राजपूती सेना की पूर्णाहुति हो चुकी थी। सब राजपूत सम्मुख समर में काम आए। मैदान मुगल सेना के हाथ रहा। महाराणा प्रताप भी शायद मेवाड़ की मान रक्षा पर बलि हो गया होता, परन्तु वीरों क वीर कहे जाने योग्य मानसिंह झाला ने अपना रक्त देकर महाराणा की मृत्यु को भुलावा दे दिया। उसने राणा प्रताप के न चाहते हुए भी उसे बलात समरांगण से बाहर जाकर अपने प्राण बचाने को विवश किया। जौहर व्रत के धनी राजपूतों का शिरोमणि महाराणा समरभूमि से अपने प्राण बचाकर भाग निकला, परन्तु जिस प्रकार विवश होकर वह अपनी जीवन-रक्षा के लिए भाग रहा था, उसकी वेदना से उसकी आँखों से रह २ कर आँसू की बूँदें टपकने लगीं। मरना कितना कितना सरल था पर महाराणा को मरने का सुअवसर प्राप्त नहीं था। उसे जीना होगा, जैसे भी हो भागकर, छिपकर, युद्ध भूमि से मुख फेरकर भी उसे जीना होगा। उ के लिये मानसिंह झाला आत्म-बलिदान जो कर रहा था। क्षोभ से विवशता से मानो झाला की वीरता के स्मरण से महाराणा की आँखें गीली हो रही थीं।

महाराणा अपनी जीवन-रक्षा के लिये चेतक पर सवार होकर तेजी से भाग रहा था। रक्त, शवों एव आहतों से परिपूर्ण समरभूमि उसकी पीठ पीछे दूर और दूर होती जा रही थी। उस ओर से आता हुआ कोलाहल क्षीणतर होता जा रहा था। महाराणा के मनश्चक्षुओं के आगे प्रात:काल से अब तक का सारा घटना चक्र चित्र की भाँति स्पष्ट हो उठा।

प्रभात की प्रथम रश्मियों के साथ युद्ध आरम्भ हुआ। पहले ही दौर में राजपूतों ने मुगलों के छक्के छुड़ा दिये। मुगल घबराकर पीछे हटने लगे। तब महाराणा के सगे भतीजे महाबतखाँ ने मुगल सेना की कमान सम्भाली। दोपहर तक मुगलों का तोपखाना मैदान में आ पहुँचा। राजा गोविंदसिंह ने अपने पाँच सौ घुड़ सवारों के साथ तोपखाने पर आक्रमण किये और तोपों का मुँह बन्द कर दिया। उस समय महाराणा ने सलीम पर आक्रमण किया और चेतक ने सलीम के हाथी के मस्तक पर अपने पैर जमा दिये।

ये सब चित्र महाराणा के मन पटल पर स्पष्ट रूप से चित्रित होते जा रहे थे। चेतक पर महाराणा को अपार गर्व हुआ। एक बार प्यार से चेतक की गर्दन पर हाथ फेरे बिना वे न रह सके महाराणा की भाँति इस समय चेतक का देह भी बुरी तरह क्षतविक्षत हो रहा था। हाय रे विश्वासी प्राणी? अपने भावों की अपेक्षा भी अधिक व्यथा चेतक के भावों को देखकर महाराणा को हो उठी।

उसके बाद महाराणा ने सलीम पर वार किया। वार ओछा पड़ा, सलीम का हाथी भाग निकला और महाराणा के जीत जाने पर जब कि विजय श्री राजपूत दल की ओर आती दिखाई पड़ती थी। एकाएक बिल्कुल ताजी नई मुगल सेना ने रण-रंगमच पर प्रवेश किया। उसके आते ही मेवाड़ का भाग्य अन्धकार मग्न हो गया।

महाराणा आगे कुछ न सोच सका। दु खी हृदय से उन्होंने सिर घुमा कर उस भीषण रंगमच की ओर देखा, जहाँ से वह एक दु खान्त नाटक करके लौट रहे थे।

सिर घुमाकर देखते ही महाराणा चौंक उठे। दो मुगल घुड़सवार घोड़े दौड़ाए, उनका पीछा करते आ रहे थे। यदि झाला ने आत्मबलिदान न किया होता तो महाराणा प्रताप सा तेजस्वी योद्धा तुरन्त रुककर और मुड़कर तलवार से उनका स्वागत करता, परन्तु इस समय उसके प्राणों का मूल्य बहुत ज्यादा आँका जा चुका था। उन बहुमूल्य प्राणों को इस तरह सकट में नहीं डाला जा सकता। जीवन अब महाराणा का अपना नहीं था।

जिस प्रताप ने हल्दीघाटी में खड़े बाइस हजार राजपूत वीरों से शरीर में प्राण रहते समर में पराङ्मुख न होने की शपथ करवाई थी, उसी प्रताप ने समर से बच निकलने के लिए थके हुए चेतक को एड़ लगाई। भयङ्कर स भयङ्कर प्रहारों के बीच में जिसने अपने स्वामी के आदेशों का पालन किया था, यह चेतक इस समय बेहद थका होने पर भी उस एड़ के भीतर छिपे अर्थ को सम्पूर्ण रूप से समझ गया। फिर जैसे उसके पख लग गए। उसकी परिश्रा‍ंत मांसपेशियों में फिर से नई विद्युत दौड़ उठी। स्वामी की एड़ में जो अधीरता थी, उसे अनुभव करके वह वायुवेग से दौड़ने लगा, परन्तु प्रतिद्वन्द्वी मुगल घुड़सवार निकट और निकट आते गए। उनके घोड़े ताजे और तेज थे।

महाराणा रुक २ कर बीच २ में पीछे की ओर सिर घुमाकर पास और पास आते हुए इन मुगल घुड़सवारों की ओर देख लेता था उन्हें देखने पर हर बार उसके शरीर में एक ऐसी सनसनी दौड़ जाती थी जिसे चेतक भी पूरी तरह अनुभव कर लेता था। अनुभव के साथ ही उसकी गति और भी तीव्र हो जाती थी। इस समय घोड़ा और घुड़सवार जैसे मिलकर एक हो गए थे। एकतन, एक मन और एक प्राण।

तभी सामने एक नदी आ पड़ी। प्राण बचाकर भागता हुआ घुड़सवार अत्यन्त व्यस्त हो उठा। यदि घोड़ा नदी को तैरकर पार करने लगे तो पीछा करते हुए मुगल एक दम ही निकट आ जाँय और पानी में असहायावस्था में भाले के वार से ही समाप्त कर दें। फिर क्या हो?

बिना किसी सकेत के ही चेतक ने महाराणा के मन का भाव समझ लिया उनके हृदय साथ २ जो धड़क रहे थे। फिर इतना पुराना सुख दु:ख का साथी भी इस प्रकार भावों को न समझे तो और कौन समझे?

राणा प्रताप ने छलछलाती आँखों से चेतक की गर्दन पर प्यार भरा हाथ फेरा और उसके उत्तेजित होठों से निकला 'चेतक'।

अगले ही क्षण चेतक नदी के उस पार था। महाराणा के आँसू थमे नहीं। वह समझ रहे थे कि घोड़ा कितना थका हुआ है। इसी से उसे चेतक को एड लगाने की हिम्मत न होती थी। परन्तु उसे लगा कि जैसे घोड़ा मेवाड़ के लिए उसकी अपेक्षा ज्यादा बलिदान कर रहा है। तभी उसे मानो झाला का ध्यान हो जाता। फिर आँसू रुकें तो कैसे?

पीछा करने वाले मुगलों के घोड़े नदी को पार न कर सके।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

नवम समुल्लासान्तर्गत भौतिक शब्द

(ले०—लक्ष्मणदत्त पाठक)

दयानन्द जी सरस्वती के लिखे सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास का भौतिक शब्द (जो मुक्ति प्रकरण में आया है) का आकस्मिक ढग से अपने अभाव में बदल जाना एक छोटी सी कहानी है।

प्रथम के यहाँ तक कि शताब्दी संस्करण में भी यह लेख (लयञ्जच्छतीति) लिङ्गशरीर को समझाते हुए स्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है।

" इसके दो भेद हैं, एक भौतिक, अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है, दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।

मेरे पास इस समय सत्यार्थ प्रकाश का २५ वां सस्करण जो १९९२ वैक्रम का छपा है उसका पाठ भी सबकी जानकारी के लिये नीचे लिखता हूँ।

' इसके दो भेद हैं एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के योग से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।"

ये दोनों पाठ एक दूसरे से सर्वथा मिलते हैं। यहाँ तक अर्थात् प्रथम से २५ वें संस्करण तक सब का पाठ एक है। मुझे निश्चय विवेक नहीं मेरे एक मित्र ने २६—२८ वें संस्करण का यह प्रकरण दिखाते हुए एक फुट नोट दिखाया था जिसमें भौतिक शब्द को ताराङ्कित करके नीचे 'अ' लिखा गया गया। उक्त महोदयने ऐसा करने के लिये एक हेतु भी उस समय बताया था, जो पाठकों की जानकारी के लिए इस निबन्ध के किन्हीं शब्दों में लिखा जा रहा है। इस प्रकार " भौतिक " शब्द के टिप्पण का ' अ ' जो कि प्रथम एक टिप्पण-मात्र था, आज के संस्करण में मूलभूत बन गया है। आज का वह ग्रन्थ इस प्रकार है।

" इसके दो भेद हैं। एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है यह दूसरा (+) अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।"

इस पाठको पूर्व के लिखे पाठों से मिलाएं तो ज्ञात होता है कि मूल में 'अ' को भौतिक के साथ जोड़ने से ही सन्तोष नहीं हुआ है उससे आगे और पद को बहिष्कृत भी होना पड़ा है सुविधार्थ इतना कहना पर्याप्त है कि यदि और पद यथा पूर्व छोड़ दिया जाता तो 'अ' लिखना स्पष्ट भूल प्रतीत होती। सम्भव है हमें यह स्पष्ट करके कहने की आवश्यकता न पड़े कि इस प्रकार के फेर फार करना श्री स्वामी दयानन्द की लेखनी के अतिरिक्त और और किसी की लेखनी के अधिकार से बाहर है। हम यह भी नहीं कहना चाहते कि यह अनधिकार चेष्टा से अच्छा नहीं है। इतना स्पष्ट विषय स्यात् जिसकी पुष्टि मात्र के लिये ही स्वामी जी महाराज को वेदान्त अ० ४ पा० ४ सूत्र ११

" भावं जैमिनिर्विकल्पामननात् " देना और उसके नीचे की भाषा में और जैमिनि आचार्य मुक्त पुरुष का मन के समान सूक्ष्म शरीर इन्द्रियों और प्राण आदियों को भी विद्यमान मानते हैं, अभाव नहीं लिखना पड़ा हो। यह किस प्रकार एक किंवदन्ती की भांतिरूप बदल कर एक कहानी बन गया यह शोक की बात है। इस प्रकार चिरकालोपरान्त न जाने किसी के भाव किस प्रकार टूट फूटकर बदल जाय जिनका प्रत्यय करना भी कठिन हो जायगा। अस्तु!

अब हम यह सोचना है कि १ स्वामी दयानन्द सरस्वती का लिखा भौतिक शब्द है अथवा उनका लिखा अभौतिक शब्द है। २ यदि उनका लिखा अभौतिक है तो फिर 'और' पद की क्या व्याख्या है? अथच यदि भौतिक ही है तो सांसारिक सुख से मोक्ष में क्या विशेषता हुई, इत्यादि मुक्ति सम्बन्धी अनेक आशङ्काओं का निवारण क्या है। प्रथम हम यह सिद्ध करेंगे कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का लिखा 'भौतिक' शब्द ही है। इसके साथ 'अ' का लगाया जाना वैदिक यन्त्रालय अजमेर के सुप्रतिष्ठित अध्यक्ष की असावधानी तथा यन्त्रालय का विद्वन्मण्डल का अप्रभाव है।

" तीन शरीर हैं एक स्थूल जो यह दीखता है, दूसरा पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्मभूत और मन तथा बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहाता है। यह सूक्ष्मशरीर जन्म मरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद है एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है, दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।"

इस ग्रन्थ को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्वामी जी महाराज लिङ्ग शरीर (जिसे सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं) का निरूपण करते हुए उसे स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि—

" यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरणादि में भी जीव के साथ रहता है " अर्थात् इस वाक्य में आया हुआ भी पद शरीर की अन्यत्र सत्ता का ज्ञान कराता है। आगे चलकर स्वामी जी स्पष्ट लिखते हैं कि " इसके (सूक्ष्म शरीर के) दो भेद हैं एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों (पञ्चतन्मात्राओं) के अंशों से बना है दूसरा स्वाभाविक जीव के स्वाभाविक गुण रूप है " अर्थात् दूसरा शरीर सूक्ष्म वे स्वाभाविक भेद से दो प्रकार का है यह ध्यान देने योग्य बात यह है कि सूक्ष्म का अर्थ है सूक्ष्मभूत-निष्पन्न । अर्थात् पञ्चतन्मात्राओं का निर्मित भौतिक देह। इससे आगे वे स्वयं और स्पष्ट करते हैं कि " यह दूसरा (सूक्ष्म शरीर का दूसरा भेद स्वाभाविक) और भौतिक (पञ्चतन्मात्राशजन्य) शरीर मुक्ति में भी रहता है।" इसप्रकार स्वाभाविक और सूक्ष्म भौतिक दोनों ही शरीर स्वामी जी के मत में मुक्ति में जीव के साथ रहते हैं। यदि इनमें से केवल स्वाभाविक का ही मुक्ति में रहना उन्हें अभिमत होता तो इस वाक्य में संयोजक रूप और पद कदापि न देते। इस और पद [illegible] (सूक्ष्म) व स्वाभाविक दोनों का समुच्चय ही सामान्य अर्थ है। इतना ही नहीं उन्होंने अपने इस अभिप्राय की पुष्टि के लिये एक मौन हेतु भी यहीं दिया है। पाठक तनिक आगे भी पढ़ें कि—

" इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है " अब यहां यह विचारना अवशेष रह गया कि स्वाभाविक शरीर से सुख का भोग करता है अथवा भौतिक से ? यदि स्वाभाविक शरीर से सुख का भोग करे तो बिना स्थूल शरीर के केवल स्वाभाविक शरीर से ही सुखादि भोग जैसे अनेक कार्य कर लिया करे। परन्तु यह प्रत्यक्ष विरुद्ध तथा शब्द विरुद्ध भी है। यदि कोई व्यक्ति यह न समझे कि स्वाभाविक शरीर से स्वाभाविक सुखादि का उपभोग जीव नहीं करता यह न्याय भाष्य का—

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः अ० १, आह्निक १ सूत्र २२ आद्योपान्त देखा जाये जिसमें स्वाभाविक सुखादि के न होने का युक्ति - पूर्वक खण्डन किया है। उक्त भाष्य के इसी प्रकरण से कि " न चास्त्यनुमानमशरीरस्यात्मनो भोग कश्चिदस्तीति' ज्ञान पड़ता है कि शरीर रहित स्वभाव मात्र जीव को सुखादि का कोई भोग नहीं होता। इत्यादि शब्द प्रमाण से भी तथा प्रत्यक्ष विरुद्ध होने से भी जाना जाता है कि जब तक जीव के पास भौतिक साधन न हो वह सुख का उपभोग नहीं कर सकता। यह प्रत्यक्षविरुद्ध होने से मन्तव्य भी दीख पड़ता है। अत हम कह सकते हैं कि सुखभोग के लिये भौतिक शरीर का जीव के निकट होना अतीवावश्यक है। अथवा दूसरे शब्दों में जीव स्वाभाविक शरीर से नहीं अपितु भौतिक शरीर से ही सुख-दुख का अनुभव कर सकता है। इस समय यह मौन हेतु स्पष्ट प्रतीत होता है कि ' इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।

द्वितीय समाधान—

" यह दूसरा और अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। " यहाँ स्वाभाविक और अभौतिक का द्वित्व नहीं बनता क्योंकि जो भौतिक नहीं है वही स्वाभाविक है। यह प्रश्न तभी होता है जबकि केवल भौतिक के स्थान पर अभौतिक करते हैं। ऐसी स्थिति में और पद यदि न हटाया जाय " यह दूसरा और अभौतिक " तो अभौतिक पद की निस्सारता स्पष्ट ही है अत भौतिक को अभौतिक बनाने के लिये और शब्द को भी हटाना पड़ा।

हाँ तो यदि स्वाभाविक शरीर से ही सुख दुखादि का भोग हो जाया करे तो प्रलयावस्था में जब कि जीव शरीर रहित मूर्च्छना-प्राप्त अवस्थित रहते हैं तो भी स्वाभाविक शरीर के द्वारा ही सुखभोग से वञ्चित न रहे। अस्तु! सम्भव है कुछ व्यक्तियों की ऐसी धारणा बन गई है कि स्वामी दयानन्द ने यह भौतिकशरीर वाली बात भूल में अथवा पीछे से लेखक दोष से बन गई है क्योंकि अन्य मतस्थ पुरुषों का यह कहना कि पुन आर्यपुरुषों की मुक्ति में और सांसारिक सुख में क्या अन्तर है ठीक ही है। परन्तु ऐसे व्यक्तियों की सेवा में हम अपना विनम्र निवेदन करेंगे कि यदि यह स्वामी दयानन्द की भूल ही थी तो भी उसे उसी प्रकार रहने देना चाहिये था। विद्वान् पुरुषों की कठोर समालोचनाओं से स्वामी जी स्वयं अपने आपे को सुरक्षित रख सकते हैं। हमें विश्वास है कि यह 'अ' पद जोड़कर ग्रन्थ को अतीव विकृत कर दिया गया है। न केवल श्री स्वामी दयानन्द

(पृष्ठ शेष ६ पर)

नेहरू

श्री भगवतीचरण वर्मा

बरबस, अपनी इच्छा के प्रतिकूल विनाश के पथ पर तेजी के साथ बढ़ती हुई दुनिया एक निराशा से घिरी आशा, एक अविश्वास से घिरे विश्वास के साथ जिस व्यक्ति की ओर एकटक देख रही है, वह नेहरू है।

नेहरू दुनिया की नजर में हिंद का प्रधान मन्त्री नहीं है वह गांधी का मानसपुत्र है। गुलामी की अवस्था से अभी कुल दो वर्ष पहले निकला हुआ यह देश, जिसमें इन दो वर्षों में ही पंजाब का भयानक हत्याकाड हो चुका है, जिसमें देवपुरुष महात्मा गांधी की हत्या हो चुकी है, जहाँ इस समय अव्यवस्था बुरी तरह फैली हुई है, जहाँ चोरबाजारी और शोषण भयानक तांडव कर रहे हैं, जहाँ की नैतिकता आज मृतप्राय है, जहाँ कि आर्थिक अवस्था और महगाई राष्ट्रीय चीन की याद दिलाती है—इस देश की किसी को चिंता नहीं, इस राष्ट्र से किसी को भय नहीं। आज जो हिंद विश्व के अन्य उन्नत देशों के समकक्ष खड़ा है वह इसलिए कि हिंद जवाहरलाल नेहरू का देश है।

अमेरिका और ब्रिटेन में नेहरू के जो शानदार स्वागत हुए, वे हिंद के प्रधान मन्त्री के स्वागत नहीं थे, वे अहिंसा और प्रेम के सदेशवाहक नेहरू के स्वागत थे। अन्य देश जो हिंद की ओर देख रहे हैं वे वस्तुत जवाहरलाल नेहरू की ओर देख रहे हैं।

आज विश्व मे नेहरू का सर्वप्रथम स्थान है, इसमे इनकार नहीं किया जा सकता। ट्रूमन और स्टालिन हिंसा की सभ्यता के दो अग्निपुंज हैं जिनसे हरेक देश डरता है, हरेक राष्ट्र त्रस्त है। इन लोगों के पास घोर आसुरी शक्ति है अतृप्ति से भरा सर्वभक्षी विनाश है। अकेला एक नेहरू है जो एक स्वर से अहिंसा, दया, प्रेम, सद्भावना का नारा लगा रहा है।

पर क्या नेहरू के इस नारे में इतनी सामर्थ्य और शक्ति है कि वह इस युग की धारा को मोड़ दे? क्या नेहरू का यह नारा उसके कण्ठ से उठ रहा है या उसके हृदय से उठ रहा है? क्या नेहरू के पास वास्तव में आज की समस्या का हल है? क्या नेहरू में इतनी निस्पृहता, इतनी साधना, इतनी तपस्या है कि वह गांधी के सपने को साकार रूप दे सके?

मैं इस बात से इनकार करता हूँ कि नेहरू जन का निर्वाचित नेता है। मैं जोर देकर इस बात को कहता हूँ कि नेहरू गांधी का मनोनीत प्रतिनिधि है और इसीलिये नेहरू को राष्ट्र के नेता के रूप में नहीं देखा जा सकता, उसे राष्ट्र के निर्माता के रूप में ही हमें देखना पड़ेगा।

सर्वमुखी योग्यता, गहन अध्ययन, राजनीतिक सूझ—जहाँ तक इन गुणों का सम्बन्ध है। हाँ आज हमारे देश का ही नहीं, वरन दुनिया का कोई भी व्यक्ति नेहरू का मुकाबला नहीं कर सकता। अच्छी तरह सोच समझ कर भलीभाँति परखकर ही महात्मा गांधी ने नेहरू को अपना प्रतिनिधि बनाया था।

सन् १९४५ के बाद देश की समस्त राजनीति नेहरू द्वारा सचालित होती रही और हिन्द को स्वतन्त्रता दिलाने का जितना श्रेय महात्मा गांधी का है उससे कम नेहरू को नहीं है। मुझे याद है वह दिन जब १९४५ में जेल से छूटते ही नेहरू ने यह वक्तव्य दिया था कि ब्रिटेन इस युद्ध के बाद तीसरी श्रेणी का राष्ट्र हो गया है और उसे हिंद से जाना ही पड़ेगा। उस समय ब्रिटेन युद्ध में विजयी था, हमारे देश का राजनीतिक जीवन बुझ-सा गया था, जनता मर्माहत और निश्चेष्ट सी पड़ी थी और कोई यह आशा ही नहीं कर सकता था कि १९४२ की क्रांति म पराजित हिंदुस्तान निकट भविष्य में ब्रिटेन के खिलाफ स्वतन्त्रता सग्राम छेड़ सकेगा।

नेहरू ने जो भविष्यवाणी की थी वह एक अद्वितीय राजनीतिक कल्पना और सूझ की चीज थी। आज जो लोग नेहरू को गिराने का प्रयत्न कर रहे हैं मुझे उनके भी उस समय के वक्तव्य याद हैं जब ब्रिटिश मन्त्रि मिशन दिल्ली में बैठा सांप्रदायिक समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रहा था और ये लोग चिल्ला रहे थे कि ब्रिटेन हिंदुस्तान को धोखा दे रहा है, ब्रिटेन हिंद को कभी भी स्वतन्त्रता न देगा।

इण्डियन नेशनल आर्मी के मुकदमों में भाग लेकर तथा जयहिंद का नारा उठा।१९ नेहरू ने १९४५ में जेल से निकलते ही देश में फिर से एक राजनीतिक जीवन जगा दिया। १९४२ के आंदोलन [illegible] सबध में जब महात्मा गांधी मौन थे, नेहरू ने उस आंदोलन की जिम्मेवारी कांग्रेस के ऊपर लेकर कांग्रेस वालों को नया बल प्रदान किया। जिसा के साथ राजनीतिक दांव पेंच में नेहरू ने यह साबित कर दिया कि नेहरू को लोग जैसा कोरा आदर्शवादी समझते थे, वह महज वैसा आदर्शवादी ही नहीं है, वह कुशल राजनीतिक खिलाड़ी भी है।

महात्मा गांधी जानते थे कि नेहरू में उनके आदर्शों का कार्यवाहक अंग है, आदर्श से अधिक महत्व का होता है आदर्श को जीवन में उतारना और नेहरू ने महात्मा गांधी का साथ पूरी तरह निबाहा।

नेहरू महान् भाग्यवान है, उसे दुनिया में सब कुछ बिना परिश्रम किये हुए मिलता गया। सफल पिता का पुत्र, उसका बाल्यकाल बड़े सुख में बीता। अच्छी से अच्छी शिक्षा उसे मिली, ऊँचे से ऊँचे समाज में वह पला। असमर्थता, विवशता और इन दोनों द्वारा जनित अन्य अभिशाप उसके जीवन में नहीं आने पाये। जीवन में आगे बढ़ने के लिये उसे लगातार सहारा मिलता गया, अस्तित्व के सघर्षों मे उसे पिसना ही नहीं पड़ा।

और जब नेहरू ने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया उस समय उसे अपने निजी पिता से कहीं अधिक शक्तिशाली और महान धर्मपिता महात्मा गांधी के रूप में मिल गया। आरम्भ से ही नेहरू कांग्रेस का नेता बन गया, समर्थ और शक्तिशाली।

नेहरू म जो उदारता है, जो विशाल हृदयता है, उसका स्रोत नेहरू के इसी वैयक्तिक जीवन में है। व्यक्तिगत अथवा अस्तित्व के सघर्षों की कटुता को यह मौका हा नहीं मिला कि वह नेहरू की आत्मा को मलिन कर सके।

और यही नेहरू के जीवन की अपूर्णता है।

नेहरू के खिलाफ आम तौर से यह आरोप लगाया जाता है कि नेहरू को आदमी की परख नहीं है। इस आरोप में दुर्भावना हो सकती है, पर अतिशयोक्ति नहीं है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से कोई भी व्यक्ति इस नतीजे पर पहुँचेगा कि उसे आदमियों की परख हो ही नहीं सकती।

नेहरू का जीवन राजकुमार का जीवन रहा है, उसे जो साम्राज्य मिला, जो शक्ति मिली वह एक विजेता के रूप में नहीं मिला, वह केवल एक उत्तराधिकारी के रूप में मिली। और इसी लिए राजकुमार की भांति उसने हमेशा दूसरों को बाँटा भर है, उसने दूसरों से न कभी कुछ माँगा न दूसरों से कुछ लिया। उसकी सभा आदान प्रदान करने वालों की सभा नहीं रही है। उसका दरबार मागने वालों का दरबार रहा है।

जो दाता है, उसमें लेने वालों की परख नहीं होती, वह मोल-भाव नहीं करता वह सामर्थ्य और योग्यता को नहीं देखता क्योंकि सामर्थ्य और योग्यता भिक्षा मांगने नहीं आते। वह आँख मूदकर अपनी प्रेरणाओं के अनुसार देने में विश्वास करता है।

इर्द-गिर्दवालों का असर हरेक पर पड़ता है, नेहरू भी उन लोगों के असर से नहीं बच सकता जो उसके इर्द-गिर्द रहते हैं। सौभाग्य का बात है कि नेहरू का विवेक इतना विकसित है कि वह अधिकांश मौकों पर सभल जाता है, न्याय और औचित्य उसकी सहायता को आ जाते हैं। लेकिन अक्सर वह बिना जाने-बूझे गलतियाँ कर बैठता है—ऐसी गलतियाँ जो देश के आन्तरिक संगठन में बाधक हो सकती है।

धोबियों के चौधरी सरकारी खर्चे से प्रांत व्यापी दौरा करेंगे

लखनऊ, पता चला है कि निकट भविष्य में धोबियों के चौधरी दवे का दौरा करगे। इस दौरे का इन्त जाम सरकार ने किया है और दौरे का सारा खर्च सरकार उठा रही है।

कारण?

देहातों में धोबियों ने कई जगह कपड़े धोने के पेशे से हाथ धो लिए हैं और कई जगह वे 'अछूत' भंगियों के कपड़े धोनेसे इनकार कर रहेहैं। धोबियों के चौधरी ऐसी जगहों पर जाकर समझायेंगे कि और भेद-भाव बरतें तो बरतें धोबियों को यह काम शोभा नहीं देता। उन्हें तो अपना परम्परागत काम जारी रखना चाहिए—बगैर जात पांत और ऊँच नीच का भेद-भाव किये।

यह भी पता चला है कि सरकार ने अखिल भारतीय न्यायी समाज (नाई) महा सभा के पदाधिकारियों से भी अपील की है कि वे अपने जाति भाइयों के दाढ़ी न बनाने के आन्दोलन को खत्म करें।

'आर्यसमाज और भारतीय नेतृत्व'

(१)

[ले० आचार्य हरिश्चन्द्र वाली एम. ए., पी. ई. एस. (रिटायर्ड)

समय था जब भारतवर्ष का नेतृत्व आर्य समाज के पावों चूमने को था। स्वर्गीय ला. लाजपत राय भारतवर्ष पर चोटी के लीडर के नाते छाये हुये थे। भाई परमानन्द राज विद्रोही के रूप में कारागार में पड़े थे और उनके महान व्यक्तित्व के प्रभाव से पञ्जाब के अकूर क्रान्तिकारी कई नवयुवक "अच्छेद्योयमदाह्योयम्' इत्यादि का पाठ पढ़ते हुये फांसी पर झूम गये। मैं दिनरात इन नवयुवकों के दर्शन किया करता था। और लाजपत तिलक युग में आर्य्य समाजी अग्रसर थे। महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द सारे भारतवर्ष में विद्या सम्बन्धि क्षेत्र में डी, ए, वी तथा गुरुकुल संस्थाओं के गौरव सम्पन्न शिखर पर अद्वितीय क्रान्ति से चमकते थे। और विदेश के दूर दर्शी लोग आर्य्य समाज को एक ऐसी देवी चिंगारी समझते थे कि जो किसी समय सब संसार के पाप तथा दु:ख मय जीवन को स्वर्गीय साचे में ढाल देगी।

परन्तु ला. लाजपत राय, पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी व मुनिवर महात्मा हंस राज जी के छिन जाने के पश्चात आर्य्य समाज चोटी के नेताओं से शून्य हो गया क्योंकि आर्य समाज ने प्रचार तथा सर्वसाधारण के जीवन निर्माण को गौण समझा संन्यासियों, ब्राह्मणों उपदेशकों तथा पण्डितों को गृहस्थियों वकीलों, ठेकेदारों चन्दा देने वाले धना लोगों के शरण में दे दिया। और संस्थाओं के बढ़ते हुये जाल में आर्य्य समाज फंस गया संस्थाओं के लिये धन की आवश्यकता अधिक व जीवन की आवश्यक्ता न्यून, अतः आर्य्य समाज से ऋषि का दिया हुआ धर्म से स्वाभाविक प्रेम कम हो गया और लोकेषणा इतनी बढ़ गई कि जीवन हीन लोगों ने भी लोकेषणा के भूत के प्रभाव से आर्य्य समाज का अपने अहंकार तथा अधिकार प्राप्ति के लिये दुरुपयोग करना आरम्भ कर दिया आर्य्य समाज का फैलाव तो बढ़ता गया परन्तु जीवन तथा बलशक्ति कम हो गई। शरीर मोटा हो गया संस्थाओं की चरबी बढ़ गई परन्तु हृदय कमजोर हो गया। आर्य्य समाज ने अपना सारा धन मन तथा तन विद्या सम्बन्धि क्षेत्र में लगा दिया "वेदों का पढ़ाना" संस्थाओं में विदेशी शिक्षा के बोझ के नीचे दबकर मृतवत हो गया और आर्य समाज भी उसी दशा को प्राप्त हो गया।

धीरे २ आर्य्य समाज अध्यापकों, वकीलों, ठेकेदारों तथा सम्पादकों का आधुनिक चातुर्य सम्पन्न समुदाय बन गया जिन की जिह्वा तथा लेखनी तो अत्यंत तीक्ष्ण थी परन्तु जीवन के अन्दर क्रियात्मक धर्म तथा ऋषि प्रदर्शित पथ की झलक न रही। संन्यासियों वेद के पण्डितों विरक्त महात्माओं की न्यूनता होने लगी।

आर्य्य समाज के दूसरे युग के रूप में विद्यावृद्धि देशभक्ति की उत्कट भावना तथा हरिजन उत्थान उत्कर्ष पर थे। देश भक्ति व हरिजन उद्धार कांग्रेस ने ले लिये और महात्मा गान्धि जी ने उन्हें अपने जीवन काल का तथा कांग्रेस का आदर्श बना लिया अतः आर्य्य समाज के नेतृत्व में इस बात में भयानक धक्का लगा था क्योंकि आर्य्य समाज के नेता तथा अनुयायी कांग्रेस में कूद गये और स्वतन्त्रता की लड़ाई में गान्धी जी के झंडे के नीचे चले गये और सामायिक राज नीति तथा आन्दोलनों ने आर्य्य समाज के अन्दर शून्यता पैदा कर दी। कांग्रेस में वजारतें थीं एसम्बिलियों के पद और लोकेषणा का अपूर्व पूर्ति लोकेषणा के रोग मेंग्रस्त आर्य्य समाजी कुछ तो अपने रोग की भावना से और कुछ इस भावना से कि देश स्वतन्त्र कराना पहला काम है स्वतन्त्र भारत में प्राय. आर्य्य समाज का प्रचार श्रद्धा से हो सक्ता है आर्य्य समाज के झंडे को मुख्य रूप में छोड़कर इसे गौण समझते हुये तिरंगे झंडे के नीचे एकत्रित हो गये और यह भी गौरव की बात है कि यह लोग स्वतन्त्रता की लड़ाई खूब लड़े क्योंकि ऋषि की कृपा से इन के मन सुलझे हुये थे और देश हित की भावना सच्ची थी। परन्तु मुसलिम तो नैशनलिस्ट मुसलिम बनकर कांग्रेस में दाखिल हुए और आजतक मौलाना आजाद इतने ही पक्के मुसलमान हैं जितना कि कोई और मुसलिम। और यह बात मैं उन के गौरव का चिन्ह समझता हूं। सिख नैशनलिस्ट सिख बन कर गये। परन्तु आर्य्य समाजी अपने धर्म के जेवर को अपने साथ न ले गये। अब जब विधान परिषद् में भारत का विधान बना तो मनु भगवान तथा ऋषि दयानन्द के चेलों ने उसका सामना श्री अम्बेदकर के हाथ में छोड़ दिया प्रान्तीय सरकारों में तथा एसेम्बलियों में आर्य्य समाजी वजीर भी है और मैम्बर भी परन्तु वह अपने प्रति दिन के जीवन में तथा देश निर्माण की भावनाओं तथा आयोजनाओं में ऋषि दयानन्द को सर्वथा भुला चुके हैं और इस लिये आर्य्य समाज का नेतृत्व सर्वथा अधरंग का शिकार हो रहा है।

मैं आर्य्य समाजी नेताओं तथा सर्वसाधारण से प्रार्थना करूंगा कि इस दृष्टिकोण से आर्यसमाज की अवस्था को सोचते हुए अब स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर देश भर के आर्य्यसमाजी स्वतन्त्र भारत निर्माण में नेतृत्व फिर अपने हाथ में लें। क्योंकि मुझे भय है कि यदि आर्य्यसमाजी सनातन धर्मी तथा अन्य हिन्दू धर्म्म से सम्बन्ध रखने वाले लोग बिना विलम्ब के अथवा सम्मिलित भारतीय सांस्कृतिक फ्रन्ट न बनायेंगे तो देश अर्थवादियों के चंगुल में फंसकर आर्य्य-धर्म्म हिन्दु धर्म्म तथा सारे महात्मा गांधी के धर्म्म भावों को त्याग कर विदेशी इज्मों का शिकार हो जावेगा। मैं चाहता हूँ कि आर्य्यसमाज फिर अपना नेतृत्व सम्भाले, एक भारतीय सांस्कृतिक झण्डे के नीचे खड़े हो जाते और संगठित होकर नेशनलिस्ट आर्य्यों के रूप में कांग्रेस के अन्दर संगठित हो जाते और कांग्रेस को अच्छे चरित्र वाली धर्मी-पुरुषों का संगठित भारतीय संस्कृति को बचाने वाली जमायत बना सकते इन भावों का प्रचार करने के लिये मैं चाहता हूँ कि देश भर में आर्य्यस्थान आन्दोलन चलाया जावे जो कि साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर आर्य्यसमाज के नेतृत्व में संसार भर में आर्यजाति के सारे अंगों प्रत्यंगों को एक सांस्कृतिक झण्डे के नीचे खड़ा कर सके। जो जो आर्यसमाजी नेता तथा महानुभाव मेरी इस आयोजना से सहमत हों और आर्यप्राज को सिख नैशनलिस्ट तथा मुसलिम नैशनलिस्ट बनाक की भांति आर्य नैशनलिस्ट बनाक का रूप देने में सहयोग दे सके वह मुझसे पत्र व्यवहार करें। मैं चाहता हूँ कि भारत वर्ष की प्रतिनिधि सभायें इस कार्य्य को अपने हाथ में लें और आर्यसमाज फिर से स्वतन्त्र भारत निर्माण में नेतृत्व अपने हाथ में ले। धर्म परायण सैक्यूलर सांस्कृतिक संगठन ही भारत के शरीर तथा आत्मा को बचा रक्खा है।

नवम सम्मुल्लासमन्तार्गत भौतिक शब्द

(पृष्ठ ७ का शेष)

सरस्वती हो मुक्ति में भौतिक शरीर का रहना मानते हैं अपितु पूज्य भगवान कृष्णद्वैपायन, श्री महाशय जेमिनि आचार्य तथा आदरणीय श्री शंकराचार्य जी भी मानते हैं। देखिये——

भाव जैमिनि र्विकल्पामननात्

वेदान्त अ० ४, पा ४ सूत्र ११

अत्र शांकरभाष्यम्—

जैमिनिस्त्वाचार्यो मनोवच्छरीरस्यापि सेन्द्रियस्य भाव मुक्तं प्रति मन्यते। यत "स एकधा भवति त्रिधा भवति" छा० ७,२६,२ इत्यादिनानेकधाभावमामनन्ति नह्यनेकधात्वं विना शरीर भेदेनाञ्जसी-स्यात्। यद्यपि निर्गुणायां भूमविद्याशा-मयमनेकधोभावे विकल्प पठ्यते, तथापि विद्यमानमेवेदं सगुणावस्थायामैश्वर्यं भूमविद्यास्तुतये सङ्कीर्त्यत इत्यत सगुणा विद्याफलभावेनोपतिष्ठित इ युच्यते।

ब्र० दर्शनशाङ्कर भाष्य ४-४ ११

अब न्याय भाष्य (वात्स्यायन) जिसे कि सब लोग प्रामाणिक मानते हैं का भौतिक शरीर रहित जीव का कोई भोग संभव नहीं वह प्रकरण भी देखिये–

"शरीरादि सम्बन्ध प्रतिबन्ध हेतुरितिचेत्? न। शरीरादीनामुपभोगार्थत्वात् विपर्ययस्य चाननुमानात्" तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्ग न्याय अ. १. आ० १ सू. २२ भाष्य यतोपरोक्तन्यायिकस्य भाष्य इदमाव तम स्यान्मतम्-संसारावस्थस्य शरीरादिसम्बन्धो नित्यसुखसंवेदनहेतो प्रतिबन्धक तेनाविशेषो नास्तीति। एतच्चायुक्तम्-शरीरदय उपभोगार्थास्ते भोगप्रतिबन्ध करिष्यन्तीत्यनुपपन्नम्। न चास्त्यनुमानमशरीरस्यात्मनो भोग कश्चिदस्तीति।"

इस प्रकार प्रत्यक्ष, अनुमान तथा व शब्द प्रमाण से सिद्ध है कि बिना भौतिक साधनों के सुखादि का उपभोग जीव द्वारा सम्भव नहीं। फिर भी भौतिक शब्द को उसके प्रतियोगी रूप में रखना किस प्रकार तर्क-संगत है। अस्तु!

हम अपने इन शब्दों में वैदिक यन्त्रालय के अथवा उन सभी विवेकी विद्वानों से विनम्र प्रार्थना करेंगे कि वे इसका प्रत्यक्ष विवेचन करके जो पाठ अधिक उपयुक्त परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखा गया है उसे ही रहने दें। ऐसा करने से ही वे स्वामी जी के महत्वपूर्ण विचारों के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर सकेंगे। थोड़ी देर लिये यदि हम यह भी मान लें कि "। दूसरा + अभौतिक" पाठ ही ठीक है। तब क्या हम ऐसी आशा नहीं कर सकते कि उक्त सज्जन मूल पाठ को किसी भी प्रकार के संशोधन से मुक्त रखें और विद्वानों के समालोचनार्थ श्री स्वामी दयानन्द के शब्दों को ही निःशङ्क होकर रहने दें।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू की वकालत

[ले०—डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, गवर्नर पश्चिमी बङ्गाल

जवाहर लाल ने बड़ी बहादुरी से एक घंटे से अधिक बहस की। इस न्याय के ब्वार की धारा के प्रतिकूल कौन हाथापाई कर सकता था। मैं सोचता हूँ सबसे अनुभवी वकील भी वह गए होते।

जवाहर लाल इसका मुकाबला न कर सके। जवाहर लाल की क्या बात है! जब रफीक भी कुछ न कह सके। उसी वक्त फैसला सुनाया गया। अपील की स्वीकृति दी गई और मय खर्च के मुकदमा खारिज हो गया।

कानपुर के लोगों की उत्सुकता और बुद्धिमत्ता का अनुमान किया जा सकता है। मावज के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। वे पुनर्वार दौड़ता हुई आनन्द भवन आई। वे बहुत गेई और बिलखी और मोतीलाल जी ने इन्साफ के पुनरावलोकन लिये, जो उनके लिये एक अस्वाभाविक बात थी, दरख्वास्त पेश किया। एक जज छुट्टी पर चले गए। इसलिए इस प्रार्थना पत्र की प्रारम्भिक सुनवाई कई मास बाद हुई। मैं भी सरोकार रखने वाले श्रोता की तरह बैठा था। जब प्रार्थना पत्र पर पुकार हुई तो मोतीलाल जी उठे। जैसे ही कि उन्होंने वास्तविक बातें बतलाई और बहस करने ही जा रहे थे कि सर हेनरी तेजी से बोले:—पण्डित, मुझे यह मामला अच्छी तरह याद है और जवाहर लाल ने इस पर अच्छी तरह से बहस की थी। चाहे सच हो या झूठ इस अदालत में किसी मामले पर दो बार बहस नहीं हो सकती। प्रार्थना पत्र अस्वीकृत। दूसरा मुकदमा लो।" उन्होंने यह सब बड़े हास्य व विनोद पूर्ण ढंग से इतनी शीघ्रता से कहा कि पंडित मोती लाल जी भी हंसी न रोक सके, हम लोग और जज महोदय भी हंस पड़े। उस दिन जवाहर लाल अदालत में उपस्थित नहीं थे और मुझे बड़ा विस्मय है कि वे इस मामले को याद रखते हैं या नहीं। राष्ट्र का जीवन, जिसमें उनका जीवन गुथा हुआ है, पिछले ३२ वर्षों से बड़ा सङ्कटपूर्ण और जोखिम रहा है।

१९१९ के बाद न्यायालयों में जवाहर लाल कई बार उपस्थित हुये, लेकिन वकील की हैसियत से नहीं किन्तु कटघरे के अन्दर कैदी की हालत में। इस प्रकार न्यायालयों में उनकी उपस्थिति, राष्ट्रीय कहानी के ऐतिहासिक अंग की पुष्टि करेगी। स्वतन्त्रता की प्रगति में यह मील के पत्थरों के तुल्य रही।

आई० एन० ए० के मुकदमें में १९४५ की ऐतिहासिक घटना के अवसर पर वे वकील की हैसियत से अन्तिम बार उपस्थित हुये। बृटिश हुकूमत जब से भारत में शुरू हुई, मुझे कोई ऐसा अवसर याद नहीं आता, जब कि वकालत में प्रमुख एवं प्रसिद्ध तथा जनता में ख्याति लब्ध बुद्धिमानों का ऐसा जमघट कभी हुआ हो। उस वर्ष जनता की दृष्टि में आई० एन० ए० के लोग देश की स्वतन्त्रता के उन्नायक समझे जाते थे। उस लक्ष्य के सम्मान के हित जवाहर लाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, भूला भाई देसाई बक्सी टेक चन्द, कुंअर दिलीप सिंह, पी० के० सेन, आसफ अली इत्यादि वकालत करने के लिए उपस्थित हुए। केवल इन नामों की गणना करने से ही मस्तिष्क पट पर उन दीर्घ जीवनों की स्मृति साफ दिखलाई पड़ती है जो देश की सेवा के हित राष्ट्रीय मंच पर, हाईकोर्ट की बैंच पर, वकालत के पद पर और व्यवस्थापिका सभाओं में व्यतीत हुये थे। उन हलचल के दिनों में प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले और चित्त को आनन्दित करने वाले अनुभवों में मैं उस शानदार सङ्घ के एक विनीत सदस्य के नाते, समभागी रहा। जवाहर लाल का उस अवसर पर प्रगट होना, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के, जो कठिन परिस्थितियों में महान व्यक्तियों द्वारा संचालित रहा, एक विशेष चिन्ह व प्रतिरूप के तुल्य था। आई० एन० ए० के मुकदमें की विस्तृत व्याख्या मैं यहाँ नहीं करूँगा। यह दूसरी कहानी है।

जवाहर लाल अब अपने भाग्य गर्व प्रारब्ध के उच्च शिखर पर हैं। वे इतिहास में भारतीय मुक्ति और स्वतन्त्रता के सम्पन्न कार्य, रक्षा व कोषण करने में वकील की हैसियत के संलग्न हैं। आज भारत में घर घर प्रार्थना की जाती कि वे दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें पुण्य कार्य को प्रतिपादित करें, और उनका प्रयत्न सफलता रूपी मुकुट से विभूषित हो, जिससे कि यह प्राचीन देश गौरवान्वित हो और यहां के निवासी समृद्धि शाली बनें।

रेडियो का हिन्दी विरोध

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के मन्त्री ने रेडियो की नीति के सबंध में निम्न वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा है:—

काशीनागरी प्रचारिणी सभा बहुत दिनों से अखिल भारतीय रेडियो की नीति विधि देख रही है। विदेशी शासन के समय वह सर्व रूपेण अभारतीय संस्था थी। जब देश में अपना राज्य स्थापित हुआ, यह आशा की गई कि रेडियो से देश की आत्मा की ध्वनि का विस्तार होगा। बहुत खेद और लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि रेडियो विभाग की नीति में समुचित परिवर्तन नहीं हो सका। सभा की नीति कभी झगड़े की अथवा अकारण किसी के विरोध का नहीं है। किंतु जब यह निश्चित हो गया कि १. गीता ही नहीं रामचरित मानस ऐसे ग्रन्थों का पाठ बन्द कर दिया गया, २ जितनी नियुक्तियाँ हुई और हो रही हैं ऐसे लोगों की हैं जिन्हें हिंदी साहित्य ही नहीं भाषा का भी सर्वथा अज्ञान है, ३ अन्य कार्यक्रम की अपेक्षा हिंदी नाटक, कहानी, कविता कीर्तनों के लिये कम समय दिया जाता है, ४ हिंदी विद्वानों और कवियों के नाम पर अनधिकारी व्यक्तियों को बुलाकर हिंदी का अपमान किया जाता है, और ५ असांस्कृतिक वातावरण रेडियो विभाग में बनाया जा रहा है, तब सभा को क्लेश हुआ।

रेडियो द्वारा देश विदेश में हमारी भाषा और भावों का प्रचार होता है। इससे सभा को भय है कि जो रेडियो की वर्तमान नीति है, और जिस प्रकार के कर्मचारी वहाँ हैं उनसे हमारी भाषा तथा साहित्य की विकृति का भय है। इस लिये सभा उन सब हिंदी प्रेमियों से प्रार्थना करती है कि जब तक यथोचित सुधार न हो जाय तब तक रेडियो विभाग से किसी प्रकार का सहयोग न करें।

रेडियो की सलाहकार समितियों का केन्द्र तथा प्रान्त में पुनर्संगठन हो जिनमें हिन्दी के विद्वान् रखे जायँ।

प्रत्येक स्टेशन पर डिरेक्टर, प्रोग्राम असिस्टेन्ट तथा अन्य कर्मचारी जिनका विशेष विभाग से सम्बन्ध है हिंदी के जानकार रखे जायँ।

समाचार तथा असरकारी विक्षेप करनेवालों की भाषा हिंदी हो।

जो कवि, साहित्यकार और पत्रकार बुलाये जायँ वह अपने विषय के योग्य ज्ञाता हों।

२ सभा उन सब कवियों लेखकों, पत्रकारों को बधाई देती है जिन्होंने रेडियो के बहिष्कार में चरण बढ़ाये हैं, और आशा करती है कि उनका नेतृत्व हमें सफलता प्रदान करेगा।

कृष्णदेवप्रसाद गौड़, प्रधान मंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा काशी

निष्क्रांत संपत्ति आर्डिनेन्स बदला जाय

नयी दिल्ली, भारत सरकार द्वारा जारी किये गये नये निष्क्रांत सम्पत्ति आर्डिनेन्स के विरोध में आगामी ४ दिसम्बर को देश भर में शरणार्थियों तथा उनसे सहानुभूति रखने वाले लोगों द्वारा विरोध दिवस मनाया जायगा। यह निश्चय आज अ० भा० शरणार्थी संघ की कार्यसमिति और शरणार्थी कार्यकर्ताओं तथा उनसे सहानुभूति रखने वालों की संयुक्त सभा में किया गया। युक्तप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन अध्यक्ष पद पर थे।

सभा में वर्तमान निष्क्रांत सम्पत्ति आर्डिनेन्स की तीव्र आलोचना करते हुए प्रत्येक भारतीय से यह अपील की गयी कि शान्तिमय और वैधानिक उपायों से इस आर्डिनेन्स के विरुद्ध आन्दोलन करें और सार्वजनिक सभाएं करके आर्डिनेन्स में परिवर्तन कराने की मांग करें।

सभा में यह भी निश्चय किया गया कि आर्डिनेन्स को बदलवाने के निमित्त जनमत तैयार करने के लिए २६ नवम्बर को दिल्ली में सार्वजनिक सभा की जाय।

टण्डन जी का वक्तव्य

टण्डन जी ने एक वक्तव्य में सभा के निर्णयों का समर्थन करते हुए कहा है, मैं भी यह अनुभव करता हूँ कि केवल शरणार्थियों के हित की दृष्टि से ही नहीं बल्कि राष्ट्र के हित की दृष्टि से भी इस आर्डिनेन्स में रद्द बदल करने की आवश्यकता है। पार्लमेंट के अगले अधिवेशन में इस आर्डिनेन्स को कानून का रूप देते समय यह संशोधन कर दिये जाने चाहिये। प्रे० ट्र०

वि० "आत्मिक उन्नति और आर्य समाज"

ले० विद्यावृत्त प्रियव्रत शास्त्री

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसके मुख्य उद्देश्यों में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारिरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" भी एक मुख्य उद्देश्य रखा है। महर्षि ने आर्य समाज के सम्मुख यह कितना सुन्दर और महान् उद्देश्य स्थापित किया है। वस्तुतः आत्मिक उन्नति ही मानव जीवन की महती विशेषता है। इसके द्वारा ऋषि महर्षियों मुनियों एवं महापुरुषों ने संसार में अद्भुत आश्चर्यकारक महान कार्य किये हैं। योगिराज भगवान कृष्ण ने अपने जीवन में कैसे कैसे अपूर्व कार्य आत्मिक उन्नति के द्वारा ही किये। महर्षि वेदव्यास जी ने आत्मिक शक्तियों के विकास से ही महाभारतान्तर्गत "जय" इतिहास की तीन वर्ष में रचना की थी। आचार्य दयानन्द ने योग साधन द्वारा ही कितनी अद्भुत एवं अलौकिक आत्मिक उन्नति की थी, जिस के बलपर समस्त भारतवर्ष में घूम कर शुद्ध सनातन वैदिक धर्म का स्थापन किया। संसार के बड़े बड़े प्रलोभनों और भयों से ऊपर उठकर ऋषि ने अपने स्वल्प जीवन काल में ही कैसा और कितना अद्भुत कार्य कर के दिखला दिया, और उस कल्याण मार्ग के प्रवाह को निरन्तर प्रवाहित करने के लिये ही आर्य समाज की स्थापना कर के उसे वैदिकधर्म के राजमार्ग का प्रवाह दिखाकर स्वयं परम पद को प्राप्त हो गये और आर्य समाज के लिये प्रलय से पूर्व कभी भी सर्वथा न समाप्त होने वाले अत्यन्त महान कार्य को छोड़ गये। मुझे अत्यन्त आश्चर्य एवं दुःख उन स्वल्प बुद्धि मनुष्यों पर होता है जो अपने को महाबुद्धिमान समझते हुए कहा करते हैं कि अब अब आर्य समाज की कोई आवश्यकता नहीं रही उस का कार्य समाप्त हो चुका है पूरा हो चुका है है आदि"।

मानव जाति की वर्तमान दुर्दशा देखकर किस सहृदय मनुष्य का हृदय कम्पायमान न हो उठेगा। आज संसार त्रिविधताप से पूर्ण रूपेण संतप्त हो रहा है। घोर हिंसा चोरी डाके छल कपट दम्भ पाखण्ड मिथ्या अभिमान पक्षपात घोर व्यभिचार और तुच्छ स्वार्थों ने मानों इस मानव जाति को पागल सा बना दिया है। मनुष्य जन्य विपत्तियों के अतिरिक्त भूचाल आदि घोर दैवी आपत्तियों ने किन धीर हृदयों को भी एक बार क्षुब्ध नहीं किया है। मानव जाति जिस की शोभा प्रकृति के स्वामियों में थी आज प्रकृति की दासता की घोर शृंखलाओं में जकड़ दी गई है। आज संसार के अधिकांश मनुष्य आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को भूलकर अन्य विश्वास और नास्तिकता के गहरे गर्त में जा पड़े हैं। रजोगुण और तमोगुण ग्रस्त मानव अविद्याजन्य अन्धकार में पड़कर नष्ट भ्रष्ट हो रहे हैं।

तत्वज्ञानी आत्मज्ञानी महर्षियों की वह "कोयमात्मेति वयमुपास्महे कतर स आत्मा" आत्मज्ञान की चर्चा आज कहां है। आत्मिक उन्नति की ओर आर्य समाज ने कितना ध्यान दिया व दे रहा है। आर्य समाज का कितना समय शक्ति इस ध्येय को पूरा करनेमें लगी या लग रही है। अब देश स्वतन्त्र है हमारा यह प्रधान कर्तव्य हो कि हम अपना समय और शक्ति इस ओर पूर्ण रूपेण लगावें केवल कथनमात्र से कार्यसिद्ध होने वाला नहीं है, आत्मिक शक्ति पर ही अन्य दो शक्ति शारीरिक एवं सामाजिक अवलम्बित है यदि हमारी आत्मा बलवान नहीं है तो शरीर एवं समाज भी बलवान नहीं बन सकेंगे। केवल बाह्य आडम्बरों से कोई काम नहीं होता। विद्या और तप से ही आत्मा को शुद्ध एवं बलिष्ठ बनाया जाता है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि "आत्मवञ्चना और मिथ्या आत्म श्लाघा कभी भी किसी भी व्यक्ति या समाज के उत्थान का कारण नहीं हुई। इस सब बाह्याडम्बर को छोड़ कर वेद एवं ऋषि महर्षियों द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चले आत्मिक उन्नति के साधन आत्मिक परमात्म चिन्तन एवं वेदादि सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय आदि है। यह आत्म ज्ञान का उपदेश मानों उपनिषदों का हृदय है। इस से संतप्त हृदयों को सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है।

मैं समझता हूं कि आर्यजगत के नेता और उपदेशक इन सब गम्भीर समस्याओं पर विचार करेंगे और उन्हें करना भी चाहिये। आर्यसमाजके कर्णधार यदि वास्तव में देखा जावे तो उपदेशक ही है। आर्य समाज का एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार इन्ही की वाणी एवं लेखनी से सम्भाविक है। अतः आर्य समाज की उन्नति को ध्यान मे रखते हुए हमारा प्रथम कर्तव्य है कि हम आत्मिक उन्नति करें तथा आर्य समाज की वास्तविक रूप रेखा इस प्रकार की निर्माण करें कि जिससे "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की हमारी एवं आचार्य दयानन्द की स्वर्णिम आशा पूर्ण हो और हम निकट भविष्य में ही आचार्य दयानन्द प्रदर्शित मार्ग पर संसार को आचरण करता हुआ देखें। परमपिता परमात्मा हम को विद्या बुद्धि एवं बल से युक्त करे जिससे हम इस कार्य क्रम को पूर्ण कर सकें।

चेतक

(पृष्ठ ९ का शेष)

जब कुछ देर बाद भी महाराणा को उनके आने का कोई चिह्न दृष्टिगोचर न हुआ, तो उसने चेतक के चाल धीमी कर दी। तब स्वामी और सेवक में जैसे मन ही मन मूक वार्तालाप चलने लगा। महाराणा ने कहा—'शाबाश' चेतक शाबाश, आज केवल तुम्हारे ही बल से मेवाड का सौभाग्य बचा रह गया। तुम न होते तो न जाने क्या होता!

'धन्यवाद, स्वामी धन्यवाद। मैंने तो केवल अपना कर्तव्य पूरा किया है। मांना झाला का बलिदान मैंने अपनी आँखों से देखा था। यदि मैं केवल इतना भी न करता तो कितने बड़े भारी कलक की बात होती?

'परन्तु अब तो तुम बहुत थक गए होगे?

'हाँ स्वामी थक तो बहुत बुरी तरह गया हूँ। थकान से इस समय पेशी पेशी अकड़ी जा रही हैं। पर अब तो मंजिल दूर नहीं होगी?

'मंजिल अब कुछ दूर नहीं है। आज तुम्हारी खूब अच्छी मालिश होगी और मेवाड की कोमल २ घास तुमको खाने को मिलेगी।'

"धन्यवाद, स्वामी हार्दिक धन्यवाद।"

तभी पीछे की ओर से मेवाड़ी बोली मे किसी को पुकारता हुआ स्वर सुनाई पड़ा "नीले घोड़े के सवार हो। रुकना, ज़रा रुकना"

अपने और पराए की बोली पशु समझते हैं, चेतक रुक गया। महाराणा ने देखा कि कोई अकेला घुड़ सवार आता हुआ उन्हें पुकार रहा है। यह अकेला आदमी चाहे मित्र हो शत्रु, किन्तु थके हुये चेतक को दौड़ाने को उनका मन नहीं हुआ। शत्रु भी हो तो अब इससे अपने बल से ही निपटारा करना होगा, यह सोचकर राणा रुके रहे।

जो पास आया वह महाराणा का सगा छोटा भाई, किसी समय का प्राणांन्तक शत्रु शक्तिसिंह था। आज दोनों फिर प्रेम से मिले।

जिस समय दोनों भाई परस्पर स्नेहालिंगन कर रहे थे, उसी समय चेतक लडखड़ा कर गिर पडा। अत्यधिक श्रान्ति इससे अपना मूल्य चुका रही थी। एक काली छाया संध्या के धुंधले पड़ते प्रकाश में उसे ढांप रही थी। जहाँ माना झाला पहुँच चुका था उसी लोक से चेतक के लिए सुरीला संगीत पूर्ण आह्वान आ रहा था।

अत्यन्त विवशता भरी दृष्टि से चेतक ने महाराणा की ओर देखा "चल दिया स्वामी, अब मैं चल दिया, तुम्हारी और कुछ सेवा न कर सका"

महाराणा ने झट से अपने आप को भाई के स्नेहालिंगन से छुड़ा लिया और अपने फटते हुए हृदय को जैसे तैसे सम्भाल कर, चेतक के पास आकर प्यार से अपने दोनों हाथ चेतक के मुख पर रख दिए। चेतक ने इस स्पर्श को अनुभव किया। क्षण भर के लिए उसका सर्वाङ्ग पुलकित हो सिहर रहा। और अगले ही क्षण सदा के लिए अकड़ गया।

शक्तिसिंह अब पास आ गया था। उसकी ओर देखकर महाराणाने रुद्धकण्ठ से कहा—हल्दी घाटी का एक वीर योद्धा यहाँ बलि हो गया और उन्होंने कपड़े से अपनी आँखें पोंछ ली।

इसीसे कहता हूँ उस दिन रोने की एकमात्र मर्यादा कभी

हमारा—————— ——————देश

सार्वजनिक स्वास्थ्य

१९२० ई० के अंतर्वर्ती काल में भारत में औसत व्यक्ति की अनुमानित आयु का हिसाब २७ वर्ष लगाया गया, जब कि न्यूजीलैण्ड में अनुमानित आयु ६५, आस्ट्रेलिया में ६७, अमेरिका में ६१ इंगलैण्ड और जर्मनी में ६३ और जापान में ४७ माना गया।

१९३७ में बाल मृत्यु संख्या का अनुपात न्यूजीलैण्ड में ३१, आस्ट्रेलिया में ३८, अमेरिका में ५४ इंगलैण्ड में ५८ और ब्रिटिश भारत में १६२ था।

भारत में प्रति वर्ष २,००,००० माताओं की मृत्यु प्रसव पीड़ा से होती है।

भारत में स्वास्थ्य का स्तर बहुत नीचा है और रोग-प्रतिषेधक शक्ति भी बहुत क्षीण पायी जाती है।

भारत मे ६,००० आदमियों के पीछे केवल एक डाक्टर है। ब्रिटेन में प्रति ४०० व्यक्तियों पीछे १ डाक्टर है। भारत के ८५ प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। पर ६० प्रतिशत डाक्टर शहरों में।

६० प्रतिशत भारतीय राष्ट्र की साधारण स्थिति में भी पेट भर भोजन नहीं पाते।

प्रति वर्ष प्रायः १० लाख आदमी प्रति वर्ष क्षय-रोग से मृत्यु के शिकार बनते हैं और प्राय. ५० लाख आदमी इस रोग से पीड़ित रहते हैं।

भारत की तीन समस्याएं सबसे विकट है—अस्वास्थ्य, अशिक्षा और निर्धनता।

भारत में अंधों की संख्या प्राय २० लाख है।

३० प्रतिशत भारतीय पेट भर भोजन नहीं पाते और दूसरे ३० प्रतिशत अस्वास्थ्यकर खाद्य से पेट भरते हैं और बीमार पड़ते हैं।

साँप के काटने से भारत में प्रायः २०,००० मनुष्यों की मृत्यु प्रति वर्ष होती है।

चेचक में प्राय १॥ लाख आदमी प्रति वर्ष मरते हैं।

प्लेग से प्राय ५०,००० मौते प्रति वर्ष होती है।

भारत में प्रतिवर्ष विविध रोगों से जितने व्यक्तियों की मृत्यु होती है, उनमें ५० प्रतिशत १० वर्ष के नीचे की आयु वाले बच्चे होते हैं और ९६ प्रतिशत १ वर्ष के नीचे की आयु वाले।

भारत और पाकिस्तान में मिलाकर प्रति वर्ष २ लाख स्त्रियाँ गर्भ अथवा प्रसव सम्बन्धी रोगों से पीड़ित होकर मौत का शिकार बनती हैं।

भारत में बच्चे को जन्म देने वाली १,००० स्त्रियों में से २० की मृत्यु हो जाती हैं।

भारत में मृत्यु का अनुपात १,००० में १६०

गणित में दशमलव पद्धति का आविष्कार हिन्दुओं ने किया था। बीजगणित सम्बन्धी गणित पद्धति भी उन्होंने निकाली थी।

× × ×

महाभारत संसार का सब से बड़ा महाकाव्य है। अपने वर्तमान रूप में वह ग्रीक महाकाव्य 'इलियड' और 'ओडोसी' के सम्मिलित रूप से सात गुना बड़ा है।

× × ×

लोक-कथाओं तथा पशु पक्षी सम्बन्धी उपदेश कथाओं का प्रचार संसार में पहले पहल भारत में ही हुआ। ईसप की कहानियाँ पंचतन्त्र और हितोपदेश से ली गयी हैं। 'अलिफ लैला' (अरेबियन नाइट्स) की कहानियाँ भी 'कथा सरित्सागर' का रूपान्तर है।

× × ×

भारत में सर्व प्रथम समाचार पत्र 'बङ्गाल गजट' था, जिसका प्रकाशन २६ जनवरी १७८०, को कलकत्ते में आरम्भ हुआ था। इसका संपादक जेम्स हिकी नाम का एक अंगरेज था।

× × ×

दिल्ली की कुतब मीनार संसार की समस्त प्राचीन मीनारों में ऊँची है। उसकी ऊँचाई २३८ फीट है। इसे १२३२ में अल्तमश ने बनवाया था।

× × ×

सब से प्राचीन भारतीय लिपि ब्राह्मी है। भारत में प्रचलित समस्त (भारतीय) लिपियों की वह मूल जननी है। ब्राह्मी लिपि में लिखा गया सब से प्राचीन लेख जो अब तक प्राप्त हो सका है, वह ई० पू० ४८३ का है।

× × ×

प्राचीन भारत में लोहे का सब से प्रसिद्ध नमूना दिल्ली के लोह-स्तम्भ में पाया जाता है। वह सन् ३१० में निर्मित हुआ था इस स्तम्भ की विशेषता यह है कि उसमें इतनी शदियाँ बाद भी काई नहीं लगने पाई है। वह २२ फीट ऊँचा है और इसका वजन ६ टन बताया जाता है।

———

आवश्यक निवेदन

श्रीमान् मन्त्री जी आर्य समाज, युक्तप्रांत !

महोदय ! नमस्ते ।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा है कि "जो उन्नति करना चाहो तो" आर्यसमाज" के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जनें मिलकर प्रीति से करें, इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं" इस उद्धरण में महर्षि ने जनतन्त्र के मौलिक सिद्धान्त का सुस्पष्ट प्रतिपादन किया है और इसी के आधार पर आर्यसमाज का वैधानिक संगठन किया गया है।

आर्यसमाज के वैधानिक विकास में उत्तरोत्तर प्रगतिशीलता का सुसंचार करने के लिये पूर्ण जनतन्त्रात्मक आधार पर स्थानीय आर्यसमाज, आर्यप्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का क्रमशः वैधानिक विकास हुआ है निश्चित वैधानिक नियमों के अनुसार आर्य और आर्यसभासदों का आर्यसमाजों में निर्वाचन होता है, निर्वाचित आर्यसभासदों के द्वारा निर्मित साधारण सभा द्वारा प्रति वर्ष आर्यसमाज के पदाधिकारियों, अन्तरंगसदस्यों, प्रतिनिधि सदस्यों आदि का नियमित रीति से निर्वाचन किया जाता है। आर्यसमाजों द्वारा निर्मित आर्यप्रतिनिधि सभा के द्वारा प्रांतीय विविध-कार्यों के सुसंचालनार्थ प्रतिवर्ष वैधानिक नियमानुसार आर्यसमाजों से आये हुये प्रतिनिधियों की साधारण सभा में पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, सार्वदेशिक सभा सदस्यों आदि का निश्चित नियमानुसार निर्वाचन किया जाता है। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के द्वारा निर्मित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इसी प्रकार प्रति वर्ष अपना निर्वाचन करती है।

उपर्युक्त जनतन्त्रात्मक वैधानिक नियमानुसार आर्यसमाज एवं अन्य सभाओं का निर्माण प्रकट करता है कि प्रत्येक आर्यसमाज और इतर सभाओं का किस प्रकार अभिन्न सम्बन्ध है, किन्तु यह सम्बन्ध भी तभी प्रगतिशील रह सकता है कि जब प्रत्येक सम्बद्ध आर्य समाज और सभा अपने २ निर्दिष्ट वैधानिक नियमों के अनुसार यथायोग्य कर्तव्यों का सहयोगपूर्वक पालन करते रहें, क्योंकि पारस्परिक कर्तव्यों के पालन अधूरे ढङ्ग से करने या अन्य प्रकार से प्रमाद या शिथिलता प्रकट करने से किसी प्रकार सजीवता अथवा उत्कर्ष सम्भव नहीं हो सकता है। खेद की बात है कि इतना सुन्दर वैधानिक संगठन होते हुए भी आर्य सामाजिक क्षेत्रों में युगानुरूप प्रगति नहीं दिखाई पड़ती है। इसका मुख्य कारण है साधारणतया स्थानीय आर्यसमाजों की ओर से प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रति पर्याप्त मात्रा में सक्रिय सहयोग का अभाव। स्वाभाविक तो यह था कि प्रत्येक आर्यसमाज प्रति वर्ष अपने प्रतिनिधि गणों को सभा के साधारण वार्षिक अधिवेशन में भेजते रहते, नियमानुसार वार्षिक चित्रों को यथोचित रीति से सभा कार्यालय में भेजते रहते, और दशांशादि देय धनराशि नियत नियमानुसार देते रहते, किन्तु प्रायः आर्यसमाजों के द्वारा ऐसा न होते रहने के कारण सभा को ठीक प्रकार से न तो समस्त सम्बद्ध आर्यसमाजों की स्थिति का ही परिचय प्राप्त हो पाता है और न स्थानीय परिस्थिति के अनुरूप आर्यसामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक योजनाओं के अनुरूप प्रचार कार्य में ही सुविधा हो पाती है।

आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त से सम्बद्ध प्रत्येक आर्यसमाज का ध्यान विशेषरूप से आकृष्ट किया जाता है कि वह अपने २ समाजों की परिस्थिति का पूर्ण परिचायक नियत वार्षिक चित्र सभाकार्यालय से मगवाकर और भरकर भेजें, साथ ही इस बात का भी ध्यान रक्खें कि सभा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में अपने समाज के प्रतिनिधि अवश्य भेजें, दशांशादि देय धनराशि यथासमय भेजकर समाज एवं सभा कार्यों में विशेष स्फूर्ति तथा प्रभाव का संचार करें। ऐसा होने पर, "संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" इस मुख्य उद्देश्य को कार्य में परिणत करने में जो सुविधा होगी उससे प्रभावित स्वतन्त्र राष्ट्र और उसके प्रत्येक नागरिक वास्तव में आर्यसमाज को एक आदर्श महाजनतन्त्रात्मक महासभा स्वीकार करेंगे और उसके द्वारा प्रचारित धार्मिक सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक और आर्थिक योजनाओं के परिपालन में राष्ट्र का पूर्ण कल्याण अनुभव करेंगे।

निवेदक—

राजगुरु धुरेन्द्रशास्त्री	मदनमोहनसेठ	रामदत्तशुक्ल
प्रधान	का० प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, युक्तप्रांत।

गुरुकुल सूपा समाचार

पिछले दिनों जवाहर जयंति तथा "शारीरिक शिक्षण दिन" अति उत्साह से मनाये गए। ता० १९-११-४९ को गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता श्री प्रो० इन्द्रजी गुरुकुल निरीक्षण के लिए आ रहे। उन्होंने ब्रह्मचारियों की विविध कार्य-पद्धति और गुरुकुल की प्रवृत्ति देखकर संतोष प्रकट किया। ब्रह्मचारियों को अपने उपदेशों में गुरुकुल का महत्व बतलाया।

—गोरखपुर का वार्षिकोत्सव इस वर्ष ता० ९, १०, ११, १२ दिसम्बर ४९ ई० को सम्पन्न होगा। इसमें अनेक आर्य-विद्वान तथा साधु सन्यासी उपस्थित होंगे।

—अब की बार उप सभा बदायूँ ने गङ्गा स्नान मेला कंकोड़ा पर विशेष रूप से प्रचार करना निश्चित किया। कैम्प में लाउडस्पीकर का भलो प्रकार प्रबन्ध था श्री पूज्य प्रधान ला० सेवाराम जी उपसभा की अध्यक्षता में त्रयोदशी चतुर्दशी पूर्णिमा प्रतिपदा को बड़े समारोह पूर्वक प्रचार हुआ।

आर्य-गुरुकुल-टटेसर

इस वर्ष भी गुरुकुल का परीक्षा परिणाम अत्यन्त सन्तोषजनक रहा। संस्कृत विशारद के चारों छात्र उत्तीर्ण रहे ब्र सत्यपाल का स्थान पंजाव यूनिवर्सिटी में तीसरा नम्बर रहा। इस समय अष्टाध्यायी क्रम से सम्पूर्ण मध्यमा के चार छात्र तथा पंजाब शास्त्री के चार एवं हिंदी प्रभाकर के आठ छात्र हैं तथा अन्य परीक्षाओं के सब मिलाकर पचास छात्र हैं। पाँच (५) छात्रों के लिये स्थान रिक्त है। प्रवेशार्थी शीघ्रता कर लाभ उठावें। मन्त्री

गुरुकुल स्वर्ण जयन्ती समाचार

—स्वर्ण जयन्ती की तैय्यारियाँ जोर शोर से हो रही हैं। बम्बई और देहली मे धन संग्रह का कार्यारम्भ हो गया है। अन्य स्थानों में भी शीघ्र ही गुरुकुल सेवक पहुँचने वाले हैं।

जयन्ती महोत्सव के अवसर पर कई सभा सम्मेलन होंगे। संस्कृत सम्मेलन का सभापतित्व करना श्री गैडगिल महोदय ने स्वीकार कर लिया है। अन्य सम्मेलनों की सूचना भी शीघ्र ही समाचार पत्रों द्वारा जनता को दी जावेगी।

महाविद्यालय ज्वालापुर

—दशहरे की छुट्टियों में म० वि० के ४० ब्रह्मचारियों ने श्री हरिपाल जी शास्त्री तथा श्री दीनदयालु जी त्रिपाठी जी के साथ देहरादून तथा मसूरी का पैदल भ्रमण किया। इस यात्रा में श्री वैद्य अमर नाथ जी, श्री प० राधावल्लभ श्री ओम्प्रकाश जी गुप्ता श्री ला० पृथ्वी चन्द्र जी हरि श्री मन्त्री कौंग्रेस कमेटी मंसूरी, श्री महन्त रामराय जी देहरादून आदि महानुभावों ने भोजन तथा धन आदि से जो सहायता की उसके लिये म. वि. उक्त महानुभावों का कृतज्ञ है।

—आज ठीक एक मास के पश्चात् २१-११-४९ सोमवार को नव मुस्लिम मुहम्मददीन भटपुरा निवासी को आर्यसमाज विलासपुर रामपुर स्टेट में श्री पं० राम नारायण जी शास्त्री ने शुद्ध कर उसका पूर्व का नाम ख्यालीराम रख दिया और हरिजनों (चमारों) ने उसे अपनी बिरादरी में मिला लिया २) रु. समाज को दान में भी दिया, ख्यालीराम को कुछ मुस्लिम लोग भटपुरा जन्मस्थान से मरिया में जाते समय हस्तक्षेप किया और उसके समान ले जाने मे भी रुकावट कर रहे थे किन्तु आर्य समाज बिलासपुर के प्रमुखकार्य कर्ता श्री बालनाथ वानप्रस्थी तथा ला० रामकुमार जी आदि सज्जनों ने वहां जाकर सभी सामान उसे दिला कर भरिया में पहुँचा दिया।

आर्यजगत—

आर्यसमाज, गणेशगञ्ज मिर्जापुर

प्रधान—श्री पुरुषोत्तम लाल उर्फ लल्लन बाबू
उपप्रधान—श्री विश्वनाथ प्रसाद द्विवेदी
मंत्री—डाक्टर गङ्गाचन्द्र वैद्यशास्त्री
उपमंत्री—श्री कुंवर विश्व मित्र

—ता० १ १० ४९ को बिजयदशमी पर्व पर श्री गुमान सिंह बी० ए० मा० रजियाकोटी के लडके का शुभ विवाह श्री सुवेदार रोजर मानसिंह श्री खेड़ागाव नलहि की सुपुत्री श्री बिमला देवी के साथ श्री प० नागेन्द्र दत्त जी वैद्य की अध्यक्षता में और श्री बुद्धिसिंह जी वानप्रस्थी तथा श्री कल्याणसिंह जी डुमैला के प्रधानत्व में वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

आ० स० कायमगंज

—ता० १८ ११ ४९ को श्री मान् जिलाधीश की आज्ञानुसार जिला नशा निषेध समिति द्वारा नशा निषेध का कार्य मोहल्ला सदवाडा से आरम्भ किया गया। श्री मंगलदेव जी शास्त्री तथा श्री प० श्याम सुन्दर लाल के प्रभावशाली भाषण तथा नशानिषेध के सम्बन्ध में भजन हुये जनता की अच्छी उपस्थिति हुई। कितने ही महानुभावोंने शराब छोडने के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा पत्र भरे।

आर्यसमाज फ्रीलेण्डगंज-दोहद

इस समाज के उत्सव पर ता० १२, १३, १४ नवम्बर को आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा अजमेर के महोपदेशक श्री अमरसिंह वर्मा और भजनोपदेशक श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा के समयोपयोगी प्रवचन, व्याख्यान, चित्र प्रदर्शन और भजन एव गायन से जनता ऐसी आकृष्ट हुई है कि लगभग दो सौ पचास २५० व्यक्ति समाज के सदस्य बनने को उत्सुक हैं।

'आगर में शुद्धि कार्य'

आगर के आस पास के गांवों में रहने वाले बलाई एव चमारों में से लगभग पाँच हजार को ईसाई प्रचारकों ने ईसाई बना लिया है। मध्यभारत आर्य-प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री ठाकुर आत्मानन्द जी भजनोपदेशक गत मास वहाँ प्रचारार्थ गये थे। तत्पश्चात दयाशंकर सालवेशन मिशन की ओर से श्री प० देवप्रकाश जी भी गये और उक्त समाचार का निरीक्षण किया। तदनुसार मध्यभारत आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से इन पाँच हजार ईसाई हुये व्यक्तियों में प्रचार एव शुद्धि कार्य के लिये अनेक प्रचारक एव कार्यकर्ता वहाँ पर भेजे जाने वाले हैं।

—ता० १४-११-४९ दिन सोमवार को एक जन्म की मुसलमानिन की शुद्धि वैदिक रीत्यानुसार श्री मान्य प० शान्तीस्वरूप वेदशास्त्री द्वारा आर्य्य समाज मन्दिर धारीक पुर में सम्पन्न हुई। उपस्थित सज्जनों ने शुद्ध हुई बहिन के हाथ से मिष्ठान्न ग्रहण किया।

—२१ १० ४९ दीपावली (ऋषि निर्वाण के पुण्य पर्व) पर एक नव मुस्लिम की शुद्धी आर्य समाज बिलासपुर में श्री प० रामनारायण जी शास्त्री ने बडे धूमधाम के साथ कराई वर्तमान नवयुवक का नाम इब्बनमिया था शुद्धी के पश्चात् पूर्व का ठाकनलाल ही रक्खा गया। शुद्धी में लगभग २०० आदमी थे शुद्ध युवक के हाथ से सभी ने प्रेम प्रसाद प्राप्त कर अस्वादन किया ५) समाज को दान में भी दिया।

उत्सव-सूचना

आर्यभ्रमण सभा (अलीगढ) का २६ वाँ उत्सव ग्राम—दरियापुर में ता० २० ११ ४९ ई० को श्री स्वामी शातानन्द जी सरस्वती के सभापतित्व में बडे धूम धाम के साथ मनाया गया। जिसमें प्रात यज्ञादि के उपरांत श्री प० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा आर्यमुसाफिर, श्री बा. ओंकार जी "आर्य" श्री कु रणवन्तसिंह जी "साहित्य भूषण" आदि के राष्ट्र संगठन दलितोद्धार, विद्याप्रसार आदि विषयों पर, सारगर्भित भाषण तथा शिक्षाप्रद भजन हुये लगभग २० ग्राम की पधारी हुई जनता ने वैदिक धर्म के असली महत्व को समझा और गहरा प्रभाव पड़ा। श्री ठा लालसिंह जी दरियापुर निवासी ने आगन्तुक सज्जनों का भोजनादि से भारी सत्कार किया।

—आर्य समाज सुलतानपुर जिला नैनीताल का तृतीय वार्षिकोत्सव नगर कीर्तन सहित ता० २६,२७, २८ अक्तूबर सन् १९४९ ई० को बडी धूम धाम से मनाया गया। जिस में श्री अध्यक्ष महोदय श्री स्वामी अमृतानन्दजी, श्री प० गगाशरणजी सैलानी भजनोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त श्री रामस्वरूपजी मनोहर जसपुर, श्री प० हरदेवजी तथा श्री पडित शातिस्वरूपजी शास्त्री इत्यादि के बडे मनोहर भजनोपदेश तथा भाषण हुये।

—आर्य समाज पालीगज (पटना) का ११ वा वार्षिकोत्सव २, ३, ४ जनवरी १९५० तदनुसार पौष सुदी १३, १४, १५ दिन चन्द्रवार, मंगलवार तथा बुद्धवार को बडे ही समारोह के साथ होने जा रहा है। इस में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी विद्वान, तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। महिला सम्मेलन का भी आयोजन है।

—आर्य समाज मथुरा का ६६ वार्षिकोत्सव श्री राजगुरू धुरेन्द्र शास्त्री प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रात लखनऊके सभापतित्वमें दिनाक १२ १३ १४ नवम्बर १९४९ तदनुसार शनिवार, रविवार, सोमवार को समारोह पूर्वक आर्यसमाज मन्दिर मनाया गया था जिस में उच्चकोटि के महात्मा विद्वानों के धर्मोपदेश हुए तथा नगर कीर्तन भी ११ नवम्बर को हुआ।

—दिनाङ्क १४ ११ ४९ को आर्य समाज खायरी बाजार, झारन में हमारे परम पूज्य नेता प० जवाहर लाल नेहरू के जन्म दिवस के उपलक्ष में यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् पर महात्मा से उनके दीर्घजीवी होने के लिये मंगल-कामना की गई।

—हल्द्वानी आर्य समाज के प्रधान प० शंकरलालजी द्वारा अपनी इच्छा से त्याग पत्र दे देने से ३० ९-४९ की सायकाल आर्य समाज मन्दिर में प्रधान पद का चुनाव हुआ। बहुमत से प० गोविन्दरायजी गोयल आर्य समाज हल्द्वानी के प्रधान नियुक्त हुए हैं।

—आर्य समाज चान्दपुर का वार्षिक उत्सव २५ नवम्बरसे २८ नव० तक हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पधारे थे।

—५ नवम्बर शनिवार का प्रात काल ८ बजे चादूर रेल्वे में श्रीमान् मन्नालाल जी गुप्त के दोनों पौत्र तथा श्री० रामेश्वर जी गुप्त के पुत्र चि० सूर्यनारायण और चि० देवदत्त का उपनयन संस्कार श्री पं० दुर्गाप्रसाद जी शास्त्री भाषी प्रोफेसर आलनेड कॉलेज तथा दयानन्द एँग्लो वैदिक कॉलेज अजमेर निवासी द्वारा समारोह पूर्वक सादर सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर दयानन्द एँग्लो वैदिक अजमेर के सहायतार्थ एक हजार १०००) का सुस्त दान दिया गया। जो दानी सज्जनों के लिये अनुकरणीय है।

आर्य समाज गंगोह

आर्य समाज गंगोह सहारनपुर का वार्षिक उत्सव ता० ७-८ ९ नवम्बर सन् १९४९ ई० को बडे समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें बड़े बड़े पंडित विद्वान-महात्मा- सन्यासी पधारे हजारों स्त्री पुरुषों ने भाग लेकर धर्म लाभ उठाया उत्सव शांति पूर्वक समाप्त हुआ।

शोक समाचार

—आर्य्यसमाज दरियागञ्ज देहली पूज्य पाद श्रीस्वामी केवलानन्द जी महाराज की अकाल तथा हृदय विदारक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता है और अनुभव करता है कि ऐसे उच्चकोटि के सन्यासी की इस विकट समय में आर्य्य-जगत को बडी आवश्यकता थी।

भगवान से सविनय प्रार्थना करता है कि श्री स्वामी जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और समस्त आर्य्य जनता का इस दुःसह दुःख को सहन शक्ति दे।

—आर्यसमाज विरला लाइन्स में श्री स्वा० केवलानन्दजी के देहावसान पर शोक सभा करके हार्दिक खेद प्रकट किया गया।

—ता० ६–११–४९ रविवार को आर्य समाज चादूर (वदभ) में यहाँ के आर्य सेवक तथा कांग्रेस सेवक श्री सदाशिव गीरा गोस्वामी के निधन पर शोक प्रकट किया। तथा दिवङ्गत आत्मा को शान्ति और उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने के लिये जगन्नियन्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की।

अयोध्या को सुर भारती निगम, विद्यापीठ, गुरुकुल, गिलौला, बहराइच के श्रीयुत स्वामी आत्मानन्द जी अधिष्ठाता के आकस्मिकनिधन हो जाने पर गुरुकुल निवासी हार्दिक शोक प्रकट करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनके शोक सन्तप्त परिवारों को धैर्य्य तथा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

—श्री स्वामी योगानन्द जी यति आर्य जगत के अनन्य प्रेमी सेवक थे कुछ समय से उनकी विक्षिप्त स्थिति हो चली थी। ३० अगस्त १९४९ को वे एक सज्जन के साथ देहली गये। वहा पर १३ अगस्त को किसी दुर्घटना से उन्हे अधिक चोट आ गई और वे बेहोशी की हालत में किसी व्यक्ति द्वारा इर्विन अस्पताल नई देहली में १ ९-४९ को प्रवेश करा दिये गये। वहा पर ७-९-४९ को प्रातः काल उनका बेहोशी अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया। अस्पताल के कर्मचारियों ने उनका शव पुलिस के हवाले कर दिया पुलिस ने उनकी मृतक अवस्था में फोटोलिया और पोस्टमार्टम् के उपरान्त उनका दाहसंस्कार से वासमण्डी देहली के स्वयम् सेवको ने यमुना तट पर किया अब २८-९ ४९ को देहली पुलिस का आदमी फोटू लेकर यहां पूछ ताछ को आया तब उनकी मृत्यु का रहस्य जनता को मिला। स्थानीय आर्य समाज ने एक असाधारण बैठक बुला कर ९८-९ ४९ को एक शोक प्रस्ताव किया।

अदालती नोटिस

मुकदमा नं० ७३ सिकन्दर बनाम वलीमुहम्मदखाँ

सम्मन बनाम शख्स मुलजिम

(दफा ६८—ज़मीमा ५, नमूना नं० १)

ब-अदालत श्रीमान अडीशनल सिटी मजिस्ट्रेट साहब मैजिस्ट्रेट अव्वल जिला लखनऊ।

बनाम वलीमुहम्मदखाँ वल्द लालमुहम्मदखाँ कौम पठान पेशा — साकिन पटकापूर थाना कातवाली जिला कानपूर

हरगाह हाजिर होना तुम्हारा बगरज जवाबदेही इलजाम ४२१ आफा करी है लिहाजा बजरिये इस तहरीर क तुमको हुक्म दिया जाता है कि म अदालत मुनजकिरा बाला में बतारीख ९ माह दिसम्बर सन् १९४९ असालतन या वकालतन हाजिर हो। इस बाद में ताकीद जानों।

मुवर्रिखा २२ माह नवम्बर सन् १९४९ ई० — दस्तखत

मुहर अदालत — पेडीसमल मैजिस्ट्रेट

शीघ्र आवश्यकता है

एक स्वस्थ सुन्दर प्रतिष्ठित पढ़े लिखे स्वस्थ आर्य विचार के २२ वर्षीय नवयुवक के लिये (जिनकी वार्षिक आय कृषि फार्म से २०००) है और जो जाति से सूर्यवंशी नागगोत्र के चौहान ठाकुर हैं) एक सुशील सुन्दर गृह कार्य में ... कन्या की आवश्यकता है। ... प्रथा के विरुद्ध आर्य परि... सकता है पत्र व्यवहार निम्न ...

मास्टर लेखराज...

स्कूल पूरनपुर पो० ...

जिला नैनीता...

निष्क्रांत सम्पत्ति कानून बदला जाय

शरणार्थियों की सरकार से मांग

लखनऊ के शरणार्थियों ने रविवार को भारत सरकार के निष्क्रांत सम्पत्ति-सम्बन्धी आर्डिनेन्स के विरोध में काले झण्डों का एक प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में पंजाब, सिंध और सीमा प्रान्त के प्रतिनिधि शरणार्थी संस्थाओं ने भाग लिया।

प्रदर्शन कारियों के मुख्य मुख्य नारे ये थे—भारत माता की जय, देश के गद्दारों को निकाल दो, पाकिस्तान जाने वालों की सम्पत्ति हमारी है, आर्डिनेन्स बदलो।

सभा में स्वीकृत होने वाले प्रमुख प्रस्ताव इस प्रकार है :—लखनऊ की यह सभा भारत सरकार के निष्क्रांत सम्पत्ति सम्बन्धी आर्डिनेन्स के प्रति घोर असंतोष प्रकट करते हुये उसका ध्यान पाकिस्तान सरकार के इसी कानून की कड़ाई की ओर आकर्षित करती है जिसके कारण पाकिस्तान के हिंदू अधिकाधिक संख्या में भारत भागे आ रहे हैं।

यह आर्डिनेन्स स्वीकृत के लिये शीघ्र ही केन्द्रीय पार्लियामेंट में आने वाला है, इससे पूर्व हम अपना यह मत स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस कानून में निम्नलिखित संशोधन करना शरणार्थियों के ही हित में नहीं वरन् राष्ट्रहित के लिए भी आवश्यक है।

आर्डिनेंस में संशोधन

(अ) उन सभी व्यक्तियों की सम्पत्ति निष्क्रांत सम्पत्ति समझी जाय जिन्होंने स्वतः या अपने परिवार के किसी भी सदस्य अथवा एजेन्ट द्वारा पाकिस्तान की निष्क्रांत सम्पत्ति पर स्वामित्व प्राप्त किया हो।

(ब) पाकिस्तान के शरणार्थियों की वह सभी प्रकार की आय जो पाकिस्तान के हित में न लगे।

(स) उस व्यक्ति की सारी सम्पत्ति जिसने अपनी आमदनी का कोई भी जरिया पाकिस्तान को दे दिया हो।

(द) उस व्यक्ति की सम्पत्ति जिसने लिखित रूप में अपनी भारत स्थित किसी जायदाद को पाकिस्तान से बदलने की अर्जी दी हो।

(य) उस व्यक्ति की सम्पत्ति जिसने अपनी भारत स्थित सम्पत्ति को या उसके किसी अंश को पाकिस्तान भेजने के हित से बेच दिया हो या बेचना चाहता हो अथवा स्वयं भारत से पाकिस्तान में बसना चाहता हो।

सरबी० एन० राऊ को लीबियामें संयुक्त राष्ट्र संघ का कमिश्नर नियुक्त करने की मांग

लेकसकसेस, २ दिसम्बर। ज्ञात हुआ है कि लीबिया के प्रतिनिधि मण्डल ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष जनरल रोमुलो से अनुरोध किया है कि भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता सर बनेगल नरसिंह राऊ को लीबिया में संयुक्त राष्ट्रसंघ का कमिश्नर नियुक्त किया गया।

डा० साहनी की पवित्र स्मृति पोलियो बोटेनिक इंस्टीट्यूट

विलायत के प्रख्यात वैज्ञानिक अध्यक्ष का कार्यभार संभालेंगे

लखनऊ, २ दिसम्बर। रायल सोसाइटी के फेलो तथा रेडिंग यूनिवर्सिटी (इंगलैंड) में वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर एवम् साइंस फैकल्टी के डीन प्रो० टी० एम० हेरिस यहां पर पालियोबोटेनिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के अध्यक्षपद का कार्यभार संभालने के लिए कल यहां आ जायेंगे।

स्मरण रहे कि पालियोबाटेनिक इंस्टीट्यूट ही लखनऊ विश्वविद्यालय की साइंस फेकल्टी के भूतपूर्व डीन तथा विश्व के लब्ध प्रतिष्ठित वैज्ञानिक स्वर्गीय डाक्टर बीरबल साहनी की पवित्र स्मृति है। डा० साहनी ने जीवन भरके अथक परिश्रम के बाद उक्त संस्था की स्थापना की और भारतके प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने संस्था के भवन का शिलान्यास किया पर इस समारोह के कुछ ही दिन बाद डा० साहनी की आकस्मिक मृत्यु के कारण यह अधूरा रह गया था।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हैदराबाद अधिवेशन में पढ़े जाने वाले निबन्ध

लेखकों से १५ दिसम्बर तक निबन्ध भेजने की अपील

हैदराबाद, १ दिसम्बर। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३७ वें अधिवेशन पर जो २४ दिसम्बर से २७ दिसम्बर तक हैदराबाद में हो रहा है विभिन्न सम्मेलनों के अन्तर्गत विज्ञान, दर्शन, साहित्य, समाज शास्त्र और राष्ट्र-भाषा परिषदों का आयोजन होगा। इन परिषदों में खोज पूर्ण निबन्ध पढ़े जायगे। इस बार विभिन्न परिषदों में पढ़े जानेवाले निबन्धों की सूची निम्न है।

साहित्य परिषद

(१) काव्य की वर्तमान विचारधारा (२) प्राचीन कवियों का आधुनिक दृष्टिकोण से अध्ययन (३) भारतीय संस्कृत और हिन्दी साहित्य (४) हिन्दी गद्य का भविष्य (५) हिन्दी साहित्य पर विदेशी साहित्य का प्रभाव।

राष्ट्र भाषा परिषद

(१) विधान परिषद का निर्णय और राष्ट्र भाषा (२) प्रांतीय भाषाओं से हिंदी का सम्बन्ध (३) राष्ट्रभाषा के विकास के साधन (४) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय परम्परा

विज्ञान परिषद

(१) मानव कल्याण में अणुशक्ति की उपयोगिता। (२) विज्ञान द्वारा विश्व राष्ट्र की साधना (३) स्वतंत्र भारत में वैज्ञानिक अनुसन्धान और उसका भविष्य। (४) मुलमती के विरुद्ध विज्ञान का संघर्ष। (५) पनसिलान और उसके आगे।

दर्शन परिषद

(१) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और बौद्ध दर्शन। (२) गांधीवाद का दार्शनिक आधार। (३) भौतिकवाद और आध्यात्मिक (४) हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठ भूमि।

समाज शास्त्र परिषद

(१) भारत विभाजन के पश्चात् पुनर्वासितों की सामाजिक समस्याएं। (२) सन्तति नियमन। (३) भारतीय समाज का भविष्य। (४) दान व्यवस्था। (५) गार्हस्थ्य जीवन और विवाह के लिये शिक्षा की आवश्यकता।

जो सज्जन किसी विषय पर निबन्ध पढ़ना चाहें वे अपना निबन्ध १५ दिसंबर तक स्वागत समिति, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हैदराबाद के पते पर भेज दें। स्वीकृत निबन्धों को छपाने की व्यवस्था की जायेगी।

हैदराबाद की विधान सभा के चुनाव में ८७ लाख मतदाता भाग लेंगे

हैदराबाद, ४ दिसंबर। हैदराबाद रियासत की विधान सभा का चुनाव करने के लिए मतदाताओं की सूची तीन महीने के परिश्रम के बाद तैयार हो गयी है। सूची बालिग मताधिकार के आधार पर बनी है। कुल मतदाताओं की संख्या ८७ लाख है।

ये मतदाता अपनी रियासत की विधान सभा के लिए २०० सदस्य चुनेंगे। विधान सभा की ३६ सीटें हरिजनों, २६ मुसलमानों और ३ आदिवासियों के के लिए सुरक्षित रखी गयी है।

मतदाता सूची में एक नाम निजाम साहब का भी है। कासिम रिजवी और निजाम के भूतपूर्व मन्त्रियों मीर लायक-अली आदि के नाम भी मतदाता सूची में हैं।

कंट्रोल न उठाने तक अन्न का बनी चीजें न खायेंगे : सूरत के दो व्यक्तियों की प्रतिज्ञा

सूरत ५ दिसम्बर। यहां से ३० मील दूर व्यारा नामक गांव के दो व्यक्तियों ने निश्चय किया है कि जबतक सरकार अन्न के शनैः शनैः नियन्त्रण के लिए निश्चय न करेगी तब तक वे अन्न की बनी हुई चीजें न खायगे। इनमें एक व्यक्ति एक सप्ताह से दूध पी रहा है।

—आ० स० रसड़ा का वा० उत्सव ११ दिसम्बर ४९ से ३ जनवरी ५० तक होना निश्चय हुआ है, जिसमें प्रमुख विद्वान् सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। उत्सव से पूर्व २३ दिसम्बर से श्री स्वा० प्रणवानन्द जी की कथा होगी।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

अग्न्याद्धामि समिधं अग्ने व्रतपते त्वीय । व्रतं च श्रद्धां चोपैमि ईन्धे त्वा दीक्षितो अहम् ॥

यजु० २०। २४ ॥

हे अग्ने ! (ज्ञानस्वरूप) व्रतों के पालक तुझमें समिधा को रखता हूँ । व्रत को और श्रद्धा को प्राप्त होता हूँ । एवं दीक्षित होकर मैं तुझे प्रदीप्त करता हूँ ।

ता० ८ दिसम्बर १९४९ ई०

पुनः हिन्दू कोड बिल

शरद् ऋतु में भारतीय पार्लियामेन्ट का अधिवेशन ता० २८ नवम्बर को आरम्भ हो गया है, इस बार पुन: विचाराधीन कार्यों में हिन्दू कोड का भी उल्लेख किया गया है, इस बार कोड के सम्बन्ध में सदस्यों द्वारा विचार होने का अवसर उपस्थित होने के बहुत पूर्व ही जनतन्त्र नायक भारत के प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू जी ने पार्लियामेन्ट में घोषणा की है कि, सरकार हिन्दू कोड बिल स्वीकार कराने के लिये कटिबद्ध है, वह इसे विश्वास का प्रश्न बनायेगी और यदि बिल नामंजूर होगया तो सरकार इस्तीफा दे देगी, प्रधान मन्त्री महोदय की इस धमकी का क्या प्रयोजन है, इसको समझना कठिन नहीं है, इसका स्पष्ट अर्थ एक ही है कि जो पार्लियामेन्ट में कोड के सम्बन्ध में उचित रीति से भी प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हुये इस कोड का विरोध करना चाहें, उनको भी इस भय से कि वर्त्तमान सरकार कहीं इस्तीफा न दे दें, इसलिये अन्धानुकरण न्याय के अनुसार सबको आंख बन्द करके सत्य वचन महाराज कहते हुये प्रधान मन्त्री जी की सरकार को चिरकालतक आयुष्मती बनाये रखने का अहोभाग्य प्राप्त करना ही चाहिये, क्या इसी को विचारों की स्वतन्त्रता कहा जा सकता है कि जिसका उल्लेख सर्वत्र भारतीय विधान में अंकित किया गया है, अभी तो इस प्रसिद्ध विधान के अक्षरों की स्याही भी अच्छी तरह नहीं सूख पाई है, लोकतन्त्र, प्रजातन्त्र या जनतन्त्र के सार्वजनीन सिद्धान्तों के प्रयोग का यह तो अत्यन्त अद्भुत उपहास सा प्रतीत होता है,

सर सुल्तान अहमद, सर अशोक राय, श्री मंडल और श्री डा० अम्बेडकर इन चार महानुभावों ने मुख्यतया हिन्दू कोड का जन्म दिया। इस कोड का आरम्भ टिमटिमाते हुये अंग्रेजी शासन काल में हुआ उसके अन्तिम श्वास अथवा ऊर्ध्व श्वास प्रश्वास जब चल रहे थे तब इसका पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार हो रहा था, और अब कहा जाता है कि भारतीय हिन्दुओं के भारी बहुमत द्वारा एक स्वर से अवाञ्छनीय और अमान्य घोषित कर दिये जाने पर भी पाश्चात्यता से ओतप्रोत आविष्ट लोग इसको हठात् भारतीय करोड़ों हिन्दू जनता के ऊपर उन की इच्छा के सर्वथा विरुद्ध लादने के लिये कटिबद्ध हैं, कहा जाता है कि वर्त्तमान युग में और विशेषकर भारत में प्रजातन्त्रीय राजशासन व्यवस्था को राष्ट्र के हितार्थ स्थापित किया जा रहा है, परन्तु आश्चर्य है कि जय हिन्द जिस जिह्वा से सहर्ष उद्घोषित किया जाता है, उसी जिह्वा से अवसर आने पर जय हिन्दी उच्चारण करते समय कफ से कंठावरोध सा होगया, और अब इस बार भी धर्म निरपेक्ष शासन प्रणाली की स्थापना करने वाले विचक्षण नेताओं को एक ही भारत राष्ट्र में निवास करने वाले नागरिकोंके लिये कानून बनाते समय वह बात कैसे स्मृति पटल पर से सर्वथा उड़ गई कि इंडियन पीनल कोड की भांति ही समस्त नागरिकों पर समानरूप से लागू होने वाला उसी प्रकार का एक सिविल ला कोड क्यों नहीं बनाया जा सकता है, क्यों कि समाज सुधार और सभ्यता-शिक्षा क्या हिन्दू कहलाने वालों के लिये ही मलेरिया के लिये कुनैन की भांति अव्यर्थ औषधि सिद्ध करने पर आमादा हो गये हैं? क्या यह न्याय नहीं है कि समस्त भारतीय नागरिकों के लिये उपर्युक्त चार अनुयायियों के द्वारा निर्मित कोड समान रूप से उपयोगी है, क्या मूर्खतम व्यक्ति भी यह नहीं समझ सकता है कि जिस विशाल राष्ट्र में पुरुषों से स्त्रियों की संख्या अत्यधिक न्यून हो, उस राष्ट्र में ही कुछ लोगों के लिये यह कानून हिन्दू कोड के नाम से बनाने का भगीरथ प्रयास किया जाय कि वह एक समय में एक ही विवाह करें और शेष कुछ अन्य समाज सम्बन्धियों को एक साथ और एक ही समय में चार २ बीवियां करते रहने की छूट प्राप्त रहे और इस को उनके धर्मानुकूल राष्ट्र के लिये हितकर माना जाय क्या किसी भी सभ्य राष्ट्र में इस अन्धेरखाते को भी न्याय, सत्य और अहिंसाधर्म के अनन्य उपासक मानवोचित व्यवहार शास्त्र कहने का साहस कर सकते हैं, नहीं तो फिर क्या देश हित विघातक अंग्रेज सरकार द्वारा चलाये गये कोड बिल के स्थान पर समानरूप से लागू होने वाले सिविल ला कोड का उसी प्रकार निर्माण किया जाता है कि जिस प्रकार समस्त भारत राष्ट्र में निवास करने वाले समस्त नागरिकों के सम्बन्ध में समान रूप से लागू होने वाले भारतीय विधान का २६ नवेम्बर को निर्माण हुआ है।

तथापि यदि अब भी अंग्रेज की शैतान सरकार के उत्तराधिकार में यह अमान्य कोड परम्परा से मिला है और वर्त्तमान धर्मनिरपेक्ष सरकार अपने को उस उत्तराधिकार से आनन्दित अनुभव करती है तो क्यों नहीं उन्हीं हिन्दुओं के भारी बहुमत का आदर करती है कि जिनके कल्याण के लिये सरकार अपनी दया का दरिया बहाना चाहती है। प्रजातन्त्र का यह तो एक सर्वतन्त्र सिद्धान्त है कि जनमत की सम्मति के अनुसार ही शासन व्यवस्था किसी राष्ट्र में होनी चाहिये। इसके विधान विधान [illegible] (आज्ञा) या आर्डिनेन्स [illegible] [illegible] का [illegible] और यदि हिन्दू कोड के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार को अपना इसके किन्हीं सदस्यों को किसी प्रकार का सन्देह हो गया था तो इस बात को प्रजा के द्वारा निर्वाचित नवीन भारतीय धारा सभा में प्रस्तुत करना चाहिये, अथवा यदि समुचित प्रतीत हो तो जनमत ले लेना चाहिये। किन्तु अबतक समाचार पत्रों, व्याख्यानों, वक्तव्यों, उत्सवों, संस्थाओं, प्रमुख व्यक्तियों, नेताओं और कानून के मर्मज्ञ न्यायाधीशों तथा कानून विशेषज्ञ वकीलों के भारी बहुमत ने हिन्दूकोड बिल के अनेक कारणों का ऊहापोह करते हुये घोर विरोध किया है। क्या इस व्यापक विरोध को ठुकराते हुये केवल अल्प संख्यक पाश्चात्य सभ्यतानिष्ठ जनों की प्रसन्नता के लिये वर्त्तमान सरकार और उसके सूत्र संचालक तानाशाही से ही इस सर्वथा अवाञ्छनीय बिल को हिन्दूमात्र के सिर पर हठात् लादकर उनके आदर और विश्वास के पात्र बन सकेंगे? और क्या इस हठ से बनाये हुये कानून को और इसी प्रकार के बने हुये कानूनों की भांति भारतीय हिन्दू जनता अवसर अनुकूल आने पर अमान्य और तिरस्कृत न करदेगी? इसके अतिरिक्त इस हठधर्मी से पूर्व में ही अनेक अभावों के कारण असन्तुष्ट प्रजा में और अधिक विक्षोभ जनित आन्दोलन का उत्तर दायित्व अनायास वर्त्तमान सरकार पर न आ जायगा? इस सम्बन्ध में वर्त्तमान सरकार को विशेष [illegible] साथ अपने उत्तरदायित्व को भली भांति समझते हुये प्रजानुरञ्जन को दृष्टि में रखते हुये अग्रसर होने की आवश्यकता है।

हम यह जानते हैं कि भारत में ऐसे भी नर और नारी नागरिक हैं कि जो पाश्चात्यता का अनुकरण करना चाहते ही नहीं, अपितु कर भी रहे हैं। ऐसे लोगों के लिये सिविल मैरिज ऐक्ट आदि अनेक कानून दयालु [illegible] न बना ही दिये हैं [illegible]

पर संशोधन भी होते ही रहते हैं। इस लिये उनका समन्वय बनने में तो किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं है। फिर वह चाहे तलाक प्रथा, का अनुकरण करे, चाहे परम्परागत सदाचार (कस्टमरी लाज) को यथेच्छा ठुकरादे, चाहे जिस प्रकार अपनी सम्पत्ति को चाहे जिसको दे दें, और इसी प्रकार अपने आचार व्यवहार का जैसा चाहे चलावें। किन्तु जो उनकी भांति अनुगामी या परिवर्तनशील नहीं है, उनको भी सुविधानुसार जीवित रहने का स्वतन्त्र अवसर प्राप्त होने दें। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि समय २ पर शास्त्र व्यवहारों में आवश्यक सुधार और परिवर्त्तन कदापि न किये जावें। इसके विपरीत आवश्यकतानुसार शास्त्रविशेषज्ञ और जनमत के अनुरूप धार्मिक एवं सामाजिक व्यवहारों में संशोधन एवं परिवर्त्तन सुमति और सद् भावना के साथ करते रहने का कार्य किया जाय। इस कार्य में हठ, दुराग्रह, तानाशाही, कटुता, उच्छृंखलता, आतंकवाद और अहम्मन्यता के लिये तो कोई अवकाश कदापि न होना चाहिये।

देश का वर्त्तमान देशकालिक विक्षुब्ध परिस्थिति में भारतीय सरकार का अकारण और हठपूर्वक हिन्दू कोड बिल को हिन्दुओं पर लादने का अनुसरोचित उपक्रम न करना ही उचित है। अन्त में अनेक ऐसे महत्वपूर्ण जन हित साधक कार्य हैं कि उनके सम्पन्न करने में सरकार संलग्न हो सकती है।

— — · — —

भारतीय विधान

स्वतन्त्र भारत के इतिहास में पश्चिमीय प्रजातन्त्र प्रणाली के आधार पर विधान निर्माण का कार्य पूर्ण हो जाना न केवल एक अद्भुतपूर्ण घटना ही है अपितु भविष्य की राजनीतिक प्रगति का सूचक भी है। भविष्य में कम से कम १० वर्ष तक इसी विधान के अनुसार भारत में राजनीति चक्र संचालित होगा। किसी भी विधान की उत्कृष्टता उस विधान के ड्राफ्ट के मूल निर्माताओं की बुद्धिमता, धैर्य, अनुभव और आधार भूत सिद्धान्तों को रखने की क्षमता पर अवलम्बित होती है। बहु संख्यक सदस्यों वाली विधान परिषदें यद्यपि संशोधन कार्य तो कर सकती हैं परन्तु स्वयमेव ही इतने अधिक व्यापक तथा जटिल विधान का निर्माण नहीं कर सकती। अतः न केवल प्रारूप निर्माण समिति (ड्राफ्ट कमेटी) ही इसके लिये धन्यवाद की पात्र है प्रत्युत इस कमेटी के प्रधान डा० अम्बेडकर विशेष रूप से तथा स्वयं विधान परिषद् के सदस्य भी इस श्रेय के भागी हैं।

भारतीय विधान परिषद् के कुछ आलोचकों का विचार है कि उक्त विधान परिषद् न केवल प्रभ वहीन ही अपितु व्यर्थ विवाद कर दीर्घ समय नष्ट करने वाली भी सिद्ध हुई है। परन्तु इस प्रकार की आलोचना सर्वथा सारहीन है। विधान परिषद् से सम्बद्ध गम्भीर तथा मौलिक आवश्यक विषयों का बिना ऊहापोह के शीघ्रता में निर्णय किया जाना प्रायः हानिकारक होता है। अतः समय के औचित्य का ध्यान रखते हुये सभी प्रकार के विभिन्न दृष्टिकोणों व विचारों पर विवेकपूर्ण निर्णय करने में यदि कुछ समय अधिक व्यतीत हो हुआ तो उसे कुछ अनुचित नहीं कहा जा सकता।

संसार के प्रसिद्ध सभी बड़े २ राष्ट्रों के विधानों के परीक्षण और परिणामों का ध्यान रखते हुये, उनकी सहायता से, भारत का विधान निर्माण किया गया है। भारत की अपनी विशेष प्रकार की विभिन्न राजनैतिक समस्यायें हैं जिनमें अल्प संख्यकों तथा पिछड़ी हुई जातियों के संरक्षण की समस्या विशेष प्रकार की समस्यायें थीं इनका समाधान उदारता पूर्वक किया गया है। इसी प्रकार हिन्दी के राजभाषा के उलझे हुये प्रश्न का हल भी यथासम्भव हो गया है। देश के शासन का केन्द्रीकरण और प्रान्तीय स्वतन्त्रता के क्षेत्रों का अत्यन्त विवादपूर्ण और जटिल प्रश्न भी उत्तमता से हल किया गया है। स्टेट मिनिस्टरी और सरदार पटेल के युक्तिपूर्वक दूरदर्शितापूर्ण बुद्धिमत्ता के कारण रियासतों की समस्या का समाधान भी 'सबशासन' के आधार पर ठीक ढंग पर हुआ है।

परन्तु जब हम विधान में वर्णित व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के उल्लेख के साथ २ विशेषाधिकारों को विचित्र वैधानिक भाषा में अंकित पाते हैं तो हृदय में आशंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

भारतीय शासन प्रणाली के उद्देश्य आदर्श तथा नागरिकों के मौलिक अधिकारों के अध्यायों में सिद्धान्त की दृष्टि से प्रजातन्त्र प्रणाली के मूलाधार परम्परागत उदार स्वतन्त्रता की स्थापना का उल्लेख है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि द्वितीय मार्ग से उस पर अनावश्यक रूप में आघात किया गया है। व्यवहार में कुछ सीमा तक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध होना आवश्यक है परन्तु संकटकालीन अवस्था की, जिसका क्षेत्र पहिले केवल राजनीति तक सीमित था परन्तु बाद में जिसकी सीमा, ठीक ही, आर्थिक क्षेत्र तक बढ़ा दी गई है, घोषणा हो जाने पर विशेषाधिकार के प्रयोग की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार के कानून निर्माण का तात्पर्य यह है कि जनता के मौलिक अधिकारों को केवल शासकों की आज्ञामात्र से दीर्घकाल तक छीना जा सकेगा। न्यायालयों को भी इन आज्ञाओं के औचित्य पर विचार करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया है।

यह ठीक है कि देश के सन्मुख इस समय ही ऐसे अनेक विषम अवसर उपस्थित हो चुके हैं जिनमें प्रान्तीय शासनों तक को स्थगित करने की अनिवार्यता उचित समझी जाती है। यह भी सम्भव है कि युद्ध काल में देश की सुरक्षा के लिये शीघ्रता पूर्वक कार्य संचालन की अनिवार्यता उपस्थित हो जाय अथवा गृहयुद्ध से सम्पूर्ण शासन व्यवस्था के नष्ट भ्रष्ट हो जाने की आशंका उपस्थित हो जाय, तब भी प्रजातन्त्र राज्य पद्धति के विकास करने वाले सभी प्रमुख देशों में, जनता की स्वतन्त्रता की रक्षा के उद्देश्य से, भारत के समान सर्वव्यापी विशेषाधिकार कानून, उचित नहीं समझे गये। इङ्गलैण्ड में तो विशेषाधिकार के अन्तर्गत कानून घोषित करने पर ५ दिन के अन्दर ही अन्दर पार्लियामैन्ट द्वारा समर्थन प्राप्त करना अनिवार्य है, चाहे पार्लियामैन्ट का अधिवेशन बुलाना ही क्यों न पड़े। अमेरिकन प्रैजीडैन्ट को भी वास्तविक आक्रमण हो जाने (आक्रमण के भय की दशा में नहीं) अथवा नागरिक शासन व्यवस्था के नष्ट भ्रष्ट हो जाने की अवस्था में ही, केवल सम्बद्ध स्थानों पर, मार्शल लॉ घोषित करने का अधिकार है परन्तु इसके साथ ही न्यायालयों के निर्णय के अधिकार को अक्षुण्ण रखा गया है। "हैबियस कार्पस" के अधिकार को तो विशेष रूप से केवल कांग्रेस ही स्थगित कर सकती है।

भारतीय विधान में (प्रेसीडैन्ट प्रधान पुरुष के विशेषाधिकार द्वारा आर्डीनैन्स आदि कानून भारतीय पार्लियामैन्ट में ६ मास तक प्रमुख होने से रोके जा सकते हैं—यह समय अत्यन्त दीर्घ है। यह कहना ठीक है कि जनप्रिय शासकों पर जनता को अवश्य विश्वास करना चाहिये परन्तु ऐसे उदाहरणों की न्यूनता नहीं है जिनमें [illegible] के आधार पर आर्डिनैन्सों के सहज उपयोग द्वारा, अनिवार्य अन्तिम उपाय की आवश्यकता न होने पर भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का खेदजनक अपहरण किया गया है जिसे किसी प्रकार भी वाञ्छनीय नहीं कहा जा सकता। अतः स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रीय भावना के उपासकों को इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सावधान रहकर यत्न करने की आवश्यकता है। विधान का अभी द्वितीय वाचन ही स्वीकृत हुआ है तृतीय वाचन भी शीघ्र समाप्त हो जायगा। क्या उसमें इस न्यूनता का प्रतीकार सम्भव है।

———

राजस्थान में कृषि व भूमि सम्बन्धी जांच

देश के अन्य भागों के समान ही राजस्थान तथा मध्य भारत की सरकारें भी अपने २ प्रान्तों में भूमि-स्वत्व तथा कृषि प्रथा के सम्बन्ध में अनेक सुधार व परिवर्तन करना चाहती हैं। उनकी घोषणाओं में इसका मुख्य उद्देश्य यह बतलाया गया है कि सरकार राज्य और कृषकों में सीधा सम्बन्ध इस प्रकार की घोषणाओं का विशेष महत्व नहीं है क्योंकि उसका स्पष्ट अर्थ 'पौरुष राज्य सम्पत्ति घोषित करना ही है स्थापित करना चाहती है। इससे वर्ग संघर्ष उत्पन्न होना अनिवार्य है। अतः शीघ्रता में कोई इस प्रकार का परिवर्तन न हो जाय जिससे लाभ के स्थान में अधिक हानि हो जाय, भारत सरकार ने इन प्रान्तों की सरकारों की सहायता के लिये एक 'तथ्य अनुसन्धान समिति' का निर्माण कर बुद्धिमत्ता का ही [illegible] उठाया है। इस अनुसन्धान समिति की जांच का मुख्य विषय 'जागीरदारी प्रथा' है जिसे अनेक भूमि सम्बन्धी प्रश्नों के विशेषज्ञों ने संसार के दो प्राचीनतम वर्गों में दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करनेवाली उपयोगी संस्था स्वीकार किया है। अतः विशेष प्रादेशिक परिस्थितियों को लक्ष्य में रखकर इस समिति के लिये शताब्दियों के स्वाभाविक रूप से विकसित होनेवाली ऐतिहासिक परम्पराओं

(शेष पृष्ठ ११ पर)

रेत बह गई

(श्री अनन्त प्रसाद विद्यार्थी)

घनी वर्षा में जब ऊसर की रेत पानी की धार के साथ घुल कर बह जाती है तब ऊसर की धरती किसान के हल की नोक से जोती जाकर अपनी छाती पर हरी भरी फसल का यौवन लेकर एक बार फिर खुशी से भर उठती है ....

समई ने कंधे पर से हल उतार उसकी नोक खेत से छुआते हुये एक लम्बी सांस ली। फिर हल को धरती पर रख बायां हाथ बैल की सफेद जोड़ी पर सामने की ओर निहारने लगा। मन में भांति भांति के विचार आ रहे थे। ये चन्द बीघे खेत ही उसके जीवन के प्रवाह की आधार भूमि हैं जिसपर उसका जीवन अपनी अविराम मंथर गति से बहता चला आ रहा है। कई बार जीवन के इस क्रम में उसने एक परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया है, कितनी बार सोचा कि मिट्टी के इस घरौंदे को छोड़कर वह कहीं अन्यत्र चला जाय पर शायद मिट्टी का पूत मिट्टी को छोड़ कहीं जा नहीं पाता। कितनी पीढ़ियों ने इस धरती के वक्ष पर अपने हलों की नोक से अपने अपने भाग्य की रेखाएं खींची होंगी पर शायद किसी के हल की नोक इसके भुरभुरे धरातल तक नहीं पहुँच पाई। तभी तो अब तक वह गरीबों के साथ ही खेलता रहा है। न जाने कितनी पीढ़ियों से वह इस भूमि को जोतता आ रहा है, इसकी उपज से वह दूसरों का घर भरता आ रहा है। किन्तु आज तक वह इसका स्वामी नहीं हो सका। और इसका स्वामी जो है उसे शायद यह भी पता नहीं कि वह कहाँ पर है। केवल अधिकार नाम की छाया का भय दिखा वह सब कुछ उससे छीन लेता है।

उसे स्मरण है गत वर्ष जब ज़मींदार के यहाँ वह बुलाया गया था। भय से उसकी आत्मा काँप उठी थी लगान सब वह दे चुका था तब फिर आखिर क्यों बुलाया गया साथ उसका मन धक धक करने लगा। डरते हुये वह ज़मींदार के दरवाज़े पर पहुँचा, देखा तो उसके ऐसे और कई पहले से बैठे हुये थे। उन्हीं के बीच जाकर वह चुपके से बैठ गया, साहस न हुआ कि किसी से कुछ पूछे तभी रामनाथ ने उसकी ओर आँखों में व्यथा भर देखते हुये कहा—समई तू भी आगया, चलो अब तो शायद गाँव में कोई बचा न होगा।

समई को भावी संकट की कल्पना करने लगा जैसे उसकी आँखों के सामने का सारा संसार नाच रहा हो, उसमें रामनाथ की आकृति जैसे नाक की धुरी मान कर घूम कर घूम रहा हो। वह क्षण भर चुप रहा फिर बोला—हाँ भैया आता क्या न, सबेरे ही ज़िलेदार साहब का आदमी पहुँच गया था। दातुन मुखारी भी तो न कर पाया था कि ..."

'सभी का यही हाल है' जगन्नाथ ने कहा।

'पर भाई सब का सब गाँव आखिर आज क्या तलब किया गया है। ज़मींदार साहब के ज़िलेदार साहब ही क्या कम हैं जो उन्हें भी साल में एक बार आने की ज़रूरत पड़ती है।' समई ने धीरे से कहा, फिर एक बार चारों ओर सशंकित दृष्टि से निहारा कि कहीं किसी ने सुन तो नहीं लिया।

जगन्नाथ ने कहा " अरे तलब क्या किया है ? अजगर अपनी जगह से नहीं टलता पर शिकार उसके मुँह में अपने आप चले जाते हैं। भगवान ने उसे यह अधिकार दे रखा है। हम सभी को यह भोगना है। भोगना है भोगेंगे और कोई चारा तो नहीं है।

'आखिर किस लिये बुलाया है। समई की बड़ी जिज्ञासा थी।" और बुलायेंगे किस लिये ? रुपये की ज़रूरत होगी तो बुला लिया। अभी कहेंगे तुम लोग अब इस साल हमारे खेत के भरोसे न रहना। हम दूसरों के हाथों उठायेंगे। और तब एक एक को अपनी बलि चढ़ानी होगी, धरती के टुकड़ों के लिये।

सुन समई काँप उठा। दस बीघा ज़मीन वह कई पीढ़ी से जोतता चला आ रहा है। इस भूमि को छोड़ देने की उसे कई बार धमकी दी गई और हरबार वह उसे नये सिरे से खरीदता पर अबकी क्या होगा। इस बार तो उसके पास कुछ है नहीं। थोड़ा बहुत जो जोड़ जमा कर रखा है उसके लिये सोचा था कि बड़े लड़के की इस वर्ष शादी करेगा किन्तु शायद भगवान

उसकी विचारधारा भंग हो गई। ज़मींदार साहब भीतर से निकले और दालान में पड़ी कुर्सी पर बैठ गये। एक बार उन्होंने सामने मैदान में बैठे हुये असामियों की ओर निहारा जैसे मकड़ी अपने जाल में फंसे कीड़े को जब कसकर बांध चुकती है तब निर्दय आँखों से निहारती है।

ज़िलेदार साहब ज़मींदार साहब के सामने दूसरी चारपाई पर बैठे थे। बारे बारे करके एक के बाद एक का नम्बर आया। समई भी ढाई सौ देने का वादा कर घर लौटा।

द्वार पर पहुँचते ही पत्नी को देखा उसको दुःख उभर आया पर पत्नी से उसने अपने मन की व्यथा अभी कही नहीं। पुत्र के विवाह का कितना मधुर स्वप्न वह देखती आ रही थी। कहते हैं सपना देखते हुये को कभी सहसा जगाना न चाहिये अन्यथा हानि होने की सम्भावना रहती है। सो वह चुप रहा पर जब पत्नी ने पूछा तो मन की व्यथा आँखों में छलक आई, बोला कल्लू की माँ ! इस वर्ष हम कल्लू का ब्याह न करेंगे। मीरपुर वालों को सन्देश भेज देना है कि यदि हो सका तो आगे के साल ब्याह होगा।

कल्लू की माँ को जैसे पति की बात पर विश्वास न हो रहा हो, उसने कहा क्या ?

और जैसे हृदय काँप उठा वह बड़ा प्रश्न सिमट कर केवल प्रश्नवाचक बनकर रह गया हो !

'कुछ नहीं, ज़मींदार को ढाई सौ देने होंगे। सो दोनों काम तो हो नहीं सकते। रुपये तो देना ही पड़ेंगे। कल्लू का ब्याह अभी एक आध साल रुक जाय तो कुछ हानि थोड़े ही है।'

पत्नी ने सुना, तो सब समझ गया। अदृष्ट से लड़ने का अब उसमें साहस नहीं रह गया। सो चुप चाप घर के भीतर चली गयी और समई वहीं खड़ा रहा, बहुत देर तक, जैसे सूखे आँख रो रहा हो।

आज जब वह हल लेकर खेत को आ रहा था तो पुरानी स्मृतियें जैसे पानी में उठी सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर को आ रही हैं। कितनी ही बार उसने रुपये भी इसी ज़मींदार को दी था और तब भी वह अपने खेत को यह अपना कहने का अधिकारी नहीं हो सका। आखिर मिट्टी के इन ढेलों का मूल्य चुकाना होगा।

एक लम्बी सांस खींच बैल के कंधे पर जुआ रख दिया और हल को उठा कर जुये में बाँधने जा रहा था कि देखा कोई आदमी मेड़ के निकट रुक गया। आँखें उठा कर वह उसकी ओर निहारने लगा जैसे आकृति पहचानी हुई हो, तभी याद आया कहीं देखा है। आगन्तुक के चेहरे पर विजय की आभा की प्रसन्नता थी, जैसे कुएं में गिरा हुआ लगातार किसी फाँसे की डोर का सहारा पा बाहर आ प्रसन्न दिखता है।

कहो भई अब तो यह खेत तुम्हारा है।

आगन्तुक के मुँह से पूरी बात सुनने की इच्छा न हुई, लगा कह दे कई पीढ़ियों से वह इन खेतों का स्वामी रहा है किन्तु सहसा जैसे किसी ने उसके कंठ को अपनी उंगलियों के बीच दबा लिया हो और उसका दम घुट रहा हो। सो वह कुछ न कह पाया तभी आगन्तुक ने कहा अब तो ज़मीन का स्वामी किसान ही होगा, जो इन खेतों में अन्न उपजाते हैं, वे ही इसके मालिक होंगे।

समई को कुछ बात समझ में न आ रही थी, सो वह उसकी ओर आँख फाड़ फाड़ कर निहारने लगा। उसने फिर कहा यह खेत अब तुम खरीद सकते हो, दस वर्षों का लगान देकर इसे तुम अपने और अपनी सन्तानों के लिये खरीद सकते हो अब हर हर साल ज़मींदार को बलि न भेंट करनी होगी।

समई को लगा जैसे यह व्यक्ति पागल हो, सो न जाने क्या क्या बकता जा रहा था। पर काश ! ऐसा कभी हो सकता। काश, वह इन खेतों का सच्चा स्वामी बन सकता। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता और ज़मींदार की वह आकृति उसकी आँखों के सामने नाचने लगी।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि दयानन्द तथा जिज्ञासु जी के यजुर्वेद भाष्यों की तुलना

चतुर्वेद भाष्यकार श्री जयदेव विद्यालंकार

श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने यजुर्वेद पर मुद्रित श्री ऋषि दयानन्द के भाष्य पर अपना अनुभाष्य बनाया और श्री मती परोपकारिणी सभा के वैदिक प्रेस में रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर द्वारा मुद्रित कराया। उसके तैयार करने में श्रीमती परोपकारिणी सभा ने श्री प० जी को ऋषि भाष्य की हस्तलिपियों के अनुशीलन व पर्यालोचन की भी पर्याप्त सुविधा प्रदान की।

यजुर्वेद के प्रथम दश अध्याय ही श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने सम्पादित कर ऋषि के यजुर्वेद भाष्य को अपने, अनुभाष्य सहित वैदिक यन्त्रालय में प्रकाशित कराया। जिसकी तुलना का कार्य श्री मती परोपकारिणी सभा ने मुझ पर दिया। वह तुलना २२२ पृष्ठ फुलस्केप में समाप्त हुई है।

इस तुलना से मैं जिस परिणाम पर पहुँचा हूँ, इन कुछ पृष्ठों में सक्षेप से दर्शाता हूँ।

श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य पर जो 'अनुभाष्य' बनाया है, वह बहुत परिश्रम का फल है। उसमें आपने वेद के पदों की व्याकरण, निरुक्त, निघण्टु तथा अन्यान्य शास्त्रों के आधार पर व्याख्या की है, आवश्यक अर्थों को हिन्दी में भी दर्शाया है। ऐसी व्याख्याएं वा अनुभाष्य ऋषि दयानन्द के भाष्य की शोभा हैं।

अनुभाष्य के अतिरिक्त ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द के मूल मन्त्र पर पदपाठ, संस्कृत पदार्थ, अन्वय, भावार्थ, हिन्दी पदार्थ और हिन्दी भावार्थ तक भी साथ साथ दिया गया है। ऋषि दयानन्दकृत भाष्य में अनेक प्रकार की त्रुटियां जो दृष्टिगोचर होती थी उनको दूर करने के लिये श्री प० जिज्ञासु जी ने हस्तलिपियों से मिलान करके उसका सम्पादन किया।

क, ख, ग तीन हस्तलिपियों का इसमें उपयोग किया गया है। अनेक परिवर्तन हस्तलिपियों के आधार पर किये गये हैं। हस्तलिपियों में भी पाठभेद थे। उनमें से उचित पाठ चुना गया। कई स्थानों पर कई मन्त्रों में लगातार दो हस्तलिपियों में भिन्न भिन्न प्रकार के दो भाष्य थे, उनको उपादेय जानकर दोनों को रखा गया। श्री पं० जी ने वेदभाष्य सम्पादन में अनेक प्रकार के भाषा-परिवर्तन, वाक्य परिवर्तन, पद परिवर्तन व परिवर्धन भी किये हैं। जिनका स्वरूप निम्न प्रकार से है—

१—अन्वय और पदार्थ भाग में वेदमन्त्र के पद और उनके अर्थ अनेक स्थान पर छूटे, उनको पूर्ण किया, यह करना उचित ही था।

२—अनेक स्थानों पर भाषा का ढंग वर्त्तमान भाषा रीति के अनुसार किया गया। यह कार्य विवादास्पद है।

३—जहाँ भाव स्पष्ट व्यक्त नहीं था उसको स्पष्ट और व्यक्त करने के लिये परिवर्धन, परिवर्तन किया गया और कहीं कहीं वाक्यों और पदों का क्रम भी बदला गया है।

इस तरह के परिवर्तन व परिवर्धन के किसी भी सम्पादक को कहाँ तक व कितना अधिकार है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। यदि श्रीमती परोपकारिणी सभा स्वयं विद्वानों द्वारा वेदभाष्य को सम्पादित कराकर अपनी उत्तरदायिता में ऐसा परिवर्तित व परिवर्धित संस्करण निकालती है, तो बात एक है, और जब कोई अन्य प्रकाशक इस प्रकार ऋषि के भाष्य को परिवर्तित करके छपाता है, तो यह दूसरी बात है। यदि इसी प्रकार ४, ५ प्रकाशक अपने २ ढंग से ऋषि भाष्यों को विकृत करके छापें, छपावेंगे, तो ऋषि के भाष्य की क्या दशा होगी, यह एक विचारणीय बात है।

श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने सम्पादन के व्याज से जो परिवर्तन व परिवर्धन किये हैं उनके कुछ नमूने मैं निदर्शित करता हूँ जिससे उनकी उचितता और अनुचितता प्रतीत हो सकेगी। क्रम से—

१—प्रचलित भाषा के विचार से भाषा भाग को अनेक स्थानों पर वर्त्तमान हिन्दी की रीति पर शोध दिया गया है। जैसे—पृष्ठ ८७०। प० ६ मुद्रित पृष्ठ ६०८। प० २७॥ मुद्रित है—'सत्पुरुषों की रीति पर' बदला गया-'सत्पुरुषों की रीति से'। पृष्ठ ८६६। प० ८॥ मुद्रित पृष्ठ ८६२ पं० ३—'धारण कीजिये' बदला—'धारण कराइये'। पृ० ६१४। पं० १५॥ मुद्रित पृ० ५८८। प० २१॥ अ० ७। मं० २८—'प्राप्त कीजिये' बदला 'प्राप्त कराइये'।

जिस समय वेद भाष्य लिखा गया उस समय के पण्डितों और श्री स्वामी जी की भाषा भी एक विशेष ढंग की थी, मेरी सम्मति में उस भाषा को भी रक्षा होनी चाहिये और जब तक ऐसा सम्पादन कोई उत्तरदायी संस्था न कराये तब तक ऐसा सम्पादन किसी व्यक्ति को न करना चाहिये।

२—यह आवश्यक है कि मूल मन्त्र शुद्ध होना चाहिये, पदपाठ शुद्ध होना चाहिये, संस्कृत पदार्थ भाष्य में मूल मन्त्र का कोई पद व अंश छूटना न चाहिये, इसी प्रकार अन्वय में मन्त्र का कोई पद न छूटना चाहिये। फिर भाषा पदार्थ में भी अन्वयानुसार अर्थ करते हुए भी, मन्त्र के पद छूटने नहीं चाहिये। यदि उक्त प्रकार से मन्त्र पद व उनके अर्थ छूट जाते हैं तो सम्पादक का काम उनको पूर्ण कर देने का है। भाषा पदार्थ में अर्थ भी संस्कृत पदार्थ के अनुसार करना चाहिये। यह निर्विवाद बात है।

श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने अन्वय और भाषा पदार्थ में अनेकों स्थलों पर ऐसे छूटे हुए पद पूर्ण किये हैं। और संस्कृत पदार्थ भाष्यानुसार उनके पदार्थ भी पूर्ण किये हैं। यह कार्य ठीक ही किया है। प्रायः वे पद पं० जी ने [ ] कोष्ठ में दिये हैं।

३—कई स्थानों पर भाषा पदार्थ में जहां पदार्थ संस्कृत पदार्थ भाष्य के अनुसार नहीं है, वहाँ उसको संस्कृत पदार्थ भाष्य के अनुसार श्री प० जी ने करने का यत्न किया है। जहाँ संस्कृत भाष्य के अनुसार अर्थ है, वहाँ तो किसी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु जहाँ संस्कृत पदार्थ का भावाशय ठीक नहीं आया, ऐसा परिवर्तन व परिवर्धन उपादेय नहीं है। जैसे—अ० १०। मन्त्र ३४॥ पृ० ७९६। प० १४॥ मुद्रित पृ० ९०८। प० ३—

मुद्रित है—हे (मघवन्) विशेष धन के होने से सत्कार के योग्य!

प० जी ने बदला—'हे (मघवन्) उत्तम धन वाले!'।

'मघवन्' का संस्कृत पदार्थ भाष्य है—'(मघवन्) पूजितधनवन्!' मुद्रित पदों को विशेष न बदलते हुए भाषा पदार्थ होना उचित है—'हे (मघवन्) विशेष सत्कार के योग्य धन के स्वामिन्!' प० जी ने उसके स्थान पर 'उत्तम' कर दिया है।

जहां संस्कृत पदार्थ से भिन्न या विपरीत अर्थ जचा वहाँ पद हटा भी दिये हैं। जैसे—पृ० ८६८। प० ४॥ मुद्रित पृ० ६०६। प० १०॥ अ० १०। मं० ३३—

मुद्रित है—'(नमुचौ) जो अपने दुष्ट कर्म को न छोड़े।'

प० जी ने बदला—'(नमुचौ) जो अपने कर्म को न छोड़े।

संस्कृत पदार्थ के अनुसार 'दुष्ट' पद अधिक प्रतीत हुआ। इसलिये हटा दिया। भाषा पदार्थ में प्रकरणानुसार 'दुष्ट' पद अपना विशेष अभिप्राय रखता है।

अनेक मन्त्रों के भाषा पदार्थ तो श्री प० जी को सर्वथा जचे ही नहीं। उनको तो आपने आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। कारण भाषा पदार्थ उन मन्त्रों में जिस शैली से लिखा गया है उससे स्पष्ट अर्थ नहीं होता। जैसे—अ० १। म० १५॥ पृ० ८१। मुद्रित पृष्ठ ४५। ऐसे स्थल तो बहुत हैं जहाँ भाषा पदार्थ के आधे या आधे से कम अंशों की काया पलट गई है।

४—श्री प० जी ने अनेक स्थानों पर शब्द बढ़ा दिये हैं, जो न भी बढ़ाते तो उतना अभिप्राय निकलता। जैसे—अ० १०। मन्त्र ३४॥ पृ०

(शेष पृष्ठ ७ में)

भारत की भाषा

युवराज श्री रणञ्जय सिंह एक्स० एम०, एल० ए० (केन्द्रीय)

[श्री युवराज जी की यह कविता आर्यमित्र के अभ्युदय में प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु उसमें एक चरण छपने से रह गया था, जिसको शुद्ध कर अब फिर प्रकाशित किया जा रहा है— —सम्पादक

भारत दिव्य देश की भारती है भाषा भव्य
अथवा आर्यावर्त की आर्य भाषा जानिये,
अरबी जैसे अरब की, हिंदी भी हिन्द की है
होकर आजाद पूर्ण रूप पहचानिए।
द्रविड़ प्राणायाम अभ्यासी जो द्रविड़ अब
सीधे नहीं पकड़ें नाक सत्य ही मानिए,
भये अंग्रेज, न अभीष्ट न उनकी कुछ छाया
अथवा अंग्रेजी का न अब तम्बू तानिये

काश्मीर का सामाजिक जीवन

इतिहास के आदिकाल से कश्मीर में अनेक सभ्यताओं का उदय हुआ है। परिणामतः कश्मीर निवासियों की संस्कृति बौद्ध, हिंदू और इस्लामी परम्पराओं का सम्मिश्रण है।

कश्मीर के लोग अपने व्यवहारिक जीवन में जाति पाति के भेदभाव को नहीं मानते और हिंदू मुसलमान एक दूसरे के धर्म के आध्यात्मिक उपदेष्टाओं और महात्माओं का समान रूपसे आदर करते हैं। कश्मीर में ऐसे बहुत से धार्मिक स्थल और मकबरे हैं जिन्हें हिंदू और मुसलमान दोनों ही पवित्र मानते हैं। झेलम नदी के तट पर बनी हुई शाह हमदान की खानकाह एक ऐसी ही मस्जिद है।

जियारत पीर हाजी की दरगाह पर हिन्दू और मुसलमान भक्त हजारों की संख्या में एकत्र होते हैं, और इसके सम्बन्ध में एक किंवदन्ती यह है कि यह दरगाह प्रारम्भ में एक मन्दिर था जिसे प्रवरसेन द्वितीय ने बनवाया था।

कश्मीर के हिंदू और मुसलमान अपने मेले और त्यौहार भी मिल-जुल कर मनाते हैं। नेशनल कान्फ्रेंस के अधिकाश नेता यद्यपि कट्टर मुसलमान हैं। किन्तु वे हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों और सामाजिक उत्सवों में सम्मिलित होकर अत्यन्त गौरव एवं प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। ऐसे अवसरों पर सार्वजनिक रूप से हिन्दू पैगम्बरों की शिक्षाओं के सम्बन्ध में उपदेश दिये जाते हैं। मुस्लिम त्यौहार ईद और शबेबरात और हिन्दू त्योहार दीपावली में दोनों धर्मावलम्बी सम्मिलित होते हैं।

जन्म, विवाह और मृत्यु के समय किये जाने वाले विभिन्न धर्म विधानों या कृत्यों के विषय में भी यही बात लागू होती है। इन अवसरों पर गाये जाने वाले हिन्दू और मुसलमानों के ग्राम्यगीत भी एक ही जैसे हैं। कश्मीरी जीवन की गहराई में प्रवेश करने पर हिन्दू और मुसलमानों की परम्पराओं की एकता और भी अधिक स्पष्टरूप से प्रतीत होती है। आमतौर पर स्त्रियों में पर्दे की प्रथा नहीं है। देहात में तो पर्दा बिलकुल ही नहीं किया जाता। केवल विवाह के दिन वधू परम्परा की रक्षा के लिये थोड़ा सा घूंघट निकाल लेती है। वैसे हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियां अपने पतियों के साथ उन्मुक्त रूप से सामाजिक जीवन व्यतीत करती हैं।

हिन्दू और मुस्लिम स्त्रियों की वेश-भूषा में भी बड़ी एकता है। दोनों सम्प्रदाय एक ही जैसे वस्त्र पहनती हैं। कश्मीर के पुरुषों की, स्त्रियों की पोशाक पर तुर्की और बौद्ध प्रभाव पड़ा है। वर्तमान समय में कश्मीर के स्त्री और पुरुषों के पहनावे में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है और हिन्दू और मुसलमानों की वेषभूषा का भेद मिट गया है।

अगस्त १९४७ में जब गांधी जी ने कश्मीर की यात्रा की थी तब उन्होंने कहा था कि वह अपनी प्रार्थना में उपस्थित हिन्दू मुसलमानों में भेद नहीं कर सके क्योंकि उनका पहनावा बिलकुल एक जैसा होता है।

कश्मीरी जनता की दन्तकथाओं और सन्तों की सूक्तियों में भी कश्मीर निवासियों की आधारभूत एकता की अभिव्यक्ति हुई है। लाल देद, जो सुलतान शहाबुद्दीन के राज्यकाल (१३-५०) में जीवित थे और रूपा भवानी को, जो १६ वीं शताब्दी के अन्त में हुये, सूक्तियां आज तक भी दुहराई जाती हैं। शेख नूरुद्दीन ने कश्मीरी जीवन का चित्रण करते हुये कहा है कि शेष भारत की भांति काश्मीर में विभिन्न सम्प्रदायों में सामाजिक और सांस्कृतिक ऐक्य रहा है। कश्मीर के लोगों के लिये धर्म एक वैयक्तिक विषय है जिसने उन्हें अतीत की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक परम्पराओं से विमुख नहीं किया। निरन्तर उन्नति करने और आनन्दपूर्वक एक साथ रहने की उत्कट अभिलाषा में ही कश्मीरियों की आधारभूत एकता प्रकट होती है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

८६९। प० ५॥ मुद्रित पृ० ६०७। पं० १२——

मुद्रित है—'प्रजाश्च पुत्रवत्'''

पं० जी ने बदला— प्रजा [पुरुषा] श्च पुत्रवत्''''''

यहाँ 'पुरुषा.' बढ़ाया है। प्रजा से स्त्री पुरुष सब लिये जाते। पुरुष भी प्रजा में आ जाते।

ऐसा परिवर्धन कोई महत्व का नहीं। ऐसे अनेक परिवर्धन हैं, जो तुलना में दिखलाए गये हैं।

५—इसी प्रकार अनेक आवश्यक पद जो उड़ाने नहीं चाहिए थे, उड़ा दिये हैं। जैसे—अ० १० ॥ मं० १२—

मुद्रित पृ० ६०४। पं० १० ।'' ' भोजनादीनि''''''

पं० जी का परिवर्तन। पृ० ८६९ पं० २।'''' '''' "भोजनानि"

यहाँ 'आदि' पद हटा दिया है। आदि पद से अन्य पदार्थ भी गृहीत हो सकते थे।

६—कई स्थानों पर पं० जी ने कुछ पद जो असंगत प्रतीत हुए छोड़ दिये, परन्तु वे पद जी को असंगत प्रतीत होने पर भी अन्य पाठकों को भी असंगत प्रतीत होंगे, यह आवश्यक नहीं है। अन्य पाठक को वे पद संगत भी प्रतीत हो सकते हैं, इसलिये उन पदों का भाष्य में से निकाल देना ठीक नहीं है। जैसे अ० १०। मन्त्र ३४॥ पृ० ८६३। प० ३—

मुद्रित है—' '' राजधर्ममाश्रितः धार्मिकोऽध्यापको युवा'''

पं० जी ने परिवर्तन किया— 'राजधर्ममाश्रित. युवा ' '

(पृष्ठ ५ का शेष)

रेत बह गई

हल को जुये से बाँध उसने बैलों को इशारा किया। बरसात की पहली फुहार से भीगी धरती हल के फार से विदीर्ण होकर महक उठी। और वह सुगन्धि समई के नासापुटों में ज्यों ज्यों प्रवेश करने लगी त्यों उसका मन मोर की महक से पागल हुई कोयल की भाँति कुहुकने को व्याकुल हो उठा। बैलों की पैर की गति तीव्र हो उठी और समई का कंठ फोड एक स्वर लहरी शून्य में झनझना उठी।

दोपहर को कल्लू की मां जब रोटी लेकर खेत पर आई तो अधरों पर मुस्कान की रेखायें खींच बोली—कल्लू के दादा आज गांव में चर्चा रही कि जो कोई चाहे दस साल का लगान दे अपना अपना खेत खरीद सकता है। अब कोई ज़मींदार न रहेगा, बस किसान ही किसान होंगे और वे अपने अपने खेत के मालिक होंगे।

क्षण भर समई चुप रहा फिर लगा जैसे एक बार उसका हृदय पत्नी के प्रति युवावस्था के प्रेम से आप्लावित हो उठा हो, दोनों हाथों में पत्नी का हाथ ले कहा ओह! कल्लू की मां मैं इसी साल अपने कल्लू के लिये सब खेत खरीद लूंगा।

पत्नी की आँखों में लज्जा समा गयी तो उसने अपना हाथ छुड़ाते हुये कहा—हां पार साल यही हुआ और अब की भी यही करोगे। कल्लू का ब्याह नहीं करना है क्या?

'ब्याह भी होगा और यह भी। हम सबका लगान होता ही कितना है। ज़मींदार को तो हम जाने कितने दस साल का लगान कितने बार दे चुके।'

'पर अबकी सरकार को देना होगा। सब कहते थे इसी रुपये से सरकार ज़मीदारों से सब ज़मींदारी हमारे लिये खरीद लेगी।'—पत्नी ने कहा और यह भी है अगर सरकार दस वर्ष का लगान एक साथ लेगी तो आगे का लगान आधा ही वसूल किया जायगा।'

—समई ने कहा। 'यह तो बड़ा अच्छा है, लेकिन लगान का १० गुना रुपया ।' पर बात कंठ में ही रह गई। समई ने पत्नी की बात सुनी पर उत्तर कुछ न दे पाया। उसका मन किसी अन्य काल्पनिक संसार में यात्रा कर रहा था। भोजन करते समय पत्नी के साथ सब निश्चय हो गया। जैसे भी हो वह अपने खेत खरीदने के लिये जल्द से जल्द सरकार को रुपया दे देगा। और उसके बाद यह सब खेत उसके हो जायेंगे—उसके और उसकी सन्तान के। उसका हृदय खुशी से फूल उठा और खाना खाकर जब उसने फिर हल की मुठिया पर हाथ रखा तो उसमें स्वरलहरी और दूर तक छूने लगी, हल का फार धरती में अधिक नीचे तक धस कर चलने लगा। और समई सोच रहा था कि अब तक ये खेत ऊसर से थे जो साल भर खाने को न होता था पर अब ये मेरे हैं तो इस हल की नोक से जोते जाकर अपनी छाती पर हरी भरी फसल का यौवन ले कर ये खुशी से फूल उठेंगे।

❋ मेरी केरल यात्रा ❋

[गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली]

ट्रावनकोर की राजधानी त्रिवेन्द्रम् (तिरुअनन्तपुरम्) मे एक संस्था है जिसका कि नाम है केरल हिन्दू मिशन। इसका मुख्य काम है हिन्दू संस्कृति की रक्षा और ईसाइयों की शुद्धि। जैसे उत्तर मे हिन्दुओं को मुसलमानों से भय है इसी प्रकार ट्रावनकोर मे ईसाइयों से। क्यों कि यहां की २६ प्रतिशतक जनता ईसाई है, शिक्षा सर्वथा इन्हीं के हाथ में है। ट्रावनकोर के सब हिन्दू मंदिरों का प्रबन्ध देवस्व बोर्ड के हाथ में है। गवर्नमेंट से इसको ५० लाख वार्षिक मन्दिरों के लिये मिलता है, इस स्टेट के समस्त मंदिर इसी बोर्ड के आधीन है। केरल हिन्दू मिशन को भी इस बोर्ड से कुछ सहायता मिलती है।

मैंने १९३९ में इस मिशन की अध्यक्षता में दो व्याख्यान दिये थे, पिछले तीन वर्ष से मुझे इनके निमन्त्रण मिलते थे, परन्तु मैं जा नहीं सका। पिछले मास के अन्त में मुझे निमन्त्रण मिला कि १२।१३ नवम्बर को कवियूर में बड़ा भारी उत्सव होगा और दो सहस्त्र ईसाई शुद्ध होंगे। मैंने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और मैं ५ नवम्बर को दिल्ली से चल पड़ा। ७ नवम्बर को दो बजे रात के मद्रास पहुंचा ८।९।१० तीन दिन मद्रास में रहा। सामाजिक भाइयों से बातचीत की। १० की शाम को मद्रास से चल कर ११ की शाम को ७ बजे (पूरे २४ घन्टों पीछे) त्रिवन्ड्रम पहुंचा। हिन्दू मिशन के अधिकारी लेने आगये थे। लगभग ८ बजे रात्रि मिशन के भवन में पहुंचा। वहां कुछ प्रेस प्रतिनिधि उपस्थित थे। आध घन्टे में परिचय सम्बन्धी वक्तृतायें हुईं जो मलयाली भाषा के पत्रों में उसी दिन छप गईं। ४ बजे प्रातः काल बस में बैठकर कवियूर चले। यह स्थान ८० मील दूर है। ६ बजे पहुंचे। साथ में इतने आर्य व्याख्याता थे, १मैं,२ मदनमोहन जी विद्यासागर तिनाली, (आन्ध्रदेश, ३ श्री कन्नथ। मद्रास ४ श्री नारायणदत्त जी तिनावली, ५ श्री सुधाकर जी बंगलोर ६ श्री बुद्धसिंह जी कालीकट, ७ श्री सुधाकर जी त्रिवेन्द्रम,

कवियूर में दो दिन बड़ा शानदार उत्सव रहा आठ दस हजार जनता इकट्ठी होती थी कई संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। शुद्धि का काम अधिकतर आर्य पंडितों के ही हाथ में था। पहले दिन लगभग ११०० मो शुद्ध हुये, दूसरे दिन आठ, नौ सौ, मिस्टर टामस सटली के [illegible] इनका नाम श्री राज रक्खा गया [illegible] कवियूर में एक बड़ा मन्दिर है। शु[illegible] इनका द[illegible] [illegible] १९३८ [illegible] रात को [illegible]

ओर से एक कानून बन गया है कि मंदिरोंमें अछूत भी दर्शन करने जा सकते हैं। इस अवसर पर आर्य विद्वानों ने आर्य समाज के कई सिद्धान्तों पर व्याख्यान दिये। हम लोगों को विद्यालयों ने दूर २ से बुलाकर व्याख्यान देने का अवसर दिया।

१४ को हमलोग चैंगानूर पहूँचे। यह स्थान त्रिवेन्डम से ५० मील दूर है। यहां आर्य केरल सभा है। लगभग ५ समाजें हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचारक नियत हैं। सभा का भवन किराये का है। सायकाल को सार्वजनिक व्याख्यान हुये जिनमें लगभग एक हजार जनता थी। एक सज्जन ने मन्दिर के लिये भूमि दान दी है। अभी सभा के नाम रजिस्ट्री होनी शेष है। १५ की शाम को पुनः हम त्रिवेन्द्रम आगये और श्री बिरला जी द्वारा स्थापित आर्य (हिंदू) धर्म सेवा संघ के अधीनस्थ आर्य कुमार आश्रम में ठहरे। श्री० कृष्णानन्द जी इसके आचार्य हैं। चालीस के लगभग विद्यार्थी पढते हैं। इनकी संध्या और वेद मन्त्र तथा गीता के श्लोक सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस संस्था की ओर से सायकाल को सार्वजनिक व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया। तीन व्याख्यान हुये, (१) श्री अद्वैतानन्द जी का जो एक हिन्दू संघ चलते हैं। दूसरा मेरा ३ मदनमोहन जी विद्यासागर का। १६ नवम्बर की रात को कुमारी अन्तरीप पहुंचे। १७ को प्रातःकाल बंगाल सागर और अरब सागर के संगम में स्नान करके तिरुनवो (तिन्नावली) में आये। मैं यहां दो दिन रहा और प्रचार की योजना का चिन्तन करता रहा। कई लोगों से मिला भी। यहां राष्ट्र सेवा संघ का जोर था और महात्मा गान्धी जी की मृत्यु के उपरान्त बहुत सी गिरफ्तारियाँ भी हुई थी। अतः लोग भयभीत बहुत हैं और कोई नई सभा खोलना नहीं चाहते। तिनावली व्यापार का केन्द्र है। यदि उत्तरी भारत के व्यापारी आर्य यहां बस जाय तो प्रचार हो सकता है। उत्तर से एक राजपूत सज्जन श्री लाला जगनसिंह ने आकर मिठाई की दूकान खोली थी। अब वे लखपति होगये। उनको आर्य समाज से भी कुछ सहानुभूति है।

१९ को प्रातःकाल में टूटाकोरन आया यहां से जहाज लंका जाते हैं। ८ घन्टे का रास्ता है। यह भी व्यापारी नगर है, एक व्यापारी मिले, इनको आर्य समाज से प्रेम है, कहने लगे मेरे पास तामिल भाषा का सत्यार्थ प्रकाश है और कई ट्रेक्ट भी। उन्होंने मुझे कई ट्रेक्ट दिखाये। मै तामिल नहीं जानता। मैंने पूछा यह ट्रेक्ट किसके बनाये हुये हैं, उन्होंने ऊपर का पृष्ठ पढ़कर बताया, श्री० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय लेखक हैं और श्री पं० धर्मकाम जी अनुवादक हैं। मैंने कहा यह तो मेरा ही नाम है। यह सुनकर उन्होंने मेरे ऊपर अधिक श्रद्धा दिखाई। जब मै शोलापुर रहता था उस समय धर्मकाम नामी एक सन्यासी आगये थे, मैंने उनसे अपने ट्रेक्टों का तामिल में अनुवाद कराया था और सार्वदेशिक सभा के व्यय से वह छापे गये थे।

टूटीकोरन में मैं दो घन्टे रहा। ११ बजे टूटीकोरन एक्सप्रेस पकड़कर २० नवम्बर को प्रातःकाल मद्रास पहुंचा। वहां १० बजे सब कार्यकर्ताओं की एक मीटिंग हुई जिसे सेन्ट्रल समाज के मन्त्री श्री नारायण जी ने मुझे मिलने के लिये बुलाया था। दो घन्टे तक सेक्फ गवर्नमेंट के मिनिस्टर श्री कुल्लूर चन्द मौलिजी ने भोजन के लिये निमन्त्रण दिया। उनसे १ घन्टे तक नैतिक तथा सामाजिक विषयों पर बातचीत होती रही।

१२ नवम्बर को १० बजे पूर्वातंन्ह ग्रान्डट्रनक एक्सप्रेस से दिल्ली को चल पड़ा मदन मोहन जी विद्यासागर तिनाली (आन्ध्र) तक मेरे साथ आये, पूर्व सूचना पर श्री पं० गोपदेव जी बापटला स्टेशन से सवार होकर मेरे साथ तिनाली तक रहे और आन्ध्र देश मे आर्य समाज का प्रचार कैसे हो इस पर बातचीत होती रही। मुझे आशा पड़ती है कि निकट भविष्य में श्री पं० मदन मोहन जी विद्यासागर तथा श्री पं० गोपदेव जी के सहयोग से आन्ध्र में आर्य समाज की जड़ पक्की होजायगी।

समस्त दक्षिण और विशेषकर तामिलनाड अर्थात् तामिल प्रान्त में और द्राविण की वैसी कठोर समस्या है जैसी उत्तर में हिंदू और मुस्लिम की। द्राविडों का एक संघ है जो आर्य वेद, और संस्कृत से चिढ़ता है, अंग्रेजों ने उनको सिखा दिया है कि देश के अखिल निवासी द्राविड है। आर्य लोगों ने विदेशों से आकर द्राविडों को परास्त किया और अपनी संस्कृति का अध्यारोप किया। ईसाइयों ने इस भेद भाव को और बढ़ा दिया। इस लिये आर्य समाज के काम में भी बाधा है। एक और कठिनाई है। उत्तर से त्यागी प्रचारक आते भी नहीं। परन्तु साधारण विद्या रखने वाले चलते पुरजों की आवश्यकता नहीं है। दक्षिण में दो चार ऐसे चतुर व्यक्ति भी हैं जिन्होंने आर्य समाज के उत्तर से आने वाले लोगों को खूब ठगा है। वे शीघ्र ही लोगों को अपने वाग्जाल में फांस लेते हैं। दक्षिणात्य वाक्यटुता के लिये प्रसिद्ध है। परंतु वे समाज के लिये त्याग करने की मनोवृत्ति नहीं रखते। हर आदमी स्वार्थ को पहले सामने रखता है, ईसाइयों के इधर कई प्रकार के ढोंग हैं। ईसाई अपनी बाइबिल को वेद ज्ञान कहता है। जो ईसाई हो जाता है उसको कहा जाता है कि इसने वैदिक धर्म स्वीकार किया है। यह अपने बिशप को मोस्ट रवरेयड (Most Revread) के स्थान में नितांत वन्द्य दिव्य श्री, कहकर पुकारते हैं। सीरियन मिशन के लोग हिन्दुओं के समान ही वेश भूषा रखते हैं। कोई भेद नहीं।

आर्य समाज के साहित्य का तो सर्वत्र सर्वथा अभाव है। ईसाइयों का हर प्रकार का प्रचुर साहित्य हैं। एक कोटायूयम नगर से ४ ईसाई पत्र निकलते हैं, १ पौर प्रभा, २ पौर ध्वनि, ३, मलयाल मनोरमा, ४ दोपिका। तिनेवली के पास पालभ कोटा मे ईसाइयों के तीन बड़े कालेज हैं, दो लड़कों के और एक लड़कियों का।

केरल देश के हिन्दुओं को एक बड़ी आशंका यह है कि ईसाई लोग समयान्तर में वैसी ही राजनैतिक समस्या उत्पन्न न करदें जैसी मुस्लिम लीग ने की। परतु हिंदू शंकित हो सकता है सतर्क नहीं यही इसकी निर्बलता है और यही इसके ह्रास का कारण है जो जाति मूर्ति पूजा के गड्ढे पर फंस जाती है उसमें यह अवगुण आ ही जाते हैं क्योंकि मंदिरों में जाना 'मूर्तियों पर फेन' फूल चढ़ाना और गप्पाष्टक पूर्ण कथायें सुनना ही जनता का ध्येय हो जाता है। भारतवर्ष में सबसे अधिक और सब से बड़े मंदिर दक्षिण में हैं। लोगों ने काला, कौशल और धन मंदिरों पर ही लगाया है। मेरे सामने तो एक ही उपाय है आर्य समाज संगठित रूप से अपना समस्त बल और समस्त धन आर्य सामाजिक साहित्य के निर्माण में लगा दे। परतु है यह काम बिल्ली के ये गले में घंटा बांधने के समान कठिन, क्योंकि आर्य समाज की धन, तन, मन रूपी शक्ति का अपव्यय करने के लिये बहुत से खिलाने उपस्थित हैं जिनको चिंतन से आर्य समाज के बहुत से शुभ चिन्तकों को अवकाश नहीं मिलता। किमधिकम्। अलमति विस्तरेण

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनाएँ

बृहदधिवेशन, निमन्त्रण

आर्यप्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त का आगामी बृहदधिवेशन ईस्टरावकाश में होना निश्चित हुआ है। अधिवेशन की तिथि, स्थान नियत करने का विषय २५ दिसम्बर १९४९ को सभा की अन्तरङ्ग में प्रस्तुत होगा। अतः प्रान्त के समस्त आर्य समाजों के प्रधान मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जो आर्यसमाज अपने नगर में बृहदधिवेशन को निमन्त्रित करना चाहते हैं, वे अपनी आर्यसमाज की अन्तरङ्ग में विषय प्रस्तुत कर उसके निश्चय सहित निमन्त्रण-पत्र १५ दिसम्बर तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री
प्रधान
आ. प्र. सभा, युक्तप्रान्त

मेला प्रचार

गत वर्षों की भांति १९५० के उत्तरैनी के मेले अवसर पर १३ से १६ जनवरी १९५० तक सभा की ओर से बागेश्वर मेले पर प्रचार की योजना बनाई गई है सभा की ओर से निम्न समाजों के नाम सहायतार्थ धन लगाया गया है। कुमायूँ में यह मेला विशेष महत्व रखता है आर्य समाज अलमोड़ा की अवस्था अच्छी नहीं है। कि वो इस कार्य को कर सके इसलिये बाहर से ही धन के लिये अपील करनी पड़ती है इस वर्ष भी सभा के उपदेशक श्री देवनाथ जी महाराज निम्न समाजों से धन एकत्र करने जायँगे यदि आर्य समाजें स्वयम् सहायता भेज दिया करें तो व्यर्थ का माँगने जाने का खर्च न पड़े। धन इस प्रकार लगाया है, आशा है कि आर्य समाजें इस कार्य मे सहयोग लेकर कृपा करेंगे।

१. आर्यसमाज हलद्वानी	५०)
२. आर्यसमाज गंज मुरादाबाद	२५)
३. आर्यसमाज धामपुर	२५)
४. आर्यसमाज कांठ	२५)
५. आर्यसमाज सम्भल	२५)
६. आर्यसमाज सरायतरीन	२५)
७. आर्यसमाज अमरोहा	२५)
८. आर्यसमाज शाहजहाँपुर	२५)
९. आर्यसमाज रामपुर	२५)
१०. आर्यसमाज बदायूँ	२५)
११. आर्यसमाज कासगंज	२५)
१२. आर्यसमाज धनोरामडी	१५)
१३. आर्यसमाज चाँदपुर(बिजनौर)	२५)
१४. आर्यसमाज हसनपुर मुरादाबाद	२५)
१५. आर्यसमाज हापुड़	५०)
१६. आर्यसमाज गाज़ियाबाद	२५)

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन गुरुकुलोत्सव के साथ २ ता० २५ व २६ दिसम्बर १९४९ को गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) में होगा अतः सर्व अन्तरंग सभा सदों से अनुरोध है कि कृपया अन्तरंग की तिथि नोट कर लें और गुरुकुल अवश्य पधारें।

निरीक्षक सूचना

सभा का वर्ष समाप्त होने मे केवल एक मास शेष रहा है। किन्तु अधिकांश समाजों का निरीक्षण नहीं हुआ है। अतः श्री निरीक्षक महानुभावों से प्रार्थना है कि अपने अपने आधीनस्थ समाजों का निरीक्षण करके रिपोर्ट चित्र सभा कार्यालय में शीघ्र भेज दें।

रामदत्त शुक्ल
मन्त्री

आवश्यकता

एक प्रतिष्ठित तथा उच्च कुलीन नव युवक कान्यकुब्ज ब्राह्मण (२८) वर्ष के लिए जो कि प्रथम श्रेणी के डिग्री कॉलेज मे उच्च पद पर कार्य कर रहे हैं एक सुशिक्षित सुन्दर, गौरवर्ण कन्या की आवश्यकता है। प्रथम पत्र में पूर्ण परिचय देने का करें। अन्य जाति के व्यक्ति भी पत्र व्यवहार कर सकते हैं। पत्र व्यवहार बौक्स नं० ५ आर्य मित्र लखनऊ से करें।

आर्य जगत—

५००) रुपये का पुरस्कार

ठाकुर दत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट वैदिक धर्म प्रचार तथा आर्य विद्वान् लेखकों का उत्साह बढ़ाने के लिये यह निश्चय किया है कि प्रति वर्ष उक्त ट्रस्ट की निर्वाचित पुरस्कार समिति ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के अनुकूल वैदिक सिद्धान्तों पर संस्कृत हिन्दी अथवा अंग्रेजी की प्रकाशित पुस्तकों में से जिस एक पुस्तक को सर्वोत्कृष्ट निर्धारित किया करेगी उसके विद्वान् लेखक को सम्मानार्थ एक प्रमाण पत्र के साथ नकद ५००) रुपये का श्रीमद्दयानन्द नामक पुरस्कार दिया जाया करेगा परन्तु यह पुरस्कार केवल ऐसी पुस्तक पर ही दिया जायगा जिस पुस्तक पर लेखक ने पहले किसी संस्था से पुरस्कार प्राप्त न किया हुआ हो।

अतः लेखक महानुभावों से विनय है कि वे वैदिक सिद्धान्तों पर उपी अपनी अपनी मौलिक पुस्तकें, भाष्य या टीकाओं की २ प्रतियाँ ३१ जनवरी सन् १९५० तक निम्नलिखित पते पर भेजें

प्रधान ठाकुरदत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट, अमृतधारा फार्मेसी लिमिटेड देहरादून।

निवेदक—
हीरानन्द शर्मा

नोट—विशेष जानकारी के लिये पुरस्कार नियम आप ट्रस्ट से मंगवा कर रखें।

वैदिक धर्म प्रचार

श्री विद्वद्वर्य शिरोमणि पं० अयोध्या प्रसादजी बी० ए० वैदिक रिसर्चस्कालर कलकत्ता—संस्थापक तथा कुलपति शान्ति आश्रम लोहारदगा रांची के द्वारा ३० सितम्बर से लेकर ६ नव० तक रांची आर्य-समाज, प्रतापपुर (गया) रजौली, चमारा (गया) लोहारदगा मिडिल-स्कूल, लोहारदगा धर्मशाला और कांके (रांची) में वैदिकधर्म सम्बन्धी विविध विषयों पर भाषण हुए। इस यात्रा में पण्डितजी का गामों में भी प्रचार हुआ।

—आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त के उपदेशक श्री पं० कौशिकजी सुल्तानपुर से निमन्त्रण देने पर यहाँ समय पर पधारे और बराबर ५ दिन तक ता० २७ सितम्बर से १ अक्तूबर तक यज्ञ कथा को की योजना चलती रही।

श्री लाला चमन लालजी ने विधि-विधानाऽनुसार ८ बजे से ११ बजे तक प्रार्थना, यज्ञ, पुष्कल सामग्री घृत से ५ दिन तक यज्ञ किया। रात्री में ८ बजे से ११ बजे तक भजन, कथा, फिर गायत्री पाठ होता रहा। रात्री में कथा होती रही। मुसलमान भी सम्मिलित होते थे जिसका प्रभाव ग्रामीण भाईयों पर काफी पड़ा सभा के वेद प्रचार में भी धन से सहायता दी गई।

गुरुकुलोत्सव के लिए

स्वतन्त्र भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की महत्ता और आवश्यकता दिनों दिन उत्तरोत्तर अनुभव की जा रही है, अब प्रत्येक शिक्षा विशारद और प्रत्येक विश्वविद्यालय का यही कहना है कि जो शिक्षा शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक उत्थान में सहायक नहीं हो सकती उसे शिक्षा कहना शिक्षा का उपहास करना है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना इसी आधार पर की गई है कि वह विद्यार्थी की उपर्युक्त त्रिविध उन्नति का साधन बन सके, स्वतन्त्र भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की कितनी आवश्यकता है यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है, देश की सामाजिक और आर्थिक अशान्ति दूर करने के लिए गुरुकुल शिक्षा अनिवार्य है, पिछले पचास वर्षों से गुरुकुल प्रणाली का पुनरावर्तन हुआ है, विदेशी सरकार की उपेक्षा से यह प्रणाली उतनी सफल नहीं हो सकी जितनी होनी चाहिए थी परन्तु अब तो अपना ही राज्य है अतएव गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अधिकाधिक उन्नत, उच्च और सफल बनाया जा सकता है और अपनी सरकार से अभिलषित आर्थिक सहायता भी प्राप्त की जा सकती है, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि गुरुकुल प्रेमी जनता किसी एक स्थान पर एकत्र हो और गुरुकुलों की त्रुटियों तथा आवश्यकताओं पर विचार कर उन्हें दूर कर पूर्ण करने का प्रयत्न करें।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गुरुकुल, वृन्दावन में है उसका महोत्सव आगामी २५, २६, २७ तथा २८ दिसम्बर को बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है, उसमें सम्मिलित होने के लिए मैं प्रत्येक शिक्षा प्रेमी को सादर और सप्रेम निमंत्रण देता हूँ मुझे पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल प्रेमी जनता इस सुअवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधारेगी और गुरुकुल को सब प्रकार सफल एवं समुन्नत बनाने पर विचार करेगी, अवसर से लाभ उठाना सबसे बड़ी बुद्धिमता है, बुद्धिमानों के लिए संकेत ही पर्याप्त होता है अधिक क्या,

गुरुकुल वृन्दावन—

स्वामी केवलानन्द जी का शोक प्रद, देहावसान,

मुझे मद्रास से ... श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज ... के आकस्मिक मृत्यु का दुखद समाचार मिला। अभी थोड़े दिन पहले मौरीशस का आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वामी जी को सार्वदेशिक सभा के लिये अपना एक प्रतिनिधि चुना था। जब वे बम्बई से लौटे थे तो दिल्ली उतरे। मुझ से भेंट हुई। वे सभा के सभासद होने में कुछ संकोच कर रहे थे क्योंकि उन्होंने कभी समाज के नैतिक और प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यों में भाग नहीं लिया था। वे अधिकतर वैदिक धर्म के प्रचार में ही संलग्न रहते थे। उनकी मूर्ति बड़ी सौम्य और दिव्य थी। उनकी वाणी में रस था। उनके उपदेशों का प्रभाव बहुत अच्छा होता था। उनका जीवन शिक्षाप्रद था स्वामी जी की अवस्था कुछ अधिक नहीं थी। मेरी प्रार्थना पर उन्होंने मौरीशस का प्रतिनिधि बनना स्वीकार कर लिया था मुझे खेद है कि सार्वदेशिक सभा उनकी सेवाओं से वंचित रह गई। आर्य समाज में स्वामी जी के बहुत से भक्त हैं। वे तो स्वामी जी की मृत्यु का हाल सुनकर अत्यन्त ही दुखित होंगे। परन्तु यह एक यश की बात है कि वेद प्रचार करते हुये ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे। १९ नवम्बर की रात को १॥ घन्टे तक व्याख्यान दिया। रात्रि के १ बजे उनपर पक्षाघात का तीव्र प्रहार हुआ। और लगभग २२ घन्टे बाद उनका प्राणान्त हो गया। इस दुखद समाचार के साथ हमको एक बात का सन्तोष है कि आर्य समाज सीताराम बाजार के सदस्यों और सभासदों ने जिनके वे अतिथि थे, उनकी सेवा और उपचार में किसी प्रकार की कसर न उठा रक्खी और डाक्टरों और चिकित्सकों ने निःस्वार्थभाव से चिकित्सा की। उनका शव २१ नवम्बर को बड़ी शान के साथ निकाला गया जिसमें कई हजार आर्य भाई सम्मिलित थे उनका ... उत्तम रीति से किया गया। उनके भाई श्री स्वामी सुखानन्द जी को तार द्वारा सूचना पहुँचाने पर २१ ... प्रातःकाल देहली आ गये थे और दाह संस्कार में उपस्थित थे।

गंगाप्रसाद, उपाध्याय, एम० ए०
मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

आवश्यकता

आर्यसमाज अम्बहटा जिला सहारनपुर को एक योग्य अध्यापिका की आवश्यकता है जो ट्रेनिंग या नारमल पास हो वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

पताः—
मंत्री आर्यसमाज
अम्बहटा, जिला सहारनपुर

५) या ५) से अधिक दान दाताओं की मास सितम्बर की सूची

१०) श्री प० मिश्रीलाल जी शर्मा आयुर्वेद शिरोमणि महावा।
२१) ,, ... गोलागोकरन नाथ (खीरी)
५) ,, ... सकटीलाल जी गुप्ता, सुखमेनपुर (फर्रुखाबाद)
१५) ,, म० चम्पालाल जी मधु लाल जी छियाव रोड कोटा
५०), मैनेजर विष्णु एक्सचेंज लिमिटेड चान्दनी चौक, देहली
७) ,, बा भगवानस्वरूप जी माथुर C/O तहसीलदार फतेहपुर जयपुर स्टेट
५) ,, म० ... ला, हरदयाल पूरनमल ... पटा
५) ,, ... शाहाबाद हरदोई
१० ,, ...
६) ,, ... इलाहाबाद

१८७)
॥ =) पांच रुपये से कम देने वालों का योग
८॥ =)

(पृष्ठ ४ का शेष)

का गहन अध्ययन करना आवश्यक होगा। इन जागीरदारों में से अधिकतर व्यक्तियों के अधिकार का प्रारम्भ बहुत समय पूर्व उस सैनिक सेवा के उत्तरदायित्व को पूर्ण करने के कारण हुआ था जो कि अपने सरदार नेताओं के प्रति रखते थे। राजपूताने की इस प्रथा के सम्बन्ध में जांच करने के लिये लगभग ७५ वर्षों में विशेषज्ञों की अनेक समितियों ने खोज कर अपनी २ रिपोर्ट दी है। उनमें से अधिकतर व्यक्तियों ने राजपूताना के इस वैधानिक प्रबन्ध को 'सामन्तवादी प्रथा' का नाम घोषित करने में सन्देह प्रकट किया है—वे इस प्रथा को सामन्तवादी प्रथा स्वीकार नहीं करते हैं। उनकी सम्मति में इस प्रथा को जातीय अधिकार का सामन्तवाद की अवस्था में परिवर्तन होने का रूपान्तर मात्र कहा जाना अधिक उपयुक्त होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक काल में परिवर्तनशील राजप्रणाली में जागीरदारी प्रथा के समान पुरातन प्रथाओं का कोई स्थान नहीं समझा जाता है परन्तु एकाएक क्रान्तिकारी परिवर्तनों से कभी २ अव्यवस्था और अराजकता हो जाना कुछ असम्भव नहीं है इस प्रकार की सम्भावनाओं में यह निश्चय पूर्वक कहना कठिन है कि 'राजस्थान संघ' इस प्रकार के क्रान्तिकारी सुधारों के एकाएक लागू करने से सम्भावित उत्पात व अव्यवस्था को रोकने में सर्वथा समर्थ है।

भारत के नव निर्मित संघों के स्वल्पकाल के जीवन में ही स्थानीय शासन सम्बन्धी न्यूनताओं के अनेक ऐसे उदाहरण दृष्टिगोचर हुये हैं जिनसे विचित्र प्रकार की अत्यन्त दुर्गम, गम्भीर शासन सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न हो गई हैं। इन राज्यसंघों की वर्तमान स्थिति का विचार करते हुये उनका इस नवीन प्रकार के भयंकर भारी बोझ को उठाना, सुरक्षित नहीं कहा जा सकता।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 'ब्रिटिश भारत' नाम से प्रसिद्ध भागों में, शिक्षित जनसमूह के चौथाई शताब्दी के प्रबल आन्दोलन के कारण उत्पन्न चेतना को भी सच्चे अर्थों में 'जनता की मांग' का आन्दोलन नहीं कहा जा सकता है। हां, यह प्रकट है कि इन प्रदेशों की प्रान्तीय सरकारें व केन्द्रीय सरकार शासन की दृष्टि से इतनी अधिक शक्तिशालिनी है कि वे किसी भी क्रान्तिकारी परिवर्तन व्यवस्था तक को बलपूर्वक लागू कर सकती है जबकि राजस्थान की सरकारों की स्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। क्या यह 'अनुसन्धान समिति' ऐसे साधनोपायों को व्यवहार में लाने का परामर्श दे सकेगी कि जिससे इन प्रदेशों को भूमिव्यवस्था भी देश के अन्य प्रान्तों के समान, सुरक्षा सहित, न्यून से न्यून समय में बिना वर्ग संघर्ष के और नैतिकता का बिना विनाश हुए प्रचलित की जा सके? दो विरोधी तत्वों का समाधान कैसे हो सकेगा?

— —

अगले साल मर्दुम शुमारी के प्रांतीय व रियासती सचालकों का सम्मेलन

नयी दिल्ली, १२ दिसम्बर। पता चला है कि १९५१ में होने वाली मर्दुम शुमारी के सिलसिले में आरम्भिक कार्रवाई पूर्ण होने के बाद, फरवरी या मार्च १९५० में दिल्ली में मर्दुम शुमारी के प्रांतीय तथा रियासती सचालकों का सम्मेलन होगा।

इतिहास में पहली बार, भारत में प्रत्येक मकान की गिनती स्थायी तौर पर कर ली जायगी। मद्रास, मध्य प्रांत, उड़ीसा और आसाम में मकानों की गिनती पूरी कर ली गयी है। बम्बई मध्य भारत हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में यह काम लगभग समाप्त हो रहा है। अन्य क्षेत्रों में मकानों की गिनती की जा रही है।

खानबन्धु रिहा हों पठानों को मदद दी जाय

अफगान सरदारों की अपील

पूना, ९ दिसम्बर। भारत में रहने वाले तीन अफगान सरदारों श्री हफीजुल्ला खां श्री इनायतुल्ला खां और श्री हबीबुल्ला खां ने एक संयुक्त वक्तव्य देते हुए मांग की है कि खान अब्दुल गफ्फार खां, डाक्टर खां साहब व अन्य पठान नेताओं को जो पाकिस्तान में जेलों में बन्द हैं मुक्त कर दिया जाय।

इन सरदारों ने अपने वक्तव्य में इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया है कि सीमा प्रांत तथा बलूचिस्तान की कबायली जनता ने अफगानों की अलग हुकूमत पख्तोनिस्तान के लिए मांग की है।

वक्तव्य में सरदारों ने कहा है कि हमें पूर्ण आशा है कि अपने भाग्य निर्माण के अधिकार के लिए किये जाने वाले पठानों के संघर्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ उन्हें मदद देगा

काश्मीर कमीशन की रिपोर्ट में पंच नियुक्ति का सुझाव

लन्दन, १२ दिसम्बर। न्यूयार्क के लिए रवाना होने से पूर्व भारत के परराष्ट्र सचिव सर गिरजाशंकर बाजपयी ने आज यह स्पष्ट कर दिया कि भारत संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति में कश्मीर का प्रश्न आने पर पूरे कश्मीर क्षेत्र पर संयुक्त राष्ट्रीय मध्यस्थता का समर्थन करेगा।

भारत अमरीका सम्मेलन आरंभ

नयी दिल्ली, १२ दिसम्बर। भारत अमरीका सद्भावना सम्मेलन आज प्रातःकाल दिल्ली विश्व विद्यालय भवन में आरम्भ हुआ जिसमें भारत और अमरीका के ७० प्रतिनिधियों के अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में दर्शक भी उपस्थित थे।

भारतीय शिष्टमंडल नेता पंडित हृदयनाथ कुंजरू सम्मेलन के अध्यक्ष हैं।

प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए श्री कुंजरू ने कहा कि अमेरिका और भारत के बीच सद्भावना तथा सौहार्द की स्थापना का गैर सरकारी तौर पर प्रयत्न करने के लिए यह सम्मेलन बुलाया गया है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है शांति। संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानवता की बहुत बड़ी सेवा की है पर अभी वह इतना विश्वास का वातावरण नहीं पैदा कर सका कि दुबारा युद्ध न हो। चीन की घटनाओं ने सिद्ध कर दिया है कि बलपूर्वक शांति रखना असंभव है। धर्म, राष्ट्र, जाति रंग भेद के आधार पर पक्षपात ही शांतिभंग का कारण है। भारत इन दोनों से दूर है। उसकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति सभी जनतन्त्र वादी देशों से हमदर्दी रखने और गुटबन्दी में न पड़ने की है। अमरीका की वैदेशिक नीति मेरी समझ में नहीं आती। सुदूरपूर्व की घटनाओं से आशंका होती है कि विश्व दो गुटों का रूप धारण करता जा रहा है। अब तक अमरीका यूरोप पर ही ध्यान देता था। पर सुदूरपूर्व ने चेतावनी दी है कि विश्व एक इकाई है। सभी पिछड़े देशों के विकास का समान रूप से प्रयत्न होना चाहिये।

"धार्मिक परीक्षायें"

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से प्रतिवर्ष होने वाली सिद्धान्त सरोज, रत्न, भास्कर तथा शास्त्री की धार्मिक परीक्षायें इस बार भी आगामी जनवरी की २९ ता० रविवार को होंगी। आवेदन पत्र भेजने की ता० ३० नवम्बर है। जिन के केन्द्र व्यवस्थापकों ने अभी तक आवेदन पत्र नहीं भेजे हैं वे उन्हें मय शुल्क सहित शीघ्र भेजे दें। जिन सज्जनों को अपने यहां परीक्षा के केन्द्र स्थापित करना हो नियम पाने से नियमावली और आवेदन पत्र मुफ्त मंगा लें। गत वर्ष इन परीक्षाओं में ५००० से अधि छात्र सम्मिलित हुए थे। —मन्त्री

हैदराबाद के सैनिक गवर्नर को कानून बनाने के अधिकार थे

हैदराबाद, १२ दिसम्बर। बीबीनगर डकैती कांड में विशेष सरकारी वकील श्री बी. एल. पृथीराज ने आज विशेष अदालत में कहा कि निजाम द्वारा ७ अगस्त १९४९ को जारी किये गये फरमान में सैनिक गवर्नर को नियम और कानून बनाने का अधिकार दिया गया था। आपने कहा कि कानून बनाने के सम्बन्ध में सैनिक गवर्नर को दिये गये अधिकार हैदराबाद व्यवस्थापक सभा कानून की धारा २५ के अन्तर्गत नहीं आ सकते।

इससे पूर्व बहस करते हुये कासिम रिजवी के वकील ने कहा था कि सैनिक गवर्नर को कानून बनाने का कोई अधिकार नहीं था। यदि उनके अधिकार मान लिये जायं, फिर भी वे अधिकार निजाम की कार्यकारिणी के अध्यक्ष के अधिकारों के बराबर ही हो सकते थे जिन के अनुसार संकटकालीन समय में वे केवल ६ मास के लिए लागू कर सकते थे।

श्री लियाकत अली मास्को से पहले वाशिंगटन जायंगे

कराची, १३ दिसम्बर। जानकार सूत्रों से पता लगा है कि पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री लियाकत अलीखां मास्को के पहले वाशिंगटन जाने का इरादा कर रहे हैं।

श्री लियाकत अली की मास्को यात्रा, जिसकी घोषणा गत मई में हुई थी, गतमास नहीं हो सकी! मास्को में पाकिस्तान के नवनियुक्त राजदूत श्री कुरेशी उनके मास्को जाने की तारीख निश्चित करेंगे।

इन्हीं सूत्रों का कहना है कि आगामी मई तक प्रधान मन्त्री के सामने बड़ा व्यस्त कार्यक्रम है। इसी बीच विधान परिषद् की दो बार बैठकें होंगी और शाह मुहम्मद रजा पहलवी पाकिस्तान के भ्रमण के लिये आवेंगे। यह सम्भव है कि श्री लियाकत अली आगामी अप्रैल के अन्त में बजट अधिवेशन समाप्त हो जाने के बाद बजट मास्को चले जायें।

———

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

भारतवर्षीय आर्य कुमार की अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन आर्य समाज नयी देहली में श्री ईश्वर दयालु जी आर्य कार्यकर्त्ता प्रधान परिषद् के सभापतित्व में हुआ — कतिपय महत्वपूर्ण निश्चय कियेगये।

आर्य कुमारों के लाभार्थ ग्रीष्मावकाश में सांस्कृतिक शिक्षण शिविर लगाने का निश्चय किया गया।

श्री पुरुषोत्तम जी सङ्गठन कर्त्ता के सम्बन्ध में उनके निधन पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया तथा उनके परिवार की सहायतार्थ एकवर्ष के लिये १५) मासिक दिया जाना भी निश्चय हुआ।

—आर्यसमाज कोट का ४३वां वार्षिकोत्सव २४, २५, २६, तथा २७ नवम्बर १९४९ को समारोह पूर्वक मनाया गया। राजगुरु श्री धुरेन्द्र जी शास्त्री, स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, स्वामी शिवानन्द जी, ठाकुर अमरसिंह जी आर्य पथिक, प० अमरनाथ जी वैद्यशास्त्री तथा प० दिनेश कुमार जी वेदालंकार के व्याख्यान हुए। श्री अमरनाथ जी प्रेमी, श्री रामचन्द्र शर्मा संगीत विशारद, श्री शिवनाथ सिंह जी रमणा, श्री सुखराम सिंह जी तथा प० मुकुन्द राम जी के गायन और भजन हुए।

ग्राम कपथानी एक ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने पधार कर स्वयं वैदिक धर्म का प्रचार किया था, उनके भक्त श्री चौ० कासिम सिंह जी ने उक्त स्वामी जी महराज कीपुण्य स्मृति सन १८८५ ई० में एक सुविख्यात पचभुजी यज्ञशाला बनवाई थी। जिसके व्यय के पर्याप्त भूमि दान भी की थी। परन्तु २५ वर्ष से यहाँ सभी धार्मिक कार्य बन्द हो गये और यज्ञशाला की शोचनीय दशा हो गई।

प्रसन्नता की बात है, कि—श्री० देवीप्रसाद चौहरी जी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य तथा सभा निरीक्षक के उद्योग से २० नवम्बर सन् ४९ ई० को उसी यज्ञशाला में एक वृहद यज्ञ हुआ और श्री चौहरी जी का भाषण हुआ। फलस्वरूप आर्य समाज सङ्गठित हो जिसके निम्न ढंग पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

१—प्रधान श्री रामप्रसाद जी २— उपप्रधान श्री बसन्त सिंह जी ३— मन्त्रीश्री जयगोपाल जी ४— उपमेन्त्री श्री नवीनचन्द्र जी ५— कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी, ६—पुस्तकाध्यक्ष श्रीमाखन लाल जी।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य्यमित्र

स्वतन्त्र भारत और गुरुकुल शिक्षा

दूराच्चकमानाय प्रतिपाणाय अक्षये ।
आस्मा अशृण्वन्नाशा कामेनाजनयन् स्वः ॥

अथ० १६।५५।३

दूर से दूरस्थ विषय की बार २ कामना करते हुए अक्षय (ईश्वरीय हृदय) में प्रतिपालन के लिए मुझे दिशाओं ने सुन लिया है और सकल्प द्वारा उसके सुख को उत्पन्न कर दिया है। कोई सच्चा और दृढ़ संकल्प व्यर्थ नहीं जाता, कभी व्यर्थ नहीं जाता।

ता० १५ दिसम्बर १६४६ ई०

स्वतन्त्र भारत राष्ट्र के शिक्षा मन्त्री माननीय मौलाना अब्दुलकलाम आजाद ने केन्द्रीय धारा सभा में घोषित किया कि अतः भारतीय सरकार अपने विभिन्न विभागों में आय से व्यय को घटाने और ४० करोड़ के घाटे को पूरा करने के लिये कटौती कर रही है, अतः शिक्षा व्यय में भी कटौती करना आवश्यक प्रतीत होता है। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि सन् ४६ और ५० के लिये शिक्षा का आनुमानिक बजट ५ करोड़ और ८० लाख स्वीकार किया गया था, किन्तु अब उसमें २५ प्रतिशत कमी की जायगी। अर्थात् अब शिक्षा व्यय की धनराशि केवल ४ करोड़ ३४ लाख मात्र अवशिष्ट रहेगी। आपने यह भी प्रकट किया कि सन् ५० और ५१ में भी इस विभाग में अधिक धन व्यय किये जाने की सम्भावना वर्त्तमान परिस्थिति को देखते हुये प्रतीत नहीं होती है। इसका स्पष्ट अर्थ यही हुआ कि शिक्षा के लिये सरकार के पास अब एक रुपये के स्थान में केवल बारह आना ही व्यय करने को रहे हैं।

भारत में लगभग ८५ प्रतिशत जन निरक्षर हैं। अर्थात् अंग्रेज शाही के पूरे १६० वर्ष शिक्षा-सुधार सम्बन्धी आन्दोलन और विविध व्यवस्थाओं के होते हुये भी यह परिणाम हुआ। इधर स्वतन्त्र होते हुये ही भारतीय सरकार ने ही नहीं अपितु प्रान्तीय एवं प्रादेशिक सरकारों ने भी एक ओर जहाँ मादक द्रव्य सेवन निषेध योजनाओं को प्रचारित कर अपनी आय में जान बूझकर जनहित साधनार्थ कमी की वहाँ शिक्षादि जनकल्याणसाधक विभागों में प्रचुर धनव्यय साध्य नई २ योजनाओं को व्यवहार में लाने की विस्तृत व्यवस्था करने की घोषणा की। सर्वसाधारण प्रजा को ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब रामराज्य के स्वर्णिम दिन अत्यन्त सन्निकट आते से प्रतीत होने लगे। उधर सरकार ने लगभग तीन वर्ष पर्यन्त निरन्तर परिश्रम के उपरान्त विधान परिषद् के द्वारा जो विचित्र विधान तैयार किया। उसमें लगभग तीन करोड़ रुपये व्यय हुये। इस विधान के अनुसार यद्यपि भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी और लिपि नागरी स्वीकार की गई। तथापि यह भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि वर्णमाला में अङ्क अंग्रेजी रहेंगे और १५ वर्ष तक और अंग्रेजी राजभाषा बनी रहेगी। इस विचित्र प्रतिबन्ध के परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय और कहीं २ स्कूल कालिजों में भी अंग्रेजी का बोल बाला ही बना रहेगा। अर्थात् अंग्रेजी के कारण भारतीयों के लिये कम से कम १५ वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने के लिये वर्त्तमान अंग्रेजी शिक्षा संस्थाओं से लाभ उठाने के लिये इतना अधिक व्यय करने के लिये विवश होना पड़ेगा कि जिस व्यय भार को सहन करने में उच्च मध्यम श्रेणी के भारतीय भी समर्थ न होंगे। साधारण जनों की तो कथा ही क्या है। इस प्रकार भारतीयों के लिये शिक्षित होने का अवसर और भी अवरुद्ध सा उत्तरोत्तर होता जायगा।

नवीन भारतीय विधान के अनुसार १६ करोड़ भारतीय नर और नारियों को वयस्क होने के कारण मताधिकार प्राप्त हो जायगा। इनमें से लगभग १३ करोड़ सर्वथा निरक्षर होंगे। सम्भवतः सन् ५१ के आरम्भ में ही नवीन निर्वाचन हो सकेंगे। तब तक भी निरक्षरों की संख्या में कोई विशेष परिवर्त्तन सम्भव नहीं हो सकेगा। प्रचुर बहुमत अबोध निरक्षरों और आर्थिक दृष्टि से भी हीन अकिंचनों का जिस शिशु राष्ट्र में होगा। उसकी नव निर्वाचित केन्द्रीय और प्रान्तीय तथा प्रादेशिक धारा सभाओं में किस २ प्रकार के विधान शास्त्री सदस्य गण पहुंचेंगे। इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। अभी तक देश में साधारणतम जीवनोपयोगी साधन सामग्री अनेक कारणों से जिस गति से दुर्लभ और महंगी होती जा रही है, उसको तथा संसार की अन्तराष्ट्रीय जटिल परिस्थिति को देखते हुये यह नहीं कहा जा सकता है कि दो या चार साल में सुदशा और सुदिन अथवा सुकाल आने की कोई सम्भावना है। हो सकता है कि बहुत बचत करके सरकार कुछ थोड़ा सा सुधार करने में समर्थ हो सके। अन्यथा महगाई के युग में 'धनक्षये वर्धति जाठराग्निः' के अनुसार क्लेशवृद्धि की भी सर्वथा परिहार्य हो नहीं है।

अभी केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्मित युनीवर्सिटी कमीशन कि जिसके अध्यक्ष डा० सर राधा कृष्णन् सदृश शिक्षा विशेषज्ञ थे, की रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी है, उसके परामर्शानुसार केवल विश्वविद्यालय सम्बन्धी शिक्षा व्यय के निमित्त १३ करोड़ रुपये की वार्षिक आवश्यकता है जब कि वर्त्तमान सरकार समस्त प्रकार की शिक्षा के लिये शिक्षा मंत्री के शब्दों में केवल ४ करोड़ ४३ लाख रुपये की लघुतम धनराशि घोषित करती है, स्पष्ट ही है कि "न नौ मन कनिक होगी और न राधा नाचेगी"। धारणाओं और भावनाओं के तूफान से शिक्षा का प्रश्न समाहित होना सम्भव नहीं है, इसलिये ठोस वास्तविकता की ओर जनता और सरकार दोनों का ध्यान अविलम्ब आकृष्ट होना चाहिये,

स्वतन्त्र भारत राष्ट्र में प्रचुर और प्रबल बहुमत निरक्षर और निर्धन नर और नारियों का है। यह तो सच्च सरकार के अधिकारियों और जनता के नेताओं को समान रूप से हृदयगम सर्व प्रथम कर लेना चाहिये। उधर सरकार अपने ही देश की है, उनके पास न तो अपार धन कोष है और न वह प्रजा पर अन्धाधुन्ध कर लगाकर धनराशि संग्रह करने का साहस कर सकती है, वर्त्तमान सरकार को न तो अरबों रुपया विदेशों से शिक्षा के लिये ऋण मिल ही सकता है और न इसको लेना ही उचित है। क्योंकि अन्न वस्त्रादि अत्यावश्यक जीवनोपयोगी पदार्थों के लिये अधिक से अधिक ऋण लेना विवशतावश उचित कहा जा सकता है। तथापि शिक्षा के प्रश्न को ऐसी अकिंचनता में भी एक उपाय से हल किया जा सकता है, उसी की ओर सम्बद्ध विचारकों का ध्यान आकृष्ट होना चाहिये।

लगभग ५० वर्ष से भारत के विभिन्न केन्द्रीय स्थानों में आर्यसमाज की ओर से प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों के द्वारा आविष्कृत और चिरकाल पर्यन्त भारत में सफलता के साथ प्रचालित ब्रह्मचर्य आश्रम निवास प्रणाली प्रधान गुरुकुल शिक्षा पद्धति सादा जीवन उच्च विचार, साधारणतम जीवन विकासक स्वल्पतम व्ययसाध्य और समान व्यवहार युक्त तपोमय जीवन विकास साधक होने के कारण अकिंचनतम भारतीय नर और नारियों के लिये इस शिक्षा पद्धति के अनुसार, यदि सरकार और जनता के अधिनायक दोनों स्वीकार करें तो बिना करोड़ों के वार्षिक व्यय के लाखों में ही करोड़ों व्यय से परिचालित शिक्षा पद्धति से अधिक योग्य, स्वस्थ, दृढ़ और कर्मठ नागरिक इन शिक्षा संस्थाओं में अनायास तैयार हो सकते है। क्यों कि सर्व प्रथम इन समस्त संस्थाओं में शिक्षा सर्वथा निःशुल्क दी जाती है और आगे भी दी जा सकती है, केवल भोजन का साधारण व्यय और कुछ अन्य आवश्यक

वस्तुओं का व्यय भार विद्यार्थियों को सहन करना होता है, जीवनोपयोगी आवश्यक पदार्थ न्यून और साधारण होने के कारण स्वल्प व्यय साध्य ही होते हैं। इतना होते हुये भी समस्त गुरुकुलों और ऋषि कुलों की शिक्षा का जहाँ माध्यम हिन्दी. आर्यभाषा, है, वहाँ साथ ही संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन भी अनिवार्य है। इन संस्थाओं का कोई छात्र किसी अवस्था में भी किसी प्रकार का मादक द्रव्य अथवा मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं कर सकता है। न कोई छात्र विलास बहुल पाश्चात्य सभ्यता के दूषणों से अपने छात्र जीवन को कलुषित करने का अवसर प्राप्त कर सकता है। इतना होते हुये भी विदेशी सरकार ने अपने शासन काल में इन सर्वथा राष्ट्रीय, स्वदेशीय और एकान्तत भारतीय संस्थाओं को कभी भी सहायता और प्रोत्साहन की तो बात ही क्या सन्देह रहित फूटी आंख से भी स्वप्न तक में देखना उचित न समझा किन्तु अब तो यह संस्थायें पाश्चात्यता को कमदंष्ट्राओं से बाहर आ गई हैं। अपनी उपयोगिता और उपादेयता को कराल समय में ही सिद्ध कर चुकी हैं अब जनता और सरकार दोनों का समान औचित्य है कि वह इन सार्वजनीन कल्याण साधिका, सर्वसुलभ, सर्वथा राष्ट्रीय, स्वल्पव्यय द्वारा सञ्चालित गुरुकुल शिक्षा संस्थाओं को अपनाकर सहायता और प्रोत्साहन प्रदान कर देश का कल्याण करें।

विश्व शान्ति सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक एव कलात्मक शिक्षा केन्द्र शांतिनिकेतन की, आश्रमस्थली में विश्वशांति सम्मेलन हुआ है, इस सम्मेलन में भाग लेने के लिये ३१ देशों से ८३ प्रतिनिधि पधारे। इस सम्मेलन के सभापति श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी थे, किन्तु अस्वस्थ होने के कारण वह उपस्थित न हो सके, उनकी अनुपस्थिति में माननीया श्रीमती अमृतकौर जी ने सभानेत्री का कार्य किया, बंगाल के गवर्नर माननीय डा० कैलाश नाथ काटजू महोदय ने सम्मेलन का उद्घाटन किया, इस सम्मेलन के सम्बन्ध में अबतक जो कुछ समाचार प्राप्त हुये हैं, उनसे प्रकट होता है कि सम्मेलन को सफल बनाने के लिये अनेक देशों से आये महानुभावों ने जिस प्रकार के विचार प्रकट किये हैं और जैसी आशाओं को प्रस्तुत किया है, उनको पढ़कर प्रत्येक सहृदय मानव प्रसन्नतालाभ कर सकता है और इसमें भी सन्देह नहीं कि इन महानुभावों की सलाह से यदि संसार के विभिन्न राष्ट्र अपने २ देशों की राजनीति, अर्थनीति और समाज व्यवस्था बनाना स्वीकार करलें और सत्य, अहिंसा और मैत्री की भावना से भावित होकर मानवोचित सदाचारपूर्वक पारस्परिक व्यवहार करने के लिये तैयार हो जावें तो, वस्तुतः आज का अन्यथा गौरवपूर्ण मानवसमाज स्वर्गमय पूर्णताओं का आगार प्रतीत होने लगे। किसी को कहीं भी किसी प्रकार के अभाव, त्रास, आतंक विभीषिका, छल और कपट का आखेट न बनना पड़े। ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाने पर ही स्वर्गीय विश्वकवि रवीन्द्र ठाकुर और विश्ववंद्य महात्मा गाँधी के आदर्श मानव समाज का सुखमय स्वप्न वास्तविकता का प्रतिमान प्रतीत होने लगे।

परन्तु आज की दुनियाँ तो कूट राजनीतिज्ञों और हिंसात्मक प्रलयकर साधनों में अनन्य आस्था रखनेवाले वैज्ञानिकों के लिये अभिनय का रक्त रंजित रंगमंच बना हुआ है। उस शोणित सरिता स्नान के लिये आनन्दमस्त अनवरत आयोजन कर रहे हैं कि जिनकी स्पर्द्धा में प्राय. सभी प्रमुख राष्ट्र अत्यन्त संहारिक अणु बम्ब आदिक भयंकर शस्त्रास्त्र का आविष्कार अधिक से अधिक संख्या में निर्मित कर रहे हैं कि जिससे तीसरे महासमर के आरम्भ होते ही न्यून समय में अधिक से अधिक संहार किया जासके। इस प्रकार की संहारक प्रवृत्ति से मानव जाति को बचाने के लिये धार्मिक सिद्धान्तों के प्रभाव को बढ़ाने के लिये कहीं किसी देश में प्रभावशाली प्रयास नहीं हो रहा है। ईश्वर और धर्म साम्यवादियों, समाजवादियों, व्यापारियों, और पूंजीपतियों के लिये कोई मूल्य और महत्व नहीं रखते हैं। इसका परिणाम यह है कि सत्य और ईमानदारी व्यापार करनेवालों के लिये प्रायः अनावश्यक से हो गये हैं। किसी प्रकार से भी अधिक धन संग्रह किया जाय, इसीके लिये छल कपट चोर बाजारी, और ब्लैक मारकेट आदि किसी भी प्रकार से व्यवहार करने में कोई संकोच अनुभव नहीं किया जाता है। इस प्रकार की मनोवृत्ति किसी समाज विशेष या देश विशेष में ही पाई जाती हो ऐसा नहीं है। प्राय. सभी देशों में यह व्याधि पाई जाती है। मानवता, सत्य और मैत्री सदाचार के आवश्यक अंग नहीं माने जाते है।

अनेक प्रकार के आन्दोलन, संस्थाओं सम्मेलनों, और कानूनों के द्वारा समय २ पर किये जा रहे हैं किन्तु नैतिकता का का स्तर उन्नत होने के स्थान पर निम्न तर होता जा रहा है, समाज और राष्ट्र के प्रमुख नेता गणों के व्यावहारिक जीवनों में भी जब छल कपट का आधिक्य होता जा रहा तो साधारण जनता का तो कहना ही क्या है। धर्म, दर्शन, संस्कृति, और सदाचार मानव जीवन के किसी क्षेत्र में भी आवश्यक नहीं माने जाते हैं। शिक्षा विभाग में आरम्भ से लेकर अन्त तक मुख्यतया पुस्तकों का अध्ययन और परीक्षाओं की उत्तीर्णता ही मानदण्ड माना जाता है, अन्य सभी अधिक आय वाले विभागों में अवसर न मिलने के कारण शिक्षा विभाग में अध्यापक गण प्रविष्ट होते हैं और नियत पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन कार्य करते हैं। मानवता की शिक्षा देने की कोई व्यवस्था नहीं की जाती है। ऐसी दशा में विश्व शान्ति सम्मेलनों की अधिक सफलता सम्भव नहीं है।

गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त के केन्द्रीय शिक्षातीर्थ गुरुकुल विश्वविद्यालय का वार्षिक महोत्सव तथा दीक्षान्त समारोह २५ से २८ दिसम्बर ४९ तक मनाया जा रहा है, गत ४५ वर्ष से यह ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन प्रधान आर्य राष्ट्रीय शिक्षातीर्थ भारत के धार्मिक एव सांस्कृतिक वातावरण में वर्ण, वर्ग और जाति भेदादि भावनाओं से सर्वथा विमुक्त रहते हुये बालकों को व्रत और विद्या स्नातक बनाकर उनको स्वतन्त्र भारत राष्ट्र के सफल नागरिक बनाने का समुद्योग कर रहा है, विदेशीय शासन सत्ता का किसी अर्थ में भी आश्रय अथवा सहाय न प्राप्त करते हुये इस विद्यामन्दिर में संस्कृत, आर्यभाषा, अंग्रेजी आदि में उच्च शिक्षा प्रदान करने के साथ ही साथ आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबन्ध किया जाता रहा है, सादा जीवन उच्च विचार इस संस्था की अपनी विशेषता आरम्भ से ही रही है, वर्तमान अत्यन्त महंगी के समय में भी इस गुरुकुल में शिक्षा ही सर्वथा निःशुल्क नहीं दी जाती है, अपितु अन्य भोजनादि आवश्यक व्यय के लिये भी क्रमशः १८,२२ और २५ मासिक लिया जाता है, इस प्रकार राशनिंग और कंट्रोल के कराल काल में भी दानी महानुभावों की उदारता के आधार पर शेष व्ययभार करने का प्रयत्न किया जाता है, किन्तु आवश्यकताओं की वृद्धि और दान के द्वारा प्राप्त होनेवाले धन की न्यूनता से विवश होकर अनथक परिश्रमी सभा के कर्मनिष्ठ प्रधान राजगुरु जी प० धुरेन्द्र शास्त्री जी आजकल गुरुकुल विश्वविद्यालय के निमित्त धन संग्रहार्थ प्रान्त के विभिन्न भागों में भ्रमण कर रहे हैं, किन्तु इतने स्वल्प समय में विशाल प्रान्त के ५२ जिलों, सैकड़ों नगरों, सहस्रों उपनगरों और लाखों ग्रामों में उनका पहुँचना नितान्त असम्भव है, तथापि यह नहीं कहा जा सकता है कि प्रान्त का कोई ऐसा भी स्थान हो सकता है कि जहां गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उदार और श्रद्धालु भक्त महानुभाव न रहते हों, यह भी सम्भव नहीं है कि आगामी गुरुकुल महोत्सव के पवित्र अवसर पर लाखों की संख्या में प्रान्त के नर और नारी अनायास पहुंच सकेंगे, अन्य बाधाओं के साथ शीत और यातायात साधनों की कठिनाइयां अधिक हैं, किन्तु सदाशय भारतीय संस्कृति के आस्थावान् महानुभावों के लिये अन्य बाधाओं के होते रहने पर भी स्वयं अथवा अपने प्रयत्न से अपने २ स्थानों से गुरुकुल विश्वविद्यालय के लिये आर्य सुदामा की भांति अपने २ तंदुल कणों के रूप में अपनी २ धन राशि गुरुकुल कार्यालय में भेजने या भेजवाने में तो विशेष कठिनाई नहीं हो सकती है, प्रान्तवर्ती समस्त आर्य समाजों, उनके अधिकारियों तथा अन्य उदार महानुभावों से आग्रहपूर्वक अनुरोध है कि सभा के प्रधान जी के परिश्रम को वस्तुत सफल बनाने के लिये और गुरुकुल सञ्चालकों के अपने-भारवहन रूपी कर्त्तव्य पालन करने में सक्षम बनाने के लिये स्वयं प्रवृत्त होते हुये इस कार्य में संलग्न होकर सहायता करनी चाहिये, जो महानुभाव महोत्सव के अवसर पर स्वयं पधार सकें, पधारें, अपने उदीयमान बालकों को प्रविष्ट करें, धन दान दें और जो किन्हीं कारणों से न पहुँच सकें वह अपनी सदाशयता का साक्षात् परिचय गुरुकुल में धन स्वयं भेजकर या औरों से भेजवा कर दें। और पुण्य श्लाघा के भाजन बनें।

मदनमोहन सेठ	रामदत्त शुक्ल	द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री	श्रीराम
का० क० प्रधान	सम्पादक प्रस्तोता	कुलपति	प्रधान अधिष्ठाता

कल्याणमयी मृत्यु का स्वागत

[ले० श्री प्रो० रत्नसिंह एम० ए० गाजियाबाद]

ऐ मनुष्य ! तू जरा आँख खोल और देख कि बहुत शीघ्र ही तुझे इस संसार से विदा होना पड़ेगा। न जाने परलोक मे जाकर तेरा क्या बनेगा; तुझे इसका निश्चय नहीं कि अगले जन्म में जाकर तुझे क्या बनना है।

क्या तू नित्य प्रति नहीं देखता कि जो मनुष्य आज हमारे बीच में उपस्थित है वही कल हमसे पृथक हो जाता है और परलोक की राह लेता है। आज के सींचे हुये हरे भरे पपने कल आने से पूर्व ही टूट जाते हैं। सारे परिवार को दे दीप्यमान करने वाला दीपक हमारी आँखों के सामने ही बुझ जाता है। वृद्धा माता की वृद्धावस्था का एक मात्र सहारा उसकी आंखों के सन्मुख ही अपनी अन्तिम सांस तोड़ देता है। परन्तु फिर भी जग चलता है। और तू, तुझे कोई स्मरण तक नहीं करता। कैसा वैचित्र्य है। कल तक जिसके बिना हम रोटी का टुकड़ा नहीं तोड़ते थे आज उसी के आंख के ओझल होने पर हम उसका नाम तक नहीं लेते। मनुष्य जब हमारी आंख से ओझल हो जाता है तो हम शीघ्र ही उसको भूल भी जाते हैं। ऐ मनुष्य तेरे चले जाने जाने पर तू एक बार भी तो याद नहीं किया जाता।

अब तू जरा सोच और समझ यदि तू अपना कल्याण चाहता है तो तू अपना जीवन इस ढंग से व्यवस्थित कर जैसे कि तुझे कल ही मरना है। यदि तेरी अन्तरात्मा शुद्ध व पवित्र है तो तुझे मृत्यु से भय कैसा। अरे जरा सोच तो मृत्यु का स्वागत करने के लिये यदि तू आज तैयार नहीं तो कल ही तू कैसे तयार हो सकेगा। तू खड़ा हो और तैयारी कर। कहीं ऐसा न हो कि मृत्यु तेरे पास आ जावे और तू पड़ा हुआ सोता हो रहे। जरा सोच तो सही भविष्य तो अनिश्चित है। अत: आज ही तू मृत्यु का स्वागत करने के लिये तैयारी कर। न जाने तू कल तक रहे या न रहे इसलिये मृत्यु के स्वागत की बात पर कल मत छोड़।

तू तनिक आत्म निरीक्षण तो कर। क्या तू नहीं अनुभव करता कि तू सत्य की अपेक्षा असत्य, पुण्य की अपेक्षा पाप और न्याय की अपेक्षा अन्याय का ही अधिक अनुसरण करता है। क्या यह सुधार की अपेक्षा बिगाड़ का मार्ग नहीं। जब जीवन में सुधार के स्थान पर केवल बिगाड़ ही बिगाड़ है तो अधिक जीने से क्या लाभ। इसलिये जाग और कर अपनी प्रिय मृत्यु का स्वागत। देख कहीं अवसर न चूक जाये।

शोक ! अधिक समय तक जीना पुण्य के स्थान में पाप की उत्पत्ति तथा अभिवृद्धि का ही कारण बनता है।

मैं तुझे कुछ भयभीत सा देखता हूँ। सम्भवतः तू मृत्यु को एक भयावह वस्तु समझता है। पर याद रख। यदि मृत्यु भयावह है तो जीवित रहना उससे कहीं अधिक भयावह है।

वास्तविक रूप में वही मनुष्य सुखी है जिसकी आँखों के सामने सदैव मृत्यु का दृश्य रहता है और जो मृत्यु का स्वागत करने को प्रतिक्षण कटिबद्ध रहता है। तू भी सदैव यही स्मरण रख कि तुझे किसी भी समय यहाँ से चले जाना है।

ऐ मूर्ख तू अधिक समय तक जीवित रहने की कामना क्यों करता है। क्या तू किसी को विश्वास दिला सकता है कि तू कल तक भी जीवित रह जायगा।

मैं देखता हूं कि तू अपनी इस कल्याणमयी एवं सुखदायिनी को भूलकर सांसारिक प्रलोभनों में फंसता जा रहा है। इन बड़े २ प्रासादों एवं भोग विलास की चकाचौंध कर देने वाली सामग्री को देखकर तू अपने पथ से विचलित हो इनमें ही आनन्द प्राप्ति का असफल प्रयत्न करने लगता है। रेत में से तेल निकालने का असम्भव प्रयत्न करके तू अपनी शक्ति को निरन्तर खोता रहता है।

क्या तू भूल जाता है कि "अमृतत्वस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेन" "न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो"। इन पर एक बार विचार फिर कर, और कर दे अपना अन्तिम नमस्कार इन सांसारिक सुखों को। उठ जाग और कह दे स्पष्ट शब्दों में कि 'येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'।

क्या तू प्रतिदिन समाचार पत्रों में नहीं पढ़ता कि आज एक व्यक्ति रेल के नीचे कटकर मर गया, दूसरे ने कुएँ में गिरकर आत्महत्या करली। कोई आग में जलकर मर गया। किसी को गोली का निशाना बना दिया गया। कोई भूख से तड़प तड़प कर ही प्राण छोड़ बैठा। निष्कर्ष यह कि अन्त में आकर सभी को मृत्यु की गोद में बैठना पड़ता है। अब तक इस संसार में करोड़ों मनुष्य आये जिये और अन्त में गये। उनका चिन्ह तक अवशिष्ट नहीं। क्या तू नहीं समझता कि तेरे जाने के बाद तुझे ही कौन याद करने वाला है।

निराश मत हो। अभी समय है। तू कार्यों में संलग्न हो और ऐसी तैयारी कर कि तुझे मृत्यु के आने पर पछताना न पड़े। बना आने शुभ कर्मों के पुष्पों से एक सुन्दर माला और तैयार रह अपने द्वार पर। देख उधर से मृत्यु देवी आ रही हैं। उनके आने पर डाल देना इस माला को उनके गले में। चूकना मत। बस इसी में तेरा कल्याण है।

❋ अलमोड़ा केस ❋

विदित हो कि जून सन् ४८ के तीसरे सप्ताह में आर्य समाज अल्मोड़ा का वार्षिक उत्सव था इस अवसर पर उत्सव में सम्मिलित होने के लिये अन्य अनेक महानुभावों के अतिरिक्त आ. प्र. सभा के प्रधान राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री, सभा मंत्री श्री प० रामदत्त जी शुक्ल एडवोकेट श्री प० शिवनारायण शुक्ल एडवोकेट लखीमपुर और श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री महोपदेशक सभा पहुँचे थे। उत्सव समाप्त होने पर ता० २४ को जबकि उपर्युक्त महानुभाव आ. स. मन्दिर में ठहरे हुये थे तो स्वा० कृष्णानन्द ने एक रिपोर्ट स्थानीय पुलिस और एक दर्खास्त अल्मोड़ा मजिस्ट्रेट की अदालत में इस आशय की दी कि उपर्युक्त लोगों ने बलपूर्वक आ. स. मन्दिर के एक भाग में स्थित उनके रहने के स्थान और दूसरे भाग में स्थित कन्या पाठशाला के कमरे पर अधिकार कर लिया है। पुलिस ने अपनी रिपोर्ट अदालत में दी, अदालत ने अपनी ओर से भारतीय दण्ड विधान की धारा ४४७ और ३७९ के अनुसार कार्यवाही करने के लिये ता० ८ जुलाई नियत की। ता० २ जुलाई को स्वा. कृष्णानन्द ने कि जो कन्या पाठशाला के मैनेजर थे एक दर्खास्त उक्त अदालत में इस आशय की दी कि ता० ३ जुलाई को पाठशाला खुलने वाली है इसलिये उनके कमरे और पाठशाला के कमरे का दे दिया जाय। मजिस्ट्रेट ने इस सम्बन्ध में आदेश दिया कि आ० स० मन्दिर के हाल के पीछे वाला कमरा सभा के अधिकारियों के अधिकार में ही रहेगा किन्तु पाठशाला का कमरा बन्द रहेगा। ता. ८ को पेशी न हुई, स्वा० कृष्णानन्द को अदालत ने आवश्यक अधिकार पत्र प्रस्तुत करने का आदेश दिया और सभा के अधिकारियों को भी १० जुलाई को उपस्थित होने की आज्ञा दी। उस दिन धारा ४४७ और ३७९ का मुकदमा मजिस्ट्रेट ने यह लिखते हुये खारिज कर दिया कि झगड़ा दीवानी विषयक है। किन्तु ता० २४ जून की दर्खास्त को धारा १४५ जाब्ता फ़ौजदारी के अनुसार मुकदमा अंकित किये जाने का आदेश दिया। इसके अनन्तर धारा १०५ के अनुसार कार्यवाही होती रही, अन्त में मजिस्ट्रेट ने धारा १४५ के अनुसार स्वा० कृष्णानन्द को उक्त कमरों पर अधिकार दिलाते हुये मुकदमे का निर्णय किया। मजिस्ट्रेट के उस निर्णय के विरुद्ध सेशन्स जज कमायूँ की अदालत में निगरानी की गई जो उक्त जज ने ता० ३१ जनवरी सन् ४९ को खारिज कर दी। जज के निर्णय के विरुद्ध सभा के प्रधान श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र शास्त्री ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में निगरानी की। इसका निर्णय ता २६ अक्तूबर सन् १९४९ को माननीय श्री के एन वान्चू जज हाई कोर्ट ने किया अपने नौ पृष्ठ के निर्णय में मुख्यतया माननीय जज महोदय ने इस बात पर विशेष बल दिया कि विद्वान् मजिस्ट्रेट ने ता. २४ ६ ४८ ई० से लेकर आगे जितनी कार्यवाही हुई उसमें कहीं भी इस बात को किसी प्रकार से प्रकट नहीं किया कि झगड़ा ऐसा था कि जिसमें शान्ति भंग होने की आशंका या सम्भावना थी। उन्होंने तो अपने एक आर्डर में कि जो तारीख १० जुलाई ४८ को दिया गया स्पष्ट अंकित किया कि उभय पक्ष के मध्य झगड़ा सिविल नेचर (दीवानी विषयक) है। ऐसी अवस्थामें भी माननीय जज ने साश्चर्य कहा कि धारा १४५ का मूल आधार शान्ति भंग की आशंका का लेश मात्र अस्तित्व न होने से किस प्रकार मजिस्ट्रेट ने उक्त धारा के अनुसार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

?

[ले० श्री कृष्ण शर्मा]

प्रस्तुत लेख में लेखक महोदय ने कतिपय अपने विचार व्यक्त किये हैं जो कि अधिकाश के हृदयो में कुछ अशों मे आज उठते हैं। अपने २ दृष्टि कोण से प्रत्येक विचारक उसका समाधान करता है इसी विचार से यह लेख यहा प्रकाशित किया जाता है— —सम्पादक

आज विगत १४ वर्षों से निरन्तर मूकभाव से आर्यप्रतिनिधि सभा बङ्गाल आसाम और बिहार की सेवा करते रहने के पश्चात् आर्य महानुभावों से कुछ निवेदन करने का साहस कर रहा हूँ आशा है मेरी ढिठाई को क्षमा करते हुए आर्यमित्र के कालमो मे सन्तोष जनक उत्तर देने का कष्ट करेंगे।

(१) मै १४ वर्ष पूर्व कट्टर पौराणिक पंडित था। पुराणों की कथा वार्ता एव यजमानिका वृत्ति मे मेरी जीविका चलती थी। सन् १९३५ ई० के फाल्गुन मास मे पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी मेरे यहाँ पहुँचे उन्हीं के उपदेशामृत को पानकर उसी तरह कट्टर आर्यसमाजी बन गया। तब से आज तक निरन्तर समाज की सेवा कर रहा हूँ, किन्तु मै आत्मशान्ति नहीं प्राप्त कर सका हूँ। इसका कारण, समुचित और सक्रिय कोई समाधानात्मक उपाय चाहने को इच्छा से नीचे लिखता हूँ।

(२) मे कुछ भावुक प्राणी हूँ किसी बात का सर्वतोभावेन ग्रहण कर लेने के बाद तदनुसार अपने जीवन में और अपने उपदेष्टा और नेता के जीवन मे उसी बात का साकार रूप में देखना चाहता हूँ। मुझे आर्यसमाज का एक एक सिद्धात और उद्देश्य प्राणों से बढ़कर प्रिय है, किन्तु उसे अपने नेताओं एव कर्णधारों के जोवन में क्रियात्मक रूप मे न देखकर मर्मान्तिक वेदना होती है। जैसे हमारे नेता सध्या अग्निहोत्र ईश्वरोपासना योगाभ्यास आदि पर घण्टों लच्छेदार भाषा में व्याख्यान देते हैं, किंतु उपरोक्त बातों को स्वयं आचरण में न लाकर हमें अप्रत्यक्ष रूप से यह शिक्षा दे देते हैं कि उपर्युक्त बातें कहने की हैं करने की नहीं। इसका क्या कारण है?

(३) आर्यसमाज धर्म्म अर्थ काम मोक्ष चार पदार्थों को मानता है जिसमें धर्म को प्रधानता और मोक्ष को मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य मानता है, परन्तु आर्य नेतागण धर्म और मोक्ष को वाणी के द्वारा प्रधानता देते हैं, परन्तु अर्थ और काम को आचरण के द्वारा प्रमुख स्थान देते हैं ऐसी विषमता क्यों?

(४) मै ऐसे आर्य नेताओं के सम्पर्क में आया हूँ जो नित्य अग्निहोत्र करने वाले उपदेशकों का मखौल उड़ाते और उन्हें थर्डक्लासी उपदेशक समझते हैं। क्या अपने बन्धुओं द्वारा प्रचार व्यक्ति उपर्युक्त कार्यों में ... सकता है?

(५) ईश्वर को सर्व व्यापक सर्वान्तर्यामी मानने वाले प्रमुख विचारक जब आपस मे मिलकर बैठते हैं तो प्राय एक दूसरे की निन्दा आलोचना आदि में ही अधिक समय बीतता है। अच्छी बातों को तो केवल व्याख्यान मंच पर उच्चारण करने के लिये रखते हैं। क्या इसमे परिवर्तन हो सकता है?

(६) वैदिक धर्म को सर्वजनोपयोगी बनाने के बजाय मै देखता हूँ कि उसे अत्यन्त मँहगा बनाया जाता है जिसका प्रचार भार जन साधारण की शक्ति के वहन करने योग्य से अधिक होता जा रहा है।

(७) क्या आर्यसमाज के अधिकारी गण यह नहीं जानते हैं कि कुछ स्वतंत्र उपदेशक और भजनोपदेशक वैदिक धर्म प्रचार को अपना व्यवसाय बनाये हुए हैं। ठीक उसी तरह मोल तोल करते हैं जैसे कोई व्यवसायी अपने व्यवसाय मे करता है। क्या इस धार्मिक व्यापार की रोक-थाम करने के लिये केन्द्रीय एव प्रातीय सभाये कुछ कर रही हैं?

(८) विगत १४ वर्ष के आर्यसामाजिक जीवन मे सार्वदेशिक सभा एव प्रातीय सभाओं के नेताओं का तूफानी दौरा जैसा कि काग्रेसी नेताओं का होता है नहीं देखा। क्या इसका कोई खास कारण है? हाँ हैदराबाद आदोलन के समय कुछ कुछ देखने में आया था।

(९) क्या धर्म प्रचार का कार्य वेतन भोगी नौकरों के द्वारा प्रचीनकाल में होता था? मैंने जहाँ तक पुराना इतिहास देखा है या विद्वानों के द्वारा सुना है, उसमे यही ज्ञात हुआ है कि अत्यन्त प्राचीनकाल में ऋषि मुनि महात्मा साधु सन्यासी सब निःस्वार्थ भाव से वैदिक-धर्म प्रचार करते थे फिर भी आज देखता हूँ कि आर्यसमाज नौकर रखकर धर्म्म प्रचार करवाता है। क्या यह मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कार्यमन्यद् का प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं है?

(१०) मैं 'साप्ताहिक आर्यमित्र" और "मासिक सार्वदेशिक" निरंतर पढ़ता हूँ उसमें यदा कदा चदे की अपील छपा करती है। प्रतिनिधि सभायें अपने उपदेशकों से चदा मगवाती रहती हैं। जिसका परिणाम मुझे आर्यजगत् में यह देखने को मिलता है कि जहाँ कोई उपदेशक किसी समाज मे अनाहूत पहुँचता है उसे देखते ही अधिकारियों एव चदा दाताओं के कान खड़े हो जाते हैं वे समझने लगते हैं कि अब महाशय जी आ गये कुछ न कुछ जरूर माँगेंगे। इसका परिणाम यह होता है कि उपदेशक महानुभाव कितना ही सुदर व्याख्यान दे दें और बाद में चदा के लिये हाथ फैला दें, फिर सारे व्याख्यान पर पानी फिर जाता है। क्या इस दिशा में हमारे नेताओं का ध्यान कभी आकृष्ट हुआ है?

११—आर्य समाजियों के द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और पौराणिक धर्म एव अन्य संप्रदायों द्वारा प्रतिपादित धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद मे इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वैदिक धर्म, कर्म फल को अनिवार्य मानता है। किंतु दूसरे धर्म वाले अपने भक्तों को यह विश्वास दिलाते हैं कि आप का पाप कट जायगा सांसारिक उन्नति भी होगी। जैसे सत्यनारायण की कथा सुननेसे धन होगा, पुत्र होगा, मनो वाञ्छा पूरी होगी इत्यादि प्रलोभन उधर है। तर्क की अपेक्षा उधर श्रद्धा का प्राधान्य है किन्तु इधर तर्क के साथ २ श्रद्धा का नितान्त अभाव है। क्या इन दोनों के समन्वय की ओर ध्यान नहीं दिया जा सकता?

१२—वैदिक धर्म सर्वोत्तम धर्म है मैं इसे स्वीकार करता हुआ यह भी मानता हू कि धर्म का स्थान हृदय है हमारे अन्दर मष्तिष्क की अपेक्षा हृदय छोटा है इसका क्या कारण है।

१३—आर्यसमाज से पीछे स्थापित होने वाली देश की राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थायें दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करती चली जा रही हैं और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का दावा करने वाला आर्य समाज आज उनके आश्रित सा होता जा रहा है इसका क्या कारण है?

१४—इधर प्राय: केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सभायें कांग्रेस के नेताओं को अपने प्लेट फार्म पर बुलाकर उनसे श्री स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की प्रशसा करवा कर अपने को कृत्य कृत्य मान लेती हैं क्या यह गौरव की बात है?

१५—देश के समस्त दैनिक समाचार पत्रों ने सामाजिक आन्दोलन सम्बंधी समाचारों को न छापने की कसम सी खा ली है। क्या इस ओर किसी का ध्यान है?

१६—श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बाद आर्य समाज मे कोई सर्व प्रिय नेता नहीं दिखलाई पड़ रहे हैं। जिनका सम्पूर्ण आर्य जगत् समान रूपसे आदर करता हो। पं० नेहरू, पटेल और डा. प्रसाद के सदृश कोई नेता हम में नहीं। अन्त में मैं समाधान चाहता हुआ इस लेख को समाप्त करता हूँ। मैने यह उद्गार आर्यसमाज के हित की दृष्टि से ही प्रकट किये हैं। इसका विपरीत अर्थ लगाने की चेष्टा न करेंगे ऐसी आशा है।

सफर में

—श्री मङ्गलदेव शर्मा—

एक आवश्यक कार्य से आगरे गया था। साथ में कुछ सामान भी नहीं था, लेकिन ट्रेन में भीड़ बहुत थी और मुझे उसी दिन दिल्ली पहुचना था।

मैंने ट्रेन के इस छोर से उस छोर तक कई चक्कर लगाये, पर कहीं भी चढ़ने का मौका न मिला। दूर से दूर ही लोग चिल्ला उठते—"जगह नहीं है। आगे जाओ। आगे!" तबीयत में झुंझलाहट थी और मनमें क्रोध। कभी रेलवे कम्पनी को कोसता था और कभी सवारियों पर गुस्सा लाता था। आखिर जाना मुझे भी है, फिर ये लोग रोकते क्यों हैं? यह तो मैं भी समझता हूँ—जगह की कमी है, परन्तु—इस लोगों में आपसी हमदर्दी भी चली गई! कितना भयकर नैतिक पतन है!

इतने में ट्रेन चल पड़ी और मैं सामने वाले डिब्बे पर चढ़ ही गया। मैं दरवाजे के सहारे, हैंडिल पकड़े पायदान पर खड़ा सोच रहा था, भीतर कैसे पहुँचा जाय? उसी समय एक भले से आदमी ने मुझे जैसे-तैसे खींच खांच कर अन्दर कर ही लिया।

गाड़ी अपनी रफ्तार से चली आ रही थी। मैंने एक बार डिब्बे में चारों ओर नजर घुमाई। अधिकतर लोग खड़े हुए थे, वे भी बड़ी कठिनाई में थे—दबे भिचे से, परन्तु मेरी बाईं ओर की सीट पर एक बाबू साहब बड़ी शान के साथ, पैर फैलाये लेटे थे। चारों ओर घूम फिर कर नजर उन पर ही आकर टिक टिक जाती थी। मैं सोचने लगा—आखिर इतने लोग तकलीफ में हैं और ये साहब इतमीनान के साथ आराम फरमा रहे हैं। ऐसा क्यों? शायद लोग इनका साहबी ठाट देखकर सकोच कर गये हैं। इसीलिये इनसे जगह देने का किसी ने नहीं कहा। हां—बाबू जी मे हमदर्दी का जज्बा कम है यह कुछ कुछ मै समझ रहा था। मुझे खड़े खड़े १०-१५ मिनट होगये थे। बैठने को गुञ्जाइश और कहीं थी नहीं। मैंने सोचा—चलो बाबू जी के पायतन ही टिक जाऊ और मैं धीरे से बाबू के पैरों के पास बैठ गया।

मुझे अभी दो मिनट ही गुजरे थे कि—बाबू जी ने अचानक पैरों से ठेल कर मुझे नीचे गिरा दिया। अब क्या था? मै क्रोध से आग बबूला हो गया। आस्तीन ऊपर को चढ़ाई और करीब था कि—बाबू जी को सीट से नीचे घसीट लेता, परन्तु पास में खड़े हुए एक साहब ने मेरी बांह पकड़ा और धीरे से समझाते हुए कहने लगेरहनेदो क्यों झगड़ा मोल लेते हैं? यह शरीफ आदमियों का काम नहीं है। ये हजरत तो दूसरों की परवाह नहीं करते आप तो जरा सोचें। मैं देर से देखता आरहा हूँ इनका रवैया, कई बैठने वालों के साथ ये ऐसा ही कर चुके हैं।

मैंने कहा—

"लेकिन यह तो इन्सानियत नहीं है। मैं इसका मजा इन्हें चखाये देता हूँ।"

उसने फिर कहा—

"जरा सब्र से काम लोजिये, मौका आने दो। क्या हर्ज है? आप ही छोटे बन जायें। देखते हैं समय क्या है?

मैं कुछ शान्त होगया और प्रतिकार का उपाय सोचने लगा। मैंने चारों ओर लोगों के चेहरों पर नजर घुमाई। सबकी आंखों में मेरे प्रति सहानुभूति थी। वे लोग बाबू की तरफ घृणाजनक इशारे कर रहे थे, लेकिन कोई कुछ बोलता न था। सभी परदेशी थे। यात्री थे। सभी को कहीं न कहीं जल्दी पहुँचना था।

इतने में बाबू जी ने अंगड़ाई ली। वे धीरे से उठे। बड़े अभिमान से चारों ओर खड़े हुए लोगों को देखा। एक दो मिनिट इधर-उधर ताका झांकी करके—हजरत खड़े हो गये और पाखाने की ओर कदम बढ़ाया। मैंने दिल में सोचा—"अब इनका बिस्तर नीचे गिरादू और सीट घेरलू, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।' अब तक बाबू साहब पाखाने मे दाखिल हो चुके थे।

और तब मैने बाबू का बिस्तर फुर्ती से लपेट कर एक ओर को खिसका दिया। मगर फिर सोचा, वे हजरत आये कि लड़ाई शुरू हुई। मजा किरकिरा ही हो जायेगा। क्या करना चाहिये? यदि वे आ ही न सकें तो कैसा रहे? बस यह बात मन में आते ही मुझे एक युक्ति सूझी। मैंने अपनी जेब से दो रूमाल निकाले और उनमें कसकर गांठ लगादी। फिर लपक कर पाखाने की चटकनी को कसकर बांध दिया। मिनट भर में यह सब होगया और अब मुझे आगे की चिन्ता हुई। सफर अभी दो घण्टे का था, इतने समय के लिये क्या किया जाय? बाबू से कैसे निपटूं?

सरसरी तौर से मैंने लोगों की ओर देखा। वे सब मुस्करा रहे थे। बड़ी उत्सुकता से मेरी ओर देख रहे थे। शायद परिणाम के सम्बन्ध में सभी को चिन्ता थी। बाबू जी ने किवाड़ खोलने की चेष्टा करते हुए दरवाजे पर धक्का दिया और तभी मैंने लोगों को ललकारा—"भाई खड़े क्यों हो? बैठ जाओ। जब जगह खाली है तो तकलीफ क्यों उठाते हो?" मैं अपने साथ सबको लेना चाहता था। मैंने इशारे से कहा तुम चिंता मत करो जो कुछ होगा मैं भुगत लूगा।" झिझकते-सकुचाते बहुत से आदमी सीट पर बैठ गये और कुछ ही देर में खाली जगह ठसाठस भर गई।

बाबू जी ने किवाड़ को फिर धक्का लगाया, यह अब इनकी पहुँच से बाहर हो गया। बिन खोले खुल नहीं सकता। अच्छा! तो अब इन्हें दिल्ली तक पाखाने में ही बन्द रखा जाये। उन्होंने जोर से रौबीले लहजे मे कहा—

"यह क्या अहमकपन है? दरवाजा किसने बन्द किया है! खोलो जल्दी, नहीं तो ठीक कर दूगा।

मैंने जरा ऊंची आवाज में कहा—

"जी जगह तो बाबू जी आपने बहुत अच्छी पसद की है। कोई गम नहीं आराम कीजिये, कहें तो बिस्तर भी लावें।"

बाबू जी ने क्रोध से कहा—

'क्या बेहूदापन है? जल्दी करो, वर्ना पुलिस के हवाले कर दूगा। क्या समझा है तुमने? यह भी कोई मजाक है?"

मैं बोला—

"भला हम आपसे क्या मजाक करने लायक हैं। आराम से सो रहिये! कोई हर्ज नहीं पुलिस जब आयेगी, आपको सूचना दे दी जायेगी। अभी तो गाड़ी जगल में दौड़ रही है।"

बाबू जी ने उत्तर दिया—

'अच्छा! अच्छा! यह सब तुम्हारी ही बदमाशी है। ठहरो जरा। कैसा मजा चखाता हूँ। मारते-मारते भुर्ता कर दूगा—भुर्ता!"

मैंने जरा उड़ते हुए उत्तर दिया।

"भुर्ता बाबू जी! बाबू जी भुर्ता!" और दूर से रुकी हुई हंसी ने एक साथ डिब्बे को गुंजा दिया।

बाबू जी ने अब अपनी स्थिति को भली भांति समझा। बुरे वक्त और बुरी जगह फसे—पर उन्होंने हिम्मत न हारी। तड़ककर कहा—

"अच्छा सालो! देखता हूँ, कब तक नहीं खोलोगे, हरामजादों को एक एक करके समझूंगा। चोर, बेईमान, बदमाश कहीं के। स्टेशन आने दो।"

मैंने व्यंग से कहा—

"और अगर स्टेशन आये ही नहीं तो?"

बाबू ने झल्लाते हुए कहा—

"कैसे नहीं आयेगा? सूअर, गधे, पाजी कहीं के।"

मैंने उत्तर में कहा—

"और बाबू जी और क्या?"

लोग फिर खिलखिलाकर हंसने लगे। बाबू जी दम साध कर स्टेशन की इन्तजार करने लगे।

गाड़ी ने रफ्तार धीमी की। मथुरा आया। मेरी चिन्ता बढ़ी, अब! गाड़ी रुकेगी। बाबू शोर मचायेगा। पुलिस आई और काम बिगड़ा। झगड़ा बढ़ेगा। मैंने लोगों की ओर देखा। लोगों ने सकेत से कहा—'हम तुम्हारे साथ हैं, चिन्ता न करो। मेरी हिम्मत बढ़ी। मैं युक्ति सोचने लगा।

गाड़ी के रुकने के पहिले ही मैं सण्डास के किवाड़ से पीठ सटाकर खड़ा हो गया। लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ चुकी थी। मैंने ऊंची आवाज में कहना आरम्भ किया—

"देखो भाइयो! यह भगवान कृष्ण की लीलाभूमि है। यह पुण्यसलिला यमुना—एक बार सब मिल कर बोलो—भगवान कृष्णचन्द्र की जय!"

लोगों ने दुहराया—

'भगवान् कृष्णचन्द्र की जय!"

मैंने फिर पुकारा—"भगवान् कृष्णचन्द्र की जय। वृन्दावन विहारी की जय! गोवर्धन की जय!"

बाबू जी की आवाज जयकारों की ध्वनि में खोगई। लोगों ने मेरा सकेत समझ लिया। जयकारों का तांता लग गया। बाबू ने सिर तोड़ चेष्टा की पर उसकी आवाज खिड़कियों तक ही गूंजकर रह गई। गाड़ी फिर चल दी।

बाबू एक आह भरकर रह गया। उसने दांत पीसे, पैर पटके। किवाड़ों को खूब भड़भड़ाया पर सब बेकार था।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जगत के संन्यासी-

(ले०—आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ)

आर्यजगत् मे प्रतिवर्ष सन्यासियों की कमी होती जाती है। स्वर्गीय आत्माओं मे पजाब के स्वामी योगेन्द्रपाल' बडे ही निर्भीक सन्यासी थे। मुसलमानों के लिये काल समझिए। विद्वान सन्यासियों में स्वामी 'नित्यानन्द' जी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। इनका "पुरुषार्थप्रकाश" अब कहीं मिलता नहीं। आपके साथी श्री स्वा० 'विश्वेश्वरानन्द' जी भी 'वैदिक कोश' के कारण भुलाये नहीं जा सकते। स्वा० 'सर्वदानन्द जी' की त्याग-तपस्या, निस्पृहता किससे छुपी हुई है। आपके त्याग की धाक आर्यजगत् से बाहर भी पहुंची थी। तार्किकप्रवर तर्क शिरोमणि स्वा० 'दर्शनानन्द जी' का स्थान आज तक कोई न ले सका। आपके शास्त्रार्थों, तर्क प्रधान भाषणों, ट्रेक्टों, नि शुल्क गुरुकुलों के कारण आर्यजगत् का गौरव बहुत बढ़ा था।

स्वा० 'श्रद्धानन्द' इनका गुरुकुल जब तक जीवित जाग्रत है तब तक इनके नाम को कोई नहीं मिटा सकता। वस्तुत इन जैसा धूम-धडाके का नेता आर्यसमाज मे कोई हुआ ही नहीं। आर्यसमाज में रहे तो नेता रहे, अन्य कार्य-क्षेत्रों मे गये वहाँ भी अग्रणी ही रहे। सब जगह अगले सिरे पर रहते थे।

स्वा० 'शुद्धबोधतीर्थ'

आर्यजगत् मे सस्कृत विद्या का प्रचार जितना इन्होंने किया और कौन कर सकता है? कागड़ी, महाविद्यालय आदि में जो चमत्कार दिखलायी पड़ रहा है उसम इनका भी बड़ा हाथ था। इन्होंने आर्यजगत्को सैकड़ों विद्वान दिये। स्वा० भास्करानन्द (स्व० प० भीमसेन जी आगरा निवासी) इन्हीं के शिष्य है।

स्वामी 'नारायण'-गुरुकुल वृन्दावन को स्थिर दशा मे त्याग कर आपने सन्यास लिया और आर्यसमाज के प्रचार की ज्योति को जगाते रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा सयुक्तप्रान्त के तो प्राण थे। अच्छे लेखक, गम्भीर विचारक और उपदेष्टा थे—

'स्वामी केवलानन्द'

गम्भीर प्रवक्ता थे। कथाओं में आनन्द रस बहाया करते थे। स्वा० सर्वदानन्द जी के पश्चात् इन्होंने उनके कार्य को बहुत कुछ सम्भाला। स्वामी सर्वदानन्द स्पष्टवादी, प्रसङ्गवश कटुसत्य भी कह डालते थे। स्वा० केवलानन्द जी उसी बात को अत्यन्त मधुरता से कहते थे। अब आपका दारानगरगंज का निगमाश्रम शून्य हो गया। आपके स्थान की पूर्ति भी बड़ी कठिनता से होगी।

स्वा० 'शङ्करानन्द'—उग्रवक्ता थे देश देशान्तरों में हो आये थे अच्छे लगन के प्रचारक महोपदेशक थे।

'स्वा० महानन्द'

बहुत पुरानी बात है। देहरेसमाज को बनाने में आपका बड़ा हाथ था। आप स्व० बा० ज्योति स्वरूप के गुरु थे। अच्छे विद्वान् थ।

अब शेषों में

वैदिक साधनाश्रम रायपुर के स्वा० आत्मानन्द दीन नगर के स्वा० स्वतन्त्रतानन्द जी, ज्वालापुर के स्वा० वेदानन्द जी, स्वा० ब्रह्ममुनिजी आदि-आदि इने-गिने सन्यासी हैं। स्वा० व्रतानन्द जी भी चित्तौड़ सम्भाले हुए हैं।

ताजे स्वामी

महात्मा खुशालचन्द ने जिनका नाम हमने स्वामी आनन्दानन्द रक्खा है अभी-अभी रायपुर (जमनानगर जि० अम्बाला) के वैदिक साधना आश्रम में स्वा० आत्मानन्द जी से सन्यास ग्रहण कर लिया है। आप लेखक, सम्पादक, अनुपम वक्ता, कार्यकर्त्ता हैं। आप प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब, सिंध बलुचिस्तान के सर्वेसर्वा रहे हैं। डी ए. वी. कालेज पार्टी के स्तम्भ रहे हैं आशा है आपके सन्यास से आर्यजगत् में विशेष स्फूर्ति उत्पन्न होगी।

'स्वा० आनन्दबोधतीर्थ' आप स्वा० शुद्ध बोधतीर्थ के शिष्य हैं। अवस्था लगभग ८० के है। महाविद्यालय के कुलपति मुख्याधिष्ठाता आदि रह चुके हैं। प्रारम्भिक दशा में महाविद्यालय को चलाने में स्वा० दर्शनानन्द जी तथा स्वा० शुद्ध बोधतीर्थ जी का बहुत हाथ बटाया। अच्छे बहुश्रुत सन्यासी हैं—ईश्वर इनको स्वास्थ्य देवे।

'स्वा० आनन्दप्रकाश तीर्थ'—कथा के वक्ता हैं। आर्यजगत् के नामी व्याख्यान वाचस्पति हैं। महाविद्यालय के स्तम्भ तथा वर्तमान कुलपति हैं—

'स्वा० वेदानन्द जी—वानप्रस्थाश्रम तथा दयानन्द भिक्षुमण्डल के प्रमुख है। विद्वान्, वक्ता, लेखक।

स्वा० स्वतन्त्रतानन्द'—हैदराबाद सत्याग्रह के सचालक थे। अब दीनानगर (गुरुदासपुर पजाब) में दयानन्द मठ चलाते हैं। अच्छे धुन के सन्यासी हैं।

'स्वा० व्रतानन्द'—चित्तौड गुरुकुल के विधाता।

'स्वा० ब्रह्ममुनि'—पूरे परिव्राजक। प्रचार की धुन में परिभ्रमण करते रहते हैं। इनका कहाँ ठिकाना बतलायें।

'स्वा० सत्यदेव' परिव्राजक—किसी समय आर्यों के थे। अब हैं तो सभी के नहीं तो किसी के नहीं। विद्वान, लेखक, वक्ता, विचारक, प्रचारक।

'स्वा० अभेदानन्द'—बिहार के प्रसिद्ध सन्यासी अधिकतर बिहार में ही विहार करते रहते हैं। बिहार प्रतिनिधि सभा को थामे हुए हैं। हैदराबाद सत्याग्रह के डिक्टेटरों में से एक।

स्वा० 'अभयदेव—स्वा० सत्यानन्द जी से संन्यास लिया था। अरविंद की सुगन्ध में मस्त रहते हैं। गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रह चुके हैं।

'स्वा. सत्यानन्द'—मधुर कथा के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। अब तो आर्यजगत् में कम कथा, नहीं के बराबर सचार-प्रचार है। हिन्दुओं के उत्थान तथा उनमें बल सचार में प्रयत्नशील रहते हैं।

[नोट—जिनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है अथवा जिनके नाम रह गये अथवा जिनको मैं जानता नहीं मुझे क्षमा करेंगे।]

हिंदी सेवी मुसलमान

आजमगढ़, दिसम्बर। आजमगढ़ नगर में श्री हुसेनअली नामक एक हिन्दी सेवी मुसलमान हैं। आप प्रचार से दूर रह कर आज १५ वर्षों से हिंदी के प्रचार का अथक प्रयत्न किया करते हैं। आपके यहां प्रथमा परीक्षा केन्द्र भी है, आप अपने केन्द्रसे बैठने वाले परीक्षार्थियों के पढ़ाने के लिये चन्दा मांग कर अच्छे से अच्छा अध्यापक रखते हैं। परीक्षार्थियों को पुस्तकें मुफ्त में देते हैं। आपने नगर में एक बीघा जमीन भी हिंदी विद्यालय खोलने के लिये खरीद ली है। आपको इस कार्य से विरत करने के लिये लीगियों ने प्राण ले लेने की भी धमकी दी लेकिन आप अपने पथ से विचलित नही हुये।

पाकिस्तानी भेदिया गिरफ्तार

लखनऊ, ७ दिसम्बर लखनऊ की खुफिया पुलिस आजकल रफीकुल्ला शाह नामक पाकिस्तान के एक कथित भेदिये से विशेष पूंछ तांछ कर रही है और आशा है कि निकट भविष्य में ही कुछ सनसनी पूर्ण रहस्योद्घाटन होगा।

इस व्यक्ति को गत सोमवार को आलमबाग के पोस्टमास्टर ने पुलिस को सूचना देकर गिरफ्तार करवाया था। अभियुक्त काकोरी थाने के खुशहाल गाव का रहने वाला है।

कहा जाता है कि अभियुक्त कुछ पत्र जिनपर कराची का पता लिखा था डाकखाने मे छोडने आया था उनमें से दैवयोग से एक खुल गया जिसे डाककर्मचारियों ने पोस्टमास्टर के सामने उपस्थित किया। पोस्टमास्टर ने तत्काल उसे पढ़कर अभियुक्त को रोक कर पुलिस को सूचना दी। रफीकुल्लाशाहने घबराहट में आकर यह स्वीकार भी कर लिया कि वह पाकिस्तान का गुप्तचर है। तत्पश्चात् उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया।

गांधी हत्याकांड के मुकद्मे में ९ लाख ८४ हजार खर्च हुआ

उप प्रधान मन्त्री सरदार पटेल ने श्री महावीर त्यागी के एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि महात्मा गाधी हत्या काण्ड के मुकद्मे में कुल ९ लाख, ८४ हजार, ३३८ रु० का खर्च हुआ था। इसमें से ३ लाख ८६ हजार २३०) सबूत पक्ष के प्रधान वकील श्री दफ्तरी को दिये गये। दो अन्य वकीलों को २ लाख, ३९ हजार ७१३) दिये गये २९ ३००) विशेष जज का वेतन२६४३७) लाल किले में अदालत का कमरा बनवाने, ४१८००) पुलिस का खर्च तथा बाकी अन्य मदों में खर्च हुआ।

—नयी दिल्ली, ७ दिसम्बर। अगले साल नवम्बर में दिल्ली में एशियाई देशों के खेलों का पहली बार आयोजन किया गया है। खेलों की प्रबन्धक समिति ने सोमवार की बैठक में निश्चय किया है कि भारत संघ के राष्ट्रपति को एशियाई खेलों का प्रधान सरक्षक बनने के लिए आमन्त्रित किया जाय। सोमवार की बैठकके अध्यक्ष महाराज पटियाला थे।

श्री महर्षि दयानन्द तथा जिज्ञासु जी के यजुर्वेद भाष्यों की तुलना

लेखक—चतुर्वेद भाष्यकार श्री पं० जयदेव जी शर्मा विद्यालंकार

(गताङ्क से आगे)

प० जी ने 'धार्मिकोऽध्यापकः, दो पद असगत जानकर हटा दिये, परन्तु इसकी संगति इसप्रकार है। संस्कृत-पदार्थ भाष्य में— सरस्वती विद्यासु शक्तिना वागिव पक्षो, लिखा है। इस उपमानोपमेय से राजधर्माश्रित पुरुष और धार्मिक अध्यापक दोनों का समान रूप से कर्त्तव्य कहना ऋषि को सम्मत है ऐसे अनेक स्थल है, जिनको 'तुलना टिप्पणी' में सगति सहित स्पष्ट किया गया है। जैसे—अ० १०। म० १६ ॥ पृ० ८४६ । प० १ ॥ मुद्रित पृ० ८७६। प० २२—

मुद्रित—'यदि त्वया याः स्त्र-सिचः।'

प० जी 'यः स्वसिच।'

'यदि', 'त्वया' दोनों पद उडा दिये हैं। यदि का सम्बन्धी 'तर्हि' पद न होने से सगति स्पष्ट नही थी उसके अध्याहार से सगति स्पष्ट हो जाती है।

अ० ८। म० ७ ॥ पृ० ६६० । प० १ ॥ मुद्रित पृ० ६४७। प० १३—

'अन्यग्रहण निमित्तायां विवाहितायां स्त्रियां" म से 'अन्यग्रहण-निमित्तायां' पद छोड दिया है। इस पद का अपना विशेष अभिप्राय है। इत्यादि।

अ० ८। मत्र २७ ॥ पृ० ६८१ । प० ७ ॥ मुद्रित पृ० ६७४। प० ५, ६ मुद्रित में है—'सत्यासत्यस्तावका. गृहस्थाः।'

पं० जी—सत्यस्तावकाः गृहस्था

इसी प्रकार भाषा पदार्थ में—

मुद्रित—'सत्य और असत्य के अत्यन्त प्रशंसा के साथ प्रचार करने वाले विद्वान् लोगो…'

प० जी—'तथा सत्य के अत्यन्त प्रशंसा के साथ प्रचार करने वाले विद्वान् लोगो ……

प० जी ने 'असत्य के प्रचार' के भय से असत्य पद उड़ा दिया है। वस्तुतः हिन्दी संस्कृत पदार्थ का ठीक अर्थ नही हुआ। 'स्तुति' का अर्थ गुण दोष दोनों बतलाना है। संस्कृत भाष्य का अभिप्राय है—जो सत्य और असत्य दोनों का ठीक २ गुण दोष बतलावें, अर्थात् सत्य को सत्य और असत्य को असत्य बतलावें, भाषा पदार्थ में यह तात्पर्य स्पष्ट नहीं हुआ, इसलिये 'असत्य' पद को हटा दिया गया। यह कहां तक न्याय संगत हुआ ?

७—ऋषि दयानन्द ने अपने वेद के संस्कृत पदार्थ भाष्य में अनेक स्थलों में व्याकरण प्रक्रियाएँ दिखलाई है। प० जी ने अनेक स्थलों पर उनको इसलिये बदल दिया है कि आप को वे प्रक्रियाएँ अशुद्ध जचीं। जैसे—अ० १०। मन्त्र ३४ ॥ पृ० ८६८। प० २१, २२॥ मुद्रित पृ० ९०७ । प० १६। ऐसे अनेक स्थल हैं।

प० जी का व्याकरण प्रक्रिया में मतभेद है, तो प० जी उनको अपने 'अनुभाष्य, में दिखा सकते थे। वैसा नही किया, परन्तु अपने मन्तव्य को ऋषि दयानन्द पर लाद दिया गया।

—इस तरह के परिवर्त्तन किसी व्यक्ति को कहां तक करने का अधिकार है, यह विचारणीय है।

ऐसे हीप क्रिया परिवर्त्तन का नमूना पृ० ५७३। प० ६७ ॥ अ० ७। मन्त्र ४ में किया है।

ऐसा ही शोधन अ० ५। मन्त्र ३२ में—'आलीयच' प्रत्यय को 'आलीयर करने में है। [पृ० ४७६। पं० ७ ॥ मुद्रित पृ० ४३५। प० ६,७]

श्री प० ब्रह्मदत्तजी की नियत बहुत उत्तम थी कि ऋषि भाष्य में व्याकरण प्रक्रिया शुद्ध और निर्विवाद रूप से ठीक हो। परन्तु प्रश्न अधिकार और युक्तता का है। प० जी के परिवर्त्तन पर भी यदि अन्य को किसी प्रकार का सदेह हो तो क्या अन्य सम्पादक को उसे बदलने का अधिकार और औचित्य है कि नहीं ?

८—श्री प० जी ने वाक्य को अधिक स्पष्ट करने के लिये वाक्यांश बहुत बढ़ा दिये हैं। ऐसा स्पष्टीकरणार्थ परिवर्धन आप अपने अनुभाष्य में स्वतन्त्र रीति से कर सकते थे। उचित भी ऐसा ही है। इस परिवर्धन का एक नमूना दिखाते है—अ० १०। मन्त्र ३३ ॥ पृ० ८६८। प० ६ ॥

मुद्रित—'इसलिए वन के सिंहों के समान परस्पर सहायी होके सब……'

पं० जी—'इसलिये जिस प्रकार वन और सिंह परस्पर एक दूसरे की रक्षा में सहायता करते हैं वैसे सब……'

यदि 'वन और सिहों के समान ……' कर दिया जाता तो अभिप्राय स्पष्ट हो सकता था। ऐसे भी अनेक स्थल है।

अनेक स्थानों पर अर्थ स्पष्ट करने के लिये प० जी ने वाक्यांश बड़ी सुन्दर रीति से बढाये हैं, जो अवश्य उपादेय भी हैं। जैसे—पृ० ८६३। प० १६ ॥ मुद्रित पृ० ९०७। प० ४ ॥ अ० १०। मन्त्र ३३ में—

यहां प्रत्येक उपमान के साथ वाचक शब्द और समान धर्म बढ़ाया है।

९—अनेक स्थलों पर प० जी ने पद निराधार बढ़ा दिये हैं। जैसे—अ० १०। मं० २४॥ पृ० ८५४ । मं० १४॥ मुद्रित पृ० ८६०। म० १०, ११—

'(दुरोणसत्) घर में स्थित ‥' को '(दुरोणसत्) घर [आदि पदार्थों] में स्थित ‥' कर दिया है।

यहाँ 'आदि पदार्थों' की वृद्धि निराधार है। संस्कृत-भाष्य में है—'दुरोणे गृहे सीदति'।

१०—अनेक स्थानों पर प० जी ने मुद्रित पाठ में पर्याय रखकर परिवर्तन कर दिया है। जैसे—अ० १०। मन्त्र २९ ॥ पृ० ८५०। पं० १० ॥ मुद्रित पृ० ८८६। प० १६—'वेद तथा ईश्वर में रहित निष्ठा' के स्थान पर 'वेद तथा ईश्वर से विमुखता' कर दिया है। संस्कृत पदार्थ भाष्य है—वेदेश्वरनिष्ठारहितता'। इसका अर्थ होना चाहिये। 'वेद तथा ईश्वर में निष्ठारहित होना'। मुद्रित पदों को आगे पीछे करने से सब काम चल जाता। पर्याय शब्दों से स्पष्ट करने का काम पं० जी को 'अनुभाष्य' में करना चाहिये था।

इसी प्रकार के परिवर्त्तन निम्न स्थानों पर भी हैं—

अ० १०। मन्त्र २०॥ पृ० ८४८। प० २ ॥

अ० १०। मन्त्र २१ ॥ पृ० ८५०। प० ५ ॥

अ० ६। म० ११ ॥ पृ० ७६३। पं० ७ ॥

११—श्री प० जी ने अनेक स्थानों पर कुछ परिवर्त्तन नहीं किया पाठ मुद्रित के अनुसार ही रखा है। तो भी वहां ऐसी पाद टिप्पणी दी है जो त्रुटि दिखाती है, यदि त्रुटि है तो प० जी ने बदला क्यों नही ?

जैसे—अ० १०। मन्त्र २३ ॥ पृ० ८५२। म० ६ ॥ मुद्रित पृ० ८८७। म० १७—टिप्पणी दी है—'वाचम्' इति व्यर्थः पाठः। मेरी सम्मति है कि 'वाच' पद व्यर्थ नही है।

१२—सम्पादन में लेखक का भाव आशय बदलना नहीं चाहिये। अनेक स्थलों पर प० जी ने सम्पादन में भाव भी बदल गये है। जैसे—अ० १०। मन्त्र १६॥ पृ० ८३७। प० १५॥ मुद्रित पृ० ८७३। प० १७—'उपदेशकगृहम्' को उपदिश्यमानगृहम्' कर दिया है।

१३—कई स्थानों पर बिना आधार के शब्द बदल दिये हैं। जैसे—अ० १०। म० १५॥ पृ० ८३६। प० ५ में—

'ईश्वरवद्' के स्थान में 'आप्तवद्' कर दिया है।

अ० १०। म० ६ ॥ पृ० ८२७। पं० १५ ॥ मुद्रित पृ० ८५८ । प० ६ में—

'प्रिय वर' पद पृथक् २ कर दिये। कोष्ठ में 'श्रेष्ठ' पद बढ़ा दिया। 'जवान' को 'युवान्' कर दिया। ऐसा करने का कारण स्पष्ट नहीं।

१४—अनेक स्थलों पर मुद्रित पाठ दिखाए है, जो श्री प० को अभिमत नही, परन्तु मेरे पास जो मुद्रित प्रति थी, उसमें प० जी का पाद-टिप्पणी में उद्धृत पाठ नहीं था। जैसे—अ० १०। मन्त्र ५ ॥ पृ० ८२५। प० १५—

पाद टिप्पणी है—'आशा आशसा' इति मुद्रितः पाठः।

मुद्रित में पाठ है—'आशसा (इच्छा)……' (भावार्थ में देखो) ऐसी टिप्पणी पाठक को भ्रम में डालती है।

(क्रमशः)

ऋषि के वेद-भाष्य पर आचार्य विश्वश्रवा की टीका

(डाक्टर गङ्गाचन्द्र वैद्यशास्त्री, मन्त्री, आर्यसमाज, गणेशगज, मिर्जापुर)

ता० १७-११-४९ के 'आर्यमित्र' में माननीय आचार्य विश्वश्रवा का एक सचित लेख ऋषिवर दयानन्द के वेद भाष्य की टीका के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ है।

तीन प्रश्न विचारणीय हैः—

(१) वेद भाष्य की आवश्यकता और उसकी रूप रेखा।

(२) आर्य समाज को वेद पर नया भाष्य न करना चाहिए।

(३) आचार्य विश्वश्रवाः जी की टीका के छपने का प्रश्न —

प्रथम प्रश्न —वेद प्रचार की दृष्टि से इस बात को बड़ी आवश्यकता है कि वेद का एक ऐसा भाष्य किया जाय, जिसमें प्रत्येक पद की चाहे वह कठिन हो या सरल प्रमाण पुष्टि पुरस्सर युक्ति निरुक्ति हो, ताकि साधारण पढ़े लिखे संस्कृतज्ञ उसको भली भाँति समझ सकें। पौराणिक सत्यनारायण की कथा कहने वाले सनातनी पुरोहित की तरह नगर नगर और ग्राम-ग्राम में वेद प्रचार करने वाले न संस्कृतज्ञ विद्वान् होंगे, क्योंकि एक तो उनकी संख्या न्यून होगी और दूसरे इसके लिए उनके पास समय न होगा और न केवल हिन्दी जानने वाले; क्योंकि वेद की बारीकियों को समझना उनके लिए कठिन होगा और दूसरे संस्कृत से बिल्कुल अनभिज्ञ के प्रति जनता को श्रद्धा कम होगी। इसका प्रचार तो वे ही कर सकेंगे जो संस्कृत जानते हों-भले ही संस्कृत के अधिक ज्ञाता न हों। इस दृष्टि से श्री स्वामीजी महाराज का वेद-भाष्य तथा श्री शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ महामहोपाध्याय, आर्य मुनि जी, श्री तुलसी राम जी और श्री क्षेमकरण जी त्रिवेदी के वेद-भाष्य अनुपयुक्त-प्रतीत होते हैं। पता नहीं, आचार्य विश्वश्रवाः जी की टीका का क्या स्वरूप है। मेरा अनुमान है कि ऋषि के वेद भाष्य में जिन स्थलों को आधुनिक दृष्टि कोण वाले सन्दिग्ध एवं विवादास्पद् समझते हैं उन्हीं पर Annotation है। वैदिक संस्थान द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद के संक्षिप्त सरल अनुवाद में इस बात की आशा दिखाई गयी थी कि अशेष विशेष, युक्ति निरुक्ति, पद पदार्थ प्रमाण पुष्टि पुरस्सर एवं भाषानुवाद सवलित संस्कृत का एक बृहद् भाष्य प्रकाशित होगा। यह प्रकाशित हुआ या नहीं—मालूम नहीं (कोई सज्जन इस पर प्रकाश डालने की कृपा करें)। संसार की दृष्टि में न केवल वेद रहस्योद्घाटन के विचार से किन्तु वेद के सर्व विद्या विज्ञान का स्रोत प्रमाणित करने के विचार से यह बात अनिवार्य है कि प्रसिद्ध वेदज्ञ श्री सत्यव्रत जी सामश्रमी की धारणा के अनुसार वेद-भाष्य का सम्पादन एक ऐसे सम्पादक मण्डल के द्वारा हो, जिसमें ज्योतिषी, वैद्य, भूगर्भवेत्ता गणितज्ञ आदि हों ताकि ज्योतिष, वैद्यक, विज्ञान आदि प्रत्येक दृष्टिकोण से वेद पर भाष्य हो सके? आर्य समाज की आधार शिला वेद सम्बन्धी यह कार्य दयानन्द पुरस्कार निधि द्वारा सम्पाद्य कार्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में मैंने "भावी वेद भाष्य की रूप रेखा" शीर्षक एक विस्तृत लेख "वेदवाणी" काशी में लिखा है।

द्वितीय प्रश्न—आर्य समाज वेद पर नया भाष्य क्यों न करें? क्या स्वामी जी के वेद भाष्य पर कोई improvement नहीं हो सकता? श्री स्वामी जी के प्रति प्रत्येक आर्य का श्रद्धा होना स्वाभाविक है, किन्तु अन्ध श्रद्धा वाञ्छनीय नहीं। क्या ईश्वर की इस विचित्र दृष्टि में श्री स्वामी जी से अधिक बुद्धि का विकास असम्भव है? श्री स्वामी जी बुद्धि के limit तो थे नहीं! हजरत मुहम्मद के अन्तिम नबी होने की बात की तरह श्री स्वामी जी अन्तिम वेद-भाष्यकार तो नहीं हो सकते। एक बार वार्तालाप में एक मुसलमान सज्जन ने बताया कि वह टेघुणी तक पाजामा इस कारण पहिनते हैं कि उनके नबी भी इस तरह पहिनते थे। क्या इसी तरह श्री स्वामी जी ने जो वेद भाष्य किया है उसी को ही राग अलापी जाय। उसे ही पूर्ण मान कर उससे बढ़ने को प्रवृत्ति रोक दी जाय? वह मनुष्य पूजा आगे चलकर अत्यन्त भयावह सिद्ध हो सकती है।

तृतीय प्रश्न—श्री आचार्य जी से निवेदन है कि धनवान् यजमान के भरोसे न रहें। ऐसी बातों का शौक धनवानों को कम होता है। लिखते रहने के सकल्प से भी आचार्य जी के लिखने का संस्कार बना रहेगा किन्तु टीका को अपने मरने के बाद नहीं बल्कि जीवन में ही छपने दें। 'आर्य मित्र' में ही थोड़ा २ प्रकाशित करें। ताकि वह प्रकाश में आ सके। उत्तराधिकारियों ने तो हस्त लिखित पुस्तकों को निर्ममता पूर्व गङ्गाजल के हवाले कर दिया है।।

सफ़र में

(पृष्ठ ७ का शेष)

गाड़ी तेजी से चली जारही थी। लोग बाबू को लक्ष्य करके आपस में मजाक कर रहे थे। एक ने कहा—"अरे भाई! तुम लोग शरीफ आदमियों की इज्जत करना नहीं जानते। भला कहीं ऐसा भी होता है, बिचारे खड़े खड़े थक गये होंगे।"

दूसरे ने जरा उचक कर कहा—'खिड़कियां दोनों खोल रखी हैं ना! हवा तो खूब आती होगी।"

तीसरे ने कहा—

"आपने भी एक ही कही। पढ़े लिखे हैं कुछ हमारे जैसे गवार थोड़े ही हैं। चौथे ने मुंह खोला ही था कि—बाबू जी अन्दर से गुर्राये। उल्लू के पट्ठे, साले, बदमाश कहीं के! आने दो स्टेशन, एक एक की खबर लूंगा। ऐसी सजा दिलाऊंगा कि जिन्दगी भर याद रखोगे।"

एक ने कहा—"बाबू जी! अभी दिल्ली दूर है।"

दूसरे ने झट से कहा—"अरे! नहीं बाबू जी ये तो झूठ बोलता है। सिर्फ ४० मिनट का सफर और है। घबराइये नहीं।

बाबू चुप होगया। शायद दिल्ली आने का इन्तजार कर रहा था। गाड़ी फिर धीमी पड़ी। सवारियों ने चिल्लाया कोसी—आया, कोसी!" मैंने जैसे ही झांक कर देखा कि—इतने में टिकट चैकर ने अन्दर कदम रखा। लोग बगलें झांकने लगे सबके चेहरा पर एक प्रकार की घबराहट स्पष्ट दीख पड रही थी। मैं भी कुछ स्थिर न कर सका।

टिकट चकर की आवाज सुनकर बाबू जी चिल्लाये—देखिये मिस्टर! जरा दरवाजा खोलिये! इन नालायकों ने मुझे दो घण्टे से यहां बन्द किया हुआ है। आप .

मैं, बात बिगड़ी समझकर आगे बढ़ा। मैंने नम्रता से गम्भीर आकृति बनाकर—सिर खुजलाते हुये कहा—"देखिये बा जी! ये मेरे" '

टिकट बाबू ने पूछा—

"हां-हां-कहिये, कहिये। क्या बात है?

मैं बोला—

"बाबू जी ये मेरे पिताजी हैं। साहब मैं इन्हें आगरे ले गया था, पागलखाने में भर्ती कराने।' परन्तु डाक्टर ने इन्हें कसौली लेजाने की सलाह दी है। उनका कहना है, इन्हें कभी बचपन में पागल कुत्ते ने काट लिया था। इतने दिनों बाद यह उसी का असर उभर आया है। सारे रास्ते इन बेचारों मुसाफिरों को तंग करते रहे, तब जाकर मैंने उन्हें यहां बन्द कर दिया!"

घबराये मुसाफिर अब स्वस्थ थे। उनमें से एक साहब बोले—इसमें आपका क्या कसूर है। फिर वे बिचारे ही क्या करें, जब इन्हें अपनी देह की होश ही नहीं है।

पाखाने के किवाड़ भीतर से अब भी पीटे जारहे थे और गालियों के नारे बराबर लग रहे थे। उधर उपेक्षा की नजर डालते हुये टिकट चैकर ने हमदर्दी के स्वर में कहा—बहुत ही खराब बीमारी है यह। सरकार को चाहिये कि सब पागल कुत्तों को एक साथ मरवादे!"

बाबूजी गाड़ी से नीचे उतरे कि हंसी का फव्वारा छूटा। दरवाजा थपथपा कर मैंने कहा—"कहो बेटा, आराम से तो हो?"

(आजकल ऐसी घटनाओं का यात्रियों को प्रायः सामना करना पड़ता है। नया जीवन, में प्रकाशित श्री शर्मा जी की यह कहानी हम यहां दे रहे हैं। आशा है प्रायः सफर करने वाले मित्र के पाठकों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी)

—सम्पादक

गुरुकुल तथा आर्य संस्कृति

[ले० पं० द्विजेन्द्रनाथशास्त्री कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन]

आज भारत स्वतन्त्र है। और आगामी २६ जनवरी १९५० को तो यह भारत पूर्ण स्वतन्त्र साम्राज्य हो जायगा। देश की इस परिवर्त्तित अवस्था में, राष्ट्र की गति विधिका निरीक्षण करते हुए यह तो स्पष्ट प्रतीत होने लगा है कि हमारे राष्ट्र सञ्चालकों का जितना ध्यान बड़ी बड़ी दीर्घ कालीन योजनाओं विद्युद् गह सैनिक शक्ति, सामुद्रिक शक्ति वायुयान तथा राष्ट्र के जीवन स्तर को ऊंचा बनाने एवं राष्ट्र के भौतिक उत्थान के प्रति जितना केन्द्रित है, आर्य संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार की तरफ सम्प्रति उतना नहीं है निस्सन्देह इस नवीन युग में उक्त साधनों का होना भी आवश्यक है परन्तु प्रजा के जीवन में आर्य संस्कृति के उदात्त आदर्शों का क्रियान्वित होना परमतया प्रथम आवश्यक है। यदि भारतीय प्रजा में भारतीय संस्कृति पुन अनुप्राणित न हुई और उसी पाश्चात्य संस्कृति के आधार पर हमारे, राष्ट्र का नव निर्माण हुआ तो पश्चिम की भांति भारत भी उसके भयावह परिणामों से बच नहीं सकता, यहां पर भी अशान्ति, शोषण, भ्रष्टाचार संग्राम रक्तपात तथा स्वार्थ परायणता, का नग्न नृत्य होता ही रहेगा। और देश के स्वतन्त्र होने पर भी हम परतन्त्रता से कहीं अधिक दुःखी बने रहेंगे। भारत का उत्थान तथा नवनिर्माण तो आर्य संस्कृति की पृष्ठ भूमि पर ही होना श्रेयस्कर है। जिस में ईश्वर धर्म सदाचार, एवं नैतिकता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसी को अध्यात्म संस्कृति कहा जाता है। जिस के बिना राष्ट्र को प्राणहीन समझना चाहिये। भौतिक दृष्टि से राष्ट्र कितना भी समृद्धिशाली क्यों न हो, यदि उस में अध्यात्म तत्वों का, आस्तिकता का, सदाचार का पुट न हो तो उसे निर्जीव राष्ट्र ही कहना चाहिये।

आज यद्यपि हमने राजनैतिक विजय तो प्राप्त की है किन्तु पश्चिम के सांस्कृतिक दासता के बन्धन से अभी हम मुक्त नहीं हुए हैं। जबतक योरुप की सांस्कृतिक शृंखलाओं से हमारे मस्तिष्क मुक्त न होंगे, तबतक तो हमें अपने को दास ही समझना चाहिये। राजनैतिक दासता उतनी घातक नहीं होती जितनी सांस्कृतिक दासता। राष्ट्र को इस सांस्कृतिक दासता से मुक्त कराने का कार्य भार अब आर्य समाज पर है। वैदिक सिद्धान्तों एवं संस्कृति के प्रचार से ही यह कार्य सम्पन्न हो सकता है। जिस का मुख्य साधन गुरुकुल आदि शिक्षा केन्द्र ही है। जिन में बाल्य अवस्था से विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण एवं मस्तिष्क तथा हृदय विकास होता है। इन्हीं गुरुकुलों के द्वारा आस्तिकता, धार्मिकता, उनके जीवन में ओत प्रोत हो सकती है। संस्कृत साहित्य उपनिषद वेद दर्शनों के उदार एवं उदात्त विचारों को जीवन में परिणत कर आदर्श मानव जीवन की रचना यदि हो सकती है तो इन्हीं पवित्र, सांसारिक वातावरण से अतिदूर, पुण्य तपो भूमियों के द्वारा ही आज भी हो सकती है जैसा कि प्राचीन भारत के अभ्युदय काल में हुआ करता था। गुरुकुलों से निकले स्नातक ही ब्रह्मचर्य की ज्योति से प्रदीप्त, तेजस्वी ओजस्वी ब्रह्मवर्चस्वी बनकर आदर्श नागरिक, तथा सच्ची मानवता के प्रतीक के रूप बनकर ही वे आदर्श रूप का प्रशंसनीय सञ्चालन कर सकते हैं। तभी राष्ट्र यथार्थ में आदर्श, तथा अजय राष्ट्र बन सकता है। ऐसे आदर्श, राष्ट्रों से मिल कर ही एक विश्व राष्ट्र (vorld federa ion) या चक्र वर्त्ती साम्राज्य की स्थापना हो सकती हैं। यही महर्षि का स्वर्ण स्वप्न था इसीलिये उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदेश दिया था। आर्य समाज ने गुरुकुलों की स्थापना तो की किन्तु इस दिव्य उद्यान की पूर्णरूप से रक्षा का प्रबन्ध करने में वह सफल न हो सका। इसी कारण फल तो आये और खासे मधुर आये परन्तु अमृत फल न आसके जो राष्ट्र को अमर बना सकते। जिस लोकतन्त्र विश्व साम्राज्य का स्वप्न आज के महान् नेता व विचारक ले रहे हैं वह तो विश्व जनीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही अपनाने से सत्य हो सकता है। इसलिये आर्य समाज के ऊपर इस का बड़ा भारी भार है। यदि वास्तव में विश्व में आर्य संस्कृति का पुन प्रचार आप को अभीष्ट है, तो गुरुकुलों को अपनाइये तन मन धन से इनकी सहायता कीजिये। अपने और अपने इष्ट मित्रों के बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराइये, बिना किसी भेद भाव से स्वल्प व्यय में यदि कहीं आदर्श शिक्षा मिलसकती है तो वह गुरुकुल में ही मिलसकती है। आपके गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का उत्सव ता० २५, २६, २७, २८ दिसम्बर को मनाया जारहा है। इस पुण्य तीर्थ के यात्री बन अपने प्रियगुरुकुल की सहायता कीजिये। बड़े बड़े विद्वान तपस्वी महात्मा सन्यासी महानुभावों के उपदेशों से लाभ उठाइये अधिक से अधिक दान देकर यश के भागी बनिये। और सच्चे राष्ट्र निर्माण में भागी बनिये। जिनको उत्सव पर पहुंचना सम्भव न हो वे अपनी दान राशि भेजने की कृपा करें।

अनुकरणीय आर्य ठा० मानसिंह जी

श्री ठा० मानसिंह जी का जन्म ग्राम फतेहपुर गयन्द पो० शाहाबाद, जिला हरदोई में अश्विनी कृष्णा १७ सं० १९३३ वि० में हुआ था। आपके पिता श्री ठा० सरताज सिंह जी थे। इस साधारण ग्राम के निवासी होते हुए भी आपने हिंदी, उर्दू और फारसी का अच्छा अभ्यास किया। संयोग वश आप आर्यसमाज शाहाबाद के उत्सव में सम्मिलित हुये। स्व श्री पं० नन्दकिशोरदेव शर्मा जी के द्वारा शंकाओं के समाधान से इतने प्रभावित हुये कि उसी दिन से आर्यसमाज के न केवल अनन्य भक्त ही बन गये, अपितु यथा शक्ति आर्यसमाज का कार्य भी उत्साह के साथ करने लगे। अपने ग्राम में आपने सन् १९१६ में आर्यसमाज के लिये अपना ही एक कमरा प्रदान किया आर्यसमाज मन्दिर की रजिस्ट्री सन् १९४६ में हुई इसी वर्ष सभा प्रधान राजगुरु श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री जी हैदराबाद सत्याग्रह से लौटकर फतेहपुरगयन्द भी पधारे थे। इस समय श्री ठाकुर मानसिंह जी की आयु ६० वर्ष की है, तथापि आप नियमित रूप से आर्य समाजिक कार्यों को करते हैं प्रतिवर्ष जहां आप गुरुकुल वृन्दावन को आर्थिक सहायता प्रदान करते रहते हैं वहां साथ ही आपने यह भी संकल्प किया है कि प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त को भी एक सौ रुपया वेद प्रचारार्थ देते रहेंगे। वस्तुतः आपका जीवन अनुकरणीय है।

कश्मीर कमीशन ने असफलता स्वीकार करली ?

लेकसक्सेस, ९ दिसम्बर ! सम्भवतः संयुक्त राष्ट्र कमीशन अगले सप्ताह में सुरक्षा परिषद से प्रस्ताव करेगा कि भारत के बीच कश्मीर के झगडे पर मध्यस्थ की नियुक्त की जाय ! मध्यस्थ की नियुक्ति के लिए एडमिरल निमिज का नाम प्रस्तावित किये जाने की सम्भावना है !

कश्मीर कमीशन की रिपोर्ट के कुछ अन्श यहा भेज दिये गये हैं! लेकिन, उन्हे गुप्त रखा गया है ! कुछ सूत्रों ने पता चला है कि रिपोर्ट में कमीशन ने भारत पाकिस्तान के बीच सधि कराने के प्रश्न पर अपनी असफलता स्वीकार कर ली है !

कश्मीर में नियुक्त किये गये मतगणना सचालक एडमिरल चेस्टर निमिज ने कहा कि मैंने रिपोर्ट का सारांश देखा है ! लेकिन अपने इस पर कोई टीका नही की !

१७ दिसम्बर को सुरक्षा परिषद की बैठक शुरू होने पर यह निश्चय किया जायगा कि क्या कश्मीर का झगड़ा अभी भी तय हो सकता है या इस मामले में आगे क्या कार्रवाई की जानी चाहिये !

सुरक्षा परिषद के क्षेत्रो में यह मत प्रकट किया जा रहा है कि चार्टर की ३३ वीं धारा के अनुसार अगला कदम पच को नियुक्ति होनी चाहिये !

भारत सरकार ने चूकि पहले से ही पच की नियुक्ति का विरोध किया है इसलिए इसबात की सम्भावना है कि शायद कोई ऐसा हल निकाल लिया जायगा जो भारत को स्वीकार होगा !

सन् ५० या ५१ में नये चुनाव : अधिकांश मतदाता सूचियाँ तैयार

नयी दिल्ली, ९ दिसम्बर ! आज पार्लमेंट में श्री सिबवा के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री सत्यनारायण सिनहा ने कानून मन्त्री डा० अम्बेडकर की ओर से कहा कि नये विधान के अन्तर्गत आम चुनाव सन् ५० या ५१ में होंगे। आपने यह भी बतलाया कि पूर्वी पजाब में मतदाताओं की सूची छप चुकी है। मद्रास, पश्चिमी बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा और कुर्ग में यह सूची छप रही है। सयुक्त प्रांत में मध्य प्रांत और बरार, आसाम, मध्य भारत, राजस्थान, अजमेर मेरवाड़ा पचपिपलौदा, हिमाचल प्रदेश और त्रिपुरा में सूचियाँ तैयार हो गये हैं। सौराष्ट्र, पटियाला तथा पूर्वी पजाब रियासत सघ में, दिल्ली, भोपाल और कूच विहार में ये सूचियाँ तैयार हो रही हैं। विधान सभा या धारा सभाओं के चुनावों के लिए ट्रावनकोर कोचीन और रीवा रियासत में वयस्क मताधिकार के आधार पर मतदाताओं की सूचियाँ पहले से ही तैयार हैं। उन्हे केवल नये चुनावों के लिए दोहराया जा रहा है। अन्य रियासतों और चीफ कमिश्नरों के प्रांतों में ये सूचियाँ बननी शुरू हो गये हैं। हैदराबाद में मतदाताओं की सूची बनाने का कार्य अभी नहीं शुरू हुआ है लेकिन वहाँ भी विधान सभा के चुनाव के लिए वयस्क मताधिकार के आधार पर सूची तैयार है और उसे दोहराने में देर न लगेगी। कश्मीर सरकार ने अभी इस प्रश्न को नहीं उठाया है। कश्मीर सरकार से इस सम्बन्ध में वार्ता हो रही है।

श्री बृजेश्वर प्रसाद के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया गया कि पश्चिमी बङ्गाल में चुनाव पुराने मताधिकार के अधिकार पर क्यों होंगे जब कि मतदाताओं की नयी सूची तैयार हो गयी है।

शरणार्थियों की निष्क्रांत सम्पत्ति सम्बन्धी माँगों पर गौर किया जायगा

नयी दिल्ली, ९ दिसम्बर। भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूने अखिल भारतीय शरणार्थियों सघके अध्यक्ष डा चोइथराम गडवानी को एक पत्र में लिखा है कि उनके सघ की ओर से निष्क्रांत सपत्ति कानून के सबंध में जो सुझाव मिलेंगे उनपर पूरी तौर से गौर किया जायगा।

नेहरू जी कोलंबो सम्मेलन में भारतीय शिष्टमंडल के नेता होंगे

नयी दिल्ली, ९ दिसम्बर ! कोलम्बो के राष्ट्रमंडल पर राष्ट्र मंत्रि सम्मेलन में भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व नेहरू जी करेंगे !

—वाशिंगटन, ९ दिसम्बर ! यहां पर इसराइल दूतावास ने घोषणा की है कि वर्मा सरकार ने इसराइल को मान्यता प्रदान की है !

१३ गज लम्बा अजगर पकड़ा गया

लखनऊ, ५ दिसम्बर ! गोरखपुर की पुलिस ने १३ गज लम्बे एक अजगर को पकड़ कर लखनऊ के शहर कोतवाल ठाकुर अनिरुद्ध सिंह के सिपुर्द किया। शहर कोतवाल ने उसे स्थानीय अजायबघर में भिजवा दिया है !

सब कुछ बेच कर पाकिस्तान चल दिये

लखनऊ। बाराबकी के अब्दुल वाजिद नामक एक टिकट कलक्टर ने आजसे ६ महीने पहले अपने पूरे परिवार को पाकिस्तान भेज दिया था और स्वतः भारत स्थित अपनी पूरी संपत्ति की देखरेख करते हुए अपनी नौकरी भी कर रहे थे। लगभग दो महीने आपने आराम से नौकरी की और इसी बीच अपनी पूरी सम्पत्ति को भी बेच डाला। अचानक एक दिन आपने दो दिन (७ और ८ नवम्बर) की छुट्टी ली और एकाएक लापता हो गये। तब से आज तक आपका कहीं पता नहीं चल पाया है। प्रान्त की खुफिया पुलिस अब भी छान-बीन कर रही है।

हाई स्कूल के छात्रों के सम्मेलन में भाग लेने ३ भारतीय छात्र अमेरिका जायेंगे

लन्दन, ९ दिसम्बर। न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून' की ओर से आयोजित हाई स्कूल के छात्रों का एक सम्मेलन आगामी ४ मार्च को होने जा रहा है। इसमें भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये दो भारतीय और एक नैपाली छात्र चुने गये हैं।

भारतीय छात्रों में से एक लालबाग गर्ल्स हाई स्कूलकी छात्रा कुमारी ऊषा राय तथा दूसरे ट्रावनकोर युनिवर्सिटी कालेज के श्री बालकृष्णन् नायर हैं। नेपाली छात्र विक्टोरिया ब्वायज स्कूल दार्जिलिंग के श्री तारा प्रसाद प्रधान हैं।

२२ दिसम्बर को यह छात्र बिमान द्वारा अमेरिका जायगे और दस सप्ताह तक अमेरिका स्कूलों का भ्रमण करेंगे।

बर्मा और विश्व की घटनाएं हमारे लिए चुनौती हैं

श्री बारदोलाई—

गोलाघाट, ९ दिसम्बर

आसाम के प्रधान मन्त्री श्री गोपीनाथ बारदोलोई ने एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि यह समय भारत की अग्नि परीक्षा का समय है, पूर्व की ओर हमारी सीमा पर परिस्थिति तेजी से बदल रही है—हमारा पड़ोसी पाकिस्तान शत्रु के समान व्यवहार कर रहा है और विश्व की स्थिति भयावह होती जा रही है, यह सब हमारे लिये चुनौती है कि सब मिल कर संकट का सामना करें।

कबीली जातियों की वीरता की प्रशंसा करते हुए आपने कहा कि स्वातन्त्र्य सग्राम में उन्होंने वीरता पूर्वक भाग लिया है। हमें उनकी स्थिति में सुधार करना ही चाहिये।

अल्मोड़ा केस

(पृष्ठ का शेष)

अपना निर्णय करना उचित समझा, यह आश्चर्य की बात है। उभय पक्ष की ओर से की गई बहस को सुनकर माननीय जज महोदय ने निगरानी मजूर की और धारा १४५ जाब्ता फौजदारी के अनुसार चलाये गये स्वा० कृष्णानन्द के मुकदमे के सम्बन्ध में दिये गये अल्मोड़ा मजिस्ट्रेट और सेशन जज कमायूँ के निर्णयों को रद्द करते हुये सभा प्रधान राजगुरु श्री प० धुरेन्द्र शास्त्री के पक्ष में अपना निर्णय दिया। इस प्रकार आर्य समाज मंदिर अल्मोड़ा से सम्बद्ध अथवा उसी के विभिन्न भागों पर आर्यप्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज का अधिकार यथापूर्व स्वीकार हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनाएँ

वृहदधिवेशन, निमन्त्रण

आर्यप्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त का आगामी वृहदधिवेशन ईस्टरावकाश में होना निश्चित हुआ है। अधिवेशन की तिथि, स्थान नियत करने का विषय २५ दिसम्बर १६४६ को सभा की अन्तरङ्ग में प्रस्तुत होगा। अतः प्रान्त के समस्त आर्य समाजों के प्रधान मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि जो आर्य समाज अपने नगर में वृहदधिवेशन को निमन्त्रित करना चाहते हैं, वे अपनी आर्य समाज की अन्तरङ्ग में विषय प्रस्तुत कर उसके निश्चय सहित निमन्त्रण पत्र १५ दिसम्बर तक सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री
प्रधान
आ. प्र. सभा, युक्त प्रान्त

आवश्यक सूचना

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का वार्षिक महोत्सव ता० २५ से २८ दिसम्बर १६४६ तक मनाया जायगा, बाजार प्रति वर्ष की भांति ही लगेगा, दूकानों का किराया निम्न प्रकार होगा,

चौराहे की पक्की पुस्तकों की दूकानें	२२ रु०प्रति दूकान.
पिंडाल की ओर पक्की पुस्तकों की दूकाने	१८ रु०प्रति दूकान
फूंस की कच्ची पुस्तकों की दूकानें	१५ रु०प्रति दूकान.
हलवाइयों की चौराहे की दूकानें	१५ रु०प्रति दूकान.
शेष हलवाइयों तथा अन्य दूकान शिविर की ओर	१२ रु०प्रति दूकान.
जमीन पर अपनी दूकान लगाने वालों से	७ रु०प्रति दूकान

इसके अतिरिक्त ६ रु० प्रति बल्ब बिजली का चार्ज होगा,

जो महानुभाव दूकानें लेना चाहें वह अपना किराया यथा सम्भव शीघ्र अगाऊ भेजने का कष्ट करें जिससे कि सुरक्षित कर दी जावे,

श्रीराम मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

निरीक्षक सूचना

सभा के उत्साही निरीक्षक श्री देवी प्रसाद जौहरी जी अन्तरङ्ग सदस्य जिला ऐटा के सर्व समाजों का निरीक्षण समाप्त कर चुके हैं अब जिला मुजफ्फरनगर व सहारनपुर के समस्त समाजों का निरीक्षण करने के लिये नियुक्त किये गये हैं। वे आगामी मास से इन जिलों के समाजों का निरीक्षण करने के लिए पहुचेंगे। इनके पहुचने पर समाज के प्रधान व मन्त्रीजी निरीक्षण कराने में सहयोग प्रदान करें और सभा प्राप्तव्यधन देने की कृपा करें।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभा की अन्तरंग २५ व २६ दिसम्बर को गुरुकुलोत्सव के साथ २ गुरुकुल वृन्दावन में होगी। प्रथम बैठक रात्रि में ७ सात बजे से प्रारम्भ होगी कृपया सर्व सदस्यगण सम्मिलित होने की कृपा करें।

गुरुकुल विद्यासभा की बैठक २५ दिसम्बर को दिन के १ बजे से आरम्भ होगी

भूसम्पत्ति विभाग कार्यालय मेरठ

युक्त प्रान्त के समस्त समाजों को सूचित किया जाता है सभा का जायदादभूसम्पत्ति विभाग कार्यालय श्री कालीचरण जी आर्य अधिष्ठाता के पास मेरठ पहुँच गया है। अतः भूसम्पत्ति सम्बन्धी निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

पताः—श्री कालीचरण जी आर्य अधिष्ठाता भूसम्पत्ति विभाग लाल कुर्ती, मेरठ।

—आर्यसमाज इन्दौर में पूज्यवर श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज को असामयिक दुखद मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। दिवगत आत्मा को सद्गति और उनके सम्बन्धी तथा आश्रम वासियों को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—आर्यसमाज मथुरा के साप्ताहिक अधिवेशन में जनता ने खड़े होकर उनके निधन पर शोक प्रगट किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवगत आत्मा को शांति और सद्गति प्राप्त हो।

—चन्दौसी के नागरिकों की यह सभा आर्य जगत के शिरोमणि सन्यासी वीत राग स्वा० केवलानन्द जी महराज के आकस्मिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी पुण्यात्मा को परलोक मे सद्गति प्रदान करे और उनके निधन से सन्तप्त आत्मीय जनों को धैर्य्य प्रदानकरे।

आवश्यक सूचना

श्री गंगा शरण सैलानी लिखते हैं कि उनकी रसीद बही स० ८२ जिसमें ४५ रसीदें कटचुकी हैं, ४ नवम्बर ४६ में खोगई। जिस किसी महानुभाव को रसीद बही मिले भेजने की कृपा करें और इस रसीद बही पर धन न दिया जाय।

रामदत्तशुक्ल मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, युक्त प्रान्त

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल वृन्दावन के उपदेशक श्री पं० रामानन्द जी सिद्धांत शास्त्री साहित्य शिरोमणि ने माह अक्टूबर सन् ४९ में, बाराबंकी, रूदौली, सफदरगंज आदि स्थानों में भ्रमण कर गुरुकुल की सहायतार्थ ६१ रु० १२ आ० संग्रह किये हैं, दान-दाताओं को इसके लिये हार्दिक धन्यवाद है,

—आर्य समाज मनोहरपुर पो० सहारनपुर का प्रथम वार्षिकोत्व ता० २४, २५, २६ का होगा। हरिजन सम्मेलन, मद्यनिषेध सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन आदि सम्मेलन होंगे यह आर्य समाज सहारनपुर स्टेशनसे २ मील दक्षिणमें S S T R रेलवे छोटी लाइन पर है आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासियों, विद्वान उपदेशक एव उत्तम गायकों को निमन्त्रित किया गया है।

(२) आर्य समाज मनोहरपुर पो० सहारनपुर आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान, कर्मठ, त्यागी श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज निगमाश्रम दारानगर गंज के असमय, देहावसान पर शोक प्रगट करता हुआ परम पिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करता है।

गुरुकुल सिकन्दराबाद का वार्षिक महोत्सव ता० १३-१४-१५-१६ फरवरी सन् १६५० ई० का होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर गुरुकुल का उपाधि वितरणोत्सव भी हो रहा है। दीक्षान्त भाषण के लिये देश के उच्चतम नेता के आने की सम्भावना है।

—कन्यागुरुकुल महाविद्यालय हाथरस का २०वां वार्षिक महोत्सव ता० २३ २४,२५ दिसम्बर को बड़े समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। इस वर्ष सुदूर प्रान्तों की ७ कन्याएँ अपनी शिक्षा समाप्त करके स्नातिका बनेगी। उनका दीक्षान्त संस्कार मध्याह्न के समय होगा।

महोत्सव में राष्ट्रभाषा सम्मेलन भारतीय संस्कृति सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन आदि कई महत्व पूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया गया है।

आर्य समाज कटरा प्रयाग में चीनी प्रतिनिधियों का स्वागत।

दिसम्बर १६४६ में शान्ति निकेतन में होने वाले 'विश्व शान्तिवादी सम्मेलन' के दो चीनी प्रतिनिधि प्रयाग होते हुए गये। २७-११-४६ को १० बजे दिन प्रतिनिधियों का स्वागत आर्य समाज कटरा प्रयाग की ओर से किया गया।

मन्त्री, श्रीज्वाला प्रसाद जी ने अतिथियों को पुष्पहार पहनाया और चन्दन लगाया। तत्पश्चात् उनका स्वागत करते हुए आर्य समाज का सूक्ष्म परिचय दिया। परिचय में बताया कि आध्यात्मिकता भारत का प्राण है। भारत मे सदैव उन ऋषियों का मान रहा है जिनकी आध्यात्मिक शक्ति उच्च तथा पवित्र रही है। १६ वीं शताब्दी में एक महान् ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ। उन्होंने अन्य लोगों की भांति भारतीय समस्या का एकांकी दर्शन नहीं किया। सामाजिक, धार्मिक, राजनतिक सभी बुराइयों को देखा और भली प्रकार मनन करने के पश्चात् अपने नियमों, सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों की रचना की।

इसके पश्चात् आर्य कुमार सभा कटरा प्रयाग के प्रधान, श्री सत्यप्रकाश जी, ने स्वागत करते हुए आर्यकुमार आन्दोलन का सूक्ष्म परिचय दिया।

डा० सत्य प्रकाश ने जो विज्ञान विषय में प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापक हैं वैदिक सभ्यता का परिचय दिया।

इसके पश्चात् श्री प्रधान जी, डा० लक्ष्मीनारायणजी, ने प० गंगाप्रसाद

उपाध्याय जी द्वारा लिखित 'वैदिक कल्चर' की एक प्रति प्रत्येक को भेंट किया।

कुमारी पाऊसेंग ने अपने भाषण में बताया कि चीन तथा भारत का संस्कृति सम्बन्ध २००० वर्ष से चला आ रहा है। अब भी कन्फ़्यूशयस ऐसे महान् पुरुष को चीन के बीस प्रतिशत मनुष्य जानते होंगे। किन्तु एक प्रतिशत भी मनुष्य ऐसा नहीं मिलेगा जो भगवान् बुद्ध को नाम से न जानता हो। आगे कहा कि चीन के दर्शन, उसकी भाषा, साहित्य, कला भवन निर्माण संगीत, काव्य, चित्र आदि—सभी पर भारतीय प्रभाव प्रत्यक्ष है। यदि भारतीयता को निकाल दिया जाय तो चीन को ५० प्रतिशत संस्कृत समाप्त हो जाय। अन्त में उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती में अपनी श्रद्धा प्रकट की क्योंकि उन्होंने विश्व में आने वाले संघर्ष को देख लिया था।

दूसरे अतिथि, श्री बेन्सन सेंग, ने अपने चीन का एक हृदय द्रावक चित्र खींचा। युद्ध, आर्थिक संकट, आचार भ्रष्टता, नैतिक पतन आदि का वर्णन करते हुए आपने कहा कि चीन विपत्ति में है। उसका गृह युद्ध महत्व का नहीं है। महत्वपूर्ण है भौतिकवाद और अध्यात्मवाद में संघर्ष। इसमें निकलने के लिए भारत से बड़ी भारी सहायता लेनी पड़ेगी।

इसके अनन्तर जिला आर्योप प्रतिनिधि के प्रधान दया स्वरूप जी ने अतिथियों का धन्यवाद दिया। अन्त में प्रीतभोज हुआ जिसमें नगर की सभी समाजों ने प्रधान आमन्त्रित थे। अतिथिगण अत्यन्त प्रभावित होकर गये।

—नगर आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग आगरा में ता० २०-११-४९ को श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति देहली, ता० २७-११-४९ को महाशय कालीचरण जी आर्य मेरठ, ता० ४-१२-४९ को म० श्रीराम जी गजरान वाला के सार गर्भित मनोहर व्याख्यान हुए जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा।

सा० सभा के मंत्री अफ्रीका को

दिल्ली ६ दिसम्बर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका के लिये कल रात रवाना हो गये हैं। वे वहां मुख्यतया, आर्य प्रतिनिधि सभा नेटुल रजतजयन्ती महोत्सव में भाग लेने के लिये सभा द्वारा आमन्त्रित किये गये हैं।

आर्य जगत के लिये,

आर्य जगत को यह शुभ संवाद पाकर प्रसन्नता होगी कि दिल्ली के २ प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक पत्र इन्डियन न्यूज़क्रा निकल, और नेशनल काल अब आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त के स्वत्व में आगये हैं। इस से आर्य समाज की आवाज की सम्पुष्टि होगी। आशा है आर्य जगत् इस असाधारण उपलब्धि से लाभ उठायेगा।

—निम्न आर्य समाजों में श्री स्वा० केवलानन्द जी के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना कीगई—

आर्य समाज बुलन्दशहर, आ० कु० सभा नजीबाबाद, नगर आ० स० आगरा, आ० स० पीलीभीत, आ० स० मथुरा, आ० स० मंगलौर (सहारनपुर) आ०स० मवाना, आ०स० जौनपुर, आ०स० कांठ,

लखनऊ आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन

रविवार ता० १ जनवरीको सायं ४बजे सिटी आर्य समाज मन्दिर में लखनऊ जिले के समस्त आर्य कार्य कर्त्ताओं का एक सम्मेलन होगा जिस में आर्य समाज के कार्य को प्रगतिशील करने के उपायों पर विचार होगा। सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि अवश्य पधारने की कृपा करें।

— वीर सेन आर्य मंत्री, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

—प० बेनी प्रसाद जी शर्मा उप-प्रधान आर्य समाज नगर भाँसी की भानजी कुमारी मायादेवी की असामयिक मृत्यु ६ नवम्बर को ३ बजे होगई। मृतात्मा का दाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार हुआ और सभी उपस्थित लोगों ने मृतात्मा की शान्तिके लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

आर्य समाज अकौजा

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव २१-२२-२३ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है।

—आर्य समाज ज्वालापुर की सभा ने श्रीकुन्दनलालजी की मृत्यु पर शोक प्रगट किया, और परमात्मासे प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—"आर्य समाज लखनऊ आर्य समाज के विख्यात सन्यासी श्री स्वामी केवलानन्द सरस्वती के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है। श्री स्वामी जी जिस प्रकार लगभग २५ वर्ष पर्यन्त अपने विद्वता पूर्ण उपदेशों, प्रवचनों और सतसङ्गों से श्रद्धालु श्रोताजनों को उपकृत करते रहे इसप्रकार के श्रेष्ठ उपदेष्टाओं की वर्तमान समय में अत्यन्त आवश्यकता है। आर्य जगत श्री स्वामी जी का सदा ऋणी रहेगा। जगदीश्वर श्री स्वामी जी की आत्मा के शाश्वत शान्ति प्रदान करे और हम सब को ऐसी क्षमता प्रदान करे कि जिससे हम स्वामी जी के सदुपदेशों के अनुसार, अपने जीवन के बनाने में समर्थ हों।"

—देहली निवासी हिन्दुओं की आर्य समाज सीताराम बाजार के तत्वाधान में हुई सभा में पूज्य श्री १०८ स्वा केवलानन्द जी महाराज की अकाल मृत्यु पर उनकी अपूर्व विद्वता, सरलता, समाज सेवा, तथा लोकप्रियता के कारण हार्दिक शोक प्रगट किया गया। उनकी मृत्यु से हिन्दू जनता की आमतौर पर और आर्य समाज की विशेष तौर पर बहुत अधिक हानि पहुँची है। सभा में परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने और उनके सम्बन्धियों इष्ट-मित्रों तथा अनुयायियों को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

—"अलीगढ़ प्रांतीयोप प्रतिनिधि सभा की समिति ने ता. १६-१०-४९ को यह निश्चय किया है कि श्री कु० जयपाल सिंह जी को जिला सभा में प्रचार कार्य के लिये रख लिया गया है जो ता १ दिसम्बर सन् ४९ से कार्य करना आरम्भ कर देंगे और उनके साथ मन्त्री जी प्रधान जी अवश्य रहेंगे। चूंकि जिले की बहुत सी आर्यसमाजों का निरीक्षण बाकी है वह भी होता रहेगा और जिला भर की सब समाजों को सूचित किया जाता है कि जिन्होंने अपना मासिक धन अभीतक नहीं भेजा है वह अवश्य भेज दें अथवा प्रचारक श्री कु० जयपाल सिंह जी को उनसे रसीद लेकर दे दिया करें"।

समस्त आर्य समाजों का कर्तव्य

हिन्दू जनता कुम्भ के अवसर पर अपने जीवन एव धन को न्योछावर करती हुई अपने धार्मिक विचारों की पूर्ति के लिए लाखों की संख्या में वृन्दावन और हरिद्वार पहुँचेगी, परन्तु क्या आर्य जनता अपने सच्चे तीर्थ गुरुकुल वृन्दावन के महोत्सव पर पधारना आवश्यक नहीं समझेगी, मेरी सम्मति में जो तीर्थ यात्रा से लाभ हैं वे सब ही गुरुकुल महोत्सव में सम्मिलित होने से होते हैं। सत्संग की महिमा शास्त्रों में बड़ी गाई गई है, यहाँ सच्चा सत्संग मिलेगा, इस लिए आर्यों का कर्त्तव्य है कि घर के सब काम छोड़ गुरुकुल अवश्य पधारें।

युक्त प्रान्तीय आर्य समाजों के जुम्मे गुरुकुल वृन्दावन की सहायतार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा ने कुछ धन वार्षिक लागू किया है जिसे स्वयं आर्य समाजों को भेजकर गुरुकुल की सहायता करनी चाहिए, मास दिसम्बर में सभा और समाजों का वर्ष समाप्त हो रहा है, ऐसी बहुत थोड़ी समाजें हैं जिन्होंने अपना हिस्सा इस समय तक गुरुकुल भेजा है, यह धन वर्ष समाप्त होने से पहले ही पहुँच जाना चाहिए। गुरुकुल का उत्सव ता० २५ से २८ दिसम्बर तक होने वाला है, यदि हर समाज अपने हिस्से का धन चुका दे तो गुरुकुल सब चिन्ताओं से दूर रहकर केवल विद्याध्ययन में लग जाय, आशा है कि बड़ी और छोटी समाजें यत्न करके यह धन थोड़ा २ जनता से मांगकर एकत्र कर १५ दिसम्बर तक गुरुकुल पहुंचाने का यत्न करेंगी और यश की भागी होंगी, यह धन तो स्वयं भेजना है परन्तु जहां जहां गुरुकुल का डेपूटेशन पहुँचे तो विशेष यत्न करके डेपूटेशन को सफल बनाना चाहिए,

श्रीराम
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

आर्य समाज, सरधना

—समाज मन्दिर की समयोचित रक्षार्थ इन सज्जनों की "रक्षा समिति" बनी—सर्व श्री धर्मदत्त (संयोजक), रघुवीर सिंह ला० घनश्यामदास, शिवनाथ सिंह एवम् ज्ञानचन्द्र सुप्रवाचक।

श्री जगप्रिय मेहता आयुर्वेदाचार्य अधिष्ठाता पद पर केवल निशुल्क निवास स्थान मन्दिर में देकर नियुक्त किये गये,

पाकिस्तान में नादिरशाही

लाहौर के भारतीय बैंक की इमारत पर बिना नोटिस के जबरदस्ती कब्जा

नयी दिल्ली, १९ दिसम्बर। पाकिस्तान सरकार ने लाहौर के एक भारतीय बैंक (नेशनल बैंक आफ लाहौर) को उसकी इमारत से निकाल बाहर किया है।

नयी दिल्ली में प्राप्त सरकारी सूचनाओं में बताया गया है कि लाहौर के कमिश्नर के आदेशानुसार किसी प्रकार का नोटिस दिये बिना "नेशनल बैंक आफ लाहौर" खाली करवा दिया गया और बैंक के दफ्तर और पूरी इमारत पर कब्जा कर लिया गया। बैंक का काम चलाने के लिए कोई भी दूसरी इमारत नहीं दी गयी।

पता चला है कि भारत सरकार ने अपने विरोध पत्र में कहा है कि पाकिस्तान सरकार से इस कार्रवाई का विरोध किया है।

कहा जाता है कि भारत सरकार ने अपने विरोध पत्र में कहा है कि पाकिस्तान सरकार की यह कार्रवाई अप्रैल १९४९ में बैंकों से सम्बन्धित समझौते के बिल्कुल विपरीत है। विरोध पत्र में यह भी कहा गया है कि पाकिस्तान सरकार द्वारा लाहौर मे बैंकों के भारतीय कर्मचारियों को यात्रा के परमिट भी नहीं दिये जाते जो कि उनके लिये अतीव आवश्यक हैं।

स्वाधीनता समारोह में राजकुमारी अमृतकौर भारतका प्रतिनिधित्व करेगी

नयी दिल्ल', १६ दिसम्बर। तालियों की गडगड़ाहट के बीच पार्लियामेंट में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि भारत सरकार स्वतन्त्र हिन्दएशिया सघ के उद्घाटन समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्वास्थ्य मंत्राणी राजकुमारी अमृतकौर को भेजेगी।

श्री केशवदेव मालवीय व ३ अन्य सदस्यों का प्रा० कांग्रेस कौंसिल से इस्तीफा

लखनऊ, १६ दिसम्बर। विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि युक्तप्रांत के विकास मन्त्री श्री केशवदेव मालवीय ने, सर्व श्री बालकृष्ण शर्मा (सदस्य वि० परिषद्) अजितप्रसाद जैना (सदस्य वि० परिषद्) और त्रिलोकीसिंह एम० एल० ए० के साथ साथ शाहजहाँपुर कांग्रेस के झगड़े पर प्रांतीय कांग्रेस के निर्णय के विरोध में प्रांतीय कांग्रेस की कौंसिल से इस्तीफा दे दिया।

आप लोगों ने प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन से तार द्वारा प्रार्थना की है कि उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया जाए।

इस संबंध में ज्ञात हो कि फर्रुखाबाद में प्रांतीय कांग्रेस कौंसिल ने शाहजहाँपुर की जिला तथा नगर कांग्रेस कमेटियों को भङ्ग करके उनके स्थान पर अस्थाई कमेटियाँ नियुक्त करने का निश्चय किया था, क्योंकि इनके अधिकांश सदस्य कांग्रेस से इस्तीफा देकर सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हो गये थे।

आसाम के गवर्नर और मंत्रियों ने अपने वेतन घटाए

गौहाटी, १८ दिसम्बर। आसाम के गवर्नर और मन्त्रियों ने निश्चय किया है कि वे अपने मासिक वेतन में स्वेच्छापूर्वक कटौती करेंगे। गवर्नर के वेतन में १५ प्रतिशत, प्रधान मन्त्री के वेतन में १२ प्रतिशत और अन्य मन्त्रियों के वेतन में १० प्रतिशत कटौती होगी।

श्री बेविन भारत आमंत्रित

लन्दन १६ दिसम्बर। पता लगा है कि भारत सरकार ने ब्रिटिश पर राष्ट्र सचिव श्री बेविन को कोलम्बो के परराष्ट्र मन्त्रि सम्मेलन के बाद भारत आने का निमन्त्रण दिया है।

डा० सुकर्ण हिन्देशिया के राष्ट्रपति बने

योग्यकर्ता, १७ दिसम्बर। हिन्देशियाई प्रजातन्त्र के राष्ट्रपति डा० सुकर्ण ने आज यहां नव निर्मित हिन्देशिया सघ के राष्ट्रपति की हैसियत से शपथ ग्रहण की।

शपथ ग्रहण के बाद भाषण देते हुए आपने कहाकि "मैं हिन्देशिया का मालिक नहीं, नौकर हूँ। यह हमारे इतिहास का अन्त नहीं। हमें दृढ़ एकता स्थापित करके देश को समृद्ध बनाना है और युद्धकाल के घावों को भरना है।

शपथ ग्रहण की रस्म योग्यकर्ता के सुलतान के महल के दरबार हाल में हुई। हिन्दएशियाके प्रधान न्यायाधीश ने शपथ ग्रहण करायी। शपथ ग्रहण के पहले कुरान पाठ हुआ। और शपथ ग्रहण के समय एक धार्मिक गुरु डा० सुकर्ण के सर पर कुरान उठाये रहा। भारत की ओर से इस रस्म में भारतीय व्यापारिक राजदूत उपस्थित थे। हाल में उस समय लगभग तीन हजार दर्शक थे। शपथ ग्रहण के पूर्व देश के लिए प्राण देने वाले शहीदों के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया।

गु० बृन्दावन में

श्री डा. केसकर का दीक्षांत भाषण

२५ से २८ दिसम्बर तक होने वाले गुरुकुल विश्वविद्यालय के अवसर पर स्नातक समारोह में भारत सरकार के वैदेशिक विभाग के राजमन्त्री श्री डा० केसकर जी दीक्षांत भाषण देंगे। दीक्षांत समारोह २७ दिसम्बर को होगा।

सुरक्षा समिति के अध्यक्ष द्वारा भारत पाकिस्तान समझौते का प्रयत्न आरम्भ

न्यूयार्क, १८ दिसम्बर। सुरक्षा समिति के अध्यक्ष श्री मैकनाटन (कनाडा) ने समिति के आदेशानुसार कश्मीर के मसले पर भारत एवं पाकिस्तान में संतोषप्रद समझौता कराने के उद्देश्य से दोनों पक्षों से विचार विमर्श तुरन्त ही आरम्भ कर दिया है। अनुमान है कि उनके लिए आजाद कश्मीर फौजों का विघटन शायद सब से बड़ी और मुश्किल समस्या होगी।

समिति की बैठक समाप्त होते ही आपने पाकिस्तान के प्रतिनिधि सर मुहम्मद जफरुल्ला से थोड़ी देर बातकी। बैठकके पहल भी आपने भारत व पाकिस्तान के प्रतिनिधियों से बात की है पर अब तक अनुमान है कि किसी खास मसले पर गौर नहीं किया गया है। महत्वपूर्ण बातचीत न्यूयार्क में आपके ही दफ्तर पर होगी।

पाकस्तान को ७६ लाख डालर के शस्त्रास्त्र

ओटावा, १७ दिसम्बर। कनाडा सरकार के व्यावसायिक आंकड़ों की जाच से पता चला है कि इस वर्ष के पिछले १० महीनों में कनाडासे ७६ लाख डालर के शस्त्रास्त्र कारतूस, तोपें तथा राइफल पाकिस्तान भेजे गये। सिर्फ अक्तूबर में ही ८ लाख डालर के शस्त्रास्त्र भेजे गये। इन आंकड़ों मे कहीं इस बात का जिक्र नहीं है कि भारत को भी इस वर्ष कोई शस्त्रास्त्र भेजा गया है।

पाकिस्तान के भ्रमणशील दूत नवाब मुश्ताक अहमद गुरमानी ने, जो अपने प्रचार के सिलसिले में यहां आये हैं, पत्रकारों के बीच भाषण करते हुये यह कहा कि कनाडा से पाकिस्तान को सिर्फ कपड़े, बूट तथा फौजी गाड़ियां ही भेजी गयी हैं। पत्रकारों द्वारा उक्त आंकड़े प्रकट किये जाने पर पाकिस्तान के हाई कमिश्नर ने बताया कि हमें इसके बारे में पता नहीं।

भावी क्रांतिकारी युद्धपोत ?

लन्दन, १६ दिसम्बर। लड़ाकू जहाज पत्रिका के १६५० के संस्करण में यह भविष्यवाणी की गई है कि अगले कुछ वर्षों में क्रांतिकारी किस्मके युद्धपोत बन जायंगे, जिन में अणबम वाहक जहाज स्वचालित अस्त्रों को नियन्त्रित करने वाले जहाज, पनडुब्बी विध्वंसक क्रूजर राकेट चलाने वाले विध्वंसक तथा गैसके चलाने वाले जहाज भी होंगे।

पत्रिकामें यह भी बताया गया है कि ४८-४६ में रूसने १०० पनडुब्बियां तैयार कीं। चालू पञ्च वर्षीय योजना के अन्तर्गत ५०-५१ तक रूस १ हजार पनडुब्बियाँ तैयार कर लेगा, जिनमें से ४०० सुदूर पूर्वमें ३०० बाल्टिक में और बाकी श्वेत तथा काले सागरों में रखी जायगी।

ग्राम पंचायतें सरकारी अफसरों की मदद करें

पंचायत राज कानून में हेर-फेर

लखनऊ, १८ दिसम्बर। युक्तप्रांतीय सरकार ने आज के असाधारण गजट में पंचायत राज एक्ट (१६४७) में एक महत्वपूर्ण संशोधन की घोषणा की है जिसके मातहत पंचायतों को अनिवार्यतः सरकारी अफसरों की मदद करनी पड़ेगी।

प्रांतीय सरकार की घोषणा में कहा गया है कि पंचायत राज ऐक्ट की २१वीं धारा के मातहत किसी भी ग्राम पंचायत को (खास या आम आदेश द्वारा) यह आज्ञा दी जा सकेगी कि वह अमुक सरकारी कर्मचारी को उसके कर्तव्य पालन में अमुक रीति से मदद करे।

डा० हट्टा हिन्दएशिया के प्रधान मंत्री निर्वाचित

बटाविया, १९ दिसम्बर। डा० मुहम्मद हट्टा स्वतन्त्र हिन्देशियाई प्रजातन्त्रवादी संघ के प्रधान मन्त्री चुन लिये गये हैं।

मित्रस्य हं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे ॥

आर्य्यमित्र

इहैवैधि माप च्योष्ठा
पर्वत इवाविचाचलत् ।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह
राष्ट्र मु धारय ॥
अ० ६।८७ २॥

पर्वत के समान अविचल रहकर यहां उन्नति कर, कभी भ्रष्ट न हो। सूर्य के समान ध्रुव रूप में स्थिर रह और राष्ट्र का धारण कर।

ता० २२ दिसम्बर १९४९ ई०

हिन्दूकोड बिल

धर्म निरपेक्ष सरकार की केन्द्रीय व्यवस्थापिका महासभा में सम्प्रति हिन्दू-कोड विचाराधीन है। अनेक वाग्मि प्रवर सदस्य गण अपनी धारणाओं, विचार-धाराओं और भावनाओं के अनुरूप अपने २ विचार प्रकट कर रहे हैं। इस सप्ताह के प्रवक्ताओं में से श्री सर अलादी कृष्णस्वामी आयर, श्री आचार्य कृपलानी और कांग्रेस महासभा के राष्ट्रपति डा० सीतारमैया के भाषण अपने २ ढग के उच्च कोटि का महत्व रखते हैं। समाचार पत्रों को पढनेवाले प्राय सभी महानुभाव भली भांति जानते हैं कि भारत के विधानशास्त्र विशेषज्ञों में श्री आलादी महोदय का एक प्रमुख स्थान है। आप न केवल वर्षों तक मद्रास के एडवोकेट जनरल ही रहे हैं, अपितु वर्त्तमान भारतीय विधान के निर्माण में भी आपके विचार का विशेष प्रभाव है। हिन्दू कोड के सम्बन्ध में आपने इस बात को स्वीकार करते हुये भी कि हिन्दू सामाजिक परम्परागत व्यवहारों में अनेक सुधारों की आवश्यकता है और उनके सम्बन्ध में जनता की परम्परागत सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावनाओं को दृष्टि में रखते हुये सुधार होना उचित ही है, किन्तु प्रस्तावित हिन्दूकोड को उसके वर्त्तमान रूपमें स्वीकार कराने का आग्रह निःसदेह अनेक प्रकार की जटिलताओं कठिनाइयों, अव्यवस्थाओं, अन्त कलह और गृहस्थ जीवन के लिये कटुताओं को उत्पन्न करने वाला हो सकता है, इसलिये बड़ी सावधानी के साथ इस विषय में सरकार को विशेष दूरदर्शिता के साथ अग्रसर होना चाहिये। आवेश में आकर इस सम्बन्धमें कुछ न कुछ स्वीकार करलेने से प्रजाहित के स्थान में अनहित और अनिष्ट की अधिक सम्भावना है।

कांग्रेस महासभा के कर्णधार श्री डा० सीतारमैया महोदय ने अत्यन्त खिन्न और विक्षुब्ध होकर हिन्दूकोड के विरुद्ध अनेक हेतुओं के देते हुये सरकार से आग्रह पूर्वक अनुरोध किया कि वह इस बिल को भारतीय विधान के अनुसार निर्वाचित व्यवस्थापिका सभा के समक्ष ही विचारार्थ प्रस्तुत करे। सम्प्रति इस बिल के सबंध में अधिक बल देने से जहां एक और हिन्दुओं का प्रबल बहुमत कांग्रेस के सर्वथा विरुद्ध हो जायगा, वहां साथ ही आगामी निर्वाचन पर भी कांग्रेस के विरुद्ध इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ेगा। एक हेतु आपने बड़े महत्व का दिया, आपने कहा कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में अनेक प्रजाहित साधक बातों का उद्घोषकिया है, किंतु हिन्दू कोड या उस प्रकार की किसी भी, अन्य बात का कोई उल्लेख कभी नहीं किया है। इसलिये भी अकस्मात् इस प्रकार के स्थायी महत्व और प्रभाव रखने वाले सामाजिक और धार्मिक मौलिक परिवर्त्तन जनक कानून को बनाना उचित नहीं है। आपके मतानुसार कांग्रेसकी केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों ने अनेक अत्यधिक व्ययसाध्य योजनाओं की बडी २ घोषणायें तो कर दीं, किंतु उनके लिये पर्याप्त धन की न्यूनता के कारण विवश होकर उनको व्यवहार में न लाने के लिये बाधित होना पडा। सर्व साधारण जनता में अनायास सरकार की विवशता से असन्तोष, क्षोभ और अविश्वास उत्पन्न होने लगा। स्वयं व्यक्तिगत रूप से सुधारवादी होते हुये भी डाक्टर महोदय के मत में हिन्दू कोड सर्वथा अनिष्ट कर ही सिद्ध हो सकता है। इसलिये इस प्रकार के स्थायी प्रभाव डालनेवाले ऐसे कानूनों को कि जिसके सम्बन्ध में भारी बहुमत विरोध करता हो स्थगित कर देना ही सर्वथा उचित और सुविधाजनक होगा।

श्री डा० सीतारमैया महोदय कांग्रेस महासभा के वर्त्तमान राष्ट्रपति हैं, किन्तु आचार्य जे० बी० कृपलानी साहेब कांग्रेस महासभा के पूर्वभूत राष्ट्रपति महात्मा है। गान्धी के निष्ठावान् अनुयायियो में आप प्रमुख हैं। आपके सम्बध में यह कहना अत्युक्ति न होगी कि आप वस्तुतः न केवल अपनी वाणी और लेखनी में ही गान्धी वादी हैं, अपितु अपने जीवनव्यवहारा से सर्वोदय पन्थ के सक्रिय उपदेष्टा भी हैं। हिन्दू कोड के सम्बन्ध में अपना विचित्र भाषण देते हुये आपने कहा कि, मैं हिंदू कोड का समर्थन कदापि न करता, यदि अपनी भार्या के द्वारा विवश न किया जाता। क्योंकि मेरे लिये धर्म संकट में है। यह प्रश्न नहीं है मेरे समक्ष तो घर संकट में है। आगे चलकर आप फर्माते हैं कि मैं यह नहीं समझता हूं कि इसमें हिन्दू धर्म संकट में कैसे हो सकता है। जब हिन्दू चोर हैं, व्यभिचारी हैं, गुन्डे हैं, ब्लैकमार्केटियर हैं, और रिश्वत लेते है तो धर्म संकट में नहीं होता है। फिर भला जब किसी कानून का सुधार किया जाता है तो हिंदू धर्म कैसे संकट में पड़ जाता है। हो सकता है कि सुधारक लोग अधिक जोशीले हों, किन्तु आध्यात्मिक बातों के सम्बन्ध में अधिक जोश दिखाने वाले भौतिक बातों के सम्बन्ध में भ्रष्टाचारियों से तो अच्छे हैं। इसी मनोवृत्ति के कारण राष्ट्रपिता की हत्या हुई। बड़ों की सभी बातें बड़ी होती हैं, यह उक्ति यदि सत्य हो तो कृपलानी साहेबकी बातें भी सर्वथा सत्य ही समझना चाहिये, किन्तु प्रस्तावित हिंदू कोड, हिंदूधर्म और देश में निवास करने वाली ८५ प्रतिशत हिंदू जनता के प्रति कही गई ऐसी बाजारु बातों से तर्क तुला का क्या सम्बन्ध है। यह समझना सर्वथा असम्भव है, सिविल मेरिज ऐक्ट के अनुसार आप का परिणय हुआ इसलिये हिन्दूकोड विषयक सुधारों के बनने या न बनने से आप पर तो कोई प्रभाव पड़ नहीं सकता है। अपने घर में किस प्रकार संकट उत्पन्न होने की आशंका आप को हिंदू कोड के पक्ष में वकालत करने के लिये विवश कर सकी यह भी बड़े आश्चर्य की बात है, आदर्श वादी और सर्वोदय सम्प्रदाय के गान्धी वादी होते हुये भी आप कहते हैं कि, दूसरा कारण कि जिससे मैं इस बिल का समर्थन करता हूं वह यह है कि मैं अपने को प्रतिक्रिया वादी नहीं कहलवाना चाहता हूं। मैं अहिंदू हो सकता हूं किन्तु एक आधुनिक मनुष्य के लिये आधुनिक मनुष्य न होना धर्महीन होने से भी अधिक कलंक की बात है। हो सकता है कि मैं ईश्वर विश्वासी न होऊँ, किन्तु यह कैसे सम्भव है कि मैं उन्नति रूपी उस ईश्वर में विश्वास न करूं कि जैसे उसको पाश्चात्य देशों में माना जाता है। अनन्य ईश्वर भक्त महात्मा गान्धी का यदि यही आदर्श प्रतिमानः इमेज है तो भारतीय आस्तिक नागरिकों के लिये इसकी स्वप्न में भी आवश्यकता नहीं है। किन्तु पाश्चात्यता के सांचे में श्री कृपलानी जी का गान्धीवाद हमको ठीक उसी विनाश के गर्त्त की ओर ढकेल सकता है कि जिसमें अनायास पाश्चात्यता का अन्धानुकरण करने वाले जापानीलोग जा पड़ने के लिये विवश हो गये हैं। क्या इसी आधुनिकता की चट्टान पर राष्ट्र पिता ने आप जैसे महानुभावों के बुद्धिबल के सहारे भारत में रामराज्य स्थापना का स्वप्न देखा था।

श्रीकृपलानी तलाक के सम्बन्ध में भी अपने मौलिक विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं कि तलाक के सम्बन्ध में व्यक्तिगत रूप से तो मुझे कुछ दिलचस्पी नहीं है। क्यों कि मेरा पाणिग्रहण सिविल रीति से हुआ है, क्रिमिनल रीति से नहीं। मेरी बीबी किसी समय मुझको तिलाक दे सकती है। हिंदू कोड बिल इस दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। मेरा सुझाव तो यह है कि सब विवाह पांच वर्ष के लिये ही हुआ करें और पांच वर्ष समाप्त हो जाने पर पुनः पांच वर्ष के लिये अवधि बढ़ा दी जाया करे। इस सम्बन्ध में आवश्यक घोषणा किसी ग्राम या नगर के अधिकारी के समक्ष हो जाया करे। ऐसा होने पर न किसी प्रकार की मुकदमेबाजी होगी और न जन अपवाद हो सकेगा, और यह विधि वर्त्तमान प्रगतिशीलता तथा धर्म के सर्वथा अनुकूल एवं सन्तोषजनक होगी। खेद है कि श्री कृपलानी जी ने अपने इन थोथे विचारों को एक ऐसे समय में प्रस्तुत करके मनोरंजन और उपहास करने की चेष्टा की कि जहां एक ऐसे परम गम्भीर विषय पर विचार हो रहा है कि जिसके परिणाम स्वरूप निर्मित कानून पर करोड़ों अबोध धर्मप्राण और आस्थावान् भारतीयों का भावी जीवन निर्भर है। हो सकता है कि अधार्मिक सरकार का स्वाद चखाने के लिये ही आपने यह उपक्रम किया हो। विवेक भ्रष्टता को ही जहाँ समादर मिलता

हो, वहाँ विवेक का गला घुटना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं को कुचलकर, अवाछित कोढ को बलपूर्वक लादने से जनक्षोभ असन्तोष और अविश्वास बहुगुणित होकर सरकार के लिये असुविधाओं की परम्परा को और दुर्दमनीय करेगा, इस पर सरकार को अवश्य ध्यान देना चाहिये।

———

कश्मीर किस ओर

खोदा पहाड़ और निकला चूहा, इस लोकोक्ति के अनुसार राष्ट्र सङ्घ की सुरक्षा समिति ने जो पाँच पत्रों की एक उपसमिति कश्मीर समस्या समाधान के लिय बनाई थी। उसने लगातार एक वर्ष पर्यन्त अथक परिश्रम किया। श्री नगर से दिल्ली, दिल्ली से कराची, कराची से श्री नगर, इस प्रकार अनेक चक्रमण किये। जिस प्रकार से परामर्श, सम्मेलन, गोष्ठी, विचारविनिमय, पत्र व्यवहार आदि २ आधुनिक साधनों से सम्भव था बेचारों ने भगीरथ प्रयत्न किया। अन्त में जब कोई करवट ऊँट न बैठते देखा तो पचजन लौट गये और जेनिवा के शीतल स्थान में बैठकर ८० पृष्ठात्मक अपनी रिपोर्ट सुरक्षा समिति के सन्मुख प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट का जो संक्षिप्त अंश समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है उससे स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि पचों के प्रयत्न से कश्मीर सम्बन्धी मुख्य २ सैद्धांतिक बातों के विषय में भारतीय सरकार और पाकिस्तान सरकार में किसी प्रकार ऐकमत्य न हो सका।

भारतीय सरकार का पक्ष यह रहा कि यतः कश्मीर के महाराज ने अपनी इच्छा से कश्मीर को भारत सङ्घ से सम्बद्ध कर दिया था, वैधानिकरीति से कश्मीर भारत का अङ्ग बन गया था। कश्मीर पर सरहद्दी आततायियों ने आक्रमण किया उनकी परोक्ष रूप से पाकिस्तानियों ने सहायता की और अन्त में स्पष्टरूप से आक्रमण में सम्मिलित हुये। अत कश्मीर की रक्षा और शांतिस्थापन के लिये भारत को कश्मीर की रक्षा के लिये सेना भेजना अनिवार्य हो गया।

उधर पाकिस्तान का पक्ष यह रहा है कि यतः कश्मीर महाराजा ने पाकिस्तान के साथ अगस्त ४७ में एक समझौता किया था कि जिसके उपरांत कश्मीर का पाकिस्तान में मिलना चाहिये था। कश्मीर के निवासी मुसलमान प्रजा पर निरकुंश शासक की ओर से अत्याचार हो रहे थे। सरहद्दी लोगों ने अपने उत्पीड़ित मुसलमान भाइयों की सहायता की और पाकिस्तान ने अपने देश की रक्षा के लिये कश्मीर को सेना भेजी। आजाद कश्मीर या पाकिस्तान की सेना हटाने का प्रश्न उसी प्रकार है कि जैसे भारतीय सेना के हटाने का।

उप समिति की सम्मति में उसके द्वारा कश्मीर समस्या का समाधान उसके द्वारा सम्भव नहीं है उसका सुझाव यही है कि सुरक्षा समिति को चाहिये कि किसी मध्यस्थ द्वारा अथवा पञ्च द्वारा कि जिसको पूर्ण अधिकार निर्णय करने का दिया जाय, कश्मीर की समस्या का समाधान कराना उचित होगा। उनकी सम्मति में आजाद कश्मीर की सेना और पाकिस्तान की सेना के रहते हुये जनमत की व्यवस्था सम्भव नहीं प्रतीत होती है। पाँच देशों के पच इस प्रकार थे। अर्जेन्टाइना, बेल्जियम, कोलम्बिया, अमेरिका और चेकोस्लोविकिया।

कश्मीर समस्या धीरे २ अधिकाधिक जटिल होती जाती है। क्योंकि भारत कश्मीर का अपना अङ्ग समझने लगा है और उसके प्रतिनिधियों को भी विधान परिषद् में स्थान दिया गया है। उधर पाकिस्तान और आजाद कश्मीर तो यही समझकर कि कश्मीर तो पाकिस्तान का एक अभिन्न अङ्ग स्वभावत ही है, इसलिये वह अपनी सैन्य तैयारी अधिकाधिक उग्ररूप से करता जाता है। सुरक्षा समिति ने आज तक अपने जन्मकाल से ही जिन २ प्रश्नों को विचार कोटि में लिया उन उनका कोई बुद्धिगम्य निर्णय तो दूर और अधिक उलझते ही उलझ हाती गई। कश्मीर के सम्बन्ध में भी जो ढङ्ग स्वीकार किया गया है। उसको किसी प्रकार विवेक जनक नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि कश्मीर के शासक ने जब अपने राज्य का सम्बन्ध वैधानिक रीति से भारत के साथ किया तो फिर सरहद्दी आक्रमणकारियों या पाकिस्तानियों का आक्रमण और निरीह प्रजा पर अत्याचार, इसका क्या प्रयोजन हो सकता है। इसी के विरुद्ध भारत सरकार ने सुरक्षा समिति में शिकायत की थी। सुरक्षा समिति कार्य का उक्त शिकायत का समाधान था न कि पाकिस्तान और भारत दो पक्षों को स्वीकार कर उनकी मध्यस्थता या पचायत करना।

अनुशासन

—राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री, प्रधान आ० प्र० सभा युक्तप्रांत—

जिस परिवार में, जिस जाति में अथवा जिस समाज में अनु शासन का समादार करना आजाता है वह परिवार अपेक्षया शक्ति हीन होने पर भी स्वसंरक्षण में समर्थ हो जाता है। जो जाति अनुशासन के सागर में स्नान करना सीख लेती है वह जाति कदापि पर सन्ताप सन्तप्त नहीं हो सकती है। और जो समाज अनुशासन की हीनता का ह्रास करना जानता हो उस समाज को कोई भी ऐसा शक्ति नहीं है जो समुन्नति शिखरि शिखरारोहण से रोक सके। जो परिवार या जाति अथवा समाज अनुशासन के हनन में ही अपनी प्रचुर पटुता प्रकट करता है, उसे अवश्यमेव हा दुर्गति दुर्दशा के दुर्दिन देखने पड़ते है, कोई शक्ति नहीं कि उसे विगर्हित गर्त में गिरने से रोक सके और संसार में कोई ऐसा साधन नहीं जो उसे समूलोन्मूलन से बचा सके।

महाभारत के अठारह पर्वों में एक पर्व का नाम ही अनुशासन पर्व रखा है। महाभारत मुक्त से अनुमोदन कर रहा है कि अनुशासन का अनादर करने वाला शक्ति सम्पन्न समुदाय भी अधोगति के गर्त में गिरने से बच नहीं सकता है। भीष्मपितामह द्रोणाचार्य और कर्ण जसे महारथियों के साथ देने पर भी १७॥ लाख सैन्य के होते हुए भी कौरवों को दुर्गति के दुर्दिन देखने ही पड़े थे। भीष्मपितामह के अनुशासनका अनादर कर्ण ने, द्रोणाचार्य के अनुशासन का ह्रास त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा ने और कर्ण के अनुशासन का उपहास अश्वत्थामाने किया। इसका परिणाम यह हुआ कि १७॥ दिन में समस्त अनुशासन कर्त्ताओं की मृत्यु हुई और आधे दिन में अनुशासन हीन समुदाय परस्पर कट कर मरगया।

पाण्डवों की सेना कौरव सेना की अपेक्षा अत्यल्प केवल १७॥ लाख ही थी परन्तुअनुशासन का अनादर अथवा उपहास करना उसने सीखा ही नहीं था प्रत्युत अनुशासन का समादर करना अपनी विजय का असाधारण साधन समझा था।

इस विषय में एक महाभारत का उदाहरण यहा प्रस्तुत करना अधिक उपयुक्तसमझता हूँ। अश्वत्थामा की मृत्यु के समाचार को श्रवण कर द्रोणाचार्य शस्त्रविहीन युध्द से उदासीन और चिन्ता में विलीन बैठे थे। पञ्चाल के राजा द्रुपद के पुत्र धृष्ट द्युम्न पाण्डवों की सेना के अध्यक्ष थे। इन्होंने आकर द्रोणाचार्य का वध करना चाहा। इस घटना से कृष्ण का चचेरा भाई सात्यकी असन्तुष्ट हो गया और तलवार लेकर धृष्टद्युम्न पर प्रहार करना ही चाहता था कि कृष्णचन्द्र जी ने आकर सात्य की को धमका कर कहा कि तू अनुशासन हीन कार्य क्यों करने लगा है। धृष्टद्युम्न ने जो कुछ किया है या जो कुछ करना चाहता है उसे उसके करने का अधिकार है। यदि उसने अनुचित भी किया है तो तमको इसके निर्णय करने का अधिकार नहीं है। ऐसा करके तू अनुशासन का उपहास करने लगा है। अनुशासन हीन कार्य से पाण्डवों की विजय वैजयन्ती पताका का पतन हो जावेगा। मुझे नहीं अपितु पाण्डवों की समस्त सेना को अनुशासन का पालन करना चाहिए। उस समय सात्यकी ने अपनी भूल स्वीकार की।

ठीक है जो समुदाय या समाज अनुशासन की उपादेयता को समझता है वह समुदाय या समाज ही सामयिक अनेक झकझावातों पर भी चट्टान के समान स्थिर रहता है। और अपने गौरव की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखता है।

आर्य समाज का एक वह सौष्ठव समन्वित सुखद समय था जब कि अनुशासन की उपादेयता को समझ कर उसका समादर किया जाता था, इसी लिये तो उस समय आर्य समाज जनजीवन में ख्याति जगाने का कार्य करता था। इसीलिए तो आर्य समाज के विचार आचार और सद व्यवहार की प्रशंसा प्रत्येक पुरुष करता था। इसके सदस्यों का पवित्र चरित्र मनुष्य समाज के मनका मोहक था। परन्तु अब वैसी स्थिति की सनुपलब्धि नहीं है। इन सात आठ मासों का मुझे बड़ा ही कटु अनुभव हुआ है। प्रान्त और प्रान्त से बाहर मुझे एक गवेषणा के लिए जाना पड़ा है। मैंने अनुभव किया है कि मानवता के मानदण्ड और आर्य समाज के गौरव को निग्न करने वाले अंकुर आर्य समाज में जमने लगे हैं समाजिक संगठन का शक्ति का ह्रास और अनुशासन का उपहास करने वाली वृत्ति का उदय हो रहा है।

युक्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने दो महोपदेशक श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री और प० प्रकाशवीर जी के प्रति अनुशासनात्मक कार्यवाही की थी।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री महर्षि दयानन्द तथा जिज्ञासु जी के यजुर्वेद भाष्यों की तुलना

लेखक—चतुर्वेद भाष्यकार श्री पं० जयदेव जी शर्मा विद्यालङ्कार

(गताङ्क से आगे)

१५—श्री प० जी ने अपपाठों का अनेक स्थानों पर शोधन किया है, परन्तु बहुत से शोधन उचित रीति से नहीं हो पाये। जैसे—अ० १० । मन्त्र ६ ॥ पृ० ८२६ । प० ७॥ मुद्रित पृ० ८५७ । प० ५ । ६—

'(अनिभृष्ट) नित्य भृष्ट पतिरहित-माचरितवान् ।'

प० जी का शोधन है—'(अनिभृष्ट) पापरहितमाचरितवान् ।'

मेरी सम्मति में शोधन चाहिये—'(अनिभृष्ट) नित्य अभृष्ट पतनरहित माचरितवान् ।'

ऐसा ही एक शोधन देखो—अ० ४ । म० ३६ ॥ पृ० ४०७ । प० ११ ॥

१६—अनेक स्थलों पर प० जी ने वाक्यों वाक्यांशों और पदों के स्थान परिवर्त्तन कर दिये हैं। जैसे—अ० ६ । म० १२ ॥ पृ० ७६५ । प० १५ ॥ मुद्रित पृ० ७८२ । प० २ ॥

१७—अ० ६ । मन्त्र १३ ॥ पृ० ७६६ । प० १७ ॥ मुद्रित पृ० ७८३ । प० २३ में—

प० जी ने (मिमानाः) का अर्थ 'देख और' को बदलकर 'भगाने हुए' कर दिया है, परन्तु अनुभाष्य में जो 'मिमाना.' पद की व्याकरण प्रक्रिया बतलाई है, उससे आपका परिवर्त्तन मेल नहीं खाता। संस्कृत भाष्य है—'प्रक्षेपमाणा' अर्थ होना चाहिये—'खदेड़'। यदि 'देख' अर्थ ठीक माना जाय तो संस्कृत-भाष्य होना चाहिये 'प्रेक्षमाणा.'। अनेक ऐसे स्थल विचारणीय हैं।

१८—प्रत्येक मन्त्र के पूर्व में मन्त्र का विषय निर्देश किया ही है, तो भी जहाँ परिवर्त्तन किया है वह उचित भी नहीं हुआ। जैसे—अ० ६ । १७ में परिवर्त्तन किया है। यदि मन्त्र में भावार्थ पर विचार करते तो ऋषि के विषय निर्देश की सङ्गति लग जाती और बदलने की आवश्यकता भी न होती।

१९—अब हम विस्तार भय से संक्षेपतः केवल अध्याय और मन्त्राङ्क बतलाते हुए—कुछ अन्य फुटकर परिवर्त्तनों व परिवर्धनों का दिग्दर्शन कराते हैं—

जैसे—भूमिका पृ० ४ में से २, ३ पंक्तियां छोड़दी हैं।

अ० १ । मन्त्र १ । पद, पदार्थों को आगे पीछे किया गया है।

अ० १ । मन्त्र ५ । भावार्थ में दो पंक्ति बढ़ा दी है।

अ० १ मन्त्र ६ । हि० भावार्थ में १ पंक्ति बढ़ादी है।

अ० १ । मन्त्र २६ । पदपाठ मुद्रित है, 'परम् । आयाम् ।' पदार्थ भाष्य में भी ऐसे ही दो पद माने हैं, परन्तु प० जी ने सर्वत्र 'परमस्या' एक पद माना है।

अ० १ । मन्त्र ३० । हिन्दी भावार्थ में तीन पंक्तियाँ बढ़ाई हैं।

अ० २ । मन्त्र २२ । 'दिवेदिवे' का हिन्दी पदार्थ संस्कृत पदार्थ के अनुसार था तो भी बदला।

अ० २ । मन्त्र २३ । 'वर्धमानम्' का प्रविष्टप्राणायाम का सा अर्थ किया है। 'सदा' या 'नित्य' पद जोड़ने से वह अभिप्रेत अर्थ प्राप्त हो जाता।

अ० ३ । मन्त्र ३० । (पृ० २८८ । प० १०) भावार्थ में मुद्रित पाठ संस्कृत के अधिक अनुकूल है। (मुद्रित पृ० २३२ । प० २०)।

अ० ३ । मन्त्र ३० । तीनों हस्त लिपियों में होते हुए भी लुप्त कर दिया है।

अ० ३ । मन्त्र ४१ । (पृ० ३०५ प० २, ३) प० जी ने भाषा पदार्थ में स० पदार्थ का कुछ अंश छोड़ दिया। मुद्रित में कुछ बढा दिया, कुछ पुनरुक्त है।

अ० ३ । मन्त्र ४३ । इस मन्त्र में 'अन्न' शब्द की साधनिका में उणादि सूत्र उद्धृत है। यहाँ प० जी ने बाहुलकात् तकार को नकार किया है। सो चिन्त्य है। 'अद्' धातु से बाहुलक उणादि 'न' प्रत्यय हो हो सकता है और वह भक्ष्य-भोज्य का अर्थ दे सकता है। अत. 'अत' धातु से न प्रत्यय करके रूप 'अन्न' बनता है नाकि 'अन्नम्'। नैरन्तर्यार्थ के लिये 'अत' धातु से 'न' प्रत्यय करके बाहुलक 'त' को 'न' करना कुछ विचारणीय है।

अ० ३ । मन्त्र ४६ । अ वर में 'याऽऽहाराकाश गत्वा' में से 'हारा' प० जी ने व्यर्थ जानकर उड़ा दिया वस्तुतः लेखक प्रमाद से 'हुत' अक्षर छूटा है, होना चाहिये 'याहुतिराकाश गत्वा'।

अ० ३ । मन्त्र ५८ । स० पदार्थ भाष्य में पृ० ३३१ । प० १६, २० तथा मुद्रित पृ० २८८ । प० ११, १२ 'डुकृञ् करणे' इत्यस्य भ्वादिगणान्तर्गत-पठितत्वाच्छन्त्रिकरणोऽत्र गृह्यते'। यह पाठ चिन्त्य है, क्योंकि भ्वादिगण में 'डुकृञ् करणे' धातु पठित नहीं है।

अ० ४ । मन्त्र ३ । (पृ० ३४९ । प० ६) में परिवर्त्तन, परिवर्धन अनावश्यक है।

अ० ४ । मन्त्र ११ । (पृ० ३६२ । प० १६, १७) मुद्रित में कुछ अंश छूट गया प्रतीत होता है, परन्तु प० जी ने अधिक परिवर्त्तन कर दिया है। 'सत्यानुवर्त्ति' पद से आगे 'तथा सत्याध्य' पद छूटा है।

अ० ४ । मन्त्र १५ । (पृ० ३६८ । प० ४) मुद्रित में पाठ प्रमादिक है। हस्तलिपियों का पाठ रखा है। प्रूफ शोधन काल में भी कुछ शोधन हुआ था, उस काल में कम्पोजीटर ने हस्त लिपि का अंश भी उड़ा दिया प्रतीत होता है, दोनों का समन्वय करने से पाठ उचित है—

'शयनानन्तर जागरणे, मरणानन्तरं द्वितीये जन्मनि'।

अ० ४ । मन्त्र १७ । कुछ वाक्यांश आगे पीछे किये।

अ० ४ । मन्त्र २६ । (पृ० ३६५ । प० ४) मुद्रित में 'न' पद छूटा, उसकी पूर्ति प० जी ने 'अप' शब्द लगाकर की है।

अ० ४ । मन्त्र ३६ । (पृ० ४०७ । प० ११) पदार्थ में प० जी का शोधन कुछ रुचिकर नहीं हुआ। मुद्रित में अपपाठ अवश्य हैं। पाठ चाहिये—

'अनेन - ज्ञान - प्राप्ति गमनार्थस्य धातोर्ग्रहणम्'।

अ० ५ । मन्त्र ८ । (पृ० ४३८ । प० १, १४, १६) 'इन्द्रघोष, मनोजव, विश्वकर्मा' पद छोड़ दिये गये हैं, क्यों? कारण अज्ञात है।

अ० ५ । मन्त्र १४ । 'वि' उपसर्ग की समस्या हो है कि इसका योग 'होत्रा' के साथ मानें वा 'दधे' के साथ।

अ० ५ । मन्त्र [illegible] मन्त्र में व्याकरण प्रक्रिया में 'आलीयच' 'आलीयर' दोनों पक्षों में से 'आलीयर्' पक्ष ऋषि के नाम पर शोधा गया है, जब कि उणादिकोश, मुद्रित पाठ और हस्तलिपि में 'आलीयच्' पक्ष अभिमत है।

अ० ५ । मन्त्र ३२ । (भाषा-पदार्थ में) (ऋतधामा) पद का जो अर्थ किया है, संस्कृत पदार्थ से कहीं दूर है, आपने 'कारण प्रकृति' यह अपना अर्थ अपने अनुभाष्य में न रख कर, भा० पदार्थ में डाल दिया है।

अ० ५ । मन्त्र ३९ । प्रारम्भ विषय वाक्य बदल दिया है, भावार्थ वही रखा गया है।

अ० ५ । मन्त्र ४१ ।

अ० ६ मन्त्र १ । स्वामी जी की पदार्थ शैली से तो प० जी का परिवर्तन अनुचित नहीं, परन्तु विचार-प्रवाह में यथा, तथा, एवं अन्य पदों का अध्याहार बहुत महत्त्वपूर्ण है, जो प० जी ने हटा दिये हैं।

अ० ६ । मन्त्र ३ । में स० पदार्थ में से व्याकरण प्रक्रिया को उड़ा दिया है।

अ० ६ । ५ । (परिवीः) के संस्कृत पदार्थ में 'व्येति' को 'व्ययति' कर दिया है। इस मत भेद का वे अनुभाष्य में दिखाते तो अच्छा था।

अ० ६ । मन्त्र ८ 'धृष्ट' के स्थान में 'प्रगल्भ.' कर दिया। ऐसा पर्याय अनुभाष्य में दिखाना चाहिये था।

अ० ६ । मन्त्र १७ । का प० जी ने विषय वाक्य बदल दिया है। ऋषि लिखित विषय वाक्य की गहराई पर ध्यान नहीं गया है।

अ० ६ । मन्त्र १९ । स० पदार्थ में (वाचम्) का पदार्थ किस आधार पर बढ़ाया है, ज्ञात नहीं, स्वतन्त्र न लिखना चाहिये था। इसी प्रकार भाषा-पदार्थ में भी प० जी ने अपना अर्थ तो बढ़ा दिया और ऋषि का अर्थ छोड़ दिया और ऋषि का अर्थ छोड़ दिया।

अ० ६ । मन्त्र २१ । (पृ० ५१० । प० १) पर पाद-टिप्पणी जो दी है, वह अशुद्ध है।

अ० ६ । मन्त्र २६ । भाषा-पदार्थ में जो अंश उड़ा दिये हैं, उनका अपना विशेष अभिप्राय लुप्त हो गया है।

अ० ६ । मन्त्र ३२ । भावार्थ में कोष्ठ में 'कुबेर' लिखने से प० जी का क्या अभिप्राय है? अमोत्पादक वर्धन अनावश्यक है।

अ० ६ । मन्त्र ३४ । व्याकरण सूत्र उठा दिया है, क्यों?

अ० ७ । मन्त्र ४ । (पृ० ५७१ । प० ६, ७) प० जी ने व्याकरण प्रक्रिया सर्वथा बदल दी है।

अ० ७ । मन्त्र २२ । (यजमान) का स० पदार्थ भाषा-पदार्थ के अनुसार कर दिया। संस्कृत-पदार्थ भाष्य की उपेक्षा कर दी है। चाहिये था कि संस्कृत पदार्थ-भाष्य को मुख्य रखते।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आत्म निर्भरता का कार्यक्रम

(ले०—संयुक्तप्रांत के खाद्य कमिश्नर श्री ए० एन० झा)

प्रत्येक व्यक्ति इस बुनियादी बात से परिचित है कि (१) हमारे देश में इतना अन्न नहीं उत्पन्न होता जिससे यहां कि जनता की मौलिक आवश्यकता की पूर्ति हो सके, (२) यह कमी देश के विभाजन के फलस्वरूप और बढ़ गई है क्योंकि जहां हमें ७७.७ प्रतिशत जन सख्या प्राप्त हुई है हमें केवल ७३.१ प्रतिशत भूमि हिस्से में मिली है (३) २६.९ प्रतिशत भूमि जो पाकिस्तान के हिस्से में चली गई है वह देश का सबसे अधिक उपजाऊ भाग था। (४) इस कमी को पूरा करने के लिये हमें करोड़ों रुपया आयात के लिये विदेशों को देना पड़ रहा है (५) सयुक्त प्रान्त को इस कमी को दूर करने के लिये १० लाख टन अन्न की आवश्यकता है और (६) हमें केवल अपने आयात का खत्म करने के लिये अनाज नहीं पैदा करना है बल्कि हमें अपने प्रान्त की बढ़ती हुई जन संख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिये अन्न पैदा करना है।

अन्नोत्पादन की वर्तमान योजनाओं का उल्लेख करते हुये आपने कहा कि अन्नोत्पादन की योजनाओं को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं (१) खेती के क्षेत्र का विस्तार (२) जहां खेती हो रही है, वहा की पैदावार को बढ़ाना। पहली श्रेणी में नैनीताल-तराई और गंगाखादर, लखीमपुरखेरी और झांसी जिलों में भूमि सुधार की योजनायें आती हैं। दूसरी श्रेणी में, फसलशाल बीजों में वृद्धि और उनका वितरण, शहरों और देहातों में कम्पोस्ट बनाना, खलियां और फर्टीलाइजरों का वितरण, हरी खाद के बीजों का वितरण, सिंचाई, सिंचाई के छोटे साधन जैसे पक्के कुओं का निर्माण करना, मोजूदा कुओं का मरम्मत, पर्शियन रहट लगाना, नहरों का गहरा करना आदि है। इन योजनाओं से ६ लाख टन से अधिक अतिरिक्त खाद्य उत्पादन की आशा की जाती है। यदि १९३७–४८ का आधार दर्ज मान लिया जाय तो १९५१ में हमारा अतिरिक्त उत्पादन प्रायः ८ लाख टन होगा।

जिस भूमि पर खेती होती है उसकी पैदावार बढ़ाने के लिये इस योजना के आधीन प्रायः २ लाख एकड खेती योग्य, बेकार पड़ी जमीन का सुधार, ३० हजार एकड़ घास पात ग्रस्त भूमि का सुधार करना है। इसके अतिरिक्त पानी की निकासी योजना द्वारा दो वर्षों में कम से कम २० हजार एकड भूमि का सुधार करने की आशा है। ऊसर और जलप्रवाह द्वारा कटी छटी भूमि के सुधार का भी प्रारम्भ कर दिया गया है।

किसानों को सुविधा देने के लिये की गयी योजनाओं में, किसानो को हानिकारक कीडो से अपनी फसल को बचाने में सहायता देने के लिये पौधा सुरक्षा-संगठन का विस्तार किया जा रहा है। खेती के उन्नत तरीकों में प्रदर्शनार्थ फील्ड एक्सटेंसन-सर्विस का पुनस्संगठन किया जा रहा है। वृक्षारोपण आन्दोलन शुरू किया जा रहा है और फसल प्रतियोगतायें आयोजित की जा रही है।

खाद्योत्पादन योजना की प्रगति का आन्दोलन कुछ मास हुये प्रारम्भ किया गया था किंतु इस इस बात के लक्षण सुस्पष्ट हैं कि हमें अपने लक्ष्य का प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होगी। यद्यपि भूमि सुधार का सीजन दिसम्बर में प्रारम्भ होता है परन्तु अगस्त से अब तक ४००० एकड भूमि का सुधार किया जा चुका है। जून १९५० तक २०,००० पक्के कुओं के निर्माण करने को निश्चय किया गया था। अब तक २००० कुयें बनाये जा चुके हैं और ४००० कुओं का निर्माण हो रहा है। सन् १९४९, ५० में २० लाख एकड भूमि के लिये सिंचाई की अन्य सुविधायें देने की योजना बनाई गई थी। इसमें से २०,००० एकड़ के लिये सिंचाई की व्यवस्था कर दी गई फर्टीलाइजरों के वितरण और शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कम्पोस्ट बनाने के काम में भी हमने काफी सफलता प्राप्त करली है।

आवश्यकता इस बात की है कि सच्ची सफलता प्राप्त करने के लिये हम अपनी कृषि शक्ति अर्थात् करोड़ों किसानों को पूरे तौर पर काम में लगा दें। खाद बनाने के देसी साधनों को जुटाने और फसलों को कीड़े मकोडे से बचाने के लिये किसानों को बड़े पैमाने पर संगठित किया जाय। यदि किसान हमारी योजनाओं को अपनालें, तो यह समस्या बड़ी आसानी से हल हो सकती है। आज यू० पी० में प्रति एकड़ सात मन पैदावार का औसत है और अन्य उन्नत देशों को देखते हुये यह औसत अत्यन्त कम है। यदि हम इस ७ मन के औसत को ८ मन कर पाये तब भी मौजूदा कमी को पूरा करने के लिये हमें आवश्यकता से अधिक अन्न उपलब्ध हो जायगा। अतः आज आवश्यकता इसी बात की है कि हमारे किसान थोडी सी अधिक मेहनत करें और कृषि विभाग का उनसे विशेष सम्पर्क स्थापित हो जाय तो कार्य भली भांति सम्पन्न हो सकता है।

यदि थोडी सी अधिक खाद का प्रयोग हो, समय पर सिंचाई की जाय, सरल एवं कम खर्च वाले औजारों से मिट्टी जुताई खेतों की जाय और उत्पादन तथा संग्रह की विधि में थोडे से साधारण सुधार कर दिये जाय तो हमारे देश की खाद्य सप्लाई पर्याप्त मात्रा में बढ सकती है। देश में भूमि है, उसका उपयोग करने के लिये बड़ी संख्या में शारीरिक एवं बौद्धिक श्रम करने वाले उपलब्ध हैं। अतएव इस बात में संदेह नहीं हो सकता कि सयुक्त प्रान्त अपनी खाद्य की कमी को पूरा करनेमें सफल होगा अपितु भारत की खाद्यान्न की कमी का भी एक अंश पूरा करेगा।

— —

(पृष्ठ ५ का शेष)

अ० ७। मन्त्र २६। यहाँ विषय वाक्य ऐसा बदल दिया है कि जिससे प्रतीत होता है कि पं० जी की सम्मति में वेद ईश्वर वचन नहीं हैं।

अ० ८ मन्त्र २३। भाषा पदार्थ प्राय बहुत बदल दिया है। क्योंकि अन्वय में बहुत से पद, पदार्थ छूट गये थे, तो भी पं० जी का यत्न प्रशस्य है।

अ० ८। मन्त्र ३३। भावार्थ हिन्दी में संस्कृतानुसार अर्थ परिवर्त्तन किया है, परन्तु मुद्रित पाठ भी भाव में भिन्न नहीं है।

अ० ८। मन्त्र ५८। भाषा पदार्थ समस्त बदल दिया है। मुद्रित में संस्कृत पदार्थ की उपेक्षा ही कर दी है। पं० जी ने बहुत सम्भाला है। यत्न प्रशस्य है।

इसके अतिरिक्त—

२०—मुद्रित में अपपाठ तो बहुत हैं, वे संशोधकों, लेखकों आदि के भेदों से हैं। जैसे—'प्राण' का 'प्रमाण', और 'गमनागमन' का 'मन-नागन' छपा है। ऐसे अनेक शोधन पं० जी ने किये हैं और अनेकों पर पं० जी की दृष्टि ही नहीं गई। वे वैसे के वैसे पं० जी के भाष्य में भी अशुद्ध ही रह गये हैं। तो भी श्री पं० ब्रह्मदत्त जी के किये यत्न को मैं 'अपूर्व यत्न' कहता हूँ। उनकी विद्या, लगन, श्रम और सौष्ठव को देखकर उनके सामने नतमस्तक हूं। उनके गुणोंपर मेरी दृष्टि है। जैसे—

(१) जहाँ अर्थ स्पष्ट करने के लिये आपने भाषा-पदार्थ में परिवर्तन व परिवर्धन किया, आपने संस्कृत पदार्थ का अधिक आश्रय लिया है। (२) तीनों हस्तलिपियों में से उचित पाठ को उचित आदर दिया है। कुछ मन्त्रों पर भिन्न २ दो भाष्यों को देखकर दोनों को उपादेय रूप से रखा है। (३) संस्कृत अन्वय और भाषा-पदार्थ में मन्त्र के पद और पदार्थ अनेकानेक स्थानों पर छूटे, उनको यथास्थान व्यवस्थित किया है। (४) अनेक स्थानों पर पद सन्निवेशों को सुधार कर दिया है। पदों का सुस्थित क्रम कर दिया है। (५) अनेक स्थानों पर पद-स्थान-परिवर्तन बहुत युक्तिमङ्गत है। (६) संस्कृत-भावार्थ के अनुसार भाषा-भावार्थ को ठीक किया है। (७) अनेक स्थलों पर छन्दों, स्वरों का संशोधन किया है। (८) व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त और ब्राह्मणों की प्रतीकें सुधार दी हैं। अन्यान्य भी अनेक गुण हैं, वे श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के इस उद्योग में हैं, जिनमें सर्वोपरि उनका 'अनुभाष्य' है, जो आगे के वेदप्रेमी ऋषिभक्त, वैदिक विद्वानों के लिये द्वार प्रशस्त करता है।

त्रुटि मानव मात्र में है। हमारा लक्ष्य एक दूसरे का त्रुटि-दर्शन द्वेष बुद्धि से न होकर प्रेम और सद्भावना से एक दूसरे को पूर्ण करने के लिये होना चाहिये।

उपसंहार

श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु के प्रकाशित वेद-भाष्य और श्रीमती परोपकारिणी सभा के मुद्रित वेद भाष्य की तुलना २२२ पृष्ठ फुलस्केप में मैंने पृथक् की है, स्थान २ पर तुलना में विशेष उचित अनुचित, आवश्यक अनावश्यक होने का भी निर्देश है। उन सब को ध्यान में रखकर मैं इसी परिणाम पर पहुँचता हूँ कि ऋषि दयानन्द के वेद-भाष्यों का अगला संस्करण बहुत ही सावधान होकर उसे सम्पादन व अपपाठों का शोधन, संस्कृतांशों का भाषानुवाद शोधन करते हुए, ऐसे छापना चाहिये जिसमें ऋषि का गौरव बढे।

(समाप्त)

नवें समुल्लास का 'भौतिक' शब्द

(ले०—श्री बा० कालीचरण जी अधिष्ठाता भूसम्पत्ति विभाग आ० प्र० सभा यू० पी०)

आर्यमित्र वर्ष ५१ अङ्क ४४ दिनांक १-१२-४९ के पृष्ठ ७ पर "नवम समुल्लासान्तरगत भौतिक शब्द" शीर्षक लेख पढ़ा, विषय विचारणीय और विवादास्पद है। अनेक विद्वानों का मत है कि सत्यार्थ प्रकाश में छपे "यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है" के स्थान पर "यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी साथ रहता है। छपना चाहिये था। अर्थात् "और भौतिक के स्थान पर "अभौतिक" होना चाहिये। अन्तर भौतिक अभौतिक में नहीं है। किन्तु "और भौतिक" "अभौतिक" का है। अत "और, शब्द पर प्रथम विचार नहीं करना चाहिये। और न केवल भौतिक पर। इस शाब्दिक मतभेद से जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश में छपा है, यह स्पष्ट है और श्री लक्ष्मण दत्त पाठक जी ने भी यही लिखा है, कि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का यह विचार था कि मुक्ति में भौतिक शरीर साथ जाता है। बिना भौतिक शरीर के मुक्ति में आनन्द भोगा नहीं जा सकता। परन्तु विपक्ष का ऐसा विचार है कि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का विचार इसके विपरीत यह है कि मुक्ति में भौतिक शरीर साथ नहीं रहता और जीवात्मा मुक्ति में आनन्द को स्वशक्ति से भोग लेता है। यदि यह विचार ठीक है कि मुक्ति में भौतिक शरीर नहीं रहता तो सत्यार्थ प्रकाश में विवादास्पद स्थल पर "और भौतिक,, के स्थल पर 'अभौतिक' ही होना चाहिये। यदि यह विचार सत्य हो कि मुक्ति में भौतिक शरीर साथ रहता है, तो जैसा सत्यार्थ प्रकाश में छपा है, कि "यह दूसरा और भौतिक शरीर" मुक्ति में भी रहता है। छपा ठीक है। अब इसका निर्णय सत्यार्थ प्रकाश के पन्नों से ही हो जाता है। यह विवादास्पद स्थल शताब्दी संस्करण के पृष्ठ ३६२ पर है। अब तनिक इसी संस्करण के ३५६-३५७ का भी खोल कर पढ़ लेना चाहिये। पृ० ३५६ पर "प्रश्न है कि मुक्त जीव का स्थूल शरीर होता है वा नहीं उत्तर —नहीं रहता। प्र०— फिर वह सुख और आनन्द भोग कैसे करता है उ०—उसके 'सत्य' 'सकल्पादि स्वाभाविक गुण' 'सामर्थ' सब रहते हैं। 'भौतिक संग नहीं रहता' जैसे शृण्वन् ‥‥ शतपथ का० १४॥ मोक्ष में 'भौतिक शरीर' वा इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु 'अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते' हैं। जब सुनना चाहता है तब श्रोत ‥ ‥ ‥‥ अहंकार रूप अपनी 'स्वशक्ति से' जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है और 'सकल्प मात्र शरीर होता है' जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे 'अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है"

इस उपरोक्त प्रश्नोत्तर में ऋषि दयानन्द का मत बिलकुल स्पष्ट है, कि मुक्ति में 'भौतिक संग नहीं रहता' 'उसके सत्य सकल्पादि' स्वाभाविक गुण सामर्थ सब रहते' है। जिन से वह मुक्ति में आनन्द को भोगता है। श्री दयानन्द का मत बहुत स्पष्ट है, कि मोक्ष में भौतिक संग नहीं होता और बिना भौतिक शरीर के ही साकल्पिक स्वाभाविक गुण सामर्थ से ही आनन्द भोग लेता है। अब जब कि यह स्पष्ट हो गया कि जीवात्मा मुक्ति मे आनन्द को स्व शक्ति से भोगता है, और भौतिक शरीर से नहीं। तब विवादास्पद स्थल पर "और भौतिक शब्द कैसे रह सकता है। वहां तो अभौतिक ही ऋषि के सिद्धान्तानुसार सत्य होगा। श्री लक्ष्मण दत्त पाठक ने अपने लेख में मौन हेतु भी दिया है। इसी मे जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। अब यह इसी शब्द किसकी ओर सकेत कर रहा है। जिसमे कि सुख भोगा जाता है। जीवात्मा सुख भोगता है। स्वाभाविक गुण स्व शक्ति से जो भौतिक नहीं है अभौतिक है और ऋषि दयानन्द द्वारा सूक्ष्म शरीर के स्पष्टीकरण म सूक्ष्म शरीर का दूसरा भाग है और यह दूसरा भाग अभौतिक है। अतः ये मौन हेतु श्री पाठक जी के विरुद्ध हैं। और मौन नहीं अपितु स्पष्ट विरुद्ध हेतु है।

श्री पाठक जी ने इस विषय मे कि मुक्ति में भौतिक शरीर साथ रहता है। और ऐसा मत श्री स्वामी दयानन्द जी का है, वेदान्त दर्शन का शरण ली है। जिसके उदाहरण सत्यार्थ प्रकाश में अंकित है। इस सम्बन्ध में इतना निवेदन कर देना पर्याप्त होगा कि सत्यार्थ प्रकाश मे यह उद्धरण केवल इस लिये उपस्थित किये गये हैं कि ऋषि दयानन्द अपने इस मत को कि जीवात्मा मुक्ति में विद्यमान रहता नहीं हो जाता है, पुष्ट कर दें। इतना ही वेदान्त दर्शन का ऋषि दयानन्द को मन्तव्य है। शेष नहीं। जैसा कि दूसरे समुल्लास मे 'गुरो प्रेतस्य' मनु के उद्धरण में भूत प्रेत को बताना अभीष्ट था उतना ही मनु का भाग ऋषि को मन्तव्य है। अन्य नहीं।

अत. ऋषि की भावना और विचार निश्चित रुपेण यही है कि मुक्ति में भौतिक संग नहीं रहता और मुक्ति के आनन्द को बिना भौतिक शरीर के अपने स्वाभाविक गुण रूप सामर्थ से भोग लेता है।

विवादास्पद स्थल पर और भौतिक के स्थानपर अभौतिक ही पढ़ना चाहिये। हाँ यह ठीक है कि यदि हस्तलिखित सत्यार्थ प्रकाश में और भौतिक ही लिखा है तो और भौतिक ही छपना चाहिये। और नीचे टिप्पणी में ऊपर चिन्ह देकर यह लिख देना चाहिये कि इसको अभौतिक पढ़ा जाये।

———

गुरुकुलों की आवश्यकता

(श्री प० रामेश्वर दयालु जी सिद्धांत शिरोमणि)

स्वतन्त्र भारत का नवनिर्माण करने हुये इस समय नई २ योजनाएं बनाई जा रही हैं प्रत्येक भारतीय यह चाहता है कि वह जल्दी से जल्दी अपनी मातृ भूमि की स्वतन्त्रता से अपनी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति स्वतन्त्रता पूर्वक कर सके। इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों की दृष्टि युद्ध के संकट को टालने के लिये आज भारत पर पड़ रही है और वह समझते हैं कि विश्व में सच्चा शांति चाहने वाला देश एक भारत ही है। भारत सर्वस्व प० जवाहरलाल नेहरू विश्व शांति के संदेश को समय २ पर देते रहते हैं और विश्व राष्ट्र संघ द्वारा अपनाई गई अनाक्रमणात्मक नीति का सही अर्थों में अनुसरण कर रहे हैं। उनके कारण आज भारत विदेशियों की दृष्टि में बहुत ऊँचा उठ गया है जिसपर कि हम सब भारतीयों को गर्व है। अब हम भारतीयों का कर्त्तव्य है कि हम अपने देश को आदर्श राष्ट्र बनायें और उसके सम्मान को अन्दर और बाहर ऊँचा उठाएं तथा उसको स्थिर रखने की क्षमता भी अपने में उत्पन्न करें। किसी भी देश के भावी कर्णधार उसके बालक ही होते हैं। इसलिये भारतीय बालकों के ऊपर ही भारत का भविष्य निर्भर है। बालकों को राष्ट्र की सेवा के सर्वथा उपयुक्त बनाना शिक्षणालयों का काम है। हमने पाश्चात्य शिक्षा की सब से बड़ी बुराई अपने देश में यह अनुभव की कि उसने मनुष्य को दिखलावटी एवं परशोषक स्वार्थी बनाया जिसका अनुभव भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर सर्वसाधारण को भी हो गया। लोगों ने देखा कि हमारे नेताओं ने जिनके हाथों जनता को सेवा के कार्य सौंपे उनमें से अधिकांश लोग भ्रष्टाचार एवं घूँसखोरी की दलदल में फँस गये और जनता के रक्षक के स्थान पर स्वयं ही भक्षक बन गये। पाश्चात्य शिक्षा की इन्हीं कमियों के कारण विश्व वंद्य महात्मा गाँधी कहते थे कि अंग्रेज़ों के यहाँ से चले जाने के बाद अंग्रेजी को भी अविलम्ब यहाँ से चला जाना चाहिए। अर्थात् हमारी शिक्षा में अंग्रेजी को जो प्रधानता दी हुई है वह शीघ्र ही समाप्त हो जानी चाहिये। परन्तु पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा प्राप्त उनके अनन्य अनुयायियों पर भी उनकी अमूल्य सम्मति का विशेष प्रभाव न पड़ा और उन्होंने अंग्रेजी भाषा के मोह को न छोड़ उसे पन्द्रह वर्ष तक भारतीय स्वतन्त्रता पर कलङ्क बने रहने का अमिट वरदान दे दिया। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के विचारों के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीयों की शिक्षा अधोगति को देख कर भारतीयों के सम्मुख उनकी आदर्श प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को रक्खा और आर्यसमाज के प्रमुख नेता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज व महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने उसे मूर्त रूप देने के लिये गुरुकुल कांगड़ी एवं वृन्दावन को पाश्चात्य शिक्षणालयों की प्रतिस्पर्धा मे खड़ा किया और मातृ भाषा द्वारा उच्च शिक्षा दिये जाने का प्रबन्ध किया जिनमें कि गुरुकुल सफल हुये। आज हमारी सरकार ने भी उनकी उपाधि को बी ए के बराबर स्वीकार कर उनकी उपयोगिता का अनुभव किया। आज भारत शासन की दृष्टि से स्वतन्त्र है पर सांस्कृतिक दृष्टि से परतन्त्र है। क्योंकि शिक्षा क्षेत्र में भारतीय संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की गई जिसके परिणाम स्वरूप भारतीयों में अपनी संस्कृति के लिये कोई अनुराग नहीं रहा। खान पान, रहन सहन, बोलचाल सब तोते के समान बन गई और अब उससे छुटकारा पाना कठिन हो रहा है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय आदर्शों पर स्थापित है उसमें ही उक्त बुराइयों के दूर करने की क्षमता है। अतएव पहिले की अपेक्षा इसके विस्तार की देश में अधिक आवश्यकता है क्योंकि अब अपने स्वतन्त्र देश का निर्माण भारतीय उच्च आदर्शों पर होना है। साम्यवाद एवं समाजवाद जसी अभारतीय विचार धाराएं आज नवयुवकों के मस्तिष्कों को डांवाडोल कर रही हैं। इनका एक मात्र निराकरण धर्मप्राण राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में निहित है। अब वह समय निकल गया कि हम शिक्षा में वास्तविक धर्म के ज्ञान कराने की भी उपेक्षा करते रहें। गुरुकुल शिक्षा पद्धति उच्च आदर्शों पर अवलम्बित है जिसमें कुछ यहाँ पर दिये जाते हैं।

१—आचार्य की संरक्षता में आकर बालक अपने विद्योपार्जन काल में ब्रह्मचर्य आश्रम के नियमों का पालन करता हुआ गुरुजनों से नानाप्रकार की विद्याओं का उपार्जन करें।

२—ब्रह्मचारी का जीवन तप और त्याग का जीवन हो। वह प्रतिदिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो सन्ध्योपासन तथा अग्निहोत्र करें।

३—जिन उत्तम शिक्षाओं को ग्रहण करें उन्हे गुरुजनों के आदेशानुसार व्रत पूर्वक अपने जीवन में लाने का पूर्ण प्रयत्न करे। मातृभूमि, मातृ संस्कृति और मातृ भाषा के प्रति पूर्ण निष्ठावान गुरुजनों की देखरेख में बौद्धिक शक्तियों के विकास के साथ २ अपने चरित्र का निर्माण करे और गुरुजनों को सर्वदा अपने माता पिता के समान आदर की दृष्टि से देखता रहे और अपने सहपाठियों को भाई के समान समझे और कभी भी ऊँच नीच का भेद अपने मन में न लावे।

गुरुकुल के इन आदर्शों को अपना कर शिक्षण संस्थायें अपने देश की सच्ची सेवा कर सकती हैं। अभीतक आर्यबन्धु एवं गुरुकुल प्रेमी सर्वसाधारण जनता ने गुरुकुलों की विशेष उपयोगिता को अनुभव करते हुए अपने सात्विकदान से उनका संचालन किया परन्तु अब भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर ऐसी राष्ट्रोपयोगी संस्थाओं के संचालन में सरकार की भी सहायता अपेक्षित है। अतएव राष्ट्रीय सरकार का कर्त्तव्य है कि जहाँ वह अन्य विश्व विद्यालयों को पर्याप्त सहायता देकर उनका संचालन सुगम बना रही है वहाँ वह गुरुकुलों को भी पर्याप्त सहायता देने में किसी प्रकार का संकोच न करे। इस आर्थिक संकट काल में गुरुकुल जैसी संस्थाओं का केवल अनिश्चित दान के ऊपर चलते रहना अति कठिन है। उनके विकास के लिये पर्याप्त आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन संयुक्त प्रान्त की प्रमुख शिक्षा संस्था है जो कि लगभग चालीस वर्षों से सेवा कर रही है जिसमें भारत के सभी प्रान्तों के बालक प्रारम्भ से ही ऊँच नीच के भेद भावों को मिटाकर शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। और अब भी कर रहे हैं। गुरुकुल प्रेमियों का कर्त्तव्य है कि वे अपनी प्यारी लोकप्रिय संस्था की भरपूर सहायता कर उसे स्वतन्त्र भारत के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करें।

———

आर्य प्रतिनिधि सभा की सूचनाएँ

श्री प्रधान सभा का कार्यक्रम

राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी प्रधान सभा ने निम्न स्थानों का भ्रमण इन २ तिथियों में किया जहाँ से आपने वृन्दावन तथा वेदप्रचार के लिये भी धन संग्रह किया।

१६ दिसम्बर	माधोगंज
१७ ,,	हरदोई
१८ ,,	लखीमपुर
१६,२० ,,	फैजाबाद

निम्न स्थानों पर प्रधान सभा इन २ तिथियों में भ्रमण करेंगे —

२२ -- २३	हापुड़
२४ दि	कन्या गुरुकुल सासनी
२५ — २६	गु० वृन्दावन
३० दि. से ८ जनवरी ५० तक	बिहार प्रान्त।

सभा का वर्ष

युक्त प्रान्त के समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों को सूचित किया जाता है कि सभा व समाजों का वर्ष ३१ दिसम्बर १९४६ को समाप्त होगा। समाजों को चाहिये कि सभा के वर्ष के साथ ही अपना वर्ष समाप्त करें। और वर्ष समाप्ति के पश्चात् १५ जनवरी १६५० तक आर्यसमाजों की सूची बनावें।

सभा के उप नियमानुसार समाजों का वार्षिक निर्वाचन जनवरी व फरवरी १६५० तक हो जाना अनिवार्य है। निर्वाचन की अंतिम तिथि २८ फरवरी है।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

भूसम्पत्ति विभाग कार्यालय मेरठ

युक्त प्रान्त के समस्त समाजों को सूचित किया जाता है सभा का जायदाद भूसम्पत्ति विभाग कार्यालय श्री काला चरण जी आर्य अधिष्ठाता के पास मेरठ पहुँच गया है। अतः भूसम्पत्ति सम्बन्धी निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

पता—श्री कालीचरण जी आर्य अधिष्ठाता भूसम्पत्ति विभाग, लाल कुर्ती, मेरठ।

—गुरुकुल वृन्दावन का ४५ वाँ वार्षिक महोत्सव ता० २५ से २८ दिसम्बर सन् १६४६ तक होगा। अतः उत्सवपर पधारने वाले सज्जनों को सूचित किया जाता है कि जो महानुभाव अपने लिये डेरा, छोलदारी रिजर्व कराना चाहें उन्हें उनका किराया श्री मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल वृन्दावन की सेवा में भेजना चाहिये। किराया निम्न प्रकार है। छोटा छोलदारी २ रु फी छोलदारी बड़ा छोलदारी ३ रु फी छोलदारी डेरा दु चोबा ६ रु फी डेरा।

आराम
मुख्याधिष्ठाता

—आर्य समाज पाटन (उन्नाव) का ६वां वार्षिकोत्सव २३,२४,२५, जनवरी सन् १६५० ई० को होगा। भ शिव स्वामी जी महाराज जा हाँ हो अवश्यमेव पधारें।

श्वेत कुष्ट कि अद्भुत जड़ी

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहते यदि इसके ३ दिन के सेवन से सफेदी, के दाग पूरा आराम जड़ से न हो तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर खर्च लिखा लें। मूल्य लगाने को १॥) लाने की २॥)

पता—वैद्यराज दर्शन सिंह
नं० ६ हमीदपुर पो० एकमसराय, पटना

जेल प्रचार योजना

भारत राष्ट्र के स्वतन्त्र होजाने पर सार्वजनिक संस्थाओं के द्वारा जो कार्य होते थे, उनमें से अनेक साक्षात् केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों की ओर से होने लगे हैं, यह देशोत्थान कार्य में शुभ लक्षण सूचक चिन्ह हैं कुसंस्कार, अशिक्षा और कुसंगति के कुप्रभाव से अनेक भारतीय नर और नारी विवश होकर प्रचलित कानून विधान के विरुद्ध जब कभी दंडित होते हैं तो उनको कारागृहों या जेलखानों में बन्द करके विशेष नियन्त्रण में रक्खा जाता है। इन कारागृहों में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के समय में अनेक देश भक्त नेता गण और साधारण कार्य कर्त्ता गण भी कारा-ग्रस्त किए गये थे। उस कारागृह-वास से मुक्त राष्ट्रीय नेता गणों के हाथ में ही अब शासन कार्य आया है। इसलिये अपने साक्षात् अनुभव के आधार पर जो २ और जिस २ प्रकार की असुविधाओं को उन्होंने जेल जीवन में अनुभव किया उनके आधार पर जेलवासियों के सुधार के निमित्त अन्य अनेक कार्यों में संलग्न रहते हुये भी सरकार चिन्तित रहती है और चाहती है कि अन्य भारतीय नागरिकों की भांति जेलवासी भी अपनी कुटेवों कुप्रवृत्तियों और कुकर्मों को छोड़ कर भारत के सच्चे अर्थों में देशभक्त नागरिक बनें।

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति करने के लिये आर्यसमाज गत ७५ वर्ष से अपनी शक्ति और प्रभाव से लगातार प्रयत्नशील है, किन्तु देश-कालिक परिस्थिति सर्वथा अनुकूल न होने के कारण किसी व्यापक योजना के अनुरूप कार्य न हो सका है, किन्तु अब तो आर्यसमाज के प्रत्येक उपदेशक और प्रचारक के लिये सब प्रकार की सुविधायें न केवल जनता के सहयोग से प्राप्त हैं, अपितु सरकार भी पूर्ण सुविधा प्रदान कर रही है, इसी दृष्टि से आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त लखनऊ की ओर से कार्य करने वाले उपदेशक श्री प० देवनाथ जी भारद्वाज गत जनवरी मास से प्रतिमास एक रविवार को अलमोडा जेलमें कारा-वासी भाइयों में मादक द्रव्य सेवन निषेध समाज सुधार और भारत राष्ट्र के देशभक्त सच्चे नागरिक बनाने के लिये आवश्यक गुणों को अपने जीवन में ढालने के लिये सतत प्रयत्नशील बनाने के विषय में प्रचार कररहे हैं। आशा की जाती है कि अलमोडा जेल के अधिकारी-गण ऐसी सुविधा प्रदान करेंगे कि जिससे प्रतिरविवार को प्रचार कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हो सके इस योजना को कार्यमें परिणत करने के लिये प्रान्त के अन्य जिलों में भी प्रचार व्यवस्था शीघ्र कार्यान्वित किये जाने का प्रबन्ध हो रहा है, रुचि रखनेवाले पत्र द्वारा विशेष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

निवेदक
मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, लखनऊ

"जीर्णोद्धार"

आर्य समाज सआदत गंज फैजाबाद का कार्य कई वर्षों से शिथिल पड़ गया था प्रसन्नता की बात है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक प० रामनिवास जी मिश्र के परिश्रम से समाज का कार्य पुनः चल पड़ा। ता: ४।१२।४९ को निर्वाचन हुआ।

प्रधान डा० इन्द्रनारायण जी श्रीवास्तव उ.प्र मुंशी भिखारी लाल जी मंत्री प० गयाप्रसाद पाण्डेय जी उपमंत्री ठा० गनपति सिंह जी कोषाध्यक्ष त्रिभुवन नाथ सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष सम्पत्ति रामजी

—एक सुधार वादी प० राम चन्द्र वल्द प० ठाकुर दास उपरतो पुलिस चार्जमैन लोको शेड ईदगाह आगरा की सुपुत्री गंगा देवी का विवाह बाबू बनवारीलाल अरोड़ा खत्री मुहल्ला स्टेशन रोड फर्रुखाबादसे आर्य समाज विधि के अनुकूल प० सत्य देव जी वैद्य शास्त्री तथा पं० शीतल चन्द्र जी आर्योपदेशक ने आर्यसमाज मथुरामें कराया इस शुभ अवसर पर वर की ओर से आर्य समाज मथुरा को १५) रू० दान दिए।

—वैदिक आश्रम गदपुरी डाकखाना बल्लभगढ़ जिला गुड़गावां का वार्षिक उत्सव ४,५,६ फर्वरी शनि व सोमवार को होगा। इस अवसर पर केवल योग्य बालकही प्रविष्ट किए जावेंगे। भोजन शुल्क ५) मासिक है।

—श्री म० विश्वनाथ जी आर्य ईशापुर जौनपुर की पुत्री प्रभावती अधिकारिणी का विवाह संस्कार शेखपुर मुंगेर निवासी श्रीगोविन्द प्रसाद जी बी० ए० के साथ तिथि पौष कृ० १ स० २००६ दि: ६।१२।४९ ई० को श्री प० राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री तथा श्री प० अखिलानन्द जी शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। वरपक्ष ने ५१) कन्या गुरुकुल देहरादून तथा ५१) आ० सा० जौनपुर को दानदिया।

मंत्री

श्री स्वा. मुनीश्वरानन्द जी ने पत्र द्वारा श्री स्वा.केवलानन्द जी के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

—"आर्यसमाज बरबीघा (मुंगेर) १८ वॉ वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ और ३० दिसम्बर को होने जा रहा है। उच्चकोटि के विद्वानों तथा भजनोपदेशकों के पधारने की सम्भावना है शास्त्रार्थकेशरी श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार भी आ रहे हैं। श्री कु सुखलाल जी भी अवश्य आने की कृपा करें।

—आर्य महिलासमाज सुजानगढ़ का प्रथम वार्षिकोत्सव ता० २५ से २७ नवम्बर सन् १९४९ तदनुसार मि. सुदी ६ से ८ स० २००६ को श्री मान्य भगवानस्वरूप न्यायभूषण मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा अजमेर के नेतृत्व में सानन्द सम्पन्न हुआ। उत्सव का उद्देश्य स्त्रियों के अलावा सर्व साधारण जनता में प्रचार करने का था। नगर कीर्तन, संगीत तथा सुन्दर २ भाषण हुये, जिनका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

—आर्यसमाज कांधला (मुजफ्फरनगर) प० श्यामनारायण जी शर्मा मुख्तार भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज, तथा म. होशियारसिंह धीमान् सभासद् इन दोनों के सुपुत्रों के असामयिक देहान्तपर शोक करता है और उनके परिवारों के साथ सहानुभूति प्रकट करता है परमात्मा दिवंगत आत्माओं को शान्ति दे।

आर्यसमाज कांधला जिला मुजफ्फरनगर (निर्वाचन)

प्रधान—बा. चम्पालाल जी एम. ए. प्रिंसिपल हिंदू इंटरकालेज कांधला
उपप्रधान—बुधसिंह ज रईस
प्रधानमन्त्री—ला. सीताराम सहगल
प्रबन्ध मन्त्री—बा. रमेशचन्द्र शर्मा
प्रचार मंत्री—बा रामसहायजी वैद्य
कोषाध्यक्ष—पं० घासीराम जी
पुस्तकाध्यक्ष—ला. जानकीदास व सरदार पूर्णसिंह
आडीटर—बा. राजकुमार जी गुप्ता

कृतज्ञता—प्रकाशन

निगमाश्रम दारानगर गंज (बिजनौर) से श्री स्वा. सुखानन्द जी उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं से कृतज्ञता प्रकट करते हे जिन्होंने कि स्व. श्री स्वा. केवलानन्द जी के देहावसान पर शोक तथा संवेदनात्मक पत्र भेजे हैं। अधिक पत्रों का पृथक् २ उत्तर न दे सकने के कारण आर्यमित्र द्वारा उन सभी को कृतज्ञता प्रकाशित की जाती है।

गुरुकुल विद्यापीठ हरियाना भैंसवाल का ३० वॉ वार्षिक महोत्सव

इस गुरुकुल का ३० वां वार्षिक महोत्सव २५-२६ २७ फर्वरी फा० शु० अष्टमी नवमी दशमी शनि, रवि, सोम, सन् १९५० को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर बड़े २ धार्मिक तथा राजनैतिक नेताओं को निमन्त्रित किया गया है।

—निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय सधुआ (गाजी पुर) की स्थापना हुए लगभग १ वर्ष व्यतीत हो रहा है। इस गुरुकुल में बसन्त पंचमी (माघ महीना) सम्वत २००६ को नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा तथा गुरुकुल महाविद्यालय का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया जायगा। जिसमें आर्य जगत के विद्वानों का उपदेश तथा भजन होगा।

आर्य समाज गंगोह

आर्य समाज गंगोह (सहारनपुर) का वार्षिक उत्सव ता० ७-८-९ नवम्बर सन १९४९ ई० को बड़े समारोह के साथ मनाया गया जिस में बड़े बड़े विद्वान महात्मा-सन्यासी पधारे हजारों स्त्री पुरुषों ने भाग लेकर धर्म लाभ उठाया। उत्सव शांति पूर्वक समाप्त हुआ।

—आ० स० बानठ में ११ से २२ जनवरी तक विश्वशान्ति प्रसारक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। जिसमें ४ मन देशी घी ८ मन सामग्री केशर इत्यादि व्यय होगा। बसन्त पंचमी को पूर्णाहुति होगी।

—आर्य कुमार सभा गाजियाबाद की ७, १२,४९, तारीख,की अन्तरंग सभा में श्री पुरुषोत्तम जी सम्मान्य मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास हुआ।

सूचना

श्री प० गंगा दत्त जी वानप्रस्थी गुरुकुल वृन्दावन की सेवा करना स्वीकार करके गुरुकुल में निवास करने लग गये हैं, वे बहुत उत्तम व प्रभावशाली व्याख्यान देते हैं तथा समस्त संस्कार बड़ी उत्तमता व प्रभावशाली रीति से कराते हैं जिन महानुभावों को आवश्यकता हो तो उक्त पंडित जी की विद्वता से लाभ उठा सकते हैं,

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन।

—पंजाब प्रान्त की प्रसिद्ध उपदेशिका जिन्होंने आर्य प्रादेशिक सभा तथा आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में बड़ी लगन व श्रद्धा से ऋषि की वाणी का प्रचार किया है श्रीमती शारदा देवी जी अब युक्त प्रान्त में कार्य करना चाहती हैं। जो समाजें उन्हें बुलाने की आवश्यकता अनुभव करें तो निम्न पते पर लिखें। माता जी व्याख्यान के अलावा भजनों द्वारा भी प्रचार करती हैं। पता निम्न प्रकार है।

श्रीमती शारदा देवी जी द्वारा
बा० गंगाराम जी आर्य
सदर बाजार झाँसी

—आर्यसमाज कांठ श्री स्वामी केवलानन्द जी महराज के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो।

—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर तथा श्री आर्य समाज चन्दोसी, आर्यसमाज बिजनौर में भी श्रीस्वा० केवलानन्द जी के देहावसान पर शोक मनाया गया।

अनुशासन
(पृष्ठ का शेष)

यद्यपि चारपांच समाजों ने जानबूझ कर सभा के अनुशासन क [illegible] की है, "परन्तु प्रायः प्रान्तीय समाजों ने अनुशासन का स्वागत ही किया है। तथापि मैं यह चाहता हूँ कि प्रान्तीय प्रत्येक आ० स० सभा के अनुशासन का समादर करें—यह मार्ग ही कल्याण प्रद प्रतीत होता है। इसी मार्ग का अनुसरण करने में सभा और समाजों का गौरव है।"

समाज के अधिकारियों को सोचना चाहिए था कि उनके परिवार में अनुशासन हीनता का क्या परिणाम होगा, अथवा उनके समाज में ही कुछ सदस्य समाज के अनुशासन की उपेक्षा करें तो क्या समाज का गौरव स्थिर रह सकेगा। संस्था के समक्ष व्यक्ति का महत्व कुछ नहीं है। व्यक्ति आज है कल न रहेगा परन्तु संस्था स्थिर है। संस्था के गौरव में व्यक्ति का गौरव हो सकता है। चरित्रवान व्यक्तियों के गौरव से संस्था गौरवान्वित होती है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन से ऐसी चेष्टा न करे जिससे संस्था का गौरव गिरने लगे। अनुशासन का समादर करना कल्याण प्रद प्रतीत होता है। अब समय बड़ा ही भयंकर है, यदि आर्य जगत में इस अनुशासन विघातक वृत्ति की वृद्धि होती रही तो आर्य समाज का भविष्य भयंकर होकर रहेगा।

असाध्य रोग अभी नहीं हुआ है यदि उपचार तत्परता से किया जाय तो भयंकरता भस्म हो जावेगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन का समस्त प्रतिनिधि सभायें, और प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के अनुशासन का समस्त भारत आर्य समाजें समादर करें तो गद्दी पर कोई बैठे और राज्य किसी का हो परन्तु शासन वह जिस को आर्यसमाज चाहेगा। जो परिवार स्वयं अनुशासन के ढांचे में नहीं ढला है वह मुहल्ले को अनुशासन की परिधि पर नहीं चला सकता है, अनुशासन हीन मुहल्ला ग्राम को ग्राम नगर को, नगर जिले को और जिला प्रान्त को अनुशासन के सांचे में ढाल नहीं सकता है।

क्या इस सुन्दर समय का सदुपयोग करने के लिए एक बार पुनः प्रत्येक आर्य अनुशासन का समादर करने के लिए प्रचुर प्रयास करेगा जिससे आर्य समाज का गत गौरव प्राप्त हो सके। अनुशासन के आधार पर ही आर्य समाज जन-जगत का पथ प्रदर्शन कर सकता है और खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।

मुद्रा अवमूल्यन के कारण भारत को ६५ करोड़ की हानि

बम्बई, १७ दिसंबर। हिसाब लगाया गया है कि रुपये का अवमूल्यन हो जाने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष में जमा अपनी रकम का कोटा पूरा करने के लिए ६० करोड़ रुपया और देना पड़ेगा।

इसी प्रकार विश्व बैंक को भी ५ करोड़ रुपया देना पड़ेगा।

सुख ! सच्ची खुशी !! सच्चा आनन्द !!!

हर स्त्री मां बन सकती है

९ दिन में शर्तिया गर्भ महा योग

जो माता व बहनें सन्तान न होने से अपना जीवन बेकार समझ रही हैं और सन्तान का मुख देखने तक को तरस रही हैं, वे अपने रोगानुसार नीचे लिखी औषधियाँ सेवन करके सन्तान जैसे अमूल्य पदार्थ से अपनी खाली गोद भर कर जीवन सुखी बनावें। यह अचूक और रामबाण रसायन है

वन्ध्या—जिनके कतई सन्तान नहीं हुई ९ दिन में गर्भ की शर्तिया गारंटी। मूल्य १५।≈) फुल कोर्स।

काक वन्ध्या—एक सन्तान होकर फिर न होना। मूल्य १०॥)

मृतवन्ध्या—सन्तान हो हो कर मरती जाना। मूल्य ११)

गर्भ रक्षक व पोषक—इसके सेवन से गर्भ कदापि पात (गिर) न होगा बच्चा हृष्ट-पुष्ट और पूरे दिन का होगा। एक मास की दवा का मूल्य १०) पूरा कोर्स ७०)

दवा मंगाते समय पूरा हाल लिखें। आर्डर के साथ पेशगी और उत्तर के लिए जवाबी पत्र आना लाजिमी है।

पता—राजवैद्य डा० जौहरी कृष्णास्पताल, हरदोई यू० पी०

मस्तिष्क और केशों के लिये श्रेष्ठ

डाबर आंवला केश तैल

मनोरम गन्धयुक्त

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

कलकत्ता

तीन अमूल्य पुस्तकें

॥ दो आना रुपया कमीशन ॥

★ **घरेलू विज्ञान**—यह गृहस्थाश्रम की अद्वितीय पुस्तक है। पुस्तक इतनी शीघ्र लोकप्रिय हो गई कि थोड़े से समय में इसके ६ संस्करण कराने पड़े। पुस्तक का प्रत्येक घर में होना आवश्यक है, विशेषकर गृहिणी माइयों, बहनों और माताओं के लिये परमोपयोगी एवं अत्यावश्यक है। पुस्तकके घर होते हुए डाक्टर, वैद्य या हकीम की आवश्यकता न रहेगी। विवरण के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखें। नवीन संस्करण का मूल्य २) और सजिल्द २॥)। तीन प्रतियों पर डाकखर्च मुफ्त!

★ **दृष्टान्त सागर**—इस पुस्तक में एक से एक अच्छे हँसाने वाले, रुलाने वाले धीरता पैदा करने वाले तथा शिक्षाप्रद १८१ कहानियाँ हैं। यह बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियों और घर के छोटे से बड़े सबके लिये अद्वितीय पुस्तक है। सातवा नवीन संस्करण मूल्य २॥) सजिल्द २॥)।

★ **सच्ची देवियाँ**—१० सच्ची देवियों की संसार में प्रख्यात सत्यता, दृढ़ प्रतिज्ञा तथा वीरता पूर्ण जीवन चरित्र दिए गए हैं। छोटी बालिकाओं के लिए परमोपयोगी पुस्तक। मूल्य केवल १) दसवें संस्करण का।

नीचे लिखी पुस्तकों पर छै पैसा रुपया कमीशन.—

* वैदिक सम्पति ६) * गीता रहस्य ११) छोटा १॥) * सुमन संग्रह २) * सत्य नारायण की कथा ।।) और ।≈) * दयानन्द चरित्र २॥) और ।≈) * चाणक्य नीति ।॥) * पाक विज्ञान सजिल्द ३) * आर्य सत्संग ।≈) * संगीत रत्न प्रकाश दस भाग सजिल्द ३॥) * सत्यार्थ प्रकाश १॥) * मनुस्मृति ५) * बहनों की बातें १।) * धर्म शिक्षा ≶) * नारी धर्म विचार १।) * प्राणायाम विधि ।) * महाराणा प्रताप * घरेलू चिकित्सा ।॥) *

इसके अलावा हर प्रकार की धार्मिक, राजनीतिक, उपन्यास, नाटक, कविता, भजन, स्वास्थ्य रक्षा की तथा बड़े २ लेखकों की साहित्यिक पुस्तकों तथा हवन सामिग्री, (हवन कुण्ड) और जनेऊ के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखिए। पता व डाकखाना साफ लिखें। ऊपर वाली तीन पुस्तकें एक साथ मंगाने पर पहली जनवरी सन् ५० तक डाकखर्च मुफ्त।

श्यामलाल वसुदेव भारतीय
आर्य पुस्तकालय, बरेली

अवध के वितरक—एस एस मेहता को० १०, ३६ भोगमरोड लखनऊ।

गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर खरीदिये

आर्यसमाज में हलचल मचाने वाली नई पुस्तक

१—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास सजिल्द ६)
२—ऋग्वेद की ऋक्संख्या ॥)
३—आचार्य पाणिनि के समय विद्यमान संस्कृत वाङ्मय ।≈)
४—शिक्षा सूत्र—आपिशलि, पाणिनि, और चन्द्र गोमी के दुष्प्राप्य वर्णोच्चारण शिक्षा सूत्रों का संग्रह ।)
५—क्या ऋषि मन्त्र रचयिता थे ? ॥)
६—ऋग्वेद की दान स्तुतियां ।)
७—संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, (फरवरी तक प्रकाशित होगा। सजिल्द १२) प्रबन्धकर्त्ता—

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान श्रीनगर रोड अजमेर

तथा आर्य साहित्य मण्डल, (अजमेर)

वर की आवश्यकता

एक २०वर्षीय अग्रवाल गर्ग गोत्री हिन्दी, संस्कृत तथा Eng पढ़ी लिखी स्वस्थ कन्या के लिये बा-रोजगार शिक्षित वर चाहिये। सम्बन्ध वैश्य मात्र से होसकता है। आयु ३० वर्ष तक तथा कुंवारा हो। नीचे लिखे पते पर लिखें।

शिवदयालसिंह सुदर्शन प्रेस,
खुर्जा यू० पी०

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की
असली मीठी
बालजीवन घुट्टी

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती, कमजोर बच्चों को ताकत वर बनाती। जरा सी रोजाना घटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे, दांत आसानी से निकल आवेंगे। — मू० शी० ८) दर्जन २॥) डा. म्य. अ.

पता: बालजीवन कार्यालय अलीगढ़

आर्य मित्र में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये,

तार का पता—आर्य सभा' लखनऊ,

वर्ष ५१

अङ्क ४८

आर्यमित्र

टेलीफोन न० १९३

वार्षिक मूल्य ६)
छः मास का ४)
एक प्रति का =)
विदेश में ८)

पता—नारायण स्वामी भवन ५, हिवेट रोड लखनऊ।

लखनऊ, पौष शुक्ल पक्ष १० गुरुवार संवत २००६ वि. २९ दिसम्बर सन् १९४९
दयानन्दाब्द १२५ आर्य्यसंवत् १९७२९४९०५०
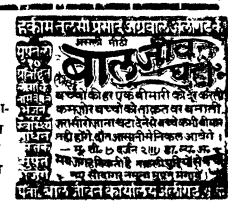
सम्पादक— पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार

विश्व शान्ति के लिये शोषण का अत व सादा जीवन आवश्यक

सभी राष्ट्र रचनात्मक कार्य करें

सेवाग्राम (वर्धा) २४ दिस०। महा० गांधी की कुटिया से उनके दृढ़ अनुयायी डा० राजेन्द्रप्रसाद ने आज संसार को म० गांधी का शांति संदेश सुनाया।

यह ब्राडकास्ट ईसामसीह के जन्म दिवस तथा विश्वशांतिवादी सम्मेलन के दुबारा आयोजन के ठीक पहले किया गया। इस संदेश में राजेन्द्र बाबू ने कहा कि सम्मेलन प्रत्येक नर नारी से अपील करता है कि वे अपना जीवन ऐसा बनाएँ जो बिलकुल शांतिमय हो।

उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रों से अपील करता हूँ कि वे अपने साधनों को विनाश कार्यों की बजाय रचनात्मक कार्यों में लगायें। शांति की सम्भावना तभी होगी जब शोषण बिल्कुल समाप्त कर दिया जाय और लोग सादगी और सद्भावना के साथ रहना सीखें।

राजेन्द्र बाबू ने कहा कि मानवीय शक्ति को रचनात्मक कार्य में इसी प्रकार लगाया जा सकता है कि लोगों को बताया जाय कि वास्तविक सुख त्याग में है न कि प्राप्ति में। इसके लिए घृणा को प्यार में, भय को आत्म विश्वास में, अधिकार को कर्तव्य में और शोषण को सेवा में भरने की जरूरत है।

———

कनाडाने ८० लाख के शस्त्रास्त्र पाकिस्तान को दिये

ओटावा, २४ दिसम्बर। कनाडा द्वारा पाकिस्तान को ८० लाख डालर के शस्त्रास्त्र बेचे जाने के समाचार पर टीका करते हुए कनाडा के परराष्ट्र विभागके एक अधिकारी ने कहाकि राष्ट्र मण्डल के किसी देशकी माग पर निर्यात करने से इनकार करना काफी कठिन है।

आपने कहा कि यद्यपि कश्मीर के मसले पर दोनों देशों में विवाद चल रहा है किन्तु भारत की ओर से इस सम्बन्ध में कोई विरोध नहीं किया गया। भारत को इसकी सूचना दे दी गयी थी और कनाडा की वाणिज्य सूची से भी वह इसका पता लगा सकता था।

अधिकारी ने यह भी बताया कि राष्ट्रमण्डल के किसी भी सदस्य देश को मुक्त रूप से शस्त्रास्त्र बेचे जा सकते हैं। भारत ने इसके लिए कोई [illegible] नहीं [illegible]।

भारत-पाकिस्तान व्यापार

सरकारी श्वेतपत्र प्रकाशित होगा

नयी दिल्ली, २४ दिसम्बर। आज पार्ल्यामेन्ट में वाणिज्य मंत्री श्री के० सी० नियोगी ने बतलाया कि भारत और पाकिस्तान के बीच के व्यापार सम्बन्धों पर सरकार निकट भविष्य में ही एक श्वेतपत्र प्रकाशित करेगी।

नया वर्ष

इस अङ्क के साथ साथ अपना यह वर्ष समाप्त करके आर्य मित्र अपने नये रूप में नये वर्ष में पदार्पण कर रहा है।

हम अपने ग्राहकों, पाठकों तथा उन सभी के प्रति जिन्होंने किसी भी रूप में हमें सहयोग दिया, अपनी सहानुभूति तथा शुभकामनाओं से हमें प्रोत्साहित किया, आभार प्रदर्शित करते हुये नये वर्ष के उपलक्ष्य में शुभकामनायें प्रकट करते हैं। हम जो कुछ भी थोड़ी-बहुत सेवा कर सके हैं, उसमें पाठकों तथा ग्राहकों का सहयोग ही कारण है।

ईश्वर करे आर्यमित्र परिवार के लिये नया वर्ष शुभ हो और परस्पर के सहयोग से नई प्रेरणा लेकर सभी उन्नति मार्ग पर अग्रसर हों।"

—सम्पादक

हैदराबाद का कम्यूनिस्ट-संकट दमन से समाप्त नहीं होगा

"निजाम को हटाया जाय-जागीरदारी मिटायी जाय-राजनीतिक दलों को आजादी मिले" श्रीजयप्रकाश के सुझाव

हैदराबाद, २३ दिसम्बर। समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि हैदराबाद रियासत के दौरे के बाद मुझे यह यकीन हो गया है कि सरदार पटेल ने जिस इतमीनान से यह कह दिया है कि कम्यूनिस्ट उपद्रव यहां समाप्तप्राय है वह बात सत्य से काफी दूर है। कम्यूनिस्टों का दमन पुलिस कार्रवाई द्वारा किया जा रहा है जब कि वस्तुतः केवल दमन से कम्यूनिज्म को नष्ट नहीं किया जा सकता है।

आपने आगे कहा—"कम्यूनिज्म का वास्तविक इलाज है समाज के अन्याय और दमन को मिटाना उसके लिए भूमि व्यवस्था में तुरन्त क्रान्तिकारी परिवर्तन करने होंगे। खेतिहरों के लिए कुछ सुविधाओं की तो तुरत घोषणा हो जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त सुसंगठित राजनीतिक आंदोलन भी कम्यूनिस्टों के विरुद्ध चलाना चाहिये। और विभिन्न दलों को कम्यूनिस्ट प्रभावित क्षेत्रों में जाकर अपना संगठन बनाने की सुविधा मिलनी चाहिये जब कि यहां राज्य-कांग्रेस को भी सरकारी नीति के कारण अपने काममें कठिनाई हो रही है। मैं आशा करता हूँ। कि सरकार कम्यूनिस्ट संकट को वैज्ञानिक तरीके से दूर करने का प्रयत्न करेगी।

रियासती विधान परिषद्

रियासती विधान परिषद् के बारे में आपने कहा कि अभी परिषद् के उद्देश्य, अधिकार और कार्य ही तय नहीं है। यदि वहां रियासत के विलयन का निश्चय करना है तो विधान परिषद् के चुनावों का खर्च और झंझट क्यों उठाया जाय केवल मत संग्रह से यह प्रश्न तय हो सकता है।

निजाम को हटाया जाय

निजाम के अत्याचारों और रजाकारों के अमानुषिक कार्यों से संघर्ष कर रही जनता को भारतीय सेना के आने पर यह आशा हुई थी कि निजाम को गद्दी से उतार कर या दरबदा के लिये समाप्त कर दिया जायगा और सामन्तवाद मूलतः खत्म हो जायगा। सरकारी नीति के [illegible] भर में जो असन्तोष है वह तो रियासत में है ही। तिस पर भी अपनी अदूरदर्शिता के कारण हैदराबाद की जनता को सरकार और असतुष्ट किये दे रही है।

आपने यह सुझाव दिया कि राज्य विधान परिषद् केवल विलयन का प्रश्न तय करने के बाद भंग न कर दी जाय उसे रियासती धारा सभा का रूप प्रदान किया जाय।

हिन्देशिया स्वाधीनता बिल पर डच साम्राज्ञी के हस्ताक्षर

हेग, २१ दिसम्बर। हालैंड की साम्राज्ञी जुलियाना ने आज हिन्देशिया को प्रभुसत्ता प्रदान करने वाले बिल पर स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर कर दिये।

अब सत्ता हस्तांतरण की आखिरी कानूनी कार्रवाई भी होगई और बटाविया से डच फौजें हट कर तटवर्ती अड्डों पर आ रही हैं जहां से वे स्वदेश चली जायगी।

एक लाख सिगरेट नेहरू जी को सेनाके लिये भेंट

नयी दिल्ली, २१ दिसम्बर। नेशनल टोबेको कम्पनी ने प्रधान मन्त्री नेहरू जी को एक लाख सिगरेट भेंट किये हैं। यह भेंट सशस्त्र सेना के लिए बड़े दिनों के उपहार में दी गई है।

सर हरिसिंह गौर का देहान्त

सागर यूनिवर्सिटीके वाइस चांसलर प्रसिद्ध समाज सुधारक तथा शिक्षा विशेषज्ञ श्री हरिसिंह गौर का ७५ दि० को प्रात ६-३० बजे देहान्त हो गया। पार्लियामेंटरी गतिविधि में भी विशेष रुचि थी। आप १९२१ से १९३४ तक असेम्बली में विरोधी दल के नेता रहे। आप अपने पीछे ३ पुत्रियां छोड़ गये हैं जिनमें कि एक इलाहाबाद के डि० [illegible] जी बूम की पत्नी हैं।

राष्ट्र मण्डल द्वारा लाल चीन को मान्यता जनवरी के पहले हफ्ते में

लन्दन, २१ दिसम्बर। विश्वसनीय सूत्रों से पता लगा है कि ब्रिटेन और राष्ट्रमण्डल के अधिकांश देश नववर्ष आरम्भ होने पर जनवरी के पहले सप्ताह में चीन की कम्यूनिस्ट सरकार को मान्यता देंगे।

पाकिस्तान या पाकिस्तान होकर माल भेजना बन्द

चीनी की गड़बड़ी के बारे में जाँच होगी पूरे उद्योग पर सरकार को संचालन का अधिकार हो

चीनी सम्बन्धी सरकारी नीति की कड़ी आलोचना : पार्ल्यामेन्ट का अधिवेशन समाप्त

नयी दिल्ली, २४ दिसम्बर। भारतीय पार्ल्यामेंट का वर्तमान विधान के अन्तर्गत अन्तिम-अधिवेशन आज देश की चीनी समस्या पर गरमागरम बहस के बाद समाप्त हो गया। सरकार, पूंजीपति वर्ग और चीनी सिंडीकेट के लिए 'धांधलीबाजी' 'मुसीबत पैदा करने वाले' 'अपमान जनक' आदि शब्दों का इतना रोषपूर्ण और खुलेआम प्रयोग शायद ही पहले कभी हुआ हो।

आचार्य कृपलानी ने अत्यन्त जोरदार शब्दों में पूँजीपतियों की भर्त्सना करते हुए सरकार को चुनौती दी कि 'या तो ठीक शासन करो या कुर्सी छोड़ दो। हम पूँजीपतियों के साथ चाहे जितनी रियायत करें वे हमेशा गद्दारी करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। सरकार में न तो कार्य कुशलता है और न बुद्धि।'

बहस आरम्भ करते हुए खाद्य एवं कृषि मन्त्री श्री जयरामदास दौलतराम ने घोषणा की कि चीनी समस्या और व्यवस्था सम्बन्धी गड़बड़ियों की जांच की जायगी। जांच का तरीका तो टैरिफ बोर्ड की रिपोर्ट मिलने पर अब से ३ हफ्ते बाद बताया जा सकेगा पर जांच ऐसी संस्था की ओर से होगी, जिससे आप लोगों को पूरा संतोष होगा। कई सदस्यों ने कन्ट्रोल हटा लेने और विदेशों से चीनी मंगाने के भी सुझाव दिये।

पार्ल्यामेंट में हाथ उठानेवाले नहीं योग्य व्यक्ति चाहिये

कॉग्रेस हाई कमाँड का आदेश

लखनऊ, २८ दिसम्बर। ज्ञात हुआ है कि कांग्रेस हाई कमांड ने प्रांतीय कांग्रेस नायकों को लिखा है कि भारतीय पार्ल्यामेंट में केवल हाथ उठाने वालों की संख्या बढ़ाने की जरूरत नहीं है वरन् यह आवश्यक है कि देश की पार्ल्यामेंट में योग्य लोग जाँय।

इसी निर्णय के अनुसार यह भी लिखा गया है कि युक्तप्रांतीय असेम्बली द्वारा जो सदस्य पार्ल्यामेंट के लिए चुने जाय उनमें एक चौथाई सदस्यों को कांग्रेस का केन्द्रीय पार्ल्यामेंटरी बोर्ड नामजद करेगा।

विधान परिषद् को पार्ल्यामेंट बना देने के फलस्वरूप १५० सीटें खाली हुई हैं जिनमें से २६ का चुनाव युक्तप्रांतीय असेम्बली को करना है।

इन २६ सीटों में दो सीटें महिलाओं पाँच मुसलमानों, तीन हरिजनों तथा एक सिख के लिए सुरक्षित है। यह भी ज्ञात हुआ है कि एक सीट प्रगतिशील ईसाई को भी दी जायगी।

आसाम प्रांत से ४ सदस्य निर्वाचित होंगे। इस उप चुनाव में एक महिला उम्मेदवार भी भाग लेंगी।

इसी प्रकार पश्चिमी बंगाल में भी पार्लियामेंट की सदस्यता के लिए दो उप चुनाव होंगे।

बम्बई प्रांत से १२ सदस्य निर्वाचित किये जायेंगे। इस सम्बन्ध में कल बम्बई के प्रधान मन्त्री तथा बम्बई और महाराष्ट्र प्रांतीय कांग्रेसों के अध्यक्ष का एक सम्मेलन हुआ जिसमें १२ उम्मेदवारों का चुनाव किया गया।

ग्राहकों से निवेदन

हम अपने ग्राहकों से पहले भी कई बार निवेदन कर चुके हैं और फिर आग्रह पूर्वक यह प्रार्थना करते हैं कि वे अपने प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपना ग्राहक नं० अवश्य लिखें। मनीआर्डर भेजते समय भी अपना नं० लिखना न भूलें। नहीं तो उनका नाम नये ग्राहकों की सूची में आ जायगा और पुराने पत्र की भी उनको वी० पी० चली जायगी। इस तरह उनको भी असुविधा होती है तथा व्यर्थ का पोस्टेज व्यय भी होता है। हम भविष्य में ग्राहकों को अधिक से अधिक सुविधा देना चाहते हैं और इसीलिये उनका प्रत्येक प्रकार से सहयोग भी हमें अपेक्षित है। आशा है हमारे ग्राहक दोनों की सुविधा के लिये इसका ध्यान अवश्य रक्खेंगे।

—व्यवस्थापक

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्यमित्र
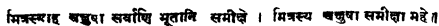
त्वयेदिन्द्र युजा वयं
प्रति ब्रुवीमही स्पृधः ।
त्वमस्माकं तव स्मसि ॥
ऋ० ८ ९२. ३२ ॥

हे परमेश्वर ! तेरे ही साथ से जुड़े रहने से हम स्पर्धा करने वाले, प्रतिद्वन्द्वियों का प्रतीकार करें जाते। तू हमारा है, हम तेरे हैं।

ता० २६ दिसम्बर १९४६ ई०

भारतीय सांस्कृतिक आदर्श

जब से भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया है, तब से अभिनव भारत और उसके नागरिकों के जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिये, इस विषय में भारतीय प्रमुख विचारकों में अनेक प्रकार का विचार संघर्ष सा चल पड़ा है। इस सम्बन्ध में एक पक्ष यह कहता है कि आधुनिकता [मार्डनिज्म] अथवा पाश्चात्यता या योरोपीय सभ्यता अथवा ईसाई सभ्यता का अनुगमन करना ही भारत और भारतीयों के लिये कल्याण कर हो सकता है। इस आदर्श को अपनाने से देश में वैज्ञानिक आविष्कारों के आधार पर नूतनतम यन्त्रों के प्रचुर प्रयोग से अविलम्ब देश को समृद्धिशाली शक्तिमान् और प्रभावशील बनाया जा सकता है और ऐसा होने पर ही वर्तमान सभ्य राष्ट्रों से निर्मित विश्वराष्ट्र संघ में भारत को भी प्रमुख स्थान प्राप्त हो सकता है। दूसरी ओर आज जो अनेक प्रकार के अभावों से भारतीय प्रपीडित हो रहे हैं और अत्यावश्यक अन्न, वस्त्र, निवास, औषध तथा शिक्षा जैसे प्राथमिक साधनों के लिये भी समुचित व्यवस्था करने में अपने को असमर्थ अनुभव कर रहे हैं, उन सबसे शीघ्र ही मुक्त होने का एक मात्र उपाय है, भारत में पाश्चात्य देशों की भांति उद्योग, कलाकौशल, विज्ञान, समाज संघटन, गार्हस्थजीवन और राजनीतिक आदर्शों को स्वीकार कर तदनुसार व्यवहार करना, दूसरे शब्दों में अधिकाधिक आवश्यकताओं को बढाते हुये उनकी सुपूर्ति के निमित्त आवश्यक भोग्य वस्तुओं का निर्माण करना और जीवन के स्तर को उत्कृष्ट बनाने वाली समस्त प्रकार की वस्तुओं को इतना अधिक उत्पन्न करना कि जिससे व्यापार द्वारा अन्य देशों में भेजकर अधिक से अधिक धन प्राप्त किया जा सके। इस दिशा में यदि भारत राष्ट्र वस्तुतः प्रगतिशील हो जाय तो अचिर में अमेरिका या रूस के समान अथवा उससे बढ़कर यह भी एक विशाल महाराष्ट्र बनकर अन्य राष्ट्रों का उन्नेता सिद्ध हो सकता है। भोगवाद, विलास प्रियता और आतंक वाद का यह विशाल आदर्श है। संक्षेप में इस आदर्श का राक्षसवाद कहा जा सकता है।

भारत को सनातन सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार त्याग, तप और सेवा, इन तीन शब्दों में उस जीवन आदर्श का सुरूप से चित्रण किया जा सकता है कि जिनके आधार पर भारत चिरकाल पर्यन्त अपनी पावन सांस्कृतिक परम्पराओं, अनुकरणीय चरित्रों, आदर्श दार्शनिक तथ्यों और सार्वजनीन मानवता के उच्चतम सिद्धान्तों के कारण विश्व का प्रतिमान बना रहा। इस आदर्श पर दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठित होने के कारण ही "त लोक पुण्य प्रजेष यत्र देवाः सहाग्निना" वही लोक पुण्यशील और वर्चस्वी ज्ञान सम्पन्न होता है कि जहां किसी प्रकार का भी प्रभाव नहीं रहता है। इस श्रुति के अनुसार अपने जीवन का तल उन्नत करते रहने के कारण भारत देवलोक से भी उत्कृष्ट तर सिद्ध हुआ। यहां तक इसका विकास हुआ कि "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप, नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः" इस उद्घोष का साभिमान कहते हुये महाराज अश्वपति ने कहा कि मेरे राज्य में कोई चोर नहीं, कोई कृपण नहीं, माद कद्रव्य सेवी नहीं, कोई अग्निहोत्र न करने वाला नहीं, कोई अविद्वान् नहीं, कोई व्यभिचारी नहीं, तो भला फिर किसी स्त्री का व्यभिचारिणी होना तो सम्भव ही कैसे हो सकता है। इस प्रकार के अनेकों आदर्श उदाहरण भारतीय इतिहास में सुलभ हैं। "दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि व्यापा। जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवशि नरक अधिकारी।" राम राज्य के इस महान् आदर्श को ही महर्षि दयानन्द सरस्वती, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी, भारत में और उसके द्वारा समस्त संसार में प्रतिष्ठापित करना चाहते थे और इसी स्वर्ण युग को लाने के लिये अपने जीवन के अन्त तक प्रयत्नशील रहे। तप त्याग और सेवा का यह आदर्श भारत के लिये तो स्वाभाविक हो है इसके विपरीत परम्पराओं का भी भारत में अनेक बार चलाने का प्रयत्न किया जाता रहा। किन्तु उनसे सदा अनर्थ ही उत्पन्न होता रहा। इस परम्परा के सचालक विरोचन, हिरण्यकशिपु, रावण और शिशुपाल हुये। इन सभी लोगों ने भोगवाद को ही मानवजीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श माना और उसकी उपलब्धि के लिये ही अपनी समस्त शक्ति लगाई। रावण ने जितनी भौतिक उन्नति करके सुवर्ण की लङ्का बनाई, उसकी तुलना करने के लिये आज तक अन्य कोई दूसरा उदाहरण इतिहास में नहीं उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है। रावण विद्वान्, तपस्वी, राजनीतिज्ञ, तत्वज्ञानी, शासक, महान् योद्धा, सुचतुर नेता और अनेक गुणों का एक ही निधान कहा जाता था। किंतु भोगवाद में लिप्त होने के कारण, उसका समग्र ऐश्वर्य और ज्ञान विनाश के लिये ही लगाया जाता था। भोगवाद से ओतप्रोत आविर्भूत होने के कारण ही सीता जैसी साध्वी और पतिव्रता देवी से रावण ने यह तक कहने का दुःसाहस किया कि, "भुंक्ष्व भोगान यथाकाम पिब भोज रमस्व च" जितनी तेरी इच्छा हो भोगों को भोग, पी और रमण कर।

यह है पराकाष्ठा भोगवाद की। लङ्का में किसी प्रकार के अभाव की तो बात ही क्या है विश्व में ऐसी कोई वस्तु कल्पना में भी नहीं आ सकती थी कि जो लङ्का में सुलभ न हो। ऐसी लङ्का के विशद् वर्णन में आज भी प्राप्त होता है। फिर भी इस विशाल वैभव सम्पन्न लङ्का का अन्त किस भयङ्करता के साथ हुआ। यह कथा तो सब विदित ही है। इसी प्रकार ही अन्य अनेक महान् समृद्धिशाली महापुरुषों और उनके ऐश्वर्यों का दुःखांत परिणाम ही होता रहा। भोगवाद का इस प्रकार विनाशवाद ही दूसरा नाम हो सकता है। इसमें किसको सन्देह हो सकता है।

श्री माननीय डा० राजेन्द्रप्रसादजी ने अपने दीक्षान्त भाषण में लखनऊ विश्वविद्यालय के १९४८ उपाधि प्राप्त स्नातकों के समक्ष ता० २० दिसम्बर को जो आर्यभाषा हिन्दी में अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया। उसमें सबसे अधिक बल इसी बात पर दिया कि भारत की सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार त्याग और सेवा के आदर्श को दृष्टि में रखते हुये भारतीय शिक्षा संस्थाओं का प्रतिष्ठापन होना अत्यावश्यक है। आपकी सम्मति में वर्तमान पाश्चात्य शिक्षा पद्धति में अभारतीयता की ही प्रधानता रही है इसलिये ही अनेक पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने अपने देश की आध्यात्मिकता और उसके सांस्कृतिक तत्वों को हृदयगम करने में अनायास भूलें की हैं। यही कारण है कि भोग वाद प्रधान अभारतीय शिक्षा पद्धति इस देश के लिये अनेक अर्थों में जहाँ घातक सिद्ध हुई है, वहाँ इसके स्थान में भारतीय शिक्षा प्रणाली के सैकड़ा वर्ष अप्रचलित रहने के कारण भी बड़ा अनर्थ हुआ है। इसी कारण बड़े से बड़े नेताओं के बार २ कहने और लिखते रहने पर भी त्याग, तप और सेवा की भावना और उसके अनुरूप जीवनादर्श को हृदयगम करते हुये भारतीय जनता की सेवा में निःस्वार्थ प्रवृत्त होने वाले शिक्षित भारतीय नवयुवकों और नवयुवतियों का प्रायः अभाव हो देखा जाता है। वस्तुतः यह तो अत्यन्त खेद की ही बात है कि एक ओर त्याग, तप, सेवा सत्य और अहिंसा जैसे उदात्त मानवीय गुणों के आधार पर अभिनव भारत राष्ट्र और उसके नागरिकों को रामराज्य के सुखद स्वप्नों को व्यावहारिक रूप देने के लिये वाचिक उपदेश दिये जाते हैं, किंतु दूसरी ओर राष्ट्र और उसके नागरिक भोगवाद, विलासप्रियता, स्वार्थपरायणता, असत्य और हिंसा के ही अनन्य उपासक बनते चले जा रहे हैं। इस कुप्रवृत्ति का परिणाम स्वर्गीय सुख देने वाला स्वराज्य या रामराज्य कदापि नहीं हो सकता है। पाश्चात्यता (प्रतीचिका) का यह अन्धानुकरण तो भारत और भारतीयों के लिये राज-

स्वोद्भव, भोगवाद और विलासप्रियता के घोर विनाशक नर्क के द्वार को ही आवृत कर सकता है। क्योंकि करनी का वास्तविक प्रभाव होता है। कहनी का नहीं। महात्मा गांधीजी ने सन् १९१५ में हिंदू विश्वविद्यालय की आधारशिला प्रतिष्ठित होते समय जो मर्मस्पर्शी भाषण पाश्चात्यता और भारतीयता का विश्लेषण करते हुये दिया था, उसके उपरांत आज तक भारतीय विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों के अवसर पर अनेक महापुरुषों ने अपने २ उपदेशात्मक भाषण देकर नवस्नातकों को उपकृत किया। किंतु क्या आजतक दूषित शिक्षा पद्धति की विषाक्त परम्परा के कुप्रभाव से भारतीय नवयुवक बचकर त्याग और सेवा के जीवनादर्शों का वरण कर सके?

———

जमैयत की हिमायत

ता० २२ दिसम्बर के दैनिक अमृत बाजार पत्रिका के पृष्ठ ३ पर एक समाचार इस आशय का प्रकाशित हुआ है कि अनेक ऐसे मुसलमान जो भारत को छोड़कर पाकिस्तान को सिधार गये थे, अस्थायी परमिटों के आधार पर कुछ दिनों के लिये भारत आये थे। सरकार की ओर से इनको इस आशय का नोटिस दिया गया है कि वह एक पक्ष में पाकिस्तान लौट जावें। अन्यथा उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायगी। इस सम्बन्ध में ज्ञात हुआ है कि जमायतुलउलमा के कुछ ऐसे प्रमुख प्रांतीय धारासभा के कांग्रेस टिकट पर निर्वाचित सदस्य गण प्रांतीय मन्त्रिालय में इस प्रयोजन से दौड़ धूप में लगे हुये हैं कि उपर्युक्त प्रकार के लोगों के सम्बन्ध में उनके बचाव का पूरा उद्योग करें।

उपर्युक्त [illegible] के संदिग्ध व्यक्तियों को आश्वासन पूरी तौर पर रक्षा करने का दिया जा रहा है और अधिकारियों से उनका [illegible] जाने विषयक कार्य के लिये मुक्त [illegible] क्षमा प्रदान कराने का उद्योग [illegible] किया जा रहा है।

इस सम्बन्ध में जमायतुलउलमा के नेता गण [illegible] लाख रुपया इसलिये संग्रह [illegible] हैं कि देहली से एक अंग्रेजी [illegible] दैनिक प्रकाशित किया कि मुस्लिम [illegible] अल्पसंख्यकों के स्वत्वाधिकारों [illegible] कर सकें। [illegible] में लखनऊ [illegible] एक केन्द्रीय व्यवस्थापिका [illegible] सदस्य के मकान पर एक सभा [illegible] योजन के निमित्त हुई थी। इसमें अनेक पिछले लीगियों में से कतिपय ने प्रचुर धन देने का वचन दिया। सभा में ही कुछ धन इस कार्य के लिये संग्रहीत भी हुआ।

उपर्युक्त समाचार से स्पष्टतया जमायतुलउलमा की आंतरिक मनोवृत्ति और कार्यशैली पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। यहाँ तक कि जो लीगी दो राष्ट्र सिद्धांत में पूर्ण विश्वास ही नहीं रखते, अपितु संकुचित साम्प्रदायिकता के आधार पर पाकिस्तान की स्थापना के लिये कपट, छल, कूट और भीषण पैशाचिक क्रूर कृत्यों के करने में कभी संकोच नहीं करते थे, उनके स्वेच्छा पूर्वक भारत से अपना सम्बन्ध तोड़ और पाकिस्तान से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ लेने के पश्चात् भी जो भारतीय देश के ऐसे द्रोहियों अथवा विदेशियों को अपने उस भारत राष्ट्र में पुन प्रश्रय देने के लिये छद्म प्रयास कर रहे हैं, उनकी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति से सरकार को सावधान रहने की आवश्यकता है। क्योंकि जिस देश में शत्रुवृत्ति रखने वाले विदेशियों या देशद्रोहियों को पूरा आश्रय और प्रश्रय उस राष्ट्र के नागरिक हो खुले तौर पर देने की सुविधा प्राप्त करते हों, तो उस देश में पञ्चमांगियों की बढ़ती हुई संख्या भविष्य में क्या २ अनर्थ नहीं कर सकेगी।

एक ओर पश्चिमीय पाकिस्तान और पूर्वीय पाकिस्तान से हिन्दू और सिक्खों को मारपीट और लूट कर सदा के लिये अकिंचन बनाकर निर्वासित किया जा रहा है और पाकिस्तान में केवल मुसलमान के रहने की सुविधा दी जा रही है। दूसरी ओर भारत में स्पष्टरूप से पाकिस्तान में जाकर बस जाने वाले लीगियों को भी सब प्रकार की सुविधायें दिलाने का कुचक्र चल रहा है। यह राष्ट्रीयता [illegible] घोर कलंक ही कहा जा सकता है। हिन्दू सिक्खों की लगभग ३० अरब की सम्पत्ति लुट गई अथवा लुट गई किंतु पाकिस्तान जाने वालों की केवल लगभग १० अरब की ही इधर रह गई। इस पर भी लीगियों, नहीं २ उनके उत्तराधिकारी जमायतुलउलमा वालों को [illegible] नहीं है। कदाचित् इसीलिये [illegible] धार्मिक और सांस्कृतिक [illegible] कर वह लीगियों से भी अधिक [illegible] साम्प्रदायिक सिद्ध कर रहे हैं। आश्चर्य है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का सदस्य रहते हुये कोई व्यक्ति कांग्रेस का सदस्य नहीं बन सकता है, किंतु जमायतुलउलमा के सदस्यों के लिये इस विषय में पूरी छूट दी गई है। अन्यथा जब दोनों ही, सांस्कृतिक संस्थायें अपने २ को घोषित करती हों, तो एक से ग्रन्थिबन्धन और दूसरी से सम्बन्ध विच्छेद प्रजातन्त्र के किस सिद्धांत के आधार पर सम्भव हो सकता है।

———

अ० भा० हिंदी परिषद, हिंदुस्तानी प्रचार सभा का ही नया रूप है

(श्री राहुल सांकृत्यायन)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ अखिल भारतीय शब्द न लगे होनेपर भी सारे हिन्दी भाषाभाषी जन जानते हैं कि वही उनकी अखिल भारतीय संस्था है। इधर २३, २४ नवम्बर को "अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्" का अधिवेशन दिल्ली में होते सुनकर लोगों को आश्चर्य हुआ कि हिन्दी की यह अखिल भारतीय संस्था कहां से टपक पड़ी, और इसकी आवश्यकता क्या थी? परिषद् के उद्देश्य आदि बाहर से देखनेमें आकर्षक मालूम होते हैं। संस्था के उद्देश्यों में से कुछ यह हैं —

—भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३०१ (अ) के आदेश के अनुसार राजभाषा हिन्दी के निर्माण और विकास में मदद करना।

आ—हिंदी की वृद्धि के लिये आवश्यक साहित्य का निर्माण करना।

इ—केन्द्रीय राजकाज में हिन्दी का जल्दी से उपयोग हो, इसके लिये सब प्रान्तों के सहयोग से आवश्यक वातावरण बनाना और सुविधायें पैदा करना।

ई—हिन्दी की उच्चशिक्षा के लिये विद्यालय और छात्रालय चलाना, अध्यापकों को तैयार करनेके लिये शिक्षणालय चलाना, उपाधियाँ और सनदें देना, पुस्तकें पत्रिकायें प्रकाशित करना।

परिषद् के उद्देश्यों में कितने ही ऐसे हैं, जिनके बारेमें हिन्दी प्रेमी असहमत नहीं होंगे, किंतु प्रश्न यह है कि हिंदी के लिये डेढ़ पीढ़ियों से जिस हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने लड़ाई लड़ी और जिसे अनेक [illegible] हिन्दी [illegible] अपनी अखिल भारतीय संस्था समझता है, उसके रहते इस तरह की एक नई अखिल भारतीय संस्था की क्या आवश्यकता थी? क्या इससे दोनों संस्थाओं में संघर्ष नहीं पैदा होगा? हिंदी परिषद् के कर्णधार दिल्ली को दखल करना चाहते हैं। वह वहाँ से उपाधियों और सनदों की वर्षा करेंगे। यही नहीं हिन्दुस्तानी के कट्टर भक्त रेडियो मन्त्री दिवाकर जी परिषद् के विश्वविद्यालय को सरकारी चार्टर दिलवाकर उसे दूसरे सरकार स्वीकृत विश्वविद्यालयों की पंक्ति में खड़ा करना चाहते हैं। इससे तो साफ है कि सम्मेलन से दिल्ली छुड़ा पाकर उसे केन्द्र बनाने की कोशिश की जा रही है और राजधानी के महत्व से पूरा-पूरा लाभ उठाये जाने की कोशिश की जायेगी। परिषद् में सम्मिलित या उसके अधिवेशन में निमन्त्रित कुछ व्यक्तियों को देखकर भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। परिषद् में भी प्रायः वही मूर्तियां हैं जो कल तक लाठी के जोरों हिन्दी को हटाकर हिंदुस्तानी को गद्दीपर बैठाना चाहती थीं।

परिषद् की ओर से अधिवेशन के जिये छपी पुस्तकों और पत्रों को देखने से मालूम हो जाता है कि इसके जारी करने का सूत्रपात वर्धा की बजाज वाड़ी २, ३ नवम्बर १९४९ के सम्मेलन में हुआ था। जिसके धुरन्धरों में श्री काका साहब कालेलकर, श्री कमलनयन बजाज और श्रीमन्नारायण अग्रवाल थे। श्री दिवाकर, श्री क० सतानम और श्री म० सत्यनारायण जैसे हिंदुस्तानी के महारथियों का कौन नहीं जानता? इससे स्पष्ट है कि यह परिषद् वर्धा की हिंदुस्तानी प्रचार सभा का परिवर्तित संस्करण है।

७ नवम्बर (१९४९) के अपने पम्फलेट 'हाई दिस न्यू इन्स्टीटयूशन" में राजनीतिक धुरंधर श्री शंकरराव देव ने [illegible] कर दिया है—राज्य भाषा को सभी प्रदेशों और जन विभागों के स्वीकार करने योग्य रूप को स्वीकार करना चाहिये— उसे अपने को इस तरह विकसित करना होगा, जिसमें भारत की सम्मिश्रित संस्कृति को प्रकट करने में सक्षम हो। हिंदुस्तानी के रूप, शैली और अभिव्यक्ति को भी आत्मसात् करना होगा।

दिल्ली की अखिल भारतीय हिंदी परिषद् में आधी शताब्दी से अधिक इस क्षेत्र में काम करनेवाले मान्यों ने सहयोग दिया था, जिनमें सबसे बड़ा सहयोग भारत के शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद का था।

मौलाना आजाद और दूसरे बहुत से महारथियों को देखते ही गोस्वामी जी की प्रसिद्ध चौपाई 'जान न जाय.... याद आती है। अभी संविधान सभा में कुछ ही दिन पहले तो हिन्दी के पक्ष में निर्णय होते समय हमारे इन मौलाना साहब ने कहा था:— मैं कांग्रेस असेम्बली पार्टी से कहा था कि

(शेष पृष्ठ १५ पर)

—हरद्वार कुम्भ—

ले०—रामदत्त शुक्ल एम० ए० एडवोकेट—

पुण्य क्षेत्र आर्यावर्त्त के अनेक पवित्र तीर्थ स्थानों में प्रति बारह वर्ष के उपरांत महाकुम्भ और प्रति छः वर्ष के पश्चात् अर्द्ध कुम्भी के महान्समारोह चिरकाल से होते रहते हैं। इन अवसरों पर अनायास ही लाखों धर्मप्राण नर और नारी अपने साधारण जीवन कार्यों को विराम देते हुये एक मास के लिये निश्चित होकर भारत के दूरतम प्रदेशों और प्रांतों से तीर्थयात्रा पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से एकत्रित होते हैं। इस एक मास में चार मुख्य स्नान होते हैं और शेष दिनों में भी अनेक स्थानों पर कथा, वार्त्ता, प्रवचन, भजन, सत्यसङ्ग, कीर्त्तन, यज्ञ, याग, सभा, सम्मेलन, परिषद्, भोज, दान, परिकीर्त्तन आदि २ अनेक आयोजन होते रहते हैं। इनमें अपनी २ रुचि के अनुसार यात्रीगण सम्मिलित होकर अनेक प्रकार से लाभ उठाने का प्रयास करते रहते हैं। ऐहिक लाभ की दृष्टि से भी अनेक व्यापारी, चतुर कारीगर, शिल्पकार, उद्योगी और व्यवसायी इन महापर्वों से विशेष लाभ उठाते हैं।

इन महापर्वों का मुख्य प्रयोजन धार्मिक और सांस्कृतिक है। यह अनुभव करने वाले विचक्षण मनीषीविद्वान्, वीतराग साधु महात्मा, सिद्ध योगिराज, प्रकांड शास्त्रान्वेषणरत पंडितमूर्धन्य, कवि कोविद निष्णात कलाकार, प्रख्यातिलब्ध वाग्मिप्रवर व्याख्यातागण, श्रौतस्मार्त्त परम्परागत कर्मकांड विधान विधायक ऋत्विग् आस्थावान् यजमानादि शतशः समवेत होते हैं। जहाँ विविध प्रकार के सन्त, महन्त आचार्य, मठाधीश और धर्मोपदेशजन स्वेच्छापूर्वक समुपस्थित होते हों, वहाँ श्रद्धालु भक्तों, जिज्ञासुओं, श्रोताओं और मुमुक्षुओं का समागम लाखों की संख्या में हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन का यह प्रयोजन कदापि नहीं है कि उक्त महासमारोहों के अवसर पर कुत्सित, कलुषित, कुटिल, कुकर्मी, कुमार्गी और कुसंस्कारी नर और नारियों का सर्वथा अभाव ही रहता है। धर्ममर्यादाओं को समुचितरीति से और दृढ़ता के साथ स्थापित कर रखने वाले दण्ड धर्म के प्राय अभाव में साधारण प्रजाजनों में यदि श्लाघ्य आर्जव की मात्रा न्यून मात्रा में आज उपलब्ध होती हो तो इसमें सर्वसाधारण प्रजाजनों का ही क्या दोष या अपराध कहा जा सकता है। क्योंकि जब किसी देश में अज्ञानान्धकार का ही बाहुल्य हो जाता है तो मात्स्यन्याय प्रवर्त्तित हो जाता है। धर्म और सदाचार की सर्वसम्मत मर्यादाओं का लोप करने वालों के लिये अपनी स्वेच्छाचारिता को गतार्थ करने का अयाचित अवसर प्राप्त हो जाता है। प्रजा का अकल्याण अनिवार्यरूप से होने लगता है।

इस विनाश परम्परा को अवरुद्ध कर कल्याण मार्ग को प्रशस्त करने का मुख्यरूप से उत्तरदायित्व न केवल देश की शासन व्यवस्था पर ही एकांतत निर्भर रहता है, अपितु उससे सहस्रगुण अधिक जनता के उन विवेकी और दूरदर्शी नेताजनों के सूक्ष्म विचारों पर निश्चयरूप से अवलम्बित होता है कि जिनका एकमात्र आश्रय प्राप्त कर अबोध प्रजावर्ग गर्भस्थ बालक की भाँति अपने अस्तित्व को अनुप्राणित कर उसको जीवन संग्राम के अनुरूप प्रगतिशील बनाने में भी सक्षम होता है, किंतु यदि प्रजावर्ग में विवेक का लेश भी अवशिष्ट न हो और उसका स्व अथवा पर के साथ ही कल्याण एवं अकल्याण में भी कोई अन्तर प्रतीत न होता हो और साथ ही तथाकथित नेताजन भी आँख के अन्धे और गाँठ के पूरे बनकर स्वयं आनन्द बनकर प्रजा और उसके राजस्व को उदरसात् करने में ही अपनी इति कर्त्तव्यता अनुभव करते हों तो निश्चय ही संसार की कोई शक्ति इन दोनों को विनाश के भयङ्कर गर्त्त में परिपतित होने से नहीं बचा सकती है।

स्वतन्त्र भारत अब जाग्रत अवस्था में आ गया है। सत्तासम्पन्न होकर स्व और पर की शनैः २ प्रतीति करने में भी संलग्न है। चिरकालीन अक्षमता, पराधीनता, अव्यवस्था, अनवसरता और अनभ्यास के कारण यदि अनेक जटिल, व्यामोहक और कष्टसाध्य कार्यों में इमसे त्रुटियाँ भी हो जाँय तो इसमें आश्चर्य की तो कोई बात नहीं है। वस्तुतः ऐसा न होना ही आश्चर्यजनक हो सकता है। इसलिये उत्साह, साहस, महत्त्वाकाङ्क्षा, उल्लास, दृढ़ता, धैर्य, सहिष्णुता, सममस्कता, सद्भावना, सुमति और सदाशयतादि उदात्तगुणों को अधिक-से-अधिक शासक और शासित दोनों में प्रतिष्ठित करने की विशेष आवश्यकता है, किंतु भारतीय प्रजा का कायाकल्प करने के पूर्व यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि उसमें जो २ मिथ्याचार, अनाचार रूढ़िवादजनित दुराचार, अन्धपरम्परान्स्यूत अविचार या कुविचार समाविष्ट हो गये हैं, उन सबको अविलम्ब आमूलचूल उन्मूलित करके प्रजा को इस योग्य बनाने की आवश्यकता है कि जिससे वह उदात्त आदर्श गुणों को न केवल अपने अन्दर स्थान ही देसके अपितु उनको पूर्णरूप से अपने जीवन का मूलाधार बनाने में समर्थ हो सके।

इस प्रसंग में अनायास वर्त्तमान भारत के निर्माताओं के आदि मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूरदर्शिता की सराहना प्रत्येक राष्ट्रकल्याणेच्छु को करनी ही पड़ती है। वर्त्तमान जागृति के काल में नहीं, अपितु उस पराधीनता की सूचीभेद्यतमिस्रा के कराल युग में कि जब अंग्रेजी शासन का सूर्य अपने मध्याह्नकाल में प्रखरतम अत्याचार की रश्मियों से भारत और भारतीयता को सदा सर्वदा के लिये भस्मसात् कर देने के लिये प्रचण्डता के साथ देदीप्यमान हो रहा था, तब महर्षि ने अन्य अनेक उत्कृष्ट भावनाओं और विचारों के साथ यह भी अपने ही अनुकरणीय उदाहरण से चरितार्थ किया कि उनके सांस्कृतिक और धार्मिक कार्य का केन्द्र भी हरद्वार कुम्भ ही सब प्रमुख हो सकता है। अन्तःप्रेरणा, कौपीनवान् दिव्यशरीर अलौकिक प्रतिमा अदम्य उत्साहशक्ति, निर्भय और निर्मल मन, स्थिर और प्रशान्त चित्त, विचक्षणतम बुद्धि और असाधारण शास्त्रज्ञान और इन सब के साथ पाखण्ड खण्डिनी पताका आरोपितकर विजयनाद से दशों दिशाओं को महर्षि ने हरद्वार कुम्भ के पावन पर्वकाल में केवल एक बार ही सं० १९१२ में निनादित नहीं किया, अपितु सं० १९२४ के १९३६ में भी इसी प्रकार धर्म के सदुपदेशों और मिथ्याचार के निराकरण से प्रतिध्वनित किया। यही तीन कुम्भ महर्षि के ५९ वर्ष व्यापिनी आयुष्य में हुये। देश के कोने कोने से अनायास समवेत अपार जन समूह के साक्षात् सम्पर्क में आना भी बड़े सुकृत और पुण्य का फल होता है। फिर उस महान् आत्मा के लिये कि जो अपने देशवासियों का ही नहीं अपितु प्राणिमात्र का मानरूप से कल्याण करना चाहता हो उसके लिये तो ऐसा स्वर्ण अवसर और अन्यत्र कोई हो ही नहीं सकता है अपने अनुकरणीय चरित्र से महर्षि ने पीछे आने वाले कार्य कर्त्ताओं के लिये आदर्श देश सेवा मार्ग प्रशस्त कर दिखाया।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द सरस्वती का सांस्कृतिक और धार्मिक उत्तराधिकारी है। इसलिये महर्षि के पदचिन्हों पर चलना इसका परम कर्त्तव्य है। उसके विरुद्ध व्यवहार करते रहना घोरकृतघ्नता और धर्म भीरुता है। सुयोग से आगामी वैशाख मास में इस बार हरद्वार में पूर्व की भांति कुम्भ का महामेला होगा। इसमें स्वतन्त्र भारत के लाखों नर और नारी देश के कोने कोने से एकत्रित होंगे। नाना धर्मों और अनेक भाषाओं को जानने वाले आस्थावान्, श्रद्धालु धर्मप्राण आर्य हिन्दुओं को किन शब्दों, संगीतों, भजनों, व्याख्यानों, उपदेशों, कीर्त्तनों, प्रकीर्त्तनों, सत्सङ्गों, प्रवचनों, कथाओं, यज्ञों, यागों, सभाओं, समितियों, गोष्ठियों, सम्मेलनों, महासम्मेलनों और परिषदों में आर्यसमाज अपना सन्देश, विचार, भावना, उपदेश, प्रेरणा अथवा स्फूर्ति प्रदान कर सकेगा, इसकी प्रतीक्षा अपार जनसमूह सतृष्ण नेत्रों से पाखण्ड खण्डिनी पताका की भांति हेरने का सदुद्योग करेगा। किस प्रकार आर्यसमाज के अग्रणी विचारक स्वतन्त्र भारत के आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रश्नों का साधु समाधान करने में सफल होगा, इसकी प्रतीक्षा व्यापक देश का जनसंघ करेगा। संगठितरूप से आर्यसमाज कुम्भ भर क्या कर सकेगा यह प्रश्न है?

———

२६-२७ जनवरी सार्वजनिक छुट्टी रहेगी

नयी दिल्ली, १६ दिसम्बर। भारतीय पार्लियामेन्ट में एक प्रश्न के उत्तर में प्रधान मन्त्री ने बताया कि नये विधान के अनुसार भारतीय जनतंत्र के उद्घाटन समारोह के सिलसिले में २६ व २७ जनवरी को सार्वजनिक छुट्टी रहेगी। कार्यक्रम में राष्ट्रपति का शपथ ग्रहण, तोपों की सलामी, राष्ट्रपति की सवारी राशनों तथा प्रीतिभोज आदि हैं।

प्रांतीय सूचना तथा अर्थविभाग श्री सम्पूर्णानन्द जी को सौंपे गये

लखनऊ, १६ दिसम्बर। विश्वस्त रूप से पता चला है कि शिक्षा मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द को सूचना विभाग एवं अर्थ विभाग का कार्य-भार फिर सौंप दिया गया है

स्मरण रहे कि भूतपूर्व अर्थ एवं सूचना मन्त्री श्री श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल के त्यागपत्र दे देने के पश्चात ये दोनों विभाग स्वतः प्रधानमन्त्री पन्त जी के पास आ गये थे।

नवम समुल्लासान्तर्गत भौतिक शब्द

ले० गंगा प्रसाद उपाध्याय

इस शीर्षक का एक लेख श्री लक्ष्मण दत्त पाठक जी लिखित १ दिसम्बर १९४९ के आर्य मित्र में पढ़ा। लेख विद्वत्तापूर्ण है। परन्तु मैं उससे सहमत न हो सका। श्री स्वामी जी महाराज के सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार छपा है:—

यह सूक्ष्मशरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुणरूप हैं यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। यहाँ हमने "दूसरा" और "और भौतिक" दो शब्दों को अपनी ओर से रेखाङ्कित कर दिया है। क्योंकि यही विषय विवादास्पद हैं। हम ने श्री पाठकजी के शाङ्कर भाष्य और वात्स्यायन भाष्य के उदाहरण भी पढ़े।

मेरा विचार है कि सत्यार्थ प्रकाश के लिखने अथवा छापने में भूल अवश्य हुई है। "अभौतिक" के स्थान में 'अ' के बजाय "और" हो गया है। यह भूल ग्रन्थकर्त्ता की नहीं, लेखक की हो या मुद्रक की। समस्त उद्धरण को पढ़िये। जब "भौतिक" को "एक" कहा तो "दूसरा" अवश्य ही "स्वाभाविक" होगा, और उसको "अभौतिक" तो कहेंगे। 'और' शब्द की आवश्यकता नहीं है। प्रचलित समस्त उद्धरण भोंडा और अस्वाभाविक लगता है। एक बार पढ़ने से ही पढ़ने वाले को शङ्का हो जाती है। कि "दूसरा और भौतिक" यह बेमेल से जोड़ वाक्य कैसे बन गया।

एक बात और सोचिये। यदि मुक्ति में भी वही भौतिक सूक्ष्म शरीर रहता है जिस का "जन्ममरणादि में जीव के साथ" रहना बताया गया है तो वह कौन सी अवस्था होगी जिसमें भौतिक सूक्ष्म शरीर न रह "अभौतिक" ही रहे। क्योंकि बन्ध और मोक्ष के अतिरिक्त तीसरी अवस्था तो कल्पना में नहीं आ सकती। यह ठीक है कि बिना भौतिक शरीर के जीव दुःख नहीं भोग सकता परन्तु 'मोक्ष सुख' साधारण सुख और दुःख से सर्वथा भिन्न है। हमारे साधारण सुख दुःखों का मान किसी न किसी भौतिक अवस्था से अवश्य ही सम्बद्ध होता है। जैसे दूध पीकर मिठास का अनुभव करना, किसी मित्र का स्मरण करके सुख की भावना करना या किसी भविष्य में प्राप्त होने वाली सफलता का अनुमान करके सुख मानना। परन्तु "मोक्ष सुख" जिसको परम आनन्द कहते हैं भौतिक अवस्थाओं और भौतिक कारणों से अलग होना चाहिये। 'अभौतिक' के स्थान में "और भौतिक" हो जाना साधारण सी भूल है। लेखकों और छापने वालों के लिये यह कोई अपूर्व बात नहीं। ऐसी भूलें प्रतिदिन देखने में आती हैं। स्वयं मेरी पुस्तकों में बहुत सी ऐसी अशुद्धियाँ छप गई हैं जिन को देखकर आश्चर्य होता है। परन्तु यह भूलें प्रसङ्ग से शीघ्र ही स्पष्ट हो जाती हैं। क्योंकि ग्रन्थकर्त्ता की पुस्तक को पढ़कर उसके भावों को समझ लेना कठिन नहीं होता।

यह ठीक है कि स्वामी जी महाराज की पुस्तकों को सुधारना अनधिकार चेष्टा है। परन्तु भूलों की उपेक्षा करने से भी तो ऋषि के मन्तव्यों के साथ न्याय का व्योहार नहीं होता। मुद्रण यन्त्र किसी लेखक का मान नहीं करता चाहे वह छोटा लेखक हो या बड़ा। असावधानी और भूल दोनों साधारण सी घटनायें हैं। यह हुई, होती हैं और होंगी। अतः टिप्पणी तो लगाई जा सकती है। श्री पाठक जी ने जिसका (+) धन का चिन्ह पढ़ा है वह यदि किसी पुस्तक में टिप्पणी सूचक चिन्ह रहा होगा। वेदान्तदर्शन के चौथे अध्याय के चौथे पाद में जो ११ वों और १२ वें सूत्रों का प्रमाण दिया है वह तो "अभौतिक" का खण्डन नहीं करता। "द्वादशाहवदुभयविध बादरायणोऽतः" वे (४।४।१२) से तो यही प्रकट होता है कि बादरायण ने दो कथनों का सामञ्जस्य सिद्ध किया है। अर्थात् बादरि के अभाव और जैमिनि के 'भाव' में अन्तर नहीं बात एक ही है दोरूपों में कही गई है।

"साहित्य का आदर्श"

(श्री ओजो मिश्र शास्त्री)

यद्यपि साहित्य की परिभाषा में उन्नत मानव ने आज तक कोई निर्णय नहीं कर पाया, तथापि हम उसके स्वाभाविक निरुक्ति द्वारा उसके परिचय में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करते।

"शब्दश्चार्थश्चेति सहितौ तयोर्भाव साहित्यम्" अर्थात् सदा एक साथ रहने के कारण शब्द एवं अर्थ का पर्याय ही सहित रखा गया है। उन दोनों के भावाकुल विस्तार का नाम साहित्य है। दूसरे शब्दों में 'हितेन युत सहितस्तस्य भावस्साहित्यम्" हित से युत वस्तु का नाम साहित्य है। हमें इस शब्द की व्युत्पत्ति द्वारा यही प्रतीत होता है कि अर्थयुत शब्दों के भावाकुल समुदाय को जो कि समाजहित से पृथक न हों साहित्य कहते हैं। इस दृष्टिकोण से यदि हम साहित्य की उपयोगिता की ओर दृष्टिपात करते हैं तो यही विदित होता है कि साहित्य को मानवसमाज का हितकारक होना चाहिए। कारण मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका वैयक्तिक हित भी सामाजिक हित पर निर्भर है। समाज यदि सुदृढ़ सुनियन्त्रित होगा तो उसका एक एक अवयव शांति सम्पन्न होगा। यदि समाज अनियन्त्रित स्वेच्छाचारी हो तो उसका अवयव अशांति युत होगा। व्यक्ति और जाति का समवाय सम्बन्ध है। एक का हिताहित दोनों पर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता। ठीक इसी प्रकार साहित्य की उपयोगिता समाज एवं व्यक्ति पर प्रभाव रखती है। अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त साहित्य की विशेषता ही है। क्योंकि विद्वानों के कथनानुसार साहित्य समाज के मस्तिष्क का भोजन होता है। यदि भोजन दूषित है तो उससे शरीर भी व्याधि मन्दिर बनेगा। यदि भोजन गुणकारी है तो शरीर पर उसका प्रभाव होगा। उसी प्रकार यदि हमारे समाज के मस्तिष्क का भोजन उचित होगा तो हमारा समाज भी उन्नत पथ पर अग्रसर होगा। यदि कुभोजन हुआ तो मस्तिष्क दूषित होने पर सम्भव दशा पाठक ही विचारें। अब आइये। कैसा साहित्य समाजोपयोगी हो सकता है, इस पर विचार करें। विद्वानों के कथनानुसार "साहित्य समाज का दर्पण होता है।" इस उक्ति पर ही विचार करते हैं तो साहित्य की प्रवृत्तियाँ ही हमें बताती हैं कि किस प्रवृत्ति द्वारा समाज ने कौन सी अवस्था प्राप्त की। जब तक हमारा वैदिक साहित्य अपने यथार्थ रूप में विद्यमान था, उस समय हमारा समाज उच्चशिखर पर विराजमान था। जिस काल का स्मरण हमारे बड़े २ कवियों ने किस प्रकार किया:—अनुर्वेदी न्यस्त समस्त वाङ्मयैः, ससारिकैः पिञ्जर वर्तिभिः शुकैः। निगृह्यमाणावटवः पदे पदे, यजूंषि सामानि च यस्य शङ्किताः। उसके पश्चात् महीधरादि द्वारा जो साहित्य दूषण हुआ उसका अनुभव समाज सिर पकड़े आज तक कर रहा है। भक्तिकाल में भक्ति साहित्य ही कारण है। राजाओं को विषय वासना में मग्न करने वाला रीति काव्य था। आज स्वतन्त्रता की ओर प्रेरित करने वाला स्वामी दयानन्द एवं भारतेन्दु रचित साहित्य ही भारत के मस्तिष्क का भोजन हुआ था।

यद्यपि बहुत से साहित्यकों का कहना है कि साहित्य में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् तीनों की आवश्यकता है, तथा इसी विचार को लेकर मनुष्य की सभी उचित या अनुचित अनुभूति को रखना उचित समझते हैं, परन्तु उन्हें कविवर पन्त के वाक्य पर ध्यान देना चाहिए, जो उन्होंने अपनी कविताओं में कला के अभाव के आक्षेप के प्रत्युत्तर में कहा था। "वह शराब पीता है" यह भी सत्य है। शराब नहीं पीना चाहिए यह भी सत्य है। एक कार्य का सत्य है एक उपयोगिता का" (आधुनिक कवि-भूमिका) आप ही विचारें कौन सा सत्य उपयोगी है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य को समाजोपयोगी होना चाहिए। यही उसका आदर्श है।

———

ग गा की धा रा में

ले०—श्री राजे

"अन्ध विश्वास" कहें या "वज्रमूर्खता" जिनका कि भारत के पतन में प्रमुख भाग है। जो आज भी अपना अस्तित्व सुरक्षित किये हुये हैं।

'नया जीवन" में प्रकाशित श्री राजेन्द्र यादव का लेख इसी प्रकार की एक विशेष धार्मिक कही जाने वाली मनोवृत्ति पर प्रकाश डालता है। उपयोगी होने से यहाँ दिया जाता है। —सम्पादक

"पुजारी जी चलेंगे नहीं, आरती का समय हो गया है।" नीरा ने शलवार के पायचों को घुटनों तक उठा लिया फिर सीढ़ी पर खड़ी होकर एक पैर से पानी लेकर दूसरे को रगड़ने लगी। लहरें लेती हुई गंगा बही जा रही थी, सीढ़ियों को चूमती सी। नीरा की गोरी पिंडलियों पर अस्तोन्मुख सूर्य की स्वर्णाभ रश्मियाँ खेल रही थी।

"चलो तुम।" मैने अन्यमनस्क से स्वर में कहा। सूरज का पीलापन लहरो पर झूल रहा था -सामने लम्बा पुल है, इठलाता-सा, उसके पीछे ऊँचे पहाड़ दूर तक धुंधले। हवा बन्द सी है, आकाश पर लौटे हुए दो चार पक्षी चहचहा उठे हैं—मेरे पीछे कोलाहल बढ़ रहा है, हर की पैड़ी का पुण्य लूटने साधुओं और मुमुक्षुओं की टोलियाँ आ रही हैं गगा जी की आरती का समय है। गंगा तरल पारे की तरह कापती है। सीढ़ियों पर बैठा हुआ मैं कुछ भावुक सा हो उठा हूँ। मेरे पैर लहरों में शीत से खेलते हैं—विचार उठते हैं, जैसे लहरें ·· ~

"चलते नहीं" और नीरा मुंह हाथ धोकर दुपट्टे से पोंछती हुई मेरे पास आ कर खड़ी हो गई है।

"क्या सोचते हो तुम तीन दिन से? और नीरा मेरे कन्धे पर हाथ रखकर चुपके से मेरे बगल में सटकर बैठ गई है, धीरे से अपने पजे उसने पानी में डाल दिये हैं। मेरे कन्धे से सिर टिका कर वह स्वय भी कुछ सोचने लगी है। यह नारी मुझसे सटकर बैठी हुई है, पीछे से अगणित आंखें शायद कौतूहल पूर्ण उत्सुकता से मुझे घूर रही होंगी—मेरा शरीर रोमाचित होना चाहिये, एक मधुर कम्पन से मेरी उभरी शिरायें तने तारों की भांति काप, लरज उठनी चाहिये पर नहीं, मेरे अन्दर कुछ नहीं हो रहा - हृदय में मेरे दुर्दम्य प्यार का ज्वार फूट कर भर रहा है—दुर्निवार स्नेह की धारा। पर लगता हैं हरद्वार के महान कोलाहलपूर्ण घाट पर न बैठकर मैं कहीं एकान्त में बैठा हूँ—अखण्ड निस्तब्धता का राज्य अपनी समस्त पूर्णता से प्रभावित हो उठा है। अन्धकार शनै शनै आकाश के कोनों से उतरता है।

यह नीरा? न जाने क्यों मुझे इससे इतना स्नेह हो उठा है—इन तीन दिनों में। जैसे मैं इससे बहुत दिनों से परिचित हूँ और केवल मेरे आश्रय के लिये, मुझे इस सत्य का ज्ञान कराने के लिये ही वह अपनी आयु के वर्ष पर वर्ष फांदती चली आ रही है।

नीरा कहती है, मै दो तीन दिनों से सोचने बहुत लगा हूँ, सोचना हाँ, मै सोचता हूँ, क्योंकि नीरा ने मुझे झटका दिया है इतना सबल कि मैं अपने को संभाल नहीं पा रहा हूँ—मेरी सारी मान्यतायें, आशायें, कांपती डगमगाती हैं। नीरा ने मुझे प्रेरणा दी है कि मैं सोचू।

—मैं सोचूंगा, खूब सोचूंगा, मुझे सोचने दो।

और क्यों न सोचूं? आज तक जड़ पत्थर की भांति जीवन को घसीटता लाया हूँ -सोच नहीं पाया, कहाँ, कैसे क्या। अब जब विचारों में उत्तेजना हो उठी है, मानस में प्रबल आलोडन हो चुका है, तो मुझे विचार करलेने दो। दिन भर कुछ भी करने को मेरे पास नहीं रहता, केवल खिड़की में बैठ जाता हूँ, घाट को देखता हूँ या आने वाले आदमियों को, केवल सन्ध्या का स्त्रियों को आरती करनी होती है। चित्र विचित्र सूरतें, अद्भूत व्यापार मुझे यहा दिखाई देते हैं। खिड़की के सामने ही वह द्वीप सा है, जिस हर की पैड़ी से दो चौड़े पुल मिलते हैं। उस पर घाट बने हैं, बीच में 'क्लाक टावर' है। हर की पौड़ी और इस द्वीप के बीच में केवल एक तालाब सा रह गया है। यही बैठा मैं बस देखा करता हूँ श्रद्धा विह्वल, भक्ति गद्गद् यात्री किस प्रकार दूर से गगा जी को प्रणाम करते हैं, आदर और सकोच के साथ अपना पैर पानी में डालते हैं और किस प्रकार सम्भल सम्भल कर वह नहाते हैं, जैसे यह गंगाजल नहीं दूध हो, गुलाबजल हो और फिर कैसी आतुर डुबकिया वे लोग लगाते हैं, जैसे एक एक डुबकी में समस्त जीवन की कमाई वसूल हो रही हो। इस पानी को कोई उनसे छीने लिये जा रहा हो—शायद यह फिर नहीं मिल सकेगा, कभी नहीं। "पुजारी जी मुझे इन बातों मे विश्वास नहीं होता" एक दिन नीरा ने बड़े दृढ़ आत्मविश्वास युक्त स्वर में कहा था, किंचित भी झिझक उसकी वाणी में नहीं थी, कि कैसी बात वह गगा के पुजारी से कह रही है। अवसाद की कालिमा उसकी मुद्राओं में साकार हो गई थी, मुझे लगा, बड़ी कठिनाई से वह अपने आसू रोक पा रही थी—यह भूखी नारी "···"स्नेह प्यार और वात्सल्य की भूखी।

"चलो पुजारी जी, कोई बुलाने आता होगा।" सोच्छ्वास जैसे नीरा ने मेरे कान में कहा। कुछ क्षणो मे यह प्रमाद अन्धकार धरती पर उतर आएगा और यह नाम रूपात्मक जगत पहेली बना सा मनुष्य के भाग्य पर हंसेगा-- बुद्धि को चुनौती देगा।

विश्वास?—हां, मेरा विश्वास भी कभी इन बातों में प्रबद्ध नहीं हो पायेगा। जब मै देखता हूँ कि आखों के ये अन्धे कभी डरते कांपते से अकेले या जोड़े से डुबकी मारते होते हैं, या हरे दोने में फूल पत्ती लिये वे श्रद्धांजलि चढ़ाते हैं, तो न जाने क्यों मुझे इनकी वज्र मूर्खता पर हसी आती है। तीर्थ पुरोहित और पण्डे, जब इन्हें पानी मे खड़ा करके मरणासन्न बछिया की पूंछ इनके हाथों में पकड़ाकर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि यह उन्हें वैतरणी के पार इस प्रकार डाल देगी, जैसे यह गाय नहीं कोई मगर हो? फूलों का दोना हाथोंमे थमाकर जब वे प्रत्येक बात में "समर्पयामि नम," को सवा रुपयामी नम.' कहकर मालकामी से कई सवा रुपये ले लेते हैं, तो जैसे स्वर्ग के फाटक की छोटी खिड़की व्यक्तिगत रूप से इनके लिये खुल जाती हो! तो क्या यहाँ भी पगड़ी चलती है। गगा के किनारे बहुत कुछ होता हैं, कभी-कभी मै इनके ऊपर सोचने लगता हूँ, यह रुपये की, धन की समय की बर्बादी केवल इसलिये कि भविष्य में परलोक मे सुख मिलेगा—स्वर्ग। ये बड़े बड़े सेठ, नेता अफसर सब यहां यही रिश्वत देने आते हैं कि यहा की भाति परलोक में भी उनके लिये अच्छे से अच्छा स्थान 'रिजर्व' हो। हमारे सामने जो कुछ है उससे भी अधिक अच्छा है, सुन्दर स्थाई पाने की वासना—तृष्णा! हे भगवान् कैसी माया है यह सब? क्या इनका यह व्यसन–रिश्वत देने और लेने का कभी इस जन्म में छूट जायेगा?

मन्दिर की खिड़की में बैठा मैं देखता रहता हूँ बड़े बड़े छातों का तम्बू सा डाले हुए पण्डित किस प्रकार चन्दन लगाते हैं, यहाँ पर बैठने वालों से चलते समय पैसे ले लेते हैं, किराया, उस पवित्र स्थान पर बैठने का। ये लोग मालिक हैं न, इन धर्म स्थानों के। खैर इतनी है कि किराया लेते समय ये लोग अधिक लड़ते नहीं। मथुरा के तगड़े चौबे तो, मैंने देखा डण्डा लेकर बाह चढ़ा कर चढ़ आते हैं—'दो रुपये माता जी तुम्हें देने ही होंगे!" और कभी बड़ी खुशामद से कहते हैं -"भक्त दो चार सेर लड्डू तो हम बिना सांस लिये खा जायें, पाच सेर खिला के भी देखलो जो जरा भी रुकें!" किन्तु ये लोग केवल इकन्नियों पर ही सन्तोष कर लेते हैं! और खाली समय में बैठे ताकते रहते हैं, कौन किस प्रकार नहाता है। और स्त्रियां जब घाट पर बैठी नहा रही या डुबकिया लगा रहीहोती हैं तो वासना की ऐसी लाल लपटों की झलक मैंने इनकी आंखों में देखी है कि मेरा मस्तिष्क भन्ना गया है और यही क्यों यहा आने वाला प्रत्येक पुरुष, आंख बचा या निर्लज्ज होकर यौवन की इस उद्दाम गगा को लालयित दृष्टि से देखता हैं। कभीकभी मैं सहानुभूति पूर्वक सोचता हू ये लोग क्यों देखते हैं। स्त्रियों का शरीर आखिर है क्या? और मैने इन स्त्रियों की ओर स्वय देखा। एक महीन कपड़ा पहने हुए वे गगा में नहाने उतरती है। हिचकती सी ठण्डे पानी से सिहरती सी फिर ऐसी डुबकी लगाती हैं कि बस। और उस समय वह महीन कपड़ा। जैसे पारदर्शी शीशा बन जाता है, एक-एक रोआं, मस्सा स्पष्ट देखलो। कभी कभी भ्रम होता है वे दिगम्बर वेश में तो नहीं नहा रहीं। घृणा, ग्लानि क्षोभ और वितृष्णा की एक ऐसी उबकाई सी उठती है कि फिर उधर देखा नहीं जाता। क्या धर्म का यही उद्देश्य है? स्त्रियां क्या जान बूझकर इसलिये आती हैं—छि छि और घृणा की एक फुरहरी-सी मेरे सारे तन को झकझोर गई है।

"पुजारी जी, अन्धेरा घना होगया

है, भीड़ बढ़ रही है।" नीरा ने मेरे कन्धे को सहसा चौंककर झकझोर दिया है।

इस अन्धेरे और आरती की ओर अवज्ञा का भाव दिखाकर मैं केवल थोड़ी सी गर्दन घुमाकर उस ओर देखता हूँ, अरे नीरा की आखों में आंसू हैं? और मेरा हृदय मसलकर रह गया है।

यह नीरा?—कितनी व्यथा अपने अन्दर यह छिपाए हुए है, शायद इसका एक कण भी मुझे भस्मीभूत कर देता, पर नीरा, तू उन दहकते अंगारों को हृदय में समेटे, जब मुख पर करुण मुस्कान की रेखा खींचती है तो मुझे लगता है जैसे उत्तप्त सलाख से कोई मेरे मर्मस्थल को छेद रहा है। कैसे यह अनजान नारी अप्रत्याशित रूप से मेरे जीवन से उलझ गई कि मुझे लगता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ, इसके अणु अणु से मैं परिचित हूँ और इसने बिनाजाने बूझे अपने सारे विश्वास को मेरे ऊपर क्यों आधारित कर दिया है। क्या यह नहीं जानती है, मैं विश्वासघात भी कर सकता हूँ। ओं नीरा! मैं पुजारी हूँ, धर्म का ठेकेदार हूँ धर्म मेरा कवच है, मैं सब कुछ कर सकता हूँ—सब कुछ करते देखता हूँ, सब कुछ किया है। फिर यह तेरा भोला विश्वास! उसदिन जब मन्दिर में कोई नहीं था, यह नीरा न जाने कहां से झपटती सी आकर मन्दिर की देहली पर सिर रखकर फूट पड़ी थी, फिर दोनों हाथों से मुँह ढापे मूर्ति के पास बिखर गई!

"माई पीछे हट जाओ।" मैंने कहा, न जाने हृदय में कैसा होने लगा।

यह नहीं हटी। दोबारा कहने का मेरा साहस नहीं होरहा था। वह बिलख-बिलखकर रोती रही। मुझे लगा मेरे अन्दर भी कुछ पिघलकर बहने को आतुर हो उठा है। यह एक नवीन बात आज क्यों हो रही है। इस अपरिचित नारी का रुदन मुझे क्यों विचलित किये देता है।

'जाओ, माई जी, यहां क्यों रारहो हो।" बड़े उच्छृंखल स्वर में मैंने कहा। थोड़ी देर पश्चात् उसने मुंह उठाकर मेरी ओर देखा 'कहां जाऊं पुजारी जी?" उसकी आँखों में लाली और अन्तस्तल के सिरे तक घुस जाने वाली दृष्टि थी।

"क्या, यहां कहां आई हो?" मैं मन्दिर के अंगने में चौखट स पैर अड़ाकर बैठ गया था—"कहाँ से आई हो?

वह खड़ी होगई, उठी और फिर जंगले के पास फर्श पर आकर ही बैठ गई—सिसकती सी बोली—"मेरठ जिले से आई हूँ।"

'कहां?' मैंने उसकी ओर देखा, वह बिल्कुल मेरे पास नीचे बैठी थी।

"गंगा जी की गोद में।" दृढ़ और आत्म विश्वास से उसके ओंठ हिले—"पुजारी जी, मेरे भाग्य के तारे गंगा की गोद में सोगए, अब मैं आई हूँ।"

मैंने गर्दन झुकाकर देखा, बीस-बाईस वर्ष की आयु गोरा और सुन्दर मुख, अवसाद को उसके ऊपर अपरिहार्य मुहर। आकर्षक लाल सूजी हुई आंखें रह रहकर फड़क उठने वाले ओंठ। सब के ऊपर एक धूमिल और सरल अभिव्यंजना। मेरे अन्दर धूप बत्ती के धुएं की भांति बलखाता-सा कुछ उमड़ने लगा। यह अस्वाभाविक उद्विग्नता क्यों मुझे आज अपने अन्दर अनुभव होरही है? ओठ को दांत से भींचकर सुन्दर घाट से पार पुल और पर्वत की ओर देखते हुए मैंने कहा—"तुम्हारी कामना पूर्ण होगी माई!" उस समय मैं ध्यान नहीं दे सका इस स्त्री की किस कामना पूर्ति के लिये मैं कह रहा हूँ।

उसने विस्मय से मेरी ओर कुछ देर देखा, फिर धीरे से हंस दी -"पुजारी जी, मैं बहुत दुखी हूँ।"

"तुम? तुम्हें क्या दुख है मां?" एक दम चौंक कर मैंने कहा और जब अपनी शुभकामना पर मेरा ध्यान गया, तो मैं सकुचित हो उठा, शीघ्रता से हकबका कर बोला—"तुम्हारा नाम क्या है?"

"नीरा!" बहुत लज्जित उसने कहा फिर एक दम बहुत गम्भीर होगई। "यहां कहां, आई हो?" अन्यमनस्क सा प्रश्न मैंने किया।

"कहीं नहीं, घर से निकाल दिया है, बेघर हूँ।" उसकी वाणी विह्वल होगई फंसे हुए गले से बोली—"पुजारी जी, मारकर और पीटकर मुझे घर से निकाल दिया है!"

"क्यों?" आज तक किसी भी स्त्री-युवा से ऐसी बातें मैंने नहीं की इतना मैं बोल नहीं पाता, लजाता हूँ, पर अब न जाने कौन बे झिझक मुझसे यह सब बातें पुछवा रहा था।

"क्यों" बड़ी गहरी सांस उसने ली—"क्योंकि मैं स्त्री हूँ, धर्म की चक्की ने मुझे पीस दिया है!" फिर थोड़ी देर तक चुप रही, धीरे-धीरे अन्दर के न जाने किस गहरे से उसने बोलना प्रारम्भ किया—"पन्द्रह वर्ष की आयु में मेरा विवाह हुआ, न जाने कितनी आकांक्षायें लेकर मैं आई थी, किन्तु दो वर्ष तक उचित अनुचित सब कुछ करने पर भी मेरे कोई सन्तान नहीं हुई। 'उनकी' मां ने मानता मनाई हे गंगा माई, पुत्र तुझे भेंट दूँगी। ढाई वर्ष फिर बीत गए और तब कहीं जाकर एक पुत्र हुआ। तुम्हें क्या बताऊं पुजारी जी कैसा चांद का टुकड़ा-सा वह था, पर माता जी ने बताया कि गंगा जी की मुर्दिमां का वह फल है। मैंने उनकी बात को निर्विवाद स्वीकार कर लिया, पर जब गंगा की भेंट चढ़ाने की बात आई, तो मेरी छाती कांप उठी पर मेरा वहां क्या वश था। एक बड़े पर्व पर हम सब लोग गढमुक्तेश्वर गए। बहुत पूजा पाठ के पश्चात् गंगा जी में कुछ गहरे में उन्हें खड़ा कर दिया, उन की गोद में मुन्ना था, कैसे सुनहरे बाल कोमल शरीर। पुजारी जी, गंगा का पानी बड़ा ठण्डा था, कुछ दूर पर तीर्थ पुरोहित खड़ा होगया, फिर पुरोहित ने उनसे मुन्ने को गंगा में फेंकने को कहा, मैं रोने लगी घाट पर। माता जी ने एक घुटना मेरा पीठ पर मारा गालियां दीं, मुंह में पल्ला ठूसे मैं बैठी रही। मुन्ने को उन्हों ने उछालकर फेंका, धार पर वह पड़ा और अदृश्य होगया। पुरोहित उधर उत्सुक लपकने के लिये खड़ा था कि जैसे ही वह उछले, वह पकड़ ले! ओह पुजारी, वह खेल कितना भयकर, कितना दुःसह, कितना लम्बा था! आँखें मेरी फटी जारही थी कि मुन्ना अब उछलता है, अब उछलता है, पर वहां कुछ नहीं हुआ—एक पल, दो पल, तीन पल—पर वहां कुछ भी नहीं? मुझे होश नहीं रहा, एक चीख के साथ मैं बेहोश हो गई। फुंफकारती हुई गंगा की लहरें उन दोनों के बीच से भागी जारही थी। और वे निस्तब्ध निश्चल खड़े थे। तब गहरी सांस खींचकर पुरोहित सीधा हुआ-"दुख न करो बाबू! गंगा माई ने तुम्हारा पुत्र स्वीकार कर लिया, तुम सौभाग्यवान हो, अब दान दक्षिणा करो कुछ?" मुझे नहीं मालूम फिर क्या हुआ। घर आए भीतर उन लोगों के क्या होरहा था, वे ही जानें पर बाहर बड़ा सन्तोष था, गंगा ने पुत्र स्वीकार कर लिया है, भगवान और देगा। उस दिन न जाने कहां से आकर विद्रोह की चिनगारी मेरे भीतर भभक उठी। [illegible] हत्या थी और जान बूझ कर की गई। एक दुख था जो मेरी सारी नसों में समाकर रह गया था। मुझे ज्वर भी आया। कुछ दिनों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

भूमिधरी अधिकार

—श्री चौ० चरणसिंह, सभासचिव युक्तप्रांतीय सरकार—

कुछ हलकों में यह गलतफहमी है कि संयुक्त प्रान्त के देहाती क्षेत्रों में इतनी पर्याप्त मुद्रा नहीं है कि किसान भूमिधरी अधिकार प्राप्त कर सके। किन्तु वास्तविक स्थिति क्या है ?

साप्ताहिक "इंडियन फाइनेन्स" में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार २५ नवम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में भारत में कुल १,०७,५३९ लाख नोट प्रसार में थे। इस पत्रिका ने रुपयों के सिक्कों की संख्या नहीं दी किन्तु सितम्बर १९४९ की 'रिजर्व बैंक आफ इंडिया बुलेटिन' से यह पता चलता है कि जुलाई १९४९ में १४,६७५ लाख रुपये के सिक्के प्रसार में थे। चूंकि उसके बाद सिक्कों की कोई बड़ी वापसी नहीं हुई अतएव समस्त मुद्रा १२२,२१४ लाख रुपए या इसी संख्या के आसपास मानी जा सकती है।

इस बात के ठीक आंकड़े उपलब्ध नहीं है कि संयुक्त प्रान्त में कितनी संख्या में मुद्रा प्रचलित है और न रिजर्व बैंक आफ इंडिया ही इस विषय पर कुछ प्रकाश डाल सका है। यह मानते हुए कि हमारा प्रान्त सामान्य रूप से समृद्ध है, देश की कुल मुद्रा में समस्त देश की आबादी और अपने प्रान्त की आबादी के अनुपात से इस प्रान्त के अंश का अनुमान मालूम किया जा सकता है। सन् १९४८ ई० में जन गणना कमिश्नर द्वारा प्रकाशित जनरल के अनुसार इस प्रान्त की जन संख्या ५८,५२१ हजार थी। जब जबकि भारतीय संघ की जन संख्या ३,३७,२११ हजार थी। इस प्रकार १:५.८ का अनुपात आता है। अतएव जन संख्या के आधार पर हिसाब लगाने से संयुक्त प्रान्त में २१०,७१ लाख मुद्रा है। देहाती क्षेत्र में उपलब्ध मुद्रा का अनुमान करने के लिए हमारे पास फिर कोई ऐसा तथ्य नहीं है जो निर्विवाद हो, फिर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे कुछ अनुमान लगाया जा सकता है और जो किसी सीमा तक निर्णायक हैं। पिछली जन गणना के अनुसार जन संख्या का १३ प्रतिशत नागरिक क्षेत्रों में, जिनमें नगर टाउन एरिया शामिल हैं, रहता है। इस जन संख्या को कानूनकारी कुर्बान पर, जो नागरिक क्षेत्र के बाहर पड़ती है, जमींदारी विनाश भूमि व्यवस्था बिल लागू होता है। अतएव जिस नागरिक जन संख्या को जमींदारी उन्मूलन से सीधा सम्बन्ध नहीं है वह १० प्रतिशत से अधिक नहीं है। शहरों में कुछ ही लखपती हैं किन्तु अधिकांश जन संख्या मजदूरों या छोटे-मोटे व्यापारियों की है जो गावों के किसानों की ही भांति खुशहाल या फटेहाल है। फिर भी यदि हम यह मान लें कि सामान्य नागरिक गांव वाले की अपेक्षा तिगुना समृद्ध है तो दोनों के बीच कुल मुद्रा के विभाजन का अनुपात १०×३ या ३०:९० है अर्थात् शहरों में ५,२६८ लाख और गावों में १५,८०३ लाख मुद्रा है।

किसान की बिक्री वाली अतिरिक्त उपज के मूल्य से भी इसका अनुमान लगाया जा सकता है। सन् १९४८-४९ के कृषि उत्पादन का कुल मूल्य ८६,३४३ लाख रुपए था और बिक्री वाले अतिरिक्त उत्पादन का मूल्य २८,७८६ लाख रुपए था। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसी अन्य वस्तुएँ हैं जिसके लिए देहाती क्षेत्रों को काफी मुद्रा प्राप्त होती है उदाहरणार्थ पशु, मिट्टी के बर्तन, करघे से बने कपड़े, कुटीर उद्योगों की अन्य वस्तुएं प्रान्त में या प्रान्त के बाहर काम का मजदूरों की आमदनी। यह सत्य है कि कृषि उत्पादन, अन्य वस्तुएँ तथा श्रम का अधिकांश गावों में ही व्यय हो जाता है और साथ ही किसान अपनी आय का एक भाग शहरों में अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदने में खर्च कर देता है फिर भी विक्रय योग्य अतिरिक्त वस्तुओं का मूल्य गावों के मुद्रा प्रसार का एक ऐसा साधन है जिसका आंतरिक महत्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि शहरों में बहुत अधिक लेन देन बैंकों की "डिमांड" और टाइम डिपाजिट द्वारा होता है और इसके लिए सिक्कों और नोटों की न तो आवश्यकता होती है और न उसका व्यवहार ही होता है जब कि गावों में यह सुविधा प्रायः है ही नहीं और नोट और सिक्के ही एक के हाथ से दूसरे के हाथ जाते है। अतएव यह स्पष्ट है कि गावों में नोटों और सिक्कों का अनुपात कहीं अधिक है जैसा अन्य तथ्यों से सिद्ध हो सकता है। 'इंडियन फाइनेन्स' के अनुसार भारत भर के सूचीबद्ध बैंकों का नकद डिपाजिट १८ नवम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में केवल ३,३२२ लाख रुपया था। शेष १,१८ ८२८ लाख रुपया लोगों के पास था।

इसके अतिरिक्त देहाती क्षेत्रों में बहुत अधिक सोना और चांदी है जिसका कोई ठीक अनुमान करना सम्भव नहीं। और जो शहरों में अक्सर रुपयों के लिए गिरवी रखा या बेचा जा सकता है। यदि एक बार किसान भूमि धरी के लाभ समझ ले और यह जान जाय कि इसके मालिकाना अधिकार प्राप्त करने की अवधि समाप्त होने के निकट है तो इस उपाय से भी रुपए एकत्र करने को तैयार हो जायगा। क्योंकि किसान के लिए अपनी भूमि पर स्वामित्व प्राप्त करने की कामना से अधिक कुछ भी प्रिय नहीं होता।

मुद्रा के सम्बन्ध में एक और मिथ्या वाद का प्रचार किया जाता है। उदाहरण के लिए आलोचकों का कहना है कि यदि भूमि धरी कोष का जो लक्ष्य, वास्तव में १५३ करोड़ है न कि १८० या १९० करोड़ जैसा कि बेबहुआ कहते हैं, पूर्ण से प्राप्त कर भी लिया जाय तो इससे गावों में मुद्रा शेष न रहेगी।

लेकिन लोग यह भूल जाते हैं कि खेतिहर मुख्यतः उत्पादक है जिसके परिश्रम न करने पर मनुष्य जीवित नहीं रह सकता और शहरवालों को उसके द्वारा उत्पादित को खरीदना ही पड़ेगा, अतएव प्रति दिन और अविराम गति से मुद्रा उसके पास पहुँचती है। उससे चाहे हम कितनी ही मुद्रा क्यों न खींच लें किन्तु उसके पुनः मुद्रा पाने की गति रोकी नहीं जा सकती। जिस अवधि में भूमिधरी कोष में रुपया जमा हो रहा है, उस अवधि में भी कृषि उत्पादन जैसे गन्ना, खाद्यान्न, तिलहन आदि के विक्रय मूल्य के रूप में काफी मुद्रा देहाती क्षेत्रों को चली जायगी। वास्तव में इसी धन से कृषक अधिकांशतः रुपया जमा करेंगे। उदाहरणार्थ पत्रोंमें प्रकाशित ४ नवम्बर के बाजार रिपोर्ट के अनुसार हापुड में प्रति दिन ३००० से ४,००० मन तक, मेरठमें ७००० से ८,००० मन तक और मुजफ्फर नगर में १५,००० मन तक गुड की आमद हो रही है। केवल हापुड में अब तक गुड की कुल आमद २,३०,००० मन पहुँच गई है अतएव लगभग ६ सप्ताह के भीतर हापुड तहसील के किसानों को कम से कम ५० लाख की मुद्रा प्राप्त हो चुकी है। अन्य जिलों के सम्बन्ध में भी यह बात है, जहां कोई न कृषि उपज खरीददार या सरकार के [illegible] बिकने के लिए प्रान्त भर में [illegible] वर्ष भर आती रहती है।

इस के अतिरिक्त सरकार के पास एक ऐसी योजना होती है जिससे गावों में धन पहुँचता है। जमींदारों को मुआविजे के रूप में जो रुपया दिया जायगा वह भी शीघ्र ही गावों में पहुँच जायेगा।

पूंजी शहर और गावों में आती जाती रहती है। संयुक्त प्रान्त से भी रुपया या नोट बाहर आता जाता रहता है। गावों से बहुत अधिक मुद्रा खिंच आने के कारण ऐश्वर्य तथा गैर जरूरी चीजों की मांग कम होगी और उनका मूल्य भी बहुत गिर जायगा। पड़ोसी प्रान्त हमारे बाजारों से आकर्षित होंगे और इस प्रकार हमें और अधिक मुद्रा प्राप्त होगी इस प्रान्त में अनेक तीर्थस्थान भी हैं और भारतके सभी भागों से लोग संयुक्त प्रान्त में आते हैं। वे अपने साथ बहुत अधिक नोट और सिक्के लाते हैं जिसे वे यहाँ खर्च करते हैं। इस वर्ष कुम्भ मेले में ही लाखों यात्री बाहरसे आयेंगे। इसके अतिरिक्त संयुक्त प्रान्त के लाखों मजदूर और अन्य लोग आसाम बंगाल और बम्बईमें रुपया पैदा करते हैं जो हमारे गावों में आता रहा है और आगे भी आता रहेगा।

"व्यक्ति और राष्ट्र निर्माण"

ले०—चुन्नीलाल निगम, सिद्धान्त

आज लघु से लघु तथा महान से महान कार्यों के निर्माण लिये बड़े बड़े विद्याविशारदों की युक्तियां की जाती हैं। एक छोटा भवन हो अथवा और कोई ग्रंथ, समितियां सगठित की जाती योजनाओं का निर्माण होता है। इस प्रकार जहाँ राष्ट्र निर्माण कारी योजनाओं के लिये बड़े-बड़े विशेषज्ञों की आवश्यकता अनुभव करते हैं, वहाँ इस महानतम कार्य के लिये व्यक्ति निर्माण की ओर सर्वथा ध्यान नहीं देते हैं। व्यक्ति तथा राष्ट्र निर्माण का प्रश्न वैसाही है जैसा कि "एक प्रासाद के उच्चशिखर पर पहुँचने के लिये सीढ़ियों का क्रम है, किन्तु क्रम की उपेक्षा कर एक छलांग में आखिरी मंजिल पर पहुँचना" जहाँ से जरा सा पाँव लड़खड़ाया कि नीचे चकनाचूर हो जाना कोई असम्भव नहीं?

जहाँ राष्ट्र निर्माण की बात करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि वस्तुतः राष्ट्र है क्या? राष्ट्र और व्यक्ति की व्याख्या "(भारतीय राष्ट्र का नवनिर्माण)" के लेखक महोदय ने इस प्रकार की "बसने वाले जब एक उद्देश्य पर एक हो जाते हैं, तो उसे राष्ट्र कहते हैं" और "मज्जा तथा अस्थि समूह को ही केवल मनुष्य नहीं कहते अपितु एक विशेष प्रकार के विचारों को मनुष्य कहा जाता है।"

निसन्देह राष्ट्र व्यक्तियों का एक समूह है। किसी एक राष्ट्र की महानता उस की श्रेष्ठता, व्यक्ति के सदाचार नैतिकता आदि पर ही अवलम्बित होती है। जिस राष्ट्र के लोग जितना ही सदाचार आदि के द्वारा अपने को श्रेष्ठ बनायेंगे वह राष्ट्र उतना ही महान और लोकप्रिय होगा

यही कारण है कि सदियों से दास भारत ने स्वतन्त्रता स्वल्प काल में अपने पूर्व गौरव को प्रायः प्राप्त कर लिया है। और इस महान सफलता का रहस्य इस पुण्य भूमि पर उन ऋषि महात्माओं का अवतरित होना है, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के पहले व्यक्ति निर्माण पर अधिक बल दिया है। उनके दर्शन साहित्य उनके उपदेश व्यक्ति निर्माण की व्याख्याओं से भरे हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने अनुपम ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में व्यक्ति निर्माण की समस्त व्याख्या कर दी है। विश्ववंद्य महात्मा गांधी जी के इन आशय के शब्दों को क्या कोई राष्ट्रनायक तथा नागरिक भूल सकता है "एक व्यक्ति जब बहुमत द्वारा अधिकारारूढ हो जाता है यदि वह सदाचार नैतिकता के द्वारा अपने को ऊपर न उठा सका तो निश्चय है कि वह लोक तन्त्र असफल हो कर रहेगा।

अत. समस्त वर्ग वादियो, विशेषकर आर्य साथियो से जिन के हाथो में देश का भविष्य सुरक्षित होने वाला है मेरा अनुरोध है कि इस महान कार्य के भार वहन के लिये योग्यतम व्यक्तियों के निर्माण में हाँथ बटायें, और आशा है, इस कार्य की गुरुता को देखते हुए देश के समस्त नागरिक अपने उत्तरदायित्व का भार योग्यता के साथ निर्वाह करेंगे।

गङ्गा की धारा में

(पृष्ट ८ का शेष)

विक्षिप्त सी भी रही। पर डेढ़ वर्ष पश्चात् फिर एक पुत्र हुआ। माताजी ने बताया कि गंगा जी की मानता वे फिर माने हुए है। मैंने स्पष्ट कह दिया चाहे मैं मर जाऊ गी इस बार कहीं नहीं जाऊंगी। बड़ा बवडर इस पर घर में उठा, किन्तु उनका उत्साह इस बार अधिक नहीं था, इसलिये नहीं गए, तय हो गया कि मुन्ना जब कुछ बड़ा हो जायेगा, तो इलाहाबाद, बनारस, गढ़मुक्तेश्वर इत्यादि घूमने चलेंगे। और मुन्ना चार वर्ष का हो गया। प्रयाग में कुम्भ था, हम लग गए। ओफ, कितनी भीड़ पुजारी जी! हम लोग सब जगह भीड़ में घूमें, नहाए भी। एक दिन लौट रहे थे, सहसा मेरा कलेजा धक् से रह गया—मुन्ना कहां है? मैंने उनसे पूछा वे बोले, मैंने अम्मा जी को उनका हाथ पकड़ा दिया था। भीड़ में से जब वे बाहर आई तो मैंने दौड़ कर पूछा, अम्मा जी मुन्ना कहा है मुन्ना? मैंने तुम्हे ही तो उगली पकड़ा दी थी।"

ननद ने कहा—'हां भभी, तुमने ही तो हाथ पकड़ लिया था। मुझे लगा अम्मा घूम रही हैं, ननद घूम रही है वे घूम रहे हैं। और खट से जादू के मन्त्र की भांति सारा कुम्भ आकाश में घूमता हुआ उलटा जा लटका, बड़ी तेजी से घूमता हुआ ऊपर चढ़ता गया—चढ़ता गया। छोटा होते होते एक बिन्दु सा रह गया और वह बिंदु फिर व्यापक अन्धकार। थोड़ी देर पश्चात् वह अन्धकार 'फर' से उड़ गया और मैंने देखा, उनके होंठ क्रोध से कांप रहे हैं। सारे कुम्भ को उन्होंने छान मारा, पर मुन्ना का कहीं पता नहीं लगा। पहिली बार भी रोकर मैंने ही अशकुन कर दिया था। इसके लिये मुझे कितनी यातनाएं दी हैं, कितना मारा है। और नीरा मेरे दोनों पैरों को बांहों में बांधकर फफक फफक कर रो पड़ी।

मैं बड़ी गम्भीरता से सुनता हुआ सोचने लगा था। बड़े स्नेह से सिर पर हाथ फेरा, पीठ पर थपकी दी—"बहन रो मत!" उमड़ते आंसुओं को कण्ठ में ही रोककर इतना मैं कह पाया।

वह अभागिन नारी! शायद उसे स्नेह का कण भी नहीं मिल पाया था, और भी फूट फूट कर रोपड़ी—भैया मैं उसे गंगा के पूरे किनारों पर ढूंढूंगी।—गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक!'

मैंने उसे धर्मशाला में स्थान दिला दिया है, खाने पीने की व्यवस्था कर दी है।

"पुजारी जी उठोगे नहीं, देखो रात हो गई है!" नीरा ने मुझे फिर झकझोरा, मैं गहरी सांस लेकर चौंका हूं—आंखों के आगे से सारे फिल्मी पटल अदृश्य हो गये हैं, घना अन्धकार चारों ओर छाया है, गंगा की लहरों पर भक्तों द्वारा प्रवाहित दोनों में घी के दिये बहे जा रहे हैं—जैसे आकाश में तारे! पुल के ऊपर घाट के ऊपर की बिजलियां जल उठी हैं पीछे हर की पैड़ी पर असंख्य कण्ठों से निकला कोलाहल समवेत हो गया है। वह आदमी झपटता हुआ इधर ही आ रहा है। क्या मुझे बुलाने आ रहा है? उँह!

"नीरा मेरा मन आरती करने को नहीं करता!" मैंने दृढ़ किंतु भावुक स्वर में कहा। मेरा एक हाथ नीरा की पीठ पर था—'यह गंगा का साधारण सा पानी, इस नाम पर इतनी हत्याएँ, इतने जघन्य पाप—अत्याचार—मैं पूछता हूं, बाद आ एगीं तो और नदियों के अतिरिक्त क्या गंगा, गांव घर और मनुष्य बहाना छोड़ देगी? नहीं—नहीं नीरा, मैं बहुत दिनों से देख रहा हूँ—यह मुझसे नहीं हो सकेगा—नहीं हो सकेगा।"

"नहीं भैया, मेरे लिये इतना मत करो, मत कहो! गंगा मां हैं।" अब उसने अपने दोनों हाथ मेरे गले में डाल दिये हैं और कन्धे पर झूल गई है। शायद रो रही है। ओ भोली नीरा... यह कैसा श्वांस मेरी पसलियों को फाड़कर बाहर आ रहा है!

दूसरे दिन सारे हरद्वार में चर्चा थी हरद्वार के प्रसिद्ध पुजारी सहसा पागल हो गए। कल आरती के समय वे कुछ उदास और बहके से थे। जब आरती जलाकर उन्होंने ग[illegible] उनके हाथ कांप रहे थे। फिर एक दम उन्होंने जोर से आरती को गंगा की धारा में फेंक दिया और चिल्लाते हुए सीढ़ियों के ऊपर भागे!

आत्मार्जित ले हृदय आता,
अर्चना को तुम्हारी ;
दृग के आँसू निकल,
तुमको अर्घ्य देते तभी हैं ।
सुस्मृतियाँ ले विकल मन,
की वन्दना रूठ बैठ" ;
कारा कब से ? विधुर,
उर की वेदना बन चुकी है ॥

अनादिकाल से जगद्विजयी महापुरुष पुत्रों की जन्मदात्री, अनेक युगों से सकोर्ण-रूढ़िग्रस्त विचार पूजक मानव से उपेक्षिता तथापि अपने त्याग और बलिदानों से कराल काल के निर्मम और निष्ठुर आघातों में भी अविचल रहने वाली सहनशील शक्तिप्रतिमे ! समाज के अजस्र सम्मान और अतुल श्रद्धा की एकमात्र अधिकारिणी, अपने स्वभाव की गरिमा से उन्नत-मस्तक, क्रान्ति की अग्रदूती, स्वातन्त्र्य समाम की ध्वजाधारिणी माताओं एवं बहिनों !!! भारत में युगों के अनन्तर आज स्वतन्त्र्य सूर्य की रश्मिप्रभा उदित हो चुकी है, उत्कर्ष का पुजारी संसार तुम्हारे जागरण की प्रतीक्षा में है " अतः तुम जागो, जागो सती सावित्री और धर्मोपदेशिनी अनुसूया बनकर। असीम धैर्य से वनवास का दुःख सहन करनेवाली सीता से वरदान लेकर जागो। अरुन्धती, गार्गयी, मैत्रेयी के आशीर्वाद का कवच पहन कर जागो। जागो— अपनी दुलार की थपकी से पुत्रों में युगान्तरकारिणी शक्ति का सञ्चार लेकर माँ मदालसा की भांति, दो वह नूतन संदेश मानव को—जिससे वह नवयुग निर्माण कर सके। फूँक दो उसकी नसों में वह अविचल देशानुराग – जिससे राष्ट्रहित साधना में उसकी सारी वृत्तियों का ज्वलन्त केन्द्री करण हो उठे। गाओ वह गान फिर से एकबार—जाग उठे मानव की—शताब्दियों से सोई हुई अनन्त शक्तियाँ, और वह उठे वह पवन, एकता का संदेश लेकर, सुरभित हो मानव के जिससे अन्तस्तल।

क्योंकि "प्राचीन से प्राचीनतम काल में हमी अपने त्याग, संयम तथा आत्मदान की आग में अपना सारा व्यक्तित्व, सारी सजीवता एवं सारी मनुष्योचित इच्छाएँ तिल २ गलाकर, कठोर आदर्श के साँचे में ढालकर संसार के समक्ष विस्मयकारिणी चेतना और स्फूर्ति लेकर आई। पुरुष जब २ अपने पथ से विचलित हुआ हमी ने उसे पतनसे संभाल कर मार्ग प्रदर्शन किया ; पुत्रों को गोद में, आदर्शों को वहिन बनकर,

वनिता विवेक

❀ भारतीय नारी ❀

(लेखिका - निर्मला देवी मिश्रा सा० रत्न शास्त्री बदायूँ)

श्री निर्मला देवी जी का यह लेख यहां उसी रूप में प्रकाशित किया जाता है। बहुत सी ऐसी बातें जिन्हें कठोर कहा जा सकता है स्वयं पुरुष समाज छोड़ चुका है और निरन्तर वह नारी के प्रति उदार बनता जा रहा है। स्त्री शिक्षा प्रतिबन्ध आदि का तो अब कोई प्रश्न ही नहीं। फिर भी प्रतीत होता है कि शिक्षित नारी समाज भी कुछ अंश पुरुष को कठोर समझता है और किसी अंश में प्रतीकारात्मक भावना अपने अन्दर रखता है। परन्तु उन्नति हो उदार भावनाओं तथा विचारों के संतुलन से ही सम्भव है।

पति को पत्नी रूप में और पिता को पुत्री होकर अदम्य उत्साह और अक्षय साहस प्रदान कर सामयिक कर्त्तव्य की धर्मदीक्षा दी। हमारे इसी गरिमामय व्यक्तित्व को शक्ति का नाम मिला है, जिसके लिए मनु को (यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया) अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता वास करते हैं जहा इनका पूजन नहीं होता वहाँ सभी क्रियाएं निष्फल जाती हैं। कहना पड़ा है। आजभी हम संसार को संकीर्णता से दूर ध्रुव की भाँति बहुत ऊपर तथा स्थायी हैं। हमारी शक्तियों को तुलना के लिए पुरुष की शक्ति के साथ तुला पर रखने का प्रयत्न भ्रांति से रहित नहीं यह निर्भ्रान्त है।

अदृष्ट की विडम्बना से बीती घड़ियों की भांति आज भी 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्" स्त्री और शूद्र न पढ़ें "Beat a wohan and you india her wiser" स्त्री को पीटो और उसे अधिक चतुर बनाओ, इन उक्तियों का पात्र बनाई जाने वाली भारतीय नारी, पथ भ्रष्ट समाज की इन सुदृढ़ शृंखलाओं को अवतोड़ चुकी है।

युगों के प्रवाह में साम्राज्य बह गए संस्कृतियां लुप्त हो गई, जातियाँ मिट गई, संसार के सभी असम्भव परिवर्तन सम्भव हो गये परंतु भारतीय नारी के चरित्र को ..करुणा बतार—राम की आज्ञा के समक्ष हाने वाली संसार की पावन गाथा को जन्मदात्री सीता की पवित्रता की अग्नि परीक्षा और पृथ्वी में समाहित होने की हृदय विदारक घटना ने आज तक उज्जवलतम बनाए रक्खा है। आर्य्यनारी की गौरव गाथा की कहानी और उसके अज्ञात बलिदानों में स्वेच्छया स्वीकृत नारीत्व की गरिमा से गौरववती जौहर व्रत की दोधूयमान-धधकती हुई लाल लाल लपटों को नभ के नक्षत्रमण्डल एवं सूर्य चन्द्र ने सुना और देखा है आज भी चित्तौड़ की चिता भस्म को चूमता हुआ बहने वाला पवन न केवल भारत के वरन् संसार के मानव में नव-नव चेतना और स्फूर्ति का संचार अनवरत कर रहा है। समाज से मिले असह्य कष्टों को प्रतीकार की भावना से अपरिचित वेदना और दुःखों की सहानुभूति में पलकर, परिस्थितियों की भीषण यन्त्रणाओं का सम्बल लेकर सहज उदारता दान से एक क्षण को भी समाज को वञ्चित न रख सकने की कल्पना में व्यथा और कातरता की अनुभूति की है। नारी ने अपने पथ निर्धारण के लिए कभी किसी का मुह नहीं ताका। वरन् स्वयं अपना पथ क्षण भर में ही निश्चित कर चल पड़ी। विषम परिस्थितियों की चोटों पर चोटें सहकर भी मूर्तिमती धीरता, पतिप्राणा सीता अकारण ही पतिद्वारा निर्वासित हो जाने पर वनवासिनी का जीवन स्वीकार कर राम को गर्व पूर्ण सन्देश भेजती है जो आज भी नारी समाज के गर्व का विषय है।

"वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवाद श्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशम् कुलस्य" ।

अर्थात् मेरी ओर से उस राजा से कह देना कि मैं तो पहले ही अग्निपरीक्षा देकर स्वयं को निर्मल प्रमाणित कर चुकी हूँ। फिर अब मुझे निर्वासित कर क्या उसने अपने प्रख्यात कुल के अनुरूप कार्य किया है? सीता का समस्त जीवन उल्लिखित श्लोक में समुज्वल साकार साहस है जिसमें दैन्य की छाया भी नहीं है।

मध्य काल के समाज की कठोर से कठोर व्यक्ति को हिला देने वाली यातनाओं के अनवरत प्रतिघातों से आहत नारी हृदय चेतना शून्य हो उठा था, फिर भी वह शून्यता समाज के प्रति मानव प्रकृति सुलभ प्रतीकारों की द्वन्द स्थली न बनकर मोह, ममता, हितैषिता एवं उदारता की उर्वरा बनी रही।

पतिपरायणा भारतीय नारी अर्द्धाङ्गिनी की विडम्बना का भार लिये शताब्दियों से दलित अपने जीर्ण शीर्ण स्त्रीत्व को किसी प्रकार सम्भाले अपने दुर्वृत्त भी स्वामी की परिचर्या में रत है। जन्म जन्मान्तर में भी उसी पति के पाने का वरदान मांगने वाली नारी को देख कौन विस्मयाभिभूत नहीं होगा। पिता की अट्टालिकाओं और ऐश्वर्य से वंचित दरिद्र भगिनी को, ऐश्वर्य का उपभोग करने वाले भाई की कलाई में सरल भाव से राखी बाँधते देख कौन कल्पना कर सकेगा कि ईर्ष्या भी मनुष्य का नैसर्गिक विकार है स्त्री-मानस के रहस्य के गम्भीर अन्वेषक ने कितना सुन्दर कहा है कि "क्वचिदपि कुमाता न भवति"। भारतीय नारी अनादिकाल से प्रलय की उथल पुथल में भी शिला समान आज भी वहीं स्थिर है। कुमार सम्भव में पार्वती के कठिन संकल्प की एक झाँकी मात्र देखकर स्तब्ध रह जाना पड़ेगा।

आज का मानव मुँह फेरकर मध्य-काल के निविड़ अन्धकार में समाहित ऊषा की पहली सुनहली किरण को टटोलकर फिर से निकालने लगा है। जिसके लिये करुण हृदय मातृशक्ति के पुजारी ऋषि दयानन्द का स्त्री-समाज अनन्त तक ऋणी रहेगा। अब वह दिन समीप है जब कि मानव इस मातृशक्ति को वैदिक काल की भाँति सम्मान कर कह उठेगा। कि —

"तुमने तो युग २ तप कर निज
करुणाञ्चल लहराया,
हमने एक पलक में कर दी
भस्म स्वर्ग की छाया"।

तभी इस प्रायश्चित् के अनन्तर राष्ट्र का नव निर्माण होगा।

मनुष्य नहीं, पशु भी नहीं

लेखक—श्री धर्मदेव शास्त्री दर्शन केसरी, देहरादून

जमनोत्री यात्रा का वर्णन और उसके साथ २ सबको पवित्र करने वाले जमनोत्री तीर्थ में परम प्रभु के द्वारा समान रूप से दी गई वस्तुओं में भी अपने को सभ्य कहनेवाले मनुष्य द्वारा अनधिकृत विभाजन, और मनुष्य को मनुष्य से ही नहीं अपितु पशु से भी निकृष्ट बना देनेवाली मनोवृत्ति .... —सम्पादक

मैं हाल ही में जमनोत्री तक चला गया, यह स्थान प्राकृतिक दृष्टि से बहुत सुन्दर है, करीब १३ हजार फुट की ऊँचाई पर अतिशय ठंडे स्थान में भी गरम पानी के कुंड में स्नान कर के स्वत प्रभु की लीला का अनायास स्मरण होता है, इस कुंड में स्नान कर के सारा थकान उतर जाता है और शरीर बहुत हल्का होजाता है। वहां जमनोत्री में प्राकृतिक दृष्टि से इतना सौन्दर्य है वहाँ ही हिन्दूसमाज में कोढ़ के समान बुरी तरह व्याप्त ऊँच नीच की भावना का भी दर्शन होता है। हमारे साथ खरसाली ग्राम से गिरधाशकर पांडे का लड़का भवानीदत्त जमनोत्री चला। खरसाली जमनोत्री से चार मील पूर्व रवाँई प्रदेश का अन्तिम ग्राम है, इससे आगे हिमाच्छन्न शिखरों की श्रेणियाँ शुरू हो जाती हैं जिन्हें यहाँ की जनता काँठा कहती है काँठों की चोटियाँ प्राय. हिम से आच्छन्न रहती हैं। जब वर्षा में हिम पिघल जाता है तब भी इन में घास पत्ति नहीं होती, सफेद रीछ इन काँठों में ही बहुधा रहते हैं, हाँ तो हम खरशाली से जमनोत्री की चढ़ाई पर भवानीदत्त के साथ चल रहे थे भैरवघाटी को पारकरके नौ कैंचियाँ हैं। इन कैंचियों को पार करने के बाद मुनाल पक्षी के दर्शन हुये, यह पक्षी सबसे सुन्दर पक्षी माना जाता है, मुनाल से इतनी सुन्दर नहीं होगी। मुनाल के सर पर रत्नजटित मुकुटके समान कलगी दिखाई दी। एकके बाद दो तीन चार मुनाल पक्षी हमारे आगे से उड़कर चले गये जमनोत्री से पूर्व हमें भोजवृक्ष दिखाई। दिया नदी पार भोजवृक्षों का सघन वन भी दूर से दीख रहा था। हमारे साथियों में से श्री सत्येन्द्र-सिंह जी को इधर की वस्तुओं के संग्रह का शौक है।

भवानीदत्त को कहकर सत्येन्द्र सिंह जी ने भोजपत्र एकत्र करलिये, कुछ खूबसूरत पत्थर भी उन्हों ने चुने परन्तु जमनोत्री तक खाली अपने शरीर को लेजाना भी कठिन है, पत्थरों का बोझ कौन उठा सकता है? स्वर्ग में अकेला ही जासकता है, यह बात सत्य है। महा राजा युधिष्ठिर को भी अपना कुत्ता स्वर्ग तक लेजाने में कुछ देर के लिये नरकमें जाना पड़ा। अपरिग्रह का पालन हिमाचल की चढ़ाई में अनिवार्य रूप से करना पड़ता है। लीजिये हम जमनोत्री पहुँच गये हैं, अनायास हमारे मुख से "जय जमनोत्री" शब्द निकले।

विकट और खड़ी चढ़ाई से हम थक गये थे, हमारे लिये 'जय जमनोत्री' का अर्थ था विकट चढ़ाई पर विजय प्राप्त कर ली।

हमारे पुरोहित (पाँडा) ने कहा, "वह अब जमनोत्री आगये, देखिये यह टीनवाला मकान सेठ गौरीशङ्कर का धर्मशाला है, साथमें काली कम्ली वाले की धर्मशाला बनी है।' हमलोग सर्दियों में जमनोत्री पहुँचे थे इन दिनों यहाँ यात्री नहीं आते, "यात्रा के समय यहाँ खूब रौनक रहती है।" भवानीदत्त बोला। "हम यात्रियों को नहीं देखना चाहते शुद्ध जमनोत्री के दर्शन करना चाहते हैं, इस लिये हम लोग सर्दियों में आये हैं" हमारे साथी नरेन्द्रजी ने कहा। पंडाजी जमनोत्री की कथा सुनाता जारहा था, वह तेजी के साथ माहात्म्य सुनाता जारहा था भवानीदत्त प्रथमा की तय्यारी कर रहा है परन्तु अपना कर्त्तव्य पालन करते समय यह भूल गया था कि उसका यजमान शास्त्री है।

जमनोत्री में हिन्दू संस्कृति की विशेषता और दुर्दशा दोनों का एक साथ दर्शन हुआ, जमनोत्री में जमुना का रूप बहुत ही छोटा है थोड़ी २ दूर पर जमुना में खाले नाले और नदियाँ मिलती गई हैं। जमुना का हृदय इतना विशाल है कि उसने सब का स्वागत किया है यही जमुना की नहीं हिन्दू संस्कृति की विशेषता है। हनुमान चट्टी के पास हमें भ्रम होगया। जमुना में मिलने वाला खाला जमुना से बड़ा था, हमें मालूम हुआ कि यही जमुना है अपने से बड़े को भी आत्मसात् करने की यह कला अब हिन्दू समाज भूल गया है। जमनोत्री में पाण्डे ने हमें विविध तीर्थ दिखाये, सबका माहात्म्य सुना कर जब गरम पानी के कुंड में नहाने का अवसर आया तब वह बोला, "यह गरम पानी का कुंड है। इसके दो अंग है, एक कुंड में आप जैसे बड़े व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय और लाला लोग नहा सकते हैं। और पास वाले दूसरे कुंड में शूद्रों के लिये नहाने की व्यवस्था है।" ऊँच नीच का यह भाव जमनोत्री में देखकर हृदय को बहुत दुःख हुआ। जो जमनोत्री साक्षात् विशाल हिंदु धर्म का उद्गम स्थान है, वहाँ पर यह भावना कैसे आगई।

जब हम लोग बारी २ से दोनों कुंड में स्नान कर आये तब पंडे को बहुत आश्चर्य हुआ। उसे मालूम होगया कि यह यजमान विशाल हृदय के हैं इसलिये इनसे अधिक पैसे की आशा नहीं। वास्तव में हिन्दुधर्म में जो अब ऊँचनीच की भावना है, उसका आधार आर्थिक ही है, सांस्कृतिक दृष्टि से यह असत्य है। हिन्दू धर्म विशाल है। यह किसी की बपौती नहीं। तथाकथित निम्नजातियों को वर्तमान समाजिक व्यवस्थाके विरुद्ध विद्रोह करना चाहिये। जो मनुष्य से घृणा करता है वह मनुष्य हो नहीं, जो उस घृणा को सहता है वह पशु भी नहीं।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण

संयुक्त प्रान्तीय मनोवैज्ञानिक व्यूरो ने, जो इलाहाबाद में कार्य कर रहा है, कतिपय विद्यार्थियों की कुछ विषयों में जांच की जिसके फल स्वरूप उन विषयों में उनकी स्वाभाविक वृत्तियों के संबन्ध में बड़ी मनोरंजक बातों का पता चला है।

उदाहरणार्थ व्यूरो ने अंग्रेजी और गणित के विषयों में प्रयोग किए और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इन विषयों में विद्यार्थियों को जो अधिक सफलता नहीं मिलती उसका कारण देश अथवा प्रान्त की सामान्य शिक्षा नीति ही हो सकती है। बहुत से स्कूलों में विद्यार्थियों की अंगरेजी में परीक्षा ली गई थी, और इस विषय में उनका ज्ञानस्तर काफी कम था अतएव व्यूरो इस निर्णय पर पहुँचा कि इसका कारण यह है कि विद्यार्थी अब अंगरेजी के स्थान पर मातृभाषा की ओर अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह बात बुरी नहीं किन्तु इस प्रकार ज्ञानस्तर में न्यूनता आ जाने से स्कूल की कार्य प्रणाली के असंतोषप्रद होने का भान होता है अतएव इस समस्या पर बहुत ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। मनोवैज्ञानिक व्यूरो की राय में अध्यापन कार्य के गलत तरीकों के प्रयोग, कुशलता में कमी आना अथवा अनुशासन विहीनता और अन्य ऐसे ही कारणों से छात्रों में अध्ययन संबन्धी श्रम का अभाव आदि वाले इस असंतोषप्रद स्थिति का कारण है। भविष्य में स्कूल की कार्य कुशलता में तभी वृद्धि हो सकती है जब कारणों का समुचित ढंग से विश्लेषण किया जाय। व्यूरो ने इस बात पर जोर दिया कि सार्वजनिक परीक्षाओं आदि के आधार पर स्कूल की सफलता प्रतिशत का पता लगा कर उसकी कार्य कुशलता की जांच करने की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा स्कूल की कार्य प्रणाली के विषय में जानकारी हो सकती हैं।

इस प्रकार जिन अधिकांश विद्यार्थियों पर उक्त प्रयोग किए गए उनसे यह पता चला कि या तो उनका बौद्धिक स्तर साधारण से कुछ ऊंचा था अथवा कुछ नीचा। बहुत अधिक बौद्धिक विकास के विद्यार्थियों की संख्या बहुत ही थोड़ी थी। गणित भी जो कि स्कूल के विद्यार्थियों के लिए बड़ा दुरूह विषय माना जाता है अंगरेजी की अपेक्षा अधिक दुरूह विषय न सिद्ध हुआ। इसमें विद्यार्थियों को अंग्रेजी से अधिक सफलता प्राप्त हुई थी।

वह पत्र जो सब के लिये है—

मान नीय महोदय !

मेरी गाय के एक बछिया पैदा हुई उसकी दोनों आँखें खुली हुई हैं देखने में दुरुस्त जान पड़ती हैं। परन्तु उसकी दृष्टि नहीं फूटती। उसे सूझता नहीं। कोई महाशय उसकी कोई औषधि बताने की कृपा करें तो हिन्दू धर्म के नाते गोवंश के हितार्थ अत्यन्त दया होगी। और गोरक्षा के पुनीत कार्य में सहायता होगी।

भवदीय लाल जी सहाय मवई पो० जोहवर जिला फतेहपूर

(२)

श्री युत सम्पादक जी सादर नमस्ते।

आप के आर्य मित्र' (१-१२-४९) की प्रति के पृष्ट ८ के चौथे कोलम में "धोबियों के चौधरी सरकारी खर्चे से प्रान्त व्यापी दौरा करेंगे" विज्ञप्ति पढ़ कर हर्ष हुआ। वास्तव में आज स्वतन्त्र भारत में ऐसे संकीर्ण विचारों को समाज के क्षेत्र में स्थान कहां? परन्तु क्या सरकार ने हरिजन सीट से चुने गये M L A. और मंत्री महोदय का भी कोई प्रान्त व्यापी डेपुटेशन भेजने की सोची है कि जो अपने जाति बन्धुओं को यह भी समझायें कि वे मृतक मवेशी का उठाने की अपनी परम्परागत रीता को अकारण क्यों छोड़ रहे हैं इससे राष्ट्र की भारी क्षति है। चमड़ा विदेशों से मगाना पड़ेगा। राष्ट्र का धन बाहर जायेगा और यवनों को भी इस कार्य से अधिक लाभ पहुंचेगा। all work is noble की बात भाई धोबियों को ही समझाने से काम नहीं चलेगा सरकार को तो body politic का पूर्ण रूप से ही विकास करना और ध्यान देना है।

भवदीय

निरंजन प्रसाद मोनल

(एम० ए० एल० एल० बी० वकील)

—कार्तिक शु रविवार को हिन्दी साहित्य परिषद् खड़हरा (बांका, भागलपुर) की एक विशेष बैठक हुई जिसमें हिन्दी दिवस मनाया गया। देश की सांस्कृतिक भाषा हिन्दी के प्रति सरकार की पन्द्रह वर्षों तक वर्तमान रहने वाली लचर नीति की आलोचना की गई। सभापति श्री बाबूलाल झा "लाल" साहित्यालंकार के आग्रह से निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए।

यह परिषद् प्रकाण्ड पण्डित, धुरंधर राजनीतिज्ञ और हिन्दी के प्राण, विधान परिषद् के सभापति पूज्य श्री राजेन्द्र प्रसाद जी से अनुरोध करती है कि हिन्दी के प्रति स्वीकृत संविधान पर एक बार पुनः वे अपनी उदार और गम्भीर दृष्टि डालें जिससे देश की व्यापकता के प्रकाश और प्रसार में अन्य कोई भी अनुरोध न रहे। लोकप्रियता के नाते भी स्वतन्त्र सरकार का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह राज कीय सभी विभागों में मातृभाषा हिन्दी को अविलम्ब प्रमुखता प्रदान करें

यह परिषद् वर्तमान रेडियो विभाग की भाषा सम्बन्धी गदी नीति की तीव्र निन्दा करता है और जब तक वह सुधार मार्ग का अवलम्बन नहीं करता तब तक हम उससे अपना सम्बन्ध विच्छेद करते हैं।

—ता १७ १२-४९ को युगलकिशोर कुलल्या वालों का ९० वर्ष की आयू में देहान्त होगया। यह उन भाग्यवान वृद्धों में से थे जिन्होंने भगवान दयानन्द के दर्शन अति निकट रहकर किये थे। यह महर्षि के साथ स. १९३८ वि में एक सप्ताह रहे। इन्होंने ऋषि का वृतान्त जून सन् १९४८ के युक्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के धामपुर अधिवेशन में सुनाया था जिस को आर्य जनता ने बड़े प्रेम से सुना। ऋषि के प्रति इन्हें बड़ी भक्ति थी।

हरशरनदास

—आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त-प्रान्तके उपदेशक श्री प० राम कौशिक जी की प्रेरणा से आर्यसमाज भगवान पुर की ओर से बराबर बारह दिन तक प्रात आर्यसमाज में हवन होतारहा और रात्रि को बाजार में कथा चलती रही, उपस्थित जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा कथा समाप्ति वाले दिन उपस्थित जनता ने बड़े प्रेम से सभा की वेद प्रचार को धन से सहायता भी की।

—काँठ आर्यसमाज का ४ वाँ वार्षिकोत्सव २८ नवम्बर से ३० नवम्बर १९४९ तक सफलता पूर्वक मनाया गया। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी तर्थ, श्री स्वामी शिवानन्द जी श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री प० अमरनाथ जी वैद्य-शास्त्र श्री डा० आर सिंह जी आर्य पथिक तथा श्री प सुरेश कुमार जी वेदालंकार के भाषण हुए। गायनाचार्य श्री शिवनाथसिंह संगीत विशारद श्री रामचन्द्र जी शर्मा, श्री अमर नाथ जी प्रेम, श्री दराम जी शर्मा तथा श्री मुखराम सिंह जी के गायन और भजन हुए।

—आर्य समाज सांगीपुर का व० उत्सव १२ फरवरी ५० से १५ फरवरी तक होगा उत्सव पर कई सम्मेलनों का भी आयोजन किया जा रहा है पुस्तक विक्रेता तिथियाँ नोट करलें।

भारतीय पार्लमेन्ट

८८ करोड़ अतिरिक्त खर्च का प्र. पास

मुद्रा अवमूल्यन के कारण ७९ करोड़ १२ लाख घाटा

कटौती प्रस्ताव अध्यक्ष द्वारा नामंजर

नयी दिल्ली, २३ दिसम्बर। आज पार्लमेंट में ८८ करोड़ रुपये से ज्यादा रकम के अतिरिक्त (पूरक) अनुदान की माग स्वीकार कर कर ली गई।

इसमें ७९ करोड़ १२ लाख रुपये से ज्यादा रकम, भारतीय रुपये के अवमूल्यन के कारण बढ़े हुये सरकारी खर्च के लिए स्वीकार की गई। इसके अतिरिक्त ३ करोड़ २५ लाख रुपये शरणार्थियों पर खर्च, २ करोड़ ४६ लाख ८५ हजार चुगी व्यावस्था के लिए, ६ करोड़ १६ लाख ३० हजार विधान परिषद् के खर्च के लिए और ४० लाख ८३ हजार रुपये वैदेशिक मन्त्रिकार्यालय के खर्च के लिए स्वीकार किये गये हैं।

स्वर्ण के मुकाबले में भारतीय रुपये की कीमत गिर जाने के कारण भारत को पुराने समझौते को बरकरार रखने के लिए अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष को ६८,६८,६६,३३,०००) और विश्व बैंक को १०,४६,१२ २००) को पहले की निर्धारित रकमों के अलावा देना पड़ेगा।

बिना ये रकमें दिये भारत का अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में चन्दा, अमरीकी डालर खरीदने में खर्च की गयी रकम और बैंक के चन्दे में से चुकाई रकम पहले के स्तर पर स्वर्ण का वर्तमान भाव देखते हुए नहीं आ सकेंगी और भारी अव्यवस्था का खतरा है।

बैंक को दिये जाने वाले १०,४६,१२ २००) में से १०,३१,६०,०००) तुरन्त नगद देने है और उस पर कोई सूद भी न मिलेगा। यही हाल कोष को दी जाने वाली रकम का है।

शोक समाचार

अभय गुरुकुल शुकताल में अध्ययन करने वाले दो ब्रह्मचारियों "ब्र० सुखवीर तथा ब्र० रामशरण" का देहान्त आठदिन के अन्तर से उनके घरों पर हो गया, दोनो ब्रह्मचारी अत्यन्त होनहार तथा कुशाग्र बुद्धि थे। परमात्मा दोनों की दिवगत आत्मा को शान्ति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदानकरे।

—आर्य कुमार सभा अमरोहा की सभा भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद के सुयोग्य सगठन कर्त्ता श्री पुरुषोत्तम जी, के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है। श्री पुरुषोतम जी ने गत दो वर्षों में सयुक्तप्रान्त राजस्थान बिहार एवम दिल्ली प्रान्त का दौरा करके आर्य कुमार सभाओं का सगठन तथा आर्य कुमार परिषद् की बहुत सेवायें की है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है किदिवगत आत्मा को शान्तितथा शोकातुर परिवार कोधैर्य प्रदान करे।

—श्रीरामदेवजी के असामयिक स्वर्गवास से सभा की महती क्षति हुई है यह सभा परम पिता परमात्मा से सतप्त परिवार को वियोग सहन करने की शक्ति तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये प्राथना करता है रामदेव आर्य पुरस्कार सभा के निश्चयानुसार श्री रामदेव जी आर्य की पुण्यस्मृति में दो पुरस्कार प्रति वर्ष दिये जायेंगे—

१—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रत्न परीक्षा में सार्वदेशिक सर्व प्रथम उत्तीर्ण होने वाले छात्र को दिया जायेगा—

२ भा० आ० कु० प० की भारतीय परीक्षा अमरोहा केन्द्र में सर्व प्रथम उत्तीर्ण होने वाले छात्र को दिया जायगा।

आर्य कुमार सभा,
अमरोहा।

—आर्य समाज मल्लापुर काशी निवासी श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा आर्य राष्ट्र तथा आर्य समाज के कार्यों में सर्वदा अग्रणी रहने वाले, कर्मठ एक महान् पुरुष की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मृत आत्मा को शान्ति और शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति की मृत्यु पर निकट भविष्य में रिक्त स्थान के क्षतिपूर्ति की सम्भावना नहीं है।

शोक प्रस्ताव

स्त्री आर्यसमाज चदौसी की व आर्य कुमारी सभा की समस्त कुमारिए-आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी श्री पूज्य स्वामी कमलानन्द जी की अकस्मात् मृत्यु पर अत्यंत शोक प्रकट करती है-और भगवान् से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—आर्य कुमार सभा अमरोहा की सभा आर्य समाज अमरोहा के प्रधान श्री छोटेलाल जी के सब से छोटे सुपुत्र तथा आर्य कुमार सभा अमरोहा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री रामदेवजी आर्य के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है।

गु० वृन्दावन के ५) से अधिक दानदाताओं की मास अक्टूबर की सूची

५) श्री म० गोरेलाल बाबूलाल जी कोटेवाले बगनेर आगरा, ५) श्री म० सिपाहीलाल बद्द शंकर लाल जी वैश्य मंगीराम समल मुरादाबाद, १०) श्री मती रवेती देवी जी मभ्रगाँव फतेहगढ़, १०) श्री बागिरी लाल जी मेहरा कटरा औहरसिंह अमृतसर, ५) श्री पं० कृष्णदत्त जी दयाल आदर्श नगर अजमेर, ५) श्री गायत्री देवी जी द्वारा स्वामी भवानी दयाल जी सन्यासी आदर्श नगर अजमेर, ५)श्री भूधर जी उझानी बदायूँ, ५) श्री म० कन्हैयालाल जी सहसवान बदायूँ, ५) श्री बा० ईश्वर शरण जी रईस, ५) श्री बा० भगवानस्वरूप जी ५) श्री डा० बृजमोहन शरण जी, ५) श्री डा० अयोध्या प्रसाद जी ५) श्री बुलाकचन्द रमची देश बन्धु खादी भंडार आरा, १०१) श्री हीरालाल महावीर प्रसाद जी देहली, १०) श्री प० भगवन्त जी कोमलाबार-लखीमपुर, ५) श्री ठा० नारायण सिंह जी चन्देले जमींदार हरकम्पपुर फतेहगढ़, ५) श्री म० गजाधर प्रसाद जी वैश्य टलगाम फर्रुखाबाद, ५०) श्री म० महोनलाल जी रूपचन्द जी लोकसढौन गढ़वाल ५) श्री म० उमरावलाल दुकानदार ५) श्री म० कन्हैयालाल जी १०१) श्रीबा० रामलाल जी गुप्त मैनेजर दौराला शुगरमील मेरठ, २५) आर्यसमाज दौराला ५१) स्त्री आर्य समाज मेरठ, ६) डा० भगवतदत्त जी मेरठ १०) चौ० मुख्तार सिंह जी वकील मेरठ, ११) श्रीबा० रामचन्द्र जी मित्थल सदर मेरठ १००) श्री बा० मोतीलाल जी सदर मेरठ ५) श्री चौ० रामसिंह जी वकील मेरठ ५३०) श्री मन्त्री जी आर्य समाज मेरठ शहर से ११) श्री म० तोता राम श्यामलाल जी सर्राफ किनारी बाज़ार आगरा, ५) श्री मा० जयशंकर काशीराम जी भट्ट ब्यारा गुजरात,

११११) पाँच रुपये से अधिक दान
२६) पाँच रुपेये से कम दान

११३७) कुल योग

श्रीराम —६-११-४६

—आर्य समाज नवाबगंज (गोंडा) का २६ वाँ वार्षिकोत्सवता: १२ फरवरी से १५ फरवरी ५० तक मनाने का निश्चय हुआ है।

श्री मालवीय जयन्ती

अमेठी में १४-१२-४६ को राज भवन रामनगर में युवराज श्री रणञ्जय सिंह जी, एक्स–एम०–एल० ए० (केन्द्रीय) के सभापतित्व में श्री मालवीय जयन्ती मनायी गई। महामना० पं मदनमोहन मालवीय जी, महाराज के आदर्श जीवन एव कार्यों का वर्णन करते हुये सभापति जी ने कहा कि मालवीय जी विद्वान बुद्धिमान कर्मनिष्ठ नेता थे। उन्हों ने बड़े ठोसकार्य किये है। जो उनकी विमल कीति को अमर रक्खेंगे। वे प्राचीन सस्कृति के पुजारी थे। उनके द्वारा देश को अत्यन्त उपकार हुआ है।

श्री पूज्य मालवीय जी के सम्बन्ध में भाषण हुए।

जयन्ती के ही उपलक्ष्य में श्री धर्मदेव जी की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन हुआ जिसमें सर्व श्री रामगुलाम, पञ्चानन कुशवाहा, राम किशोर तथा रामदर्शन मिश्र प्रभृति ने अपनी रचनाएँ सुनायीं

वैदिक विवाह

श्रीयुत वैदिक विद्वान प० अयोध्या,प्रसाद जी'बी०ए० वैदिक रिसर्चस्कालर ने राची निवासी श्री युत सेठ नागरमल जी, मोदी के सुपुत्र चि० रामस्वरूप जी, मोदी का बिड़ावा (राजपूताना) निवासी श्रीनन्द लाल जी, की सुपुत्री श्री मती द्रोपदी देवी के साथ पाणिग्रहण संस्कार राची में कराया। विवाहोत्तर उक्त पण्डित जी का प्रभावशालीभाषण हुआ। शान्ति आश्रम लोहरदगा के लिये ११००) ग्यारह सौ रुपये दान दिया गया।

—सर्व सज्जनों से सूचनार्थ निवेदन है कि श्री कुंवर भद्रपाल जी भजनोपदेशक कुछ दिनों से पीली भीत में स्थाई रूप से रहने के लिये आगये हैं जो सज्जन आपको बुलाना चाहे तो वह धर्म वीर आर्य पीलीभीत के पते पर पत्र व्यवहार करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध और गोरक्षा

आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध के कार्यकर्त्ता भारत के भिन्न २ स्थानों में बड़े उत्साह से काम कर रहे हैं। गोरक्षा के सम्बन्ध में प्रो० ताराचन्द्र—मा० गगाराम मा०खेरहामल ने मिलकर मुंबई नगर और समीप के उपनगरों में १० दिन लगातार आंदोलन चलाया। कल्याण कैम्प के ५ बड़े मन्दिरों में सभा बुलाई गई। और कैम्प न० ५ में जुलूस भी निकाला गया। अकिबर और गध कैम्प में भी सार्वजनक सभा में बुलाई गई। इन सारी सभाओं में सरकार से मांग की गई कि गौ बध सर्वथा बंद किया जावे।

(२)—श्रीप० उदयभान् जी और श्री म० हीरानन्द 'आनद'जी, ने साऊथ देवलाली, जवाहर कैम्प तथा लेकबेल और मशिरुल कैम्प में सार्वजनक सभाएँ बुलाकर गो बध के निषेध के लिये प्रस्ताव पास करवाये।

— आर्य्य समाज पटना सिटी का ४८ वाँ वार्षिकोत्सव ५ जनवरी से ८ जनवरी १९५० ई० मि० माघ कृष्ण१ से ४० स०२००६ तक मनाना निश्चित हुआ है।

—आनसठ आर्य समाज की ओर से १९,२०,२१,२२, २३ जनवरी को ४ मन देसी घी ८ मन शुद्ध सामग्री केसर इत्यादि से महान यज्ञ होगा। बसन्त पचमी के दिन पूर्ण आहुती होगी।

सूचना

सयुक्त प्रान्तीय कुमार परिषद् की अन्तरग सभा का एक अत्यावश्यक अधिवेसन २५। १२। ४६ को बिजनौर में हुआ।

मन्त्री भारत भूषण
सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्

साहित्य परिचय

"होम्यो–ज्योति" का स्वाधीनता विशेषांक १९४९ का प्राप्त हुआ राष्ट्र-भाषा, हिन्दी में विज्ञान संबंधी साहित्य की बहुत कमी है, इसकी पूर्ति के लिय किया गया प्रत्येक प्रयत्न स्तुत्य है।

स्वाधीन परन्तु निर्धन भारत के लिये होम्योपैथी अपना विशेष स्थान रखती है। यह चिकित्सा प्रणाली जो कवल बड़े २ यन्त्रों और पेटेंट प्रयोगों पर अवलम्बित हो हमारे देश के लिये सुलभ नहीं हो सकती। यह राष्ट्रीय सरकार का कर्त्तव्य है कि आयुर्वेद जैसी स्वदेशी और होम्योपैथी सम सुलभ प्रणालियों को राज्याश्रय और प्रोत्साहन दे; परन्तु जनतन्त्र में राजनियम का आधार जनमत होता है अतः जाति के हितचिंतकों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि इन प्राकृतिक, धार्मिक, सर्वसुलभ चिकित्सा पद्धतियों के लिये प्रबल आन्दोलन करें जिससे दूषित, अप्राकृतिक, मानवतो संहारिणी एलोपैथी पद्धति का निष्कासन हो और भावी सतति परिणामी रोग क्षय, कैंसर, हृदरौबंल्यादि महामारियों से बच सके।

जन आन्दोलन के लिये एक अमूल्य साधन है। इस पत्र इस दिशा में मार्ग प्रदर्शन किया है। पत्र में भाषा और भाव अभिव्यजना की दृष्टि से अभी बहुत वांछनीय है परन्तु आशा है कि इस विज्ञान के प्रेमी इस पत्रिका को पूर्ण सहयोग देंगे जिससे यह उत्तरोत्तर उन्नति कर राष्ट्र की सेवा कर सके। वास्तव में आज देश को इस प्रकार के आमत प्रकाशन की आवश्यकता है।

ऋग्वेद परायण यज्ञ

गुजरात के सुराठोई गाव जिले खेड़ा के श्री भीखाभाई जी की ओर से ऋग्वेदपारायण यज्ञ हो रहा है। उसके ब्रह्मा श्रीमान् स्वामी व्रतानन्द जी महाराज है और अध्वर्यु उद्गाता तथा ऋत्विक श्रीगुरुकुल चित्तौड़गढ़ के श्री प० भीमसेन जी वेदवागीश श्री प० विश्वनाथजी तथा ६ ब्रह्मचारी हैं। स्वामी जी पहले सामवेदपरायणयज्ञ और यजुर्वेदपारायणयज्ञ भी करवा चुके हैं। इस यज्ञका जनतापर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। सुराठोई सुन्दरा आदि गावों मे प्रचार भी हो रहा हैं।

सत्य की विजय

आर्य्य समाज काशी का अभियोग समाप्त

परमपितापरमात्मा के परमानुग्रह से अनाथालयसम्बन्धी अभियोग पूर्णरूप से समाप्त हो गया है। कागजात आदि भी लौट कर आगये हैं, जिन को कि पुलिस ले गई थी। आर्यसमाज इस अग्नि परीक्षा में पूर्ण रूपेण उत्तीर्ण एवं निष्कलङ्क सिद्ध हुआ है। सत्य की विजय हुई और असत्य की पराजय हुई। अतएव आर्य समाज का मुख उज्वल हुआ है। अब अनाथालय यथापूर्व प्रवृत्त होने जा रहा है।

नानकिंग (चीन) के भारतीय राजदूत—३ अक्टूबर। भारत सरकार ने नानकिंग स्थित राजदूत सरदार के० एम० पनिक्कर को चीन परिवर्तित राज्य स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के लिये नई दिल्ली बुलाया है।

गोडसे की अपील—३ अक्टूबर। ज्ञात हुआ है कि ५ या १० अक्टूबर और नये विधान के लागू होने की तिथि के बीच की अवधि में भारतीय मुकद्दमों के सम्बन्ध में प्रिवी कौंसिल के अधिकार समाप्त हो जायगे और 'फैडरल कोर्ट' भारत का सबसे बड़ी अदालत हो जायगी अतः नाथूराम गोडसे तथा अन्यों की अपील भारत के संघ न्यायालय में सुनी जायगी। उक्त अपील प्रिवी कौंसिल के सम्मुख १२ अक्टूबर को आयेगी।

१००) का नोट ७५) में—ग्वालियर ३ अक्टूबर। भारतीय सिक्के के अवमूल्यन के कारण अनेक गलत अफवाहों पर अनेक स्थलो पर १००) के नोट ७५) तथा १०) के नोट ८) में बिक गये। इस धोखेबाजी से सावधान रहना चाहिये।

मनीपुर का शासन—२ अक्टू० भारत सरकारने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषणा की है कि भारत सरकार मनीपुरकाराज्य शासन प्रबन्ध १५ अक्टूबर को अपने हाथ में ले लेगी और उसे चीफ कमिश्नर का प्रान्त बना दिया जायगा। मनीपुर राज्य की स्थिति सैनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्षेत्रफल ८६२० वर्ग मील, जन संख्या ५ लाख १२ हजार है।

लन्दन में जुलूसों पर प्रतिबन्ध

३ अक्टू०। लन्दन के मैट्रोपोलिटन क्षेत्र में ३ महीने के लिये राजनीतिक जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। इङ्गलैंड के फासिस्ट नेता सर ओस्वल्ड मोस्ले के प्रस्तावित प्रदर्शन के कारण यह पग उठाया गया है।

सोशियालिस्टों की हार का कारण—बङ्गलोर ६ अक्टूबर। श्री जयप्रकाश नारायण जी ने पार्टी की जनरल कौंसिल में कहा है कि युक्तप्रान्त और तामिलनाद के चुनाओं में सोशियालिस्टो की हार का कारण सरकार का हस्तक्षेप न होकर सोशियालिस्ट पार्टी की स्वय कमजोरी थी। कुछ लोगों का यह ख्याल ठीक नहीं है कि अब जनतान्त्रिक ढग से मागे पूरी नहीं कराई जा सकती। नागरिक अधिकारों के अपहरण को रोकने का उपाय सत्याग्रह है।

रूस में परमाणुबम—नई दिल्ली ३ अक्टू०। प्रधान मन्त्री प० नेहरू ने विश्व भर के देशों को चेतावनी देते हुये कहा कि संसार को सबसे अधिक खतरा रूस को परमाणु बम का रहस्य ज्ञात होने के कारण नहीं अपितु विश्व भय के कारण है। यह भी सम्भव है कि रूस द्वारा परमाणु शक्ति का अनुसंधान युद्ध रोकने में सहायक हो। वस्तुतः युद्ध का परिणाम जितना अधिक भयानक ज्ञात पड़ेगा उतना ही लोग उसकी निस्सारता को समझ कर उससे बचने का यत्न करेंगे।

जनरल डैलबोई काण्ड—नई दिल्ली १४ अ०। प्रधान मन्त्री प० नेहरूजी ने पार्लियामैन्ट में बतलाया कि भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र-संघ द्वारा नियुक्त काश्मीर कमीशन को लिख दिया है कि वह पर्यवेक्षक जनरल डैलबोई के कार्य को अत्यन्त गम्भीर कार्य समझती है और उसने कमीशन से पूछा है कि यह इस मामले मे क्या करने की सोचता है? ६ अक्टूबर को लेकसक्सैस में सुरक्षा कौंसिल के जनरल सैक्रेटरी मि० ट्रिगवली ने एक बयान में बतलाया कि वे इस विषय में भारतीय प्रतिनिधियों से बातचीत करने को उद्यत हैं और कमीशन में जनरल डेलबाई से जेनेवा में उत्तर मागा है।

सुभाष बोस का भाषण—५ अक्टूबर। नई दिल्ली के हिन्दी दैनिक 'नेताजी' ने घोषणा की है कि श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस २१ अक्टूबर को ६ बजे रात कम्यूनिस्ट अधिकृत चीन की राजधानी पीपिंग रेडियो से भारत के नाम एक सन्देश' प्रसारित करेंगे जो २२३ मीटर पर सुना जा सकेगा। यह क्या गोरखधन्धा है?

भारत - पाकिस्तान सम्मेलन—डा० जान मथाई ने ५ अ० को पार्लियामेंट के रुपये के मूल्य घटाने से सम्बन्धित विशेष अधिवेशन में घोषणा की कि शीघ्र ही भारत तथा पाकिस्तान का एक सम्मेलन होने वाला है जिसमें रुपये के मूल्य में भिन्नता होने के विषय पर विचार होगा अभी तक भुगतान सबधी जितने समझौते इन दोनों देशों में हुये हैं वे पुराने हिसाब से हुये थे अतः अब स्थिति बदल जाने से जब तक कोई नया समझौता नहीं हो जाता तब तक मुद्रा विनिमय स्थगित रहेगा।

राष्ट्रीय रक्षा शिक्षणालय का शिलान्यास—६ अक्टूबर। पूना से १३ मील पर खड़कविसला नामक स्थान में हिन्द राष्ट्रीय रक्षा परिषद का शिलान्यास प० नेहरू प्रधान मन्त्री द्वारा किया गया। इस शिक्षणालय में जल, स्थल और विमान सेनाओं के विद्यार्थियों को ट्रेनिङ्ग दी जायगी। ट्रेनङ्ग की अवधि ३ वर्ष की होगी। इस अवसर पर प० जी ने कहा कि यह सच है कि सैनिकों का सर्वप्रथम कर्तव्य आन्तरिक उपद्रवों और बाह्य आक्रमणों से रक्षा करना है, परन्तु इसके अतिरिक्त उन्हें सामाजिक क्षेत्र में भी कार्य करना चाहिये। जैसा कि आसाम और काश्मीर में सैनिकों ने सामूहिक रूप से अन्न उत्पादन आदि में सक्रिय सहायता पहुँचाई है।

सैकन्डरी शिक्षा का राष्ट्रीय करण—सहारनपुर ६ अ०। युक्तप्रान्तीय सैकन्डरी अध्यापक मण्डल के २७ वे वार्षिक सम्मेलन ने जो लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री० एन० के० सिद्धान्त के सभापतित्व में २७ सितम्बर को हुआ था, एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से अनुरोध किया है कि सैकण्डरी शिक्षा का राष्ट्रीय करण कर दिया जावे।

कम्यूनिस्टों पर प्रतिबन्ध नहीं—युक्तप्रान्तीय सरकार के पुलिस विभाग के एक प्रवक्ता ने बतलाया है कि पश्चिमी बङ्गाल और मद्रास की भांति युक्तप्रान्त में कम्यूनिस्टपार्टी पर प्रतिबन्ध लगाने की कोई सम्भावना नहीं क्योंकि सरकार ने जो जनहित सम्बन्धी कार्य प्रारम्भ किये हैं उनके होते हुए कम्यूनिस्ट पार्टी के पनपने का अवसर नहीं है।

अगली दिवाली

अगली दिवाली पर ऋषि निर्वाण उत्सव होगा। आप कैसे मनायें? मेरा सुझाव सुनिए

(१) कांग्रेस के खादी सप्ताह से शिक्षा लीजिये, जिस प्रकार कांग्रेस का प्रत्येक सदस्य अधिक-से अधिक खादी बेचने मे अपना गौरव समझता है आप "आर्य-साहित्य" के बेचने का यत्न कीजिये।

(२) अभी से प्रत्येक समाज के मन्त्री को चाहिये कि वह अपने स्थान की आवश्यकता के अनुसार छोटी बड़ी हर प्रकार की कुछ पुस्तकें मगा रक्खें और दिवाली से एक सप्ताह पूर्व अपने भाई बहनों से प्रेरणा करें कि वह अपनी रुचि तथा शक्ति के अनुसार अधिक-से-अधिक पुस्तकें बेचें।

(३) बेचते हुये हताश न हों। अधिक-से-अधिक लोगों से पुस्तकें लेने को कहें।

(४) हर नर नारी को कम-से-कम एक पुस्तक अपने लिये खरीदनी चाहिये। जो निर्धन हैं वे एक आने की। जो अधिक धन दे सकते हैं वे बड़ी-बड़ी पुस्तकें खरीदें।

(५) प्रत्येक को कम-से-कम एक पुस्तक किसी गैर आर्यसमाजी के हाथ बेचने का यत्न करना चाहिये।

अगली दिवाली के सप्ताह को साहित्य वितरण आन्दोलन के अर्पण कर दो।

गंगाप्रसाद उपाध्याय, मन्त्री—सा० दे० सभा

नेहरूजी की उद्योगपतियोंको चेतावनी

५ अ०। प्रधान मन्त्री प० नेहरू जी ने रेडियो से भाषण देते हुवे भारतीय व्यापारियों को चेतावनी दी है कि वे लड़ाई के समय कानूनी अथवा गैर कानूनी ढग से कमाये मुनाफे का सरकार को विवरण दें। इसमें जुर्म करने वालों को सजा देने का कोई प्रश्न नहीं है।

फ्रान्सीसी सरकार का पद त्याग—पेरिस ५ अ०। फ्रान्स के रैडीकल प्रधान मन्त्री हैनरी क्यूबी के मन्त्रिमण्डल ने पद त्याग कर दिया फ्रान्स के स्वतन्त्र होने के बाद यह मन्त्रिमण्डल इन मन्त्रि मण्डलों से अधिक, एक वर्ष तक, पद सीन रहा।

मास्टर तारासिंह की रिहाई—५ अक्टूबर। सिक्खों के सुप्रसिद्ध नेता मास्टर तारासिंहजी जेल से रिहा कर दिये गये। अमृतसर जाते हुवे उनका विविध स्थानों पर शानदार स्वागत हुआ। अस्वस्थ न होने पर भी वे बहुत कमजोर दिखाई पड़ते थे

आर्यवीरदल की सूचना

सभा को विदित हुआ है कि श्री विश्वबन्धु जो शास्त्री अपने को आर्यवीर दल का सेनापति घोषित करके यत्र, तत्र स्थानों में भ्रमण कर धन सचय कर रहे हैं। अत युक्त प्रान्त के समस्त आर्यसमाजों के मन्त्री महोदयों एवं प्रांत के आर्यवीर दल के सचालकों को सभा की ओर से सूचित किया जाता है कि श्री विश्वबन्धु शास्त्रीजी का सभा और वीर दल से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है और न प्रान्तीय आर्यवीर दल के सेनापति ही हैं। अतः उनको किसी प्रकार का सभा सम्बन्धित धन न दिया जावे। इस विषयक सूचना आर्यमित्र द्वारा पूर्व भी दी जा चुकी है। सेनापति पद के लिए अन्य व्यक्ति के निर्वाचन की सूचना शीघ्र आर्यमित्र द्वारा दी जायगी।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री व अधि. आर्यवीर दल

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

ओ३म्

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय,
मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥
ऋ० ८।१०१।१५

मैं प्रत्येक चेतना वाले मनुष्य को कहे देता हूँ कि निरपराध अहन्तव्या गौ (वाणी, गाय) को कभी मत मार क्योंकि वह रुद्रों (प्राणों चेष्टाओं) की माता है वसुदेवों की कन्या है (आत्मा की वासक अग्नि से प्रकट होती है) आदित्य देवों की बहन है, अमरत्व का केन्द्र है।

ता० १३ अक्टूबर १९४९

संकुचित सम्प्रदायवाद

विधि का विधान विचित्र है और इस विचित्र विश्व में आश्चर्यजनक वस्तुओं का अद्भुत बाहुल्य उपलब्ध होता है। इस विचित्रता का एक कौतूहलोत्पादक उदाहरण प्राणिवर्ग में कछुआ है। प्रकृति ने प्राणियों की रक्षा के लिये उनके बाह्य आवरण को जिस प्रकार के आवरक से ढक दिया है, उनके विकास और वृद्धि में उतनी ही बाधा उपस्थित हो गई है। आत्मरक्षा के निमित्त जितना सुदृढ आवरण कच्छप का प्रकृति माता ने प्रदान किया, वैसा अन्य बहुत थोड़े ही प्राणियों को प्राप्त है। प्राणि विज्ञान के विशेषज्ञ ही नहीं, वरन सर्वसाधारण जन भी जानते हैं कि कछुआ अपने जीवन में अत्यन्त अवनतिशील प्राणि है। दूसरी ओर बाह्य आवरण की दृष्टि से मनुष्य सबसे अधिक अरक्षित माना जा सकता है। फिर भी वह विकास, वृद्धि और प्रगतिशीलता में सबसे अधिक उन्नतिशील सिद्ध हुआ है। इस पर्यालोचन से सिद्ध होता है कि परिस्थिति के प्रभावों से सर्वथा सुरक्षित रहने वाले प्राणियों के लिये प्रगतिशीलता का मार्ग प्राय अवरुद्ध सा हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्तिरेकी सकोचजनक प्रवृत्तियों के अनुसरण से जीवन की गति भी अवरुद्ध होकर परिणाममें सकोचन ही उत्पन्न कर सकती है, इसके विपरीत अन्वयी प्रवृत्तियों के प्रभावों से सार्वदिक व्यापकशीलता का समुदय होता है कि जहाँ अनेक प्रकार के विभेदक अथवा विरोधी प्रवृत्तियों के उद्बुद्ध होने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता है।

उक्त विवेचन को दृष्टि से यदि मानवसमाज में पाये जाने वाले सकुचित सम्प्रदायवाद का निरीक्षण किया जाय तो तत्वतः परिणाम उसी प्रकार का प्रतीत होगा कि जैसा प्राणिवर्ग में प्राप्त होता है। ऐतिहासिकों का मत है कि अन्य देशों में और भारत देश में भी चिरकाल तक धर्मतत्व एव उसके विभिन्न प्रभावों से प्रभावित किये जाकर व्यक्ति, जाति, समाज और राष्ट्र का परिचालन किया जाता रहा। उचित, अनुचित, उपादेय, हेय, न्याय, अन्याय आदि २ पारस्परिक सम्बन्धों के व्यावहारिक आचार का निर्णय 'धर्म' और धर्म से उत्पन्न विभिन्न सकुचित सम्प्रदायोंके 'कु' अथवा 'सु' प्रभाव से प्रभावित होकर किया जाता रहा। इसमें सन्देह नहीं कि जब तक अभ्युदय और निःश्रेयस इन दोनों की समन्वितरूप से उपलब्धि मात्र धर्म का स्वरूप अनुभव हो नहीं किया गया, अपितु उसी भावना से भावित होकर जीवन के विविध क्षेत्रों मे तद्वत् व्यवहार भी होता रहा, तब तक मानवीय प्रवृत्तियों, प्रगतियों और व्यवहारों में मानवता अक्षुण्णरूप से आर्जव, मैत्री, न्यायनिष्ठा, साम्य, सद्भावना, सौख्य, सुषमा सदाशयता और जीवनोत्कर्ष उपादानकारण बनती रही। किन्तु जब धर्म के आकाशवत् व्यापक अभिप्राय को विस्मृतकर धार्मिकता (रिलीजियासिटी) जनक सम्प्रदाय, आर्थिक सम्प्रदाय अथवा किसी प्रकार के राजनीतिक सम्प्रदाय को उसके स्थान पर स्वार्थबुद्धि से प्रेरित होकर प्रतिष्ठित किया गया, तब से सकुचित दृष्टिकोण सकुचित दृष्टिकोण से सकुचित सकल्प, सकुचित सकल्प से सकुचित विचार, सकुचित विचार से संकुचित निश्चय, सकुचित निश्चय से सकुचित आचरण और सकुचित आचार व्यवहार में समस्त जीवन धारा ही सकुचित स्वार्थमयी बनने लगी। दूसरे शब्दों में जिस प्रकार गगोत्री के गौमुख से निकल कर लक्ष्मण झूला तक प्रवाहित गङ्गा का जल निष्पक और नितान्त निर्मल ही रहा किन्तु उसके आगे विस्तृत क्षेत्र में अपने विस्तृत आकार को बहुगुणित करते हुगली पर्यन्त पहुँचते २ वही गङ्गा की धारा पक और अन्य प्रकार के दोषों से दूषित ही हो गई। व्यापक सार्वजनीन धर्म की विश्वजनीन भावना के त्यागने और उसके स्थान में सकुचित स्वार्थमयी साम्प्रदायिक भावनाओं के स्वीकार करने से मानवजाति से उत्तरोत्तर मानवता तिरोहित होती गई और उसके स्थान मे दानवता, पशुता और पैशाचिकता का प्रकोप असाधारण रीति से बढ़ता ही गया। आज आनख हिंस साधन सम्पन्न अग्रणी राष्ट्रों में जो नग्नतम और संघातक स्वरूप प्रकुपित होकर प्रकट हो रहा है, उसकी विभीषिका से मानवता त्रस्त और सकुचित होकर विनष्ट होती प्रतीत होती है। सर्वत्र हाहाकार है।

अन्य देशों की भांति भारत म भी सैकड़ों वर्षों तक विभिन्न धार्मिक सकुचित सम्प्रदायों के सघर्ष से उत्पन्न द्वेषाग्नि से बडे बडे अनर्थ हुये हैं। वैष्णव, शैव, शाक्त आदि सम्प्रदायों ने अपने २ सकुचित स्वार्थों से प्रेरित और प्रोत्साहित हो कर आग्रह ग्रस्त मदान्धता के आवेश मे अनेक उपद्रव करने में सकोच नहीं किया। विदेशीय साम्प्रदायिक धर्मान्धता के प्रकोप में से इन मदान्धों ने अनेक अत्याचार, अनाचार, बलात्कार आदि पैशाचिक प्रदर्शन किये हैं। पिछली दशाब्दी म भारतीय सकुचित स्वार्थमयी साम्प्रदायिकता के जो कुछ कटुतम परिणाम हुए तथा जिसके अन्त में द्विराष्ट्र में विभाजित व खण्डित होकर भारत राजनीतिक अर्थोंमें स्वतन्त्र हो सका, उसका मूल कारण सकुचित स्वार्थमयी धार्मिक साम्प्रदायिकता हो है। किन्तु इतने कटु परिणाम के पश्चात् ऐसा प्रतीत होने लगा था कि कदाचित् इतना अधिक मूल्य देकर स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने से सकुचित स्वार्थमयी साम्प्रदायिकता से हमारा छुटकारा हो जायगा। परन्तु इतने मे ही कोढ में खाज की लोकोक्ति के अनुसार अब स्पष्ट दिखाई देने लगा कि स्वार्थमयी सकुचित धार्मिक साम्प्रदायिकता के स्थान में, उससे भी अधिक घातक स्वार्थमयी, राजनीतिक सकुचित साम्प्रदायिकता के अनन्य पुजारी स्थान स्थान पर न केवल अपने २ सम्प्रदायों का व्यापक प्रचार और प्रसार करने के लिये सुसगठित प्रयास करने मे ही लगे हुये हैं, अपितु उनमें कोई-कोई तो क्रूरतम, कटुतम, सघातकतम और आतक एव अराजकताजनक उपद्रव और उत्पातों के द्वारा व्यवस्थित केन्द्रीय शासन पद्धति को उच्छिन्न कर राज सत्ता को जैसे तैसे हथिया कर नितान्त विदेशीय प्रेरणाओं और सिद्धांतों के अनुसार मनमानी शासन पद्धति को स्थापित करने के लिये तुले हुये हैं।

सकुचित स्वार्थमयी मुसलिमलीगी साम्प्रदायिकता सम्प्रति सिकुड़ कर पाकिस्तान के रूप में परिणत हो चुकी है। इसका अर्थ रोगमुक्ति नहीं, रोग का दब जाना मात्र ही है। इधर सर्व साधनोपाय से सर्वथा सुसज्जित कांग्रेस भारत राष्ट्र में सब प्रमुख राजनीतिक पार्टी अथवा सम्प्रदाय होने के कारण तर्वत्र न केवल शासनारूढ हो हैं, अपितु शासन कार्य में नियुक्त लोगों के अतिरिक्त पृथक सगठन द्वारा परोक्ष या परम्परया दैनिक शासन कार्यों मे भी हस्तक्षेप करती प्रतीत होती है। सब प्रकार के मादक द्रव्यों की अपेक्षा मदिरतम मद राजशक्ति भोगने वालों मे हो जाता है। अग्रजों के इस देश से प्रभाव उठ जाने पर भी १५ वर्ष तक उनकी भाषा अग्रेजी का अपनाना हिंदी भाषा और देवनागरी को स्वीकार करने पर भी विदेशीय अङ्कमाला का वरण, राजनीतिक अर्थों मे पूर्ण स्वतन्त्र होने पर भी अग्रेजी राष्ट्रगुट्ट या कामन वेल्थ आफ नेशन्स का भारत को अनुचर राष्ट्र स्वीकार करना एव भारत के साथ 'इण्डिया' अपने राष्ट्र का नाम निश्चित करने के साथ साथ मुख्यतया विभिन्न देशों के शासन विधानों म से सकलित कर भारत के शासन विधान का निर्माण करना और उसमें प्रयत्न पूर्वक भारतीयता का बहिष्कार करना भी ससार का विचित्र घटनायें हैं। इतना होने पर भी कॉंग्रेस सरकार और 'कांग्रेस राजनीतिक

सम्प्रदाय' का बल तथा प्रभाव अनुपम और व्यापक रूप धारण किए हुये हैं। शेष राजनीतिक सम्प्रदाय सङ्कुचित होकर भी धार्मिक और सांस्कृतिक विचारों के साथ समाज सुधार विषयक योजनाओं का अपने को प्रचारक घोषित कर अवशिष्ट विकल्प स्वीकार कर रहे हैं। हिंदू महासभा ने पहले तो विशुद्ध राजनीतिक सम्प्रदाय के रूप में कार्य आरम्भ किया, कुछ समय के अनन्तर अपने को सांस्कृतिक और सामाजिक संगठन घोषित करना सुविधा जनक समझा। किंतु अब फिर उसका लक्ष्य राजनीतिक हो रहा है। सम्भवत आगामी निर्वाचन में हिंदू हितरक्षा के आधार पर वह अपने सदस्यों को निर्वाचन क्षेत्र में प्रस्तुत करेगी। जमायतुल उल्मये हिन्द आरम्भ से ही एक धार्मिक साम्प्रदायिक विचारों का प्रचार करने वाली संस्था रही है। उसने मुसलिम लीग को राजनीति से असहमति प्रकट करते हुये केवल राजनीतिक साम्प्रदायिकता के कांग्रेस का साथ ग्रहण किया। अपने वर्ग अत्यन्त सल्पक होने के कारण उनके लिये ऐसा ही करना सुविधा जनक था। किंतु अन्य विचारों और भावनाओं में वह अपने धर्म, संस्कृति, सामाजिक रीतिनीति एवं परम्पराओं का यथा पूर्व अनुगमन करते रहे। अब भी कांग्रेस के साथ रहने से आगामी निर्वाचनादि में उनको विशेष सुविधा रहेगी, इसमें सन्देह का कोई कारण नहीं है।

यहूदी जाति एक प्राचीन जाति है। इसका इतिहास भी बहुत पुराना है और इसकी संस्कृति भी पर्याप्त प्राचीन है। इस जाति ने दो महान् विभूतियों को जन्म दिया, उनमें से प्रमुख ईश्वर पुत्र हजरत ईसू मसीह हुये। उनके उपदेशों का संग्रह बाइबिल धर्म ग्रन्थ है। इस ईसाई धर्म के मानने वाले ईसाइयों की संख्या लगभग ७५ क्रोटि है दूसरे महापुरुष 'काल मार्क्स' जर्मनी में हुये। उन्होंने अपने विचारों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कैपिटल' में किया। [illegible] राजनीतिक सम्प्रदाय सोशलिज्म मार्क्सवाद कहलाता है। इसका एक रूप साम्यवाद (कम्यूनिज्म) कहा जाता है। आज जिस प्रकार [illegible] देशों का [illegible] राष्ट्र अमे[illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] कम्यूनिस्ट [illegible] को स्वीकार करने वाले [illegible] अग्रणी रूस है इस समय जनतन्त्र ([illegible]) के प्रचारकों में अमेरिका और सोशलिज्म या कम्यूनिज्म प्रचारक राष्ट्रों में रूस प्रमुख है। दोनों ही वस्तुत दो संकुचित स्वार्थमय राजनीतिक सम्प्रदाय हैं। जैसे नाग नाथ वैसे ही सांपनाथ। भारत में समाजवादी नेतागण, कालमार्क्स के अनुगामी होने की घोषणा करते हुये भी शान्तिमय उपायों से राज सत्ता ग्रहण करने के लिये प्रयत्नशील हैं वे कभी कभी भारत के कतिपय महापुरुषों की प्रशंसा भी कर देते हैं। इसी प्रकार इनके सगोत्री साम्यवादी या कम्यूनिस्ट लोग आहार, निद्रा, भय और मैथुन इन चारों पाशविक आवश्यकताओं की महत्ता के आधार पर शान्त, अशांत अहिंसात्मक, क्रूर, कूट, और छल कपट आतंकपूर्ण साधनोपाय। [illegible] राजसत्ता हथियाने पर उतारू है। रूस की प्रेरणा, पूर्ण मान्यता, सहायता और सहयोग एक से भारत को साम्यवादी शासन का राष्ट्र बनाने के लिये उत्सुक हैं। उनकी दृष्टि में भारत के धर्म, संस्कृति, परम्परा आचार, व्यवहार, और मान्यताओं का कोई मूल्य और महत्व नहीं है। इस विदेशीपने की स्थापना ही उनका एक मात्र लक्ष्य है।

इस प्रकार संकुचित स्वार्थमयी धार्मिक साम्प्रदायिकता को आमूल उच्छिन्न करने के कार्यों में लगे हुये प्रमुख राजनीतिक विशेषज्ञों ने जिसप्रकार की सङ्कुचित स्वार्थ मयी राजनीतिक साम्प्रदायिकता को जन्म दिया है, यद्यपि उसके दो विषैले फल गत दो प्रसिद्ध योरोपीय महायुद्ध हुये हैं। फिर भी यह परम्परा प्रगति ही कर रही है। यदि यही अवस्था रही तो न जाने और कितने महासंहार कब, कहाँ, किस मात्रा और परिमाण में होंगे। भारत का उनमें क्या स्थान होगा। अतः क्या धार्मिक और क्या राजनैतिक सभी प्रकार की साम्प्रदायिक संकुचित मनोवृत्ति का परित्याग ही कल्याण का मार्ग है।

— — —

अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन,

(अनिवार्य अप्रिय निश्चय)

आर्य प्र० सभा की गत अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन २९,३० सितम्बर को हरदोई में हुआ। इसी अवसर पर आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव भी था। सभा के अन्तरङ्ग का समाज के उत्सव के साथ अधिवेशन होने के कारण आर्य समाज हरदोई को आर्यनेता तथा विद्वानों के सन्देश हरदोई की जनता को श्रवण कराने का सुलभ अवसर प्राप्त हो गया। क्या उपस्थिति और क्या व्याख्यानों की दृष्टि से उत्सव सब प्रकार से सफल रहा। सभा प्रधान श्री राजगुरु धुरेन्द्रशास्त्री जी, मंत्री प. रामदत्त जी शुक्ल और प. विश्वश्रवाः जी आदि के विद्वतापूर्ण तथा स्फूर्तिदायक-व्याख्यानों से हरदोई वासियो ने खूब लाभ उठाया।

आ० प्र० सभा की अन्तरङ्गसभा का यह अधिवेशन भी इसलिये विशेष रूप से चिरस्मरणीय रहेगा कि उसके सन्मुख सभा के दो प्रमुख महोपदेशक प. प्रकाशवीर जी शास्त्री और प. वाचस्पति जी शास्त्री के कार्यों तथा गतिविधि पर विचार व निर्णय करने जैसा महत्व पूर्ण व अत्यन्त जटिल प्रश्न उपस्थित था। सभाने बहुत समय तक विचार करने के अनन्तर जो निश्चय स्वीकार किया है वह पूर्व अंक में प्रकाशित हो चुका है। सभा को यह कठोर निश्चय अत्यन्त दुःख के साथ स्वीकार करने के लिये वाधित होना पड़ा है जिसे स्वीकार करते हुये सभा के सन्मुख सुधार की सम्भावना भी थी।

इस कठोर निश्चय में इस बात की गुन्जाइश रखीगई प्रतीत होती है कि यदि सम्बद्ध महानुभावों द्वारा उचित भावना से ठीक आधार पर कार्य किया गया तो किसी प्रकार की कटुता अधिक होने के स्थान में सद्भावना उत्पन्न को आवक।

अतःहमें आशा है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होजायगी कि जिससे भविष्य में सभा का सगठन अधिक नियमित विशुद्ध और प्रभाव कारी होसकेगा और देशकी सभी संस्थाओं की अपेक्षा अधिक सम्मानित स्वीकृत और प्रसिद्ध (अर्थ शुचि) की प्रतिष्ठा को आर्य समाज अक्षुण्ण रख सकेगा।

इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ है कि इस प्रकार की घटनाओं के निरोध के लिय सभा ने विवश होकर निश्चय किया है कि उपदेशकों और प्रचारकों आदि द्वारा तिपरनी रसीद से प्राप्त धन की कोष विभाग में भी पक्की रसीदें भेजने की प्रथा प्रचलित की जावे ताकि धोके की सम्भावना न रहे।

आर्य पुरुषों और समाजों का कर्तव्य है कि वे बिना रसीद के धन न दियाकरें तथा दिये गये धन की पूर्ण रसीदें प्राप्त किया करें। यदि एक मासतक सभा कार्यालय से पक्की रसीद न पहुंचे तो सभा से तुरन्त अन्वेषण करें।

— — —

श्री पं० रामचन्द्र जी का स्वर्गवास !

श्री प० रामचन्द्र जी विद्यारत्न महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रांत व विदर्भ व भूतपूर्व आचार्य गुरुकुल होशंगाबाद का ता. २१-९-४९ को हृदय गति बन्द होने से देहान्त हो गया। आप सागर आर्य समाज के पुरोहित का कार्य कर रहे थे। ता. १८ को सागर से प्रचारार्थ जबलपुर पहुँचे और ता. २१ को जबलपुर से गोटेगाव आये। वहा से कुछ मील दूर अतरिया ग्राम जाकर सायकाल को ४॥ बजे वापस आ रहे थे। पंडित जी कुछ दूर पैदल चले होंगे की अकस्मात् हृदय गति बन्द होने से उनका देहान्त हो गया। सायंकाल को गर्टेगांव से अतारयी पढ़कर वापिस आते हुये विद्यार्थियों ने रास्ते पर पड़ हुए शव की सूचना ग्राम में दी, पुलिस को भी सूचना दी। पोष्ट मार्टम के पश्चात डाक्टरों ने हृदय गति बन्द होने से मृत्यु होने की सूचना दी।

प० रामचन्द्रजी विगत ३० वर्षों से इस प्रांत में आर्य समाज का कार्य कर रहे थे। अनेक वर्षों तक वे गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य रहे। उन्होंने ग्राम-ग्राम भ्रमण कर अनेक वर्षो तक धर्म का प्रचार किया। उनकी धर्म पत्नी का स्वर्गवास भी उनकी अनुपस्थिति में गुरुकुल होशंगाबाद में प्रात में प्रचार कार्य करते हुये हुआ था।

पंडित जी के स्वर्गवास से मध्यप्रांत विदर्भ का एक महान् आर्य उपदेशक व विद्वान् उठ गया है। आर्यमित्र उनके परिवार व बन्धुबान्धवों से समवेदना प्रकट करता है।

वेदवाणी—

जानने योग्य

(श्री श्याम बिहारी लाल वानप्रस्थी)

विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। विनाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति।

यजु० १२ म० ३

पदार्थ हे मनुष्यो जो (वरेण्य) ग्रहण करने योग्य कवि सर्वज्ञ (सविता) सब संसार का उत्पादक जगदीश्वर (उषस) उषा के (प्रयाणम्) प्राप्त कराने को (अनुविराजति) प्रकाशित होता है (विश्व) सब (रूपाणि) पदार्थों के स्वरूप (प्रतिमुञ्चते) प्रसिद्ध करता है और (द्विपदे) मनुष्यादि दो पग वाले (चतुष्पदे) तथा गौ आदि चार पग वाले प्राणियों के लिये (नाकम्) सब दुःखों से पृथक् (भद्रम्) सवने योग्य सुख का (व्यख्यत्) प्रकाशित करता और (प्रासावीत्) उत्पन्न करता है ऐसे ईश्वर को तुम लोग जानो।

मन्त्र पर विचार धारा

एक योगी जनसाधारण को उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! तुम ऐसे ईश्वर को जाना, गहरी उपासना के द्वारा उसका साक्षात्कार करो। वह ईश्वर 'वरेण्य' है। स्वीकार करने योग्य है। वही चुनने योग्य है। संसार में अनेक सुन्दर, मनोहर वस्तुयें हैं। उन सबमें अत्यन्त सुन्दर, मनोहर, ग्राह्य, आकर्षक वही है। साधारण जीव संसार की चमकीली चीजों में इस लिए फंसता है कि उसको पता नहीं कि प्रभु कितना आकर्षक है। जो उपासक उस दिव्य ज्योति की छटा देख लेते हैं उनके समक्ष और सब ज्योतियां फीकी नीरस हो जाती हैं। आओ हम सब उस दिव्य ज्योति की ओर तीव्र वेग से अनुसरण कर और अपनी आत्मा के द्वारा उसकी छटा किरणें देखें जिससे प्राकृतिक सब ज्योतियां फीकी, हेच, तुच्छ प्रतीत होने लगें। यह प्रभु 'कवि' है। क्रान्तदर्शी है सर्वज्ञ है। वही 'सविता' है। उसने संसार को उत्पन्न किया है, रचा है निर्माण किया है। वह उपासक के हृदय में प्रभात बेला की अवस्था उत्पन्न करता है। यह अवस्था भक्त की तब होती है जब अविद्या का अन्त और ज्ञान दीप्ति होने को होती है। तब प्रत्येक वस्तु यथावत् प्रतीत होती है। वह प्रभु सब जीवों को सब सुख की सामग्री भोगानुसार देता है। मनुष्य इन सुख के साधनों को ऐसे भाव से भोगे कि आगे के लिये कोई लिप्साव न हो।

वैदिक धर्म—आर्यसमाज के सच्चे सेवक

स्वर्गीय श्री ठा० खमान सिंह जी (बरौठा) का संस्मरण

संसार में अनेक व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं। इसी का नाम संसार है। विशिष्ट पुरुषों की विशेष स्मृतियां रह जाती हैं। श्री ठा० खमानसिंह जी उन्हीं व्यक्तियों में से थे। वैदिक धर्म और आर्य समाज में अद्भुत गहरी लग्न मैंने सदा उनके अन्दर देखी। इसके लिये वह बहुत ही गहरा विचार करते थे। चाहते थे कि सारा भारतवर्ष कुरीतियों और अज्ञान को छोड़ कर शीघ्र से शीघ्र वैदिक धर्म की छत्र छाया में आ कर अपना कल्याण करें। जहां वह आर्य समाज के अनन्य भक्त थे, वहां वह देश भक्त भी बड़े थे।

शुद्धि के कार्य में उन्होंने प्राणपन से सहयोग दिया। क्रियात्मक रूप में अपने तथा अपने घर के कई पुत्रों का विवाह शुद्ध हुये वा बिरादरी से पीड़ित परिवारों में कर एक सच्चे आर्यपुरुष का आदर्श रखा। अलीगढ़ जिले में आर्य समाज की प्रगति में उनका विशेष भाग रहा "आर्य मित्र" और 'मतवाला' पत्र को वह बड़े भाव से पढ़ते थे।

स्वर्गीय वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के आश्रम के आरम्भ से ही तीन सहायक ठा० रामचन्द्र सिंह ठा० चन्दन सिंह ठा० कृष्ण सिंह जी, कुमार चौथे ठा० खमान सिंह जी, थे। जिनकी गम्भीरता और दूरदर्शिता से आश्रम को बहुत लाभ हुआ। आश्रम के वह सदा अत्यन्त भक्त रहे।

गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता पद पर रहते हुये ये अपने एक पुत्र को आर्ष पाठ विधि में लगाया। आर्ष पाठ में इन की पूरी निष्ठा थी। आश्रम में भी इस पाठ विधि को चलाने की उन की हार्दिक प्रबल इच्छा थी।

आप की आयु ८१ वर्ष की थी। इनका जन्म कार्तिक कृष्णा नवमी सम्वत् १९२५ का था। अन्तिम श्वास तक इनकी स्मृति और मस्तिष्क सर्वथा ठीक रहा। बहुत समय से रुग्ण रहने पर भी मृत्यु से आठ दिन पूर्व तक शौचालय में शौच के लिये जाने स्नान करने संध्या अग्निहोत्र आर्याभिविनय और उपनिषद् का पाठ स्वयं करते रहे। यहां तक कि मरने से आठ घण्टा पहिले भी चौकी पर बैठ कर शौच क्रिया की। किसी ने पूछा सत्य, तो कहा 'वैदिक धर्म की सेवा'। मृत्यु से दो घण्टे पूर्व कहा, 'फटे चिथड़े को फेंक कर नवीन चोला लेना है'। एक मास पूर्व कहा कि 'देखना अन्तिम श्वास तक मेरा धैर्य नहीं छूटेगा, और न मेरे मस्तिष्क में कोई विकार उत्पन्न होगा। ऐसा ही हुआ। अन्तिम श्वास तक न घबराहट, न कराहट का कोई शब्द मुख से निकला।

अपने वैदिक धर्म भी सच्चे उत्तराधिकारी ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म में परम निष्ठावान ज्येष्ठ पुत्र श्री डा० महावीरसिंह जी सिविल सर्जन ग्वालियर को अन्तिम पत्र में लिखा—"अधिक जीने की मुझे इच्छा नहीं है, न मृत्यु से मुझे भय है। कोई अभिलाषा भी शेष नहीं है, केवल एक इच्छा अवश्य शेष है जो मृत्यु पर्यन्त रहेगी कि ऋषि दयानन्द ने जो महान उपकार किया है उनके बतलाये हुए वैदिक धर्म की मैं कुछ सेवा न कर सका। वैदिक धर्म में इनकी सच्ची निष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है।

क्या कहना! अपनी पुत्री के विवाह में इस एक वीर आर्य पुरुष का संस्कार विधि में आये ७ मन्त्रों (जिन्हें अब विवादास्पद बतलाया जाने लगा है) को नीचे लिखे अर्थ सहित पढ़ते देख कर इन पंक्तियों का लेखक आश्चर्य चकित रह गया। जिद्दी माने जाते थे, तभी तो अन्तिम श्वास तक घबराहट नहीं दूर हुई। अब तो त्यागो मयि देहि का ही फल समझना चाहिये। अब अवश्य ही नये ढंग से वैदिक धर्म की सेवा करें उनकी इच्छानुसार हम भी यही प्रभु से प्रार्थना करते हैं। और परिवार में वैदिक धर्म की भावना सदा बढ़ती रहे, यह जगन्नियन्ता से मङ्गल कामना करते हैं।

कश्मीर के मामले में भारत की नीति उचित

अमरीकी राजनीतिज्ञ एमेनुएल लार्सेन का वक्तव्य

न्यूयार्क २७ सितम्बर। सुदूर पूर्वी मामला में विशेषज्ञ वाशिंगटन के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ एमेनुएल एम, लार्सेन का न्यूयार्क टाइम्स में एक पत्र प्रकाशित हुआ है जिसमें लार्सेन ने कहा है कि १६ सितम्बर को पत्र में कश्मीर सम्बन्धी जो सम्पादकीय छापा है वह भारत के साथ न्यायपूर्ण नहीं है।

उस सम्पादकीय से ऐसा आभास मिलता है कि जैसे पाकिस्तान ने कश्मीर कमीशन के प्रस्ताव बड़े सीधे बनकर स्वीकार कर लिये हैं और शान्तिपूर्वक समझौते में केवल भारत ही बाधा है।

प्रकाशित रिकार्ड यदि उसे कोई पढ़ने का कष्ट करे तो उससे यह स्पष्ट हो जायगा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव का भारत ने बराबर पालन किया है। यही नहीं भारत पाकिस्तान की चालबाजियों के बावजूद नम्र होता गया है। सारे झगड़े की जिम्मेदारी स्पष्टतया पाकिस्तान पर ही है और उसे आक्रमणकारी कहा जा सकता है।

यही कारण है कि अपने १३ अगस्त १९४८ के प्रस्ताव में कश्मीर कमीशन ने यह घोषित किया कि जो स्थिति पाकिस्तान सरकार ने बयान की थी आज की स्थिति उससे बिल्कुल भिन्न है क्योंकि कश्मीर में कबाली और पाकिस्तानी दोनों सेनायें मौजूद हैं।

और इसीलिये प्रस्ताव में कहा गया कि कश्मीर में स्वतन्त्र मतगणना होने के लिये वहाँ से कबीली और पाकिस्तानी सेनाओं का हटाना आवश्यक है।

पाकिस्तान की यह चाल रही है कि कमीशन के प्रस्तावानुसार पाकिस्तानी सेना को कश्मीर से न हटाया जाय ताकि स्वतन्त्र और निष्पक्ष मतगणना न हो सके।

इस सम्बन्ध में पाकिस्तान के वैदेशिक मंत्री जफरुल्ला खाँ के १३ अगस्त के प्रस्ताव सम्बन्धी पत्र के जवाब की ओर ध्यान देना काफी होगा। पाकिस्तान ने प्रस्ताव स्वीकार करने में इतने अगर मगर लगा दिये गये हैं कि कमीशन ने उस उत्तर का यही अर्थ लगाया कि पाकिस्तान को यह प्रस्ताव मंजूर नहीं है। वास्तव में पाकिस्तान का यही तरीका बराबर रहा है।

कमीशन द्वारा पंच का प्रस्ताव स्वीकार करना वस्तुतः पाकिस्तानी आक्रमण को छिपाने का तरीका है।

इन परिस्थितियों में भारत द्वारा पंच का प्रस्ताव नामन्जूर कर देना उचित ही है क्योंकि जो प्रश्न कमीशन द्वारा तय हो चुके हैं उन्हें फिर से नहीं उठाया जा सकता।

अन्त में एमेनुएल लार्सेन ने लिखा है कि कश्मीर में पाकिस्तानी आक्रमण पाकिस्तान के नेताओं ने ही आयोजित किया था यह पाकिस्तान के विभिन्न वक्तव्यों एवं भाषणों से पूर्णतः स्पष्ट हुआ है।

आगामी कुम्भ पर भारतवर्ष अपनी मानवता का प्रदर्शन करे

(लेखक—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर')

श्री प्रभाकर जी का यह लेख एक विशेष महत्व रखता है, आज देश में नैतिकता तथा अनुशासन की कमी कौन विचारशील देश प्रेमी को नहीं अखरती होगी। आज तक इस सब का दोष हम विदेशीराज को दे दिया करते थे, परन्तु अपने ही राज में इस दोष का भागी किसे बनायेंगे? यह एक विचारणीय और आवश्यक प्रश्न शीघ्र ही अपना समुचित हल मांगता है, श्री प्रभाकर जी ने इसी विचार से महान् पर्व कुम्भ का निर्देश किया है आशा है पाठक इस वास्तविकता की गहराई को अनुभव करेंगे।

—सम्पादक

"हटो पीछे, हटो पीछे, और हटो सुअर!"

उस समय मेरी उम्र कोई ८ साल की थी। मेरी मा हरद्वार के कुम्भ में जा रही थी और मैं साथ था। देवबन्द स्टेशन पर इतनी भीड़ थी कि हम टिकट ही न ले सके जाने कितनों का यही हाल हुआ होगा, पर सहारनपुर टिकट घर पर तो सन् सत्तावन का विप्लव ही बना हुआ था। हल्ला इतना कि बच्चे घबरा जायें और स्त्रियों को हिस्टीरिया उठ जाये। हरेक को अपनी ही पड़ी हुई थी।

पहले तो उस खिड़की तक पहुंचना ही कठिन था, पर मरता मारता कोई वहाँ तक पहुंच भी जाये तो वहाँ से लौटना मौत की डाढ से वापस आना था। मा एक बहादुर स्त्री थी, वह टिकट खरीदने को बढ़ी पर पवित्र हरिद्वार तथ में कुम्भ के पुण्य पर्व पर गंगा स्नान कर स्वर्ग का सौदा रिजर्व कराने वाली उस भीड़ ने उनके साथ जो व्यवहार किया, उसे याद करके आज कई युगों के बाद भी मेरा खून खौल उठता है और मन विद्रोह की आग से फुंकारने लगता है।

मा दुखी होकर लौट आई। मेरे बालक मन ने उसकी तकलीफ को महसूस किया। मैंने हिम्मत कर टिकट के दाम माँ के हाथों से ले लिये और उस भीड़ में घुस गया, पर उस अन्धी भीड़ में मैं ऐसा ही था, जैसे तोप के मुंह में मच्छर! धक्के खाता पैर कुचलवाता और घुटता हुआ मैं न जाने कितनी देर में स्वर्ग का उस खिड़की तक पहुँचा।

यमराज के प्रहरी की तरह एक पुलिस कानिस्टबिल वहाँ खड़ा था। जो लोग उसे कुछ पैसे दे देते, उन्हें तो वह अपने बायें हाथ के नीचे से निकाल देता, पर बाकी मुसाफिर खुदा के रहम पर अपनी किस्मत से जूझते रहते। मैं भी कुछ पैसे देकर टिकट लेने की बात सोच ही रहा था कि पीछे से एक रेला आया और मैं उस सिपाही से टकरा गया।

यह टक्कर उसकी बर्दाश्त से बाहर थी। उसने अपनी कमर से अपना डण्डा निकाला और भीड़ पर टूट पड़ा। सबसे आगे मैं था, इसलिये उसका पहला डण्डा मेरी खोपड़ी पर पड़ा। मेरा सिर घूम गया और आधी बेहोशी की सी हालत में मैं वहीं बैठ गया, पर अब भी उस सिपाही की ललकार मेरे कानों में आ रही थी—'हटो पीछे, हटो पीछे और हटो सुअर'!

* * *

आठ आने उसी सिपाही को देकर हमने टिकट खरीदा, पर अभी एक और दरवाजा पार करना शेष था। बहुत देर साँस रोके, पत्थर की मूरत-सी बिना हिले डुले खड़े रहने के बाद वह दरवाजा खुला, पर रेला इतना जबरदस्त कि मैं और माँ अलग अलग हो गये। एक स्वयं सेवक की कृपा से जब हम दोनों मिले, तो मैं सिसक रहा था और मा बिलख रही थी।

अब गाड़ी में बैठने की समस्या थी। गाड़ी का अर्थ है मालगाड़ी। सभी डब्बे ठसाठस भरे हुए थे। लावारिसों की तरह इधर-उधर दौड़े दौड़े फिरने के बाद आखिर एक बाबू ने हम दोनों को एक डब्बे में ठूंस दिया। ठूंस दिया इस माने में कि भीतर के मुसाफिर हमें बाहर को धक्का दे रहे थे और बाबू भीतर को।

एक बार घबराकर माँ ने कातर दृष्टि से बाबू की ओर देख कर कहा—बाबू जी, हमें और कहीं बैठा दो। पर बाबू की सहृदयता अभग रहा और भिड़क कर उसने कहा—'बैठ जाओ, बड़ा चली है और कहाँ जाओ"! और उसने पूरी ताकत से हमें भीतर धकेल दिया।

कूप में भुस की तरह ठोकर भरे जाने के बाद भी मुसीबतों का अन्त नहीं हुआ। वह डब्बा गुड़ का था और उसमें उड़ उड़कर ततैये आते थे जब एक लाल ततैये ने मेरी गर्दन पर काटा, तो मैं तो तड़फा ही मेरी माँ भी बहुत पछताई। हरद्वार पहुंच कर भी दो बार मौत का रथ मेरे सिर पर को ही उतर उतर गया पर इस घटना का वर्णन करना मेरे भाग्य में लिखा था। इसलिये जान बच गई।

* * *

बारह साल का एक युग मानें, तो इस घटना को हुए तीन युग बीत गये और अब १९५० में फिर से कुम्भ आ रहा है। यह स्वतन्त्र भारत का पहला कुम्भ होगा। पिछले कुम्भों में भेड़ बकरियों की तरह हमारे देशवासी अपना यह सबसे बड़ा पर्व मनाते रहे हैं और हमारी सरकार के कर्मचारी हड़काये भेड़ियों की तरह डण्डों की राक्षसी ताकत से उसका प्रबन्ध करते रहे हैं।

स्वतन्त्र देश का यह पहला कुम्भ अपने आने से पहले ही अपने देश के निवासियों और अपने देश के लोकप्रिय शासकों से पूछ रहा है कि क्या इस बार भी मुझे उस गुलामी के वातावरण में ही मनाया जावेगा? यह प्रश्न बेधक ही नहीं है, महत्वपूर्ण भी है और इसका सही जवाब देने के लिये जहाँ देश वासी बाध्य हैं वहाँ शासक भी।

कुम्भ पर्व का इतिहास क्या है? यह सवाल हमें यहां नहीं छेड़ना, पर यह कहना है कि कुम्भ का पर्व सांस्कृतिक जीवन की उन्नति के लिये ही आरम्भ किया गया था और नागरिकता सांस्कृतिक जीवन का ही बाहरी रूप है, इसलिये यही जरूरी नहीं कि कुम्भ का प्रबन्ध हमारा आदर्श हो, बल्कि यह भी जरूरी है कि हम इसका उपयोग जनता को नागरिकता की शिक्षा देने में करें।

५० हजार आदमियों की भीड़ को हम शुरू से संगठित होकर कंट्रोल कर सकते हैं। बड़े-से-बड़े मजमे में तीन बदमाश तीन ईंटे फेंक कर भगदड़ मचा सकते हैं। देश की यह दशा हम अब बर्दाश्त नहीं कर सकते तो कुम्भ से अच्छा मौका और कब आयेगा कि हम जनता को इसके लिये ट्रेंड कर?

* * *

दूसरे देशों में भी भीड़ होती है और वहाँ से ज्यादा भीड़ होती है, पर कभी कोई गड़बड़ नहीं होती। हर आदमी अपनी जिम्मेदारी खुद महसूस करता है, जैसे हरेक आदमी पुलिसमैन हो। साथ ही सरकारी कर्मचारी भी विशेषज्ञों की तरह हर परिस्थिति का पहले से ही अन्दाज लगाकर रहता है। नतीजा यह कि हरेक बात में व्यवस्था, हरेक जगह डिसिप्लिन।

इंगलैंड के बादशाह पंचम जार्ज मरे, तो उनकी लाश को अन्तिम दर्शनों के लिये बर्मिंघम राजमहल के एक छज्जे पर रख दिया गया, तो लाखों आदमियों ने उनके दर्शन किये। दर्शन करने वालों की रफ्तार फी घण्टा पन्द्रह हजार थी।

खास बात यह कि इसके लिये पुलिस का कोई खास प्रबन्ध नहीं था फिर भी सारा वातावरण गम्भीर और शांत था।

छठे जार्ज का जब राज्याभिषेक हुआ तो लाखों आदमियों के लिये पण्डाल बनाया गया था। इसमें आने के लिये सत्ताईस हजार विद्यार्थियों को भी पास दियेगये थे। इन सत्ताईस हजार विद्यार्थियों में सिर्फ दो लेट पहुंचे। इन दो में से भी एक को रास्ते में चक्कर आ गया था?

११ नवम्बर को लन्दन में पिछले जर्मनवार का स्मृति दिवस मनाया जाता है। ब्रिटिश म्यूजियम के बाहर उन सब वीरों के नाम खुदे हैं, जो युद्ध में वीरता पूर्वक मरते हुए शहीद हुए।

लाखों आदमी इन नामों पर फूल चढ़ाते हैं। पर वहां न कभी हल्ला मचता है, न दुर्घटना होती है।

ऐम्स टर्डम में कई देशों के खिलाड़ियों का एक मैच हुआ था। कई लाख आदमी उसे देख रहे थे। दुर्भाग्यवश स्टेडियम का एक छज्जा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गुरुकुल शिक्षा का महत्व

(श्री विद्यानन्द जी मन्त्री स्वर्णजयन्ती महोत्सव गुरुकुल कांगड़ी)

बड़े बड़े विद्वान् विभिन्न दृष्टियों से विचार करते हैं कि शिक्षा के क्या उद्देश्य होने चाहिये। परन्तु वे इस महत्व पूर्ण प्रश्न का उत्तर उतनी स्पष्टता से नहीं देते जितनी स्पष्टता और निश्चयात्मकता से देना चाहिये। निरुक्तकार यास्काचार्य इस गम्भीर प्रश्न का हल तीन अक्षरोंके 'आचार्य' शब्द में पाते हैं। यह संस्कृत भाषा की अपूर्व और विचित्र महिमा है कि उसका प्रत्येक शब्द अपने में बड़े विस्तृत ज्ञान को ढांपे रखता है। आचार्य का निर्वाचन करते हुये यास्काचार्य लिखते हैं। "आचार्य-आचार ग्राहयति, आचिनोत्यर्थान् आचिनोति बुद्धिम" अर्थात् आचार्य वह है जो शिष्य को सदाचार ग्रहण करावें, उसके शब्दों के अर्थों का सचय करे, और उसकी बुद्धि को बढ़ावें। इस शिक्षा के एक मात्र यही तीन उद्देश्य होने चाहिये कि १ विद्यार्थियों के सदाचार का निर्माण किया जावे। २ उसे प्रत्येक शब्द के यथार्थ अर्थ का साक्षात्कार कराते हुये उस में वस्तुओं का यथार्थ बोध संचित कर दिया जावे। ३ और उसकी ईश्वरीय प्रदत्त बुद्धि को पूर्णतया विकसित किया जावे। "यदि वर्तमान यूनिवर्सिटियों की शिक्षा पद्धति की ओर दृष्टि डाली जावे तो हमें स्पष्ट रूप से विदित होता है कि सदाचार निर्माण, पदार्थावबोध और बुद्धि विकास, शिक्षा के इन तीन उद्देश्यों में से प्रथम और अन्तिम उद्देश्य को सर्वथा भुलाया हुआ है। सदाचार निर्माण तो शिक्षा के श्लेष में से बहिष्कृत है ही परन्तु इसके साथ साथ कृत्रिम पाठ प्रणाली की पत्र कक्षा में से बिना किसी ननु नच के प्रत्येक विद्यार्थी को गुजराने से उनकी ईश्वर प्रदत्त बुद्धि का विकास भी नहीं हो पाता। होना तो यह चाहिये था कि जैसे सूर्योदय के होने पर सूर्यप्रकाश से रोग कृमि नष्ट हो जाते हैं चोर चोरी से विरत हो जाते हैं, मलिनता दूर हो जाती है और बन्द कमल खिल जाता है उसी प्रकार विद्योदय के होने पर विद्या प्रकाश से काम क्रोध, लोभ, मोहादि मल दूर हों, पाप कृमि नष्ट हों, और बुद्धि कमल का विकास हो। परन्तु इस माया रूप धारिणी विद्या से पाप मल की वृद्धि होती है और बुद्धि कमल बिना खिले ही मुरझा जाता है।

एव शिक्षा के दूसरे उद्देश्य की पूर्ति के लिये किताबी शिक्षा की ओर ही ध्यान दिया जाता है। ऐसी शिक्षा से दूसरा उद्देश्य भी पूर्णतया पूरा नहीं होता है, पाठक समझ सकते हैं कि आधुनिक यूनिवर्सिटी शिक्षा पद्धति कितनी दोष पूर्ण है। यह शिक्षा पद्धति वह है जो कि शिक्षा के तीनों उद्देश्यों में से किसी भी उद्देश्य को सच्चे अर्थों में पूर्ण नहीं करती। इस लिये हमारे ऋषियों ने जो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित की थी वह विवेक पूर्वक है और वही वस्तुतः में मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली है। वह शिक्षा प्रणाली कैसी है उसे मैं ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर ही बतलाना चाहता हूँ जिससे विद्वान् लोग उस पर अधिकाधिक विचार करते हुए विद्यार्थियों के जीवन को सफल बनावें।

शिक्षा का महत्व केवल विद्वत्ता में नहीं प्रत्युत सदाचार से है। एक बड़ा भारी विद्वान प्रत्येक दार्शनिक विषयों को भली प्रकार समझाने की योग्यता रखने वाला यदि अपने आचार द्वारा प्रभाव नहीं डाल सकता तो उसको समस्त विद्वत्ता लोगों के लिये व्यर्थ और उसके लिये भार स्वरूप है इसके विरुद्ध एक साधारण विद्वान जो अपने आचार द्वारा यह दिखला सकता है कि श्रेय और प्रेय मार्ग क्या है, संसार का बड़ा उपकार कर सकता है। अत एव शिक्षा पूर्ण तभी है जब कि विद्वत्ता के साथ साथ चरित्र संगठन का भी बल हो। वही शिक्षा संस्था वस्तुतः लोकोपयोगी संस्था है जहाँ इस प्रकार का प्रबन्ध हो।

गुरुकुल इस प्रकार की संस्थाओं में में से है जहां विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करते हुये विद्या की प्राप्ति कराई जाती है। वृक्ष का उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता उस के फल द्वारा निश्चय की जाती है। गुरुकुल से निकले हुये स्नातकों में से कईयों ने यह दिखला दिया है कि उनको शिक्षा दात्री संस्था सचमुच देश के एक आवश्यक अंग की पूर्ति कर रही है।

यह ठीक है कि बहुत से लोग इससे निराश हो गये हैं परन्तु इसका कारण यह है कि कार्य आरम्भ करते ही लोग बड़े बड़े फल की इच्छा करने लग जाते हैं। उन लोगों ने आशा की थी कि गुरुकुल से कणाद और गौतम निकलेंगे। परन्तु यह नहीं ध्यान दिया कि कि इतने दिनों की बिगड़ी हुई परिपाटी एक दम कैसे सुधर सकती है। आखिर वे बालक जो गुरुकुल में प्रविष्ट हुये हैं, उन लोगों को ही सन्तान हैं जिन्होंने नियम पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं किया है और उनके पढ़ाने वाले किसी गुरुकुल के नहीं प्रत्युत कालिज के निकले हुये हैं और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के वातावरण से बाहर नहीं है। हम धैर्य पूर्वक स्वामी जी के बतलाये हुये मार्ग का अनुकरण करते चले जायें तो आशा है अवश्य सफलता प्राप्त होगी और किसी न किसी समय वह दिन भी देखने में आ जायगा जिसकी सब को प्रतीक्षा है। ईश्वर वह दिन लावे।

आर्य जाति को प्रण करना चाहिए, कि अपने आचार्य ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुये इस जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपनी सन्तानों को गुरुकुल की शिक्षा देना अपना कर्तव्य समझे। ऐसा न हो कि आर्य जाति की असावधानता से यह अमर वैदिक परम्परा क्षीण होती चली जाय और फिर पीछे पछताकर सिर नीचा किये सब से यह सुनना पड़े कि 'अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत। अत ऐ आर्य जाति के वीरों उठो, कमर कसकर तैयार होओ अब आगे, प्रतीक्षा का काल नहीं रहा।

श्रद्धा

[कुमारी भारती]

श्रद्धा का शब्दार्थ है सत्य को धारण करना, सच्चाई को जीवन का अङ्ग बनाना।

भगवान् कृष्ण ने कहा है अज्ञानी श्रद्धाहीन और संशयात्मा पुरुष का नाश होता है। श्रद्धा मानव के विकास का प्रमुख साधन है। सत्य का ज्ञान कठोरता और तत्परता से करो। ज्ञान होने पर उस सत्य को धारण करने का दृढ़-संकल्प करके आगे बढ़ो।

विश्वास करो तुम्हारे आध्यात्मिक और लौकिक विकास में श्रद्धा का प्रधान स्थान है। इसके बिना तुम बहुत दूर तक न चल सकोगे।

परम सत्य प्रभु ही है। वह तुम्हारे सङ्ग सङ्ग है। वह तुम्हें नहीं छोड़ता। वह तो तुम्हारे सोते हुये जागता है। तुम उसे नहीं जानते वह तुम्हें तो जानता है। जानता ही नहीं प्यार भी करता है। क्या तुम उस प्यार को नहीं चाहते। भूल न करो, जीवन का एक एक क्षण बहुमूल्य है। अनन्त काल चक्र में तुम्हारी आयु के कुछ वर्ष हैं ही कितने, इसलिये इस शरीर और दूसरे साधनों से पूरा-पूरा लाभ उठाओ।

जीवन का परम लाभ है अनन्त सत्य और प्रेम रूप प्रभु को समझना और धारण करना।

तुम इसे कठिन समझते हो। वास्तव में वह कठिन नहीं। कमी यह है कि तुम इसकी आवश्यकता नहीं समझते।

भाई? अन्तर्मुख होकर देखो तुम्हें जो कार्य कठिन और असम्भव प्रतीत होता है वह वास्तव में वैसा कठिन और असम्भव नहीं है। श्रद्धा करो। कुछ करने का साहस करो।

तुम्हारी आँखें बाहर की ओर देख रही है। जो कुछ तुम्हें दीखता है तुम उसी पर विश्वास करते हो, परन्तु तुम्हारी आँखें भी उसे देखती हैं जिनको तुम देखना चाहते हो। तुम जिसे देखना नहीं चाहते वह सामने होता हुआ भी तुम्हें नहीं दीखता। वास्तव में आंख की भी आंख भीतर है। तुम्हें उसी को समझना चाहिये।

सामने देखो विश्व कितना सुन्दर प्रतीत होता है। पर्वत, नदी और अरण्य कितने मनोहर हैं क्या तुम्हें इस सब में कोई अनुपम कर्तृत्व और सौन्दर्य नहीं प्रतीत होता है।

तुम अपने भूले न बनो कि इस स्पष्ट सत्य को भी निगल जाओ।

श्रद्धा के बिना तुम्हारा जीवन वैसे ही नीरस होगा जैसे पानी के बिना नदी। और सुगन्ध के बिना पुष्प। तुम्हें श्रद्धा माता की गोद में अनिर्वचनीय आनन्द मिलेगा।

श्रद्धा को अपने हृदय आसन में बैठने के लिये बुलाओ। प्रातः मध्यान्ह सोते जागते श्रद्धा का आह्वान करो। श्रद्धा को हाथ से न जाने दो। जब तुम श्रद्धा के गहरे गर्त में पड़ कर निराश्रय हो जाओ। तब यह श्रद्धा माता ही तुम्हें आश्वासन् बना सकेगी। श्रद्धा का पाथेय लेकर यदि तुम बीहड़ जीवन जङ्गल में निकल जाओगे तब भी तुम निर्भय रहो

श्रद्धा तुम्हें सदा युवा बनाये रखेगी। सब कार्य प्रभु कर रहा है। वह तुम्हारे प्रत्येक शुभ कार्य में सहायक है। प्रत्येक कठिनाई को सरल करने वाला वह सर्वत्र सदा विद्यमान है। तुम उस पर अटल विश्वास और श्रद्धा करो। प्राचीन और वर्तमान आप्त पुरुष तुम्हारी भलाई के लिये जो कुछ कहते उसका आचरण करो। जो सत्य आचरण के बाद ही प्रतीत होगा उसे बिना आचरण के असत्य कह कर न टालो। पूर्ण यौवन और पूरी शक्तियों और श्रद्धा के साथ इस सत्य को प्राप्त करने का प्रयास करो।

ग्रामों में वेद प्रचार के लिये एक सुझाव—

स्वतन्त्र भारत और वेद-प्रचार

(लेखक—श्री शिवनारायणलाल विशारद,)

भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्य समाज को जो श्रेय प्राप्त है, वह अन्य को नहीं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये किसी देश को जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उन गुणों का प्रादुर्भाव आर्य समाज के द्वारा सम्भव हुआ है। यथा, भाषा, समाज में समता लाना, राष्ट्रोपयोगी शिक्षा, समाज के अन्य उपेक्षित अङ्गों की ओर ध्यान देना, मादक पदार्थों का बहिष्कार और स्वदेशी और बलिदान की भावना मनुष्यों में भरना आदि आदि कार्य ऐसे हैं जिन के पूर्ण होने पर ही राष्ट्र स्वतन्त्र होते हैं। आर्यसमाज ने सर्व प्रथम पराधीनता के कष्ट को अनुभव किया। इसलिये उसने उपर्युक्त कार्यों की पूर्ति हिन्दी प्रचार, अछूतोद्धार, गुरुकुल-कालेज, विधवा आदि के प्रश्न, मादक पदार्थों का बहिष्कार स्वदेशी को प्रोत्साहन और बलिदान भावना को देश में जाग्रत किया यह कहना अत्युक्ति न होगा कि देश को आज़ाद करने में आर्यसमाज के प्रयत्न उधर लग गये और इधर प्रचार-कार्य में शिथिलता आ गई। किन्तु आज आर्यसमाज का प्रयत्न सफल है परन्तु उसके ऊपर जो उत्तरदायित्व आ पड़ा है वह पहिले से भी अधिक है। अर्थात् जिन कार्यों और प्रयत्नों से आज़ादी मिली है उन कार्यों को स्थिरता प्रदान करनी है तभी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रह सकती है। अतएव आर्य समाज को वेद प्रचार के कार्य को तीव्र गति से आगे बढ़ाना है। उसे एक निश्चित प्रोग्राम के द्वारा गाँवों में आना चाहिये। ताकि अज्ञानरत समाज को—जो रूढ़ियों के कारण त्रस्त और अस्त-व्यस्त है, जीवन प्राप्त हो और वह सङ्गठित होकर स्वतन्त्र भारत को मान मर्यादा का रक्षक बने। अतः वैदिक संस्कृति के प्रचार के लिये एक सुझाव है कि आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से रसीद बुकें छपवाई जो उत्साही कार्यकर्ता जिनमें स्थानीय व्यक्ति भी हों—इस कार्य में लगा दिये जावें और वे प्रत्येक ग्राम से—उस ग्राम के वेद प्रचारक सभा फण्ड में धन राशि एकत्रित करें। यह धन राशि स्थायी कोष के रूप में ग्राम वार सभा के पास रहे। उसके ब्याज से वर्ष में यदि एक बार भी उस ग्राम में महर्षि का सन्देश पहुंच गया तो जनता में नूतन कुछ जागृति होगी ही। मेरा अनुमान है कि जिस ग्राम में १०० घर भी होंगे वहाँ से १००) सरलता से प्राप्त हो जायगा। इस प्रकार प्रत्येक ज़िले से अच्छी धनराशि प्राप्त हो सकती है और अत्यन्त सुचारु रूप से प्रचार कार्य को चला सकते हैं।

(पृष्ठ ६ का शेष)

टूट गया। बाज़ार तुरन्त बन्द हो गया और पुलिसमैनों और स्वयंसेवकों ने मिलकर मलबा हटाकर आदमियों को निकाला। २६ आदमी मर गये और ६० घायल हुए। उन्हें अस्पताल भेज दिया गया और खेल शुरू हो गया।

इस सारे काम में सिर्फ २७ मिनट लगे। खास बात यह कि हरेक आदमी अपनी जगह पर ही बैठा रहा और काम करने वालों के पास कोई नहीं पहुंचा।

* * *

हम अपने देश में इस तरह के दृश्य देखने की अभी उम्मीद नहीं कर सकते, पर इस तरफ कदम उठाने का समय भी क्या अभी नहीं आया? नहीं यह बात तो नहीं है, वह समय आ गया है और इस कुम्भ को हमें अपने नागरिकता आन्दोलन का उद्घाटन महोत्सव बना देना चाहिये।

हमने इस प्रश्न पर बरसों विचार किया है और काम भी। मेरा यह विश्वास है कि यह कुम्भ हमारे नये जीवन का प्रतीक बनाया जा सकता है।

मैं बहुत से सुझाव भी दे सकता हूं। पर मेरी राय में यह उचित होगा कि इस प्रश्न पर अधिकारी रूप से और सामूहिक रूप से ही विचार हो। इसलिये अपने प्रान्त के माननीय प्रधान मन्त्री श्रद्धेय श्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त महोदय से मेरा प्रस्ताव है कि वे इस विषय पर एक प्रामाणिक योजना बनाने के लिये एक उपसमिति नियुक्त करने की कृपा करें।

यह समिति देश भर के समझदार मनुष्यों से सुझाव मांगे और तब अपनी रिपोर्ट तैयार करें।

हमारे देशवासी कोई जंगली जानवर नहीं हैं कि वे किसी व्यवस्था में नहीं चल सकते—सचाई यह है कि पिछली दो शताब्दियों में देश का शासन ही ऐसे जंगली जानवरों के हाथों में रहा है कि इसके सिवाय उन्हें और किसी व्यवस्था का ज्ञान ही न था।

आशा है कि माननीय पन्त जी इधर ध्यान देंगे और उनका शासन इस कुम्भ पर हमारे महान गौरव का एक महान प्रदर्शन कर सकेगा।

अमली दीवाली

आर्य समाज को अगली दिवाली कैसे मनानी चाहिये।

कांग्रेस के खादीसप्ताह से शिक्षा लीजिये (१) हर आर्य नर नारी को कम से कम एक पुस्तक आर्य सिद्धान्त की खरीदनी चाहिये चाहे छोटी हो चाहे बड़ी। (२) आर्य समाजों को कोशिश करनी चाहिये कि अधिक से अधिक संख्या में "आर्य साहित्य" बेचने का यत्न करें और एक खाता रक्खें। इस काम को कुमार विशेषरूप से करें। (३) आर्य साहित्य की कम से कम एक पुस्तक आप किसी ऐसे व्यक्ति को भेंट करें जो शायद बिना विशेष प्रेरणा के स्वयं पुस्तक न खरीदता। यह पुस्तक उस पुरुष की योग्यता के योग्य होनी चाहिये।

गंगाप्रसाद उपाध्याय

श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार

स्वर्गीय श्रीमान सेठ हरजीमल डालमिया की पुण्य स्मृति में प्रति वर्ष श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार के नाम से हिन्दी के श्रेष्ठ मौलिक साहित्य तथा दर्शन ग्रन्थ पर २१००) एवं १०००) मुद्राओं का पुरस्कार दिया जाता है। उनमें से बड़ा पुरस्कार साहित्य अथवा दर्शन के ग्रन्थ पर श्रेष्ठता के अनुसार दिया जायगा।

मौलिक रचना के अन्तर्गत संकलित सम्पादित और अनुवादित ग्रन्थ न समझे जायेंगे। इस अर्थ में स्वतन्त्र रूप से सिद्धान्तों का विवेचन करने वाली कृतियां रखी जायेंगी। पुरस्कार ऐसे ही ग्रन्थों पर दिये जायेंगे जो साहित्य दर्शन की अभिवृद्धि में सहायक हों तथा ज्ञान और परिश्रम की दृष्टि से ग्रन्थ कहलाने योग्य हों।

साहित्य के अन्तर्गत काव्य, नाटक, आलोचना ग्रन्थ, आलोचनात्मक निबन्ध तथा उपन्यास समझे जायेंगे। दर्शन के अन्तर्गत प्राच्य, प्रतीच्य, विविध दर्शन, वेद, पुराण, धर्म, ईश्वर, जीव और मन सम्बन्धी मीमांसा, आध्यात्मिक तथा आचार शास्त्र का बोध होगा। इसमें अप्रकाशित ग्रन्थ भी सम्मिलित किये जायेंगे।

आगामी वर्ष के साहित्य तथा दर्शन पुरस्कारों के लिये प्रकाशित पुस्तकों की तो पांच—५ व तथा पाण्डुलिपि की तीन-तीन प्रतियां १५ दिसम्बर १९४८ तक निम्न पते पर आनी चाहिये।

श्रीमती सरस्वती देवी डालमिया
समानेत्री, श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति,
९ मानसिंह रोड, नई दिल्ली

अणु शक्ति सम्बन्धी प्रस्ताव से भारत की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति बहुत बढ़ गयी

ब्रिटिश तथा कनाडियन प्रतिनिधियों और अमरीकी पत्र द्वारा भारत की प्रशंसा

न्यूयार्क स्थित प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया के संवाददाता श्री वामले ने लिखा है कि बी० एन० राउ की योग्यता पूर्ण वक्तृता और अणु शक्ति सम्बन्धी मत भेदों को खत्म करने के प्रयत्न के फलस्वरूप भारत और भारतीय शिष्टमण्डल के नेता की ओर सभी का ध्यान लगा हुआ है।

अणु शक्ति नियन्त्रण के सम्बन्ध में भारत राजनीतिक समिति में जो प्रस्ताव रखने वाला है उनके बारे में पूछताछ करने के लिए बहुत से प्रतिनिधि सर बी० नरसिंह राउ के पास आये हैं। इस प्रस्ताव के अनुसार एक अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी कमीशन सभी राष्ट्रों के समर्थन से एक संयुक्त घोषणा पत्र तैयार करेगा।

आम सभा के अध्यक्ष कार्लोज रोमूलो अमरीकी प्रतिनिधि तथा ब्रिटिश परराष्ट्र मंत्री श्री बेविन ने इस विषय में भारत की अत्यन्त प्रशंसा की है।

भारत में निष्क्रांत सम्पत्ति सरकार नया आर्डीनेन्स जारी करेगी।

नयी दिल्ली, विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है भारत सरकार निष्क्रांत सम्पत्ति के सम्बन्ध में देश भर के लिए एक नया आर्डिनेन्स जारी करने की सोच रही है।

यह भी पता चला है कि इस आर्डिनेन्स की रूप रेखा लगभग वही होगी, जैसी की पाकिस्तान द्वारा जारी किये गए निष्क्रांत सम्पत्ति सम्बन्धी आर्डिनेन्स की हैं, ताकि दोनों देशों में निष्क्रांत सम्पत्ति की स्थिति बिल्कुल समान हो जाए।

कहा जाता है कि इस नये आर्डिनेन्स के जारी होने पर, इससे सम्बन्धित प्रान्तों द्वारा जारी किये गये अन्य पुराने आर्डिनेन्स रद्द हो जायेंगे।

शारीरिक दृष्टि से—

देश के पतन का कारण तम्बाकू

(लेखक—विश्वप्रिय शर्मा आचार्य गुरुकुल झज्जर)

(गतांक से आगे)

—तम्बाकू के सेवन से पाचनशक्ति सुधरती है यह कहना बिलकुल गलत है ऐसे सहस्रों रोगी आते है जिनकी पाचन शक्ति तम्बाकू सेवन के व्यसन से बिगड़ गई है —डा० मसी

—तम्बाकू, शराब, चाय आदि नशीली और विषैली चीजों में शरीर को पोषण करने वाला गुण किंचिन्मात्र भी नहीं है दुर्बलता और अकालमृत्यु के अतिरिक्त अन्य कोई परिणाम इससे नहीं निकलता। डा० टी. ए. निकोलस

—तम्बाकू सेवन से शरीर के भीतरी भाग सब जाते हैं यह भयङ्कर विष है इस में तनिक भी संदेह नहीं

—डा० अस्मार

चुरट, तम्बाकू पीने से बुद्धि नष्ट होकर मनुष्य की अधर्म में प्रवृत्ति हो जाती है। यह एक ऐसा नशा है जो कई अशों में शराब भी से बुरा है

—महात्मा टालस्टाय ॥

वैद्य और डाक्टर, और सुधारकों की ही क्या बात है? जादू वही है जो शिर पर चढ़ कर बोले। तम्बाकू का सेवन करने वाले को कोई न कोई घातक रोग अवश्य लग जाता है। यह अत में उस के प्राण तक हर लेता है। परन्तु यह जानते हुए भी कि तम्बाकू हानिकारक है, घातक है, तम्बाकू सेवी पुरुष उसे नहीं छोड़ता। उसका मूल कारण यह है कि जिस प्रकार शराबी को शराब की जुआरी (जुआ खेलने वाले) को जुए की चसक लगी रहती है। उसी प्रकार तम्बाकू सेवी पुरुष को तम्बाकू का चसक लगी रहती है। वह मन अपमान को कुछ भी नहीं सोचता चसक की धुन में वह भी नहीं सोचता कि मैं अपने अंदर विष एकत्रित कर रहा हूं। और वह भी महा भयंकर प्राणघातक विष जिसका अत में उपचार भी नहीं हो सकेगा। यह अमूल्य जीवन जो पूर्व जन्म के संचित शुभ कर्मों से मिला है समाप्त हो जावेगा। जीवन के अन्तिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति की कल्पना भी नहीं कर सकेगा। परन्तु यह चसक ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य न छोड़ सके

जिन्होंने तम्बाकू को घातक समझ लिया है उन्होंने प्राणापेक्षा की बाजी लगा कर इसको छोड़ा है। और विजय पायी है।

तम्बाकू का सेवन करने वाले महानुभाव तम्बाकू तो बढ़िया से बढ़िया कशदार मंगाते है। बीड़ी और सिग्रेट भी बढ़िया मंगाते है। परन्तु इसके व्यय की ओर नहीं देखते हैं। यदि उन लाखोंपतियों को छोड़ दिया जाय जो दिन भर में दश दश पाँच पाँच रुपये की सिग्रेट अपने आप पीकर और प्रेमियों को पिलाकर व्यय कर देते हैं। साधारण व्यक्तियों को ही लीजिये इनमें भी पचास साठ चिलम तम्बाकू तो प्रत्येक पी लेता है। कुछ ता जो तम्बाकू पीने के आदि हो गये हैं इससे भी अधिक पीते हैं। कुछ अधिक पीते हैं तो कुछ कम भी पीते होंगे। इस लिये ३० या ४० चिलम प्रत्येक व्यक्ति की लगायी जाये।

इसी प्रकार बीड़ी और सिग्रेट पीने वाले व्यक्ति भी तीस चालीस चिलम के तम्बाकू के मूल्य से क्या कम पीते होंगे।

यदि प्रत्येक व्यक्ति का साधारण व्यय दो आना ही मान लिया जाये, यद्यपि महगाई के समय में बहुत अधिक होता है पुनरपि चार पोने चार रुपये मासिक व्यय हो गये। यह व्यय निर्धन भारत के लिये जिसके कि कितने ही व्यक्तियों को दोनों समय भर पेट भोजन नहीं मिलता यह भोजन भी दूध दही और फल नहीं, दाल रोटी भी भर पेट नहीं मिलती। इसप्रकार प्रत्येक तम्बाकू सेवी व्यक्ति का वार्षिक व्यय ५०) मान लें। यह बहुत थोड़ा व्यय है गावों में आज कल पाँच पाच सौ रुपये का तम्बाकू एक एक घराने में फुंक जाता है। यदि व्यक्ति ने ५०) वार्षिक तम्बाकू पर व्यय किया और वह कम से कम ४० वर्ष ही जीवित रहा तो उस ने अपने जीवन में २०००) रुपये तम्बाकू का व्यय किया।

इतना ही नहीं सिग्रेट और बीड़ी के साथ ही दियासलाई की पेटी भी रखनी पड़ती है। और हुक्का पीने वाले को अग्नि रखनी पड़ती है। यदि एक व्यक्ति कम से कम एक मास में दियासलाई की चार पेटी (बक्स) भी व्यय करे तो चार आना महीना, तीन रुपये वार्षिक हो गया। २० × ३ = ६०) व्यय हुए। यदि पान भी खाता है। और प्रति दिन कम से कम दो आने प्रति दिन हो गये। कहने का अभिप्राय यह है कि मानव इन छोटे २ व्ययों पर ध्यान नहीं देता। यदि तम्बाकू सेवी अपनी समस्त आयु के व्यय को बचाये तो स्वास्थ्य अच्छा रहे और दो ढाई सहस्र ये वृद्धावस्था में काम आयें। और इस धन को गँवाकर बङ्क में जमा करता तो व्याज और चक्रवृद्धि व्याज से यह धनराशि और भी अधिक हो सकती है। किसी संस्कृत के कवि ने कितने ही सुन्दर शब्दों में कहा कि —

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्
क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम् ॥

अर्थात् क्षण क्षण से विद्या, और कण कण करके धन को इकट्ठा करे। क्षण क्षण के व्यतीत हो जाने पर विद्या और कण कण के छोड़ देने से धन इकट्ठा नहीं होता।

तम्बाकू पीने वाला व्यक्ति दो ढाई हजार रुपये अपने जीवन में नष्ट करता है। आश्चर्य की बात यह है कि तम्बाकू से पेट भी नहीं भरता। उदरपूर्ति हो जाया करे तब कोई बात नहीं। पेट तो क्या भरे उलटी स्वास्थ्य की हानि होती है।

इस प्रकार यदि भारत में कम से कम दस करोड़ व्यक्ति भी तम्बाकू का सेवन करते हो तो पाँच अरब रुपया वार्षिक तम्बाकू पर व्यय हुआ।

यदि यह रुपया भारत में ही रहे तब भी सौभाग्य की बात हो। विदेशों से तम्बाकू और तम्बाकू से बनी सिग्रेट बीड़ी आदि वस्तुएं मगाई जाती हैं। सन् १९४६, १९४७ ई० अविभाजित भारत में २ करोड़ सत्तर लाख रुपये का एक करोड़ पौण्ड तम्बाकू और ८ लाख रुपये की सिग्रेट विदेशों से मंगाई गयी।

इस लड़ाई से पहिले अमेरिका और मिश्र से प्रतिवर्ष ८० लाख रुपये से अधिक की सिग्रेट आती था।

भारत की तैंतीस करोड़ जनता में लगभग २ अरब रुपये का तम्बाकू फूंका जाता था। जो प्रति व्यक्ति लगभग ६) रुपया वार्षिक या आठ आना महीना पड़ता था। महँगाई के कारण यह व्यय कई गुणा अधिक होना स्वाभाविक है।

भारत की लगभग १० लाख एकड़ भूमि में तम्बाकू की खेती होती है। जिसका वार्षिक उत्पादन ७६०००० पौण्ड है जिसका मूल्य लगभग १५ करोड़ रुपये हैं।। भारत का १५ करोड़ रुपया जलकर भस्मसात् हो जाता है। मानव को कोई लाभ नहीं होता।

आज भारत में अन्न की कमी पड़ रही है। अन्न की कमी को भारत विदेशों से मोल मगाकर पूरा कर रहा है। कृषि प्रधान भारत दूसरे देशों से अन्न मागता है। यह लज्जा जनक बात है। यदि इस तम्बाकूवाली १० लाख एकड़ भूमि में गेहूँ आदि अन्न उपजाया जाये, तो अन्न की कमी न रहे भारत विदेशों के सामने हाथ न फैलाये यदि प्रति एकड़ २०) अन्न भी उत्पन्न हो। यह २०) अन्न तम्बाकू वाली भूमि में उत्पन्न होना सम्भव है। क्योंकि तम्बाकू बड़ी उपजाऊ भूमि में बोया जाता है। निर्बल भूमि में यह उत्पन्न ही नहीं होता है। प्रति एकड़ कमसे कम २०) अन्न भी माना जाये तो २० करोड़ मन अन्न की वृद्धि हो जाये। जिससे अन्न विषयक भारी कमी की पूर्ति हो जाये।

इस प्रकार खेती से भूमि भी खराब नहीं होती। क्योंकि तम्बाकू को लगातार तीन चार बार बोने से भूमि उपजाऊ नहीं रहती।

तम्बाकू अपने गन्दे वायु से जो दूसरे अनाजों को हानि पहुँचाता है, वह हानि भी नहीं होगी और सरकार को कृषि को हानि पहुँचाने वाले कीटाणुओं के नष्ट करने में जो लाखों रुपया व्यय करना पड़ता है वह भी नहीं होगा।

और सब से अधिक लाभ होगा शारीरिक स्वास्थ्य को। जब रोगों की जड़ तम्बाकू ही नहीं रहेगा तो पुनः 'न रहेगा बाँस तो न बजेगी बांसरी' के अनुसार रोग ढूँढा न मिलेगा। तम्बाकू सारे मादक द्रव्यों से अधिक बिकता है। इस की भारी खपत भारत में है। अमेरिका में प्रतिवर्ष ६० करोड़ रुपये का तम्बाकू फूँका जाता था और अबतो इस से भी अधिक व्यय होता होगा।

जिलोपसभा अलीगढ़

"गत अतरंग का विषय संख्या (३) प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि श्री प. जयशंकर शर्मा जी ने सभा के आदेश की अवहेलना की है और उन्होंने कोई भी सन्तोष जनक उत्तर नहीं दिया है। अत: सभा अनुशासन की दृष्टि से श्री प जयशंकरजी की इस मनोवृत्ति को अनुचित समझती है और निश्चय करती है कि श्री प. जयशंकर जी आर्य समाजों से धन संग्रह न करें और दो वर्ष तक उनको सभा के किसी भी निर्वाचन में भाग लेने का अधिकार नहीं है। इसकी प्रतिलिपि श्री प. जयशंकरजी को तथा "आर्य मित्र" में छपवाने के लिये भेज दी जावें।

नाहरसिंह मन्त्री
जिलोपसभा

निर्वाचन

आर्य समाज मुमियॉ खेड़ा

प्रधान—जोधपाल वर्मा, उपप्रधान—चौ० कालसाविंह, मंत्री—हरिपालसिंह यादव, उपमन्त्री—शिवलाल, कोषाध्यक्ष—सूरजसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—बनवारी, निरीक्षक—प. भूपालदेव शर्मा।

उत्सव

आर्य समाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव १५, १६, १७ अक्तूबर को हो रहा है जिसमें श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज बिहारी लालजी काव्यतीर्थ, स्वामी अभेदानन्द जी आदि पधार रहे हैं।

—आर्य प्रमण सभा जिला अलीगढ़ का २२ वां उत्सव ग्राम—पड़की (अलीगढ़) में दिनाङ्क २२-९-४९ को बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। निकटवर्तीय ग्रामीण जनता ने भारी संख्या में भाग लिया। यज्ञादि के उपरान्त मध्यान्होतर श्री स्वामी सत्यव्रतजी महाराज, श्री स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, श्री प. ज्ञानेन्द्रजी शर्मा, आर्य मुसाफिर, श्री प गोकुलदत्त जी आदि विद्वानों के—दलितोद्धार, मादक द्रव्यनिषेध, संगठन, आदिविषयों पर भाषणहुये।

—आर्य समाज फरीदनगर की ओर से पंडित बुद्धदेवजी मीरपुरी व स्वामी सन्तोषानन्द जी के भजनोपदेश व श्रीराम कथा हुई जिसमें जनता ने ५०० की संख्या में भाग लिया विशेषकर देवियों ने। जनता पर प्रभाव अच्छा पड़ा।

आर्य समाज के सम्बन्ध में कांग्रेस अध्यक्ष के विचार

गुजरात प्रांत के कुछ स्थानों में आर्य समाजियों को कांग्रेस के प्रतिष्ठित सदस्य बनने में कई तहसील और जिला कांग्रेस समितियों के अधिकारियों ने की आना कानी की थी। इस भ्रम को दूर करने के लिये इस सभा की ओर से गुजरात प्रांतीय का समिति को स्पष्टता करने के लिये लिखा गया था, किन्तु उसकी तरफ से सन्तोषकारक उत्तर प्राप्त न होने पर अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (दिल्ली) को लिखा गया। जिसके उत्तर में कांग्रेस के प्रधान डा. पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है:—

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
७, जन्तर मन्तर रोड, नई देहली
९ सितम्बर १९४९

प्रिय महोदय,

कतिपय आर्य समाजी मित्रों ने आर्य समाजियों के कांग्रेस सदस्य बनने के नियमों पर प्रकाश डालने के लिए लिखा है। कांग्रेस का प्राथमिक सदस्यता २१ वर्ष या अधिक के हर उस व्यक्ति के लिए खुली है जो कांग्रेस के उद्देश्य को माने और उसके प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करे। एकही प्रवेश-पत्र पर अनेकों व्यक्ति हस्ताक्षर कर सकते हैं, पृथक फार्मों की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु विशिष्ट सदस्यता के लिए कुछ और शर्तों की पूर्ति भी आवश्यक है जिन में से एक यह है कि वह किसी ऐसी राजनीतिक या साम्प्रदायिक दल का सदस्यता हो जिस के पृथक् सदस्य न, विधान और कार्यक्रम हों, तथा दूसरे धर्मों का वह मान करता हो, अन्तर्प्रांतीय एकता में विश्वास रखता हो, किसी भी प्रकार की अस्पृश्यता न बर्तता हो और पूर्णरूप से मादक द्रव्यों का सेवन न करता हो।

आर्य समाज एक साम्प्रदायिक राजनीति वाली तो क्या राजनैतिक या साम्प्रदायिक पार्टी ही नहीं है। आर्य समाजियों की प्राथमिक या विशिष्ट किसी भी सदस्यता पर कांग्रेस कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाती। अधिक आर्य समाजी परिपक्व कांग्रेसी रहे हैं।

आपका शुभैषी
पट्टाभि सीतारमैया

शोक प्रस्ताव

—गुरुकुल विद्यालय मेहियाँ के विद्यार्थियों की यह सभा बिहार के दानवीर श्री बाबू महेशलाल आर्य बिहार शरीफ (पटना) के असामयिक देहावसान पर खेद प्रकट करती हुई जगन्नियन्ता जगदीश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करते हुये शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—गत २५ सितम्बर आर्यसमाज खलासी लाइन कानपुर के साप्ताहिक अधिवेशन में आर्यसमाज ग्वाल टोला के प्रधान पूज्य लाला जगन्नाथजी तथा आर्यसमाज मैस्टन रोड के कर्मठ कार्यकर्ता बा० महावीर प्रसादजी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया गया तथा उपस्थित जनों ने उनकी आत्माओं को शांति के लिये खड़े हो श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दु:खी परिवारों के साथ समवेदना प्रकट की।

—ता० २८-९-४९ दिन रविवार को आ० स० ग्वालटोला में प्रधान ला० जगन्नाथ जी के निधन पर शोक प्रकट किया, तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति और उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने के लिये जगन्नियन्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की।

—आ० स० खुर्जा की अन्तरंग सभा में माननीय श्री स्वामी योगानन्दजी यती के आकस्मिक निधन पर हार्दिक दुख प्रकट किया गया है। स्वामीजी की मृत्यु से आर्यसमाज खुर्जा को विशेष रूप से धक्का पहुँचा है। वे निस्वार्थ भाव से समाज के सेवक थे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना असम्भव है। भगवान से हम पुण्य आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हैं।

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रांत के कार्यालय के लिये हाई स्कूल उत्तीर्ण हिंदी व अंग्रेजी टाइपिस्ट की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार ५५ से ११२ तथा नियमानुसार मंहगाई सहित दिया जायगा। प्रार्थनापत्र स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान एवं मन्त्री के प्रमाणपत्र सहित "आर्यप्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त, ५ मीराबाई रोड लखनऊ" के पते पर ३१ अक्तूबर १९४९ तक भेजें।

रामदत्त शुक्ल
मन्त्री
आ० प्र० सभा यू. पी.

निराकरण

धर्मरक्षा सभा (अलीगढ़) की ओर से श्री भूदेव शर्मा लिखते हैं कि २८ सितम्बर के आर्यमित्र में धर्मरक्षा विषयक जो सूचना छपी है वह निराधार है धर्मरक्षा का उद्देश्य अछूतों की उन्नति करना है और उसकी किसी भी सभा में हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के विरोध में कोई प्रस्ताव पास नहीं हुआ।

—आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर का वार्षिकोत्सव दीपावली के अवसर पर २१ से २४ अक्तूबर तक मनाया जावेगा तथा उसके उपरान्त १ नवम्बर तक आर्य ग्रन्थों की कथा होगी साथ ही यजुर्वेद का पारायण यज्ञ भी होगा।

शोक समाचार

आर्य समाज के पुराने कार्यकर्ता श्रीमान् ठाकुर खेमसिंह जी के स्वर्गवास होने पर आर्य समाज नगौला (अलीगढ़) शोक प्रगट करता हुआ उनकी आत्मा को शान्ति तथा कुटुम्बीजनों के धैर्य के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। आप आर्य समाज के स्थम्भ थे, आपके चले जाने से आर्यजगत को बहुत हानि हुई है।

रेडियो की नीति जनमत के अनुकूल बने

श्री विजय वर्गीय का वक्तव्य

नयी दिल्ली, २७ अक्तूबर। भारत सरकार के सूचना मन्त्रालय की स्थायी परामर्श दात्री समिति तथा भारतीय विधान परिषद् के सदस्य श्री राधावल्लभ विजय वर्गीय ने रेडियो की हिन्दी विषयी नीति के सम्बन्ध में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है —

अ. भारतीय रेडियो की हिन्दी भाषा तथा प्रोग्राम सम्बन्धी नीति से असन्तुष्ट होकर और बार बार प्रयत्न तथा सलाह देने पर भी थोड़ा भी सुधार न होते देख इस विभाग की हिन्दी समिति का प्राय सभी विद्वानों ने समिति से त्याग पत्र दे दिया है। यह भी ज्ञात हुआ है कि देश के दूसरे विद्वानों ने भी रेडियो विभाग की इस नीति के विरोध स्वरूप उसके कार्य क्रमों में सहयोग देने से इनकार कर दिया है।

स्पष्ट है कि यह गम्भीर घटना है जो यह प्रगट करती है कि विभाग को अपनी नीति तथा प्रोग्राम में तत्काल परिवर्तन और सुधार करने की आवश्यकता है। रेडियो के वैदेशिक विभाग के कर्मचारियों, व्यय तथा प्रोग्राम के बाबत भी चारों तरफ बड़ी आलोचना सुनने में आती है। यह जरूरी है कि विभाग अपनी नीति जनमत और सलाहकार समिति के विद्वानों के अनुकूल बनावे।

विधान का संस्कृत अनुवाद

प्र. न. [illegible] किया गया कि भारतीय विधान का एक संस्कृत अनुवाद किया जाय। एक अन्य [illegible] का प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद करने का [illegible] गया।

रेलों में फिर चार दर्जे होंगे

नई दिल्ली, २८ अक्तूबर। भारत के रेलवे मन्त्री श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने एक प्रेस सम्मेलन में घोषणा की कि १ दिसम्बर से रेलों में तीन के बजाय फिर चार दर्जे होने लगेंगे।

नये दर्जे इस प्रकार होंगे—पहला दर्जा दूसरा दर्जा (यह पुराना दूसरा दर्जा होगा और इसमें सोने का भी स्थान होगा), दूसरा मामूली जो पुराना इन्टर का सुधार किया हुआ रूप होगा और तीसरा दर्जा।

युक्तप्रान्त में अगले सालतक ६ लाख मन जूट पैदा होगा

प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारों का नया संयुक्त कार्यक्रम

लखनऊ, २७ अक्तूबर। युक्तप्रान्त में जूट उत्पादन का कार्यक्रम बहुत तेजी से बढ़ाया जा रहा है ताकि १९५० के अन्त तक ६ लाख मन जूट पैदा कर दिया जा सके। पहले १९५४ तक इतनी पैदावार करने का इरादा था।

आज प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन में नया कार्यक्रम अन्तिम रूप से निश्चित कर लिया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पैंतालिस लाख एकड़ भूमि जूट उत्पादन के लिये और प्रयुक्त होगी। इस कार्यक्रम में सत्तर हजार रुपये से अधिक अतिरिक्त व्यय पड़ेगा। इसकी आधी रकम केन्द्रीय सरकार देगी।

ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय सरकार बिहार और बङ्गाल से अच्छे बीज देने को तैयार हो गई है। प्रान्त के पास ३००० मन बीज है। इनके अलावा ७०,५०० मन बीज और चाहियें। किसानों के लाभ के लिये जूट का उचित मूल्य दिलवाना तय हुआ है।

जूट की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने से खाद्य उत्पादन क्षेत्र कम न होगा। इस उद्देश्य के लिये घाघरा और शारदा के तीरों के पानी से भरे हुए क्षेत्र ही अधिक उपयुक्त होंगे।

निजाम परिवार के लिए एक करोड़ रुपया

हैदराबाद ३० अक्तूबर। हैदराबाद के अर्थ मन्त्री ने यहां एक प्रेससम्मेलन में कहा कि इस वर्ष निजाम को निजी खर्च के लिये पचास लाख रुपया दिया जायगा। इसके अतिरिक्त "सर्फ खास" भूमिका मुआवजे में उन्हें २५ लाख रुपया और मिलेगा। बरार के प्रिंस, उनके भाई मुअज्जम जाह तथा शाही परिवार के अन्य व्यक्तियों के लिए २८ लाख रुपया मंजूर किया गयाहै।

उपर्युक्त निजी खर्च १३५९ फसली [illegible] ता० १ अक्तूबर १९४९ से शुरू हुआ है।

विधान परिषद् का अन्तिम अधिवेशन [illegible] नवम्बर को आरम्भ होगा

नयी दिल्ली २८ अक्तूबर। सरकारी तौर पर आज यह घोषित किया गया कि विधान के मसविदे का तृतीय वाचन समाप्त करने के लिये विधान परिषद् का अन्तिम अधिवेशन १४ नवम्बर से आरम्भ होगा।

—बम्बई २९ अक्तूबर। रंगून से लौटे हुए प्रेस ट्रस्ट के एक संवाददाता का कहना है कि यद्यपि भारत को इस समय अपना खर्च ही कम करने की जरूरत हो रही है, लेकिन शायद उसे बर्मा के लिए अपनी थैली का मुँह खोलना पड़ेगा। बर्मा को आर्थिक सहायता देने के लिए चतुर्राष्ट्रीय सम्मेलन की रिपोर्ट लन्दन भेज दी गयी है और वहाँ से यह घोषणा होने ही वाली है कि कौन राष्ट्र कितना रुपया देगा। ख्याल है कि शुरू में कुल एक करोड़ अस्सी लाख रुपया दिया जायगा, किन्तु बाद में इससे कहीं अधिक दिया जायगा।

गोडसे-आप्टे को फाँसी के लिये १५ नवम्बर निश्चित

अम्बाला २६ अक्तूबर। ज्ञात हुआ है कि महात्मा गाँधी की हत्या करने के अपराध में नाथूराम गोडसे और नारायण आप्टे को दी जाने वाली फाँसी की सजा के लिये आगामी १५ नवम्बर की तिथि निश्चित कर दी गई है और इसके वारन्ट भी जारी कर दिए गये हैं।

यह भी पता चला है कि दिल्ली के विशेष जज श्री एस० एस० दौलत ने तत्सम्बन्धी वारन्ट अम्बाला सेन्ट्रल जेल के अधिकारियों के पास भेज दिये गये हैं जहां पर कि ये दोनों अपराधी बन्द हैं इन्हें ये वारन्ट मिल भी गये हैं।

अब इन दोनों अपराधियों को ६-७ दिन की मुहलत दी जायगी कि वे गवर्नर जेनरल से अन्तिम क्षमा याचना कर सकें।

इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि नारायण आप्टे तो क्षमा याचना कर रहा है और उसका कहना है कि वह निर्दोष है।

नाथूराम गोडसे के माता पिता ने, कहा जाता है कि क्षमा-याचना कर भी दी है, लेकिन गोडसे ने स्वयं अभी तक कोई निर्णय नहीं किया है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में [illegible] के हवाई अड्डे पर राष्ट्र प्रतिनिधि पं० नेहरू का प्रेजीडेन्ट ट्रूमैन डीन अचीसन आदि [illegible] तथा श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, अमेरिका की भारतीय राजदूत, द्वारा स्वागत।

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य ...

आर्य्यमित्र

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो
ब्रह्म यज्ञः पृथवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्यपत्नी,
उरु लोकं पृथ्वी नः कृणोतु ॥
अथ० १२-१-१॥

महान् सत्य, कठोर सत्याचरण, व्रतग्रहण, कष्ट सहन, अनुभव ज्ञान निस्वार्थ कर्म पृथिवी को धारण कर रहे हैं। भूत और भव्य की रक्षा करने वाली वह हमारी मातृभूमि हमारे लिए विस्तृत लोक के विशाल क्षेत्र को करे।

गुरुकुल वृन्दावन
(उत्सव समीप आ गया)

वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति तथा वर्णाश्रम मर्यादाओं की स्थापना ही संसार की सुख शान्ति का एक मात्र मार्ग है। दौर्भाग्य व समय दोष से समाज पथभ्रष्ट होकर कर्तव्य व मर्यादाओं के संयत मार्ग से हटकर अधिकार व भोग मार्ग की ओर प्रगति कर रहा है। इस दुर्दशा पन्न स्थिति से कल्याण मार्ग की ओर प्रवृत्त करने लिये ऋषि दयानन्द ने पुरातन 'आचार्य कुल' तथा 'गुरुकुल' शिक्षा प्रणाली की ओर ध्यान आकर्षित किया। आर्यावर्त देश की दुरवस्था के परिवर्तित युग में भी वैदिक युग की पुनः स्थापना और वैदिक सदाचार के आदर्शों के अनुसार सन्तानों को सुसभ्य, सुसंस्कृत तथा सुशिक्षित बनाने के लिये गुरुकुल ब्रह्मचर्याश्रमों की स्थापना को ही एक मात्र उपाय निर्देश किया।

ऋषि दयानन्द की मृत्यु के अनन्तर अपने आचार्य द्वारा निर्दिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आर्यपुरुषों ने वैदिक धर्म प्रचार की अनेक योजनायें निर्माण कीं। आर्य पुरुषों ने जब जब भी देश सुधार, आर्यजाति के उद्धार तथा वैदिक धर्म प्रचार के उपायों और योजनाओं पर जितना ही अधिक गम्भीर विचार किया उतना ही अधिक बाधित होकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के स्थापना की अनिवार्यता पर पहुचना पड़ा। अतः स्थान २ पर गुरुकुलों की स्थापना हुई।

लगभग अर्ध शताब्दी पूर्व युक्तप्रान्त के कर्मठ आर्य पुरुषों ने गुरुकुल वृन्दावन विश्व विद्यालय का संचालन प्रारम्भ किया था। ५० वर्ष पूर्व प्रतिकूल परिस्थितियों में स्थापित किया हुआ गुरुकुल वृन्दावन का छोटा सा अंकुर सब प्रकार की आपत्ति व बाधाओं को पार करता हुआ महान् वृक्ष के रूप में फल फूल कर समृद्ध हुआ है।

हमारे इस गुरुकुल वृन्दावन के ब्रह्मचर्याश्रम से आज तक सैकड़ों स्नातक निकल चुके हैं जो प्रान्त में बिखरे हुये आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं। आर्य समाज की प्रगति का जिन्हें थोड़ा सा भी परिचय है उनसे यह बात अप्रकट नहीं है कि गुरुकुल ने आर्य समाज को अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के विद्वान वक्ता, उपदेशक और जितने कार्य कर्त्ता दिये हैं उनसे आर्यसमाज के सम्मान और प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई है।

अपनी मातृ संस्था आर्यसमाज के लिये योग्य कार्य कर्त्ता उत्पन्न करने की दृष्टि से, अनुपात में, इतना अधिक सफल परीक्षण गुरुकुल के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था द्वारा नहीं किया गया है।

इतना होने पर भी गुरुकुल वृन्दावन उस उच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सका जितना कि आदर्श रूप में उसे होना चाहिए था। गुरुकुल वृन्दावन को गवर्नमेन्ट आदि प्रबल सहायकों का संरक्षण प्राप्त नहीं रहा संचालकों ने विदेशी गवर्नमेन्ट द्वारा प्रस्तुत सहायता के हाथ को विचार पूर्वक ही अस्वीकार कर दिया। वह सदैव ही आदर्शों की रक्षा के लिये आर्यपुरुषों की सहानुभूति और दानशीलता के आश्रय पर ही फल फूल कर इतना बड़ा हुआ है। परन्तु खेद की बात यह है कि आर्यपुरुषों का ध्यान प्रान्त में अपने जीवन के एक मात्र स्थायी साधन गुरुकुल वृन्दावन की ओर उतना नहीं रहा है जितना की होना चाहिये।

यह ठीक है कि सम्पूर्ण देश ही इस समय आर्थिक दुरवस्था के संक्रान्तिकाल में से जा रहा है परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं है कि आर्य पुरुष थोड़ा भी साहस और कर्तव्य बुद्धि से कार्य करें तो गुरुकुल इस आपत्तिकाल में से सुरक्षित निकल जा सकता है।

गुरुकुल के कार्य कर्त्ताओं की न्यूनता के सम्बन्ध में कभी कभी शिकायत सुनने में आती है उनमें सत्य भी बहुत कुछ हो सकता है। परन्तु यह भूलना न चाहिये कि प्रबन्ध और धन में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। बिना धन के उत्तमप्रबन्ध उत्तम पठन पाठन दि व्यवस्था का होना सम्भव नहीं। इस कठिन महर्घताकाल में अल्प वेतन पर उत्तम श्रेणी के उपाध्याय व कार्यकर्त्ता दुर्लभ हैं। गुरुकुल के संचालक व कार्यकर्त्ता व अन्य योग्य उपाध्याय गण साधुवाद के पात्र हैं कि अत्यन्त न्यूनतम निर्वाह मात्र पर गुरुकुल प्रेम व त्याग वृत्ति के कारण ही गुरुकुल के कार्य में रत हैं। यह सब कुछ है परन्तु क्या यह सत्य नहीं है कि आर्य पुरुषों ने प्रमादवश गुरुकुल की उपेक्षा की है और वे अपने कर्तव्य व उत्तरदायित्व को पूर्ण करने से उपरत हो रहे हैं।

देशमें त्रास फैला हुआ है। आर्थिक स्थिति असाधारण रूपसे अनिश्चित हो उठी है, सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियां भी शीघ्रतापूर्वक परिवर्तित हो रही हैं। ऐसे कठिन समय पर हाथ पर हाथ रख बैठे रहना, न केवल उचित ही नहीं है अपितु हानिकारक भी है। यदि हमारे प्रमाद के कारण गुरुकुल को किसी प्रकार की भी क्षति पहुंच गई तो न केवल आर्यसमाज की जीवन रक्षा में ही बाधा उत्पन्न हो जायगी, वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार की आशा पर भी तुषारापात हो जायगा।

गुरुकुल वृन्दावन का वार्षिकोत्सव, पूर्व वर्षों के समान ही दिसम्बरके अन्तिम सप्ताह में होगा। केवल दो मास का समय शेष है। यदि इसी समय में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया जायगा तो उस समय तक गुरुकुल के लिये धन संग्रह में सफलता में सन्देह ही क्या है? गुरुकुल के उत्सव की सफलता गुरुकुल के लिये धन संग्रह की सफलता में है।

इसी उद्देश्य से 'गुरुकुल वार्षिकोत्सव स्वागत समिति' का निर्माण किया गया है जिसके प्रधान मथुरा के श्री कर्णसिंह जी छोंकर तथा सदस्य गुरुकुल के अन्य अधिकारी हैं। वह समिति तो अपना कार्य करेगी ही परन्तु प्रत्येक आर्यपुरुष और आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वे किसी अन्य व्यक्ति व अन्य अवसर की प्रतीक्षा न कर यथा शक्ति गुरुकुल को स्वयं धन भेज दें और धन का कार्य भी प्रारम्भ कर दें।

प्रान्त की आर्यसमाजें यदि अपने यहाँ गुरुकुल धन संग्रह समिति का निर्माण कर धन संग्रह प्रारम्भ करेंगी तो अधिक सफलता की आशा है। यदि गुरुकुल से किन्हीं व्यक्तियों के आने की आवश्यकता अनुभव हो तो वे मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन को सूचित करें।

—

पंजाब की दुर्दशा

पञ्जाब के मन्त्रिमण्डल में चतुर्थबार पुनः परिवर्तन हुआ। म० भीमसेन सच्चर गये और श्री गोपीचन्द भार्गव प्रधान मन्त्री हुये। इन परिवर्तनों का कारण कोई सैद्धान्तिक मतभेद या अन्तर नहीं है—केवल व्यक्तिगत मतभेद और एकन्नीय दलबन्दी ही प्रतीत होता है।

... ने प्रधान मन्त्री से त्यागपत्र दिया और २१ अप्रेल को श्री सच्चर ने मन्त्रिमण्डल ... का संचालन किया दोनों ही मन्त्रिमण्डलों के समय ... स्थिति में सुधार ... अधिक हुई। पञ्जाब जैसे छोटे ... जिसके ... मैंट ... के अनुपात में, मन्त्रियों ... संख्या भी मन्त्रिमण्डल के ... के लिये पर्याप्त सिद्ध नहीं हुई ... श्री सच्चर के मन्त्रिमण्डल में ... ७ मन्त्री और ६ डिप्टी मिनिस्टरों की नियुक्ति की गई थी। 'डिप्टी मिनिस्टर' का नवीन आविष्कार केन्द्रीय सरकार के बिना अनुमति के हुआ था परन्तु अब वर्तमान मन्त्रिमण्डल में नियुक्तियाँ केन्द्रीय कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड की सम्मति से हुई हैं।

पंजाब में कांग्रेस की दलबन्दी के कारण ... मन्त्रिमण्डल बनाना कठिन हो गया है। कांग्रेस पार्लियामेण्टरी बोर्ड ने कांग्रेस की ऐसी दशा में एकता स्थापित करने का जो उपाय ढूंढ निकाला था वह व्यर्थ सिद्ध हुआ। श्री भीमसेन सच्चर जब प्रधान मन्त्री हुये तो उन्होंने अपने विश्वस्त मन्त्रियों की नियुक्ति की परन्तु परिणाम यह हुआ कि उन्हें देहली बुलाकर भर्त्सना की गई और ८ में से केवल ३ मन्त्रियों को चुनने की स्वतन्त्रता दी गई। इस प्रकार वह बहुमत दल का मन्त्रिमण्डल न होकर 'कांग्रेस हाई कमाण्ड का मन्त्रिमण्डल' हो गया था। परिणाम यह हुआ कि भीमसेन सच्चर मन्त्रिमण्डल प्रभावशाली न रहने से न तो स्थायी ही हुआ और न कुछ उपयोगी कार्य ही कर सका और स्वयं उनके मन्त्रिमण्डल के विरोधी साथियों के विश्वासघात के कारण उन्हें त्यागपत्र भी देना पड़ा।

पंजाब, देश का पश्चिमीय सीमा का प्रान्त है। उसमें शरणार्थियों तथा उनके पुनर्वास की कठिन समस्याओं के अतिरिक्त सिक्खों की एक विचित्र प्रकार की 'सिख राज्य' बनाने की समस्या भी है अतः पंजाब की राजनैतिक स्थिति संकटमय हो उठी है।

श्री भीमसेन सच्चर के मन्त्रिमण्डल के निर्माणप्रणाली पर यह आक्षेप किया गया था कि इस प्रथा द्वारा बहुमत प्राप्त वैधानिक नेताओं को हाई कमाण्ड द्वारा 'परामर्श देने' के स्थान में 'आज्ञा देने' की अनुचित परम्परा को प्रारम्भ किया गया है। यह भी विचारणीय था कि प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों में प्रान्त के अतिरिक्त अन्य बाह्य दबाव द्वारा किसी ऐसे अव्यावहारिक दल को प्रान्त पर लादना जिसमें नेता के प्रति वफादारी और आज्ञाकारिता की स्थिति न हो कहाँ तक उचित है?

प्रजातन्त्रवाद का एक अत्यन्त आवश्यक तथा मुख्य सिद्धान्त यह है बिना स्वीकृत विरोधीदल की सत्ता के प्रजातन्त्र शासन प्रणाली का ठीक विकास व परिपालन नहीं होता। यद्यपि यह ठीक है कि आपत्तकाल की असाधारण अवस्थाओं में पूर्व के विरोधी दलों को मिलाकर सम्मिलित मन्त्रिमण्डल बनाया जा सकता है परन्तु ऐसा होते ही स्वभावतः स्वयं प्रजातन्त्र पद्धति पर प्रतिबन्ध उत्पन्न हो जाते हैं। जहाँ एकाधिकार शासन पद्धति (डिक्टेटरशिप) है वहाँ भी एकाधिकारी की कृपा प्राप्त करने आदि अनेक कारणों में प्रच्छन्नरूप में किसी न किसी प्रकार का विरोध अन्दर अन्दर ही विभिन्नरूपों में प्रस्फुटित होता है। अतः एक पार्टी के शासन में भी पार्टी के अन्तर्गत विभिन्न दलों का होना ... ... क्यों न प्रतीत होता हो परन्तु है यह स्वाभाविक ही। यह दलबन्दियाँ देश के लिये हानिकारक तब सिद्ध होती हैं जब उनका आधार सैद्धान्तिक न होकर केवल शक्ति प्राप्त करने का लाभ व व्यक्तिगत होता है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि पंजाब के कांग्रेसियों में यह दलबन्दियाँ व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के कारण हैं और उन्हें जनता का, जिसके कि वे प्रतिनिधि हैं, उतना ध्यान नहीं है जितना अपनी महत्वाकांक्षा का। ऐसी ही अवस्था रही तो वर्तमान विधान की धारा ९३ का प्रयोग भी कुछ अनुचित नहीं होगा चाहे उसे कितना ही अवाञ्छनीय क्यों न समझा जावे।

क्या पञ्जाब के कांग्रेसी नेता व्यक्तिगत स्वार्थों से पृथक होकर जनसेवा की उच्चभावना को अपना सकेंगे?

अमेरिका की खोज में

अमेरिका निवासियों ने अपनी स्वाभाविक सहृदयता से भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरू जी का जिस प्रकार भव्य, हार्दिक स्वागत किया है उससे प्रत्येक भारतीय का हृदय प्रफुल्लित है। राजकीय घोषणा से विदित होता है कि पं० नेहरू जी का स्वागत केवल शासकों द्वारा ही नहीं किया गया था अपितु अमेरिकन जनता द्वारा सार्वजनिक स्वागत भी था। पं० नेहरु जी की यह अमेरिकन यात्रा न केवल भारत और अमेरिका के राजनैतिक सम्बन्धों में अधिक सम्पर्क स्थापित करने वाली ही सिद्ध होगी अपितु एशिया के पूर्वीय देशों की भविष्य की राजनैतिक प्रगति पर भी प्रभावजनक होगी। संसार के सभी देशों की आर्थिक और राजनैतिक दशा अत्यन्त अस्त व्यस्त है। दो विरोधी गुट बन रहे हैं जिनके परस्पर आदर्शों में भी थोड़ा २ मतभेद है अतः जनतन्त्रवादी देशों के इस प्रकार से निकट सम्पर्क स्थापित होना शान्ति और सौख्य उत्पन्न करने वाला हो सकता है।

पं० नेहरू जी उस प्रसिद्ध भारत के प्रतिनिधि हैं जिसकी अत्यन्त प्राचीनतम सभ्यता व उत्कृष्ट सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं तथा जो प्राचीन युग और नवीन युग की सम्मिलित गुणों का भी प्रतीक है। पं० जी ने अमेरिका की कांग्रेस में वक्तव्य देते हुये कहा था कि अमेरिका के स्वतन्त्रता युद्ध का इतिहास भारतीयों को उनके स्वतन्त्रता संग्राम में उद्बोधन देने वाला रहा है। अमेरिकन प्रजातन्त्र देश के भविष्य निर्माण में मार्गदर्शक होगा। भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में अमेरिका की सहानुभूति सदैव ही भारत के साथ रही है और उसने समय २ पर कृषि, उद्योग तथा हस्तकला, आदि की वृद्धि में मूल्यवान व्यावहारिक सहायता दी है।

इस समय भारत जैसे महादेश में अनेक जटिल आर्थिक समस्यायें हैं जिनके सुलझाने में अमेरिका सहायता कर सकता है। संसार की राजनीतिमें भारत की भौगोलिक व साधन सम्पन्नता के कारण जैसी स्थिति है उससे वह न केवल एशिया अपितु संसार की शान्ति स्थापना में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकता है—अमेरिका की स्वभावतः ही इसमें रुचि और लाभ है। सुरक्षा कौंसिल के प्रसङ्ग में, सम्भवतः उस उत्तरदायित्व को अनुभव कर जो भारत के सदस्य होने की हैसियत से उसपर है, पं० नेहरूजी ने कहा कि जहाँ स्वतन्त्रता पर आघात होगा अथवा न्यायपर आंच आयेगी व आक्रमण होगा, भारत निष्पक्ष नहीं रहेगा।

'अमेरिका की खोज' के मिशन पर पं० नेहरू जी अमेरिका गये हैं आशा है वहाँ उनको वह अवसर प्राप्त होगा जिससे वे वर्तमान समय की समस्याओं से अवगत हो जायेंगे और एशिया वासियों के, विशेषतः भारत के प्रति अमेरिका का दृष्टिकोण भी ज्ञात हो जायगा। इसी प्रकार अमेरिका भी 'भारत की खोज' कर रहा है। दोनों देशों के परस्पर एक दूसरे को खोजने का परिणाम तो कालान्तर में ही ज्ञात हो सकेगा परन्तु ज्ञात ऐसा होता है कि भारत में अमेरिकन पूंजी लगाने के लिये परिस्थिति पूर्वापेक्षा अधिक अनुकूल हो गई है। प्रश्न यह है कि इस प्रतियोगिता में भारतीय पूंजी कब तक ठहर सकेगी।

हरद्वार कुम्भ

संसार के विभिन्न देशों में जितने महामेले होते हैं, उन सब में भारतीय कुम्भ मेले अनेक अर्थों में सबसे अधिक महत्व और विचित्रताओं से परिपूर्ण प्रतीत होते हैं। भारत में अनेक स्थानों पर १२ वर्ष के उपरान्त कुम्भ और ६ वर्ष के पश्चात् क्रमशः अर्द्ध कुम्भी का समारोह होता है। इन महामेलों के अवसर पर लोग लाखों की संख्या में देशके कोने २ से एकत्रित होकर एक मास तक मेले में रहते हैं और इस मास में मुख्य २ पर्व दिनों पर नियत समय में स्नानादि कृत्य मिलकर करते हैं। अन्य अनेक सभायें, सत्सङ्गादि की व्यवस्था रहती है।

इस वर्ष हरद्वार में वैशाख मास में कुम्भ होगा। उसके लिये अभी से तैयारियाँ की जा रही हैं। यह एक ऐसा सुअवसर है कि जब अनायास ही लाखों भारतीय नर और नारी देश के समस्त भागों से आकर एक मास तक निवास करेंगे। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन कुम्भों का जितना अधिक महत्व अनुभव किया था, यह केवल इतने उल्लेख मात्र से ही प्रतीत हो जाता है कि अपने साधनकाल और उसके अनन्तर कार्यकाल में तीन बार तीन कुम्भों के अवसर पर हरद्वार को अपने जीवनकार्य का केन्द्रस्थान बनाना उचित अनुभव किया। सं० १९१२, १९२४ और १९३६ इन तीनों कुम्भों के अवसर पर महर्षि ने हरद्वार में निवासकर अपने कार्य की सिद्धि के लिये असाधारण उद्योग किया। क्योंकि वह भली भाँति जानते थे कि जन साधारण का साक्षात् सम्पर्क ही देशोद्धार के लिये परम आवश्यक है और कुम्भ जैसे महान् अवसरों से लाभ उठाना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिये अकेले होते हुये पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर आपने वैदिक धर्म प्रचार कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिये विविध मिथ्या विश्वासों, असत्य मतमतान्तरों और रूढ़िवादों का निराकरण यहाँ से उग्रता के साथ प्रारम्भ किया।

इस बीच में ५ कुम्भ तो केवल हरद्वारमें ही हो चुके। क्योंकि सं० १९४० की दीपमालिका को महर्षि का देहावसान हुआ था। महर्षि का उत्तराधिकार अपने कन्धों पर स्वीकार करने वाले आर्यसमाज और उसकी छोटी बड़ी सब प्रकार की संस्थाओं ने मिलकर समय २ पर होने वाले कुम्भों के अवसरों पर किस प्रकार और किसरूप में कितना वैदिकधर्म प्रचार और पाखण्डों का खण्डन किया, यह सब तो इतिहास की बात है। किन्तु इस में सन्देह नहीं कि महर्षि ने जिस प्रकार जनसम्पर्क स्थापित करने के लिये कुम्भों के अवसरों से लाभ उठाने का सूत्रपात किया था, उस परम्परा को आर्यसमाज ने सुसङ्गठित रूप से न अपना पाया। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। किंतु इस प्रमाद को उचित तो नहीं कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ आर्यसमाज की ओर से यह सगर्व नहीं कहा जा सकता है कि इन महा समारोहावसरों पर हमने धार्मिक पुस्तक पुस्तिकाओं को विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित कर वितरित किया, इन अवसरों पर आर्य एवं अन्य विख्यात

(शेष पृष्ट १४ पर)

ये नुमायशी मिनिस्टर लोग

(माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू)

२० वर्ष पहले लिखा हुआ हमारे लोकप्रिय प्रधानमन्त्री का एक लेख जो कुछ अंशों में आज भी ...

इंगलैण्ड के तीसरे जार्ज का कहना था कि "राजनीति तो गुण्डों का पेशा है, शरीफ आदमियों का नहीं!" शायद यह बात कुछ बढ़ा चढ़ा कर कही गई थी, लेकिन फिर भी यह तो सच है कि हम सब लोग जिन्होंने इस कीचड़ में हाथ सान लिए हैं, कभी कभी इससे तंग आ जाते हैं और कभी कभी तो बिलकुल नफरत और खीज होने लगती है। कभी कभी हमें दूसरे हमपेशा लोग दिखाई पड़ते हैं जिन पर उस अंग्रेज बादशाह की बात पूरी पूरी घटती है। ऐसे लोग हमारे पक्ष के भी हैं और विपक्ष के भी—हालांकि विपक्ष के लोगों पर फैसला देने में सभी ज्यादा बेरहम होते हैं। लेकिन लोग जैसे एकाएक नेता और राजनीतिज्ञ बन जाते हैं, वह है बड़ी दिलचस्प बात। डाक्टर बनने के लिए एक आदमी आखिर इतने दिनों तक चीराफाड़ी और तमाम किस्म की बातें सीखता है, तब वह इलाज के लिए अपना दवाखाना खोलकर बैठता है, कोई आदमी किसी अनाड़ी के पास इलाज के लिए नहीं जाता, बिना किसी किस्म की ट्रेनिंग के किसी भी पेशे में आदमी कदम नहीं रखता चाहे वह इंजीनियरी हो, साइन्स हो, तिजारत हो यहां तक कि बिजली वाले का ही पेशा क्यों न हो। अगर किसी आदमी ने इंजीनियरी की ट्रेनिंग नहीं पाई है तो उससे आप एक पुल बनवा तो लीजिए।

लेकिन राजनीति के पेशे, नेता बनने के लिए किसी भी ट्रेनिंग की कोई जरूरत नहीं। हर पेशा गैर अपने देशवासियों पर शासन करने के लिए समर्थ समझा जाता है। प्रोफेसर और उसी किस्म के बड़े बड़े लोग राजनीति पर छोटे मोटे पोथे लिखते रहे, सामाजिक सम्प्रदाय जिनके पीछे हमारा समाज दिनोंदिन बदतर होता जा रहा है, उन पर लिखते रहे और उनके समाधान के लिये चीख पुकार मचाते रहे, वे चाहे तो मानवशास्त्र, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के नियमों की उधेड़ बुन करते रहे, मनोविज्ञान की पर्तें उधेड़ कर गहरे से गहरे उतरने का प्रयास करते रहे और हजारों ऐसी बातों में माथापच्ची करते रहें जिसकी एक नेता को बहुत बड़ी आवश्यकता है, लेकिन हमारे नेता को इस सब बेकार की बातों के लिये वक्त कहाँ रक्खा है। खुदा ने उसको जो थोड़ी बहुत अक्ल बख्श रक्खी है, उसी पर उसे पूरा भरोसा है कि वह हुकूमत के स्टीमर को साहिल तक ठेल ही ले जायगा। लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि खुदा की बख्शी हुई वह अक्ल कभी कभी खास कूड़ा ही साबित होती है और हुकूमत

का स्टीमर धक्के खाता हुआ चट्टानों से टकरा जाता है और अनगिनत बेगुनाहों की जिन्दगी पर आ बनती है। लेकिन मुझे तो इस बात पर हैरत होती है इतनी बार यह दुर्घटना होने पर भी न तो इन राजनीतिज्ञ नेताओं को ही अपनी असलीयत का ज्ञान हुआ है और न जनता ही ने उनकी असलीयत समझी है। यहां तक कि इङ्गलैण्ड जैसे उन्नत और प्रजातन्त्रिक देश में, घरेलू मुहकमे के सरगना ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे वे शाही दर्बार के खान्दानी विदूषक हों। और सर आस्टिन चेम्बरलेन भी अपनी अक्ल और दिमाग की कमी को तड़क-भड़क और शान शौकत से पूरा करते हैं। ऐसे हैं इङ्गलैण्ड के देशी लोग! इसी लिये यह बिलकुल अचरज की बात नहीं है कि रामारोला ने यह सुझाव पेश किया है युद्ध के खिलाफ आवाज उठाने के बजाय इन युद्ध छेड़ने वालों के खिलाफ आवाज उठाई जाय, इन राजनीतिक नेताओं को निर्वासित कर दिया जाय।

लेकिन सात समुन्दर पार विलायत जाने की क्या जरूरत? ऐसे नमूने तो अपने हिन्दुस्तान में भी बिना ढूंढे हजार मिलते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि जैसे मैडम टुसा का अनोखा अजायबघर था, जिसमें चैम्बर आफ हारर्स—भयानक चीजों का संग्रह—भी था (अगर आज भी वह होता तो कितने काम का साबित होता।) उसी तरह आगे भी कभी इन विचित्र ऐतिहासिक अवशेषों का एक बड़ा सा अजायबघर कायम किया जायगा। इस अजायबघर में हमारे बहुत से वर्तमान मिनिस्टरों की मूर्तियां रक्खी जांयगी ताकि हमारी आनेवाली पीढ़ियां यह जान सकें कि हिन्दुस्तान में भी कैसे कैसे जीव जन्तु मिनिस्टरी चलाते थे। उस आगे आने वाले स्वर्णयुग में बच्चों के अध्यापक इन लकदक मूर्तियों को दिखलाकर उस असभ्य और जंगली युग की बातें बतायेंगे जब ऐसे ऐसे लोगों के हाथ में सरकार थी और वे इन्सान पर हुकूमत करते थे। वह अध्यापक बतायगा कि उस जमाने में योग्यता प्रतिभा या ज्ञान या जनता की मुख्य करने वाले गुणों के आधार पर किसी का शासन नहीं सौंपा जाता था, बल्कि अज्ञान और मूर्खता ही एक मात्र कसौटी थी और जिस व्यक्ति में सबसे गहरा अज्ञान होता था, वही शासन के सब से अधिक योग्य समझा जाता था। वह उन बच्चों को बतलायेगा कि सचाई और सिद्धान्त पर डटे रहना दोनों ऐसे अवगुण थे जिनसे ये मर्तबे के भूखे अवसरवादी महापुरुष हमेशा दूर रहते थे और हमेशा उसी के सिर पर सेहरा बंधता था जो सचाई का पूरी तरह गला घोंट सके और जिस सिद्धान्त पर खड़ा है अच्छी तरह उसकी पीठ में छुरा भोंक सके।

और इस अजायबघर में भारत के हर सूबे के नुमाइन्दे रहेंगे लेकिन सबसे बड़ा और खास हिस्सा युक्त प्रान्त का होगा। युक्तप्रान्त के नुमाइन्दों में सबसे आगे होंगे, हमारे बांके नवाब जो ढीलाढाला कुरता और ढीलाढाला पायजामा पहन कर बड़ी चुस्ती से स्थानीय शासन चलाते हैं। खूबसूरत कालीनों और हरे भरे घास के लानों पर एक शाहजादे की सी ठसक से दावतों पर इनायत फरमाने की तकलीफ उठाते हैं। समझदारी और अक्ल के ऊबड़ खाबड़ और तकलीफदेह रास्तेमें उनका कोई सरोकार नहीं। किताबों से उन्हें कोई खास दिलचस्पी नहीं और रेलवे स्टेशनों पर बिकने वाले सस्ते किस्म के बाजारू उपन्यासों के अलावा और कुछ पढ़ते हुए उनके घनिष्ठ से घनिष्ठ दोस्त ने कभी भी न देखा होगा। उनका बड़े से बड़ा दोस्त उन पर यह इलजाम नहीं लगा सकता कि उन्होंने कभी कोई भी ठिकाने की बात की है, या कभी उनकी किसी भी बात से अक्लमन्दी की कोई भी झलक मिली है। अपने खुद के विभाग के बारे में उन्होंने कभी कुछ भी पढ़कर अपने विचारों की मौलिकता पर आंच नहीं आने दी है और अपने प्रान्त के बारे में उनकी उतनी गहरी जानकारी है जितनी किसी कुली मजदूर को मंगलग्रह के बारे में होगी।

उसी अजायबघर में दूसरी दिलचस्प मूर्ति होगी नवाब के नए सहयोगी, राजा साहब की जिनके अन्न ग्रहण ने, बावजूद उनके विशवास और विचारों के उन्हें यह नेक सलाह दी कि वे आखिर बार मिनिस्टरी की बलिवेदी पर जाना खाकर गौरव का ... कि कुछ ही दिनों पहले वे मंच पर चीख चीख कर पदों का विरोध करते थे।) मनोविज्ञान के किसी भी विद्यार्थी के लिए यह एक दिलचस्प अध्ययन की चीज साबित होगे।

और भी बहुत से लोग इस अजायबघर में रक्खे जायेंगे और आने वाले युग का विद्यार्थी आश्चर्य करेगा कि जिन राजनीतिज्ञों और मिनिस्टरों को बुद्धि की सबसे ज्यादा जरूरत थी वे भी इस दृष्टि से बिलकुल शून्य थे। उसे ऐसी जनता पर भी आश्चर्य होगा जो

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वेदों पर विद्वानों का मत—

हिन्दी के विद्वानों की धींगाधींगी

इस विषय में भेजे हुये—आर्य विद्वानों के विचारों का हम स्वागत करेंगे —सम्पादक

[ले०—गिरीशचन्द्र अवस्थी लखनऊ विश्वविद्यालय]

मैं अपने प्रथम लेख में वेदों की समानकालिकता तथा द्वितीय लेख में यूरोपियन हिन्दी के विद्वानों की युक्ति का असहनता तथा तृतीय लेख में ऋग्वेद में समुद्र वर्णन आपके सामने उपस्थित कर चुका हूं और इस लेख में पंजाब के बाहर का भूगोल दिखला रहा हूं। ऐतिहासिक विद्वानों का कथन है कि आर्य ऋग्वेद के समय पर्शिया से पंजाब तक आये। इससे पंजाब के बाहर का भूगोल ऋग्वेद में नहीं है।

ऋग्वेद ८।३।२४ में पाक स्थामा भोजम ऐसा लिखा है पाक स्थामा राजा का भोज विशेषण दिया है। ऐतरेय ब्राह्मण अध्या० ३८। ख ३ में एतस्या दक्षिणस्यां दिशि ये केच सत्वना राजानो भौज्या यैव तअभिषिच्यन्ते भोजेत्येनानभिषिक्तानाचक्षत। इस दक्षिण दिशा में जो कोई सत्वतों के राजा होते हैं व भौज्य के लिये अभिषिक्त होते हैं। इस अभिषिक्त दक्षिण के राजाओं को भोज कहना चाहिये। इस ऐतरेय के प्रमाण से भोज दक्षिण का राजा कहा जाता है। ऐतरेय ऋग्वेद का ब्राह्मण है। इसमें ऋग्वेद में पाकस्थामा का भोज विशेषण उसको दाक्षिणात्य राजा बतला रहा है। दक्षिण देश क्या पंजाब में है या पंजाब से पश्चिम। ऋग्वेद ८।५।३७ में चैद्य-कशु के दान का वर्णन है। चैद्य चेदि का राजा कहा जाता है। चेदि देश क्या पंजाब में था। चेदि देश तो ग्वालियर राज्य के नरवर जिले से लेकर नर्मदा तक चला गया है और वत्स देश से भी मिला है। उसके राजा शिशुपाल की राजधानी नरवर जिले में बेतवा नदी के तट पर शुक्तिमती नाम से प्रसिद्ध थी। आज भी चन्देरी कही जाती है और बाद में अब से एक सहस्र वर्ष पूर्व त्रिपुरी थी। जिसका वर्णन पुराने दानपत्रों में स्पष्ट है। कुछ कोषकार चेदि का त्रैपुर नाम लिख रहे हैं। यह त्रिपुरी जबलपुर के पास नर्मदा के दक्षिण तीन कोश पर तेवर नाम से प्रसिद्ध है और भारत के सुप्रसिद्ध चौहान वीर पृथ्वीराज का ननिहाल था यह पृथ्वीराज दिग्विजयादि से प्रसिद्ध है। तथ ऋ० ७। १८।६ में मत्स्यासः मत्स्य देश के लिये आया है। तुर्वश राजा ने मत्स्य देश को प्राप्त किया था। मत्स्य देश जो कुरुक्षेत्र के नैऋत्य में है क्या पंजाब से बाहर नहीं है। ऋ० ३।५३।१४ में कीकट देश का वर्णन है। कीकट मगध का नाम है। यह सभी मानते हैं। ऋ० २। १९५ में मही नदी का वर्णन है। जो राजपूताना से गुजरात सागर तक बह रही है और माही नाम से प्रसिद्ध है। ऋ० २।१५।६ में इन्द्र ने सिन्धु नदी को उत्तराभिमुखी बनाया। यह काली सिंध ग्वालियर राज्य में दक्षिण से उत्तर बहती है। ३।२३।४ में दृषद्वती नदी सरस्वती नदी और आपया नदी और मानुष तीर्थ का वर्णन है। दृषद्वती को कोई लोग घग्गर मानते हैं यह उनका प्रमाद है। घग्गर सरस्वती से उत्तर है और दृषद्वती सरस्वती से दक्षिण है। आपया नदी का नाम पुराणों में आपगा आया है। अर्थ समान है मानुष तीर्थ आपगा से एक कोश पर कुरुक्षेत्र में ही है। कुरुक्षेत्र पंजाब से बाहर है। ऋ० ४।३०।१८ इसमें सरयू नदी का नाम आया है। यह संयुक्त प्रान्त की नदी है और बलिया के पास गंगा में मिली है अथवा सरयू नाम की नदी अयोध्या से पश्चिम घाघरा में मिलकर सरयू नाम से अयोध्यादि में प्रसिद्धि धारण करता बलिया के पास गंगा में मिलता है। ऋ० ५।५३।९७ में यमुना नदी का वर्णन है। यूरोपियन कोई २ विद्वान इसको रावी मानते हैं। परन्तु प्रसिद्ध यमुना छोड़कर रावी मानना क्या न्यायसंगत है और कोई २ स्पष्ट यमुना ही कहते हैं। ऋ० ५।८३।८ में पर्जन्य से प्रार्थना है कि मेघों को नचा कर ऐसी वृष्टि करो जिससे कि नदियाँ पूर्वाभिमुखी होकर बहें। पूर्वाभिमुखी नदियां पंजाब में कितनी हैं। ऋ० ९।७५।५ में गंगा का और यमुना का वर्णन है। क्या गंगा पंजाब में है। ऋ० ७।९।२ में सरस्वती नदी का वर्णन है और इसके वर्णन में यह समुद्र में गिरती है यह लिखा है। यूरोपियन कुछ विद्वान् हरहवेता नाम की नदी जो अवेस्ता में लिखी है। वही सरस्वती है। ऐसा कहते हैं सकार के स्थान में हकार हो गया जैसे कि सिन्धु का हिन्दु हो गया। सकार का हकार फारसी भाषा में हो जाना स्वाभाविक है। यह नदी आरगन्दाब नाम से प्रसिद्ध है और काबुल नदी की सहायक है जो काबुल नदी सिन्धु नदी में गिरती है। ऋ० ७।९६।७ में ऐसा वर्णन है। जो इसे सरस्वती न मानी जावे। वैदिक इन्डेक्स में श्री मेकडानल साहब और श्रीकीथ साहब स्पष्ट इसको कुरुक्षेत्र की समुद्रगामिनी नदी मानते हैं। पुराणों में इसका सौराष्ट्र में सोमनाथ के पास मिलना माना है और सकार के स्थान में हकार होने से सिन्धु हिन्दु हो गया वह सिद्धान्त भी निर्मूल है। चीनी यात्री श्री ह्वेनसांग भारत का पुराना नाम इन्दु लिखते हैं और इन्दु का अर्थ चन्द्रमा करते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा संसार को शान्ति और प्रकाश देता है उसी प्रकार यह देश संसार को ज्ञान देकर हृदय में अज्ञान नाश कर प्रकाश और शांति देता है। इससे इसका नाम इन्दु है। इन्दु से हिंदु बना यह स्पष्ट है। सिन्धु एक प्रांत का नाम है। सिन्धु से हिन्दु बनता तो सिन्धु प्रांत ही हिंदुस्थान कहा जाता, ऐसा तो नहीं है। यह समस्त का नाम है। इससे इन्दु से बना ठीक प्रतीत होता है। बाल्मीकि रामायण में सिंधु नदी का इन्दुमती नाम लिखा है। इससे इन्दुमती से इन्दुस और इन्दुस से इण्डिया बना यह भी युक्ति संगत मालूम पड़ता है। न कि सिन्धु से। ऋग्वेद में ८।९६।१३ में कृष्ण नामक असुर के छिपने का अंशुमती नदी में वर्णन है। बृहद्देवता नामक ग्रन्थ में ६।१९८ से ६।२५ तक में अंशुमती नदी में कुरुदेश के सामने सोम के छिपने का वर्णन है। यह कुरुदेश मेरठ का जिला है। वहाँ हस्तिनापुर कौरवों की राजधानी पुराने नाम से गंगा दक्षिण से आज भी विद्यमान है। मेरठ यू० पी० में है।

ऋग्वेद ८।२०।२५ तथा १०।७५ में असिक्नी नदी का नाम आया है। निरुक्त ९।२६ में असिक्नी का पानी काला लिखा है 'महर्षि कात्यायन । वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तोन" के व्याकरण महा। भाष्य में ४।१।३९ असन् शब्द से असिक्नी को बनाते हैं। असित काले का नाम है। निरुक्त के टीकाकार दुर्गाचार्य भी असिक्नी का पानी काला मानते हैं। यूरोपियन विद्वान् इसको चनाब मानते हैं और ग्रीक निवासियों के प्रमाण को सामने कर रहे हैं, परन्तु उन लोगों ने जो चनाब का नाम है वह नहीं लिखा है। चनाब का जल श्वेत वर्ण का है काला नहीं है। निरुक्त और ब्राह्मण और श्रौत सूत्रों के आधार पर वेदार्थ होता है इससे निरुक्तकार यास्क का प्रमाण सर्वोच्च मानना होगा। ऋ० १०।७५। ५ में यमुना के साथ असिक्नी शब्द आया है। इससे काले जल वाला यमुना नहीं हो सकती। इससे काली नाम वाला एक नदी जो यू० पी० में फर्रुखाबाद जिले के कन्नौज के पास गंगा में गिरती है मानना होगा। ऋ० ४।२।१५ में गोमन्त पर्वत का वर्णन है। हरिवंश पुराण में इसका वर्णन विस्तार से है और भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जी द्वारा मगधराज जरासन्ध के पराजय का वर्णन है। हरिवंश में इसका दक्षिण भारत में वर्णन है। यह पर्वत उत्तरी कनाड़ा जिले की पूर्वी सीमा पर सिर्सी कस्बे से ३० मील आग्नेय दिशा में स्थित मैसूर राज्यान्तर्गत बनवासी गाँव के दक्षिण में है। जो कि सह्यादि पश्चिमी घाट पर्वत की एक चोटी है। इस विषय में यदि विशेष समझना हो तो भारतीय अनुशीलन नामक ग्रन्थ में आठवें भाग में देखिये। क्या यह सब पंजाब में हैं या पर्शिया से पंजाब तक पड़ते हैं।

ऋ० १०।१३६।२ में पूर्व समुद्र का वर्णन है और ऋ० ९।८०।१ तथा ४।४७।८ में चार समुद्रों का वर्णन और पूर्वी समुद्र का वर्णन भी पंजाब के बाहर ही है और चारों समुद्र पृथ्वी के चारों ओर हैं।

सरस्वती प्लक्ष प्रस्रवण में निकल कर ४० दिन घोड़ों के जाने के योग्य मार्ग में जाकर विनशन में लुप्त हो जाती है। फिर पुष्कर इत्यादि तीर्थ स्थानों में निकलती और छिपती समुद्र तक जाती है।

महाराजा दण्ड

(१)

[श्री आचार्य नरदेव शास्त्री]

वस्तुतः राजा राजा नहीं है, दण्ड ही राजा, नहीं नहीं, दण्ड ही महाराजा है। दण्ड ही राजा को राजा कहलाने में सहायक होता है।

दण्ड किसको कहते हैं ?

यस्माददान्तान्दमयति,
अशिष्टान् दण्डयत्यपि ॥
दमनाद्दण्डनाच्चैव।
तस्माद्दण्ड विदुर्बुधाः ॥

(अर्जुन युधिष्ठिर के प्रति)

—(शान्तिपर्व)

जिस कारण से कि वह अदान्तों (जो काबू नहीं आते, जो वश में नहीं रहते) को वश में कर लेता है, दबा लेता है, अशिष्टों (जो मर्यादा में नहीं चलते) को भी ठीक कर देता है,—इस प्रकार दमन और दण्ड की शक्ति होने से दण्ड-दण्ड कहलाता है।

दण्ड समस्त प्रजा का शासन करता है। दण्ड समस्त प्रजा की रक्षा करता है। जब प्रजा सोयी रहती है तब भी राजा का शासक का दण्ड जागता रहता है और रक्षा करता रहता है। इसीलिये बुद्धिमान पुरुष दण्ड को ही धर्म मानते हैं, दण्ड को ही धर्म मानते हैं। दण्ड ही धर्म की रक्षा करता रहता है। दण्ड ही अर्थ की रक्षा करता रहता है, दण्ड ही काम की रक्षा करता रहता है और इच्छाओं की पूर्ति इसी से होती है। इस प्रकार धर्म, अर्थ, काम, की प्राप्ति का साधन होने से दण्ड ही त्रिवर्ग कहलाता है। दण्ड से ही धन धान्य की रक्षा होती है धन की रक्षा भी दण्ड से होती है।

जरा लोगों का स्वभाव देखिए—,

लोग राजदण्ड के भय से ही पाप नहीं करते। कोई यमराज के दण्ड के भय से पाप नहीं करते, कोई परलोक के भय से पाप नहीं करते और कोई परस्पर के भय से पाप नहीं करते। इससे जान पड़ता है सब कुछ दण्ड पर ही निर्भर है। दण्ड के ही भय से एक दूसरे को नहीं खा डालते, यदि दण्ड प्रजा की रक्षा न करे तो फिर वह तो अन्धेरे में ही नष्ट हो जायगी। संसार में सब प्रकार के लोग होते हैं इसलिए ऊँच-नीच, विद्वान्, अविद्वान, शिक्षित अशिक्षित आदि को देखकर दण्ड की मात्रा नियत की जाती है। किसी को धिग् दण्ड अर्थात् धिक्कार मात्र से काम चल जाता है, किसी को शारीरिक दण्ड देना पड़ता है, किसी को आर्थिक दण्ड देना पड़ता है। जैसा जैसा उग्र अथवा सौम्य पाप, वैसा-वैसा उग्र अथवा सौम्य दण्ड देना पड़ता है। ब्राह्मण विद्वान को चार आदमियों के सामने धिक्कार देने से वह आगे को समझ सकता है। क्षत्रिय को वेतन का दण्ड अथवा अत्यन्त उग्र पाप हो तो जायदाद कुड़क का दण्ड काम दे जाता है। वैश्य को धन की मार, बड़ी मार है। शूद्र को भी जैसा अपराध हो न्यूनाधिक दण्ड दिया जाता है। उसकी नौकरी छीन लेना यही बड़ा दण्ड है। वेतन में कुछ काट लेना छोटा दण्ड है।

लोग मोह में में न पड़े रहें, उनके धन की रक्षा हो जाय, लोग अपनी-अपनी मर्यादा में चलें इसलिये दण्ड नामक उपाय ढूँढ निकाला है बुद्धिमानों ने, शास्त्रज्ञों ने, वेदज्ञों ने। और वह दण्ड रहता है राजा के हाथ में, शासक वर्ग के हाथ में—

दण्ड का रूप

रूप में काला काला, भयङ्कर लाल आँखों वाला जब दण्ड प्रजा के सिर पर घूमता रहता है तब प्रजा मोह में नहीं पड़ी रहती, अज्ञान में पड़ी नहीं रहती, मर्यादा में चलती रहती है—परस्पर एक दूसरे को नहीं सताते।

यदि सिर पर दण्ड न रहे तो न वर्णाश्रम धर्म चलें न कुछ। प्रजा तो दण्ड के भय से ही ठीक ठीक मार्ग पर चलती है। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, भिक्षुक सब के सब दण्ड के भय से ही अपना अपना काम करते रहते हैं। भय से ही यज्ञ करते रहते हैं भय से ही दान देते हैं, भय से ही वचन का पालन करते हैं। साराश, राजदण्ड का भय हो, परस्पर का भय हो परलोक का भय हो, यमराज अर्थात मृत्यु का भय हो—सिर पर किसी न किसी प्रकार का भय, दण्ड रहता है तब मनुष्य अथवा मनुष्य समुदाय धर्म मार्ग पर चलता है—

इसीलिये ठीक ही कहा है कि—जिसके हाथ में दण्ड रहता है, वही राजा पूजा जाता है। देवताओं में भी वे ही देवता अधिक सम्मान के पात्र होते हैं जिनमें दण्ड देने की संहारक शक्ति होती है—जैसे रुद्र, जैसे स्कन्द, जैसे शक्र, जैसे अग्नि, जैसे वरुण, जैसे यम जैसे काल, जैसे वायु, जैसे सूर्य—जिसके हाथ में दण्ड है उसीका तेज चमकता है, जिसका तेज उसीका प्रताप जागता है, जिसका प्रताप जागता है संसार उसी को मानता है।—

(क्रमशः)

'तुम न रुके'

—प्रस्तुत कविता में स्वामी जी जब बद्रीनाथ की ओर गये थे उस समय की एक झाकी है।

हिमाचल पर्वत शिखरों को पार करने में उनके चरणों से रक्त धार बह रही थी। मणिभद्रपुर [माणा ग्राम] बद्रीनाथ से कुछ मील आगे] पहुँचने पर बर्फ पर चलने के कारण स्वामी जी मूर्छित हो गये थे। वहा तीन व्यक्ति मारीचि ऋषि के वंशधर [जिन्हे पवतीय भाषा में मार्चे कहते है] उन्हे मिले स्वामी जी उन्हे उपदेश देना चाहते थे। परन्तु स्वामी जी वहा अधिक न रुक सके। नोति नामक स्थान को देख कर स्वामी जी लौट पड़े—युग बीत गये पर आज तक भी स्वामी जी का सन्देश वहा तक न पहुँच सका। आर्य उपदेशकों एव प्रचारकों का ध्यान इस ओर जाना चाहिए।

चरणा से बहती जाती थी घन रक्त धार ॥
वन की दुर्गम घाटी जिनमें था अन्धकार
मानवता का थो जहा हुआ विश्रान भार
हिम गिरि के उन शिखरो को तुम कर गए पार ॥१॥
चरणो से बहती०।

मणिभद्रपुरी में पहुँच गए संज्ञा विहीन
आये समीप मारिचि ऋषि के वशीय तीन—
देने को प्रस्तुत हुए उन्हे तुम सद्विचार ॥२॥
चरणो से०।

(पर) तुम न रुके कुछ काल वहां अज्ञान मिटाने
पर्वतीय वे सुन न सके प्राणो के गाने
'नीती" से फिर गये 'नेति, का कर विचार

चरणो से बहती जाती थी घन रक्त धार ॥

—ले० आचार्य भारतीय शा० सा० रत्न

देव दयानन्दो जयति

श्री मङ्गलदेव शर्मा

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र की लङ्का विजय की उल्लासमयी बेला से आज तक, तीन युगों के असंख्य वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी, हम आर्य दीपावली उत्सव मनाते आ रहे हैं। यह पर्व प्रतिवर्ष हमारे राष्ट्र के लिये एक आशा और उत्साह का सदेश लाता है।

अनार्यत्व पर आर्यत्व की विजय—भगवान श्रीरामचन्द्र की असुर राज रावण पर विजय—के कारण जहाँ इस महा पर्व का विशेष महत्व है, वहाँ, भारत के ऋषि प्रधान देश होने के कारण इसके आर्थिक और सामाजिक महत्व भी हैं।

किन्तु एक विशेष महत्व इस पर्व का और भी है, जिसे, इस आधुनिक काल मे आर्य जाति कभी विस्मरण नहीं कर सकती। वह है आज के दिनों पिछली शती के महापुरुष ऋषि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण।

अभी कुछ दिन पूर्व, भारतीय राष्ट्र के राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की जयन्ती को समारोह पूर्वक मनाया, और आज हमारा आर्य राष्ट्र अपने एक अन्य महा-पुरुष की निर्वाण तिथि मना रहा है।

आज हमने आनन्द के दीप सजाये हैं। अपने गृहों को स्वच्छ और पवित्र किया है, आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के हृदयों में एक अभूतपूर्व उमग और उत्साह है, और हम सभी उसमें निमग्न हो कुछ भूले हुए से, हैं।

पर आज का पर्व क्या वास्तव में उत्सवोचित उल्लास मे अपने को विलीन कर देने का है? हमे अपने भूतकाल पर गर्व है, इसी कारण तो यह पर्व और उसका समारोह है। किंतु जो जाति केवल भूतकाल पर ही गर्वित रहकर जीवित रहना चाहती है, अपने वर्तमान की ओर से सजग और सचेष्ट नहीं रहना चाहती, उसका जीवित रहना संदेहात्मक है।

महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व, वास्तव मे, हमारे राष्ट्र की ऐसी ही अवस्था थी, हम एक मात्र अतीत के आलोकमय आभास मे ही अपने वर्तमान और भविष्य की उज्वलता का भान कर रहे थे। किंतु हमारे बीच ऋषि के आगमन के उपरान्त हमने व्यक्तिगत और राष्ट्रीय जीवन के तत्व को जाना और पहचाना। उससे पूर्व हमारे देश की जो अधोगति थी उसका उल्लेख करने का यह अवसर नहीं है।

महाभारत काल मे आर्य जाति की अवनति का सूत्रपात हो चुका था। सूत्र-पात ही नहीं हो चुका था अपितु आर्य सभ्यता पतन के गर्त मे पतित हो चुकी थी। अन्ततोगत्वा आर्य राष्ट्र की पतनोन्मुखी वह प्रवृत्तियां ही महाभारत जैसे लोकव्यापी युद्ध का कारण हुई। तब से हम निरन्तर गिरते ही चले आये।

सभ्यता का सर्वनाश हुआ, देश दासता की शृंखला में आबद्ध हुआ। सामाजिक सगठन सर्व प्रकार से छिन्न भिन्न हो गया और संस्कृति का भीषण ह्रास हुआ। जिस जाति ने अखिल विश्व को ज्ञान और विद्या का आलोक प्रदान किया, वह स्वयं, स्वत, अपने ही हीन कर्मों से, पतित और मृतप्राय हो गई। भारत जैसे सुविशाल देश में एक छोर से दूसरे छोर तक, अविद्या और अज्ञान का अन्धकार परिव्याप्त हो गया।

ऐसे समय में हमारे देश में एक परम ज्योति जगी। एक दिव्य महापुरुष दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ जिसने हमें अपनी तेजोमय आभा से चमत्कृत किया। उसके अलौकिक आलोक में हमारी जाति सजग होकर उठी और अपने उद्धार का मार्ग खोजने लगी।

आज हम उन आप्त पुरुष के उपकारों को कैसे भूल सकते हैं। पूरे पांच हजार से अधिक वर्षों की कुम्भकर्णी निद्रा से जिस महापुरुष ने हमारी जाति को जगाया, सचेत किया, उद्बोधित किया, उस देव दयानन्द के अमित उपकारों का आज के दिन हम अवश्य स्मरण करेंगे। भूतल पर जबतक आर्य जाति का अस्तित्व है, दयानन्द स्वामी का नाम राष्ट्रोत्थान की दिशाओं को सदैव आलोकित करता रहेगा।

आज हम स्वतन्त्र हैं हमारा राष्ट्र एक स्वाधीन राष्ट्र है। इस स्वाधीनता की प्राप्ति का इतिहास जब लिखा जायगा तब उसमें महर्षि का नाम मूर्धन्य स्थान पर सुशोभित रहेगा। क्यों? इस लिये कि महापुरुष दयानन्द सरस्वती वह प्रथम भारतीय थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्र को आत्मोद्धार के मार्ग पर अग्रसर किया। उन्होंने ही युगों के सुषुप्त राष्ट्र को सजग और सचेत किया। और उठकर कल्याणपथ-स्वतत्रता-प्राप्ति के मार्ग पर गतिमान किया।

उस योगिराज ने अपने तपोबल से भारत राष्ट्र के रोग का सूक्ष्म निदान किया और तदनुसार उपचार आरम्भ कर दिया। उनकी विचार परम्परा की पूर्णता की प्रशसा करना मेरे जैसे अल्पज्ञ प्राणी के लिये असम्भव है। उनकी व्यापक विचार दृष्टि इस रोगी के केवल एक अङ्ग पर ही नहीं पड़ी अपितु उन्होंने राष्ट्रीय-जीवन की प्रत्येक दिशा पर गूढ़ विचार करके देश और राष्ट्र के आमूल चूल उद्धार की योजना उपस्थित करते हुए उसके कायाकल्प का सकल्प किया।

एक राजनीतिक अग्रणी की भाँति उनकी विचार-दृष्टि एकाङ्गी न थी। उनका दृष्टिकोण तो अत्यन्त परिव्याप्त, सर्वग्राही और विशाल था। राष्ट्रीय जीवन के एक मोर्चे के ही वह योद्धा न थे, अपितु सुविस्तृत समर क्षेत्र के वह सेनापति भी थे। भारतीय पुनरुत्थान के संबध में उनकी गणना महारथियों मे की जायगी।

राजनीतिक रूप से ही यदि वह चाहते तो राष्ट्र को सगठित कर स्वातन्त्र्य प्राप्ति मात्र के मार्ग पर अग्रसर कर सकते थे। पर मेरे नम्र विचारानुसार, उनका अपना दृष्टिकोण तो ऐसा व्यापक था जिसमे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और समस्त देश सभी समा जाते। उन्होंने देखा युगानुयुग पुरातन जाति को सर्वथा पतितावस्था में। उनकी दृष्टि केवल मात्र जाति के राजकीय वर्चस्व की ओर ही नहीं गई अपितु उन्होंने उसे वैयक्तिक और सामाजिक रूप से भी उठाने का अनुष्ठान किया। इसी कारण वह अपनी सर्वाङ्गीण और बहुमुखी ऐसी योजना को लेकर अग्रसर हुए जिसके द्वारा आर्य-जाति का परिपूर्ण उत्थान हो सके।

उनकी योजना के एक-एक अङ्ग को लेकर यहाँ गिनाने का अवसर नहीं है। मै अपने में वह सामर्थ्य भी नहीं पाता जो उनकी गुण गरिमा का बखान कर सकूँ। पर चिरन्तन सत्य है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं, कि महर्षि दयानन्द ने अपने अमित तपोबल और आत्मबल से भारत-भू पर जो दीप-शिखा प्रज्वलित की, उसीके आलोक में इस बूढ़े भारत राष्ट्र ने अपने मुक्ति-मार्ग को खोज पाया और आज भी उसी अनन्त प्रकाश में हम स्वाधीनता का,—नाम मात्र को ही सही—उपयोग कर रहे हैं।

दिव्य दयानन्द के दिये हुए दार्शनिक आलोक का ही यह प्रभाव हुआ जो उनके उत्तरकालीन युगपुरुषों ने उनके बताये मार्गों में से एक वा अधिक का अनुसरण करते हुए भारत की नावको किनारे लगाया। भारतोद्धार की रूपरेखा ही उन्होंने नहीं बनाई अपितु अपने जीवन काल मे ही महर्षि देशोत्थान का कार्य क्षेत्र निर्मित कर गये थे उस कार्य क्षेत्र को उनके उपरान्त के महापुरुषों ने सँभाला। काश्मीर से कन्याकुमारी, अटक से कटक तक स्वामी जी ने जो जीवन ज्योति जागृत की थी, उनके उत्तरकालीन पुरुषों ने उसका सदुपयोग किया। राष्ट्र को वास्तव मे जागरित इन्हीं महापुरुष ने किया।

आज उन्हीं दैवी पुरुष की बलिदान बेला का दिवस है। मूढ़ता मानव वृत्तिका सदैव से एक अङ्ग रही है। मानव हृदय की आसुरी वृत्तियाँ, प्रतीत ऐसा होता है, त्रिकाल और चारों युगों में रहेगी। ऐसे अपने परमोपकारी महात्मा का बलिदान हमारे अपने हाथों हुआ। इसी दीपावली के दिन ऋषि दयानन्द हर्ष पूर्वक विषपान करते हुए अमर हो गया। जिनके लिये वह जिये उन्हीं के लिये उन्होंने अपने प्राण भी दे दिये।

ऐसे बलिदान अमिट होते हैं। ऐसे बलिदानी महापुरुष विरले ही होते हैं। आनन्द कन्द भगवान श्री कृष्णचन्द्र का बलिदान एक व्याधके बाण द्वारा हुआ। महर्षि दयानन्द ने अपने परम विश्वासी सेवक के हाथों विष पिया। और महात्मा गांधी के प्राण भी एक मार्ग भ्रष्ट भारतीय युवक ने ले लिये।

किंतु क्या दयानन्द का बलिदान व्यर्थ गया? नहीं कदापि नहीं। वह न रहा, किंतु हम जीवित रहेंगे। हमारा राष्ट्र जीवित रहेगा। उसने हमारे राष्ट्र को जीवन का तत्व दिया है, और उसी के कारण आज हम स्वतन्त्र हैं।

दीपावली की इस ज्योति में आइये हम आज कुछ क्षणोंके लिये उस दिव्यात्मा का स्मरण करें। जो बुझते बुझते भी हमें जीवन ज्योति प्रदान कर गई है। स्मरण ही न करें, अपने हृदयों को भी टटोलें कि अतीतके उस सदेश वाहक ने हमें जो सदेश दिया है हम उसे कहां तक पूरा करने की चेष्टा कर रहे हैं। जिसके कारण आज हमारा उद्धार हुआ है, हम विचार करें कि उसके बताये हुए मार्गों में से ऐसे कितने हैं जिन पर अभी हमने पग ही नहीं धरा अथवा उस मार्ग पर थोड़ी दूर चल कर हम फिर जहां के तहां लौट आये हैं।

हमारी राजनीतिक मुक्ति हुई, वैयक्तिक और सामाजिक मुक्ति के गीत तो हम ने बहुत गाये, किंतु उस दिशा में अग्रसर कितने हुये? क्या हम आज इस पर विचार कर अपने जीवन का भावी कार्यक्रम निश्चित करेंगे? यदि हाँ तो इस दीपावली पर अपने उद्धारक के नाम को सार्थक करेंगे। अपने विनम्र निवेदन का निर्णय मैं अपने कोटि कोटि आर्य भाइयों पर छोड़ता हूँ।

"स्वाध्यायान्मा प्रमादितव्यम्"

श्री श्यामसुन्दर विद्याभास्कर

स्वातन्त्र्य प्रभातके अब खिले प्रकाश मे भारत राष्ट्र का उष्ट्र किस करवट से बैठेगा यह भारत के आर्य सस्कृति के उपासकों को सोचना ही होगा। महाभारत के अनन्तर विविध सम्प्रदायो के स्वाध्याय शील जितेन्द्रिय महात्माओ ने ही जड़े मजबूत कर उन्हें अपने घोर परिश्रम के श्रमसीकरों से सिंचित कर पल्लवित किया था। ये सम्प्रदाय न केवल स्व स्व मत स्थापना में ही प्रवृत्त हुये किन्तु स्व मन्तव्यानुसार स्वराज्य विस्तार में भी सहायक होकर उसी के आश्रय से और अधिक सुरभित हुये। आज आर्य सस्कृति का बाह्यरूप तथा आन्तरिक रूप दोनों विकृत हैं। न ज्ञान है न क्रिया कलाप ही है। आजन्म ऋषि दयानन्द की घोर तपस्या इम भारतीयों को सुशिक्षित कर वैदिक ज्योति की ओर ले जाना चाहती थी। आर्य समाज की ७५ वर्ष की तपस्या यद्यपि ससार को प्राचीन ऋषि महर्षियों की सर्वस्व वेदवाणी की ओर आकर्षित कर सकी है किन्तु अभी श्रद्धानन्द के विराट् अमृत सागर में स्नान कराने में असमर्थ ही रही है। यदि आय समाजिक संस्थायें अपना पूरा कार्यकाल पश्चिमी शिक्षा के प्रचार में न लगाकर केवल भारतीयों की देव वाणी का प्रचार करने में ही पूरी शक्ति लगाती तो सचमुच आज के वातावरण में राजाभोज की सी संस्कृत भाषा की धारा प्रवाहित होती, पर दौर्भाग्य, बीनने ये रसीले मीठे आम, चुन लिये खट्टे बेर।

सचमुच वैदिक साहित्य का आदि स्रोत स्वाध्याय पर ही अवलम्बित है। बिना स्वाध्याय के ज्ञान के गम्भीर्य, तथा व्यवहारिक विषय की विषम परिस्थितियों का समाधान नहीं कर सकते। आज का जन साधारण अपनी भौतिक भावनाओं को पूर्ण करने में ही अपने अमूल्य मानव जन्म की सफलता समझ रहा है। उसे पैसा चाहिये, धोखेसे, बेइमानी से छलसे, कपट से। अस्वाध्यायी मनुष्य तो जीवन के बाह्याडम्बर पर ही अधिक मुग्ध है। न उसेकिसी धर्म की आवश्यकता, न ईश्वर और न किसी विशिष्ट सस्कृति की आवश्यकता है। किन्तु स्वाध्यायी मनुष्य में शान्ति, क्रांति, तथा तेजस्विताव गम्भीरता की अनुभूति निरन्तर बढ़ती है। सार्वतत्रिक या सर्वजनीन सर्वभूत हितकारी सुनहरे सिद्धाँतों के प्रति दृढ आस्था हो जाती है। अध्ययन बुद्धि की वृद्धि करता है। देवी शक्ति का वरदान दाता अध्ययन ही है। अस्वाध्याय शील समाज) जिसकी ग्रन्थ राशि, तथा जिसकी उदात्त वैदिक ज्योति वैदिक सस्कृति की परिचायिका हो, जिसमें ऋषि महर्षियों ने अपनी यावज्जीवन की अमूल्य कमाई (तपस्या) पुंजीभूत कर रख दी हो, जिन्होंने जीवन के विविध रूपों पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार कर शाश्शवत् सिद्धांतों की स्थापना की हो वह बिना उनके मन्थन किये ससार में कैसे जीवित रह सकता है।

आज वैदिक धर्म के अनुयायी या वैदिक ज्योति के पुजारी केवल नाम मात्र के लिये आर्य समाजी न बनकर यदि स्वाध्याय की ओर अधिक आकृष्ट हों तो पुनरपि आर्यसमाज में नवीन प्राण का सचार हो सकता है।

आर्यसमाज की स्थापना का आदिकाल घोर तपस्या तथा वैदिक सिद्धाँतो के प्रचार का था। उस समय समाज के तितिक्षुओं ने अधिक त्याग तपस्या तथा अपने स्वाध्याय की शक्ति से अनेक सम्प्रदायों के मुख बन्द किये। जिसका फल आज हम विभिन्न मतों के अनुयाइयों का आर्यसमाज की ओर आने मे दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं किन्तु वेदों को पढ़ने की ओर रूचि उत्पन्न करनेमे आर्य समाज अवश्य सफल हुआ है पर चमकते हुई सुवर्ण राशि के दिखाने मात्र मे उद्देश्य की पूर्ति न होगी, उसकी तो विशेषता गुरुता और मूल्य भी बताकर उसको बिना कीमत लिये पर को बाँटना होगा। आज भारत के क्षितिज पर घोर संक्रान्ति हो रही है। अवश्य ही इस असाम्प्रदायिक राज्य Secular State में सार्वजनीन सार्वभौम तथा सर्वहितकारी सिद्धाँन्तों की स्थापना होनी चाहिये। वह आर्य समाज के स्वाध्याय शील मनस्वी तथा मनीषी ही कर सकने हैं।

वेद के किसी भी मत्र में एक वचन से अथवा केवल एक जाति के लिये ही शुभ कामनायें या स्व समृद्धि के लिये अभिलाषाये नहीं प्रगट की गई हैं। इस विशाल तथा उदार भावना का प्रचार स्वाध्यायी ही कर सकने हैं।

इस स्वतत्र भारत मे आर्यसमाज को वैदिक सिद्धाँन्तों के प्रचार के लिये और अधिक अनुकूल वातावरण प्राप्त है, इसमे तो वैदिक सस्कृति का गौरवमय पूर्णरुप आ ही जाना चाहिये

आज का युग स्वाध्याय की गम्भीरता चाहता है। पर साम्प्रतिक आर्य समाजी अधिक तर स्वाध्याय शून्य हैं। ऐसा क्यों! आर्यसमाज तो धार्मिक जागृति के साथ साथ सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना का भी समन्वय करता है। हमारे पूर्वज महर्षियों ने न केवल धर्म के बाह्य रूप का विवेचन किया किन्तु उसके आंतरिक तत्व,तथा व्यवहार एव राजनैतिक तत्वों का भी सूक्ष्म विवेचन किया है। उनकी मान्यताओं, दिशाओ उनकी अत्यंत उपयोगी विचार धाराओं को रखकर वैदिक ज्योति का अधिक प्रकाश ससार को तभी दे सकते है जब प्रत्येक आर्य समाजो वेद का पढ़ना पढ़ाना अपना परम धर्म समझ कर इसकी कीमत समझेगा।

स्वाध्याय से विद्यावल, आत्मबल, मन का निग्रह समय की सार्थकता, तथा सबसे उत्कृष्ट फल आत्म ज्योति का प्रकाश मिलता है,। इसीसे केवल आर्य समाज ससार को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जा सकता है।

———

❋ निर्वाण दिवस ❋

आज उस निर्वाण की,
सहसा उभर फिर याद आई।
टूटते थे वज्र नभ से,
और भू ज्वाला उगलती
बन्धनों से बद्ध मानव,
मुक्ति रोती हाथ मलती
उस निशा की कालिमा में—
पथ दिखाने ज्योति धाई॥

वह चला भू गह्वरों को,
ढूंढता गिरि की गुफाएँ
मेटने युग का अँधेरा,
रौंदता पथ - विषमताएँ
वेद का सन्देश देकर—
विश्व में ज्वाला जगाई॥

उठ गये जिस ओर उसके,
सृष्टि सृष्टा शुभ्र लोचन
टूटते बंधन युगों के,
हो गये दुख ताप मोचन
मुक्त मानव ने धरा पर—
वेद की रस धार पाई॥

रात्रि का अवसान था,
सुन्दर प्रभा का प्रात आया
हन्त, हा! वह बाल रवि ही,
पथ दिखा कर दूर धाया
जल उठे शत शत धरा के—
दीप जिसको दे बिदाई॥

आज उस निर्वाण की,
सहसा उभर फिर याद आई॥

—शांति स्वरूप अग्निहोत्री

❋ महर्षि महिमा ❋

(ले० राजेन्द्र शर्मा साहित्याचार्य, साहित्यरत्न)

"ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञानन्"
ऋग्वेद ७ ३९.७.

"सर्वं हि महता महत" बड़ों की सभी बातें बड़ी होती हैं, इस लोकोक्ति के अनुसार जब पुण्यश्लोक महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम का स्मरण किया जाता है, उनके जीवन की स्थूल घटनाओं का उल्लेख किया जाता है, उनकी अलौकिक प्रतिभा पर दृष्टिपात किया जाता है, उनकी दूरदर्शिता पर ध्यान दिया जाता है, उनकी असाधारण विचक्षणता का अनुमान किया जाता है और उनकी लोकोत्तरता पर विचार किया जाता है, तो किसी भी सहृदय विचारक का हृदय महर्षि की सर्वतोमुखी महिमा को हृदयंगम कर वस्तुत गद्‌गद् होने लगता है। ६६ वर्ष हुये कि जब कार्तिकी अमावास्या अथवा दीपावली की अन्धन्तमा तमिस्रा के सन्धिकाल में महर्षि का एकान्ततः विनश्वर शरीर मर्त्यलोक से सदा के लिये तिरोहित हो गया, किन्तु उसमें निवास करने वाला सर्वथा अविनाशी ज्योतिष्मान आत्मा मृत्युपाशों से निश्चय ही विनिर्मुक्त हो गया। पाँचभौतिक शरीर के स्थान पर यशःशरीर में महर्षि का सनातन काल के लिये आवास हो गया। इस प्रकार प्रबुद्ध दीपक दयानन्द तो स्वयं ज्योति बनकर अन्य तमाविभूत मानवों को ज्योतिष्मान् बनाने की परम्परा सदा सर्वदा के लिये प्रस्थापित कर गया।

आर्यसमाज महर्षि दया आनन्द सरस्वती की स्थूलतम परिचायिका प्रतिमा है, अथवा उस आध्यात्मिक वैदिक आदर्श का प्रदर्शनात्मक स्थूल शरीर मात्र है कि जिसमें वेदरूपी प्राण की प्रतिष्ठा विधिवत् किये बिना निष्प्राण शव शरीर के तुल्य अपूजनीय ही नहीं अपितु अवाञ्छनीय है। क्योंकि उस हेय अवस्था में उस वैधानिक शरीर में महर्षिपन, दयाभाव, आनन्द स्वरूप, अथवा सारस्वत आर्षप्राण का आधान अन्य किसी प्रकार सम्भव ही नहीं हो सकता है, प्रस्तुत लेख के आरम्भ में अत्यन्त संक्षेप से ऋचांश के द्वारा महर्षि की महिमा का प्रचुर परिचय प्राप्त होता है। उक्त ऋचा का भाव यही है कि तम को भली भाँति पहचानते हुये ज्योति का वरण करो, इस श्रुतिवाक्य में आये हुए तम और ज्योति का क्या अर्थ है, यह जाने बिना वस्तुतः महर्षि के जीवन की महिमा का परिचय नहीं प्राप्त हो सकता है। इसलिये इन दोनों वैदिक शब्दों का रहस्यार्थ इस प्रसंग में दे देना आवश्यक ही प्रतीत होता है। "मृत्युर्वै तमः, पाप्मा वै तमः" (क्रमशः शत० १४.४.१.३२ शत० १२.९.२.८) अर्थात् तम मृत्यु और पाप को कहा जाता है, "ज्योतिरमृतम्, प्राणो वै ज्योतिः" (क्रमशः शत० १४.४.१.३२ तथा शत० ८.३ २.१४) अर्थात् ज्योति अमृत और प्राण को कहा जाता है। इन अर्थों के अतिरिक्त उक्त दोनों शब्दों के अन्य अनेक अर्थ भी होते हैं, किन्तु प्रसंगात प्रतिपाद्य विषय के अनुरूप अर्थ ही यहाँ ग्राह्य समझे गये हैं। श्रुति वाँक्यांश में आये हुये दोनों मुख्य शब्दों के प्रस्तुत अर्थों को दृष्टि में रखते हुये वाक्य का अर्थ होता है कि, "मृत्यु को भलीभाँति जानते हुये अमृत का वरण होना चाहिये अथवा पाप को भली भाँति जान कर ही प्राण का वरण होना चाहिये"। दूसरे शब्दों में दुरित को भली भाँति जान कर ही भद्र का वरण होना चाहिये। महर्षि ने अपने ग्रन्थों में स्थान २ पर "विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव" इस अपने प्रियतम मंगलाचरण मन्त्र का जान-बूझ कर प्रयोग किया प्रतीत होता है।

उपर्युक्त मूल सिद्धान्त को अपने विविध कार्यों का मानदण्ड बनाने वाले महर्षि ने सर्व प्रथम मिथ्या मतों, सकुञ्चित सम्प्रदायों, असद्व्यवहारों, अयथार्थ अनाचारों, पापप्रवृत्तियों, घातक रूढ़ियों, पतनोन्मुख सिद्धान्तवादों, विषाक्त विदेशीय सांस्कृतिक परम्पराओं, अमानुषिक लोकभावनाओं और अविद्यामूलक पारलौकिक आस्थाओं का प्रबलतम युक्ति प्रमाण के साथ—' अलौकिक बुद्धिमत्ता से निराकरण करने में कभी किसी प्रकार का संकोच नहीं किया। महर्षि के इस प्रकार से कठोर भाषा में खण्डन कार्य को अनेक आग्रही आलोचक असहिष्णुता, अनुचित और अनावश्यक कटुतादि शब्दों से अवाञ्छनीय कहते हैं। किन्तु ऐसे आलोचकों को यह सर्व सम्मत बात नितान्त विस्मृत हो जाती है कि सुचतुर सर्जन अपने रोगी के प्रति अत्यन्त दयाभाव रखते हुये भी उसके शरीर में भयकर व्रण को चीरने में कभी भी दयाभाव दिखा ही नहीं सकता है क्योंकि वास्तव में वह दया नहीं दयाभास मात्र ही है और उसका परिणाम रोगी की निश्चित मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

इसी प्रकार महर्षि ने भारतीय मानव समाज रूपी शरीर में ही नहीं अपितु समस्त संसार के मानव समाज रूपी शरीर में जिन अनेक भयकर और विषाक्त महा व्रणों का सच्चा निदान किया और सम्बद्ध रोगियों को सर्वथा व्याधि मुक्त करने के उद्देश्य से ही यदि कटुतम आलोचना भी की तो इसमें आलोचना के लिये कोई कारण नहीं प्रतीत हो सकता है। क्योंकि जिस युग में महर्षि का जन्म हुआ और जिस नितान्त दुर्दशाग्रस्त देश में उनको लोकोन्नति का अकेले ही महान कार्य करना पड़ा, उनकी अस्वाभाविक और अमानुषिक प्रवृत्तियों को प्रशमित करने के पहले किसी प्रकार की उन्नति का विचार सम्भव ही नहीं हो सकता था।

किन्तु महर्षि का मुख्य कार्य जर्जरित मिथ्या और विघातक विचारों और व्यवहारों का निराकरण ही नहीं था, अपितु उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिकता की प्रतिष्ठा करना ही उनका परम ध्येय था। महर्षि के समस्त व्याख्यानों, लेखों और ग्रन्थों में सर्वत्र वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, वैदिक दर्शन, वैदिक कर्मकाण्ड, वैदिक वर्णाश्रमधर्म पूर्वक व्यवहार और वैदिक आर्य परम्परा का सर्वप्रथम आर्यावर्त और उसके द्वारा समस्त संसार के विभिन्न देशों में प्रसार व प्रचार का प्रतिष्ठापन या इसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिये महर्षि ने अपने आयु के अन्त तक अदम्य प्रयास किया और विश्व कल्याण साधनार्थ ही आर्यसमाज की स्थापना की। किस प्रकार इह लोक और परलोक दोनो क्षेत्रों में प्रेय और श्रेय मार्गों का सफल पथिक बनना आवश्यक है, किस प्रकार अविद्यान्धकार से विनिर्मुक्त होकर मृत्यु पाशों से छूटकर ज्ञानालोक में विचरण करने की क्षमता अपने में उत्पन्न कर मानव अमृत का वस्तुतः भाजन बन सकता है, किस प्रकार पाप प्रवृत्तियों पर विजय पाने के लिये अपने जीवन में प्राणशक्ति को सुविकसित कर निर्भय बन कर 'प्रजापतेः प्रजा अभूम' इस श्रुति में दर्शाये परम पद के योग्य अपने जीवन को बनाया जा सकता है, यही महर्षि का प्रयोजन था। महर्षि ने दीपावली के परम पवित्र पर्व के दिन अपने शरीर रूपी दीपक का अन्त कर दिखलाया कि जैसे अमावास्या के सूची भेद्य अन्धकार में भी यदि बुद्धिमानी से व्यवहार किया जाय तो दीपक द्वारा उसी प्रकार आलोक में होने वाले सब प्रकार के कार्य कर सकते हैं कि जैसे सूर्य के प्रकाश में दिन के समय में होना सम्भव है। अपने समय की देशकालिक परिस्थितियों के गहन अन्धकार के होते हुए भी महर्षि ने जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों को वेदज्ञान ज्योति से जिस प्रकार आभासित करने के लिये अलौकिक अध्यवसाय किया, उस उपकार से उपकृत भारतीय मानवता महर्षि के ऋषि ऋण से चिर काल पर्यन्त ऋणी रहेगा। देशकालिक परिस्थिति में महान परिवर्तन हो जाने पर भी आज मानवता के उत्कर्ष साधनार्थ महर्षि की सूक्ष्म दृष्टि और उससे देखे गये तत्वों की उपयोगिता विशेष रूप से वाञ्छनीय प्रतीत होती है।

'पुरोहित'

(श्री सोमाहुति भार्गव)

वेद में इस सम्बन्ध में जो मन्त्र आते हैं। उनका तात्पर्य है कि यजमान व पुरोहित पूर्ण हों। शब्द हैं — 'उनके शस्त्र पैने हों, जिनका मैं पुरोहित हूँ। बिना शस्त्र के काटने का काम नहीं किया जा सकता। मोह भी एक राक्षस है, उसके दो बेटे काम और क्रोध भी महाबली हैं। लोभ अलग अपना जाल बिछाये फँसा आरता है, कर्तव्य-पालन में शिथिल कर देता है, और भी अनेकों भेद हैं। इन सब ऐसी सब सम्भावित बाधाओं को हटाते रहने के लिए महर्षि दयानन्द ने पुरोहित का योग्यता बताई है। जो वेद, वेदांग, उपांग का पंडित और सदाचारी हो। तभी यह हो सकेगा कि यजमान अपने शस्त्र सुसज्जित तथा शास्त्रज्ञ बन जीवन को सफल कर सके।

यहां हम विचार शील पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि पुरोहित सच्चा हित साधने की योग्यता के साथ सच्ची भावना वाला भी हो एवं यजमान उसे संकट काल में सामने समुपस्थित पाये। आचार्य व पुरोहित का समीपता उनके उल्लिखित ग्रन्थों व सदुपदेशों (पत्र रूप में) से भी सम्भव है। विचारों का सामञ्जस्य या उनकी समीपता ही इष्ट है। पास रहते हुए भी कोई, दूर और कल सम्बन्ध से दूर स्थित भी समीप, ज्ञान और विचार की दृष्टि से, देखने में आते हैं।

और भी सोचने के स्थल हैं — यजमान मानसिक स्थिति बिगड़ी हुई है। सत्व, रज, तम में से कोई मर्यादा को लांघ घट बढ़ जाता है सचक तात्विक धृति को दलदल में धंसा, रजो गुणी बुद्धि द्वारा यथार्थ निर्णय नहीं पा रहा है। भोजन सात्विक कर रहा है फिर भी कोई लक्ष्य या कार्य क्रम सही, सलामत (पूरा) न होने से घबराया बौखलाया पुरोहित की शरण में आता है। धर्म अधर्म, कर्तव्य अकर्तव्य, कर्म अकर्म, पाप पुण्य के निर्णय में असमर्थ है। शास्त्राध्ययन सहायता नहीं कर पाता। बहुत से पंडित शास्त्री भी भ्रम के भय कर भंवर से निकाल नहीं पाते। चक्कर में पड़े पड़े आत्महत्या करने तक के विचार आ आ टकराते हैं—ऐसी अवस्था में यदि हमारा पुरोहित दार्शनिक नहीं, ऋषि पतञ्जलि के समान योगाभ्यासी नहीं, व्याधिस्त्यान संशय प्रमाद आलस्य इत्यादि के लिए विरोधी भावना कराने में अनुभवी सिद्ध व सुलझा हुआ नहीं, और को विधि द्वारा प्रतिपक्ष निषेध में निष्णात नहीं, तो हम उसे पुरोहित पद का अधिकारी घोषित करने में संकोच से काम लेंगे। 'व्याधि न हो' 'व्याधि न हो' की पुनरावृत्ति के बजाये एक-तत्त्व का अभ्यास क्यों—यह समाधान कर्ता योगिराज व्यास, जिन सगे सम्बन्धियों के जिस अवस्था में मारने में पाप न होकर पुण्य है एवं न मारने, पीछे हटने में पाप—ऐसा समझाने वाला 'कृष्ण' हमें चाहिये। जन्म मरण के चक्र से किस सरल तम विधि से, (ज्ञान कर्म) उपासना किंवा निष्काम कर्म द्वारा तीनों को मिला) कोई साधारण व्यक्ति, छूटे—यह बतलाने, बचाने वाला दयानन्द सरीखा द्वारा क्या संसार का पुरोहित स्वीकार किया जा सकता है।

कल समस्या आ विराजी—यजमान रोगी होगया यज्ञ-कर्ता भक्त (पुरोहित का भी) है और चाहता है किसी धार्मिक अनुष्ठानसे शीघ्र ठीक हो जाय। पुरोहित भी सामने आ विराजता है किन्तु चिकित्सा सम्बन्धी (और वह भी घरेलू, धार्मिक, प्राकृतिक, चिकित्सा के) ज्ञान से शून्य है। हम उसे मन से पुरोहित कैसे स्वीकार कर सकेंगे।

जो संस्कर्ता (संस्कार कर्ता, पुरोहित) दो संस्कारों के बीच के काल-यापन का कार्यक्रम निश्चित करने एवं आशीर्वाद की सफलता की विधि निर्धारण में समर्थ नहीं अर्थात् क्रिया विधिज्ञ नहीं, हमें समझ नहीं पड़ता उसे किस प्रकार पुरोहित समझा जाय। इस दिशा में भी लोक वन्द्य पूज्य स्वामी दयानन्द महाराज ने अपना संस्कार विधि में वेदारम्भ काल व गृहस्थ आश्रम प्रकरण लिख कर हमारा ध्यान उक्त महत्त्व पूर्ण बातों की ओर आकृष्ट किया है।

प्राचीन काल के हनुमान, पतञ्जलि, धन्वन्तरि, और आधुनिक काल के दयानन्द को ध्यान से देखिये और वर्मन देशोरत्न महामुनि, ऐडल्फ़ बस्ट को गहरे घुस समझिये और फिर कहिए— पुरोहित, दार्शनिक, हकीम, एक ही व्यक्ति तो कैसा।

आगे के पत्रक किये 'पुरोहित' फिर से कैसे दीख पड़ें, यह अग्रिम लेख में दर्शाने का प्रयास करेंगे।

——०——

(पृष्ठ ५ का शेष)

इन शेर की खाल ओढ़ने वाले गीदड़ों से शासित होता रहा। लेकिन अगर वह इतिहास का विद्यार्थी होगा तो वह जानता होगा कि विदेशी हुकूमत में हर देश का यही हाल होता है और साथ ही उसे एक दूसरे देश की आजादी के बारे में लिखी गई एक महान कवि की पंक्तियां याद आएंगी—

वह उन दगाबाजों के आगे
हथकड़ियों से जकड़ी हुई
निर्वसना खड़ी थी !
उसके शरीर पर थे विश्वास
घात के घाव,
उन्होंने उसका साथ छोड़ दिया
था और कहते थे
हम न इस औरत को जानते हैं,
न इसका नाम जानते हैं !
और उन्होंने उन अत्याचारियों
का पल्ला पकड़ा,
और नकली मुकुट और सर—
कण्डों के राजदण्ड,
और उनके सिपाहियों की गन्दी
उतरन पहन कर वे शान से
चलने लगे।
उसके बाद आजादी ने अपने
घायल हाथों से
उनकी पुरानी टूटी हुई कसमों
को लेकर,
उनको और बहुत दर्द भरी
निगाह से देखा'
(लेकिन उसकी आंख में एक भी
आंसू नहीं था)
और उन्होंने क्या किया है !
यह देखने को वे दगाबाज
मर गये !

(संगम से)

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन [मथुरा] का महोत्सव

स्वागतकारिणी समिति का निर्माण :: श्री प्रधान जी सभा का आदेश

आर्य जनता को विदित हो कि गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन का महोत्सव सदैव की भाँति इस वर्ष भी २५ दिसम्बर से २८ दिसम्बर १९४९ तक गुरुकुल भूमि वृन्दावन में होगा। उत्सव का प्रबन्ध करने के लिए एक स्वागत कारिणी समिति का निर्माण किया गया है। आज्ञा की प्रतिलिपि निम्नप्रकार प्रकाशित की जाती है। कृपया स्वागत कारिणी में सदस्य बनकर महोत्सव को सफल बनाइये।

लिपि

श्री सभा प्रधान जी नमस्ते!

गुरुकुल महोत्सव निकट आ गया है। इस वर्ष मेरा ऐसा विचार है कि गुरुकुल महोत्सव को अधिक सफल बनाने के निमित्त एक स्वागत कारिणी सभा बनाली जावे जिसमे दो प्रकारके सदस्य नियुक्त किये जावें एक विशेष दूसरे साधारण। विशेष सदस्यों का शुल्क ५) रु० तथा साधारण सदस्यों का १) रु० रखा जावे।

उपरोक्त स्वागत कारिणी सभा महोत्सव का सम्पूर्ण प्रबन्ध करेगी और आय तथा व्यय का भी इसी स्वागत कारिणी का उत्तरदायित्व होगा। इस स्वागत कारिणी के मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष श्री कुँवर कर्णसिंह जी छौंकर को ही नियुक्त किया जावे। अपने पदों के अधिकार से श्री कुलपति जी, श्री प्रस्तोता जी तथा श्री मुख्याधिष्ठाता जी एव आचार्य श्री विश्वेश्वर जी को उप प्रधान नियुक्त किया जावे।

स्वागत कारिणी को अधिकार दिया जावे कि वह अपना प्रधान, तथा आवश्यकतानुसार अधिक उप प्रधान और अन्य अधिकारियों का निर्वाचन करें और सदस्य बनावें।

अधिकारियों के निर्वाचन की स्वीकृति सभा से लेना आवश्यक समझा जाय—स्वागतकारिणी आय और व्यय का पूर्ण विवरण नियमानुसार रखेगी और सभा में प्रस्तुत करेगी।

आशा है कि आप इसे स्वीकार करेंगे। भवदीय—

श्रीराम
मुख्याधिष्ठाता

स्वीकार है।
धुरेन्द्र शास्त्री
प्रधान
३०।९।१९४९

उपदेश विभाग की सूचना

आर्यप्रतिनिधि सभान्तर्गत वैतनिक समस्त उपदेशकों एव प्रचारकों को सूचित किया जाता है कि सभा के नारायण स्वामी भवन लखनऊ में ९ नवम्बर १९४९ दिन बुधवार को आवश्यक सम्मेलन श्री सभा प्रधान जी के सभापतित्व में होगा। कृपया उक्त तिथि को प्रातः काल सभा भवन मे अवश्य पधारने का कष्ट करें।

रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री आ० प्रति० उ० वि०

आवश्यक सूचना

प्राय: सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे इस प्रकार के पत्र आते रहते है कि आचार सम्बन्धी अमुक नियम को भग करने पर किसी विशेष सभासद को अन्य सभासद् बनने, बने रहने तथा वोट देने का अधिकार है वा नहीं। मेरी समझ में आर्य समाज के नियम, उप नियमों में इस प्रकार का स्पष्टी करण यथोचित कर दिया गया और यदि सभी आर्य भाई बहिन उन नियमो को दृष्टि में रक्खें तो कोई आपत्ति न हो। सदाचार के नियमों का पालन आर्यों का परम कर्त्तव्य है। परन्तु प्रश्न करने वालों को भी उदारता से काम लेना चाहिये। प्रायः देखा गया है कि हम उन्ही सदस्यों के विषय में आपत्ति उठाते है जिससे हमारा मनोमालिन्य हो जाता है। केवल सदाचार के प्रेम के कारण नहीं, इससे तो अन्त में आर्यसमाज के सगठन को हानि पहुँचती है। जहाँ प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन में सदाचार के नियमों का ध्यान रक्खें वहाँ दूसरे सज्जनों का भी कर्त्तव्य है कि वे दूसरों के चाल चलन पर उदारता से विचार करें और उनके आक्षेप मनोमालिन्य के भावों से प्रेरित हो कर न हों। जब हम किसी के आचार की आलोचना करते है तो उसका रूप और होता है और उसका प्रभाव भी अच्छा पडता है परन्तु यदि मनोमालिन्य होने के पश्चात् इस प्रकार के आक्षेप किये जाते है तो दल बन्दी हो जाती है। मैं आशा करता हूँ कि आर्य जनता और विशेषकर आर्य समाज के पदाधिकारी इस बात का विशेष ध्यान रक्खेंगे।

गगाप्रसाद, उपाध्याय एम ए.
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

——•——

सम्पादक के नाम पत्रः—

श्री सम्पादक जी सादर नमस्ते—

६ अक्तूबर १९४९ ई० के 'आर्यमित्र' में यह पढ़कर अत्यन्त ही प्रसन्नता हुई कि श्री आचार्य विश्वश्रवा जी, महर्षिकृत वेद भाष्यों की सुबोधिनी टीका टिप्पणी लिख रहे है, परन्तु साथ २ इतना पढकर खेद हुआ कि महर्षि कृतवेद भाष्यों में अशुद्धियां भी है!! श्री परिव्राजकाचार्य स्वामी विरजानन्दजी व्याकरणकेसूर्य से दयानन्द रूप चन्द्र ने ने जहाँ किरणरूप शिक्षा प्रकाश प्राप्त किया हो वहाँ पर अशुद्धि रूप कलङ्क दिखाई पडना दृष्टि भ्रम ही कहा जा सकता है संशोधक, अनुवादक और कम्पोजिटर की भूल हो सकती है, परन्तु सिद्धान्त, व्याकरण और प्राचीन ऋषि शैली की विरोधता रूप भूल महर्षिजी से कभी स्वप्न में भी नहीं हो सकती यह मेरा दृढ विश्वास है। बताया जाता है कि महर्षि जी ने 'पुरोहित" शब्द में 'क्त' प्रत्यय कर्तृवाचक माना है। वास्तव में निरुक्तानुसार कर्मवाचक होना चाहिये।

पुरोहितम्-पुर एन दधति निरुक्त २।१२॥—जिसको आगे रक्खें ऐसा होना चाहिये। यही अशुद्धि (?) महर्षि जी के जीवनकाल में भी निकाली गई थी। इसका उत्तर भी महर्षि जी ने उसी समय दे दिया था, जिससे सारा पौराणिक दल शांत हो गया था। 'क्त' प्रत्यय कर्तृवाचक भी होता है यथा—'डुधाञ्' धातु का 'दधातेर्हिः" पा० ७।४।४२ से 'हि' होकर 'आदि कर्मणि क्तः कर्तरि च" ३।४।७१। से कर्म और कर्ता दोनों अर्थों में 'क्त' प्रत्यय हुआ। जिसको कर्ता धारण करे वा जो अनादि काल से धारण कर रहा है, ये दोनो ही अर्थ हुए। कौमुदीकार कहते हैं—"आदिकर्मणीयः क्तः स कर्त्तरि स्यात् चाद्भावकर्मणो" ॥ इससे सिद्ध है कि तीन अर्थों में 'क्तः' होता है—कर्म कर्त्ता भाव में। इस पर तत्त्वबोधिनी टीका भी देखनी उचित है। अब रहा निरुक्त का प्रश्न 'जब पुरोहित' शब्द कर्मवाच्य भी है तो कर्मवाच्य अर्थ करने वाले निरुक्त वचन का प्रमाण देना कुछ असगत नहीं है।

शतपथ "अयवर अग्निः प्रजाश्च प्रजापतिश्च" शतपथ ९।१।२।८२। पर आगे लिखूंगा।

म० शिवशर्मा वानप्रस्थी
सम्भल —१८।१०।४९

——००——

आभार प्रदर्शन

मेरी पूज्या माताजी के देहावसान के समाचार को जानकर जिन, सुहृदों, मान्य महानुभावों, सम्बन्धिजनों, आर्यसमाजों, एव सभा सस्थाओं ने जो मेरे तथा मेरे पारिवारिक जनों के प्रति सम्वेदना प्रकट की है तथा दिवङ्गत आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिये परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की है उन सब हितैषिजनों का मैं अत्यन्त आभारी हूँ और हार्दिक कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूँ।

द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री
आनन्दपुरी मेरठ सिटी

मध्य भारत आर्यप्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा की २८।८।४९ की बैठक का निश्चय (सं० ४)

विज्ञापन का विषय स० ४, मध्य भारत आर्यप्रतिनिधि सभा विषयक श्री प० धर्मपाल जी विद्यालङ्कार की २०।७।४९ का रिपोर्ट जो उन्होंने इन्दौर जाकर तय्यार की थी, प्रस्तुत होकर पढ़ी गई। निश्चय हुआ कि मध्यभारत आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना यह सभा स्वीकार करती है और यह भी निश्चय करती है कि उक्त सभा का नियमित और वैधानिक रूप से सगठन हो जाने और सब प्रकार से नियमित आवेदन पत्र प्राप्त होने पर उक्त सभा के इस सभा में प्रवेश पर विचार किया जाय।

५) या अधिक धनदेने वालों की सूची अगस्त १९४९

१०) श्री चौ गुलाब सिंह जी शर्मा कमलपुर जिला मैनपुरी, १०) श्रीमती द्रौपदी देवी धर्मपत्नी चौ० गुलाबसिंह शर्मा ५) श्री सेठ रामस्वरूप जी गोटेवाले नयी देहली, ५) श्री म० इतवारीलाल जी चौरसिया मभोल फर्रुखाबाद, ८) श्री म० मंगल सेन जी हैदराबाद (गोला खोरी), ५) श्री म० मुरारी लाल जी, ओम् प्रकाश जी गँवा बदायूँ, २१) श्री म० चन्द्रभान सिंह जी मु० हरिहरपुर गोरखपुर, १०१) श्री ला० चन्द्रभान शम्भूदयाल जी सराय महाजन इटावा, १९३॥)॥ श्री सेठ रामरूप जी गोटे वाले नयी देहली, (भार्जादिया), ५१) श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, ११) श्री मन्त्री जी आर्यसमाज शिकोहाबाद, ५) श्री बा० सतीशचन्द्र जी वार्ष्णेय सिविल लाइंस देहली, १०) श्री म० बलदेवप्रसाद जी कटियार जलालाबाद, २५) श्री मन्त्री जी आर्यसमाज बरौठा हरदुआगंज, १०) श्री म० गडामल जी पूरनपुर ५१) श्री मामराज जी नई देहली, ५१) श्री बलवन्त राय जी खन्ना नई देहली। ११) श्री सरदारी लाल जी, ५) श्री मोहनलाल जी, ५) श्री नन्दलाल जी, १०१) श्री ला० बाबूराम जी, नई देहली, ११) श्री ला० गङ्गासहाय जी हलवाई देहली, ११) श्री गायत्रीदेवी जी म० विजयपाल जी अलीगढ़, ५) श्री डा० ओमप्रकाश जी गुप्ता नगीना बिजनौर, ५) श्री मैनेजर जगदीश मिल नगीना (बिजनौर) ५) श्री ला० ब्रजमोहन लाल जी रामपुर स्टेट, १०) श्री ला० मुरारीलाल जी १०) श्री व० एल० गुप्ता ५) आर्यसमाज रामपुर स्टेट ५) श्री म० राजेन्द्र चन्द्र जी, ५) श्री बा० आनन्द कुमार जी ५) श्री बा० युगुल किशोर जी ५) श्री प० प्रमवल्लभ जी, ५) श्री बा० वृजकिशोर जी, २५) श्री मन्त्री जी आर्यसमाज कर्णपुर वस्त, ६) श्रीमती विद्यावती जी सब्बरवाल कलकत्ता।

८५२॥)॥
६५॥≡) ५) से कम रकमका योग

९,८८)॥

वार्षिकोत्सवः—

—आर्यसमाज लखीमपुर खीरी का वार्षिक उत्सव ता० १५ से १८ दिसम्बर सन् १९४९ को होगा। पुस्तक विक्रेता महाशय सत्यार्थ प्रकाश की कापियां जरूर लावें जितनी कापी उत्सव में बिकने से रह जायेंगी उन्हें समाज खरीद लेगा।

—आर्यसमाज ललितपुरा काशी का वार्षिकोत्सव ता० १७, १८, १९, तथा २० नवम्बर को समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

—आर्यसमाज चौरीचौरा का वार्षिकोत्सव ता० २४, २५, २६ और २७ नवम्बर को होना निश्चित है। स्वामी अभेदानन्द जी महाराज अवश्य आने की कृपा करें।

—आर्यसमाज गंगोह जिला सहारनपुर का वार्षिकोत्सव ता० ७, ८, ९ नवम्बर सन् १९४९ ई० दिन सोमवार, मंगलवार, बुधवार को बड़े समारोह के साथ होने वाला है जिसमें बड़े बड़े विद्वान उपदेशक व भजनीक पधारेंगे।

—आर्यसमाज जमलाजुनपुर (कैसरगंज) जिला बहराइच का वार्षिकोत्सव २४, २५, २६ दिसम्बर सन् १९४९ ई० को होगा। कृपया स्वामी केवलानन्द जी, देव स्वामी जी व प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न, श्री मो० सुरेन्द्र जी शर्मा अवश्य पधारने की कृपा करें।

—आर्यसमाज मथुरा का वार्षिकोत्सव १२, १३, १४ नवम्बर को होगा।

—आर्य समाज दर्शनपुरवा कानपुर का वार्षिकोत्सव ता० १८ नवम्बर से २१ नवम्बर १९४९ तक होने जा रहा है।

—आर्यसमाज भिवानी का ३४ वां वार्षिकोत्सव ता० ४, ५, ६ नवम्बर सन १९४९ शुक्र शनि तथा रविवार को होना निश्चित हुआ है यह उत्सव बड़ा ही धूमधाम से होगा। इसके लिये अभी विशेष तय्यारियां आरम्भ हो चुकी हैं।

—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद की अन्तरङ्ग सभा का आवश्यक बैठक रविवार १४ नवम्बर को मध्यान्ह १२ बजे से आर्यसमाज नयाबांस देहली में होगी। कार्य अपूर्ण रहने की दशा में बैठक सोमवार दिनांक १५ नवम्बर को प्रातः ७ बजे से प्रारम्भ होगी। सदस्यों के निवास का प्रबन्ध भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से आर्य समाज, नया बांस में होगा। इस अधिवेशन में कई आवश्यक विषयों पर विचार किया जावेगा।

—उमेशचन्द्र विद्यार्थी
प्रधान मन्त्री

विविध समाचार

(१) — बढ़नी बाजार जिला बस्ती के आर्य समाज में गत माह सितम्बर में सार गर्भ वैदिक प्रचार होने के फलस्वरूप २ यवनों को शुद्ध करके आर्य जाति में प्रविष्ट किया गया।

(२)—आर्य समाज इकौना जिला बहराइच में २ मुसलमानों को शुद्ध किया गया। यह लोग पहले अहीर थे। इकौना आर्य समाज के प्रचार से प्रभावित होकर मत परिवर्तन करना स्वीकार किया।

—ता० १५-१०-४९ को रामगढ़ (नैनीताल) में पूज्य श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की द्वितीय वर्षी मनाई गई। प्रातःकाल यज्ञ तथा अपरान्ह में श्री ठा० दीवान सिंह सरपंच जी के सभापतित्व में सभा हुई।

—श्री दयानन्द अनाथालय आगरा में विद्या नाम की लड़की जिसकी उम्र ८ या ९ वर्ष की होगी रंग गोरा, गोलचेहरा स्वस्थ्य है, बेड़ियों के चंगुल में पुलिस द्वारा निकाली गई है, प्रविष्ट हुई है जिन सज्जनों की कन्या गुम हुई हो वह आकर अनाथालय आगरा में पहचान सकते हैं और पत्र व्यवहार करके मालूम कर सकते हैं।

—"राजगुरू श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री काठ मुरादाबाद) पधारे १९ अक्टूबर को स्थानीय डी० एस० ऐम० कालेज में उनका उपदेश हुआ।

—आर्यसमाज चन्दौसी का वार्षिकोत्सव ता० २६, २७, २८ व २९ अक्टूबर सन १९४९ का मनाया गया।

—श्री स्वामी सेवानन्द जी हस्तिनापुर निवासी के उद्योग से निम्न समाज स्थापित हुआ।

—म० हरिश्चन्द्र आर्योपदेशक नजीबाबाद निवासी के प्रयत्न से मनोहरपुर पो० सहारनपुर में ता० १४-१०-४९ को नवीन आर्यसमाज स्थापित हो गया। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री मामचन्द जी
उपप्रधान—श्री मांगीराम जी
मंत्री—म० हरिश्चन्द्र जी
उप मंत्री—म० हृदयराम जी
कोषाध्यक्ष—म० चेतराम जी
पुस्तकाध्यक्ष—म० बलायतीराम जी
निरीक्षक—म० कालूराम जी।

निर्वाचन

१—पावली बुर्ज में यज्ञ के पश्चात् समाज की स्थापना हुई मन्त्री ताराचन्द्र जी धीमान प्रधान हुए, ला० रामसिंहजी आर्यमित्र मंगाया गया—

२—खड़ौली जिला मेरठ मन्त्री प० नाथूराम जी प्रधान चौ० बशीधर जी सैनी आर्य मित्र मंगाना निश्चय हुआ।

३—गढ़ीना जिला मेरठ-प्रधान दाताराम जी मन्त्री प्रधान दलसिंह जी। सभा से प्रार्थना है कि कभी २ उपदेशक भेज कर इन नवीन समाजों की खबर लेती रहे। एक वृहद यज्ञ गणेशपुर में कराया गया।

—डिबाई आर्यसमाज का निर्वाचन २३ अक्टूबर को निम्नप्रकार हुआ है।

प्रधान—श्री सोहनलाल जी बजाज
मन्त्री—श्री बाबूलालजी दीक्षितशास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री केवलरामजी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मनोहरलाल जी जिन्दल।

महर्षि का जीवन चरित्र

अ. भा. आर्य समाज के प्रधान मंत्री की अपील के अनुसार उच्चकोटि के औषधि निर्माता एवं रजिस्टर्ड श्याम छाप औषधि वितरक यू. पी. केमीकल वर्क्स अलीगढ़ ने दीपावली महोत्सव पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र मुफ्त बाँटने का निश्चय किया है। अतैव जो सज्जन मंगाना चाहें वे एक आना डाक खर्च के साथ यू. पी. केमीकल वर्क्स सराय महीलाल अलीगढ़ को लिखें।

—आर्यसमाज शाहाबाद का वार्षिकोत्सव ता० १०-१०-४९ ई० से १३-१०-४९ को साथ समारोह के समाप्त हुआ उपस्थिति प्रतिदिन १५०० अनुमानतः रही। प. विद्यानन्द जी महोपदेशक व प. मानसिंह जी शर्मा प्रचारक सभा व ठा० कुरेन्द्र पाल सिंह प्रचारक के प्रभावशाली भजन व व्याख्यान हुए नवीन सभा सदों ने सहर्ष अपने प्रवेश पत्र भी भरे।

—आर्य समाज बादशाहनगर, लखनऊ के तत्वावधान में विजयादशमी पर्व १-१०-४९ को ७ बजे प्रातः समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर वेदों की बारह प्रतियाँ अजमेर से हाल में मंगाई गई हैं।

इस अवसर पर श्री महावीर प्रसाद जी ने एक हारमोनियम समाज को दान किया जिसके लिए उन्हें धन्यवाद है।

—आर्यसमाज जमालपुर अपने जन्मदाताओं में से श्री लक्ष्मीनारायण भारती जी के पुत्र रामाजी की मृत्यु हो जाने पर अत्यन्त दुःख प्रकट करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह रामा जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे और भारतीजी के साथ पूर्ण समवेदना प्रकट करता है।

—मन्त्री

गुरुकुल पत्रिका' का विशेषांक

गुरुकुल कांगड़ी से शीघ्र प्रकाशित हो रहा है जिस में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, आचार्य क्षितिमोहन सेन, डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी, श्री अमरनाथ झा (कुलपति - इलाहाबाद विश्वविद्यालय), श्री ऐन. वी गाडगिल, प० गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री सम्पूर्णानन्द वर्मा, डा० गोकुलचन्द नारंग, सन्त निहाल सिंह, श्री विधुशेखर भट्टाचार्य, आचार्य नरेन्द्रदेव इत्यादि के लेख होंगे। मूल्य १) रु०

—बदायूं निवासी श्री जानकीप्रसाद जी के इच्छानुसार आर्य विद्वानों द्वारा यजुर्वेद तथा सामवेद के मन्त्रों से आर्य समाज गोरखपुर के तत्वावधान में ता० १६ अक्टूबर से ता० २२ अक्टूबर तक यज्ञ हुआ। यज्ञ सामग्री १।) सवा मन रक्खी गई थी।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज सागर की यह विशेष साधारण सभा श्री पण्डित रामचन्द्र जी विद्यारत्न, महोपदेशक श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ तथा भूतपूर्व आचार्य गुरुकुल होशंगाबाद के अकस्मात देहावसान हो जाने पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि श्री पंडित जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

(अ) आर्यसमाज जबलपुर श्रीयुत पंडित रामचन्द्रजी विद्यारत्न, उपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा, मध्यप्रान्त और विदर्भ के देहावसान पर और इस समाज के उत्साही और प्रमुख कार्य कर्त्ता श्रीयुत रामलाल जी वासुदेव की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके शोक सतप्त परिवारों को ये वियोग सहने का बल दें तथा दिवगत आत्मा को शांति दे।

आचार्य विश्वश्रवाजी का प्रस्ताव

यह जान कर प्रसन्नता हुई कि आचार्य विश्वश्रवा जी ऋषि दयानन्द कृत वेद भाष्य को जनता के लिये अधिक लाभदायक और सुगम बनाने के लिये भाषा चतुष्टय की योजना सोच रहे हैं। मैं बहुत सी बातों में आचार्य जी से सहमत हूं वर्तमान भाष्यों को आदर की दृष्टि से देखते हुये और उनकी आलोचना को धृष्टता न करते हुये मैं कह सकता हूँ कि जो आपत्तियां आचार्य जी ने अपने लेख में प्रदर्शित की हैं वे काल्पनिक नहीं अपितु वास्तविक हैं, परन्तु रोग का विस्तृत व्याख्यान रोग का न तो निदान है न चिकित्सा। जो वह बना कर जनता को देना चाहते हैं वह बड़ा रोचक है। मेरे तो मुंह में अभी से पानी भर आया परन्तु वास्तविक स्वाद तो तभी आवेगा जब थाली सामने आवेगी। अतः मेरा सुझाव यह है कि वे पहले दो चार सूक्त नमूने के तौर पर निकालें जिससे जनता का कुछ स्वाद आने लगे और मुझ जैसे चलते मेहमान को दूसरे जन्म की प्रतीक्षा न करनी पड़े। यदि वह उन सूक्तों को पहले ले सकें। जो अत्यन्त आपत्तिजनक प्रतीत होते हैं तो भी अच्छा है। परन्तु यदि ऐसा करना सुविधाजनक न हो समस्त वेद में से पचास चालीस उत्तम सूक्त छांटे जा सकते हैं जिनका पूर्व परिज्ञान लोगों में वेदों के लिये रुचि पैदा कर सके। मन्त्रों को अलग अलग न लेकर सूक्तों को इकट्ठा करके लेना चाहिये जिससे पूर्वापर का सम्बन्ध ज्ञात हो सके।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

(पृष्ठ ४ का शेष)

विद्वानों का परिषदों को संगठित कर ऐहिक एवं पारमार्थिक मानव कल्याण साधनार्थ कोई व्यावहारिक योजनाएँ तैयार कर उनको देश वासियों में प्रचारित किया हो, वैदिक कर्मकाण्ड को देश में प्रचारित करने के लिये कोई महायज्ञ विधिवत् सम्पन्न किये हों अथवा अन्य कोई लोकहित साधक आयोजन किये हों।

इस वर्ष हरद्वार में कुम्भ मार्ग हो रहा है। उस सुअवसर पर आर्यसमाज के प्रमुख नेताओं को ऐसे आयोजन सुसंगठितरूप में करना चाहिये कि जिनका धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव लोककल्याण के लिये उपादेय हो। इस महान् कार्य में संकुचित विचारों को स्थान देते हुए आर्यसमाज और लोकहित से सहानुभूति रखनेवाले समस्त प्रकार के लोगों, संस्थाओं और विचारकों का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। प्रसन्नता की बात है कि आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त अवसरोचित प्रचार योजना की तैयारी कर रही है।

आवश्यकता

आर्य समाज मिलक [रामपुर] के अन्तर्गत आर्य समाज पाठशाला व आर्य समाज कन्या पाठशाला दोनों के लिये एक अध्यापक और एक अध्यापिका की आवश्यकता है। अच्छा हो कि अध्यापक और अध्यापिका दोनों पति पत्नी हों। रहने के लिये मकान समाज की ओर से मिलेगा। उनकी योग्यता अध्यापक शास्त्री या मध्यमा और अध्यापिका कम से कम मिडिल की योग्यता रखती हो। वेतन कम से कम जो चाहते हो, लिखें। समाज की पुरोहिताई भी उन्हें करनी होगी। आय अच्छी रहेगी।

पत्र व्यवहार का पता—
श्री काशीराम जी मन्त्री, आर्य्यसमाज मिलक (रामपुर स्टेट) यू० पी०।

११ अक्टूबर १९४९ को राज्याधिकारी के रूप में प० नेहरू का वाशिंगटन के हवाई अड्डे पर प्रेसिडेन्ट ट्रूमैन आदि अधिकारियों के स्वागत के बाद प्रेसीडेन्ट के निवास स्थान पर जाना।

—मदुरा, २९ अक्तूबर। आज शाम को श्री कामराज नादर की अध्यक्षता में होने वाली तामिलनाड कांग्रेस कमेटी की बैठक ने आन्ध्र प्रान्त की स्थापना के सम्बन्ध में तीन व्यक्तियों की समिति के निर्णय को मंजूर कर लिया। किन्तु इस बात को स्पष्ट कर दिया कि आन्ध्र वासियों को मद्रास का दावा छोड़ देना पड़ेगा। आन्ध्रतामिलनाड के सीमावर्ती गांवों के बारे में बाद में फैसला होने का सुझाव भी मान लिया गया।

विधान के प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद की तैयारी

नई दिल्ली, २९ अक्तूबर। आज विधान परिषद के अध्यक्ष द्वारा आयोजित भाषा सम्मेलन में तय किया गया कि [illegible] के तन्त्र और शासन सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों का ऐसा कोष तैयार किया जाय जो अधिकतर प्रान्तीय भाषाओं को मान्य हो।

कार्य सञ्चालन के कुछ मुख्य सिद्धान्त तय करने के बाद सम्मेलन विधान परिषद् की अनुवाद विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रस्तुत किये पारिभाषिक शब्दों की जांच करने वाली समिति के रूप में परिवर्तित हो गया। यह जांच पूरी होने तक सम्मेलन समिति के ही रूप में रहेगा।

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रसपान्डेन्ट मुसरअइलिहा मुनदर्जे समात अपील न्यायालय श्री मान अडीशनल कलेक्टर रेट लखनऊ

लाला गंगाप्रसाद पुत्र लाला मुन्नूसाह जाति वैश्य निवासी टिकैतगंज परगना कुरसी तहसील फतेहपुर जिला बाराबंकी —अपीलान्ट

बनाम

उमाप्रसाद इत्यादि — रिसपान्डेन्टस

अपील बनाराजी हुक्म अफसर नीलाम साहब बहादुर लखनऊ मुकाम लखनऊ बतारीख २४ अगस्त स १९४८ ई०

बनाम —

१ कृष्णकुमार सिंह नाबालिग वल्द गंगा बख्श सिंह बविलायत मुसम्मात बड़की मादर खुद
२. मुसम्मात बड़की बेवा गंगाबख्शसिंह
३ शिवचरन सिंह वल्द ज्वाला बख्शसिंह

जाति ठाकुर निवासी रेवामऊ परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

४. गोपाल कृष्ण, ५ रामविलास, ६. दयाशंकर — पिसरान पुत्तूलाल
७ मुसम्मात बड़की बेवा पुत्तूलाल

जाति ब्राह्मण निवासी कुम्हरावा परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

मुतला हो कि अपील बनाराजी हुक्म अफसर नीलाम साहब बहादुर लखनऊ इस मुकदमा में मुसम्मी लाला गंगाप्रसाद अपीलान्ट ने पेश की। और इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत ने तारीख ९ (नौ) नवम्बर स० १९४९ वास्ते समात इस अपील की मुकर्र की

अगर आप या आप का वकील और कोई शख्स जो कानूनन आप की तरफ से अपने हरजा में जवाब व सवाल करने का मजाज हो हाजिर न आये। तो उसकी समात और और तजवीज आप की गैरहाजिरी में समात एक तरफा की जायेगी।

आज बतारीख ५ माह सितम्बर स० १९४९ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुहर अदालत — दस्तखत
अडीशनल, कलक्टर लखनऊ

केन्द्रीय सचिवों द्वारा अपने वेतन में कटौती का निर्णय

नयी दिल्ली, ८ नवम्बर। ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार के सचिवों ने एक सभा में सर्वसम्मति से तय किया कि वे अपने वेतनों में कटौती करने के लिये स्वयं प्रस्ताव पेश करेंगे। एक योजना के अनुसार उन्होंने प्रस्ताव किया है कि उनियादी वेतनों में दो हजार से ऊपर रकम में २५ प्रतिशत कटौती कर दी जाय।

इस ... मिन सचिवों को चार हजार ... मिलता है उनके ... कट जायेंगे स्पष्टतः इसके साथ ही आय कर ... होगी। इसलिये वास्तविक बचत तो अधिक न होगी लेकिन इसका यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा कि उच्चाधिकारियों को भी देश की आर्थिक दुरवस्था का ख्याल है।

इस बैठक में अनिवार्य बचत योजना की जगह कार्यान्वित होने के लिए कर्मचारियों के लिए अधिक प्राविडेंट फंड की योजना भी बनायी गयी। इसके अनुसार २५०) से ५००) तक पाने वालों के लिए एक आना रुपया ५००) से १००० तक के लिए डेढ़ आना रुपया १०००) से २०००) तक के लिए दो आना रुपया, २०००) से ३०००) से तक ढाई आना रुपया और ३०००) से ऊपर तीन आना रुपया के हिसाब से प्राविडेंट फंड काटा जायगा।

उपर्युक्त दोनों योजनाएँ ३१ मार्च १९५२ तक के लिए हैं।

दिवाली और बुद्धू का दिवाला

... ऊ, सोमवार ... के ... हिन्दू ... का ज्ञान का एक और उदाहरण मिला है।

दिवाली के दिन एक रेडियो स्टेशन से फिल्मी गीत का रिकार्ड बजा "घर घर में दिवाली है मेरे घर में अंधेरा"। रेडियो के उच्च अफसर वहाँ पहुँचे और पूछा कि ... बहुत पूछ ताछ के बाद भोले-भाले इन्चार्ज अफसर ने जवाब दिया—"आज दिवाली है न",

जमींदारी उन्मूलन कोष में एक करोड़ पैंसठ लाख एकत्र

लखनऊ, सोमवार। प्रान्त के सवा दो लाख किसानों ने जमींदारी उन्मूलन कोष में १,६५,००,०००) जमा कर के भूमिधारी अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। मुजफ्फरनगर के किसानों ने १८,५०,०००) जमा करके और सब जिलों से बाजी मार ली है।

डाक-संघ की ७५ वीं जयन्ती—अन्तर्राष्ट्रीय डाक—संघ का केन्द्र स्वीजरलैंड में बर्न पर है। यह राष्ट्र संघ का विशिष्ट अंग है। यहाँ ४ अंग्रेजी टिकटों के नमूने हैं।

सरकारी डाक के लिये अशोक स्तम्भ अंकित नये टिकट

नयी दिल्ली, ७ नवम्बर। जनवरी १९५० से डाक के नये सरकारी टिकटों का प्रयोग किया जायगा इन टिकटों पर राज्य चिन्ह अशोक स्तम्भ अंकित है जिसके चारों ओर ... का किनारा बना हुआ है ... ऊपर मोटे अक्षरों में सर्विस लिखा हुआ है और उसके ठीक नीचे छोटे सफेद अक्षरों में पोस्टेज लिखा है, टिकटों का मूल्य अंग्रेजी और हिन्दी में दिया गया है।

ये टिकट ? पैसे से लेकर १० रु० तक के भिन्न भिन्न मूल्यों के और कई रंगों के हैं। ये इंडिया सिक्यूरिटी प्रेस, नासिक में लेटर प्रेस द्वारा छापे गये हैं और राजा जार्ज के वर्तमान सर्विस टिकटों के स्थान पर प्रयुक्त होंगे।

गोडसे की अन्तिम इच्छा

नयी दिल्ली, ७ नवम्बर। नाथूराम विनायक गोडसे ने अम्बाला जेल से अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखा है जिसमें उसने अपने भाई से कहा है कि वह गवर्नर जनरल से प्रार्थना करे कि उसके मृत शरीर को या तो किसी मेडिकल कालेज के उपयोगार्थ दे दिया जाय अथवा वह हिन्दू प्रथा के अनुसार जला दिया जाय। अपने पत्र में उसने यह कहा है क्योंकि उसके शरीर के अतिरिक्त उसके पास कोई निजी सम्पत्ति नहीं है जिसके विषय में वह वसीयतनामा लिखे, अतः इच्छा पूर्ति होनी चाहिये।

प्रांतीय असेम्बली का बजट अधिवेशन २७ फरवरी को शुरू होगा

लखनऊ, सोमवार। पता चला है कि असेम्बली का बजट अधिवेशन आगामी २७ फरवरी से शुरू होगा।

असेम्बली में बजट पर आम बहस ६ से ९ मार्च तक होगी और कौंसिल में ८ से ११ तक।

असेम्बली में अलग अलग अनुदानों पर १३ से १८ तक, २० से २५ तक और २७ से २८ मार्च तक विचार होगा और मत लिये जायेंगे।

बम्बई में धर्मच्युत करना अवैध कानून पर गवर्नर की स्वीकृति

बम्बई, ८ नवम्बर ... बम्बई के गवर्नर ने उस कानून पर अपनी स्वीकृति दे दी जिसके अनुसार प्रान्त में धर्मच्युत करना गैर कानूनी घोषित किया गया है। इस बिल को गत वर्ष प्रांतीय धारा सभा ने पास किया था। अब धार्मिक संस्थायें अपने किसी सदस्य को धर्मच्युत न कर सकेंगी।

भारत ने पाकिस्तानी गेहूँ नहीं खरीदा

कराची ६ नवम्बर। एक अधिकृत सूत्र से ज्ञात हुआ है कि भारत ने पाकिस्तान के १,७५,००० टन गेहूँ भेजने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। उक्त सूत्र का कहना है कि पाकिस्तान के पास अपनी जरूरत से पाँच लाख टन अधिक गेहूँ है और उपयुक्त मात्रा वह भारत से किये गये वस्तु विनिमय के वादों को पूरा करने के लिए दे रहा था। यह भी सम्भावना थी कि पाकिस्तान इसके अधिक मात्रा में गेहूँ भेजने को तैयार हो जाता।

आवश्यक सूचना

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त की अन्तरंग सभा ने जो निश्चय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री पूर्व महोपदेशकों के सम्बन्ध में ता० ३०।६ १९४९ के नि० सं० ३५ के द्वारा किया था वह आर्यमित्र ता० ६।१०।४९ के पृष्ठ में २ पर प्रकाशित किया गया। उक्त निश्चय के एक अंश में यह भी अंकित किया गया था कि "आर्य समाजों को सूचित कर दिया जाय कि सभा, समाजों के उत्सवों आदि में उक्त उपदेशकों का निमन्त्रण किया जाना अनुचित समझती है"

उपर्युक्त स्पष्ट प्रतिबन्ध विषयक निश्चय के होते हुये भी ज्ञात हुआ है कि कतिपय समाजों में अधिकारियों ने उक्त उपदेशकों को अपने उत्सवों पर बुलाया और भाषण कराये हैं। सभा की दृष्टि में समाजों का यह व्यवहार अनुशासन की दृष्टि से जब तक प्रतिबन्ध रहे, उचित नहीं है। पुनः इस सूचना पत्र द्वारा आर्यसमाज के अधिकारियों का ध्यान सभा के निश्चय की ओर आकृष्ट किया जाता है कि उसके अनुसार ही कार्यवाही करें।

रामदत्त शुक्ल
सभामंत्री

शीघ्र आवश्यकता है

एक स्वस्थ सुन्दर प्रतिष्ठित पढ़े लिखे स्वस्थ आर्य विचार के २२ वर्षीय नवयुवक के लिये (जिनकी वार्षिक आय कृषि फार्म से २०००) है और जो जाति से सूर्यवंशी ... के चौहान ठाकुर है) एक सुशील सुंदर गृह कार्य में दक्ष कन्या की आवश्यकता है। सम्बन्ध दहेज प्रथा के विरुद्ध आर्य परिवार में ही सकेगा है पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें।

मास्टर ...सिंह
स्कूल पूरनपुर पो० रायपुर
जि०- नैनीताल (यू० पी०)

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्य्यमित्र

वृत्रस्य त्वा श्वसथात् ईषमाणा.
विश्वे देवा अजहुः ये सखायः ।
मरुद्भि इन्द्र सख्यं ते अस्तु,
अथेमा विश्व पृतना जयासि ॥
ऋ० ८. ९५. ७ ॥

हे आत्मन् सब देव, दिव्य भाव जो कि तेरे साथी बनते हैं पापासुर के साँस से फुँकार से डर कर भाग जाते हुए तुझे छोड़ देते हैं हे इन्द्र ! तेरी मैत्री प्राणों के साथ यदि होती है तो तू पाप की सब से बड़ी सेना को जीत लेता है ।

ता० १० नवम्बर १९४९ ई०

मध्य वर्ग का कष्ट

कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी श्री शंकर राव देव ने देश के मध्यवर्ग जनता की बिगड़ती दयनीय आर्थिक स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया है उससे देश के सभी विवेकशील महानुभाव सहमत हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि देश के मध्यवर्ग की जनता के कष्ट को दूर करने का क्या व्यावहारिक उपाय किया जा रहा है ?

मध्यवर्ग की जनता के कष्ट को दूर करने के लिये श्री शङ्करराव देव ने कर्मचारियों के वेतनवृद्धि द्वारा मुद्रा-स्फीति को दूर करना तथा उत्पादन और क्रयशक्ति में सतुलन करना आदि अनेक उपाय बतलाये हैं। देश का आर्थिक सतुलन कुछ वर्षों से अस्त व्यस्त हो चुका है।

कर्मचारियों की अधिक वेतन वृद्धि का प्रश्न अधिक समस्या पूर्ण नहीं है क्योंकि कर्मचारियों को वेतन वृद्धि तो केवल उनकी कार्यक्षमता की आधिकाधिक उत्कृष्टता पर ही, अन्ततोगत्वा, निर्धारित करनी पड़ेगी । इसी प्रकार उनके अन्य निर्देश भी बहुत कुछ सत्य तो हैं, परन्तु व्यवहार्य कम और कठोर अधिक हैं।

मध्यवर्ग के परिवारों में, जैसा कि बतलाया गया है, अधिकतर व्यक्ति दो एक सदस्यों की कमाई पर ही आश्रित रहते हैं। जब आर्थिक कठिनाइयों के कारण कार्यकर्त्ताओं में कमी की जाती है, तो स्वभावतः ही उसका प्रभाव एक व्यक्ति तक सीमित न रहकर बहुत व्यापक होता है।

कहा यह गया है कि जनता को केवल माग ही नहीं करना चाहिये अपितु उन्हें उपाय भी ऐसे बतलाना चाहिये जिससे उनकी माँगें पूरी की जा सकें। यह भी उपदेश दिया गया है कि मध्य वर्ग को वस्तुत अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये । इस उद्देश्य पूर्ति के लिये उन्हें सहयोगी कार्यों की योजनायें निर्माण करना चाहिये और श्रम से न घबराकर अचानक ही उत्पन्न कठिनाइयों में से अपने पैर पर खड़े होने का मार्ग ढूँढ निकालना चाहिये ।

भारत के मध्यवर्ग की जनता के वर्तमान कष्टों का कारण युद्ध और युद्ध के अनन्तर की परिस्थितियां यद्यपि हैं परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि इन परिस्थितियों के उत्पन्न करने और उन्हें अधिक खराब करने में देश नेताओं की अनुभव शून्यता तथा काल्पनिक योजनाओं को शीघ्र २ प्रचलित करना भी मुख्य कारण है । इन विचित्र २ प्रतिदिन नवीन २ करोड़ों योजनाओं के कारण देश में अनिश्चय तथा अस्थिरता उत्पन्न हो गई है ।

मध्य वर्गीय जनता, जो कि वस्तुत देश के दृढ़ मेरुदण्ड के समान होती है, अपने पारिवारिक व सामाजिक जीवनों में इतनी शीघ्रता से परिवर्तन नहीं कर सकती जितना कि देश के नेता चाहते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि देश के अनेक नेता जिन सामाजिक परिवर्तनों को करना चाहते हैं, अथवा लादना चाहते हैं वे अवश्य ही कल्याण कारक होंगे ।

देश की यह समस्या वस्तुतः बेकारी की समस्या है, जनता के श्रम से बचने अथवा आलस्य की समस्या नहीं। इस समस्या को हल करने का अधिक उत्तरदायित्व देशनायकों पर ही है, जिसे उचित ढग से निभाने का उन्हें यत्न करना चाहिये ।

— ० —

दो अग्नियों के बीच में

प्रधान मन्त्री पं० नेहरू जी के गत ५ अक्टूबर की घोषणा से 'सत्य अहिंसा' का एक नवीन परीक्षण प्रारम्भ हुआ था जिसके परीक्षण की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है। एक मास बीत जाने पर भी इस परीक्षण का अभीतक कुछ फल नहीं निकला। उक्त वक्तव्य द्वारा प० नेहरू जी ने व्यवसायियों को परामर्श किया था कि वे कानूनी अथवा गैरकानूनी ढग से कमाये गये मुनाफे का सरकार को विवरण दे जिससे राज्य उनकी आय का अनुमान कर सके और इन्कमटैक्स लगा सके ।

अन्य देशों के समान ही भारत में 'ब्लैकमार्केट' का बाजार गर्म है। भेद केवल न्यूनाधिक्य का है । ४ वर्ष पूर्व, सन् ४५ में प० नेहरू जी ने एक सभा में घोषणा की थी कि 'ब्लैक मार्केट' करने वालों को समीप के लालटैन के खम्भोंपर ही फांसीपर लटका दिया जायगा। यह धमकी भरी घोषणा भी देश की आर्थिक स्थिति पर कुछ उत्तम प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकी। अब देश में स्वदेशीय राज्य हो गया है और देश का शासन प० नेहरू जी के हाथ में है— परन्तु ज्ञात होता है कि वे इस क्षेत्र में अपने आपको असमर्थ अनुमान करते हैं। यह बात भी किसी से अप्रकट नहीं है कि देश की आर्थिक दशा दिन प्रति दिन अनर्थजनक होती जा रही है। इस स्वर्णभूमि भारत का खून चूसने वाला अंग्रेज भी जब १५ अगस्त सन् ४७ ई० को भारत छोड़कर भाग गया था, भारत के कोष में इक्कीस हजार दो सौ तीस (२११२३०) करोड़ के लगभग रोकड़ बाकी थी। स्वराज्य के इन दो वर्षों में न केवल वह धनराशी ही समाप्त हो गई है अपितु ३१ मार्च सन् ५० को समाप्त होनेवाले वर्ष में गत २ वर्षों में नवीन २ टैक्सों की अतिवृद्धि से आय के अनेक गुणा बढ़ जाने पर भी, ४५ करोड़ रुपये का घाटा होने जा रहा है।

इस आर्थिक सकट के लिये स्वदेशी भारतीय सरकार की ओर से इस स्थिति के औचित्य का चाहे कितना ही उल्लेख क्यों न किया जावे परन्तु विवेकशील भारतीयों को इससे किसी प्रकार का सन्तोष नहीं हो सकता।

गत ६ अक्टूबर को भारतीय पार्लियामैन्ट में रुपये के अवमूल्यन पर विचार के समय अर्थमन्त्री डा० जान मथाई ने वक्तव्य दिया था कि देश की आर्थिक समस्या पर विचार करने से प्रतीत होता है कि इस आर्थिक गड़बड़ी का मूल कारण इतना अधिक आर्थिक नहीं है जितना कि 'शासनप्रबन्ध सम्बन्धी समस्या'। वस्तुत हमारी 'शासन प्रबन्ध व्यवस्था' नष्ट भ्रष्ट हो रही है और वह अनन्त होती हुई इस अन्तिम सीमा तक विभाजित होती चली गई है कि जहाँ देश की जनता से सम्पर्क रहता है। सब की मुख्य आवश्यकता बौद्धिक विश्लेषण तथा बड़ी २ नवीन योजनायें निर्माण करने की अपेक्षा उत्तम ईमानदार शासन व्यवस्था का सञ्चालन करना है।"

'आर्थिक सकट' तो था ही, अब यह दूसरा 'शासन व्यवस्था सकट' उपस्थित हुआ है। प्रथम सकट से छुटकारा पाने के लिये भारत सरकार ने (Incomtax evation Investigation Commission) इन्कमटैक्स जाच कमीशन की नियुक्ति की थी। इस कमीशन का परिणाम सरदार पटेल के मद्रास में दिये वक्तव्य के अनुसार यह हुआ कि कमीशन द्वारा खोज की गई आय कमीशन के अपने व्यय के लिये भी पर्याप्त सिद्ध नहीं हुई।

अब ब्लैकमार्केट करने वालों से क्षमा के घोषणापत्र द्वारा गड़े हुये धन को ऊपर लाकर व्यावसायिक कार्यों में लगाये जाने की व्यर्थ आशा की गई थी। इस उद्देश्य सिद्धि का एक अन्य उपाय, राष्ट्र के लिये, धन को बलपूर्वक ले लेना भी है। यह उपाय न केवल अत्यन्त साहस का ही है अपितु अंतिम भी है। इस उपाय को स्वीकार करना राज्य की शक्ति से बाहर की बात प्रतीत होती है।

दूसरा उपाय उत्पादक कार्यों में धन लगाने के लिये अनुकूल वातावरण, विश्वास और स्थायित्व की भावना का उत्पन्न करना है। विचारणीय यह है कि इन अवस्थाओं के उत्पन्न न होने में हमारी राष्ट्रीय सरकार का उत्तरदायित्व कितना है ? स्थिति यह है कि गवर्नमैंट को स्वय ही यह ज्ञात नहीं है कि कौन २ महानुभाव धन को व्यवसायों में लगा सकते हैं।

देश में धन के समान वितरण की योजनाओं का आन्दोलन, राष्ट्रीय सरकार द्वारा किया जा रहा है। परिणाम यह

होगा कि वह वर्ग जो धन को बचाकर व्यवसायों में लगाने का अभ्यस्त है, भविष्य में 'धनसंग्रह' कर धन को व्यवसायों मे लगाने के कार्य का परित्याग कर देगा। निर्धन और धनिक, दोनों हो व्यवसायों में धन लगाने के लिये लाभ और सुरक्षा की गारंटी चाहते हैं। राष्ट्रीयकरण के वर्तमान ढंग के आदोलन ने व्यवसायों मे धन लगाने को भावना को नष्ट कर दिया है। पूर्वकृत व्यवहार व उदाहरणों से न्याय्य मूल्य व मुख्य मुआविजा दिये जाने के आश्वासन पर विश्वास किये जाने की कोई सम्भावना नहीं है।

इन अवस्थाओं में धमकी अथवा खुशामद स्वदेशीय सरकार के प्रति भी विश्वास व स्थापित भाव, व्यावसायियों मे, उत्पन्न करने मे समर्थ नहीं है। देश एक ओर समाजवाद व साम्यवाद तथा दूसरी ओर केवल आर्थिक लाभ शीघ्राति शीघ्र प्राप्त करने की दावाग्नियों में झुलस रहा है। अत प्रतिदिन को उत्तेजनात्मक घोषणाओं तथा व्यर्थ ही में उलट पुलट करनेवाली बहुव्ययी नवीन २ योजनाओं से विरत रह कर शासन प्रबन्ध को क्षमता तथा जनता के हृदयों में विश्वास उत्पन्न करने का यत्न करना चाहिये—जिसका अभी कोई लक्षण प्रतीत नहीं होता है।

———

'ननकाना साहब'

सिखों के प्रथम गुरु श्री नानक जी का पवित्र जन्मस्थान ननकाना साहब' जो कि सिखों का 'मक्का' है लाहौर से दूर पाकिस्तान में चला गया है। प्रतिवर्ष गुरु नानक के जन्मदिवस के अवसर पर सिखों की भक्तिपूर्ण भावना का ननकाना साहब की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। इस अवसर पर लाखों सिख ननकाना साहब की तीर्थयात्रा किया करते हैं। परन्तु स्वराज्य प्राप्ति का, देश-विभाजन रूपी जो विचित्र कटुफल दशवासियों को भुगतना पड़ा उसका एक परिणाम यह हुआ कि हिंदुओं के अनेक तीर्थ स्थान इस्लामी राज्य में चले गये। नानक जी का जन्म दिवस ५ नवम्बर को था।

गत वर्ष पाकिस्तान सरकार ने ५० सिख तीर्थयात्री प्रतिनिधियों को 'ननकाना साहब' जाने की अनुमति दे दी थी। इसके अनन्तर शीघ्र ही काश्मीर के झगड़े में भारत और पाकिस्तान में विराम सन्धि हो जाने से दोनों देशों के राजनीतिक सम्बन्धों में सुधार हो गया था। परन्तु अब व्यवस्था दोनों देशों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का प्रस्ताव यह था कि इस वर्ष १०१ सिख यात्रियों को ननकाना साहेब जाने की आज्ञा दी जाय। परन्तु पाकिस्तान सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में केवल ५६ सिखों को अनुमति दिये जाने का समाचार ज्ञात हुआ है। यह संख्या अत्यन्त अल्प है जिससे लाखों सिखों की दर्शनेच्छा मन की मन मे ही रह जाती है। भारत और पाकिस्तान के पूर्वीय और पश्चिमीय पञ्जाब के आन्तरिक झगड़ों और प्रान्तीय सरकारों के सकट म रहने के कारण सभवत सरकारी पत्रव्यवहार मे अबतक शिथिलता रही।

देश के विभाजन से उत्पन्न समस्याओं के कारण न जाने कब ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होगी जब कि पाकिस्तान में, जो हिंदुस्तान में से हो अब एक पृथक मुस्लिम देश बनगया है, हिंदुओं की धार्मिक तीर्थयात्राओं में राजनीतिक खतरा व यात्रियों की रक्षार्थ शासन का उत्तरदायित्व न्यून हो जायगा और और शान्तिपूर्वक इच्छानुसार अमुस्लिम जनता अपनी धार्मिक यात्रा कर सकेगी।

आदि वासी

इस प्राचीनतम आर्यावर्त्त देश में जहाँ विदेशी बृटिश राज्य सत्ता के कारण अनेक अस्वाभाविक राजनैतिक समस्यायें उत्पन्न हो गई थीं वहां आदिवासियों' को एक विचित्र और हानि कारक समस्या भी उत्पन्न कर दो गई थी। प्रसन्नता का विषय है कि देश के नेताओं का इस समस्या पूर्ण आवश्यक विषय को ओर भी ध्यान आकर्षित हुआ है। आर्यावर्त्त देश में आर्यों ने बाहर से आकर यहाँ के आदिम निवासियों पर विजय प्राप्त किया और उन्हें अछूत और नीची जातियां बना कर दास बना रक्खा है। इस सिद्धांत के सर्वथा असत्य और भ्रमपूर्ण होने पर भी यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि देश में अनेक पिछड़ी हुई अर्ध सभ्य अनेक जातियाँ विद्यमान हैं। स्वतंत्र भारत मे इस प्रकार की जातियों का सदा ही निम्नस्तर रहना न केवल सर्वथा अवाञ्छनीय हो है परन्तु देश की उन्नति म बाधक भी सिद्ध हो सकता है।

भारत के विधान मे विधान परिषद् द्वारा एक धारा इस विषयक स्वीकार की गई है।

इस धारा के अनुसार बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रांत और बरार में पिछड़ी हुई परिगणित जातियों की उन्नति के लिए मंत्रि मण्डलों में एक विशेष मंत्री नियत रहा करेगा। तथा जिसके अनुसार बिहार में वर्तमान ७ सदस्यों के स्थान में ५१ और मध्यप्रांत में १ के स्थान में ३० सदस्य रहा करेंगे।

इन आदि वासियों की संख्या लगभग २ करोड़ ७ लाख हैं जो कि समस्त देश में बिखरे हुए हैं। यह लोग अपने पड़ोसियों से भाषा, वेष, धर्म और जीवन निर्वाह के प्रकार में सर्वथा भिन्न हैं। शताब्दियों से इन्होंने अपनी पृथक् सत्ता की रक्षा की है। अब विदेशी राज्य का अन्त हो जाने से अवस्थायें परिवर्तित हो गई हैं और भारत का प्रत्येक निवासी इस देश का समान रूप से नागरिक है। अत नागरिक होने के नाते इन आदि वासियों पर भी देश की उन्नति के उत्तरदायित्व का भार है। इस उत्तरदायित्व का ठीक ठीक अनुभव होने के लिए आवश्यक है कि उनमें उत्तम शिक्षा का प्रसार हो। जातीय अन्ध विश्वास नष्ट हो, और उन्हें शिकार आदि करने के साहसिक व उत्तेजक कार्यों से विरत कर कृषि आदि जीवन के स्थायी व्यवसाय करने की ओर प्रवृत्त किया जावे। इतना होने पर ही केवल आदि वासी लोग अपने परिवार और अपनी जाति की सकुचित सीमा के ऊपर उठ कर सम्पूर्ण देश के लाभ की दृष्टि से विचार करने की योग्यता सम्पादन कर सकेंगे।

सौभाग्य का विषय है कि अब तक के किए गए ज्ञान विस्तार के अधिकतर तुच्छ प्रयत्न ससार के अन्य देशों के समान भारत मे भी, परिणाम में समान रूप से असफल सिद्ध हुए हैं। भारत को रियासत के एक दीवान ने एक अवसर पर कहा था कि वे अपनी रियासत मे रेलवे लाइन नहीं चाहते क्योंकि रेलवे द्वारा गन्दगी, बीमारी, अपराध और बाहर के अपरिचित लोग रियासत मे आ जाते हैं। इन आदिवासियों की बस्तियों में अपरिचितजनों के गमनागमन का परिणाम यह हुआ है कि बाहर से आए हुए लोगों ने अत्यन्त अधिक सूद पर धन देकर उनकी भूमि पर अधिकार कर लिया। विदेशी सुधारकों ने सुधार करने के आवेश में आकर इन जातियों के रीति रिवाज और नृत्यों को असभ्य घोषित किया है तथा अत्यन्त शीघ्र ही सुधारों के कारण कुछ लोगों में पर्दा की प्रथा का प्रचलन हुआ और शराबबन्दी के आन्दोलन ने इन जातियों की भोजन की आवश्यकता में उथल-पुथल कर दो।

सरकारी कर्मचारियों द्वारा अनजान में विदेशी कानूनों और दण्ड व्यवस्था लागू किए जाने से ईमानदारी की भावना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इन सुधारों के ठीक ठीक प्रकार से व्यवहार न किये जाने का अत्यन्त ही दुख जनक परिणाम हुआ। आसाम के हजों और उड़ीसा की आदिवासियों के द्वारा कुछ समय पूर्व अनेक दगे फसाद हुए।

लगभग २० वर्ष पहले मि. एस सी. राय ने ध्यान आकर्षित किया था कि यह जगल निवासी जातियाँ अकाल, भुखमरी और जीवन में उमग न रहने के कारण धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही हैं। सन् १९३१ ई की डा. हटन ने इन लोगों की मनुष्य गणना की थी। उनका भी यही कथन है कि असंख्य आदिवासी गौड़ आदि जातियाँ मानसिक व शारीरिक अवनति की ओर तीव्रता से अग्रसर होती हुई प्रशान्त महासागर की तथा अन्य स्थानों की अनेक प्राचीन जातियों के समान ही नष्ट होती जाती हैं। इसी प्रकार मि. जे. पी. मिल्स ने नागा जातियों की भी दुर्गति का वर्णन किया है। यह कोई नवीन आविष्कार नहीं। इस विशाल देश मे सीमा प्रातीय पठान बाजारों से लेकर नागा हिल तक पुरातन जातियों के विनाश के दयनीय दृश्य प्राय देखने में आते हैं फिर भी आश्चर्य की बात है कि इस ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है।

इन पिछड़ी हुई जातियों के सुधार के लिए सबसे प्रथम ध्यान मे रखने योग्य आवश्यक बात यह है कि इनके सुधार में व इनके जातीय कानूनों व प्रथाओं व नियमों में अन्धाधुन्ध परिवर्तन कर सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। भारतीय सघ विधान परिषद् द्वारा प्रेरित परामर्शदात्री कौंसिल इनके सुधार और रक्षा का क्या उपाय करेगी, यह तो भविष्य ही बतलायेगा, परन्तु यदि स्वाभाविक ढग से इनके समाज व्यवस्था के मौलिक आधारों का ध्यान रख ठीक ढग से कार्य किया गया तो बहुत लाभ होने को सम्भावना है।

स्थानों के सुरक्षित किये जाने के सम्बन्ध में जो विवाद हुआ है उसमें पृथक रहने तथा आदिवासियों को मूलनिवासी स्वीकारकर अन्य देशवासियों को आक्रान्ता के रूप में देखने को सर्वथा असत्य तथा दूषित मनोवृत्ति भी लक्षित हुई है। विषका यह बीज नष्ट हो जायगा या अधिक पल्लवित होकर देश में संघर्ष उत्पन्न करेगा – यह भविष्य ही बतलायगा।

राष्ट्र समृद्धि साधन गौ.

[ले०—श्री प० रामदत्तजी शुक्ल एम ए, एडवोकेट]

"गौर्वा इदं सर्वं बिभर्ति," श्रुति

संसार का ऐसा अन्य कोई देश नहीं है कि जो लगातार विदेशी शासन पद्धति, विदेशी, संस्कृति, विदेशी सभ्यता विदेशी साहित्य, विदेशी भाषा, विदेशी आचार व्यवहार और विदेशी विचार धाराओं से सब प्रकार आक्रान्त रहा हो कि जितना भारत देश रहा है, फिर भी भारत देश की अध्यात्म प्रधान संस्कृति की आत्मा में इतना ओज और तेज है कि जिसके प्रभाव से अबतक ऐसे अनेक सांस्कृतिक व्यवहार, आचार, विचार, भावनायें, परम्परायें और प्रवृत्तियां इस विशाल देश में प्राप्त होती हैं कि जिन से अनुप्राणित होकर आज भी भारत का नागरिक सगर्व उस श्रेष्ठतम सांस्कृतिक परिस्थिति को पुनः जीवन प्रदान कर सकता है कि जो सहस्राब्दियों से प्रसुप्तावस्था में विस्मृतसी दबी पड़ी रही है भारतीय पर्व और पुण्योत्सव दिवस हमें आज भी अपनी अतीत अवस्था के पुनरुद्धार के लिये प्रेरित करने से प्रतीत हो रहे हैं।

संवत्सर में अनेक पर्व दिवस हमारे जीवन को स्फूर्ति प्रदान करते रहते हैं, उनमें से दीपावली पर्व और उनके साथ होने वाले गोधन की समारोह के साथ पूजा होती है। इसी प्रसंग में गोपाष्टमी का पुनीत पर्व हमको अपने महान् राष्ट्र के आर्थिक प्रश्न को पूर्णरूप से समाहित करने के लिये समुचित प्रेरणा प्रदान करता है, इस पर्व के दिन के नाम स्मरण मात्र से ही स्पष्ट प्रकट होता है कि भारत जैसे कृषि और गवादि पशु सम्पति प्रधान महान् देश में किसी प्रकार का भी अभाव कष्ट न होना चाहिये वस्तुतः गौ हमारे देश की श्री और लक्ष्मी दोनों प्रकार की सम्पत्तियों का एक मात्र प्रतीक है, क्योंकि समस्त प्रकार के अन्नादि खाद्य पदार्थ ही नहीं अपितु विभिन्न प्रकार के वस्त्रादि का मूल आधार गवादि पशु सम्पत्ति ही है, यहां तक कि वैदिक सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार तो श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ, विना पशु समृद्धि के होना ही सम्भव नहीं है अतः श्रुति का विशिष्ट अनुशासन है कि, "यजमानस्य पशून् पाहि" इस याजुषी श्रुति के अनुसार यज्ञ दीक्षा लेने वाले यजमान के पशुओं की सब प्रकार रक्षा होनी चाहिये।

वैदिक मर्यादा के अनुसार राष्ट्र भी एक विशाल यज्ञ है, इस महायज्ञ के प्रमुख शासक महानुभाव ही ऋत्विजों के स्थान में दीक्षित हुये हैं और यदि त्याग भावना से पूर्णतया भावित होकर शासक गण अपने अपने कर्तव्यानुष्ठान में उसी प्रकार प्रवृत्त हों कि जिस प्रकार यजमान और विविध ऋत्विज गण किसी यज्ञ विशेष के अनुष्ठान में प्रवृत्त होते हैं तो त्यागभावना के प्रभाव से जो सुदशा सम्भव है, उसी का प्राचुर्य राष्ट्र समृद्धि में प्रस्फुटित होने लगे। इसके विपरीत भावना स्वार्थप्रधान होने से परिणाम भी उलटा ही हो रहा है, विदेशियों के दबाव से हम अपनी पशु सम्पत्ति की रक्षा, उन्नति और समृद्धि यथोचित रीति से नहीं कर सके, किन्तु अब भी उस ओर हमारा ध्यान यदि उचित रीति से नहीं जाता हैं तो यह हमारे दुर्भाग्य की की पराकाष्ठा ही समझना चाहिये, क्यों कि आज अपेक्षाकृत दृष्टि से देखने से प्रकट होता है कि हमारे देश में अन्य देशों की तुलना में जनसंख्या के अनुपात से पशुधन न्यूनतर ही है। परिणाम भी उसी प्रकार का हो रहा है, उदाहरणार्थ अमेरिका में केवल १३ प्रतिशत जन कृषि कार्य करते हैं और भारत में ७३ प्रतिशत कृषक हैं, किन्तु परिणाम यह हो रहा है कि आज हमारे लिये अन्न का महान् कष्ट है, इसलिये हम अनायास अमेरिका के आगे "अन्न नो देहि" वस्त्र नो देहि, ,, इस प्रकार से तीन अलभ्य वर मांगने के लिये विवश हैं। गोधन की अवहेलना करने वाले हम भारतीयों के प्रधान मंत्री को वामनावतार धारण कर पाताल के अधिपति बलि के रूप में स्थित प्रेसिडेन्ट ट्रूमन के सम्मुख पहुंच कर अन्नदान, धनदान और वैज्ञानिकदान की सुविधायें प्रदान कीजिए ऐसा कहना पड़ रहा है। इन तीनों मांगों को बलिराज के सम्मुख प्रस्तुत करने वाले कौन हैं, वह महापुरुष भगवान् मनु के उत्तराधिकारी हैं। किन्तु अन्तर इतना ही है कि भगवान् मनु, "दुदोह गां स यज्ञार्थं" के मानने वाले थे और "एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" के निनाद से दशों दिशाओं को व्यवहार से निनादित करते थे, किन्तु अब हम दासानुदास हो बने रहना अपना सौभाग्य समझते हैं, क्योंकि यद्यपि एक अर्थ में राजनीतिक दासता पाश से हम मुक्त हो गये हैं, किन्तु आर्थिक दासता में पहले से भी अधिक हम अपने राष्ट्र को आबद्ध कराने में स्वयं परिस्थितिवश संलग्न हैं।

आर्थिक अवस्था को सुधार कर राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाने का एक मार्ग तो पाश्चात्यता की भौतिकवादी प्रगति का अन्धानुकरण है जो कि हम कर रहे हैं। दूसरा मार्ग त्याग भावना पूर्ण राष्ट्र जीवन निर्माण का है कि जिसकी उपयोगिता राष्ट्र पिता महात्मा जी तो सदा अनुभव करते रहे, किन्तु उनके अनुयायी ऐसा अनुभव कर रहे हैं कि अमेरिका और इंग्लैण्ड के पद चिन्हों पर चलकर और भारतीयों के जीवन को अपेक्षाकृत बहुव्ययशील बनाकर ही हम अपने अभिनव राष्ट्र को समृद्ध कर सकते हैं। इस प्रसंग में हमको एक बात और ध्यान में रखनी चाहिये कि भारतीय राष्ट्रीयता की आत्मा भारतीय संस्कृति है। इसकी ओर यदि हमारी अनास्था होती रही तो सिवाय इसके कि हम जापान की भांति भौतिकता या लौकिकता के प्रबल प्रवाह में पाश्चात्य देशों की पूंछ पकड़ कर बह जावें, इसके अतिरिक्त हमारा भविष्य और प्रकार का होना सम्भव ही नहीं है,

कदाचित् यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के पवित्रतम स्वरूप के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सार्वजनिक जीवन के आरम्भ में ही एक बड़ा विचित्र आयोजन करना चाहा था। उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक गोकरुणानिधि में गोकृष्यादि रक्षिणी सभा,, का विधान और नियम दिये हैं, इस विधान में ७ उद्देश्य और ४८ नियम अंकित हैं। इनको देखने से पता लगता है कि उस अज्ञानान्धकार और अंग्रेजी साम्राज्य शासन काल के मध्यान्ह में ही ऋषि ने अपनी सूक्ष्म बुद्धि से किस प्रकार भारत की आर्थिक अथवा लौकिक तथा ऐहिक उन्नति का श्रेष्ठ साधन देश के समक्ष समुपस्थित किया था। उस १८८० सन् से लेकर आज तक जितने विधान सभाओं या संस्थाओं के राष्ट्रीय सामाजिक, औद्योगिक, आर्थिक अथवा शिक्षा सम्बन्धी बनाये गये या संस्थाओं की स्थापना की गई, अपेक्षाकृत उनमें साम्प्रदायिकता की कहीं न कहीं झलक किसी न किसी रूप में अवश्य रही, किन्तु उक्त विधान में दिये उद्देश्यों और नियमों को देखने से प्रकट होता है कि किसी अंश में भी किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भाव इनमें नहीं उपलब्ध होता है। पाठकों के पुनः स्मरणार्थ केवल सातों उद्देश्यों को यहां देना उचित प्रतीत होता है।

गोकृष्यादि रक्षिणी सभा के उद्देश्य

१—सब विश्व को विविध सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य है, किसी की हानि करना प्रयोजन नहीं।

२—जो २ पदार्थ सृष्टिक्रमानुकूल जिस २ प्रकार से अधिक उपकार में आवें, उस २ से आप्ताभिप्रायानुसार यथायोग्य सर्वहित सिद्ध करना इस सभा का परम पुरुषार्थ है।

३—जिस २ कर्म से बहुत हानि और थोड़ा लाभ हो, उस २ को सभा कर्तव्य नहीं समझती।

४—जो २ मनुष्य इस परम हितकारी कार्य में तन, मन, धन से प्रयत्न और सहायता करे, वह २ इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होवे।

५—जो कि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिये यह सभा भूगोलस्थ मनुष्य जाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।

६—जो २ सभा देशदेशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह २ इस सभा की सहकारिणी समझी जाती है।

७—जो २ इन राजनीति वा प्रजा के अभीष्ट के विरुद्ध, स्वार्थी कामी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राजा और प्रजा के लिये अनिष्ट कर्म करें, वह २ इस सभा का सम्बन्धी न समझा जावे।

उपर्युक्त सातों उद्देश्यों से स्पष्ट होता है कि वह कितने सार्वजनिक, सार्वभौमिक और मानव हित उपयोगी हैं, किन्तु दुर्भाग्य की विचित्र बात यही हुई कि गोकरुणानिधि में लिखित गोकृष्यादि रक्षिणी सभा, और उसके विधान नियम केवल पुस्तक में बन्द वस्तुमात्र ही अवरुद्ध रहे इस सभा की न तो किसी प्रकार से स्थापना होकर प्रगति हुई और न किसी ने इसकी आर्थिक महत्ता को समझकर और प्रचार करने का आवश्यकता को ही किसी ने अनुभव किया। परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज, कि जिसको महर्षि के सांस्कृतिक समुन्नति के लिये स्थापित किया था और आर्थिक उन्नति के लिये गोकृष्यादि रक्षिणी सभा का निर्माण किया था, वह भी पुस्तक में ही आगे प्रवृत्त हुआ। जो हो चुका सो हो चुका। अब भी सर्वाङ्गीण आगे [illegible] गोकरुणानिधि में प्रतिपादित विधान का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महाराजा दण्ड

(२)

[श्री आचार्य नरदेव शास्त्री]

जिस दण्ड की महिमा का हम गताङ्क में वर्णन कर चुके हैं, उस दण्ड के सञ्चालन के प्रकार का नाम दण्ड नीति है। जब दण्ड नीति यथार्थरूप में चलती है तब सब कार्य सिद्ध होते हैं। लोक में दण्ड न हो तो प्रजा छिन्न—विच्छिन्न, नष्ट भ्रष्ट हो जाय। बलवान् दुर्बल को खा जाय। जैसे बड़ा मछली छोटी मछलियों को खा जाती हैं, और सब से बड़ी मछली मध्यम और निकृष्ट मछलियों को खा जाती है इसी प्रकार

लेखक

का अत्याचार प्रजा में छा जाय, अन्धेर मचे। ब्रह्मा ने ठीक ही कहा था कि यदि दण्ड ठीक चले तो दण्ड प्रजा की रक्षा करता है। यदि दण्ड ठीक न चले तो साधु असाधु में विवेक ही न रहे पापी और पुण्यात्मा सब धान एक पसेरी चले। मर्यादा में न चलने वाले भ्रष्ट जन, नास्तिक वद निन्दक दण्ड से ही सीधे पड़ जाते हैं। विधाता ने चातुवर्ण्य के आनन्द के लिए इनका मार्ग सुलभ रहे इस लिए ये आनन्द से धर्म कर्म कर सके इस लिए धर्म-अर्थ बनाया है और ये धर्म अर्थ दण्ड के अधीन हैं।

यदि हिंस्र पक्षी और हिंसक पशुओं को दण्डे का भय न हो तो क्या ये मनुष्यों और अन्य पशुओं को जीना छोड़ेंगे? यदि गुरु का दण्डा सिर पर न हो तो क्या ब्रह्मचारी कुछ पढ़ेगा? दण्डा न हो तो क्या गौएँ और भैंसे ठीक मात्रा में दूध देंगी? यदि दण्डा न हो तो क्या कन्याएं राजीसे विवाह के लिए तैयार होंगी? दण्ड न हो तो चहुँ ओर प्रलय ही समझिए। फिर तो कोई मर्यादा ही नही रहे। फिर कौन कहां ममत्व करेगा अथवा रक्खेगा और कौन किसको पालन करेगा। सिर पर रक्षक राजा शासक का दंड न हो तो कौन बड़े बड़े यज्ञ महा यज्ञ करेगा? कौन दक्षिणा देगा? कौन आश्रमधर्मो का विधिवत् पालन करेगा? विद्याध्ययन में ज्ञानोपार्जन में कौन माथा पच्ची करेगा?

बैल, घोड़े, ऊँट ये कब ठीक वाहन में चलेंगे यदि सिर पर दण्ड न हो। हाथी कब चुप चाप सीधा चलेगा यदि अकुंश का भय न हो तो। यदि सिर पर दण्ड न हो तो क्या पुत्र पिता की मानने लगेगा। क्या स्त्री पति के वश में चलेगी? क्या दास दासी सेवक यथार्थरूप में सेवा करेंगे? अपने अपने धर्मो का पालन यथार्थ रूप में करेंगे क्या? जहाँ दण्ड रहता है वहाँ छल-कपट दम्भ दर्प नहीं रह सकते। दण्ड के भय से ही कुत्ते दूर रहते हैं, कौए दूर रहते हैं नहीं तो ये गृहस्थ को जीने नहीं देते।

साराश सब कुछ दण्ड के अधीन है —संसार में जितने आरम्भ अथवा समारम्भ हैं वे सब दण्ड के अधीन हैं इसलिए हे युधिष्ठिर दण्ड को हाथ में ले कायरों की भान्ति दण्ड और दण्ड नीति से मत घबरा —

संसार तीन के आश्रय चलता है इन्हीं के आश्रय से धर्म है।

त्रयी — अर्थात् वेद

वार्ता — अर्थ शास्त्र

दण्डनीति — दण्ड सञ्चालन।

(क्रमशः)

व्यङ्ग — चित्र में बाईं ओर छोटी छाया मार्शल टिटो की है। बड़ी छाया चीखती है "साम्राज्यवादी युद्ध प्रणेता।"

(पृष्ठ ५ का शेष)

आधार मानकर ग्राम २, उपनगर २, नगर २ और पुर २ में गोकृष्यादि रक्षिणी सभाओं की स्थापना की जाय और समस्त भारत राष्ट्र में जो २ नागरिक उपर्युक्त सातों उद्देश्यों को स्वीकार कर प्रदत्त नियमानुसार कार्य करने के लिये तत्पर हों उनको सगठित किया जाय। आरम्भ मे कुछ दिनों कार्य के सम्बन्ध में पारस्परिक विचार विनिमय होने के उपरान्त अखिल भारतीय, प्रान्तीय, या प्रदेशीय, उपप्रान्तीय, मडल उपमण्डल और ग्राम गोकृष्यादि रक्षिणी सभाओं की स्थापना की जा सकती है।

सम्प्रति इस दिशा मे आवश्यक जागृति और जानकारी प्राप्त कराने के लिये महर्षि रचित गोकरुणानिधि पुस्तक की लाखों प्रतियाँ मुद्रित करवाकर सर्व साधारण में प्रत्येक प्रान्तीय भाषा में अवतरित करना आवश्यक प्रतीत होता है। आगे वैशाख मास में हरद्वार में कुम्भ का महान् समारोह होगा। उस अवसर पर लाखों भारतीय नर और नारी अनायास एक स्थान पर एकत्रित होंगे। उस अवसर पर जहाँ एक ओर पुस्तकादि वितरित की जाँय, वहाँ साथ ही अखिल भारतीय गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना का आयोजन किया जाय कि जिसके अनन्तर संगठित रूप से समस्त देश में यह कार्य हो सके। वस्तुतः यह कार्य वर्त्तमान भारत के लिये इस लिये भी अत्यन्त उपयोगी और अवसरोचित है कि जिस प्रकार उत्तरोत्तर आर्थिक दृष्टि से राष्ट्र जितना असमृद्ध और परमुखापेक्षी होता जा रहा है, उसको देखते हुये यह अधिक सम्भव एवं पर्याप्त समाधान नहीं प्रतीत होता है कि केवल अधिकाधिक अन्नादि सामग्री उपजायी जाय और समस्या हल हो जायगी। क्योंकि अधिक उपज के साधन जहाँ एक ओर गवादि पशु सम्पत्ति हैं, वहाँ साथ ही प्रत्येक नागरिक का स्वस्थ और सबल रहकर सुमति तथा सद्भावना के साथ राष्ट्रहित चिन्तन और आवश्यकतानुसार उनके प्रति कर्त्तव्य पालन भी है। खेद है कि इस दिशा मे स्वावलम्बी होने के लिये यथोचित सुसगठित आयोजन नहीं हो सका है। अन्य अनेक कारणों के साथ इसका एक कारण यह भी है कि भारतीय नागरिकों में समष्टिहित चिन्तन और तदनुसार कर्त्तव्यनिष्ठा को उद्बुद्ध नहीं किया जा सका है। अन्तर केवल इतना ही प्रतीत होता है कि जहाँ अंग्रेजी शासनकाल में सकुचित धार्मिक सम्प्रदायों की मनोवृत्ति से बने हुये स्वार्थमय दृष्टिकोण से सब बातों को देखा और आका जाता था, वहाँ अब राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक किन्तु संकुचित स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण से प्रत्येक वस्तु को आकने की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। समस्त राष्ट्र के हित को दृष्टि मे रखने वाले विरले ही नागरिक दृष्टिगोचर होते हैं। राष्ट्रीय जीवन विकास के लिये वस्तुतः यह सकुचित स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति नितान्त घातक है। इसके विपरीत प्रत्येक नागरिक का दृष्टिकोण राष्ट्रीय ही होना चाहिये।

महाकवि भवभूति ने एक स्थान पर सामान्य मनुष्यों और ऋषि कोटि के लोगों के भेद का वर्णन करते हुये लिखा है कि —

लौकिकानामिह सन्तूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोनुधावति॥

इसका भावार्थ यह है कि सामान्य लोगों की वाणी में नई सृष्टि करने की शक्ति नहीं होती, उन की वाणी तो जो कुछ संसार में हो रहा है उसका वर्णन कर सकती है, किन्तु प्रथम कोटि के ऋषियों में यह शक्ति होती है कि उन की वाणी जो कुछ कहती है संसार में वैसा होकर रहता है, उनकी वाणी में नई सृष्टि करने की शक्ति होती है।

ऋषि दयानन्द इसी कोटि के ऋषि थे। उनकी वाणी में नई सृष्टि पैदा करने की शक्ति थी। वे जैसा कहते थे वैसा होकर रहता था। वे अवन्ध्यवाक थे। उनकी वाणी व्यर्थ नहीं जाती थी। ऋषि ने अपनी मेघ वाणी में गर्जन कर भारत वासियों से कहा कि हे भारतवर्ष के लोगो! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो तुम्हें जन्म की वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त को त्यागना होगा, छूआ छूत को छोड़ना होगा, बाल विवाह को दूर करना होगा, स्त्री शिक्षा का प्रचार करना होगा, पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी पुनर्विवाह का अधिकार देना होगा। श्राद्ध और मूर्तिपूजा आदि से बचना होगा, विधर्मियों की शुद्धि करके उन्हें अपने धर्म में दीक्षित करने के सिद्धान्त को स्वीकार करना होगा, समुद्र पार कर के विदेशों में न जाने जैसी निकम्मी बातों को परे फेंकना होगा, 'स्वदेशी वस्तुओं' के प्रयोग को अपनाना होगा, प्राचीन इतिहास को गौरव के साथ देखना होगा, आर्यभाषा (हिन्दी) और संस्कृत तथा वैदिक साहित्य के अध्ययन और अध्यापन पर विशेष बल देना होगा। इत्यादि अनेक बातें ऋषि दयानन्द ने कही थी। ऋषि दयानन्द की कही हुई सब बातें भारतवासियों को करनी पड़ रही है। दिन प्रतिदिन देश उनकी कही बातों का अधिकाधिक स्वीकार करता और उनको प्रयोग में लाने का प्रयत्न करता जा रहा है। ऋषि ने जैसा कहा वैसा राष्ट्र को करना पड़ रहा है। आज ऋषि की वाणी के पीछे पीछे नई सृष्टि हो रही है। भगवान दयानन्द इस प्रकार के ऋषि कैसे बन गये थे। उनकी वाणी में यह नई सृष्टि करने का गुण कहा से आ गया था। महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन में कहा है कि:—

"सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्" अर्थात् जो लोग साधना द्वारा

❀ ऋषि के ऋषित्व का रहस्य ❀

(ले०—श्री पं० प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी)

सत्य को अपने जीवन में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित कर लेते हैं उनमें यह शक्ति उत्पन्न हो जाती है कि वे जैसा कह देते हैं वैसा संसार में होने लगता है।

ऋषि दयानन्द में प्रारम्भ में सत्य निष्ठा पाई जाती है। वे जीवन भर सत्य के पुजारी रहे हैं। उनके जीवन में सत्य प्रतिष्ठित हो गया था। उन्होंने बचपन में शिव महात्म्य का कथा सुना। वह उन्हें ठीक लगा। पिता माता के मना करने पर भी शिवरात्रि का व्रत करने के लिये उद्यत हो गये। और पूरे मनोयोग से व्रत का पालन किया। जब नींद के मारे मन्दिर के पुजारी तक सो रहे थे तब अकेला बालक मूलशङ्कर जाग रहा था। उस रात जब चूहे वाली घटना से शिव के महात्म्य में विश्वास टला हुआ तो पिता के क्रोध की परवाह न कर के मन्दिर से वापस चले आये और उपवास व्रत तोड़ दिया। जब बहिन और चाचा की मृत्यु से संसार असार दिखाई देने लगा तो सच्चे शिव की तलाश में घर बार छोड़ कर माता पिता के मोह की परवाह न करके आजन्म ब्रह्मचारी रहने का निश्चय करके सन्यासी बन गये और योगियों की खोज में वर्षों भटकते रहे। एक बार हठयोग की पुस्तकों में शरीर की रचना के सम्बन्ध में कुछ ऐसा लेख पाया जो उन्हें ठीक नहीं प्रतीत होता था। एक दिन गङ्गा के किनारे घूम रहे थे। गङ्गा में बहता एक मुर्दा देखा झट गङ्गा में कूद पड़े और मुर्दे को बाहर खींच लाये। अपने थैले से चाकू निकाला। मुर्दे को चीर कर पुस्तक के लेख के साथ शरीर की रचना मिला कर देखा। पुस्तक का लेख झूठा साबित हुआ। मुर्दे के साथ ही हठयोग की उस पुस्तक को भी गङ्गा जी में बहा दिया। एक बार बरेली में प्रचार कर रहे थे। एक व्याख्यान में ईसाइयत का खण्डन हुआ। व्याख्यान के पीछे कुछ भक्तों ने कहा कि ईसाइयत राजधर्म है, उसका खण्डन न किया करें। ऋषि हंसकर बोले कलक्टर ने कुछ कहा होगा। अगले दिन व्याख्यान के बीच में कड़क कर कहा कि "मुझे सचाई के प्रचार करने से रोकने के लिये कलक्टर साहब की नाराज़गी का भय दिखाया जाता है। मैं कलक्टर तो क्या वाइसराय और सम्राट से भी नहीं डरता हूँ। दुनियाँ के शासक मेरे शरीर को ही मार सकते हैं। मैं उस वीर पुरुष को देखना चाहता हूँ जो मेरे आत्मा को मार सके।" एक बार ऋषि को सूचना दी गई कि आपने सत्यार्थप्रकाश में जैनियों का जो खण्डन किया है उसके आधार पर जैनी लोग आप पर मुकदमा चलाना चाहते हैं। इस पर ऋषि ने कहा कि "मुझे इसका भय नहीं है, पहले तो मैं मुकदमे में हार नहीं सकता क्योंकि मैंने झूठ कुछ भी नहीं लिखा है। यदि हार भी गया तो कुछ सज़ा हो जायगी इतना ही है न। अरे यदि दयानन्द को तोप के मुँह पर बाँध कर कहा जावे कि सत्य का प्रचार करना छोड़ दो तो दयानन्द तोप से उड़ जाना स्वीकार करेगा, पर सत्य के प्रचार से नहीं रुकेगा।" उनके प्रचार से अनेक लोग उनके विरोधी हो गये थे जो उनकी हत्या करना चाहते थे। उन को बार बार ज़हर दिया गया। पर वह प्राणों के भय से डर कर सत्य का प्रचार करने से रुके नहीं। एक बार की घटना है वे एक स्थान पर एक दिन नगर से बाहर जंगल में शौच के लिये गये। वे बैठे शौच से निवृत हो रहे थे इतने में एक पुरुष ने पीछे से चुपके से आकर नंगी तलवार निकाल कर उनके पास आकर गाली देकर बोला कि मैं अभी तेरी गर्दन काटता हूँ। ऋषि ने सिर उठाकर उस व्यक्ति को देखा और पूछा कि क्या बात है। उसने अपना अभिप्राय बता दिया। ऋषि ने कहा कि तुम मेरा सिर ही काटना चाहते हो न। मुझे शौच से निवृत हो लेने दो। मैं वचन देता हूँ कि निवृत होकर मैं अपनी गर्दन तुम्हारे आगे झुका दूँगा। तुम उसे काट लेना। ऋषि के कहने का उस पर प्रभाव पड़ गया। वह अलग खड़ा हो गया। आपने निवृत होकर उसके पास जाकर अपनी गर्दन झुकाकर कहा कि लो भाई अपने वचन के अनुसार हम उपस्थित हैं, हमारी गर्दन काट लो। ऋषि के इस कथन पर वह व्यक्ति कांप उठा, पसीने पसीने हो गया, तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी और वह भाग गया। ऋषि सत्य के इतने धनी थे कि एक बार वचन दे दिया तो उसे पूरा करने के लिये अपनी गर्दन भी कटवाने के लिये उद्यत हो गये।

आर्यसमाज के दस नियमों में एक नियम ऋषिने लिखा है कि सदा असत्य को छोड़ने और सत्य को ग्रहण करने के लिये उद्यत रहना चाहिये। ऋषि दयानन्द असत्य को सहन नहीं कर सकते थे। वेदों के शब्दों में वे "द्वारास्ते अनृतद्विषः" असत्य के घोर द्वेषी थे।

इस प्रकार अपने जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा कर लेने के कारण ही भगवान् दयानन्द ऋषि बन सके थे। ऐसा ऋषित्व प्राप्त कर सके थे जिससे उनकी वाणी में संसार को बदल डालने की शक्ति उत्पन्न हो गई थी।

क्या हम सब ऋषि के अनुयायी भी सत्य के वैसे ही उपासक बनने का प्रयत्न करते हैं?

हमारा—देश

आबादी

संसार का प्रत्येक पांचवां व्यक्ति भारतीय है।

× × ×

अमेरिका, रूस, ब्रिटेन के समस्त निवासी तथा बृटिश राज्य—सब के सब यूरोपियन मिल कर भी भारत की जन संख्या से कम पड़ते हैं।

× × ×

इस समय भारतीय संघ की आबादी प्रायः ३२ करोड़ है। प्रति दशवें वर्ष यह आबादी १० से लेकर १५ प्रतिशत के हिसाब से बढ़ती चली जाती है।

× × ×

भारत के १ वर्ग मील के भीतर औसतन् २६२ आदमी बसते हैं। पश्चिमी बङ्गाल की आबादी की औसत सबसे अधिक है। वहां प्रति वर्ग मील ७५६ मनुष्य बसते हैं। इङ्गलैण्ड और वेल्स की औसत इस सम्बन्ध में बहुत अधिक मानी जाती है, पर वह भी ७१० प्रति वर्ग मील से अधिक नहीं है।

× × ×

१९४१ में भारत की नागरिक जनसंख्या १३ प्रतिशत थी और ग्रामीण जनसंख्या ८७ प्रतिशत। इधर नागरिक जनसंख्या बढ़ कर प्रायः १८ प्रतिशत हो गयी है।

+ × ×

भारत में बड़े शहरों की संख्या युक्त प्रांत में सबसे अधिक है। एक लाख से अधिक जन संख्या वाले नगरों की संख्या १९३१ में ३५ थी और १९४१ में ५८। इधर इस संख्या में भी वृद्धि हुई है।

× × ×

भारत के सभी सम्प्रदायों में पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या धीरे-धीरे घटती चली आ रही है। केवल मद्रास और उड़ीसा में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या बराबर है।

× × ×

भारत के आदिवासियों की कुल संख्या २ करोड़ ५० लाख है।

× × ×

१९४१ में अविभाजित भारत में हिंदू ६६ प्रतिशत थे, मुसलमान २४ प्रतिशत और आदिवासी ६ प्रतिशत। १९२१ मे मुसलमानों की संख्या बढ़ती गयी और हिंदुओं की संख्या २ प्रतिशत घट गयी। सिक्खों की संख्या ३२ लाख से बढ़ कर ५७ लाख हो गयी।

× × ×

हिन्दुओं और मुसलमानों के बाद तीसरा महत्वपूर्ण धार्मिक सम्प्रदाय ईसाइयों का है। उनकी संख्या प्रायः ६० लाख है। मद्रास में उनकी संख्या सबसे अधिक है।

× + ×

१९११ में बृटिश भारत में शिक्षित भारतीयों की कुल संख्या १ करोड़ ५० लाख से भी कम थी। १९३१ में इस संख्या में केवल २० लाख की वृद्धि हुई और १९४१ में कुल संख्या ३ करोड़ ७० लाख तक पहुँची। इस समय ४ करोड़ ५० लाख के लगभग होगी।

× × ×

१९४१ की गणना के अनुसार भारत और पाकिस्तान की शिक्षित जनसंख्या का सैकड़ा अनुपात ११ और ९ था।

× × ×

रूस को छोड़ कर संसार के और किसी भी देश में इतनी विभिन्न जातियां नहीं बसतीं जितनी भारत में।

कृषि

भारत प्रधानतः एक कृषि प्रधान देश है। उसकी प्रायः ८५ प्रतिशत जनता गावों में बसी हुई है, और ६६% लोग कृषि से सीधा सम्बन्ध रखते हैं।

× × ×

भारत की भूमि संसार की सर्वोत्तम उपजाऊ भूमि में से है जितना अन्न यहां पैदा होता रहा है वह एक प्रकार से बिना किसी विशेष प्रयास के ही। इस स्वर्णभूमि से अधिक से अधिक सोना निकालने के उद्देश्य से कोई विशेष उद्योग और परिश्रम न किए जाने का ही यह फल है कि प्रति एकड़ के हिसाब से जितनी पैदावार यहाँ होती है वह संसार में सब से कम है। उदाहरण के लिए चावल की पैदावार का औसत प्रति एकड़ भारत अमेरिका, जापान, मिस्र और इटली में क्रमशः इस प्रकार है—९ मन १८ मन, २८ मन, २५ मन, और ३६ मन,।

× × ×

भारत के सघन वनों में प्रायः ४,०८० प्रकार की उपयोगी लकड़ी पैदा होती हैं भारत में पैदा होने वाली कुछ अन्तर राष्ट्रीय ख्याति की लकड़ियों के नाम इस प्रकार है—टीक, रोज वुड आबनूस, चन्दन, देवदारु और शीशम।

× ★ ×

भारत में नहरों का विस्तार संसार में सब से अधिक है। पर केवल १९ प्रतिशत भूमि में ही नहरों द्वारा सिंचाई हो पाती है। पश्चिमी पाकिस्तान और भारत के सीमावर्ती स्थानों में सिंचाई के क्षेत्र को बहुत अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।

खनिज

१९३२ से १९४१ के बीच में भारत में सोने का उत्पादन केवल ३१,१३,००० औंस सोना उत्पादित हुआ जो संसार के कुल उत्पादन का केवल १ प्रतिशत है।

× × ×

मिट्टी के तेल के उत्पादन में भारत का स्थान बारहवां हैं, पर औसत उत्पादन संसार के कुल उत्पादन का केवल ०.६२ प्रतिशत ही है।

× × ×

सीमेन्ट का जितना उत्पादन भारत में होता है, वह उसकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है।

× × ×

भारत के विभाजन से पाकिस्तान के पास खनिज साधन बहुत कम रह गए हैं। और औद्योगिक धातुओं का उत्पादन तो वहाँ नही के बराबर होता है

× + ×

आवश्यक सूचना

किन्हीं कारणों से श्री देसाई जी सार्वदेशिक सभा की ओरसे ट्रावनकोर में प्रचार करते थे, अब सभा की सेवा में नहीं हैं। समाजों वा समाजिक पुरुषों को सार्वदेशिक सभा के हित की दृष्टि में रखते हुये उनके साथ किसी प्रकार का धन सम्बन्धि व्यवहार नहीं रखना चाहिये।

इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य सार्वदेशिक सभासे सम्बन्ध बताते हों, सार्वदेशिक सभा से मार्ग व्ययादि अथवा वेतन मिलने का बहाना करके कुछ लेना चाहें, तो उसे न दे। क्यों कि सभा अपने कर्मचारियों को सदैव समय २ पर मार्ग व्ययादि देने की व्यवस्था रखती है।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

कोयले का उत्पादन भारत में राष्ट्र मंडल में सबसे अधिक होता है। एक वर्ष में प्रायः ३ करोड़ टन कोयला यहाँ निकलता है, जिसमें से ६० प्रतिशत से अधिक बंगाल, बिहार और उड़ीसा की खानों से निकलता है। ५० प्रतिशत तो केवल झरिया की खानों से निकलता है।

भारत में बिजली का उत्पादन अन्य देशों की तुलना में बहुत ही स्वल्प होता है और सस्ता बिजली का प्रसारण भारतीय औद्योगिकता की एक समस्या है।

अन्तरंग सभा के आवश्यक निश्चय

२६ सितम्बर १६४६ की लिपि

१-नि० सं० २-विषय स० २—कतिपय आर्य सज्जनों की मृत्यु का शोक प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ सर्व अन्तरङ्ग सभासदों ने खड़े होकर निम्न शोक प्रस्ताव स्वीकार किया:—

'प्रस्ताव'

"अन्तरग सभा का यह साधारण अधिवेशन प्रसिद्ध दानवीर श्री रायसाहब मथुरा दास जी एम० एल० सी० रुड़की, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के मुख्याध्यापक, संस्कृत सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद कर्ता श्री प० शकरदेव जी पाठक, श्री प० रामदुलारे लाल जी चतुर्वेदी एडवोकेट फतेहगढ के जामाता, श्री प० कृष्णकुमार जी पाठक तथा गुरुकुल वृन्दावन के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता, भूसम्पत्ति विभाग व खुशागज ग्राम के अधिष्ठाता, प्रसिद्ध कर्मकाण्डी श्री ठा० श्यमान सिंह जी बरौठा (अलीगढ़) के असामयिक देहावसान पर शोक प्रकट करता है और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे और परिवार के दुखित सज्जनों को सान्त्वना प्रदान करे।

२-नि० स० ४ विषय स० ३ के अनुसार निम्नलिखित १२ नवीन आर्य समाज सभा में प्रविष्ट किये जावें।

नाम समाज	पोस्ट	जिला	कोटि
१—दादरी	खास	बुलन्द शहर	१००)
२—जिरौली हीरासिंह	पिलखना	अलीगढ़	१००)
३—मुन्शी नालाकसेर	जिरौली	,,	१००)
४—समेना	,,	,,	१००)
५—मदापुर	बरला	,,	१००)
६—स्त्री समाज पेहन	खास	,,	कोटि धन से मुक्त
७—तोछी गढ़	,,	,,	१००)
८—किल बाखाल पट्टी इड़िया कोटमल्ला	चुराना	गढ़वाल	१००)
९—बिरमोली पट्टी लँगूर वल्ला	काडाखाल	,,	१००)
१०—औनइड़िया कोट वल्ला	भौन	,,	१००)
११—सुन्दरपुर	बिहारीगढ़	सहारनपुर	१००)
१२—दयानन्द नगर	परमपुरवा	कानपुर	१००)

३—नि० स० ९ (अ) के अनुसार निश्चय हुआ कि श्री यशपाल जी शास्त्री तथा श्री ओंकार मिश्र जी शास्त्री के त्याग पत्र उपदेशक पद से स्वीकार किये जावें।

४—नि० स० १० विषय स० ११ के अनुसार निम्न सज्जनों की आर्यवीर दल समिति का निर्माण किया गया है। सभा सूचित हुई।

१—पद से	सभा मन्त्री	श्री	रामदत्त शुक्ल जी
२— ,,	कोषाध्यक्ष	,,	सुरेन्द्र शर्मा जी
३— ,,	अधिष्ठाता	,,	धर्मपाल विद्यालकार जी
४—सभा की ओर से—		,,	ईश्वर दयालु जी
५— ,,		,,	स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती
६— ,,		,,	हरशरणदास जी

नोट:—सेनापति वीरांगना का पद रिक्त है।

५—नि० स० १६ विषय स० १७ वैदिक पुत्री पाठशाला हाई स्कूल नईमण्डी मुजफ्फर नगर के लिये सभा की ओर से प्रतिनिधि श्री बूटाराम जी नियुक्त किये जावें।

६—नि० सं० २२ विषय स० २३ के निश्चयानुसार श्री प० गगाप्रसाद उपाध्याय जी एम० ए० प्रयाग के स्थान पर श्री प० विश्वम्भरनाथ तिवारी जी कानपुर सहायक कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त हुये और उनके स्थान पर श्री गगाप्रसाद उपाध्याय जी प्रयाग सभा के अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए।

७—नि० स० २४ विषय स० २५ मवाकी शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी आर्य पुस्तकालय के सहायक प्रबन्धक श्री रामचन्द्र जी रि० डि० पो० मा० बदायूं नियुक्त किये जावें।

८—नि० सं० २७ विषय सं० २८ हरद्वार में कुम्भ प्रचार योजना की अभी से तैय्यारियाँ प्रारम्भ की जावें और प्रचार के लिये आन्दोलन किया जावे तथा एतदर्थ अपील की जावे।

९—नि० सं० २८ विषय सं० २९ कोष विभाग से प्राप्तव्य धन की पहिली अगस्त १९४९ से पक्की रसीदें जारी कर दी गई—इसकी सूचना प्रस्तुत हुई—सभा सूचित हुई आर्यमित्र में सूचना प्रकाशित की जावे।

१०—नि० स० ३३ विषय सं० ३६ के अनुसार निश्चय हुआ कि श्री सतीशचन्द्र जी का त्याग पत्र सभा लेखक पद से स्वीकार किया जावे।

११—नि० स० ३५ विज्ञापन का विषय सं ६० पुनः प्रस्तुत हुआ। तिथि ४ जून १९४९ का आर्यप्रतिनिधि सभा का निश्चय सं० २६ तथा सभा की ओर से श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री और श्री प० वाचस्पति जी शास्त्री महोपदेशकों को भेजे गये पत्र तथा उनके विषय में सभा कार्यालय में प्राप्त उनके उत्तर पत्र भी पढ़े गये। विशेष विचार विनिमय के पश्चात् तथा सम्बद्ध हिसाब-किताब सम्बन्धी पत्र हिसाब लेखा आदि चुने गये। उक्त दोनों उपदेशकों को ता० २९, ३० सितम्बर को हरदोई में होने वाली वर्तमान अन्तरग सभा में उपस्थित होने के लिये विशेष रूपसे आमन्त्रित किया गया था जिससे वे यदि चाहें तो आवश्यक समाधानात्मक स्पष्टीकरण दे सकें—परन्तु वे उपस्थित नहीं हुये। सब बातों पर विचार होने के उपरान्त निश्चय हुआ कि —

१—प० प्रकाशवीर जी शास्त्री व प० वाचस्पति जी शास्त्री महोपदेशकों ने अपने वैतनिक सेवाकाल में अपने अपने कार्यों की डायरी और बिल आदि भरे हैं उनमें से अनेक अयथार्थ हैं।

२—अपने अपने सेवाकाल में समय समय पर जो धन राशि उन दोनों महोपदेशकों ने समाजों, संस्थाओं तथा विविध व्यक्तियों से प्राप्त की, उनमें से कतिपय धन राशियों को सभा कोष में (अ) पूरा जमा नहीं कराया (ब) सर्वथा जमा न कराकर अपने पास रख लिया (स) दान दाताओं एवं सभा के पास एक ही धन की भिन्न भिन्न प्रकार की रसीदें दी।

सभा की सम्मति में उपर्युक्त कार्य सभा के वैतनिक कर्मचारी होते हुए, सभा को हानि पहुँचा कर अपना अनुचित आर्थिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से जान बूझ कर, दुर्भावना से किये गये हैं। उनके यह कार्य उपदेशक पद के लिये सर्वथा अशोभनीय है और राज नियमानुसार भी दण्डनीय है।

१—इस विषय में प० प्रकाशवीर जी व प० वाचस्पति जी को सभा की सेवाओं से, प० प्रकाशवीर जी को ५ जून से प० वाचस्पति जी को ६ जुलाई से पृथक (Dismiss) किया जाता है। तथा

२—आर्य समाजों को सूचित कर दिया जावे कि सभा समाजों के उत्सवों आदि में उक्त उपदेशकों को निमन्त्रित किया जाना अनुचित समझती है। यथा निश्चय करती है कि:—

३—प० प्रकाशवीर जी व प० वाचस्पति जी को सभा में ३ वर्ष तक प्रतिनिधि स्वीकार न किया जावे। तथा

४—यह भी निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी को अधिकार दिया जावे कि यदि वे उचित समझें तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने की व्यवस्था करें। सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

रामदत्त शुक्ल
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रान्त

निरीक्षण सूचना

समाज - निरीक्षक महोदयों को सूचित किया जाता है कि सभा के वर्ष समाप्ति में केवल दो मास शेष हैं। अब वर्षा भी समाप्त हो गई है। अपने अपने जिले के समाजों का निरीक्षण, वर्ष समाप्ति के अन्त तक करने का कष्ट करें।

—रामदत्त शुक्ल
सभा मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दीवान हाल

आर्य समाज दीवानहाल, देहली का वार्षिकोत्सव -२५, २६, २७ नवम्बर १६४६ ई० को मनाया जायेगा। २० ता० को नगर कीर्तन निकलेगा। ता० १८ नवम्बर से श्री स्वा० वेदानन्द जी महाराज उपनिषदों की कथा करेंगे। उत्सव के अवसर पर साहित्य चित्र प्रदर्शिनी एवं संस्कृत साहित्य सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है।

—आर्यसमाज काठ मुरादाबाद का ३४ वाँ उत्सव २४, २५, २६, २७ नवम्बर को मनाया जायगा।

—आ. स दर्शनपुरवा कानपुर का वार्षिकोत्सव १८ से २१ नवम्बर तक होगा।

राजभाषा हिन्दी

भिवानी आर्यसमाज ने एक प्रस्ताव द्वारा पञ्जाब सरकार से अनुरोध किया है कि पूर्वीय पञ्जाब की राजभाषा हिन्दी घोषित कर दी जाय तथा शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी भाषा ही हो।

× ×

साधु आश्रम जयन्ती

सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ का जयन्ती महोत्सव ३०, ३१ अक्टूबर व १, २ नवम्बर को समारोह से मनाया गया। इस 'सर्वदानन्द जयन्ती' महोत्सव में समयानुसार कई 'सम्मेलन' हुए। अनेक साधु सन्यासी महानुभाव पधारे थे।

× ×

शोक !

रायबरेली आर्यसमाज श्री शङ्करदत्त जी शर्मा मन्त्री आ० स० की धर्मपत्नी की दु:खद मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। दिवङ्गत आत्मा के लिये शान्ति तथा सन्तप्त परिवार से सहानुभूति प्रकट करता है।

× × ×

पुनर्विवाह

ग्राम चन्दगढ़ी अलीगढ़ में पं० मुकुन्दलाल जी का पुनर्विवाह श्री पं० माधोप्रसाद जी शर्मा ने सम्पन्न कराया। नगौला, बर्वां, कल्नपी, समेरा, मदनगढ़ी, रामपुर आदि के आर्यगण सम्मिलित हुये।

× × ×

'लेखराम पुरस्कार'

गया आर्यकुमार सभा ने विजयादशमी के अवसर पर 'आर्यवीर पंडित लेखराम पुरस्कार कोष' की स्थापना की है। यह पुरस्कार उन उत्तम साहित्यक लेखकों को दिया जायगा जिनके लेख सर्वोत्कृष्ट होंगे। लेख तथा दान, प्रधान मन्त्री आ० कुमार सभा कासिमी हाई इङ्गलिश स्कूल गया के पते पर आना चाहिये।

—बानसठ आर्य समाज का २५ सित० को वार्षिक निर्वाचन हुआ। प्रधान डा० इन्द्रराजसिंह। उप प्र० चौ० राजाराम, मन्त्री—तुलसीराम आर्य, कोषाध्यक्ष चौ. आशाराम निर्वाचित हुये।

× × ×

आर्यसमाज की स्थापना

समेरा आ० स० अलीगढ़। आर्य भ्रमण सभा नगौला, अलीगढ़ के मंत्री सुवर्णसिंह सूचना देते हैं कि उक्त समाज की स्थापना व निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ। प्रधान पं० गोविन्दराम आर्य, उप प्रधान—पं० रामस्वरूप जी वैश्य, मन्त्री मास्टर फूलचन्द्र जी पाठक, उपमन्त्री-बाबूराम जी आर्य।

निर्वाचन

—पालीगंज आ० स० (पटना) श्री शशिभूषण प्रसादजी प्रधान, श्रीसीताराम लाल जी उपप्रधान, श्रीरामवृक्षप्रसादजी आर्य मन्त्री, श्रीरामचन्द्र लाल जी उप मन्त्री, श्री रावेलाल जी कोषाध्यक्ष, श्री रामानन्द शर्मा पुस्तकाध्यक्ष, श्री बल्देवलाल जी लेखानिरीक्षक।

—अटौली आ० स०, कुम्हियावाँ (इलाहाबाद) श्री ठा० इन्द्रपालजी प्रधान, प० वासुदेव जो उप प्रधान, ठा० कुँवरसिंह मन्त्री, श्री शीतलाप्रसाद उप मन्त्री, श्री बद्रीप्रसाद जी कोषाध्यक्ष चुने गये। इस ग्राम में प० रामनिवासजी उपदेशक तथा प० रामदेव जी शर्मा के प्रयत्नों से यह आर्यसमाज स्थापित हुआ है।

—कपसाढ़ आ० स० (मेरठ) का स्थगित हुआ वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ। प्रधान चौ० महावीर सिंह, उप प्र० म० बलवन्त सिंह, मन्त्री म० हरीसिंह, उप मन्त्री सिपट्टर सिंह, कोषा० लाला भरत लाल।

—आरा (शाहाबाद) आर्यकुमार सभा से श्री पन्नालाल जी मन्त्री सूचना देते हैं कि श्री बसावन राम जी उपप्रधान के सभापतित्व में विजयादशमी महोत्सव और पं० वासुदेव जी शर्मा प्रधानमन्त्री आ० प्र० सभा बिहार के सभापतित्व में रमना मैदान में समारोह पूर्वक मनाया गया। तथा उन्होंने अपना होलसेल तथा रिटेलर का लायसेन्स भागलपुर कॉंग्रेस के आदेशानुसार सरकार को लौटा दिया। हैदराबाद सत्याग्रही श्री मथुराप्रसाद जी के पुत्र का नाम करण संस्कार श्री पण्डित रामानन्द जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। पुत्र का नाम वेदप्रकाश रखा गया।

—बहेड़ा—सन्दल सिंह (सहारनपुर) आ० स० का पुनर्जीवन सभा के उपदेशक श्री पण्डित रामकौशिक जी के प्रयत्नों से हुआ। यह समाज अत्यन्त पुरातन था परन्तु गत हिन्दू मुस्लिम दङ्गे के कारण जिसमें हिंदुओं का ५० हजार रुपया व्यय हुआ, समाज शिथिल हो गया था। आपके बृहद् यज्ञ कराने तथा कथा का बहुत प्रभाव हुआ।

—आर्य समाज गोरखपुर का ४१ वाँ वार्षिकोत्सव आगामी ६, १०, ११, १२ दिसम्बर १६४६ ई० तदनुसार पौष कृष्ण ४, ५, ६, ७ सम्वत २००६ विक्रमी शुक्र, शनि, रवि, सोमवार को होना निश्चय हुआ है। अनेक आर्य नेता विद्वान उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

मादक द्रव्य निषेध प्रचार

—कानपुर प्रान्तीय आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा ११ जुलाई से १६ अगस्त तक नगर के भिन्न २ मुहल्लों में वैदिक धर्म प्रचार हुआ। इस अवसर पर राजकीय मद्यनिषेध तथा समाजोत्थान विभाग कानपुर ने मैजिक लैन्टर्न द्वारा सहयोग दिया—सभी प्रकार की नशीली वस्तुओं के विरोध में विशेषरूप से प्रचार किया गया। नशा त्यागने की प्रतिज्ञाएँ की गईं।

—गोन्दिया—आर्यसमाज। श्री चेतराम राजभोग मन्त्री आ० स० सूचित करते हैं कि आर्य समाज अपने वयोवृद्ध उत्साही कार्यकर्ता श्री महावीर प्रसाद जी जायसवाल के होनहार नवयुवक पौत्र की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती है।

आर्यनगर गाजियाबाद

आर्यनगर गाजियाबाद के प्लाटों की पर्याप्त संख्या में रजिस्ट्री हो चुकी है अतएव पट्टेदारों की एक बैठक ५ १०।४६ को बलिदान भवन में नगर निर्माण की योजनाओं पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी। इस बैठक में निश्चयानुसार आर्यनगर के निर्माणादि के लिए आर्यनगर सहयोग समिति (Arya nagar co-operative society) बनाने का निश्चय हुआ है। कार्य सञ्चालन के लिए ७ सदस्यों की एक अस्थायी कार्यकारिणी समिति का निर्माण हुआ है जिसके मन्त्री श्री विश्वम्भरदास जी दिल्ली तथा कोषाध्यक्ष जी श्री ला० दीवानचन्द्र जी नया बाजार दिल्ली निर्वाचित हुये हैं। कार्यकारिणी को यह अधिकार दिया है कि वह शेष पट्टेदारों से इस समिति का सदस्य बनने की स्वीकृति प्राप्त करे। और सहयोग समिति के नियम व विधान बनाने के लिये ३ सदस्यों की एक उप समिति नियुक्त की गई है, जो नियम बना कर कार्यकारिणी के सामने पेश करेगी प्रारम्भिक व्यय के लिये ५) प्रति सदस्य प्रवेश शुल्क नियुक्त किया गया जिसमें अप्रति २, १) लिये जायेंगे। शेष बाद में।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय
मन्त्री सा० दे० सभा

गुरुकुल अयोध्या

में २ अक्टूबर १६४६ ई० को विजयादशमी पर्व और २ अक्टूबर को महात्मा गांधी जी का जन्मदिवस मनाया गया जिसमें महात्मा जी के 'सत्य' 'अहिंसा' आदि के गुणों को धारण करने की प्रेरणा की गई।

आनोतगंज कानपुर—श्री विजयनारायण जी मन्त्री अत्यन्त दु:खपूर्वक सूचना देते हैं कि २५ सितम्बर को प्रातःकाल तरौंदा निवासी श्री बाबूसिंह जी का ३० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। आपके अनथक परिश्रम व उत्साह के कारण ही ग्राम तरौंदा में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी और आपने अपनी भूमि समाज मन्दिर के लिये दान दे दी थी तथा आपके ही प्रयत्नों से एक प्राइमरी स्कूल चल रहा था। आर्यसमाज उनके वृद्धपिता, विधवा पत्नी तथा बच्चों के प्रति समवेदना प्रकट करते हैं।

—रानी की सराय आ० स० (आजमगढ़) ने दशहरे में धूमधाम के साथ वैदिक धर्म प्रचार किया। भूले भटकों को घर पहुँचाया।

रेडियो की बेढगी नीति

केवल हिन्दी ही भारतीय भाषाओं में एकता ला सकती है

—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

नयी दिल्ली, ६ नवम्बर। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन ने अखिल भारतीय रेडियो की भाषा नीति के सम्बन्ध में एक वक्तव्य मे कहा कि यह बड़े दुःख की बात है कि अभी भी आल इण्डिया रेडियो की वही बेढगी चाल है। हिन्दुस्तानी अथवा उर्दू नहीं, हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा घोषित हुई है। अडगा लगाने वालों ने अपनी पूरी शक्ति लगायी लेकिन फिर भी हिंदी को स्वीकार करना ही पड़ा। संस्कृत, बंगला, उड़िया, तेलगु, तामिल, मलयालयम, कन्नड़ मराठी, गुजराती, पजाबी आदि के प्रसिद्ध साहित्यिक, संविधान सम्बन्धी परिभाषाओं में एकता स्थापित करने के लिये अभी २६ अक्तूबर से २ नवम्बर तक संविधान सभा के सभापति द्वारा निमन्त्रित किये गये थे। उसकी पाँच दिनों की बैठक में जो विचार विनिमय हुआ और ९५ प्रतिशत परिभाषाओं में जो एक मत रहा वह केवल हिन्दी के द्वारा। केवल हिन्दी में ही वह शक्ति है कि जो भारत की सारी भाषाओं के ९५ प्रतिशत से भी अधिक महत्वपूर्ण शब्दकोष को एक कर दे। आल इण्डिया रेडियो के कुएँ में भाग तो नहीं पड़ी है कि उनको कुछ भी समझ में नहीं आता।

आपने आगे कहा कि पिछले दो वर्षों में कई बार रेडियो पर बोलने के लिए मुझसे आग्रह किया गया और कभी कभी यह आग्रह मेरे घनिष्ठ मित्रों द्वारा दुहराया गया। लेकिन मैंने कह दिया कि जब तक भाषा के सम्बन्ध में रेडियो की नीति ठीक नहीं होती तब तक मैं भारत के रेडियो पर नहीं बोलूँगा, परन्तु जब तक विदेशों में प्रचार का सम्बन्ध है उसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती यदि अंग्रेजी फारसी, चीनी, अरबी आदि भाषाओं की तरह उर्दू का भी प्रयोग किया जाय।

रूसी मार्शल पोलैण्ड के प्रधान कमांडर नियुक्त

वारसा, ७ नवम्बर। रूस के प्रसिद्ध मार्शल रोकोसोवेस्की पोलैण्ड के मार्शल और वहाँ की सेनाओं के प्रधान कमांडर नियुक्त किये गये हैं। अपने पिछले महायुद्ध में स्टालिनग्राड और पोलैण्ड की राजधानी वारसा को नाजियों के चंगुल से छुड़ाया था। आप वारसा में पैदा हुए थे लेकिन आपकी शिक्षा और पूरा जीवन रूस ही में बीता। पोलैण्ड के प्रेसिडेण्ट की भावना पर ही आपकी नियुक्ति हुई है।

लन्दन के कूटनीतिक क्षेत्र इस नियुक्ति को एक सनसनीखेज कदम समझ रहे हैं। उनका विचार है कि इस प्रकार रूस और पूर्वी यूरोप के देशों के सुरक्षा सम्बन्ध व्यवस्थाओं का एकीकरण किया जा रहा है।

मुद्रक तथा प्रकाशक—ला० जगतप्रसाद भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस लखनऊ।

तार का पता—'आर्य सभा' लखनऊ,

टेलीफोन नं० १६३

वर्ष ५१

अङ्क ४२

वार्षिक मूल्य ६)
छः मास का ४)
एक प्रति का =)
विदेश में ८)

आर्य्यमित्र

पता—नारायण स्वामी भवन
१, हिवेट रोड लखनऊ।

लखनऊ, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ५ गुरुवार संवत २००६ वि २४ नवम्बर सन् १९४९
दयानन्दाब्द १२५ आर्य्यसंवत् १९७२९४९०५०

सम्पादक—
पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार

हिन्दी को प्रोत्साहन दीजिये

(१—सभी हिन्दी प्रेमियों को चाहिये कि अपने दैनिक या नैमित्तिक कार्यों में हिन्दी ही का प्रयोग करें। अपने परिचितों, मित्रों तथा जहां तक हो सके दूसरों को भी इसके लिये प्रेरित करें।

(२)—हिन्दी विरोधी, अपने कूट षड़यन्त्रों से हिन्दी के दावे को मिटाना चाहते हैं और यह दिखाना चाहते हैं कि हिन्दी की योजना सफल नहीं हो सकती। ऐसे अवसर पर उदासीन रहने से काम न चलेगा।

(३)—जहां हिन्दी में तार भेजने की सुविधा हो वहां हिन्दी में ही तार दीजिये। यदि आपको कोई सरकारी काम हो तो उसमें भी हिन्दी का ही प्रयोग कीजिये।

(४)—यह न भूलिये कि भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है। पराई भाषा से अपनी संस्कृति नहीं पनप सकती।

(५)—अपनी दुकानों के, कार्यालयों के बोर्ड, रजिस्टर, कैश-मैमो आदि सभी हिन्दी मे ही छपाइये।

(६)—अपने प्रमुख उद्देश्यों में हिन्दी प्रचार को सम्मिलित कर लीजिये।

आर्य जगत की महान् क्षति

दिल्ली, २१ नवम्बर।

आर्यजगत को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि आर्यजगत के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी केवलानन्दजी महाराज का पक्षाघात से कल रात्रि के ११ बजे देहली में देहान्त हो गया। श्री स्वामी जी स्थानीय आर्यसमाज सीताराम बाजार के वार्षिकोत्सव में कथा के लिये पधारे थे और ३।४ दिन पर्यन्त उनकी कथा भी हुई थी। आज दिल्ली में यमुना तट पर निगमबोध घाट पर उनके शव का दाह संस्कार हुआ। उनके छोटे भाई भी आज प्रातः यहाँ आ गये थे।

शव एक विशाल जलूस के साथ जिसमें दिल्ली के प्रायः सबही प्रमुख आर्यसमाजी सम्मिलित थे, यमुनातट पर पहुँचाया गया।

श्री स्वामी जी के सम्मान स्वरूप देहली की समस्त आर्यशिक्षा संस्थायें तथा आर्यसामाजिक संस्थाओं के कार्यालय बन्द रहे।

श्री स्वामी जी का आर्यजगत में बड़ा सम्मान था। वे अपने उदात्त चरित्र, सौम्य स्वभाव और मनोहर आध्यात्मिक उपदेशों और कथाओं के लिये बड़े प्रसिद्ध थे। आर्यसमाज को उनके निधन से ऐसी क्षति हुई है कि जिसकी पूर्ति कठिन है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्राप्त हो।

आर्य्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का सचित्र साप्ताहिक मुखपत्र

लखनऊ रेडियो के पदाधिकारियों का हिन्दी ज्ञान

आल इंडिया रेडियो, लखनऊ के पदाधिकारी कितना हिन्दी जानते हैं, उनके नाम, तथा पद क्या हैं, यह पढ़िये:—

स्टेशन डायरेक्टर

१ श्री ईश्वर दास—बलताऊ भाषा बोलभर सकते हैं।

असिस्टेंट स्टेशन डाइरेक्टर

२ श्रीमती एल० सेन गुप्ता—हिन्दी ज्ञान में शून्य।

प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव

३ श्री गिरजा कुमार माथुर-अच्छी योग्यता, कवि, नाटककार हैं। ४ श्री ए. ए अन्सारी—शून्य। ५. श्री जे० एन० भटनागर—उर्दू बहुत हिन्दी बोल सकते हैं। ६ श्री एन० के० मेहता—अच्छी योग्यता। ७ श्री बी० बी० अग्रवाल-अच्छी योग्यता, कवि भी। ८ श्री रमेश पाल—रेडियो के पंजाबी सज्जनों में सबसे अच्छी योग्यता अर्थात साधारण। ९. श्रीमती आई० टिकेकर—अच्छी योग्यता। १० श्रीमती बी० लाल—साधारण अच्छी योग्यता। ११ श्री एन० एल० मलहोत्रा—शायद पढ़ या लिख सकें। १२ श्री एस० के० सेन—लिपि भी नहीं जानते। १३. श्री एल० के० महोत्रा—टटोल कर पढ़ सकते हैं। १४ श्री आर० एम० चिल्डिपाल—साधारण अच्छी योग्यता।

प्रोग्राम सुपरवाइजर

१५. श्री आर० एस० मेहता—हिन्दी की पहली दूसरी तथा तीसरी किताबें पढ़ी हैं।

ट्रांसमिशन असिस्टेंट

१६. श्री एन० पेम० भाटिया—टटोल कर पढ़ सकते हैं। १७ श्री के० के० श्रीवास्तव साधारण अच्छी योग्यता। १८ श्री एस० एन० सिंह साधारण योग्यता।

एनाउंसर

१९ श्री अब्दुल अजीज टाइप की हुई चीजें पढ़ सकते हैं। हिन्दी की सूचना उर्दू में लिखकर काम चलाते हैं। २०. श्री पी० एन० सक्सेना—साधारण योग्यता। २१ श्री वाई० डं० पंडित—साधारण। २२. श्रीमती [illegible] सूचना हिन्दी में लिख नहीं सकती, पढ़ सकती हैं।

पबलिक रिलेशन्स आफिसर

२३. श्री वाई० डी० कपिल साधारण अच्छी योग्यता

स्टूडियो कमिश्नर

२४. श्री आर० एम० कटे सामान्य २५. श्री आर० पी० सिंह साधारण।

विशेष

इन सज्जनों में ४, ८, ११ १२, १३, १५, १६, सख्यक व्यक्ति जब कभी हिन्दी बोलते हैं तो उनका उच्चारण उनके प्रांत के उच्चारण से प्रभावित रहता है।

श्रीमती बी० लाल नारी लोक की इन्चार्ज हैं।

श्री आर० एस० मेहता का काम यह है कि यदि किसी भाषण (टाक) रेकार्ड वगैरह के सम्बन्ध में यह विवाद हो कि यह हिन्दी का है या हिन्दुस्तानी का तो ये ट्रांसमिशन असिस्टेंटों की राय पूछ कर अपना निर्णय स्टेशन, डाइरेक्टर को देते हैं। आपने हिन्दी साहित्य से पाँच शब्द अत्यन्त परिश्रम से खोज निकाले हैं। इन से आप हर अवसर पर काम लेते हैं। वे शब्द ये हैं संशोधन, षडयन्त्र कार्यक्रम, प्रलय तथा समाप्ती (समाप्तिः)। शब्द कामधेनु हैं। यह इन्होंने सिद्ध कर दिया है।

(स्वतंत्र भारत से)

आत्महत्या अपराध न माना जाय

श्रीकामथ का प्रस्ताव

नयी दिल्ली, २१ नवम्बर। विधान परिषद् के सदस्य श्री एच० वी० कामथ ने पार्लमेंट के अगले अधिवेशन में एक गैर सरकारी बिल पेश करने की सूचना दी है जिसमें यह मांग की गयी है कि आत्महत्या के प्रयत्न को अपराध न माना जाय। अभी ऐसा करना भारतीय दण्ड विधान की ३०९ वीं धारा के अन्तर्गत दण्डनीय है।

श्री कामथ का एक सुझाव भी है कि 'मनुष्य और उसके रचयिता' के बीच राज्य को हस्तक्षेप न करना चाहिये।

हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी में बंदर-बांट की रेडियो सम्बन्धी भाषा नीति खत्म हो—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्धा, १८ नवम्बर। मध्य प्रांत विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है —

सरकारी विभाग में यदि कोई ऐसा विभाग है, जिससे जनता को कभी संतोष नहीं रहा तो वह है आल इन्डिया रेडियो विभाग। रेडियो विभाग में जनता को असंस्कृत और सुसंस्कृत सब कुछ बना देने की सामर्थ्य है। इस लिये स्वाभाविक है कि रेडियो के विषय में जनता विशेष-रूप से जागरूक और सावधान रहे कि वह क्या है और उसे क्या होना चाहिये?

आज से पांच वर्ष पहले जनता ने जयपुर-हिंदी-साहित्य सम्मेलन के अवसर पर आल इन्डिया रेडियो के बहिष्कार के निश्चय द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त किया था। स्वराज्य की घोषणा के बाद पिछले दो वर्षों में हिंदी साहित्यिकों ने आल-इन्डिया रेडियो को हर तरह से इस आशा से सहयोग दिया कि उसके अधिकारियों को हिंदी साहित्यिकों तथा कलाकारों से किसी प्रकार की शिकायत न रहे। खेद है कि सरकार ने इस अवसर से कुछ भी लाभ नहीं उठाया।

अंग्रेज गये, अंग्रेजी बनी रही! हिंदी उर्दू-हिंदुस्तानी में बंदर-बांट की नीति के आधार पर बनी हुई आल इंडिया रेडियो की भाषा सम्बन्धी सरकारी नीति आज तक ज्यों की त्यों बनी है। दिल्ली और लखनऊ के लिए हिंदी प्रसार के प्रतिनिधियों को लेकर सलाहकार समितियाँ बनायी गयी, किंतु सरकारी नीति यही रही है कि हम सलाहकारों से अपनी नीति का समर्थन कराया जाय किंतु उनकी सलाहों को कभी कुछ भी महत्व नहीं दि[या]। सलाहों की उपेक्षा ही नहीं की गयी, निरादर भी किया गया।

समिति के सदस्यों का हर मीटिंग में चाय पानी से जो स्वागत होता रहा, उसके लिए वे सरकार के विशेष कृतज्ञ हैं, किन्तु वे उसे हिन्दी और हिंदी के समर्थकों का आदर समझने की गलती नहीं कर सकते।

हिंदी-सेवियों द्वारा आल इन्डिया रेडियो बहिष्कार का वर्तमान आंदोलन किसी संस्था द्वारा संचालित न होकर जनता की भावनाओं का स्वाभाविक प्रदर्शन है। दिल्ली कमेटी के त्याग पत्र से अंगुलि निर्देश मात्र हुआ। उसके बाद राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त के अनुसरण में न जाने हिंदी के कितने कलाकार और साहित्यिक आल इन्डिया रेडियो को अपने असहयोग की सूचना दे चुके हैं। स्वनामधन्य प० माखनलाल चतुर्वेदी, कविवर दिनकर आदि ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया है।

मध्य प्रांत विदर्भ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के गत राजनांद गांव सम्मेलन में रेडियो बहिष्कार का प्रस्ताव बड़ी ही कठिनाई से रुक सका था। वह प्रस्ताव मध्यप्रांत और विदर्भ की जनता की स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। अभी ६ नवम्बर को मध्य प्रांत विदर्भ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की कार्य समिति ने २० नवम्बर को होने वाली अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति से इस सम्बन्ध में कार्य [illegible] की है और उसे विश्वास दिलाया है कि उस की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया जायगा।

हम आशा करते हैं कि श्री दिवाकर और उनका विभाग समय से पूर्व ही चेत जायेंगे। अन्यथा वे शीघ्र ही देखेंगे कि राष्ट्रभारती के हर सेवक के असहयोग से उन्हें हाथ धोना पड़ेगा।

मैसूर में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य

बंगलौर, १९ नवम्बर। मैसूर सरकार ने तय किया है कि राज्य के तमाम स्कूलों में नागरी लिपि में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। हाई स्कूलों में तुरन्त ही हिन्दी की शिक्षा दी जायगी और मिडिल स्कूलों की इसके बाद जारी जायेगी। हाई स्कूलों में हिंदी की शिक्षा चालू होने के बाद ही कालेजों में हिन्दी पढ़ायी जायगी।

मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

आर्यमित्र

यो जागार तमृच कामयन्ते,
यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमय सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योक ॥
ऋ॰ ५-४४ १४ ॥ सा॰ उ॰ १ २-५ ॥

जो जागता है उसे ऋचायें (स्तुतियाँ) चाहती हैं, जो जागता है उसे (स्तुतिगान , प्राप्त होते हैं और जो जागता है उसे उसके समक्ष यह सोम (भोग्य ससार) कहता है मै तेरा हूँ, तेरी मित्रता में ही मेरा निवास है, तेरे लिए मै सदा उपस्थित हूँ ।

ता॰ २४ नवम्बर १६४६ ई॰

आर्यावर्त क्यों

काशी में युक्तप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने प्रान्त का नाम आर्यावर्त्त स्वीकार किया । प्रस्तावक थे श्री माननीय सम्पूर्णानन्द जी प्रान्ताय सरकार क शिक्षा मत्री । प्रान्तीय सरकार ने भी इस नाम को स्वीकार किया विधान परिषद् की काग्रेस पार्टी ने आर्यवर्त्त नाम अस्वीकार किया, भविष्य में युक्त प्रान्त क नाम करण का कार्य गवर्नर जनरल की मधुर इच्छा पर छाड दिया गया और यह भी कहा जाता है कि युक्त प्रान्त क प्रधान मत्री श्री पन्त जी ने घोषित किया कि नही २ आश्वासन दिया कि गवर्नर जनरल से आर्यवार्त्त नाम नही प्रस्तावित किया जायगा, इतना हो जाने पर समाचार पत्रों में और मौखिक रूप से भी इस के सम्बन्ध म आलोचना प्रत्यालोचना की परम्परा का आरम्भ होगया है ,

लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले स्वनामधन्य और श्री ज्ञानचन्द जी गौतम एम॰ एल॰ ए॰ महोदय के सम्पादकत्व में नवजीवन दैनिक में ता॰ १७ नवम्बर में आर्यावर्त्त बनाम युक्त प्रान्त शीर्षक देकर सम्पादकीय अग्रलेख निकला है, इस लेख को अनेक बार पढ़ने पर भी कौतूहल शान्त नही हो सकता है, वे लिखते है कि, विधान सभा की कांग्रेस पार्टी ने एक बुद्धिमता पूर्ण निर्णय किया है, इससे प्रयोजन है आर्यवार्त्त नाम स्वीकार न करना । आगे प्रान्त में इस नये नामकरण के प्रश्न की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं हुई है, कुछ आर्यसमाजियो ने भले ही प्रान्त के नये नाम परिवर्त्तन के प्रस्ताव पर हर्ष प्रकट किया हो, परन्तु साधारण जनता प्रान्त के इस नये नाम के प्रस्ताव से कोई गौरव बोध करने में असमर्थ रही है, किसी जातीय अथवा धार्मिक आधार पर प्रान्त का नाम परिवर्त्तन हम सिद्धान्त तः गलत मानते हैं ।

विधान सभा की कांग्रेस पार्टी के द्वारा युक्तप्रान्तीय काग्रेस कमेटी और प्रान्तीय सरकार के द्वारा स्वीकृत नाम को ठुकराने के निश्चय का यदि कोई बुद्धिमता पूर्ण कहे तो मूर्खता पूर्ण निश्चय होही नही सकता है, ऐसा मानना पड़ेगा, क्यो कि प्रान्त सम्बन्धी कार्यो मे साधारणतया प्रान्त स्वतन्त्र समझा जाता है, इस लिये प्रान्ताय काग्रेस कमेटी का निश्चय और प्रान्तीय सरकार के निश्चय का काग्रेस पार्टी द्वारा अस्वाकार होना ता एक प्रकार की तानाशाही होगी, हाँ यदि काग्रेस पार्टी को सन्देह था कि यह नया नाम प्रान्त के बहुमत को स्वीकार नहीं है ता या तो प्रान्तीय धारा सभा की सम्मति प्राप्त करनी चाहिये थी अथवा जनमत लिया जाना चाहिये था । इन दोनों से प्रांत के नागरिकों की सम्मति ज्ञात हो जाती और उसके आधार पर आर्यावर्त्त नाम स्वीकार या अस्वीकार किया जाता, परन्तु ऐसा नहीं किया गया, क्या इसी का नाम प्रजातन्त्र और जनतन्त्र है, और क्या इसी प्रकार के निर्णय को ही बुद्धिमता पूर्ण भी कहा जा सकता है ?

प्रान्त का नाम आर्यावर्त्त रखने पर नामकरण की प्रतिक्रिया अच्छी नही हुई यदि यह बात सत्य है तो क्या नवजीवन सम्पादक जी अन्तर्यामी है कि उन्होंने अपनी आराम कुर्सी पर बैठे २ हो सञ्जय की भाँति जान लिया कि प्रान्तवासी आर्यावर्त्त नाम पसन्द नही करते है, क्या धारा सभा या अन्य किन्ही सस्थाओं की ओर से आपके पास कोई ऐसा निश्चय आया कि जिसके आधार पर आपको प्रान्त भर की प्रतिक्रिया का बोध होगया, अथवा अपनी और अपने जैसों की मर्जी को ही प्रान्त की प्रतिक्रिया मान लिया, आपकी नेक राय में कुछ आर्यसमाजियों ने भले ही प्रान्त के नये नाम परिवर्तन के प्रस्ताव पर हर्ष प्रकट किया हो परन्तु साधारण जनता प्रान्त के इस नये नाम के प्रस्ताव से कोई गौरव बोध करने में असमर्थ रही है, नवजीवन सम्पादक की महती कृपा के लिये आर्यसमाजियों नही २ कुछ आर्यसमाजियों को चाहिये कि वह उनको बधाई दे कि अनेक प्रपचों में तल्लीन दैनिक पत्र के यशस्वी सम्पादक जी के दिल में उन गरीबो का भी कुछ मान है, परन्तु आश्चर्य की बात है कि आप का इस प्रसग मे आर्यसमाजियों पर आपकी दृष्टि कैसे पड गई, क्या आपके लिये अबतक यह अज्ञात ही है कि विश्ववन्द्य राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी ने अपना नश्वर शरीर त्यागते समय हेराम ! हे राम का स्पष्ट उच्चारण किया था, वह मर्यादा पुरुषोतम राम आर्य थे, इतना ही नही अपितु ऋग्वेद से लेकर गोस्वामी तुलसीदास पर्यन्त इस देश के निवासी अपने को आर्य मानते और जानते थे तथा पारस्परिक व्यवहार में तदनुसार सम्बोधित करते थे, क्या वह सब आर्यसमाजी थे, इतिहास वर्ण माला से परिचित साधारण विद्यार्थी भी जानता है कि आर्यजाति कल्पारम्भ से आजतक अपनी पुनीत परम्पराओं, विश्वजनीन संस्कृति, सार्वभौम धर्म, विश्वकल्याण साहित्य, विश्वज्ञानप्रदर्शन और श्रेष्ठतम सदाचार परम्पराओं के आधार पर अमर है और रहेगी, इसको मिटाने के सभी कुत्सित और कूट चक्र सदा विफल हुये और आगे भी होते रहेंगे, क्यों कि आर्यजाति का हृदय आत्मज्योतिमय जीवन के कारण ध्रुव है, आधुनिक क्षुद्र सस्थाओं की भाति इसको कोई नेता या नवी समय २ पर अनुप्राणित नही करता रहा है, और इस पर भी यदि सब प्रकार से अपने पन से घृणा ही हो तो भी वह देख सकता है कि इस सर्वथा दीन हीन विराट देश के सात लाख ग्रामों और सहस्रों नगरों एव उपनगरों में जब कभी कोई सस्कार पर्व, उत्सव, यज्ञ या अन्य शुभ अनुष्ठान होता है तो जम्बू द्वीपे भारतखडे पुण्यक्षेत्रे, का आघोष दशों दिशाओं को प्रतिध्वनित करता हुआ पर्वराज हिमालय की भांति आर्यजाति की विजय वैजयन्ती की ओर स्पष्ट सकेत करता प्रतीत होता है, क्या तथाकथित साधारण जनता के घरों मे हिन्दुस्तान इ डियायाम्, से यजमान सकल्प वाक्य का उच्चारण करता है, और क्या पुण्यक्षेत्र आर्यवर्त्त के उच्चारणमात्र से साधारण जनता अब गौरव बोध नहीं करती है, इस प्रसग में गोस्वामी जी ने ठीक ही कहा है कि, 'अन्ध बधिर न कहा है अस, आश्चर्य का बात तो यह है कि सकुचित धार्मिक कट्टरता के प्रतिमान लीगियों ने तो हमारे पवित्र सकल्प वाक्यों से पुण्यक्षेत्र सुन्दर शब्द लेकर अपना प्यारा पाकिस्तान बनाया किन्तु हम भाग्यहीनो ने शेष आर्यावर्त्त देश और प्रान्त दोनो से निकालने का दु.साहस करने को बुद्धिमतापूर्ण निश्चय माना, महाकवि कालिदास के अनुसार ' विषमप्यमृत क्वचिद् भवेदमृत वा विषमीश्वरेच्छया।'' ईश्वरेच्छा से कभी विष से अमृत और कभी अमृत से विष उत्पन्न हो जाता है । नवजीवन ही क्यों अमृत बाजार

पत्रिका ता० १६ नवम्बर के अंक में प्रयाग विश्वविद्यालय के अंग्रेजी भाषा के अध्यापक श्री रघुपति सहाय जी की नेक राय में प्रान्त का नाम संगम प्रान्त होना चाहिये क्यों कि आर्यावर्त्त का उच्चारण करना ही अत्यन्त कठिन है, आपका बात भी ठीक ही है, क्या कि अंग्रेजी पढकर यदि कोई उच्चारण करने का प्रयास करे तो विचारा आर्यावर्ट ही कह सकता है, क्यों कि वेचारी अंग्रेजी भाषा मे त अक्षर होता ही नहीं है, आपकी राय में गंगा यमुना सगम के अतिरिक्त इस प्रान्त में सब प्रकार की संस्कृतियों का भी सङ्गम है। इसलिये प्रान्त का नाम भी सगम प्रान्त रखना उचित ही होगा। प्रयाग में सङ्गम के आगे केवल गङ्गा का ही नाम रहा है, इसको कदाचित् विद्वान् प्रोफेसर साहेब भूल गये। आपके मतानुसार तो सङ्गम नदी का भी नाम प्रयाग से आगे रखना पूर्ण बुद्धिमता ही ही होगी. क्या विधान सभा की कांग्रेस पार्टी इस ओर ध्यान देगी।

"किसी जातीय अथवा धार्मिक आधार पर प्रान्त का नाम परिवर्तन हम सिद्धान्तः गलत मानते हैं कि आप व्यक्ति गत रूप से उसी प्रकार मानते रहे और जैसे आप अपने नाम को प्रसन्नता के साथ धारण करते हैं, उसी प्रकार अपने निजी सिद्धात से प्रान्त का कोई नाम स्वीकार कर लें। परन्तु प्रान्त के नामकरण का प्रश्न आप जैसे एक दो व्यक्तियों का ता नहीं है। इस प्रश्न का तो सम्बन्ध प्रान्त में निवास करने वाले लगभग ७ करोड़ नर और नारियों से है। उनकी सम्मति के आधार पर ही प्रान्त का नामकरण बुद्धिमता से होना सम्भव है।

हिन्दी के तार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, काशीनागरी प्रचारिणी सभा, अन्य हिन्दी संस्थाओं तथा हिन्दी प्रेमी जनता के सतत प्रयत्न तथा आन्दोलन के फलस्वरूप स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीय सरकार ने हिन्दी में भी तार भेजने की सुविधा कतिपय स्थानों से परीक्षण रूप में दी। हिन्दी प्रेमी जनता की इस उचित मांग को विदेशी सरकार सदा ही ठुकराती आई थी, क्योंकि उसको यह मांग जो राष्ट्रीयता से प्रभावित हो, उड़ाना अभीष्ट न था और न उसके स्वार्थ के ही अनुकूल था। वर्तमान राष्ट्रीय सरकार के सामने भी जहां हिन्दी राष्ट्रभाषा के लिये इतना बाद-विवाद हुआ और अन्त में भी हिन्दी को विधान परिषद् द्वारा समुचित स्थान न दिया जा सका वहाँ यह आशा नहीं थी या अतिस्वल्प ही थी कि हिन्दी के तारों की सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

परन्तु सम्भवत जनता के रुख को पहचानकर सरकार कुछ झुकी और फलत हिन्दी में तार भेजने की पद्धति का शिक्षण-सेन्टर आगरे में खोला गया तदन्तर, बनारस, कानपुर, इलाहाबाद, आगरा, लखनऊ से हिंदी तार भेजने की व्यवस्था की गई। कुछ हिंदी प्रेमियों ने इस पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और आशा हुई कि इससे हिंदी के जीवन में एक नया अध्याय प्रारम्भ होगा। प्रारम्भ में तो ऐसा प्रतीत हुआ कि यह कार्य बढ़ेगा और अन्य स्थानों में भी हिंदी तारों की व्यवस्था सरकार को करनी पड़ेगी, परन्तु बीतते हुये समय ने इस आशा को धीरे २ निराशा में परिणत कर दिया और कहीं २ यह सम्भावना प्रकट की जाने लगी कि क्या सरकार हिंदी तार व्यवस्था को बन्द कर देगी ? और यदि सरकार को ऐसा करना भी पड़ा तो इसमें जनता का तथा हिंदी का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं का उत्तरदायित्व होगा, न कि सरकार का। क्योंकि आकड़े बताते हैं कि जनता का उत्साह इधर क्रमशः कम होता ही देखा गया और इस पर होने वाला व्यय सरकार को भी व्यर्थ सा प्रतीत होने लगा है।

पहली जून से प्रारम्भ हुई इस व्यवस्था में अक्तूबर तक क्या प्रगति हुई यह इससे प्रकट होता है कि अक्तूबर मास में इन केन्द्रों में तारों की संख्या निम्न प्रकार से रही —

लखनऊ	—	२०
प्रयाग	—	५०
काशी	—	१५
कानपुर	—	१७
आगरा	—	२

जो प्रांत हिंदी का प्रमुख प्रांत माना जाता हो और वहाँ की जनता हिंदी आदोलनों का नेतृत्व करती हो उसी प्रांत के नगरों में उपर्युक्त आंकड़े घोर निराशा उत्पन्न करते हैं। मालूम होता है कि हिंदी संस्थाओं को या जनता को यह आशा न थी कि हिंदी की सुव्यवस्था तारों में मिल सकेगी और इसके लिये उन्होंने कोई विशेष कष्ट भी न उठाया जिससे कि ऐसी स्थिति देखनी पड़ी। निश्चय है कि कष्ट तथा प्रतीक्षा के बाद प्राप्त वस्तु के प्रति इतनी उदासीनता कोई नहीं दिखा सकता।

अब जब कि हिंदी-विरोधी पग २ पर अपनी कुचेष्टाओं से हिंदी को पीछे ढकेलने या कुचलने का प्रयत्न कर रहे हैं वहाँ हिंदी का पक्ष लेने वालों की यह उदासीनता विचारणीय ही है। क्या एक बार इन सुविधाओं की घोषणा होने से ही हमारा उद्देश्य पूरा हो गया ? यह तो सरकारी घोषणायें हैं, जिस तरह हुई उसी तरह वापस भी ली जा सकती हैं और ऐसे प्रयत्न भी किये जा रहे हैं।

जहाँ हम हिंदी-भाषी जनता से इधर अधिक ध्यान देने का अनुरोध करेंगे वहां हिंदी की प्रमुख संस्थाओं हिंदी-साहित्य सम्मेलन तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा आदि से अधिक बलपूर्वक कहना चाहते हैं कि वह इस निरन्तर शोचनीय होने वाली स्थिति को सम्भाले और इस दिशा में अपने आदोलन को प्रबल बनाये। अभी बहुत रास्ता पार करना है, सन्तोष का अभी कोई अवसर नहीं आया।

आर्यसमाजों, संस्थाओं, सभाओं से भी हमारा अनुरोध है कि जहाँ उन्होंने हिंदी का प्रमुख स्थान दिया है वहाँ अब उसको प्रगति देने का भी प्रयत्न करें। अथवा यह करा कराया प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा और फिर नये सिरे से इसे उठाना एक भारी समस्या हो जायगी और यह आशंका भी सत्य होती प्रतीत होगी जैसी कि कुछ व्यक्तियों को इस घोषणा के होने पर हुई थी, कि हिंदी विरोधियों का कोई कुचक्र तो नहीं है कि इस योजना की असफलता दिखा कर हिंदी को गिराने का उन्हें अवसर मिले"।

आशा है हिंदी प्रेमी इन बातों पर विचार करेंगे और अपने कर्तव्य को पहचानेंगे। इस समय चूक गये तो फिर भारी मूल्य चुकाने पर भी यह अवसर नहीं आयेगा।

आय व्यय परीक्षा

गत अगस्त मास में भारत की केन्द्रीय सरकार ने देश की राष्ट्रीय सम्पत्ति व उसकी आय का ठीक-ठीक अनुमान करने के लिए एक समिति की स्थापना की है। इस समिति ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। आशा की जाती है कि यह समिति १८ मास के अन्दर ही अन्दर अपनी रिपोर्ट सरकार के सन्मुख प्रस्तुत कर देगी।

विचार यह है कि इस समिति को स्थायी बना दिया जावे और इस प्रकार की व्यवस्था की जावे कि जिससे सन् १९५१ ई. से राष्ट्रीय आय व्यय की विस्तृत रिपोर्ट प्रतिवर्ष निर्माण की जाया करे। यह आवश्यक कार्य 'नेशनल यूनिट आफ फाइनेन्स मिनिस्ट्री' द्वारा निर्मित एक्सपर्ट कमेटी (विशेषज्ञ समिति) की सहायता से हुआ करेगा।

उक्त कमेटी देश की आय, उत्पत्ति और व्यय के दृष्टिकोण से रिपोर्ट तैयार किया करेगी। तुलनात्मक ज्ञान के लिए इस रिपोर्ट में सन् १९३८ व ३९ ई. व ४८ व ४९ से पूर्व के ३ वर्षों की आर्थिक स्थिति का ठीक ठीक दिग्दर्शन किया जावेगा।

इस 'राष्ट्रीय आय अनुसन्धान कमेटी' के प्रधान भारत सरकार के तथ्य संग्रहीता तथा परामर्शदाता प्रो. पी. सी. महालानोबिस होंगे और प्रो, डी आर. गाडगिल, आर. बी. राव, मि. स्टोन, मि. सिमसन कुजनेट्स तथा डा० डर्कसेन जैसे सुरक्षा कौंसिल के अर्थ विशेषज्ञ सदस्य रहेंगे।

इससे पूर्व इस प्रकार का प्रथम उद्योग श्री दादाभाई नौराजी ने सन् १८७६ ई. में किया था। इसके अनन्तर सन् १९२९ ई. में साइमन कमीशन और बाद में सन् १९३६ ई. में मि. राव ने ऐसे ही उद्योग किये जिसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक भारतीय व्यक्ति की अनुमानिक आय २०) वार्षिक से लेकर ११६) तक विभिन्न समयों में आकी गई थी।

अब भारत के केन्द्रीय सरकार द्वारा इस आवश्यक कार्य को अपने हाथ में लेकर प्रारम्भ करना न केवल स्वागत के ही योग्य है अपितु बहुत देर में भी प्रारम्भ किया गया माना जायगा। इससे पूर्व अनेक महानुभावों अथवा सरकारी कर्मचारियों ने व्यक्तिगत रूप से ही देश की आर्थिक स्थिति का आनुमानिक विवरण प्रकाशित किया था। इन विवरणों की उपयोगिता प्राय सन्देहास्पद ही रहती थी क्योंकि तथ्यों के 'ठीक होने' व 'ठीक न होने' का विवेचन करना न केवल अत्यन्त कठिन ही कार्य है प्रत्युत अत्यन्त अधिक अध्ययन का भी विषय है।

देश की आर्थिक स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान होना इसलिए भी आवश्यक है कि बिना इसके राष्ट्रीय करों का ठीक ठीक आधार निर्णय करना सम्भव नहीं होता है। इस समय अवस्था यह है कि केन्द्रीय शासन में तथा प्रान्तों में भी नवीन नवीन करों को लगाने की प्रथा, बिना देश काल का विचार किए कि जनता इन करों के बोझ को उठाने की क्षमता रखती है या नहीं, दिन प्रतिदिन बढ़ती हो जा रही है। इस प्रवृत्ति को रोकने का एकमात्र सफल उपाय यही सिद्ध हो सकता है कि सावधानी से तयार किये हुए अधिकार पूर्ण सत्य-सत्य तथ्य देश के सम्मुख प्रस्तुत किये जावें।

आशा है अनिवार्य रूप से इस आवश्यकीय कार्य का प्रारम्भ भारत की भावी आर्थिक समुन्नति के लिये अत्यन्त उपयोगी व लाभ कारी सिद्ध होगा।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू की वकालत

[ले०—डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, गवर्नर पश्चिमी बङ्गाल

(गतांक से आगे)

दूसरे मामले में हम लोग एक दूसरे के विरोधी थे। कहानी बहुत ही असाधारण और रोचक है अन्तिम अवस्था में यह इतनी हास्यपूर्ण होगई कि ३० वर्ष बीतने पर भी जब मैं इस पर विचार करता हूँ तो हँसी आ जाती है।

यह कहानी सरलता से समझ में आ जाय इस लिए मैं कुछ परिचयात्मक बातें बताऊँगा। पण्डित मोतीलाल की तरह मैं भी कानपुर से आया था और कई वर्ष तक इलाहाबाद के प्रधान न्यायालय में प्रारम्भिक अभ्यास की अवस्था में कानपुर निवासी मुझे छोटे मुकदमों से सहारा देते रहे। कुछ लोग किसी छोटे और नैराश्य जनक मामले में भी अस्वीकृति न पसन्द करते थे। एक दिन ग्रीष्म ऋतु में वृद्धावस्था को प्राप्त नारायन दास नामक व्यक्ति मेरे पास एक मुकदमे का फैसला लेकर आया जिसमें उसकी हार कानपुर में हो चुकी थी। उसने अपील करने की प्रार्थना की। उसने कहा कि मामला बहुत छोटा है और जीतने की कोई आशा नहीं है, परन्तु अपील अवश्य की जाय क्योंकि अगर यही फैसला रहेगा तो उसे वह घर, जो उसके कुटुम्ब ने ५० वर्ष से अधिकृत किया है, छोड़ना पड़ेगा। कानपुर में कोई अच्छा मकान सुलभ न था, वृद्धावस्था आ पहुंची थी। वे कुछ समय चाहते थे कि घर न खाली करना पड़े।

यह केवल अपील करने से ही हो सकता था। मैंने कागज पर गौर किया और मामला पूर्ण रूप से छोड़ देने के योग्य पाया। औरतों में झगड़ा होने के कारण इसका सूत्रपात हुआ था। नारायन दास के तीन पुत्र और एक कन्या थी, उनकी बड़ी सम्पत्ति थी और कई निवास योग्य घर थे। कन्या का विवाह सुशील घराने में हुआ। और पिता ने अपनी कन्या को एक घर में रहने की स्वीकृति दे दी। पिता की मृत्योपरान्त कन्या भाइयों की स्वीकृति से उसी घर में रहती रही। सारी सम्पत्ति के अधिकारी वही लोग थे। म्युनिसिपल रजिस्टर में मकान के अधिकारियों में उनका नाम था वे ही सारा टैक्स देते थे। वे घर का कुछ भाग गाय बाँधने के काम लाते थे। तीनों भाइयों ने सम्पत्ति का बटवारा कर लिया। यह घर उस भाई के अधिकार में आया जो पुत्र रहित था। उसके मरणोपरान्त उसकी विधवा स्त्री इस घर की उत्तराधिकारिणी हुई। इस घर में उसकी ननन्द अपने बच्चों व नातों के साथ रहती थी। मुझे बताया गया कि पहले दोनों में मेल था। लेकिन एक दिन यमुना के किनारे दोनों में कुछ बात चीत हो गई और तब घर की अधिकारिणी ने ननन्द से कहा कि घर से बाहर निकल जाओ। वह घर खाली करने के लिए तैयार न हुई इसलिए यह मामला उठा। इस मामले का कोई स्पष्ट उत्तर न था और न यह कि घर निश्चय रूप से उपहार में ही दिया गया हो। मुद्दालेह के वकीलों ने पर्याप्त समय पाने के लिए

(पं० जवाहरलाल नेहरू)

अवधि दलील पेश की और एक मन्द बुद्धि जज ने इसकी पुष्टि की। जिले के जज के पास अपील हुई। वह हिन्दू था और मामला खतम कर दिया गया। अवधि की दलील का प्रश्न जाता रहा। ऐसे मामलों में गरीब सम्बन्धियों को घर में रहने की स्वीकृति दे दी जाती है इस लिये जिलाधीश ने मकान पर दखल करने का फैसला दिया। नारायन दास स्वयं जानता था कि मामला कमजोर है। लेकिन वह चार मास तक घर में और रहना चाहता था मैंने उनसे साफ कह दिया कि यह मेरी शक्ति के बाहर है अगर मेरी तरह के निम्नकोटि के वकील इसपर बहस करेंगे तो अपील की मंजूरी न होगी। इसलिए किसी प्रमुख श्रेष्ठ वकील की आवश्यकता हुई जिस से कि उसकी प्रतिभा के प्रभाव से प्रारम्भिक कठिनाइयें दूर हो जाँय। नारायनदास तुरन्त मान गए और उन्होंने डाक्टर तेज बहादुर सप्रू को मामले की पैरवी करने के लिए राजी कर लिया अपील एक जज के सामने पेश की गई जो दरख्वास्त मन्जूर करने में बड़े दक्ष थे। डाक्टर सप्रू उठे और बोले कि अब यह का कानूनी प्रश्न है। विद्वान जज ने फिर यही कहा कि मन्जूर, नोटिस जारी हो। एक कठिनाई दूर हुई। बाद में मैंने प्रार्थना की कि न्यायालय की आज्ञानुसार कार्य वाही कुछ समय के लिए रोक ली जाय और इस की स्वीकृति मिल गई। पण्डित मोतीलाल नेहरू ने वकीलों के पुस्तकालय में प्रेम पूर्वक व हास्य पूर्ण शब्दों में मुझसे कहा कैलाश नाथ क्या तुमने कानपुर के हर एक मामले को दायर करने का नियम बना लिया है पहले तो मैं उस बात को नहीं समझा जिसकी ओर उन्होंने संकेत किया। मैंने कहा भाई जी क्या बात है। इस पर उन्होंने कहा वह बूढ़ी औरत आनन्द भवन आई थी। जवाहरलाल की मां से उसने सारा हाल कहा। बाद में उसने मुझसे कहा और मुझे मुकदमा लेना स्वीकार करना पड़ा। इसमें कोई जीत की आशा नहीं है। तुमने कैसे इसकी अपील की। मैंने उनसे सारा हाल बताया और उन्होंने मुद्दालेह की ओर से मुकदमा स्वीकार कर लिया।

८ वर्ष बाद अपील की पेशी प्रधान जज सर हेनरी रिचार्ड्स और जज रफीक के समक्ष हुई। १९१७ के ग्रीष्म का आतंक इलाहाबाद में छाया हुआ था दोनों जज रीत्यानुसार गुलाबजल तरावट के लिए सिर व मुख पर छिड़कते थे ग्रीष्म के ताप से तप्त वकील इस मनोहार पदार्थ का उपयोग इजलास में न कर सकते थे। पण्डित मोतीलाल उन दिनों इलाहाबाद में थे। कदाचित उन्हें उस दिन घर में कोई काम था अथवा उस दिन सिवाय इस अपील के और कोई मामला न था। उन्होंने सोचा कि उनका न्यायालय में उपस्थित होना आवश्यक नहीं है। और मुकदमा जवाहर लाल नेहरू को दे दिया। मेरा विचार है कि उन्होंने कहा कि तुमको सिर्फ न्यायालय में बैठना होगा और बहस करने के लिए तुम्हें न कहा जायगा। जवाहर लाल नेहरू अपने पिता की ओर से कागजात लिये उपस्थित थे। न्याय भवन के कमरे में बड़ी भीड़ थी। मुझसे श्रेष्ठ वकील डाक्टर तेज बहादुर सप्रू मेरे बगल में बैठे थे। अब मैं कथा के वास्तविक रूप को बताऊंगा। डाक्टर सप्रू को और मुझे भली भाँति मालूम था कि मामला बहुत कमजोर है जब मुकदमे की पुकार हुई तो मैंने समझा डाक्टर सप्रू उठेंगे लेकिन उन्होंने मेरी ओर देख कर कहा कैलाश नाथ इसमें कुछ नहीं है तुम उठो और इसे उपयुक्त ढंग से दफन कर दो। इस लिए मैंने उठकर प्रमाण देना प्रारम्भ किया। मैंने तथ्य बतलाया और कई बार दुहराया कि कन्या व उसका परिवार ४० वर्ष से अधिक उस मकान में रह रहा है और नारायनदास वास्तव में उस घर में पैदा भी हुआ था। इसी अवसर पर मैंने देखा कि सर हेनरी रिचार्ड्स को झपकी आ गई। उन्होंने कागजात मुख के सामने रक्खा और वे सो गए। सहयोगी जज ने भी यह देख लिया। यदि दोनों जज सो जाते तो बेतुकी बात होती। जज मी रफीक ने जिनकी ओर देख कर मैं बात कर रहा था मुझसे बड़े टेढ़े सवाल पूछे। मैं उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न कर रहा था। बात चीत हो रही थी कि सर हेनरी के मुख के सामने के कागज फड़फड़ाने लगे वे प्रयत्न कर जग गए और यह दिखाने का प्रयत्न करने लगे कि वास्तव में वे सो नहीं रहे थे किन्तु बराबर मामले पर गौर कर रहे थे। मैंने देखा कि वे अर्जी दावा पढ़ रहे थे जिसमें परीक्षा की ... नारायन दास अवस्था ६५ वर्ष लिखी हुई थी। जब वे सोने के ही करीब थे तो मेरे आखिरी शब्द थे श्रीमान् नारायनदास इसी घर में पैदा हुआ था। उन्होंने इस पर विचार किया पत्रा पुनर्वार उलटा और यकायक मेरी ओर देख करके बोले क्या तुमने यह कहा कि नारायन दास उसी घर में पैदा हुआ था? मैंने कहा जी हाँ, श्रीमान्—ऐसा ही है।

प्रधान जजः—

लेकिन नारायनदास की अवस्था ६५ वर्ष की है।

कैलासनाथ काटजूः—

श्रीमान्। मेरा संकेत ठीक इसी ओर है। गत ५० वर्ष से कुटुम्ब इस घर में रहा है और बच्चे व पोते भी यहीं पैदा हुए हैं।

प्रधान जजः—

"अमुक, बेतुकी बात, दूसरी ओर से कौन उपस्थित है?" इसके पूर्व कि मैं अपनी दलील की पुष्टि के लिये निर्थक वाद करता, डाक्टर सप्रू ने मेरा अचकन (चोग) खींचा और मुझसे धीरे से कहा फौरन बैठ जाओ और मैंने ऐसा ही किया और तब जवाहर लाल को उठना पड़ा। सर हेनरी रिचर्ड्स बड़े कुशल और प्रसिद्ध जज थे। भारत में ४० वर्ष के अनुभव

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महाराज दण्ड

(४)

[श्री आचार्य नरदेव शास्त्री]

जब हमारा दण्ड हमारे हाथों में नहीं रहा, अथवा यूँ कहिए कि हम ने अपने अन्याय, अनीति, दुर्बलता से दण्ड को हाथ से खो दिया। फिर काल प्रभाव से वही दण्ड अंगरेजों के हाथों में गया। वही दण्ड फिर, कर्म धर्म संयोग से आज भारतीयों के ही हाथ में आगया है - यदि भारतवासी अपनी पुरानी त्रयी (वेदविद्या) वार्ता (कृषि, व्यापार, पशुपालनादि) विद्या दण्डनीति अर्थात् शासन तथा दण्ड विधान नीति को अपनायेंगे तो प्राप्त हुई हुई स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकेंगे। इस विषय में सर्वथा विदेशी अनुकरण हमारे देश के लिए हानिकारक सिद्ध होगा हमको हमारी ही दण्डनीति अपेक्षित है। दुर्दैव से अभी हमारी दण्डनीति विदेशी ही चल रही है। जब राज्य प्रणाली विदेशी है तब उस विदेशी पद्धति के साथ स्वदेशी दण्डनीति का निर्वाह असम्भव है।

यह जो नया विधि विधान बनगया है इस के बनाने में विदेशी राष्ट्रों की भिन्न भिन्न पद्धतियों का सम्मिश्रण है। हमको धर्म चाहिए पर वही अपना धर्म हो। हमको अर्थ चाहिए पर वह हमारे धर्मानुरूप हो। हमें काम अर्थात् इच्छायें चाहिएँ पर ऐसी इच्छाएँ नहीं चाहिएँ जिन से स्वधर्म, स्वअर्थ तथा स्वराष्ट्र का नाश हो। इस लिए स्वराज्य तथा स्वतन्त्रताके प्राप्त होनेपर भी प्राचीन वैदिक रीति नीति के उपासकों का कर्तव्य है कि जागरूक रहकर अपनी पद्धति को लाग तथा मनवाने का यत्न करें। हम संसार की जनता से कह सकें कि —

राष्ट्रे वयं जागृयाम।
पुरोहिताः स्वाहा॥
(अथर्व)

हम आर्य) राष्ट्रके पुरोहित हो कर जाग्र रहे हैं। स्वकर्तव्य पालनमें तत्पर हैं। इसलिए घबराओ मत। हम दावा करते हैं कि हमारे वेद संसार को सीधे सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन करा सकेंगे। हम कहते हैं कि वेद में ही सब कुछ है, वेदों से ही सब का कल्याण होगा। संसार को सब सुखसामग्री वेदों से ही मिलेगी। क्यों

लेखक

कि वेदों में मनुष्य के कल्याणोपयोगी समस्त साधन-सामग्री है। वेद ही बतला रहा है कि सच्ची स्वतन्त्रता क्या वस्तु है वेद ही बतला रहा है कि राजा को कैसा होना चाहिए। प्रजा को कैसा वर्तना चाहिए। दोनों के परस्पर सम्बन्ध कैसे होने चाहिएँ। वेद ही प्राणिमात्र को सुख पहुँचाने की शक्ति रखता है।

खेद है घर में वेद निधि जैसा अक्षय्य कोष रहते भी आर्य लोग अन्यों के संमुख दीनता पूर्वक हाथ पसार रहे हैं। इनका अपने वेदों में शास्त्रों में, अपेक्षित श्रद्धा नहीं है नहीं तो आँखें खोल कर देखें कि मानव धर्म शास्त्र क्या कहता है। संसार भर को किसी समय चरित्र-शिक्षा देने की प्रतिज्ञा करके संसार भर के लोगों को आह्वान देने वाला भारत, आर्यावर्त्त ब्रह्मावर्त्त आज दण्ड नीति के बिना निस्तेज हो रहा है —

चलो एक सहस्र वर्ष की दासता के पश्चात् ही सही फिर हम स्वतन्त्र हैं फिर समय ने पलटा खाया है। देश का नाम फिर भारत पुकारा जाने लगा है हिन्दी आ रही है, देवनागरी बल पकड़ रही है, संस्कृत का नाम फिर गौरव पूर्वक लिया जाने लगा है—अब वेद भी आयेंगे, वेदों के साथ वेदों की सेना भी आरही है आशा है भारत के दिन फेर फिरेंगे।

पं० जवाहरलाल की वकालत

(पृष्ठ ५ का शेष)

में मैंने उनको बहुत ही बुद्धिमान और प्रवीण जब पाया वे अधर हो उठते थे और अपनी इच्छानुसार न्याय करने की इच्छा से वे सब कठिनाइयों और रुकावटों को परास्त कर देते थे। जवाहर लाल ने धीरे से कहना शुरू किया:—तथ्य की जानकारी हासिल करने के लिये मामला स्पष्ट है कि जिलाधीश ने अधिकार के प्रश्न को प्रमाणित ठहराया जिसके लिये केवल स्वीकृति मौखिक रूप से दी गई थी। सर हेनरी रिचार्ड ने असंदिग्ध रूप से कहा हां मैं जानता हूँ। वह तथ्य की जानकारी हासिल करना है और हम इसमें दखल नहीं दे सकते। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह तथ्य की जानकारी प्राप्त करने का प्रतिकूल ढङ्ग है। मुद्दई के पक्ष में कोई न्याय नहीं है। इस तरह कहते हुये सर, हेनरी रिचार्ड ने यकायक कहा लेकिन तुम एक महिला हो—इस मामले में तुम कैसे प्रकट हुये! जवाहर लाल ने संकेत किया कि तीन भाइयों में बटवारा हुआ था और उनके मुवक्किल को अपने पति से उत्तराधिकार में वह घर मिला था, लेकिन प्रधान जज ने एक भी न सुनी। "यह संयुक्त परिवार की सम्पत्ति है। संयुक्त परिवार में हिन्दू महिला को उत्तराधिकार नहीं मिल सकता। तुमको तीनों भाइयों में बटवारा साबित करना होगा।

इस पर जवाहर लाल ने जिलाधीश के फैसले के एक या दो वाक्य उद्धृत किया। लेकिन सर हेनरी बड़े हठी थे।

"यह केवल अतर्किक आलोचना है। यह जानकारी का तरीका नहीं है। साबित करो जैसा तुमने अपनी बहस में संकेत किया है। तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ।" बटवारे का क्या प्रमाण है! इस तरह और भी बहुत कुछ कहा।

जवाहर लाल नेहरू ने तब बहस की कि इस बात को मुद्दालेह ने कभी अस्वीकार नहीं किया है और यदि न्यायालय समझे कि वह उचित रूप से नहीं रक्खा गया तो छोटी कचेहरी में मुकदमा वापस जाय ताकि ठीक फैसला इस पर हो जाय।

सर हेनरी ने कुछ नहीं सुना और उग्र होकर कहा यह ऐसा मामला है कि अदालत तुम्हारी मदद तनिक भी नहीं कर सकती यह तुम्हारा काम था कि तुम नालिश में अन्य ठीक तौर से पेश करते कि उसका कोई परिणाम निकलता और वह साबित हो सकता। इस अवस्था में नीचे की कचेहरी में हम मुकदमा नहीं भेज सकते।"

(क्रमशः)

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव

(कुछ सुझाव)

धर्मदेव शास्त्री दर्शन केसरी, अशोक आश्रम, कालसी (देहरादून)

वर्षों के बाद मैं आर्यसमाज सहारनपुर के वार्षिकोत्सव पर गया। यह उत्सव हाल ही ४ से ६ नवम्बर तक हुआ है। आर्यसमाज के उत्सवों पर ८ वर्ष पूर्व तक मैं बहुत जाता रहा, परन्तु मैंने देखा कि उत्सवों का वर्तमान रूप उपयोगी न होने से शक्ति और समय का सदुपयोग नहीं हो पाता। इधर गत आठ वर्षों से मेरा अधिकतर समय हिमालय के अर्धबहिष्कृत प्रदेश जौनसार बावर में बीता है। आर्यधर्म का प्रचार मूकरूप से रचनात्मक पद्धति पर किस प्रकार से हो सकता है। इसका कुछ प्रयोग मैंने किया है। अब मैं समझने लगा हूँ कि ईसाई मिश्नरियों को अपने कार्य में क्यों सफलता मिलती है और हम लोग क्यों नहीं सफलता प्राप्त कर सकते। शहरों से बहुत दूर और यातायात की सुविधा से अपूर्ण जंगलों और पहाड़ों में अपने आपको भूले हुए और देशवासियों द्वारा भुलाई हुई तथाकथित आदिम जातियां आज ऋषि दयानन्द के संदेश को सुनने के लिये लालायित हैं। जिन जातियों में योरोप और अमेरिका से आकर सुयोग्य ईसाई मिश्नरी वर्षों तक पड़े हैं उन में आज आर्य धर्म के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। देश के स्वतन्त्रता के साथ ईसाई मिश्नरियों का आतंक और प्रभाव बहुत कुछ कम होगया है। ईसाई धर्म प्रचारक पहले जितने उत्साह पूर्ण नहीं हैं। ऐसे अवसर पर विविध प्रान्तीय आर्य समाजों को अपने प्रान्त में तथाकथित आदिम जातियों के प्रदेश को अपने सुरक्षित प्रचारकों के द्वारा आर्य धर्म के प्रचार का महान् परिक्षाकेन्द्र बना लेना चाहिये। ऐसा करना राष्ट्र के सुदूरगामी हित में उपकारक होगा। और साथ आर्यसमाज के हित में उपयोगी होगा। मैं शक्तिभर गत आठ वर्षों से इसी प्रकार का कार्य कर रहा हूँ। वर्षों बाद अब मैं आर्यसमाजके एक वार्षिकोत्सव पर ५ नवम्बर को पहुंचा तो प्रसन्नता और दुःख दोनों का अजीब मिश्रण हुआ। सहारनपुर आर्यसमाज का यह ७१ वां वार्षिकोत्सव था। जहां तक मुझे मालूम है सहारनपुर आर्यसमाज लगातार प्रति वर्ष निश्चित रूप से अपना वार्षिकोत्सव मना रहा है। किसी संस्था का ७१ वर्ष तक लगातार कार्य करते रहना अपने आप में बड़ी बात है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के विद्वान् वक्ता प्रायः देश और समाज के लिये उपयोगी विचार देते हैं। यह भी कम विचार की बात नहीं। इतना होने पर भी सहारनपुर जैसे बड़े शहर में वर्ष में एकबार होने वाला उत्सव जिस रूप में होना चाहिये था, वह हमें न दिखाई दिया। इस बात में जनता को दोष देना ठीक नहीं। हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिये। मेरा विश्वास है कि यदि आर्यसमाजों के अधिकारी अपने वार्षिकोत्सवों में थोड़ा सा सामयिक परिवर्तन स्पष्ट नीति निर्धारण करलें तो उत्सवों से काफी लाभ उठाया जा सकता है। मैं विचारार्थ इस सम्बन्ध में निम्न सुझाव उपस्थित करता हूं।

(१) प्रत्येक आर्यसमाज अपने कार्य क्षेत्र की सीमा निश्चित करलें। जिस प्रकार मण्डल कांग्रेस कमेटी एक निश्चित ग्राम क्षेत्र में कांग्रेस का संदेश पहुंचाने के लिये उत्तरदायी है। इसी प्रकार आर्य समाजों का भी क्षेत्र निश्चित होना चाहिये। अपने अपने क्षेत्रमें आर्यसमाज के कार्य क्रम को पूरा करने का उत्तरदायित्व उस समाज का होगा।

प्रत्येक आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव अपने कार्य क्षेत्र में आर्यसमाज के संदेश को व्यापक बनाने तथा जनता में लोकप्रिय बनाने केउद्देश्य से किया जाना चाहिये।

उत्सवों का कार्यक्रम दो प्रकार का रहना चाहिये। प्रथम आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर पूर्ण आस्था रखनेवाले आर्य पुरुषों के लिये; और दूसरे साधारण जनता के लिये। प्रथम कार्य क्रम आर्यसमाज मन्दिर में और दूसरा सार्वजनिक स्थान में होना चाहिये सार्वजनिक कार्य क्रम को जनप्रिय बनाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिय। यथा सम्भव लाउडस्पीकर आदि का भी प्रबन्ध करना चाहिए।

उत्सव की पूर्ण सफलता इस बात में समझी जानी चाहिये कि आर्य परिवारों में परस्पर स्नेह वृद्धि हो और आर्य पुरुष नित्य नैमित्तिक कर्म नियमपूर्वक करने के लिये नया उत्साह प्राप्त करें। तथा सर्वसाधारण जनता आर्यसमाज के समाज सुधार और सांस्कृतिक कार्यक्रम में रुचि लेने लगे।

(३) उत्सवों में यथा सम्भव जो संगीत और भजन हों वह कलात्मक दृष्टि से रहा न होने चाहियें। ललितकलाओं के साथ जो हम आज तक उपहास करते रहे हैं वह समाप्त होना चाहिये।

हारमोनियम ने आर्यसमाज के प्रचार में जो योग दिया है उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए भी हम इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि हारमोनियम भारतीय संगीतका सब से बड़ा शत्रु है। भारतीय संस्कृति के महान् समर्थक आर्य समाज के लिये उत्सवों पर दिखाई देने वाली संगीत के प्रति उपेक्षा शोभावह नहीं।

आज कल सिनेमा के तर्जपर गाना गाने का खूब प्रचार हो रहा है। हमारे विचार से आर्य समाज को इस प्रवाह से बचाने की आवश्यकता है।

उर्दू फारसी मिश्रित भाषा की कविताएँ और शेर आर्यसमाज के मञ्च से जब सुनने को मिलें तो कानों को बहुत अखरते हैं।

यदि कलात्मक संगीत का प्रचार हो तो आर्य समाज के भजनोपदेशक भजन के साथ उपदेश देने की आवश्यकता नहीं समझेंगे। तब संगीत पूरा प्रभाव उत्पन्न कर सकेगा।

(४) उत्सवों पर सम्मेलन करने की प्रथा अच्छी है। सम्मेलनों में स्थानीय—प्रभावशाली व्यक्तियों को निमंत्रित करना चाहिये। ऐसा करने से आर्य समाज के हितैषियों में वृद्धि हो सकती है। सम्मेलनों में ऐसा भी एक सम्मेलन करना चाहिये जिसमें स्थानीय शिक्षक और शिक्षार्थियों को आर्य समाज के कार्यक्रम में रुचि दिलाई जा सके। मद्य निषेध और कुरीतिनिवारण सम्मेलन भी उत्सव में होने चाहियें। कुरीतिनिवारण सम्मेलनमें स्थानीय कुरीतियों की कड़ी आलोचना स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों से करानी चाहिये।

ग्रामीण क्षेत्रों में वार्षिकोत्सवों पर पञ्चायत सम्मेलन करने की प्रथा डालनेकी आवश्यकता है। पञ्चायतों के द्वारा ऋषिदयानन्द के संदेश को गाँवों में पहुँचाना इस सम्मेलन का उद्देश्य होना चाहिये।

मैंने ऊपर उत्सवों के सम्बन्ध में जो सुझाव दिये हैं उन पर आर्य पुरुषों को और आर्य समाज के अधिकारियों को ध्यान देना चाहिये। उत्सव आर्य समाज का महान् प्रचार साधन है। इससे हम पूरा पूरा लाभ उठावें तो बहुत कुछ हो सकता है।

आर्यवीर दल सूचना

आर्यवीर दल के समस्त अधिकारियों को विदित हो कि दल की कार्यकारिणी समिति के निश्चयानुसार उन व्यक्तियों को भी दल का सदस्य बनाया जा सकता है जो कि दल की विचारधारा से सहमत हों और दल की शाखा अथवा साधना मन्दिर में नित्य आने में असमर्थ हों। इसके अतिरिक्त दल के वह व्यक्ति भी सदस्य बनाये जा सकते हैं जो कि दल कार्य को अच्छा समझकर उसे शारीरिक मानसिक, व आर्थिक सहयोग देना चाहते हों। ऐसों को दल के "सहायक सदस्य" कहा जायगा। तीसरे वे व्यक्ति भी सदस्य बन सकेंगे जिनको दल प्रतिष्ठित समझता हो और वे समय २ पर दल को अपने उपदेश अथवा आशीर्वाद से सहयोग देते रहें और दल के उद्देश्य से पूर्णतः सहमत हों।

—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

ऋषि दयानन्द के वेद-भाष्य के विरुद्ध प्रचार

[आचार्य विश्वश्रवाः]

इस वर्ष के आर्यमित्र के ऋष्यङ्क में एक लेख श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु का ऋषि दयानन्द के वेद-भाष्य के सम्बन्ध में छपा है जिसका शीर्षक है—

"ऋषि दयानन्द कृत वेद-भाष्य की स्थिति"

इस लेख को पढ़कर मेरा सिर घूम गया। फिर ध्यान से लेख पढ़ा और सोच विचार कर एक जिज्ञासु जी की सेवा में भेजा जिसका अभी तक मुझे कोई उत्तर नहीं मिला है। प० ब्रह्मदत्त जी ने अपने लेख में रामानन्द ब्रह्मचारी का एक पत्र छापा है जो पत्र प० जी के कथन के अनुसार ऋषि दयानन्द की मृत्यु के दो मास पश्चात् का है। इस पत्र के अनुसार—

१—ऋषि के जीवन काल तक ऋग्वेद १ मण्डल ८३ सूक्त ५ मन्त्र तक ही छपा था और यजुर्वेद १५ अध्याय के ११ मन्त्र तक ही मुद्रित हो पाया था। शेष सारा वेद-भाष्य ऋषि की मृत्यु के पश्चात् ही छपा है।

२—शेष सारा ऋषि दयानन्द का किया वेद-भाष्य अशुद्ध संस्कृत में था जो प० ज्वालादत्त आदि पण्डितों ने स्वयं शुद्ध संस्कृत में करके छापा है।

३—रामानन्द ब्रह्मचारी का यह पत्र 'पण्डित भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन नामक पुस्तक में छपा हुआ है, ऐसा जिज्ञासु जी के लेख में है।

(मीमांसा)

१—ऋषि का वेद भाष्य स्वामी जी के जीवन में कितना छपा और मृत्यु के पश्चात् कितना छपा यह बात परोपकारिणी सभा अजमेर जान सकती है अतः मैंने एक पत्र दीवान बहादुर बा० हरविलास जी शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर को लिखा। उसका उत्तर श्री पूज्य बा० हरविलास जी शारदा का मुझे यह मिला है कि—

"प० ब्रह्मदत्त जी का यह विषय परोपकारिणी सभा की अन्तरङ्ग में पेश करूँगा"। यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि कुछ दिन पूर्व प० ब्रह्मदत्त जी ने ऋषि दयानन्द कृत वेद-भाष्य के दश अध्याय रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा छपे थे। जब पं० जी ऋषि दयानन्द कृत वेद-भाष्य को कपूर ट्रस्ट द्वारा छापने का विचार कर रहे थे तब उन्हें इस बात की आवश्यकता थी कि अजमेर में जाकर ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य के हस्त लेखों को देखें अतः बा. हरविलास जी शारदा ने जिज्ञासु जी की प्रार्थना पर हस्तलेख देखने को दे दिये, परन्तु दश अध्याय ही छप पायें और फिर मालूम हुआ कि प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु का और श्री बा० हरविलास जी शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर का बहुत बड़ा मत-भेद पैदा हो गया और परोपकारिणी सभा ने प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु को हस्तलेख दिखाना बन्द कर दिया यह समाचार स्वर्गीय श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी ने मुझे सुनाया तब उस समय भी मैंने एक पत्र परोपकारिणी सभा अजमेर को लिखा था उसका उत्तर श्री बा० हरविलास जी शारदा ने मुझे यह दिया था कि—

"क्यों कि प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने स्वामी जी के वेद भाष्य में कुछ परिवर्तन किये हैं अतः परोपकारिणी सभा प० ब्रह्मदत्त जी से नाराज है और अब हस्तलेखों को नहीं दिखावेगी"।

अब प० ब्रह्मदत्त जी ने अपने इस ऋष्यङ्क के लेख के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि उन्हें वेद-भाष्य के हस्त लेखों को अब देखने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि छपे हुए वेद भाष्य की संस्कृत ज्वालादत्त आदि की शोधी हुई है अब जिज्ञासु जी शोध सकते हैं, प० सातवलेकर जी शोध सकते हैं, प० विश्वबन्धु जी भी शोध सकते हैं।

अब मैं अपने मित्र पं० ब्रह्मदत्त जी से पूछना चाहता हूँ कि आप में और प० सातवलेकर जी की यू. पी. सभा की स्वर्ण जयन्ती मेरठ में कही बात में क्या अंतर है। सातवलेकर जी का भी यही कहना था कि देवता आदि वैदिक यन्त्रालय में अशुद्ध छप गये हैं ठीक कर लो। इस मतभेद का होना बड़ी बात नहीं कि आप कुछ शुद्ध करें और सातवलेकर जी कुछ शुद्ध करें। मुझे दुःख है कि पं० जी की लेखनी से ऐसा लेख कैसे निकल गया। पं० ब्रह्मदत्त जी मेरे परम मित्र हैं। मैं उन्हें अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखता हूं। हम कुछ पण्डित दयानन्दी कहाते थे उनमें वो सर्वशिरोमणि थे। अब मैं जहाँ जाता हूं लोग कहते हैं कि कहिये पढ़ लिया दयानन्दी पण्डितों का लेख ? तब मेरा सिर लज्जा से नीचा हो जाता है यदि पं० जी इसका स्पष्टीकरण कर दें, तो सबका समाधान हो जाय।

२—'इस भाष्य की भाषा को पण्डितों ने बनाई संस्कृत को उन्हीं ने शोधा" यह जो स्वामी जी के वेद-भाष्य पर छपा चला आ रहा था यह बड़ी साधारण बात है। इस सम्बन्ध में एक पृथक लेख लिखूँगा। इसके समझने में प० जी को भूल हुई। इसीलिये रामानन्द ब्रह्मचारी के नाम का लेख छाप दिया।

३—प० ब्रह्मदत्त जी ने अपने लेख में लिखा है कि यह पत्र पं० भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन में छपा है। यह बात बिलकुल असत्य है। मैंने प० भगवद्दत्त जी का सारा ग्रन्थ ढूंढ़ा उसमें कहीं भी यह पत्र नहीं छपा है। महाशय मामराज जी को भी मैंने एक पत्र लिखा उसका उत्तर मामराज जी ने मुझे यह दिया कि मुझे एक पत्र ऐसा मिला था वह मैंने जिज्ञासु जी को दे दिया, परन्तु आप दोनों परस्पर संघर्ष न करें यह पत्र पं० भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ में नहीं छपा है ऐसा मामराज जी ने मुझे लिखा। प० ब्रह्मदत्त जी के लेख का भाषा इस स्थान की कुछ गड़बड़ाई हुई है। कपूर ट्रस्ट का नाम वे बताना चाहते थे पर वह वाक्य ठीक नहीं हो पाया।

'ऋषि दयानन्द के जाली पत्र'

श्री पं० भगवद्दत्त जी बी. ए. वैदिक रिसर्च स्कालर के ग्रन्थ से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करके यहाँ लिखता हूँ पाठक ध्यान देवें—

कृत्रिम पत्र

जातपात तोड़क मण्डल की आड़ में वेदमत का नाश करने वालों का एक दल लाहौर में है। उनके प्रमुख सदस्यों के नाम सुप्रसिद्ध हैं उन्हीं में से किसी या किन्हीं के परामर्श से "हिन्दी ताप कानपुर" में ऋषि के नाम से दो पत्र छापे गये। दूसरा पत्र १९ दिसम्बर सन् १९२९ को छपवाया गया था। इन दोनों पत्रों की भाषा श्री स्वामी जी की भाषा से सर्वथा भिन्न और वर्तमान काल की भाषा है। पत्रों का विषय भी स्वामी जी के सिद्धान्तों से सर्वथा विपरीत हैं। पत्रों में ऐतिहासिक सत्यता के विपरीत कल्पना है। यथा दूसरा पत्र १९४० विक्रमी कार्तिक बदी प्रथमा (१७ अक्टूबर सन् १८८३ बुधवार) को अजमेर से लिखा हुआ छापा गया है। उस दिन श्री स्वामी जी महाराज अजमेर में नहीं थे। उन दिनों श्री स्वामी जी की अवस्था इतनी निर्बल थी कि वे बोलते भी नहीं थे। इसलिये जिस दल ने ये पत्र बनाये हैं निश्चित होता है कि श्री स्वामी जी के इतिहास के विषय में उनका ज्ञान कुछ भी नहीं था)।

(पृष्ठ १८ भूमिका)

श्री जिज्ञासु जी का यह कर्तव्य था कि इस सम्बन्ध में पहले अपने साथियों से विचार कर लेते कि कहीं यह पत्र जाली तो नहीं है। और यदि प० जी इसे ठीक भी समझते तो भी मैं छापने से रोकता। क्योंकि लोग वेद भाष्य में अशुद्धियां निकालते हैं और आप उनका समाधान नहीं कर पाते तो आपको भी अशुद्धियां ही दीखने लग गईं। यह कोई बहादुरी नहीं है। आपका परम मित्र और सहायक आचार्य विश्वश्रवाः अभी जीवित है जिसने सब कार्यों को छोड़कर ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य को जीवन का लक्ष्य बनाया हुआ है।

निवेदन

—कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण मैंने श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़) के आचार्य पद से अकस्मात् त्यागपत्र दे दिया है। अत वहाँ के पते पर कोई मेरा पत्र व्यवहार न करें।

देवीशरण आचार्य,

आ० स० राजामंडी आगरा

—आ० स० राजामंडी आगरा में २१ अक्टूबर को प्रात काल ७॥ बजे से यज्ञ हुआ तत्पश्चात् पं० कृष्ण प्रसाद भार्गव की अध्यक्षता में आगरे के चारों आर्य समाजों को ओर से ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया जिसमें नगर के गण्यमान्य नेताओं के ऋषि दयानन्द के जीवन पर भाषण हुये तथा आर्य कन्या पाठशालाओं की कन्याओं ने सगीत सुनाया। उत्सव की समाप्ति पर समस्त उपस्थित जनता को प्रसाद वितरण किया गया।

इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा समाज सुधार सम्मेलन हुये अनेक विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण भाषण हुये।

शोक

—ता० ३ अक्टूबर की को श्री साहू रामाशंकर जी गांधी, मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ज़िला मुरादाबाद व भूतपूर्व उप-प्रधान आर्य समाज अगवानपुर की निर्मम और नृशंस हत्या कर दी गई। साहू साहब के निधन से आर्य समाज अगवान पुर अत्यन्त शोकाकुल है। साहू साहब का आर्य समाज के प्रति प्रेम, सेवा भाव और सौम्य स्वभाव की स्मृति आर्य पुरुषों के हृदय पटल पर चिरस्मरणीय रहेगी यह समाज उनके दुखी परिवार के साथ समवेदना प्रकट करती हैं। और भगवान से प्रार्थना करती हैं कि वह उनकी आत्मा का परम शान्ति प्रदान करें।

शुद्धि समाचार

—एक हिन्दू स्त्री जो कि तीन साल से मुसलमान हो गई थी एक गांव में हमीद नाम का एक आदमी उसे बेच गया। वह वहाँ से आर्य समाज सरकड़ा बिजनौर में आ गई वहाँ श्री हरिदेव जी के प्रयत्न से उनकी शुद्धि करके श्री डा० वृन्दावन जी के साथ उसका विवाह संस्कार करा दिया। स्त्री हिन्दी का दर्जा चार पास है उसका नाम कालिन्दी है उम्र २५ वर्ष की है।

आ० स० खुर्जा

—आ० समाज खुर्जा का सुवर्ण जयन्ती उत्सव ६ अक्टूबर से ९ अक्टूबर तक बड़े समारोह से हुआ श्री स्वामी वेदानन्द जी श्री स्वामी केवलानद जी, श्री हरिदत्त जी, M ‸ शास्त्री, श्री वासुदेव जी शास्त्री, श्री कु. सुखलाल श्री प. अमरसिंह जी श्री महाशय शिवलाल जी, के उपदेश तथा व्याख्यान हुए जनता हजारों की सख्या में सत्सग में आई

इस अवसर पर गोवध निषेध, मादक द्रव्य निषेध, तथा वनस्पति तैल के विरोध में प्रस्ताव पास किये गये।

आर्य कुमार परिषद्

—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् ने अपने ४० वें वार्षिकोत्सव पर युवकों की उन्नति के लिये—

स्वाध्याय व व्यायाम केन्द्र स्थापित करने तथा सामूहिक भ्रमण योजनाओं की रूप रेखा बनाई।

शोक समाचार

—विस्कोहर बाज़ार के प्रचारक कविवर रामलखण आर्य सि. शास्त्री वैद्य-विशारद की माता का देहान्त ७-११-४९ सोमवार को शाम को हो गया अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यानुसार किया गया परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को शान्ति दे और उनके दुखी परिवार को धैर्य्य प्रदान करें

गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद

—गुरुकुल सिकन्दराबाद श्याम नगर मण्डी की वेद सभा के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान श्री पं० दिलीप दत्त जी शर्मा उपाध्याय, उप प्रधान श्री पं० लखान दत्त, जी शर्मा आयुर्वेदभास्कर, मंत्री श्री कृपाशंकर जी शर्मा शास्त्री आयुर्वेद विमर्श, कोषाध्यक्ष श्री मास्टर हरवंश सिंह जी, सदस्य श्री पं० रामकला जी, सदस्य डा० महादेव वर्मा आयुर्वेद भास्कर, उपमंत्री हरिदत्त जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य,

—श्री मान् उदयराम जी आर्य अजमेर का शुभ विवाह श्री मान् शंकरनारायण जी मद्रास निवासी की सुपुत्री के साथ पूर्ण वैदिक रीति के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। वर पक्ष की ओर से विभिन्न संस्थाओं को ६७ रु० दान दिया गया

आर्य समाज के उप नियमों में संशोधन

सार्वदेशिक सभा ने १९३५ में पहली बार आर्यसमाज के उपनियमों में सशोधन किया था अब व्यवहार से यह सिद्ध हुआ है कि इन सशोधित नियमों में भी सशोधन की आवश्यकता है। एतदर्थ सभा ने पान्डु लिपि तैयार करने के लिये एक उप समिति नियुक्त की है। समिति के सयोजक श्री पं० रामदत्त जी शुक्ल हैं। आर्य समाजों, तथा आर्य नर नारियों से निवेदन है कि वे अपने २ सुझाव श्री शुक्ल जी की सेवा में ५ हिव्टन रोड लखनऊ के पते पर वा सभा के कार्यालय को शीघ्र से शीघ्र भेज देवें। वैधानिक पन्डितों से विशेष रूप से प्रार्थना है कि वे सशोधनों पर विचार करके और अपने सुझाव भेजकर इस कार्य में योग देने का कष्ट करें।

गंगाप्रसाद, उपाध्याय, एम०ए०
मंत्री
सार्वदेशिक, आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

दैनिक-संजय

—प्रसन्नता की बात है कि सजय जो अब तक साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होता था वह दीपावली के शुभ पर्व से दैनिक रूप में प्रकाशित होने लगा है। "संजय" भारतीय संस्कृति के प्रचारक पत्रों में प्रमुख स्थान रखता है। आशा है यह पत्र देश की प्रगति में अधिक सहायक होगा।

आर्य समाज भिवानी

—गत ता० ४ से ६ नवम्बर तक आर्य समाज भिवानी का ३४ वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से हुआ। इस वर्ष उत्सव आर्य समाज मदिर में न करके कटला ला० नन्दूराम जी के विशाल प्रांगण में किया गया था। इस उत्सव में अन्य अच्छे अच्छे उपदेशकों तथा भजनीकों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा दैनिक प्रताप के अध्यक्ष श्री युत म० कृष्ण जी भी पधारे थे। आप को ५०१) की थैली आर्यसमाज की ओर से वेद प्रचारार्थ भेंट की गई।

—आर्यसमाज नानपारा जिला बहराइच निवासी बाबू चन्द्रिका प्रसाद जी आर्य का १५, २० रोज ज्वर आने के पश्चात ता० ३०-९-४९ को स्वर्ग वास हो गया जिससे इस समाज को महान क्षति पहुँची है आप इस समाज के एक अनुभवी और उत्साही व्यक्ति थे। यह आर्य समाज आप के दुखी परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें

शुद्धि

—२१ अक्टूबर दीपमालिका (ऋषि निर्वाण) दिवस के पुण्य पर्व पर एक नवयुवक नव मुस्लिम की शुद्धी आर्य समाज बिलासपुर में की गई शुद्धी में लगभग २०० आदमी उपस्थित थे।

—गया २५ ९-४९ गया आर्य समाज की यह सभा बिहार शरीफ निवासी श्री महेशनाथ जी आर्य की दुखद मृत्यु पर शोक प्रस्ताव करती है, और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा शांन्ति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य बँधाये।

ऋषि निर्वाण दिवस

आरा—आर्य कुमार सभा आरा द्वारा आयोजित श्री दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह के साथ श्री पन्नालाल गुप्त आर्य प्रधान मन्त्री के निवास स्थान पर माननीय प० मेधा तिथि जी के सभा पतित्व में मनाया गया कार्यवाही यज्ञ हवन तथा भजन के बाद शुरू की गई थी

जिला आर्य सम्मेलन

—मुजफ्फर नगर मे एक वृहद् आर्य सम्मेलन ता० १९-२०-२१-२२ नवम्बर ४९ तक माननीय श्री युत बाबू घनश्याम सिंह जी गुप्त स्पीकर असेम्बली मध्य प्रदेश की अध्यक्षता मे बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है इस अवसर पर श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी स्वामी विवेकानन्द जी राजगुरु श्री पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री प्रधान आ० प्र० सभा यू० पी० म० कृष्ण जी कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी श्री मती लक्ष्मीदेवी जी आचार्या श्री मती प्रभावती देवी जी काव्य तीर्थ आदि २ नेता उपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं।
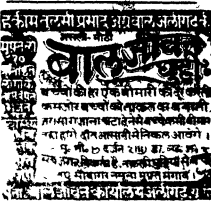
आर्य नेता की माता की मृत्यु

—बिहार प्रांत के आर्य नेता, सार्वदेशिक सभा क सदस्य मोतीहारी म्युनिसिपैलटी के चेयरमैन श्री जगन्नाथ प्रसाद चौधरी की मांगता का स्वार्गवास ८५ वर्ष की आयु में दिपावली की शाम को हों गया। उनका अन्त्येष्टि सस्कारादि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। गरीब दुखियों के भोजन के अतिरिक्त उन्होंने स्थानीय तथा बाहर की भिन्न भिन्न आर्य संस्थाओं को ५०१ दान में दिया।

आर्य जनता को एक सूचना

—श्री दयानन्द वेद प्रचार मण्डल जो सन्यास वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की शाखा है कार्यालय अम्बाला छावनी से विशेष कारणों से बदल कर सार्वदेशक दयानद सन्यास बानप्रस्थ आश्रम ज्वाला पुर में आ गया है। पत्र व्यवहार इसी पते से करें।

—"गुरुकुल सिकन्दराबाद की प्रबन्ध कर्त्री सभा श्री ठाकुर बलभद्र सिंह जी बी०ए० एम० एल० ए० भूतपूर्व प्रधान व गुरुकुल के सच्चे हितैषी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक तथा उनके परिवार के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है, और तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी वियुक्त आत्मा को चिरशान्ति एवं सन्तप्त परिवार को धैय प्रदान करें।

—आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर का पन्द्रहवाँ वार्षिकोत्सव दीपावली के शुभ अवसर पर २१ से २४ अक्टूबर तक अपूर्व समारोह से मनाया गया। जिसमें प्रतिदिन तीन सभायें होती रहीं। अर्थात् मध्याह्न में भी चार घण्टे का विभिन्न सम्मेलनों के रूप में कार्यक्रम सफलता पूर्वक चलता रहा। डा० बृजेन्द्र स्वरूप जी एम एल सी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन मनाया गया। इसी अवसर पर आर्य स्त्री समाज का उत्सव भी पूर्ण समारोह से मनाया गया। उत्सव में श्री राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा जी, प्रिंसिपल दिवानचन्द जी, स्वामी अमृतानन्द जी मराराज आदि के विद्वत्तापूर्ण भाषणों का जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा। रेडियो की नीति के विरोध में गोवध निषेध विषय पर प्रस्ताव पास हुये। डा० बाबूराम जी के दान से एक सप्ताह यज्ञ होता रहा।

—धामपुर आर्यसमाज का ४८ वाँ वार्षिकोत्सव २८–२६–३० अक्तूबर को बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री पं० बिहारीलाल जी काव्यतीर्थ एव श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी आदि के भाषण हुये। जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। "नशा निवारण" सम्मेलन व "हिंदी राष्ट्रभाषा" सम्मेलन मनाये गये।

आर्य समाज दातागंज (बदायूँ)

—१—हिंदी संस्कृत पाठशाला स्थापित है विद्यार्थी बिना फीस शिक्षा पाते हैं
२—रामलीला के अवसर पर आर्यसमाज का प्रचार हुआ ठा० अवलसिंह ठा. गज राजसिंह जी के प्रभाव शाली भजन उपदेश हुये जनता पर प्रभाव अच्छा रहा।
३—प्रधान बाबू सियाराम भी मन्त्री बाबू ओ३म प्रकाश जी गुप्ता चुने हुये हैं।

—आर्य समाज बुढ़ाखेड़ा पुरडीर की ओर से आर्यप्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री प० रामकौशिक जी की एक सप्ताह तक यहाँ कथा चलती रही और समाप्ति वाले दिन तीन परिवारों में यज्ञ भी हुआ।

—आर्य समाज देहरादून का ७० वाँ वार्षिकोत्सव २० से २४ अक्तूबर तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। समाज का पिण्डाल हजारों आदमियों से भरा रहता था। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान नेता श्री राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा यू पी., श्री अलगूरायजी शास्त्री एम. ए., सदस्य विधान परिषद्, महाशय कृष्ण, कुवर सुखलाल जी "आर्य मुसाफिर", प० हरिशङ्कर जी शर्मा आगरा उत्सव में पधारे। शिक्षा सम्मेलन श्री प० नरदेव जी शास्त्री के प्रधानत्व में हुआ।

श्रीमान् चौ० गिरधारी लाल जी, मन्त्री यू पी ने नशा निषेध के सम्बध में सरकारी नीति पब्लिक के सामने रही।

—बाबूगञ्ज मेला (जि० प्रतापगढ़) में कुवारसुदी ६–१०–११ को वैदिकधर्म का प्रचार हुआ। अछूतोद्धार व शुद्धि व विद्याप्रचार नशा निवारण विधवा विवाह इत्यादि पर व्याख्यान व भजन हुआ।

—आर्य समाज दलेलनगर हरदोई के द्वितीय वार्षिक निर्वाचन में निम्नाकित पदाधिकारीगण निर्वाचित हुये।
प्रधान—ठा० मिश्रीलालसिंह जी
उप प्रधान—ठा० विश्रामसिंह जी
प्रधान मन्त्री—प० हीरालाल जी
उप मन्त्री—ठा० दिग्गजसिंह जी टीचर-
कोषाध्यक्ष—ठा० शङ्करबख्श सिंह जी
पुस्तकाध्यक्ष—प० हेमचन्द्रप्रसाद जी
निरीक्षक—ठा० गोपालसिंह जी
आडीटर—प० बाबूराम जी

—आर्यसमाज सीतापुर में श्री धर्मदत्त जी आनन्द आर्य भजनोपदेशक ने स्थाई रूप से प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया है जो आर्य समाजें या जो सज्जन प्रचारार्थ उनको बुलाना चाहें तो १ मास पूर्व—मन्त्री आर्य समाज सीतापुर से पत्र व्यवहार करें।

—आर्य समाज फैज़ाबाद का वार्षिकोत्सव १७, १९, २० तथा २१ दिसम्बर को धूमधाम से मनाया जावेगा।

—ता० ४–१०–४६ को आर्य समाज मन्दिर संजोगिनागज में नसीर नामक मुसलमान युवक धाग निवासी की शुद्धि की गई तभी उनका नाम रमेशकुमार रखा गया।

—गुरुकुल सूपा के ब्रह्मचारियों ने ऋषि निर्वाण तथा दिवाली के पर्व बड़े उत्साह से मनाये। वक्तृत्व-शक्ति को विकसित करनेवाली सभा, वीरता पूर्ण खेल तथा मनोरञ्जक—सगीत एव सवाद के कार्य क्रम रक्खे गये थे।

—आर्य गुरुकुल टटेसर में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में हुई एक सभा में १५ वर्ष तक अंग्रेजी प्रमुख राजभाषा के रूप में रखने का विरोध करते हुए विधान परिषद् से अनुरोध किया गया कि वह इस निर्णय पर पुनर्विचार करे।

सावधान

—आ० स० जमालपुर (मुंगेर) के मन्त्री लिखते हैं कि सुखदेव चौधरी नाम का एक व्यक्ति जो जमाल पुर कारखाने में किरानी है लक्ष्मण पुर गडरिया टोला में रहता है, समाज की ८ रसीद बुक चन्दा करने को लेगया था, जिनका हिसाब उसने बहुत समय बीत जाने पर भी न दिया। जनता उससे सावधान रहे। आर्यमित्र के ६-१० ४६ के अक में छपे हुये विवाह का भी उनको कोई श्रेय नहीं। वह समाज ने ही कराया था।

—आ० स० तथा आ० कु० सभा सांभर लेक के तत्वावधान में ७ से १३ नवम्बर १६४६ तक यजुर्वेद परायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर श्री मान् उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश को अध्यक्षता में आ० स० का वार्षिकोत्सव भी मनाया गया।

[illegible] के वितरक — एच. एंड मेहता एण्ड को०, १०, ३९ श्रीरामरोड लखनऊ

श्री पं० प्रियव्रतजी आचार्य
गुरुकुल-कांगड़ी
(सहारनपुर)

रजिस्टर्ड नं० ए०६०

काशक — ला० चन्द्रभानप्रसाद भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस लखनऊ।